Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NAVNEET JULY-NOV 1976 G.K.U.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

111285

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या... खनीत ... आगत संख्या... पत्रिका फाईल

पुस्तक – वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित ३०वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा १० पैसे के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

5 March

No. 1755

15-9

3-6-85 B

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुलाई १९७६

नवनीत हिंदी डाइजेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मूल्य : २॥ रु

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी उमंग, नयी तरंग

सेन्चुरी के सूती कपड़ों के संग

सेन्चुरी - १००% सूती कपड़ों के लिए !

दि सेन्चुरी स्पि. एण्ड मैन्यु.
कं. लि. बम्बई-४०० ०२५

Adroit-237-Hindi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

111285
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेहरे पे मुस्कान व भरकर दिल में प्यार सहज बना सकते हैं बेडेकर अचार

जब आप तैयारशुदा [रेडी मिक्स्ड पिकल स्पाइसेज] अचार का मसाला खरीदती हैं तो मत समझिए कि यह केवल मसाला है अचार का। लेकिन यह तो आपके लिए एक नुस्खा [फ़ॉर्मूला] है अपने ही घर में, बगीचे से लाये गये हरे-हरे कच्चे आमों व पके, सुनहले नींबूओं से अचार बनाने का। हर पैक के साथ दिये निर्देशों का पालन कीजिए और बढ़िया अचार बनाइए। फिर आप और आपके परिवार के लोग अचार के साथ उंगलियाँ न खा जाएँ तो कहना

और हाँ, आप भी ये अचार उतना ही बढ़िया खुद बना सकती हैं, जितना बेडेकर बनाते हैं...और वह भी बड़ी आसानी से हँसते-मुसकराते! बेडेकर के 'रेडी मिक्स्ड पिकल स्पाइसेज' [अचार का मसाला] ले आइए और आप खुद ही अचार बनाकर देखिए।

बेडेकर
बम्बई-४

बेडेकर मसाले	बेडेकर अचार	बेडेकर पापड	बेडेकर चटनी	बेडेकर मसाले	बेडेकर अचार

111285
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड कार्यालय

लालबहादुर शास्त्री मार्ग, भांडुप, बंबई ७८ एन. बी.

केबल: 'लकी' भांडुप फोन : ५८४३८१

१. नानफेरस यूनिट

सेमिस रोलिंग विभाग :

नानफेरस शीत, स्ट्रिप और काइल,
नानफेरस प्लेट और सर्कल

एलाय और कास्टिंग विभाग :

एंटिफ्रिक्शन बेयरिंग मेटल्स
गनमैटल्स और ब्रोजेन्स, ब्रेजिंग सोल्डर्स और टिन सोल्डर्स फाइन जिंक डाइकास्टिंग एलाय्स 'इस्माक ३,' अल्युमिनियम बेस्ड डाइकास्टिंग एलाय्स, ब्रास और ब्रोन्ज राड्स सालिड कोर्ड, फिनिश्ड कास्टिंग रफ और मशीन्ड।

२. फेरस यूनिट :

फाउंड्री डिविजन

एस० जी० आयर्न और स्पेशल स्टील कास्टिंग्स
मेलिएबल आयर्न कास्टिंग्स

आइ० एस० एस०, बी० एस० एस०, एस० एस० आइ० एम० के पेसिफिकेशन्स तथा ग्राहक की विशेष आवश्यकता के अनुसार सप्लाई किये जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम उद्योग की कई प्रकार से सेवा करते हैं।

हमसे संपर्क करना आपको सदा लाभप्रद होगा।

(१) **पाईप्स**—जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इंडस्ट्रीज लि. खोपोली के विक्रेता और स्टाकिस्ट.

(२) **अल्युमिनियम**—हम सभी प्रकार के शीटों और एक्सट्रुडेट सेक्शनों के लिए हिन्दालको के एजेन्ट हैं।

(३) **केबल**—युनिवर्सल केबल्स लि. सतना (म.प्र.) के महाराष्ट्र (विदर्भ, गोवा और गुजरात को छोड़कर) में बिक्री-एजेंट।

(४) **फायर होज**—जयश्री टेक्सटाइल एंड इंडस्ट्रीज लि. रिशरा (पं. बंगाल) द्वारा निर्मित, 'वरुण' फ्लैक्स पाइप व 'जयश्री' एंगस R. R. L. होज पाइपों के स्टाकिस्ट और वितरक।

एशियन डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड

क्वीन्स मेन्शन, तल मजला, प्रेस्काट रोड, बंबई-१.

तार : "ADPIPE" टेलेक्स : O11-2177 टेलिफोन : २६६६७१-३-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ पर जाने में आप जितना ख़र्च करेंगे उतने में ही विदेश में छुट्टियाँ बिताइये

मॉरिशस.

अब विदेश में छुट्टियाँ बिताना पहले से आसान है. और सच पूछिये तो इसका ख़र्च भारत के किसी भी अच्छे पहाड़ी स्थान पर जाने के मुक़ाबले कम ही पड़ता है.

स्वप्नमधुर छुट्टियाँ

विशाल फूलों और ख़ूबसूरत झरनों से शोभित तथा ज़िन्दगी की मस्ती बिखेरता एक स्वप्निल टापू है मॉरिशस.
यहाँ आप पायेंगे जगप्रसिद्ध ख़ूबसूरत समुद्रतट.
यहाँ धूप-स्नान का मज़ा लीजिये, या जी भर कर

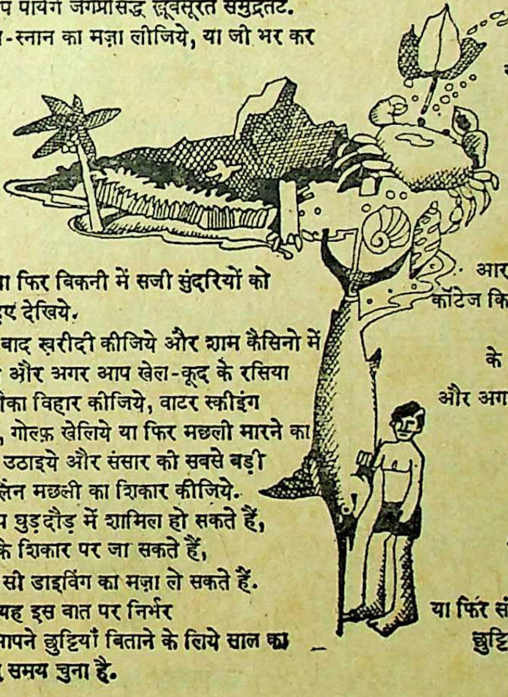

तैरिये या फिर बिकनी में सजी सुंदरियों को घूमते हुए देखिये.
दोपहर बाद ख़रीदी कीजिये और शाम कैसिनो में बिताइये और अगर आप खेल-कूद के रसिया हैं तो नौका विहार कीजिये, वाटर स्कीइंग कीजिये, गोल्फ़ खेलिये या फिर मछली मारने का आनन्द उठाइये और संसार की सबसे बड़ी ब्लू मार्लिन मछली का शिकार कीजिये.
वैसे आप घुड़दौड़ में शामिल हो सकते हैं, हिरनों के शिकार पर जा सकते हैं, या डीप सी डाइविंग का मज़ा ले सकते हैं.
लेकिन यह इस बात पर निर्भर है कि आपने छुट्टियाँ बिताने के लिये साल का कौन सा समय चुना है.

कम से कम खानापूरी

पिछले तीन वर्षों के बीच अगर आप विदेश जा चुके हैं तो भी मॉरिशस जाने के लिये आपको न तो पी फ़ॉर्म की ज़रूरत पड़ती है और न पासपोर्ट या वीसा की.
और ख़र्च के लिये आप बिना रिज़र्व बैंक गये अपने

साथ १०० डॉलर तक ले सकते हैं.
सारी काग़ज़ी कार्रवाई एयर-इंडिया ख़ुद आपके लिये पूरी कर देती है.

और ख़र्च इतना कम कि सहसा विश्वास नहीं हो.

मॉरिशस में छुट्टियाँ बिताते समय आप अत्यधिक आरामदायक होटलों में ठहरिये या पूरा कॉटेज किराये पर लीजिये — फिर भी दूसरी जगह के अच्छे शानदार होटलों के मुक़ाबले किराया कम ही पड़ता है.
और अगर आप चार या अधिक यात्रियों की मंडली बनाकर जायें तो एयर-इंडिया आपको ज़ोरदार छूट देने को तैयार है.
एयर-इंडिया के ख़ास एक्सकर्शन फ़ेयर के अन्तर्गत एक यात्री को भी भारी छूट मिल सकती है.
या फिर संपूर्ण ख़र्च सहित दिलचस्प मंडली में छुट्टियाँ बिताने का सुयोग बैठाने के लिये अपने ट्रैवल एजेन्ट को कहिये.

एयर-इंडिया
सप्ताह में दो बार सीधे मॉरिशस

AI 9641 (A)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेनिथ

औद्योगिक जगत में
एक विख्यात नाम है।

स्टील पाइप
स्टील कटर

इसके मुख्य उत्पादन हैं।
देश-विदेश में सर्वत्र
इनका प्रचार है।

जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इन्डस्ट्रीज लि.

खोपोली स्थित औद्योगिक निर्माण का स्थान अनुपम है, आदर्श है, उसके उत्पादन के द्वारा उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, निर्यात के द्वारा देश को विदेशी विनिमय की प्राप्ति होती है, और विविध करों के द्वारा देश के अर्थकोष की वृद्धि होती है।

सबकी सेवा में प्रस्तुत
जेनिथ स्टील पाइप्स
एंड इन्डस्ट्रीज लि.
खोपोली (कुलाबा) बंबई.

दि इंडियन टूल
मैन्यूफैक्चर्स लि.

१०१, सायन रोड, सायन,
बंबई-४०००२२

सुनिश्चित होकर चुनाव
कीजिये

'डॅगर' ट्विस्ट ड्रिल्स रीमर्स,
कटर्स, टॅप्स, टूलबिट्स
और माइक्रोमीटर्स

डॅगेलाय कार्बाइड
टूल्स और टिप्स

डॅगर-साके गियर हॉब्स
और गियर शेपिंग कटर्स

प्रिसिशन का प्रतीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ओडोमॉस ही दो तरह से आपकी निश्चित सुरक्षा करता है, मच्छरों को दूर भगाकर...

रातभर चैन की नींद सुलाता है!

ओडोमॉस जैसी सुरक्षा आपको अन्य किसी मच्छर-प्रतिरोधक से नहीं मिल सकती:

इसकी गंध मच्छरों को पास नहीं फटकने देती।

इसमें मिला अद्भुत तत्व रात भर आपकी त्वचा को एक आवरण देकर मच्छरों को दूर रखता है।

इसीलिए ओडोमॉस आज भारत में सर्वाधिक बिकने वाला मच्छर-प्रतिरोधक है।

मच्छरों के हमले से बचिये

ओडोमॉस

की सुरक्षा पाइये!

मच्छर का दुश्मन

यह बच्चों की कोमल त्वचा के लिए भी सुरक्षित है।

बलसारा
—सुखी जीवन के लिए आधुनिक साधन
BALSARA

CHAITRA-BLS-86 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'परीक्षा का डर'

बच्चों की परीक्षा आती रहती है; जब लेकिन ६ मासिक या वार्षिक परीक्षा नजदीक आती हैं, तब बच्चों के साथ माता-पिता को भी बहुत उलझन होती है कि उनके बच्चे बराबर पढ़ते नहीं और उनको पढ़ने में परेशानी होती है। थकावट लगती है, नींद आती है और अकल्प विचार आते हैं। ऐसे समय में माता-पिता से अपनी उलझन दूर करने के लिए नीचे का खात्रीलायक टानिक खरीदिये–

चरक 'बी' टानिक खरीदें !

कीमत केवल रु. ८–८० प्रत्येक सुप्रसिद्ध औषध विक्रेता के यहां मिलता है अथवा वी. पी. से मंगवाइये।

चरक फार्मास्युटिकल्स, बम्बई-११

धांगध्रा केमिकल वर्क्स लिमिटेड

'निर्मल,' तीसरी मंजिल, २४१ बैकबे रिक्लेमेशन,
नरीमन पाइंट, बंबई ४०० ०२१

तार : SODACHEM

फोन : २९२४०७–२९३२९४
२९३२३५–२९३३३०

भारत में हेवी केमिकल्स के क्षेत्र में अग्रणी
अब अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी प्रस्तुत :

* अपग्रेडेड इलमनाइट *
(सिंथेटिक रूटाइल ९०-९२ TiO_2

हमारे बनाये हुए रसायन :

* कास्टिक सोडा
* सोडा एश
* सोडियम बाइकार्बोनेट
* अमोनियम बाइकार्बोनेट
* केल्शियम क्लोराइड
* ट्राइक्लोरो एथिलीन
* लिक्विड क्लोरीन
* हाइड्रोक्लोरिक एसिड

* साल्ट *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब आती है वर्षा रानी...

वसुंधरा की पीड़ा पढ़कर, नील गगन की पाती लेकर;
गगन-पंथ से इस धरती पर, आया करती वर्षा रानी.

O

जब आती है वर्षा रानी, मेघ मृदंग बजाया करते;
इन्द्रधनुष के रंग, भूमि पर, नई उमंग सजाया करते;
गगन-घाट पर, मेघ, घटाओं की गागर ढुलकाया करते;
प्यासे जोवन के आँगन में, सुधा-बिन्दु बरसाया करते;
मेघ-मंगलाचरण, एक स्वर में, गाते हैं प्यासे प्रानी.

O

जब आती है वर्षा दादुर, मोर, पपीहा गाया करते;
कसक भूमि की पढ़नेवाले कृषक हल को लाया करते;
सूखे सरिता, कूप, सरोवर, नवजीवन पा जाया करते;
विरहिन के पाहुन बनकर, मनभावन घन मुसकाया करते;
मौन निवेदन की होती है, कितनी मंगलमयी कहानी.

O

आती है प्रति वर्ष, हर्ष का गीत लिये वर्षा अलबेली;
गगन, पवन, किरनों, मेघों की यह सुन्दर सुकुमार सहेली;
बूंदों की झांझर झनकाकर, सुलझा देती जटिल पहेली;
सुधा मिला करती वसुधा को, जब आती जलपरी नवेली;
कन कन उसका गुन गाता है, जी है जन-जीवन का दानी.

—सरस्वती कुमार 'दीपक'

Lijjat
PAPAD
REGD. TRADE MARK
श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड
(खादी व ग्रामोद्योग कमीशन द्वारा मान्य)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

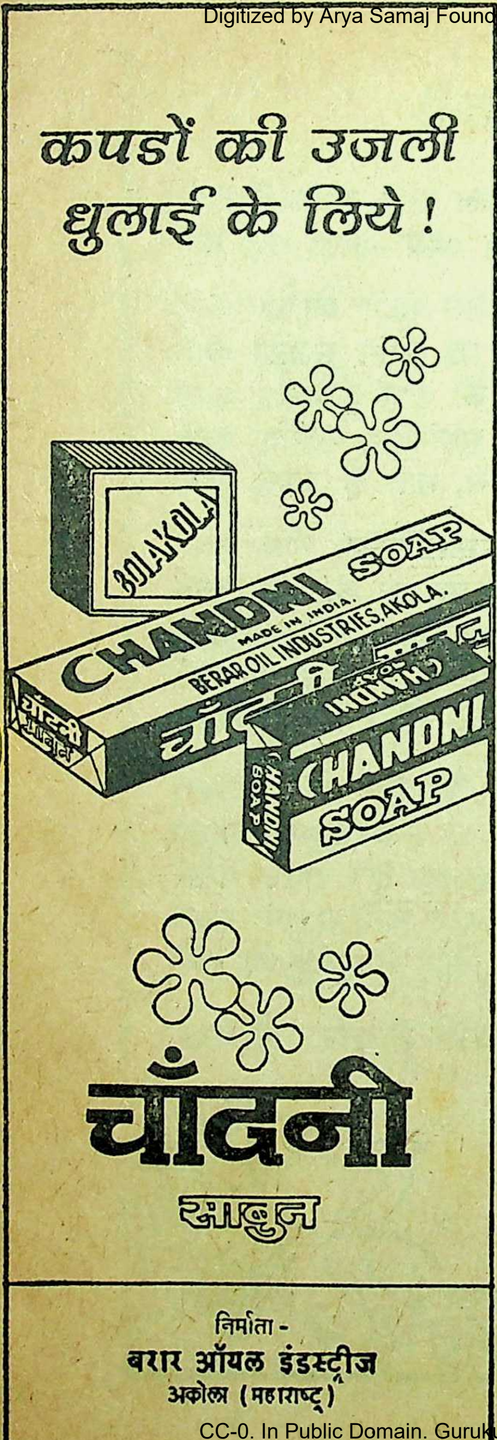

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह आवश्यक नहीं कि किसी टॉनिक के द्रव्य क्या हैं। आवश्यक बात यह है कि आपके शरीर को उससे क्या मिलता है?

सिंकारा मे आवश्यक विटामिनों और खनिज पदार्थों के साथ ही १४ जड़ी-बूटियां विशेषकर सम्मिलित हैं जिनसे पाचन शक्ति अच्छा कार्य करती है और जिनकी सहायता से आपका शरीर सिंकारा में सम्मिलित विटामिनों आदि को बहुत तेज़ी से अपने अन्दर समा लेता है। आहार भली-भांति शीघ्र हज़म होकर आपके शरीर को बहुत बल्द शक्ति प्रदान करता है।

हमदर्द

HT-HDC-5751A 2H

सिंकारा आपके शरीर को बहुत कुछ देता है।

सिंकारा विटामिनों और प्राकृतिक द्रव्यों से भरपूर हर मौसम में पूरे परिवार के लिये अद्वितीय टॉनिक

लिंक चेन

जिसकी एक-एक कड़ी मजबूत, परखी हुई और पूर्णतः विश्वसनीय है।

*

सभी उद्योगों व वाहनों में उपयुक्त

*

एलोय स्टील चेन एक विशेषता

इण्डियन लिंक चेन मैन्यु. लि. भाण्डुप; बंबई-७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वालियर रेयन के
२६
गौरवशाली वर्ष

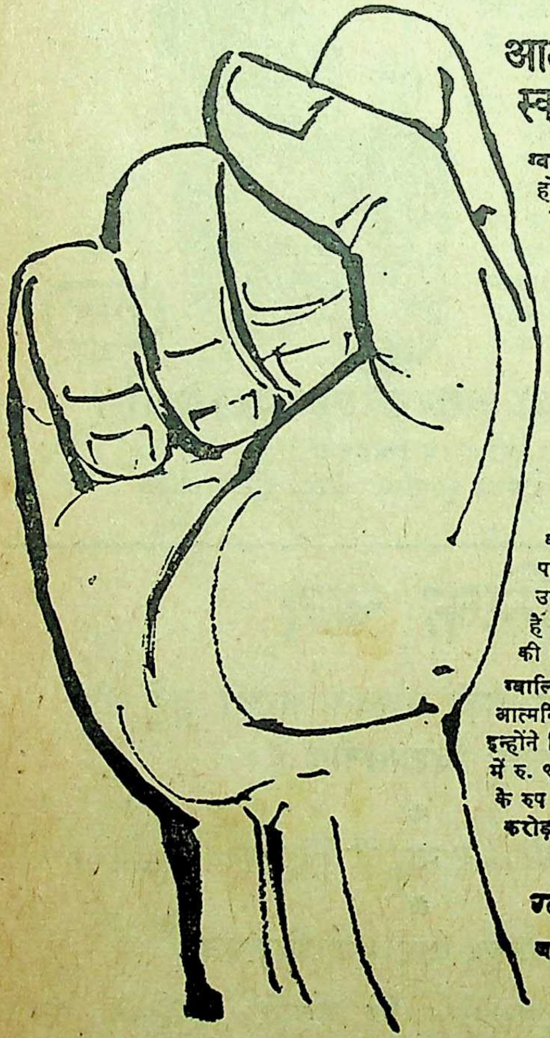

आत्मनिर्भरता का स्वप्न साकार

ग्वालियर रेयन ने देश के आजाद होने के साथ ही साथ रेयन वस्त्र, [illegible] रेशे, रेयन–ग्रेड पल्प और रेयन स्टेपल रेशे बनानेवाले प्लांट की मशीनों का निर्माण शुरू कर दिया.

ग्वालियर रेयन, बांस व अन्य सख्त लकड़ियों से रेयन–ग्रेड के घुलनशील पल्प तथा रेयन, पल्प व संबंधित प्लांटों की आधुनिक मशीनों के अग्रगण्य निर्माता हैं तथा रेयन उद्योग के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयत्नशील है.

आज ग्वालियर रेयन के स्टेपल रेशों का उत्पादन, ५ करोड़ २० लाख देशवासियों की वस्त्र की जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त है. लकड़ी के पल्प का वार्षिक उत्पादन, एक लाख टन से भी ज्यादा का है जो सेल्यूलोस के रेशों की दृष्टि से रुई की ५.२ लाख गांठों के बराबर है.

ग्वालियर रेयन ने देश को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है इन्होंने पिछले दस वर्षों में, राष्ट्रीय अधिकोष में रु. ९० करोड़ से भी ज्यादा धनराशि टैक्स के रूप में दी और इसी दौरान रु. ३६० करोड़ की विदेशी-मुद्रा भी बचायी।

ग्वालियर रेयन

यहां राष्ट्र की प्रगति ही [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत

वर्ष २५ : अंक ७

* इस अंक में *

जुलाई १९७६

पत्र-वृष्टि	१५	संपादक की डाक से
४ जुलाई की ज्योति	१९	नेमिशरण मित्तल
साम्राज्यवाद-विरोध से......	२६	प्रयाग नारायण
अहरणीय अधिकार	३३	....
जीवन-तीर्थ	३४	सुबीर
अमरीका का प्रभाव	३६	इंदिरा गांधी
वाक्यदीप	३९	बेंजामिन फ्रैंकलिन
शाश्वत प्रकाश	४०	जेफरसन, एमरसन, लिंकन, किंग
अमरीकी मित्रों से	४५	नारायण दत्त
हृदयों में विराजित	४८	टामस जे. फ्लेमिंग
छाते	५६	नंदिता सिन्हा
विज्ञान-बिंदु	६१	केजिता
दायरा (उर्दू कविता)	६४	कैफी आजमी
परिहासिनी	६५	डा. बालेंदुशेखर तिवारी
सत्यानासी	६८	डा. सोहराब ए. ई. हकीम
चार चेलों का हश्र	७२	निरंजन
सहृदय सेनापति	७५	....
मधुमेह के साथ जीना	७६	डा. सी. मुनिचूडप्पा

संस्थापक	संपादक	सहसंपादक	व्यापार-व्यवस्थापक
स्व. श्रीगोपाल नेवटिया	नारायण दत्त	सुरेश सिन्हा	महेंद्र महेता
प्रबंध-संचालक	**उपसंपादक**	**सज्जाकार**	**प्रबंधक**
हरिप्रसाद नेवटिया	गिरिजाशंकर त्रिवेदी	ठाकोर राणा	सोहनराज पारेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुमेह, भ्रांतियां और तथ्य	७८	डा. सी. वी. कृष्णस्वामी
अपराध-कथाओं की पटरानी	८१	उदयन शर्मा
भारत में पर्वतारोहण	८४	ब्रह्मदत्त स्नातक
मरुरेखा (हिंदी कहानी)	८९	महेंद्र शर्मा
स्मृति के अंकुर	९७	श्रीवास्तव, बिराज, बेचैन, कौशिक
कविताएं	१००	स्नेहमयी चौधरी, सुखबीर
आदमी के पंख	१०१	सुखबीर
पार्क रोड का मकान (बंगला कहानी)	१०४	विमल कर
ध्वनियों के आलेख	११७	ललितचंद्र चंदोला
कविताएं	१२४	चक्रधर नलिन, डा. गुप्त
वेस्ट इंडीज टेस्ट-शृंखला	१२५	सुदीप
बारहमासा	१४४	चरन शर्मा
कुछ इधर से कुछ उधर से	१४५	मित्र
ग्रंथ-लोक	१४९	मंत्री, पांडे, भटनागर
हंसी के बुलबुले	१५७	सुरेंद्र श्रीवास्तव
चित्र प्रश्न-८ का उत्तर	१५९	....

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत हिंदी डाइजेस्ट, ३४१, ताडदेव, मुंबई-३४.
फोन : ३७२८४७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, अशीष बिल्डिंग, ३३५, बेलासिस रोड, ताडदेव, बंबई-३४. फोन : ३९२८८७

अगस्त से चंदे की दर : (भारत में) एक वर्ष २० रु.; दो वर्ष ३८ रु.; तीन वर्ष ५४ रु.।
भारत में **नवनीत** का आजीवन सदस्यता-शुल्क ४०० रुपये है।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४ के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस,** ३६/४८ खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बंबई-४ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

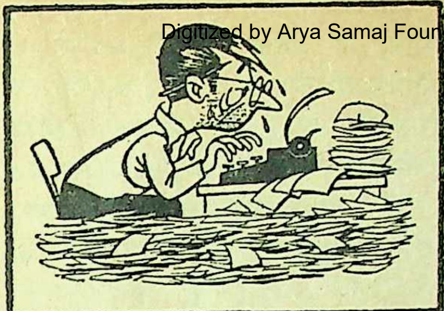

पत्र-वृष्टि

यह लिखने में मुझे संकोच नहीं कि इस समय अपने मूल्यवोध में **नवनीत** सर्वप्रिय है। श्री मित्तल द्वारा प्रस्तुत सार-संक्षेप 'क्रांति दर्शन और यथार्थ' (मई ७६) कितना अर्थवान है!

—डा. लक्ष्मीनारायण लाल, नयी दिल्ली-८

०००

कृपया श्री उपेंद्रनाथजी 'अश्क' तक मेरी हार्दिक बधाई भेज दीजिये। हिंदी साहित्य जगत की वर्तमान स्थिति के बारे में उनके विचार निःसंदेह महत्त्वपूर्ण हैं और मैं भी अधिकांश में उनसे सहमत हूं। सात-आठ वर्ष पहले मैंने एक लेख पत्रों में लिखा था। तलाश करके उसकी प्रति आपको भिजवाऊंगा। **नवनीत** की पाठ्य सामग्री बहुत उच्च कोटि की और साहित्यिक होती है। उसके लेखों को पढ़वाकर सुनता हूं। ८४ वें वर्ष में लिखना-पढ़ना मेरे लिए कठिन हो गया है।

—बनारसीदास चतुर्वेदी, कोटद्वार, गढ़वाल

[२]

अश्कजी के भाषण को पढ़कर भास हुआ कि अब भी हिंदी साहित्य में सत्य को यथा-वत् प्रस्तुत करने वाले मौजूद हैं। अन्यथा आज तो हिंदी साहित्य में हो यह रहा है कि आप मेरी प्रशंसा करें, मैं आपकी प्रशंसा करूं।

अश्कजी का यह कथन सर्वथा सत्य है कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद पत्र-पत्रिकाओं की संख्या में तो वृद्धि हुई है, किंतु सही रचनाओं एवं रचनाकारों का चयन, सूझबूझ आदि बातों का संपादकों में घोर अभाव है। किसी भी बड़ी पत्रिका में छपने के लिए आपको संपादक के गुट का व्यक्ति होना चाहिये। बिना गुटबाजी के आप उसमें धंस नहीं सकते। भले ही आपने वेद लिखकर भेजा हो, सखेद वापस कर दिया जायेगा।

दो-तीन वर्ष पूर्व एक प्रमुख हिंदी पत्र ने श्रीमती शिवानी के उच्चकोटि के उपन्यासों ('भैरवी' तथा 'कैंजा') को घटिया किस्म के उपन्यासों में गिना था और अपने 'कवर' पर उन उपन्यासों की फोटो छापी थी। कारण, लेखिका उसके गुट की न थी। इसी गंदी गुटबंदी के कारण ही हिंदी का पतन हुआ है।

रही उर्दू की बात। उसे काफी समय से राज्य का संरक्षण प्राप्त रहा है। वह अदालतों तथा सरकारी काम-काज की भाषा रही है। उर्दू से आये हुए हिंदी साहित्यकारों द्वारा उसका खुलकर प्रयोग किया गया है। मुंशी प्रेमचंद इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। अभी अंतिम रूप में स्व. दुष्यंत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*** भारतीय प्रज्ञा के अनुपम उदाहरण, प्रकांड विद्वान एवं गहन आत्मसाधक महामहोपाध्याय डा. गोपीनाथ कविराज का १२ जून को काशी में देहावसान हो गया। उनके प्रति श्रद्धांजलिपूरित लेख अगस्त अंक में आप पढ़ सकेंगे।**

*** हिंदी के समर्थ लेखक, संस्कृत एवं ज्योतिष के संमानित विद्वान डा. सूर्यनारायण व्यास का २२ जून को उज्जैन में देहांत हो गया। नवनीत से उसका विशेष लगाव था। उन्हें श्रद्धांजलि। —संपादक**

कुमार द्वारा गजल विधा का हिंदी में अपनाया जाना अपने आपमें एक महान प्रयास है। लेकिन उर्दू वालों को घनाक्षरी, सवैया आदि को अपनाकर हिंदी-प्रेम दरशाना चाहिये। वस्तुत: इस प्रकार हिंदी-उर्दू का सीमा-विभाजन उचित नहीं, चूंकि उर्दू हिंदी की शैली है। **—इंदर चंद तिवारी, लखनऊ-३**

[३]

श्री अश्कजी की यह बात कि आज किसी जगह किसी फिल्मी अभिनेता या बाक्सर के पहुंचने पर जितनी खुशी लोगों को होती है, उतनी किसी कवि, लेखक अथवा दार्शनिक के पहुंचने से नहीं होती, झूठ नहीं है।

उन्होंने रेडियो और टेलिविजन संस्थानों की जो आलोचना की है, उससे शायद कुछ पाठक असहमत या असंतुष्ट हों। परंतु मैं अश्कजी से सहमत हूं कि हमारे देशवासी जितनी तीव्रता से पश्चिमी देशवासियों की रुचियों के अनुसार अपनी रुचियों को साहित्य की ओर से हटाकर खेल-कूद की तरफ मोड़ रहे हैं, वह वास्तव में निंदनीय है और पतन की ओर ले जाने का पथ है।

—मुकुंदबिहारी पांडेय, खालपाड़ा, सिलीगुड़ी, जि. दार्जिलिंग, प. बं.

[४]

पिछले दिनों रावतभाटा से एक परिवार हमारे यहां आया। उनकी तीसरे दर्जे में पढ़ने वाली लड़की ने जब अभिनय के साथ अंग्रेजी की कविताएं सुनायीं, मैं प्रभावित हुए बिना न रह सका। वह हिंदी की कविता नहीं सुना पायी। तब भी उसका प्रभाव कम नहीं हुआ। मैंने अपने लड़के आलोक से, जो यहां तीसरे दर्जे में पढ़ता है, कहा—'देखा, यह छोटी-सी लड़की कितनी होशियार है, तुम्हें आती है ऐसी कविता?' वह बोला— 'इससे भी अच्छी आती है।' और उसने हिंदी की कविताएं अधिक सुंदर ढंग से सुनायीं और बोला—'पापा ! इसे तो ऐसी एक भी कविता नहीं आती।'

आलोक के उत्तर ने मुझे सोचने पर विवश कर दिया। हिंदी की कविताएं अधिक भावपूर्ण और सस्वर सुनायी गयी थीं, फिर भी मैं तय नहीं कर पाया कि दोनों में कौन अधिक प्रतिभाशाली है। इस तरह हम हिंदी वाले ही हिंदी का अकारण अनादर करते हैं। श्री उपेंद्रनाथ 'अश्क' के विचार से मैं सहमत हूं कि हम हिंदी वाले ही हिंदी के अहितकर्ता हैं।

—अर्जुन पंजाबी, मनासा, म.प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[५]

अश्कजी हिंदी के युग-प्रवर्तक उपन्यासकार हैं। क्या वे बता सकेंगे कि सफलता के शिखर पर पहुंचकर कल का संघर्षरत स्रष्टा अपने बीते दिन क्यों विस्मृत कर देता है? भ्रष्टाचार, नैतिक पतन एवं पुराने मूल्यों के विघटन का चित्रण मात्र ही साहित्यकार का ध्येय नहीं होता।

दूसरी बात, महंगी पुस्तकों को खरीदकर पढ़ना साधारण पाठक के लिए संभव नहीं है। ये पुस्तकें लेखक के सुपर-ईगो की संतुष्टि का साधन-भर रह जाती हैं। साधारण पाठक उसकी आर्थिक दशा के मुताबिक जो पुस्तक मिलती है, उससे ही अपनी तृष्णा शांत कर लेता है। कितने लोग हैं जो अश्कजी, वर्माजी तथा अन्य उपन्यासकारों की कृतियां लाइब्रेरियों से लेकर अथवा क्रय कर पढ़ सके हैं? चूंकि परीक्षा में साहित्य की समालोचना करनी पड़ती है, वे सस्ती पुस्तकों में लिखी आलोचनाएं पढ़कर अपना काम चलाते हैं। बहुत-से शोधकर्ताओं ने मूल रचनाओं की प्रति कभी देखी भी नहीं होती है। पर इन सबका दोष उनके ऊपर नहीं रखा जा सकता।

जिस प्रकार चोटी के राजनीतिज्ञ देश के राजनैतिक पतन के लिए जिम्मेवार हैं, उसी प्रकार सभी चोटी के साहित्यकार हिंदी के पतन के लिए उत्तरदायी हैं। बड़ी-बड़ी विचार-गोष्ठियां राजनैतिक पार्टियों के अधिवेशनों की तरह आयोजित होती हैं, एक दूसरे की रचनाओं व वादों पर वाद-विवाद एवं प्रहार करने के पश्चात् समाप्त हो जाती हैं। स्वयं साहित्यकार कितने प्रतिभावान युवक-युवतियों के संपर्क में आते हैं? क्यों नहीं उनकी प्रतिभा का उपयोग शब्दकोश आदि के संकलन में करते? कोई भी स्वयं बोझ को उठाना नहीं चाहता। दूसरे पर जिम्मेवारी लादना आसान है, कुछ करना कठिन। यदि लेखक-वर्ग श्री अश्कजी द्वारा वर्णित बुराइयों का तिरस्कार करता, तो इन बुराइयों के पांव जमने ही न पाते।

—शशी मिश्र, मेरठ, उ. प्र.

०००

फाज पर पिछले अंक में आपने डा. अरुण कुमार मिश्र का लेख पढ़ा था। पश्चिम जर्मनी के विज्ञानियों द्वारा इलेक्ट्रान माइक्रोस्कोप से लिये गये इस चित्र में आप देख सकते हैं कि फाजों ने बेक्टीरियम में घुसकर उसे जगह-जगह से खाकर खोखला कर दिया है। एक बात और, डा. मिश्र के लेख में सर्वत्र 'फाज' हिज्जे छपे थे; इस शब्द का शुद्ध रूप 'फाज' है। —संपादक

०००००००००००००००००००००००००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसे तो **नवनीत** का मुखपृष्ठ हमेशा ही अपनी विशेषता रखता है, लेकिन जून का मुखपृष्ठ अपने आपमें बेजोड़ है। नारी मुखड़े पर वना यह चित्र जीवन के गंभीर दर्शन की अभिव्यक्ति करता है। दो आंखें–एक हल्के नीलवर्ण और दूसरी गहरे लाल से रंगी–शायद जीवन के दो पहलू (सुख-दुःख, जीवन-मरण, फूल-कांटे, शुभ-अशुभ) को व्यक्त करना चाहती हैं। आंखों की भिन्नाकृति पुतलियां और बरौनियों की डाली-सदृश आकृति एक अजीब कुतूहल जागृत करती हैं। कपोल नेत्रों की पृष्ठभूमि से प्रभावित दो आधार पेश करते हैं। एक पर नीलिमा का आवरण और दूसरे पर रक्ताभ अरुणाई जीवन की दो कहानी सुनाते हैं। नासिका की स्थिति ओंठों पर बिलकुल उसी प्रकार है, जिस तरह दीपक पर जलती हुई ज्योति की। ओंठों का चार फांकों में विभाजन और उनका गहरा लाल और हल्का गुलाबी होना किसी गंभीर रहस्य को संजोये है। सबसे महत्त्वपूर्ण है 'वक्षस्थल से उठती हुई ज्योति का त्रयगोलों के त्रिकोण को पार करते हुए ओंठों को चार फांकों में बांटते हुए नासिका के माध्यम से ललाट तक पहुंचना और दुल्हन के माथे की बिंदिया बन जाना।' मैं जानना चाहूंगा कि इतनी सुंदर, रहस्यमय और अद्वितीय तूलिका का चित्रण जो कहना चाहता है वह क्या है। कृपया स्पष्ट करें। **–एस. एन. त्रिवेदी, कानपुर**

*** श्री लक्ष्मण पै ने तंत्रशैली प्रेरित इस चित्र में दुर्गा का निरूपण किया है। –संपादक**

श्री ज्योतींद्र दवे के गुजराती हास्य लेख (जून अंक) में खूब आनंद आया। साथ ही प्रो. हेराल्ड लास्की द्वारा जस्टिस होम्स को लिखे गये एक पत्र का यह अंश (जो मैंने मद्रास के 'स्वराज्य' में पढ़ा) याद आ गया:

'कोई पुस्तक सार्वजनिक पुस्तकालय में है, यह तथ्य मुझे तसल्ली नहीं देता। पुस्तकें एकमात्र चीज है, जिसका मैं व्यक्तिशः और खुल्लमखुल्ला परिग्रही हूं। अगर कानून आड़े न आता, तो मैं उन्हें चुरा लाता।'

–वाणी कृष्णन्, हैदराबाद-२

[२]

जून अंक में 'पुस्तकालयों के विरोध में' के साथ लेखक श्री ज्योतींद्र दवे का जो व्यंग्यचित्र छपा है, वह लेखक के इस विचार की जोरदार पुष्टि करता है कि पहले शारीरिक भोजन का इंतजाम होना चाहिये, उसके बाद मस्तिष्क की पुष्टि के लिए ज्ञानवर्धक सामग्री का। इसी अंक में 'चिकित्सा', 'विज्ञान-बिंदु' 'फाज' आदि रुचे।

–हरइकबाल सिंह छावड़ा (बिंदर), श्रीकरनपुर, गंगानगर, राजस्थान

०००

मई अंक का तो बस मुखपृष्ठ ही काफी था। पैटी हर्स्ट के दिमाग की धुलाई का प्रश्न हर विवेकी नागरिक को उद्वेलित करने के लिए पर्याप्त है। लेख के अंत में उठाया गया प्रश्न न्यायविदों के संमुख एक चुनौती है। इस पौष्टिक रचना के लिए लेखक को साधुवाद।

–कमल 'पुष्पेंद्र', राजसमंद-३१३ ३२६

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेमिशरण मित्तल

४ जुलाई की ज्योति

यह अहसास और विश्वास कि हमारे जीवन और अस्तित्व का एक विशेष प्रयोजन है, कोई मिशन है जो केवल हमारे ही हाथों पूरा हो सकता है, कुछ व्यक्तियों की तरह कुछ राष्ट्रों में भी उत्कट रूप विद्यमान होता है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि यहूदी, चीनी, रोमन और यूनानी समाजों में यह चेतना तीव्र रूप में थी। स्वयं भारत सदा से ही और विशेषत: पिछली शताब्दी के अंत एवं इस शताब्दी के पूर्वार्ध में अपने विशिष्ट मिशन की भावना से उद्वेलित रहा है—विवेकानंद, अरविंद, गांधी और जवाहरलाल नेहरू इसके नम्र एवं निष्ठावान ध्वज-वाहक रहे हैं।

सत्रहवीं शताब्दी में जो लोग धार्मिक उत्पीडन और सामाजिक-आर्थिक विषमता से त्राण पाने के लिए इंग्लैंड और यूरोप के अनेक देशों से जाकर अमरीका में बसे, धीरे-धीरे उनके मन में भी अपने पृथक् अस्तित्व और जीवन-धर्म की चेतना का जागरण हुआ। इसी से प्रेरित होकर आरंभ में पुरातनपंथी उपनिवेशकों ने एक विशुद्ध ईसाई समाज की स्थापना का स्वप्न देखा। फिर राबर्ट ओवेन सरीखे लोगों ने वहां मानव-मानव के बीच पूर्ण समानता के आधार पर एक आध्यात्मिक साम्यवादी समाज की स्थापना की चेष्टा की।

मानव-जाति के प्रयोजनों की चेतना

एक राष्ट्र के रूप में अमरीका के महान मिशन की चेतना सबसे पहले स्वाधीनता-संघर्ष के महानायक एवं प्रधान सेनापति जनरल जार्ज वाशिंगटन के मन में उदय हुई। उन्होंने घोषणा की—'हम मानव-जाति के प्रयोजनों के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह सोचना नितांत गलत है कि हम अपने ऊपर लगाये जाने वाले करों के थोड़े-से पैसे के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हमारा वास्तविक प्रयोजन वर्तमान पीढ़ी तथा करोड़ों अनजाये मनुष्यों के मूलभूत अधिकारों और उनकी स्वतंत्रता की रक्षा करना है।' वाशिंगटन के मन में यह अडिग आस्था थी—'एक दिन ऐसा आयेगा, जब सारा संसार और संसार का प्रत्येक तानाशाह यह महसूस करेगा कि संमान, गरिमा और सच्ची आत्मप्रतिष्ठा के साथ जीने का मार्ग है—न्याय का मार्ग।'

यही चेतना उनके उत्तराधिकारी राष्ट्रपति जान एडम्स के हृदय को भी अलोड़ित करती थी, जिन्होंने कहा—'मैं अमरीका की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर संमान और आश्चर्य के साथ देखता हूं। मुझे ऐसा लगता है कि वह विधाता के एक महत्तर प्रयोजन का अंग है। यह प्रयोजन समूचे संसार की मानव-जाति के अज्ञान-ग्रस्त अंश को ज्ञान, और दास (पराधीन) जनता को मुक्ति प्रदान करना है।' इस महत्तर प्रयोजन की सिद्धि के लिए उन्होंने अपने देशवासियों से अपील की कि अमरीकी गणतंत्र को गुणों पर प्रतिष्ठित किया जाये, उसमें उद्यमशीलता का संमान हो, वह अनुशासित हो और उसमें समूचे समाज के कल्याण की भावना रहे।

अमरीकी स्वतंत्रता और लोकतंत्र के संस्थापकों एवं प्रारंभिक नेताओं ने कल्पना की थी कि संयुक्त राज्य अमरीका संसार के सामने एक स्वच्छ समाज का आदर्श पेश करेगा। टामस पेन ने कहा था—'हमें उस शक्ति का विकास करना होगा, जिसके द्वारा हम समूचे विश्व को सुखी बना सकें। हमें मानव-जाति को सुखी होने का पाठ पढ़ाना होगा, अर्थात् इस भूमंडल पर सुखी जीवन का अनुपम उदाहरण पेश करना होगा।'

अलेग्जैंडर हैमिल्टन तो प्राय: कहा करते थे कि समूचे विश्व की निगाहें संयुक्त राज्य अमरीका पर टिकी हुई हैं। अमरीका की स्वतंत्रता ने अधिनायकवाद के अधीनस्थ निराशापूर्ण क्षेत्रों में भी आशा की किरणें जगायी हैं। यही चेतना टामस जेफरसन के मन में व्याप्त थी, जिन्होंने जान एडम्स को लिखा था—'४ जुलाई १७७६ को जो ज्योति प्रज्ज्वलित की गयी है, वह विश्व के बहुत बड़े भाग में व्याप्त हो गयी है। स्वेच्छाचारी शासन के दुर्बल उपकरण उसे बुझा नहीं पायेंगे; इसके विपरीत वह ज्वाला स्वेच्छाचारी शासन और उसके समर्थकों को भस्म कर डालेगी।'

इतना ही नहीं, संयुक्त राज्य अमरीका के संस्थापकों ने अपने नवस्थापित राष्ट्र को संसार के समस्त पीड़ित लोगों का शरण-स्थल माना था। बेंजामिन फ्रैंकलिन ने उसे 'स्वतंत्रता-प्रेमियों का घर' कहा तथा जेफरसन ने प्रथम बार राष्ट्रपति का पद ग्रहण करते समय अमरीकी सरकार को 'विश्व की आशा का सर्वोच्च केंद्र' घोषित किया। इसी भावना को राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने बाद में इन शब्दों में व्यक्त किया—'संयुक्त राज्य अमरीका मानव-जाति की उच्चतम आकांक्षाओं का अंतिम शरण-स्थल है।'

अमरीकी स्वप्न

संयुक्त राज्य अमरीका के संस्थापकों ने इस तथ्य को भली प्रकार पहचान लिया था कि उनका स्वाधीनता-संग्राम आधुनिक जगत में एक महाशक्ति के चंगुल से मुक्त होने के लिए लड़ा गया प्रथम उपनिवेशवाद-विरोधी संग्राम है। लेकिन वे उसे महज स्वतंत्रता-संग्राम नहीं मानते थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि उस संग्राम के भीतर से कई सर्वथा नवीन राजनैतिक और नैतिक तत्त्व उभरे हैं, जो समूची मानव-जाति के लिए प्रेरक और उन्नायक सिद्ध हो सकते हैं।

इनमें से पहला तत्त्व है राज्य और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जनता के संबंधों की परिभाषा करने वाला एक अनूठा संवैधानिक सिद्धांत जो गणतंत्र को जनता की सहमति पर आधारित मानता है। साथ ही अमरीकी प्रयोग ने यह भी सिद्ध किया कि जनता की सहमति पर आधारित गणतंत्र संघीय ढांचे के आधार पर एक विशाल क्षेत्र में लोकतंत्र की स्थापना प्रभावशाली रीति से कर सकता है। इस प्रयोग में से एक ऐसा संविधान भी उभरकर आया, जिसके अंतर्गत व्यक्तियों और संघ में सम्मिलित राज्यों—दोनों के अधिकारों का संरक्षण हो सका तथा सामाजिक और आर्थिक समानता की दिशा में महत्त्वपूर्ण लोकतंत्रीय सुधार हुए।

उपनिवेशवाद की परिसमाप्ति, गणतंत्रवाद, संवैधानिक शासन, संघवाद, नागरिक स्वतंत्रताओं और अधिकारों का आश्वासन तथा समानतापरक समाज की स्थापना के सिद्धांत विश्व को अमरीकी क्रांति की सौगात बन गये।

अमरीका के राष्ट्र-स्थापकों ने एक ओर आधुनिक लोकतंत्र के पिता जां जाक रूसो और दूसरी ओर सर विलियम ब्लैकस्टन एवं सर एडवर्ड कोक सरीखे ब्रिटिश संविधानशास्त्रियों द्वारा प्रतिपादित लोकतंत्रीय एवं संवैधानिक सिद्धांतों के पीछे निहित नैतिक प्रयोजनों को पहचाना और अपने गणतंत्र को उस समय के महानतम लोकतंत्र ग्रेट ब्रिटेन से कहीं अधिक और वास्तविक व ठोस रूप में लोकतंत्र बनाया। उन्होंने अपने संविधान को लिपिबद्ध किया और (रूसो की मान्यता के अनुसार) उसे सर्वप्रभुता-संपन्न तथा समूची प्रभुता की स्रोतभूत जनता की स्वीकृति के लिए उसके प्रतिनिधियों के सामने पेश किया। इसका परिणाम यह हुआ कि स्वयं ब्रिटेन में एडमंड बर्क, चार्ल्स जेम्स फाक्स तथा जान विल्केस सरीखे महान राजनीतिज्ञों ने अमरीकी प्रयोग की सराहना की और कवि ब्लेक ने उसकी प्रशस्ति में गीत रचा।

उस समय ब्रिटेन के कुछ क्षेत्रों में संसदीय व्यवस्था में सुधार तथा व्यापक वयस्क मताधिकार के लिए कुछ आंदोलन हुए; लेकिन इन लोकतंत्रीय व्यवस्थाओं को स्वीकार करने में ब्रिटेन को पूरे पचास वर्ष लग गये। यदि ब्रिटेन के लोगों के सामने संयुक्त राज्य का उदाहरण न होता, तो शायद इससे भी अधिक समय लगता।

अमरीकी स्वाधीनता ने आयरलैंड के देशभक्तों को अथाह प्रेरणा दी। वहां के प्रख्यात देशभक्त नेता हेनरी ग्रेटम ने कहा था कि अमरीकी स्वाधीनता वास्तव में आयरलैंड का खलिहान है। और आयरलैंड ही क्यों, स्वयं फ्रांस उस समय एक निरंकुश राजशाही की एड़ी के नीचे कराह रहा था। फ्रांसीसी दार्शनिक दिदरो ने कहा कि संयुक्त राज्य अमरीका यूरोप के उन लोगों का शरणस्थल है, जो अंधविश्वासों और निरंकुश शासन से ऊब चुके हैं। उन्हें लगा कि जनता की प्रभुता के आधार पर सरकार का गठन अमरीकी प्रयोग के बाद संभव हो गया है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
२१ ।।।295
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फ्रांसीसी राजनीतिज्ञों और बुद्धिवादियों ने संयुक्त राज्य के संविधान का बारीकी से अध्ययन किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि उस संविधान में प्रतिनिधि-मूलक शासन-व्यवस्था और शक्तियों के पृथक्-करण तथा अवरोध व संतुलन की व्यवस्था के द्वारा एक ओर जनता की इच्छा की अभिव्यक्ति को पूरा अवसर मिला है, दूसरी ओर जनता के अविवेक पर लगाम लगा दी गयी है। वस्तुतः अमरीका के उदाहरण ने फ्रांस को रूसो और वाल्तेयर का पुनः-स्मरण कराया और वहां शीघ्र ही १७८९ की ऐतिहासिक राज्यक्रांति हुई।

इस क्रांति के दौरान टामस जेफरसन संयुक्त राज्य के राजदूत के रूप में फ्रांस में विद्यमान थे। उनकी उपस्थिति और उनके गणतंत्रवादी चिंतन से फ्रांस के संविधान-वादियों को बहुत बल मिला। राजतंत्र और राजपरिषद की समाप्ति के बाद वहां फिला-डेल्फिया के संघीय संमेलन के नमूने पर व्यापक मताधिकार से निर्वाचित संविधान-सभा गठित की गयी, जिसने अमरीकी नमूने पर मूलभूत अधिकारों का घोषणापत्र तैयार किया। यद्यपि अमरीकी गणतंत्र की तरह फ्रांस का गणतंत्र दृढ़ और स्थायी नहीं रह सका, तथापि वहां स्वतंत्रता, समानता, संवैधानिक शासन, प्रतिनिधिमूलक संस्थाओं, मानवीय अथवा नागरिक अधि-कारों और धार्मिक स्वतंत्रता की अभीप्सा ज्यों की त्यों बनी रही है।

यूरोप के अन्य देशों ने भी सं. रा. अम-रीका का अनुकरण करने की कोशिश की। सन १७८० में बेल्जियम में गणतंत्रवादी शक्तियां उभरकर आयीं। १७८९ में जब वहां विद्रोह फूट पड़ा, तो अमरीका की तरह प्रत्येक प्रांत ने अपनी स्वाधीनता की घोषणा अलग-अलग की तथा अमरीकी परिसंघ-अनुच्छेदों की तरह ही एकता-अधिनियम पारित करके संघ बनाया, जो केवल एक वर्ष जीवित रह सका। लेकिन १८३० में जब वहां दुबारा क्रांति हुई, सावधानी से अम-रीकी संविधानवाद का अनुसरण किया गया।

जर्मनी के महाकवि गेटे ने अमरीकी प्रयोग की सराहना में गीत लिखे। उनके एक गीत का शीर्षक था—'अमरीका तेरा भाग्य हमारी अपेक्षा श्रेष्ठ है'। शिलर भी उसकी सराहना में पीछे नहीं रहे। लेकिन प्रशा के फ्रेडरिक महान और आस्ट्रिया की मारिया थेरेसा तथा जोसेफ द्वितीय पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। जर्मनी के प्रसिद्ध वकील-राजनीतिज्ञ कार्ल शुर्ज ने जर्मनी के सामने अमरीका का उदाहरण रखते हुए कहा कि वहां की जनता स्वतंत्र है, वह किसी राजा के अधीन नहीं है, न वहां कोई सरदार या सामंत ही है, अनि-वार्य सैनिक सेवा की विवशता भी नहीं है। जर्मनी के प्रख्यात इतिहासकार क्रिस्टोफ डेनियल एबेलिंग ने १७७८ में अमरीका के भूगोल और इतिहास पर एक ग्रंथ प्रकाशित किया और उसमें उसे सच्चा स्वतंत्र गण-तंत्र कहकर उसकी सराहना की। मगर जर्मनी में गणतंत्रवादी तत्त्व पनपे नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी पोलैंड के गणतंत्रवादियों ने १७९१ में अमरीकी संविधान के नमूने पर एक संघीय संविधान तैयार कर डाला और १७९४ में वहां राजतंत्र के विरुद्ध एक भीषण संघर्ष हुआ, जो अंततः विफल हो गया। उधर रूस की सम्राज्ञी कैथरीन द्वितीय ने सं. रा. अमरीका से किसी भी प्रकार का संबंध स्थापित करने से इन्कार कर दिया। मगर वहां के बुद्धिजीवियों को अमरीकी प्रयोग से प्रबल प्रेरणा मिली। महाकवि ए. एन. रेडिशेव ने 'स्वतंत्रता' की प्रशंसा में एक काव्य रचकर उसमें अमरीका और जार्ज वाशिंगटन द्वारा संसार के सामने पेश किये गये उदाहरण की सराहना की तथा लिखा –'हम सब भी उस स्वतंत्रता की कामना करते हैं।'

सन १८२५ की दिसंबर क्रांति के पीछे भी अमरीकी प्रयोग की प्रेरणा काम कर रही थी। दिसंबरवादियों में से आधे लोग संवैधानिक राजतंत्र के विरुद्ध थे और गणतंत्र की स्थापना करना चाहते थे।

सन १८२१ में यूनानी देशभक्तों ने अमरीकी स्वतंत्रता से प्रेरित होकर तुर्की के उस्मानली साम्राज्य से मुक्ति के लिए संघर्ष छेड़ा और उसमें अमरीका की मदद मांगी। १८२७ में उन्होंने एक संविधान भी रच लिया। मगर अमरीका अपने राष्ट्र-पिता जार्ज वाशिंगटन की इस सलाह से बंधा था –'संसार के अन्य क्षेत्रों में स्वतंत्रता का संक्रमण होगा। लेकिन अमरीका को उन क्षेत्रों के सामने अपना उदाहरण मात्र रखना है, वह उनके मामले में हस्तक्षेप न करेगा।' यही स्थिति मेक्सिको और अर्जेंटाइना आदि दक्षिण अमरीकी देशों में भी हुई।

अहस्तक्षेप की नीति और गणतंत्रवादी शक्तियों का पराभव

जान एडम्स राष्ट्रपति रहे हों या जेम्स मनरो, एंड्रू जैक्सन या मिलार्ड फिल्मोर–सभी ने यूरोप तथा दक्षिण अमरीकी देशों के गणतंत्रवादियों को आर्थिक अथवा सैनिक सहायता देने से इन्कार ही किया। उन्होंने द्वितीय फ्रांसीसी गणतंत्र को मान्यता तो दी, लेकिन किसी प्रकार की मदद का वचन नहीं दिया। इसी तरह जर्मनी में फ्रैंकफर्ट असेंबली द्वारा अपनाया गया गणतंत्रवाद अमरीकी सहायता न प्राप्त कर सका और अंततः मर गया। यही गति हंगरी के गण-तंत्र की हुई। जब उसका क्रांतिकारी नेता कासुथ अमरीका गया, उसे खूब मदिरा पिलायी गयी, भोज दिये गये; मगर सहायता का एक भी आश्वासन नहीं दिया गया।

सलीवन का नियतिवाद और साम्राज्यवाद

इससे भी दुःखद बात यह हुई कि जीवन-धर्म की चेतना धीरे-धीरे अहंकार में परि-णत होती चली गयी। अमरीका की जनता के मन में यह भाव पैदा हो गया कि वह संसार की अन्य जातियों से भिन्न है तथा उसे अपनी संस्कृति के प्रसार का दैवी अधि-कार प्राप्त है। इस भावना को 'डेमोक्रैटिक' पत्रिका के संपादक जान एल. ओ'सलीवन ने १९ वीं शताब्दी के पांचवें दशक में मूर्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप दिया। उसने लिखा कि अमरीकी लोगों को विधाता ने विकास-विस्तार के लिए प्रशांत महासागर के तट तक का समूचा क्षेत्र प्रदान किया है, अतः हमारी यह स्पष्ट नियति है कि हम उस दिशा में फैलें।

इस विस्तारवादी महत्त्वाकांक्षा ने संयुक्त राज्य को मेक्सिको के साथ युद्ध में उलझाया। इसका विरोध स्वयं अमरीका के भीतर से उभरा और उसका नेतृत्व थॉरो ने किया। उन्होंने नगरपालिका को एक डालर का कर चुकाने से यह कहकर इन्कार कर दिया कि इस डालर का उपयोग दूसरी जातियों के विरुद्ध युद्ध लड़ने के लिए सैनिक अथवा बंदूक जुटाने में किया जा सकता है। अंततः राष्ट्रपति जेम्स पोल्क ने कैलिफोर्निया और न्यू मैक्सिको प्रदेश लेने के बाद युद्ध बंद कर दिया। इससे विस्तारवादी राजनीतिज्ञ उनसे अप्रसन्न हो गये।

तथापि यह स्वीकार करना ही होगा कि सं. रा. अमरीका ने इन नवार्जित प्रदेशों को दास बनाकर नहीं रखा। जेफरसन की क्षेत्रीय नीति के आधार पर १७८७ में जो अध्यादेश जारी किया गया, उसने नये क्षेत्रों को तेरह मूल राज्यों की बराबरी में पूर्ण राज्य का दर्जा प्रदान किया। विजित प्रदेशों के बारे में यह एक नवीन दृष्टिकोण था। इसी का यह परिणाम है कि आज संयुक्त राज्य में १३ के स्थान पर ५१ राज्य हैं।

भौतिक समृद्धि का आदर्श और विज्ञान का विकास

व्यक्तिगत स्वतंत्रता, नागरिकों के मूलभूत अधिकार, लोकतंत्रीय शासन-प्रणाली, संघवाद, घटक राज्यों की पारस्परिक समानता, राजकीय शक्तियों के पृथक्करण तथा अवरोध व संतुलन का सिद्धांत, न्यायालयों द्वारा संघ व राज्यों के कानूनों की न्यायिक समीक्षा और उन्हें रद्द करने का उनका अधिकार—ये सब महत्त्वपूर्ण राजनैतिक विचार और संस्थाएं विश्व के चिंतन और व्यवहार को संयुक्त राज्य की अपूर्व देन हैं। लेकिन इनके अतिरिक्त सं. रा. अमरीका ने भौतिक समृद्धि और विज्ञान के विकास के क्षेत्रों में जो कार्य किया है, वह भी अपने आपमें बेजोड़ है और उसका लाभ संसार के सभी देशों को मिला है। उसके उग्र प्रतिस्पर्धी रूस और चीन को भी।

खेती में संयुक्त राज्य ने जो प्रगति की है वह अनुपम है। यद्यपि उसकी आबादी का केवल ६ प्र. श. कृषिजीवी है, तथापि वह एक ढंग से समूचे संसार का खलिहान बना हुआ है और उसका अन्न रूस और चीन की मेजों पर भी परोसा जाता है। वास्तव में अमरीका की सबसे बड़ी शक्ति निहित है खेती और उद्योग के संतुलित विकास में। औद्योगिक दृष्टि से वह आज संसार का मूर्धन्य राष्ट्र है। परमाणु-शक्ति का मारक, उत्पादक दोनों प्रकार के कार्यों में सबसे पहले उसी ने विनियोग किया।

संयुक्त राज्य ने नागरिकों का जीवन-स्तर उठाने और इस तरीके से साम्यवादी अधिनायकवाद का सामना सफलतापूर्वक करने का उदाहरण संसार के सामने रखा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है । अल्प-विकसित और अविकसित नव-स्वाधीन देशों के विकास में उसने जो आर्थिक योगदान किया है, उसकी उपेक्षा कृतघ्नता से कम न होगी।

भारतीय संविधान जैसे पूर्ण लोकतंत्रीय संविधान के आदि-निर्माताओं ने संयुक्त राज्य के संविधान की अनेक मौलिक विशेषताओं को आत्मसात् किया। जैसे कि नागरिकों के मूलभूत अधिकारों का अनुल्लंघनीय घोषणापत्र, संघीय व्यवस्था, न्यायिक समीक्षा तथा निर्वाचित द्विसदनात्मक संसद। वस्तुतः भारतीय स्वाधीनता-योद्धाओं को अमरीकी स्वाधीनता-संग्राम के इतिहास से बहुत गहरी प्रेरणा मिली। गदर पार्टी जैसे क्रांतिकारी समूहों ने एवं लाला हरदयाल जैसे नेताओं ने संयुक्त राज्य में रहकर भारत की मुक्ति के लिए काम किया। लाला लाजपत राय को कई वर्ष तक वहीं पर रहना पड़ा, क्योंकि ब्रिटिश हुकूमत उन्हें भारत नहीं लौटने देती थी। जीवननिष्ठ वेदांत के उद्घोषक स्वामी विवेकानंद के विचार और संवेदन के क्षितिज को विस्तृत करने में उनकी अमरीका-यात्राओं का हाथ था।

प्रथम विश्वयुद्ध के समय और उसकी समाप्ति पर राष्ट्रपति विल्सन द्वारा प्रतिपादित १४-सूत्री कार्यक्रम अंततः संसार के अनेक राष्ट्रों के लिए आत्मनिर्णय के अधिकार की भूमिका बना। इसी प्रकार द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान राष्ट्रपति रूजवेल्ट की भूमिका संसार में फैलती हुई तानाशाही के खिलाफ काफी हद तक कारगर सिद्ध हुई। यह सही है कि रूजवेल्ट के बाद साम्यवाद को सीमा में रखने के नाम पर की गयी समूची अमरीकी कार्रवाई गलत और विफल रही तथा उससे संसार में अधिनायकवादी एवं अधिकारवादी शक्तियों को ही बल मिला। मगर यह भी सच है कि अमरीका की शक्ति के कारण ही सिद्धांतहीन साम्यवादी विस्तारवाद रुका हुआ है।

आंतरिक बल

अभी तक अमरीकी समाज की एक विलक्षण शक्ति यह रही है कि जब भी वह अपने पथ से विचलित होता है, विकारग्रस्त होता है, अपने ही भीतर से नये मार्गदर्शक तत्त्व उत्पन्न कर लेता है। उसकी यह आत्म-शोधन-प्रक्रिया, समग्र संसार के लिए अनुकरणीय है। इस आत्मशोधन-प्रक्रिया ने ही उस देश को मैकार्थी की धांधली, वाटर-गेट-कांड और वियतनाम-युद्ध जैसी भयानक भूलों से उबरने में समर्थ बनाया है और नीग्रो लोगों के प्रति अपनी अन्यायपूर्ण एवं संविधान-विरुद्ध रीति-नीतियों को तजने की प्रेरणा दी है।

अब्राहम लिंकन ने जब नीग्रो-दासता का अंत किया, तो कार्ल मार्क्स ने कहा था कि नीग्रो-स्वतंत्रता की घोषणा अमरीकी इतिहास की सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण घटना है। तथा उससे यूरोप के समाजवादियों को प्रेरणा मिली है। विश्व आज उपनिषद की भाषा में 'एकनीड' हो गया है; उसके किसी भी अंश में जो शक्ति और अच्छाई है, वह प्रत्यक्षतः या परोक्षतः सबके लिए हितकर है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका

आधुनिक विश्व-इतिहास पर अमरीका की छाप इतनी सुस्पष्ट और इतनी व्यापक है कि उसे नकारना या कम आंकना किसी सत्यदर्शी के लिए संभव नहीं। अमरीका का नाम ही रहा है नयी दुनिया—रूढ़ियों-परंपराओं, विषमताओं व साधनहीनताओं, इतिहास की विसंगतियों-विकृतियों के बोझ से दबी पुरानी दुनिया से दूर नये स्वप्नों, आकांक्षाओं, अवसरों, विकास एवं विस्तार की रचनात्मक संभावनाओं का एक नया संसार! यह नयी दुनिया एक साथ कितनी ही परस्पर-विरोधी प्रवृत्तियों की प्रेरक और प्रतीक रही है।

कोलंबस और अमेरिगो वेस्पुची की खोज-यात्राओं के बाद के आरंभिक दौर में नयी दुनिया यूरोपीय उपनिवेशवादियों के लिए औपनिवेशिक विस्तार-प्रसार का अपरिमित क्षेत्र रही। फिर १७७६ के स्वातंत्र्य-युद्ध और संयुक्त राज्य अमरीका की स्थापना के बाद वह यूरोप से लेकर एशिया तक फैली हुई पुरानी दुनिया के स्वातंत्र्य-योद्धाओं के लिए उपनिवेशवाद-विरोधी क्रांति का प्रेरणा-स्रोत रही। १७७६ में जेफरसन ने कहा था—'सभी मनुष्य समान सिरजे गये हैं।' १९४५ में वियतनाम के जनवादी गणतंत्र के निर्माण की घोषणा करते हुए कमोबेश यही शब्द डा. हो ची मिन्ह ने भी दुहराये थे।

लेकिन इतिहास अक्सर टेढ़ी चाल चलता है। ऐतिहासिक घटनावली की तह में काम करने वाली शक्तियों का यह विचित्र विद्रूप रहा है कि वियतनामी जनता के समता-अधिकार की स्थापना के संघर्ष में डा. हो ची मिन्ह को सबसे अधिक उग्र संघर्ष जेफरसन के उत्तराधिकारियों से ही करना पड़ा। अकेले वियतनाम में ही क्यों, समूचे एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका में आज सं. रा. अमरीका मानवीय स्वतंत्रता और लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति अपनी घोषित निष्ठा के बावजूद नव-उपनिवेशवादी, नव-साम्राज्यवादी महाशक्ति के रूप में अधिक पहचाना जाता है।

इसमें कोई संदेह नहीं कि अमरीका की इस विलोम (नेगेटिव) तस्वीर के लिए किसी हद तक शीतयुद्ध का प्रचार और साम्यवादियों का विश्वव्यापी शक्तितंत्र एवं प्रभावतंत्र उत्तरदायी है—लेकिन एक हद तक ही। ऐसा नहीं है कि अमरीका की नव-उपनिवेशवादी तस्वीर के मूल में कोई तथ्य न हो। वस्तुतः यह तस्वीर विश्व की पहली विशाल एवं सफल उपनिवेशवाद-विरोधी क्रांति करने वाले देश के कालांतर में स्वयं उपनिवेशवादी बन जाने का परिणाम है।

सं. रा. अमरीका की शक्ति और विचार-

साम्राज्यवाद-विरोध से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारा में समय के साथ हुए इस परिवर्तन को समझे बिना उसकी समसामयिक नीतियों, विश्वशक्ति के रूप में उसकी स्थिति और उस स्थिति की परिणतियों को समझा नहीं जा सकता। अमरीकी स्वतंत्रता की द्विशताब्दी के अवसर पर तो इस सबका विश्लेषण और भी आवश्यक है; क्योंकि यह इतिहास-प्रवाह में एक आधुनिक राष्ट्र के अपने मूल आदर्शों से भटककर शक्ति-कूटनीति के खेल में पूरी तरह उलझ जाने की दुःखद कहानी है।

शक्ति-कूटनीति का यह खेल प्रायः राष्ट्रवाद के नाम पर चला है। जैसे सब कहीं, वैसे ही अमरीका में भी राष्ट्रवाद के दो पहलू रहे हैं। एक पहलू है अपनी आशा-आकांक्षों की अभिव्यक्ति का; दूसरा पहलू है दूसरों से भय और आतंक का। आशा-आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में अमरीकी राष्ट्रवाद सं. रा. अमरीका के निवासियों के लिए एक नयी राष्ट्रीय पहचान की खोज का प्रयास रहा है। अमरीका को संघराज्य बनाने के समर्थकों के मन में भी मूलतः यही भावना थी। अमरीकी गृहयुद्ध का मुख्य उद्देश्य भी यही था—क्षेत्रीय भावना के मुकाबले में राष्ट्रीय एकात्मता को बलवती बनाना।

अमरीका में आदर्शोन्मुख राष्ट्रवाद की यह धारा सबसे प्रबल रूप में उभरी प्रथम विश्वयुद्ध के पहले। थियोडर रूजवेल्ट ने

* प्रयाग नारायण *

इसे 'नवराष्ट्रवाद' का नाम दिया, तो वुडरो विल्सन ने इसे 'नवस्वातंत्र्य' की संज्ञा दी। इसी दौर में उन लोगों की शक्ति बढ़ी, जो औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप पनपी विषमताओं एवं अन्यायों को दूर करने के लिए उत्तरोत्तर सामाजिक-आर्थिक सुधारों पर पूरा जोर दे रहे थे। इन सुधारकों ने अपने सुझावों को मनवाने के लिए अमरीकी राष्ट्रवाद के उदारतावादी पहलू पर जोर दिया। देशभक्ति की भावना जगायी गयी। लोकतांत्रिक सपनों को चरितार्थ करने वाले गणतंत्र के निर्माण का आह्वान दिया गया।

उन्हीं दिनों युवा पत्रकार वाल्टर लिपमन ने अपनी पुस्तक 'ड्रिफ्ट एंड मास्टरी' में लिखा था—'लोकतांत्रिक सुधारों के साथ अपने बढ़ते हुए गठबंधन से अमरीकी देशभक्ति को एक नयी प्रतिष्ठा मिल रही है। यह मानने का पर्याप्त आधार है कि देशप्रेम का अर्थ सिर्फ देशप्रेम है; दूसरे देशों के प्रति घृणा नहीं।'

लेकिन यह तो अमरीकी राष्ट्रवाद का एक पहलू था—सो भी अपेक्षाकृत निर्बल पहलू। अधिक महत्त्वपूर्ण और प्रभावी पहलू तो रहा है विस्तारवादी स्वप्न! इस पहलू को अमरीकी इतिहास के अध्येता फ्रेडरिक जैक्सन टर्नर ने पिछली शताब्दी के

से लेकर साम्राज्यवाद तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंत में ही अच्छी तरह समझ लिया था। १८९६ में 'एटलांटिक मंथ्ली' पत्रिका में एक लेख में उन्होंने लिखा था—'लगभग तीन शताब्दियों से, विस्तार अमरीकी जीवन का एक प्रमुख तथ्य रहा है।' (डेविड होरोविट्ज द्वारा इंपीरियलिज़्म एंड रेवोल्यूशन' में उद्धृत)

उन्नीसवीं सदी के अंत तक यह विस्तारवाद उत्तरी अमरीका की प्रकृति-निर्मित भौगोलिक चौहद्दी में ही चला। यूरोपीय उपनिवेशवाद की वहां समाप्ति (१७७६) के बाद इसका उद्देश्य हो गया अमरीकी पूंजीवाद की निरंतर बढ़ती हुई भूमि एवं प्राकृतिक साधनों की भूख की पूर्ति करना और रेड इंडियन मूल निवासियों को खत्म करके उनकी भूमि हड़पना। इस विस्तारवाद को सं. रा. अमरीका के राष्ट्रीय ध्येय और संवैधानिक ढांचे में शामिल करने की पूरी कोशिश हुई। ऊपर से तो यह विस्तारवाद यूरोपीय उपनिवेशवादियों के औपनिवेशिक शोषण से भिन्न दिखता था; परंतु व्यवहार में यह अश्वेत मूल निवासियों पर श्वेत लोगों का तानाशाही शासन था।

इसके लाभ स्पष्ट थे। जैसा कि फ्रडरिक जैक्सन टर्नर ने कहा था, देश की भौगोलिक सीमाओं के निरंतर विस्तार से अमरीकी उद्योग और व्यक्तिवाद को फूलने-फलने का अवसर मिला। इतना ही नहीं, इस विस्तारवाद की बदौलत ही देश आंतरिक कलह और विग्रह से भी बचा रहा। इसी से यह निष्कर्ष भी निकाला गया कि सं. रा. अमरीका की आंतरिक स्वतंत्रता और समृद्धि को सुरक्षित रखने के लिए सतत विस्तार अपरिहार्य है।

यह बात सबसे अधिक स्पष्ट शब्दों में १८७३-८३ के आर्थिक संकट के दौर में बार-बार दुहरायी गयी। उन दिनों अमरीकी उद्योगपतियों के गोदामों में अतिरिक्त माल का ढेर लगा हुआ था। मजदूरों में असंतोष भड़कता जा रहा था। 'पश्चिम' की ओर फैलने का अभियान कमोबेश पूरा हो चुका था। उधर यूरोपीय शक्तियों के बीच दुनिया के बचे-खुचे खुले बाजारों को पूरी तरह से अपनी मुट्ठी में बंद करने के लिए आपसी होड़ बढ़ रही थी। इस होड़ का सबसे बड़ा केंद्र था चीन। उसके विशाल बाजार पर कब्जा करने के लिए परस्पर टकरा रही यूरोपीय शक्तियां उसकी बंदरबांट करने पर तुली हुई थीं।

राष्ट्रपति मनरो

इस स्थिति को चलते रहने देने का अर्थ था अमरीकी उत्पादन के लिए चीन के बाजार का द्वार बंद हो जाना, यानी अमरीकी अर्थव्यवस्था के आर्थिक संकट को विकटतर होने देना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो कहने के लिए तो चीन को यूरोपीय उपनिवेशवादियों से बचाने को, मगर वस्तुतः अपने माल के लिए चीन का बाजार खुला रखने को अमरीका ने 'खुले' द्वार' की नीति को अपनाया। बाद में खुद उसके राष्ट्रपति वुडरो विल्सन ने कहा—'यह खुला द्वार चीन के अधिकारों के लिए नहीं, बल्कि अमरीकी माल के लिए ही खुला हुआ था।'

'खुले द्वार' की इस नीति के प्रतिपादक थे राष्ट्रपति विलियम मैकिन्ले (१८९७-१९०१) और उनके विदेश-सचिव जॉन हे। मैकिन्ले के प्रशासन-काल में ही अमरीकी विस्तारवाद ने चौतरफा पांव पसारे। जब स्पेनी उपनिवेशवादी क्यूबा के क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों को दबाने में विफल रहे, तो अमरीका ने १८९८ में क्यूबा को स्पेनी अत्याचार से मुक्त कराने के नाम पर अपने कब्जे में ले लिया। दिलचस्प बात यह है कि क्यूबा के संविधान के एक मसौदे को अमरीकी युद्ध-मंत्रालय ने यह कहकर रद्द कर दिया कि इसमें अमरीका-क्यूबा के भावी संबंधों के बारे में कोई प्रावधान नहीं है। क्यूबा से अमरीकी सेनाएं तभी हटायी गयीं, जब उसने अमरीका को नौसैनिक अड्डे, कोयला-क्षेत्र आदि देने की बात अपने संविधान में कबूल कर ली। यह प्रावधान १९३४ तक चला। (रिचर्ड मॉरिस : द इमर्जिंग नेशन्स एंड द अमेरिकन रेवोल्यूशन)

राष्ट्रपति मैकिन्ले के प्रशासन-काल में ही अमरीका ने हवाई, पोर्टो रिको और ग्राम पर कब्जा किया और फिलिपाइन पर भी अधिकार करने के लिए सेना भेजी। फिलिपाइन-अभियान में उसका घोषित उद्देश्य था वहां जनता को स्पेनी साम्राज्य से मुक्त कराना; पर असली मकसद था उस द्वीप-समूह पर अधिकार करने के जरिये अमरीकी माल के लिए चीन के बाजार में प्रवेश-द्वार खोलना और दक्षिण-पूर्व एशिया में अमरीका की उपस्थिति को जाहिर करना।

सो फिलिपाइन को स्पेनी साम्राज्य से मुक्त कराने को आये ६०,००० अमरीकी नौसैनिकों ने शीघ्र ही अपनी तोपों व राइफलों के मुंह फिलिपाइनी राष्ट्रवादियों की ओर मोड़ दिये। दो-तीन वर्ष तक चले उस संघर्ष में २०,००० से अधिक फिलिपाइनी मारे गये। यों तो उस वक्त भी राष्ट्रपति मैकिन्ले कहते ही रहे—'फिलिपाइन हमारा है—शोषण के लिए नहीं, उसका विकास करने, उसे सभ्य-सुशिक्षित बनाने और उसे स्वशासन का प्रशिक्षण देने के लिए।' परंतु क्यूबा की तरह वहां भी अमरीका का सबसे प्रमुख काम रहा उस देश के प्राकृतिक संसाधनों को दुहना और उसे पिछड़ा, अविकसित एवं परतंत्र बनाये रखना।

कोई आधी सदी बाद ४ जुलाई १९४६ को फिलिपाइन को औपचारिक रूप से राजनैतिक स्वतंत्रता तो मिल गयी, फिर भी उसकी अर्थ-व्यवस्था कमोबेश औपनिवेशिक ही बनी रही—पूरी तरह से अमरीकी पूंजी पर आश्रित तथा पिछड़ी हुई।

बीसवीं सदी की अमरीकी विदेश-नीति की स्थूल रूपरेखा पिछली सदी के अंतिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रहर की इन हरकतों ने ही तैयार की।

पुराने साम्राज्यवादियों के प्रभुत्व को परिसीमित करने के बहाने अपना आर्थिक साम्राज्य और राजनैतिक प्रभुत्व बढ़ाने का अमरीकी अभियान निरंतर जारी रहा—चीन में 'खुले द्वार की नीति' के रूप में, तो दक्षिण अमरीका में 'मनरो सिद्धांत' के आवरण में। उन्नीसवीं सदी के दूसरे दशक में राष्ट्रपति मनरो (१८१७-२५) और उनके विदेश-सचिव जॉन क्विन्सी एडम्स द्वारा प्रतिपादित इस सिद्धांत में सं. रा. अमरीका ने यूरोप के मामलों में हस्तक्षेप न करने का वचन दिया था, बशर्ते यूरोप भी पश्चिमी गोलार्ध के मामलों में हस्तक्षेप न करे। व्यवहार में यह घोषणा दक्षिण अमरीका को पूर्णतया सं. रा. अमरीका का प्रभाव-क्षेत्र बना डालने की कूटनीति बन गयी।

इसका सबसे स्पष्ट उदाहरण सामने आया राष्ट्रपति वुडरो विल्सन के प्रशासन-काल में। 'लीग ऑफ नेशन्स' के माध्यम से एक नयी विश्व-व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत करने वाले विल्सन ने प्रथम महायुद्ध के दौर में यह घोषणा की थी कि न्याय के पक्षधर के रूप में ही हम इस युद्ध में उतरे हैं। युद्ध के बाद वर्साई-संधि के समय उन्होंने 'लीग ऑफ नेशन्स' के घोषणा-पत्र में राष्ट्रों के आत्मनिर्णय-अधिकार को मान्यता दिलाने का भी भरपूर प्रयास किया था।

लेकिन इसके बावजूद दक्षिण अमरीका में विल्सन की अपनी नीति कमोबेश साम्राज्यवादी ही थी। उन्हीं के आदेश पर अमरीकी नौसैनिक १९१४ में मेक्सिको में वेरा क्रुज में उतरे थे। उन नौसैनिकों के बल पर ही सं. रा. अमरीका से सहानुभूति रखने वाली सरकार मेक्सिको पर थोपी गयी।

वस्तुतः १९०० से १९१७ के बीच के क्रांतिकारी उथल-पुथल के दौर में अमरीका ने अपनी संपत्ति की सुरक्षा तथा अपने स्वार्थों के अनुकूल सरकारों की स्थापना के लिए कोलंबिया से लेकर चीन तक बीस से अधिक बार सैनिक हस्तक्षेप किया। पनामा नहर के निर्माण और प्रशासन का अधिकार पूरी तरह अपने काबू में रखने के लिए उसने १९०३ में न केवल अपने युद्धपोत ही भेजे, बल्कि कोलंबिया के एक प्रदेश में विद्रोह करवाकर उसे पनामा के नाम से स्वतंत्र राष्ट्र बनवा दिया। और यह सब हुआ 'नवराष्ट्रवाद' का नारा देने वाले थियोडोर रूजवेल्ट के समय में!

प्रथम महायुद्ध के बाद सं. रा. अमरीका कुछ समय के लिए अंतरराष्ट्रीय घटना-क्रम से अलग हट गया—इतना अलग कि स्वयं अपने राष्ट्रपति की प्रेरणा से बनी 'लीग ऑफ नेशन्स' में भी वह शामिल नहीं हुआ। फिर आया द्वितीय विश्वयुद्ध। उसमें अमरीका की साझेदारी, हिरोशिमा-नागासाकी पर परमाणु-बमों के प्रयोग और युद्ध-समाप्ति के बाद संयुक्त राष्ट्रसंघ के निर्माण आदि की कहानी यहां दुहराने की आवश्यकता नहीं। यह एक साथ दुहरी क्रांति का संधिकाल था। एक ओर सोवियत संघ के प्रभाव और सहायता से साम्यवाद व।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रसार हो रहा था; दूसरी ओर, एशिया, अफ्रीका के देश आत्मनिर्णय के अधिकार की मांग कर रहे थे। यूरोपीय उपनिवेशवाद अंतिम सांसें गिन रहा था।

इसी दुहरी क्रांति से पनपा शीतयुद्ध का वातावरण। पहले तो अमरीका ने यूरोप में सोवियत प्रभाव के विस्तार को रोकने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देने की बात कही। फिर वह सारी दुनिया में स्वतंत्रता का प्रहरी होने का दावा करने लगा। उसने १९४७ में प्रतिपादित 'ट्रूमन सिद्धांत' के अंतर्गत यूनान और तुर्की को सैनिक सहायता का वचन दिया और यह भी वादा किया कि सं. रा. अमरीका 'जो स्वतंत्र राष्ट्र सशस्त्र अल्पमतों द्वारा अथवा बाहरी दबावों के माध्यम से परतंत्र बनाये जाने की कोशिशों के खिलाफ जूझ रहे हैं, उनका समर्थन करेगा।'

फिर सन ५० वाले दशक में तो शीतयुद्ध ने पूरा जोर पकड़ा। अमरीकी विदेश-मंत्री जॉन फास्टर डलस ने साम्यवाद के प्रसार के विरुद्ध शस्त्रसन्नद्ध अमरीकी सैनिक अड्डों एवं नैटो, सेंटो, सीएटो सामरिक संधि-संघटनों का व्यापक जाल यूरोप से लेकर दक्षिण-पूर्व एशिया तक बिछा दिया। डलस की दृष्टि में साम्यवाद और स्वतंत्रता के बीच संघर्ष था और उसमें तटस्थ रहना अनैतिक था।

वस्तुस्थिति यह थी कि शीतयुद्ध के मुहावरों की ओट में एक ओर साम्यवादी रूस दम तोड़ते हुए पश्चिमी साम्राज्यों के पुराने उपनिवेशों में अपना प्रभाव जमाना चाह रहा था, तो दूसरी ओर अमरीका इन क्षेत्रों में उत्पन्न हुए 'शक्ति शून्य' (पावर-वैक्युअम) को भरने का प्रयास कर रहा था।

जो भी हो, उग्र परिवर्तनों एवं राष्ट्रवादी क्रांतियों के दौर में यथास्थितिवादी शक्तियों के समर्थन की अमरीकी नीति 'आइजनहावर सिद्धांत' के रूप में सामने आयी। इसके अनुसार, अमरीका साम्यवाद के प्रसार को सीमित रखने के लिए वचनबद्ध था; परंतु परोक्ष रूप से वह साम्यवाद के खतरे से घिरे देशों में यथास्थिति बनाये रखने के लिए भी वचनबद्ध हो गया।

सन १९६० तक सं. रा. अमरीका प्रतिगामी, फासिस्ट तानाशाही शासन-व्यवस्थाओं और निरंकुश सल्तनतों को सहारा देते हुए उनके साझे में प्रतिरक्षा-संधियों का जटिल जाल बुन चुका था। अब अमरीका का अर्थ था—स्थापित व्यवस्थाओं का एक ऐसा शक्तिशाली पक्षधर, जो कि अपने हर स्वार्थपूर्ण कार्य को ईश्वर द्वारा सौंपे गये दायित्व के रूप में देखता है। तभी तो जॉन एफ. केनेडी जैसे राष्ट्रपति ने भी यह दावा किया —'इस देश में हम लोग, हमारी पीढ़ी के लोग—अपनी इच्छा से नहीं, वरन नियति से—स्वतंत्रता के प्राचीरों के प्रहरी हैं।'

स्वातंत्र्य के प्राचीरों का अर्थ एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमरीका में दारुण दरिद्रता, आर्थिक विषमता एवं सामाजिक अन्याय की पुरानी, जीर्ण-शीर्ण व्यवस्था को बरकरार रखना भी हो सकता है, इसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओर अमरीका के सत्ताधारियों का ध्यान गया ही नहीं। यदि कभी गया भी, तो उन्होंने यथास्थितिवादी शक्तियों और व्यवस्थाओं के हाथों में डालरों की थैलियां थमाकर अपने कर्तव्य की इतिश्री मान ली।

इस नीति के चलते दक्षिण-पूर्वी एशिया, में–विशेषत: वियतनाम में–क्या हुआ, यह हमारे निकट अतीत का अनुभव है। अमरीकी स्वातंत्र्य के १९९ वें वर्ष में जैसे इतिहास-चक्र ने एक चक्कर पूरा कर लिया। वियतनाम, लाओस और कंबोडिया में महाशक्ति अमरीका को अपमानित होना पड़ा। उसने साम्यवाद को रोकने के नाम पर भ्रष्ट शासन-व्यवस्थाओं का जो समर्थन किया था, वही साम्यवाद के प्रसार का कारण बना।

वस्तुस्थिति यह है कि एशिया की क्रांतिकारी परिस्थिति में अमरीका एशियाई राष्ट्रवाद की नजरों में यथास्थिति और शोषण का प्रतीक बनकर रह गया है। वह उपनिवेशवाद के विरुद्ध अपने उज्ज्वल स्वातंत्र्य-संग्राम की परंपरा को (जिसकी आज वह द्विशताब्दी मना रहा है) जीवंत रूप में एशिया के सामने नहीं रख सका; बल्कि उसने निरंकुश व्यवस्थाओं के साथ गठबंधन करके अपने लोकतांत्रिक आदर्शों, स्वतंत्रता व राजनैतिक समता के सिद्धांतों को भी धूमिल कर लिया। परिणाम ? नवस्वतंत्र देशों में आज अमरीका की एक ही तस्वीर है–विस्तारवादी महाशक्ति की।

मैक्स लर्नर ने अपनी प्रख्यात पुस्तक 'अमेरिका एज़ ए सिविलाइज़ेशन' के दूसरे खंड में ठीक ही लिखा है–'अमरीकियों के लिए स्थिति इसलिए भी कठिन हो गयी है कि स्वयं अपने इतिहास और क्रांतिकारी समाज को भुला बैठे इन लोगों को आज क्रांति से घिरी हुई दुनिया का सामना करना पड़ रहा है। जहां-कहीं भी साम्यवादियों ने सत्ता पायी है, वहां उन्होंने मार्क्सवादी तर्क और लोकतंत्र-युग से पहले की निर्ममता की मिली-जुली तकनीक इस्तेमाल की है। कम विकसित क्षेत्रों में वे राजनैतिक और आर्थिक रूप से काफी सफल भी रहे हैं। अमरीका की क्रांतिकारी तकनीक रही है उन्मुक्त समाज में प्रौद्योगिक परिवर्तन की। उसने आर्थिक विकास को महत्त्वपूर्ण मूल्य के रूप में स्वीकार किया है और उन्मुक्त समाज के प्रति पूरी न सही तो भी सच्ची निष्ठा उसकी विशेषता रही है। अमरीका को और विश्व को आज यही गुत्थी सुलझानी है कि क्या अमरीका की सच्ची क्रांतिकारी परंपरा का आज के विश्व-शक्ति-संतुलन तथा लोगों के मन जीतने के संघर्षों के लिए फलदायी उपयोग हो सकता है, या अमरीका के विश्वशक्ति बनने की प्रक्रिया में यह परंपरा जड़ हो गयी है ?'

निश्चय ही आत्मान्वेषण और आत्मविश्लेषण की दृष्टि से अमरीका के लिए काफी देर हो गयी है। परंतु उसके अपने क्रांतिकारी अतीत के पुनर्मूल्यांकन और आधुनिक संदर्भ में उसकी सार्थकता खोजने के लिए द्विशताब्दी से बढ़कर अच्छा अवसर कौन-सा हो सकता है?

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत

नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान
और मनोरंजन

अहरणीय अधिकार

इन सत्यों को हम स्वयंसिद्ध मानते हैं; कि सब मनुष्य समान सिरजे गये हैं; कि उनके सिरजनहार ने उन्हें कतिपय अहरणीय अधिकार प्रदान किये हैं; कि जीवन, स्वतंत्रता एवं सुख का संधान इनमें से हैं; कि इन अधिकारों की सुरक्षा के लिए मनुष्यों के बीच सरकारें स्थापित की जाती हैं, जो अपनी न्यायोचित शक्तियां शासितों की सहमति से प्राप्त करती हैं; कि जब कभी सरकार का कोई रूप इन लक्ष्यों के लिए घातक बन जाये, तब जनता को यह अधिकार है कि वह उसे बदले या समाप्त कर दे और नयी सरकार स्थापित करे—उसकी नींव ऐसे सिद्धांतों पर रखे और उसकी शक्तियों को इस रूप में व्यवस्थित करे, जिसे वह अपनी सुरक्षा और सुख का सर्वाधिक साधक समझती हो।

—अमरीकी स्वाधीनता घोषणा-पत्र से

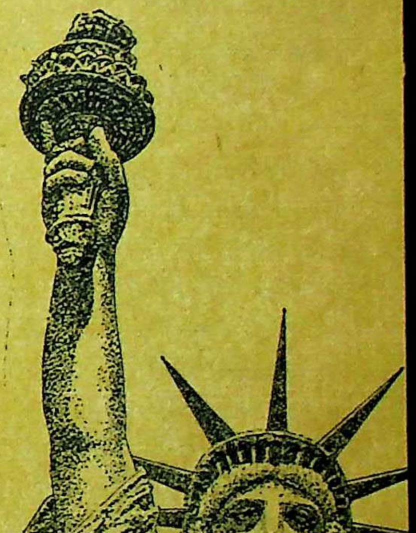

स्वाधीनता की प्रतिमा, न्यूयार्क
[अनुकृति : वी. एन. ओके]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबीर

जीवन-तीर्थ

दया वह भाषा है, जिसे गूंगे भी बोल सकते हैं, बहरे भी सुन सकते हैं।

—क्रिश्चेन नेवेल बोवी

ये शब्द आज हमारे हृदय को वैसा झंकृत नहीं कर पाते, जैसा कि उन्हें करना चाहिये। कारण, आज का जीवन निरंतर स्वकेंद्रक होता जा रहा है। वैसे भी, 'दया' शब्द क्षुद्र सिक्का बन गया है। तरस खाकर भिखारी को दो पैसे देना, या कमजोर को हिकारत के साथ बख्श देना आज 'दया' है।

किंतु जिसे गोस्वामी तुलसीदास ने 'धरम का मूल' कहा है और 'जब लग घट में प्रान' न छोड़ने की नसीहत दी है—वह दया इस प्रकार राजरथ से फेंका जाने वाला क्षुद्र सिक्का नहीं है; वह तो राहकिनारे पड़े हुए दीन-हीन को उठाकर राजरथ में बैठा लेने वाला उफनता प्यार है।

दया प्रेम की चेरी है। —डेनियल

दया सदा ऊपर से नीचे की दिशा में ही नहीं बहती; नीचे से ऊपर को भी वह सकती है—या वस्तुत: उसमें ऊपर-नीचे जैसा कुछ नहीं होता।

एक दिन थके-हारे, निराशा से घिरे अमरीकी कवि-पत्रकार यूजीन फील्ड किसी होटल में जाकर बैठे। बैरे ने पूछा—'कहिये, क्या चाहिये?'

'एक गिलास पानी।'

'और?'

'और?... दे सको तो थोड़ी हमदर्दी।'

'अभी लाया।' कहकर बैरा चला गया।

फिर वह पानी का गिलास लेकर आया और यूजीन फील्ड से बड़े अपनेपन से बातें करने लगा। थोड़ी देर में निराशा से मुक्त होकर यूजीन फील्ड बैरे का हार्दिक धन्यवाद करके विदा हुए।

दया मनुष्य का जन्मजात गुण नहीं है। बच्चे और असभ्य आदिम मानव सदा ही क्रूर होते हैं। दया प्रयत्नपूर्वक अर्जित की जाती है और बुद्धि के संस्कार से निखरती है। —डा. जान्सन

यदि दया मनुष्य का सहज गुण होती, तो बुद्ध और ईसा, असीसी के संत फ्रांसिस और संत गाडगे महाराज, गांधी और श्वाइत्जर विरले जीव न होते। उपनिषद में प्रजापति द्वारा देवों, मानवों व दानवों को 'द' अक्षर का उपदेश दिये जाने की कथा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। वहां प्रजापति ने 'द' का अर्थ दानवों को 'दयध्वम्' बताया था। मानव मात्र के हृदय में जो दानव है, उसे प्रजापति का आदेश है—'दयध्वम्' (दया करो)। दया के निरंतर, विनम्र अभ्यास से जो अपने भीतर के दानव को मानव में परिणत कर लेता है, वही देवत्व-दिशा में पग बढ़ा सकता है।

इस दया का मूल है, अपने को दूसरे के स्थान पर रखकर उसके दर्द को महसूसना, उसकी कठिनाई को समझना। भारतीय चिंतन-परंपरा में कहें तो 'आत्मौपम्य'।

अमरीकी गृहयुद्ध के समय जनरल रोज-क्रास ने एक ऐसे सेनाधिकारी का मामला राष्ट्रपति लिंकन के पास विचारार्थ भेजा, जो गद्दारी करता हुआ पकड़ा गया था और कानूनन मौत की सजा का पात्र था।

लिंकन ने जांच करके जनरल को लिखा :

'...... इस मामले में किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने की मेरे लिए गुंजाइश नहीं है। सो मैं ये कागज-पत्र इस विश्वास के साथ लौटा रहा हूं कि आप जो भी कदम उठायेंगे, वह न्यायसंगत ही होगा। परंतु साथ ही, मेरी प्रार्थना है कि यह कदम आप बदले की भावना से नहीं, बल्कि भविष्य की सुरक्षा को ध्यान में रखकर उठायें, और इस बात का भी खयाल रखें कि हम किसी बाहरी दुश्मन के खिलाफ नहीं, बल्कि अपने भाइयों के साथ लड़ रहे हैं हमा.....री नीति होनी चाहिये—दया से जीतो।'

यह दया मनुष्य को न्यायाधीश के बजाय चिकित्सक बनाती है। जब हृदय में इस दया का प्रकाश होता है, तब जैसा कि रामानुजाचार्य का आदेश है, अपराधी और पापी हमें रोगी के रूप में दिखने लगते हैं, उनके स्वास्थ्य-लाभ के लिए कुछ करने की तड़प हमारे मन में जगती है।

जब यह दया मानव-कुटुंब तक सीमित रहने से इन्कार करके जीवमात्र के प्रति बहने लगती है, तब राजा शिबि की तरह कबूतर का बचाव करना ही नहीं, बल्कि कबूतर का पीछा करते बाज को अपना मांस खिलाना भी अपना धर्म प्रतीत होने लगता है। इसी दया को 'भूतदया' कहा गया है। इसी के प्रसार की प्रार्थना करते शंकराचार्य 'विष्णु-षट्पदी' में कहते हैं—'भूतदयां विस्तारय'।

दया जब क्षणिक स्फुरदीप्ति न रहकर जीवन का स्थिर आलोक बन जाती है, तब जीवन एक काव्य बन जाता है—बहुधा वीर-काव्य। सड़क पर अपने ही वमन और मल में पड़े-पड़े दम तोड़ते अभागों को लपककर गोद में लेने वाली मां तेरेसा, अपने बनाये टीके की उपयोगिता की जांच करने के लिए रोग-कीटाणुओं को अपने शरीर में प्रविष्ट कराने वाले विज्ञानी पाश्चर और डा. साल्क का जीवन क्या किसी सिकंदर या नेपोलियन के जीवन से कम वीरतापूर्ण है !

तभी तो भारत के प्राचीन काव्यशास्त्रों में दयावीर की कल्पना की गयी है। किंतु दयावीर वीरों में सबसे विरल होता है, इसीलिए विश्व-साहित्य में ऐसे नाटक और महाकाव्य इने-गिने ही हैं, जिनका नायक दयावीर हो।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका का प्रभाव

इंदिरा गांधी

हर देश को अंततः अपनी राह खुद ही बनानी पड़ती है। लेकिन आजादी के योद्धाओं के रूप में हमें दूसरी सभी क्रांतियों में गहरी दिलचस्पी रही है। पश्चिम के उदार विचारों ने हमारा बहुत मार्गदर्शन किया है और अमरीकी स्वाधीनता की घोषणा ने–जिसमें सब मनुष्यों की समानता का दावा है–तो हमें गहरा आंदोलित किया है। आपके राष्ट्र-स्थापकों के प्रेरणादायी शब्द हमारे नेताओं के लिए शक्ति के स्रोत थे। केवल भारत का ही नहीं, सारे संसार का इतिहास अमरीकी क्रांति से बहुत ही गहरा प्रभावित हुआ; क्योंकि उसने उपनिवेशवाद और नस्लवाद की बुराइयों पर ध्यान केंद्रित करने वाली विचार-प्रक्रियाओं को तीव्र बनाया और स्वतंत्रता-आंदोलनों से सहानुभूति रखना निरंतर अधिकाधिक लोगों के लिए संभव बनाया। इस तरह गुप्त मानवीय क्षमताएं- बंधन-मुक्त हुई और सभ्यता समृद्ध बनी।

अपने व्यक्तित्व के निर्माण में शामिल नाना प्रभावों को पृथक् पहचानना वैसा ही कठिन होता है, जैसे कि बहुत नफीस बुने हुए कपड़े के तागों को अलग करना।

आपके कई कर्मवीर साथ-साथ चिंतक भी रहे हैं। जेफरसन और लिंकन उत्तम उदाहरण हैं ऐसे आदर्शवादियों के, जो बहुत ही व्यावहारिक भी थे। उनके वचन महान साहित्य का अंग बन चुके हैं। टामस पेन के स्वतंत्रता-विषयक लेखन ने भी मुझ पर गहरा असर डाला। 'अंकल टाम्स कैबिन' तथा नीग्रो लोगों की स्थिति से संबंधित अन्य पुस्तकों ने मेरा ध्यान अपने ही देश के शोषित एवं दलित वर्गों पर केंद्रित किया। बाद के लेखकों में से सिंक्लेयर लूइस और अप्टन सिंक्लेयर ने मेरी सामाजिक चेतना को तीव्रतर बनाया।

अमरीकी लेखन ने अंग्रेजी भाषा को ओजस्वी बनाया है और अंग्रेजी साहित्य को नये विचार दिये हैं। आधुनिक अमरीकी लेखन इतना विपुल है कि उन तमाम लेखकों

प्रसिद्ध अमरीकी विचार-पत्रिका 'सैटर्डे रेव्यू' ने कुछ समय पूर्व अनेक विश्वनेताओं से पूछा था कि अमरीकी इतिहास का आपके देश पर तथा अमरीकी साहित्य का आप पर क्या प्रभाव पड़ा। हमारी प्रधान-मंत्री ने जो उत्तर दिया, वह 'सैटर्डे रेव्यू' से साभार उद्धृत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और कवियों के नाम गिनाना संभव नहीं, जिनकी रचनाओं से मैंने आनंद पाया है। यह कहना कठिन है कि उन्होंने मुझे प्रभावित किया, या कि मेरे मूक विचार जिस अभिव्यक्ति को खोज रहे थे, वह मैंने उनके शब्दों में पायी।

मैंने थॉरो को इसलिए पढ़ा कि महात्मा गांधी पर उनका प्रभाव था; किंतु मेरे प्रकृति-प्रेम को जब उससे एक नया आयाम मिला, तो मैं आनंदित हो उठी। आज जब हम चारों ओर प्रकृति को नष्ट और भ्रष्ट किये जाते देखते हैं, थॉरो के विचारों की प्रासंगिकता बिलकुल नये सिरे से मेरी समझ में आती है।

एडगर एलन पो मुझे विशेष प्रिय हैं। ह्विटमन इतने बलिष्ठ, इतने दुनियावी, साथ ही साथ इतने उन्मुक्त और स्वतंत्र! यूजीन ओ'नील मानव-संबंधों का क्षय कर देने वाली वेदनाओं और संघर्षों के निरूपण में इतने निष्ठुर! और टी. एस. एलियट—नये परिप्रेक्ष्य और गहरे चीरती विश्व-व्यापी अंतर्दृष्टि से कविता और मानवीय चेतना के क्षितिजों के विस्तार करते हुए; हलचल के बीच मौन के स्थिर बिंदु का स्पर्श करते हुए; विचार और कर्म के बीच आ पड़ने वाली परछाईं से अवगत!

मुझे पाल टिलिच के अस्तित्ववादी रुख में दिलचस्पी है। विशेषत: गहरी धार्मिक अवस्थाओं से उसे जोड़ने के उनके प्रयत्न में। उन्होंने अंतिम उत्तर नहीं पाये हैं। शायद अंतिम उत्तर हैं भी नहीं। एरिक

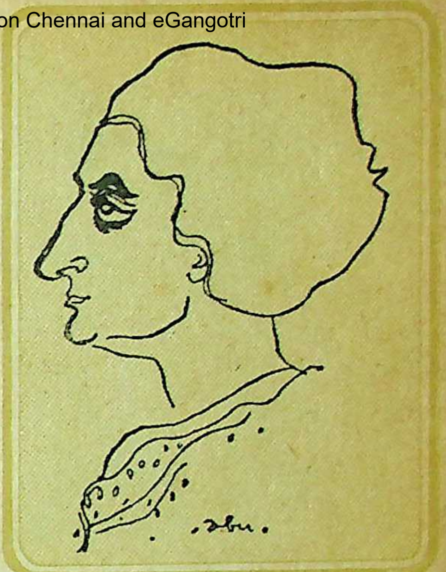

फ्रॉम ने व्यक्ति और टेक्नोलाजी के बीच ज्यादा संतोषप्रद संबंधों की राह सुझायी है।

अधिक समकालीन नामों पर जाने की हिम्मत मैं न करूंगी। किसका नाम गिनाऊं, किसका छोड़ूं? इनमें कई ने सामाजिक परिदृश्य के निष्ठुर बोध द्वारा आत्मतुष्टता को छिन्न-भिन्न किया है या परिचित विषय को एक नया मोड़ दिया है। अश्वेत लेखकों के आवेश और प्रतिवाद ने मेरे हृदय को छुआ है और उनके शब्दों और बिंबों के निपट सौंदर्य ने मुझे आह्लादित किया है। सर्वथा भिन्न कोटि में, बकमिंस्टर फुलर कभी-कभी घबराहट में डालते हैं, सदा ही विचारों को उत्तेजित करते हैं—वर्तमान को खींचकर भविष्य से जोड़ते हुए; निरर्थक और महज

[शेष पृष्ठ ६० पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगोपाल नेवटिया लेख-प्रतियोगिता

नवनीत के संस्थापक **श्री श्रीगोपाल नेवटिया** को दिवंगत हुए आगामी १९ सितंबर को एक वर्ष पूरा होगा। यों नवनीत स्वयं ही उनका स्मारक है, फिर भी इस अवसर पर उनके विशेष स्मरणार्थ एक लेख-प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

स्वर्गीय श्रीगोपालजी यात्रा-रसिक थे और सरस यात्रा-वर्णन लिखने में विशेषतः सिद्धहस्त थे। इसलिए इस लेख-प्रतियोगिता का विषय यात्रा-वर्णन ही रखा गया है। इसमें आप देश या विदेश की अपनी किसी यात्रा का वर्णन लिखकर भेज सकते हैं। वर्णन मौलिक, रसपूर्ण तथा वर्णित स्थान के रंग-गंध से भरा हो।

पुरस्कार तीन होंगे : प्रथम ५०० रु.; द्वितीय ३०० रु.; तृतीय २०० रु.।

शब्दसीमा : २००० शब्द के आस-पास।

लेख भेजने की अंतिम तिथि : १ सितंबर १९७६।

यह प्रतियोगिता सभी के लिए खुली है। नवनीत द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ-समिति इसमें निर्णायक होगी और उसका निर्णय अंतिम होगा।

लेख भेजने का पता :

श्रीगोपाल नेवटिया लेख-प्रतियोगिता

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१ ताडदेव, बंबई-३४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

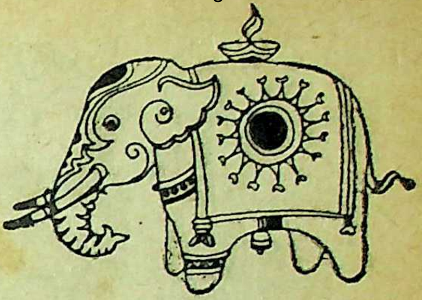

वाक्यदीप

अत्यधिक सुख से अधिक दुःखदायी और अत्यधिक स्वतंत्रता से अधिक बंधनकारी कुछ नहीं होता। * पूरी ईमानदारी के साथ जनता की सेवा के साथ-साथ उसे पूरी तरह से खुश भी कर पाना संभव नहीं है।

हम कितन ही आधुनिक हों, हमारा रक्त आदिम ही है। * भीड़ दैत्य होती है; उसके पास सिर तो काफी होते हैं, दिमाग नहीं होता।

अज्ञान की अपेक्षा असावधानी अधिक हानि पहुंचाती है। कील के अभाव में नाल नहीं जड़ी जा सकी, नाल के अभाव में घोड़े पर नहीं चढ़ा जा सका, घोड़े के अभाव में युद्ध न जीता जा सका—यह कील के प्रति असावधानी का परिणाम था।

वह ऐसा ज्ञानी था कि उसे घोड़े के लिए नौ भाषाओं के शब्द ज्ञात थे; लेकिन जब वह घोड़ा खरीदने गया तो बैल खरीद लाया। * पढ़ा-लिखा कठमुल्ला अनपढ़ की अपेक्षा कहीं अधिक जड़मति होता है।

बुद्धिमान और साहसी लोगों में ही अपनी भूलें कबूल करने की हिम्मत होती है। * अनुभव का विद्यालय बहुत महंगा होता है; मगर मूर्ख महंगी कीमत चुकाकर भी कुछ नहीं सीखते। * सलाह दूसरों से ली जा सकती है, आचरण स्वयं ही करना पड़ता है।

बड़े जहाज मंझधार के लिए ही बनाये जाते हैं; छोटी नौकाओं को किनारे से बहुत दूर नहीं जाना चाहिये।

लोभ और आनंद कभी आपस में मिले ही नहीं, फिर उनका परस्पर परिचय कहां से होता! * जो मिले ले लो, छोटा कुछ नहीं होता—पारस आखिर पत्थर ही तो है।

मेहनती आदमी के घर भूख झांकती तो है, मगर भीतर घुसने का साहस नहीं कर पाती। * मेहनत से कर्ज उतर जाते हैं और निराशा से वे बढ़ते चले जाते हैं।

एक ही व्यक्ति मित्र और चापलूस दोनों नहीं हो सकता। * परिहास से मित्र और उपहास से शत्रु बनाये जाते हैं।

मौत रिश्वत नहीं लेती। * उषा दिन-भर नहीं रहती। —बेंजामिन फ्रैंकलिन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस ईश्वर ने हमें जीवन दिया,
उसने उसी समय हमें स्वतंत्रता भी दी।

मानव-जीवन की देखभाल और सुख—न कि उनका विनाश—
अच्छी सरकार का प्रथम और एकमात्र वैध लक्ष्य है।

समाज के परम अधिकारों का
स्वयं जनता से बढ़कर कोई अमानतदार मुझे मालूम नहीं;
यदि हम उसे इतनी प्रबुद्ध नहीं समझते हों
कि हितकारी विवेक के साथ वह अपना नियंत्रण चला सकेगी,
तो उसका इलाज उससे वह नियंत्रण छीन लेना नहीं,
अपितु उसके विवेक को अनुप्राणित करना है।

आम जनता को प्रबुद्ध बनाइये
और शारीरिक व मानसिक अत्याचार व दमन
ऐसे भाग जायेंगे, जैसे पौ फटते ही भूत-प्रेत भाग जाते हैं।

—टामस जेफरसन

★

CC-0: In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं असीम और अमर सौंदर्य का प्रेमी हूं।
मैं गलियों और गांवों की अपेक्षा बियाबान में
ऐसा कुछ पाता हूं,
जो अधिक प्यारा और अधिक सहज है।

शांत प्राकृतिक दृश्यावली में
सुदूर बिछी क्षितिज-रेखा में
मनुष्य को अपनी प्रकृति जैसा ही सुंदर कुछ नजर आता है।

खेतों और वनों से हमें मिलने वाला
सबसे बड़ा आनंद है–
मनुष्य और प्रकृति के बीच गूढ़ संबंध का संकेत
........(और) इस आनंद को उत्पन्न करने की शक्ति
प्रकृति में नहीं, अपितु मनुष्य में
अथवा उन दोनों की समस्वरता में निहित है।

–**राल्फ वाल्डो एमरसन**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

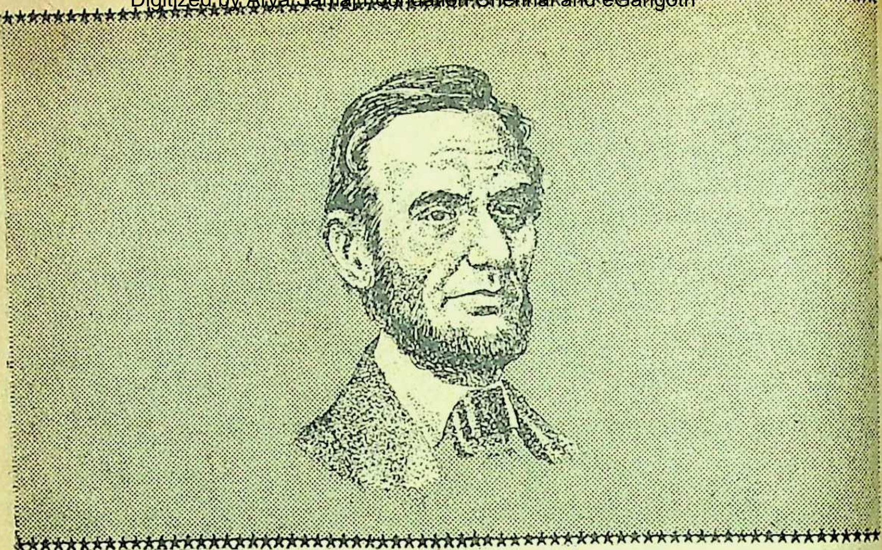

जैसे मैं गुलाम होना पसंद न करूंगा,
वैसे ही मैं मालिक होना भी पसंद न करूंगा।
यह प्रजातंत्र की मेरी धारणा को अभिव्यक्त करता है।
जो कुछ भी इससे भिन्न है, वह उस हद तक प्रजातंत्र नहीं है।
कोई भी मनुष्य इतना अच्छा नहीं कि
दूसरे मनुष्य पर उसकी अनुमति के बिना शासन करे।
हमारी अपनी स्वाधीनता और स्वतंत्रता की रक्षाभित्ति क्या है?
भृकुटि ताने हुए प्राचीर नहीं, विकट समुद्र-तट नहीं,
हमारी भूसेना, हमारी जलसेना नहीं........
हमारा संबल है वह स्वातंत्र्य-प्रेम
जो कि परमात्मा ने हमारे हृदयों में बोया है।
हमारी रक्षा उस चेतना में निहित है, जो स्वतंत्रता को
समस्त मानवों की बपौती के रूप में अनमोल मानती है।

—अब्राहम लिंकन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

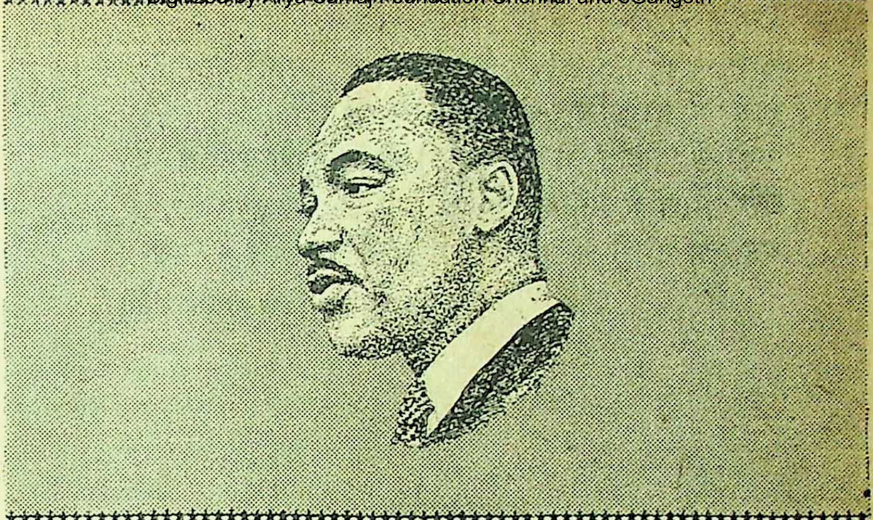

अधिकांश लोगों की तरह मैंने भी गांधी के बारे में सुना था;
मगर कभी गंभीरता से उनका अध्ययन नहीं किया था।
जब मैंने उन्हें पढ़ा, उनके अहिंसक प्रतिरोध के आंदोलनों ने
मुझे बहुत ही मुग्ध कर लिया।
सत्याग्रह का समस्त विचार मेरे लिए बहुत ही अर्थपूर्ण था।
ज्यों-ज्यों मैं गांधी के तत्त्व-चिंतन में गहरे पैठा,
प्रेम की शक्ति के बारे में मेरा संदेह धीरे-धीरे कम होता गया
और मैंने समाज के सुधार के क्षेत्र में
प्रेम की शक्ति को पहली बार देखा।
गांधी के तईं, प्रेम सामाजिक एवं सामूहिक परिवर्तन का
सशक्त साधन था। प्रेम और अहिंसा के लिए
गांधी का यह जो आग्रह था,
उसमें मैंने समाज के सुधार का वह तरीका पाया,
जिसकी मुझे महीनों से तलाश थी।
जो बौद्धिक एवं नैतिक तृप्ति [अगले पृष्ठ पर जारी]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैन्थम और मिल के उपयोगितावाद में,
कार्ल मार्क्स एवं लेनिन के क्रांतिकारी उपायों में,
हाब्स के सामाजिक संविदा के सिद्धांत में,
रूसो के 'प्रकृति की ओर लौटो' वाले आशावाद में
और नीत्शे के अतिमानव-दर्शन में मैं पा न सका था,
वह मुझे गांधी के अहिंसक प्रतिरोध के दर्शन में मिला।

–मार्टिन लूथर किंग

शुभवार्ता

प्रिय बंधु

आपके अतिप्रिय **नवनीत हिंदी डाइजेस्ट** के मूल्य में अगस्त १९७६ के अंक से ५० पैसे की कटौती की जा रही है–यह सूचित करते हुए हमें विशेष प्रसन्नता है। आज से चौबीस मास पूर्व हमने परिस्थितियों से विवश होकर इसका मूल्य २ रु. से बढ़ाकर २·५० रु. किया था और आपने भी पत्रिका के प्रति गहरे ममत्व के कारण उसे स्वीकार कर लिया था। परंतु उस समय भी हमारा यह संकल्प था कि आप पर से यह अतिरिक्त भार हमें जल्दी से जल्दी हटा देना है। आपकी शुभकामनाओं से अब हम वैसा कर पा रहे हैं।

अगस्त १९७६ के अंक से **नवनीत** की प्रति की कीमत २·५० रु. के बजाय २·०० रु. रहेगी। उसी हिसाब से वार्षिक चंदे में भी कमी की जा रही है। हमें पूर्ण विश्वास है, **नवनीत** को आपका प्रेम सदा की भांति मिलता रहेगा। **–प्रबंध-संचालक, नवनीत**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीकी मित्रों से

नारायण दत्त

आपके महान राष्ट्र की द्विशताब्दी के अवसर पर आपको भारत की बधाई! 'भारत का आशीर्वाद' कहने की इच्छा थी; किंतु आपसे मदद लेने वाला देश आशीर्वाद-मुद्रा धारण करे, यह आपको शायद न रुचे। हों हमारे देश की परंपरा तो जिसका अन्न खाया है उसे आशीर्वाद—और उपदेश भी—देने का अधिकार प्रदान करती है। हमने आपके खेतों का अन्न सचमुच खाया है।

आपके अंतरिक्ष-यात्रियों ने जिसे अनंत आकाश में बिचरते देखा है, उस नन्ही-सी पृथ्वी के बृहत् राष्ट्रों में आप नवीनतम हैं और हम—चीन को छोड़कर—प्राचीनतम। आपका आर्थिक-औद्योगिक-सैनिक तंत्र विश्व में सबसे विशाल है, जबकि हम अपनी औपनिवेशिक विरासत एवं विराट् जनसंख्या के कारण विकासोन्मुख देश के दर्जे में ही हैं। इन अंतरों के बावजूद आपके-हमारे राष्ट्रीय अनुभवों और समस्याओं में कुछ समताएं हैं; जहां अभी विषमताएं हैं, वहां भी आगे चलकर समान स्थितियों-अनुभूतियों के उपजने की शक्यता है।

दोनों ही राष्ट्र नाना नस्लों के मिश्रण के फल हैं। यह मिश्रण-प्रक्रिया हमारे यहां चार हजार साल पहले शुरू हुई थी; आपके यहां कोई चार सौ साल से चल रही है। इस प्रक्रिया में (माफ कीजियेगा!) आपके महाद्वीप के मूल निवासी लगभग नेस्तनाबूद हो गये; हमारे उपमहाद्वीप में वे बृहत्तर समाज में पचा लिये गये—हालांकि अलग-अलग स्तरों पर जकड़ दिये गये। इस तरह कुल मिलाकर दोनों संस्कृतियां सामासिक हैं। (क्या संस्कृति की प्रक्रिया ही मूलतः समास की प्रक्रिया नहीं है?) किंतु समरस समाज तक अभी हम दोनों को ही पहुंचना है—भाषा, धर्म, जाति और प्रदेश की वफादारियों की सीमा बांधने के द्वारा हमें; श्वेत-अश्वेत की सच्ची समानता साधने के द्वारा आपको।

नागरिकों का अपने जन्मस्थान व पैत्रिक पेशे से बंधे न रहना, अपने गुणों व परिश्रम के बूते पर समाज में ऊंचा से ऊंचा उठ पाना आपके राष्ट्र की विशेषता है। हमारे यहां अरसे से ठीक उलटी स्थिति रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशाल मानव-समूह कीचड़ में धंसी ईंट की तरह युग-युग तक निम्नतर सामाजिक-आर्थिक स्थिति में पड़े रहने को विवश किये गये हैं। किंतु शायद सदा यह स्थिति न थी। 'ऐतरेय ब्राह्मण' रचने वाला शूद्रापुत्र महिदास; पिता के राज्य को आपस में बांटकर भोगने के बजाय अपने नये राज्य स्थापित करने निकल जाने वाले अनु, द्रुह्यु आदि राजकुमार; 'चरैवेति चरैवेति' उपदेश; क्या ये सब सामाजिक-भौगोलिक गतिशीलता एवं सीमांत-मनोदशा (फ्रंटीयर साइकॉलाजी) के प्रमाण नहीं हैं?

अब फिर हमारे यहां जड़ता कुछ घटी है, तरलता आने लगी है। किंतु जिस अति-तरलता के कारण आपके यहां बहुत-से लोग अपनी जड़ें गंवा बैठे हैं, वह शायद हमारे यहां पैदा न हो—आबादी की अत्यंत सघनता के कारण, और आबादी में कृषिजीवियों के उच्च प्रतिशत के कारण।

अपनी महान आध्यात्मिक खोज 'जीव ब्रह्म के सिवा कुछ नहीं है' (जीवो ब्रह्मैव नाऽपरः) के बावजूद हम वर्ण-व्यवस्था के दुष्प्रभाव से कई सहस्राब्दियों तक करोड़ों मनुष्यों को अस्पृश्य गिनते रहे; और आप अपने महान राजनैतिक उद्घोष 'सब मनुष्य समान सिरजे गये हैं' के बावजूद वर्णभेद के कारण नीग्रो लोगों को अपने से नीचा मानते व जताते रहे। मनुष्य को मनुष्य से कम करके देखने का अपराध हम दोनों ने किया है। उसका परिमार्जन हम दोनों को करना है।

इतिहास विशुद्ध वरदान नहीं होता। हमारी परेशानी यह है कि हमारा इतिहास अति दीर्घ है। हमारी चिंतन-वीथियां और प्राणवाही प्रणालियां इतिहास के काठ-कबाड़ से अंट गयी हैं। पिछली सदी से हम अपने इतिहास के मृत-गलित अंशों को काट फेंकने की कोशिशें कर रहे हैं; क्योंकि वह हमारे लिए प्राण-शोषक बन गया था। इसके विपरीत अभी हाल तक आप इस बात से झेंपते रहे हैं कि आपका इतिहास अति ह्रस्व है। शायद इसी अभाव को भुलाने के लिए आप अन्य देशों के इतिहास के अवशेष इतने चाव और खर्चे से खरीदते हैं। ('लंडन ब्रिज इज़ फ़ॉलिंग डाउन' वाला पुराना पत्थर का पुल आप लंदन से खरीद-कर अपने देश ले गये न?)

इस सदी के द्वितीय दशक से आप विश्व-इतिहास के निर्माण में बड़े पैमाने पर हाथ बंटाने (या हाथ डालने?) लगे हैं। संवाद-प्रेषण और यात्रा के विकसित साधनों ने दुनिया को छोटा करके इतिहास-निर्माण की प्रक्रिया को सुगम और त्वरित बना दिया है—विशेषतः आपके जैसे विराट् अर्थ-बल और सैन्यबल वाले देश के लिए।

मगर हम यह देखकर उदास हो जाते हैं कि आप अपनी तमाम बौद्धिक और भौतिक साधन-संपत्ति के बावजूद इतिहास के नये सांचे गढ़ने के बजाय, यूरोप के फेंके हुए टूटे सांचों को ले बैठे हैं; राजनय के नये पथ बनाने के बजाय, यूरोपीय ढर्रे की कूटनीति की अंधेरी घुटन-भरी भूल-भुलैयों में चाव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से भटक रहे हैं। जब आपके विश्वविद्यालयों के महामेधावी प्राध्यापक शासन-तंत्र में पहुंचकर जेफरसन और लिंकन के बजाय मेटर्निच और पामर्स्टन की भाषा में बोलने लगते हैं, तब हम स्तंभित रह जाते हैं; क्योंकि यूरोप की उस दूषित कूटनीति का फल यूरोप से अधिक हम एशिया-अफ्रीका-वासियों को भोगना पड़ा है। क्या दूसरों की भूलों को दुहराना इतिहास बनाना है? यों भी इतिहास की जो परत प्राणदायी होती है, वह ह्यूमस की परत की तरह हजार साल में एक इंच की रफ्तार से बनती है। 'इन्स्टेंट इतिहास' संजीवनी बूटी नहीं बन सकता।

बेशक, महाशक्ति होने से आपकी कुछ विवशताएं हैं और वास्तविकताओं के भी कुछ तकाजे हैं। किंतु अपनी प्रतिस्पर्धी महाशक्ति के प्रभाव को सीमित करने के नाम पर आप जब भ्रष्ट तानाशाहियों के तरफदार बनकर खड़े होते हैं, तब हमें लगता है—आप अपने राष्ट्र-स्थापकों की विरासत को भूल गये हैं। (यों कौन राष्ट्र अपनी विरासत के प्रति सदा सच्चा रहा है?) महाशक्तित्व अपनी शक्ति का स्वामी होने में है। अपनी शक्ति को काबू में रखने का जो उदाहरण अशोक ने पेश किया, क्या आज वह सबके लिए विशेष रूप से अनुकरणीय नहीं?

उद्योग-तंत्र और उत्पादन-विधियों के विकासद्वारा सुख-समृद्धि का जो स्तर आपने अपने आम नागरिक को उपलब्ध कराया है, वह आपके अभिमान और दूसरों की ईर्ष्या का विषय है। 'हर पतीली में मुर्गी और हर गराज में दो कारें' आपके ही देश में चुनावी नारा बन सकता है। हमारा स्वप्न तो हर परिवार को भरपेट रोटी और हो सके तो एक साइकल दिलाने का है। जब तक हम उस स्वप्न को साकार कर पायेंगे, आप शायद 'हर घर की छत पर एक हेलिकाप्टर' का नारा लगा रहे होंगे।

'और अधिक, और बड़ा, और तेज' का निरंतर शोर हम आपके यहां सुनते हैं। हमें लगता है, अभाव को जीतने के बाद आप अभाव के भय में फंस गये हैं; सुख (हैपिनेस) के बजाय, सुख का संधान (परस्यूट ऑफ हैपिनेस) आपका लक्ष्य बन गया है। जब आपके देश के कुछ युवक इस भागमभाग में पड़ने से इन्कार कर देते हैं, तो आपको उसमें अपनी परंपरा के लिए खतरा नजर आता है। लेकिन ये न नहाने वाले नवयुवक जब कहते हैं कि हम केवल किस्म-किस्म के ब्लेडों, साबुनों, टूथपेस्टों, रेफ्रिजरेटरों और कारों की खपत करने के लिए नहीं सिरजे गये हैं, तब वे हमें आपके ही देश के मनीषी थॉरो की याद दिलाते हैं और उनके इस दावे में हमें अपने उपनिषत्कारों के वचन 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्यः' की पुष्टि दिखाई देती है।

'पूर्व निवृत्तिमार्गी है, पश्चिम प्रवृत्तिमार्गी' यह एकांगी उक्ति है। प्रवृत्ति और निवृत्ति अपने अनुभवों के प्रति व्यक्तियों व

[**शेष पृष्ठ ६० पर**]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

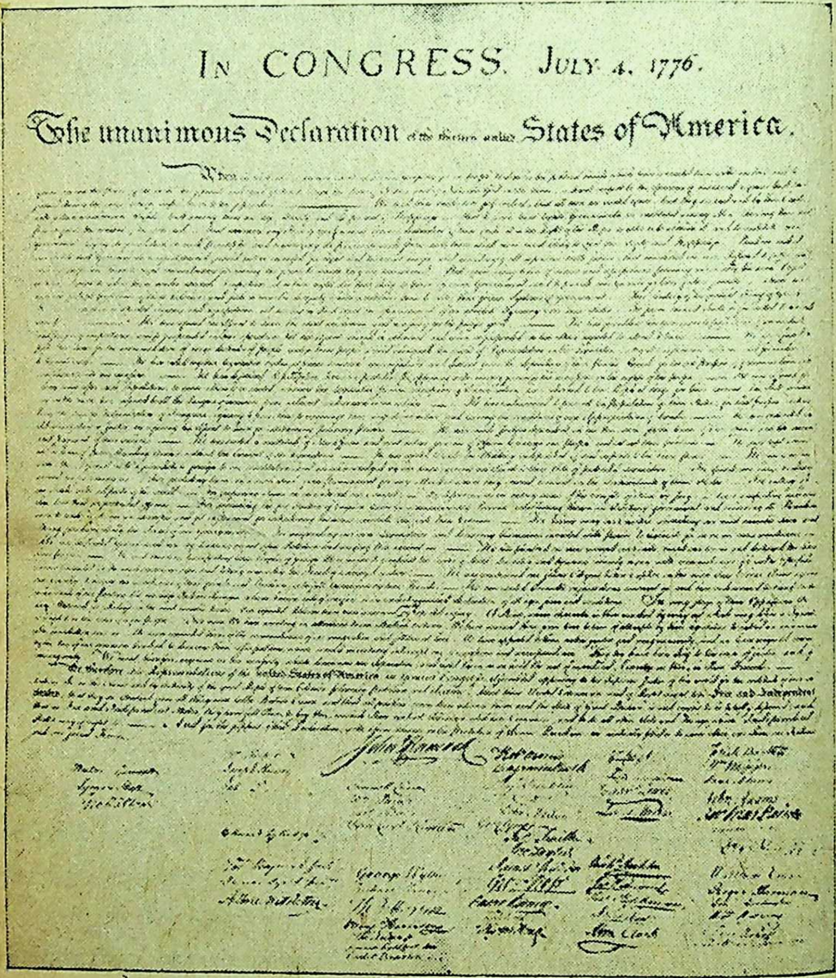
IN CONGRESS. JULY 4. 1776.

The unanimous Declaration of the thirteen united States of America.

४ जुलाई १७७६ को जारी किया गया अमरीकी स्वाधीनता-घोषणापत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदयों में विराजित

टामस जे. फ्लेमिंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीका के प्रथम राष्ट्रपति जार्ज वाशिंगटन अपने राष्ट्र की आजादी की लड़ाई के महानायक ही नहीं, अपितु नवनिर्मित राष्ट्र की एकता और प्रजातंत्रीय परंपरा के महान स्रष्टा भी थे। जीते जी वे एक गाथा बन गये थे और वह गाथा आज भी जीवित है। वस्तुतः उनका जीवन उस गाथा की अपेक्षा अधिक रोमांचक, प्रेरक एवं गौरवमय है। आज भी अमरीकी जनता के हृदय में उनका अग्रस्थान है। इसका रहस्य क्या है? इसका उत्तर विख्यात पत्रकार-लेखक टामस जे. फ्लेमिंग की पुस्तक 'फ़र्स्ट इन देयर हार्ट्स' के इस सार-संक्षेप में मिलता है।

डा. कुसुम द्वारा प्रस्तुत

दिसंबर का सर्द मौसम था और एलेगेनी नदी की धारा में जमा हिम उसके प्रवाह को अवरुद्ध किये दे रहा था। नदी के किनारे दो आदमी दिन-भर अपने छोटे-से कुल्हाड़े से पेड़ काटकर नदी पार करने के लिए बेड़ा बनाते रहे। इनमें से एक अधेड़ और मामूली डीलडौल का था; उसका नाम क्रिस्टोफर जिस्ट था। दूसरा विशालकाय युवक था, जिसका कद पूरा ६ फुट २।। इंच था और हाथ औसत आदमी के हाथों से मानो दुगुने लंबे थे। किशोरावस्था में ही उसे कुश्ती का शौक लग गया था और वह अपराजेय बन गया था।

यह बात १७५३ की है। जिस्ट और उसका युवा साथी कई दिन से उस भीषण ठंड में घने जंगलों में भटक रहे थे। चारों ओर बर्फ ही बर्फ थी। वे पीने के पानी के लिए भी तरस गये। जब सूरज पश्चिमी पहाड़ियों के पीछे चला गया, तो उनका बेड़ा तैयार हुआ और उन्होंने उसे नदी में उतारकर बल्लियों की मदद से खेना शुरू किया। जिस्ट के युवा साथी को अंदाज न था कि धारा कितनी वेगवती है। उसने धारा के बीच में बल्ली गड़ाकर अपने बेड़े को आगे बढ़ाना चाहा। मगर बेड़ा भंवर में जा फंसा और इतने जोर से घूमा कि वह नदी की धारा में गिर पड़ा। बेड़े पर बैठा जिस्ट संकट में पड़े अपने साथी को पथ-रायी आंखों से देखता रहा; वह कुछ नहीं कर सकता था। मगर युवक को प्रकृति ने असाधारण रूप से लंबी बांहें दी थीं। उसने जोर लगाया, आगे बढ़कर बेड़े का एक लट्ठा पकड़ लिया और उसकी मदद से वह वापस बेड़े पर पहुंच गया।

अब उन्होंने नदी के बीच एक टापू के पास बेड़ा रोका और रात-भर के लिए वे उस टापू पर चढ़ गये। सरदी इतनी भयंकर थी कि शिराओं में रक्त जमता जा रहा था। मगर टापू एकदम ही नंगा था। जलाने को लकड़ी तक न थी उस पर। सो रात-भर वे दोनों बांहें झटकते और पांव पटकते रहे कि कहीं लहू जम न जाये। फिर भी सवेरा होने तक जिस्ट की उंगलियों और पांव के पंजों को पाला मार गया। उसके युवक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी के कपड़े पानी में भीग चुके थे, फिर भी वह सरदी और पाले को झेल गया। पहली भोर-किरण के उजाले में उसने चारों ओर निगाह डाली और खुशी से वह झूम उठा। नदी पूरी तरह जम चुकी थी और उसकी छाती पर पांव रखकर उसे लांघा जा सकता था। उन दोनों ने वही किया।

वह युवक उस समय इक्कीस बरस का था और यह उसकी एक हजार मील लंबी यात्रा का अंतिम चरण था। वह एक संदेश लेकर जा रहा था—ऐसा संदेश जिसने एक महायुद्ध को जन्म दिया। बात यह हुई थी कि फ्रांसीसी अधिकारियों ने अमरीका के मूल निवासी रेड इंडियनों को शस्त्रों से लैस कर दिया था और ईरी झील के दक्षिण में अंग्रेजों की भूमि पर एक दुर्ग बना लिया था। यह सब किया गया था विशाल ओहायो घाटी पर प्रभुत्व जमाने के लिए।

वर्जीनिया के अंग्रेज गवर्नर राबर्ट डिनविडी ने फ्रांसीसियों के पास चेतावनी और युद्ध की धमकी का संदेश भेजने का निश्चय किया। उसे सारे वर्जीनिया में एक ही 'भोला लड़का' मिला, जो बूढ़े जिस्ट को साथ लेकर उस कड़ाके की सरदी में जंगली जानवरों और जंगली इंसानों से भरे वनों को पार करके फ्रांसीसियों के अड्डे तक जाने को तैयार हो। 'भोला लड़का' और कोई नहीं, जार्ज वाशिंगटन था। वाशिंगटन ने रास्ते में रेड इंडियनों के सरदारों से बातचीत करके उन्हें अपने पक्ष में कर लिया। उसने फ्रांसीसी सेना की एक टुकड़ी के साथ पूरी एक रात बितायी और जब फ्रांसीसी सेनाधिकारी मदिरा के प्रभाव में झूमने लगे, तो उनसे उनके सारे रहस्य जान लिये। संदेश पहुंचाकर वह तुरंत वर्जीनिया लौट आया और उसने ब्रिटिश अधिकारियों को फ्रांसीसियों के मंसूबों और उनकी सैनिक गतिविधि की पूरी रिपोर्ट दी।

ब्रिटिश अधिकारी वाशिंगटन की प्रतिभा और हिम्मत के कायल हो गये और उन्होंने उसे लेफ्टिनेंट कर्नल का पद देकर एक पूरी रेजिमेंट के साथ फ्रांसीसियों से लोहा लेने के लिए भेज दिया। पहली ही मुठभेड़ में फ्रांसीसी तोपों के गोले वाशिंगटन से एकदम

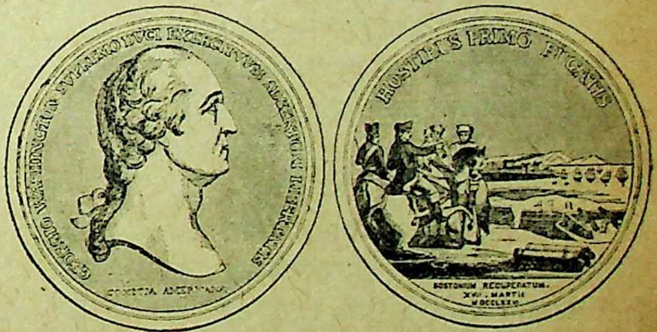

२५ मार्च १९७६ को अमरीकी कांग्रेस द्वारा जनरल वाशिंगटन के लिए स्वीकृत पदक का चित और पट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मां मेरी वाशिंगटन

सटकर निकले और उसके दो साथी तत्काल आहत हो गये। इसके तुरंत बाद उसने अपने भाई को लिखा – 'मैंने गोलियों को दनदनाते हुए सुना; आप मेरा विश्वास करें, उस आवाज में बहुत आकर्षण है।'

लड़ाई में उतार-चढ़ाव आते रहे; मगर अंततः लेफ्टि. कर्नल जार्ज वाशिंगटन को पराजय स्वीकार करनी पड़ी और उसके सैनिक अपने घायल साथियों को पीठ पर लादे वर्जीनिया की ओर लौट पड़े। उस दिन जुलाई की चार तारीख थी। वाशिंगटन को उस दिन के महत्त्व का अनुमान भी न था। मगर उस दिन उसके हाथों एक ऐसे महायुद्ध की शुरूआत हुई, जो अगले सात वर्षों तक ब्रिटेन और फ्रांस के बीच यूरोप में, वेस्ट इंडीज में, एशिया में (भारत में भी) और अमरीका में लड़ा जाता रहा।

कौन था यह वाशिंगटन ?

वर्जीनिया में ४,००० एकड़ भूमि के स्वामी और लोहे के एक कारखाने में साझीदार आगस्टिन वाशिंगटन के तीसरे बेटे का नाम जार्ज वाशिंगटन था। आगस्टिन ने बचपन और जवानी का बड़ा हिस्सा इंग्लैंड में बिताया था और वह नार्थंबरलैंड के एक प्रसिद्ध स्कूल में पढ़ा था। उसने अपने दो बड़े बेटों को भी वहीं पढ़ने भेजा। जार्ज वाशिंगटन उसकी दूसरी पत्नी मेरी बाल का पहला बेटा था। उसे भी आगस्टिन नार्थंबरलैंड में ही पढ़ाता, मगर जार्ज अभी ग्यारह बरस का ही था कि अचानक एक दिन आगस्टिन बीमार पड़ा और चंद दिन बाद १२ अप्रैल १७४३ को चल बसा।

पिता की सारी जायदाद अंग्रेजी कानून के अनुसार जार्ज के सौतेले बड़े भाई लारेंस को मिल गयी और जार्ज अपनी मां, तीन छोटे भाइयों तथा एक छोटी बहन के साथ फ्रेडरिक्सबर्ग के सामने नदी के दूसरी ओर छोटे-से फार्म पर रहने चला गया। उसकी मां मेरी बाल कठोर स्वभाव की अनुशासनप्रिय महिला थी; उससे वह बहुत डरता था। आखिर एक दिन उसने मां को यह जताने का फैसला कर लिया कि मैं अब और अधिक

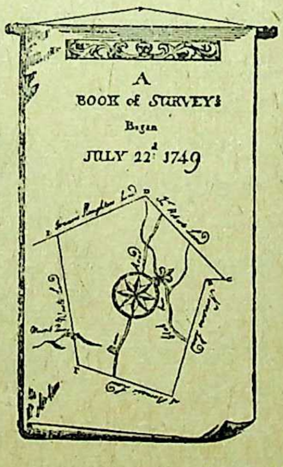

वाशिंगटन द्वारा किये गये आरंभिक सर्वेक्षणों की पोथी का मुखपृष्ठ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय तक भय में नहीं जी सकती।

उसने एक नये अनसधे घोड़े पर सवारी के लिए काठी कसने का निश्चय किया। मेरी बाल स्वयं बहुत कुशल घुड़सवार थी; वह भी बेटे के बुलावे पर यह करतब देखने गयी। जार्ज ने एक छलांग में घोड़े की पीठ पर सवार होकर उसे अपनी लंबी टांगों के बीच दबोच लिया और लगाम इतने जोर से खींची कि उस अनसधे पशु की दोनों अगली टांगें अधर में उठ गयीं। घोड़ा अपने सवार को नीचे पटकने की पूरे जोर से कोशिश कर रहा था और जार्ज पूरी शक्ति से उसे काबू में लाने पर आमादा था। काफी देर तक खुले मैदान में दौड़ने के बाद घोड़े के मुंह से झाग गिरने लगा और उसके साथ ही खून भी निकला। अगले क्षण घोड़ा धूल में गिर पड़ा और ढेर हो गया। उसका हृदय फट गया था!

हट्टा-कट्टा जार्ज घोड़े की लाश के पास विजय-मुद्रा में खड़ा हुआ बड़ा भयानक लग रहा था। मेरी ने उसे देखा और वह सहम गयी। उसी क्षण उसने समझ लिया कि इस बेटे को काबू में नहीं किया जा सकता। इस प्रकार जार्ज हमेशा के लिए मां के कठोर नियंत्रण से मुक्त हो गया।

बड़े भाई लारेंस के साथ जार्ज का गहरा लगाव था। लारेंस ने उसे ब्रिटिश नौसेना में भेजने का निश्चय किया। मगर मेरी ने इसकी अनुमति नहीं दी। जार्ज गणित और ज्यामिति में बहुत होशियार था। यह देखकर लारेंस ने पिता के सब भूमि-सर्वेक्षण संबंधी यंत्र व उपकरण उसे दिये और सर्वेक्षण-कला सीखने को कहा। जार्ज शीघ्र ही उसमें पटु हो गया और अपने सत्रहवें साल में पांव रखते ही कलपेपर काउंटी का

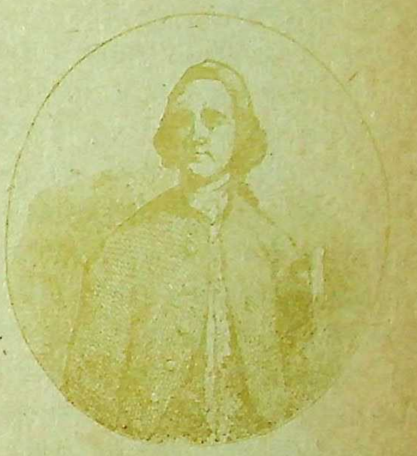

स्नेही सौतेला भाई लारेन्स

सरकारी सर्वेयर बन गया।

चार वर्ष बाद पितृतुल्य बड़े भाई लारेंस का देहांत हो गया। इससे जार्ज को गहरा आघात लगा। मगर साथ ही वह लारेंस की जायदाद का मालिक बन गया; क्योंकि लारेंस ने अपनी विधवा के लिए थोड़ी-सी भूमि छोड़कर शेष सारी जायदाद जार्ज के नाम कर दी थी। इस प्रकार जार्ज मां का फार्म छोड़कर माउंट वरनॉन की जायदाद पर रहने लगा।

लारेंस वर्जीनिया की सेना में मेजर था। उसकी मृत्यु से रिक्त हुआ पद लार्ड फेयरफैक्स की सिफारिश पर जार्ज को दे दिया गया। जब किसी ने यह शिकायत की कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेजर के पद के लिए जार्ज उम्र में बहुत छोटा है, तो लार्ड फेयरफैक्स ने जवाब दिया—'वाशिंग्टन-परिवार के लोग तो जन्म से ही प्रौढ़ होते हैं।' जार्ज वाशिंग्टन ने इस कथन को सही सिद्ध किया।

सेना की नौकरी और माउंट वरनॉन की जायदाद के काम-काज के बीच जार्ज वाशिंग्टन के चार बरस एक पल की तरह बीत गये। उन्हीं दिनों इंग्लैंड का एक प्रख्यात सेनापति जनरल विलियम ब्रैडॉक अमरीका पहुंचा। उसके साथ भली प्रकार प्रशिक्षित सेना भी थी। जनरल ब्रैडॉक ने वाशिंग्टन को अपना सहायक नियुक्त करने की इच्छा प्रकट की। वाशिंग्टन ने प्रस्ताव स्वीकार लिया और मां के विरोध के बावजूद वह ब्रैडॉक का सहायक बन गया।

बेचारे ब्रैडॉक को क्या मालूम था कि वह अमरीका में ब्रिटिश साम्राज्य को मजबूत करने के बजाय उसकी जड़ें खोद रहा है! उस जमाने में वर्जीनिया के लोग इंग्लैंड को 'होम' (घर) कहा करते थे और शिक्षा व सैनिक और नौसैनिक प्रशिक्षण पाने, उम्दा फर्नीचर खरीदने और बढ़िया कपड़े सिलवाने के लिए वहां जाया करते थे। वाशिंग्टन के मन में भी लंदन जाने की कामना थी। मगर हुआ यह कि ब्रैडॉक और उसके अधीनस्थ अंग्रेज सेनाधिकारी अमरीकी लोगों की बहुत ही नुक्ताचीनी किया करते और कहा करते थे कि अमरीकी अकुशल होते हैं। ये शब्द सुनते-सुनते जार्ज वाशिंग्टन को तीव्रता से महसूस हुआ कि मैं अंग्रेज नहीं, अमरीकी हूं; और इस प्रकार उसके भीतर 'प्रथम अमरीकी नागरिक' ने जन्म लिया।

जब ब्रैडॉक और उसके अधीनस्थ अफसर अमरीकियों पर कीचड़ उछालते, तो वाशिंग्टन उनके सामने छोटा-मोटा भाषण ही दे डालता और उनसे कहता कि "तुम व्यक्तियों के दोष निकालो, उसमें कोई हर्ज नहीं; लेकिन तुम्हें सारे देश को बदनाम करने का कोई अधिकार नहीं है।

चंद सप्ताह के बाद फ्रांसीसी और रेड इंडियन आक्रांताओं ने एक घातक हमला किया। इसमें जनरल ब्रैडॉक मारा गया और उसकी प्रशिक्षित सेना बुरी तरह पिट

वाशिंग्टन चालीस की उम्र में
[चार्ल्स पील रचित प्रामाणिक पोर्ट्रेट]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयी। ब्रैडॉक की पराजय वाशिंगटन के जीवन में एक युगांतरकारी घटना सिद्ध हुई। उसे लगा कि ब्रिटिश सेना अपराजेय नहीं है। उसने अपनी मां को लिखा कि ब्रैडॉक के सैनिक ऐसे भाग निकले, जैसे कुत्तों से डरकर भेड़ें भाग निकलती हैं।

वर्जीनिया के कमांडर-इन-चीफ

ब्रैडॉक की सेना भागकर फिलाडेल्फिया चली गयी और वर्जीनिया की ३५० मील लंबी सीमा फ्रांसीसियों और रेड इंडियन हमलावरों के लिए पूरी तरह खुल गयी। इस बीच वाशिंगटन बीमार होकर माउंट वरनॉन लौट गये थे। समूचा वर्जीनिया किसी रक्षक की खोज में था और सबकी निगाहें जार्ज वाशिंगटन पर टिक गयीं। विलियम्सबर्ग से अनेक राजनीतिज्ञों ने उन्हें पत्र लिखे और पूछा कि क्या आप वर्जीनिया की सेना की कमान संभालने को तैयार हैं? वाशिंगटन ने उनके सामने दो शर्तें रखीं–विधानसभा सैनिक अभियान के लिए यथार्थवादी दृष्टि से धन दे, और कमांडर के नाते अपने अधीनस्थ सेनाधिकारी नियुक्त करने का पूरा अधिकार मुझे हो। विधानसभा ने उनकी दोनों शर्तें स्वीकार कर लीं। उसने सेना के लिए चालीस हजार पौंड की रकम की व्यवस्था की, और वाशिंगटन को कर्नल का रुतबा तथा कमांडर-इन-चीफ का पद देकर उन्हें एक हजार सैनिक भरती करने का अधिकार दे दिया।

वाशिंगटन ने वर्जीनिया की सेना का संघटन करके सीमाओं की रक्षा के लिए

पत्नी मार्था

घोर संघर्ष के बाद फ्रांसीसियों को उस क्षेत्र से सदा के लिए खदेड़ दिया, उनके दुर्ग फोर्ट दु क्वेस्न पर अधिकार कर लिया और रेड इंडियन सरदारों को अपनी ओर कर लिया।

इसी बीच मार्च १७५८ में विलियम्सबर्ग जाते हुए वे 'व्हाइट हाउस' नामक एक विशाल भवन में तरुणी विधवा मार्था डैंड्रिज कस्टिस के अतिथि बने। मार्था को विधवा हुए आठ महीने हुए थे। वह वर्जीनिया की सबसे धनी महिलाओं में से थी तथा चार बच्चों की मां बन चुकी थी, जिनमें से अब दो जीवित थे। शीघ्र ही मार्था और वाशिंगटन के बीच सहज स्नेह और मित्रता पैदा हो गयी तथा उन्होंने परस्पर विवाह करने का निश्चय कर लिया। इस निर्णय के तुरंत

[शेष पृष्ठ १३१ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाते

नंदिता सिन्हा

छाता आज तो महज एक उपयोगी चीज बनकर रह गया है—धूप व बारिश से बचाव का साधन। किंतु कभी वह बहुत महिमाशाली पदार्थ था—प्रभुत्व एवं परम-पद का प्रतीक। ईसा पूर्व १२०० के आस-पास मिस्र के समृद्ध और प्रतिष्ठित नागरिक रंग-बिरंगे अनूठे आकारों के छातों का उपयोग बड़ी शान से करते थे। वहां से छाते का रिवाज असीरिया और फारस पहुंचा।

छत्र तले आसीन तीर्थंकर ऋषभ

राजकुमारी और छत्र [अजंता]

किंतु छाते (छत्र) को जो गौरव भारत में मिला, वह अन्यत्र शायद ही मिला हो। राजाओं के राजत्व का वह प्रतीक माना जाता था। 'एकच्छत्र', 'छत्रपति' आदि शब्द छातों के उस स्वर्णयुग की याद दिलाते हैं।

आत्मिक साम्राज्य का भी प्रतीक था छाता। भगवान की मूर्तियों के सिर पर प्रायः छत्र बनाया जाता था। जब हीनयान का जोर था और बुद्ध-मूर्तियां बनाने का रिवाज नहीं चला था, तब भगवान बुद्ध के प्रतीक के रूप में छाते का अंकन किया जाता था। सांची में ऐसा अंकन देखने को मिलता है।

वैसे हमारे पुरखे निजी जीवन में भी छाते का उपयोग करते थे। छाते के लिए संस्कृत भाषा में छत्र के अलावा एक और शब्द था 'आतपत्र' (आतप + त्र) अर्थात् धूप से बचाने वाला। चूंकि ब्रह्मचारी को वर्षा-आतप आदि को सहने में समर्थ होना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जालीदार छाते में से दुनिया की झांकी लेती हुई सोलहवीं सदी की यूरोपीय सामंत महिला।

चाहिये, इसलिए छाते का उपयोग उसके लिए वर्जित था। किंतु जब वह पढ़ाई पूरी करके, दीक्षांत स्नान करके 'स्नातक' बनता था, तब उसे छाता धारण करने की अनुमति मिलती थी।

चीन में वृष्टि और वायु के देवताओं के रथ छाते से मंडित होते थे। आम नागरिक भी छाते का खूब उपयोग करते थे। माना जाता है कि बंद होने वाले छाते की ईजाद चीनियों ने ही की। चीनियों का तो यह भी दावा है कि पैराशूट के रूप में छाते का उपयोग भी पहले-पहल उन्हीं ने किया, हालांकि इसे सिद्ध करना कठिन है।

मध्ययुग के जापानी चित्रों में खुला छाता हाथ में लिये स्त्रियों को कियो-मिजू मंदिर की चोटी से कूदते दिखाया गया है। मान्यता थी कि सच्चे दिल से प्रार्थना करके कूदने पर चोट नहीं लगती। पिछली सदी के यूरोपीय उपन्यासों में कई बार महिलाओं को अपनी इज्जत बचाने के लिए छाते का पैराशूट की तरह उपयोग करते वर्णित किया गया है।

नयी दुनिया में भी छाता शाही शान का अनिवार्य अंग था। स्पेनी लुटेरे-अन्वेषक पिजारो को इन्का राजा अताहुआल्पा को पहचानने में कोई कठिनाई नहीं हुई; क्योंकि राजा के सिर पर विशाल छत्र तना हुआ था।

बर्मा के राजा ने सन १८५५ में भारत के ब्रिटिश गवर्नर जनरल को लिखे एक पत्र में अपने को पूर्व के महान छत्रपति शासकों का अधिपति बताया था। आज भी थाइ-

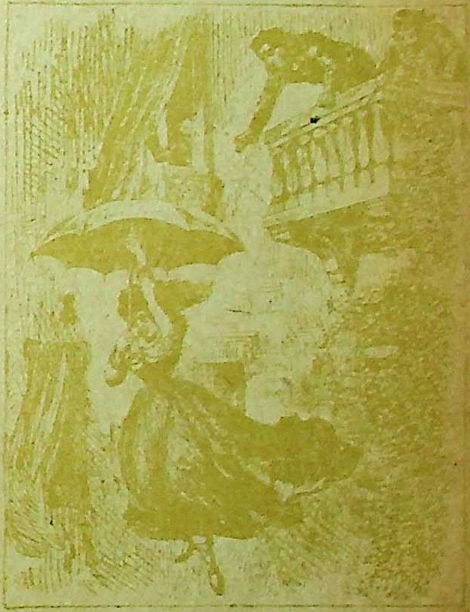

सतीत्व-रक्षा के लिए छाते का पैराशूट की तरह उपयोग करती हुई नायिका—उन्नीसवीं सदी के एक सस्ते अंग्रेजी उपन्यास में से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

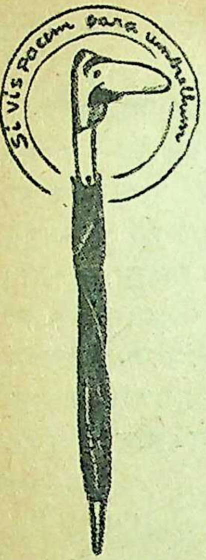

चेम्बरलिन
[व्यंग्यचित्र : लो]

लैंड के राजा के दरबार-कक्ष में तीन छाते तने रहते हैं। बीच का छाता नौ मंजिल का होता है और आजू-बाजू के छाते सात-सात मंजिल के।

यूरोप में पोप का अपना खास धारीदार छाता होता था। वैसे ज्यादातर यूरोपीय राजा छाते के बजाय चार या छह बल्लियों पर तना हुआ चंदोवा अधिक पसंद करते थे। अलबत्ता नेपल्स के सामंत (जो 'डोज' कहलाते थे) छाते के प्रेमी थे और अठारहवीं सदी तक उसे राजचिह्न के रूप में धारण करते थे।

पिछली सदी में जब लंबे और खर्चीले सैनिक अभियानों के बाद अंग्रेज पश्चिम अफ्रीका के अशांटी कबीलों का स्वातंत्र्य-हरण कर सके, तब ब्रिटेन की अधीनता स्वीकार करने के चिह्न के रूप में अशांटी सरदारों ने एक विशाल और भव्य छाता महारानी विक्टोरिया के पास भेजा था। अशांटी कबीलों में छाते की महिमा इतनी ज्यादा थी कि उनके सरदार अपने घरों में एक कमरे से दूसरे कमरे में जाते समय भी अपने सिर पर छाता छवाये रहते थे।

बाविली कबीले में लड़कियां जब रजस्वला होने की उम्र में पहुंचतीं, तब उनका बाहर आना-जाना बंद हो जाता था और उन्हें झोंपड़ी में छिपाकर रखा जाता था। फिर वे उपयुक्त दिन में छाते की छांव में चलकर अपने पति के पास पहुंचती थीं। हमारे देश में इस सदी के आरंभ तक केरल की नंपूतिरी महिलाएं चोली का उपयोग नहीं करती थीं और बाहर आते-जाते समय वक्षस्थल पर खुले छाते की ओट कर लिया करती थीं।

अंग्रेज लेखक राबर्ट लुई स्टीवेन्सन ने दो प्रकार के छाताधारियों का जिक्र किया है—एक जो सदा रोगों के प्रति शंकालु रहते हैं और छाते से स्वास्थ्य-रक्षा करते हैं, दूसरे वे जो किफायतशार हैं और छाते से वस्त्र रक्षा करते हैं। अपने शरीर की उचित चिंता और किफायतशारी इज्जतदार आदमी के

पोप का धारीदार छाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ठोस गुण हैं।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर छाते की सबसे ज्यादा बेइज्जती एक इज्जतदार अंग्रेज राजनेता के कारण ही हुई। आप आसानी से समझ गये होंगे कि हमारा आशय ब्रिटेन के प्रधान-मंत्री नेविल चेम्बरलिन से है, जिन्होंने हिटलर के साथ म्यूनिक-संधि की, जिससे हिलटर को दुनिया को दूसरे महायुद्ध में झोंकने का प्रोत्साहन मिला। चेम्बरलिन सदा छाता साथ रखते थे, जिससे छाता एक तरह से तुष्टीकरण का प्रतीक ही बन गया था। बुजुर्ग पाठकों को डेविड लो का वह व्यंग्य-चित्र याद होगा, जिसमें उस महान व्यंग्य-चितेरे ने चेम्बरलिन को ही बंद छाते के रूप में चित्रित किया था।

वैसे हिटलर के विरुद्ध भले चेम्बरलिन का छाता बेकार सिद्ध हुआ हो, मगर बहुधा छाता प्रहार और आत्मरक्षा के शस्त्र का काम दे जाता है। सबसे दिलचस्प किस्सा तो एक गढ़वाली सज्जन का है। बंद छाता बगल में दबाये वे जंगल में पगडंडी पर चले जा रहे थे कि सामने से जंगली सूअर आ निकला और उन पर चढ़ दौड़ा। बचाव का कोई उपाय न देख वे सज्जन खड़े रहे और जब सूअर बिलकुल पास आ गया, तो चट से उसके सामने छाता खोल दिया। इस अजीब शस्त्र से सूअर घबरा गया और उलटा मुड़कर भाग गया।

अशांटी कबीले का एक छत्रधारी सरदार

बंबई के नागरिक को साल में तीन महीने छाता उठाये फिरना पड़ता है—आत्मरक्षा के लिए। वरना मानसून के आरंभिक आवेग में बारिश शायद उसकी त्वचा को भी बहा ले जाये।

★

आजकल अमरीकी जौहरी 'तलाक की अंगूठी' भी बेचने लगे हैं। ३००-३५० डालर की इस अंगूठी में बीचों-बीच एक दरार होती है। इसे धारण कीजिये; आपके कुछ कहे बिना ही समझने वाले समझ ज़ायेंगे कि मामला क्या है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ४७ का शेष]

समाजों की आत्मिक प्रतिक्रियाएं हैं। अतः जो समाज इन दोनों के लिए अपने ढांचे में प्रावधान नहीं करता, वह खतरा मोल लेता है। फिलहाल हमारा समाज निवृत्ति का महज शाब्दिक जाल रचकर दांभिक बन गया है; आप प्रवृत्ति को ही परम काम्य समझकर यांत्रिक होने का खतरा मोल ले रहे हैं। दोनों को अपने यहां नया संतुलन साधना है।

आज आप संत्रस्त हैं अपने समाज में उभरती हिंसा से, जिसे आपने ही मारधाड़ वाली चित्रकथाओं, टी. वी. कार्यक्रमों व फिल्मों द्वारा, मारक शस्त्रों की अनियंत्रित बिक्री द्वारा, और सबसे बढ़कर वियतनाम-युद्ध जैसे अनावश्यक युद्धों द्वारा अपने यहां पनपाया है। जो बाहर निरंतर लाठी घुमाता हो, उसका हाथ घर में भी बार-बार लाठी पर जायेगा। क्या ऐसी ही कोई स्थिति आज से ढाई हजार साल पूर्व हमारे यहां भी पैदा हो गयी थी, जिससे बुद्ध और महावीर को अहिंसा एवं वैरत्याग पर इतना जोर देना आवश्यक प्रतीत हुआ?

हमारे देश में सदियों से एक अन्य प्रकार की हिंसा—प्रच्छन्न हिंसा—परिव्याप्त है। देश के लाखों इंसान पीढ़ी दर पीढ़ी अभाव में जीने को विवश हों, अपने सही आत्मिक-बौद्धिक कद को पाने के अवसर से वंचित हों, देश के रिवाज और कानून उस स्थिति को बदलने में आड़े आते हों—क्या यह कम हिंसामय स्थिति है? सो अहिंसा हम दोनों के लिए नितांत प्रासंगिक और व्यावहारिक प्रश्न है—बेशक अलग-अलग अर्थों में। इसमें हमें एक दूसरे के अनुभव से सीखना है।

हम दोनों के बीच यह पारस्परिकता चिंतन और जीवन के अधिकाधिक क्षेत्रों में पनपे—यह हमारी हार्दिक कामना है। आपके महान राष्ट्र की स्थापना की द्विशताब्दी पर एक बार फिर आपको बधाई।

[पृष्ठ ३७ का शेष]

सजावटी को सीधे तत्त्व तक पहुंचाते हुए; कम साधनों से अधिक काम करना सिखाते हुए। प्रांजल लेखिका और करुणामयी मानवी मार्गरेट मीड नृतत्त्वशास्त्र के प्रति एक नया दृष्टिकोण हमें सिखाती हैं।

एक दूसरे से न्यारे आपके लेखकों ने आपके देश की शक्ति और विशालता का बोध कराया है; उनमें अमरीका की साहस-भावना है और है अपने से सवाल पूछने की कठोर आदत—एक आदत जो कि मनुष्य की शक्ति और उसकी दुर्बलता दोनों में हाथ बंटाती है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केजिता

विज्ञान-बिंदु

आवाज से दुगुनी रफ्तार से चलने वाले नये और बहुचर्चित यात्री-विमान कन्कार्ड के चित्र देशी-विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में आपने अवश्य देखे होंगे। खबर है कि भारत सरकार ने ब्रिटेन को भारत के घनी आबादी वाले इलाकों के ऊपर से ये विमान उड़ाने की अनुमति देने से इन्कार कर दिया है। इस संबंध में संसद में हुई चर्चा की जो खबर छपी है, उसके अनुसार सरकार ने इन उड़ानों से जीवधारियों पर हो सकने वाले कुप्रभावों को दृष्टि में रखकर यह निर्णय किया है। आखिरकार ये खतरे क्या हैं ?

पृथ्वी के वायु-मंडल में ओजोन नामक गैस की एक परत मौजूद है। यह परत बाह्य अवकाश से आने वाली पराबैंगनी (अलट्रा वायलेट) किरणों को काफी हद तक रोक लेती है। ये किरणें जीवधारियों के लिए हानिकारक मानी जाती हैं; यहां तक कि वे गोरी चमड़ी वालों में त्वचा-कैन्सर को जन्म दे सकती हैं। कन्कार्ड विमान की पराध्वनिक गति वायु-मंडल के ओजोन-क्षेत्र को क्षति पहुंचा सकती है। वैसा होने पर हमारी पृथ्वी पर पराबैंगनी किरणें अपेक्षाकृत अधिक मात्रा में पहुंचने लगेंगी, जिससे त्वचा-कैन्सर का खतरा बढ़ जायेगा।

दूसरा खतरा है कन्कार्ड की तेज आवाज का। यह विमान बोइंग ७०७ के मुकाबले में दुगुनी और डी. सी. १० की तुलना में चार गुनी अधिक आवाज पैदा करता है। जैसा कि आप जानते हैं, शोर एक सीमा से अधिक हो जाये तो वह कानों को तो नुक्सान पहुंचा सकता है और शरीर पर उसके अन्य दुष्प्रभाव हो सकते हैं। इसके अलावा तेज आवाज की शक्तिशाली तरंगें ऊंची इमारतों की सुरक्षा की दृष्टि से भी वांछनीय नहीं होतीं।

कन्कार्ड ने गत वर्ष नेल्लोर (आंध्र प्रदेश) के ऊपर जो परीक्षण-उड़ानें भरी थीं, उनके नतीजों से भी स्पष्ट हुआ कि ये खतरे वास्तविक हैं और इन्हें नजरअंदाज करना गलत होगा।

खून-काफूर

सुधांशु मैत्र नामक एक सज्जन का कलकत्ता अस्पताल में कुछ दिन पहले आंख का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपरेशन किया गया, जिसमें उनकी एक आंख के रेटिना को अपने स्थान से बाहर निकालना था। आपरेशन तो ठीक से हो गया; मगर उसके बाद खून का बहना जारी रहा। सर्जन ने उसे रोकने की पूरी कोशिश की; प्रचलित सर्वोत्तम दवाइयों का सहारा भी लिया। मगर सब बेकार रहा। परेशान होकर उसने एक दूसरे सर्जन की सहायता ली। इन साहब ने मरीज की आंख पर न जाने किस चीज का स्प्रे किया कि देखते-देखते खून काफूर हो गया। जी हां, खून काफूर करने वाला यह पदार्थ काफूर (कपूर या कैम्फर) ही था।

कलकत्ता मेडिकल कालेज के प्राचार्य डा. बी. के. चक्रवर्ती ने हाल ही में बताया है कि उनके कालेज ने केशिका (कैपिलरी)-रक्तस्राव को रोकने की एक नवीनतम तकनीक की खोज की है, जो अपने किस्म की पहली विधि है। इस तकनीक का नाम 'कैम्फोराइट ट्रीटमेंट' है। इसे खोजने का श्रेय है डा. चक्रवर्ती, डा. मदन चौधरी और डा. वासुदेव भट्टाचार्जी के शोध-दल को।

शोधकर्ताओं का दावा है कि इस तकनीक की मदद से वे केशिका-रक्तस्राव के कई लाइलाज मामलों का उपचार सफलतापूर्वक कर चुके हैं। इनमें एक में तो रोगी के खून का बहना तेरह दिन से लगातार जारी था और किसी भी दवा या तकनीक से रुकने में नहीं आ रहा था।

दूध के नहले पर दही का दहला

दूध पौष्टिक पदार्थों का सरताज है—यह आम धारणा न जाने कब से चली आ रही है। मगर करनाल के राष्ट्रीय डेरी संस्थान के कुछ विज्ञानियों ने इस धारणा को गलत करार दिया है। इन शोधकर्ताओं का कहना है कि मानव-शरीर पिये हुए दूध का ३२ प्रतिशत ही एक घंटे में जज्ब कर पाता है, जब कि उतने ही समय में दही की ९१ प्रतिशत तक मात्रा जज्ब कर लेता है। इनका यह भी कहना है कि दही शरीर में जिन जठर-स्रावों को पैदा करता है, वे पाचन-क्रिया में काफी सहायता देते हैं।

इससे पूर्व कतिपय अमरीकी विज्ञानी अपने प्रयोगों द्वारा इस परिणाम पर पहुंचे थे कि दही में कुछ विशेष प्रकार की कैन्सर-कोशिकाओं को नियंत्रित रखने और बढ़ने से रोकने की क्षमता विद्यमान है। कई भारतीय वैज्ञानिकों की राय है कि दही शरीर में मौजूद फालतू वसा को भी कम कर सकता है। फालतू वसा ही मुटापे को जन्म देती है; यानी दही मुटापे को घटाने में मदद कर सकता है। दही में रहने वाला मेथियोनीन नामक अमीनो एसिड यह काम करता है।

दही में जो अन्य पोषक और उपचारक गुण हैं, उनका कारण यह बताया गया है कि दूध का किण्वन (फर्मेन्टेशन) होकर दही बनते समय उसमें लेक्टिक अम्ल, अल्कोहल, कार्बन डाइ-आक्साइड और अनेक एंटिबायोटिक पदार्थ एवं विटामिन आदि उत्पन्न होते हैं, जो शरीर के विकास के लिए उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण हैं। वस्तुतः इन्हीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदार्थों के कारण दही पाचन-क्रिया में भी मदद करता है। प्रयोगों से यह भी सिद्ध हुआ है कि दही भूख को भी बढ़ाता है। कमोबेश यही बातें आयुर्वेद के ग्रंथों में भी कही गयी हैं, मगर अलग शास्त्रीय मुहावरे में।

मौसमी हथियार

आशंका है कि पृथ्वी पर मानव-अस्तित्व के संभावित खतरों की सूची में और एक मुद्दा जुड़ जायेगा। इस मुद्दे का वैज्ञानिक नाम है—'जलवायु-गतिकी' (क्लाइमेट-डाइनेमिक्स)। महाशक्तियां इस तकनीक के द्वारा मौसम में ऐसे कृत्रिम परिवर्तन लाने का प्रयत्न कर रही हैं, जो शत्रु के लिए प्रतिकूल हों। वियतनाम-युद्ध में 'क्लाउड सीडिंग' की तकनीक से वर्षा की मात्रा लगभग ३० प्रतिशत बढ़ायी गयी थी, ताकि दलदल और गहरे एवं विशाल हो जायें और शत्रु सेनाएं आगे न बढ़ सकें।

मगर वह तो इस नयी युद्ध-तकनीक का प्रारंभ-काल ही था। अब स्थिति कुछ और ही है। अमरीका चिंतित है कि कहीं रूस अमरीकी मौसम में कोई गड़बड़ी पैदा न कर दे और ऐसा ही डर रूस को अमरीका से है। महासागरों और वातावरण के कम्प्यूटरी माडलों की मदद से इसका अध्ययन हो रहा है कि ध्रुवों पर जमी बर्फ को कैसे पिघलाया जा सकता है, भयंकर हवाई और समुद्री तूफान कैसे पैदा किये जा सकते हैं, प्रतिकूल मौसम पैदा करके शत्रु-देश की खड़ी फसलों को कैसे नष्ट किया जा सकता है। विज्ञान की विजय के प्रतीक माने जाने वाले अंतरिक्ष-यान और कृत्रिम उपग्रह इस विनाश-विज्ञान को आगे बढ़ाने में हाथ बंटा रहे हैं।

फसल, नीम से

प्राचीन काल से नीम के अनेक उत्पाद दवा के रूप में अथवा चिकित्सा-साधनों के रूप में इस्तेमाल होते आ रहे हैं। अब नयी दिल्ली के भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के विज्ञानियों का कहना है कि खेतों में उपज को बढ़ाने के लिए भी नीम का उपयोग किया जा सकता है। उनका कहना है कि यदि यूरिया नामक नाइट्रोजनी उर्वरक के साथ नीम की खली मिला दी जाये, तो यूरिया का प्रभाव बढ़ जाता है। साधारण यूरिया के मुकाबले में यह नीम-खली-मिश्रित यूरिया ज्यादा समय तक नियमित रूप से फसलों को नाइट्रोजन देता रह सकता है।

जैसा कि आप जानते होंगे, यूरिया एक कार्बनिक रसायन है, जो मनुष्य के मूत्र में भी पाया जाता है। यह नाइट्रोजन का अच्छा स्रोत है। (नाइट्रोजन और फास्फोरस दो ऐसे तत्त्व हैं, जो फसल के विकास के लिए अत्यावश्यक हैं, पर जिनकी पूर्ति प्राकृतिक खाद से पूर्णतः हो नहीं पाती।) हमारे देश के अनेक उर्वरक-कारखानों में कृत्रिम यूरिया का निर्माण बड़े पैमाने पर किया जाने लगा है। नीम की खली की मदद से अब देश इस उत्पादन का अधिकतम लाभ उठा सकेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दायरा

– कैफी आज़मी –

सन १९७५ के साहित्य अकादेमी पुरस्कार से संमानित संकलन 'आवारा सज्दे' में से।

रोज़ बढ़ता हूं जहां से आगे
फिर वहीं लौट के आ जाता हूं
बारहा तोड़ चुका हूं जिनको
इन्हीं दीवारों से टकराता हूं
रोज बसते हैं कई शहर नये
रोज़ धरती में समा जाते हैं
ज़लज़लों में थी ज़रा-सी गर्मी
वह भी अब रोज़ आ जाते हैं।

जिस्म से रूह तलक रेत ही रेत
न कहीं धूप, न साया, न सराब[1]
कितने अरमान हैं किस सहरा[2] में
कौन रखता है मज़ारों का हिसाब
नब्ज़ बुझती भी भड़कती भी है
दिल का मामूल है घबराना भी
रात अंधेरे ने अंधेरे से कहा
एक आदत है जिये जाना भी।

कौस[3] इक रंग की होती है तुलू[4]
एक ही चाल भी पैमाने की
गोशे-गोशे में खड़ी है मस्जिद
शक्ल क्या हो गयी मयखाने की
कोई कहता था समुंदर हूं मैं
और मेरी जेब में क़तरा भी नहीं
खैरियत अपनी लिखा करता हूं
अब तो तक़दीर में ख़तरा भी नहीं
अपने हाथों को पढ़ा करता हूं
कभी कुरआन, कभी गीता की तरह
चंद रेखाओं में समाऊं मैं
ज़िंदगी क़ैद है सीता की तरह
राम कब लौटेंगे, मालूम नहीं
काश, रावण ही कोई आ जाता!

लिप्यंतर
जाहिद इकबाल

१. मृगजल, २. जंगल,
३. धनुष, ४. उदय.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिहासिनी

डा. बालेंदुशेखर तिवारी

रेल में, बसस्टैंड पर अथवा बुकस्टाल पर पत्रिकाओं को पलटते समय न कोई लंबी कहानी पढ़ी जा सकती है, न किसी विचार-प्रधान निबंध में ही डूबा जा सकता है। किंतु होशियार पाठक इतने कम समय में भी चुटकुले जरूर बांच लेते हैं।

सच तो यह है कि कम से कम समय में अधिक से अधिक आनंद देने की कला सिर्फ चुटकुलों को ही आती है। चुटकुले अपनी छोटी-सी काया में हास्य का अनूठा व्यापार करते हैं। सीमित संवादों के माध्यम से किसी बहुत छोटी विनोदपूर्ण घटना की प्रस्तुति चुटकुले में होती है। लोकप्रियता की दृष्टि से चुटकुले सबसे अधिक व्यापक हैं; हालांकि किसी भी भाषा में उनकी गणना साहित्य में नहीं होती।

भारतेंदु हरिश्चंद्र
[सौजन्य : गिरीशचंद्र]

हिंदी में हर वर्ष दो-तीन चुटकुला-संग्रह अवश्य प्रकाशित होते हैं। अब जबकि हिंदी का सबसे बड़ा चुटकुला-संग्रह 'सब समय के साथी' (१९७३) छप चुका है, न केवल चुटकुले की सैद्धांतिक विवेचना पर समीक्षकों का ध्यान गया है, अपितु हिंदी का प्रथम चुटकुला-संकलन कौन-सा था, इसकी खोज भी होने लगी है।

हिंदी में हास्य और व्यंग्य की इस लघुतम विधा का सर्वप्रथम उद्धार १९ वीं शती के उत्तरार्ध में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने किया था। 'अंधेर नगरी' जैसे प्रहसन और 'भारत-दुर्दशा' जैसे व्यंग्य-नाटक के प्रणेता भारतेंदु ने बड़ी संख्या में विनोदी निबंध लिखे थे और अपनी पत्रिकाओं में परिहासमय कविताएं भी प्रस्तुत की थीं। उन्हीं ने हिंदी के प्रथम चुटकुला-संकलन 'परिहासिनी' का संपादन १८७६ ई. में किया था।

इसके पूर्व ही उर्दू में एक-दो चोज़-संग्रह निकल चुके थे और अंग्रेजी के 'जोक्स' लोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मनोरंजन करने लगे थे। भारतेंदु ने अनुभव किया कि पाठक पत्रिकाओं में हंसी-दिल्लगी की बातों की तलाश पहले करते हैं। उन्होंने लोकरुचि की इस नस को पकड़ लिया। १८७६ में 'परिहासिनी' का प्रकाशन बनारस के हरिप्रकाश प्रेस से हुआ। वाराणसी की नागरी प्रचारिणी सभा के आर्यभाषा पुस्तकालय में उपलब्ध 'परिहासिनी' के प्रथम संस्करण की प्रति के आवरण पर मुद्रित है :

परिहासिनी

अर्थात्

हिंदी पत्रों से हास्यरस के विषयों का संग्रह

×

निज मित्रगण ठाकुर कविराज श्यामलदासजी, राजा गिरिप्रसाद सिंह, बाबू बदरीनारायण चौधरी, बाबू बालेश्वरप्रसाद और बाबू दुर्गाप्रसाद के चित्तविनोद के अर्थ हरिश्चंद्र ने संगृहीत किया

१८७६

बनारस हरिप्रकाश यंत्रालय में जगन्नाथ प्रसाद ने मुद्रित किया

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि चुटकुलों के इस प्रथम संकलन का संपादन भारतेंदु हरिश्चंद्र ने अपने पांच मित्रों के मनोरंजनार्थ किया था। दूसरे शब्दों में, 'परिहासिनी' उनके इन्हीं मित्रों को समर्पित थी।

इस आवरण-पृष्ठ से यह भी स्पष्ट होता है कि उस समय चुटकुलों के लिए कोई एक शब्द निश्चित नहीं हुआ था। पृष्ठ १ पर हास्यरस के विषयों का विवरण उपलब्ध है :

परिहासिनी

अर्थात्

हंसी, दिल्लगी, पंच, चोज़ की बातें और चुटकिले

आज हम जिस विनोदी मसाले को 'चुटकुला' कहते हैं, उसी के लिए भारतेंदु ने एक साथ कई संज्ञाओं का प्रयोग किया।

'परिहासिनी' के ३६ पृष्ठों में ४० चुटकुले संकलित हैं। भारतेंदु ने इन्हें 'कविवचन सुधा', 'हरिश्चंद्र मैगजीन', 'आर्यमित्र', 'काशी पत्रिका' जैसी तत्कालीन पत्रिकाओं से चुना और हर चुटकुले को शीर्षक

छाता नहीं तो क्या हुआ ! [व्यंग्यचित्र : कार्क]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी दिया। कुछ शीर्षक हैं 'देव' 'लगन-गरनी', 'खुशामद', 'मुंहतोड़ जवाब', 'लाल साहब का रामचेरा', 'अंगहीन धनी', 'अद्-भुत संवाद,' 'बात की धुन', 'न्यायशास्त्र' 'मिहमान', 'मुफ्तखोरे', 'गुरू के गुरू' 'अचूक जवाब', 'ज्ञानचरचा', 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात', 'दुआ मांगना' आदि।

बानगी के तौर पर 'परिहासिनी' के दो परिहास प्रस्तुत हैं :

'एक डाक्टर साहब कहीं बयान कर रहे थे कि दिल और जिगर की बीमारियां औरतों से मर्दों को ज्यादा होती हैं। एक जवान खूबसूरत औरत बोल उठी—"तभी मर्दुए औरों को दिल देते फिरते हैं!"'

अचूक जवाब का नमूना इस चुटकले में देखिये :

'एक अमीर से किसी फकीर ने पैसा मांगा। उस अमीर ने फकीर से कहा—"तुम पैसों के बदले लोगों से लियाकत चाहते तो अब तक कैसे लायक आदमी हो गये होते।" फकीर चटपट बोला—"मैं जिसके पास जो देखता हूं, वही उससे मांगता हूं।"'

इन उदाहरणों से भारतेंदु की विनोदी प्रकृति एवं उनके चुटकुलों के गठन की जानकारी मिलती है। इतना तय है कि उस समय के चुटकुलों पर उर्दू का असर व्याप्त था और हिंदी के चुटकुलेबाज उर्दू के चोज़ों में उपलब्ध तंजोमज़ा को हिंदीभाषी पाठकों तक पहुंचाने की कोशिश कर रहे थे।

'परिहासिनी' इसी दिशा की एक महत्त्व-

चश्मा ...... वाइपर से युक्त [शरद उकेशी]

-पूर्ण उपलब्धि थी।

भारतेंदु ने 'परिहासिनी' में चुटकुलों के साथ अपनी एक लंबी व्यंग्य-कविता 'पंच का प्रपंच' और एक व्यंग्य-निबंध 'मदिरा स्तव-राज' को भी संकलित किया है। दोनों ही रचनाओं में भारतेंदु ने भारत में शराब के बढ़ते हुए व्यसन और उसके दुष्परिणामों पर व्यंग्य-प्रहार किये हैं। लेकिन 'परिहासिनी' का ऐतिहासिक महत्त्व 'पंच का प्रपंच' अथवा 'मदिरास्तवराज' के कारण नहीं, अपितु इसमें संगृहीत चुटकुलों के कारण ही है।

'परिहासिनी' के प्रस्तुतीकरण के सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं और इस बीच हिंदी में चुट-कुला-लेखन ने व्यापक प्रगति भी की है। परंतु एक शतक की समाप्ति के बाद भी 'परिहासिनी' की व्यंग्यविनोदमय छवि मजा देती है।

—हिंदी विभाग,
रांची विश्वविद्यालय, रांची ८३४ ००८

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यानासी
यथा नाम, तथा गुण

डा. सोहराब ए. ई. हकीम

धूम्रपान से और पान खाने से कैन्सर होता है, यह अब असंदिग्ध रूप से सिद्ध हो चुका है। फिर भी लोग इन्हें तिलांजलि नहीं देते। मगर उन्हें पता तो होता ही है कि इसका नतीजा क्या होगा। लेकिन जब मुनाफे के लिए खाद्य पदार्थों में मिलावट की जाती है, तब बेकसूर उपभोक्ता अनजाने में धीरे-धीरे विष खाता है और उसका फल भुगतता है।

क्या आदमी को गोली मारकर खत्म कर देना ज्यादा अच्छा नहीं, बजाय इसके कि उसे ऐसे तेल खिलाये जायें, जो उसे जलोदर, अंधापन, हृद्रोग और कैन्सर तक का शिकार बना सकते हैं? जब खाद्य तेलों में सत्यानासी के तेल की मिलावट की जाती है, तब यही तो होता है।

सत्यानासी एक खर-पतवार है, जो हिमालय की हिमरेखा तक भारत में सर्वत्र स्वयं उगती है। इसके फूल पीले होते हैं और पत्ते कंटीले एवं रुपहली रेखाओं वाले। बारिश के बाद यह धान के खेतों व मेंड़ों पर लाखों की तादाद में उग जाती है। मराठी में इसे 'पिवळा धोत्रा', गुजराती में 'दारुडी' (या 'सत्यानासी'), दक्षिण में 'ब्रह्मदंडी' और बंगला में 'कटका' कहते हैं। इसका अंग्रेजी नाम है—'आर्जीमोन'।

वैसे तो कई 'प्रामाणिक' आयुर्वेद-ग्रंथों में सत्यानासी का जिक्र है; मगर वह गलत शिनाख्त पर आधारित है। यह कोई प्राचीन आयुर्वेदीय या यूनानी वनस्पति नहीं है। सच तो यह है कि मूलतः यह भारतीय पौधा नहीं है। आज से चार सौ साल पहले आलू, तंबाकू, लाल मिर्च, चीकू और सीताफल की तरह इसे भी पुर्तगाली लोग भारत में लाये।

रानी एलिजाबेथ प्रथम के समय यह पौधा उष्ण-कटिबंधीय अमरीका से ब्रिटेन लाया गया, जहां इसे 'आर्जीमोन मैक्सिकाना (टूर्नाफोर्ट) लिन्नेयस' यह शास्त्रीय नाम दिया गया, जो कि वस्तुतः इस भ्रम पर आधारित था कि यह एक प्रकार की पोस्त है। इसी भ्रम के कारण भारत और अफ्रीका में इसे जानबूझकर लाकर बोया गया और यह जंगल की आग की तरह फैल गया।

सत्यानासी की खुले मुंह वाली संपुटिकाओं में काले और छुट्टे बीज अप्रैल से जून तक विकसित होते व पकते हैं। कंटीली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपुटिकाओं को छड़ी की मदद से झुकाकर बीजों को हथेली पर उड़ेला जा सकता है। बीजों से ४० प्रतिशत तक तेल प्राप्त किया जा सकता है।

सन १८८५ में सर जार्ज वाट ने अपनी सुप्रसिद्ध 'डिक्शनरी ऑफ़ इकनामिक प्राडक्ट्स ऑफ़ इंडिया' में लिखा था—'भारत इससे पेंट आदि के लिए असीमित मात्रा में तेल प्राप्त कर सकता है; क्योंकि देश के अनेक भागों में इस पौधे की ऐसी भरमार है कि यह किसानों के लिए चिंता का विषय बन गया है।'

कच्छ के महान वनस्पतिशास्त्री जयकृष्ण इंद्रजी ने सन १९१० में ही वर्णन किया था कि किस प्रकार ग्वाल-बाल छड़ी से इसकी संपुटिकाओं को झुकाकर इसके बीज जमा करते हैं और तिलहन में मिलावट के लिए व्यापारियों के हाथों इसे बेच देते हैं।

सत्यानासी के बीज तेल से भरपूर होते हैं, देखने में सरसों जैसे लगते हैं और उन्हें जो चाहे बटोरकर ला सकता है; इसलिए इनकी मिलावट सरसों में की जाने लगी है। ऐसी मिलावट के लिखित उल्लेख आज से सौ साल पहले तक के मिलते हैं। सत्यानासी से मिश्रित तेल खाने पर कै, दस्त और पांवों में सूजन होती है और अगर यह विष देर तक शरीर में पहुंचता रहे तो हृदय के विषाक्त होने से मृत्यु भी हो सकती है।

सत्यानासी से होने वाले जलोदर का प्रायः तभी पता चलता है, जब वह एक साथ बहुतों को हो। इसीलिए उसे 'जलोदर महामारी' भी कहा जाता है। बहुत-से रोगियों में ग्लॉकोमा के लक्षण भी प्रकट होते हैं। ऐसी लगभग एक सौ महामारियों का लिखित उल्लेख मौजूद है। बंगाल में १९३५ में एक बड़ी महामारी में ७,००० मनुष्यों के पैर सूज गये, ७०० को ग्लॉकोमा हुआ और १,५०० मौतें हुईं। ये महामारियां सारे भारत में और पड़ोसी देशों में देखी गयी हैं।

यह बात १९२८ के बाद पता चली कि जलोदर महामारी सरसों के तेल में सत्यानासी की मिलावट के कारण होती है। मगर उसके बाद भी कई बार ऐसी भयंकर महामारियां हुईं। अंततः 'भारतीय खाद्य मिलावट रोकथाम कानून १९५६' में सरसों के दानों और तेल में सत्यानासी की मिलावट की मनाही की गयी।

सत्यानासी की मिलावट की जांच के लिए कागजी वर्णिक जांच (पेपर क्रोमेटोग्राफिक टेस्ट) भारत में पहले पहल मैंने चलायी। यह मैंने प्राध्यापक सर राबर्ट राबिन्सन से सीखी थी, जो सैंग्विनेरीन के बारे में विश्व के सबसे बड़े विशेषज्ञ थे। नोबेल पुरस्कार से संमानित सर राबर्ट ब्रिटेन की रायल एकेडमी के अध्यक्ष थे और भारत के अनेक मूर्धन्य रसायनज्ञों के गुरु थे। १९५० में पूना की राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला के उद्‌घाटन के अवसर पर उनका परिचय देते हुए श्री नेहरू ने कहा था कि आप एक ऋषि हैं और आधुनिक भारत पर आपके बहुत-से उपकार हैं। उनका देहांत पिछले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साल हुआ।

सत्यानासी के तेल में सग्विनेरीन नाम का एक विषैला अल्कलायड होता है, जो कि परा-बैंजनी प्रकाश में बहुत तेजी से चमकता है। यदि आप स्याहीचूस के टुकड़े पर सत्यानासी का एक बीज कुचलकर उस पर हाइड्रोक्लोरिक अम्ल की एक बूंद डालें और स्याहीचूस को परा-बैंजनी प्रकाश के नीचे रखें, तो देखेंगे कि सैंग्विनेरीन लाल-नारंगी धब्बे के रूप में चमक उठेगा। यह धब्बा क्षार के साथ नीला और अम्ल के साथ फिर लाल-नारंगी हो जाता है। सरसों या अन्य किसी तिलहन से ऐसा लाल-नारंगी धब्बा कभी नहीं बनेगा।

चाहें तो आप स्याहीचूस की बड़ी तख्ती लेकर उस पर सरसों के १,००० दाने बिछायें और उनमें केवल एक दाना सत्यानासी का मिलाकर यह परीक्षण दुहरायें। परिणाम वही होगा। १०,००० सरसों के दानों के बीच भी कुचला हुआ एक सत्यानासी का दाना नारंगी रंग के सितारे की तरह स्पष्ट चमक उठेगा।

एक पैसे के खर्च से एक मिनट में की जा सकने वाली इस जांच की मदद से व्यापारी अपने सरसों के स्टाक की जांच कर सकते हैं और जिसमें सत्यानासी के बीज मिले हों, उसे रद्द कर सकते हैं।

खाद्य तेल में सत्यानासी की उपस्थिति की वर्णिक जांच इससे तनिक ही अधिक तकनीकी है। कोई हाइस्कूल या कालेज का विज्ञान का विद्यार्थी भी उसे कर सकता है।

खाद्य तेलों में सत्यानासी की मिलावट की मात्रा प्रायः १ प्रतिशत से कम ही रखी जाती है, मगर उससे भी कै और दस्त होने लगते हैं। भारत में कुल ७,००० करोड़ रुपये के खाद्य तेलों का उत्पादन होता है; इससे आप जान सकते हैं कि यदि मिलावट की मात्रा १ प्रतिशत के दसवें हिस्से जितनी ही हो, तो भी कितना पैसा कमाया जा सकता है।

सत्यानासी का तेल लक्षणहीन ग्लॉकोमा को जन्म दे सकता है। बंबई के एक अस्पताल में 'हृद्रोग' के इलाज के लिए एक लड़का भरती किया गया था। कई सप्ताह के इलाज से भी उसे कोई राहत न मिली। उसके रोग-इतिहास से पता चला कि चार महीने पहले उसे पेचिश हुई थी। उस वक्त उसने केवल चार दिन तक जो तेल खाया था, उसका नमूना सौभाग्य से मिल गया और उसकी जांच की गयी। उसमें सत्यानासी मौजूद था। बालक की आंख के रेटीना में रक्तस्राव हुआ था और उसकी पुतलियों में तनाव भी था, जिसकी ओर किसी का ध्यान नहीं गया था।

मेरे सुझाव पर उसकी सैंग्विनेरीन-विरोधी चिकित्सा की गयी और वह बहुत जल्दी स्वस्थ हो गया। मुझे उसके रक्त में सैंग्विनेरीन उपस्थित मिला, जबकि उसने सत्यानासी-मिला तेल सिर्फ चार दिन तक खाया था, सो भी चार महीने पहले!

देश के विख्यात आहारशास्त्री स्वर्गीय डा. पटवर्धन ने अपनी पुस्तक 'न्यूट्रिशन इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंडिया' में बताया है कि सरसों में सत्यानासी की मिलावट हमेशा इरादतन ही की जाती है, क्योंकि सत्यानासी के बीज सरसों की कटाई के बहुत बाद पकते हैं। उन्होंने देश को आगाह किया था कि खाद्य तेल में सत्यानासी की मिलावट नहीं चलने दी जानी चाहिये और मिलावट करने वालों को सख्त सजा दी जानी चाहिये।

सन १९६६ में बंबई में महामारी के स्तर पर सत्यानासी विषाक्तता हुई। तब मैंने व मेरे सहयोगी ने जांच करने पर यह पाया कि खोपरे और मूंगफली के तेल में भी सत्यानासी की मिलावट की गयी थी। नन्हे आकार और काले रंग के सत्यानासी-बीज विशाल आकार के खोपरे में और मूंगफली के बड़े-बड़े दानों में 'गलती' से कैसे मिल सकते थे भला!

हमने यह भी पाया कि जनता द्वारा वस्तुतः खाये गये खाद्य तेलों में इस विष की मौजूदगी केवल वर्णिक जांच से ही प्रकट हो सकती है और यहां प्रचलित सब जांच-विधियां इससे हजार गुना, दस हजार गुना कम संवेदनशील हैं।

मगर आइल मिलर्स एसोसिएशन ने इस विधि का विरोध किया। यद्यपि १९६८ में केंद्रीय स्वास्थ्य महानिदेशालय द्वारा नियुक्त विशेषज्ञ दल ने मेरी जांच-विधि की परीक्षा करके सर्वसंमति से उसकी पुष्टि की, फिर भी उसे कानूनन लागू नहीं किया गया था। इससे मिलावट-युक्त खाद्य तेलों के हजारों नमूने खाद्य मिलावट रोकथाम कानून की पकड़ से सफा बच गये; क्योंकि उनकी जांच कम संवेदनशील विधियों से की गयी थी।

प्रधान-मंत्री ने मुझे एक निजी पत्र में लिखा था कि खाद्य तेलों में मिलावट के मामले को लेकर वे बहुत चिंतित हैं। उनकी कृपा से स्वास्थ्य महानिदेशक ने जुलाई १९७४ से सारे भारत में खाद्य तेलों की वर्णिक जांच लागू कर दी है।

['आकाशवाणी' से साभार]

★

विश्व बैंक की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि बैंक के सदस्यों में भारत आबादी के मामले में विलक्षण है (६० करोड़)। उसकी ८० प्रतिशत जनता गांवों में बसती है। उसमें दस लाख से अधिक आबादी वाले आठ शहर हैं। वह विश्व के सबसे निर्धन देशों में है और उसकी प्रतिव्यक्ति वार्षिक आय १३० डालर है, मगर कुल राष्ट्रीय उत्पादन की दृष्टि से विश्व के देशों में उसका स्थान दसवां है और वह दुनिया में चौथा सबसे बड़ा अन्नोत्पादक है। उसके लाखों किसान अत्यंत अविकसित तकनीकों का उपयोग करते हैं, मगर गेहूं-संबंधी शोध में वह विश्व का अग्रणी है। वह परमाणु-अनुसंधान की क्षमता से संपन्न है और उसका चिकित्सा-शोधकार्य प्रजनन-जैविकी के सीमा-क्षेत्र में है। संक्षेप में, भारत अतिविशाल, सांस्कृतिक दृष्टि से वैविध्यपूर्ण और परस्पर-विरुद्ध बातों से भरा देश है—क्षमताओं से संपन्न, परंतु उनके विकास में मंद।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार चेलों का हश्र

निरंजन द्वारा प्रस्तुत

गुरु गुड़ ही रहे, चेले चीनी हो गये—यह कहावत माओ के चीन में अंशत: ही चरितार्थ होती है। गुरु माओ अलबत्ता गुड़ बने रहते हैं, मगर मुख्य चेले चूल्हे में झोंक दिये जाते हैं—स्वयं गुरु के हाथों। सन १९४९ में चीन में साम्यवादी शासन स्थापित होने के बाद से एक-एक करके चार व्यक्ति माओ त्से-तुंग के उत्तराधिकारी समझे गये या बाकायदा घोषित किये गये। मगर चारों को अंत में अपमानित और पदच्युत होना पड़ा।

अब जबकि हुआ कुओ-फेंग को चीन का स्थायी प्रधान-मंत्री ही नहीं, चीनी साम्यवादी पार्टी का प्रथम उपाध्यक्ष भी बनाकर एक तरह से माओ का उत्तराधिकारी जताया गया है, तो पिछले चार उत्तराधिकारियों के

काओ कांग

करुण अंत की याद हो आना स्वाभाविक है।

इनमें प्रथम थे **काओ कांग,** जो शेन्सी प्रांत में जनमे थे। सन ३० वाले दशक के मध्य वर्षों में उत्तर चीन में साम्यवादी गेरिल्ला कार्रवाइयों में उन्होंने प्रमुख भाग लिया था। १९४५ में उन्हें मंचूरिया भेज[ा] गया और वे समूचे उत्तर पूर्वी चीन में सा[म्य]वादी पार्टी के अधिष्ठाता बन गये।

पूरे चीन पर साम्यवादी सत्ता स्थ[ापित] होने के बाद कांग योजना आयोग के अ[ध्यक्ष] और उपराष्ट्रपति बनाये गये। किं[तु] जल्दी उनका माओ से मतभेद हो [गया] उन पर आक्षेप लगाया गया कि वे म[ंचूरिया] में अपना स्वतंत्र राज्य कायम कर[ना चाहते] हैं; यह भी कहा गया कि वे पार्टी-[...] के साथ सांठगांठ करके चाउ [...] से सत्ता छीनना चाहते हैं। १९[...] पदच्युत करके कैद कर लिया ग[या ...] वादी पार्टी के बयानों के अन[ुसार ...] जेल में आतमहत्या कर ली।

माओ के ही प्रांत हुन्नान [...] और गेरिल्ला लड़ाई के [...] साथ कंधे से कंधा भिड़ाक[र ...] कारण **पेंग ते-ह्वाई** को [...]ो यह संभावित उत्तराधिकारी [...] वे चीन के प्रतिरक्षा-मं[त्री ...]-कोहेन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जन्म : १७ नवंबर १८८७
मृत्यु : २४ मार्च १९७६

सहृदय सेनापति

फील्ड मार्शल मांटगोमरी के देहांत के साथ द्वितीय महायुद्ध के उन महिमाशाली सेनापतियों की पंक्ति समाप्त हो गयी, जो जीते जी मिथक बन गये थे। 'मान्टी' सचमुच विश्व-इतिहास के महान सेनापतियों में से थे कि नहीं, इस बारे में उनके भक्तों और आलोचकों के बीच इस समय जंग छिड़ी हुई है; मगर मिस्र में अल अलामीन के रेगिस्तानी मोर्चे पर उनके अधीन सैनिक अफसर के रूप में काम कर चुके अंग्रेज पत्रकार डेनिस हैमिल्टन का यह संस्मरण उनकी मानवीयता को उजागर करता है :

'सन १९६७ में उनके साथ मैं मिस्र गया। यह बड़ी विशिष्ट यात्रा थी, व्यक्तिगत यात्रा, जो मैंने अल अलामीन की लड़ाई की पचीसवीं बरसगांठ के सिलसिले में राष्ट्रपति नासर से मिलकर आयोजित करायी थी। नासर ने अपना खास वायुयान और हेलिकाप्टर हमारे उपयोग के लिए दिया था। मैंने फील्डमार्शल से कह-सुनकर इस मोर्चे के बारे में कई लेख लिखवाये थे और हमारे वहां पहुंचने से महीनों पहले से सपरमैना की पूरी की पूरी कंपनियां अल अलामीन के मैदान से सुरंगें हटा रही थीं, ताकि हमारा हेलिकाप्टर विभिन्न नाकों पर उतर सके। हम वहां की विशाल कब्रगाह में भी दो बार गये, जहां हमारी ८ वीं सेना के मृत सैनिक दफनाये गये थे।

'एक सांझ को हमें उस मोर्चे पर काम आये दो सगे भाइयों के नाम पढ़ने को मिले। उस वक्त मांटगोमरी पर जो प्रतिक्रिया हुई, उसे मैं कभी भूल न सकूंगा। लिवरपूल के रहने वाले ये दोनों भाई लिवरपूल योमनरी रेजिमेंट में कप्तान रहे थे। मुझे याद है, मांटगोमरी एकदम चुप हो गये और देर तक कुछ न बोले। फिर जब मैंने उनसे पूछा कि क्या आप जर्मन और इतालवी सैनिकों की कब्रें भी देखने चलेंगे जो कि पास ही हैं, तो बोले—"मैं इतने सारे लोगों को मरवा चुका हूं कि वहां जाऊं और इसकी याद मुझे दिलवायी जाये, यह न ही हो तो अच्छा।"'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुमेह के साथ जीना

डा. सी. मुनिचूडप्पा

डाक्टरी अनुसंधान अभी तक मधुमेह का इलाज नहीं खोज पाया है। फिर भी प्रचलित चिकित्सा द्वारा १. रोग को नियंत्रण में रखना; २. रोग की तीव्रता कम करना या जिन्हें आनुवंशिक कारणों से रोग होने की संभावना हो, उनमें रोग को स्थगित करना; ३. इस रोग के साथ पैदा होने वाले पचड़ों से बचाना या उन्हें कम करना; और ४. अधिकांश मधुमेह-रोगियों को स्वाभाविक और उपयोगी जीवन जीने देना अब संभव हो गया है।

इलाज के सफल होने के लिए सर्वप्रथम आवश्यक चीज है रोगी का सहयोग। याद रखिये, 'मूर्ख के लिए मधुमेह घातक है, बुद्धिमान के लिए निरापद'। यह सूत्र सब मधुमेह-रोगियों को समझ लेना चाहिये और अपना जीवन तदनुसार व्यवस्थित कर लेना चाहिये।

चाहे आप एलोपथी की चिकित्सा करायें या आयुर्वेद की, मगर चिकित्सा वैज्ञानिक आधार पर होनी चाहिये और उससे यह संभव होना चाहिये कि रोगी परेशानियों से मुक्त मधुमेही जीवन बिता सके। चिकित्सा बुद्धिसंगत, व्यावहारिक और सुनिश्चित रूप से गुणकारी होनी चाहिये।

रोगी को शिक्षित करना मधुमेह में जितना आवश्यक है, शायद उतना अन्य किसी रोग में नहीं। रोगी को मधुमेह के बारे में जितना ही ज्यादा पता होगा, उसे उतना ही कम कष्ट सहना पड़ेगा।

रक्त में शर्करा की अस्वाभाविक ऊंची मात्रा को नीचा कर देने से ही चिकित्सा समाप्त नहीं हो जाती। मधुमेह-चिकित्सा संपूर्ण रोगी का ध्यान रखती है। इसीलिए रोगी के हिसाब से चिकित्सा की रीति भी बदलती है।

सर्वाधिक लाभकारी चिकित्सा-कार्यक्रम क्या हो, यह तय करते समय रोग की तीव्रता के अलावा और भी अनेक बातों पर विचार किया जाता है—जैसे कि रोगी की उम्र, वजन, पेशा, एसिटोन की उपस्थिति या अनुपस्थिति, उच्च रक्तचाप, मधुमेह से जुड़ी उलझनें, सहचारी रोग, रोगी की मन:स्थिति आदि।

मधुमेह कई रूपों में प्रकट होता है। बच्चों और किशोरों में इसका आगमन अचानक ही उग्र और निरंतर प्यास, अधिक पेशाब, वजन घटना, तीव्र भूख, पेट और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टांगों में दर्द, ऊंघ और कई बार बेहोशी जैसी शिकायतों के साथ होता है। प्रचलित रक्त एवं मूत्र-परीक्षा से ही बहुधा सिद्ध हो जाता है कि ये मधुमेह-पीड़ित हैं।

प्रायः मधुमेह के आगमन के ढंग से ही इसकी भी सूचना मिल जाती है कि क्या हार्मोनों में कोई परिवर्तन हुआ है, और खासकर क्या रोगी के शरीर में इन्सुलीन उपस्थित है, अगर है तो वह कितना सक्षम है? इससे यह तय करने में सहायता मिलती है कि चिकित्सा का रूप क्या हो।

मधुमेह की चिकित्सा में भोजन के नियमन का बुनियादी महत्त्व है। कुल मिलाकर, स्थूलकाय रोगियों को भोजन की मात्रा घटानी चाहिये, ताकि अनावश्यक वजन घटे। अधिकांश रोगियों में तो इतने से ही रक्त में शर्करा की मात्रा घटकर सही स्तर पर आ जाती है। जिनका वजन समुचित हो, या तनिक-सा अधिक हो, उन्हें भोजन की मात्रा में थोड़ी-सी ही कटौती करनी पड़ेगी। मगर साथ ही, इनमें से ज्यादातर रोगियों को अपने मधुमेह को काबू में रखने के लिए गोलियों या कैप्स्यूलों की जरूरत पड़ती है।

प्रायः सभी मधुमेह-रोगी बच्चों और पतले व अपर्याप्त वजन वाले वयस्क मधुमेहियों को इन्सुलीन देना जरूरी होता है। इस वर्ग को अपना वजन ठीक रखने के लिए समुचित भोजन करना जरूरी है। पर्याप्त भोजन और प्रोटीन का सेवन मधुमेही बच्चों के लिए विशेष जरूरी है, ताकि उनकी बढ़वार ठीक हो। यह जरूरी नहीं कि मधुमेह-रोगी का भोजन अलग से बने या वह अपने सामान्य भोजन से बहुत भिन्न भोजन अपनाये। फिर भी मधुमेह-रोगी को चीनी, गुड़-शक्कर, शहद, मिठाइयां आदि ऐसी चीजों से बचना चाहिये, जो उसके रक्त में शर्करा की मात्रा बहुत बढ़ा दें। सब्जियों में पत्ते वाली सब्जियां मन-मुताबिक खायी जा सकती हैं। आलू, चुकंदर और कुम्हड़ा कम खाना अच्छा है, क्योंकि उनमें शर्करा और स्टार्च की मात्रा अधिक होती है। इन्हें छोड़ ही दें तो ठीक। कच्ची ककड़ी-खीरा, प्याज और टमाटर भरपूर खाये जा सकते हैं। उनसे पेट भरता है, तृप्ति मिलती है और अनाज की खपत घटती है।

यह धारणा गलत है कि मधुमेह में चावल बिलकुल नहीं खाना चाहिये; क्योंकि वह निरा कार्बोहाइड्रेट होता है। इस हिसाब से तो गेहूं, ज्वार, मड़वा आदि भी मुख्यतया कार्बोहाइड्रेट ही हैं। कार्बोहाइड्रेटों को एकदम तिलांजलि दे देंगे, तो हम केवल अंडे, मांस, मछली और पनीर खा सकेंगे। यह न तो व्यावहारिक है, न स्वादिष्ट ही, और बेहद खर्चीला भी है। इसलिए गेहूं, चावल, ज्वार, मड़वा आदि जो भी अनाज आप रोज खाते आये हों, वह खा सकते हैं; मगर निर्धारित मात्रा में। हां अच्छा है कि केवल भात खाने के बजाय थोड़ा गेहूं, ज्वार या मड़वा आदि भी खायें। शाकाहारियों के भोजन में दाल, दूध आदि भी रहने चाहिये; क्योंकि उनसे प्रोटीन प्राप्त

*** 'आकाशवाणी' से साभार ***

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती है।

मधुमेह में फल खाने की मनाही नहीं है। दिन में एक फल लिया जा सकता है—एक संतरा या मोसंबी या सेब या दस अंगूर।

जो चाहें, वे निर्धारित मात्रा में मांस आदि खा सकते हैं। जिनके रक्त में कोलेस्टेरोल की मात्रा अधिक हो, जिन्हें हृद्रोग का खतरा हो, उन्हें अंडे के पीले भाग और मांस से बचना चाहिये। हां, अंडे का श्वेत अंश और मछली खायी जा सकती है।

तेलों में सूरजमुखी और तिल के तेल अधिक अच्छे हैं; क्योंकि उनमें सैच्युरेटिड वसाएं कम होती हैं।

दवाएं

रक्त में शर्करा की मात्रा कम करने वाली दवाएं टिकियों और कैप्स्यूलों के रूप में मिलती हैं। ऐसी अनेक दवाएं हैं, जिनकी क्षमता और कार्यविध अलग-अलग है। रोगी की जांच-परख करके उसके लिए मुफीद दवा चुनी जाती है। दवा की मात्रा रोगी के

मधुमेह

मधुमेह के बारे में आम तौर से प्रचलित कुछ भ्रांतियों का जिक्र करके मैं सही स्थिति बताने की कोशिश करूंगा।

१. **क्या मधुमेह चावल खाने से होता है और चावल के बजाय गेहूं आदि अन्न खाने लगें तो दूर हो जाता है?** विशेषत: दक्षिण भारत में प्रचलित यह धारणा सर्वथा गलत है। सारी दुनिया में चावलभोजी, गैर-चावलभोजी दोनों किस्म के लोग समान रूप से मधुमेह के शिकार हैं। चावल, गेहूं, मड़वा आदि से शरीर को मिलने वाले कार्बोहाइड्रेटों का परिमाण और स्तर एक-सा होता है और यदि वे समान मात्रा में खाये जायें, तो उनसे रोगी के रक्त में शर्करा की मात्रा समान रूप से बढ़ती है। इसलिए इनमें से कोई भी अनाज तुल्य मात्रा में खाया जा सकता है।

२. **क्या इन्सुलीन का इंजेक्शन लेना शुरू कर देने पर जिंदगी-भर लेना पड़ेगा?** यह बात उन बच्चों के बारे में सही है, जिनके शरीर में इन्सुलीन की कमी होती है। मगर अधिकांश मधुमेह-रोगी वयस्कों के शरीर में पर्याप्त इन्सुलीन होती है; खराबी बस यह होती है कि यह इन्सुलीन उनके रक्त की शर्करा का उपयोग करने में सक्षम नहीं होती। ३० से ४० प्रतिशत वयस्क रोगियों में पथ्य और व्यायाम द्वारा इसका निराकरण किया जा सकता है; और ३० प्रतिशत को रक्त-शर्करामान घटाने वाली दवा छोटी मात्राओं में खिलाकर इसे सुधारा जा सकता है। शेष को इन्सुलीन की आवश्यकता हो सकती है। इनमें वे रोगी आते हैं, जिन्हें तीव्र मधुमेह है या मधुमेह के साथ इन्फेक्शन, गुर्दे की बीमारी, आंख की तकलीफ आदि हैं। आरंभ में जिन्हें इन्सुलीन की जरूरत होती है, अनावश्यक मुटापा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार बदल[illegible] ये दवाएं नहीं लेनी चाहिये और न गर्भिणी अवस्था में तथा गुर्दे या जिगर की बीमारी के रहते।

इन्सुलीन केवल इंजेक्शन के रूप में ही दी जा सकती है। मुंह से सेवन करने पर यह बेअसर हो जाती है। इन्सुलीन की अलग-अलग किस्में हैं, जिनके प्रभाव की अवधि भी अलग-अलग है। आपका डाक्टर बतायेगा कि इनमें से किसकी या किनकी [illegible] है।

जिन्हें मधुमेह को काबू में रखने के लिए इन्सुलीन लेना जरूरी हो, उन्हें खुद इंजेक्शन लगाने का अभ्यास कर लेना चाहिये, बशर्ते उनके हाथ न कांपते हों, नजर और याददाश्त कमजोर न हों।

जब सिद्ध हो जाये कि इन्सुलीन जरूरी है, तो रोज लेनी चाहिये। कारण यह है कि तब इन्सुलीन न लेने या अनियमित रूप से लेने से रक्त में शर्करा की मात्रा बहुत बढ़

भ्रांतियां और तथ्य

घटाने और पथ्य-सेवन के द्वारा अपना चयापचय ठीक करके वे इन्सुलीन की आवश्यकता से मुक्त हो सकते हैं।

३. क्या मधुमेह की खाने की दवाइयां हृदय के लिए खतरनाक होती हैं? सं. रा. अमरीका में कुछ विज्ञानियों ने अपने एक अध्ययन की रिपोर्ट छापी; उसमें उन्होंने बताया था कि रक्त में शर्करा घटाने के लिए मधुमेह-रोगियों को खिलायी जाने वाली दवाओं के कई दुष्परिणाम होते हैं। मगर इस अध्ययन की काफी कड़ी आलोचना भी १९७० से ही हो रही है। माने हुए विशेषज्ञ राबर्ट एफ. ब्रैडले का कहना है कि ये दवाइयां अंधाधुंध नहीं, बल्कि डाक्टर की देख-रेख में खायी जायें तो कोई खतरा नहीं। हां, जब पथ्य और व्यायाम रक्त-शर्करा का नियंत्रण करने में अपर्याप्त सिद्ध हों, तब भी इनकी मात्रा न्यूनतम रखनी चाहिये।

४. क्या करेला, अनार का रस आदि मधुमेह के नियंत्रण और इलाज में सहायक हैं? प्रयोगों व परीक्षणों से प्रकट हुआ है कि इनमें रक्त में शर्करा-मान घटाने की क्षमता अत्यल्प होती है, या बिलकुल भी नहीं होती।

५. क्या उपवास से मधुमेह बस में आ जाता है? हर्गिज नहीं। मधुमेह-रोगी को नियमित संतुलित भोजन करना चाहिये, जिसमें कार्बोहाइड्रेटों, प्रोटीनों और वसा की समुचित मात्रा हो। हां, उसे चीनी, गुड़, शहद और मिठाइयों से बचना चाहिये। बहुत-से रोगी एक वक्त का भोजन छोड़ देते हैं, मगर अन्य चीजें खा लेते हैं, जिनका कैलोरी-मान सामान्य भोजन से ज्यादा ही होता है। इस तरह एक वक्त का खाना छोड़ना बेकार ही होता है।

—डा. सी. वी. कृष्णस्वामी ['आकाशवाणी']

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जायेगी, अनेक रासायनिक गड़बड़ियां पैदा होंगी, अनावश्यक तकलीफ होगी; बेहोशी व मौत भी संभव है।

व्यायाम का मधुमेह पर लाभकारी परिणाम होता है। यदि डाक्टर ने मना न किया हो, तो मधुमेह-रोगी को नियमित रूप से कसरत करनी चाहिये—चाहे वह सैर हो, जिम्नास्टिक हो, खेल-कूद हो या योग। हां, कितना और कैसा व्यायाम आप करें, यह डाक्टर से पूछ लें।

मधुमेही बेहोशी (डायबिटिक कोमा) मधुमेह का इलाज न कराने, या सिलसिले से न कराने पर होने वाली तीव्र और उग्र पेजीदगी है। मधुमेही बच्चों और किशोरों में यह आम चीज है; हालांकि इन्सुलीन की आवश्यकता वाले वयस्क भी इससे बरी नहीं। सुव्यवस्थित इलाज करायें तो इससे बचना आसान है। जब बेहोशी तारी हो जाये तो बड़ी मस्तैदी से चौबीसों घंटे इलाज करना पड़ता है, जो काफी खर्चीला भी होता है। ठीक इलाज न हो तो बहुत-से रोगी इस अवस्था में मर जाते हैं।

मधुमेह से आंख के रेटीना में भी गड़बड़ हो जाती है। यह अक्सर पुराने मरीजों में देखी जाती है, जिनका ठीक से इलाज न हो पाया हो। इनकी नजर कमजोर होती है। लेजर किरणों से रेटीना के उपचार तथा मधुमेह एवं अन्य रासायनिक गड़-बड़ों की चिकित्सा से इन रोगियों की नजर सुधर सकती हैं। इन नेत्र-विकारों का पता जितनी जल्दी चल जाये और इलाज शुरू हो जाय, लाभ की संभावना उतनी ही ज्यादा होती है। इसीलिए नियमित शरीर-परीक्षा व नेत्र-परीक्षा का महत्त्व है।

गर्भावस्था और मधुमेह साथ-साथ चलें तो उससे दोनों पर दुष्प्रभाव हो सकता है। इन समस्याओं को हाल में अच्छी तरह समझ लिया गया है और उनमें से अधिकांश के निवारणोपाय भी खोज लिये गये हैं। हल्के मधुमेह वाली युवती यदि गर्भवती हो, तो उसके बच्चे के जीवित पैदा होने की आशा बहुत अधिक रहती है। मगर जरूरी है कि उसकी समुचित डाक्टरी और प्रसूति-विष-यक देखभाल की जाये। हाल का अनुभव इस बात की पुष्टि नहीं करता कि मधुमेह-रोगिणी को गर्भ धारण नहीं करना चाहिये।

संभव है, पांच-दस साल बाद इन्सुलीन-निर्भर रोगियों को रोज सूई न लगवानी पड़े। कोशिशें चल रही हैं कि रोगी की त्वचा के नीचे ऐसा उपकरण लगा दिया जाये, जिसमें इन्सुलीन भरी रहे और शरीर की मांग के अनुसार उसमें से निकलकर रक्त में मिल जाया करे। बीच-बीच में उपकरण में इन्सुलीन भर दी जाया करेगी।

एक संदेह यह है कि मधुमेह पैदा करने में शायद किसी वाइरस का हाथ है। यदि यह बात प्रमाणित हो गयी तो शायद मधु-मेह रोकने का टीका भी निकल आयेगा।

मधुमेह वंशानुक्रम से कैसे प्राप्त होता है, यह पूरी तरह पता लग जाये तो क्रोमोसोमों की गड़बड़ सुधारकर या रोककर मधुमेह की रोकथाम का प्रयत्न किया जायेगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपराध-कथाओं की पटरानी

उदयन शर्मा

हरक्यूल पॉयरो ! ...... दुनिया के जासूसी साहित्य का यह सर्वाधिक चर्चित नाम है। पॉयरो की जन्मदात्री अगाथा क्रिस्टी का इस साल जनवरी में ८५ वर्ष की आयु में देहांत हो गया। अपराध-कथाओं में श्रीमती क्रिस्टी का कोई सानी नहीं था। संभवतः डोरोथी सेयर्स के बाद तो कोई जासूसी कथा-लेखक उन्हें छू भी नहीं सका। जिन दिनों हवा की रौ में बहते हुए सभी अपराध-कथा-लेखक सेक्स और हिंसा पर अपनी कलम आजमा रहे थे, अकेली अगाथा क्रिस्टी ही थीं जो अपनी विधा पर टिकी रहीं और जिनकी लोकप्रियता भी बढ़ती रही। युनेस्को की एक रिपोर्ट के अनुसार, ब्रिटिश लेखकों में वे सर्वाधिक पढ़ी जाने वाली लेखिका थीं। उनकी किताबों के १०३ भाषाओं में अनुवाद हुए। शेक्सपियर को इस सर्वेक्षण में दूसरा स्थान मिला था। उनके मुख्य जासूस हरक्यूल पॉयरो और मिस मार्पल का नाम सदाबहार शरलक होम्स के साथ लिया जाता है।

अगाथा क्रिस्टी

उनका जन्म सितंबर १८९० में टारक्वये में हुआ था। अमरीकी पिता फ्रेडरिक मिलर की वे सबसे छोटी पुत्री थीं। छुटपन में उन्हें कोई खास शिक्षा नहीं मिली। लेकिन उनकी मां एक विदुषी महिला थीं, इसलिए घर में हर समय पढ़ाई-लिखाई का वातावरण रहता था। जब वे सोलह वर्ष की थीं, तो उन्हें गायन सीखने के लिए पेरिस भेजा गया। लेकिन गायकी का क्षेत्र उन्हें कुछ रास नहीं आया, इसलिए चंद कविताएं लिखकर वे वहां से वापस आ गयीं।

सन १९१४ में उन्होंने आर्चिबाल्ड क्रिस्टी से शादी की, जो फ्रांस में ही नौकरी करते थे। इन्हीं दिनों उन्होंने अस्पताल में नर्स का काम भी किया। उनका पहला उपन्यास 'मिस्टीरियस एफेयर्स एट स्टाइल्स' १९२० में प्रकाशित हुआ था। इस उपन्यास में उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

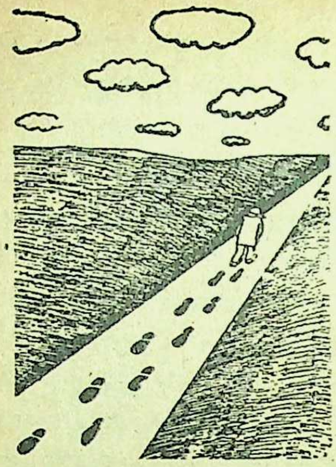

काम पर निकला जासूस

जहरों के बारे में अपनी समस्त जानकारी उड़ेल दी थी और अंडाकार खोपड़ी वाले, फ्लेमिश-मिश्रित अंग्रेजी बोलने वाले जासूस हरक्यूल पॉयरो को जन्म दिया, जो हर समय 'द लिटल ग्रे सेल्स' की बात करता रहता था। दरअसल कुछ बेल्जियम शरणार्थियों से बात करने के बाद ही अगाथा को हरक्यूल पॉयरो का चरित्र सूझा था।

इस किताब को साधारण-सी ही सफलता मिली थी। लेकिन उनके सातवें उपन्यास 'द मर्डर ऑफ़ रोजर एक्रायड' (१९२६) ने अपराध-साहित्य में तहलका मचा दिया। इसी उपन्यास के बाद उनके व्यक्तिगत जीवन में वह रहस्यमय घटना घटी, जिसका विस्तृत विवरण आप मार्च १९७६ के **नवनीत** में पढ़ चुके हैं।

अगाथा ने १९२८ में अपने पति कर्नल क्रिस्टी से तलाक ले लिया। उनकी एक पुत्री थी, जिसे पढ़ाई के लिए छात्रावास में छोड़कर वे खुद लेखन एवं यात्राओं में जुट गयीं। दो साल बाद जब वे इराक में घूम रही थीं, उनकी मुलाकात पुरातत्त्ववेत्ता मैक्स मेलोवन से हुई। फौरन दोनों दांपत्य-सूत्र में बंध गये। स्वयं अगाथा की भी रुचि थी पुरातत्त्व में। इसलिए मध्य पूर्व की अनेक खुदाइयों में उन्होंने अपने पति का साथ दिया और इसी कारण उनकी अनेक अपराध-कथाएं प्राचीन मिस्र और पश्चिम एशिया के माहौल पर आधारित हैं—खास तौर पर 'डेथ कम्स ऐज़ द एन्ड' (१९४५)। इस द्वितीय दांपत्य पर स्वयं विनोद करते हुए अगाथा ने कहा था कि मैक्स पुरातत्त्वज्ञ हैं न, सो मैं ज्यों-ज्यों बूढ़ी होती जाती हूं, मुझमें उनकी दिलचस्पी बढ़ती जाती है।

अपने सर्वाधिक लोकप्रिय चरित्र हरक्यूल पॉयरो को लेकर अगाथा चौथे दशक में भी अनेक उपन्यास लिखती रहीं, जिनमें 'मर्डर आन द ओरियंट एक्सप्रेस' और 'द ए. बी. सी. मर्डर्स' (दोनों सन १९३६ में लिखित) ने काफी प्रसिद्धि पायी। इससे जरा पूर्व वे अपने एक और चरित्र मिस मार्पल को 'मर्डर एट द विकारेज' (१९३०) में सामने लायी थीं। मिस मार्पल ब्रिटिश गांव की मध्यवर्गीय बुढ़ियाओं की प्रतिनिधि थीं।

अगाथा ने 'स्वांत:सुखाय' वाले अंदाज में कुछ साधारण उपन्यास मेरी वेस्टमेकाट के नाम से लिखे। लेकिन उनकी लोकप्रियता अपराध-कथाओं से ही बढ़ रही थी। छठे दशक में उनकी शैली में थोड़ा परिवर्तन हुआ; 'मिसेज मैक्गिंटी इस डेड' (१९५२),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'फ़ोर फ़िफ्टी फ्रॉम पैडिंग्टन' (१९५७) और 'एट बर्ट्रेस होटल' (१९६५) बढ़िया उपन्यास थे; लेकिन उनमें 'कार्ड्स ऑन द टेबल' (१९३६) या 'द मूविंग फिंगर' (१९४३) जैसा मजा नहीं था। 'एंडलेस नाइट' (१९६७) और 'पैसेंजर टु फ्रैंकफर्ट' (१९७०) में उन्होंने नये प्रयोग करने का प्रयास किया। इन उपन्यासों में अगाथा सरीखा प्रवाह और रहस्य नहीं था; लेकिन पाठकों ने इन्हें भी उसी उत्साह से खरीदा, जैसे पहले उपन्यासों का स्वागत किया था। इसी बीच वे 'नेमेसिस' (१९७१), 'एलीफैंट्स कैन रिमेम्बर' (१९७२), 'एखनातेन' (१९७३) आदि नाटक और कुछ अन्य उपन्यास लिखती रहीं।

एक उपन्यास उन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान लिखा था 'कर्टेन', जिसमें हरक्यूल की मृत्यु हो जाती है। उनकी इच्छा थी कि यह उपन्यास उनकी मृत्यु के बाद ही प्रकाशित हो। लेकिन प्रकाशकों ने १९७५ में ही इसे छाप दिया। अगाथा ने पॉयरो के चरित्र को अपने पहले उपन्यास 'द मिस्टीरियस एफ़ेयर्स एट स्टाइल्स' से शुरू किया और उसकी मृत्यु भी उसी मकान में दिखायी।

'टेन लिटल निगर्स' और 'द माउसट्रैप' से अगाथा ने रंगमंच पर भी सनसनी मचा दी। 'माउसट्रैप' (१९५२) पिछले चौबीस वर्षों से लंदन के सेंट मार्टिन थियेटर में खेला जा रहा है, जो कि एक विश्व-रेकार्ड है।

सिनेमा या टेलिविजन की अगाथा ने कभी भी परवाह नहीं की; हालांकि 'लव फ्रॉम स्ट्रेंजर' पर दो बार फिल्म बनी और 'फ़ोर फिफ्टी फ्रॉम पेडिंग्टन' और 'विट्नेस फॉर द प्रासिक्यूशन' पर बनी फिल्मों ने बाक्स-आफिस पर भरपूर सफलता पायी। इसमें मार्गरेट रदरफोर्ड ने मिस मार्पल का रोल अदा किया था। 'मर्डर ऑन द ओरिएंट एक्सप्रेस' पर पिछले वर्ष ही फिल्म बनी थी, जिसमें इंगमार बर्गमैन, लारा बैकाल और अल्बर्ट फिने का सहयोग था।

ब्रिटिश सरकार द्वारा 'डेम' की उपाधि से विभूषित अगाथा क्रिस्टी की व्यक्तिगत रुचियां थीं बागबानी और खेती। उत्तम खेती के लिए कई स्थानीय पुरस्कार भी उन्हें मिले थे। ज्यादा भीड़भाड़ उन्हें कभी पसंद नहीं थी। इसलिए वे किसी भी व्यक्ति से अकेले ही मिलना ज्यादा पसंद करती थीं और उस समय उनका बुद्धि-चातुर्य देखने योग्य होता था।

हालांकि लेखिका के रूप में अगाथा क्रिस्टी को डोरोथी सेयर्स के दर्जे में नहीं रखा जा सकता, लेकिन उनकी संप्रेषकता का कोई जवाब नहीं। आप उनकी कहानियां एक झपाटे में मजा लेकर पढ़ सकते हैं। उनके लेखन की खास बात थी कि उनकी कथा का अपराधी क्रूर और हिंसक के बजाय बहुत ही चतुर हत्यारा होता है। उन्होंने मुख्य कथा पर हिंसा और सेक्स को कभी तरजीह नहीं दी। यही चीज ज्यादातर अपराध-लेखकों को उनके आगे बौना बना देती है। **—डी-१६, निजामुद्दीन पूर्व, नयी दिल्ली-१३**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत में पर्वतारोहण

• ब्रह्मदत्त स्नातक •

आधुनिक अर्थ में पर्वतारोहण हमारे देश में पिछले कुछ दशकों में आरंभ हुआ है और सुसंगठित रूप में तो पिछले पचीस सालों से ही। इस अल्प अवधि में हमारे पर्वतारोहियों ने २० हजार फुट या उससे ज्यादा ऊंचाई की चोटियों पर चढ़ने के प्रयत्न एक सौ पचास बार किये हैं। इन चोटियों के एवरेस्ट, कांचनजंगा, चो-ओयू, सागरमाथा, नंदादेवी, त्रिशूल, देवीस्थान, देवटिब्बा आदि हैं, जिनमें से अधिकांश तिब्बतियों, नेपालियों या भारतवासियों के लिए धार्मिक महत्त्व भी रखते हैं। इन हिम-मंडित चोटियों व दर्रों पर चढ़ने की विशेष उमंग हमारे देशवासियों में मुख्य रूप से पैदा हुई १९५३ में सर जान हंट के नेतृत्व में ब्रिटिश पर्वतारोही दल के न्यूजीलैंडवासी सदस्य एडमंड हिलैरी एवं भारतीय नागरिक तेनसिंग नोरके के एवरेस्ट पर चढ़ने के बाद से।

पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लेना, उसके लिए आवश्यक उपकरण जुटाना और अभियानों का आयोजन व संचालन करना बहुत खर्चीला काम है; अतः अब पर्वतारोहण शौकिया चीज न रहकर बहुत अंशों तक व्यावसायिक बन चुका है। सरकारी तौर पर भी इसे आर्थिक एवं अन्य प्रकार के प्रोत्साहन दिये जा रहे हैं।

हिमालय में पर्वतारोहण का काम संस्थागत रूप में सबसे पहले हाथ में लिया देहरादून के प्रसिद्ध दून स्कूल ने। १९४२ में वहां तीन पंद्रह वर्षीय छात्रों ने अपने हेडमास्टर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान मार्टिन और होल्ड्सवर्थ के नेतृत्व में उत्तरप्रदेश के तीर्थस्थान बदरीनाथ से उत्तर अरवा घाटी के ग्लेशियरों तक पहुंचकर १९,००० फुट की ऊंचाई पर शिविर लगाया था।

ठेठ बदरीनाथ तक सड़क बन जाने के कारण आज शायद उनका वह काम हमें मामूली लगे। परंतु आज से चौंतीस साल पहले जब ऋषिकेश से कीर्तिनगर तक ही मोटरें पहुंचती थीं और शेष सारा मार्ग पैदल या खच्चरों पर तय करना पड़ता था, उस अभियान में आयी कठिनाइयों का अनुमान किया जा सकता है।

परंतु वास्तविक रूप से भारतीयों द्वारा पहला बड़ा पर्वतारोहण था १९५१ में त्रिशूल (२३,३६० फुट) की चोटी पर पहुंचना। इस अभियान का नेतृत्व भी दून स्कूल के ही शिक्षक गुरदयाल सिंह ने किया था। इस चोटी को सबसे पहले ब्रिटिश पर्वतारोही लांगस्टाफ ने १९०७ में सर किया था। १९७३ में भी एक संयुक्त कमान के अंतर्गत दून स्कूल के छात्रों और शिक्षकों ने मिलकर गढ़वाल स्थित एक और चोटी को सफलतापूर्वक सर किया।

फ्रांसीसी, अंग्रेज, अमरीकी तथा अन्य विदेशियों के सफल एवं विफल अभियानों ने दुनिया के इस सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने की लालसा भारतीय पर्वतारोहियों के मन में जगायी थी। तेनसिंग नोरके के महान पराक्रम ने उस लालसा को उत्कट बना दिया। एवरेस्ट-आरोहण का पहला भारतीय प्रयत्न ब्रिगेडियर ज्ञानसिंह के नेतृत्व में सन १९६० में किया गया। इस दल के सदस्य २८,३०० फुट की ऊंचाई तक चढ़ने में सफल हो गये थे; मगर तेज बर्फीली हवाओं ने उन्हें चोटी से केवल सात सौ फुट की निचाई से वापस लौटा दिया।

एवरेस्ट-आरोहण का दूसरा भारतीय प्रयत्न हुआ १९६२ में मेजर डायस के नेतृत्व में। परंतु इस बार भी पर्वतारोहियों को प्राकृतिक बाधाओं के कारण चोटी से केवल ४०० फुट नीचे से लौट आना पड़ा। मगर इस दल के तीन सदस्य २७,६५० फुट की ऊंचाई पर बिना आक्सिजन-सिलेंडर की मदद के तीन दिन तक रहे। यह बड़ा विस्मयकारी साहस था।

अंततः १९६५ में कमांडर एम. एस. कोहली के नेतृत्व में भारतीय दल के नौ पर्वतारोहियों ने चार टुकड़ियों में बंटकर क्रमशः २०, २२, २४ व २९ मई को एवरेस्ट पर हमारा राष्ट्रीय झंडा फहराया। लगता है कि १९६२ के चीनी आक्रमण के बाद हमारे देशवासियों में जो उत्कट पराक्रम-भाव जागा, उसने इन्हें पर्वतारोहण में कीर्तिमान स्थापित करने की प्रेरणा दी।

पर्वतारोहण एक चुनौती-भरा काम है, जिसमें युवकों की साहस-वृत्ति को परितृप्त होने का अवसर मिलता है। इंग्लैंड के एक प्रोबेशन-अफसर ने युवकों में अपराध-वृत्ति का विश्लेषण करते हुए लिखा है कि आज की तथाकथित सभ्य दुनिया ने हर काम को इतना आसान और यांत्रिक-सा बना दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

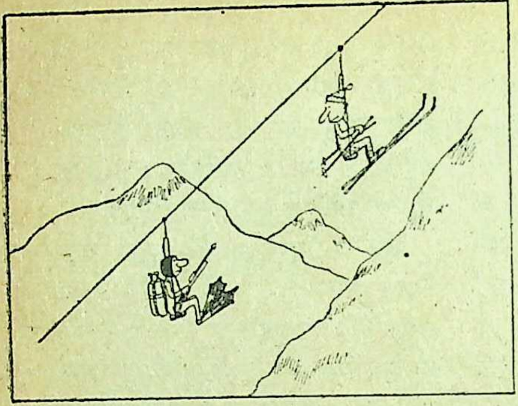

ऊन के स्थान पर विशेष प्रकार के सिंथेटिक वस्त्र तैयार कराये गये। बर्फ को काटकर ऊपर चढ़ने के लिए विशेष प्रकार की कुल्हाड़ियां एवं सहारे की छड़ियां बनायी गयीं। बर्फ पर पड़ती सूरज की रोशनी की चौंध से पर्वतारोहियों के अंधे हो जाने के खतरे को दूर करने के लिए विशेष प्रकार के चश्मे तैयार किये गये और चलने में फिसलने से बचने के लिये खास तरह के बूट भी। इसके

है कि युवकों की अंतर्निहित शक्ति व प्रतिभा को अधिक श्रमपूर्ण या चुनौती-भरे काम करने का मौका ही नहीं मिलता। आराम-पूर्ण व चुनौतीहीन जीवन बिताने के कारण ही आज का युवक पथभ्रष्ट व अपराधोन्मुख होता है। इसलिए यदि पर्वतारोहण जैसी गतिविधियों में युवकों को प्रवृत्त किया जाये, तो वे साहसी व अनुशासनयुक्त बन सकेंगे। आज राष्ट्र को ऐसे ही युवकों की आवश्यकता है। अब तो पर्वतारोहण राष्ट्रीय सुरक्षा व खेलों का नियमित अंग बन गया है और उसके विकास एवं प्रशिक्षण के लिए नये तरीके अपनाये गये है।

पर्वतारोहण के लिए समुचित साधन-सामग्री भी आवश्यक है। पहले आक्सिजन की कमी के कारण औसत पर्वतारोही एक विशेष ऊंचाई के बाद आगे नहीं बढ़ पाते थे। इसलिए आक्सिजन के सिलेंडर साथ रखे जाने लगे। उसके वस्त्रों को शीत-निरोधी एवं हल्का रखने के लिए सूत और

अलावा भोजन या पेय पकाने के लिए विशेष बरतन व चूल्हे, चोटियों पर चढ़ने के लिए सिंथेटिक धागों से बने रस्से, विशेष प्रकार के बिस्तर, तंबू, मौसम की जानकारी पाने के यंत्र, ट्रांजिस्टर रेडियो, ऊंची किस्म के कैमरे, ट्रांसमिटर आदि भी जुटाने पड़ते हैं।

पर्वतों से वास्ता न रखने वालों के लिए पर्वतारोहण का काम अत्यंत कठिन है। वैसे भी ऊंची-नीची, टेढ़ी-मेढ़ी, कहीं सीधी-सपाट और कहीं बिलकुल सीधी गहराई वाली भूमि को पार करना, पाषाण-खंडों और बर्फ से ढंकी चोटियों पर चढ़ना और फिर उतरना जोखिम-भरा काम है।

पर्वतों में रहने वाले तो एक जगह से दूसरी ओर जाने के लिए, अपने पशुओं को चराने या खाद्य सामग्री जुटाने के लिए अनायास ही पर्वतारोहण करते हैं; परंतु वे चोटियों पर नहीं चढ़ते। गद्दी-गड़रिये और उनसे भी अधिक हातो, डोटियाल लेप्चा ऊंचाई तक जाते हैं या बोझ ले जाने का काम करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ी भेड़ें, बकरियां और याक जैसे पशु भी एक खास ऊंचाई के बाद पहाड़ पर नहीं चढ़ सकते। वहां तो बस मानव ही चढ़ पाता है। इसलिए पर्वतारोहण में प्रशिक्षण का महत्त्व है।

वैसे हिमालयी पर्वतारोहण में, विशेषत: एवरेस्ट की चढ़ाई में सर्वाधिक योगदान शेरपाओं का रहा है। चेत्तन, गायले, पासाङ, दा नामग्याल, आङ शेरिङ, नवाङ गोम्बू, सोनाम ग्यात्सो तथा स्वयं तेनसिंग नोरके आदि सभी शेरपा ही तो हैं। परंतु अब तो मैदानों के रहने वाले ब्रिगेडियर ज्ञानसिंह, मेजर अहलूवालिया, कमांडर कोहली, (स्व.) मेजर जयाल, कैकी एफ. बुनशाह, एन. कुमार जैसे बहुतों ने पर्वतारोहण में अगुवाई की है। इनमें सैनिक भी हैं, असैनिक भी।

और तो और, १९६३ में लड़कियों की एक टोली ने २२,७४२ फुट की ऊंचाई पर कैलाश को पार किया और उसके एक वर्ष बाद महिलाओं की ही एक टोली ने २२,४९० फुट की मृगथुनी चोटी सर की। इसी प्रकार अब तक महिलाएं हनुमान टिब्बा, गंगोत्री-१, त्रिशूल तथा अन्य अनेक चोटियों पर सफलतापूर्वक चढ़ चुकी हैं। इन अभियानों में गुजरात, महाराष्ट्र एवं बंगाल की भी लड़कियां और स्त्रियां थीं।

हमारे देश में पर्वतारोहण के विधिवत् प्रशिक्षण का काम प्रारंभ हुआ तेनसिंग की

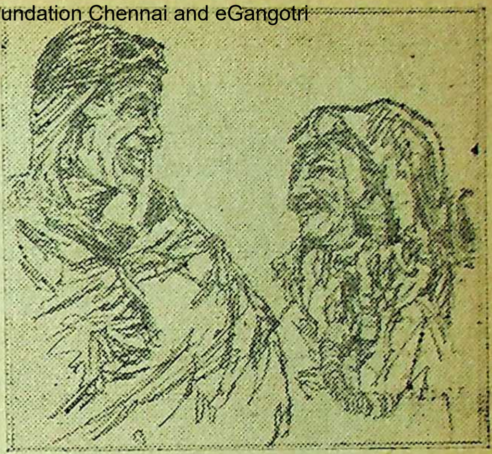

तेनसिंग और हिलेरी

सफलता के बाद १९५४ में दार्जिलिंग में हिमालयन माउंटिनीयरिंग इंस्टिटयूट की स्थापना से, जिसे प्रधान-मंत्री नेहरू एवं पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री डा. विधानचंद्र राय का आशीर्वाद प्राप्त था। आजकल इस संस्था के प्रिंसिपल हैं ग्रुप कैप्टन ए. जी. एस ग्रेवाल। इसके बाद उत्तरकाशी (उत्तर प्रदेश) और मनाली (हिमाचल प्रदेश) में दो और संस्थाएं खुलीं। फिर गुजरात ने माउंट आबू में एक प्रशिक्षणालय स्थापित किया। गुलमर्ग (कश्मीर) में भी ऐसी एक संस्था चल रही है।

इसी तरह अब देश में पर्वतारोहण के लिए दर्जनों क्लब व सोसायटियां बन चुकी हैं, जो पर्वतारोहण में जनता व सरकार की उत्साहपूर्ण रुचि के प्रमाण हैं। प्रशिक्षण के लिए आवश्यक अधिकांश उपकरण अब तक विदेशों से आते थे। हर्ष का विषय है कि वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी अब निजी एवं सरकारी प्रतिष्ठानों में तैयार होने लगे हैं।

दार्जिलिंग के इंस्टिटयूट में प्रशिक्षणार्थियों को पहले सप्ताह शारीरिक तथा बौद्धिक दृष्टि से बहुत चुस्त व शक्तिशाली बनाने के लिए बड़ा सघन और व्यस्त कार्यक्रम रखा जाता है। प्रशिक्षणार्थियों को भोर में ही उठाकर शारीरिक कसरत और नाश्ता कराकर लंबे रास्तों पर ऊंचा-नीचा चढ़ने-उतरने के लिए भेजा जाता है। धीरे-धीरे उन्हें अपना सारा बोझ लेकर चलने का अभ्यास कराया जाता है। ठहरने के दौरान भाषण, फिल्म, संगोष्ठी, स्लाइड, चार्ट व नक्शों द्वारा लोकभाषा एवं लोक-संस्कृति का परिचय, फर्स्ट एड, बर्फ से लगने वाली चोटों के बारे में जानकारी व व्यावहारिक ज्ञान दिया जाता है तथा पर्वतारोहण के वस्त्रों व उपकरणों का उपयोग सिखाया जाता है।

साथ ही प्रशिक्षणार्थियों को इंस्टिटयूट के साथ लगे खुले चिड़ियाघर और वनस्पति-उद्यान में घुमाकर पहाड़ों पर पाये जाने वाले पशु-पक्षियों और पेड़-पौधों से परिचित कराया जाता है। इस प्रकार उनकी दृष्टि वैज्ञानिक हो जाती है। इसके हेतु उन्हें पश्चिमी सिक्किम की ओर सात-आठ दिनों के लिए भेजा जाता है। सिक्किम के भारत में विलय के बाद अब वहां प्रशिक्षणार्थियों के लिए नये अभ्यासक्रम एवं पाठचक्रम चलाये जाने लगे हैं।

इस प्रशिक्षण के बाद उन्हें बेस कैंप में १४,७०० फुट की ऊंचाई पर रखकर दस दिन तक चट्टानों, पत्थरों, बर्फ के ग्लेशियरों और चोटियों पर चलना-चढ़ना सिखाया जाता है। इस फील्ड ट्रेनिंग के अंत में प्रशिक्षणार्थियों को किसी मामूली चोटी पर चढ़ाने का अभ्यास कराया जाता है, जिसमें हाथ-पैरों से चट्टान को मजबूती से पकड़ना, कुल्हाड़ी से बर्फ काटना, सीढ़ी का प्रयोग, रस्सी की गांठें बांधना व खोलना—वे सब क्रियाएं उन्हें करनी पड़ती हैं।

इसमें सफल होने के बाद उन्हें एडवान्स ट्रेनिंग दी जाती है, जिसमें पहले दी गयी बातों का ही सघन और व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाता है और मौसम अनुकूल होने पर २० से २१ हजार फुट की चोटियों पर चढ़ने का परीक्षा-अभ्यास कराया जाता है। इतने सब प्रशिक्षण के बाद ही पर्वतों की चोटियों पर चढ़ने का उपक्रम बनाया जाता है। स्कीइंग भी एक प्रकार का मनोरंजक पर्वतारोहण है; गुलमर्ग में उसका भी प्रशिक्षण दिया जाता है।

प्रशिक्षण के मामले में हर व्यक्ति की अपनी-अपनी क्षमता होती है। हिमालय क्लब के अध्यक्ष जे. टी. एम. गिब्सन ने १९३७ में ही तेनसिंग को प्रशिक्षण के दौरान जादूगर की भांति चट्टानों व पत्थरों पर अद्भुत संतुलन के साथ चढ़ते-उतरते देखकर उसके भावी प्रशस्त जीवन की भविष्यवाणी की थी।

यहां पर यह कह देना अप्रासंगिक न होगा

[शेष पृष्ठ ११६ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महरेखा

—महेंद्र शर्मा

'सत्यजित बेटा!' ...... पिताजी ने आवाज दी थी। बुढ़ऊ न जाने फिर कौन-सा आर्डर झाड़ेंगे, यह सोचता हुआ बेमन से आंगन में आया।

कत्थई रंग का एक कागज लिये पिताजी खटिया पर बैठे थे। उन्होंने बैठने का इशारा किया और कागज हाथ में थमाते हुए मुरझायी-सी आवाज में कहा—'महावीर सेठ ने मुकद्दमा ठोक ही दिया आखिर। अब मरो कोर्ट दौड़-दौड़कर। यहां तो खाने का जुगाड़ मुश्किल है, ऊपर यह मुसीबत! कोर्ट का खर्चा ......'

कुछ देर तक अस्पष्ट ढंग से कागज को एक नजर देखकर ही मैं सब कुछ समझ गया था। आगत के भार से गुमसुम जमीन की ओर ताकता रहा। कुछ देर वैसे ही बैठे रहने के बाद पिताजी ने कहा—'अब ?'

'केस तो लड़ना ही पड़ेगा......' मैंने कहा।

'लेकिन पैसा कहां से आयेगा! यह साला बड़ा तो ऐसा फालतू है कि क्या कहें। अपना माथा ठोको और क्या! अरे, एक नहीं दस बार लिखा कि महावीर सेठ को एक बार फोन ही कर दे। तू बड़ा अफसर है, दो-चार साल की मोहलत ही ले ले। पर बाप तो गधा है, खाली बकता है। इतना बड़ा अफसर है, किसी काम का नहीं। बस, बीवी-बच्चे और ससुराल! हं:, लिखते क्या हैं जनाब—नहीं यह काम मुझसे नहीं होगा, महावीर सेठ सरकारी पार्टी का है। अरे, वाह रे बहाना! विरोधी दल का ही होता, तो तू कौन-सा फोन करने वाला था! घर से माया-मोह हो जब ना। यह सब राजनीति हमने खूब पढ़ी है। ऐसे दसों अफसर यों टांग के नीचे से निकाल दिये हैं ......'

पिता का स्वर धीरे-धीरे पंचम होता जायेगा और घर में उठा-पटक ही इसका क्लाइमैक्स होगा—कई बार देख चुका हूं। भैया का प्रसंग आते ही पिताजी बिफर जाते हैं। मैंने कुछ खीझकर कहा—'ओहो, रहने दीजिये। बड़े भैया की जीप गली में घुसते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही आप तो पहले दौड़ लगाते हैं। गये साल चित होकर गिर गय थे गली में। अभी गाली देने का कोई मतलब है!'

'बेटा! बाप का सिनेह कहां जायेगा।' ऐसा कहते हुए पिताजी ने बड़े अफसर के बाप होने के उल्लास को दबा लिया था। फिर गला साफ करके बोले–'नहीं, मेरा कहना है, घर पर भी थोड़ा-सा ध्यान दो। अरे और न सही, तुझे ही और जरा अच्छी जगह लगवा देता। घर का बड़ा है, पूरा घर संभालना चाहिये उसे। मैं आज आखिरी चिट्ठी लिख रहा हूं उसे कि तू महावीर को फोन कर दे, मोहलत ले ले। यह सब राजनीति बाप के सामने नहीं चलेगी।'

भैया कम स्वार्थी हैं? घर की ओर कुछ तो ध्यान देना चाहिये। उन्हें मालूम है मेरी सीमित आमदनी है और मां-बाप मेरे साथ हैं। मुझे न सही, मां-बाप को कभी-कभार कुछ भेजते या मिलने चले आते–दो-चार महीने में कभी। मिलने आयेंगे भी तो अफसरी कायदे से। गेस्ट हाउस में रुकेंगे। प्यून फल की टोकरी रख देगा लाकर। सबसे पांच-दस मिनट हलो-हलो स्टाइल में मिल लिये, फिर गाड़ी में फुर्र। इसीलिए तो मां-बाप, भाई-बहन उन्हें कोई भी नहीं चाहते। मैं अभावत्रस्त सही, संबंधों को तहे-दिल से निभा रहा हूं। सबसे सुख-दुःख में जुड़ा हूं। यही प्रेम तो आदमी को बचाये रखता है। न हो, किसके लिए जिये।

नाश्ते में मुझे एक कप चाय और बासी रोटी टूंगते देखकर मां ने कहा–'अपने बाप से पांच बरस ज्यादा पढ़कर भी क्या फायदा हुआ मेरे लड़के को! बचपन में हमारे जमाने में जो भोग किया, वह किया। अब तो हड्डी-भर रह गया है। हे भगवान, क्या समय आ गया!' इसके बाद उनका वैभव के दिनों को दुहराने का कार्यक्रम चला।

पत्नी और मेरे लिए यह सब केवल एक मनोरंजन के अतिरिक्त कुछ नहीं। अपने को आर्थिक दृष्टि से बेचारा मानने के बावजूद मां के ये वक्तव्य कुछ ऐसी अफरा-तफरी करते हैं कि मेरी बेचारगी पर गुमान की कटमट दिखने लगती है। भारतीय संस्कृति पर बहस के समय छाती फुलाने वाले ढंग से यह सब होता है। मां की इन बीती बातों और घर के वैभव के सोदाहरण सचित्र चित्रण से कुछ देर संशय में पड़कर अपने को संपन्न ही मानने में आसानी होती है। इन अवसरों पर सोचता हू–हां अपने में कौन-सी कमी है! किसी तरह पेट चलता ही है। जमा-पूंजी और मोटर-बंगले में क्या धरा है! कौन-सा लेकर जाना है!

जिंदगी से निरंतर गोरिल्ला लड़ाई का ही एक सहज पैंतरा है शायद यह। या फिर एक क्षणिक पलायन या विश्राम। न जाने क्या है! यह सब शायद सामयिक दबाव पर निर्भर होता है कि कब कैसा लगे। इस समय लेकिन मैंने कहा–'मां, मैं उस मांगे मुनीम के यहां पिताजी के साथ रोज सवेरे बासी रोटी खाने जाता था, उसे तुम भूल गयीं? उस बात को क्यों नहीं कहतीं?'

'अरे, बचपन की बातें तुझे कहां याद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं।' मां ने भड़कते हुए कहा। मैं समझ गया था, वह उन बातों को छिपा देना चाहती हैं। उसे याद करना भी अपनी कमजोरी ही मान लेना है। पिताजी ने भी बराबर छिपाया है। उन्होंने मुझे अभी तक कभी नहीं बताया कि हमारा पूरे का पूरा मकान टुकड़े-टुकड़े में रेहन रखा है। मेरे पढ़ने की फीस या परीक्षा-फीस के लिए उन्होंने मां के लड़ने-झगड़ने पर भी बार-बार घर के पीतल के बड़े-बड़े बरतन बेचे हैं। वैसे वह सब मुझसे छिपा कहां!

पत्नी ने हंसते हुए मेरा हाथ दबाकर कहा–'अरे तुम भी तो कहते हो–हमने ये दिन देखे हैं, वो दिन देखे हैं। जीप थी, मखमल की पैंट पहनते थे हम चालीस-पचास तोला सोना था, वो......'

मैंने पाया, पत्नी मेरी खिल्ली उड़ाकर अपने परिवार को हमसे ऊपर स्थापित करना चाहती है; इसीलिए मैंने उसकी बात बीच में ही काटकर कहा–'देख आभा, ऐसी बात नहीं कि मैंने तुमसे अपनी भूतपूर्व और तथाकथित संपन्नता का ही बखान किया है। हकीकत तो यही है कि मैंने सचाई को कभी नकारा नहीं। मैंने अपनी विपन्नता को बार-बार स्वीकार किया है। मेरी बातों और मां-बाप की बातों में अंतर इतना ही है कि वे जहां जिंदगी-भर अभाव को छिपाकर संपन्नता के छल में अपने को क्षय करते

चित्र : डा. विष्णु भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे, मैंने अपने अभाव के तथ्य को कभी झुठलाया नहीं और क्षय होता रहा हूं। हां, कभी किसी आवेग में अपनी क्षणिक संपन्नता की बात भी याद कर ली, बस। मैं अपने को छलूंगा नहीं।'

पत्नी ने मेरी बात का विश्वास नहीं किया, उसने इस संबंध में मुझे झूठा ही समझा—यह उसकी मुस्कराती आंखों से साफ था। मैंने अपने को उसी परिचित खोह में फिर से भटकते पाया, जहां से जीवन को अपने पास घसीट लाने के लिए बार-बार हाथ ऊपर बढ़ाता रहा हूं; लेकिन मेरे पास से ही अदृश्य छायाएं जीवन का शव लादे गुजर जाती हैं। हाथ बेबसी में नीचे लटक जाते हैं। तब से आज तक की लंबी दौड़ का नतीजा क्या हुआ? जहां के तहां! उसी खोह में!

घर से बाहर निकलने के लिए मैंने मुड़े-तुड़े लेदर-बक्से से अपनी धुली हुई कमीज निकाली। मन बहुत ही भारी है। गांव वाले घर का लकड़ी का बक्सा याद आया। हरी डाल को चाकू से छीलने पर ऊपरी हरी परत के नीचे जिस तरह धीरे-धीरे एक बेरंगा गांठदार कड़ा हिस्सा उभर आता हैं, कुछ वैसा ही कोई एक हिस्सा उभर आया है मेरे अंदर। मन के प्रतिरूप-सा वह लकड़ी का बक्सा आज आलतू-फालतू चीजों से अंटा है। पेन का कैप, खाली दवात, पुरानी चिट्ठियां, चूहों के दांतों से बने भिन्न-भिन्न आकार वाले कागज के टुकड़े। हर चीज के साथ जुड़ी हुई हैं कई स्मृतियां और भावनाएं।

बीस साल पुराना वह बक्सा। किताब-कापी रखने के लिए शायद सेवेन्थ-एट्थ में मैं तीन-चार महीने से संदूक की मांग कर रहा था। बड़ी मुश्किल से जुगाड़ करके किसी तरह वह बक्सा पिताजी ने खरीदा। पैदल ही किसी तरह दो मील दूर घर तक बक्से को उठाते-रखते लाया था। रोज आधा सेर आटे के लिए सेठ की गद्दी में घंटों पिताजी के आस-पास मंडराने के बाद पिताजी से आठ आने पैसे जुटाया जाना... रात आठ-नौ बजे तक आटा लेकर घर लौटना..... घर पहुंचने पर मां का चूल्हा जलाना ...... कई बातें ऐसी हों।

घर से बाहर निकलने के बाद पत्नी की ताकीद 'प्रिंसिपल से एडवांस के लिए कहना' ने सिर पर कोई गट्ठर डाल दिया। बेबी को रात-भर बुखार रहा इसलिए पत्नी ने एडवांस की बात कही, मुझे मालूम है। बेबी के लिए फल और दवाइयां चाहिये। उस प्रिंसिपल से एडवांस मांगना मेरे सिद्धांत के खिलाफ है। पर स्कूल पहुंचते-पहुंचते मेरे सिद्धांत में बदलाव आ गया। चार सौ अठारह रुपये के पे-रोल पर दस्तखत करा-कर तीन सौ रुपये देने वालों का सिद्धांत के भोंथरे अस्त्र से सामना नहीं किया जा सकता—इसी आधार पर। और फिर ये तीन सौ रुपये भी दो महीने से नहीं मिल रहे हैं।

हम सभी टीचरों ('मास्टर' कहना अखरता है) ने सिद्धांत बना लिया है कि अब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूखों मर जायेंगे पर हम पैसाखोर ([illegible] खोर की तर्ज पर) गधे प्रिंसिपल से एडवांस नहीं मांगेंगे। एडवांस दे तो देता है, पर देने के बाद नौकरों-सा आंखें तरेरने लगता है, नौकरों-जैसा व्यवहार करना चाहता है।

वह सामूहिक निर्णय बड़ा आकर्षक था। उस समय वह एक विराट सत्य को पालने-जैसा आनंद दे रहा था। लेकिन धीरे-धीरे वह विराट सत्य पिद्दी होता गया है। अब उसका ट्रांसफर हो चुका। उसकी जगह एक दूसरा सत्य सामने आया है कि कुछ लोग प्रिंसिपल से खुसुर-फुसुर करके एड-वांस ले रहे हैं, कि सिद्धांत के भोंथरे हथि-यार से लड़ाई लड़ना व्यर्थ है, कि एडवांस चुपचाप लेने वालों के सामने वह पैसाखोर प्रिंसिपल महान बना घूम रहा है और हमारा सामूहिक सिद्धांत सिद्धांततः बर-करार है।

स्कूल पहुंचते-पहुंचते बारिश से मैं आधा भीग गया। छाता बंद करके रखने के बाद एडवांस के पसोपेश में पड़ा था कि प्रिंसिपल ने बुलवा भेजा। नमस्कार करके सामने बैठ गया, तो उसने कहा—'विनीत साहब का फोन आया था। मुझे नहीं मालूम था भाई कि वे आपके बड़े भाई हैं। हां, उन्होंने मेसेज छोड़ा है ...... आप तो घर से नहीं आये थे। वे कल आ रहे हैं यहां—कुछ सर-कारी काम से।' फिर कुछ रुककर उन्होंने धीमे स्वर में कहा—'देखिये, एक गुप्त बात बता रहा हूं ...... बस आप तक रहे, मैं पिछले सप्ताह राजधानी गया था तो मैंने [illegible] विनीत साहब को मैनेज-मेंट के बारे में सारी बातें बतायी थीं। मैं जानता हूं आप जैसे महत्त्वपूर्ण लोग यहां मजबूरी में पड़े हैं। एक्चुअली, दिस इज आउटराइट एक्सप्लाय-टेशन। भाई, मैं भी तो टीचर ही हूं।'

मैं प्रिंसिपल का इशारा समझ गया था। उन्होंने वेतन वाले शोषण की रिपोर्ट की है। प्रिंसिपल के बारे में मेरी सारी धारणा बदल गयी। सोचने लगा, बिना आंखों देखे प्रमाण के किसी को अच्छा या बुरा नहीं समझ लेना चाहिये। बेचारा हम टीचरों के लिए कुछ तो कर रहा है। हां, प्रिंसिपल भी जान गया कि मैं कोई कम आदमी नहीं हूं। इतने बड़े अफसर का भाई और अच्छे-खासे घर का होने के अहसास ने फिर एड-वांस न मांगने के लिए मजबूर कर दिया। इसके साथ खुशी भी जुड़ी थी, और जुड़ी थी एक दबी-ढंकी चिंता भी कि भैया की आव-भगत तो करनी होगी, पैसे कहां से आयेंगे।

स्टाफ-रूम में मेरे घुसते समय मोदक साहब भाषण मार रहे थे—'अरे, इस देश में कुछ नहीं होने का। यहां तो अमीर से लेकर गरीब तक सभी शोषण में लगे हुए हैं—रिक्शेवाला भी शोषण करता है और लख-पतिमल पिस्सूमल भी। अब देखो, घर से यहां स्कूल तक का दो रुपया मार ले गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिक्शेवाला। पानी गिर रहा है, मजबूरी है, फायदा उठाओ। वैसे आठ आने लेते हैं यहां तक। मेरी भी क्लास थी, क्या करता ? अब यहां आप परिवर्तन की बात करते रहो। भाई, क्रांति तो वहीं होती है जहां दो वर्ग हों—साफ-साफ—एक शोषक, एक शोषित। यहां तो ......'

गर्गजी ने फुटनोट जोड़ दिया—'रिक्शेवाला अपने को अमीर समझने लगा होगा।'

साहू ने मोदक साहब को पस्त ही कर दिया। उनकी व्यंग्य के लहजे में धीरे-से पूछी एक ही बात से कि 'आपको कितनी पे मिलती है मोदक साहब ?' वे तमतमाकर भाग खड़े हुए। हम सब मुस्कराते रहे, शायद यही सोचते कि क्या करें भाई, हम सब शोषण करने देने को भी मजबूर हैं।

शाम को स्कूल से थके-मांदे लौटने पर फिर कहीं जाने की इच्छा नहीं हुई। सोचा, बेबी का ज्वर सरदी का है, ठीक हो जायेगा। भाईसाहब की आवभगत की बात कल देखी जायेगी।

घर में देहात वाले मामा आये थे और पिताजी वीर-रस की कविता के पाठ वाले टोन में अपने बड़े बेटे की नालायकी बता रहे थे, साथ ही मेरी प्रशंसा किये जा रहे थे।

× × ×

वही परिचित दृश्य था। पिताजी बारबार पूछ रहे थे—'विनीत तीन-चार बजे तक आ जायेगा न ?' उन्होंने सवेरे से मुहल्ले-भर में प्रचार कर डाला था—वो मेरा बेटा है न विनीत—आइ. ए. एस.—वह आने वाला है आज।

जीप से भैया-भाभी साहबी ठाठ से उतरे थे। सामान उनका नहीं उतरा था—वह गेस्ट हाउस में था। चपरासी फलों का टोकरा घर के अंदर रख आया था। पिताजी बेटे से बात न कर, किसी बड़े अफसर से बातें कर रहे थे। मां भी गद्गद अवस्था में थी। मैंने पिताजी को दो बार वह कत्थई कागज—कोर्ट का नोटिस—दिखाकर भैया से बात करने का इशारा किया। पर वे शायद अपनी किसी ऐसी सचाई को पास फटकने नहीं देना चाहते थे, जो उनकी खुशी के नशे को 'डायल्यूट' कर दे।

पड़ोसियों का आना-जाना भी बराबर लगा रहा और उस बीच मुझे बराबर लगता रहा कि मैं बेचारा नहीं हूं। मेरा भाई है—इतना बड़ा संबल। भरा-पूरा घर है मेरा। मेरे सब अपने हैं। मैं अकेला कहां हूं ! ये सब जो मेरे साथ हैं !

भाभी ने बेबी को जो दस का नोट थमाया, उसी से मीठा वगैरह मंगाकर काम चला लिया पत्नी ने। जाने के पहले भैया ने मां और पिताजी को राजधानी घुमा लाने की बात औपचारिकता-वश ही कह दी; परंतु दोनों ने बोरिया-बिस्तर जीप पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाद दिया। भाभी ने भैया को आंख के इशारे से मना भी किया। मैंने इस बात को चुपचाप पचा लिया। मैं भी शायद चाहता था कि माता-पिता कुछ दिन के लिए सही, जायें।

अचानक मैंने भैया से प्रिंसिपल की बतायी हुई बात की बाबत पूछ लिया। उन्होंने कहा—'तुम्हारे प्रिंसिपल का चेहरा ही एक-आध बार देखा है मैंने। उसने तो स्टाफ की पे के बारे में कोई बात ही नहीं की है। लगता है, चालू है। तुम मुझसे इस संबंध में शिकायत न कर दो, सोचकर उसने यह मनगढ़ंत बात सुना दी।'

फिर उन्होंने बाड़ी की ओर चलने का इशारा किया और चारों ओर किसी के न होने का यकीन होने के बाद कहा—'पिताजी ने मुझे चिट्ठी लिखी थी कि तुम उनको ढंग से खिलाते-पिलाते नहीं, प्रापर केयर नहीं लेते। ढेर शिकायतें हैं उनकी।' उसके बाद उन्होंने मां-बाप से किस तरह व्यवहार करना चाहिये, इस पर कुछ उपदेश दे डाले, जिन्हें मैं ठीक से सुन नहीं पाया। सन्न रह जाने की अवस्था कुछ समझने या कहने नहीं देती। वही बेचारगी मुझसे आ जुड़ी थी। अकेले होने के अहसास का वही मुर्दा-घाट था सामने। जाते समय तक मां और पिताजी बेबी को डाक्टर के पास ले जाने की सख्त ताकीद करते रहे।

×××

बेबी सो गयी थी, पर अभी भी नींद में वह हिचकियां ले रही थी। पत्नी ने मेरी ओर आंखें तरेरकर देखा। उसकी आंखों में आंसू की एक-दो बूंदें अभी भी थीं। वहां गुस्सा नहीं था। एक ऐसी अजनबीयत का भाव था, जो घृणा का ही सूक्ष्म रूपांतर हो सकता है। वह मुझसे लड़ी होती, झगड़ी होती कि तुमने मेरी बच्ची को क्यों मारा, तो मैं शायद इतना आहत न होता। अपने न होने का वह लंबा अहसास मृत्यु के बर्फीले स्पर्श के समांतर था। मैं शायद डेढ़-दो घंटे से उसी निर्जीव अवस्था में बैठा अपनी ही मृत्यु का स्यापा करता रहा था।

पत्नी उसी तरह धीरे-धीरे बेबी की जांघ पर मलहम लगाने जैसा हाथ फेरती रही थी और घुटी-घुटी आवाज में रोती रही थी। रोना उसका बंद था पर उस जांघ पर धीरे-धीरे हाथ फेरती जा रही थी, जिस पर अभी दो घंटे पहले मैंने कसकर एक चांटा जमा दिया था। उसी क्षण मेरा सारा आवेग स्तब्ध हो गया था। मेरी तीन साल की उस बच्ची ने जिस ढंग से घुटती करुणा-भरी आवाज में रोना आरंभ किया, उसमें मन पर पड़े आघात की करुण-लय थी और धीरे-धीरे बहुत समय तक रोने के बाद वह लय अब हिचकियों में बदल गयी थी—जुकाम के कारण कफ से खुड़खुड़ाती हिचकियों में।

बेबी तो दवाई नहीं मांग रही थी। केवल आधे घंटे से जिद कर रही थी गोद में घुमाने के लिए, जैसा स्वभावतः वह ज्वर की अवस्था में करती है। उसको फिर से बुखार चढ़ने की बात जानकर मैं ही भन्ना गया था। कोशिशों के बाद भी दवाई के लिए पैसों का कोई इंतजाम नहीं हो पाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन दिनों से रोज कंपकंपी के साथ बुखार चढ़ रहा है। सरदी-खांसी भी है। डाक्टर ने जुकाम और मलेरिया के लिए करीब आठ रुपये की दवाइयां लिखी हैं। दो दिन तो डाक्टर के पास गया ही नहीं। शाम को सोचा था, कम से कम पांच रुपये भी मिल जायें तो मलेरिया के लिए निवाक्विन ही ले आऊं। पर वह भी नहीं हुआ।

मैंने पत्नी की ओर देखा। उसने सहलाते हुए हाथ को जांघ पर अचानक एक जगह रोककर कहा–'देखा?' मैंने गरदन झुकाकर नजदीक से देखा। गोरी नरम चमड़ी पर मेरी पांचों उंगलियों के निशान उभर आये थे। कुछ घुमावदार रेखाएं। मैंने छाती में जलन-सी महसूस की। आहत होने की जलन। फिर कहीं दूर खो गया। बेबी की जांघ पर की वे रेखाएं शायद कल सवेरे तक मिट जायेंगी, लेकिन पीड़ा की बनती-मिटती रेखाएं मन को मथती ही रहेंगी।

एक अच्छी खासी नदी नाले में बदल जाती है और ओझल भी हो जाती है। हम जिसे अंतर्मन की सीढ़ियों पर खड़ा पाते हैं, उसमें सुख की तलाश करने लगते हैं। भौतिक जरूरतों के लिए मरते हुए प्रेम को सुख की मांग का पर्याय समझ बैठते हैं हम। यह सुख की मांग भी मुंह का जायका बदलने जैसी एक आदत हो जाती है। प्रेम की नदी नाले में बदलने लगती है। फिर ऊब का एक दौर, दुर्गंध का भभका। बच जाती है मरुभूमि-सी रेत और उस पर बनती-मिटती सत्य की रेखाएं। मरुरेखा।

उन उभरी रेखाओं को छूकर देखा। मैंने मरुस्थल नहीं देखा, पर उसे महसूस कर पा रहा हूं। उसके तप्त रेतीले वातावरण को जज्ब कर रहा हूं। सचाई के पीछे जाने-अनजाने भागने के दौर की यह पीड़ा बराबर मेरा पीछा करती रहेगी।

पिताजी की ही बात याद आयी–'सत्य कोई हल्की चीज नहीं कि पानी में डूब जाये। यहां उसका गला टीप दो तो वहां चिल्लायेगा–इधर हूं। उधर उसे दबा दो तो और किसी कोने से चिल्लायेगा–मैं इधर हूं। सत्य को दबा नहीं सकता कोई।'

लेकिन सत्य का गला कौन नहीं टीप रहा है? मैनेजमेंट, प्रिंसिपल, हम सब शिक्षक जो लिखकर शिकायत करने की हिम्मत नहीं रखते, खुद पिताजी। मैंने पूरी ईमानदारी से श्रद्धा और प्रेम किया, उसका प्रतिदान क्या दिया उन्होंने? उन्होंने न अपने अभाव को समझा न मेरे। वैसे मैं भी अपने अभाव के सत्य को कहां अंगीकार कर पाया हूं, उससे कन्नी काटता रहा हूं। कभी लगता है–सब ठीक है; कभी लगता है–सबका अभाव है। भौतिक और आत्मिक दोनों जरूरतों का अभाव। आखिर सत्य क्या है! प्रेम की, मनुष्य और संसार की ऐसी ही भ्रमपूर्ण अवस्था, जिसमें कुछ भी न ठीक से जाना जा सके, न कुछ भी निश्चित हो और सब अनाप-शनाप, अव्यवस्थित ढंग से चलता रहे या और कुछ! सारे संबंध या अकेले होने की अनुभूति या और कुछ!

–डी. ए. वी. कालेज, टिटिलागढ़, उड़ीसा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

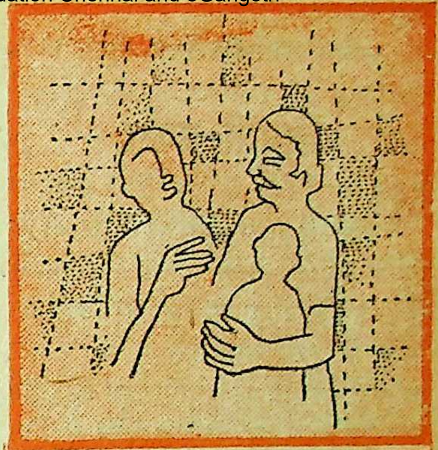

स्मृति के अंकुर

तब मैं चौदह वर्ष का था और नागपुर में अपनी बहन के यहां रहकर नौवीं में पढ़ रहा था। गरमी की छुट्टियों में अपने गांव गढ़ाकोटा (जिला सागर, म. प्र.) आया हुआ था। मेरे पिता, जो रिटायर्ड अध्यापक थे, वहां साहूकारी का छोटा-सा कारोबार करते थे।

मई की धधकती दुपहरी थी। पिताजी भीतर के कमरे में सो रहे थे। मैं बाहर बरामदे में बैठा पत्र-पत्रिकाएं उलट रहा था। तभी पड़ोस के गांव का एक अधेड़ आदमी आया और पूछने लगा—'दादाजी हैं क्या?'

'कौन हो ...... क्या काम है?'

'मैं परमा चमार हूं, कुछ कर्ज लेना था।'

'अभी तो वे सो रहे हैं। कुछ देर बाद आना।'

'मुझे बड़ी जरूरत है। ज़गा दीजिये।' उसने आजिजी के स्वर में कहा।

मैं चिढ़कर जोर से बोला—'कह दिया न कि सो रहे हैं!'

भीतर सो रहे पिताजी मेरी आवाज से जाग गये। वहीं से पूछा—'कौन आया है?'

मैंने कहा—'परमा चमार है, पिताजी! मैंने कह भी दिया कि आप सो रहे हैं, फिर भी नहीं मानता है—अपनी ही रट लगाये हुए है।'

पिताजी भीतर से तेजी से आये और उन्होंने चट-चट मेरे गालों पर दो थप्पड़ लगा दिये। फिर कड़ककर बोले—'परमू कक्का या चौधरी कक्का कहते नहीं बनता? बदतमीज! घर आये लोगों का अपमान करते हो?' (सागर जिले में चर्मकारों को चौधरी कहा जाता है।)

मैं तो हड़बड़ा गया। मेरी आंखों से टप-टप आंसू गिरने लगे। परमा चौधरी ने ही लपककर मुझे लगभग गोद में लेते हुए पिताजी से कहा—'बड़े दादा! बेकार ही भैया को मार दिया। गलती तो मेरी थी कि मैंने आपको सोते से जगाया।'

पिताजी बोले—'नहीं परमू भैया ..... ये लड़के इस उम्र में गांव के बड़े-बूढ़ों की इज्जत करना न सीखेंगे, तो कब सीखेंगे?'

जब कभी मैं हरिजनों पर अत्याचार की बात पढ़ता हूं, तो स्वर्गीय पिताजी की याद हो आती है और सोचता हूं 'परमा चमार' को 'चौधरी कक्का' कहलाने वाला हृदय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहां खो गया ?

—शोभाराम श्रीवास्तव, सीधी, म.प्र.

०००

विभूति-दर्शन

जब सन १९६० में पिताजी का तबादला कोटा से दोहद हुआ, तो परीक्षाओं के कारण मुझे रुक जाना पड़ा था। परीक्षा से निबटकर मैं दोहद जा रही थी। पिताजी रेल्वे में उच्च अधिकारी थे, सो स्टाफ तो परिचित ही था। भाईसाहब देहरादून एक्सप्रेस में प्रथम श्रेणी के डिब्बे में बैठा गये थे।

गाड़ी ने रफ्तार पकड़ ली थी। सामने की सीट पर एक वृद्ध महाशय पत्रिका पढ़ते जा रहे थे और ऊपर की सीट पर बार-बार नजर फेंकते जा रहे थे। उनका मन पत्रिका में कम और ठीक मेरे ऊपर वाली सीट पर ज्यादा था।

मैंने नजर उठाकर देखा कि बुरका पहने एक महिला ऊपर लेटी है, वह कभी-कभी हिल-डुल जाती है। मैं वृद्ध महाशय के करीब बैठ गयी। मैंने पढ़ने को उनसे पत्रिका मांगी, साथ ही पूछा कि आप कहां जा रहे हैं। बोले कि मुझे रतलाम कालेज में जाना है, मैं कवि हूं। उनकी निगाह बराबर ऊपरी सीट की बुरके वाली पर टिकी हुई थी।

शामगढ़ स्टेशन पर जब ट्रेन रुकी, वृद्ध महाशय तपाक से उठे और डिब्बे से उतर गये। मैंने सोचा, चाय-वाय पीने गये होंगे। लेकिन यह क्या ! थोड़ी देर में उनके साथ स्टेशन-मास्टर, पुलिस-इंस्पेक्टर और गार्ड आदि चले आ रहे थे। सब हमारे ही कंपार्टमेंट में आ गये। वृद्ध ने आगे बढ़कर इंस्पेक्टर से कहा—'बुरका उठाइये साहब, मुझे कुछ शक है।' स्टेशन-मास्टर कहने लगे—'किसी महिला को हाथ लगाना जुर्म है।' वृद्ध बड़े इत्मीनान से बोले—'सब इल्जाम मैं ले लूंगा। आप बुरका उठाइये।'

मगर बुरका ऊपर उठे इससे पहले बुरके वाली लपककर नीचे कूद गयी और वृद्ध का गला पकड़ने को लपकी। मगर तभी पुलिस-इंस्पेक्टर ने उसका बुरका उलट दिया। लाल आंखों वाला एक बदमाश, जिसके हाथ में चमचमाता छुरा था, बुरके में खड़ा था और कभी मुझे और कभी वृद्ध को आग्नेय दृष्टि से देख रहा था। वृद्ध हंसने लगे थे। स्टेशन-मास्टर व पुलिस ने मुश्किल से बदमाश को काबू में किया और नीचे उतारा।

गाड़ी दस मिनट लेट हो चुकी थी। मैं मन ही मन वृद्ध महाशय को धन्यवाद दे रही थी। कुछ समय बाद वे डिब्बे में लौट आये। ट्रेन चल पड़ी। वे मेरा साहस बढ़ाते रहे; क्योंकि मैं बहुत घबरा गयी थी। फिर वे रतलाम में उतर गये, जहां काफी लोगों ने हार पहनाकर उनका स्वागत किया।

दोहद में उतरकर स्टेशन-मास्टर से पूछा तो पता चला कि वे वृद्ध महाशय राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त थे!

—सविता तिवारी 'बिराज', तराना, म.प्र.

०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरतन-पुराण

हमारे सबसे बड़े भाईसाहब रमेश गौड़ जो बहुत सरल स्वभाव के सज्जन व्यक्ति हैं, अलग सरकारी क्वार्टर में रहते हैं। आज से बारह साल पहले, जब मैं बालक ही था, एक दिन उनके यहां कुछ विशेष मेहमान आने वाले थे, सो हम लोगों का भी खाना वहीं था। शाम को भोजन के समय खाने की मेज स्टेनलेस स्टील के तरह-तरह के बरतनों से चमक रही थी। उससे पहले मैंने कभी भाईसाहब के यहां स्टेनलेस स्टील के इतने बरतन नहीं देखे थे। उत्सुकतावश मेहमानों के सामने ही मैं पूछ बैठा—'भाई-साहब, ये बरतन क्या नये खरीदे हैं?'

'नहीं।' संक्षिप्त-सा उत्तर मिला।

'तो क्या पहले से खरीदकर संदूक में बंद कर रखे थे?'

'नहीं।' भाईसाहब ने फिर दुहराया।

'तो फिर ये कहां से आये?' मैंने पीछा न छोड़ते हुए फिर पूछा।

'पड़ोसी के यहां से मांगकर लाये गये हैं।' भाईसाहब ने जवाब दिया और मेज पर बैठे पूरे मेहमान खिलखिलाकर हंस पड़े और काफी देर तक हंसते रहे। बाद में पता चला कि बरतन सचमुच मांगकर लाये गये थे। परंतु भाईसाहब मेरी इस नादानी पर नाराज नहीं हुए; बल्कि अब भी कभी इस घटना का जिक्र छिड़ता है, तो खिल-खिला उठते हैं।

—जगदीश गौड़ 'बेचैन', देहरादून

भाग्य की विडंबना

किसी काम से अल्बम से अपना एक चित्र निकालते समय परिवार के पुराने चित्रों के साथ भूपेंद्र का चित्र भी सामने आ गया। फूल-सा यह मेरा पुत्र कई साल पहले दो दिन के बुखार में चल बसा था—अपनी सुगंध सदा के लिए हमारे हृदयों में छोड़कर। अपने भूपेंद्र का चित्र देखकर एक दूसरे भूपेंद्र का चित्र स्मृति-पटल पर उभर आया।

१९३८-३९ में मैं श्री सरस्वती संस्कृत कालेज, खन्ना में विशारद का विद्यार्थी था। मेरा एक सहपाठी था भूपेंद्र—सुंदर, सौम्य और पढ़ने में परिश्रमी। प्राज्ञ परीक्षा पास कर वह एस. डी. कालेज होशियारपुर जाकर विशारद में प्रविष्ट हो गया। उसके पत्रों से मुझे पता चलता रहता कि वहां भी वह खूब परिश्रम से पढ़ रहा है। परीक्षा हुई, परिणाम निकला। भूपेंद्र विशारद में पंजाब विश्वविद्यालय में प्रथम आया। प्रिंसिपल ने सूचनार्थ बधाई का तार उसके घर भेजा।

भाग्य की विडंबना देखिये कि खुशी का वह तार भूपेंद्र के घर वालों को उस समय मिला, जब उसकी लाश उठ रही थी। छोटी-सी बीमारी के बाद उसका देहावसान हो गया था। अपनी परीक्षा शान से पास करके माता-पिता, बंधु-बांधवों को दुःख सहन करने की परीक्षा में डालकर हमेशा के लिए चला गया था वह।

—जगदीश कौशिक, करनाल, हरियाणा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आसान या कठिन / स्नेहमयी चौधरी

उसे लगा, एक काम कितना आसान है।
उसने अपने पिछले जीवन को
भूल जाना चाहा,
लेकिन ऐसा हुआ
जैसे उसने अपने काले बालों के बीच
उगे सफेद बाल को तोड़ दिया,
कुछ दिनों बाद वह फिर दिखाई दिया।
उसने पिछले जीवन से
पूरी तरह कट जाना चाहा,
लेकिन ऐसा हुआ
जैसे गमले में उगा वह पेड़
जो सूखा डंठल रह गया था,
अब उसमें फिर लाल गहरे फूल
फूट पड़े हैं।
इतना ही नहीं—
विदेश जाते हुए जिस दोस्त ने
उसे दिया था,
वह भी अचानक सामने आ खड़ा हुआ।
उसने अब तक की बनी रेखाओं को
रगड़-रगड़कर मिटा देना चाहा,
लेकिन ऐसा हुआ कि
दूसरी नई रेखाएं
खींचने के प्रयास में
अनजाने उन्हीं निशानों को
गाढ़ा कर दिया।
उसे लगा, यह काम कितना कठिन है।

[राजकमल प्रकाशन, दिल्ली द्वारा शीघ्र प्रकाश्य संग्रह 'पूरा गलत पाठ' से]

शब्द / सुखबीर

शब्द थे द्वार
खिड़कियों के पारदर्शी कांच
जिनके उस पार थीं तुम।
शब्द थे तुम्हारा अस्तित्व भी
शब्द जैसे : ओंठ, आंखें,
प्यार, आंसू, दिल, सुंदरता, दर्द ......
बंधी हुई थी जिनमें तुम्हारी इकाई।
शब्द थे
कि जिन्हें छूकर, लिखकर, आब देकर
मैंने तुम्हारे नक्शों को छुआ
और तुम्हारा सुबक अहसास पकड़ा।
शब्द थे पर द्वार भी
खिड़कियों के पारदर्शी कांच
जिनके उस पार थीं तुम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी के पंख

• सुखबीर

वह जब एयरकंडिशंड होटल में से निकला, तो बाहर फिर जलती हुई दुपहर थी—धधकती हुई भट्ठी।

होटल में वह बहुत देर तक बैठा रहा था। वहां हल्की-हल्की ठंडक थी—बड़ी सुखद और अंगों में समा जाने वाली। होटल में जाते ही उसने पाइनैपल ज्यूस की एक बहुत ठंडी बोतल पी थी। फिर एक और पी थी, फिर एक और। पर उसके अंदर तो जैसे आग थी। कुछ ठहरकर उसने आइसक्रीम मंगवायी थी—आम, चाकलेट और बादाम के तीन अलग-अलग रंगों और स्वादों वाली। वह धीरे-धीरे आइसक्रीम खाता हुआ सोच रहा था कि एक दिन यहां अपनी मां को भी लाऊंगा, छोटे भाई और दोनों बहनों को भी, और उन्हें पेट भरकर आइसक्रीम खिलाऊंगा।

शरणार्थी कैंप में नीची छत और तंग दीवारों वाली टीन की कोठरी में रहते हुए उनके जीवन झुलस गये थे। सुबह होते ही कोठरी भट्ठी की तरह तपने लगती थी और शाम तक तपती रहती थी। ...... आइसक्रीम खत्म करके वह देर तक मुंह उठाये होटल की छत की ओर देखता रहा था, जहां से ठंडे प्रकाश की मंद-मंद वर्षा हो रही थी। आखिर वह होटल में से बाहर आ गया।

होटल में जाने से कुछ समय पहले वह जब फुटपाथ पर खड़ा था, तो देर तक अपने गांव के बारे में सोचता रहा था। अभी तीन-चार वर्ष पहले की तो बात थी। गरमियों के दिनों में दोपहर के समय वह दोस्तों के साथ कुएं पर जाया करता था, जिसके गिर्द वृक्षों का घना झुंड था। दुपहर के समय भी वहां हल्का-हल्का अंधेरा छाया रहता था और उस अंधेरे में हल्की-सी ठंडक होती थी। वे कुएं के पानी में डालकर ठंडे किये तरबूज खाते थे। फिर कुएं में छलांगें लगाते और घंटों नहाते-तैरते रहते थे।

लेकिन अब वे दिन नहीं रहे थे।

होटल में से निकलकर उसने टैक्सी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'श्री' की सुमेल बिन्दी प्रतियोगिता

सरल... आनन्दप्रद!

आकर्षक इनाम!

पहला इनाम : फ्रिज या ५००० रु. की लागत का ईनाम जीतने वाले की पसंद का कोई अन्य सामान

अन्य इनाम : डोमेस्टिक ग्राइंडर या सिलाई मशीन, स्टील कप-बोर्ड, कुकर, टाइम पीस, पेन-सेट वगैरह।

कुल ४५००० रु. की कीमत के १००१ इनाम

प्रवेशपत्र तथा अधिक जानकारी के लिए श्री कुंकुम के अपने नजदीक के विक्रेता से सम्पर्क कीजिए।

श्री कॉस्मेटिक्स
कुर्ला. बम्बई ४०००७०.

Join **Shree's MATCH-THE-BINDI CONTEST,** today!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकड़ी और ड्राइवर को महात्मा गांधी स्विमिंग पूल ले जाने को कहा। वहां बड़ा-सा पक्का तालाब था—हरे रंग के ठंडे पानी से भरा हुआ। उसका दिल चाह रहा था कि पानी को बस देखता ही रहे। आखिर उसने कपड़े उतारे और पानी में छलांग लगायी। वह गोता लगाकर देर तक ऊपर नहीं आया। देर तक वह तैरता रहा। रह-रहकर उसने आंखों में पानी के छींटे मारे।

जब वह तैरते-तैरते थक गया, उसे बहुत जोर की भूख महसूस हुई। उसने कपड़े पहने और फिर टैक्सी लेकर होटल पर गया। अंदर कदम रखते ही उसे बाहर की जलती हुई दोपहर भूल गयी। उसने खाना मंग-वाया। खाने का ऐसा बढ़िया स्वाद था कि उसके दिल में फिर लालसा जगी कि काश, मेरी मां यहां मेरे साथ होती और ऐसा स्वादिष्ट खाना खाती। इस समय तो वह घर में चूल्हे के पास बैठी रोटियां सेंक रही होगी। काश, मेरा छोटा भाई और दोनों बहनें यहां होतीं। सब कितने स्वाद से यह बढ़िया खाना खाते। पता नहीं, इस समय वे कहां होंगे! भाई शायद लोकल-गाड़ियों में खट्टी-मीठी गोलियां बेच रहा होगा। बहनें शायद दूसरों की साड़ियों पर कसीदा काढ़ रही होंगी। ...... इस ठंडे होटल में यह गरम-गरम खाना! काश, रोज ही ऐसा खाना मिल सके! खाने के बाद फ्रूटक्रीम आयी, जिसमें कई किस्म के फलों के स्वादों से भरी ठंडक थी।

फ्रूटक्रीम समाप्त करके उसने कुर्सी के साथ पीठ टेकी और आंखें बंद कर लीं। देर के बाद आंखें खोलकर वह सामने दीवार पर लगे चित्र की ओर देखने लगा, जिसमें वृक्ष अपने सिरों पर जैसे सफेद छतरियां लिये खड़े थे। बर्फ की छतरियां। चारों तरफ बर्फ गिर रही थी और बर्फ के फाहे हवा में उड़ रहे थे। चित्र को देखते हुए उसे बहुत ज्यादा ठंडक महसूस हुई। उसने फिर आंखें बंद कर लीं। उसे ऊंघ आ रही थी।

अचानक उसकी आंखें खुलीं, तो उसने देखा कि सामने खड़ी एक बूढ़ी औरत हाथ में दो कंघियां लिये कीमत पूछ रही है।

उसने एक बार आंखें मलीं और फिर से सामने देखा। वह फुटपाथ पर कागज बिछाये, ऊपर कंघियां रखे उन्हें बेचने के लिए बैठा हुआ था। चारों ओर जलती हुई दुपहर थी और वहां बैठा वह भयंकर प्यास महसूस कर रहा था। साथ ही, इतनी भूख भी कि जैसे कई दिनों से कुछ खाया न हो।

भाव मुआफिक न पाकर स्त्री कंघियां रखकर चली गयी।

उसने फिर पहले की तरह अपनी कल्पना में कई किस्म की ठंडकों को महसूस करने की कोशिश की; लेकिन अब उसकी भूख और प्यास इतनी बढ़ गयी थी कि कल्पना कर पाना उसके लिए संभव नहीं था।

आदमी आखिर कल्पना के पंखों पर कब तक उड़ सकता है!

वह उसी प्रकार जलती हुई दुपहर में बैठा रहा। सुबह से उसकी दस-दस पैसे वाली सात ही कंघियां बिकी थीं।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमल क[र]

की सशक्त और मार्मिक बंगला कथाकृ[ति]

पार्क रोड का वह मकान

अनुवाद : सोमनाथ द्विवेदी

हालांकि ठीक वैसा नहीं है, फिर भी वह अकेली है। बर्नपुर के पार्करोड के इस बंगले में चंदना निस्संग है। इतनी सूनी निर्जनता है यहां—इस सात नंबर पार्करोड के बंगले में—कि सारा दिन चिड़ियों का कलरव सुनती है चंदना, समूचे ही दिन। और सारी सुबह और दुपहर गौरैयों की चहकन। तिनके चोंच में दबाये गौरैयां फुदकती हुई कमरे में आ घुसेंगी, चंदना के ही कमरे में स्काइलाइट के अंदर घोंसला बनायेंगी। पर पार्क रोड के सात नंबर बंगले के सजे-संवरे कमरे में घोंसला बनाना कठिन है। जाला झाड़ने का बांस हाथ में लेकर माली कमरे में आयेगा, बहादुर फर्श झाड़ जायेगा—जैसे पालिश लगा जायेगा सिमेंट पर भी। और फिर, चाहे तब सुबह के आठ ही हों या दस—कांच के सभी दरवाजे बंद हो जायेंगे, खिड़कियों की सारी चिकें भी गिरा दी जायेंगी। अर्थात् रोशनी ही आयेगी, धूप नहीं। स्काइलाइट के छोटे-से झरोखे से चिड़ियों की बोली सुन पड़ेगी, पर गौरैयों की नहीं। इस वक्त मौसी आयेंगी एक बार। उनकी घास की चप्पलों से आवाज नहीं आती, नहीं आयेगी किसी दिन। वे आयेंगी, खड़ी रहेंगी, कमरे में चारों ओर देखेंगी, जैसे ध्यान से सब देख रही हों। फैन का स्विच ऑन करके एक कुर्सी पर बैठ भी सकती हैं, या नहीं भी।

'तेरे कमरे में सफिशेंट लाइट है चंदना, मेरे कमरे में सुबह अच्छी रोशनी ही नहीं आती। माल-असबाब बहुत ज्यादा है न! काश, अलमारी और ड्रेसिंग-टेबल हटायी जा सकती।'

'हटायेंगी?' चंदना ने ग्रामर की किताब से नजर उठाकर मुस्कराने की कोशिश की। शायद इस मुस्कान और बातों से मौसी अन्यमनस्क हो जायें और एप्रोप्रिएट प्रिपोजिशन संबंधी कोई प्रश्न सहसा न कर बैठें।

'हटाऊंगी! पर कहां हटाऊं? जगह ही कहां है बता? ड्राइंग-रूम और डाइनिंग रूम में यह सब रखा नहीं जा सकता और तेरा यह कमरा—यहां भी तो असुविधा है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

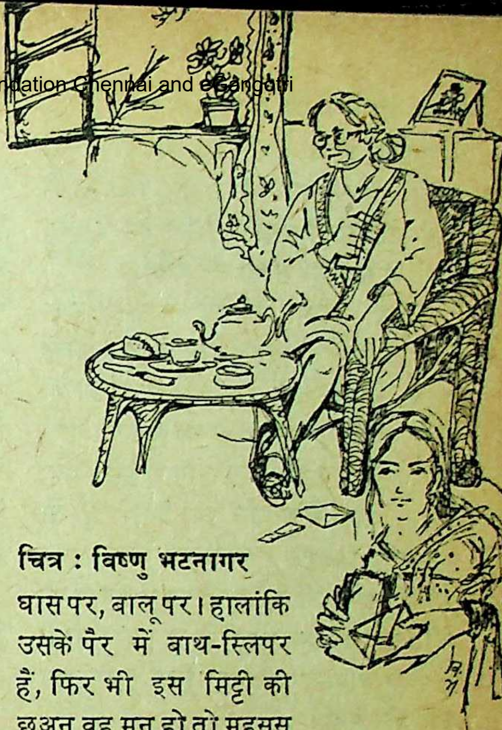

चित्र : विष्णु भटनागर

नहीं, इस बंगले में जगह बहुत कम है !'

मौसी यदि बैठी हों तो अब उठ खड़ी होंगी और फैन का स्विच ऑफ़ करना नहीं भूलेंगी। कुछ-एक डग आगे आकर सीधे बाथरूम का दरवाजा खोल देंगी। और खोलते ही नाक सिकोड़ेंगी–'उस तरफ का दरवाजा बंद क्यों है ? डैम्प–उफ् कितना डैम्प है, तेरे बाथरूम में चंदना। बेसिन पर इतने दाग किस चीज के हैं? बाथ-टब का पानी नहीं निकाला गया ! नैस्टी, नैस्टी लड़की। यू मस्ट लर्न ऑल दिस। नीटनेस सीखनी पड़ती है। क्या तुमने डोमेस्टिक सायंस पढ़ा है ? तुम लोगों को मैट्रिक में कुछ नहीं सिखाया जाता ! कुछ भी नहीं।'

चंदना उठकर बाथरूम के पास आ खड़ी हुई। तुरंत उसने बगल का दरवाजा खोल दिया। धूप से भर गया कमरा। गराज के सामने फूल के पेड़ के नीचे जमादार बैठा-बैठा कलई किये हुए मग में शायद चाय पी रहा था। उसकी बगल में कुत्ता लेटा हुआ था।

'जमादार !'

'जी मांजी !' जमादार दौड़ा आया। मेमसा'ब कहने का रिवाज नहीं इस घर में।

'साफ किया था तुमने यह गुसलखाना ?'

'दरवाजा बंद था।'

'जल्दी साफ करो। अच्छी तरह।'

मौसी के नाक ढंककर चले जाने के बाद चंदना बगल के दरवाजे से बाहर आकर खड़ी हुई। अब कुछ देर तक वह यहां खड़ी रह सकती है। कुछ कदम चल सकती है घास पर, बालू पर। हालांकि उसके पैर में बाथ-स्लिपर हैं, फिर भी इस मिट्टी की छुअन वह मन हो तो महसूस कर सकती है। क्योंकि कुछ देर तक मौसी उसे नहीं बुलायेंगी, इधर नहीं आयेंगी। अभी वे नहाने गयी हैं। नहाकर जब लौटेंगी, तब उनके बदन से साबुन की एक मीठी महक बिखरेगी। बालों से भी हेयर आइल का सौरभ फूटेगा। फिर पार्क रोड के सात नंबर मकान-भर में वह अद्भुत सौरभ रह-रहकर बिखरता रहेगा। पैंट्री से उतराती आयेगी ठन-ठन आवाज, घी की महक या खीर की, अथवा चिकन-सूप की। मौसीजी डेटाल-पानी हर कमरे में स्प्रे करेंगी। बगीचे से मौसी अपने ही हाथों से रंग मिला-मिलाकर फूल तोड़ेंगी। कुछ फूल अपने ठाकुर-पट के सामने चांदी की थाली में रख देंगी और धूपबत्ती जला देंगी; कीमती धूप–जिसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशबू मौसी के कमरे से ड्राइंग-रूम में, डाइनिंग-हाल में भी तैरती हुई आयेगी, तैरती चली जायेगी बरामदे में भी। फिर बाकी फूल डाइनिंग-टेबल और ड्राइंग-रूम के फूलदानों में सजाकर मौसी तब बैठेंगी।

बैठेंगी बरामदे में बेंत की कुर्सी पर—जिस कुर्सी पर बैठकर मौसाजी ब्रेक-फास्ट करके फैक्टरी चले गये हैं। चंदना को भी बगल में बैठना पड़ेगा। युगल बेंत की गोल मेज पर ट्रे रख जायेगा। चाय ढालकर देगी चंदना, रोटी में मक्खन लगा देगी, नहीं तो कुछ-एक बिस्कुट तश्तरी पर रख देगी। मौसी देखेंगी, टी सर्व करते समय चंदना की कोई गलती नजर पड़ती है या नहीं। मौसी के लिए चाय—पर चंदना के लिए एक प्याला दूध और पेड़ा।

पार्क रोड के सात नंबर बंगले में आकर उसका चाय पीना बंद हो गया है। मौसी कहती हैं, मौसाजी ने मना किया है। इतने डेलिकेट चेहरे की लड़कियों की तंदुरुस्ती के लिए चाय खराब होती है। दूध पियो—अंडे खाओ। प्रोटीन खाने से फैट बढ़ेगा। लड़कियों के लिए फैट जरूरी है। वह स्टोरेज का काम करता है। बच्चे-कच्चे होने पर तंदुरुस्ती नहीं खराब होगी।

विमल कर

'असमय' के लिए १९७५ के अकादमी पुरस्कार से संमानित बंगला कथाकार।

इसी समय साइकल की घंटी बजी। क[...] डाकिया। सलाम बजाकर डाक रख जा[ता] है। डाक की ओर देखने का उपाय नहीं [है] चंदना के पास; चाहे कितना भी मन छ[ट]पटाये दीदियों की चिट्ठी के लिए। मौ[सी] कहेंगी, इतनी अधीरता क्यों! चिट्ठि[यां] घर में ही आयी हैं, वक्त के मुताबिक तु[म्हें] मिल जायेंगी। इसके अलावा एक औ[र] कारण भी है—जिसके कारण डाक देखने [का] कोई उपाय नहीं है उसके पास। मौ[सी] सोचेंगी, जरा भी लाज नहीं है इसे।

इसीलिए दूसरी ओर, बगीचे की ओर [...] फिर जहां कुछ कौवे बैठकर चोंच मार [रहे] हैं उस ओर निहारते हुए मुंह बंद करके का[...] पसोपेश में बैठे रह[ना] पड़ता है चंदना को। मौसी धीरे-धीरे लिफा[फे] फाड़ती हैं।

'सीता वगैरह हजारी[...] बाग जा रही हैं इस बा[र] पूजा में। लिखा है, मि[...] बड़ी शैतान हो गयी है।' मौसी चिट्ठी पढ़ते-पढ़[ते] मन ही मन हंसती [हैं] और कहती हैं।

चंदना भीतर छट[...] पटाती रहती है। औ[र] क्या लिखा है दीदी ने? और क्या है उस चिट्ठ[ी] में? पाइकपाड़ा के उ[...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिन के मकान की कौन-कौन-सी खबर है? किस-किसका हाल-चाल लिखा है?

मौसी अब भी चिट्ठी पढ़ते-पढ़ते हंस रही हैं–'मिट्ठू परिमल को बूब कहती है, चांद को कहती है तांद। शैतान ...... शैतान होगी लड़की। समझी चंदना, मिट्ठू बड़ी पाजी होगी। लेकिन यह ठीक नहीं है। वह मकान उन्हें बदल देना चाहिये। टिन का मकान, लकड़ी की सीढ़ी। नन्ही-सी बच्ची को लेकर क्या उस मकान में कोई रह सकता है? तू लिख देना तो चंदना, सीता को लिख दे–परिमल को भी लिख दे–अगले ही महीने वे मकान बदल दें। आज ही तू लिखना, याद रखना–दुपहर को ही। मुझे दिखाकर ही डालने भेजना।' मौसी बोलीं और आखिर चिट्ठी बढ़ा दी।

चंदना ने चिट्ठी ले ली। पर अभिमान से आंखों में आंसू आ गये हैं। दीदी की चिट्ठी–उसके नहीं, मौसी के नाम। मिट्ठू की बात–पर उसे नहीं सुनाती, मौसी को सुनाती है। और अजीब आदमी हैं जीजाजी भी! चंदना नाम की किसी लड़की को जैसे कभी जानते ही नहीं थे। कुछ नहीं होती चंदना उनकी! चार महीने पहले उन्होंने केवल दो लाइन की चिट्ठी दी थी–फिर भूल ही गये।

यदि समझा जाये कि आंखों के आंसू छिपाने के लिए, तो भी ठीक–वैसे इस समय मौसी एक पान खाती हैं, सो चंदना धीरे-धीरे डाइनिंग-हाल में चली आती है। कितना कम कत्था, कितने छोटे-छोटे कुटकों में कटी सुपारी और कितने दाने जर्दा डालने पर मौसी के मन के मुताबिक पान बनेगा, यह चंदना को आजकल मालूम हो गया है।

पान लगाते वक्त मन को तनिक बिखेर देती है चंदना। पाइकपाड़ा के मणींद्र रोड का वह मिट्टी का दुतल्ला मकान। इस वक्त तक उस मकान में धूप पुरानी पड़ गयी है। कलकत्ता में जूठन जमा होना शुरू हो गया है। सुधा दीदी और हिमांशु भैया दफ्तर जाने निकल रहे हैं। उमा आशा दीदी की लड़की को संभालने में परेशान हुई जा रही है। आंगन में कौवे उतर आये हैं अंडों के छिलकों पर चोंच मारने के लिए। दीदी शायद उसी छोटे-से चौके में मिट्ठू को गोद में लेकर चाय का पानी चढ़ा रही है। और जीजाजी जरूर दुमंजिले पर दरवाजे पर कुंडी चढ़ाये लिखने में मस्त होंगे। काश, लिख सकते! शायद समूची सुबह-भर में एक पन्ना भी न लिखा हो। चार मर्तबा चाय; एक पैकेट सिगरेट खत्म हो गये। इसके बाद नहाने के लिए उतरते ही दीदी के ऊपर डांट-डपट। ऐसे आदमी हैं जीजाजी। ऊपर से लगता है, बड़े शांत, निरीह हैं, ओंठ जैसे खुलना ही नहीं जानते! पर चंदना जानती है–घर में उनसे हमेशा सहमकर रहना पड़ता है। तंदुरुस्ती को लेकर हमेशा शक-शुबहा–मौसी से जरा बीस ही बेतुकी सनक। तीन परिवारों के उस मकान में क्या इतना साफ-सुथरा रहा जा सकता है! इतना चमाचम! जीजाजी यह नहीं समझते। यदि आभा अन्न फेंकती है तो उमा भात का मांड,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीदी चायपत्ती। और इतने से ही उस मकान की नाली भर जाती है। उस कूड़े-करकट पर चोंच मारने कौवे आयेंगे, गौरैया आयेंगी। कभी-कभी बकरी या कुत्ते भी घुस जाते हैं। इस सब पर हो-हल्ला मचता है। उमा, आभा, पूर्णिमा और दीदी का गुल-गपाड़ा होता है – दो लाइन गाना, दो-चार बार हंसी-ठिठोली। कभी-कभार आभा की हुल्लड़बाजी या झगड़ा। चंदना भी वहां कूद-कूदकर सीढ़ियों से उतरती, एक बजने के बाद भी कोयला तोड़ती। साड़ी-कमीज़ नल के नीचे बैठकर धोती और ऊंची आवाज में उमा के साथ स्कूल या किसी फिल्म की बात करती—झगड़ा भी।

पाइकपाड़ा के मणींद्र रोड के उस तीन परिवारों के मकान में भीड़ थी, कूड़ा-करकट था, मेहतर रोज न आये तो बदबू आती—लड़ाई-झगड़े थे। और वहां किरासिन की लालटेन जलानी पड़ती थी, उसकी लौ से धुआं उठता, ज्यादा हवा नहीं थी नीचे, झुंड के झुंड मच्छर थे, फिर भी—फिर भी वह मकान, चंदना को लगता है, वह पाइकपाड़ा का मकान ही ठीक था। पार्क रोड के इस सात नंबर बंगले की बनिस्बत वहां वह जिस तरह हाथ-पांव फैलाकर, मन खोलकर जी रही थी, वही ठीक था।

और यहां—

पान लगाकर मौसी के पास लौटने में जितना वक्त लगा, उतने में ही उनका डाक देखना खत्म हो गया है। और मौसी का चेहरा देखकर ही चंदना समझ गयी है, आज की डाक से फिर एक चिट्ठी आयी है।

गत दो महीनों से शुरू हुई है; पहले तब भी कभी-कभार आती थी, अब लगभग रोज ही। जितने सगे-संबंधी हैं, कलकत्ता, बर्दवान, दिल्ली, पटना, लखनऊ सभी जगहों से उनकी चिट्ठियां आने लगी हैं। मौसी ने ही दबाव डाला है। शादी करवाकर वे अपनी जिम्मेवारी पूरी कर लेना चाहती हैं। क्योंकि आजकल उनकी तंदुरुस्ती काफी खराब जा रही है। एक आशंका और निराशा छायी हुई है उनके मन पर। जब तक जिंदा हैं, जितनी जिम्मेवारियां हैं—ऐसी अनेक जिम्मेवारियां हैं, जिन्हें उन्होंने राह से बटोर लिया है—उन सबको ठीक से पूरा कर जाना चाहती हैं। इस बारे में वे अपने इकलौते लड़के और भानजी, जेठ के लड़के-लड़कियों में कोई फर्क नहीं रखना चाहतीं। कभी रखा भी नहीं है।

इस बात पर उन्हें गर्व है। साफ शब्दों में वे इसे कहती हैं। शिक्षा और मन की उदारता से यह संभव होता है। शिक्षा सही ढंग से मिलने पर आदमी क्या नहीं कर सकता! एम. ए. पास किया था मौसी ने—फिलासफी में। पहले स्कूल की टीचरी की, बाद में प्रोफेसरी—अंत में शादी। और जिससे शादी की, उस पति के गर्व से वे हमेशा गर्विता हैं। पति के मन के उदार पटल पर वे जैसे डैने फैलाये उड़ रही हैं, चिड़ियों की तरह। लेटी हुई हैं, प्रगाढ़-प्रशांत आकाश के नीचे। मौसाजी यदि इतने अच्छे न होते—मौसी की भाषा में, इतने जनरस, जेंटल, सेल्फ-सैक्रि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फाइसिंग—तब शायद मौसी के लिए इतना निःस्वार्थ रहना संभव न होता । इसलिए मौसी हर वक्त कहती हैं, शिक्षा और अच्छे परिवेश में आदमी सब-कुछ बन सकता है—सब-कुछ । इस मकान में, पार्क रोड के सात नंबर बंगले में, तभी तो हर वक्त आप सफाई पायेंगे, शालीनता पायेंगे और पायेंगे आचरण की शिष्टता । शोरगुल, बहस, खिलखिलाहट या चंचलता के नाम पर चपलता को प्रश्रय यहां नहीं है । यहां शांति है, यहां चुप्पी है, यहां निर्जनता और अकेलापन है।

लेकिन इससे आपके मन की स्वतंत्रता में—जहां दरअसल, स्वतंत्रता की जरूरत है, वहां कोई कभी भी दखलंदाजी नहीं करेगा । मौसाजी फ्रीडम में दखलंदाजी बिलकुल पसंद नहीं करते। कहा जाये तो एक पूरा युग वे विलायत में काट चुके हैं; अब भी रात को ही नहाते हैं, ठंड में, गरमी में—हर मौसम में। हर वक्त सही वेश-भूषा में रहते हैं। डाइनिंग-टेबल के मैनर्स अब तक पालन किये जा रहे हैं। ये सभी जैसे उनके जीवन के अंग हैं, अर्जित अभ्यास; और इनका वे पालन करेंगे। वैसे ही पालन करेंगे, विलायती लिबरल आबोहवा का। यह उनके मन का आभिजात्य और सुख है।

चित्र : भाऊ समर्थ

इसी कारण मौसी को भी किसी-किसी विषय में काफी उदार होना पड़ा है । और डाक की एक चिट्ठी अब वे अनायास चंदना की ओर बढ़ा दे सकती हैं।

'दिल्ली से आयी है। पढ़ ले।'

इसके बाद मौसी मुंह में पान डालकर घास की चप्पलों से बिना आवाज किये सीधे सब्जी के बगीचे में चली जाती हैं। चंदना नीले रंग का लिफाफा हाथ में लेकर एक बार सिहर उठती है। छाती धड़कने लगती है । और न जाने क्यों बेवजह ही कई बार आंख फड़कती है, दो बाल गाल के पास उड़-उड़कर सिहरन पैदा कर रहे हैं। पार्क रोड का सात नंबर मकान दुपहर को पेड़-पौधों से ढंके हुए तालाब को तरह छायादार होता है—बेदाग निर्जनता से घिरा । काफी अंतराल पार करने के बाद ही रोशनी की हल्की आभा कमरों तक पहुंचती है । यहां आंखों की पलकें उठाने में कष्ट नहीं होता । कैसी ठंडी-ठंडी है कमरों की हवा ! फैन घूम रहा है सिर के ऊपर । बड़ी मीठी भनभनाती आवाज । जैसे कमरे में एक भौंरा चक्कर काट रहा है । और चंदना की मेज पर टाइमपीस की टिक-टिक । भारी परदे की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू का हमला और उसका मुकाबला

आपके लिए कुछ ज़रूरी बातें

"मैंने एनासिन को बहुत गुणकारी पाया है," नर्स एंजेला फ़र्नान्डेस का बयान है।

इन्होंने यही देखा है कि एनासिन सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू की पीड़ा से जल्द आराम दिलाने के लिए काफ़ी तेज़ असर है।

सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू कैसे होते हैं?
ये छूत से फैलने वाले उस विष से होते हैं, जो इन रोगों में ग्रस्त लोगों से हवा में फैलता है। आम तौर से शरीर में उसके मुकाबले की शक्ति होती है। परन्तु ज्यादा मेहनत या कम ख़ूराक के कारण शरीर में कमज़ोरी आ जाती है और रोग के मुकाबले की शक्ति कम हो जाती है।

रोग लक्षण क्या हैं?
बदन का दर्द, सर का भारीपन, छींकें आना और नाक बहना, जिसके साथ अक्सर कँपकँपी छूटती है, बेचैनी महसूस होती है और पसीना आता है। उसके बाद खाँसी, गले की ख़राबी, भूख की कमी और थकावट की शिकायत हो सकती है।

क्या इस से और तकलीफ़ें भी हो सकती हैं?
यदि लापरवाही बरती जाय तो निमोनिया और साँस की ऊपरी नाली में छूत का असर हो सकता है।

एनासिन कैसे सहायक होती है?
एनासिन सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू की पीड़ा से आराम दिलाती है। एनासिन तेज़ असर है– क्योंकि इस में वह दर्द-निवारक दवा ज्यादा है जिसकी दुनिया-भर के डॉक्टर सब से ज़्यादा सिफ़ारिश करते हैं। एनासिन पर लाखों लोगों को विश्वास है– क्योंकि यह आपके डॉक्टर की दवा की तरह दवाओं का नपा-तुला सम्मिश्रण है। सर्दी-ज़ुकाम या फ़्लू के पहले लक्षण देखते ही दिन में चार बार एनासिन लीजिए।

आपको और क्या करना चाहिए?
- उबाला हुआ पानी, सन्तरे या मौसंबी का रस और पीने के दूसरे पदार्थ काफ़ी पीजिए।
- पौष्टिक आहार खाइए।
- पूरा आराम कीजिए।
- पानी में ऐंटिसेप्टिक दवा या नमक डालकर गरारे कीजिए।
- कमरों को हवादार रखिए।

तेज़ असर और विश्वसनीय

एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

A 14-6/76

Regd. User of TM: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीठी सरसराहट । [illegible] कर लेटने पर भी इस कमरे में ऐसी दुपहर में लगेगा जैसे चंदना नहीं है।

बगुले के पंख-जैसी सफेद दीवार पर जो परछाईं है, स्काइ-लाइट की लटकती रस्सी में जितना कंपन है, उतना अस्तित्व लौटा लाने में भी चंदना को छाती पर तकिया खींचकर काफी-काफी देर तक छटपटाना पड़ता है। और फिर वह महक महसूस करती है—अपने सिर के तकिये की ही सुवासित तेल की महक रह-रहकर नाक में जाती है, क्लोरोफिल से दो बार दांत साफ करने का हल्का स्वाद भी जैसे जीभ पर वापस आ जाता है। और गरदन और छाती से टाल्कम पाउडर की खुशबू ! स्वयं को वापस पाकर भी चंदना तकिये में मुंह छिपाये रहती है। अंधेरे में ही फिर मन को बिखेर दे सकती है—वही मन जो उसके सिर के बालों की तरह बिलकुल अपना है, उसकी छाती की तरह सबकी आंखों से छिपा हुआ।

चिट्ठी की बातें एक-एक करके इस समय सोची जा सकती हैं। दिल्ली की उस चिट्ठी की बात। उस लड़के की बात। जाने क्या नाम है ? विकास—विकास सेन। नहीं, सेन नहीं, सरकार। इससे पहले का लड़का था, सेन; उससे पहले का मजुमदार; और उससे भी पहले का घोष, मित्र, धर; पाल, चौधरी—यहां तक कि एक मुखर्जी भी आ गया है। इनके लिए यह दुपहर नहीं है। आज की दुपहर विकास सरकार की है। पार्क रोड के सात नंबर मकान में शायद आज दिन भर ही वह जी सकेगा—एक कमरे में, एक के मन में।

चंदना अंदाज लगाने की चेष्टा करती है कि देखने में लड़का कैसा हो सकता है—किसके जैसा ? जीजाजी की तरह लंबा, दुबला-पतला, दबे रंग का ? भद्दा—भद्दा होगा तब। क्योंकि चंदना खुद बहुत गोरी है; और मौसी चाहे जो कहें, काफी तंदुरुस्त भी। वह लंबी नहीं है, ठीक नाटी भी नहीं कह सकते—मझोली। गढ़न अच्छी है। दोनों हाथ और पैर तो काफी सुंदर हैं उसके। पार्क रोड के सात नंबर मकान में आने के बाद रोज चेहरे और हाथ-पैरों में ग्लिसरीन लगाना पड़ता है। पैरों में चप्पल पहनकर घूमना पड़ता है, समूचे घर में—कोयला तोड़ना नहीं पड़ता, और न कभी साड़ी-कमीज ही धोना पड़ता है। इसीलिए छिपा हुआ सौंदर्य फूट पड़ा है—फूट पड़ रहा है दिनों-दिन। अब उसके हाथों में ये सोने की चूड़ियां, उंगली में यह अंगूठी और गले में वह पतला-सा हार काफी फबते हैं। पाइकपाड़ा के मकान में उसके पास कुछ नहीं था। इसीलिए वह फबने जैसा सज-संवर नहीं पाती थी। दीदी की घर पहनने की साड़ी वह पहनती, जिससे शरीर में रूखापन ही खिलता—रूप नहीं।

बर्नपुर पार्क रोड के इस सूने सरोवर में इतने ही दिनों में सब-कुछ खिल गया है। ठीक कमल फूल-सा। और इस निर्जनता में उसके मन ने भी पंखुरी फैलायी है। तभी विकास सरकार के बारे में रत्ती-रत्ती वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोच सकती है, सोच रही है। लगता है, लड़का देखने में अच्छा ही होगा। कम से कम ऐसा होना ही उचित है, जब वह—अर्थात् विकास सरकार लिख रहा है कि वह मिलिटरी में नौकरी करता है। मिलिटरी की नौकरी होते हुए भी, भगवान की दया से, युद्ध की नौकरी नहीं है। युद्ध भी फिलहाल कहां हो रहा है। तनख्वाह साढ़े पांच सौ रुपये। साढ़े पांच सौ—पहले चंदना समझती थी कि साढ़े पांच सौ काफी रुपये होते हैं। अब वह ऐसा नहीं समझती।

कलकत्ता में—बालीगंज में चंदना के जो मौसेरे भैया रहते हैं और एक दीदी भी—उन्हें सिर्फ दो आदमियों के लिए ही हर महीने ढाई सौ रुपये मकान का किराया देना पड़ता है। इससे कम में नहीं होता, हो ही नहीं सकता। विकास सरकार के साढ़े पांच सौ रुपयों में क्या होगा? कैसे चलेगा? चंदना कुछ देर छटपटायी। फिर उसे लगा, पाइकपाड़ा में जीजाजी ढाई सौ रुपये महीना पाते हैं, अखबार की नौकरी से। उनका तो चल जाता है। वैसे यह चलना जैसे कोई चलना नहीं है। उधार लेकर, सिर के बाल बेचकर, जरूरत पर जेवर-गहने बेचकर। फिर भी देखो—दीदी हंसती-खेलती चला ले जाती हैं, जीजाजी भी निर्विकार रहते हैं। इसलिए साढ़े पांच सौ रुपये वैसे कोई बड़ी रकम नहीं है, फिर भी उसी में खींचतानकर चलाना होगा। और विकास को, चंदना ने निर्णय कर लिया, कभी भी वह सिगरेट पर रुपये उड़ाने नहीं देगी। इसके बदले हर तीन महीने में कीमती कपड़े का एक कुरता, एक धोती खरीद दिया करेगी। मक्खन खिलायेगी रोज, और कम से कम एक बार असली दूध।

विकास सरकार को पसंद करके—जैसे किसी दुकान से एक साड़ी पसंद करके कार्ड-बोर्ड के बक्से में बंद करके, कीमत चुकाकर सड़क पर चली आयी वह। बहुत खुश है मन—कोई देखता नहीं, जानता नहीं, कितना ऐश्वर्य उसके पास छिपा हुआ है आज, इस दुपहर!

चंदना की इच्छा नहीं थी, तब भी उठना पड़ा। बाथरूम जाकर उसने मुंह धोया। डाइनिंग-रूम में गयी, एक गिलास पानी पिया। छिपाकर कुछ कुटके सुपारी डाल ली मुंह में। इसके बाद अपने कमरे में आकर बैठ गयी। बैठी, मेज के किनारे सीना लगाकर। कापी खींच ली। होमवर्क करना होगा अब—इस निर्जन दुपहरिया में भी।

ट्रांसलेशन की पहली लाइन पर नजर पड़ते ही मन फिर फिसल गया—हट गया किताब से। 'दिल्ली का कुतुबमीनार एक ऐतिहासिक स्मृतिस्तंभ है।' दिल्ली-दिल्ली-दिल्ली। चंदना के भीतर फिर वही सिहरन। विकास सरकार ही जैसे एक मीनार है—चंदना के मन में वह भी जैसे एक स्मृति-स्तंभ है। आज दुपहर-भर—उस मीनार के नीचे खड़ी होकर विस्मय, प्रत्याशा और सपने में वह सब भूल गयी है। भूली जा रही है। मौसाजी न जाने कितनी देर पहले गराज से गाड़ी निकालकर फैक्टरी चले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये—चंदना जान ही नहीं पायी। इस वक्त उसे कुछ दिनों से एक गिलास मट्ठा घोलकर देना पड़ता है मौसी को। चंदना भूल गयी, मट्ठा देना। शायद युगल ने ही दे दिया है और मौसी सो गयी हैं—किसी ने उसे नहीं पुकारा था।

चंदना उठ खड़ी हुई। इस छाया-भरे कमरे में टाइम-पीस की टिक-टिक, पंखे की मीठी आवाज के कारण जैसे किसी तरह भी ट्रांसलेशन में मन नहीं लगा सकेगी। इससे बरामदा ही अच्छा है।

बरामदे में बेंत की कुर्सी खींचकर बैठ गयी चंदना। सुबह वाली उसी मेज पर कापी और ट्रांसलेशन की किताब सजाकर। बाहर भी बादल छा रहे हैं। हवा भीगी-भीगी है। बरामदे में पत्ताबहार के गमले से मिट्ठी की न जाने कैसी महक आ रही है। बगीचे में जवा-झाड़ के पत्ते हिल रहे हैं, अपराजिता की फुनगियों पर लगातार कुछ-एक तितलियां उड़ रही हैं। एक पंडुकी आयी, आकर बैठ गयी शिरीष की डाल पर। मैदान में कुछ गौरैया उतरी हैं। दो कबूतर भी। सेम की मचान पर कौवे। एक तीतर भी आ पहुंचा है, इस दुपहर की बदली वाली छांह में।

पार्क रोड के सात नंबर बंगले के पिछवाड़े के बगीचे में वे सभी इसी तरह रोज दुपहर को आते हैं। पर इतने सुंदर नहीं लगते। किसी-किसी दिन लगते हैं, कभी-कभी ही।

मुंह से कोई आवाज करते या दो कदम बढ़कर ताली बजाते ही सब फौरन उड़ जायेंगे—डैने फैलाकर फड़फड़ाते हुए उड़ जायेंगे। कोई दूसरा दिन होता तो चंदना उड़ा देती, पर आज उसने नहीं उड़ाया। बल्कि बगीचे से बरामदे में चली आयीं दो गौरैयां। गाल पर हाथ रखकर बरामदे में बैठे-बैठे उन्हें देखा चंदना ने। जैसे यह पार्क रोड का सात नंबर मकान नहीं, दिल्ली के लोदी रोड का कोई मकान हो—जिस मकान में दुपहर का सन्नाटा है, सो वह कौवे, गौरैया, तीतर सब-कुछ देख पाती है, सभी को करीब आने दे सकती है।

अब तक हवा भीगी हुई थी—अब बारिश शुरू हुई। बड़ी-बड़ी बूंदें। कौवे कांव-कांव करते हुए उड़ गये। डैनों को फड़फड़ाते हुए दो पंख झाड़कर दोनों कबूतर भी भाग गये। थोड़ी-सी गौरैयों ने फूल के पेड़ के पत्तों के पीछे ठौर लिया। तीतर शायद काफी पहले ही चला गया है। बगीचा खाली है।

शाम के बाद जब चंदना अपने कमरे की मेज से छाती सटाकर बैठी थी, हिस्टरी के पन्ने पर उसकी नजरें थीं—तब बगल में डाईनिंग-रूम में बात-चीत हो रही थी। दोनों कमरों के बीच का भारी परदा तब आधा हटा हुआ था। मौसी को चंदना नहीं देख पा रही है। मौसाजी को भी नहीं। न देखते हुए भी समझने में तकलीफ नहीं हो रही है। मौसाजी दूध का प्याला सामने लिये बैठे हैं। बगल में एक कुर्सी पर मौसी। और मौसी ही कह रही हैं—उनकी बातें ऐसे सूने कमरे में साफ सुनाई पड़ती हैं। चंदना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कान खड़े किये सुन रही है।

'मिलिटरी स्टोर्स एकाउंट्स की नौकरी, उसमें आगे कौन-सी तरक्की है?' मौसी की आवाज।

'ठीक से पता नहीं। शायद कुछ तो होगी।' मौसाजी का मीठे स्वर में जवाब।

'फिर ''शायद'' क्यों? कौन-सी तरक्की होगी, सोचो—सोचकर कहो। मेरा खयाल है, कोई तरक्की नहीं है। ज्यादा से ज्यादा साढ़े पांच से छह सौ।'

'लगभग वैसी ही होगी।'

'एकैडेमिक क्वालिफिकेशन भी भला ऐसा क्या है? सिर्फ इंटरमीजियट पास। आइ.ए. पास लड़का नौकरी करके तरक्की कर सके—ऐसा चांस कहां है?'

मौसाजी चुप। घिस्स् की आवाज हुई। चंदना समझ गयी, उन्होंने सिगरेट सुलगायी है। और अब उठकर सीधे बरामदे में जाकर चहल-कदमी करेंगे।

'चंदना को पसंद आया है क्या? पूछा है तुमने?' मौसाजी अब उठकर खड़े हो रहे हैं।

'नहीं, नहीं पूछा है अब तक। मेरी खुद की राय नहीं है इसमें।'

नहीं है। नहीं है।..... चंदना ने किताब के पन्ने से नजर उठाकर दीवार को देखा। घड़ी को और कैलेंडर को। दीवार को। वार्डरोब को। बिस्तर को। कुछ नहीं है। कहीं भी अब वह नहीं है। पार्क रोड के सात नंबर मकान के इस कमरे में अब फिर शून्यता भर गयी है। बाहर फुहार पड़ रही है। बरामदे में फीकी रोशनी है। कभी कभी हवा के झोंके भी मार रहे हैं। और मैदान के सूनेपन में—अंधेरे में लगातार फुहार पड़ रही है। बड़े मद्धिम स्वर में मौसी ने शायद रेडियो चला दिया है, नौ वाल्व का रेडियो। जैसे धीमे-धीमे कोई रो रहा है— 'आंधी की रात में तुम्हारा अभिसार, प्राण सखा बंधु ओ मेरे।' और सांझ की धूप जल रही है। मौसी ने जलायी है। उसकी खुशबू.....

चंदना जैसे काफी रात गये नींद उचटने पर देखती है .....एक छोटे-से स्टेशन में उसकी गाड़ी रुक गयी है। सब शांत है, सन्नाटा है। चारों ओर गझिन बुना हुआ अपरिचय का परदा; कोई नहीं है, कोई नहीं आ रहा है, किसी के पैरों की आहट नहीं आती। सिर्फ लगातार झरती हुई फुहार।

रात को खाने बैठने पर बड़ी मुश्किल से मछली का एक टुकड़ा मुंह में डाला था चंदना ने। इसके बाद उसकी प्लेट में मुर्गे के चार टुकड़े मांस के साथ, एक टुकड़ा गले की नली पड़ी।

'मैंने सोचकर देखा है कि आइ.ए. पास लड़के की एकाउंट्स में कोई तरक्की नहीं होती। तरक्की असंभव है। क्यों चंदना, क्या कहती हो तुम? तुम्हारी क्या राय है?'

चंदना ने सिर झुका लिया है। प्लेट के चार टुकड़े मांस के बीच वह गले की नली ही सिर्फ नजर आती है और लगता है अच्छी तरह उस गले को काटा गया है और उसमें मसाले, बढ़िया घी और कीमती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टमाटर—सब ठीक-ठीक पड़े हैं।

'न कर दूं, क्यों?'

चंदना ने मुंह झुकाये हुए ही धीरे-बहुत धीरे सिर हिलाया।

जाने कब बारह बज गये हैं। अब शायद एक बजा है। मसहरी के भीतर नरम बिस्तर पर लेटी चंदना आंखें खोले हुए है। इतने घने अंधेरे में अकेले आंख खोली जा सकती है। इस सूनेपन में अपनी छाती, गालों, आंखों पर अपना हाथ लगाया जा सकता है। छूकर खुद को खुद ही समझा जा सकता है। समझाया जा सकता है।

दिल्ली का मीनार इतिहास की किताब के फटे पन्ने की तरह उड़ गया है। विकास सरकार के लिए तीन महीने के अंतर से कुरता और सूती धोती खरीदने का सुख अब उसके हाथों में नहीं है। अब उसके हाथों में—हाथों की बगल में तकिये के किनारे बेड-स्विच पड़ा हुआ है। बिना आवाज किये ही वह स्विच दबाया जा सकता है और पल-भर में इस घर में रोशनी की जा सकती है। चंदना उस रोशनी में, मन होने पर, लेटी रह सकती है। इच्छा होने पर अभी वह कलम उठाकर चुपचाप उमा को एक चिट्ठी लिख सकती है। अरी उमा, तुझे चिट्ठी लिख रही हूं, दीदी से तू कहना, मुझे वे पाइकपाड़ा वाले मकान में ले जायें। यहां मुझे अच्छा नहीं लगता। बात करने के लिए कोई नहीं है। अकेली सोती हूं—एक कमरे में! बहुत डर लगता है।

डर, सचमुच ही लग रहा है चंदना को। अंधेरे के कारण नहीं। अकेली सोयी हुई है, इसलिए भी नहीं। फिर भी डर। यह डर बारिश की फुहार की तरह झर रहा है। निर्जनता का, सन्नाटे का यह भय और किसी अजीब पीड़ा का। अकेलेपन के असह्य क्षणों की अविराम लहरें गिनने की क्लांति।

टाइमपीस टिक-टिक करती जा रही है। करती जायेगी। तनिक सेंट लगाया था। छाती के पास ब्लाउज पर, बाल वैसे ही खुशबूदार तेल से सने हैं, कान की बाली हिलती है, गले का हार छाती के पास ब्लाउज में फंस गया है। कुछ बूंद पसीना माथे और गले पर जम गया है।

तब भी सोना ही पड़ेगा चंदना को। और भोर को उठना पड़ेगा। जब आकाश साफ होने लगे, दरवाजा खोल देना होगा बरामदे का। तब बरामदे के कोने में कुत्ता सोयेगा। कौवे कांव-कांव करेंगे, मेहंदी की क्यारियों पर उतनी सुबह ही गौरैया आ जमा होंगी। चिड़ियों की चहक शुरू हो जायेगी तभी से।

चिड़ियों की चहक सुनते-सुनते चंदना का दिन चढ़ने लगेगा—जब तक मौसी न उठें, उससे पहले ही चंदना को पढ़ने की मेज के पास बैठ जाना पड़ेगा। चोंच में तिनके दबाये गौरैयां फुर्र से उड़ती हुई आ घुसेंगी चंदना के कमरे में, घोंसले बनाने की तैयारी में।

पर पार्क रोड के सात नंबर बंगले के फिट-फाट, सजे-संवरे कमरों में घोंसले बनाना सरल नहीं है। जाला साफ करने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाला बांस हाथों में लेकर माली आ पहुंचेगा। दिन के आठ ही बजे हों या दस, कांच के दरवाजे, चिकें सब बंद हो जायेंगे। रोशनी आयेगी, धूप नहीं—चिड़ियों की बोली उतराती आयेगी, स्काइलाइट के छोटे-से झरोखे से, गौरैयों की चहक नहीं। पार्क रोड के सात नंबर मकान में तिनकों की मदद से घोंसला बनाने की जगह नहीं है, राह-घाट की रोशनी और धूल को आमंत्रण नहीं है।

इसलिए कल की डाक से या परसों की डाक से और किसी दत्त या बसु या दे की चिट्ठी आयेगी। मौसी उसे पढ़ेंगी। चंदना बगल में बैठे-बैठे उठ जायेगी पान लगाने के बहाने और सांझ को मौसी सारा दिन तिल-तिल विचार करने के बाद राय देंगी।

चंदना ने जान लिया है, अनेक पेड़-पत्तों को पार कर—अनेक अंतराल, अनेक फिल्टरेशन्स के बाद स्पेक्ट्रम की आभा लेकर जब तक कोई नहीं आता—कोई प्रकाश, तब तक पार्क रोड के सात नंबर मकान में, इस छायादार स्निग्धता में उसे चुपचाप बैठकर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। और अधिक मुलायम और भी कोमल करने पड़ेंगे मुंह, हाथ, पैर साबुन का झाग और ग्लिसरीन लगाकर। और चिड़ियों की बोली सुन-सुनकर उसकी सुबह और दुपहर बीतेंगे। झड़बेरी का कांटा सीने में चुभोये रात।

★

[पृष्ठ ८८ का शेष]

कि पर्वतारोही का सर्वथा नवयुवा होना आवश्यक नहीं है। द्वितीय एवरेस्ट अभियान में भाग लेने वाले स्व. सोनाम ग्यात्सो उस समय ४२ वर्ष के थे।

मई-जून के महीने पर्वतारोहण के लिए सर्वोत्तम हैं; क्योंकि उस समय १४ से १८ हजार फुट की ऊंचाई पर बर्फ कच्ची न होकर पक्की होती है। परंतु यों दिसंबर व नवंबर के ठंडे महीनों में स्पीति जिले (हि. प्र.) की मनीरांग (२३,००० फुट) तथा कनिकमा (१९,५६६ फुट) चोटियों को पर्वतारोही सफलतापूर्वक पार कर चुके हैं।

एवरेस्ट-अभियान दल के प्रथम नेता ब्रि. ज्ञानसिंह के ये शब्द कितने ओजपूर्ण और साहससूचक हैं, जो उन्होंने अभियान की समाप्ति पर कहे थे:

'हम पुनः लौटकर पर्वतारोहण करने की शपथ लेकर तब तक के लिए वापस जा रहे हैं, जब तक कि प्रचंड झंझावात वाली पवन-माता हम पर कृपालु नहीं होती।'

इसी प्रकार द्वितीय एवरेस्ट अभियान के नेता डायस ने असफल अभियान के बाद कहा था :

'बहुत बुरी तरह पिटने के बाद भी हम फिर आकर इस चोटी पर चढ़ेंगे।'

और इस भविष्यवाणी को पूरा करके कमांडर कोहली ने भारत का मस्तक ऊंचा कर दिया।

—३/६३२, रामकृष्णपुरम्,
नयी दिल्ली-११० ०२२

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्वनियों के आलेख

ललितचंद्र चंदोला

कहावत है—आंख और कान में चार अंगुल का अंतर होता है। दूसरे शब्दों में इसे यों कहा जा सकता है कि देखी हुई तथा सुनी हुई बातों की विश्वसनीयता में काफी फर्क होता है। देखी हुई बात पर सहज ही विश्वास हो जाता है; पर सुनी हुई बात पर विश्वास मुश्किल से होता है। सुनी हुई बात को विश्वसनीयता का जामा पहनाने का बीड़ा वैज्ञानिकों ने उठाया है। उनके इस प्रयास की परिणति हुई है एक यंत्र में, जिसे 'ध्वनि-स्पेक्ट्रोग्राफ' कहते हैं। आवाज को पहचानने की जिस पद्धति पर यह यंत्र काम करता है, उसे कहा जाता है 'ध्वनि-मुद्रण-पद्धति।'

बात दूसरे महायुद्ध के दौरान की है। बहुत बार सेना के लिए यह आवश्यक हो जाता था कि फोन या बेतार पर बोल रहे व्यक्ति को उसकी ध्वनि से पहचाना जाये। युद्ध की आवश्यकताओं को युद्ध-स्तर पर ही लिया जाता है। इसलिए तुरंत ही अमरीका की बेल प्रयोगशाला में ध्वनि-पहचान पर प्रयोग शुरू हो गये, ताकि उनका उपयोग युद्ध के काम में किया जा सके। जब तक लड़ाई समाप्त हुई, तब तक किसी विश्वसनीय पद्धति का विकास तो नहीं हो पाया था, परंतु ध्वनि-पहचान की कई पद्धतियों में आरंभिक कार्य हो चुका था।

विश्वयुद्ध की समाप्ति पर ऐसा लगा कि अब ध्वनि-पहचान की पद्धति विकसित करने की कोई आवश्यकता नहीं रह गयी। लेकिन सन १९५० के आस-पास एक नयी समस्या सामने आयी। इस बार की समस्या पुलिस-विभाग की थी, जिस पर आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेवारी होती है। विभिन्न देशों के विभिन्न शहरों की पुलिस को बार-बार टेलिफोन पर ऐसी सूचनाएं मिलतीं कि अमुक हवाई जहाज पर अमुक स्थान पर बम रखा है। कभी-कभी ये धमकियां सच भी निकल आती थीं। इतने महंगे हवाई जहाजों तथा यात्रियों की जान का सवाल होता था; इसलिए कोई खतरा भी नहीं मोल लिया जा सकता था।

टेलिफोन पर धमकी अथवा सूचना देने वाला व्यक्ति दिखाई तो देता नहीं। केवल आवाज पर से ही उसे पहचानने की संभावना होती है। इसलिए अमरीकी पुलिस-विभाग की प्रार्थना पर ध्वनि-पहचान के प्रयोगों को फिर से शुरू किया गया।

अमरीका में एक अनुभवी भौतिकविद् लारेन्स ई. केर्स्टा को दो साल का समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब नयी 'पहले से भी बढ़िया' डेट टिकिया बाज़ार में मिलने वाली सबसे उत्तम डिटर्जेण्ट टिकिया है. इसकी ज़्यादा सफ़ाई की शक्ति, भरपूर झाग और महक कुछ ऐसी ख़ूबियाँ हैं जो किसी अन्य धुलाई की टिकिया में नहीं पायी जातीं. आज ही इस्तेमाल कीजिए और ख़ुद देखिए! सुप्रीम डेट टिकिया से 'चमचमाती' सफ़ेदी!

शानदार सफ़ेदी, डेट की सफ़ेदी

Shilpi-DM 7A/76 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया गया कि ध्वनि-स्पेक्ट्रोग्राफी को इस हद तक विकसित कीजिये कि ध्वनि-पहचान को सुव्यवस्थित, विश्वसनीय एवं असंदिग्ध पद्धति के रूप में स्वीकृत किया जा सके। उद्देश्य यह था कि हस्तलेख तथा अंगूठे के निशान की तरह ही ध्वनि-पहचान को कचहरी में सबूत के रूप में मान्यता मिल सके।

प्रयोगशाला के नियंत्रित प्रयोगों में केर्स्टा ने १२३ अलग-अलग व्यक्तियों के १६,००० से अधिक स्पेक्ट्रोग्रामों (आलेखों) की पहचान का कार्य संपन्न किया। उन्हें ९९.६५ प्रतिशत सही पहचान करने में सफलता मिली। इस उत्तम सफलता से केर्स्टा को विश्वास हो गया कि उनकी विधि पूरी तरह विकसित हो गयी है तथा उनके प्रयास के अब फल मिलने शुरू हो जाने चाहिये। अपनी विधि का मूल्यांकन करने के लिए उन्होंने पुलिस-विभाग को आमंत्रित किया।

पुलिस-विभाग को इस विधि का रोजमर्रा के काम में व्यावहारिक प्रयोग करके देखना था। पुलिस के वैज्ञानिक अफसर डा. आस्कर टोसी ने प्रशिक्षणार्थियों के साथ स्वयं भी ध्वनि-पहचान की तकनीक सीखी। फिर उन्होंने इसका मूल्यांकन किया। उनका निष्कर्ष था–'केर्स्टा की पद्धति में काफी संभावनाएं हैं।'

डा. टोसी के विचार से इस विधि में अभी कुछ काम होना बाकी था। इसलिए उन्होंने एक अन्वेषक-दल बनाया तथा स्वयं ही ध्वनि-पहचान पर विस्तृत अध्ययन किये। ये अध्ययन मिशीगन राज्य विश्वविद्यालय में किये गये तथा सन १९७० में समाप्त हुए। प्रयोग अभी चल ही रहे थे कि दूसरी ओर इस विधि की मदद से अपराधियों की खोज-बीन का कार्य भी शुरू कर दिया गया। पुलिस को अब विश्वास हो गया था कि अपने दैनंदिन कार्य को निबाहने के लिए उसे ध्वनि-पहचान के रूप में एक और हथियार उन्हें मिल गया है।

उंगलियों के निशानों तथा हाथ की लिखाई की तरह ही प्रत्येक व्यक्ति की एक विशिष्ट आवाज होती है। किन्हीं दो व्यक्तियों की आवाज चाहे बहुत दृष्टियों से मिलती हो, तो भी पूरी तरह एक प्रकार की नहीं हो सकती। ऐसा क्यों है, यह समझने

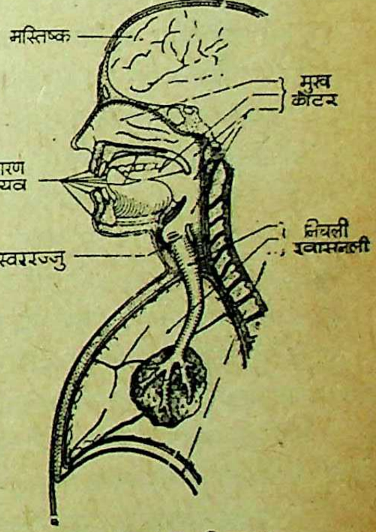

स्वरयंत्र-विन्यास

चित्र-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिए हमें पहले यह समझना होगा कि हमारे मुंह से आवाज निकलती कैसे है।

चित्र–१ में मनुष्य के ध्वनि-उत्पादक अवयव दिखाये गये हैं। ध्वनि के नियंत्रक केंद्र मुख्यत: पांच हैं। मस्तिष्क, मुख-कोटर, उच्चारण अवयव, निचली श्वास-नली और स्वररज्जु में स्थित विभिन्न अंगों की सहायता से हम आवाज निकालते हैं। फेफड़े, श्वास-प्रणाली, कंठ, मुख तथा नासिका-कोटर के साथ-साथ जीभ, दांत, तलुआ तथा जबड़े की हड्डी जैसे विभिन्न अंगों के परिचालन से आवाज बनती है। प्रत्येक व्यक्ति में ये अंग तनिक अलग आकार-प्रकार के होते हैं और प्रत्येक व्यक्ति इनका उपयोग अपने ढंग से करता है। सो प्रत्येक व्यक्ति की आवाज अलग होती है।

और भी एक चीज प्रत्येक व्यक्ति के बोलने को प्रभावित करती है। वह है उसके बचपन का वातावरण। बोलना सीख रहा बच्चा अपने अभिभावकों की-सी बोली सीखता है। उसका लहजा, उच्चारण, हाव-भाव तथा आवाज के उतार-चढ़ाव भी अक्सर उसके अभिभावकों के से होते हैं।

हर आदमी शब्दों तथा वाक्यों को अपने ही ढंग से बोलता है। ध्वनि-स्पेक्ट्रोग्राफ से प्राप्त ध्वन्यालेखों के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि एक ही शब्द को यदि अलग-अलग व्यक्ति बोलें, तो उनके ध्वन्यालेख (वायस प्रिंट) अलग-अलग बनते हैं। पांच वक्ताओं द्वारा बोले गये अंग्रेजी शब्द 'यू' (you) के ध्वन्यालेख चित्र–२ में दिखाये गये हैं। इनमें से ध्वन्यालेख १ तथा ६ एक ही वक्ता के हैं। इसीलिए उनमें समानता है। एक वक्ता द्वारा बोले गये किसी एक शब्द के ध्वन्यालेख हमेशा एक प्रकार के बनते हैं। इस सिद्धांत के आधार पर थाने में या कचहरी में, संदिग्ध व्यक्ति को अपराधी अथवा निरपराध सिद्ध किया जा सकता है।

ध्वन्यालेख समय को ध्वनि की आवृत्ति के साथ दरशाते हैं। ध्वन्यालेख द्वारा व्यक्तियों की आवाज का दृश्य-वस्तु के रूप में मूल्यांकन किया जा सकता है और उस पर तर्क-वितर्क किया जा सकता है, जबकि सुनी गयी आवाज के मूल्यांकन में यह सब संभव नहीं है; क्योंकि वह तो श्रोता के मन पर पड़ी छाप पर निर्भर होने से बहुत ही आत्मपरक (सब्जेक्टिव) होता है।

ध्वन्यालेख-विशेषज्ञ ध्वन्यात्मक तत्त्वों की आकृतियों का मिलान करके निर्णय पर पहुंचता है। ये मुख्य तत्त्व हैं–स्वरों की आवृत्ति, पट्टिका की चौड़ाई, छड़ों के बीच की दूरी, कालावधि तथा स्वर-ध्वनियों की प्रखरता आदि।

जनवरी १९६७ से अमरीका की मिशीगन राज्य-पुलिस ने ध्वनि-मुद्रण का उपयोग कई प्रकार के मामलों को सुलझाने में किया है। हत्या, बलात्कार, जबरन पैसे ऐंठना, अपहरण, घूसखोरी, डाका, सशस्त्र डकैती, जुआ, मादक द्रव्यों का व्यापार, चोरी, आग लगने की या हत्या की झूठी खबरें देना, बम रखने की धमकी तथा टेलिफोन पर अश्लील बातें कहना आदि के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामले इसमें संमिलित हैं।

उदाहरणार्थ, एक आदमी ने किसी औरत की हत्या कर डाली तथा टेलिफोन पर पुलिस को इत्तिला दी कि मैंने अमुक औरत का खून कर दिया है। नाम पूछने पर उसने अपना नाम न बताकर अपने एक परिचित व्यक्ति का नाम बता दिया। पुलिस ने 'परिचित व्यक्ति' को पकड़ लिया। टेलिफोन करने वाले व्यक्ति की आवाज पुलिस ने टेप पर मुद्रित कर ली थी और उस टेप से हत्यारे का ध्वन्यालेख तैयार किया गया था। जब इस 'परिचित व्यक्ति' का ध्वन्यालेख लिया गया, तो देखा गया कि वह टेलिफोन पर आयी आवाज के ध्वन्यालेख से मेल नहीं खाता। इस आधार पर उस 'परिचित व्यक्ति' को तो बरी कर दिया गया। खोजते-खोजते पुलिस असली हत्यारे तक पहुंच ही गयी। संदेह में उसे पकड़कर ध्वन्यालेख के आधार पर उसे दोषी ठहराया गया। बाद में उसने अपना जुर्म कबूल भी किया।

आजकल अपहरण की घटनाएं काफी

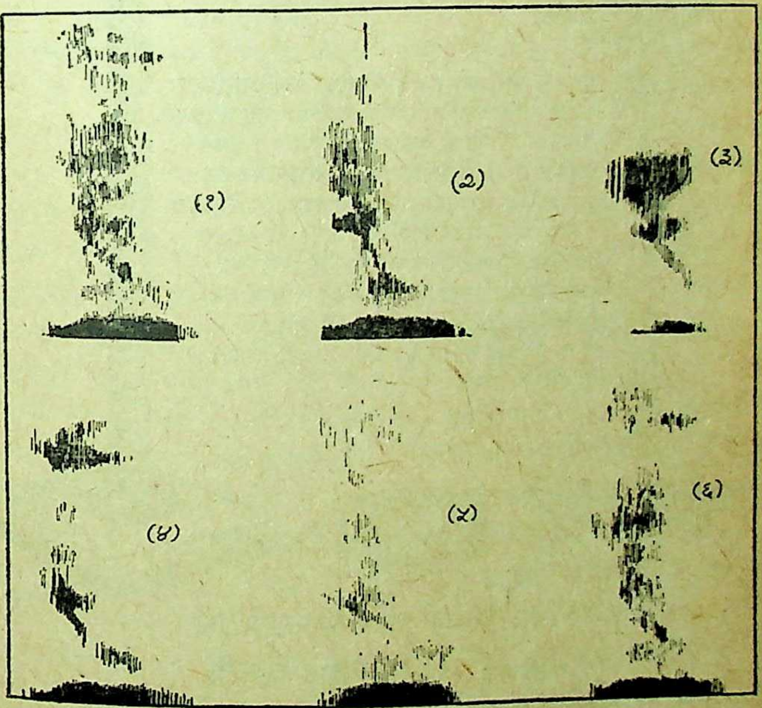

चित्र–२ : पांच वक्ताओं द्वारा बोले गये अंग्रेजी शब्द 'you' का ध्वन्यालेख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

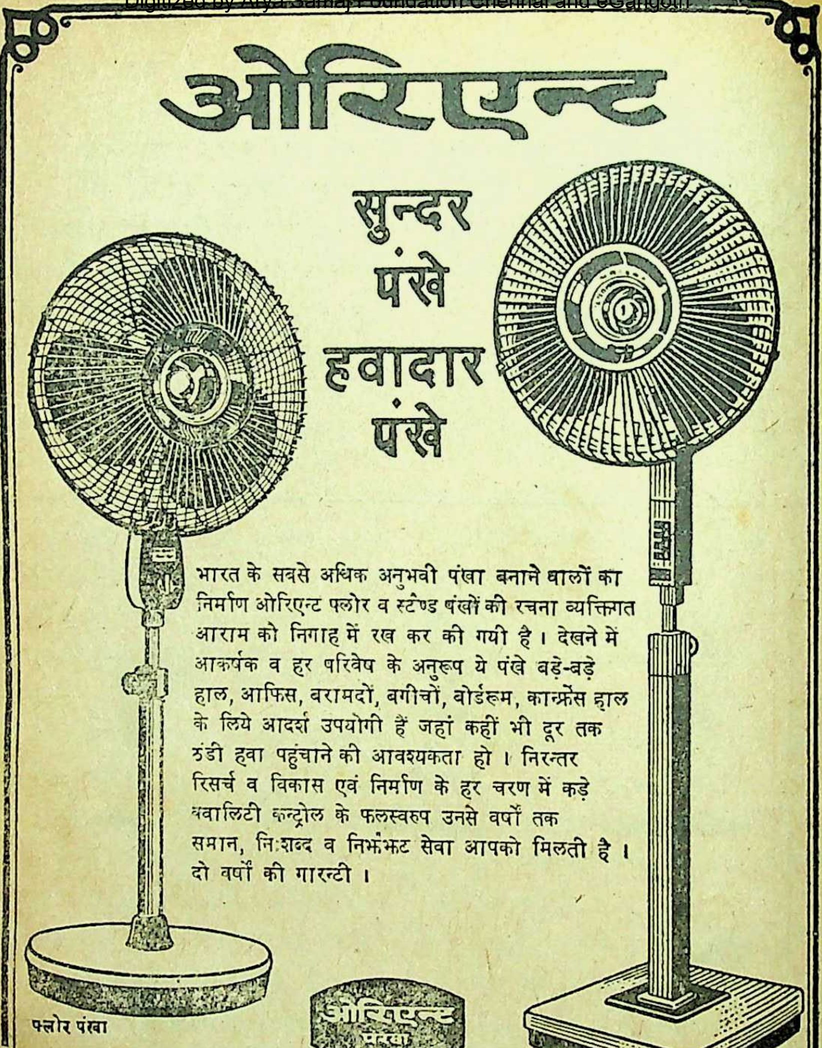

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती हैं। इनमें अमीर परिवार के सदस्यों को उड़ाकर उनके परिवारों से फिरौती के रूप में बड़ी-बड़ी रकमें मांगी जाती हैं। पहली बार में मांग पूरी न होने पर मांग बार-बार की जाती है। मांगकर्ता अक्सर अलग-अलग स्थानों से टेलिफोन करता है। परंतु टेलिफोन किया एक ही घर को जाता है। सो अगर पहली मांग के बाद टेलिफोन पर आने वाले प्रत्येक कॉल को टेप कर लिया जाये, तो अपराधी की आवाज टेप पर आ जायेगी। तब उस आवाज के आधार पर अपराधी को पकड़ा और अदालत से उसे दंड दिलवाया जा सकेगा। कभी-कभी भले घरों की लड़कियों को टेलिफोन पर परेशान किया जाता है। ऐसे मामलों में भी आवाज टेप करके अपराधी की शिनाख्त हो सकती है।

टेलिफोन से टेप-रिकार्डर पर ध्वनि को अंकित करने के लिए विशेष प्रकार के पिक-अप की आवश्यकता होती है। विशेषत: दो प्रकार के पिक-अप प्रयोग में लाये जाते हैं। दोनों में से किसी एक को टेलिफोन के श्रवण-भाग पर लगाया जा सकता है। इनमें से एक को 'इंडक्टिव पिक-अप' तथा दूसरे को 'एक्शन पिक-अप' कहते हैं। ये नाम इनकी काम करने की प्रणाली पर से रखे गये हैं। पिक-अप से प्राप्त होने वाला सिग्नल टेप-रिकार्डर को भेज दिया जाता है। टेप करने के लिए घरेलू उपयोग में आने वाला कोई भी टेप-रिकार्डर काम में लाया जा सकता है। बाद में इस टेप के आवश्यक हिस्से के ध्वन्यालेख प्राप्त किये जा सकते हैं।

सन १९७० तक केवल चार मुकद्दमों में ध्वन्यालेख को बतौर सबूत पेश किया गया था। इनमें से पहले दो मुकद्दमों में कचहरी ने ध्वन्यालेख की गवाही को सही माना। परंतु अगले दो मुकद्दमों में अदालत ने ध्वन्यालेख के बारे में शंका प्रकट की तथा चाहा कि इस पर कुछ और प्रयोग हों। लेकिन १९७१ से अब तक सं. रा. अमरीका के २१ राज्यों ने ध्वन्यालेख की गवाही को मान्यता दे दी है। कनाडा के कोलंबिया राज्य की अदालतों में भी इसे मान्यता मिल गयी है। ध्वन्यालेखों पर विश्वास बढ़ता जा रहा है।

श्रव्य गवाही तथा दृश्य (ध्वन्यालेख) गवाही, दोनों को एक दूसरे का पूरक मानकर सही तथ्यों तक पहुंचा जा सकता है। इसमें कोई संदेह नहीं कि असली अपराधी को दंड दिलाने अथवा निरपराध अभियुक्त को बरी कराने में ध्वन्यालेख महत्त्वपूर्ण काम कर सकते हैं।

एक बात और। अब किसी कवि को यह लिखने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी :

ध्वनियों के भी आलेख होते हैं
जो लिखे नहीं जाते,
दृश्य जो बन नहीं पाते,
पर वे होते हैं
और गूंजते हैं।

[सुरेश ऋतुपर्ण, साप्ताहिक हिंदुस्तान]

–डी-५१/४८१ एम. आई. जी. कालोनी,
बांद्रा पूर्व, बंबई-४०० ०५१

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन

ठहर नहीं पाये, आंगन में दिन !
तुम्हीं चलो, सून-पथ यात्री-बिन !
मन की दुर्बलता से लगता है भय,
कानों में गूंज रही वंशी की लय,
भर आये आघातों से दृग-जल--
साथ रहे सतत, दुःखों के पल-छिन ।
तुम्हीं चलो, सूने-पथ यात्री बिन !
बदलती हवाओं में एक जगह ठहरा,
आशा आकांक्षा पर मूल्यों का पहरा,
सोते अंतर्मन में वर्षों के सपने –
गांठ नहीं बांधो प्रिय, भूलें गिन-गिन !
ठहर नहीं पाये, आंगन में दिन !

—चक्रधर नलिन

प्रभू टाउन, रायबरेली, उ. प्र.

चित्र : कुमारी नवनीत

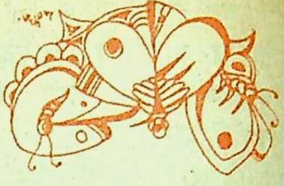

प्रश्नचिह्नों से खड़े हम

फिर भला जीकर करें क्या,
जब निराशा घोंटती हो दम –

हम जहां जाते नहीं
मिलती हमें
संवेदना की घूंट –
चाहकर भी कुछ न कर पाते
हो गयी हैं जड़ हमारी आस्थाएं
हम गये हैं टूट–
जब विगत दिन की महज,
कर याद बेबस
हो गये हैं हम –

आज किससे जा करें हम बात,
जब मनुजता के घरों में
पड़ गये ताले,
हम जिन्हें कहते हमारे,
कब डसें आकर न जाने
सांप हैं पाले –
प्रश्नचिह्नों से खड़े हम,
है हृदय बोझिल हमारा
आंख भी हैं नम–

—डा. छैलबिहारी गुप्त

आनंद भवन, माधवनगर, उज्जैन, म. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वेस्ट इंडीज़ टेस्ट शृंखला

न्यूजीलैंड और वेस्ट इंडीज के जुड़वां दौरे के लिए जब भारतीय क्रिकेट-दल की घोषणा की गयी थी, तो करीब-करीब हर खेल-समीक्षक ने चयनकर्ताओं की सूझबूझ की सराहना की थी। दल में एक-दो कमियां भी थीं—करसन घावरी जैसे श्रेष्ठ आल राउंडर और अशोक मांकड जैसे विश्वसनीय बल्लेबाज (जिन्हें कि कप्तान के पद के लिए संभावित सदस्यों में से एक माना जा रहा है) का दल में न लिया जाना; पार्थ-सारथी शर्मा तथा सुधाकर राव का दल में ले लिया जाना, जबकि दोनों को ही अभी तक अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में किसी तरह की सफलता नहीं मिली है; एक ही नामी-सलामी बल्लेबाज सुनील गावसकर का दल में चयन आदि। फिर भी लगता था कि यह दल काफी संतुलित है।

न्यूजीलैंड में दौरे की शुरूआत बड़ी उत्साहजनक रही; लेकिन अंत अत्यंत निराशाजनक रहा; टेस्ट-शृंखला १-१ से बराबर रही; लेकिन कप्तान बिशन बेदी के यह कहने के बावजूद कि वेस्ट इंडीज में हमारा प्रदर्शन उत्साहवर्द्धक रहेगा, क्रिकेट-प्रेमियों को यह लगने लगा था कि वेस्ट इंडीज में हम लोग चारों टेस्ट मैच हारकर लौटेंगे।

न्यूजीलैंड के विरुद्ध ऑकलैंड में खेला गया पहला टेस्ट मैच हमने बड़ी आसानी से जीत लिया; क्राइस्ट चर्च में दूसरे टेस्ट में हम हारते-हारते रह गये; वेलिंग्टन में तीसरे टेस्ट में भारतीय दल को पारी से हार का मुख देखना पड़ा।

इस दौरे के दौरान बराबर यह लगता रहा कि भाग्य भारत के विरुद्ध है। क्राइस्ट

*** सुदीप द्वारा सिंहावलोकन ***

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चर्च और वेलिंग्डन में ध्रुवीय क्षेत्रों जैसी सर्दी ने भारतीय खिलाड़ियों की कुल्फी जमा दी; और पूरे दौरे में बारिश भूत की तरह भारतीय खिलाड़ियों का पीछा करती रही।

तीसरे टेस्ट में पारी की हार के बाद हमारा दल वेस्ट इंडीज पहुंचा फरवरी के अंत में; और वहां पहुंचने के साथ ही कुछ और कठिनाइयां सामने आने लगीं।

न्यूजीलैंड और वेस्ट इंडीज के बीच हजारों मील की दूरी के बावजूद बारिश यहां भी हमारे खिलाड़ियों के साथ प्लेग की तरह चिपकी हुई थी। हमारे क्रिकेट-अधिकारियों की मेहरबानी से जिस तरह का दौरे का विवरण तय किया गया था, वह भी दल के हित में नहीं था। न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया के जुड़वां दौरों की बात तो समझ में आती है, लेकिन न्यूजीलैंड और वेस्ट इंडीज के ऐसे दौरे में कोई तुक नजर नहीं आती; क्योंकि दोनों देशों के बीच भौगोलिक दूरियां तो हैं ही, खेल-स्थितियों में भी जबर्दस्त अंतर है।

न्यूजीलैंड में प्राप्त किया गया अनुभव और अभ्यास वेस्ट इंडीज में किसी भी तरह उपयोगी सिद्ध नहीं हो सकता था। दूसरी ओर वेलिंग्डन टेस्ट में सुनील गावसकर को चोट लगी थी और वे इलाज के लिए न्यूयार्क में पड़े हुए थे। खिलाड़ी वेस्ट इंडीज पहुंचे तो उनका साजो-सामान उनके एक दिन बाद पहुंचा। बारिश ने अभ्यास करने ही नहीं दिया। फिर हवाई जहाज और बस का सफर—वह भी ऐसी अव्यवस्था में कि खेला कहीं जाना है, खिलाड़ी कहीं और ज[ा] रहे हैं, और उनका सामान कहीं तीस[री] जगह उतारा जा रहा है।

बहरहाल नतीजा वही हुआ, जिस[का] अंदेशा था। अपने शुरू-शुरू के मैचों में भा[र]तीय दल विंडवार्ड्स और लीवार्ड्स जै[से] अपेक्षाकृत कमजोर दलों को भी हराने [में] असफल रहा...... और उसके बाद बा[रबे]डोस के विरुद्ध दस विकेट से अपमानजन[क] पराजय!

भारतीय बल्लेबाजों को अभ्यास का पू[रा] मौका नहीं मिल पाया था। जिस तरह [के] खेल का प्रदर्शन वे कर रहे थे, उससे खे[ल] समीक्षक यही निष्कर्ष निकाल रहे थे कि [यह] दल भारत से समंदर के पार जाने वा[ला] सबसे कमजोर दल है। यही वह समय [था] जब लोग कह रहे थे कि भारत ४-० से हा[र] कर भारत लौटेगा।

ब्रिजटाउन, बारबेडोस में वेस्ट इंडीज [के] विरुद्ध खेले गये पहले टेस्ट मैच से लोगों [की] इस धारणा को बल ही मिला; क्योंकि भार[त] एक बार फिर पारी से पराजित हो गया।

इस टेस्ट की पहली पारी में भारत [ने] १७७ रन बनाये—मुख्य रन-निर्माता [थे] मदनलाल (४५), सुनील गावसकर (३[?]) तथा मोहिंदर अमरनाथ (२६)। मजे[दार] बात यह है कि अब तक माना यह जा[ता] था कि हमारे बल्लेबाज तेज गेंदबाजी [को] अच्छी तरह नहीं खेल पाते; लेकिन [इस] पारी में उनके घटिया प्रदर्शन के लिए रा[ब]र्ट्स, होल्डिंग या जूलियन जैसे चोटी [के]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

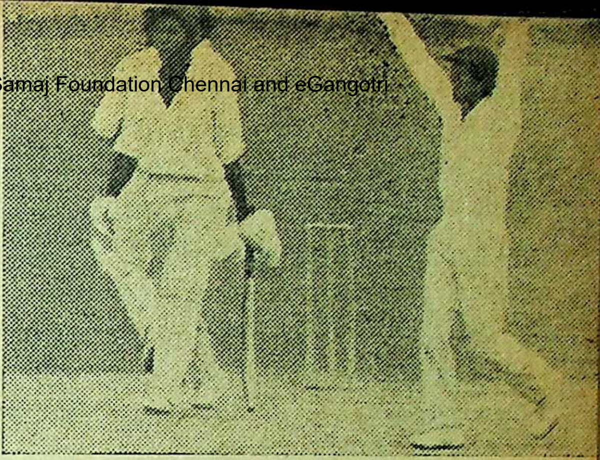

प्रथम टेस्ट में वेस्ट इंडीज की पहली पारी में चंद्रशेखर को गेंद पर रो को कैच किया स्लिप में खड़े विश्वनाथ ने। रो सीटी बजाते हुए पैविलियन की ओर जा रहे हैं।

तेज गेंदबाज नहीं, होल्फोर्ड जैसा मामूली स्तर का लेग-स्पिनर था, जिसने केवल ८·१ ओवरों में २३ रन देकर पांच विकेट लिये। इस पारी में सबसे ज्यादा निराश किया विश्वनाथ (११) तथा सुरिंदर अमरनाथ (०) ने। सुरिंदर ने न्यूजीलैंड में अपने जीवन के प्रथम टेस्ट मैच में ही शतक बनाकर अपने पिता लाला अमरनाथ के कारनामे को दुहरा दिया था। लेकिन उसके बाद उनके खेल में अजीब-सी शिथिलता आ गयी और अब तो यह लगता है कि उनका पहला शतक जैसे भाग्य की ही देन था।

चंद्रशेखर, बेदी तथा मोहिंदर की सटीक और चुस्त गेंदबाजी के बावजूद वेस्ट इंडीज ४८८ का विशाल स्कोर खड़ा करने में कामयाब हो गया। विवियन रिचर्ड्स (१४२) तथा कप्तान क्लाइव लॉयड (१०२) ने शतक बनाये। कालीचरण ने ९३ का योगदान दिया।

लेकिन यह भी सही है कि वेस्ट इंडीज इतना बड़ा स्कोर बनाने में सफल नहीं हो सकता था, यदि हमारे विकेटकीपर किरमानी ने रिचर्ड्स को पारी की शुरुआत में ही 'जीवन-दान' न दे दिया होता।

भारत की दूसरी पारी में विश्वनाथ (६२) तथा मदनलाल (५५ अपराजित) ने भारत को पारी की हार से बचाने की पूरी कोशिश की। लेकिन कुछ नहीं हो सका। केवल नौ के स्कोर पर गावसकर (१) तथा पार्थसारथी शर्मा (१) को खो देने के बाद हार से बच पाना मुमकिन भी नहीं था।

कप्तान बेदी के हौसले की प्रशंसा करनी होगी कि पारी की हार के बावजूद उन्होंने कहा—'हम इससे कहीं बेहतर प्रदर्शन की क्षमता रखते हैं।' बात सही थी। हमारे बल्लेबाजों में कमी कोई नहीं थी—सिर्फ धीरज, एकाग्रता तथा साहस की जरूरत थी।

पहले टेस्ट से कुछ बातें साफ हो गयी थीं। सुनील गावसकर के साथ पारी की शुरुआत के लिए किसी ऐसे बल्लेबाज की जरूरत थी जो तेज और उठती हुई गेंदों का सामना कर सके। तकनीक की दृष्टि से अंशुमान गायकवाड में यह दक्षता देखने में आ रही थी। इसलिए कप्तान बेदी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्यवस्थापक पॉली उमरीगर ने तय किया कि आगामी मैचों में वही गावसकर के साथ पारी की शुरूआत करेंगे। तीसरे स्थान पर किसी ऐसे बल्लेबाज की जरूरत थी, जो विकेट पर टिकना जानता हो और रन भी बना सकता हो। मोहिंदर अमरनाथ को इस स्थान के लिए चुना गया। बीच की बल्लेबाजी को संभालने का काम दिया गया बृजेश पटेल को।

ट्रिनिडाड की क्रिकेट-पट्टी ने भारतीयों का हमेशा साथ दिया है। यह पट्टी विश्व की सबसे धीमी पट्टियों में से एक है। ट्रिनिडाड के विरुद्ध हमारे बल्लेबाजों ने अपने नये स्थानों के मुताबिक जमकर रन बनाये। मैच अनिर्णीत रहा; लेकिन गायकवाड ने अपने दौरे का पहला शतक बनाया ...... और लगने लगा कि भारतीय बल्लेबाजी अपने असली रंग में आ गयी है।

पोर्ट ऑफ स्पेन, ट्रिनिडाड में दूसरा टेस्ट शुरू हुआ। रिचर्ड्स ने यद्यपि एक बार फिर शतक बनाया (१३० रन), फिर भी वेस्ट इंडीज की पहली पारी २४१ पर समाप्त हो गयी। कप्तान बेदी ने ८२ रन देकर पांच विकेट लिये। भारत की ओर से शुरूआत तो शोचनीय रही (अंशुमान गायकवाड चोट लगने के कारण टेस्ट नहीं खेले; वेंगसरकर शून्य पर ही आउट हो गये; मोहिंदर ने केवल १९ रन बनाये), लेकिन सुनील गावसकर (१५६) तथा पटेल (११५ अपराजित) की २०४ रन की कीर्तिमान स्थापित करने वाली पांचवें विकेट की भागीदारी के बल पर भारत ने ४०२ पर अपनी पहली पारी की समाप्ति की घोषणा कर दी। तब तक भारत ने केवल पांच विकेट खोये थे।

भारत ने यह टेस्ट आसानी से जीत लिया होता, यदि दो गलतियां न हुई होतीं। पहली थी हमारे बल्लेबाजों की रन बनाने की अत्यंत धीमी गति; और दूसरी थी बृजेश पटेल द्वारा लॉय्ड को 'जीवन-दान'। वेस्ट इंडीज ने ८ विकेट खोकर २१५ रन बनाये और मैच सनसनीखेज रूप से अनिर्णीत रह गया। यह भी तय है कि यदि बारिश के कारण टेस्ट का पहला दिन नष्ट नहीं हो गया होता तो भारत यह टेस्ट जीत लेता।

लेकिन इस टेस्ट में भारत के प्रदर्शन ने उनकी पिछली हार के अपमान को धो दिया और वेस्ट इंडीज के क्रिकेट-प्रेमी दर्शक और समीक्षक भारतीय दल के बारे में अपनी राय को बदलने को बाध्य हो गये।

जार्जटाउन, गुयाना में तीसरा टेस्ट होना था और उनके पूर्व गुयाना के विरुद्ध चार दिवसीय मैच। लेकिन बारिश एक बार फिर अड़चन बनकर खड़ी हो गयी। गुयाना के विरुद्ध मैच शुरू हो ही नहीं सका। यहां तक कि मैदान में इतना अधिक पानी भर गया कि टेस्ट मैच के भी धुल जाने की आशंकाएं व्यक्त की जाने लगीं। सवाल यह था कि तीसरे टेस्ट को छोड़ दिया जाये या उसे कहीं और खेला जाये। निर्णय यही हुआ कि तीसरा टेस्ट भी पोर्ट ऑफ स्पेन में ही खेला जाये।

बारिश इस बार भारत के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरदान बनकर आया था।

भारतीय क्रिकेट को क्रिकेट के इतिहास में एक विलक्षण उपलब्धि जोड़नी थी, जो कि भारत ने तीसरे टेस्ट को छह विकेट से जीत-कर किया। इस टेस्ट में एक अच्छे नाटक के सभी तत्त्व मौजूद थे—घटनाओं का उतार-चढ़ाव, अजीब-सी उत्सुकता, रोमांच और अंत में ग्रीक ट्रैजेडी की-सी पोएटिक जस्टिस।

शुरूआत भारत के लिए फिर खराब रही। पहले दिन वेस्ट इंडीज ने केवल पांच विकेट खोकर ३२० रन बना डाले। लेकिन दूसरे दिन बेदी ने सुबह-सुबह ही चार विकेट ले लिये और वेस्ट इंडीज की पारी ३५९ पर समाप्त हो गयी। रिचर्ड्स ने लगातार तीसरा शतक (१७७) बनाया। इसके बाद हमारे बल्लेबाज होल्डिंग की तेज गेंदों के सामने टिक नहीं पाये और भारत की पहली पारी २२८ पर समाप्त हो गयी। वेस्ट इंडीज १३१ रन से आगे था। होल्डिंग ने ६५ रन देकर छह विकेट लिये थे और भारत की बल्लेबाजी की कमर तोड़ दी थी। लग रहा था, यह टेस्ट भी भारत के हाथ से निकल गया—खासकर तब तो और भी, जब वेस्ट इंडीज के बल्लेबाज जमकर रन बनाते चले गये।

चौथे दिन वेस्ट इंडीज ने छह विकेट पर २७१ रन बनाकर अपनी दूसरी पारी की समाप्ति की घोषणा कर दी। भारत को टेस्ट जीतने के लिए ४०३ रन बनाने थे और आज तक क्रिकेट-इतिहास में एक ही बार ऐसा हुआ था कि किसी दल ने चौथी पारी में ४०० से अधिक रन बनाये हों और टेस्ट जीता हो। वह दल था १९४८ का आस्ट्रेलियाई दल, जिसके कप्तान थे विश्व के श्रेष्ठतम बल्लेबाज डॉन ब्रैडमन। लॉयड जानते थे कि भारतीय दल में कोई ब्रैडमन नहीं है; लेकिन वे यह नहीं जानते थे कि अब तक भारतीय बल्लेबाज आत्मविश्वास प्राप्त कर चुके हैं, कि खेल-पट्टी में कोई जान नहीं है, और कि उनके पास गिब्स जैसा अनुभवी ऑफस्पिनर भी नहीं है। (ताज्जुब की बात थी कि गिब्स को भारत के विरुद्ध किसी भी टेस्ट में खेलने नहीं दिया गया।)

भारत ने इस चुनौती को स्वीकार किया। गावसकर और विश्वनाथ ने अपने शतकों से, मोहिंदर अमरनाथ ने सात घंटों से भी अधिक लंबी ८५ रनों की पारी से और बृजेश पटेल ने तूफानी ४९ रनों से असंभव को भी संभव कर दिखाया।

भारत की इस जीत ने यह जरूरी बना दिया कि अब शृंखला को फैसले तक ले जाने के लिए चौथा और अंतिम टेस्ट छह दिनों का हो।

चौथा टेस्ट किंग्स्टन, जमैका में खेला गया। कप्तान लॉयड के सामने अपनी प्रतिष्ठा का सवाल था। पहले दिन हमारे बल्लेबाज जमकर खेले। लेकिन दूसरे दिन से उन पर होल्डिंग और होल्डर के बंपर और बीमर बरसने लगे। गायकवाड, विश्वनाथ, पटेल, मदनलाल, चंद्रशेखर घायल हुए और इस टेस्ट में भारत ने १० विकेटों से हार मान ली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारत ने यह टस्ट-शृंखला १-२ से खोयी। लेकिन यह कतई नहीं कहा जा सकता कि भारतीय दल मानसिक रूप से हारकर लौटा। यह सही है कि हमारे बल्लेबाजों के पास तेज, पटकी हुई, उछलती हुई, शरीर का निशाना बनाकर फेंकी गयी गेंदों का सामना करने की सही तकनीक मौजूद नहीं है। लेकिन इसके बदले उनमें अदम्य धीरज और सहनशीलता जरूर मौजूद है। यह कठिनाई तो तब तक लगातार हमारे सामने आती रहेगी, जब तक हम स्वयं तेज क्रिकेट-पट्टियां तैयार नहीं करते और तेज गेंदबाजों को प्रोत्साहन नहीं देते।

दूसरी ओर यह भी स्पष्ट है कि हमारे स्पिन गेंदबाज–बेदी, चंद्रशेखर, वेंकट और प्रसन्न अभी भीं विश्व के अच्छे से अच्छे बल्लेबाजों पर हावी होने की क्षमता रखते हैं।

क्षेत्र-रक्षण की मारक गलतियों के बावजूद हमारे खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया–खास तौर पर मदनलाल, सुरिंदर, मोहिंदर, गायकवाड, वेंकट, सोलकर और पटेल का क्षेत्र-रक्षण गजब का था।

विकेटकीपर किरमानी ने न्यूजीलैंड में विश्व-स्तर का कार्य कर दिखाया था; लेकिन वेस्ट इंडीज में जाने क्यों उनका स्तर गिरता चला गया। उन्हीं की गलतियों के कारण रिचर्ड्स लगातार तीन टेस्टों में तीन शतक बनाने में सफल रहे। उम्मीद करनी चाहिये कि किरमानी अपने खेल को सुधारेंगे और एक बार फिर अपनी उच्चस्तरीय विकेट कीपिंग का प्रदर्शन करेंगे।

बेदी की कप्तानी में किसी तरह की को[ई] कमी नहीं थी। हां, व्यक्तिगत स्तर पर [उ]न्हें अपने को थोड़ा-सा संयत जरूर कर[ना] है। स्वभाव से भावुक होने के कारण [वे] गलत को गलत कहने में कभी नहीं चूकते इसलिए हर मैच में कोई न कोई विवा[द] खड़ा कर लेते हैं। थोड़ी-सी राजनयिकता उन्हें अपने स्वभाव में शामिल करनी होगी।

अंत में इस दौर की उपलब्धियों के सिलसिले में व्यवस्थापक उमरीगर के विचारों पर एक नजर डाल लेना जरूरी लगता है।

उमरीगर का कहना है कि जब भारतीय दल विदेश के लिए रवाना हुआ था तब उसके पास केवल दो बल्लेबाज थे- गावसकर और विश्वनाथ। आज उसके पास छह या सात बल्लेबाज हैं–मोहिंदर पटेल, गायकवाड, वेंगसरकर का नाम अ[ब] चोटी के बल्लेबाजों में लिया जा सकता है।

उमरीगर ने बेदी के नेतृत्व की भी प्रशंसा की है और कहा है कि बेदी अपने दल को एकजुट बनाने में सफल रहे; उन्होंने सभी खिलाड़ियों को भरपूर प्रोत्साहन दिया।

इस दौरे से भारतीय क्रिकेट को ए[क] नयी प्रतिष्ठा प्राप्त हुई है। हार-जीत तो खेल में चलती ही रहती है। बड़ी बात यह है कि जीत के लिए खेल-भावना को नष्ट न कर दिया जाये। भारतीय क्रिकेट-दल खेल की उच्चतम भावनाओं को ध्यान में रखकर खेला, इसके लिए उसकी सराहना करनी होगी।

–एन. ४।१३, सुंदर नगर
एस. वी. रोड, मलाड, प. बंबई-४०००६४

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ५५ का शेष]

बाद वाशिंगटन वर्जीनिया के प्रधान सेनापति के नाते अपने अंतिम सैनिक अभियान पर गये और उसमें सफल होकर लौटे।

वे जब सीमाओं पर वर्जीनिया की खातिर शत्रुओं से जूझ रहे थे, तब कृतज्ञ नागरिकों ने उनकी अनुपस्थिति में ही उन्हें सर्वसंमति से वर्जीनिया विधानसभा का सदस्य चुन लिया था। युद्ध से लौटते ही वाशिंगटन ने मार्था के संग विवाह किया। फिर वे माउंट वरनॉन की अपनी जायदाद पर रहने चले गये। वहां उन्होंने तीन काम किये—वर्जीनिया के कमांडर-इन-चीफ के पद का परित्याग, अपनी और मार्था की जायदाद की व्यवस्था, तथा विधानसभा की कार्रवाई में भाग लेना।

विवाह के साथ ही वाशिंगटन मार्था के दो बच्चे चार वर्षीय जैक कस्टिस और दो वर्षीया पैट्सी कस्टिस के पिता भी बन गये थे। दोनों बच्चों से उन्हें बेहद प्यार था और इनके लिए वे लंदन से खिलौने तथा मिठाइयां मंगवाया करते थे। दुर्भाग्यवश पैट्सी सत्रह वर्ष की अवस्था में मिर्गी के दौरों के कारण मर गयी और जैक आगे जाकर स्वाधीनता-संग्राम के दौरान अतिसार से चल बसा। व्यथित होकर तब वाशिंगटन ने जैक के बच्चों को गोद ले लिया। इस प्रकार निःसंतान होते हुए भी वे पितृत्व से वंचित नहीं रहे।

वाशिंगटन का कुलचिह्न

वाशिंगटन जब मोर्चे से लौटे, तो वर्जीनिया की विधानसभा ने उन्हें धन्यवाद देने के लिए एक प्रस्ताव पास किया। जब वे धन्यवाद स्वीकार करने के लिए उठे, तो बेहद झेंप रहे थे और एक शब्द भी नहीं बोल पाये। यह देखकर विधानसभा के अध्यक्ष राबिन्सन ने उनसे कहा—'बैठिये, मिस्टर वाशिंगटन। आपकी नम्रता भी आपकी वीरता के समान महान है। मैं उसकी प्रशंसा के लिए शब्द खोजने में असमर्थ हूं।'

वाशिंगटन पूरे पंद्रह वर्ष विधानसभा के सदस्य रहे। उनके साथियों में बेंजामिन फ्रैंकलिन और टामस जेफरसन भी थे। जेफरसन ने उनके बारे में लिखा है—'मैंने उन्हें कभी दस मिनट से अधिक बोलते नहीं सुना। वे हमेशा समस्या के मुख्य मुद्दों पर ही बोलते थे।'

रेड इंडियन सरदार की भविष्यवाणी

जिन दिनों कर्नल वाशिंगटन फ्रांसीसियों और रेड इंडियनों से लोहा ले रहे थे, उन्हीं दिनों की बात है। एक दिन एक रेड इंडियन सरदार ने वाशिंगटन को घोड़े पर कहीं जाते हुए देखा और अपने कबीले के युवकों को बुलाकर उनसे कहा—'उस लंबे और साहसी सेनापति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को देखो।' उन रेड इंडियन युवकों ने अपनी राइफलों से वाशिंग्टन पर अंधाधुंध गोली बरसायी; मगर वाशिंग्टन का बाल भी बांका नहीं हुआ।

इस पर वह सरदार अपने अनुयायियों से बोला—'इस सेनापति को हम तनिक भी नुक्सान नहीं पहुंचा सकते। एक रहस्यमयी और बहुत बड़ी शक्ति इसकी रक्षा करती है। यह युद्ध में नहीं मरेगा। मैं जल्दी ही इस दुनिया से चला जाऊंगा; लेकिन मैं भविष्य-वाणी करता हूं कि इस आदमी की रक्षा परमात्मा कर रहा है और वही इसके भाग्य का मार्गदर्शक भी है। यह (अमरीकी) राज्यों का मुखिया बनेगा, और एक नया राष्ट्र—जो अभी कायम नहीं हुआ है—इसे एक महान राज्य का पिता और संस्थापक मानकर इसका अभिनंदन करेगा।'

जब वाशिंग्टन को इस भविष्यवाणी की खबर मिली, तो उन्हें लगा कि शराब के नशे में रेड इंडियन सरदार बहक गया था। उन्हें स्वप्न में भी गुमान न था कि उनके हाथों संसार के एक अतिमहान राष्ट्र की नींव पड़ने वाली है। मगर उन दिनों इंग्लैंड के स्वेच्छा-चारी राजा जार्ज तृतीय और अमरीकी उप-निवेशों के बीच खटपट शुरू हो चुकी थी और १७६५ में जार्ज वाशिंग्टन ने पैट्रिक हेनरी को वर्जीनिया की विधानसभा में यह कहते सुना था—'सीजर को एक दिन ब्रूटस का सामना करना पड़ा और चार्ल्स प्रथम को क्रामवेल का। जार्ज तृतीय को इन उदा-हरणों से लाभ उठाना चाहिये। और यदि यह कहना राजद्रोह है, तो मुझे कठोरतम... दिया जाये, मुझे उसकी परवाह नहीं है।

सन १७६९ में जब ब्रिटिश संसद ने अ... रीकी उपनिवेशों पर नये कर लगाये, पैट्रिक हेनरी तथा अन्य नेता भाषणों... व्यस्त हो गये, जिनमें वे करों की क... आलोचना करते थे। मगर वाशिंग्टन... घोड़े पर सवार होकर वर्जीनिया के गांवों... घूमने लगे और उन्होंने एक हजार व... नियावासियों से इस आशय के प्रतिज्ञा... पर हस्ताक्षर कराये कि हम इंग्लैंड से... वस्तुओं का आयात नहीं करेंगे, जिन... उसने नये कर लगाये हैं। इस तरह उन्... छह साल पहले ही उस युद्ध की कल्पना... ली थी, जिसका नेतृत्व संयोगवश उन्हें... करना पड़ा।

उन्होंने अपने पड़ोसी जार्ज मेसन को... पत्र में लिखा था—'ब्रिटेन में बैठे हमारे अ... कारी शासक अमरीका को स्वतंत्रता... वंचित किये बिना संतुष्ट नहीं होंगे; अ... इस आघात को रोकने और अपने पुरखों... विरासत में मिली अपनी आजादी को ब... के लिए हमें कोई कदम उठाना ही हो... स्वतंत्रता एक ऐसा बहुमूल्य वरदान है, जि... पर जीवन का सर्वस्व निर्भर रहता है... उसकी रक्षा के लिए शस्त्र उठाने में कि... को भी हिचक नहीं होनी चाहिये। फिर... मेरा मत है कि शस्त्र अंतिम उपाय के त... पर ही उठाये जाने चाहिये।'

स्वतंत्रता-संग्राम के प्रधान सेनापति

चंद महीनों में खुला संघर्ष शुरू हो गय...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

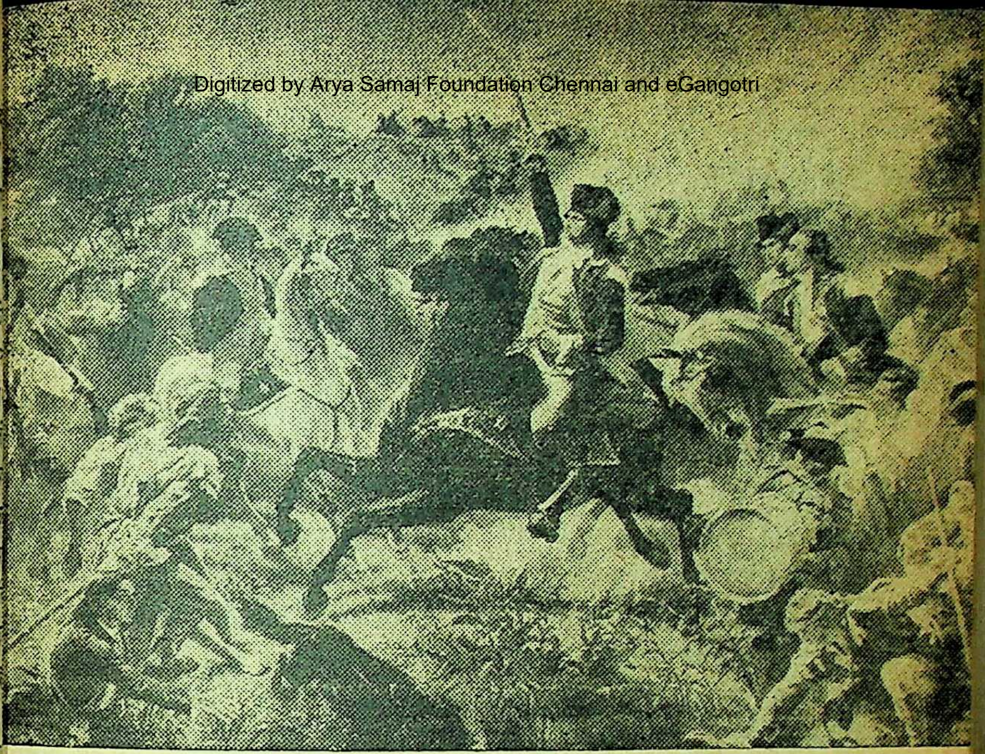

मॉन्मथ के मोर्चे पर सैनिकों का आह्वान करते हुए वाशिंग्टन।

ब्रिटिश संसद ने चाय पर नये कर लगा दिये। एक ब्रिटिश जहाज चाय की पेटियां लादकर जब बोस्टन बंदरगाह में पहुंचा, तो बोस्टन के अमरीकी नागरिकों ने चाय की तीन सौ पेटियां जहाज से उतारकर समुद्र में फेंक दीं। ब्रिटिश सरकार ने बोस्टन का बंदरगाह बंद कर दिया और मार्शल ला लागू कर दिया। जब वर्जीनिया विधानसभा ने बोस्टन के नागरिकों के समर्थन में प्रस्ताव पास किया, तो शाही गवर्नर ने उसे विघटित कर दिया। इस पर वाशिंग्टन सहित पचीस विधायकों ने गवर्नर के आदेश का उल्लंघन करके विधानसभा की बैठक बुलायी। बैठक के दौरान १ अगस्त १७७३ को जार्ज वाशिंग्टन उठे और उन्होंने यह एक वाक्य का भाषण दिया—'मैं अपने खर्च पर एक हजार सैनिकों की सेना संघटित करने और उसे लेकर बोस्टन को प्रस्थान करने को तैयार हूं।'

परिणाम यह हुआ कि वर्जीनिया विधानसभा की ओर से प्रथम अमरीकी कांग्रेस के लिए जो सात प्रतिनिधि चुने गये, उनमें वाशिंग्टन का नाम तीसरा था। कांग्रेस का अधिवेशन सात सप्ताह चला, मगर वाशिंग्टन ने उसमें एक बार भी भाषण नहीं किया। फिर भी जब पैट्रिक हेनरी से यह पूछा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया कि कांग्रेस में सबसे महान व्यक्ति कौन है, तो उन्होंने कहा—'वक्तृत्व-कला की दृष्टि से रटलेज हैं; लेकिन सही निर्णयों और जानकारी की दृष्टि से कर्नल वाशिंग्टन बेजोड़ हैं।'

द्वितीय कांग्रेस में भी वाशिंग्टन वर्जीनिया के प्रतिनिधि होकर गये। उससे कुछ दिन पहले ही उन्हें लेक्सिंग्टन में रक्तपात होने का समाचार मिला था। सो जब वे कांग्रेस के ऐतिहासिक संमेलन में भाग लेने गये, तो उन्होंने वर्जीनिया के कर्नल की वेशभूषा धारण कर रखी थी। इस अधिवेशन में कांग्रेस को अमरीकी मुक्तिसेना के प्रधान सेनापति का चयन करना था। कई उम्मीदवार अपने पक्ष में प्रचार कर रहे थे; होरेशियो गेट्स, चार्ल्स ली और कांग्रेस के अध्यक्ष जान हैनकाक भी इनमें थे। वाशिंग्टन इस मामले में एकदम तटस्थ थे।

अचानक न्यू इंग्लैंड उपनिवेश के प्रतिनिधि जान एडम्स ने खड़े होकर वाशिंग्टन

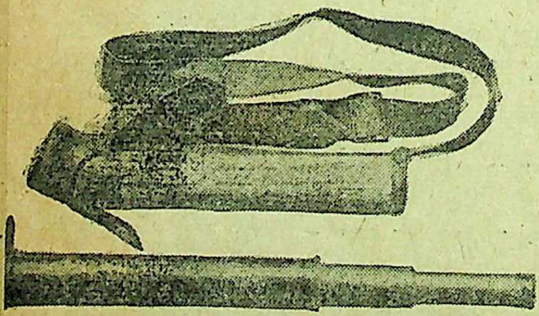

आजादी की लड़ाइयों में वाशिंग्टन द्वारा प्रयुक्त दूरबीन और उसका खोल।

को प्रधान सेनापति बनाने का प्रस्ताव रखा। एडम्स ने उस घटना का विवरण अपनी डायरी में इस प्रकार लिखा है—'यह प्रस्ताव सुनते ही वाशिंग्टन बगल के दरवाजे से चुपचाप बाहर खिसक गये, ताकि आलोचक उनके बारे में खुलकर अपनी राय जाहिर कर सकें।'

कई दिन बाद प्रस्ताव पर मत-ग्रहण हुआ और वाशिंग्टन को प्रथम अमरीकी सेना के प्रधान सेनापति (कमांडर-इन चीफ) नियुक्त किया गया। उस अवसर पर वाशिंग्टन ने अपने संक्षिप्त भाषण में आदर्शों और स्वतंत्रता सरीखे सिद्धांतों की दुहाई देने के बजाय अपने दिवंगत भाई को स्मरण किया और कहा—'मैं यह संमान लारेंस के नाम पर स्वीकार करता हूं। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि यह संमान मुझे किसी राजा ने नहीं, वरन स्वतंत्र जनता ने प्रदान किया है।' उनके भाषण का अंतिम अंश इस प्रकार था—

'मैं प्रार्थना करता हूं कि इस सदन में उपस्थित प्रत्येक सदस्य मेरी इस घोषणा को याद रखे कि मैं पूरी ईमानदारी के साथ ऐसा महसूस करता हूं कि मैं इस पद के योग्य नहीं हूं। मगर मैं इस महान लक्ष्य की सिद्धि के लिए अपनी समूची शक्ति का उपयोग करने की प्रतिज्ञा करता हूं।'

वाशिंग्टन ने कुछ भी वेतन लेने से इन्कार कर दिया और कहा कि अपने पारिवारिक सुख और शांति को छोड़कर यह कठिन जिम्मेवारी मैंने वेतन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाशिंगटन प्रथम बार राष्ट्रपति-पद ग्रहण करने के लिए नदी पार करते हुए।

खातिर नहीं कबूल की है। लेकिन मुझे मेरी सेना का पूरा खर्च दिया जाये। इसके तुरंत बाद उन्होंने अपनी पत्नी मार्था को लिखा :

'मैं तुम्हें बहुत ही गंभीरतापूर्वक विश्वास दिलाता हूं। तुम मुझ पर विश्वास रखना कि इस पद को प्राप्त करने की चेष्टा करना तो दूर रहा, मैंने तो इसे टालने का भरसक प्रयत्न किया। इसके पीछे यह कारण तो था ही कि मैं तुमसे और परिवार से दूर नहीं रहना चाहता था; साथ ही यह कारण भी था कि मुझे इस बात का पूरा बोध है कि यह इतनी बड़ी जिम्मेवारी है, जिसे पूरा करने का सामर्थ्य मुझमें नहीं है। ...... इस जिम्मेवारी को उठाने से इन्कार करना मेरे बूते से बाहर था; क्योंकि अगर मैं वैसा करता, तो मेरी इतनी कटु आलोचना होती कि उससे मेरा अपमान ही न होता, बल्कि मेरे मित्रों को कष्ट भी होता।'

अमरीकी स्वप्न का उदय

२३ जून को वाशिंगटन ने प्रथम अमरीकी प्रधान सेनापति के पद का कार्यभार बोस्टन में ग्रहण किया। सबसे पहले उन्होंने अपनी सेना के बारे में पूरी और सही जानकारी मांगी। उन्हें जबर्दस्त आघात लगा। कागजों में सैनिकों की संख्या २० हजार दर्ज थी; मगर गिनने पर कुल १४ हजार सैनिक निकले। बारूद के पीपे तो ४८५ के बजाय केवल ३८ थे। जनरल वाशिंग्टन उस समय ४३ बरस के थे। अपने विस्फोटक स्वभाव के बावजूद वे उस क्षण मौन रह गये। जनरल जान सलीवन ने उस समय का आंखों देखा हाल इन शब्दों में लिखा है–'उन्हें इस घटना से इतना गहरा सदमा पहुंचा कि वे आधे घंटे तक एकदम खामोश रहे।'

इस सेना के १४,००० सैनिक भीड़-जैसे अनुशासनहीन थे और सेनाधिकारी वरिष्ठता तथा पदों के लिए होड़ में व्यस्त थे। एक राज्य के सैनिक और अफसर दूसरे राज्य के सैनिकों और अफसरों को फूटी आंख भी नहीं सुहाते थे। मेरीलैंड का गवर्नर अपनी सेना को अपने राज्य में रखना चाहता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और वर्जीनिया से [illegible] मित्र जार्ज मेसन लिख रहे थे कि यदि वर्जीनिया ने ३,००० सैनिकों का भार उठाया, तो उसका दिवाला निकल जायेगा। उधर अमरीकी कांग्रेस सेना के वरिष्ठ अधिकारियों की नियुक्ति स्वयं करना चाहती थी और राज्यों की विधानसभाएं कर्नल तक कनिष्ठ अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार अपने पास रखना चाहती थीं।

वाशिंगटन ने तीन वर्ष के लिए ५०,००० सैनिक भरती करने की अनुमति मांगी; मगर कांग्रेस ने इन्कार कर दिया। अमरीकी स्वतंत्रता के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने वालों में २६ व्यक्ति उम्र में वाशिंगटन से छोटे थे; लेकिन उनमें से एक ने भी अपनी सेवाएं सेना को नहीं दीं। इसी का परिणाम यह हुआ कि १७७६ की गरमियों में जब मुठभेड़ हुई, तो ३२,००० प्रशिक्षित और सुसज्जित ब्रिटिश सैनिकों का सामना करने के लिए जनरल वाशिंगटन के पास केवल ९,००० सैनिक थे।

संघर्ष का आरंभ किप्स खाड़ी की पराजय से हुआ, जहां ४,००० अमरीकी सैनिक महज १०० ब्रिटिश सैनिकों को पीठ दिखाकर खाइयों से भाग खड़े हुए। वाशिंगटन हताश हो गये। उन्होंने अपना टोप जमीन पर फेंक दिया और वेदना से कराह उठे—'ओह !......क्या मुझे इन्हीं लोगों के भरोसे अमरीका की स्वतंत्रता की रक्षा करनी होगी ?' फिर वे उठे और अफसरों व सैनिकों पर अंधाधुंध बेंत बरसाने लगे। पर वे सब वाशिंगटन को रणक्षेत्र में अकेला छोड़कर [illegible] पशुओं की तरह आपाधापी में [illegible] खड़े हुए। वाशिंगटन ब्रिटिश अग्रिम [illegible] से केवल कुछ सौ गज की दूरी पर खड़े [illegible]

क्रोध और आवेश में भरे वाशिंगटन [illegible] घोड़े पर डटे रहे। ब्रिटिश सैनिकों ने [illegible] देखा कि एक अमरीकी सेनापति अकेला [illegible] रणक्षेत्र में खड़ा है, तो वे घबरा गये [illegible] उन्हें लगा कि वे किसी जाल में फंस गये [illegible] इतने में ही वाशिंगटन के एक सैनिक सहा[illegible] ने उनके घोड़े की लगाम पकड़ी और [illegible] जबरन वापस मोड़ दिया।

लांग द्वीप के युद्ध में वाशिंगटन अ[illegible] सेना के पीछे दोनों हाथों में पिस्तौल ले[illegible] डट गये और सौगंध खाकर बोले कि जो [illegible] अमरीकी सैनिक रणक्षेत्र से भागेगा, उसे [illegible] गोली मार दूंगा। प्रिंस्टन के युद्ध के दौरा[illegible] उन्होंने मैसाचुसेट्स रेजिमेंट के कप्तान [illegible] आदेश दिया कि ब्रिटिश सैनिकों के पहुंचने [illegible] पहले पुल को उड़ा दिया जाये। कप्तान [illegible] घबराकर पूछा कि क्या हमारे पास इस का[illegible] के लिए पर्याप्त सैनिक हैं ? वाशिंगटन [illegible] तत्काल जबाव दिया—'टुकड़े करने के लि[illegible] काफी हैं।' कप्तान थर्रा गया और उस[illegible] तत्काल आदेश का पालन किया।

वाशिंगटन व्यक्तिगत आलोचनाओं [illegible] विचलित नहीं हुआ करते थे और राष्ट्र [illegible] आवश्यकता को व्यक्तिगत मान-अपमा[illegible] से ऊपर रखते थे। एक बार उन्होंने अ[illegible] एक योग्य सहयोगी जोसेफ रीड को मेजर [illegible] जनरल ली का लिखा एक पत्र भूल से खो[illegible] लिया। उसमें ली ने रीड द्वारा लिखित ए[illegible]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाशिंग्टन की आलोचना से भरे एक पत्र का उत्तर दिया था। वाशिंग्टन ने पत्र रीड को देकर खेद प्रकट करते हुए कहा कि मैंने भूल से इसे खोल लिया था। रीड बहुत लज्जित हुआ और उसने पद से त्यागपत्र दे दिया। मगर वाशिंग्टन ने त्यागपत्र स्वीकार करने के बजाय उसे घुड़सवार सेना का जनरल बना दिया। रीड पर इसका और भी गहरा प्रभाव पड़ा और उसने पत्र लिखकर वाशिंग्टन से क्षमा मांगी।

हना करते रहे, उसी तरह आपने उनकी आलोचना मेरे सामने नहीं की। ...... मैं समझता हूं कि जहां आपको नजर आया हो कि मैं गलती पर हूं, वहां मुझे आपकी सलाह पाने का अधिकार था।'

लोकतंत्र की कसौटी पर

सन १७७६ में कांग्रेस अंग्रेजी सेनाओं से घबराकर फिलाडेल्फिया से भाग गयी और उसने अपना समूचा अधिकार जार्ज वाशिंग्टन को सौंप दिया; परिणामतः वे अधि-

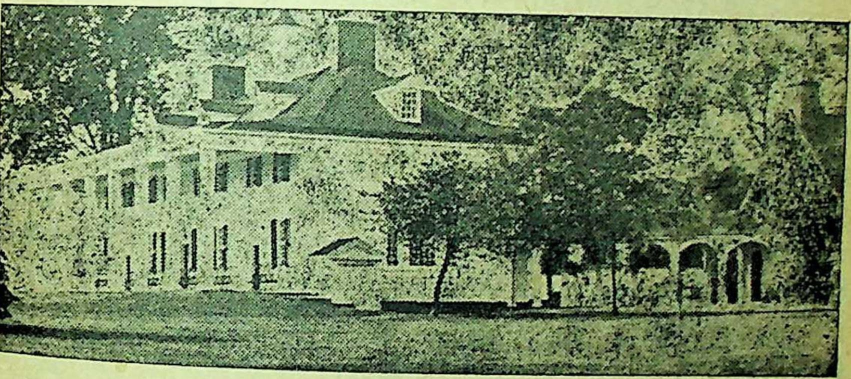

पोटोमैक के तट पर माउंट वरनॉन पर जार्ज और मार्था वाशिंग्टन का घर।

वाशिंग्टन ने उस पत्र का जो उत्तर दिया, वह उनके लोकतंत्रीय स्वभाव का सबसे बड़ा प्रमाण है। उन्होंने लिखा—'यह सही है कि मुझे उस पत्र से क्लेश हुआ था।...... लेकिन मेरे क्लेश का कारण यह नहीं था कि उसमें प्रकट किये गये विचारों से मुझे अपने संकल्प में कोई कमी दिखाई देने लगी। बल्कि इसका कारण यह था कि जिस प्रकार आप मेरे सामने हमेशा मेरे निर्णयों की सरा-

नायक हो गये। यह शक्ति आठ सप्ताह तक उनके पास रही। इस दौरान उन्होंने ब्रिटिश प्रधान सेनापति लार्ड कार्नवैलिस के छक्के छुड़ा दिये और न्यूजर्सी राज्य का दो तिहाई भाग अंग्रेजी सेना के हाथों से मुक्त करा लिया।

आठ सप्ताह बाद वाशिंग्टन ने वे सब अधिकार पुनः कांग्रेस को सौंप दिये और स्वयं फिर से उसके आज्ञाकारी सेवक बन गये;

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन १८८७ में संविधान-परिषद् में भाषण करते हुए वाशिंग्टन।

हालांकि वे अच्छी तरह जानते थे कि कांग्रेस युद्ध चलाने के मामले में निहायत असमर्थ है तथा उसके सदस्य एक दूसरे के विरुद्ध षड्यंत्र रचते रहते हैं। सत्ता का यह स्वेच्छा-पूर्ण समर्पण वाशिंग्टन की महानता का सबसे बड़ा प्रमाण है। इतिहास में ऐसे अनेक सेनापति हुए हैं, जिन्हें तानाशाही अधिक कार्यक्षम प्रतीत हुई और जिन्होंने उसे शासन का सिद्धांत बना लिया।

मगर वाशिंग्टन की महानता को पहचानने में कांग्रेस असमर्थ रही। उसने उनकी सलाह लिये बिना पांच सेनाधिकारियों को मेजर-जनरल का और १८ को ब्रिगेडियर का पद प्रदान कर दिया। इस पर सेना में रोष फैल गया तथा अनेक सेनाधिकारियों ने इसके विरोध में त्यागपत्र दे दिये। यह सारा संकट अकेले वाशिंग्टन को झेलना पड़ा।

उन्होंने इस अवसर पर राबर्ट मारिस को लिखा–'कांग्रेस ने मुझे सारी सत्ता सौंपकर जो विश्वास प्रकट किया है, उसका अर्थ मेरी दृष्टि में यह नहीं है कि मैं समस्त रिक दायित्वों से मुक्त हो जाऊं। मेरे दि में यह बात हमेशा रहेगी कि जिस प्र हमने अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के अंतिम उपाय के रूप में तलवार का स लिया है, उसी प्रकार उस स्वतंत्र दृढ़तापूर्वक स्थापित हो जाने पर हमें पहले उस तलवार को एक ओर फेंक होगा।'

अंततः विजय की बेला आ पहुंची लार्ड कार्नवैलिस की सेना ने जनरल वाशिंग्टन के सामने समर्पण कर दि वाशिंग्टन घोड़े पर सवार होकर दि सैनिक शिबिर के बाहर जा पहुंचे कार्नवैलिस की ओर से आने वाले द के दस्तावेजों की प्रतीक्षा करने लगे। द वेज आने पर उन्होंने उस पर लिखा- टाउन के सामने खाइयों में हस्ताक्षर १९ अक्तूबर १७८१।'

उसी शाम ब्रिटिश सेना को शस्त्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

र्पण करना था। कार्नवैलिस ने कहला भेजा कि मैं बीमार हूं और अपने उपप्रधान-सेनापति को शस्त्र-समर्पण समारोह में ब्रिटिश सेना की अगुआई के लिए भेज दिया। यह देखकर वाशिंग्टन स्वयं पीछे हट गये और उन्होंने अपने उपप्रधान-सेनापति से कहा कि आप ही इनका शस्त्र-समर्पण स्वीकार कीजिये।

समर्पण की रस्म के बाद वे पराजित सेना के प्रति उदारता की प्रतिमूर्ति बन गये। 'उन्होंने कार्नवैलिस और उनके सेनाधिकारियों को एक भोज दिया। इस भोज में रोशेंबो ने फ्रांस के सम्राट के स्वास्थ्य की कामना की। इस पर कार्नवैलिस ने भी अपना गिलास उठाया और महज इतना कहा—'सम्राट् के स्वास्थ्य के लिए'। वाशिंग्टन ने अपने हाथ का गिलास ऊंचा करके कार्नवैलिस के वाक्य को पूरा किया—'इंग्लैंड के सम्राट् के स्वास्थ्य के लिए। अपने सम्राट् को यदि आप इंग्लैंड तक ही सीमित रखें, तो मैं उनके स्वास्थ्य के लिए पूरा पीपा पी जाऊंगा।'

राजगद्दी को ठोकर

स्वतंत्रता-संग्राम की समाप्ति के बाद जार्ज वाशिंग्टन दो दिन माउंट वरनॉन में परिवार के पास रहकर तीसरे दिन फिलाडेल्फिया लौट गये। युद्ध समाप्त हो चुका था, अतः कांग्रेस सेना को भंग करना चाहती थी। मगर वाशिंग्टन को मालूम था कि शांति-संधि के लिए यह आवश्यक है कि अमरीकी राजनीतिज्ञों की पीठ पर अमरीकी सेना का बल मौजूद हो। उधर कांग्रेस सेना के लिए धन जुटाने से कतरा रही थी। सैनिकों के खाने की भी पूरी व्यवस्था न थी।

सेना में विद्रोह के लक्षण प्रकट होने लगे। उच्च सेनाधिकारियों ने वाशिंग्टन के पास एक स्मरणपत्र भेजा। इसमें कहा गया था कि इस देश में विवेकपूर्ण शासन की स्थापना के लिए यह आवश्यक है कि यहां राजतंत्र की स्थापना की जाये और आप राजा का पद ग्रहण करने को राजी हों।

इस स्मरणपत्र ने वाशिंग्टन को हिला दिया। उत्तर में उन्होंने सेना को लिखा :

'मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि युद्ध के दौरान हुई किसी भी घटना ने मुझे इतना अधिक कष्ट नहीं पहुंचाया, जितना कि अब यह जानकर पहुंचा है कि हमारी सेना में इस तरह के विचार विद्यमान हैं। ...... मैं

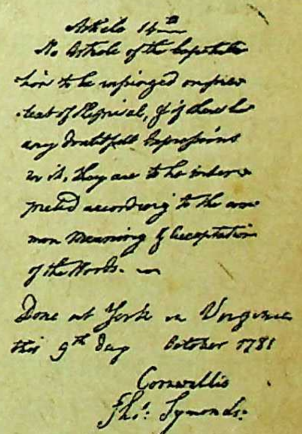
Article 14th
No Article of the Capitulation
to be infringed on pretext of Reprisal, & if there be
any doubtfull Expressions
in it, they are to be interpreted according to the common Meaning & acceptation
of the Words. —
Done at York in Virginia
this 9th Day October 1781
Cornwallis
Tho.s Symonds

लार्ड कार्नवैलिस की सेना के हथियार डालने का शर्तनामा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाशिंग्टन (बैठे हुए) के प्रथम मंत्रिमंडल के सदस्य (बायें से) विदेश-मंत्री जेफरसन, एटर्नी जनरल रैंडाल्फ (पीठ किये), वित्त-मंत्री हैमिल्टन और युद्ध-मंत्री नॉक्स

आपके सामने यह बात स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि यदि आपके मन में अपने देश के लिए तनिक भी संमान है, अपने अथवा आने वाली पीढ़ियों के बारे में तनिक भी चिंता है, अथवा मेरे लिए तनिक भी आदर है, तो आप अपने दिमाग से इस तरह के विचार पूरी तरह निकाल दें।......'

कांग्रेस ने सेनाधिकारियों को वचन दिया था कि सैनिकों का बकाया वेतन चुकाया जायेगा तथा युद्ध की समाप्ति पर उन्हें पांच वर्ष तक पूरा वेतन अथवा आजीवन आधे वेतन के बराबर निवृत्ति-वेतन मिला करेगा। लेकिन वह अपने वादे से मुकर गयी। परिणाम यह हुआ कि सैनिक और सेनाधिकारी अपनी वर्दियां बेचने लगे और बारूद का इस्तेमाल शिकार के लिए करने लगे। इतना ही नहीं, निराश सैनिक और सेनाधिकारी विस्फोटक मनोदशा में पहुंच गये। उन्होंने एक इश्तहार छपवाकर बांटा। उसका शीर्षक था—'सैनिको, क्या इस क्रांति का मोल आप अकेले चुकाने को तैयार हैं?' चंद दिन बाद ही एक और इश्तहार बांटा गया, जिसमें कहा गया था कि जब तक सेना को पूरा न्याय नहीं मिलेगा, तब तक सैनिक हथियार नहीं डालेंगे।

दो दिन बाद वाशिंग्टन ने सेनाधिकारियों की एक बैठक बुलायी। १२ मार्च १७८३ को जब ये लोग टैंपल नामक भवन में इकट्ठे हुए, उनके नथुने रोष से फड़क रहे थे। यदि उस घड़ी वाशिंग्टन जरा भी संतुलन खो बैठते, तो अमरीका में खून की नदियां बह जातीं। यदि वैसा होता तो यह कोई अनहोनी बात तो न होती। संसार की प्रायः प्रत्येक क्रांति ने इसी मार्ग का अनु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरण किया है—सेना की तलवारों की नोक पर अधिनायकतंत्र की स्थापना।

लेकिन वाशिंग्टन को वह स्थिति मंजूर न थी। वे क्रामवेल नहीं बनना चाहते थे। वे बोलने खड़े हुए और उन्होंने सेना से विवेक बनाये रखने की अपील की। अंत में उन्होंने जेब से वर्जीनिया के कांग्रेस-सदस्य जोसेफ जोन्स का पत्र निकाला। जब वे उसे नहीं पढ़ पाये, तो उन्होंने अपनी जेब से चश्मा निकालते हुए कहा—'साथियो, आप मुझे क्षमा करें। मैं आपकी सेवा करते बूढ़ा हो गया हूं और अब लगता है कि अंधा भी हो जाऊंगा।'

ये शब्द वातावरण में जादू की तरह छा गये और अनेक सेनाधिकारी बिलखकर रो उठे। हिम पिघल गया और सेना विद्रोह के कगार से पीछे हट गयी। मगर वाशिंग्टन ने सेना के साथ छल नहीं किया। उन्होंने कांग्रेस के नाम इस आशय का पत्र लिखा कि यदि हमारे सैनिकों को अपना शेष जीवन गरीबी में गुजारना पड़ा, तो मैं समझ जाऊंगा कि कृतघ्नता क्या होती है और उसकी कड़वाहट मेरे दिल में हमेशा बनी रहेगी।

एक महीने के भीतर कांग्रेस ने प्रत्येक सैनिक और सेनाधिकारी को पांच वर्ष का पूरा वेतन चुकाने का निश्चय कर लिया। इस प्रकार अमरीकी क्रांति सैनिक तानाशाही बनने के अभिशाप से बच गयी।

सेनापति-पद से त्यागपत्र

अब जार्ज वाशिंग्टन ने सेनापति-पद से त्यागपत्र दे दिया। उन्होंने अपने त्यागपत्र में लिखा—'हमें एक संघीय सरकार के नीचे राज्यों का एक अविघटनीय संघ स्थापित करना चाहिये।' उनका यह पत्र तेरहों राज्यों के गवर्नरों और उनकी विधानसभाओं के पास भेजा गया।

वाशिंग्टन को अमरीकी राष्ट्र के अपने स्वप्न को मूर्तिमान करने में पूरे चार साल और लगे। तब अंततः फिलाडेल्फिया में

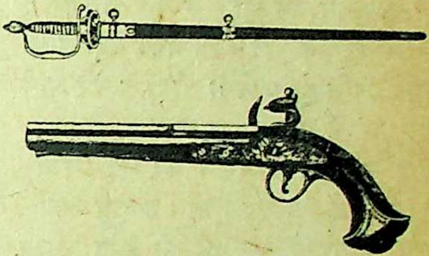

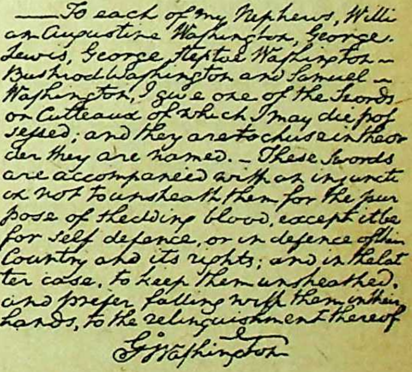

—To each of my Nephews, William Augustine Washington, George Lewis, George Steptoe Washington—Bushrod Washington and Samuel Washington, I give one of the Swords or Cutteaux of which I may die possessed; and they are to chuse in the order they are named.—These Swords are accompanied with an injunction not to unsheath them for the purpose of shedding blood, except it be for self defence, or in defence of their Country and its rights; and in the latter case, to keep them unsheathed, and prefer falling with them in their hands, to the relinquishment thereof

G° Washington

वाशिंग्टन के निजी हथियार व वसीयत। ये शस्त्र अपने भतीजों को देते हुए उन्होंने लिखा था कि आत्मरक्षा या देश के गौरव की रक्षा के प्रसंगों के सिवा इनसे रक्तपात न किया जाये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संविधान-सभा की बैठक बुलायी गयी और उसकी अध्यक्षता संभालने के लिए पुनः जार्ज वाशिंग्टन् को ही आमंत्रित किया गया। संविधान बना और अधिकांश अमरीकियों ने उस पर अपनी सहमति इसलिए प्रकट की कि वाशिंग्टन उसके पक्ष में थे और उन्हें विश्वास था कि नयी संघीय सरकार का मुखिया वाशिंग्टन को ही बनाया जायेगा।

राष्ट्रपति-पद पर

संविधान बन जाने के बाद वाशिंग्टन माउंट वरनॉन लौट गये। मगर वहां उनके नाम देश के हर कोने से लोगों के पत्र आने शुरू हुए कि आप संघीय सरकार का कार्य-भार संभालें। वाशिंग्टन को यह विचार बहुत भयंकर प्रतीत हुआ। उन्होंने कहा–'इस विचार ने मेरे मन को बेहद उदास कर दिया है।' वे उस समय ५० बरस के थे। वे महसूस करते थे कि आठ बरस के कठोर परिश्रम से उन्हें काफी संमान मिल चुका है। वे राजनीति के कलुषित वातावरण से अलग ही रहना चाहते थे। यों भी निजी देखरेख के अभाव में उनकी जायदाद और खेती बुरी तरह तबाह हो रही थी; उनका पारिवारिक जीवन भी ठीक नहीं चल पा रहा था। वे अब अपना घर संभालना चाहते थे।

मगर नियति कुछ और ही थी। निर्वाचक-मंडल ने एकमत से जार्ज वाशिंग्टन को अमरीका का प्रथम राष्ट्रपति चुन लिया। जब यह समाचार वाशिंग्टन को दिया गया, उन्होंने अपने मित्र जान नॉक्स को लिखा–'मैं सरकार की कुर्सी संभालने के लिए ज... समय ऐसा महसूस कर रहा हूं, जैसे मैंने ... अपराध किया हो और मुझे फांसी के त... पर खड़ा किया जा रहा हो।'

राष्ट्रपति का पद ग्रहण करने के ... उन्होंने सबसे पहले सर्वोच्च न्यायालय ... न्यायाधीशों की नियुक्ति की तथा न्यूयार्क ... प्रख्यात विधिशास्त्री जान जे को प्र... न्यायाधीश बनाया। उन्होंने अपने मंत्रि-मंडल में राष्ट्र की सर्वोत्तम प्रतिभा को ए... किया। उसमें जहां टामस जेफरसन विदे... मंत्री थे, वहीं उनके प्रबल शत्रु अलेक्जांडर हैमिल्टन वित्त-मंत्री थे। इसी समय फ्रांस ... राज्यक्रांति हो गयी तथा वहां के सम्र... और सम्राज्ञी को मौत के घाट उतार दि... गया। इसके फलस्वरूप ब्रिटेन और फ्रां... के बीच तनाव पैदा हो गया।

वाशिंग्टन यूरोप के इस झगड़े में अ... रीका को तटस्थ रखना चाहते थे। लेकिन एक ओर हैमिल्टन उन पर ब्रिटेन का प... लेने के लिए दबाव डाल रहे थे; दूस... ओर जेफरसन फ्रांस के पक्ष में थे। जेफरसन के साथियों ने वाशिंग्टन पर बुरी त... कीचड़ उछालनी शुरू की। इस पर वाशिं... ग्टन इतने अधिक उत्तेजित हो गये ... उन्होंने मंत्रिमंडल की एक बैठक में आवे... पूर्वक गर्जना की–'मैं ईश्वर की शपथ खा... कहता हूं कि मैं राष्ट्रपति-पद पर रहने ... बजाय कब्र में जाना पसंद करूंगा। मैं संसार का शहंशाह होने के बजाय अपने खेत ... शांतिपूर्वक रहना चाहूंगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेकिन वाशिंग्टन ने हिम्मत नहीं हारी और अपने पद की जिम्मेवारियों को पूरी तरह निबाहा एवं अमरीकी राष्ट्र को आकार प्रदान किया। राष्ट्रपति-पद की अवधि के समाप्त होने पर जब उन्हें दुबारा राष्ट्रपति चुना गया, तो वे बहुत व्यथित हुए। लेकिन अपने साथियों के आग्रह पर उन्होंने दूसरा कार्यकाल भी पूरा किया। राष्ट्रपति-पद के पूरे कार्यकाल में उन्होंने कोई वेतन नहीं लिया, यद्यपि विधान में राष्ट्रपति के लिए २५,००० डालर वार्षिक वेतन की व्यवस्था थी। परिणामतः उन्हें अपनी जायदाद में से ६०,००० डालर की भूमि बेचनी पड़ी।

सारा राष्ट्र यह अनुभव कर रहा था कि वाशिंग्टन के सिवा कोई दूसरा व्यक्ति राष्ट्र की एकता बनाये नहीं रख सकता। जेफरसन-जैसे लोगों ने भी, जो वाशिंग्टन के कट्टर विरोधी थे, उनसे गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की कि आप तीसरी बार भी राष्ट्रपति बनना स्वीकार कर लें। मगर वाशिंग्टन ने अपना विदाई-भाषण तक तैयार कर डाला था। उन्होंने उस प्रस्ताव को एकदम ठुकरा दिया। परिणामतः उपराष्ट्रपति जान एडम्स और जेफरसन के बीच सत्ता के लिए कठोर संघर्ष हुआ, जिसमें एडम्स की विजय हुई।

अश्रुपूर्ण विदाई

जान एडम्स के राष्ट्रपति-पद ग्रहण करने की रस्म के बाद जार्ज वाशिंग्टन राष्ट्रपति-भवन लौटे और अपना सामान करीने से बांधकर माउंट वरनॉन लौटने से पहले फ्रांसिस होटल गये, जहां नये राष्ट्रपति जान एडम्स ठहरे हुए थे। अब वे एक साधारण अमरीकी नागरिक थे—न जनरल, न राष्ट्रपति। अचानक उनके पीछे सारी सड़क पर जनता उमड़ पड़ी। वह एक अनुपम दृश्य था। आगे-आगे जार्ज वाशिंग्टन बिना किसी अंगरक्षक के खामोश चल रहे थे और पीछे-पीछे विशाल भीड़ पूरी खामोशी के साथ सरकती जा रही थी।

होटल के द्वार पर पहुंचकर वाशिंग्टन पीछे मुड़े और उन्होंने भीड़ पर दृष्टि डाली। उनके गालों पर अश्रु अविराम बह रहे थे। इससे पहले किसी ने उन्हें कभी इतना विचलित नहीं देखा था। वे देर तक वैसे ही खामोश खड़े रहे और फिर मुड़कर भीतर चले गये। द्वारपाल ने दरवाजा बंद कर दिया और सारी भीड़ एक साथ सुबक पड़ी। वह बेसाख्ता आहें भर रही थी और उसमें हर व्यक्ति का चेहरा आंसुओं से तर था। ये आंसू राजनीति के नहीं, स्नेह और कृतज्ञता के थे; ये आंसू अपने राष्ट्रपति के प्रति मूक जनता के आदर के प्रतीक थे। आज भी जार्ज वाशिंग्टन अमरीकी जनता के हृदय में आसीन हैं।

[टिप्पणी : अपने देहावसान (१४ दिसंबर १७९९) तक वाशिंग्टन माउंट वरनॉन पर रहे और अपनी खेती व घर की देखभाल के साथ साथ समय-समय पर अमरीकी राष्ट्रपतियों तथा राजनेताओं को सलाह भी देते रहे। वे उन सबके लिए पितातुल्य थे—हां, उनके लिए भी जो जीवन-भर उनका सख्त विरोध करते रहे थे। —अनुवादक

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

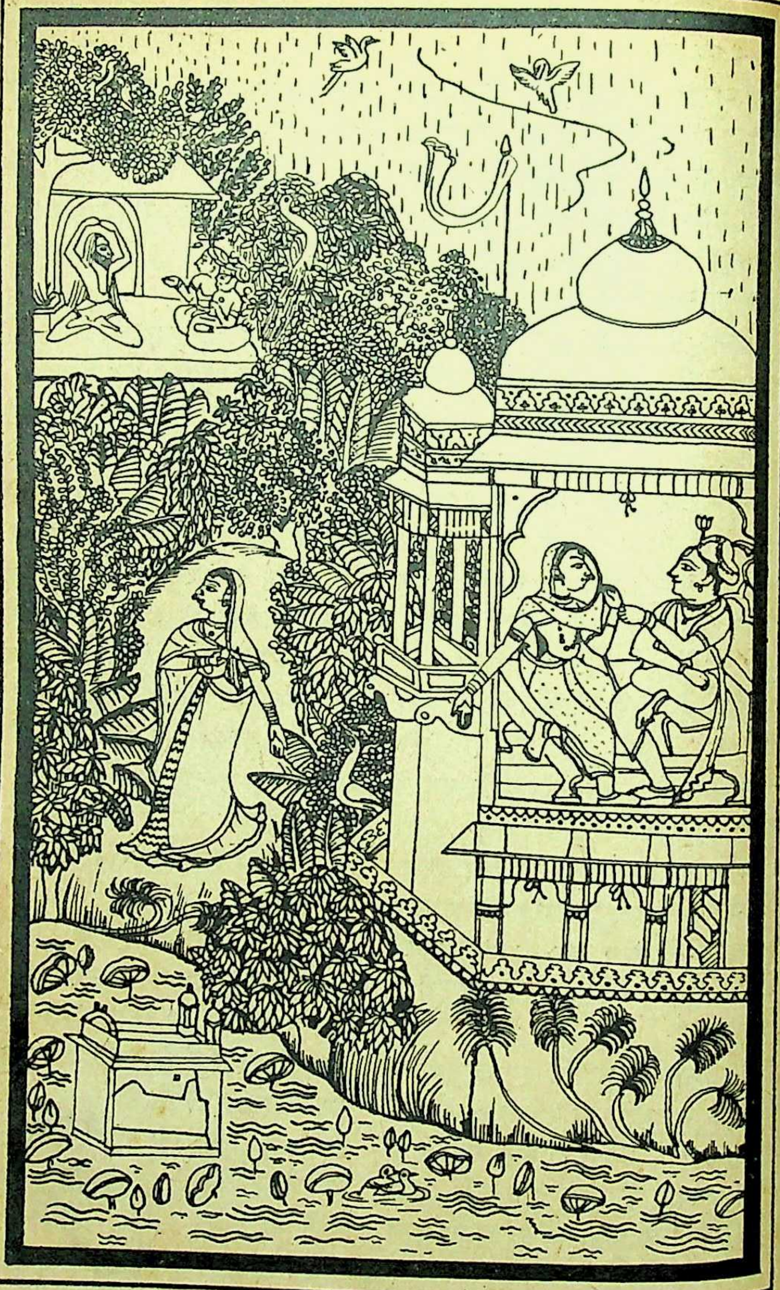

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

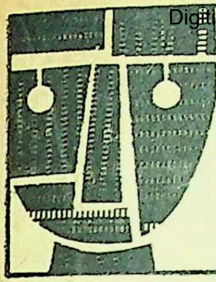

• मित्र

कुछ इधर से कुछ उधर से

मई के अंक में जो प्रश्न पूछे गये थे, उनकी वजह से मुझे कुछ तीव्र प्रतिक्रियाओं का सामना करना पड़ा। मसलन, पापड़ बेलने जैसा घटिया काम अब महिलाएं नहीं करतीं और जिस महिला ने पापड़ नहीं बेले, मैंने उसे कामचोर की संज्ञा कैसे दे दी; रामस्वामी कौन-से देश के वासी हैं, क्योंकि हिंदुस्तान में इस तरह का आयकर का हिसाब नहीं होता; आजकल किसान इतने होशियार हो गये हैं कि वे बैंक से उधार लेकर पैसा वापस ही नहीं करते। मुझे यही कहना है कि ये सवाल किताबी हैं।

पहला सवाल बीजगणित की सहायता से बड़ी आसानी से हल किया जा सकता

← आषाढ मास (जून-जुलाई)। बरसात की झड़ी लग गयी है। बिजली ऐसे कौंधती है, मानो सर्प घने आसमान को पार करता हो। तरुण पत्तियां बरसाती बूंदों के भार से कंपकंपाती हैं और आकाश में पक्षी भी जोड़े से उड़ते हैं। यह महीना है प्यार का। 'ऐसे समय तुम्हें मुझसे अलग क्यों किया जाये?' कृष्ण से राधा निवेदन करती है।

अनुकृति : चरन शर्मा

है। पर जरा प्रश्न को एक बार गौर से पढ़ें तो एक बात एकदम साफ हो जाती है कि रमोला जब विमला के साथ काम करती है, तो पापड़ बेलने में ६ दिन लगते हैं और जब कमला के साथ तो तीन दिन। इस बात की संभावना अधिक है कि रमोला कामचोर (या पापड़ न बेलने में विश्वास रखने वाली) महिला है। इसका मतलब हुआ कि विमला ६ दिन और कमला ३ दिन में उस काम को पूरा कर सकती हैं, विमला और कमला एक दिन में $\frac{१}{६} + \frac{१}{३} = \frac{१}{२}$ (आधा) काम कर सकती हैं। पूरा काम करने में दो दिन लगेंगे, प्रश्न में भी यही बात कही गयी है। इसलिए हमारा अंदाजा सही था।

अब जरा रामस्वामी के आयकर का हिसाब भी जान लें। मान लीजिये रामस्वामी की आय x है, तो उनकी कर-योग्य आय हुई = $x - (५०० + ४)$, जिस पर टैक्स लगा १९ प्रतिशत जो कि आय का १० प्रतिशत है। सूत्र हुआ :

$$(x \; ५०४)\,\frac{x\;१९}{१००} = \frac{१०x}{१००}$$

$$x = १०६४$$

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तीसरे प्रश्न का जवाब भी बड़ी आसानी से गणितीय सूत्रों की सहायता से निकाला जा सकता है। आइये, जरा सरल तरीके से निकालने का प्रयास करें। चक्रवृद्धि ब्याज हर छमाही बाद मूलधन बन जायेगा।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छमाही	मूलधन रु. पैसे	सूद रु. पैसे
पहली	१०० = ००	३ = ००
दूसरी	१०३ = ००	३ = ०९
तीसरी	१०६ = ०९	३ = १८
चौथी	१०९ = २७	३ = २८
	कुल सूद	१२ = ५५

आइये, देखें कि अब आप इन प्रश्नों के उत्तर सही रूप से दे सकते हैं कि नहीं?

१. एक टी.वी.-विक्रेता के पास एक ग्राहक टी.वी. खरीदने गया। उस टी.वी. की कीमत २००० = २५ रु. थी। उसने दुकानदार को एक चेक २४०० रु. का दिया और दुकानदार ने उसे ३९९ = ७५ रोकड़ देकर टी.वी. दे दिया। उसके बाद दुकानदार ने वह चेक अपने दोस्त को दे दिया। बाद में पता चला कि वह चेक जाली था। दुकानदार ने चेक के बदले अपने दोस्त को अपनी लागत (१८००=७५) पर टी.वी. सेट दे दिया और बाकी पैसा बाद में देने का वादा किया। क्या आप बता सकते हैं कि दुकानदार को कुल कितना नुक्सान हुआ?

२. मध्य प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में आज भी ऐसे लोग मिल जायेंगे, जिन्होंने रुपये-पैसों की सूरत भी नहीं देखी। सदियों से वे अपना हिसाब-किताब अदला-बदली (वस्तु-विनिमय) द्वारा करते आ रहे हैं। दो रूमालों की कीमत तीन कंघों और एक चाकू है; तीन रूमालों, दो चाकुओं और एक कंघी की कीमत पच्चीस नारियल है। तो क्या आप बता सकते हैं कि कंघी, चाकू और रूमाल प्रत्येक के लिए कितने-कितने नारियल देने पड़ेंगे?

३. यह प्रश्न पूछने के पहले मैं आपको एक चुटकला सुना दूं। वैसे तो यह काफी घिसा-पिटा है, परंतु प्रश्न से संबंधित है।

किसी स्कूल का मुआयना करते हुए निरीक्षक महोदय ने एक लड़के से सवाल किया—'यदि पंजाब मेल १२·१५ पर वी. टी. से चलती है, तो बताओ मेरी उम्र क्या होगी?' लड़के ने फौरन जवाब दिया—'४४ साल।' निरीक्षक महोदय खुश हुए और पूछा—'कैसे मालूम हुआ?' लड़के का जवाब था—'मेरा भाई जिसकी उम्र २२ साल है, आधा पागल है।' इस सवाल को पढ़कर मुझे भी पागल मत करार दें।

एक भालू अपनी गुफा से बाहर निकला और दक्षिण की ओर सीधी रेखा में एक मील तक गया। फिर उसने ९०° का एक मोड़ बायीं ओर लिया और एक मील सीधा चला। इस तरह उसने ९०° के दो और बायें मोड़ लिये और एक मील सीधा चलकर अपनी गुफा में वापस आ गया। वहां पहुंचने पर उसका मुख दक्षिण दिशा की ओर था। क्या आप बता सकते हैं कि उस भालू की उम्र (गलती हो गयी) नहीं-नहीं उसका रंग क्या था?

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खाँसी को पछाड़नेवाला चॅम्पियन

Alembic

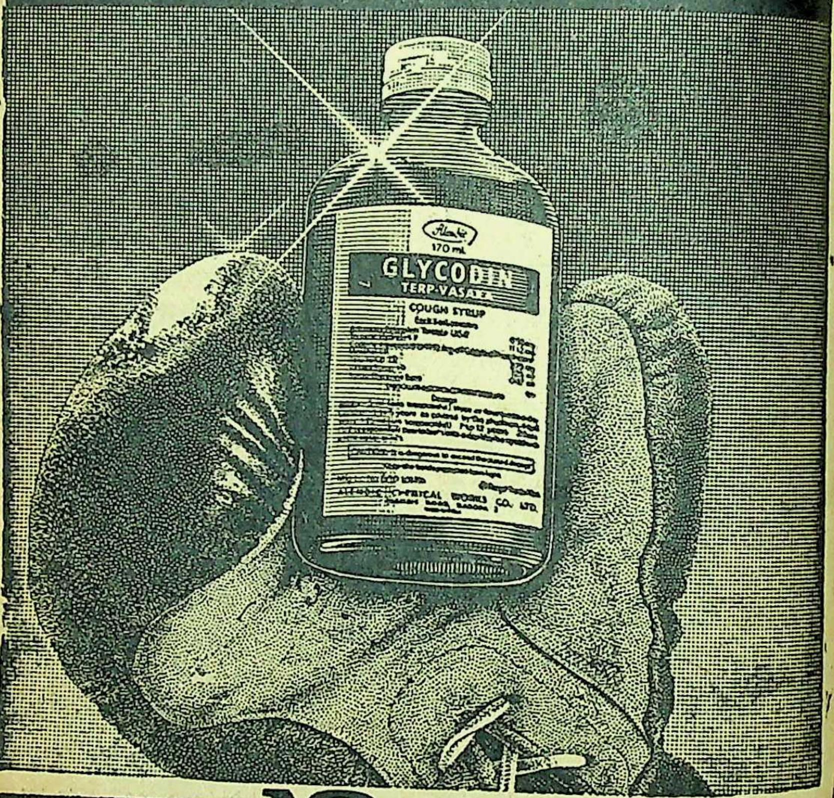

ग्लायकोडिन वर्षों से लाखों लोगों की खाँसी पर पूरा काबू पाने में खाँसी के अन्य इलाजों से ज़्यादा असरकारक और जोरदार साबित हुआ है. □ ग्लायकोडिन दिमाग, गला, छाती और फेफड़ों जैसे खाँसी के चारों मोर्चों पर हमला कर खाँसी को मार भगाता है. ● तेज असर करनेवाला ● मधुर स्वादवाला ● किफ़ायती

ग्लायकोडिन — भारतभर में खाँसी का सबसे अधिक लोकप्रिय और विश्वसनीय इलाज.

everest/617/ACW

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रंथ-लोक

* विश्व-निर्धनता की चुनौती
* आनंददायक शांति का मार्ग
* चंद ताजा गुलाब तेरे नाम
* किरण के कशीदे
* तपस्या के हस्ताक्षर
* लेखनी के स्वप्न

*** विश्व-निर्धनता की चुनौती * गुन्नार मिर्डल; हिंदी संपादन : महेंद्र भारद्वाज; राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली; ४४५ पृष्ठ; ३५ रुपये।**

आधुनिक अर्थशास्त्र के पितामह एडम स्मिथ (१७२३-९०) ने राष्ट्रों की संपत्ति का अध्ययन किया था। गुन्नार मिर्डल ने विकासशील देशों की निर्धनता का अध्ययन किया है। १९७४ में अर्थशास्त्र के नोबेल पुरस्कार से संमानित प्रो. मिर्डल का ग्रंथ 'एशियन ड्रामा' दक्षिण एशिया में रहने वाली एक तिहाई मनुष्य-जाति की गरीबी के मूल में निहित सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक-सांस्कृतिक शक्तियों और प्रवृत्तियों के विवेचन का एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज माना गया है। 'एशियन ड्रामा' के बाद प्रकाशित उनकी पुस्तक 'चैलेंज ऑफ वर्ल्ड पावर्टी' का हिंदी रूपांतर है 'विश्व-निर्धनता की चुनौती'।

इस पुस्तक में मिर्डल ने दक्षिण एशिया के अपने अध्ययन के आधार पर नीति-संबंधी निष्कर्ष निकाले हैं। जैसे 'एशियन ड्रामा' में वैसे ही इसमें भी उन्होंने विकास की समस्याओं के समाधान के लिए अपेक्षित नीति-संबंधी प्रश्नों को सिर्फ आर्थिक तकनीकी पहलुओं, उत्पादन-खपत के आंकड़ों पर जोर देने वाली एकांगी दृष्टि से नहीं, पूरी समाज-व्यवस्था को समेटने की दृष्टि से देखा है। फलतः वे विकासशील निर्धन देशों के आम आदमी को ज्यादा सही रूप में देख पाये हैं। हालांकि विकास-संबंधी साहित्य-गोष्ठियों, परिसंवादों में इस आम आदमी की सबसे अधिक चर्चा होती है; विकास के लाभों से वह प्रायः ही वंचित रह जाता है।

इस छोटी टिप्पणी में प्रो. मिर्डल के निष्कर्षों का विवेचन तो दूर, उन्हें गिना सकने की भी गुंजाइश नहीं है। परंतु कम-विकसित देशों में होने वाले सतही राजनैतिक परिवर्तनों के संबंध में उनका उद्धरण उनकी दृष्टि को समझने में काफी कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

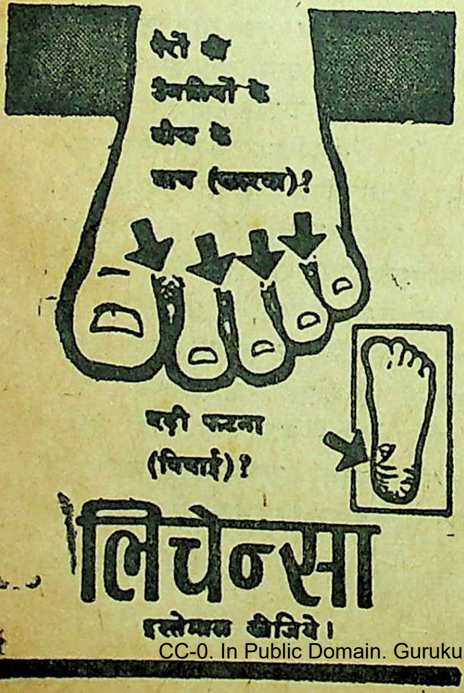

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मददगार होगा। जनता की बढ़ती हुई महत्त्वाकांक्षाओं की क्रांति' की बात आजकल कम-विकसित देशों में अक्सर होती है। इस बोझिल भ्रांति का निराकरण करते हुए उन्होंने लिखा है—'यह बात सच है कि कम-विकसित विश्व में अनेक "क्रांतियां" हो रही हैं। पर कुछ अपवादों को छोड़कर ये सत्ता हथियाने की कार्रवाइयां मात्र हैं, जिनके माध्यम से उच्च वर्ग के लोगों का एक समूह अपने जैसे ही दूसरे सत्तारूढ़ समूह को अपदस्थ कर देता है। इन कार्रवाइयों का अक्सर यह भी परिणाम होता है कि नयी सरकार और अधिक निरंकुश होती है।' [पृष्ठ ३३३]

लेकिन क्या इससे सत्ता-शक्ति पर नियंत्रण करने वाले वर्ग में कोई परिवर्तन आता है? 'दक्षिण एशिया में राजनैतिक गतिशीलता' का विवेचन करते हुए प्रो. मिर्डल ने इस प्रश्न का नकारात्मक उत्तर दिया है। उनके अनुसार, 'दक्षिण एशिया के लोकतांत्रिक तथा निरंकुश प्रणालियों वाले, दोनों ही तरह के देशों में उच्च वर्ग के समूहों और गुटों के हाथ में सत्ता है और इसके साथ ही जन-समुदाय में निष्क्रिय बने रहने की प्रवृत्ति है।' [पृष्ठ ३७०] निरंकुश शासन वाले देशों के रूप में उन्होंने बर्मा का उदाहरण विशेष रूप से दिया है और लिखा है—'सार्वजनिक विचार-विमर्श का अभाव सरकार को उपयोगी जानकारी से वंचित कर सकता है। उदाहरण के लिए, मेरा यह विश्वास है कि बर्मा की सैनिक सरकार को अपनी सामाजिक-आर्थिक नीतियों में क्यों कोई सफलता नहीं मिली, उसका एक महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि सरकार आलोचना से सुरक्षित थी।' [पृष्ठ वही]

प्रो. मिर्डल ने पुस्तक के एक बड़े हिस्से में कम-विकसित देशों के प्रति विकसित देशों के दायित्व का विश्लेषण किया है। उनके अनुसार 'कम-विकसित देशों से अपने संबंधों के बारे में विचार-विमर्श में पश्चिम के विकसित देशों में निष्ठा की कमी और यहां तक कि वंचना का वातावरण मौजूद है।' [पृष्ठ २६७] यह वातावरण जनमत को जागृत करने के द्वारा ही बदला जा सकता है। वस्तुतः इस पुस्तक का प्रयोजन भी यही है।

इस महत्त्वपूर्ण पुस्तक का हिंदी में उपलब्ध होना अपने आपमें एक बड़ी बात है। अनुवाद कमोबेश अच्छा है। यदि अनुवादक अंग्रेजी की वाक्य-रचना के आतंक से थोड़ा अधिक मुक्त हो पाता, तो हिंदी रूपांतर अधिक सजीव होता। 'डिसइंटेरेस्टेड सोशल सायंस' के लिए 'दिलचस्पी से रहित समाजविज्ञान' (पृष्ठ ३९), जैसे प्रयोग खटकने वाले हैं, 'निस्पृह समाजविज्ञान' अधिक अच्छा प्रयोग हो सकता था। इसी तरह से 'इगैलिटेरियन मोटिवेशन' के लिए 'समानतावादी रुझान' (पृष्ठ १०५) कोई अच्छा प्रयोग नहीं है; 'समतावादी प्रयोजन या प्रेरणा' अधिक उपयुक्त हो सकता था। आशा है, 'एशियन ड्रामा' (जिसके हिंदी रूपांतर की घोषणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब पेश है
हाई पावर सर्फ़

सबसे
सफ़ेद धुलाई जो देखने में आई!

नए हाई पावर सर्फ़ में धुलाई की वो अधिक शक्ति है, जिससे कपड़े सचमुच बेहतर धुलते हैं. धुलाई की ऐसी शक्ति आपको किसी दूसरे पाउडर में नहीं मिलेगी. इसीलिए इसका ज़बर्दस्त झाग ज़्यादा देर तक ठहरता है, ज़्यादा गहराई तक सफ़ाई करता है ... ताकि आपके परिवार के कपड़े सबसे सफ़ेद धुलें.

नए हाई पावर सर्फ़ से कपड़े धुलें सबसे सफ़ेद... दिखें सबसे सफ़ेद!

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन. केवल डिब्बों और पुड़ियों में मिलता है. कभी खुला या प्लास्टिक की थैलियों में नहीं मिलता.

लिंटास-SU.191.77 HI

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिल्द पर की गयी है) के अनुवाद में अधिक सावधानी बरती जायेगी। —गणेश मंत्री

०००

*** आनंददायक शांति का मार्ग * दिव्य मां श्री रमादेवी; अनुवादक : डा. उमापतिराय चंदेल; रमाशक्ति-मिशन, शक्तिनगर, कुलशेखर, मंगलोर ५७५००५; ३६४ पृष्ठ; अजिल्द २० रु., सजिल्द २५ रु.।**

प्रस्तुत पुस्तक अंग्रेजी के 'पाथ टु बीएटिफिक पीस' (२ भाग) ग्रंथ का हिंदी अनुवाद है। दिव्य मां रमादेवी ने अपने श्रद्धालु भक्तों (नर-नारी) की शंकाओं का समाधान करने के लिए अथवा उन्हें आध्यात्मिक ज्ञान देने के लिए जो पत्र समय-समय पर लिखे हैं, उन्हीं का यह संकलित रूप है। जब से समाज का उदय हुआ, तभी से प्रायः हर पीढ़ी में ईश्वर-कृपा-प्राप्त कुछ विशिष्ट व्यक्ति सारे समाज को जागृत तथा चैतन्यमय रखने का प्रयत्न करते आये हैं। ऋषि, मुनि, संत, महात्मा, उपदेशक, सुधारक इसी परंपरा के अंग हैं और मां श्री रमादेवी भी इसी परंपरा में आती हैं।

गृहस्थाश्रम में रहते हुए मनुष्य किस प्रकार परमार्थ-पथ पर अग्रसर होकर मानसिक शांति पा सकता है, यही इस पुस्तक का मुख्य विषय है। वस्तुतः पारमार्थिक ज्ञान एक है, अखंड है, सनातन है। अतः इस पुस्तक में कही हुई बातों में नया कुछ भी नहीं है; किंतु उससे इसकी महत्ता या आवश्यकता में कमी नहीं आती। जब श्रोता निरंतर नये होते रहते हैं, तो वक्ता भी निरंतर नये होते रहेंगे। समय-समय पर जनता की भाषा बदल जाने से ज्ञान-उपदेश की भाषा का बदलना भी अनिवार्य है।

अनुवाद की भाषा विषयानुकूल, सशक्त तथा तत्सम-बहुल है, फिर भी कहीं-कहीं अहसास, दौरान, इर्द-गिर्द जैसे शब्दों का प्रयोग बेझिझक किया गया है। यह सुमुद्रित पुस्तक आध्यात्मिक रुझान वाले पाठकों के लिए मननीय है, इसमें कोई संदेह नहीं।

—चंद्रशेखर पांडे

०००

*** चंद ताजा गुलाब तेरे नाम * शेरजंग गर्ग; सीमांत प्रकाशन, मसूरी; पृष्ठ ७५; ४ रुपये।**

इस संग्रह में छोटी-बड़ी तुकांत-अतुकांत, तुक्तक-मुक्तक आदि कई तरह की कविताएं हैं। इसी तरह विषय वैविध्य भी है। इन रचनाओं को कोई एक घटना, एक भाव, एक टिप्पणी, एक फिकरा, एक निराश वक्तव्य और एक प्रेमपाती की संज्ञा दी जा सकती है। इनमें पूर्वस्मृतियां रह-रहकर उभर आयी हैं। भाषा सरल, शैली में नयापन और कथ्य में बांकपन है। आवरण-पृष्ठ आकर्षक और भावपूर्ण है।

०००

*** किरण के कशीदे * चंद्रसेन 'विराट'; सरला प्रकाशन, के-१७, नवीन शाहदरा, दिल्ली-३२; १२५ पृष्ठ; १२ रुपये।**

*** मिट्टी मेरे देश की * चंद्रसेन 'विराट'; प्रगति प्रकाशन, बेतुल बिल्डिंग, आगरा-३; पृष्ठ १६०; १५ रु.।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री विराट के इन दोनों कविता-संग्रहों की रचनाओं में विराट अतर है—सभी दृष्टियों से। 'किरण के कशीदे' की रचनाएं नवगीत और हिंदी गजल के क्षेत्र में प्रतिमान स्थापित करती हैं; मगर दूसरे संग्रह में तुक-तान की प्रतिबद्धता और स्कूली पाठ्यक्रम एवं प्रचार-प्रसार पुस्तिकाओं की तर्ज पर लिखी सीधी-सादी, सरल एवं गेय रचनाएं हैं। पहला काव्य-संग्रह यह साबित करता है कि उनकी हिंदी गजल अपनापन रखती है और उर्दू गजल का-सा दमखम भी। भवानीप्रसाद मिश्र के शब्दों में विराट ने 'एक कठिन काम हिंदी गजल के क्षेत्र में यह किया कि बहरें उर्दू की लेकर भी उच्चारणों में उर्दू की तरह दीर्घ को ह्रस्व कदाचित ही पढ़ना पड़ता है। रदीफ काफिये भी नये-नये चुने हैं और उन्हें बड़ी खूबी से निभाया है।'

कार्यपालक इंजीनियर विराट विपरीत परिवेश और यांत्रिक स्थिति में काव्य-सृजन कैसे कर पाते हैं, यह उनकी इन पंक्तियों से जाहिर है :

यह श्रेय गीत को है छाने न दी उदासी।
हम अन्यथा कभी के ही ऊब गये होते।।

दोनों संग्रहों का गेटअप अच्छा है।

०००

*** तपस्या के हस्ताक्षर * रमेश सोनी; प्रगति प्रकाशन, आगरा ३; ८० पृष्ठ; १० रु।**

हिंदी में गीतों की लंबी परंपरा है। हर दशक मे गीत करवट बदलता है और उसका क्षेत्र विस्तीर्ण हो जाता है। रमेश सोनी के गीतों में गीति काव्य-परंपरा के बदलते परिवेशों की झाइँ स्पष्ट है। भावों की गहराई, परंपरित बंध-निर्वाह, गेयता और अर्थमयता उनके गीतों में गांव-शहर की अंतरंग अनुगूंज लिये रची-बसी है। लोककाव्य का पुट उनमें भला लगता है। उनकी (अब तक की) तपस्या का निर्णय है—'दर्द जिंदगी देगा......जिलायेगा......और मैं गीत दूंगा।'

०००

*** लेखनी के स्वप्न * जहीर कुरेशी, सूर्य प्रकाशन, नयी सड़क, दिल्ली-६; ८७ पृष्ठ; ६ रु.।**

अतुकांत कविता, हिंदी गजल और गीतों का यह संग्रह दर्दीले भावों के संवेग का नया दस्तावेज है। प्रकृति के विविध आयामों, जीवन की विसंगतियों और मानवीय पीड़ा का संस्पर्श है कुरेशी की रचनाओं में, जिन्हें उन्होंने 'विशुद्ध अनुभूतिपरक' कहा है। अधिकांश रचनाएं उपदेशपरक बन पड़ी हैं और कुछ तुकबंदी में बह गयी हैं। गजलें अच्छी हैं। आम आदमी के बीच में से गुजरने वाली कविताओं की इस पुस्तक का मूल्य उसके (आम आदमी के) बजट से बाहर है। —डा. विष्णु भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब नैशनल बैंक

में पधारिए हमारे पास सबके लिए आकर्षक बचत योजनाएं हैं

होल लाइफ एन्युटि इन्कम : केवल सात वर्षों तक नियमित मासिक किस्तें जमा कीजिए, फिर मजे से जीवन भर अपनी मासिक किस्त के बराबर स्वयं पेंशन लीजिए और अपने उत्तराधिकारियों के लिए व्यवस्था कीजिए। आपकी असल पूंजी ज्यों की त्यों रहेगी।

मल्टी-बेनिफिट एन्ड ओल्ड एज डिपाजिट : 20 वर्ष की योजना में लगा आपका पैसा 31.6% प्रति वर्ष की दर से बढ़ता है; 5,000 रु० बढ़कर 36,640 रु० हो जाते हैं। 100 रु० या इससे अधिक राशि 13 महीने से लेकर 241 महीनों के लिए जमा कराई जा सकती है।

रिकरिंग डिपाजिट : अपने भविष्य की आवश्यकताओं की योजना आज ही बनाइए। हर महीने 5 रु० या 5 रु० के गुणितों में कोई भी राशि 12 से लेकर 252 महीनों के लिए जमा कराइए।

स्पेशल फिक्सड डिपाजिट : अपनी सावधि जमा पर मासिक ब्याज लीजिए। उदाहरण के लिए 61 महीने के लिए जमा किए गए 30,000 रु० पर 250 रु० मासिक ब्याज मिलेगा। मूल राशि ज्यों की त्यों बनी रहती है।

आटोमेटिक एक्सटेंशन डिपाजिट : अपनी सावधि जमा पर लगातार ब्याज कमाते रहिए। हमारे पास स्थायी हिदायतें छोड़ दीजिए। हम परिपक्व होते ही आपके खाते की अवधि बढ़ा देंगे।

डिपाजिट-लिन्कड हाउसिंग लोन : अपना मकान बनाने का सपना पूरा करने के लिए आज ही नियमित मासिक किस्तों में बचत शुरू कीजिए। आपकी जमा के परिपक्व होने पर हम आपको, आपके द्वारा जमा की गई राशि के बराबर, ऋण देंगे—ताकि आप अपनी पसन्द का मकान बनवा या खरीद सकें।

स्टूडेंट डिपाजिट : 14 वर्ष से बड़े छात्र अपने नाम से खाता खोल सकते हैं—और अपना चेक जारी कर सकते हैं।

ब्योरे के लिए हमारी समीपस्थ शाखा से सम्पर्क कीजिए

पंजाब नैशनल बैंक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसी के बुलबुले

रोगी डाक्टर को अपना हाल बता रहा था—'मैं चाय नहीं छोड़ सकता, डाक्टर साहब! मगर जब भी चाय पीता हूं, तो माथे में कुछ गड़ता-सा महसूस होता है। क्या करूं?'

'कुछ नहीं। बस, चाय पीते समय कप से चम्मच निकालकर अलग रख लिया करें।' डाक्टर ने सलाह दी।

०००

एक छोटा लड़का (अपने पिता से)—'हम जो भाषा घर में बोलते हैं, उसे मातृ-भाषा क्यों कहते हैं, पिताजी?'

पिता—'बेटे, इसीलिए कि घर में मां बराबर बोलती रहती है, पिता को अधिक बोलने नहीं देती।'

०००

एक सज्जन : जिन लोगों को सदैव यही विश्वास रहता है कि हम जो कुछ कह रहे हैं, ठीक कह रहे हैं, वे बिलकुल मूर्ख हुआ करते हैं।

मित्र : हूं ...... तो आपको इसका पूरा विश्वास है?

सज्जन : और नहीं तो क्या!

०००

जीजाजी अपने आपको बहुत बड़ा दार्शनिक समझते थे। एक दिन कहने लगे—'हर आदमी में कोई न कोई विशेषता होती है। पर एक मैं ऐसा हूं, जिसम कोई विशेषता नहीं।'

साली ने पूछा—'अच्छा बताइये, आप दाढ़ी कैसे बनाते हैं?'

जीजाजी तुरंत बोले—'दायें हाथ से बनाता हूं।'

साली ने तपाक से कहा—'बस, यही तो खासियत है आपमें। और लोग तो उस्तरे से बनाते हैं।' **—सुरेन्द्र श्रीवास्तव**

व्यंग्यचित्र : आलोक भार्गव

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हर घर के लिए आवश्यक

अपनी खाद्य सामग्री, भोजन पदार्थों, खाद्यान्न,
आटा, मसालों, मेवे आदि को

कीड़ों से सुरक्षित रखें

झंडू की विशेष रूप से तैयार की गई

पारद गोलियां प्रयोग में लायें

फुटकर और थोक व्यापारियों के लिए वरदान

झण्डू फार्मास्युटिकल वर्क्स लि०, बम्बई ४०० ०२५

हर जगह प्राप्य

क्या आपने क्यों ? पढ़ा है ?

यदि नहीं, तो भारतीय संस्कृति की आपकी जानकारी सर्वांगीण नहीं है

आज ही **शास्त्रार्थ महारथी**
पं० माधवाचार्य शास्त्री द्वारा लिखित
"क्यों ?"
नामक ग्रन्थ मंगाकर पढ़िये और सरल हिन्दी भाषा में अपनी संस्कृति का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त कीजिए

क्यों (पूर्वार्ध)-पृष्ठ-७००-मूल्य १२) रु०
क्यों (उत्तरार्ध)-पृष्ठ-९००-मूल्य १५) रु०

★ १००) रु० के आर्डर पर हमारा मासिक पत्र "लोकालोक" एक वर्ष तक निशुल्क प्राप्त करें। नमूने की प्रति के लिए ५० पैसे का टिकट भेजिए।
★ पुस्तकालयों और पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन की विशेष व्यवस्था।
★ विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाईये।

माधव पुस्तकालय
१०३-ए, कमलानगर, दिल्ली ११०००७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रप्रश्न-८ (उत्तर)

टाम एम्बोया :– जन्म : १९३० में। जोमो केन्याटा के बाद केन्या के दूसरे प्रभावशाली नेता। केन्या अफ्रीकी नेशनल यूनियन के महामंत्री रहे। ५ जुलाई १९६९ को नैरोबी में गोली मारकर हत्या कर दी गयी।

सर अबूबकर तफावा बालेवा :– १९६० में नाइजीरिया के स्वतंत्र होने के बाद से जनवरी ६६ में सैनिक सत्ताहरण में मारे जाने तक प्रधान-मंत्री रहे। अफ्रीका के उन गिने-चुने राष्ट्र-कर्णधारों में थे, जो लोकतंत्र के मार्ग से नहीं डिगे।

क्वामे एन्क्रुमा :– जन्म : सितंबर १९०९। अमरीका में अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र की उच्च शिक्षा पायी। लिंकन विश्वविद्यालय में राजनीति-विज्ञान के व्याख्याता रहे। पान-अफ्रीकन संमेलन के संस्थापकों में से एक थे। घाना की स्वतंत्रता के लिए १९४९ में कन्वेशन पीपुल्स पार्टी की स्थापना की। १९५७ में घाना के पूर्ण स्वतंत्रता मिलने के पूर्व से ही प्रधान-मंत्री; १९६० में संविधान में परिवर्तन के बाद राष्ट्रपति। उपनिवेशवाद विरोधी, गुटमुक्तता की नीति के पक्षधर। १९६६ में पीकिंग में यात्रा पर गये हुए थे कि उन्हें अपदस्थ कर दिया गया। गिनी की राष्ट्रपति सेखो तूरे के अतिथि रहते २७ अप्रैल १९७२ को निधन।

अहमद बेन बेला :– जन्म : दिसंबर १९१९। फ्रांसीसी सेना में अधिकारी रहे। अल्जीरिया के स्वातंत्र्य-संग्राम के अग्रपंक्ति के नेता थे। फ्रांसीसी कारागार में बंदी होने पर भी अल्जीरिया की अस्थायी सरकार के उपाध्यक्ष चुने गये। अल्जीरिया के स्वतंत्र होने पर १९६२ में प्रधान-मंत्री बने, साल-भर बाद राष्ट्रपति। गुटमुक्त देशों के प्रमुख प्रवक्ताओं में से थे। १९ जून १९६५ को सैनिक जंटा ने उन्हें अपदस्थ कर दिया। कहा जाता है कि वे अल्जीरिया से ४० मील दूर एक अज्ञात स्थान पर नजरबंद हैं।

पेट्रिस लुमुंबा :– जन्म : १९२५। बेल्जियन कांगो (वर्तमान जैरे) के राष्ट्रवादी नेता। स्वतंत्र होने पर कांगो गणतंत्र के प्रधान-मंत्री बने। ११ जुलाई १९६० को शोंबे ने कटांगा को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया, जिससे गृहयुद्ध छिड़ गया। फरवरी ६१ में लुमुंबा की हत्या कर दी गयी। XXX

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

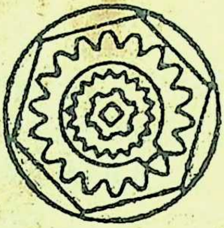

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाने के लिए विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां 'ब्रोच' उत्पादन परमावश्यक होता है। डॅगर-फोर्स्ट टूल लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये 'ब्रोच' से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.,
पहिला पोखरण रास्ता,
थाना (बंबई)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जुलाई (१-७-१९७६) मूल्य रु. २-५० Regd. No. B

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

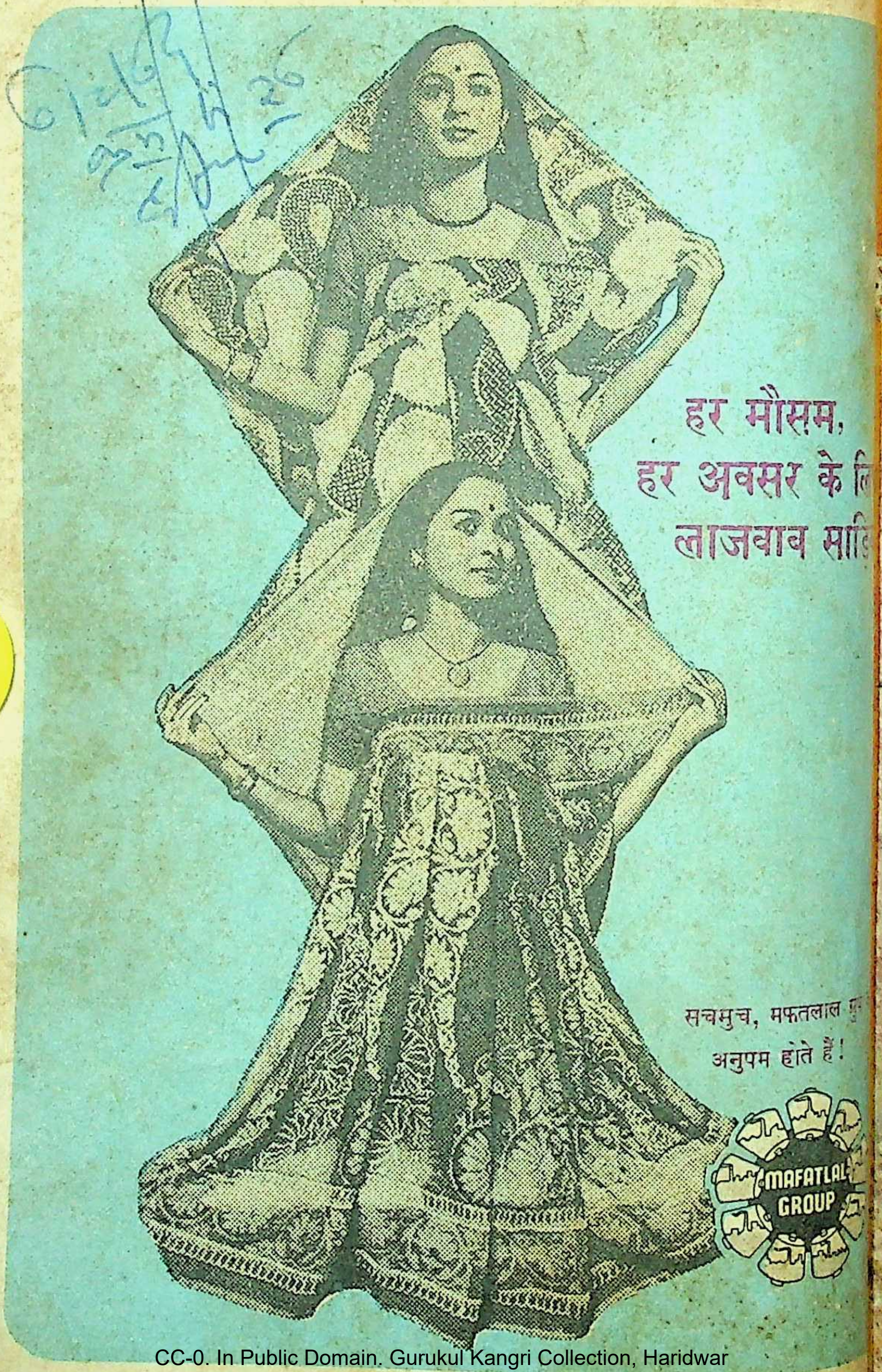

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगस्त १९७६

मूल्य रु. २-००

नवनीत
हिंदी डाइजेस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी उमंग, नयी तरंग

सेन्चुरी के सूती कपड़ों के संग

सैन्चुरी - १००% सूती कपड़ों के लिए!

दि सेन्चुरी स्पि. एण्ड मैन्यु.
क. लि. बम्बई-४०० ०२५

Adroit-237-Hindi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मत समझिए कि यह कोई अचार की मामूली बरणी है यह तो बेडेकर के सर्वोत्तम उत्पादनों में से एक है

सुगन्ध और सुस्वाद के लिए सुपरिचित यह उत्पादन ६९ वर्षों के लम्बे अरसे से भारत के घर-घर में मशहूर है

सुरुचिपूर्ण महिलाएँ तो बेडेकर उत्पादनों की तारीफ़ करते नहीं थकतीं। बेडेकर के कई उत्पादन हैं जैसे अचार, मसाले, पापड़ व चटनी जो अपणी विशुद्धता और उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध हैं। बेडेकर के सभी

उत्पादन अन्तराष्ट्रीय स्तर की लीक-प्रूफ़ पैकेजिंग में मिलते हैं। बेडेकर के ऊँचे दर्जे के उत्पादन यानी आपकी पहली पसन्द।

व्यापारिक पूछताछ :
व्ही. पी. बेडेकर
एण्ड सन्स प्रा. लि.
बम्बई-४ (भारत)

बेडेकर

बेडेकर अचार • बेडेकर मसाले • बेडेकर पापड • बेडेकर चटनी

B.Vasant/VPB/I-75

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रांगध्रा केमिकल वर्क्स लिमिटेड

'निर्मल,' तीसरी मंजिल, २४१ बैकबे रिक्लेमेशन,
नरीमन पाइंट, बंबई ४०० ०२१

तार : SODACHEM   फोन : २९२४०७–२९१२१४
२९३२३५–२९१३१०

भारत में हैवी केमिकल्स के क्षेत्र में अग्रणी
अब अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी प्रस्तुत :

* अपग्रेडेड इलमेनाइट *
(सिंथेटिक रूटाइल ९०-९२ TiO_2

हमारे बनाये हुए रसायन :

- * कास्टिक सोडा
- * सोडा एश
- * सोडियम बाइकार्बोनेट
- * अमोनियम बाइकार्बोनेट
- * कैलशियम क्लोराइड
- * ट्राइक्लोरो एथिलीन
- * लिक्विड क्लोरीन
- * हाइड्रोक्लोरिक एसिड

* साल्ट *

लिंक चेन

जिसकी एक-एक कड़ी मजबूत, परखी हुई और पूर्णतः विश्वसनीय है।

*

सभी उद्योगों व वाहनों में उपयुक्त

*

एलोय स्टील चेन एक विशेषता

इंडियन लिंक चेन मैन्यु. लि., भांडुप, बंबई-७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे परिवार के मन पसन्द ये
डिस्कॉन उत्पादन

(डिस्कॉन के हर एक उत्कृष्ट उत्पादन के साथ हमेशा एक मुफ्त उपहार)

डिस्कॉन टूथब्रश
'स्टर्लाइज' करने योग्य एकमात्र टूथ ब्रश

डिस्कॉन शेविंग ब्रश
अधिक मजबूत अधिक लम्बे, छूने में नरम नाईलोन रेशे, अधिक मजबूत पकड.

डिस्कॉन फीडिंग बोतल
मां के स्तन जैसी ही सुखद आपके मुन्ने को दूध पिलाने की बढ़िया डिज़ाइन की बोतल.

डिस्कॉन शुद्ध नीम साबुन
परिवार के लिए आदर्श नहाने का साबुन, त्वचा को गर्मी व फाड़नेवाली सर्दी से बचाता है.

मद्रास
फोन : ७७०५४.
टेलेक्स : एम एस/७४५१

बम्बई
५०९, प्रसाद चैम्बर्स, ५वीं मंजिल, आपेरा हाउस, बंबई-४०० ००४
फोन : ३८११७३

डिस्कॉन सेल्स प्रा. लि.
क्रय-विक्रय कार्यालय :

नयी दिल्ली
फोन: ५२८९५० टेलेक्स ३७०७

कलकत्ता
फोन : २३८४२५, २३५४१८, २३०९३७ टेलेक्स : २२९६.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेनिथ

औद्योगिक जगत में
एक विख्यात नाम है।

स्टील पाइप
स्टील कटर

इसके मुख्य उत्पादन हैं।
देश-विदेश में सर्वत्र
इनका प्रचार है।

जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इन्डस्ट्रीज लि.

खोपोली स्थित औद्योगिक निर्माण का स्थान अनुपम है, आदर्श है, उसके उत्पादन के द्वारा उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, निर्यात के द्वारा देश को विदेशी विनिमय की प्राप्ति होती है, और विविध करों के द्वारा देश के अर्थकोष की वृद्धि होती है।

सबकी सेवा में प्रस्तुत
जेनिथ स्टील पाइप्स
एंड इन्डस्ट्रीज लि.
खोपोली (कुलाबा) बंबई.

दि इंडियन टूल
मैन्यूफैक्चर्स लि.

१०१, सायन रोड, सायन,
बंबई-४०००२२

सुनिश्चित होकर चुनाव
कीजिये

'डॅगर' ट्विस्ट ड्रिल्स रीमर्स,
कटर्स, टैप्स, टूलबिट्स
और माइक्रोमीटर्स

डॅगेलाय कार्बाइड
टूल्स और टिप्स

डॅगर-साके गियर हॉब्स
और गियर शेपिंग कटर्स

IT

प्रिसिशन का प्रतीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़ पर जाने में आप जितना ख़र्च करेंगे उतने में ही विदेश में छुट्टियाँ बिताइये

मॉरिशस.

अब विदेश में छुट्टियाँ बिताना पहले से आसान है. और सच पूछिये तो इसका ख़र्च भारत के किसी भी अच्छे पहाड़ी स्थान पर जाने के मुक़ाबले कम ही पड़ता है.

स्वप्नमधुर छुट्टियाँ

विशाल फूलों और ख़ूबसूरत झरनों से शोभित तथा ज़िन्दगी की मस्ती बिखेरता एक स्वप्निल द्वीप है मॉरिशस. यहाँ आप पायेंगे जगप्रसिद्ध ख़ूबसूरत समुद्रतट. यहाँ धूप-स्नान का मज़ा लीजिये, या जी भर कर तैरिये या फिर बिकनी में सजी सुंदरियों को घूमते हुए देखिये. दोपहर बाद ख़रीदी कीजिये और शाम कैसिनो में बिताइये और अगर आप खेल-कूद के रसिया हैं तो नौका विहार कीजिये, वाटर स्कीइंग कीजिये, गोल्फ़ खेलिये या फिर मछली मारने का आनन्द उठाइये और संसार की सबसे बड़ी ब्लू मार्लिन मछली का शिकार कीजिये. वैसे आप घुड़दौड़ में शामिल हो सकते हैं, हिरनों के शिकार पर जा सकते हैं, या डीप सी डाइविंग का मज़ा ले सकते हैं. लेकिन यह इस बात पर निर्भर है कि आपने छुट्टियाँ बिताने के लिये साल का कौन सा समय चुना है.

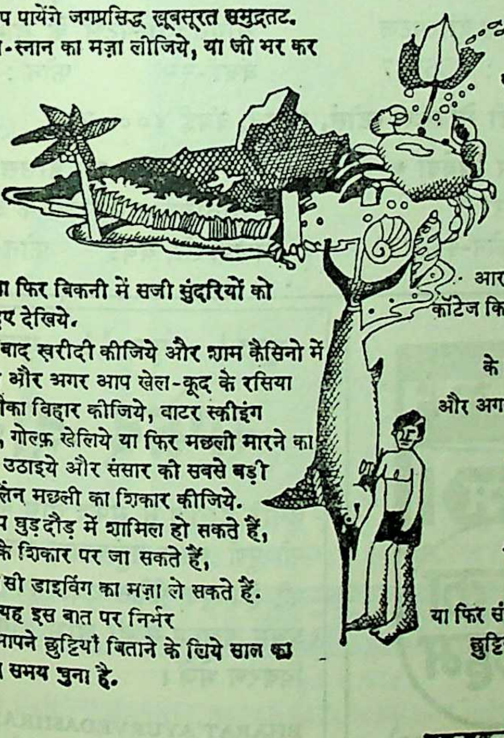

कम से कम खानापूरी

पिछले तीन वर्षों के बीच अगर आप विदेश जा चुके हैं तो भी मॉरिशस जाने के लिये आपको न तो पी फ़ॉर्म की ज़रूरत पड़ती है और न पासपोर्ट या वीसा की. और ख़र्च के लिये आप बिना रिज़र्व बैंक गये अपने साथ १०० डॉलर तक ले सकते हैं. सारी काग़ज़ी कार्रवाई एयर-इंडिया ख़ुद आपके लिये पूरी कर देती है.

और ख़र्च इतना कम कि सहसा विश्वास नहीं हो.

मॉरिशस में छुट्टियाँ बिताते समय आप अत्यधिक आरामदायक होटलों में ठहरिये या पूरा कॉटेज किराये पर लीजिये — फिर भी दूसरी जगह के अच्छे शानदार होटलों के मुक़ाबले किराया कम ही पड़ता है.

और अगर आप चार या अधिक यात्रियों की मंडली बनाकर जायें तो एयर-इंडिया आपको ज़ोरदार छूट देने को तैयार है. एयर-इंडिया के ख़ास एक्सकर्शन फ़ेयर के अन्तर्गत एक यात्री को भी भारी छूट मिल सकती है. या फिर संपूर्ण ख़र्च सहित दिलचस्प मंडली में छुट्टियाँ बिताने का सुयोग बैठाने के लिये अपने ट्रैवेल एजेन्ट को कहिये.

एयर-इंडिया
सप्ताह में दो बार
सीधे मॉरिशस

AL 9641 (A)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद मंगल टेक्सटाइल कं.

अब सुलभता से प्राप्त

सोया मिल्क * सोयबीन्स * डी–फेटेड सोय फ्लोर

बच्चों और बड़ों के लिए

प्रोटीन की तमाम आवश्यकताएं पूरी करने वाला उत्कृष्ट अन्न

—— : अपनी आवश्यकता के लिए संपर्क करें :——

१. श्रीनिकेतन, मरीन लाइन्स क्रॉस रोड नं. २, १४ एम. के. रोड, बंबई ४००

फोन : 311803

सोयामिल्क निम्न स्थानों पर मिलता है :

*** कास्मोपोलिटन रेस्टोरेंट**
प्रार्थना समाज, हरिकिसनदास हास्पिटल
के नीचे, बंबई-४ फोन : 356737

*** माया मेडिकल एंड जनरल**
सायन हास्पिटल के सामने,
बंबई-२२. फोन : 483

*** युटिलिटी मेडिकल स्टोर्स**, सायन, बंबई ४०००२२

*** काशीराम गोविंदराम त्रिवेदी ***
चाय के व्यापारी
परेल टी. टी., बंबई-१२ फोन-443272

*** दिलीप ड्रग हाउस ***
नानावटी हास्पिटल के अंदर
विलेपारले, बंबई फोन - 47

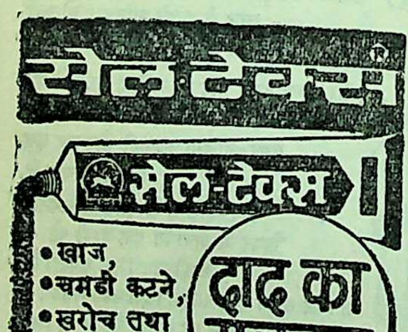

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

सफेद दाग

हमारे इलाज ने सफेद दाग के रोगि
को पूर्ण लाभ पहुंचाकर ख्याति प्रा
की है। एक पैकेट दवा मुफ्त मंगा
प्रथम इलाज में ही लाभ होगा। रो
विवरण भेजें।

BHARAT AYURVEDASHRAM (N. E

P. O. KATRI SARAI (GAYA)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

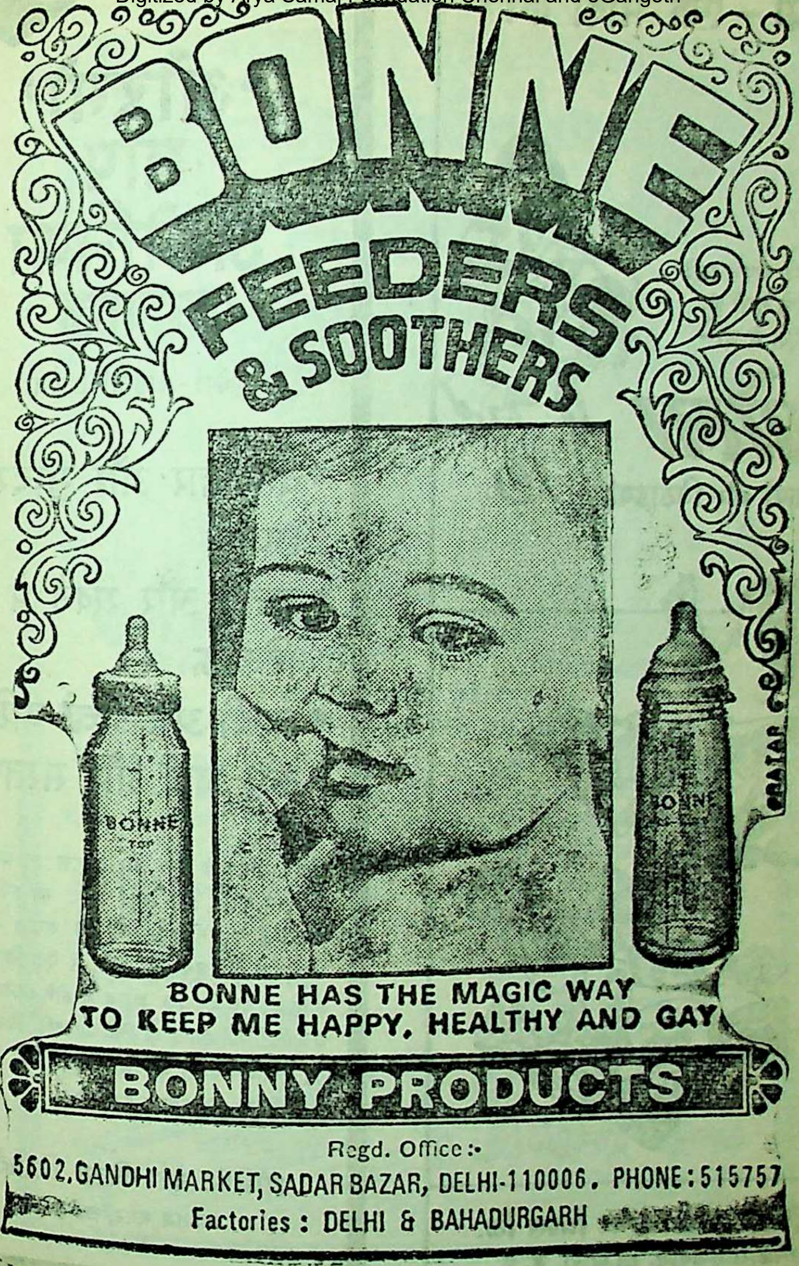

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ — एक सौदा करें!

मैं तुम्हें अपने सारे
खिलौने देती हूँ,
तुम मुझे दे दो—

गोला

टॉफियां और मिठाइयां

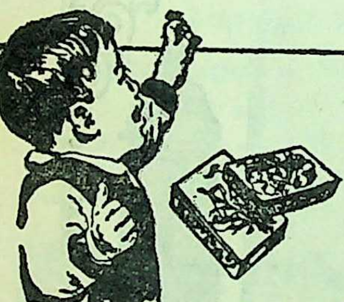

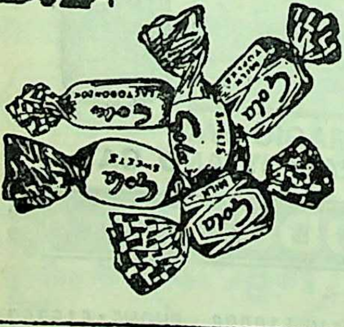

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि.
गोलागोकर्णनाथ, जि. खीरी, उ. प्र.

'औरमो'
छाप
अमोनिया
काग़ज़

(पैरा - डाइजो टाइप)

- चमकदार और सुन्दर
छपाई
- बरतने और रखने में
टिकाऊ
- जल्दी और अच्छे परि
- कम खर्च और सस्ता

स्टैंडर्ड साइज के रोल और शीटस हर
मीडियम फास्ट और सूपर फास्ट की
मिलते हैं. रोशनी और नमी से बचाव
पोलीथीन के ट्यूब और रैपरों में पेक कि
होता है. यह देर तक खराब न होने वा
क्वालिटी की छपाई के लिये गारन्टी कि
है, क्योंकि औरमो का बेस पेपर भी
पेपर मिल्स का बनाया हुआ है।

ओरियंट पेपर मिल्स लिमिटे
ब्रजराज नगर, उड़ीसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने आप बढ़नेवाला सुरक्षित निवेश

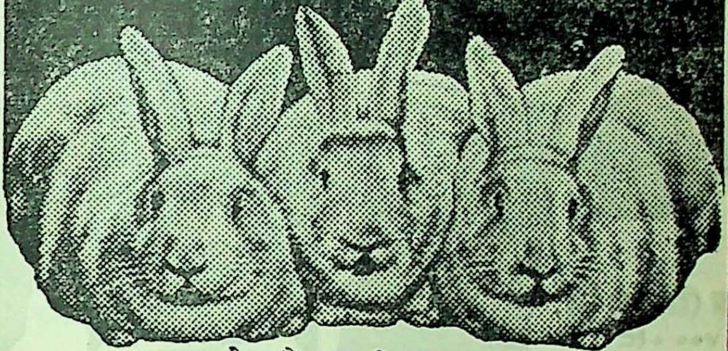

देना बैंक नकदी प्रमाणपत्र:
आपकी बचत को अनेकगुना करने का एक सरल उपाय।

देना बैंक के नकदी प्रमाणपत्र में निवेश करने से आपके रुपये 10 वर्ष में लगभग तिगुना तथा 20 वर्ष में सातगुने से अधिक हो जाते हैं। उदाहरण के लिए आप अभी रु. 36.94 की राशि निवेश करें और 10 वर्ष में रु. 100/- प्राप्त करें अथवा रु. 13.65 जितनी छोटी सी राशि निवेश कर 20 वर्ष में रु. 100/- प्राप्त करें।

देना बैंक के नकदी प्रमाणपत्र रु. 100/-, रु. 1,000/-, रु. 5,000/-, और रु. 10,000/-, के अंकों में 20 वर्ष, 15 वर्ष, 10 वर्ष, 6 वर्ष, 61 महिने, 4 वर्ष और 3 वर्ष की अवधि के आकर्षक निर्गम मूल्यों पर मिलते हैं।

देना बैंक की अन्य बचत योजनाओं से भी आप इसी प्रकार की अधिक ब्याज दरों का लाभ ले सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए देना बैंक की निकटतम शाखा में पधारें और अपने धन को उत्तरोत्तर स्वयं बढ़ने दें।

देना बैंक
(गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया अण्डरटेकिंग)
प्रधान कार्यालय: हॉर्निमन सर्कल,
बम्बई 400023

RATAN BATRA/DBIH/787-A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Kores

अच्छी छाप का प्रतीक

कोरेस परमैकलिथ
सिल्क रिबन :
अधिक स्याही के
कारण साफ
सुथरी छाप

कोरेस इन्टरप्लास्टिक
कार्बन : दाग-धब्बों
से रहित, स्वच्छ
कापियों के लिये
वैक्स इंक की कोटिंग
और प्लास्टिक की
सुरक्षात्मक पर्त

कोरेस ड्राईटाइप
स्टेन्सिल : सही, साफ
छाप के लिये बिना
खामी के लंबे फाइबर
टिश्यू से बनी हुयी

जल्दी
सूखने वाली
सूपरइमल्शन
डूप्लीकेटिंग
नं. के. ७५०
और ७५१

कोरेस (इंडिया) लि.
बम्बई ४०० ०१८
भारतभर में शाखायें

"प्रत्येक शुभ अवसर पर भेंट में दीजिए"

परमात्मा की अमरवाणी प्रत्येक हिन्दू परिवार में होनी चाहिए

"चारों वेदों का हिन्दी भाष्य"

चार सुनहरी जिल्दों में—वजन ८ किलो—१० × १५ इंच साइज में
२२०० पृष्ठ, मूल्य २८४) रु.

किन्तु प्रचारार्थ मूल्य २११) रु.

१/४ धन अग्रिम आदेश के साथ भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

अध्यक्ष – दयानन्द संस्थान—वेद मन्दिर १५९७—हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग
नयी दिल्ली—११०००५ दूरभाष-५६६६३९

DAM

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र में एक बार फिर आत्मविश्वास जागा है

1975-76

बिजली-उत्पादन में प्रगति

* अब तक का रिकार्ड उत्पादन 7976.4 करोड़ यूनिट हुआ। दैनिक रिकार्ड उत्पादन 26 करोड़ यूनिट है।

* 25 नये बिजलीघरों ने 1 800 मेगावाट बिजली पैदा की, इनमें से 20 ने सितंबर 1975 और मार्च 1976 के बीच उत्पादन शुरू किया।

* आशा है कि इस वर्ष 20,50,000 हेक्टेयर अतिरिक्त भूमि को सिंचाई सुविधाएं प्रदान की जायेंगी।

* 6,356 गांवों में बिजली पहुँचायी गयी। अब तक 1,74,079 गांवों में बिजली पहुँच चुकी है। 1,40,000 पंप-सेटों को बिजली दी गयी।

डीएवीपी 76/89

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

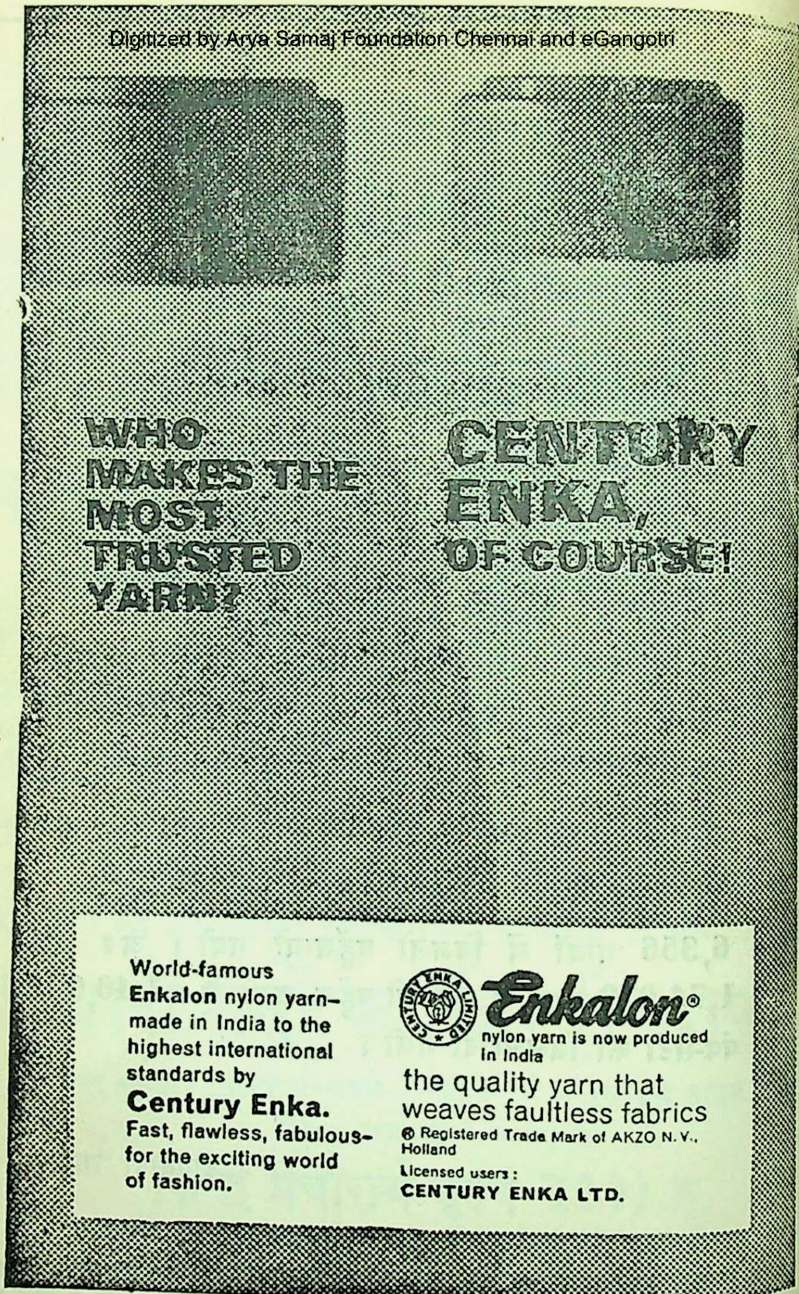

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे ग्लायकोडिन पर भरोसा है

ये मुन्नी को खांसी से जल्द राहत दिलाएगा

ग्लायकोडिन ने खांसी की दूसरी दवाओं के मुकाबले, भारत भर में ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की खांसी दूर की है. इसीलिये ये सबसे आगे हैं.

जहां जहां खांसी का प्रभाव हुआ हो, वहां-वहां यह तेजी से असर करता है... खांसी से जल्द और शर्तिया छुटकारा दिलाता है.

- गले की खराश मिटाता है.
- छाती में जमे बलगम को निकालता है और सर्दी-खांसी से राहत दिलाता है.
- छाती की जकड़न दूर करता है जिससे सांस लेने में आसानी होती है...

आप चैन की नींद सो सकते हैं.

खांसी कैसी भी हो— उस पर पूरा काबू पाने के लिए आप मधुर स्वादवाले ग्लायकोडिन पर भरोसा कर सकते हैं.

Alembic ग्लायकोडिन— भारत में खांसी को पछाड़ने वाला चैम्पियन... विश्वसनीय दवाएं बनानेवाली कंपनी एलेम्बिक की ओर से.

everest/519/ACW-hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

here are the outstanding advantages of

AMARYL REACTIVE DYES...

We proudly announce that, for the first time in India, AMARYL REACTIVE DYES have been entirely developed by our OWN Research. We produce the full range of Hot and Cold type of REACTIVE DYES. These dyes compare with those of international standards in every way. They are economical in application. Their quality is indisputable.

We constantly continue in our efforts to widen the range of this class of dyes.

Our range of products include Naphthols and Fast Colour Bases, TPM Basic and Acid Colours, Printamar Pigment Printing Emulsions and Binders, Dry Pigments, Dye-Intermediates, Rubber Chemicals, Peroxides, Beta Naphthol, BON Acid, DEMAF etc.

ADC — *to enrich India's life with colour!*

AMAR DYE-CHEM LTD.

Rang Udyan, Mahim, Bombay 400016

BRANCHES; AHMEDABAD • CALCUTTA • DELHI • JAIPUR • MADRAS • MADURAI • AMRITSAR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र में एक बार फिर आत्मविश्वास जागा है

1975-76

गांवों में नया जीवन

* मकान बनाने के लिए पैंसठ लाख से अधिक प्लाट दिये जा चुके हैं, इनमें से 3,68,000 प्लाट विकसित हैं। 2,46,000 मकानों का निर्माण-कार्य पूरा हो चुका है।
* लगभग 47,000 बंधक मजदूर बंधन से मुक्त किये गये।
* भूमि की उच्चतम सीमा संबंधी कानून लागू करने से 16,67,000 एकड़ भूमि प्राप्त हुई। इसमें से अब तक लगभग 1,80,000 व्यक्तियों को 4,24,000 एकड़ भूमि बांटी जा चुकी है।
* उन्नीस ग्रामीण बैंक स्थापित किये गये हैं, 1976-77 में 50 और स्थापित किये जायेंगे। सहकारी ऋण समितियों को और मजबूत बनाया जा रहा है।

डीएवीपी 76/88

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वालियर रेयन के २६ गौरवशाली वर्ष

आत्मनिर्भरता का स्वप्न साकार

ग्वालियर रेयन ने देश के आजाद होने के साथ ही साथ रेयन वस्त्र, स्टे रेशे, रेयन–ग्रेड पल्प और रेयन स्टेप रेशे बनानेवाले प्लांट की मशीनों का निर्माण शुरू कर दिया.

ग्वालियर रेयन, बांस व अन्य सख्त लकड़ियों से रेयन–ग्रेड के घुलनशील पल्प तथा रेयन, पल्प व संबंधित प की आधुनिक मशीनों के अग्रगण्य नि हैं तथा रेयन उद्योग के क्षेत्र में देश आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयत्नशील

आज ग्वालियर रेयन के स्टेपल रेशों उत्पादन, ५ करोड़ २० लाख देशवासि की वस्त्र की जरूरतें पूरी करने के लि पर्याप्त है. लकड़ी के पल्प का वार्षिक उत्पादन, एक लाख टन से भी ज्यादा है जो सेल्यूलोस के रेशों की दृष्टि से की ५.२ लाख गांठों के बरावर है.

ग्वालियर रेयन ने देश को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दि इन्होंने पिछले दस वर्षों में, राष्ट्रीय अधिकोष में रु. ९० करोड़ से भी ज्यादा धनराशि टैक्स के रुप में दी और इसी दौरान रु. ३६० करोड़ की विदेशी-मुद्रा भी बचायी।

ग्वालियर रेयन

जहां राष्ट्र की प्रगति ही [illegible] है

दि ग्वालियर रेयन सिल्क मेन्यु. (वीविंग) कं. लि. [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत

वर्ष २५ : अंक ८ *** इस अंक में *** अगस्त १९७६

पत्र-वृष्टि	१९	संपादक की डाक से
पृथ्वी से आया तोहफा	२५	फ्रेडरिक ब्राउन
मजबूत काठी में नरम-सा दिल	२८	उदयन शर्मा
आखिरी ऐयाशी	३३	इदरीस शाह
जीवन-तीर्थ	३४	सुबीर
एक विभूतिमान मनीषी	३६	लक्ष्मीशंकर व्यास
शाश्वत प्रकाश	४२	थॉरो, ह्विट्मन
मेढकों का वर्षा-गीत	४४	डा. रामनाथ वेदालंकार
बारहमासा	४६	चरन शर्मा
वाक्यदीप	४७	सेबास्तियन रोश निकोला शाम्फोर्त
कविताएं	४८	अजित कुमार
विज्ञान-बिंदु	४९	केजिता
गीतगोविंद	५२	नंदकिशोर मित्तल
लिडिस जिंदा है	५७	जान ब्रैडले
याद आते हैं नलिनजी	६४	शंकरदयाल सिंह
जब मोर्चे पर भगदड़ मचती है	६९	जनरल जयंतनाथ चौधरी
एक और शकुंतला	७२	उमाकांत मालवीय

संस्थापक	संपादक	सहसंपादक	व्यापार-व्यवस्थापक
स्व. श्रीगोपाल नेवटिया	**नारायण दत्त**	**सुरेश सिन्हा**	**महेंद्र महेता**
प्रबंध-संचालक	उपसंपादक	सज्जाकार	प्रबंधक
हरिप्रसाद नेवटिया	**गिरिजाशंकर त्रिवेदी**	**ठाकोर राणा**	**सोहनराज पारेख**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाई अब्दुर रहमान (सिंधी कहानी)	७६	अमरलाल हिंगोराणी
जल जाने पर	८२	....
कामीकाजे	८४	वीना सचदेव
अग्निवीणा	९०	नारायण देसाई
लचकते पत्थर और गाती रेत	९४	शेखर वाशिष्ठ
स्मृति के अंकुर	९७	जलेश, शुक्ल, स्वामी, नागदंश
पिघलते इन्द्रधनुष (हिंदी कहानी)	१००	सूर्यबाला
संलाप के मध्य (कविता)	१०८	मोना गुलाटी
मुलाकात एक सुखी आदमी से	१०९	माल्कम मैक्डानल्ड
जिराफ : जंगल का लंबू	११२	सुरजीत
सरवण	११७	डा. महेंद्र भानावत
धूप का गीत	११९	गोपाल चतुर्वेदी
नये मालिक	१२०	सैम्युअल सेल्वन
प्राचीनतम व्यंग्यचित्र	१२८	....
ग्रंथ-लोक	१४८	भटनागर, ना. द., सतीश वर्मा
कुछ इधर से कुछ उधर से	१५३	मित्र
हंसी के बुलबुले	१५६	आलोक मेहरोत्रा

★

आवरणचित्र : ए. ए. आलमेलकर

चित्रसज्जा : गेब्रे क्रिस्टास डेस्टा, मार्विन पीक, ओके, शेणै, सत्यकाम राहुल, शरद कांबले, चरन शर्मा, डा. भटनागर, सतीश चव्हाण और राणा।

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत हिंदी डाइजेस्ट, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४
फोन : ३७२८४७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, अशीष बिल्डिंग, ३३५, बेलासिस रोड, ताडदेव, बंबई-३४. फोन : ३९२८८...

चंदे की दर : (भारत में) एक वर्ष २० रु.; दो वर्ष ३८ रु.; तीन वर्ष ५४ रु.। भारत में **नवनीत** का आजीवन सदस्यता-शुल्क ४०० रुपये है।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४ के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस,** ३६/४८ खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बंबई-४ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

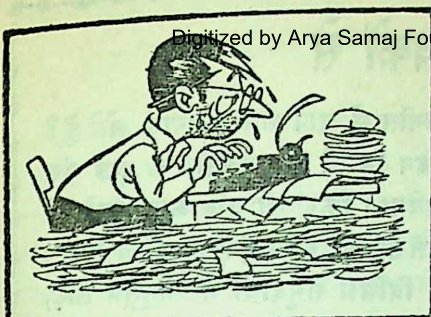

पत्र-वृष्टि

इस मास २८, २९ और ३० तारीख को मारिशस में दूसरा विश्व हिंदी संमेलन हो रहा है। मारिशस ने एक बहुत बड़ा उत्तरदायित्व लिया है। उसके मूल में चाहे राजनैतिक प्रेरणा हो या सांस्कृतिक, मैं तो अंतःकरण से इस बात के लिए वहां के भारतवंशियों की प्रशंसा करता हूं। मुझे पूरी आशा है, यह संमेलन हिंदी-जगत् को अपनी स्थिति समझने और तदनुकूल कार्य करने के लिए उत्साहित करेगा और बहुत-सी बातों में सब लोगों की आंखें भी खोलेगा।

हिंदी के मामले में दोनों देशों की स्थिति जहां तक मैं समझता हूं, एक समान है। भारत में राष्ट्रभाषा घोषित होने के बाद भी हिंदी विदेशी भाषा अंग्रेजी के पैरों नीचे कराह रही है। मारिशस में बहुजन की भाषा हिंदी सरकारी कामकाज की भाषा तो कौन कहे, रेडियो की भी भाषा नहीं, और न स्कूल की छात्रवृत्ति की भाषा ही है। अड़चन डालने वाली नीतियां भी दोनों जगह समान हैं।

इसी संदर्भ में मेरे ये दो व्यावहारिक सुझाव हैं :

१. मारिशस में हिंदी दैनिक निकालने की व्यवस्था की जाये तथा साप्ताहिक; मासिक-पत्रिकाओं के प्रकाशन की पुख्ता योजनाएं बनायी जायें। हिंदी के पत्र-प्रतिष्ठान इसमें अनावश्यक सलाह, सहयोग और तकनीकी मार्गदर्शन आदि देकर सहायक हो सकते हैं।

२. एक विशाल पुस्तकालय की स्थापना हो। इसमें हिंदी के प्रकाशक सहयोग दें। वे मारिशस में हिंदी पुस्तकों की एक बृहत प्रदर्शनी लगायें और उसमें रखी गयी सभी पुस्तकें वहां बनने वाले पुस्तकालय को समर्पित कर दें। **—जगदंबी प्रसाद यादव**

०००

जुलाई का **नवनीत** पढ़ गया हूं। अमरीका की द्विशताब्दी पर अच्छी और संतुलित सामग्री है। मार्टिन लूथर किंग की कृति को इस अवसर पर प्रकाशित करने की आपकी सूझ बड़े मौके की है। मगर आपका लेख 'अमरीकी मित्रों से' बार-बार पठनीय है। भारत और अमरीका की प्रचलित एवं व्यतीत विचार-परंपराओं को कई कोणों से कसौटी पर कसा है। भाषा की व्यंग्य-भंगिमा आपकी कलम की अपनी खूबी है। बधाई। श्री नेमिशरण मित्तल का लेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लेखकों से

श्री संपादकजी, कृपया मुझे बतायें कि नवनीत में आप कैसी रचनाएं लेते हैं? इस आशय के अनेक पत्र हमें प्रतिदिन मिलते हैं। नवनीत के कुछ अंक देखने से भी इस प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा। फिर भी यदि आप हमसे जानना चाहें, तो हम कहेंगे कि निम्नलिखित ढंग की रचनाएं हमें नहीं चाहिये।

क. जो जीवन में अनास्था जगायें, देश के विभिन्न समुदायों में स्नेहसूत्र तोड़ें, व्यक्तिगत आक्षेप करें, सहज-स्वस्थ सुरुचि को ठेस पहुंचायें; या जो कैलेंडर देखकर पर्वों, जयंतियों और पुण्यतिथियों के उपलक्ष्य में लिखी गयी हों।

ख. आपके अन्यत्र प्रकाशित लेख का नया संस्करण, कश्मीरी कविता का वाया तमिल उल्था, अल्बर्तो मोराविया के 'रोम की औरत' का भारतीय रूपांतर 'कौशांबी की कामकन्या,' सर्वविदित हास्योक्तियों का श्रेय आपके जिला-महाकवि या तहसील-राजनेता को देने वाले विनोद-प्रसंग।

ग. इन विषयों से हमें परहेज है – वेदों में हृदय-प्रतिरोपण, कोसी कलां के जंगल में जिराफ और बबरशेर की मुठभेड़, कामायनी में क अक्षर का प्रयोग, महावानर पुराण में मिर्जापुर का उल्लेख, कड़वी लौकी के रस से सर्वरोगों का उपचार, इत्यादि-इत्यादि।

* लेखमालाएं या मास-भविष्य लिखने के आश्वासन कृपया हमें न दें; न एक साथ सवा सत्ताईस कविताएं भेजें।

* रचना पर्याप्त हाशिया और पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान छोड़कर साफ अक्षरों में कागज के एक ओर लिखकर या टाइप करवाकर भेजें। भेजने से पहले उसे एक बार पूरे मनोयोग से अवश्य पढ़ लें, भले उस दिन के बजाय अगले दिन की डाक में भेजनी पड़े। कार्बन-कापी न भेजें। लेख के आरंभ या अंत में अपना पूरा डाक-पता दें।

* रचना के साथ टिकट लगा और पूरा पता लिखा लिफाफा अवश्य रखें। अन्यथा रचना लौटायी नहीं जायेगी, न उसके बारे में पत्र-व्यवहार होगा।

* रचनाएं किसी व्यक्ति के नाम पर नहीं, निम्नलिखित पते पर भेजें।

संपादक—नवनीत हिंदी डाइजेस्ट,
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ताडदेव, बंबई—३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

काफी परिश्रम से लिखा हुआ था।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—रतनलाल जोशी, नयी दिल्ली

०००

जुलाई अंक में आपने लिखा कि अगस्त अंक से नवनीत का मूल्य २.५० रु. से २.०० रु. किया जा रहा है। इसे मुझे दो-तीन बार पढ़ना पड़ा। कारण, यह एक अनहोनी बात लगी। आज तक मैंने पत्र-पत्रिकाओं को मूल्य बढ़ाते हुए ही देखा था, घटाते हुए नहीं। मूल्य घटाने के द्वारा आपने अपने संकल्प को पूरा करने के साथ, अन्य पत्र-पत्रिकाओं के लिए आदर्श प्रस्तुत किया है।

—मन्नालाल चौहान, पाली-मारवाड, राजस्थान

०००

जुलाई अंक अमरीकामय था। पहली नजर में ऐसा लगा कि अमरीका से संबंधित इतनी सामग्री बोर करेगी। पर स्वाद सभी का अनोखा लगा। आरंभ के दो लेखों ने जहां विचारप्रधान विश्लेषणात्मक भूमिका पर अमरीका के कई चेहरे उद्घाटित किये, वहीं पुस्तक-सार में अमरीकी स्वतंत्रता के महान नायक जार्ज वाशिंग्टन की कहानी सचमुच हृदय में विराज गयी। भारतीय व्यक्तित्व पर अमरीकी प्रभाव के बारे में श्रीमती इंदिरा गांधी के विचार संतुलित, मर्यादित और राष्ट्रीय स्वाभिमान के अनुकूल थे।

प्रायः सारी सामग्री के पश्चात् पढ़ा 'अमरीकी मित्रों से'। सोचा था, यों ही लिख मारा होगा। परंतु वास्तव में प्रेम-

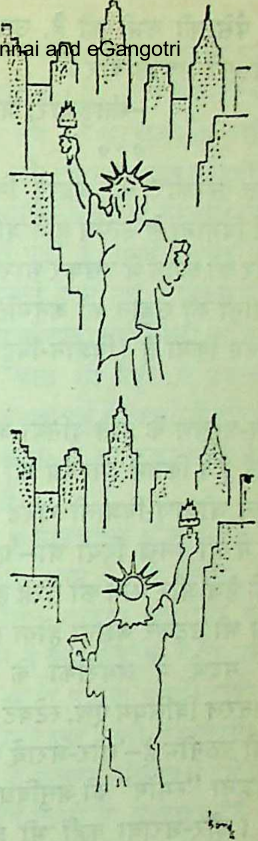

'ले मोंद' में कोंक का व्यंग्यचित्र

लपेटे बैन में उसमें काफी खरी सचाई कही गयी है। सोचता हूं, हमारी गरीबी अथवा अमरीका की अमीरी में क्या अंतर है! दोनों तो प्रायः समान समस्याओं से पीड़ित हैं। फिर भी यही इच्छा होती है कि हम समृद्ध बनें, किंतु अमरीका से सीख लेकर। सुंदर रचनाओं के प्रकाशन के लिए धन्यवाद। और हां, नवनीत के मूल्य में आपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ५० पैसे की कमी की है, उसके लिए धन्यवाद—पूरे पचास बार।

—संतकुमार, जमशेदपुर

०००

भारत सरकार को बधाई कि उसने कान्कार्ड विमानों से उत्पन्न होने वाले कर्ण-भेदी शोर को ध्यान में रखकर भारत पर से इन विमानों की उड़ान की अनुमति न देने का निश्चय किया है (विज्ञान-बिंदु, जुलाई अंक)।

ध्वनि-प्रदूषण के प्रति दुनिया अब जरा सचेत हुई है। कितने आश्चर्य की बात है कि महान जीवाणु-विज्ञानी राबर्ट कोन ने १९१० में ही लिख दिया था—'एक दिन लोगों को हैजे और प्लेग की तरह ही शोर-शराबे से भी डटकर जूझना होगा।'

इसी संदर्भ में अमरीका के भूतपूर्व सर्जन-जनरल विलियम एच. स्टेवर्ट की यह उक्ति भी पठनीय है—'शोर-शराबे को परेशानी कहना "स्मॉग" को असुविधा कहने जैसा है। शोर-शराबा कहीं भी हो, उसे मनुष्यों के स्वास्थ्य के लिए संकट समझना चाहिये।'

—विश्वंभरनाथ, मेरठ

०००

अश्कजी (जून अंक) ने हिंदी के अवमूल्यन के लिए स्वयं हिंदी वालों को दोषी ठहराया है। आरोप स्वयंसिद्ध हैं और प्रमाण अकाटच है। मैं उन प्रकाशकों को विशेष रूप से दोषी ठहराऊंगा, जो कुरुचिपूर्ण सामग्री प्रकाशित करके हिंदी साहित्य की सेवा में निरत होने का ढोल पीटते हैं। बढ़िया पत्र-पत्रिकाओं की होड़ में पा[केट] बुक्स आयीं और सबको पीछे-छोड़ ग[यीं]। आज तो बुक-डिपो, रेल्वे-स्टाल, फुट[पाथ की] दुकानें—जहां भी देखिये, पाकेट-बुक्स [की] धूम है। इनसे पाठकों को मिलता क्या है? सनसनीखेज मनगढ़ंत जासूसी किस्से, अतिरंजित, बेतुकी घटनाओं पर आधारित झूठे रोमांटिक और उत्तेजक उपन्यास। जिम्मेवार पत्र-पत्रिकाएं भी इनका विरोध नहीं करतीं; उलटे इनके विज्ञापन छाप[कर] इनके प्रचार-प्रसार में सहायक होती और कमाई करती हैं। पाकेट-बुक्स [के] अधिकांश प्रकाशक लाइब्रेरी योजनाएं च[ला] रहे हैं और उनमें से कुछ योजनाओं [की] सदस्य संख्या हजार से ऊपर ही है।

क्या यह रुचि-विरूपण रोका [जा] सकेगा?

—चौधरी राजेंद्रसिंह, धनपुरी, म.[प्र.]

(२)

सामान्य पाठक के नाते मैं अश्कजी [के] इन विचारों से सहमत हूं कि 'बौद्धिक श[रीर] पर अंग्रेजी स्कूलों और कान्वेंटों का अस्ति[त्व] उत्तरोत्तर बढ़ती सांघातिक रसौलियों [की] तरह बदस्तूर बना हुआ है।' दक्षिण ब[स्तर] के आदिवासी क्षेत्र किरंदुल (बैलाडी[ला] परियोजना) के स्कूल में अंग्रेजी माध्[यम] जनता की इच्छा के विरुद्ध लाद दिया ग[या] है। इससे सहज ही सोचने को विवश हो[ना] पड़ता है कि 'शारीरिक रूप से गुलामी [से] मुक्ति पाने के बावजूद हम मानसिक रू[प से] आज भी गुलाम बने हुए हैं।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्कजी ने अंग्रेजों के मनोविज्ञान के संदर्भ में फ्रैंक हैरिस का जो उद्धरण दिया है, वह तो सही है। लेकिन अगर भारतीयों के मनोविज्ञान के बारे में यह कहा जाये कि भारतीय अंग्रेजों की नकल करने वाली एक जाति है और उसे अपनी भाषा और संस्कृति से कुछ लेना-देना नहीं है, तो बहुत गलत न होगा। अश्कजी को मेरी बधाई।

–चंद्रमोहन यादव 'मणी,' किरंदुल, बस्तर

(३)

अश्कजी ने कई गंभीर प्रश्न उठाय हैं। परंतु उनका यह कहना कि हम अभी तक हिंदी का एक अच्छा व्याकरण तक तैयार नहीं कर पाये हैं, सरासर गलत है। श्री किशोरीदास वाजपेयी का 'हिंदी शब्दानुशासन' स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद की रचना है और वह स्व. कामताप्रसाद गुरु के व्याकरण से कहीं श्रेष्ठ है। परंतु तथाकथित लेखकों के सुनियोजित षड्यंत्र के कारण श्रीवाजपेयीजी की पुस्तक को उसका न्यायोचित मान नहीं मिल रहा है।

–किशन दान, ग्राम पो. सींथल, वाया नापासर, जिला बीकानेर, राजस्थान

(४)

अश्कजी का भाषणांश (जून अंक) चर्चा का विषय हो सकता है; कुछ सवाल तो वाकई विचारणीय हो सकते हैं। लेकिन अधिकतया उन्होंने हर वर्ग को खुश करने की बातें कही हैं; उर्दू की जमकर वकालत की है और मुस्लिम लेखकों को भड़काने की कोशिश की है। अश्कजी बताये कि मुसलमान कब हिंदी नहीं जानते थे। उर्दू और पंजाबी के बहुत से लेखक जब उन भाषाओं के साहित्य में नहीं जम सके तो भड़भड़ाकर हिंदी में घुस आये; क्योंकि हिंदी के दरवाजे पर कोई चिक नहीं पड़ी है। स्वयं प्रेमचंद ने सबसे पहले 'बाजारे हुस्न' उर्दू में लिखा और जब उसे उर्दू में मान्यता नहीं मिली, तो वह हिंदी में छपा। आज भी बहुत से पंजाबी और मुस्लिम लेखक उर्दू में लिखते हैं और हिंदी में अनुवाद करके या करवाकर हिंदी के लेखक बने हुए हैं।

हिंदी के पाठ्यक्रम में यदि उर्दू लेखकों को पढ़ाया जाना है, तो बंगला, मराठी, तमिल, तेलुगु, उड़िया, गुजराती, असमिया के लेखकों ने क्या बिगाड़ा है कि उन्हें हिंदी साहित्य में न पढ़ाया जाये। राही मासूम रजा, बदीउज्जमा शानी, मेहरुन्निसा परवेज ये हिंदी के लेखक-लेखिका हैं। ये प्रतिभासंपन्न लोग किसी के उत्साहवर्द्धन के मुहताज नहीं हैं। हिंदी के पाठकों ने इन्हें अपना लिया है।

पाठ्यक्रम में किताब लग जाना कोई उपलब्धि नहीं है। जो लोग पाठ्यक्रम की दृष्टि से लिखते हैं या लिख रहे हैं, उनका लेखन स्कूल-कालेज की किताबें ही होकर रह जायेगा। सच्चा लेखक न तो पाठ्यक्रम की दृष्टि से लिख रहा है और न वकालत ही चाहता है। असल में अश्कजी का भाषण सांप्रदायिक है।

–विश्वभावन देवलिया, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५)

अश्कजी अगर क्रिकेट-प्रेमी नहीं हैं, तो यह न उनका अपराध है और न क्रिकेट का दुर्भाग्य। मगर हिंदी की हितरक्षा के लिए क्रिकेट को कुत्सित कहना जरूरी है क्या? हिंदी के परम-हितैषी पूज्य पुरुषोत्तमदास टंडन क्रिकेट के उत्कट प्रेमी थे। बेशक, अश्कजी को यह याद करके खुशी होगी कि जार्ज बर्नार्ड शा ने 'इलेवेन फ़ूल्स प्लेइंग एंड इलेवेन हंड्रेड फ़ूल्स वॉचिंग' कहकर क्रिकेट की खिल्ली उड़ायी थी।

अश्कजी मानते हैं कि क्रिकेट का भूत रेडियो ने लोगों के सिर पर चढ़ाया है। क्या वे बता सकते हैं कि वही रेडियो शास्त्रीय संगीत और मंत्रियों के भाषणों का भूत लोगों के सिर पर क्यों नहीं सवार करा पाता?

शा की उक्ति आपने अभी पढ़ी। शा के समकालीन ब्रिटिश संगीत-समीक्षक एवं क्रिकेट-रिपोर्टर सर नेविल कार्डस क्या अनुभव करते थे, यह भी कृपया पढ़ें:

'क्रिकेट में बहुत-सा सौंदर्य-तत्त्व है। कलाकार के लिए तो शायद वह न केवल ग्रीष्म के जीवनानंद का प्रतीक है, अपितु उसकी अपनी सौंदर्य-चेतना का ही विस्तार है। जब मैं गार्जियन में संगीत-समीक्षक था और मैन्चेस्टर में रहता था, तब कवेन्ट गार्डन में चल रहे संगीत-नाटकों की समीक्षा लिखने के लिए अक्सर लंदन आया करता था। सन १९३८ की एक दुपहर को लार्ड्स में वैली हेमॉन्ड को दुहरा शतक बनाते देखने के बाद मैंने १,५०० शब्दों की रिपोर्ट लिखी। बाद में उस रात जब कावेन्ट गार्डन गया, तो वहां मैंने स्प[ष्ट] अनुभव किया कि इस समय मेरा सौं[दर्य]-बोध-तापमान नीचा हो गया है। इस [इता]लवी संगीत-नाटक में गला फाड़कर [गा] रहे उन इतालवी गायकों का जो भी [स्वर] मेरे कानों में पड़ा, वह हेमॉन्ड के ग[ज़ब के] इनिंग्स से प्राप्त सौंदर्य बोधात्मक आ[त्मिक] उत्थान की तुलना में बिलकुल ही न-[कुछ] था।' ('कान्वर्सेशन्स विद कार्डस' में से)

—करुणाकर वर्मा, हैदराबा[द]

०००

दूर-दराज हिमतुंग शिखरों के आंच[ल में] बैठे मेरे जैसे पाठक के लिए **नवनीत** [मासिक] मास 'नव-मीत' की भूमिका निभाता है। ज्ञानवर्धक, प्रेरणादायी **नवनीत** नये विषयों को सूक्ष्मता और कुशलता से पा[ठकों] के समक्ष प्रस्तुत करता है। मई अंक [में] 'भूले-बिसरे वन-श्रमिक' में लेखक ने [जिस] सफलता से इन श्रमिकों की समस्याओं [को] प्रस्तुत किया है, वह निःसंदेह प्रशंसनीय है, परंतु हिमाचल प्रदेश के कुछ स्थानों के बारे [में] गलत जानकारी दी गयी है। जुब्बल जि[ला] नहीं, तहसील है। 'मूड़ल' को 'मूराल' [लिखा] गया है। चिरान के खर्च तथा लट्ठों [की] बिक्री की जो दरें दी गयी हैं, वे करीब [८] वर्ष पुरानी हैं। पर यह भी हो सकता [है] कि लेखक के इलाके में यही दरें हों। [इस] अंक में सभी सामग्री रोचक लगी। विशे[षकर] 'चेहरे बोलते हैं' तथा कविताएं।

—जगदीश शर्मा 'खड़ापत्थर', जुब्बल, हि[.प्र.]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

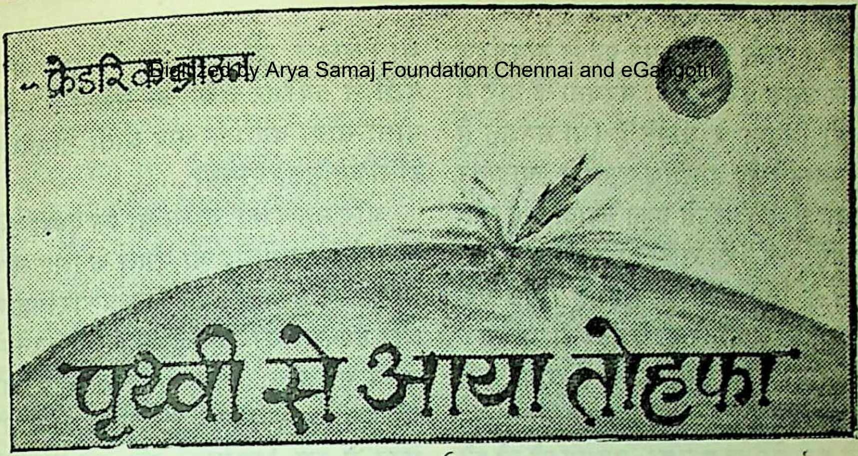

धार राइ अपने कमरे में अकेले बैठे थे—ध्यानावस्थित। दरवाजे के बाहर से उन्होंने विचार-तरंग पकड़ी, जो दस्तक का पर्याय थी; और दरवाजे पर दृष्टि डालते हुए उन्होंने संकल्प किया कि वह खुल जाये।

दरवाजा खुल गया। 'भीतर चले आओ मित्र!' उन्होंने कहा। अपना विचार वे टेलिपैथी द्वारा भी प्रेषित कर सकते थे; परंतु चूंकि दो ही व्यक्ति थे, इसलिए वाणी का उपयोग उन्हें अधिक शिष्टाचारपूर्ण लगा।

इजोन खी ने भीतर प्रवेश किया—'आज आप काफी रात गये जाग रहे हैं, नेताजी!'

'हां भाई खी। एक घंटे के अंदर ही पृथ्वी का राकेट मंगल पर उतरने वाला है और मैं उसे देखना चाहता हूं। हां, मैं जानता हूं कि वह यहां से एक हजार मील दूर उतरेगा, क्षितिज के पार—बशर्ते पृथ्वीवासियों की गणनाएं ठीक हों। किंतु उससे दुगुने दूर भी उतरे तो भी परमाणु-विस्फोट की चौंध तो दिखाई देगी ही। और इस प्रथम संपर्क की मैंने लंबी प्रतीक्षा की है। हालांकि इस राकेट पर कोई पृथ्वीवासी नहीं होगा, तो भी यही हमारा-उनका पहला संपर्क होगा—उनके लिए। बेशक हमारी टेलिपैथी-टोलियां कई सदियों से उनके विचार पढ़ती आ रही हैं; मगर मंगल और पृथ्वी के बीच पहला भौतिक संपर्क यही होगा।'

खी एक नीची कुर्सी पर आराम से बैठ गया। 'सच है', उसने कहा—'वैसे मैंने हाल की रिपोर्टें बहुत ध्यान से नहीं पढ़ी हैं। मगर वे परमाणु-बम का उपयोग क्यों कर रहे हैं? मैं जानता हूं, वे हमारे ग्रह को आबादी-रहित समझते हैं, मगर तो भी....'

'वे चंद्रमा पर रखे हुए अपने दूरदर्शकों से परमाणु-बम के विस्फोट की चौंध का पर्यवेक्षण करेंगे और—और उसे क्या कहते हैं वे लोग? — वर्णक्रम-दर्शीय विश्लेषण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे। उससे [illegible] के वायुमंडल और उसके धरातल की संरचना के बारे में अभी जितना वे जानते हैं (या समझते हैं कि जानते हैं; हालांकि उसमें से ज्यादातर गलत ही है), उससे बहुत ज्यादा बातें पता चलेंगी। खी, यह राकेट तो एक तरह से टोह लेने के लिए भेजा जा रहा है। कुछ एक वियुतियों के भीतर ही वे यहां आ पहुंचेंगे।'

मानो मंगल इसी आशा में प्राण थामे हुए था कि पृथ्वी आये। मंगल यानी उसका जो कुछ शेष रह गया था—लगभग नौ सौ की आबादी का यह छोटा-सा शहर। मंगल की सभ्यता पृथ्वी की सभ्यता से पुरानी थी; मगर वह म्रियमाण थी। उसका जो कुछ शेष था, वह यही था—एक शहर, नौ सौ मनुष्य! वे प्रतीक्षा कर रहे थे कि पृथ्वी उनसे संपर्क करे। इस प्रतीक्षा का एक स्वार्थ-पूर्ण कारण भी था, एक निस्वार्थ कारण भी।

मंगल की सभ्यता पृथ्वी की सभ्यता से न्यारी ही दिशा में विकसित हुई थी। उसने भौतिक विज्ञानों में कोई महत्त्वपूर्ण ज्ञान विकसित नहीं किया था, न उद्योगतंत्र ही विकसित किया था। मगर उसने सामाजिक विज्ञानों को इस हद तक आगे बढ़ा लिया था कि पिछले पचास हजार साल से मंगल पर युद्ध की तो बात ही क्या, कोई मामूली अपराध भी नहीं हुआ था। उसने परामनोविज्ञानों का पूर्ण विकास कर लिया था, जिनका कि पृथ्वी पर अभी पता लगना आरंभ ही हुआ था।

मंगल पृथ्वी को बहुत कुछ सिखा सकता था। [illegible] यही कि अपराध और युद्धों से क्योंकर बचा जा सकता है। इ सीधी-सादी बातों के बाद आतीं टेलिपैथी टेलिकिनेसिस, एम्पेथी......

और मंगल को आशा थी कि पृथ्वी उ वे चीजें सिखायेगी, जो मंगल के लिए औ भी अधिक मूल्यवान थीं—किस प्रकार विज्ञा और टेक्नालाजी (जिन्हें विकसित करने समर्थ मस्तिष्क अगर मंगल में रहे हों तो भी अब बहुत विलंब हो चुका था) की मदद से इस म्रियमाण ग्रह को जिलाया जाये और फिर से बसाया जाये, ताकि उ जाति जो वरना मर ही जायेगी, जीवित र सके और फिर से अपनी आबादी बढ़ा सके

इससे दोनों ग्रहों को बड़ा लाभ होत और नुक्सान दोनों में से किसी को भी होता। और आज की रात पृथ्वी अपन पहला टोह लेने वाला राकेट भेज रही थी। अगला प्रेषण—पृथ्वीवासी मनुष्यों या कम से कम एक मनुष्य से युक्त राकेट का प्रेषण- अगली वियुति में होता, यानी पृथ्वी के दो वर्षों और मंगल के चार वर्षों बाद। मंगल वासी इस बात को जानते थे। क्योंकि उनकी टेलिपैथी-टोलियों ने पृथ्वीवासियों के इतने विचार तो पढ़ ही लिये थे कि उनकी योजनाएं उन्हें पता लग गयी थीं। परंतु दुर्भाग्यवश यह संपर्क इकतरफा था। मंगल पृथ्वी से यह नहीं कह सकता था कि अपनी योजनाएं और जल्दी निबटाओ। न वह पृथ्वी के विज्ञानियों को मंगल की संरचना और वातावरण के बारे में ही बता सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, जिससे इस प्रारंभिक किस्म के राकेट भेजने की आवश्यकता न रह जाती।

आज रात 'नेता' (मंगलीय शब्द के सबसे निकट हमारा नेता शब्द ही पहुंच पाता है) राइ और उनके प्रशासन-सहायक एवं घनिष्ठ मित्र खी साथ बैठकर ध्यान करते रहे, जब तक कि राकेट के मंगल को छूने का क्षण निकट नहीं आ पहुंचा। तब उन्होंने भविष्य के स्वागत का प्याला पिया। यह मेन्थाल से निर्मित पेय था, जिसका मंगलवासियों पर वही परिणाम होता था, जो मदिरा का पृथ्वीवासियों पर होता है। फिर वे जिस इमारत में बैठे थे, उसकी छत पर चले गये। वे उत्तर की ओर देख रहे थे, जहां कि राकेट को उतरना था। तारे जोरों से चमक रहे थे—बिना टिमटिमाये !

× × ×

पृथ्वी की चंद्रमा पर स्थित वेधशाला-१ में दूरदर्शक के आइपीस पर आंख जमाये रॉग इवरेट विजयोल्लास में भरकर चिल्ला उठा—'विली, विस्फोट हो गया। और अब फिल्में डेवलप होने के साथ ही हम जान जायेंगे ..... उस बूढ़े मंगल ग्रह का रहस्य हम जान जायेंगे!' फिर उसने गरदन सीधी कर ली—अब देखने को कुछ बाकी न था—और उसने एवं विली सैंगर ने बड़ी संजीदगी से हाथ मिलाये। ऐतिहासिक क्षण था यह!

'आशा है, राकेट ने किसी की—मेरा मतलब है किसी मंगलवासी की—जान नहीं ली होगी। रॉग, क्या हमारा राकेट सिर्टिस मेजर के ठीक केंद्र में गिरा ?'

'केंद्र के जितना नजदीक हो सकता था, उतना नजदीक। मैं कहूंगा, शायद एक हजार मील परे, दक्षिण की ओर। और पांच करोड़ मील के क्षेपण में यह अंतर तो बहुत ही छोटा है। विली, क्या तुम सचमुच समझते हो कि मंगलवासियों का अस्तित्व है ?'

विली ने क्षण-भर सोचा, फिर कहा—'नहीं।'

वह ठीक ही कह रहा था।

[अनुवादक : शरद राकेश]

★

कुरुक्षेत्र

शाम है नाम एक रंग का,
ऊबी हुई उमंग का;
रात :
देह-युद्ध में हथियार
डालने का;
सुबह :
आत्म-निर्वासन का।

इस कुरुक्षेत्र में
जीतकर भी हम सब
चढ़ रहे हैं हिमालय की
ठंडी ऊंचाइयों पर
किसी अज्ञात नरक का द्वार
खटखटाने के
लिए।

— अरुण सेदवाल —

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजबूत काठी में नरम-सा दिल

उदयन शर्मा

जिस समय यह अंक पाठकों के हाथ में होगा, भारतीय हाकी दल मांट्रियल ओलिंपिक में अपने अंतिम मैच खेल रहा होगा। यदि हमारी टीम ३० जुलाई को (भारतीय समय के अनसार ३१ जुलाई) खेले जाने वाले फाइनल में जीतती है, तो यह मुकाबला भारतीय दल के कप्तान अजितपाल सिंह के अंतरराष्ट्रीय हाकी जीवन का आखिरी मैच होगा। जो अजितपाल के बहुत निकट हैं उनके अनुसार, अजितपाल यह तय करके ही मांट्रियल गये हैं कि इसके बाद वे बड़ी अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं से संन्यास ले लेंगे।

१९६८ के मेक्सिको सिटी ओलिंपिक और १९७६ के मांट्रियल ओलिंपिक में भारतीय हाकी की दृष्टि से अजीब नाता है। मेक्सिको सिटी ओलिंपिक अजितपाल सिंह का पहला ओलिंपिक था, जिसमें न्यूजीलैंड से पराजित भारतीय दल में भारी फेर-बदल हुआ था और एक नये लड़के अजितपाल को पश्चिम जर्मनी के खिलाफ खिलाया गया। वह जगजीत सिंह के स्थान पर आया था। तब से आज तक सेंटर हाफ के रूप में वही [illegible] रहा है।

१९६८ में हमारे दल के कप्तान पृथ्वी-पाल सिंह थे। वह पृथ्वीपाल के ओलिंपिक हाकी-जीवन का अंतिम साल था। १९[illegible] के बाद १९७६ में पृथ्वीपाल पुनः ओलिंपिक हाकी में सक्रिय हुए—चयनकर्ता के रूप में और उन्होंने वह बात न होने दी, जो १९[illegible] में उनके साथ हुई थी। उन दिनों भारतीय हाकी संघ अखाड़ेबाजों का जमघट था। पृथ्वीपाल को नीचा दिखाने के लिए गुरु-बख्श सिंह को संयुक्त कप्तान बनाकर भेजा गया था। मांट्रियल में गुरुबख्श भारतीय दल के साथ प्रशिक्षक के तौर पर हैं।

मांट्रियल के लिए कप्तान के चुनाव के समय भारतीय दल के मैनेजर आर.एस. भोला का तर्क था कि अजितपाल बहुत ही सहृदय और नरम हैं, जो कप्तानी के अनु-कूल नहीं है। शायद वे (श्री भोला) क्रिकेट और हाकी की कप्तानी में फर्क करने को तैयार नहीं थे। परंतु पृथ्वीपाल अजितपाल के लिए डटे रहे, क्योंकि विश्व कप हाकी में अजितपाल के सफल नेतृत्व को नकारना संभव नहीं था।

अजितपाल इस समय भारतीय हाकी खिलाड़ियों में सर्वाधिक संमानित खिलाड़ी हैं। वे न होते तो लेफ्ट आउट हरचरण और लेफ्ट इन गोविंदा कप्तानी के दावेदार होते और तब भारतीय दल सीधे दो गुटों में बंट जाता। अजितपाल ही सभी खिलाड़ियों में समान रूप से लोकप्रिय हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मांट्रियल अजितपाल का तीसरा ओलिंपिक है और तीनों ओलिंपिक जिन शहरों में हुए उनके नाम 'म' से शुरू होते हैं—मेक्सिको सिटी, म्यूनिख और मांट्रियल।

आज हाकी की दुनिया में अजितपाल को विश्व का सर्वश्रेष्ठ सेंटर हाफ माना जाता है। वे किसी भी परिस्थिति में हौसला नहीं हारते हैं। कुआला लंपुर की विश्व-कप हाकी में अर्जेंटाइना से पराजित होने के बाद मृदुभाषी अजितपाल ने कहा था—'कुछ भी हो, इस बार खाली हाथ वापस नहीं जाना है।' यही आत्मविश्वास मांट्रियल जाने से पहले उनके चेहरे पर था।

सेंटर हाफ पर अजितपाल को खेलते देखना संगीत सुनने सरीखा है। उनके तैरते-से कदम, लयात्मक तालमेल, लोचदार कलाई का कमाल और गजब का पूर्वानुमान उनके तकनीकी चमत्कार की विशेषताएं हैं। उनकी लंबी पहुंच विपक्षी के आक्रमण को विफल करने में हमेशा सहायक होती है। तेहरान एशियाई खेलों में भारत जब पाकिस्तान से हार रहा था, अकेले अजितपाल अंतिम क्षण तक संयम और लगन से खेलते रहे थे। खेल में यह तन्मयता और समर्पण-भावना उन्हें अन्य खिलाड़ियों से ऊपर उठा देती है।

सेंटर हाफ किसी भी हाकी-दल के आक्रमण का स्वरूप बदल सकता है। वस्तुतः तेज-तर्रार सेंटर हाफ आक्रमण के समय सेंटर फारवर्ड के स्थान पर और सुरक्षात्मक खेल में पीछे फुल बैक का दायित्व निभाता है। अजितपाल इसमें तो खरे उतरते ही हैं, साथ ही विंगरों को वे जिस चतुरता से 'फीड' करते हैं, वह विपक्ष के लिए बहुत घातक होता है। कुआला लंपुर में अजितपाल के खेल से अक्सर यही अहसास होता था कि उनका बस चलता तो वे गोली भी बन जाते।

अजितपाल की बढ़त का कौन कितना

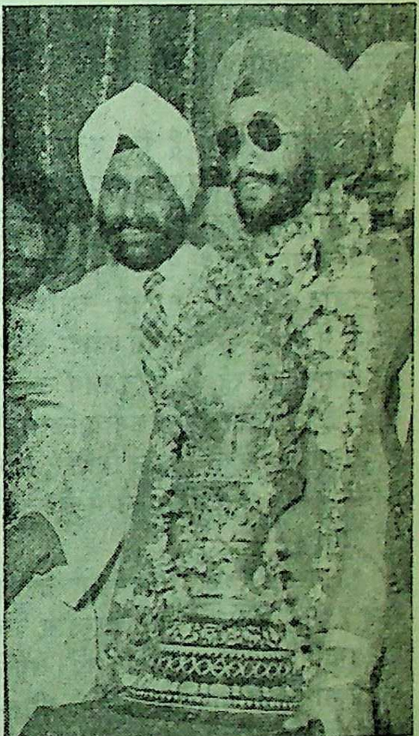

सन १९७५ के विश्व हाकी कप की विजेता टीम के कप्तान अजितपाल सिंह। बायीं ओर हैं पंजाब के खेल मंत्री श्री उमराव सिंह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फायदा उठाता है, यह दल के विंगरों पर निर्भर करता है। तेहरान एशियाई खेलों के बाद भारत आयी एशियाई एकादश के पाक खिलाड़ियों ने स्पष्ट कर दिया था कि भारतीय खिलाड़ी अजितपाल का पूरा उपयोग नहीं करते हैं। किंतु इससे इन्कार नहीं हो सकता कि मैदान में भारतीय हाकी-दल का दिमाग अजितपाल ही होता है। वे पूर्वनिश्चित योजना के अंतर्गत आक्रमण, गेंद-नियंत्रण और सटीक 'पास' द्वारा प्रतिपक्ष की रक्षापंक्ति को बौखलाहट में डाल देते हैं।

अजितपाल कहते हैं कि उनमें और पाकिस्तानी सेंटर-फारवर्ड रशीद में हमेशा दोस्ताना संघर्ष रहता है। भारत-पाक मैचों में अजितपाल-रशीद मुकाबला बहुत ही कांटाजोड़ होता है। संभवतः रशीद को रोकने में विश्व-भर में सबसे ज्यादा सफल अजितपाल ही रहे हैं। परंतु स्वयं उनका कहना है कि रशीद ऐसा एकमात्र खिलाड़ी है, जिसने उन्हें बहुत परेशान किया है और जिसने अक्सर उन्हें झांसा देने में सफलता भी पायी है।

१ अगस्त १९४७ को जनमे अजितपाल सिंह १९६६ में पहली बार भारतीय दल के साथ विदेश-दौरे पर जापान गये। अगले वर्ष वे भारत की ओर से लंदन में प्री-ओलिंपिक में भी खेले। १९६८ में जर्मनी के खिलाफ अपने पहले ही मैच में उन्होंने अपने कप्तान पृथ्वीपाल से शाबाशी पायी और उनका दिल जीत लिया।

सन १९७० के बैंकाक एशियाई खे... के बाद १९७१ में पहली बार अजित... को भारतीय दल की कप्तानी का अ... मिला सिंगापुर में आयोजित पेस्ता... हाकी प्रतियोगिता में और अपनी कप्तानी... प्रथम टूर्नामेंट से वे विजयी होकर लौ...

१९७१ में प्रथम विश्व-कप हाकी ब... लोना (स्पेन) में खेला गया। भार... कप्तान थे—अजितपाल। परंतु भारत ती... नंबर पर ही रह गया। १९७२ के ओ... पिक में अजितपाल को हरमीक सिंह की... १९७३ के एम्स्टरडम विश्व-कप में ... की कप्तानी में खेलना पड़ा और दोनों ... वे बड़ी लगन और ईमानदारी से खेले।

१९७४ में उन्हें तेहरान एशियाई ... लिए कप्तान चुना गया। भारतीय दल ... भी जीत नहीं पाया। लेकिन हाकी-जग... अजितपाल की धाक जम गयी। ... १९७५ के विश्व-कप मैच से पहले ... और घटिया नाटक हुआ। कुआला लंपु... कप्तानी के लिए अधिकृत रूप से हर... के नाम की घोषणा हो गयी। दिल्ली से ... बड़े अधिकारियों ने फोन आदि किये, ... अजितपाल को उनका न्यायोचित स... मिला और १५ मार्च १९७५ को उ... कुआला लंपुर में मलेशिया के प्रधान... तुन अब्दुल रजाक के हाथों से विश्व ... प्राप्त किया।

वे रशीद के बाद हालैंड के फा... खिलाड़ी टीज क्रुज (जिन्होंने मोटर-दुर्घ... के बाद हाकी छोड़ दी), स्पेनी गोली का...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चिम जर्मनी के माइकेल पीटर और हॉर्स्ट ट्रेज, मलेशिया के पून फोक और पाकिस्तान के इस्लाहुद्दीन और समीउल्ला को विश्व के सर्वश्रेष्ठ हाकी खिलाड़ियों में गिनते हैं, जिनके खिलाफ वे खले हैं।

अजितपाल को आज विश्व का सर्वश्रेष्ठ सेंटरहाफ माना जाता है; पर उन्होंने खालसा कालेज (लायलपुर) की ओर से फुलबैक के रूप में खेलना शुरू किया था। कालेज के शारीरिक परीक्षक ने उन्हें सुझाया कि उनकी लंबी मजबूत काठी और चुस्ती सेंटर हाफ के लिए उपयुक्त है। अजितपाल को यह परिवर्तन पसंद नहीं आया; वे एक सप्ताह तक अभ्यास में नहीं गये। परंतु प्रशिक्षक ने उन्हें समझाकर सेंटर हाफ पर खिलाना शुरू किया। यह किस्सा तो कई लोगों के मुंह से मैंने सुना है, पर उन दूरदर्शी प्रशिक्षक महोदय का नाम मुझे अब तक सुनने को नहीं मिला है। अजितपाल को सेंटर हाफ पर खेलने के लिए राजी करके उन्होंने भारतीय हाकी पर बड़ा उपकार किया है। वे अजितपाल की ही नहीं, हमारी भी कृतज्ञता के अधिकारी हैं।

—डी १६, निजामुद्दीन पूर्व, नयी दिल्ली-१३

★

गोमाता का हम पर कितना ही ऋण क्यों न हो, मगर मनुष्य का सबसे पुराना पशु-मित्र है कुत्ता। पुरातत्त्व इसका साक्षी है। बीस साल पहले इराक के पालेगवरा नामक स्थान पर एक प्राचीन गुफा में कुत्ते के जबड़े का जीवाश्म शिकागो विश्वविद्यालय के डा. ब्रूस होव को मिला था। उसके फ्लुओरीन-विश्लेषण से अब प्रकट हुआ है कि यह जीवाश्म १४,००० वर्ष पुराना है। यह अब तक प्राप्त प्राचीनतम अवशेष है किसी भी पालतू जानवर का। इससे पहले इडाहो (अमरीका) से मिले कुत्ते के जीवाश्म को प्राचीनतम समझा जाता था, जो कि १०,५०० वर्ष पुराना था। लगभग उसी जमाने के कुछ भेड़-बकरियों के हड्डियों के भी जीवाश्म मिले थे।

अधिकांश विद्वान ऐसा मानते हैं कि कुत्ते का विकास भेड़िये से हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रागैतिहासिक मानव ने भेड़िये को पालतू बनाना शुरू किया। मगर भेड़िये को विकसित होकर पालेगवरा के कुत्ते की स्थिति तक पहुंचने में कई हजार वर्ष लगे होंगे, ऐसी शिकागो विश्वविद्यालय के डा. रावर्ट ब्रेय्डवुड की मान्यता है। पालेगवरा के कुत्ते के दांत भेड़िये के दांतों के बजाय वर्तमान कुत्तों के दांतों से मिलते हैं। डा. ब्रेय्डवुड यह भी मानते हैं कि पहले-पहल कुत्ता केवल रखवाली करता था। बाद में जब मनुष्य ने भेड़-बकरियों को पालतू बनाया, कुत्ता चरवाहे की तरह रेवड़ की देखभाल भी करने लगा।

कहीं ऐसा तो नहीं कि मनुष्य के सबसे पुराने मित्र की हैसियत से ही कुत्ते को स्वर्ग ले गये हों युधिष्ठिर—युधिष्ठिर जिनकी ऐतिहासिकता के बारे में आज इतिहासज्ञों के बीच महाभारत छिड़ा हुआ है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये सज्जन अफवाह नहीं फैला रहे हैं। नवनीत ने अपना मूल्य २० प्रतिशत घटा दिया है।

अब नवनीत के दाम हैं

केवल २ रुपये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नवनीत

नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान
और मनोरंजन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिरी ऐयाशी

एक सूफी कुशल व्यापारी भी था और उसने बहुत धन कमाया था। उससे मिलने आने वाला कोई आदमी उसके ऐश्वर्य को देखकर स्तंभित रह गया और उसने जाकर लोगों से कहा—'मैं फलां सूफी के पास गया था। उसके पास तो ऐयाशी की हर चीज है।'

जब यह बात सूफी के कानों तक पहुंची, तो उसने कहा—'मैं जानता था कि मेरे पास ऐयाशी की लगभग हर चीज है। मगर एक चीज की कमी थी। लेकिन अब मैं जानता हूं कि जिस दिन वह आदमी आया, उस दिन उस आखिरी ऐयाशी की भी पूर्ति हो गयी।'

किसी ने पूछा कि वह आखिरी ऐयाशी क्या है?

'आखिरी ऐयाशी यह है कि हमसे ईर्ष्या करने वाला कोई हो।'

—इदरीस शाह

यशोदा और कृष्ण (आंध्र प्रदेश)
[अनुकृति : वी. एन. ओके]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुबीर

जीवन-तीर्थ

जो व्यक्ति वास्तव में महान है, वह प्रत्येक मनुष्य को महान होने का एहसास दिलाता है। —चार्ल्स डिकन्स

प्रसिद्ध नीग्रो नेता फ्रेडरिक डग्लस ने राष्ट्रपति लिंकन के साथ दासता-उन्मूलन की लड़ाई में महत्त्वपूर्ण भाग लिया था। लिंकन को वे बहुत निकट से जानते थे और उनका बड़ा मान करते थे। एक बार किसी ने उनसे पूछा—'आपकी नजर में लिंकन इतने महान क्यों हैं?'

डग्लस ने उत्तर दिया—'वे एक ऐसे व्यक्ति हैं, जिनसे मिलते तथा बातचीत करते हुए मुझे कभी यह एहसास नहीं हुआ कि मैं एक नीग्रो हूं।'

जो मनुष्य महानता प्राप्त करना चाहे, उसे महानता की चिंता छोड़कर सत्य को ढूंढ़ना चाहिये। तब वह दोनों को ही पा जायेगा। —होरेस मान

एक वेश्या संत फ्रांसिस के पास जाकर बोली—'मैं अपने पापों को स्वीकार करने के लिए आपके पास आयी हूं।' संत उसे पास के गिरजे में ले गये। वहां अपने सारे पाप बयान करने के बाद वह पूछ बैठी—'पिता, यह सब सुनने के बाद मेरे बारे में आ... क्या खयाल है?'

संत ने सहज स्नेह के साथ उत्तर दि... 'अब मैं तुम्हें एक पवित्र नारी के रूप में ... रहा हूं। दूसरे लोग तुम्हें शायद उसी ... रत की नजर से देखें, जिससे उन्होंने ... मैग्डेलीन को देखा था। लेकिन तुम जा... हो कि यीशु ख्रिस्त ने उसे प्यार और ... दर्दी की नजर से देखा था, और आखिर ... देवी बन गयी थी?'

महानता शक्तिशाली बनने में ... बल्कि शक्ति का सही उपयोग करने में ... —हेनरी वार्ड ...

महान फ्रांसीसी दार्शनिक देकार्त से ... व्यक्ति बहुत बुरी तरह पेश आया। ... देकार्त ने उससे एक भी कटु शब्द नहीं ... और उसी प्रकार शांत-गंभीर बने रहे।

इसका पता लगने पर एक मित्र ... बोला—'वह आपकी सरासर बेइज्जती ... गया और आप चुप रहे! आपको उसे ... खरी-खरी सुनानी चाहिये थी कि ... मुंह बंद हो जाता।'

देकार्त तब हल्का-सा मुस्कराकर बो...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'जब कोई मुझसे दुर्व्यवहार करता है, मैं अपनी आत्मा को उस बुलंदी पर ले जाने की कोशिश करता हूं; जहां कोई दुर्व्यवहार उसे छू न सके।'

महान मनुष्यों के सामने मनोरथ होते हैं; आम मनुष्यों के सामने केवल इच्छाएं होती हैं। —वाशिंगटन अर्विंग

भारत को आजादी मिलने के बाद एक शाही भोज में विन्स्टन चर्चिल ने निजी बातचीत में जवाहरलाल नेहरू का जिक्र आने पर कहा था :

'मैं उन्हें समकालीन इतिहास में संसार के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों में से मानता हूं। उनकी सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि यह है कि उन्होंने द्वेष को जीता है, उन्होंने भय को जीता है।'

पर स्वयं नेहरूजी क्या सोचते थे ? १४ अगस्त १९४७ की रात को संविधान-सभा में अपने ऐतिहासिक भाषण में उन्होंने कहा था—'एक महान लक्ष्य के लिए हम लोग जूझे थे और उस लक्ष्य की महानता की तनिक-सी झलक हम लोगों पर पड़ गयी थी।'

छोटा देश जैसी कोई चीज नहीं होती। राष्ट्रों की महानता का आधार उनकी जनसंख्या नहीं होती, जैसे कि व्यक्ति की महानता का आधार उसका कद नहीं होता।

—विक्टर ह्यूगो

कहते हैं, पूर्वी दुनिया के एक राजा ने अपने देश के सब सयानों से कहा कि ऐसा एक वाक्य लिख दीजिये जिसे मैं हमेशा अपनी आंखों के सामने रख सकूं, जो सत्य हो और सब समय के लिए उपयुक्त हो। वे सयाने लिख लाये—'और यह भी बीत जायेगा।' कितना कुछ कह डालता है यह वाक्य ! अभिमान और मद के क्षणों में यह कैसी मलामत करता है ! गहरी वेदना और कष्ट के क्षणों में कितना ढाड़स बंधाता है !

—अब्राहम लिंकन

× × ×

राष्ट्रपति लिंकन ने कल रात एक सपना देखा। वे सामान्य आदमियों के एक समूह में थे। जब पता चला कि वे कौन हैं, तो लोग उनकी शक्ल-सूरत के बारे में टिप्पणियां करने लगे। एक ने कहा—'ये तो सामान्य-से दिखने वाले आदमी हैं !' राष्ट्रपति ने यह सुनकर उत्तर दिया—'सामान्य-से दिखने वाले आदमी दुनिया में सर्वोत्तम आदमी होते हैं। यही तो कारण है कि ईश्वर उन्हें बहुत बड़ी संख्या में बनाता है।'

('जॉन हे के पत्र और रोजनामचे के अंश' से)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक विभूतिमान मनीषी

*** लक्ष्मीशंकर व्यास ***

भारतवर्ष की ऋषि-परंपरा के प्रतिनिधि तथा अध्यात्मधारा की प्रतिमूर्ति महामहोपाध्याय पंडित गोपीनाथ कविराज २२ जून १९७६ को वाराणसी में देह-बंधन से मुक्त हो गये। वे उन महान मनीषियों में थे, जिन्होंने भारतीय संस्कृति, संस्कृत-साहित्य तथा अध्यात्म-ज्ञान की परंपरा को न केवल अक्षुण्ण रखा, अपितु उस अखंड-धारा को पुष्ट करके अग्रसर भी किया। जितना गहन और व्यापक उनका पांडित्य था, उतनी ही उत्कट उनकी आत्मसाधना थी। बौद्धिकता और आध्यात्मिकता का ऐसा मणि-कांचन संयोग अति दुर्लभ होता है।

आज से चार वर्ष पहले की वह संध्या मेरे जीवन की अमूल्य निधि है, जब मैंने काशी में सिगरा-स्थित उनके साधना-मंदिर में उनके दर्शन किये थे। तिमंजिले भवन का दक्षिण-पूर्वी कमरा था और शाम के आठ बज रहे थे। कविराजजी ने संध्या की योग-साधना अभी-अभी समाप्त की थी। मैंने देश की निराशाजनक दशा के बारे में कुछ निवेदन किया; इस पर उन्होंने कहा था—'दिव्य आदिशक्ति का आविर्भाव अब शीघ्र ही होने वाला है। मां अपनी संतानों के कष्टों से बहुत ही दुःखित और व्यथित हैं। उ... पीड़ा असह्य हो रही है। मां का प्राक... सबके कल्याण के लिए शीघ्र ही हो... वर्तमान विषमताओं का अंत निकट है।'

ये शब्द कहते समय श्री कविराजजी... मुख-मंडल पर एक अलौकिक आभा... आयी थी। उनकी वाणी से ऐसी शक्ति... स्फूर्ति प्रवाहित हो रही थी कि मेरे... निशि-दिन सांसारिक वार्ताओं में नि... रहने वाला पेशेवर पत्रकार भी आ... की दिव्यानुभूति से विभोर हो उठा... प्राचीन काल में ऋषि-मुनियों के आश्रम... जाकर लौकिक जनों को जिस शांति... आनंद की प्राप्ति होती थी, उसका प्रत्य... अनुभव मुझे उस सांझ हुआ।

आध्यात्मिक पिपासा कविराजजी... बाल्यकाल से ही थी। वे आत्मसाक्षात... को ही जीवन का सर्वोच्च लक्ष्य मा... थे। उनका कथन था—'आत्मा ब्रह्मस्व... है। आत्मा ही परमेश्वर है। आत्मा... जानने योग्य है। अतः आत्मस्वरूप में... चरम स्थिति होनी चाहिये। मूल में... अखंड महाप्रकाश है, जो स्वरूपतः अ... च्छिन्न है, अपरिमित है और पूर्ण स्वातं...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मय है। यह महाप्रकाश द्रष्टा तथा दृश्य रूप में देखने योग्य है।'

उनकी विशेषता यह थी कि अपनी गहन अध्यात्म-साधना के गूढ़ रहस्यों को भी वे दूसरों के आत्मविकास के निमित्त बड़े ही सहज और उदार भाव से प्रकट किया करते थे, जो उनकी लोक-मंगल-भावना की परिचायक है।

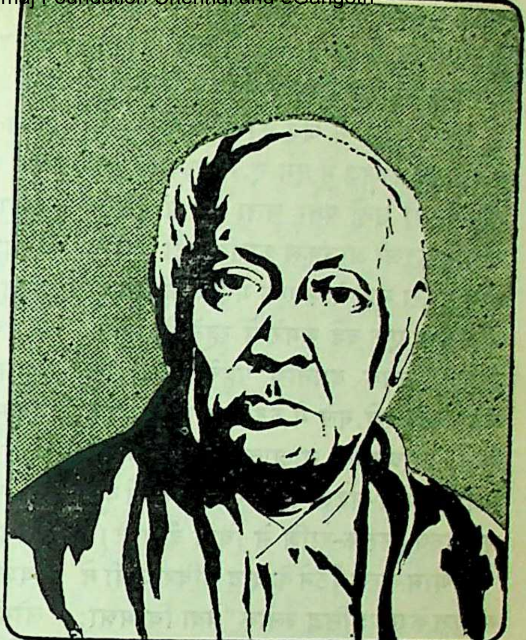

अपनी जीवन-कथा को वे 'अचिंत्य महाशक्ति की एक लीला' मानते थे। एक दशक पूर्व जब एक विद्वान ने उनकी जीवनी लिखने की अनुमति मांगी थी, तो उनकी मुखमुद्रा कुछ गंभीर हो गयी थी और उन्होंने कहा था :

'मेरी जीवनी का अर्थ है—माई पिक्चर इन दि हैंड्स ऑफ़ द डिवाइन। मैंने स्वयं अपने जीवन के अध्ययन का प्रयत्न किया; किंतु पूरी सफलता नहीं प्राप्त कर सका। जीवन की कोई घटना निरर्थक नहीं होती। छोटी से छोटी घटना में भी कोई न कोई गंभीर रहस्य छिपा रहता है। सर्वाधिक महत्त्व द्रष्टा होकर अपने जीवन की ओर लक्ष्य करने में है; परंतु सामान्यतया यह संभव नहीं। वहिरंग जीवन का नहीं, अंतरंग का अनुसंधान होना चाहिये। जीवन किस प्रकार अदृष्ट के हाथों ढाला जा रहा है, इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है।'

आत्मविद्या तथा साधना में कविराजजी को अनेक संतों तथा साधकों का मार्गदर्शन मिला। इनमें प्रमुख थे—श्री शिवरामकिंकर (योगत्रयानंद), स्वामी विशुद्धानंद, राम-ठाकुर, पागल बाबा, सिद्धिमाता, सतीश-चंद्र मुखर्जी तथा मां आनंदमयी।

सर्वप्रथम उनकी जीवनधारा को नया मोड़ दिया 'आर्यशास्त्रप्रदीप' नामक पुस्तक ने, जो एक विशाल दार्शनिक ग्रंथ की प्रस्तावना थी। वस्तुतः यह ग्रंथ अध्यात्मविद्या का विश्वकोश-सा था। पर उसमें लेखक का नाम कहीं नहीं लिखा था। कविराजजी ने लेखक का नाम-पता खोजने का प्रयास किया, पर सफलता नहीं मिली। किंतु वे निराश नहीं हुए। अंततः जयपुर में अपने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्ययन-काल में उन्हें ज्ञात हुआ कि 'आर्य-शास्त्रप्रदीप' के प्रणेता श्री शिवरामकिंकर हैं, जो कि महात्मा शिवरामानंद के शिष्य हैं।

सन १९१२ में जब कविराजजी काशी में क्वीन्स कालेज में एम.ए. में अध्ययन कर रहे थे, तो उन्हें पता चला कि श्री शिवरामकिंकरजी आजकल काशी में ही हैं और सोनारपुरा मुहल्ले के एक मकान की दूसरी मंजिल के एक बड़े कमरे में रहते हैं। कविराजजी उनके दर्शनार्थ पहुंचे। देखा कि लंबी जटा रखे, गले में रुद्राक्ष-माला धारण किये, प्रसन्नवदन, साक्षात् शिव की भांति तेजोमय मुख-मंडल वाला एक गौरवर्ण वृद्ध महापुरुष पुस्तक-राशि से घिरा बैठा है।

प्रणाम करके बैठने के बाद कविराजजी ने संस्कृत के एक प्रसिद्ध श्लोक 'वेदा विभिन्नाः स्मृतयो विभिन्ना नाऽसौ मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्। धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायां महाजनो येन गतः स पन्थाः।।' को उद्धृत करके यह जिज्ञासा उपस्थित की कि तत्त्वज्ञानी मुनि तो पूर्ण सत्य के साक्षात् स्वरूप होते हैं, क्या उनमें भी मतभेद संभव है? महात्मा शिवरामकिंकरजी ने उनकी बुद्धिमत्ता की सराहना करते हुए उत्तर दिया:

'धर्म का तत्त्व अत्यंत गंभीर रहस्य है। वह मन से अतीत है। मन का निरोध किये बिना इस गुहा में प्रवेश असंभव है। मुनिवर्ग मन को लेकर शास्त्रों की व्याख्या करता है। अतः उनके मतों में विभिन्नता स्वाभाविक है। तत्त्व का साक्षात्कार मन का अतिक्रमण करके होता है; किंतु उस स्थिति में साक्षात्कार कर लेने पर भी वर्णन नहीं सकता। तत्त्व का साक्षात्कार होता है, मन नहीं रहता। वह निर्विकल्प स्थिति तत्त्व का उपदेश होता है वाक्यों से, मन की आवश्यकता होती है। वेद-शब्दात्मक हैं, अतः प्रामाणिक होते हु वे भावविकल्प-रहित नहीं। मुनि भी म शील हैं, वे विकल्प से रहित नहीं। अतः के तत्त्वान्वेषण के लिए हृदय-गुहा में प्र करना आवश्यक है। जन-साधारण के एकमात्र उपाय है—महापुरुषों द्वारा निर्दि मार्ग का अनुसरण करना।'

सन १९११ से १९१७ तक पूरे सात कविराजजी स्वामी शिवरामकिंकरजी विशेष संपर्क में रहे। ये सिद्ध महात्मा प्र लोगों से मिलते नहीं थे। उन्होंने एक दर्शनार्थ द्वार पर उपस्थित कश्मीर-न हरिसिंह को निराश लौटा दिया था। अनुचरों को उन्होंने आदेश दे रखा था गोपीनाथ जब भी आयें, मेरे पास पहुं देना। यह कविराजजी की पात्रता और पर गुरु की अनुकंपा दोनों का सूचक भगवदाश्रय की महिमा तथा उसकी सा अनुभूति कविराजजी को इन्हीं से उप हुई।

अपने दीक्षागुरु स्वामी विशुद्धानंदजी प्रथम दर्शन कविराजजी को जनवरी १९ में मिला, जिनसे उन्होंने उसी मास २१ को हनुमान घाट पर मंत्रोपदेश पाया। दी में प्राप्त छोटे-से मंत्र से जीवन में परि कैसे होगा, वे समझ न सके; परंतु गुरु

अ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्देशानुसार सात दिन तक अनुष्ठानपूर्वक ...त्रराज का जप करते रहे। अंतिम दिन उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि सारा पूजागृह विद्युत-प्रवाह से आलोकित और शक्तिमय हो गया है। वे आश्चर्य से चकित रह गये। अगले दिन जब उन्होंने इस अनुभूति की चर्चा गुरुदेव से की, तो उत्तर मिला—'एक छोटे-से मंत्र में जो शक्ति है, वह समस्त विश्व में उपलब्ध विद्युत-शक्ति के पूंजीभूत रूप में भी संभव नहीं।'

स्वा. विशुद्धानंदजी ने शिष्य को प्रतिभा-संपन्न और सुपात्र जानकर योग और विज्ञान के रहस्यों की सैद्धांतिक ही नहीं, व्यावहारिक शिक्षा भी दी। काशी में गंगा-किनारे टहलते-टहलते यह ज्ञानदान होता था। स्वामीजी ने शिष्य को समझाया—'योग की मुख्य वस्तु प्राकृत नेत्रों से नहीं दिखाई देती। विज्ञान के प्रयोगों का फल प्रत्यक्ष दिखाई देता है। प्राचीन काल में भारत में योगविद्या का बहुत प्रचार था। उसी से यह देश आध्यात्मिक उन्नति के साथ ही भौतिक उन्नति की पराकाष्ठा तक पहुंच गया था। विज्ञान में आज जिस आकर्षण-शक्ति को इतना महत्त्व दिया जा रहा है, उसका मूल सूर्य है। इस रहस्य को जान लेने पर चंद्र, नक्षत्र, वायु, पृथ्वी आदि के विज्ञान करतल-गत हो जाते हैं।'

इस प्रकार कविराजजी की अंतर्मुखी योग-साधना का सतत विकास होता गया। अपने गुरुदेव द्वारा हनुमान घाट तथा मलदहिया क्षेत्र में संस्थापित आश्रमों की व्यवस्था भी वे ही करते रहे। 'श्रीविशुद्धानंद-कानन' आज भी स्वामीजी की आत्म-साधना की स्थली के रूप में विद्यमान है। यहां स्वामीजी ने एक विज्ञान-मंदिर का भी निर्माण कराया था। परमहंस विशुद्धानंदजी ११ जुलाई १९३७ को ब्रह्मीभूत हो गये। परंतु उनके बताये मार्ग पर कविराजजी योग एवं अध्यात्म की साधना में अग्रसर होते रहे। उनका कहना था कि कोई भी शंका उठने पर उसका समाधान उन्हें गुरुदेव की व्यापक आत्मा से उपलब्ध हो जाता था।

कविराजजी का जन्म ७ सितंबर १८८७ को वर्तमान बाङलादेश के धामराई नाम के ग्राम में हुआ था। उसके पांच महीने पूर्व ही उनके पिता श्री वैकुंठनाथ का निधन हो चुका था। माता सुखदासुंदरी ने बड़े ही धार्मिक-आध्यात्मिक वातावरण में बालक का पालन-पोषण किया। प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा गांव में हुई, फिर कविराजजी ने कलकत्ता में रहकर मैट्रिक-परीक्षा उत्तीर्ण की।

कलकत्ता में पिता के कई मित्रों तथा सहपाठियों ने कविराजजी की बड़ी सहायता की; क्योंकि वे सब इनकी बहुमुखी प्रतिभा के कायल थे। पिता के बुजुर्ग परिचितों के समक्ष कविराजजी अपनी अध्यात्ममूलक जिज्ञासाएं भी प्रस्तुत करते। परंतु कलकत्ता में मलेरिया से पीड़ित हो जाने के कारण वे राजस्थान में जयपुर चले गये और वहां के महाराजा कालेज से उन्होंने इंटर व बी. ए. की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन १[illegible] में वे काशी आये और क्वीन्स कालेज में एम. ए. कक्षा में नाम लिखवाया। उन दिनों इस कालेज के प्राचार्य थे डा. वेनिस। वे कविराजजी की प्रतिभा एवं अध्यवसाय से अत्यंत प्रभावित हुए।

अब तक कविराजजी की रुचि विशेषत: संस्कृत, प्राकृत तथा दर्शनशास्त्र में ही थी। डा. वेनिस ने सलाह दी कि पुरातत्त्व का भी अध्ययन करो। अत: कविराजजी संस्कृत साहित्य, अंग्रेजी साहित्य के साथ पुरातत्त्व भी पढ़ने लगे। अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन उन्होंने नार्मन साहब से किया और पुरालेखशास्त्र का डा. वेनिस से। साथ ही वे महामहोपाध्याय पं. वामाचरण न्यायाचार्य से दर्शन भी पढ़ते रहे।

ज्ञानार्जन का यह अनुष्ठान अखंड रूप से चलता रहा और १९१३ में जब इलाहाबाद विश्वविद्यालय के एम. ए. का परीक्षाफल घोषित हुआ, तो कविराजजी ने उसमें प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। फौरन लाहौर तथा जयपुर से प्राध्यापक-पद पर उनकी नियुक्ति के तार आये। परंतु डा. वेनिस के निर्देश पर उन्होंने क्वीन्स कालेज में ही रहकर अनुसंधान और अनुशीलन जारी रखा। डा. वेनिस ने उन्हें अशोक के शिलालेखों पर एक पुस्तक तैयार करने का आदेश दिया। इस कार्य में एक वर्ष से अधिक समय लगा।

साथ ही कविराजजी रहस्यवादी साहित्य का अध्ययन भी करते रहे और उनकी आध्यात्मिक प्रवृत्तियों का प्रस्फुटन होता रहा। उन्होंने यूरोपीय, मध्य एशिया[illegible] भारतीय रहस्यवाद तथा गुह्यवि[illegible] गंभीर अनुशीलन किया। डा. भगवा[illegible] के ग्रंथ 'सायंस ऑफ पीस' तथा 'प्रण[illegible] का उन पर विशेष प्रभाव पड़ा।

सन १९१४ में काशी में सरस्वती-[illegible] का उद्घाटन हुआ, जिसमें संसार-[illegible] दुर्लभ संस्कृत ग्रंथ तथा हस्तलिखित [illegible] हैं। डा. वेनिस ही इसके भी अधीक्ष[illegible] उन्होंने तत्काल कविराजजी की नि[illegible] उसमें कर दी। डा. वेनिस के निर्देशा[illegible] कविराजजी ने सरस्वती-भवन-ग्रंथ[illegible] का सूत्रपात किया, जिसके अंतर्गत [illegible] स्वती-भवन टेक्स्ट्स तथा सरस्वती-[illegible] स्टडीज नाम से दो प्रकार के प्रकाशन प्र[illegible] हुए। प्रथम के अंतर्गत मूल्यवान तथा [illegible] संस्कृत ग्रंथों का पाठ-संपादन वैज्ञा[illegible] विधि से होता है और उनके साथ वि[illegible] भूमिका जोड़ी जाती है। द्वितीय के [illegible] र्गत शोध-मूलक लेखों का संग्रह प्रका[illegible] होता रहा।

कविराजजी सरस्वती-भवन के पुस्[illegible] ध्यक्ष होने के अतिरिक्त १९२४ में [illegible] कालेज के प्राचार्य भी नियुक्त हुए। इ[illegible] पर उन्होंने तेरह वर्ष कार्य किया [illegible] १९३७ में अपने कार्यकाल की समा[illegible] पूरे आठ वर्ष पूर्व ही अवकाश ले लि[illegible] अस्वस्थता एवं आध्यात्मिक साधना [illegible] ही अवकाश लेने का कारण बनीं।

तत्कालीन ब्रिटिश सरकार ने [illegible]

[शेष पृष्ठ १५७ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगोपाल नेवटिया लेख-प्रतियोगिता

नवनीत के संस्थापक श्री श्रीगोपाल नेवटिया को दिवंगत हुए आगामी १९ सितंबर को एक वर्ष पूरा होगा। यों नवनीत स्वयं ही उनका स्मारक है, फिर भी इस अवसर पर उनके विशेष स्मरणार्थ एक लेख-प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

स्वर्गीय श्रीगोपालजी यात्रा-रसिक थे और सरस यात्रा-वर्णन लिखने में विशेषतः सिद्धहस्त थे। इसलिए इस लेख-प्रतियोगिता का विषय यात्रा-वर्णन ही रखा गया है। इसमें आप देश या विदेश की अपनी किसी यात्रा का वर्णन लिखकर भेज सकते हैं। वर्णन मौलिक, रसपूर्ण तथा वर्णित स्थान के रंग-गंध से भरा हो।

पुरस्कार तीन होंगे : प्रथम ५०० रु.; द्वितीय ३०० रु.; तृतीय २०० रु.।

शब्दसीमा : २००० शब्द के आस-पास।

लेख भेजने की अंतिम तिथि : १ सितंबर १९७६।

यह प्रतियोगिता सभी के लिए खुली है। नवनीत द्वारा नियुक्त विशेष समिति इसमें निर्णायक होगी और उसका निर्णय अंतिम होगा।

लेख भेजने का पता :

श्रीगोपाल नेवटिया लेख-प्रतियोगिता
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

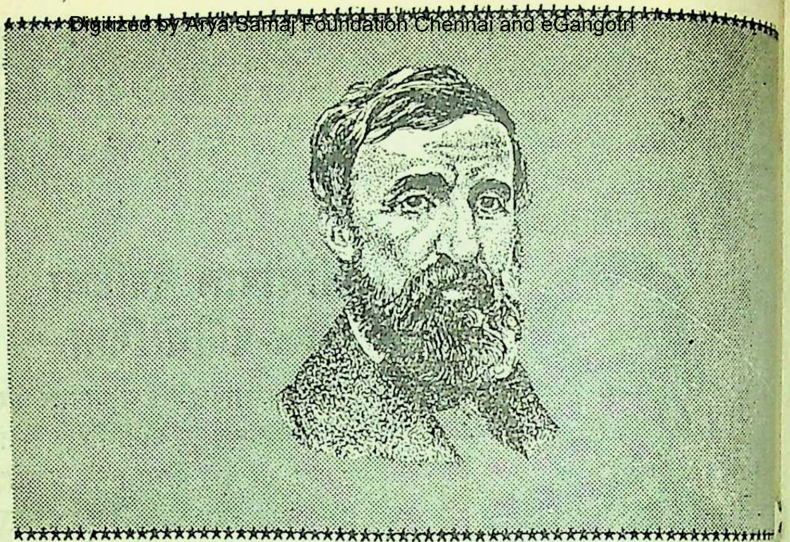

दार्शनिक होने का अर्थ सूक्ष्म चिंतन करना-भर नहीं है;
न अपने चिंतन-संप्रदाय की स्थापना ही; अपितु ज्ञान से
इस कदर प्यार करना कि उसी के निर्देश के अनुसार जियें–
सरलता, स्वतंत्रता, उदारता और विश्वास का जीवन।
मुझे बजाय प्रेम देने के, बजाय पैसा देने के,
बजाय कीर्ति देने के–सत्य दो।
अधिकांश वैभव और बहुत-सी तथाकथित सुविधाएं अपरिहार्य नहीं
उलटे, मनुष्य के उत्कर्ष में निश्चित रूप से बाधक हैं।
मनुष्य जिस मात्रा में वस्तुओं को छोड़ सके,
उसी मात्रा में समृद्ध होता है।
पुरानी लीक पर चलने में क्या लाभ ?
तुम्हें तो अविज्ञात तक लीक बनानी चाहिये।
जिसके लचीले और ऊर्जस्वित विचार सूर्योन्मुख रहते हैं,
उसके लिए समूचा दिन शाश्वत प्रभात है।

–हेनरी डेविड थॉरो

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

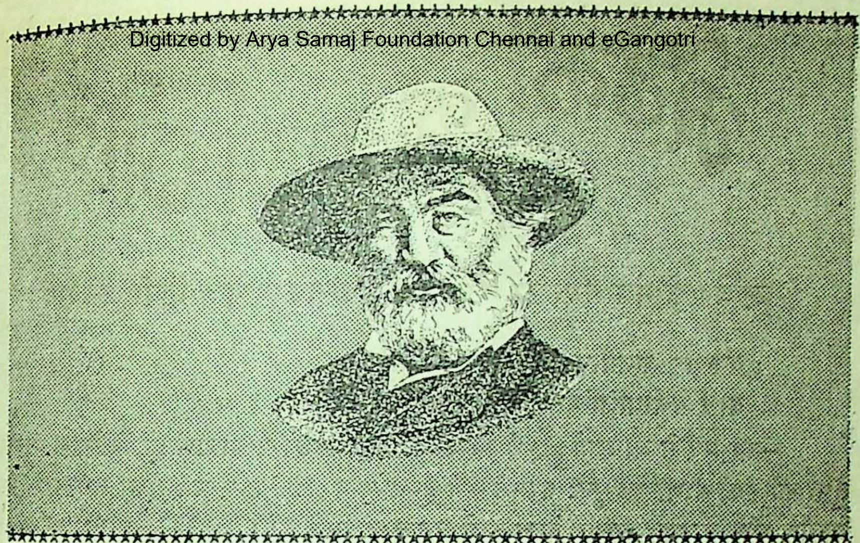

अमरीका की जीवनी-शक्ति का स्रोत हमारा जन-साधारण है,
पुरानी दुनिया की तरह विशिष्ट-वर्ग नहीं।
दूसरे देशों की जीवनी-शक्ति
थोड़े-से लोगों में, एक वर्ग में, निवास करती है;
किंतु हमारी जीवनी-शक्ति शेष समाज में निहित है।
हमारे यहां नेताओं का न कोई विशेष महत्त्व आज है,
न कभी रहा है;
किंतु हमारे समूचे इतिहास में
औसत जनता महान रही है।
हमारे समाज में महान व्यक्ति अथवा महान नेता
कभी पैदा नहीं होंगे;
परंतु हमारा विशाल औसत जन-समुदाय महान रहेगा—
ऐसा महान कि जिसका इतिहास में कोई उदाहरण नहीं है।

—वाल्ट ह्विटमन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेंढकों का वर्षा-गीत

ऋग्वेद के मंत्र तथा डा. रामनाथ वेदालंकार कृत हिंदी अनुवाद

संवत्सरं शशयाना ब्राह्मणा व्रतचारिणः ।
वाचं पर्जन्यजिन्वितां प्र मण्डूका अवादिषुः ।। १ ।।

—वर्ष-भर से जो सोये हुए थे कि मानो मौनव्रतधारी ब्राह्मण हों, वे मेंढक बाद तृप्त की गयी वाणी को पुनः बोलने लगे हैं—ट-र-र ...... ट-र-र । ऐसा लगता है, मानो ब्राह्मण मौन तोड़कर सस्वर वेदपाठ में प्रवृत्त हो गये हों।

दिव्या आपो अभि यदेनमायन् दृतिं न शुष्कं सरसी शयानम् ।
गवामह न मायुर्वत्सिनीनां मण्डूकानां वग्नुरत्रा समेति ।। २ ।।

—गरमी के कारण जलविहीन हुए तालाबों में ये मेंढक शुष्क चर्मविशिष्ट हो मिट्टी में धंसे पड़े थे। अब वर्षा का जल बरसा, तो इनकी ध्वनि सुनाई देने लगी है। प्रतीत होता है, मानो बछड़ों वाली गौएं आनंद से आप्लुत हो रंभा रही हों।

यदीमेनाँ उशतो अभ्यवर्षीत् तृष्यावतः प्रावृष्यागतायाम् ।
अख्खलीकृत्या पितरं न पुत्रो अन्यो अन्यमुप वदन्तमेति ।। ३ ।।

—पानी के प्यासे, अतएव वर्षा की कामना करने वाले इन मेंढकों पर पावस के पर आकाश का जल बरस गया है। मोदसूचक 'अख्खा' शब्द के साथ एक मेंढक बोलते दूसरे मेंढक के पास पहुंच रहा है, जैसे किलकारी भरकर पुत्र पुकारते हुए पिता के पास पहुंचता है।

अन्यो अन्यमनु गृभ्णात्येनोरपां प्रसर्गे यदमन्दिषाताम् ।
मण्डूको यदभिवृष्टः कनिष्कन् पृश्निः सम्पृङ्क्ते हरितेन वाचम् ।। ४ ।।

—पानी बरसने पर जब दो मेंढक मोद में भर उठते हैं, तब एक मेंढक दूसरे को पीछे से जाकर पकड़ लेता है और वर्षा से नहाया हुआ चितकबरा मेंढक उछलकर हरे के साथ सुर में सुर मिलाने लगता है।

यदेषामन्यो अन्यस्य वाचं शाक्तस्येव वदति शिक्षमाणः ।
सर्वं तदेषां समृधेव पर्व यत्सुवाचो वदथनाध्यप्सु ।। ५ ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

—जैसे शिष्य शिक्षक के शब्दों को दुहराता है, वैसे ही जब एक मेढक दूसरे की आवाज का अनुकरण करता है, और जब भर पानी में तरते हुए ये मेढक मस्ती के तराने गाते हैं, तब लगता है कि ये समृद्धिसूचक पर्व मना रहे हैं।

गोमायुरेको अजमायुरेकः पृश्निरेको हरित एक एषाम् ।
समानं नाम बिभ्रतो विरूपाः पुरुत्रा वाचं पिपिशुर्वदन्तः ।। ६ ।।

—इन मेढकों में से कोई गाय जैसा शब्द कर रहा है, कोई बकरे की तरह मिमिया रहा है। कोई चितकबरा है, कोई हरा है। नाम सबका एक ही है, पर रंग तरह-तरह के हैं और वाणी भी ये तरह-तरह की बोल रहे हैं।

ब्राह्मणासो अतिरात्रे न सोमे सरो न पूर्णमभितो वदन्तः ।
संवत्सरस्य तदहः परि ष्ठ यन्मण्डूकाः प्रावृषीणं बभूव ।। ७ ।।

—जैसे अतिरात्र नामक सोमयाग में ब्राह्मण एकत्र होकर बारी-बारी से मंत्रपाठ करते हैं, वैसे ही लबालब भरे सरोवर में चारों ओर बैठे हुए तुम, हे मेढको, बोली बोलते हो। वर्ष में जो बरसात के दिन होते हैं, उनमें तुम धरती पर चारों ओर फैल जाते हो।

ब्राह्मणासः सोमिनो वाचमक्रत ब्रह्म कृण्वन्तः परिवत्सरीणम् ।
अध्वर्यवो घर्मिणः सिष्विदाना आविर्भवन्ति गुह्या न के चित् ।। ८ ।।

—इस वर्षाकाल में जबकि मेढक अपने गान से सारे वातावरण को संगीतमय कर रहे हैं, अनेक सोमयाजी ब्राह्मणों ने वेद का वार्षिक पारायण आरंभ कर दिया है। किंतु गुफाओं में तपस्यारत, पसीने से स्नात कुछ साधक अब भी बाहर नहीं निकले हैं।

देवहितिं जुगुपुर्द्वादशस्य ऋतुं नरो न प्र मिनन्त्येते ।
संवत्सरे प्रावृष्यागतायां तप्ता घर्मा अश्नुवते विसर्गम् ।। ९ ।।

—बारह महीनों से युक्त वर्ष में प्रत्येक ऋतु का जो ईश्वरीय विधान है, उसकी रक्षा प्रकृति के नियम सदा करते हैं; किसी भी ऋतु को वे विफल नहीं होने देते। तभी तो बरसात के आने पर तप्त बादल वर्षा की बौछारें छोड़ रहे हैं।

गोमायुरदादजमायुरदात् पृश्निरदाद्धरितो नो वसूनि ।
गवां मण्डूका ददतः शतानि सहस्रसावे प्र तिरन्त आयुः ।। १० ।।

—गाय के रंभाने जैसी बोली वाला मेढक हमें आनंद दे, बकरे जैसी बोली वाला मेढक हमें आनंद दे। चितकबरा मेढक हमें आनंद दे, हरा मेढक हमें आनंद दे। सैकड़ों प्रकार की बोलियां बोलते हुए ये मेढक सहस्रों वनस्पतियों को उत्पन्न करने वाले वर्षा ऋतु के यज्ञ में हमारी और अपनी आयु को बढ़ायें।

(ऋग्वेद : मंडल ७, सूक्त १०३;
ऋषि वसिष्ठ; देवता मंडूक; छंद १ अनुष्टुप् तथा २-१० त्रिष्टुप्।)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

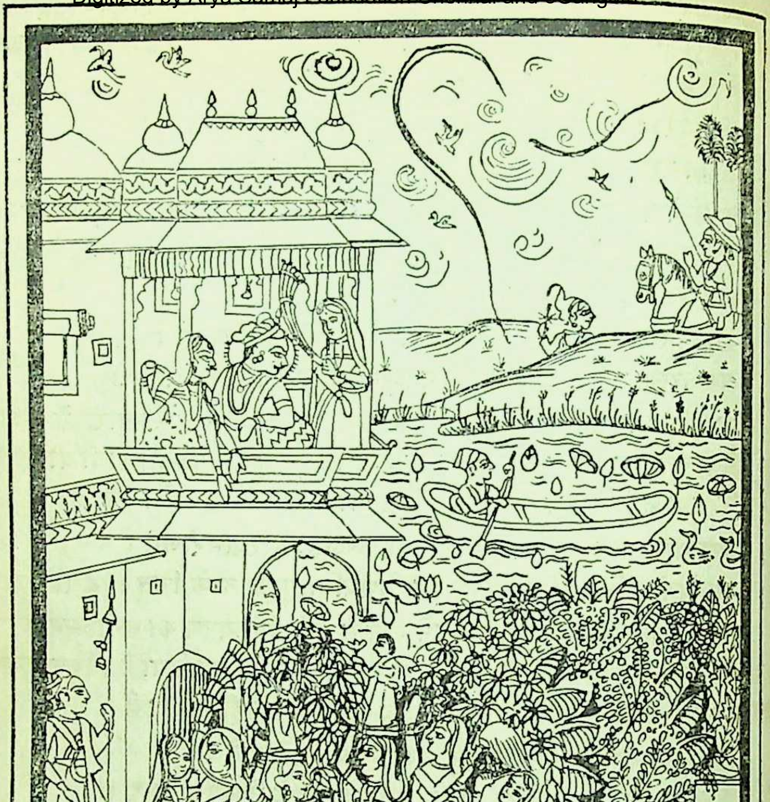

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

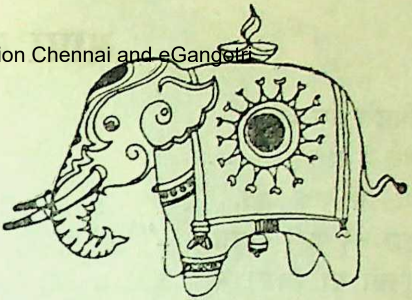

वाक्यदीप

बुद्धिमानों से ज्यादा संख्या मूर्खों की है। और बुद्धिमान में भी बुद्धिमत्ता से ज्यादा मूर्खता रहती है।

जैसे सजे-धजे मूर्ख होते हैं, वैसे ही सजे-धजे मूर्खतापूर्ण विचार भी होते हैं।

महान कार्यों में मनुष्य यह प्रकट करते हैं कि उन्हें क्या होना चाहिये; और छोटे कार्यों में यह कि वे क्या हैं।

प्रकृति ने मुझसे नहीं कहा कि गरीब मत होओ, न यही कि धनी बनो। मगर वह चिल्लाकर मुझ से कहती है—स्वतंत्र बनो।

उस दिन को तुम बिलकुल बेकार गया समझो, जिसमें तुम हंसे नहीं।

मनुष्य अपने जीवन की हर अवस्था में नौसिखिये के रूप में ही पहुंचता है।

←यह है श्रावण (जुलाई-अगस्त)। वर्षा ने दिशाओं को अंधकारमय बना दिया है। बिजली की कौंध से भयभीत सारस आकाश में उड़ रहे हैं। धरती हरियाली से ढंक गयी है, तालाब कमलों से भर गये हैं। मिलन-सुख में राधा और कृष्ण मतवाले हो उठे हैं। श्रावण पर्वों का भी महीना है—कृष्ण के जन्म का महीना भी यही तो है।

(अनुकृति : चरन शर्मा)

हमारा विवेक भी कभी-कभी हम वैसा ही कष्ट देता है, जैसा हमारी वासनाएं देती हैं। तब हम कह सकते हैं—'इस रोगी को उसके चिकित्सक ने ही विष दे दिया।'

प्रकृति चाहती है कि मूर्खों की तरह ही बुद्धिमानों में भी भ्रांतियां बनी रहें, ताकि उनकी बुद्धिमत्ता उन्हें बहुत दुःखी न कर दे।

समाज बड़ी ही दिलचस्प जगह होती है, बशर्ते हम लोग एक दूसरे में दिलचस्पी लें।

वासनाओं की वय बीत जाने पर ही महान व्यक्ति मास्टरपीस रचते हैं; जैसे कि ज्वालामुखी के विस्फोट के बाद जमीन सर्वाधिक उर्वर होती है।

समाज दो महान वर्गों के मिलने से बना है—एक, जिसके पास भूख से ज्यादा न्योते हैं; दूसरा, जिसके पास न्योतों से ज्यादा भूख है।

जैसे कुछ जीव ऊंचाई पर सांस नहीं ले सकते, वैसे ही गुलाम आजादी के वातावरण में मर जाते हैं।

—सेबास्टियन रोश निकोला शाम्फोर्त

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा का नियम

'पिछले दस वर्ष से
जैसे के तैसे हो ......
कोई भी फर्क नहीं,
कुछ भी नहीं बदला......'
सुनता था अक्सर मैं
कभी इनसे, कभी उनसे;
कुछ कहता नहीं था।
पर जानता हूं मैं भी
–उन्हीं की तरह–
थिर कुछ भी नहीं रहता।
आकृतियां छूते ही खंडित हो जाती हैं।
शब्द
शायद टिकते हों कुछ समय
पर उनको भी होते गड्डमड्ड
फिर टप्-टप् टपकते मैंने पाया;
'जैसे को तैसा' ......
'पिछले दस वर्षों से ...... बदला!'
'कुछ भी, कोई भी बदला!'
'इसमें कोई फर्क नहीं!'
कितना दिलचस्प था
भाषिक नियम के संमुख जीवन में आना
शब्द वही रहते......संदर्भ बदल जाते हैं।

इस बार

याद भी न आयी इस बार उनकी।
नाम जो लिखा था
एक सादे से पन्ने पर
धाम जो बना था
कहीं सूने से कोने में
पिछले साल खोजा था मैंने उन्हें ......
निष्फल ही
सूने किसी कोने में नाम!......
कोरे पन्ने पर धाम! ......
कहां मिलते!
देखो!
याद भी न आयी इस बार उनकी!
नन्हे ये हरूफ–दो ही छोटे-से शब्द–
लेकिन प्यारे थे
नीचे थे कंगूरे
–महज रेत के घरौंदे–
पर निराले थे ......
कोई भूचाल?–नहीं! कोई तूफान?–नहीं
धीरे-धीरे
होता गया सब कुछ वीरान!
और याद भी न आयी इस बार उनकी
कैसे फिर पाऊं? अरे, कैसे बनाऊं उन्हें
गुजरी हुई चीजें
कैसे वापस लाऊं? ......
यह असंभव!
पर संभव भी कुछ ही समय पहले तक
गूंज और तड़प और टीस जिन सबकी!
याद भी न आयी इस बार कभी उनकी।

–अजित कुमार–
जी-६, माडल टाउन, दिल्ली-९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान-बिंदु

दोगली अथवा संकर नस्ल के अनेक पशु और अन्य जीव-जंतु हमारी इस सृष्टि में विद्यमान हैं। खच्चर इस श्रेणी का सबसे अधिक जाना-पहचाना पशु है। जीव-जंतुओं की ही भांति वनस्पतियों में भी संकरण (क्रास-ब्रीडिंग) अब नयी बात नहीं रह गयी है। इस पद्धति से विकसित कितने ही नयी किस्म के फल-फूल, शाक-सब्जी और अन्न आदि आज उपलब्ध हैं और उनकी संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है।

मगर इन दो वर्गों (जीव-जंतु और वनस्पति) में भी परस्पर संकरण किया जायेगा, यह शायद आपने सोचा न हो। लेकिन जो बात हम और आप जैसे सामान्य जन सोच भी नहीं पाते, उसे विज्ञानी बहुधा प्रत्यक्ष दिखा देते हैं। हाल में ब्रिटेन के दो वैज्ञानिकों ने यही किया। उन्होंने खमीर और मुर्गी के गठबंधन से एक अजूबे की सृष्टि की है और वह अजूबा इस समय लंदन में जीवित है।

ये दो विज्ञानी हैं—लंदन के रायल फ्री हास्पिटल के प्रो. जैक लूसी और नाटिंग्हम विश्वविद्यालय के वनस्पतिशास्त्र-विभाग के प्रो. टेड काकिंग। इन्होंने खमीर की सूक्ष्म कोशिका और मुर्गी के रक्त से ली गयी लाल कणिका के बाह्य आवरणों को हटाकर उन्हें जोड़ दिया, इस प्रकार विषम संगलित जैव केंद्रक (हेटेरो-कैरयान) की सृष्टि कर दी। इन कैरयानों का कोशिका-विभाजन नहीं हो रहा है; परंतु इससे वैज्ञानिकों को कोई चिंता नहीं है। उनका विश्वास है कि यदि मुर्गी की रक्त-कणिका के बजाय उसके शरीर में से शीघ्र विभक्त होने वाली अन्य कोशिका लेकर संगलन करके कैरयान बनाये जायें, तो इस कमी को दूर किया जा सकता है।

यह इस परीक्षण का पहला चरण है। इसमें मुख्य मुद्दा यह देखना है कि इस प्रकार के विषम कैरयान जीवित रह पाते भी हैं या नहीं। यह निश्चित हो जाने पर कि ये जीवित रहते हैं, परीक्षण का दूसरा चरण शुरू होगा और यह पता लगाया जायेगा कि ये जीव की तरह व्यवहार करते हैं, या वनस्पति की तरह।

हेटेरो-कैरयान कोशिकाओं की झिल्ली के अध्ययन में विशेषतया सहायक होंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

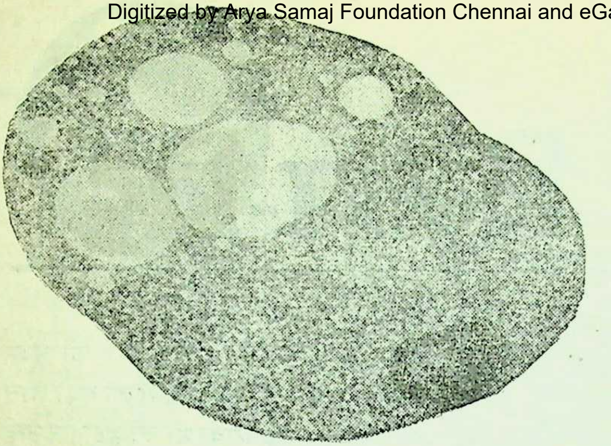

हेटरो-कैरयान : लगभग ५,००० गुना बड़ा चित्र

कैन्सर-संबंधी शोधकार्य में ये मदद दे सकेंगे। शायद इनकी मदद से ऐसे जैव-वानस्पतिक ऊतक तैयार किये जा सकेंगे, जो पशुओं और संभवत: मनुष्यों के भोजन में काम आ सकें और कड़े-कचरे पर उगाये जा सकें। जीवों और उच्चतर वनस्पतियों (या शायद शैवालों) के मिलाप से बनी कोशिकाएं शायद प्रकाश-संश्लेषण प्रक्रिया द्वारा सीधे सूर्य से ऊर्जा प्राप्त कर सकेंगी।

बिजली के तैरते हुए बादल

पिछले दिनों भारत के अनेक ऐसे दूर-दराज गांवों में भी जहां कि टेलिविजन केंद्र नहीं हैं, टेलिविजन पर कार्यक्रम दिखाये गये थे। यह संभव हो सका था एक उपग्रह की बदौलत, जिसका नाम था—ए. टी. एस-६ (एप्लिकेशन टेक्नोलाजी सैटेलाइट-६)। यह उपग्रह अमरीकी सरकार ने प्रयोग-परीक्षण और दूरदर्शन-प्रसारण के लिए भारत सरकार को ... साल के लिए उधार ... था। इसके जरिये प्रसा... कार्यक्रमों की जनता में ... चर्चा रही और निः... इससे जनता का मनोरं... भी हुआ।

असल में इस उपग्रह ... सहायता से नयी दिल्ली ... राष्ट्रीय भौतिकी प्रयो... शाला और बंबई के ... आधारभूत अनुसंधा... संस्थान के विज्ञानियों ... कई प्रयोग-परीक्षण भी किये थे; उन... जानकारी देश के आम आदमी तक ... पहुंच सकी। परंतु उन परीक्षणों से प्रा... जानकारी दूर-संचार और अंतरिक्ष-उ... के भावी कार्यक्रमों के लिए काफी उपयो... सिद्ध हो सकेगी।

राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला के ... ए. पी. मित्र ने हाल में बताया है कि ऊटी ... विशाल दूरबीन ने जो आंकड़े उक्त उप... से एकत्रित किये थे, उनकी छानबीन से ... नयी बात सामने आयी है कि हमारे आय... मंडल में ऐसे अनेक स्फुरण (सिन्टिलेश... होते हैं, जो उपग्रहों से भेजे जाने ... रेडियो-संकेतों को कमजोर कर देते हैं ... इसका नतीजा यह होता है कि पृथ्वी पर ... संकेतों का ग्रहण (रिसेप्शन) उतना अ... नहीं हो पाता। प्रेषण की गति को भी ... स्फुरण प्रभावित करते हैं, जिससे इन सं...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को पृथ्वी तक पहुंचने में अपेक्षाकृत अधिक समय लगता है।

इन स्फुरणों के कारण पर प्रकाश डालते हुए बताया गया है कि आयन-मंडल में इलेक्ट्रानों के आवारा मेघपुंज इधर से उधर मंडराते रहते हैं, जो रेडियो-संकेतों के साथ छेड़छाड़ करने से बाज नहीं आते। वैज्ञानिकों को इस क्षेत्र में विस्तृत और व्यापक छानबीन की आवश्यकता महसूस होने लगी है और इसके लिए एक बड़ी योजना तैयार की जा रही है।

इस चर्चा में हमने 'आयन-मंडल' शब्द का कई बार प्रयोग किया है, उसे भी आप समझ लें। हमारे वायु-मंडल की ऊपरी सतह आयन-मंडल कहलाती है। यह पृथ्वी से लगभग २५-३० मील ऊपर से शुरू होकर २५०-३०० मील ऊपर तक चली जाती है। वायु-मंडल के इस भाग में विद्युत-आवेशित मुक्त कणों (इलेक्ट्रान-प्रोटान आदि) की भरमार रहती है। इन्हीं कणों की बदौलत रेडियो-तरंगें पृथ्वी के एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा कर पाती हैं और हम सारे संसार के समाचार रेडियो-सेटों के जरिये घर बैठे जान पाते हैं।

मिट्टी का कैन्सर

जमीन क्षार और लवण से युक्त हो तो वहां खेती मुश्किल ही नहीं, नामुमकिन हो जाती है। उत्तर भारत के मैदानी इलाके में ही ऐसी जमीन का क्षेत्रफल लगभग ७० लाख हेक्टेयर है और इससे देश प्रतिवर्ष लगभग साढ़े तीन करोड़ मीटरी टन उपज से वंचित रह जाता है। पंजाब और हरियाणा में लगभग २० प्रतिशत किसानों को जमीन के इस कैन्सर से निरंतर जूझना पड़ता है। भारत-जैसे विपुल जनसंख्या वाले देश के लिए यह स्थिति सह्य नहीं कही जा सकती।

सबसे पहले १८५५ में ब्रिटिश सरकार का ध्यान इस समस्या की ओर गया था और १८७७ में उस पर विचार करने के लिए एक विशेषज्ञ-समिति की स्थापना की गयी थी। ऐसी मिट्टी के कुछ नमूने भी रासायनिक विश्लेषण के लिए रायल मिनरलोजिकल लैबोरेटरी, लंदन को भेजे गये थे।

स्वतंत्र भारत में इस दिशा में क्रमबद्ध कार्य १९६९ से शुरू हुआ। उस वर्ष करनाल (हरियाणा) में इस विषय के विस्तृत अध्ययन के लिए केंद्रीय मृदालवणीयता शोध-संस्थान की स्थापना की गयी। हाल में इस संस्थान के वैज्ञानिकों ने बताया है कि भारत में वहुतायत से मिलने वाला जिप्सम नामक खनिज मिट्टी को इस रोग से छुटकारा दिलाने की क्षमता रखता है। जिप्सम वस्तुतः जलयुक्त कैलशियम सल्फेट है और तनिक अम्लीय होता है। देश की कृषि-उपज को बढ़ाने में मामूली-सी दिखने वाली यह खोज वरदान सिद्ध हो सकती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदकिशोर मित्तल

गीतगोविंद

गीतगोविंद जिसने भी पढ़ा, वह उस पर मुग्ध हुए बिना नहीं रह सका। चित्रकारों ने इस पर अपनी तूलिका से चित्र बनाये। संगीतकारों ने इसे अपने सुरों में बांधा। नृत्यकारों ने अपनी भंगियों, मुद्राओं एवं पद-संचालन से इसे अभिव्यक्त करना चाहा। विद्वानों ने इस पर टीकाएं लिखीं। इस प्रकार ग्यारहवीं सदी में जयदेव का लिखा यह काव्य समूचे देश को सदियों से प्रभावित करता रहा है।

गीतगोविंद की यात्रा पूर्व से उत्तर की ओर शुरू हुई, या दक्षिण की ओर अथवा पश्चिम की ओर, यह तो कोई ठीक से नहीं कह सकता। लेकिन उत्तर में पहाड़ी शैली की सत्रहवीं-अठारहवीं सदी की मिनिएचर चित्रकला (बसौहली और कांगड़ा) में इसके एक नहीं, पांच-पांच बस्ते पाये गये हैं… पश्चिम में गीतगोविंद पर महाराणा कुं… की लिखी 'रसिकप्रिया' टीका रस-विवेच… दृष्टि और संगीत-संबंधी गहरे पांडि… के कारण विद्वानों में समादृत है। रा… स्थान की चित्रकला की विभिन्न शैलियों… गीतगोविंद के चित्र पाये जाते हैं। इ… नृत्यों की भाव-भंगिमा कैसी होनी चाहि… इस पर तंजाऊर में एक पुस्तक मिली है… जिसका प्रकाशन सरस्वती महल पुस्तका… लय ने किया है। इसी प्रकार की एक पुस्त… की पांडुलिपि जम्मू में सुरक्षित है, जि… गड़वाल महाराजा ने अपने संरक्षण… लिखवाया था।

इसकी अष्टपदियों को बंगाल के क्रांति… कारी गुप्त संकेतों के लिए गाते थे। (बंकि…

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के 'आनंदमठ' में 'धीरसमीरे यमुनातीरे...' अष्टपदी का इस रूप में उपयोग देखा जा सकता है।) केरल में शबरिमलै के तीर्थ-यात्री न जाने कब से इसे गाते आ रहे हैं। पटियाला घराने के स्वर्गीय बड़े गुलाम अली खां इन अष्टपदियों को भाव-विभोर होकर गाते थे। इसके संमोहन से लंका-निवासी आधुनिक चित्रकार जार्ज केट भी नहीं बच सके और उन्होंने इस पर रेखाचित्र और तलचित्र बनाये हैं।

हमारे देश के हर भू-भाग को इसने प्रभावित किया। अपनी जातीय विशेषताओं को गीतगोविंद के माध्यम से अभिव्यक्ति देते हुए, देश के विभिन्न प्रदेशों और विधाओं के कलाकार एक भावभूमि पर आ गये। गीत, संगीत, नृत्य और चित्रकलाएं इस रस-कलश के चारों ओर रास करने लगीं। इस तरह यह काव्य उपनिषद् की उक्ति 'रसो वै स:' का साकार भाष्य हो गया।

इस छोटे-से काव्य के एक-एक अंग पर सैकड़ों पृष्ठ लिखे जा चुके हैं। किंतु इसके रसभाव को समग्रता में पकड़ पाना किसी एक विधा के बस की बात नहीं। इस दिशा में प्रयत्न करने वाले हर एक कला-साधक के मन में एक अपूर्णता का एहसास रह ही जाता है। यह इसकी विशेषता है।

साहित्य, संगीत और नृत्य तो इस काव्य में आरंभ से ही एकरूप हो गये। क्योंकि जयदेवकी पत्नी पद्मावती स्वयं नृत्यांगना थीं। गीतगोविंद में प्रारंभ से अंत तक उनका नाम किसी न किसी रूप में आता है। प्रथम सर्ग में मंगलाचरण के बाद अगले ही श्लोक में कवि ने अपने को 'पद्मावतीचरण-चारणचक्रवर्ती' कहा है। जब जयदेव इस काव्य को लिख रहे थे, तब उनके मन में शायद पद्मावती के पैरों की ताल और अंगों की भाव-भंगिमाएं थिरकती रही हों और शब्द अनायास ही संगीत की लय और नृत्य के ताल में गुंथते गये हों।

इस काव्य का रूप गीति-नाट्य का है और विषय-वस्तु भारतीय रसशास्त्र। इसमें प्रमुख पात्र केवल तीन हैं—राधा, कृष्ण और सखी (दूती)। बाकी तो कृष्ण की भाव-सखियां हैं, जो राधा एवं कृष्ण के मन में विभिन्न भावों की तरंगें जगाती हैं।

इसकी प्रस्तुति हमें एक लयबद्ध दृश्य-

विहरति हरिरिह सरसवसन्ते
[मूल : कांगड़ा शैली; अनुकृति : चरन शर्मा]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राधा-कृष्ण [जार्ज केट]

मयता देती है, जो चित्रकला का आधार बनती है। चूंकि यह दृश्यमयता मानसिक प्रतिबिंब है, इसलिए कला में इसकी चित्र-मयता ही रंग और रेखाओं को काव्यमय बना देती है। इस प्रकार इसकी समग्रता साहित्य, संगीत, नृत्य और चित्रमयता का एक साथ आस्वादन है। परंतु इसका हर प्रदर्शन इन्हें पूर्ण रूप से नहीं पकड़ पाता; जबकि पढ़ते समय यह लगता रहता है कि इसके पूर्ण आस्वादन के लिए इन चारों कलाओं का समाहार अनिवार्य है, नहीं तो इसके चरम तक पहुंच पाना असंभव है।

शायद इसकी यही विशेषता इसे कभी पुराना नहीं पड़ने देती और शायद इसी-लिए गीत, संगीत और नृत्य की विभिन्न शैलियों में इसका गायन और प्रदर्शन होता रहा है। नृत्य की हमारी दो प्राचीन शैलियों (ओडिसी और भरतनाटचम्) में यह आज

...प्रस्तुत किया जाता है।

इसका लैटिन, अंग्रेजी, जर्मन, फ्रेंच आ... में भी अनुवाद हो चुका है—अंग्रेजी में ... तीन-चार बार। भारत की करीब ... साहित्यिक भाषाओं में इसके अनुवाद मध्य... युग से आज तक होते आ रहे हैं। इ... प्रथम अंग्रेजी अनुवादक विलियम जोन्स ... लीलानाटच (पास्टरल ड्रामा) कहते हैं औ... लसन गीति-नाटच। कीथ और फान श्रोड... इसे काव्य और जात्रा मानते हैं। जर्म... कवि गेटे ने इसकी तुलना कालिदास ... 'मेघदूत' और 'शाकुंतल' से की है। लेकि... निश्चय ही इसके विदेशी प्रशंसक इस... आस्वादन इसकी समग्रता में नहीं कर पाये... क्योंकि आरंभ से ही कवि ने इसका मा... रूप गीत, संगीत, नृत्य और नाटच (... रूप) में परिकल्पित किया था।

इस गीत-नृत्य-नाटिका के प्रथम नृ... संयोजक और निर्देशक स्वयं कवि जयदेव ... और इसे अभिनीत करके साकार बना... था कवि की जीवन-संगिनी पद्मावती ने... जयदेव के इस काव्य ने, हमारी मध्य-युगी... कलाओं को इस तरह प्रभावित किया ... समूची ललित कलाओं और काव्य-साहि... में गीति-तत्त्व प्रमुख हो गया।

गीतगोविंद की अभिव्यंजना-मूलक गी... शीलता ने ऐसा व्यापक रूप ग्रहण किया ... वह हमारी विभिन्न सांस्कृतिक इकाइयों ... जातीय चेतना का प्रमुख अंग बन गयी... सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में सिक्खों ... गुरु अर्जुनदेवजी ने जयदेव की पदावलि...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को गुरु ग्रंथसाहब में स्थान देकर, उन्हें 'ओंकार' बना दिया। बंगाल, उड़ीसा और ब्रजभूमि एवं सारे देश में फैले पुष्टि-संप्रदाय के मंदिरों में प्रायः गीतगोविंद की अष्टपदियां विशेष अवसरों पर गायी जाती हैं। इस प्रकार इन अष्टपदियों का हमारी संस्कृति और धर्म में विशेष स्थान है।

हमारी विभिन्न क्लासिकी कलाओं को तो इसने प्रभावित किया ही, हमारे जन-जीवन में भी इसकी कितनी गहरी पैठ थी यह भी हमारे धार्मिक लीला-नाटकों और भक्ति-साहित्य पर इसके प्रभाव से स्पष्ट है। यदि हम कहें कि गीतगोविंद ब्रज की रास-लीला एवं बंगाल की जात्रा का प्रारूप था, तो अत्युक्ति नहीं होगी।

उन्नीसवीं सदी के आरंभ में, गीतगोविंद के अंग्रेजी के प्रथम अनुवादक सर विलियम जोन्स ने इसके संगीत के मूल रूप को खोजने का प्रयास किया। किंतु उन्होंने लिखा है कि दक्षिण के पंडितों ने उन्हें बताया कि शायद वह उत्तर-पश्चिम में हो। (हो सकता है, उनका संकेत राणा कुंभा की 'रसिकप्रिया' टीका की ओर रहा हो, जिसमें हर अष्टपदी के लिए एक निश्चित राग और ताल का निर्देश किया गया है। चित्तौड़ के राणा कुंभा वीर और विद्वान होने के साथ संगीतज्ञ भी थे। संगीतशास्त्र पर उनके दो ग्रंथ उपलब्ध हैं।) किंतु पश्चिम के पंडितों ने कहा कि इसकी मूल प्रति शायद नेपाल या कश्मीर में हो, जबकि वहां के विद्वानों ने उन्हें पूर्व की ओर संकेत कर दिया।

राधा और सखी : जार्ज केट

विलियम जोन्स का यह कथन गीतगोविंद की लोकप्रियता और उसके व्यापक प्रसार को साबित करता है। साथ ही इसकी भी गवाही देता है कि इस अद्भुत काव्य का अंतरंग और बहिरंग किस प्रकार एक है। इसके मूल बहिरंग का साक्षी तो केवल इसका मधुर और रसमय शब्द-चयन है, इसकी कोमल-कांत पदावली है। लेकिन इसके संगीत और नृत्य का मूल पक्ष कैसा था, यह आज तक कोई नहीं बता पाया। उसके बारे में तो यही कहना होगा कि वह भारतीय संस्कृति की तरह ही विविधांगी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीतगोविंद के विविधांगी होने का दूसरा बड़ा प्रमाण यह है कि जब-जब इस नृत्य-नाटिका को इसकी समग्रता में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया, तब-तब न केवल कला के विभिन्न क्षेत्रों से प्रतिभाएं जुटाने की समस्याएं पैदा हुई, बल्कि यह भी पाया गया कि जो इसके साथ पूरा न्याय कर सकें, ऐसी प्रतिभाओं को भारत के किसी एक भाग से नहीं जुटाया जा सकता। यह मेरा स्वयं का अनुभव है; क्योंकि जब पं. जसराज ने मोतीराम संगीत नाटक अकादमी की ओर से इस नृत्य-नाटिका को प्रस्तुत करने का विचार किया, तो उनके इस आयोजन के लिए अष्टपदियों का समछंदी अनुवाद मैंने किया था।

यह कम आश्चर्य की बात नहीं कि जो प्रतिभाएं गीतगोविंद को साकार करने के लिए पं. जसराज के चौगिर्द एकत्र हुईं, वे देश के विभिन्न प्रदेशों की हैं। इसके नृत्य-संयोजक ओडिसी नृत्य-शैली के जाने-माने गुरु श्री केलूचरण महापात्र उड़ीसा के हैं। प्रकाश-संयोजक तपस सेन बंगाल के हैं। कला-निर्देशक श्री आचरेकर महाराष्ट्र के हैं और स्वयं जसराज राजस्थान के। किंतु इस प्रदर्शन के सबसे महत्त्वपूर्ण व्यक्ति श्री विजयराघव राव दक्षिण के हैं। यह नृत्य-नाटिका किसी ऐसे संगीत-मर्मज्ञ के बिना सोची भी नहीं जा सकती थी, जो दक्षिण और उत्तर के संगीत (यानी कर्नाटक और हिंदुस्तानी संगीत) में समान रूप से दक्ष हो।

इन सबको एक जगह लाना और उन्हें रचनात्मक स्तर पर इस काम में नियोजि[त] करना हंसी-खेल नहीं था। यह काम श्रीम[ती] मधुरा जसराज ने किया। उनका कहना है कि देश की इन मूर्धन्य प्रतिभाओं को एक जग[ह] पर मिलाने वाली मैं नहीं, गीतगोविंद का प्रभाव और उसका केंद्रीय आकर्षण है।

क्या है यह आकर्षण? इसकी कहानी, जिसमें कोई प्लाट नहीं? इसका संगीत, जो हर प्रदेश में अपने जातीय संस्कारों के अनुरूप गाया जाता है? इसका नृत्य, जो कई क्लासिकल शैलियों के अतिरिक्त लोकशैलियों में भी गूंथ लिया जाता है? इसका प्रयोग (मंचन), जिसके लिए कोई निश्चित संकेत जयदेव ने नहीं दिये हैं? फिर भी इसका एक केंद्रीय आकर्षण अवश्य ही है, जो सबको अपने प्रभाव में खींचकर गतिशील बना देता है।

दूसरा आकर्षण है इसका नाम। यदि 'गोविंदगीत' होता, तो उसका अर्थ होता गोविंद के गीत। 'गीतगोविंद' नाम का हम क्या अर्थ ग्रहण करें? मेरे मन में यह अचरज और औत्सुक्य ज्यों का त्यों कायम है। साथ ही यह भी लगता रहा है कि 'गीत-गोविंद' के अतिरिक्त कोई अन्य नाम इसका हो ही नहीं सकता। 'गीत जो गोविंद है'—यही अर्थ 'गीतगोविंद' से ध्वनित होता है।

सचमुच इन गीतों का साकार स्वरूप गोविंद है, रसात्मक ब्रह्म है, 'रसो वै स:' है। यही विचार तो समग्र भारतीय संत साहित्य व वैष्णव-साहित्य का केंद्र-बिंदु है।

—१०८, स्टाक एक्सचेंज, फोर्ट, बंबई-१

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिडिस जिंदा है

हिटलर और उसके अनुयायियों द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान किये गये एक नृशंस नर-संहार की कथा, जो मानव के विरुद्ध मानव के पाप का प्रतीक बन गयी।

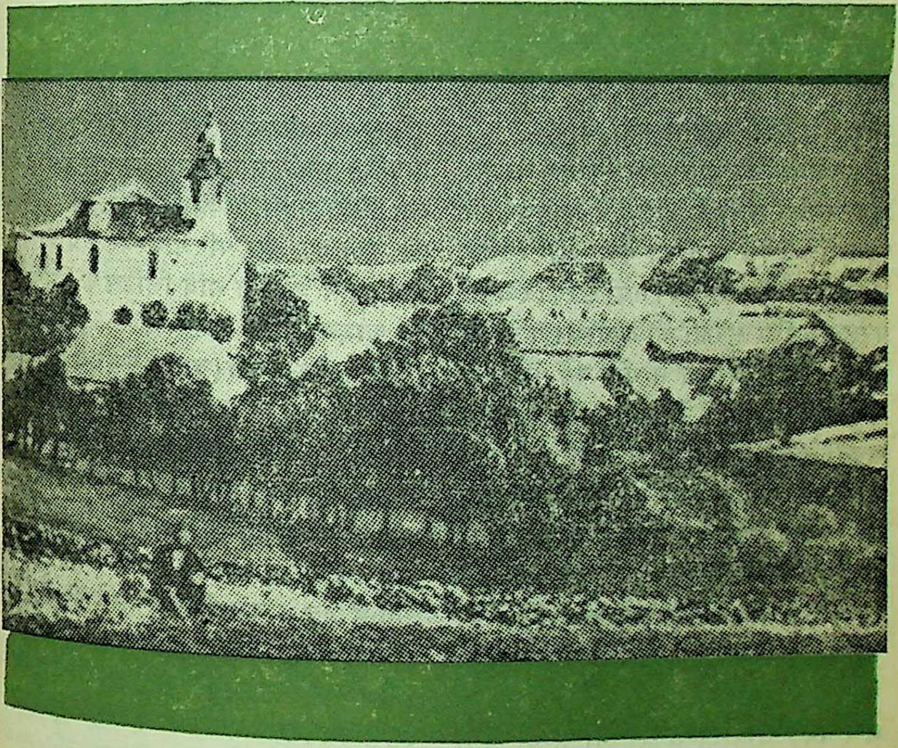

मूल : जान ब्रैडले
संक्षिप्तानुवाद : वीना सचदेव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेकोस्लोवाकिया के हिसाब से तो द्वितीय विश्वयुद्ध ३० सितंबर १९३८ के दिन म्यूनिख में शुरू हुआ था, जब ब्रिटेन और फ्रांस के प्रधान-मंत्री चेम्बरलिन और डाडालियर ने मुसोलिनी के साथ मिलकर चेकोस्लोवाकिया को हिटलर व जर्मनों के समक्ष घुटने टेकने को विवश किया था। चेकोस्लोवाकिया की अनुपस्थिति में म्यूनिख में यह फैसला कर दिया गया कि जर्मनी और आस्ट्रिया की सीमा के साथ लगा जर्मन-बहुल इलाका (सुडेटनलैंड) जर्मनी को दे दिया जाये। अन्यथा हिटलर युद्ध छेड़ देता और युद्ध कोई चाहता नहीं था।

इसके बाद तो चेकोस्लोवाकिया में घटनाचक्र भयंकर तेजी से घूमा। ५ अक्तूबर को राष्ट्रपति बेनेस इस्तीफा देकर और स्वदेश छोड़कर लंदन चले गये। नयी सरकार बनी, परंतु राष्ट्रीय सुरक्षा की व्यवस्था करने के बजाय उसने म्यूनिख में थोपे गये फैसले के अनुसार, किलेबंदी से युक्त सीमा-क्षेत्र से अपनी सेनाएं हटा लीं और प्रतिरोध में एक भी गोली दागे बिना जर्मन सेना को अंदर आ जाने दिया। अब चेक पूरी तरह जर्मनों की दया पर आश्रित हो गये।

यों पश्चिमी देशों ने चेकोस्लोवाकिया को भौगोलिक अक्षुण्णता की गारंटी दी थी; परंतु जब १५ मार्च १९३९ को हिटलर ने शेष चेकोस्लोवाकिया पर भी कब्जा जमा लिया, तो किसी ने भी उस गारंटी को पूरा करने के लिए हाथ-पांव नहीं हिलाये।

राष्ट्रपति बेनेस और उनके उत्तराधिकारी राष्ट्रपति हाचा की बस एक ही आशा थी; वह यह कि यूरोपीय युद्ध या विश्वयुद्ध के बाद ही उनका देश अपनी स्वतंत्रता वापस पायेगा। और चेक लोगों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि युद्ध उनकी आशा से कहीं पहले एवं अप्रत्याशित रूप से शुरू हो गया। रूस के साथ समझौता करके हिटलर ने पोलैंड पर आक्रमण कर दिया और इस तरह वह संघर्ष छिड़ गया, जिसकी प्रतीक्षा असहाय चेक जनता इतनी व्यग्रता से कर रही थी।

२८ सितंबर १९४१ को हिटलर का पुलिस का सिपहसालार जनरल रीइन्हार्ड हाइड्रिक चेकोस्लोवाकिया का शासन संभालने प्राहा पहुंचा। यही नियुक्ति हाइड्रिक की मृत्यु का और परिणामस्वरूप प्राहा के निकटवर्ती छोटे-से गांव लिडिस के विध्वंस का कारण बनी।

लेफ्टिनेंट-कर्नल (बाद में मेजर-जनरल) मोरावेक उन ग्यारह चेक जासूसी अधिकारियों में से थे, जो १४ मार्च १९३९ को चेकोस्लोवाकिया पर जर्मनी के कब्जा जमाने से ठीक पहले ब्रिटिश दूतावास की मदद से स्वदेश से खिसक गये थे और लंदन पहुंचे थे। बाद में जब ८ जुलाई १९४० को डा. बेनेस ने लंदन में निर्वासित चेकोस्लोवाक सरकार बनायी, तब इन शीर्षस्थ गुप्तचरों ने अपने देश के स्वतंत्रता-संघर्ष में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

यह संघर्ष दो स्तरों पर हो रहा था— चेकोस्लोवाकिया के भीतर प्रतिरोध-आंदो

अगले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

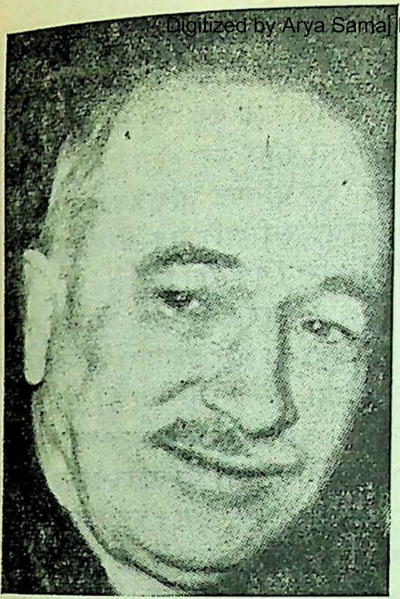

राष्ट्रपति डा. बेनेस

लन के रूप में; और बाहर बेनेस के नेतृत्व में। चेक प्रतिरोध-आंदोलन के गुप्त सूत्रों के साथ संपर्क बनाये रखने के लिए ब्रिटिश सरकार और राष्ट्रपति बेनेस की निर्वासित सरकार दोनों ने निश्चय किया कि अपने विशेष एजेंट भेजकर प्रतिरोध-आंदोलन को मजबूत बनाया जाये।

बार-बार की विफलताओं के बावजूद प्रशिक्षित गुप्तचरों को चेकोस्लोवाकिया भेजा जाता रहा। जान क्यूबिस और जोजेफ गैब्सिक ऐसे ही दो गुप्तचर थे, जिन्हें बोहीमिया और मोराविया के कार्यकारी संरक्षक रीइन्हार्ड हाइड्रिक की हत्या का काम सौंपा गया था। हाइड्रिक को हिटलर ने सितंबर १९४१ में इस पद पर नियुक्त किया था।

× × ×

अंतरराष्ट्रीय कारणों से हिटलर ने चेकोस्लोवाकिया के बोहीमिया और मोराविया प्रांतों को विजित प्रदेश मानने के बजाय जर्मन राष्ट्र के अधीन स्वशासी प्रदेश घोषित किया था। सितंबर १९३९ में उसने निश्चय कर लिया था कि जब तक युद्ध जारी रहे, चेकोस्लोवाकिया का पूरी निष्ठुरता से, हर तरह से आर्थिक शोषण किया जाये; पर 'अंतिम समाधान' युद्ध के बाद ही होगा। चेक समस्या के बारे में संरक्षक, बोरमन और स्वयं अपने द्वारा जारी किये जाने वाले निर्देशों को लागू करने के लिए उसने हर्मन फ्रैंक को राज्य-सचिव (और बाद में मंत्री) नियुक्त किया।

सुडेटन जर्मनों का नेता फ्रैंक चेकोस्लोवाकियाई जनता के जर्मनीकरण के पक्ष में था और जिनका जर्मनीकरण न हो सके या जो इसके लिए तैयार न हों, उनके लिए उसके पास एक ही समाधान था—सफाया! अब वह ऐसे पद पर पहुंच गया था, जहां से वह इस नीति को बिना किसी रुकावट के लागू कर सकता था। शीघ्र ही वह चेक जनता का प्रधान जल्लाद बन गया।

जब जर्मनी ने उसकी मातृभूमि पर कब्जा जमाया, तब चेक जनता प्रतिरोध के लिए तैयार नहीं थी। परंतु जर्मन अत्याचार के बढ़ने के साथ उसने अनुभव कर लिया कि यदि चेक राष्ट्र के अस्तित्व को बचाना है, तो प्रतिरोध संघटित करना जरूरी है। डा.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाचा जिसके राष्ट्रपति और जनरल एलियास जिसके प्रधान-मंत्री थे, वह चेक सरकार अपनी जनता के बचाव के लिए सरकारी स्तर पर प्रयास कर रही थी; और गैरसरकारी स्तर पर विविध प्रतिरोध-संघटन अपनी गतिविधियां तेज कर रहे थे। शीघ्र ही फ्रांस और ब्रिटेन के साथ उनका जासूसी संपर्क स्थापित हो गया।

इस बीच जर्मन अत्याचार तेजी पकड़ रहा था। सबसे पहला प्रहार हुआ चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी पर, जो कि गैरकानूनी घोषित हो चुकी थी। जर्मन कब्जे के बाद के दो महीनों में जो ४,६३९ चेक नागरिक गिरफ्तार किये गये थे, उनमें से अधिकांश कम्युनिस्ट ही थे। फिर जब यूरोप में लड़ाई छिड़ गयी और गेस्टापो को चेकों के जासूसी संबंधों की भनक मिली, तो और ९,३०० व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। इनमें मुख्यतः सैनिक अधिकारी, बुद्धिजीवी और छात्र थे, जिनका पश्चिमी राष्ट्रों से गुप्त संबंध होने की शंका थी। मगर युद्ध छिड़ने के साथ ही चेक भूमिगत आंदोलन जड़ता से मुक्त हुआ और उसमें जान आने लगी।

यह बात विरोधाभासपूर्ण है, मगर है सत्य कि जब चेक लोग शस्त्रसज्ज थे मगर जर्मनों के विरुद्ध एकाकी थे, तब उन्होंने कुछ भी नहीं किया; जब वे निःशस्त्र और निःसहाय हो गये मगर उन्हें मित्रों का साथ मिला, उन्होंने वह साहस दिखाया जो सामूहिक मरणेच्छा की कोटि का था। अक्तूबर १९३९ तक पोलैंड प्रायः नष्ट किया जा चुका था और आतंक में जी रहा यूरोप सांस रोके देख रहा था कि जर्मनी का अगला प्रहार कहां होता है। परंतु उस समय चेक भूमिगत आंदोलन अस्तित्व में स्वतंत्र चेकोस्लोवाकिया की बरसगांठ मनाने की तैयारियां कर रहा था।

२८ अक्तूबर १९३९ को अचानक देश में प्रदर्शनों और हड़तालों का ज्वार उफन पड़ा। फ्रैंक ने स्थिति का पूरा लाभ उठाया। जर्मन पुलिस को बल-प्रयोग द्वारा चेक प्रदर्शनकारियों को तितर-बितर करने का आदेश दे दिया गया। इसमें घायल एक छात्र की अंत्येष्टि के अवसर पर नवंबर को फिर प्रदर्शन हुए। फ्रैंक ने करारा वार किया। देश के सारे विश्वविद्यालय वर्ष के लिए बंद कर दिये गये, भारी संख्या में छात्रों और बुद्धिजीवियों को गिरफ्तार करके यातना-शिविरों में भेज दिया गया। नौ युवक-नेताओं को लगे हाथ गोली से उड़ा दिया गया, हालांकि प्रदर्शनों से उनका कोई संबंध न था। प्राहा और उसके इर्द-गिर्द फौजी कानून लागू कर दिया गया। अब वास्तविक संघर्ष शुरू हो चुका था।

इन सारी घटनाओं की चेक जनता में उग्र प्रतिक्रिया हुई। ज्यों-ज्यों जर्मनी का दबाव बढ़ा, जासूसी कार्रवाइयां भी तेज होती गयीं। ब्रिटेन से सीधी मदद स्वीकार की गयी और विदेश-स्थित चेकोस्लोवाक प्रतिरोध-आंदोलन से संपर्क किया गया। उधर फ्रैंक ने भी अपनी कार्रवाई तेज की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दी। लगभग २ लाख जर्मन पुलिस वाले और सैनिक चेकोस्लोवाकिया के दमन के लिए जमा कर दिये गये थे। सारे प्रशासन को भी जर्मनों से भर दिया गया था—हर ७९० चेक लोगों पर एक जर्मन नियुक्त था।

गिरफ्तारियों और प्राणदंडों ने १९४० में प्रतिरोध-आंदोलन को छितरा-सा दिया था। फिर भी नये उत्साही लोग प्राणों की बाजी लगाने को आ ही रहे थे। इसी समय लंदन में बसे चेक नेताओं ने तय किया कि विशेष रूप से प्रशिक्षित पेशेवर कार्यकर्ता ब्रिटेन से चेकोस्लोवाकिया भेजे जायें। इनका काम था आंदोलन को पुनः संघटित करना और जर्मनों के विरुद्ध विशेष कार्रवाई की तैयारी करना। १९४१ में चेक कम्युनिस्ट पार्टी ने भी राष्ट्रीय केंद्रीय क्रांतिकारी समिति में संमिलित होना स्वीकार कर लिया और इस प्रकार प्रतिरोध को एक संघटित राजनैतिक केंद्र मिल गया।

सन १९४१ की गरमियों में ही गेस्टापो दो अवैध ट्रांसमिटरों का पता लगाने में सफल हो गयी। अनेक नेता और रेडियो-आपरेटर गिरफ्तार कर लिये गये। परंतु इससे जर्मन यह भी समझ गये कि प्रतिरोध-संघटन १९४० के आघात से उबर चुका है। १० जून १९४१ को फ्रैंक ने हिटलर को यह रिपोर्ट भेजी—'गुप्त ट्रांसमिटरों का पता लगाकर हमने भारी सफलता प्राप्त की है; हमें एक ऐसे गैरकम्युनिस्ट संघटन का भी पता चला है, जो रूस के लिए काम कर रहा था......परंतु अब हम इस भूमिगत

हरमन फ्रैंक

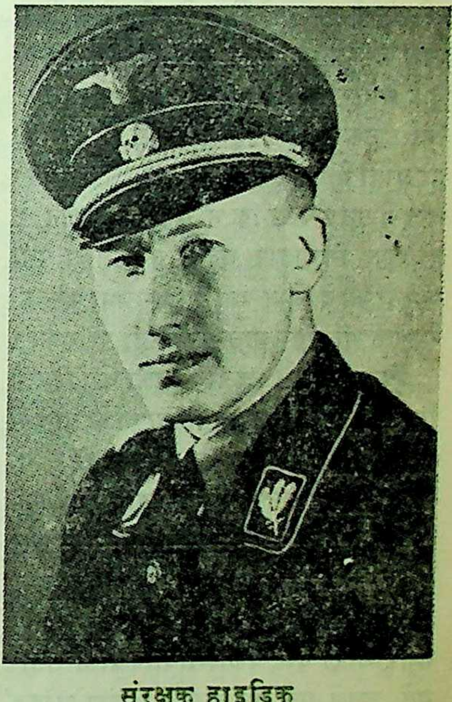

संरक्षक हाइड्रिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आंदोलन को [illegible] हैं।' साथ ही उसने यह भी लिखा–'पर इस गुट का स्थान एक और गुट ने ले लिया है जो कि है तो छोटा, पर पहले गुट से कहीं अधिक खतरनाक है। इस गुट का काम गुप्तचरी और तोड़-फोड़ दोनों है।'

जर्मन अंततः इस गुट का भी सफाया करने में सफल हो गये; परंतु तब तक गेस्टापो के लिए एक और खतरनाक दुश्मन तैयार हो चुका था–ब्रिटेन से भेजे गये छतरीधारी।

२१ वर्षीय एफ. पवेल्का ऐसा ही एक छतरीधारी था। उसे चेकोस्लोवाकिया से टूटे संपर्क-सूत्रों को फिर से जोड़ने के लिए विशेष रूप से भेजा गया था। पर वह चेक प्रतिरोध-संघटनों को ट्रांसमिटर और विस्फोटक पदार्थ पहुंचा पाता, इससे पहले ही प्राहा में उसे गिरफ्तार कर लिया गया। बाद में पता चला कि भूमिगत आंदोलन के ही एक गिरफ्तार सदस्य ने उसका पता जर्मनों को दे दिया था। पर गेस्टापो पवेल्का से कोई भी नयी जानकारी नहीं पा सकी।

फिर भी यही पहला मामला था, जिसमें लिडिस का नाम आया। पवेल्का के पास से जर्मनों को लिडिस में रहने वाले दो लोगों के पते प्राप्त हुए थे, जो कठिनाई में उसकी सहायता करते। हाइड्रिक की हत्या के बाद ये पते पूरे गांव के लिए जानलेवा सिद्ध हुए।

दिसंबर १९४१ में जो तीन महत्त्वपूर्ण छतरीधारी दल चेकोस्लोवाकिया में उतारे गये, उनमें एक का नाम था 'एंथ्रोपॉइड'

और [illegible] संरक्षक हाइड्रिक की हत्या का जिम्मा था। जैसा कि ऊपर हम देख चुके हैं, हाइड्रिक हिटलर का आंतरिक सुरक्षा-विशेषज्ञ था और सितंबर १९४१ में चेकोस्लोवाकिया का कार्यकारी संरक्षक (प्रोटेक्टर) नियुक्त हुआ था। प्राहा पहुंचने के साथ ही उसने दिखा दिया कि 'संरक्षण' का वह क्या अर्थ समझता है। उसने घोषणा की :

'जर्मन हितों की रक्षा के लिए मैं सितंबर १९४१ से ही बोहीमिया और मोराविया में मार्शल ला लागू करता हूं ...... सार्वजनिक स्थानों या बंद कमरों में बैठकों का आयोजन गैरकानूनी है। कोर्ट मार्शल द्वारा दी गयी सजा की कोई अपील नहीं होगी। प्राणदंड गोली मारकर या फांसी लगाकर तत्काल दिया जायेगा।'

यह थी हाइड्रिक की चेक जनता को 'शांत करने की नीति'! इस नीति के अनुरूप ही संरक्षक महोदय के चेकोस्लोवाकिया पधारने के दिन १४२ लोगों को मृत्युदंड दिया गया और ५८४ को जहाज द्वारा माउटहासेन के मृत्यु-शिविर में भेज दिया गया। मगर चेकोस्लोवाकिया के राजनैतिक और सामाजिक जीवन को विनष्ट करने के लिए हाइड्रिक के पास अभी तो ढेर सारी योजनाएं मौजूद थीं!

११ नवंबर १९४१ को चेक सरकार के प्रधान-मंत्री जनरल एलियास को गिरफ्तार कर लिया गया और इसके साथ ही हाइड्रिक ने चेक-समस्या का अपना 'अंतिम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

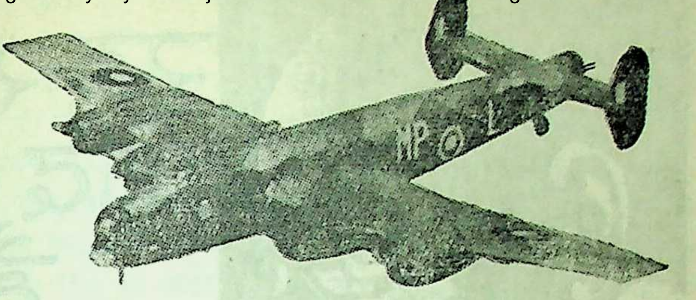

कनाडा के हैलिफैक्स विमानों से छतरीधारियों को चेकोस्लोवाकिया में उतारा जाता था।

समाधान' कार्यगत करना प्रारंभ कर दिया। इससे पांच दिन पूर्व ही उसने हिटलर के दायें हाथ बोरमन को लिखा था कि मैं चेक स्वायत्तता को खत्म कर दूंगा। २३ जनवरी को उसने बोरमन को फिर लिखा कि मेरी कार्रवाई के फलस्वरूप अब चेक सरकार जर्मनी के विरुद्ध शिकायतें जमा करने का केंद्र नहीं रह गयी है; अब उसे (चेक सरकार को) स्वयं चेक जनता के विरुद्ध संरक्षक का सक्रिय हथियार बनना होगा।

फिर अपनी हत्या के दस ही दिन पूर्व उसने बोरमन को सूचित किया था कि मेरे प्राहा पहुंचने के समय चलाये गये दमन-चक्र की स्मृतियां अब धुंधली पड़ने लगी हैं; अब दमन का कोई नया दौर चलाना चाहिये, ताकि मैं चेक प्रांतों पर सफलतापूर्वक शासन जारी रख सकूं।

परंतु हाइड्रिक को पता नहीं था कि शासन-सूत्र संभालने के साथ ही चेक जनरल बिली और जनरल वोज्ता को फांसी पर लटकाकर उसने स्वयं अपने मृत्युपत्र पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। ये दोनों जनरल प्रतिरोध-आंदोलन के सदस्य तो थे ही, लंदन-स्थित प्रधान चेक खुफिया-अधिकारी कर्नल मोरावेक के प्रिय मित्र भी थे। मोरावेक अपने मित्रों की हत्या के प्रतिशोधकर्ताओं को प्राहा रवाना कर चुका था।

हाइड्रिक की हत्या का निश्चय कब किया गया, यह पता लगाना बहुत कठिन है। तय हुआ था कि २८ अक्तूबर को चेकोस्लोवाकिया के स्वतंत्रता-दिवस पर उसकी हत्या कर दी जाये। कनाडा के एक हैलिफैक्स विमान ने सार्जेंट क्यूबिस और सार्जेंट गैब्सिक को इस काम के लिए २८ दिसंबर १९४१ को चेकोस्लोवाकिया की धरती पर उतारा था। अब वे लंदन से अंतिम आदेश के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

हाइड्रिक प्राहा नगर के बाहर पानेन्स्के ब्रेज़ानी नामक गांव में एक यहूदी परिवार से छीनी गयी विशाल कोठी में रहता था। रोज सुबह एक मर्सिडीज कार कोठी पर आती थी और हाइड्रिक का निजी ड्राइवर उसे प्राहा ले जाता था। कार गांव में से

[शेष पृष्ठ १२९ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

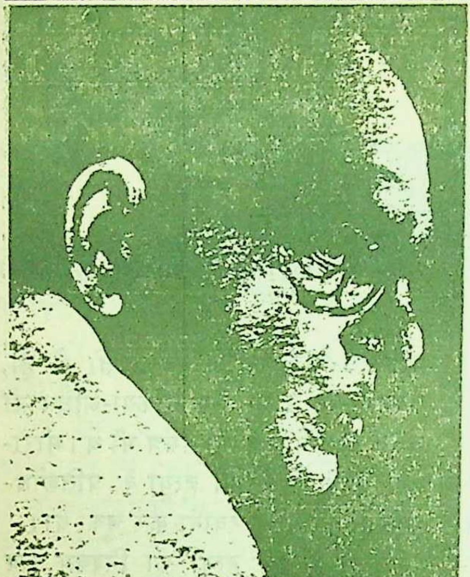

रह-रहक[र] याद आते हैं नलिनजी

~शंकरदयाल सिं[ह]

पटना के ब्रजकिशोर पथ पर स्थित मकान से जब नलिनजी का शव उठाया गया, तब आचार्य शिवपूजनसहाय बच्चों की तरह फफककर रो पड़े थे। 'उठना तो मुझे चाहिये था, आप क्यों उठ गये ?' उन्होंने अपने आंसू पोंछते हुए कहा था। लाख मना करने पर भी शिवजी ने अरथी में कंधा लगा ही दिया और डगमग पांवों से आगे बढ़े। दूसरी ओर से श्री रामदयाल पांडेय उन्हें संभाले हुए थे।

नलिनजी की अरथी उनके निवास-स्थान से बिहार हिंदी साहित्य संमेलन भवन की ओर चली। जुलूस में शामिल हजारों विद्यार्थी, साहित्यकार, पत्रकार, राजनीतिज्ञ और पटना के सभी वर्गों के [प्र]निधि आंखों से आंसू पोंछ रहे थे।

फूलों से लदा नलिनजी का पार्थिव श[रीर] मुख पर वही पुराना स्मितहास लिये [...] आगे था, और पीछे थी हजारों दुखियों [की] टोली। पटना के जन-जीवन का एक [...] करुण दृश्य था वह।

नलिनजी से मेरा पहला परिचय [...] में हुआ था। तब मैं हिंदू विश्वविद्यालय [का] छात्र था और नलिनजी तुलसी-पुस्तका[लय] द्वारा आयोजित किसी साहित्यिक सम[ारोह] में भाग लेने काशी आये थे। हजारों [...] के बीच भी न छिपने वाली उनकी [...] आकृति, दिव्य भाल, मृदुल स्मित, [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गांभीर्य एवं अतिशय नम्रता मुझे उनके पास ले गयी। फिर मैं जब पटना आया, तब मेरा सबसे अधिक संपर्क उनके साथ ही रहा।

उनके व्यक्तित्व की रेखाएं इतने तत्त्वों से संवलित हैं कि उनका मूल्यांकन आसान नहीं। उनकी सादी, किंतु विशिष्ट आकृति का अंकन तूलिका की क्षमता से परे है। साहित्य का विद्यार्थी रहने के बावजूद साहित्य से मेरा वैसा नाता नहीं रहा, इसलिए उनके साहित्य से मेरा संपर्क नहीं के बराबर था। मैं तो कायल था उनके व्यक्तित्व का, उनकी सज्जनता का, उनके मृदु आचरण का, उनकी नम्रता और उनकी सामाजिक चेतना का।

परिचित या अपरिचित कोई हो, सबकी मदद वे करते थे; और मिलने वालों पर उनके व्यक्तित्व का ऐसा गहरा असर पड़ता था कि एक बार भी जो उनसे मिल ले, उन्हें जीवन-भर भूल नहीं सकता था। काशी में वर्षों रह चुकने के कारण जब वहां के नये साहित्यकार पटना आते, तो नलिनजी के पास पहुंचने का माध्यम हमें ही बनाते। मैं सदा देखता कि मिलने वाला गद्‌गद होकर उनके पास से लौटता। स्नेहपूर्ण मार्गदर्शन और सही दिशा-संकेत का अखंड सत्र चला रखा था नलिनजी ने।

उनके व्यक्तित्व में कुछ ऐसी गरिमा थी, जो उन्हें आपसे आप आचार्यत्व प्रदान करती थी। पटना का कोई भी साहित्यिक अथवा सामाजिक समारोह उनके बिना सूना ही मालूम देता था। बाहर से पटना आने वाला प्रायः हर विद्वान यही कहता कि नलिनजी से मिलने चला आया। यही कारण था कि जब भी मैं उनके यहां आता, कभी जैनेंद्रजी, कभी अश्कजी और कभी अन्य कोई साहित्यकार वहां विराज रहे होते।

'वे व्यक्ति नहीं, संस्था थे'—यह वाक्यांश बहुतों के बारे में औपचारिकतावश उपयोग कर दिया जाता है; मगर आचार्य नलिनविलोचन शर्मा के बारे में वह शत-प्रतिशत सत्य था। उनका महत्त्व इस कारण नहीं था कि वे पटना विश्वविद्यालय के हिंदी-विभाग के अध्यक्ष थे, बदरीनाथ सर्वभाषा विद्यालय के प्रिंसिपल थे, बिहार हिंदी साहित्य संमेलन के प्रधान-मंत्री और राष्ट्रभाषा-परिषद् के अनुसंधान-निर्देशक थे। वास्तविकता तो यह थी कि वे ऐसी मूर्ति थे, जिसे अपने कक्ष में प्रतिष्ठित कर वे संस्थाएं अपने को धन्य समझती थीं और अपना गौरव बढ़ाती थीं।

नलिनजी अपनी कम कहते थे, दूसरों की अधिक सुनते थे। उनकी अतिशय गंभीरता—जिसकी तुलना हम लोग सागर से किया करते थे—प्रसिद्ध थी; परंतु उनके घर पर जब कभी हम जाते, बालकों के समान उनका निर्मल हास्य घंटों गूंजता रहता और सुनने को मिलते एक से एक दिलचस्प संस्मरण।

निरालाजी के संबंध में नलिनजी ने एक संस्मरण सुनाया था, जो अत्यंत रोचक तो है ही, साथ ही निराला के व्यक्तित्व को भी सामने रखता है। नलिनजी किसी साहित्यिक उत्सव में भाग लेने प्रयाग गये थे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और निरालाजी के दर्शनार्थ उनके दारागंज-स्थित निवास पर पहुंचे। नाश्ता-चाय के बाद निरालाजी ने अपने साथ टहलने चलने को कहा और नलिनजी उनके साथ हो गये। कुछ ही दूर पर अस्पताल था। निरालाजी नलिनजी को लिये उसी में जा पहुंचे और डाक्टर को बुलाकर वजन तोलने की मशीन लाने का हुक्म दिया।

दो विशालकाय महापुरुषों को देखने के लिए बात की बात में भीड़ जमा हो गयी। तोलने की मशीन आयी। निरालाजी का हुक्म हुआ—'चढ़ो।' नलिनजी पसोपेश में। करें तो क्या? पर निरालाजी ने हाथों से सहारा देते हुए उन्हें मशीन पर चढ़ा ही दिया। बाद में वे स्वयं भी चढ़े। देखा गया, नलिनजी से वे चार-पांच पौंड अधिक ही निकले। तब उन्होंने नलिनजी की पीठ थपथपायी और कहा—'आप ही कहें, हमसे तगड़ा साहित्यकार हिंदी में यहां कौन है दूसरा?'

नलिनजी स्वयं अनेक रोचक संस्मरणों के नायक (हीरो) थे। एक बहुत ही मनोरंजक संस्मरण हिंदी शोधमंडल के प्रधान-मंत्री श्री शिवचंद्र शर्मा सुनाया करते हैं।

उन दिनों शिवचंद्रजी काशी में रहते थे और उन्होंने एक पंडे का मकान किराये पर ले रखा था। कोई दूसरा किरायेदार उस मकान
किराया उससे अधिक देने को तैयार था;
शिवचंद्रजी न तो मकान छोड़ने को तै
थे, न किराया बढ़ाने को ही। नतीजा यह हु
कि मकान-मालिक ने बनारसी तरीके
मकान छुड़वाने और शिवचंद्रजी का सा
भी गायब करा देने की योजना बनाई
इसी उद्देश्य से उसने एक शाम सात-
बजे के करीब तीन-चार बनारसी गुंडों
उनके मकान के पास भेजा।

संयोग से नलिनजी उस समय काशी
हुए थे और शिवचंद्रजी के यहीं ठहरे हु
थे। गुंडों ने शिवचंद्रजी को बाहर बुला
मकान छोड़ने को धमकाया और नहीं
आगे का भी भय दिया। दोनों पक्षों
गरमागरम बातें हो रही थीं और नलिन
अंदर बैठे सब सुन रहे थे। सारी बात
उनकी समझ में आ गयी, तो स्थिति मा
के खयाल से वे बा
निकले और केवल इत
ही बोले—'क्या बात है
उनकी भव्य आकृ
लंबाई-चौड़ाई-मुटाई
मल का कुरता-धो
रोबीली आवाज देख
गुंडे भाग चले। उन्हें ल
कि शिवचंद्रजी ने
बड़ा पहलवान पहले से
बुला रखा है। फिर कि
की हिम्मत नहीं हुई
उन्हें छेड़े।

पिता म. म. रामावतार शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर्षों के सान्निध्य में मैंने कभी भी नलिनजी को क्रोध करते नहीं देखा। केवल एक बार देखा उन्हें झल्लाते, रंज करते। एम. ए. फाइनल की क्लास में आखिरी भाषण था। तीन घंटे से वे काव्यशास्त्र पर बोल रहे थे। तभी उनका ध्यान इस बात पर गया कि सबसे पीछे की सीट पर दो लड़के बैठे गपशप कर रहे हैं। उन्होंने कहा—'आपको मैं कैसे कहूं कि क्लास छोड़कर निकल जायें। मैं स्वयं चला जाता हूं।'

होली और विजयादशमी जैसे त्योहारों पर मैं देखता था कि आचार्य शिवपूजनजी उन्हें पैर छूकर प्रणाम करते थे। नलिनजी बहुत मना करते, परंतु शिवजी न मानते।

नलिनजी जैसी अतिथि-परायणता आज के युग में बिरलों में ही पायी जाती है। पटना में महादेवीजी आयें या जैनेंद्रजी, अज्ञेयजी आयें या हजारीप्रसादजी द्विवेदी—सबकी पांथशाला होती नलिनजी की कुटिया। सवेरे की चाय से लेकर रात में सोते समय बिस्तर की बगल में पानी का ग्लास रखा है या नहीं—इस सबकी देखभाल बड़ी तत्परता से होती।

पटना के जीवन के तो वे केंद्रबिंदु थे, जिसकी तुलना हम गांधी मैदान (पटना) से कर सकते हैं। उस मैदान में अगर अट्टालिकाएं खड़ी कर दी जायें, तो पटना की शोभा समाप्त हो जायेगी और सुबह-शाम जो हजारों लोग हवाखोरी के लिए वहां जाते हैं, वे घुट जायेंगे। नलिनजी के उठ जाने से कुछ वैसी ही स्थिति पैदा हो गयी है। आज इतने वर्ष बाद भी उनके अभाव में कितनी संस्थाएं अपने को श्रीहीन समझ रही हैं; हजारों साहित्यकार—जिनके वे सखा और पिता की तरह थे—वैसे किसी व्यक्तित्व की तलाश में आज तक भटक रहे हैं।

नलिनजी का व्यक्तित्व आकाश की तरह उन्मुक्त था। आकाश की शीतलता, आकाश का विराट स्वरूप, आकाशमयी चेतना और वही उदार दृष्टिकोण। वे सागर की भांति गंभीर थे—बुलबुले, फेन, लहर सब उसकी छाती पर उठते हैं, परंतु उसकी गरिमा का हरण कोई नहीं कर पाता।

जितनी अल्पायु में उन्होंने यह ख्याति अर्जित कर ली थी, वह ईर्ष्या की वस्तु है। साहित्य का देवता उनके अंदर वास करता था और साहित्यकार की युग-चेतना उनमें विद्यमान थी। विद्वत्ता उन्हें विरासत में अपने पिता से मिली थी और उसे वे इस प्रकार सहेजकर रखते थे कि उस पर किसी प्रकार की आंच न आये, न हवा लगे, न कालिख पुते। और इसीलिए कोई उन्हें लेख आदि में या उनके मुंह पर ही गाली भी दे, तो वे मुस्कराकर रह जाते थे। आलोचना के मर्मज्ञ पंडित थे। काव्य-शास्त्रों के अनोखे अध्येता थे। साहित्य-शास्त्र की नस-नस पहचानते थे। परंतु अपने को सदा विद्यार्थी कहते थे—कोई 'विद्वान' कहे तो चौंक जाते थे।

प्रतिभा उनकी बहुमुखी थी। साहित्य के क्षेत्र में आलोचना, कहानी, कविता सभी की सेवा उन्होंने की और इसके अतिरिक्त संगीत तथा चित्रकला से भी उन्हें काफी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहरा लगाव था। साहित्य का अद्यतन ज्ञान रखने के लिए जितना अध्ययन वे प्रतिदिन किया करते थे, उतना परीक्षा के समय में विद्यार्थी भी नहीं करते हैं। रोज ही रात के एक-दो बजे तक वे पढ़ते थे और उस पढ़ाई में विश्व-साहित्य का समावेश होता था। बोलते समय लगता था, जैसे एक-एक शब्द तोलकर बोल रहे हैं और इसीलिए ज्यादातर मौन ही रहा करते थे।

सरलता उनकी निशानी थी और नम्रता उनका बाना था। बड़ा साहित्यकार उनसे डरता था, क्योंकि उनकी कसौटी कभी परखने में धोखा नहीं देती थी; और नया साहित्यकार उनका सामीप्य चाहता था, क्योंकि जानता था कि यही एक वृक्ष है, जिसकी टहनियों का सहारा पाकर बढ़ा जा सकता है। वे अमृतघट अपने लिए नहीं, दूसरों के लिए जीवन बनकर जिये।

सन १९६१ की १२ सितंबर को हुई उनकी मृत्यु मृत्यु नहीं, छलना और खिलवाड़ थी। १० बजे कालेज जाने की तैयारी कर रहे थे। १०॥ बजे सीने में हल्का दर्द हुआ। ११ बजे डाक्टर आये, कुछ नहीं बतलाया, दवा दी, कहा—मामूली दर्द है, चिंता की कोई बात नहीं। सो परिवार के सदस्यों ने भी उसे गंभीरता से नहीं लिया। १२ बजे स्वयं हस्ताक्षर करके विभाग में दरख्वास्त भिजवायी—'तबीयत कुछ सुस्त है, आज न आ सकूंगा—न. वि. श., १२-९-१९६१। १ बजे तक दिनेशजी और भारद्वाजजी पास ही रहे, कोई खास चिंता नहीं, कोई आभास नहीं। उसके बाद एक... आंखों से झर-झर फव्वारा और २ बजे... पहले ही एक युग का अंत।

सब जानते हैं कि मौत आती है—... घर आती है, सबके लिए आती है। ... इस तरह चोरी से आने की क्या जरूरत... उसे ? तब यही न सिद्ध हुआ कि मृत्यु ... है। वातायन में से झांककर आती है, ... दबाकर आती है, भय खाते हुए आती है... इसका अर्थ यही कि न तो वह इठलाती ... है और न बलखाती नदी, न तो दहाड़... शेर है और चिंघाड़ता गजराज—वह ... है, क्योंकि सूराख खोजती है, सेंध मारती है...

मैं बार-बार चाहता हूं कि मौत ... शाश्वत मान लूं और नलिनजी के शोक... भूल जाऊं। परंतु उनके निवास-स्थान ... उठती हुई उनकी अरथी और उस समय ... आचार्य शिवपूजन सहाय का करुण ... प्रभातजी का चीत्कार, राजा राधि... रमण सिंह की आंखों में आंसू, उनके परि... का कलेजे को फाड़ने वाला क्रंदन कैसे ... जाऊं ?

हां कैसे भूल जाऊं उनकी मृत्यु ... क्योंकि वे दूसरों के लिए जीते थे! अन्त... समस्याएं, साहित्य का वात्याचक्र, ... जिक उत्पीडन—सब उनके पास जाते ... लोप हो जाया करते थे।

पंद्रह वर्ष बीत बाद भी आज रह-रह... उनकी याद एक टीस बनकर कह उठती है... 'काश, वे जिंदा होते।'

—४३, मीना बाग, नयी दि...

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब मोर्चे पर भगदड़ मचती है

जनरल जयंतनाथ चौधरी [निवृत्त]

राष्ट्रीय मुक्ति मोर्चे के हमलों के आगे दक्षिण वियतनामी सेना जिस तरह एकाएक ढह पड़ी, स्वाभाविकतया उसमें एक पेशेवर सैनिक के नाते मेरी जबर्दस्त दिलचस्पी थी। स्पष्टत, अच्छी तरह साधन-सज्जित और निश्चय ही अनुभव-संपन्न सेना लड़ने की इच्छा क्यों गंवा बैठी और फिर भय से अपने हथियार छोड़कर नागरिक शरणार्थियों को धकियाती हुई, युद्धक्षेत्र से सुरक्षित बच निकलने को भाग क्यों चली ?

सेना में भगदड़ पहली बार मैंने देखी १९४० में। घटना बहुत छोटी थी; मगर उसने मेरे मन पर यह बात अंकित कर दी कि किस प्रकार निराधार भय पैदा किया जा सकता है और वह कितना संक्रामक हो सकता है। इतालवी पूर्वी अफ्रीका की मुहिम शुरू होने से ठीक पहले हम लोग सैनिक जहाज से पोर्ट सुडान जा रहे थे। वस्तुतः पांचवां भारतीय डिविजन, जिसमें कि मैं भी था, इस सफल युद्ध में भाग लेने वाले दो सेना-दलों में से एक था।

हमारा जहाज गोदी में पहुंचा ही था कि तीन छोटे इतालवी हवाई जहाज आये और उन्होंने इस इलाके में चंद हल्के बम गिराये। एफ. एल. राबर्ट्स नामक एक मेजर (जिन्हें सब 'रबर' कहते थे), होशोहवास गुमा बैठे और चिल्ला-चिल्लाकर दूसरों को भी वैसा करने के लिए कहते हुए दौड़कर एक गलियारे में हाथों से सिर ढंककर लेट गये। और भी कोई तीस लोगों ने वही किया।

मगर इससे पहले कि और ज्यादा लोग वैसा करें, फील्ड मार्शल स्लिम (जो उन दिनों ब्रिगेडियर थे) बड़े शांतभाव से वहां से गुजरे। लेटे हुए लोगों पर नजर डालते हुए उन्होंने बड़ी शांति से कहा—'रबर, यहां से तुम्हें ठीक से कुछ दिखाई नहीं देगा। ठीक से देख पाने के लिए मैं ब्रिज पर जा रहा हूं।' और वे जहाज के ब्रिज की ओर चल दिये। भगदड़ शांत हो गयी, सब लोग डेक पर आ गये। बमों ने एक भी सैनिक को चोट नहीं पहुंचायी थी; हां, तट पर कई इमारतों में सूराख हो गये थे।

अगली घटना इसके थोड़े ही समय बाद की है। गल्लाबत का युद्ध इस मुहिम का पहला युद्ध था। वह शुरू हुआ ही था कि वायरलेस पर एकाएक संदेश आया कि ब्रिटिश बटालियन टूट गयी है और आपाधापी में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीछे को भाग रही है। मैं उस वक्त डिविजन के मुख्यालय में था। हममें से जितनों को भी बरी किया जा सकता था– जिनमें मैं भी था–आदेश दिया गया कि तीन-तीन जवान और एक ट्रक लेकर जाओ और मोर्चे से लौटने के जितने रास्ते हों, उनकी नाकेबंदी करो।

जिस रास्ते की निगरानी मैं कर रहा था, उस पर बहुत लोग तो नहीं आये, मगर गोली चलाये बगैर उन्हें रोकना असंभव हो गया। उन्हें पूरा विश्वास था कि इतालवी उनके पीठ पीछे हैं और चंद क्षणों में ही उन्हें धर दबोचेंगे। बाद में मैंने सुना कि आखिरी पलायनकर्ता ३०० मील दूर पोर्ट सुडान में पकड़े गये थे।

स्पष्ट ही यहां खराबी का कारण था घटिया किस्म के अफसर और युद्ध पूर्व अवस्था में 'सॉफ्ट' स्टेशनों की भरमार। बटालियन का पुनर्गठन किया गया और सख्त कमांडिंग अफसर नियुक्त किया गया; और अठारह महीनों के भीतर रेगिस्तानी युद्ध में बटालियन ने गंवायी हुई प्रतिष्ठा फिर से प्राप्त कर ली।

इतालवी पूर्वी अफ्रीका की मुहिम ज्यों-ज्यों आगे बढ़ी इतालवी ही बड़ी संख्या में आत्मसमर्पण करने लगे। अगर कोई जगह होती जहां वे जा सकते और वहां अपने को सुरक्षित समझ सकते, तो उनमें भगदड़ और अव्यवस्था मच गयी होती। मगर उनके उत्तर से भारतीय डिविजन बढ़ता आ रहा था और दक्षिण से दक्षिण अफ्रीकी सेना चली आ रही थी और चारों ओर से अबिसीनियाई गेरिल्ले उनके इक्के-दुक्के सैनिकों और छोटी सैनिक टोलियों को बड़ी बेरहमी से काटे डाल रहे थे। और स्वदेश में जो कुछ घट रहा था, उससे भी सेनाएं हताश थीं और उनकी लड़ने की इच्छा, जो कि कभी बहुत तेज न थी, बिल्कुल ही नष्ट हो गयी थी। बड़े-बड़े गिरोहों में आत्मसमर्पण कर देना सबसे सुरक्षित था।

अगर वे जापानी होते, तो बात कुछ और ही होती। बर्मा-युद्ध के आखिरी दौर में भी, जबकि उनकी हार अपरिहार्य थी, मैंने जापानी सैनिकों को कभी आत्मसमर्पण करते नहीं देखा। हर कदम पर लड़ते-लड़ते पीछे हटते हुए वे विशाल वृक्षों की ऊंची शाखाओं पर बंधे हुए, ढंके-छिपे बंदूकचियों को अपने पीछे छोड़ जाते थे, ताकि वे मरते-मरते भी हमारा संहार कर सकें। और उन्हें बांधने का कारण यह नहीं था कि वे भाग जाते, बल्कि यह था कि वे अपनी जगह पर स्थिर रह सकें और घायल हो जाने पर प्राण निकलने तक सक्रिय रह सकें।

भारत को भी भगदड़ का निजी अनुभव है। १९६२ में भारतीय सेना का पूर्वी विंग चीनियों से लड़ता हुआ पीछे हटता गया और अंत में वह पीछे हटना भगदड़ में बदल गया। पश्चिमी विंग डटा रहा और उसने अच्छा काम करके दिखाया। हमारी विफलता के कारणों का विस्तार से अध्ययन किया गया है और अब भी कुछ हद तक वे विवादास्पद हैं। फिर भी उस विफलता

अगले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कारणों को संक्षेप में शायद यों कहा जा सकता है कि साधन अपर्याप्त थे, स्थितिज्ञान गलत था, राजनैतिक निर्णय (जिन पर कि सब दारोमदार होता है) गलत थे, और नाना कारणों से नेता-वर्ग स्वयं अनिश्चय में था। अंतिम और सर्वथा सही निर्णय तो सौ साल बाद कोई इतिहासकार सुना सकेगा।

ऐसा ही धक्का ब्रिटेन को डन्कर्क में झेलना पड़ा था। मगर उसने खोया गौरव फिर से अर्जित कर लिया, जैसा कि भारतीय सेना ने भी किया। हां तो यहां भी जीवित बचे सैनिकों से बातचीत करने पर यह बात स्पष्ट हुई कि भगदड़ अचानक और बेवजह मची थी। सभी अपनी करनी पर लज्जित थे; मगर कोई ठीक-ठीक बता नहीं पाया कि भगदड़ कब और कैसे शुरू हुई और एक दूसरे से इतनी दूर-दूर स्थित सेना-दलों में इतनी तेजी से कैसे फैली। शुरू हो जाने के बाद वह तेजी से बढ़ती चली गयी। सब कहीं चीनी सेना मौजूद बतायी जाने लगी। यहां तक कि पृष्ठवर्ती क्षेत्रों में भी यह भय फैल गया कि चंद घंटों में चीन की जनमुक्ति सेना पहाड़ों से मैदान में उतर आयेगी और सब तहस-नहस कर देगी। सामरिक स्थिति के विचारपूर्ण पर्यालोचन से स्पष्ट हो जाता कि यह सब भय कितना निराधार था।

वियतनाम में सैनिक-व्यवस्था जैसे ढह पड़ी, उसके कुछ कारण तो अभी से पहचाने जा सकते हैं। इनमें से कई की तो आसानी से भविष्यवाणी भी की जा सकती थी। अमरीकियों के जाने के बाद दक्षिण वियत-सामरिक सेना-दलों का मनोबल गिर गया था और अपने अधीनस्थ सैनिकों के हित के बजाय अपने स्वार्थ को महत्त्व देनेवाले अयोग्य एवं भ्रष्ट वरिष्ठ अफसरों ने मनोबल की इस गिरावट को विषमतर बना दिया। अमरीकी सलाहकारों के वापस बुला लिये जाने से वह बैसाखी छिन गयी, जिस पर विविध स्तरों के सेना-संचालक निर्भर रहने के आदी हो गये थे। इसलिए जब महत्त्वपूर्ण निर्णय स्वयं करने की बारी आयी, वे गलत और अललटप निर्णय करने लगे। विदेशी सलाहकार सफलता के बजाय प्रायः विफलता का ही कारण बनते हैं।

जब अमरीकी सैनिक सहायता कम की गयी—जिसका अर्थ था, कम शस्त्रास्त्रों की सप्लाई—सैगान की हाइ कमान अनुचित रूप से चिंतित हो उठी। असल में वह लड़ने के अमरीकी ढर्रे की अभ्यस्त हो गयी थी, जिसमें मनुष्यों के बजाय साजो-सामान को ज्यादा महत्त्व दिया जाता है।

मगर शायद सबसे महत्त्वपूर्ण कारण यह था कि राष्ट्रपति थियू अपनी सेना की वास्तविक स्थिति को और सुव्यवस्थित योजनाबद्ध वापसी (जो कि सबसे जटिल सैनिक कार्रवाई होती है) की बारीकियों को ठीक-ठीक समझने में समर्थ रहे। केंद्रीय पठार के तीन प्रांतों को खाली करने की आज्ञा उन्होंने दे दी, मगर सिलसिलेवार यह काम करने के लिए आवश्यक समय नहीं दिया। इससे मामला एकदम बिगड़ गया।

['इंडियन एक्सप्रेस' से]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और शकुंतला
किसी कालिदास की प्रतीक्षा में

● उमाकांत मालवीय ●

महाभारत की शकुंतला समर्पण के पूर्व दुष्यंत से शाक-सब्जी वाली की भांति मोल-भाव करती है; यथा, उससे उत्पन्न पुत्र ही राज्य का उत्तराधिकारी हो और जाने क्या-क्या ! इस शकुंतला से सहृदय पाठक अथवा सुधी भावक का कोई सरोकार नहीं था। इसी शकुंतला को जब कालिदास-जैसे रससिद्ध रचनाकार के प्राणों की करुणा का सहारा मिला, वह एक दूसरी शकुंतला के रूप में जन-जन के मानस में स्पंदित होने लगी। गेटे-जैसा महाकवि तो उसे पढ़कर, मारे प्रसन्नता के नाचने लगा। कालिदास की रसवंती लेखनी ने विस्मृत शकुंतला के प्राणों में जो अमृत-सिंचन किया, उसके कारण वह काल का अतिक्रमण करती हुई आज भी हमारे बीच जीवंत है।

भारतीय पुराण-अरण्य में खोयी हुई एक और शकुंतला है प्रमद्वरा, जिसे किसी कालिदास के प्राणवंत संस्पर्श की प्रतीक्षा है, ताकि वह एक भुवन-विमोहन रूप में साहित्य के शाश्वत मंच पर अवतीर्ण हो सके। प्रमद्वरा की कथा इस प्रकार है :

महर्षि भृगु के सुपुत्र महर्षि च्यवन हुए। उन्होंने देवताओं के वैद्य अश्विनीकुमारों की सहायता से अखंड यौवन प्राप्त किया और राजा शर्याति की रूपवती पुत्री सुकन्या की कोख से प्रमति नामक अत्यंत रूपवान पुत्र को जन्म दिया। प्रमति एक बार नृत्य करती अप्सरा घृताची पर मुग्ध हो गये। घृताची भी प्रमति पर आसक्त हो गयी। दोनों ही सौंदर्य-श्री-संपन्न थे; दोनों के संयोग से रुरु नामक अत्यंत सुंदर पुत्र का जन्म हुआ।

एक दिन गंधर्वराज विश्वावसु संध्या समय पर्वतों के मनोरम दृश्यों को मुग्ध होकर देख रहे थे। संयोग से उनकी दृष्टि एक सरोवर में स्नान करती अनिंद्य सुंदरी मेनका पर पड़ी। मेनका का यौवन अक्षुण्ण और अखंड था। वह स्वर्णचूर्ण-वर्ण की थी। उसकी मांसल स्वस्थ देहयष्टि पर गंधर्वराज मुग्ध हो गये। कामविह्वल होकर उन्होंने मेनका से याचना की। मेनका ने उन्हें कृतार्थ किया। उनके समागम के परिणामस्वरूप कालांतर में एक अत्यंत रूपवती कन्या उत्पन्न हुई। हृदयहीना मेनका ने उस कन्या को महर्षि स्थूलकेश के आश्रम में छोड़ दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा कि आप जानते हैं, शकुंतला के लिए मेनका ने महर्षि कण्व का आश्रम चुना था; और इस कन्या के लिए उस 'कुमाता' ने महर्षि स्थूलकेश का आश्रम चुना। पुत्री शकुंतला से पिता विश्वामित्र ने कोई सरोकार नहीं रखा था और इस कन्या से इसके पिता गंधर्वराज विश्वावसु ने कोई सरोकार नहीं रखा। महर्षि कण्व की ही भांति स्थूलकेश ने अपने प्राणों की सारी ममता, वात्सल्य और दुलार देकर उस कन्या का पालन-पोषण किया। उसके जातकर्म आदि सभी संस्कार विविधपूर्वक किये। ऋषि ने उसे प्रमद्वरा नाम दिया। प्रमद्वरा अर्थात् प्रमदाओं में श्रेष्ठ। शनैः-शनैः उसमें यौवन का प्रस्फुटन हुआ।

ऐसे में एक दिन घृताची-पुत्र रुरु महर्षि स्थूलकेश के आश्रम में आया। रुरु और प्रमद्वरा ने एक दूसरे को देखा और न्योछावर हो गये। रुरु प्रमद्वरा को पाने के लिए अधीर हो गया। मित्रों के माध्यम से उसने अपना अधैर्य अपने पिता प्रमति को सूचित कराया। वत्सल पिता ने स्थूलकेश से प्रमद्वरा को रुरु के लिए मांग लिया।

चित्र : विष्णु भटनागर

'यदि मैं सत्यप्रतिज्ञ और जितेंद्रिय रहा हूं, तो यह मेरी प्राणप्रिया पुनः जीवित हो उठे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : प्रमोद यादव

प्रमद्वरा के रूप, यौवन, सौंदर्य, अंग सौष्ठव, उस पर मुग्ध होने वाले रुरु की मिलनातुरता आदि प्रसंगों को कालिदास जैसे कवि की लेखनी-तूलिका का संवल मिलता, तो आज संसार का वाङ्मय एक और अलौकिक सौंदर्य की छवि से झिलमिलाता होता। पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र में कन्यादान निश्चित हुआ।

शकुंतला को विदा करते समय विरागी पिता महर्षि कण्व की जो स्थिति थी, तपोवन के लता-गुल्मों, हरिण-शावकों, प्रियंवदा-जैसी सहेलियों और आश्रमवासियों की जो स्थिति थी—जिसकी मार्मिकता से आज का भावक अभिभूत है—क्या प्रमद्वरा को विदा करते समय वीतराग महर्षि स्थूलकेश, उनके तपोवन के लता-गुल्मों, हरिण-शावकों, सहेली ऋषिकन्याओं और आश्रम-वासियों की स्थिति उससे कुछ भिन्न रही होगी ? बेटी की विदाई का प्रसंग भारतीय लोकजीवन में अपनी मार्मिकता के कारण अपना एक अलग ही स्थान रखता है। विदेह कहे जाने वाले जनक भी तो सीता को विदा करते हुए कातर हो गये थे !

श्वसुर-गृह में एक दिन उपवन में फूल चुनती प्रमद्वरा को विषधर ने डस लिया और विष की तीव्रता के कारण वह निष्प्रा होकर गिर पड़ी। निष्प्राण हो जाने के भी वह एक दिव्य ज्योति से आलोकित रही थी। रुरु से अपनी निर्जीव प्राणवल्ल देखी नहीं गयी; वह पछाड़ खाकर गि पड़ा। उसके करुण क्रंदन से स्थूलके प्रमति, स्वस्ति, आत्रेय, महाजानु, कुलि यंख, मेखल, उद्दालक, कठ, यशस्वी, भरद्वाज, कौणिकुत्स्य, आर्ष्टिपेण और गो जैसे ज्ञानी-ध्यानी, उदासीन-वीतराग ऋ गण भी विकल हो उठे।

रुरु ने देवताओं को संबोधित करके क 'हे स्वर्ग के देवताओ ! यदि मैं आजन्म ब्र चारी रहा हूं, यदि मैंने तपयोग से पुण्या किया है, यदि मैंने भक्तिपूर्वक शुद्ध हो मनसा-वाचा-कर्मणा गुरुजनों का सत किया है, यदि मैं जितेंद्रिय और सत्यप्र रहा हूं, तो यह मेरी प्राणप्रिया पुनः जी हो उठे।'

इस प्रकार विलाप कर रहे रुरु के देवताओं ने अपना दूत भेजकर प्रमद्वरा पुनः जीवित करने के हठ को त्यागने आग्रह किया; क्योंकि प्रमद्वरा की नि:शेष हो चुकी थी। लेकिन दूत को कर रुरु और जोर से रोने लगा। वह तपस्या के तेजबल को नियति और विरुद्ध लगाने को तत्पर हो गया। दृढ़ संकल्प के सामने नियति को झुकना प यम को बाधित होकर उससे समझौता क पड़ा। यम की शर्त थी कि यदि रुरु आधी आयु प्रमद्वरा को अर्पित कर दे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह जीवित हो सकती है। रुरु ने एक निमिष का भी विलंब नहीं किया और अपनी आधी आयु प्रमद्वरा के नाम संकल्प कर दी।

रुरु का विलाप अपनी गहनता और मार्मिकता में क्या रघुवंश में वर्णित इंदुमती-मरण पर अज-विलाप से कम था? लेकिन दुर्भाग्य उसे किसी कविकुलगुरु की लेखनी का प्रसाद नहीं मिला। कहना न होगा कि रुरु के संकल्प के साथ ही प्रमद्वरा जीवित हो उठी और रुरु-प्रमद्वरा ने युगों तक सुखोपभोग किया।

यम से अपने प्रिय सत्यवान को जीत लाने वाली सावित्री को अरविंद मिल गये; लेकिन यम को जीतकर अपनी प्रिया को वापस लाने वाले रुरु को किसी योगिराज अरविंद की करुणा का सहारा नहीं मिला। सावित्री के नाम पर पति की क्षेम-कुशल की कामना से व्रत करने वाली लाख-लाख सुहागिनें आज भी हैं, जो बरगद का पूजन आदि करती हैं; किंतु रुरु के नाम पर पत्नी अथवा प्रिया की क्षेम-कुशल की कामना से व्रत-पूजन आदि करने वाला एक भी पुरुष आज नहीं मिलता।

प्रमद्वरा की मृत्यु सर्प के काटने से हुई थी। इस कारण प्रतिशोध-प्रेरित रुरु संपूर्ण सर्प-जाति का शत्रु बन गया। जहां कहीं भी सर्प दिखते, वह उन्हें तुरंत यमलोक पहुंचाता। सर्पों के बीच रुरु का आतंक बैठ गया था। वे उसे गरुड का अवतार मानने लगे थे। एक दिन डुंडुभ जाति का एक पनीला सर्प दिखाई पड़ा। रुरु अपने व्रत के अनुसार डंडा लेकर दौड़ा। साक्षात् काल को सामने देखकर सर्प मनुष्य-वाणी में गिड़गिड़ाया—'मुझे मत मारो, मैं शापग्रस्त ऋषि सहस्रपाद हूं।' रुरु ठिठक गया। 'अपना वृत्तांत सविस्तार बतलाने की आप कृपा करें।' उसने निवेदन किया।

सर्प ने अपनी रामकहानी प्रारंभ की—'मैंने तपस्यारत अपने प्रिय मित्र ऋषि खगम के गले में घास के तिनकों से बना सर्प डाल दिया था। यह परिहास मेरे लिए बहुत महंगा पड़ा। खगम तपस्या से जैसे ही विरत हुए, सर्प के भ्रम में भय से मूर्छित हो गये। उन्हें ज्यों ही होश आया, उन्होंने क्रुद्ध होकर शाप दे दिया कि जिस तरह का निर्वीर्य सर्प तुमने मेरे गले में डाला था, तुम निर्वीर्य सर्पों की वैसी ही योनि को प्राप्त हो। दयालु मित्र खगम ने आपके दर्शन से ही मेरी मुक्ति बतलायी है।' सहस्रपाद शापमुक्त हुए और उनके आग्रह से रुरु ने सर्पसंहार का अपना व्रत त्यागकर अहिंसाव्रत धारण कर लिया।

प्रतिशोध-प्रेरित रुरु के इस रूप को देखकर अनायास परिक्षित-पुत्र जनमेजय का स्मरण हो आता है। यह प्रकरण भी महाभारत अथवा भागवत के पृष्ठ में खोया ही रहता, यदि 'जनमेजय का नागयज्ञ' नाटक के रूप में उसे महाकवि जयशंकर प्रसाद की रसप्राण लेखनी का पीयूष न मिला होता।

यह प्रमद्वरा-रुरु का प्रणय-प्रसंग अहल्या की तरह पथराया पड़ा है। देखें, किसी राम का जीवंत स्पर्श कब उसका उद्धार करता है!

—२३ महावीरन गली, इलाहाबाद-३

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक प्रसिद्ध सिंधी कहानी :

भाई अब्दुर रहमान

*** अमरलाल हिंगोराणी**

कई उसे पागल कहते, और कई उसे पहुंचा हुआ दरवेश समझते। शायद वह पागल भी था और दरवेश भी। वह औसत से कुछ लंबे कद और गेहुंए रंग का दुबला-पतला-सा आदमी था। वह अपने गिर्द हमेशा एक गदड़ी-सी लपेटे रखता।

किसी रहस्यवादी की तरह वह अपने ही विचारों में खोया रहता। कभी वह मस्जिद में बैठा दिखता, कभी किसी मंदिर मे

प्रायः शाम को सक्खर में नदी के घाट प लोग जमा होते और संत समी के गीत गा जाते। वह भी वहां होता और बड़े ध्यान से सुनता। थोड़ी-थोड़ी देर के बाद वह ऊं स्वयं से बात करता—'अच्छा तो भाई अब्दु रहमान, तुम समझ रहे हो न? आखिर तु रोशनी कब देखना शुरू करोगे?'

एक दिन वह सड़क पर जा रहा था, त उसे एक पतथर से ठोकर लगी। उस सम उसने स्वयं से कहा—'भाई अब्दुर रहमान तुम्हारे अंदर धोखा भरा हुआ है। तुम्हारी आंखों पर अहंकार का परदा पड़ा हुआ है अगर तुम आंख खोलकर दीनभाव से चल तो तुम्हें ठोकर न लगती।'

वह कुछ सोचता हुआ बैठ गया। कु क्षणों में ही उसने स्वयं से फिर कहना शु किया—'भाई अब्दुर रहमान, देखो तु कितने स्वार्थी हो! क्या उस पत्थर को व से हटाये बिना ही चले जाना तुम्हारे लि ठीक है? जरा सोचो तो भाई! शाय कोई और राही भी उससे ठोकर खाक गिर पड़े।' कुछ देर रुककर सोचते हु उसने स्वयं को आज्ञा दी—'भाई अब्दुर रह मान, अगर तुम सचमुच अच्छे आदमी हो, तो उस पत्थर को उठाकर एक तरफ फेंक दो।' और उसने पत्थर उठाकर एक तरफ फें दिया।

उसकी यह आदत थी कि वह खुद को 'भाई अब्दुर रहमान' कहकर संबोधि करता और ऊंची आवाज में खुद से बातें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करता। इस प्रकार वह शायद अपने अंदर झांकता, ताकि उसकी आत्मा उसकी अपनी आवाज में उसे आदेश दे। उसे इस प्रकार स्वयं से बात करते देखकर लगता कि दो अलग-अलग व्यक्तियों का आपस में संघर्ष हो रहा है और उनमें से एक निडर पहरेदार की तरह दूसरे को रास्ता बता रहा है।

यदि कोई इस विचित्र व्यक्ति से भोजन करने को कहता, तो पहले वह स्वयं से वही बात दुहराता और फिर उत्तर में एक फारसी कहावत के अनुसार कहता—'आदमी को जीने के लिए खाना चाहिये, न कि खाने के लिए जीना चाहिये।' इस प्रकार भोजन के लिए आमंत्रित करने वाले व्यक्ति को उत्तर देने से पहले वह स्वयं से पूछता।

वह फारसी भाषा का कवि था और उसे हफीज का सारा दीवान कंठस्थ था। शाह और समी की रचनाएं भी उसने पढ़ी थीं। पर सच्चल की कविता से वह बहुत प्रभावित था। उसे उर्दू का ज्ञान था। जब लोगों के पास पंजाब से उर्दू में लिखे हुए पत्र आते, तो वे उन्हें पढ़वाने के लिए अब्दुर रहमान के पास आते।

वह शांत स्वभाव का था और उसकी सांसारिक आवश्यकताएं बहुत कम थीं। थोड़ा-सा साधारण भोजन पाकर वह संतुष्ट हो जाता। गुदड़ी उसका हमेशा साथ देती। रात के समय—चाहे वह गरमियों की ही रात क्यों न हो—वह गुदड़ी ओढ़कर सो जाता। गुदड़ी के नीचे वह गुप्त रूप से ईश्वर से बातें करता।

एक दिन एक निर्दोष व्यक्ति किसी के जाल में फंस गया। पुलिस ने उस पर चोरी का इल्जाम लगाया कि उसने एक मुसलमान सेठ की सोने की घड़ी चुरायी है। वह घड़ी उसकी चीजों में पायी गयी थी और उसे साबित करने के लिए गवाह भी थे। उस आदमी के बचने का कोई रास्ता नहीं था। वैसे भी वह सेठ असर-रसूख वाला आदमी था।

अभियुक्त ने अपनी सफाई देते हुए कहा कि एक दिन वह सेठ के घर के पास से गुजर रहा था, तो उसे पकड़ लिया गया और यह कहकर उसे खूब पीटा गया कि उसने सेठ की बहू-बेटियों की ओर ताका है और गंदी हरकतें की हैं। अगर अब्दुर रहमान, जो कि उस समय वहां उपस्थित था, उसे न छुड़ाता, तो उसे जान से मार डाला जाता।

सेठ का गुस्सा ठंडा न हुआ। वह बार-बार कहता रहा कि मेरे परिवार की बदनामी हुई है और मैं इस आदमी से जरूर बदला लूंगा।

तब अब्दुर रहमान स्वयं से बातें करने लगा—'देखो, भाई अब्दुर रहमान, सेठ अपनी जिद पर अड़ा हुआ है। उसे अपनी इज्जत का बहुत खयाल है। उसकी एक बहन है, जिसकी उम्र पैंतीस साल की हो चुकी है, पर वह उसकी शादी नहीं होने दे रहा। उसे डर है कि शादी होने पर वह जायदाद में से शायद अपना हिस्सा मांगेगी। अगर उस लड़की की शादी न हुई, तो.....' यह कहते हुए वह अचानक रुका और उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घूरकर देखा। 'नहीं-नहीं, भाई अब्दुर रहमान, तुम्हें दूसरों का परदाफाश नहीं करना चाहिये। दोनों हाथ जोड़कर सेठ के पास जाओ और उसे समझाओ। अगर वह फिर भी न माने, तब तुम सच्ची बात कह देना।'

अब्दुर रहमान ने ऊंची आवाज में स्वयं से ये बातें की थीं, मानो वह बहुत-से लोगों के सामने बोल रहा हो। जिस-जिसने भी उसकी बातें सुनीं, वह उसका संकेत समझ गया। सेठ भी बिना समझे न रहा।

इस प्रकार उस गरीब आदमी को छुटकारा मिला। पर अब्दुर रहमान ने स्वयं जो बातें कहीं, उनकी चर्चा सारे शहर में होने लगी और सेठ की इज्जत मिट्टी में मिल गयी।

आखिर अदालत में मुकद्दमा शुरू हुआ। गवाहों में तीन व्यक्ति सेठ के पड़ोसी थे और चौथा अब्दुर रहमान था। दो गवाहों को सेठ ने लालच देकर अपनी तरफ कर लिया था और तीसरे गवाह ने डर के कारण साफ कह दिया था कि उसे इस मामले के बारे में कुछ भी ज्ञान नहीं है। अब अब्दुर रहमान ही एक गवाह था, जिस पर सारे मुकद्दमे का आधार था। अभियुक्त के वकील को इस अजीब किस्म के आदमी पर भरोसा नहीं था; पर स्वयं अभियुक्त को अब्दुर रहमान पर पूरा भरोसा था, जिसे कि सच्ची बात कहने में किसी का डर नहीं था।

जब अब्दुर रहमान को बुलाया गया, तो उसने स्वयं से कहा–'भाई अब्दुर रहमान, तुम्हें अदालत में बुलाया गया है। विनम्रता से वहां जाओ।' उसने इस अवसर के लि किसी से जूते लिये और उन्हें अपनी गु में लपेट लिया। आखिर अदालत में उ नाम पुकारा गया। उसने झट से जूते प और गुदड़ी को अपने गिर्द लपेटकर क दाखिल हुआ।

चपरासी ने उससे कहा–'अपने उतार दो।' यह सुनकर अब्दुर रहमा स्वयं से कहा–'भाई अब्दुर रहमान, च रासी तुम्हें जूते उतारने को कह रहा उससे कहो कि तुमने ये जूते इस खास के लिए किसी से लिये हैं, ताकि इज्ज साथ मजिस्ट्रेट के सामने पेश हो सक तब यही बात चपरासी से कहकर बेधड़क अंदर दाखिल हुआ। मजिस्ट्रे मुस्कराकर उसका स्वागत किया। जब गवाही देने के लिए कटघरे में खड़ा हु तो मजिस्ट्रेट ने कुछ तीखे स्वर में उ पूछा कि तुमने अपने गिर्द गुदड़ी क्यों ल रखी है?

तभी अब्दुर रहमान ने स्वयं से क 'सुनो, भाई अब्दुर रहमान, मजि साहब ने तुमसे गुदड़ी के बारे में पूछा याद रखो, तुम इस समय अदालत में है जवाब देने से पहले फिर सोच लो। कहो कि हिंदू गवाह ऐसे मौकों पर अ गर्दन के गिर्द गुलूबंद या तौलिया लपेट हैं, सो तुमने भी अदालत के लिए इ जाहिर करने के लिए इस रिवाज को नाया है!' फिर उसने यही बात आवाज में मजिस्ट्रेट से कही। अदाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपस्थित सभी व्यक्तियों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

'जैसा मैं कहूं, वैसा ही कहो', अदालत के क्लर्क ने उससे कहा—'ईश्वर के नाम पर मैं सत्य कहूंगा, पूरा सत्य कहूंगा, सिर्फ सत्य कहूंगा।' अब्दुर रहमान ने पहले अपने मन में यह बात दोहरायी और फिर कहा—'हां, क्लर्क सच ही कह रहा है।' तब क्लर्क की ओर मुड़कर उसने ऊंची आवाज में उसका कहा हुआ वाक्य दुहराया।

'तुम्हारा नाम ?'

'भाई अब्दुर रहमान, क्लर्क तुम्हारा नाम जानना चाहता है। हां, उसे अपना नाम बताओ।' तब ऊंची आवाज में क्लर्क से कहा—'मेरा नाम अब्दुर रहमान है।'

मजिस्ट्रेट जो पहले खुश दिख रहा था, अब सब्र खोने लगा। एक वकील ने उठकर मजिस्ट्रेट को अंग्रेजी में बताया कि इस तरह स्वयं से बातें करना इसकी आदत है।

'तुम्हारा मजहब ?'

अब्दुर रहमान ने जैसे कुछ उलझन में पड़कर स्वयं से कहा—'अब भाई अब्दुर रहमान, यह न भूलना कि तुमने सच बोलने की कसम खायी हुई है। आखिर तुम्हारा मजहब क्या है ? ओह, यह तो सचमुच एक बेढंगा-सा सवाल है। अगर मैं कहूं कि मैं मुसलमान हूं, तो हिंदू एतराज करेंगे। अगर कहूं कि मैं हिंदू हूं, तो मुसलमान जरूर ही बुरा मानेंगे। सच बात क्यों न कही जाये ? भाई अब्दुर रहमान, आखिर तुम इस छोटी-सी बात पर उलझन में क्यों पड़ गये ? यह

[इस कथा के चित्रकार डा. विष्णु भटनागर]

संत सच्चल की वे पंक्तियां क्यों नहीं दुहराते—मैं ना हिंदू हूं, न मुसलमान हूं; मैं बस वह हूं, जो हूं।'

क्लर्क ने आश्चर्य से मजिस्ट्रेट की ओर देखा। मजिस्ट्रेट ने आज्ञा दी—'अच्छी बात है, इसे मुसलमान लिख लो।'

'तुम्हारी उम्र ?'

'भाई अब्दुर रहमान, अब यह तुम्हारी उम्र जानना चाहता है। जब मैं कहता हूं कि मैं मुसलमान नहीं हूं, तो मजिस्ट्रेट साहब मेरे बारे में लिखवाते हैं कि मैं मुसलमान हूं। अच्छा, तो क्लर्क से कह दो कि वह इसके बारे में भी मजिस्ट्रेट से ही पूछे।' तब क्लर्क की ओर मुड़कर उसने कहा—'तुम यह सवाल भी मजिस्ट्रेट साहब से ही पूछ सकते हो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजिस्ट्रेट आपे से बाहर हो गया और उसने धमकी देते हुए कहा—'जाहिल जाट, अपनी जबान को लगाम लगाओ, और ठीक तरह से गवाही दो। तुम अदालत में खड़े हो।'

अब्दुर रहमान मुस्कराता रहा और स्वयं से बातें करता रहा—'भाई अब्दुर रहमान, मजिस्ट्रेट साहब कहते हैं कि तुम जाट हो। उनसे पूछो कि जाट से उनका मतलब क्या है?'

इससे पहले कि अब्दुर रहमान स्वयं से कही इस बात को दुहराये, मजिस्ट्रेट कह रहा था—'जाट अनपढ़ आदमी को कहते हैं।'

'इसीलिए भाई अब्दुर रहमान, तुम जाट हो! तुम सिंधी, फारसी, उर्दू, संस्कृत और हिंदी जानते हो। तुम कुल मिलाकर पांच जबानें जानते हो। मजिस्ट्रेट से पूछो कि वे खुद कितनी जबानें जानते हैं?' तब उसने मजिस्ट्रेट की ओर मुड़कर पूछा—'जनाब, ...'

उसकी बात बीच ही में काटकर मजिस्ट्रेट ने गुस्से में कहा—'जाट वह है, जो अंग्रेजी न जानता हो।' मजिस्ट्रेट की आंखों में जैसे जीत की चमक थी। पर अदालत की शांति भंग हो चुकी थी और सभी इस वाद-विवाद को सुनते हुए आपस में काना-फूसी कर रहे थे।

अब्दुर रहमान ने गंभीर और ऊंची आवाज में स्वयं से फिर कहा—'भाई अब्दुर रहमान, मजिस्ट्रेट साहब कहते हैं कि अंग्रेजी न जानने वाला जाट होता है। सुना तुमने इस तोपणमल के बेटे को? हां, ढोर चराने वाला तोपणमल। याद है न? मजिस्ट्रेट से पूछो कि उनके पिता और उनके पुरखे, जो अंग्रेजी नहीं जानते थे, क्या सब जाट थे? और अगर वे खुद ......'

अब मजिस्ट्रेट गुस्से से लाल-पीला हो रहा था। गरजकर वह उसे चुप होने को कहता रहा। आखिर उसने कागज और कलम लेकर अब्दुर रहमान को आज्ञा दी—'बहुत हो चुकी तुम्हारी ढिठाई। अदालत की बेइज्जती करने के जुर्म में तुम पर मुकद्दमा चलाया जायेगा। अब अपनी जबान बंद रखो और अपने बचाव में जो कुछ कहना हो, कागज पर लिख दो।'

अब्दुर रहमान ने कागज और कलम लिया और मेज पर झुककर लिखा:

'जनाब मजिस्ट्रेट साहब,

भाई अब्दुर रहमान ने अदालत की बेइज्जती नहीं की है। अगर किसी ने अदालत की बेइज्जती की है, तो वह आप खुद हैं। आज आपने कई गवाहों की बेइज्जती की है। पर आपकी की हुई यह बेइज्जती भाई अब्दुर रहमान को छू भी नहीं सकी। याद रखिये, आप जिन लोगों का फैसला करने यहां बैठे हैं, उनके आप मालिक नहीं हैं। आप उनके नौकर हैं। हम गवाह इस अदालत में अपनी मर्जी से नहीं आये हैं। आपने हमें बुलाया है, ताकि हम इंसाफ करने में आपकी मदद करें। क्या अपने मेहमानों से इस तरह का सलूक किया जाता है? अगर आप गवाहों की बेइज्जती करेंगे, अगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो अदालत में गवाही देने कौन आयेगा ? सच पूछिये, तो मुकद्दमा आप पर चलना चाहिये और आपको नौकरी से अलग कर दिया जाना चाहिये, क्योंकि आपने अदालत में ऐसी भद्दी जबान का इस्तेमाल किया और आपने बादशाह को नीचा दिखाया है, जिसके सामने आपने वफादारी की कसम खायी है।

खुद खायी हुई कसम के मुताबिक भाई अब्दुर रहमान कहता है कि उसने सत्य कहा है, पूरा सत्य कहा है, और सिर्फ सत्य कहा है। और अल्लाह, जिसके हाथ में हमारा फैसला होना है, इसका गवाह है।

(हस्ताक्षर) भाई अब्दुर रहमान'

कुलीनता

मनुष्य होने का मतलब है, जिम्मेवार बनना, अपने साथियों की जीत पर गर्व करना, अपनी नींव में पत्थर रखते हुए महसूस करना कि उससे संसार का निर्माण होगा।

एक बार मैंने एक नौजवान की आत्महत्या देखी। पता नहीं, उसे प्यार में किस निराशा का मुंह देखना पड़ा कि उसने ठीक अपने कलेजे का निशाना साधकर गोली दाग दी। पता नहीं कि गोली चलाने से पहले उसने सफेद दस्ताने क्यों पहन लिये थे। पर मुझे यह अच्छी तरह याद है कि इस बारे में पता लगने पर मुझे उसमें कुलीनता का नहीं, बल्कि संमान का अभाव प्रतीत हुआ था। और मुझे लगा था कि उस आकर्षक चेहरे के ऊपर उसका सिर एकदम खाली था।

तब मुझे एक और व्यक्ति की मौत का खयाल आया था। वह एक बागवान था और मृत्युशय्या पर पड़ा कह रहा था—'जानते हो, जमीन खोदते समय कई बार मैं पसीने से भीग जाता था, मेरी टांगों का दर्द बढ़ जाता था, और मैं अपने आपको काम में खो देता था। अब भी मैं चाहता हूं कि लगातार खुदाई करता रहूं। यह बहुत सुंदर काम है। आदमी फावड़ा चलाते समय स्वतंत्र होता है। और अब जब मैं नहीं रहूंगा, तो मेरे पेड़-पौधों की काट-छांट कौन करेगा ?'

वह व्यक्ति अपने पीछे एक जरखेज खेत छोड़कर जा रहा था। वह सभी उपजाऊ खेतों और सभी पेड़-पौधों से प्यार के बंधन में बंधा हुआ था। वह एक उदार-हृदय, कुलीन और संमानीय व्यक्ति था।

—आंत्वा द सैं एग्जुपेरी

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल जाने पर

'टुडेज़ हेल्थ' से साभार

जलने, आग की दुर्घटनाओं में तुरंत मदद करना बहुत ही जरूरी होता है; इससे दुर्घटनाग्रस्त व्यक्ति बहुत-सी तकलीफ से बच सकता है; बहुत बार तो फौरन मदद न मिलने पर उसकी मृत्यु तक हो सकती है। यहां प्राथमिक उपचार की कुछ बातें बतायी जा रही हैं, जो अग्निकांड में काम में लायी जानी चाहिये।

१. अगर आपके आस-पास किसी के कपड़ों, बाल आदि में आग लग जाये, तो उस आदमी को जमीन पर लुढ़काकर लपटें बुझाने की कोशिश कीजिये। अगर पास ही कंबल पड़ा हो तो अग्निग्रस्त आदमी पर कंबल लपेट दीजिये; मगर कंबल ढूंढ़ने में समय बरबाद न कीजिये। लपटों को अपने हाथों से बुझाने की चेष्टा मत कीजिये—दीजिये, कोट या बड़े कपड़े काम में लाइये। जब लपटें बुझ जायें, अग्निग्रस्त आदमी के कपड़ों पर ठंडा पानी डालकर आग पूरी तरह बुझा दीजिये।

२. शरीर के जले-झुलसे हुए हिस्से पर ठंडा पानी डालकर या ठंडे पानी की पट्टी देकर ठंडा करते रहिये। इससे त्वचा का तापमान घटेगा, दर्द मंद होगा, सूजन कम होगी। इसके बाद जले हुए सब कपड़े उतार दीजिये—जो कपड़ा त्वचा से चिपक गया हो, उसे छोड़ दें। यदि आदमी गरम द्रव के गिरने से घायल हुआ हो. द्रवयुक्त कपड़े हटाने में विशेष तत्परता दिखानी चाहिये, नहीं तो कपड़े में गरम द्रव का ताप बना रहता है और त्वचा को नुक्सान पहुंचाता रहता है।

३. हल्के पहले दर्जे (फर्स्ट डिग्री) से जलने से अधिक कुछ भी हुआ हो, तो फौरन डाक्टर की मदद लीजिये। पहले दर्जे के जलने के घाव में त्वचा लाल हो जाती है लेकिन उस पर फफोले नहीं उभरते और नुक्सान बाह्य त्वचा की ऊपरी परत तक ही सीमित रहता है। तेज धूप से होने वाली साधारण झुलसन प्रथम दर्जे के जलने का सामान्य उदाहरण है।

दूसरे और तीसरे दर्जे के जलने में फौरन डाक्टरी सहायता बहुत जरूरी है। दूसरे दर्जे के जलने में त्वचा पर फफोले उभर आते हैं। ये फफोले फूटकर द्रव बाहर निकल सकता है, मगर घाव दो सप्ताह में ठीक हो जाना चाहिये। त्वचा प्रायः लाल हो जाती

अगले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है और सूज जाती है। दूसरे दर्जे के जलने में त्वचा की ऊपरी और बिचली परत प्रायः नष्ट हो जाती है, मगर सबसे गहरी कोशिकाओं को प्रायः क्षति नहीं पहुंचती।

तीसरे दर्जे के जलने में त्वचा का रंग लाल या सफेद पड़ जाता है, और त्वचा खाल जैसी हो जाती है। सारी कोशिकाएं और उनके नीचे के ऊतक नष्ट हो जाते हैं। तीसरे दर्जे के जलने के घाव में सूई चुभायी जाये तो मरीज को दर्द नहीं अनुभव होगा। ऐसे घावों में जली त्वचा को हटाकर रोगी के शरीर के अन्य हिस्से से त्वचा का प्रतिरोपण किया जाता है।

जलने के घाव बड़े छलिया होते हैं—बहुधा गंभीर घाव भी गंभीर दिखते नहीं। इससे दूसरे व तीसरे दर्जे के जलने के घावों में अंतर कर पाना बहुधा कठिन हो जाता है।

बुरी तरह जले हुए आदमी को भी सुरक्षित रूप से स्थानांतरित करना प्रायः संभव है। लिहाजा अगर कार, टैक्सी आदि वाहन उपलब्ध हो और मरीज को आसानी से उठाया जा सकता हो, तो फौरन उसे निकटतम अस्पताल ले जाना चाहिये। अगर मरीज को हटाना संभव न हो, तो फौरन डाक्टर को बुलवा लीजिये।

४. रसोई में गरम पतीली से हाथ छू जाने जैसे मामूली जलने के मामलों में भी फौरन ध्यान देना जरूरी है। आग से प्रभावित अंग को ठंडे पानी से ठंडा कीजिये। उस पर तेल या मक्खन हरगिज न चुपड़ें। साफ और कीटाणु-मुक्त पट्टी बांध दें, ताकि नरम पड़ी हुई या फफोलेदार त्वचा कीटाणु-संक्रमण से बची रहे। अगर एक-दो रोज बाद भी वहां दर्द बाकी रहे, तो डाक्टर को दिखायें।

★

एक बार स्त्रियों के एक क्लब की बैठक में कवि कार्ल सैंडबर्ग से पूछा गया—'आप लेखक कैसे बने?' सैंडबर्ग ने उत्तर दिया :

'उन दिनों मैं एक बहुत बड़े घर में रहता था। एक दिन बहुत अकेलापन महसूस करने पर मैंने अपने आपसे कहा, अगर मैं लेखक होता तो कुछ कम अकेलापन महसूस करता। सो मैं घर से बाहर निकला। वहां मुझे बहुत-सी क्रियाएं मिलीं। मैं उन क्रियाओं को लेकर घर में आया, तो वे इतनी ज्यादा एकाकी प्रतीत हुईं कि मुझे लगा कि उन्हें किसी के साथ जुड़ने के लिए संज्ञाएं चाहिये। सो मैं फिर से घर से बाहर गया और बहुत-सी संज्ञाएं लेकर आया। जब मैंने उन्हें क्रियाओं के साथ जोड़कर कुछ वाक्य बनाये, तो मन में कहा कि अब कुछ विशेषण भी चाहिये—ज्यादा नहीं, बस कुछ एक। सो मैं नीचे गोदाम में गया और देखा कि वहां एक बहुत बड़ा पीपा विशेषणों से भरा पड़ा है। मैं कुछ विशेषण लेकर ऊपर आया। तब से आज तक लिखता चला आ रहा हूं।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामीकाजे

वीना सचदेव

१९ अक्टूबर १९४४। माबालाकाट में हो रही वरिष्ठ जापानी सेनाधिकारियों की आपातकालीन बैठक में एकाएक सन्नाटा छा गया था। एडमिरल ओनिशी ने बात ही ऐसी कह दी थी। समस्त युद्धक्षेत्रों में जापान की स्थिति का विवेचन करते हुए उन्होंने जापानी साधनों की सीमितता का जिक्र किया था, फिर एक सुझाव रखा था— 'मेरी राय में अपनी सीमित शक्ति का अधिकतम उपयोग करने का एकही तरीका है। वह है २५० किलोग्राम के बमों से युक्त विमान द्वारा हमला। प्रत्येक विमान दुश्मन के जहाज से जा भिड़ेगा ......आप लोगों का क्या खयाल है?'

इसी प्रश्न के जवाब में छाया हुआ था बैठक में सन्नाटा। एडमिरल ओनिशी की निगाहें एक-एक करके हर चेहरे पर ठहरीं। कोई कुछ नहीं बोला। मगर निर्णय तो तत्काल करना था। समय हाथ से निकलता जा रहा था। २०१ वीं वायु-टोली के कमांडर तमाई अपनी कुर्सी से उठे...... और बाहर चले गये। वे अपने विमान-चालकों की प्रतिक्रिया जानना चाहते थे। उन्हों... जो कुछ कहा, वह हमेशा के लिए जुड़ गया जापान के इतिहास में।

कमांडर तमाई ने कहा—'मैं एडमिरल की राय से पूर्णतया सहमत हूं। २०१ वीं वायु-टोली उनके सुझाव को क्रियान्वित करेगी। क्या मैं आग्रह कर सकता हूं कि बलिदानी दस्ते के गठन का काम हम पर छोड़ दिया जाये?'

बैठक में उपस्थित एक भी सेनाधिकारी ने विरोध नहीं किया।

इस प्रकार यह बलिदानी रणनीति चन्द मिनटों में तय हो गयी। परंतु इसका सुझाव पेश करने से पहले एडमिरल ओनिशी न जाने कितने दिन और कितनी रातें इसके औचित्य के बारे में अपने मन में तर्क-वितर्क करते रहे थे। निर्णय मिनटों में हो गया, लेकिन इसके पीछे सदियों लंबी मानसिक तैयारी थी। जान की बाजी हर सैनिक लगाता है; लेकिन बाजी हारने से पहले जान दे देने की जिद जापान की अपनी परंपरा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फैसला होने के सात दिन के भीतर बलिदानी विमानों का पहला दस्ता मावालाकाट से उड़ान भर चुका था। निर्णय से पूर्व जापानी अधिकारी स्तंभित थे; परंतु जब निर्णय क्रियान्वित हुआ तो स्तंभित होने की बारी दुश्मन की थी।

जब पहला दस्ता बलिदान के लिए उड़ा, तो एडमिरल ओनिशी के चेहरे पर संतोष और पीड़ा के मिले-जुले रंग थे। ओनिशी इन कामीकाजे यूनिटों के पिता थे। वे जानते थे कि यह रणनीति जापान के सबसे बढ़िया युवकों की बलि चढ़ाना है। किंतु वे यह भी जानते थे कि आगे धंसते हुए दुश्मन को परंपरागत युद्धनीति द्वारा रोक पाना असंभव है। पहली कामीकाजे टुकड़ी के समक्ष भाषण देते हुए उन्होंने कहा था—'यदि हम हार गये, तब भी कामीकाजे-टुकड़ियों का महान साहस मातृभूमि की रक्षा करेगा। इस साहस के बिना हार के बाद सर्वनाश अवश्यंभावी है।' स्पष्ट है, कामीकाजे-नीति एडमिरल के लिए आनंद का विषय नहीं थी, बल्कि वह एक दुःखद आवश्यकता थी।

फिर तो धीरे-धीरे कामीकाजे-आक्रमण एक सामरिक परंपरा-सी बन गयी। उसकी उपयोगिता भी तब असंदिग्ध प्रतीत होती थी। बलिदानी युवक हवाबाज कभी वापस न लौटने के लिए उड़ानें भरते थे और सीधे जाकर अपने लक्ष्य से भिड़ जाते थे। न खास तैयारी, न विशेष प्रशिक्षण। जरूरी था सिर्फ अंधा जोश! भावना के उस ज्वार में २०१ वीं वायु-टोली का एक भी उड़ाका पीछे रहने को तैयार न था। बलिदानोत्सुक युवकों की पूरी कतार खड़ी थी।

जब प्रश्न उठा कि पहली टोली का नेता किसे बनाया जाये, तो कैप्टन इनोगुची ने तरुण लेफ्टिनेंट सेकी को चुना।

वह रात जितनी काली थी, उतनी ही नीरव भी थी। लेफ्टिनेंट सेकी को सोते से जगाकर बुलाया गया था। कमांडर तमाई ने उसके कंधे थपथपाते हुए सारी योजना बतायी थी और कहा था—'सेकी, हम तुम्हें पहली बलिदानी टुकड़ी का नेता बनाना चाहते हैं। तुम्हारा क्या विचार है?' कमांडर की आंखें भर आयी थीं यह कहते हुए।

एक क्षण सेकी ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसकी कुहनियां मेज पर टिकी थीं। सिर हाथों में थमा था। दांत भिंचे हुए थे। आंखें बंद थीं। ...... फिर वह हिला। उंगलियों से अपने लंबे बालों को उसने पीछे किया। फिर धीरे-धीरे अपना सिर उठाते हुए वह बोला—'यह काम मैं ही करूंगा।'

कमांडर तमाई ने सिर्फ एक शब्द कहा—'धन्यवाद!'

इस क्षण के बाद, राष्ट्रवेदी पर अपने प्राण होमने वाले तरुण विमान-चालकों ने उस रणनीति का क्रियान्वयन पूरी तरह अपने हाथ में ले लिया था। जिस दिन पहली कामीकाजे टोली उड़ी, चार टुकड़ियां तैयार हो चुकी थीं।

२५ अक्टूबर के ब्राह्म मुहूर्त में प्रथम बलिदानी दस्ते के चौबीस जवान नाश्ता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके हवाई अड्डे पर पंक्तिबद्ध खड़े थे। लेफ्टिनेंट सेकी उनसे एक कदम आगे खड़ा था। उन्हें विदाई देने के लिए स्वयं एडमिरल ओनिशी आये थे। बड़ी मुश्किल से वे चंद शब्द बोल पाये थे:

'जापान भीषण संकट में है। उसे बचाना मंत्रियों, सेनापतियों या मेरे जैसे अदना कमांडरों के बूते के बाहर की बात है। आप जैसे जीवट वाले युवक ही उसे बचा सकते हैं। इसलिए आपके लाखों देशवासियों की ओर से मैं आपसे बलिदान मांगता हूं। और आपकी सफलता की प्रार्थना करता हूं।'

क्षण-भर रुककर उन्होंने फिर कहा– 'आप लोग भौतिक आकांक्षों से परे, देवता बन चुके हैं......मैं अंत तक आपके प्रयासों को देखता रहूंगा और आपके कार्यों की सूचना सम्राट् तक पहुंचाऊंगा। इस विषय में आप लोग निश्चित रहें।' यह कहते-कहते उनकी आंख आंसुओं से भर उठीं थीं।

उड़ान से पहले लेफ्टिनेंट सेकी ने अपनी जेब से कुछ मुड़े-तुड़े नोट निकालकर एक साथी को देते हुए कहा था–'इन्हें जापान भिजवा देना, ताकि ये नये विमान बनाने के काम आ सकें।'

कुछ ही क्षण बाद वे २४ विमान-चालक उड़ चले–कभी न लौटने के लिए। सेकी का विमान सबसे आगे था। और उसका निशाना बना अमरीकी रक्षक युद्धपोत सेंट लो। उस दिन कामीकाजे के आत्मघाती विमानों ने छह अमरीकी विमानवाही पोतों को क्षतिग्रस्त किया।

जब इस काम का ब्योरा सम्राट् हितो के पास पहुंचा, तो उन्होंने कहा– इस सीमा तक जाना जरूरी था? ... उन लोगों ने सचमुच बहुत बड़ा ... किया है।'

ऐसा प्रतीत होता है कि सम्राट् ... प्रतिक्रिया एडमिरल ओनिशी की ... जान पड़ी थी। परंतु अब कदम पीछे नहीं हटाया जा सकता था। इसके बाद बलिदानी दस्तों का जाना, दुश्मन पर ... करना और खुद नेस्तनाबूद हो जाना ... नियमित कार्यक्रम हो गया था।

उन दिनों इन बलिदानी ... चालकों को 'कामीकाजे' नहीं कहते ... 'शिंपू' कहलाते थे। जापानी में शिंपू का ... होता है–दैवी प्रभंजन। (यह नाम ... समुद्री झंझावातों को दिया गया था, ... जापानी मान्यता के अनुसार, १२... १२८१ ई. के बीच जापान को मंगोल ... मणों से बरी रखा था।) सचमुच वे ... प्रभंजन-वेग से उड़ते थे। उड़ान भरने ... वे कब किस शत्रु जलपोत पर जा टूटे ... तो बाद की खबरें ही बताती थीं।

इस आत्मघाती मिशन पर जाने ... विमान-चालकों के नाम हमेशा केवल ... दिन पूर्व घोषित किये जाते थे। जिनके ... अगले दिन की सूची में आ जाते, वे ... के महानतम क्षण' की तैयारी में जुट ... और जिनके नाम भविष्य के लिए ... रह जाते, वे प्रायः अजीब-सी निराशा ... घिर जाते। कामीकाजे का नाममात्र ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशिक्षण पूरा करने के बाद 'महानतम क्षण' की प्रतीक्षा करते हुए ये युवक साधारणतया अपना समय अपनी बैरकों में पढ़ने, ताश खेलने, संगीत सुनने, अंतिम पत्र लिखने या विदाई की कविताएं रचने में बिताते थे।

इनमें से बहुत थोड़े ही विवाह की उम्र को पहुंचे होते थे। सो इन युवकों के अंतिम संदेश अपने माता-पिता के नाम ही हुआ करते थे। कई बार पत्रों के साथ अपने बालों का एक गुच्छा और नाखून भी भेजते थे, जैसा कि पुराने सामुराई लोग युद्ध के लिए प्रस्थान करते समय किया करते थे।

जिन्हें अगली सुबह अंतिम उड़ान पर जाना होता, वे रात को सोने से पहले अपना पैसा, किताबें आदि चीजें पीछे रह जाने वाले दोस्तों को बांट देते थे। और अधिकांश युवक उस अंतिम रात्रि को बड़ी शांति से सोते थे।

विमान-चालक लेफ्टिनेंट हयाशी ने अपनी मां को अंतिम पत्र में लिखा था–'अंतिम उड़ान में हम बाकायदा फौजी वर्दी पहने होंगे और हमारे माथे पर एक सफेद पट्टी बंधी होगी, जिस पर उगते सूर्य का चिह्न अंकित होगा। हिमधवल गुलबंद हमारा रूप निखार देंगे।'

कुछ के माथे की पट्टियों पर 'अंतिम उड़ान' जैसे शब्द भी लिखे होते थे और कुछ अपनी माताओं, बहनों और स्नेही पड़ोसिनों द्वारा बड़े प्यार से तैयार की गयी 'हारामाकी' (कमरबंद) भी बांधे होते थे। ऐसे ही एक २१-वर्षीय युवक की अंतिम कविता की ये पंक्तियां हारामाकी का महत्त्व दरशाती हैं :

अपनी इस अंतिम उड़ान पर
मैं अकेला नहीं हूं,
मां का भेजा 'हारामाकी'
मेरी कमर से बंधा है।

हर टुकड़ी की विदाई पर पहले छोटा-सा समारोह होता था। बैरक के बाहर या उड़ान-पट्टी पर ही सफेद मेजपोश से ढंकी लंबी मेज पर खाने का कुछ सामान और पेय सजे होते थे। कमांडिंग अफसर हर विमान-चालक को अपने हाथों ढालकर प्याला पेश करता था। प्रत्येक चालक झुककर प्याला लेता था और बड़े संमान से दोनों हाथों में उसे उठाकर ओंठों से लगा लेता था। चालकों को थोड़ा-सा भोजन साथ ले जाने के लिए भी दिया जाता था, जो वस्तुतः खाने के लिए नहीं, मनोबल के लिए होता था। फिर अपने विमान की काकपिट में बैठकर चालक हाथ उठाकर अंतिम

उत्सर्ग के लिए संनद्ध सैनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विदा लेता था और अंतिम यात्रा शुरू हो जाती थी। हर उड़ान में पांच विमान होते थे—तीन बलिदानी विमान और दो रक्षक विमान। रक्षक विमानों का काम होता था लौटकर सफलता-असफलता का ब्योरा देना। शत्रु के जहाज पर निगाह पड़ते ही विमान-दल का नेता हाथ उठाकर आदेश देता था—हमला! और तीनों विमान निशाना साधकर टूट पड़ते थे जहाज पर।

सफलता मिली कि नहीं, इसका पता लगाने की विमान-चालक के पास न तो फुरसत होती थी, और न आवश्यकता। विमान के जहाज से टकराते ही बारूद भभक उठता था। एक धमाका होता था। एक लपट उठती थी। यह लपट उनकी शान की लपट होती थी, उनकी उस गरिमामय मौत की लपट होती थी, जिसका जिक्र वे अक्सर अपने अंतिम पत्रों में किया करते थे।

आक्रमण पूरा होने की सूचना मिलते ही उन बलिदानी युवकों की मरणोत्तर पदोन्नति की घोषणा की जाती थी। हमारी दृष्टि में भले ही इस मरणोत्तर पदोन्नति का कोई अर्थ न हो, परंतु उन बलिदानी युवकों के लिए बहुत था। यह भान कि मरने के बाद हमें मान्यता दी जायेगी और वीरोचित संमान मिलेगा, उन्हें आश्वस्त रखता था।

कौन थे ये कामीकाजे लड़ाके? बीस से पचीस साल की कच्ची उम्र के तरुण। विश्वविद्यालय की पढ़ाई छोड़कर अनिवार्य भरती में सेना में आये विद्यार्थी। इनमें से अधिकांश इंजीनियरिंग, विज्ञान आदि विषयों के नहीं, बल्कि कला और मानवि... विषयों के छात्र थे। अक्सर पुराने पे... सैनिकों को इन अल्हड़ युवकों से ईर्ष्या हो... थी; क्योंकि वे जानते थे कि ये कमि... विद्यार्थी बिना किसी अनुभव और प्रशि... के शीघ्र ही अफसर बना दिये जायेंगे ... 'हीरो' बन जायेंगे!

प्राप्त विवरण बताते हैं कि इनमें ... अधिकांश युवक शांत प्रकृति के थे। युद्ध ... बाद किये गये एक सर्वेक्षण में यह भी प्रक... हुआ कि 'विशेष हमलावर यूनिट' में शामि... होने वाला प्रत्येक युवक अपने परिवार ... सबसे प्रेमल, सबसे अधिक शिक्षित ... सबसे शांत सदस्य था।

एक प्रश्न अक्सर उठाया जाता है ... बलिदानी युवकों के बारे में। क्या ये स... मुच स्वयंसेवक थे, या इनका 'ब्रेनवा...' किया जाता था? इस प्रश्न का कोई निश्चि... उत्तर देना संभव नहीं। परंतु यह नि... वाद है कि कामीकाजे आक्रमण के प्रथ... चरण में तो सभी विमान-चालक स्वेच्छा ... ही बलिदान को तत्पर हुए थे। इस सं... में एक बलिदानी विमान-चालक का अ... पिता के नाम लिखा यह पत्र एक महत्व... पूर्ण दस्तावेज है:

'......अब यह बताने का कोई महत्व ... नहीं, पर अपने जीवन के इन २३ वर्षों ... मैंने अपना एक जीवन-दर्शन बनाया है।

'जब मैं देश की भोली-भाली जनता ... साथ कुछ राजनीतिज्ञों द्वारा किये जा ... खिलवाड़ की बात सोचता हूं, तो मुझे बहु...

अग...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुरा लगता है। फिर भी मैं हाईकमान और राजनीतिज्ञों का आदेश स्वीकारने के लिए तैयार हूं, क्योंकि मैं जापान की राज्य-व्यवस्था में आस्था रखता हूं।

'मुझे जापान की जीवन-प्रणाली, इतिहास और पुराण-गाथाओं पर गर्व है। वह हमारे पूर्वजों की पवित्रता और अतीत में उनकी आस्था का प्रतिबिंब है। यह जीवन-प्रणाली हमारे पूर्वजों की सर्वोत्तम देन का परिणाम है। राजपरिवार हमारे शानदार अतीत का प्रतीक ही नहीं, जापान और उसकी जनता के सौंदर्य और शान का भी प्रतीक है। इन सुंदर और प्रिय वस्तुओं के लिए अपना बलिदान देना अपने आपमें संमान की बात है।

'परंतु क्या मैं सचमुच यह विश्वास करता हूं कि ये आत्मघाती हमले प्रभावकारी होंगे? क्या बिना हथियारों और रक्षक-विमानों के उड़ना मूर्खता नहीं है? ...... क्या यह सच है कि आत्मबलिदान ही जीवन को अर्थ देता है? यह जानते हुए भी कि उसके आत्मघाती मिशन का कोई अर्थ नहीं, योद्धा तो इस प्रश्न का उत्तर "हां" में ही देगा।' वस्तुतः कामीकाजे जापान की उस परंपरा की एक कड़ी है, जिसमें नायक अपनी स्थिति कमजोर देखकर बलिदान के लिए तैयार हो जाता है; क्योंकि उसे पूरा विश्वास होता है कि उसका उद्देश्य सच्चा है, उसकी निष्ठा महान है।

व्यावहारिक दृष्टि से तो यह बलिदानी रणनीति पूर्णतः निष्फल सिद्ध हुई थी। युद्ध समाप्त होने तक जापान के पांच हजार युवक कामीकाजे विमानों के साथ नामशेष हो गये थे—और बदले में नष्ट हो सके थे दुश्मन के कुल तीन बड़े जहाज!

परंतु इस विफलता ने वीरता और बलिदान की जापानी परंपरा को तनिक भी कुंठित नहीं किया। इस रणनीति के जनक एडमिरल ओनिशी, जो बाद में उपप्रधान जल-सेनापति बना दिये गये थे, जापान के आत्मसमर्पण करने के निर्णय का अंत तक विरोध करते रहे। १५ अगस्त १९४५ की रात को जापान के नौसेना-मंत्री के सामने वे यह कहते-कहते रो पड़े थे कि देश का आत्मसमर्पण मत करवाइये। सैनिक और राजनीतिज्ञ में मतभेद हुआ ही करता है।

राजनीतिज्ञ ने सैनिक की बात ठुकरा दी। और उसी रात एडमिरल ओनिशी ने जापानी परंपरा के अनुसार अपने पेट में तलवार घुसेड़कर हराकिरी कर ली।

★

ब्रिटेन के संगीत-संचालक सर लैंडन रोनाल्ड खुद अपने बारे में मजाकिया किस्से सुनाने के शौकीन थे। इनमें से बहुत-से किस्से उनकी असाधारण रूप से विशाल नाक के बारे में थे। एक बार वे किसी संगीतशाला के टिकटघर की खिड़की में झांककर बुकिंग-क्लर्क से कुछ पूछ रहे थे। क्लर्क झल्लाकर बोला—'साहब, आप अपनी कुहनी कृपापूर्वक खिड़की में से खींच लें, तो शायद आपकी बात का जवाब दे सकूं।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्निवीणा

नारायण देसाई

काजी नजरुल इस्लाम के एक सुप्रसिद्ध काव्यग्रंथ का नाम है—'अग्निवीणा'। स्वामी आनंद की प्रतिमा में पावक की पावनकारी शक्ति और वीणा के माधुर्य का मिलन था। उनके व्यक्तित्व में एक ओर तिलक-गांधी की सत्यनिष्ठा और दूसरी ओर सूर-तुलसी और रामकृष्ण की भक्ति का संस्कार समन्वित था।

'अंत्यज' व आदिवासियों के प्रति होने वाले अन्याय, नकली साधुओं के दंभ, संकुचित प्रांतवाद, अंग्रेजों का साम्राज्यवाद, स्वतंत्रता के बाद गेहुंए रंग के साहबों का दिखावा और दबदबा व भ्रष्टाचार, रचनात्मक कार्यकर्ताओं की जड़ता, निष्क्रियता व राज्याश्रितता, अणुबम तथा कीटाणु-युद्ध की भयंकरता, सभ्यता और प्रगति के नाम पर प्रकृति पर गुजरते अत्याचार—ये तमाम विषय स्वामीजी की असिधारा के प्रहार के विषय थे।

सौ से ग्यारह वर्ष कम के उनके दीर्घ जीवन के प्रत्येक वर्ष के तीन सौ पैंसठ दिनों में से शायद ही कोई ऐसा गया हो, जिसमें स्वामीजी की अग्नि की चिनगारियां न झरी हों। यह अग्निशिखा ही उनके कर्मयोग की पथप्रदर्शिका थी। अन्याय के समक्ष निरंतर जूझने की आकुलता ही इस सं[त] जीव को संसार के रणांगण में खींच[ती] थी; यही उन्हें तिलक महाराज या गां[धी] के चरणों में ला बैठाती थी; ठाणा व [...] जिले के वारली, कुंकणा, दूबळा व [...] की झोंपड़ियों तक भटकाती थी।

दूसरी ओर उनका माधुर्य सदा [...] रहता था प्रेम, वात्सल्य व करुणा के [...] के रूप में। दस वर्ष की उम्र में भगवा[न] दर्शन की साध में घर छोड़कर निक[ले] और रमते साधुओं की संगत में चेलों [पर] होने वाले जोर और जुल्म को देख, [...] कोमल बच्चों से भीख मंगवाने के लिए [...] उनके माता-पिताओं द्वारा उनकी आंखें [...] जाते देख, उनका हृदय द्रवित हो [...] रामकृष्ण परमहंस के किसी शिष्य की [...] पकड़कर इनमें से उबर तो आये, फि[र] उन दृश्यों की करुणता को वे सारी [...] भूल न सके।

रामकृष्णाश्रम में भजनों का जो [...] लगा सो अंत तक उनके हृदय को [...] करता रहा और संगीत से सात [...] रहते हुए भी वे रोज प्रार्थना में तुल[सी] 'बातन की एक बात राम नाम लीजि[ये]' जप करते रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ऐसे थे कि विनोबा, जमनालाल, महादेव देसाई और नरहरि परीख की पंक्ति में सहज बैठ सकें; जिनका स्थान संपूर्ण देश को नया जीवन देने वाले 'नवजीवन' के अंक तैयार करने में गांधीजी के बाद दूसरे नंबर पर आता था; जिन्होंने गोसेवा संघ का मंत्रिपद शोभित किया और कस्तूरबा ट्रस्ट की नींव रखी; जिन्होंने बिहार के भूकंप के समय गुजरात की सहायता-टोली का नेतृत्व किया; जिन्होंने सरदार पटेल के मित्र और मंत्री के रूप में एक से अधिक बार काम किया; जिन्होंने भारत-पाकिस्तान के बंटवारे के समय निराश्रितों की सेवा घर के आदमियों की तरह की; जिनसे खेर साहब, वैकुंठभाई मेहता, यशवंतराव चव्हाण जैसे मंत्री आदरपूर्वक सलाह लिया करते–उन्हें आज लोग इतना कम जानते हैं, ऐसा क्यों? 'स्वामी आनंद ! नाम तो कुछ परिचित लगता है, पर ठीक से याद नहीं आ रहा है ......' ऐसा क्यों कहते हैं ?

स्वामीजी अप्रसिद्ध जो रहे, उसका असली कारण यह है कि संसारी वेश में होते हुए भी वे आजन्म संन्यासी ही थे। अपने सहज संन्यास में उन्होंने कीर्ति को डुबो दिया था। इसी कारण जब गांधीजी के आंदोलन की धूम थी, तब भी स्वामीजी आपको मंच पर विराजे हुए नहीं दिखाई देते थे। वे तो कोई ट्रेडल प्रेस चलाते, टाइप जमाते, प्रूफ पढ़ते, कोश पलटते, सही उद्धरणों के मूल खोजते अथवा थोड़े स्थान में ज्यादा मैटर कैसे

स्व. स्वामी आनंद

जाये, इसकी उधेड़-बुन में लगे होते। चलती घोड़ागाड़ी में चने चबा रहे हैं, या बिहार के गांवों में पैदल भटकते हुए प्रेम से सत्तू फांक रहे हैं–इसी में उनकी दावत होती थी।

जब खाने की बात निकल ही आयी, मुझे यह भी कह देना चाहिये कि जीवन के सभी विषयों की तरह इस मामले में भी वे 'यो वै भूमा तत् सुखं, नाऽल्पे सुखमस्ति' मंत्र को मानते थे। सो दूध पीते तो उसका हिसाब सौ-दो सौ मिलिग्राम नहीं, लीटरों और गैलनों में होता था। पूरा भोजन कर चुकने के बाद फलाहार में एक-आध दर्जन केला-संतरा या पांच-छह गिलास गन्ने का रस गटागट पी जाते मैंने उन्हें देखा है!

अपने सहज संन्यास के कारण उन्हें प्रतिष्ठा की परवाह नहीं थी। जब साहित्य अकादमी ने उन्हें पांच हजार का पारि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोषिक देते हुए उनसे संक्षिप्त 'बायो-डेटा' मांगा, तो इनाम को लौटाते हुए उन्होंने लिखा कि आप लोगों को भारतीय संस्कृति का कोई ज्ञान है या नहीं? साधु से उसके पूर्वाश्रम के बारे में पूछते हैं?

परंतु यह कहना मुश्किल है कि स्वामी संन्यासी अधिक थे या संसारी। व्यक्तिगत रूप में संन्यासी होते हुए वे एक विशाल परिवार के कुलपिता थे।

उनका प्रेम बेचैन कर देने वाला होता था। जिस पर वे रीझ जायें, उसे केवल प्रेम से ही नहीं, प्रशंसा से भी नहला देते। तब जो बेचैनी होती थी, उसका अनुभव सैकड़ों ने किया होगा।

गत वर्ष भाई श्रीराम चिचलीकर स्वामीजी के साथ गीता के विषय में कुछ चर्चा करने कोसबाड गये थे। स्वामीजी ने कहा—'वर्षों तक मैं एक पैर पर खड़े होकर रोज दो बार गीता का पाठ करता था। गीता के संबंध में तब तक लिखे गये सारे गुजराती, मराठी, हिंदी, अंग्रेजी साहित्य को मैंने पढ़ डाला। पर मुझे तो एक ही बात सीखने को मिली कि अनुभव से ही सीखा जा सकता है, पढ़ने से नहीं।'

अंतिम दिनों में स्वामीजी ने गीता के १०८ श्लोक चुनकर निजी शैली में अनुवाद करके उसे 'लोकगीता' के नाम से प्रकाशित कराया। इस चयन में आप देखेंगे कि उन्होंने तत्त्वज्ञान के श्लोकों को बीन-बीनकर निकाल डाला है और कर्मभक्ति के श्लोकों को पसंद किया है। क्या आप स्थितप्रज्ञ-लक्षण और पुरुषोत्तम-योग से रहित की कल्पना कर सकते हैं? पर ऐसा करने की हिम्मत स्वामी में थी।

मूलतः हिमालय और गंगा के अनु जीव थे वे। काकासाहब ने जो 'हिम का प्रवास' लिखा, उसमें उनके दो साथी आचार्य कृपलानी और स्वामीजी। में स्वामीजी सबसे छोटे, पर हिमाल सबसे ज्यादा घूमने वाले थे। 'एक्रॉ गंगोत्री ग्लेशियर्स' में स्वामी के हिम और गंगा के अनुराग का थोड़ा तीर्थ चखने को मिलता है। पर आप कौसानी जिसके सामने २०० मील तक हिम शिखरों की माला फैली हो ऐसी में अथवा हरद्वार में गंगा के तट पर धर्मशाला में उनके साथ रहे होते तो हि लय की अनेक यात्राओं के उनके संस आपको सुनने को मिलते।

मन में बात आये बिना नहीं रहती यदि स्वामीजी ने स्वयं अपने यात्रा लिखे होते, तो गुजराती भाषा को बड़ा हुआ होता। पर उन्होंने गुजराती को कुछ दिया, उसका मूल्य भी कम नहीं यों वे गुजराती, हिंदी, अंग्रेजी और म में लगभग समान रूप से जोरदार सकते थे। १९४२ के आंदोलन के भूमिगत रहते हुए स्वामी ने 'क्विट इं नामक अंग्रेजी पत्रिका निकाली। उ अंग्रेजी की शब्द-संपदा देखकर रा जैसे लोग चकित रह गये थे। उनकी अं पर बाइबल की भाषा की और उनकी

अं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व मराठी पर संतों के साहित्य की गहरी छाप थी।

गुजराती में तो स्वामी आनंद की अपनी ही अनुपम शैली थी। वे शब्दों के स्वामी थे। उनकी शैली की ओजस्विता उनके चरित्र को प्रतिबिंबित करती थी। उनके चरित्र-चित्रण में गजब की सजीवता थी। 'मोनजी रुदर', 'महादेवथी मोटेरा', 'संतोना अनुज' और 'कुलकथाओ' में वह मेरुघोड़ा तथा 'नधरोल' में वह धोवन उनके चरित्र-चित्रण के आदर्श नमूने हैं।

['भूमिपुत्र' में से संक्षिप्त करके]

★

हजरत उमर तब खलीफा थे। उन्होंने सभी प्रदेशों के राज्यपालों को आदेश दे रखा था कि जिस समय भी कोई प्रजाजन कोई काम लेकर आये, उसे तत्काल निपटा दिया करें। संयोग से एक राज्यपाल के पास एक आदमी जुम्मे (शुक्रवार) की रात के बारह बजे किसी काम से आया। राज्यपाल ने उसे कहला दिया कि इतनी रात को मैं मिल न सकूंगा, कल आना।

उस आदमी ने अगले दिन सीधे हजरत उमर के पास जाकर इसकी शिकायत की। हजरत को यह सुनकर बहुत दुःख हुआ कि उनके राज्य में कोई कर्मचारी प्रजा का काम अगले दिन के लिए टाल दे। उन्होंने फौरन उस राज्यपाल को तलब किया और उससे उत्तर मांगा। राज्यपाल बहुत शर्मिंदा हुआ और बोला—'अल्लाह गवाह है, मैंने कभी किसी के काम को मना नहीं किया। मगर जुम्मे की रात को मैं मजबूर था।' हजरत ने पूछा—'क्या मजबूरी थी?' राज्यपाल ने सिर झुकाकर कहा—'हुजूर, मेरा राज खुल जायेगा।' हजरत ने फरमाया—'जनता के कर्मचारी का कोई राज, राज नहीं रहना चाहिये। आप अपना राज बयान कीजिये।'

राज्यपाल ने रुक-रुककर उत्तर दिया—'हुजूर, मैं हफ्ते के सात दिन बहुत व्यस्त रहता हूं। सिर्फ जुम्मे की रात मुझे कुछ फुरसत मिलती है। मेरे पास कपड़ों का सिर्फ एक जोड़ा है। पूरे हफ्ते उसे पहने रहता हूं और जुम्मे को रात को धोकर सुखाता हूं। यह बात मैं लोगों से छिपाता हूं, ताकि कोई मजाक न उड़ाये कि इस्लामी राज्य के इतने बड़े राज्यपाल के पास केवल एक जोड़ा कपड़े हैं। इसके अलावा मुझे इबादत का समय भी बाकी दिन कम ही मिलता है। सो जुम्मे की रात को जी भरके इबादत भी करता हूं। बस आका, यही राज था, जो आज फाश हो गया।'

यह सुनकर हजरत उमर की आंखों से आंसू बह निकले। उन्होंने अल्लाह का शुक्र अदा किया कि उनके राज्य के कर्मचारी न तो जनता से गाफिल हैं और न खुदा से, बल्कि सरकारी खजाने से इतना पैसा लेना भी गुनाह समझते हैं कि अपना तन ढंक सकें।

—इशरत अमीर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लचकते पत्थर और गाती रेत

शेखर वाशिष्ठ

भूविज्ञान के विद्यार्थी के रूप में मैंने जंगलों और पहाड़ों में, झरनों और वादियों में, खानों और खदानों में नाना रंग-रूप के, किस्म-किस्म के पत्थरों को देखा, परखा व जांचा है। मैंने तो यही देखा और अनुभव किया है कि कुछ पत्थरों के 'दिल' होता है और कुछ तो गीत भी गाते हैं। यह बात दूसरी है कि वह दिल इंसानी दिल की तरह धड़कता और फड़कता नहीं, और वह गीत 'ए भाई, जरा देख के......' की तरह साज पर नहीं गाया जाता।

यों 'पत्थर' शब्द का उच्चारण करते ही मन में कठोरता, अनम्यता और अडिगता की कल्पना उभरती है, जब कि दिल या हृदय शब्द हमें लोच और अनुभूति से युक्त पदार्थ की कल्पना कराता है। परंतु कई पत्थरों में भी लचीलापन और कोमलता होती है। यह बात जानते हैं पत्थरों की कटाई-छंटाई-घिसाई करने वाले या पत्थरों के अध्येता विज्ञानी और विद्यार्थी।

कुछ पत्थर ऐसे भी होते हैं, जो मुलायम न होते हुए भी लचकदार या लचीले होते हैं। ऐसे लोचदार पत्थरों की कुछ ही किस्में हैं और वे संसार में गिने-चुने स्थानों [में] मिलते हैं। किंतु दुर्लभ होते हुए भी द्युति[हीन,] रंगविहीन और अपारदर्शक होने के का[रण] वे मूल्यवान नहीं होते। लचक या लोच[के] कारण उनका उपयोग निर्माण-कार्यों [में] नहीं किया जा सकता और रंगविहीन [होने] के कारण वे शोभा-शृंगार की वस्तु भी [नहीं] बन पाते।

इन पत्थरों को 'दिलदार' पत्थर [इस] लिए कहा जाता है कि ये दिल की [तरह] लचकदार होते हैं, और इनका गठन [भी] लाखों कोशों के संघटन से बना होता है। इनका रंग धूसर, मटमैला होता है। कठोर होते हुए भी हवा-पानी के प्रभाव [से] अपक्षरण (वेदरिंग) की प्रक्रिया द्[वारा] सछिद्र बन जाते हैं। ये सूक्ष्म तथा सु[क्ष्म] कणों से संघटित होते हैं। इनमें हवा-पा[नी] के आवागमन के लिए पर्याप्त स्थान [और] अवकाश होता है। यदि इनके दोनों सि[रों] को दो हाथों से पकड़कर हिलायें तो ये स[च]मुच हिलते हैं। किंतु पाषाणी रेत-कणों [के] परस्पर गुंफन के कारण ये अत्यधिक द[बाव] के बीच नहीं टूटते।

भारत में इस प्रकार के लोचदार और लचकदार पत्थर हरियाणा के चरखी-दा[दरी] नामक स्थान में मिलते हैं।

ब्रिटेन के उत्तरी वेल्स प्रदेश के सागर[तट] पर ऐसी बालू है, जिस पर चलने से म[धुर] संगीत-ध्वनि सुनाई पड़ती है। इस अ[नोखे] संगीत का आनंद प्राप्त करने के लिए सु[बह-] शाम स्त्री-पुरुषों, विशेषतः युवा दंप[तियों]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की भीड़ लगी रहती है।

एक बार लंदन विश्वविद्यालय के प्रसिद्ध रसायनशास्त्री डा. कैनेथ रिजवे छुट्टियां बिताने उत्तरी वेल्स गये हुए थे। उन्होंने भी यह अजीबोगरीब संगीत सुना और आश्चर्य-चकित हुए। वे इस बालू की अनेक बोरियां भरवाकर अपनी प्रयोगशाला में ले आये और वहां उन्होंने उसके संगीत का अध्ययन किया।

वे इस नतीजे पर पहुंचे कि अधिकांश बालू के कण समान आकार के होने के साथ-साथ आकृति में गोल हैं। जब समान आकार एवं आकृति के ये बालू-कण पैर के दबाव के कारण दबकर आगे-पीछे सरकते हैं, तो एक प्रकार की विचित्र संगीतमय ध्वनि निकलती है। यदि उनमें विभिन्न आकार वाले कण काफी मात्रा में मिला दिये जायें, तो संगीत समाप्त हो जाता है।

विश्व के अनेक भागों में ऐसे स्थान हैं, जहां की भूमि मानो भिन्न-भिन्न स्वरों में अपने हृदय की कथा-व्यथा कहती है। मध्य एशिया के ८ लाख वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैले हुए गोबी मरुस्थल के तकला माकान अंचल के पश्चिमी छोर पर अंदास पादशा नामक स्थान में अजीब ध्वनियां सुनने को मिलती हैं। सुनने वाले को ऐसा लगता है, जैसे अतीत काल में रेत के टीलों में दबकर मर गये लोगों की आत्माएं करुण और विषादपूर्ण स्वरों में गीत गा रही हों। ये गीत कभी इस टीले से तो कभी उस टीले से सुनाई देते हैं और उन्हें सुनकर हृदय व्यथा से भर आता है।

अरब के विशाल मरुस्थल में कई जगह रात के समय ऐसी विचित्र ध्वनि सुनाई देती है, जैसे कोई अभागा यात्री हजारों मन रेत के टीले के नीचे दबा कराह रहा हो। टेप पर अंकित की गयी उस ध्वनि के बोल होते हैं—बु-ड-म-बु-ड-म हा ... य ......। अफगानिस्तान में काबुल के पास के एक रेतीले मैदान में आप खड़े हो जायें, तो दिन-दहाड़े आपको ऐसा प्रतीत होगा, जैसे दूर कहीं से घुड़सवार अपने घोड़े दौड़ाते हुए एक नगाड़े को पीटते आ रहे हों। इस्रायल के सिनाई अंचल की तलहटी में स्थित पर्वत का नाम कदाचित इसलिए 'बेल माउंटन' हो गया है कि उस पर अब भी रहस्यपूर्ण स्वरों में टन्-टन्-टन् की आवाज सुनाई दिया करती है।

ईरान के मरुस्थल में कितने ही यात्री बीन के तारों से निःसृत स्वरों जैसी सुरीली ध्वनि सुनकर विस्मित हो उठे हैं। वह ध्वनि

चरखी-दादरी का 'दिलदार' पत्थर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहां से आती है, यह कोई नहीं जानता। किंतु उन स्वरों का समवेत रूप बहुत मधुर और मर्मस्पर्शी होता है। इसके विपरीत यदि आप हवाई द्वीप के रेतीले टीलों में जायें, और वहां आपको कुत्ते के रोने-जैसी आवाज सुनाई दे, तो आश्चर्य न करें। स्काटलैंड के पश्चिम में अटलांटिक महासागर के हेब्राइड्स द्वीप-समूह में एक द्वीप है 'ऐग'। इस द्वीप के हृदय में से भी सहारा मरुस्थल-जैसी सीटी की ध्वनि पर्यटकों को सु... मिलती है।

जर्जर शिलाओं, लचकते पत्थरों, रेत के टीलों और धरती के उदर के विवरों से कब, क्यों और कैसे ये ध्व... निकलती, फैलती और श्रोताओं को आ... चकित करती हैं—यह वस्तुतः खोज का विषय है।

—३४ (बी), यू.ए, जवाहर नगर, दिल्ली

शर्मिंदगी

कालेज के जमाने से ही उर्दू के प्रख्यात वयोवृद्ध शायर पं. हरीचंद अख्तर की ... और उनके व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित था। कुछ ऐसे हालात बने कि मैं उनके ... ही नजदीक आ गया। वे भी मुझे अपने बेटे से ज्यादा चाहने लगे। बुजुर्गों की संगत ... सीखना सदा ही मेरी मंशा रही है और यही इच्छा मुझे उनसे मिलने के लिए अक्सर ... बाजार, दिल्ली ले जाती थी। वे मुझे जब भी मिले, गले लगाकर मिले। उनका गले ... का अंदाज कुछ इतना प्यारा था कि उसे आज भी भुला नहीं सका हूं।

एक बार मेरी तबीयत खराब हो गयी। इसलिए उनसे थोड़े दिन मिल नहीं ... बीमारी के बाद एक दिन जामा मस्जिद गया तो पंडितजी मिल गये। मुझसे खैरियत ... मैंने इतना ही कहा—'हां, पंडितजी सब ठीक है।' बीमारी की चर्चा करना मैंने ... उचित नहीं समझा कि मैं जानता था, पंडितजी नाराज हो जायेंगे और गिला करेंगे ... तुमने मुझे खबर क्यों नहीं की। उस दिन यह बात आयी गयी हो गयी।

दो-तीन दिन बाद फिर मिले। बहुत ही नाराज थे। शायद किसी ने मेरी बीमारी ... बारे में बता दिया था। थोड़ी देर नाराज होते रहे और फिर यकायक उदास हो गये। ... लगे—'मैंने हमेशा तुम्हें अपना बेटा समझा है। मुझे नहीं मालूम था कि अब तक तुम ... रस्मी गुफ्तगू करते रहे हो।' और साथ ही उनकी आंखों में आंसू छलक आये। यह ... कुछ इस अंदाज में हुआ कि मैं बहुत शर्मिंदा हुआ और आज भी शर्मिंदा हूं।

—कुलदीप तलवार

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

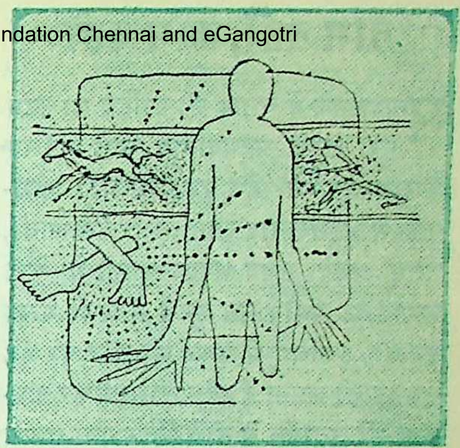

स्मृति के अंकुर

शाम का समय था। मैं बाजार में अपने मित्रों के साथ एक पान की दुकान पर खड़ा पान लगने की प्रतीक्षा कर रहा था। लोग यहां से वहां आ-जा रहे थे। तभी राहगीरों में एक युवक अचानक हमारी साइकलों के पास गिरकर तड़पने लगा। उसे मिर्गी का दौरा पड़ गया था। युवक सड़क पर तड़प रहा था और हम सब यह सोचकर कि थोड़ी देर में दौरा ठीक होने पर वह स्वयं उठ बैठेगा, चुपचाप खड़े थे।

तभी उधर से दो हिजड़े निकले। जैसे ही उन्होंने युवक को तड़पते देखा, उनमें से एक ने दौड़कर उसे अपनी गोद में लिटा लिया और उसके मुंह से निकलने वाले झाग को अपनी साड़ी से साफ करते हुए उसे सहलाने लगा। इसी बीच दूसरा हिजड़ा दौड़कर एक होटल से पानी ले आया और उसके मुंह पर छींटे मारने लगा। युवक को ठीक होने में लगभग पंद्रह मिनट लगे। तब तक उन दोनों ने जिस आत्मीयता से उसकी सेवा की, उसे देखकर हम लोग स्तब्ध रह गये। ये उस समाज के दो सदस्य थे, जिसे हम उपहासास्पद और कलंकरूप समझते हैं!

—ठा. जमनाप्रसाद जलेश, दमोह, म. प्र.

ooo

बिना टांग के

एक साल ग्रीष्मावकाश में अपने खुशमिजाज मित्र सर्वोत्तम के साथ बंबई घूमने गया था। हम महालक्ष्मी रेसकोर्स भी गये। चुस्त और फुर्तीले घोड़े देखकर मित्र अकस्मात बोल उठा—'क्यों, अगर ये अपनी टांगें गवां बैठें तो?' मैंने कहा—'तब इन्हें गोली मार दी जायेगी।' वह एकदम चुप हो गया।

दुर्भाग्य से उसके डेढ़ वर्ष बाद मेरा मित्र मोटर-दुर्घटना में बुरी तरह घायल हुआ और सदा के लिए टांगें गंवा बैठा। परंतु जब मैं अस्पताल में उससे मिला, तो वह कुछ मुस्कराकर बोला—'महालक्ष्मी रेसकोर्स की बात याद है? आज मैं समझ गया टांगें गंवाने के पश्चात् घोड़े कैसा अनुभव करते हैं।' और इसके कुछ दिनों बाद ही वह इस संसार से विदा हो गया।

—चंद्रहास शुक्ल, भोपाल

ooo

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाम नहीं, काम कहां

मनखा-मेले में चुनाव की मीटिंग का काम पूरा करके अहमदाबाद जाने के लिए मैं राजकोट बस-स्टैंड पर खड़ा था। जामनगर से अहमदाबाद जाने वाली बस आयी, उसमें चढ़ते समय धक्का-मुक्की में मेरी चप्पल टूट गयी। बस छूटने में अभी थोड़ी देर थी, इसलिए मैं बगल की सीट पर बैठे सज्जन को अपना हैंडबैग संभलवाकर कंडक्टर की अनुमति से नीचे उतर गया चप्पल

पनघट
[चित्र : गेब्रे क्रिस्टास डेस्टा]

की मरम्मत कराने।

बस-स्टैंड के बाहर बैठा मोची कि जूते की मरम्मत कर रहा था, इसलिए बारी आने में थोड़ी देर लग गयी। जब मैं दुरुस्त की हुई चप्पल पहनकर स्टैंड पर वापस आया, तो ज्ञात हुआ कि तीन मिनट पूर्व ही बस छूटी है। मैं चिंता में पड़ गया। हैंडबैग में दो-तीन कपड़ों के अलावा एक कैमरा एवं रुपयों की रकम थी।

बाहर आकर एक मोटर-रिक्शा की सोची। चालक बोला—'अब तक तो बस चोटिला पहुंच गयी होगी। अब उसे पकड़ना है तो चालीस रुपये लूं चालीस रुपयों का नाम सुनकर मैं तो हो गया। फिर दौड़कर बस-स्टैंड के मैने के पास गया। सारी स्थिति बताकर कहा—'आप कृपया टेलिफोन द्वारा चोटि बस-स्टैंड को कह दें कि मेरा हैंडबैग व उतार लें।' वे बोले—'ऐसा नहीं हो सकता

हमारी बातचीत सुनकर वहां खड़े सज्जन मेरे पक्ष में बोले। इस पर मैने तमककर बोला—'यह सब नहीं हो सकता अब शाम के ७ बजे हैं। छोटे स्टेशनों दफ्तर ६ बजे ही बंद हो जाते हैं। अगर फौरन किसी वाहन से चोटिला जायें शायद इन्हें वह बस मिल जाये।'

कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि करूं। रिक्शावाला चालीस रुपये से कम आने को तैयार न था। वह इस अवसर पूरा लाभ उठाना चाहता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतने में एक सज्जन ने, जो मैनेजर से 'नाम नहीं, काम कहो।' बात कर रहे थे, मेरे कंधे पर हाथ रखकर कहा–'चलिये मित्र ......! आपको जाम-नगर-अहमदाबाद बस जहां भी खड़ी होगी, वहां तक पहुंचा दूंगा।' उन्होंने अपनी एम्बैसेडर कार का दरवाजा खोलकर मुझे बैठाया और बगल के छोटे रास्ते से गाड़ी तेजी से दौड़ा दी। मैंने स्वाभाविक ही पूछा–'आपका नाम?' बोले–'नाम से आपको क्या काम है? कुछ काम हो तो कहिये।'

थोड़ी देर में राजकोट शहर के बाहर एक गांव में वह बस खड़ी मिल गयी। उसे देखकर मेरे जी में जी आया। मैं मोटर से उतरा और हाथ जोड़कर बोला–'यदि आपने मेरी मदद न की होती तो शायद.....'

उन्होंने मेरे दोनों हाथ पकड़कर बस में बैठने का संकेत किया। मैंने फिर पूछा–'अपना नाम तो बता दीजिये।'

पर 'नाम नहीं, काम कहो' कहते हुए वे सज्जन अपनी मोटर में बैठ गये और कार स्टार्ट करके मेरी आंखों से ओझल हो गये। उनके शब्द मेरे कान में गूंजते रहे–'नाम नहीं, काम कहो।'

—मनसुखभाई एम. स्वामी, वीरनगर, सौराष्ट्र

०००

अधूरी भक्ति

सन १९७० में मैं कालेज में पढ़ता था। बिहार में उस समय संयुक्त-दलीय सरकार थी और अंग्रेजी हटाओ आंदोलन जोरों पर था। हम छात्रों ने कालेज में अंग्रेजी के खिलाफ एक सभा का आयोजन किया, जिसने फिर जुलूस का रूप धारण कर लिया। हमने रास्ते में सिनेमा के अंग्रेजी पोस्टर चिपकाने वालों से सीढ़ी छीनी; कारों, रिक्शों तथा दुकानों के बोर्ड पर लिखे अंग्रेजी शब्दों पर कोलतार पोतकर उत्कट हिंदीरक्षक होने का गर्व अनुभव किया।

कुछ महीने बाद परीक्षा हुई। जब परीक्षाफल सामने आया, मैं अनुत्तीर्ण था। मैं हिंदी में ही फेल हुआ था! अंग्रेजी में मुझे अच्छे अंक मिले थे। कितना सतही था मेरा वह हिंदी-प्रेम!

—गौरीशंकर नागदंश, मुजफ्फरपुर

★

सन १९२१ की बात है। नयी दिल्ली के एक सरकारी भोज में श्रीमती रतनबाई जिन्ना वाइसराय लार्ड रीडिंग के पास की कुर्सी पर बैठी थीं। रीडिंग ने बड़ी खिन्नता से कहा–'पिछले विश्वयुद्ध के कारण ऐसा तनाव पैदा हो गया है कि मेरा जर्मनी जाना ही मुश्किल हो गया है।'

रतनबाई ने पूछा–'लेकिन क्यों? इसमें मुश्किल क्या है?' रीडिंग ने समझाया–'बात यह है कि जर्मन लोग हम अंग्रेजों को पसंद नहीं करते। इसलिए मैं जर्मनी नहीं जा सकता।'

'तब आप अंग्रेज लोग भारत कैसे चले आये?' श्रीमती जिन्ना ने वाइसराय के मुंह पर तमाचा-सा जड़ दिया।

—अखिल

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आ गयी उत्तरा ! ......ये देख दो-दो धोबनें आकर बैठी हैं, शोभा को सुहाग देने के लिए......दौड़ जरा मांजी को खुशखबरी सुना आ' ......

'बेटी की बारात आने से पहले ऐसी मसखरी का भी कुछ शगुन होता है क्या आंटी ......धोबनें......सुहाग...... शोभा' ......मैंने बड़ी हैरत से आंखें फैलाते हुए कहा।

आंटी खिलखिलायीं–'जा जरा मांजी के सामने "मसखरी" कहना इस रिवाज को–पोपले मुंह से हजारों माचिस की तीलियां जमाने में आग लगाने को निकल पड़ेंगी.....' फिर समझाने के लहजे में बोलीं–'क्या कहती है, सुबह से बस एक ही झक, कल शोभा मंडवे में नहायेगी, पीली साड़ी पहनेगी और धोबन दूर से अक्षत फेंककर उ कुंवारापन उतारेगी–सुहाग देगी। की इस झक के पीछे तीन-तीन दौड़ा रखे थे सुबह से और अब दो-दो आकर बैठी हैं। लाख कहा, पर टलें नहीं।'

'और शोभा ? मान गयी मांजी की झक को ?'

'उसकी पूछती है ? वही रोज रवैया.....चुपचाप उतरना, हल्दी लगा रस्म करना और वापस दड़बे के में। उत्तरा ! मेरा-तेरा सोचना तो निकला ...... क्या करूं बोल न ?' आं आंखों में घुलती नमी को एकदम सं 'ऐ लखना ! तू किधर जा रहा है महंगू को भेजता जा; ड्रम भर-भरक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहन में पानी ही पानी कर दिया है। शिव-राम को बोलना, बीबीजी ने बुलाया है। बिजली का कुछ हुआ या नहीं? अगले चार दिनों में एक मिनट को भी बिजली गयी तो कुहराम मच जायेगा। इतना शौक था शोभा की शादी का! पर बुरा हो इस (आंटी समझ न पायीं किसका) ..... पानी, बिजली, खोया, पनीर कुछ नहीं ..... श्यामा कहां गयी? ......बिना कंघी-चोटी संवारे पट्ठी चाय का पानी तक नहीं चढ़ा सकती! उसका मेकअप भी ......'

'करने भी दीजिये आंटी, तभी तो शकुन मामा को बस श्यामा की चाय पसंद आती है।'

'चोप्प! किसी को तो छोड़ा कर! एक पिनकना है शकुन, सुनेगा तो ......' और वापस अपनी स्पीच पर आ गयीं—'सबकी सब कामचोर हैं!' सामने लाइन से सिल-बट्टे लेकर बैठी औरतों की ओर देखकर बोलीं—'एक बेचारी बेलिया की माई है, कुल एक हफ्ते से लगी है पर एकदम अपने घर की तरह काम करेगी, दिन-रात बैल की तरह जुटी रहेगी ... आज आयी नहीं वह भी—महंगू जरा देख आ बुखार-वुखार न हो गया हो......'

चांदी के कड़े वाली सांवली गेहुंई कला-इयां पूर्ववत् जल्दी-जल्दी सिलबट्टे पर चलने लगीं। आज सबने आंटी की दी हुई फूलदार साड़ियां और आंगन में लच्छे फैलाये बैठी चुड़िहारन से भर-भर कलाई चूड़ियां पहनी थीं। नयी छींटदार साड़ियों में बिलावजह शरमाती एक बोली थी—'लो, आ गयी बेलिया की माई ......'

गुमसुम बेला की माई चुपचाप आकर अपने सिलबट्टे पर बैठ गयी। उसने नयी फूलदार साड़ी भी नहीं पहनी थी। औरतें एक-दूसरे के कान में फुसफुसायीं—'बेलिया को देने के लिए रख दी होगी।' पीछे-पीछे बेलिया कुसमुसायी-सी आकर कोने में दीवार की ओर मुंह फेरकर बैठ गयी थी।

'अरे आज बेलिया को क्या हुआ? मार आंखें सूजकर लाल-लाल हो गयी हैं। मारा है क्या? री बेलिया, इधर आ, क्या हुआ तुझे?'

बेलिया वैसी ही मुंह फेरे निश्चल बैठी रही—केवल जरा-से दिखते गोरे-चिकने पैरों को उसने विद्रोही भाव से झिलमिटी साड़ी में सिकोड़ लिया।

औरतें चांदी के कड़े चमकाती मिस्सी लगे दांतों में खिलखिला पड़ीं, जैसे शरम और दया से जमीन में गड़ी जा रही हों। एक-आध ने बिलावजह घूंघट भी खींचना शुरू कर दिया। शायद शकुन मामा आ रहे थे।

आंटी के साथ मैं भी भौंचक थी। कुल ग्यारह साल सात महीने की सांवली गुड़िया-सी बेलिया.....क्या कर बैठी वह? दुबारा पूछने पर बेलिया की माई भरे गले से इतना ही बोली—'इन्हीं लोगों से पूछो बीबीजी।' पूछने के साथ ही कई बेसब्र आवाजें फुस-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुसायीं–'खुनुसायी है। क्यों? ससुराल जाने के लिए–खिक् खिक्-खी-खी-खी-खी-खी......'

कुहनियों पर सिर घुमा-घुमाकर बेताब हंसी रोकी जाने लगी। पता चला, सुबह से जिद मचाये है। चीख-चिल्लाकर आफत कर दी, हाथ की सारी चूड़ियां फोड़ डालीं, साड़ी फाड़ डाली। ..... 'अरे ये कलजुग है कलजुग! एक सोभाबीबी को पूछो, कितनी चुप्प। एक ये खुदी ससुराल जाने को चीख-पुकार मचा रही है। राम रे राम! और लोग कहें, पढ़ी-लिखी बेसरम होती हैं। ये कै अच्छर पढ़ी है? उमिर तक नहीं हुई और ससुराल के लिए ऐसी बेसबरी.....धिक्कार है जमाने को! पेट में ही सब सीखे रहती हैं क्या ......अरे, धरती फट जाये बस!'

आंटी अवाक् थीं। मुझे बड़ा मजा आया–'वाह बेलिया वाह! एक तू ही अक्लमंद निकली इन गंवारों में; चल तुझे शोभा के पास ले चलती हूं, कोई मंतर उस पर तो चले। तू घबरा मत, अभी तेरे आदमी को तार दिलवाती हूं!'

खिलखिलाती, दो-दो सीढ़ियां लांघती ऊपर पहुंची और एकदम पलंग पर ढेर हो गयी।

शोभा फीकी हंसी हंस दी–'क्या बात हो गयी!'

'एक बात हो तो बताऊं ......एक छोड़ दो-दो धोबनें धरना दिये बैठी हैं, सुहाग की थोक सप्लाई के लिए और हर तरह की कुंवारी झक उतारने के लिए!'

'पर मेरे लिए तो समस्या है। अब दो-दो मांग निकालनी पड़ेंगी न, दो धोबनों का सिंदूर लगाने के लिए!'

'तो कर दो ...... यह भी सही।'

वही उदास चेहरा, भरभरायी आंखें अफलातूनी प्रलाप। 'बहुत हुआ शोभा बंद भी करो, मान गये सेन्सिटिव नहीं अव्वल नंबर की जिद्दी हो तुम, मानती हूं जो कुछ घटा बहुत अच्छा नहीं, पर इतना कुछ सीरियस भी नहीं...... ।'

'घटना बाहर से ज्यादा कभी-कभी अंदर घटा करती है उत्तरा ......'

'घटती नहीं, तेरी जैसी फितूरी लड़कियों की आदत पड़ जाती है–लत–हर चीज को घटाने-बढ़ाने की ...... असल में सब गलती आंटी की है। मैं होती आंटी की जगह, बस एक डांट लगाती। सारी सेन्सिटिविटी पल्ला झाड़कर भाग खड़ी होती।'

'सेन्सिटिविटी नहीं, मेरी प्रेस्टिज की बात है उत्तरा–अंदरूनी प्रेस्टिज ......'

'भाड़ में गयी तेरी प्रेस्टिज ......'

'वह तो गयी ही–उसकी राख ही तो उड़ा रही हूं।'

शोभा बात मुझसे कर रही थी, देख रही थी बहुत दूर आकाश की तरफ।

असल फिल्मी डायलाग मार रही है बच्ची; पोज भी वही–मुमताज वाला।

शोभा उसी तरह आकाश में पलकें टांगती-उतारती रही। मैं हारकर समझाने बैठी–'तमाशा कर रही हो शोभा। एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महीने जरा उस सिरफिरे संजय के साथ क्या घूमी-फिरी कि टनों आशिकाना गैस भर ली अपने अंदर। वही जन्म-जन्मांतर वाला रोमांटिक फितूर। शुरू-शुरू में उस पर कितना चिढ़ी थी! कुछ खास पसंद भी नहीं था तुझे, न तेरा पहले से ही कुछ था—सीधे-सीधे मेट्रिमोनियल से आंटी को पसंद आया था।'

'मैं कब इन्कार करती हूं इससे?'

'तब फिर तू क्या प्यार का मातम मना रही है?'

'प्यार का सवाल ही नहीं तो मातम कैसा?'

'शोभा, प्लीज़ इरिटेट मत करो। तुम्हारा तो कुछ समझ में ही नहीं आ रहा है। जब कुछ भी नहीं तो खामख्वाह यह नाटक क्या रच रही हो? कम से कम आंटी का तो खयाल करो। तुम्हें दया नहीं आती! बार-बार कहती हैं मेरा बस चलता तो इस संजय को किसी भी शर्त पर राजी कर लेती, पर क्या मालूम था कि शोभा इतनी सीरियस है। आठ सौ की जयमाल की साड़ी, हीरे-मानिक के सेट लिये हूकती रहती हैं..... सब बकवास है...... फितूर ....शोभा!'

'जानती हूं और मम्मी जैसा समझती हैं, मैं उससे प्यार भी नहीं करती। जानती है, अब अगर संजय आकर पैर भी पड़े तो शादी नहीं करूंगी।'

'वाह, यह हुई न बात!'

'हां, लेकिन दूसरी बात तू नहीं समझती। मेरी बेइज्जती, मेरे अभिमान वाली बात ......'

'अरी छोड़ भी, उससे कहीं ज्यादा सूरत और ओहदे वाला तुझे मिल जा

'हां, पर इससे तो इन्कार नहीं सकती न कि संजय ने एक महीने की शिप के बाद मेट्रिमोनियल कालम की लड़की पसंद कर ली ...... कहां मेरा अभिमान, मेरी साख, उत्तरा? षण करने बैठती हूं तो कुछ भी नहीं मिल पर जाने क्यों कुचले हुए अभिमान और की किरचें हर समय आंखों में घुलती हैं। मेरे सपनों के सजे महल को रत्ती भी अस्त-व्यस्त करने का क्या अधिकार किसी को?' ...... शोभा उत्तेजना से रही थी।

मैंने उसकी आंखों में देखा। साफ अपनी आंखों के नीले आकाश में तरती सजाये हुए हजार-हजार इंद्रधनुषों में एक का भी रंग धुंधलाते हुए नहीं देख

उसके बचपन से ही उसकी इच्छा लाड़-प्यार से अभिभूत आंटी-अंकल क्षाएं संजो-संजोकर टांगते आये थे बेहद नाजुक, सेन्सिटिव शोभा के लि अगणित, असंख्य आकांक्षाओं की शोभा आज कितनी व्यथित थी, एक सा कांटा चुभ जाने पर! हालांकि कई गुना योग्य वर जुटाकर आंटी-अंकल दंश का निशान तक न रहने दिया था।

'फिर भी.....फिर भी मेरे साथ हुआ है। मानेगी न उत्तरा?'

एकाएक नीचे बेलिया के रोने की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चीख सुनाई दी।

'ठहर तुझे एन्टरटेन करती हूं।' मैं खड़खड़ाती हुई सीढ़ियां उतर गयी। बेलिया टांगें फैलाये जोर-जोर से चीख रही थी। आंटी संभ्रांत अतिथियों के बीच इस सीन के क्रिएट हो जाने से परेशान थीं। पता चला, औरतों के कुछ चिढ़ा देने पर बेलिया ने गाली दी; कल से चुपचाप सुनती दुखी मां ने एक भरपूर थप्पड़ जड़ दिया था।

वहला-फुसलाकर उसे ऊपर लाने में सफल हुई। खूब समझाया। फिर शोभा को बहलाने की गरज से बतियाने लगी।

'अच्छा बेला, माई तेरा गौना क्यों नहीं करती?'

'पइसा नहीं है उसके पास। पहले चमेली (छोटी बहन) का ब्याह करेगी। पइसा आ जायेगा, तब उसी से गौना करेगी मेरा।'

'चमेली के ब्याह से पइसा?'

'हां, पर कोई मिलता नहीं न। मेरे आदमी ने पांच सौ दिया था।'

शोभा ने मुझे धीमे-से समझाया—ब्याह नहीं करते ये गरीब, हजार-पांच सौ में बेच देते हैं; बाद में लड़की बड़ी होने पर गौने के नाम पर बिरादरी को खिला देते हैं...... जिसके पास जाने को हुलस रही है, वह पैंतालीस का खुच्चड़ है।

'ओह!' मैं संभली, फिर अपना दायित्व संभाला—'अच्छा बेलिया! कौन-कौन है तेरी ससुराल में?'

'मेरा आदमी।'

'सो तो होगा ही, पर सास.....ननद...'

'ना, कोई ना।'

'तो ब्याह पर जब विदा होकर गयी थी तो ......?'

'उसने पट्टीदारनें बुला ली थीं।'

'कैसा है तेरा आदमी?......अच्छा है?'

उसने गरदन हिलायी।

'बाल सफेद हैं या काले?' मैंने छेड़ा।

'दोनों।'

'अर-र, तब तो बूढ़ा हुआ री!'

'ना ...... रंग लेता है।'

'तुझे कैसे मालूम?'

'पट्टीदारनें मुझे बिराती थीं।'

'पान भी खाता है?'

उसने फिर सिर हिलाया।

'अच्छा, तू जाने की इतनी जिद मचाये है, जाने पर माई की याद नहीं आयेगी

चित्र : सत्यकाम राहुल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू का हमला और उसका मुकाबला

आपके लिए कुछ ज़रूरी बातें

"मैंने एनासिन को बहुत गुणकारी पाया है," नर्स एंजेला फ़र्नान्डेस का बयान है।

इन्होंने यही देखा है कि एनासिन सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू की पीड़ा से जल्द आराम दिलाने के लिए काफ़ी तेज़ असर है।

सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू कैसे होते हैं?
ये छूत से फैलने वाले उस विष से होते हैं, जो इन रोगों में ग्रस्त लोगों से हवा में फैलता है। आम तौर से शरीर में उसके मुकाबले की शक्ति होती है। परन्तु ज़्यादा मेहनत या कम ख़ूराक के कारण शरीर में कमज़ोरी आ जाती है और रोग के मुकाबले की शक्ति कम हो जाती है।

रोग लक्षण क्या हैं?
बदन का दर्द, सर का भारीपन, छींकें आना और नाक बहना, जिसके साथ अक्सर कँपकँपी छूटती है, बेचैनी महसूस होती है और पसीना आता है। उसके बाद खाँसी, गले की ख़राबी, भूख की कमी और थकावट की शिकायत हो सकती है।

क्या इस से और तकलीफ़ें भी हो सकती हैं?
यदि लापरवाही बरती जाय तो निमोनिया और साँस की ऊपरी नाली में छूत का असर हो सकता है।

एनासिन कैसे सहायक होती है?
एनासिन सर्दी-ज़ुकाम और फ़्लू की पीड़ा से आराम दिलाती है। एनासिन तेज़ असर है- क्योंकि इस में वह दर्द-निवारक दवा ज़्यादा है जिसकी दुनिया-भर के डॉक्टर सब से ज़्यादा सिफ़ारिश करते हैं। एनासिन पर लाखों लोगों को विश्वास है- क्योंकि यह आपके डॉक्टर की दवा की तरह दवाओं का नपा-तुला सम्मिश्रण है। सर्दी-ज़ुकाम या फ़्लू के पहले लक्षण देखते ही दिन में चार बार एनासिन लीजिए।

आपको और क्या करना चाहिए?
- उबाला हुआ पानी, सन्तरे या मौसंबी का रस और पीने के दूसरे पदार्थ काफ़ी पीजिए।
- पौष्टिक आहार खाइए।
- पूरा आराम कीजिए।
- पानी में ऐंटिसेप्टिक दवा या नमक डालकर ग़रारे कीजिए।
- कमरों को हवादार रखिए।

तेज़ असर और विश्वसनीय
एनासिन

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

A 14-6/76

Regd. User of TM: Geoffrey Manners & Co. Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुझे ?'

वह चुप अंगूठे से जमीन कुरेदती रही।

'बेला, सच-सच बता। माई तुझे ज्यादा अच्छी लगती है या तेरा आदमी ?'

उसका सिर थोड़ा और झुका था और वह उसी तरह जमीन कुरेदती धीमे-से बोली थी–'माई !'

'माई तुझे प्यार करती है क्या ?'

'करती है।'

'दुलारती है ?'

'हूं ......'

'तेरा आदमी तुझे माई से ज्यादा दुलारेगा क्या ?'

'ना।'

'कैसे पता ?'

'पट्टीदारनें चिढ़ाती थीं कि गौने आयेगी तो आधी रात को आकर झोंटा पकड़-पकड़कर मारेगा।'

'उन्हें कैसे मालूम ?'

उसने सीधी आंखें उठाकर बेलाग आवाज में कहा–'अपनी पहली औरतों को भी तो इसी तरह मारता था न !'

'वो सब कहां गयीं ?'

'एक मर गयी, एक भाग गयी।'

'तब भी तू अपने आदमी के पास क्यों जाना चाहती है री ?'

बेलिया ने मुझे इस तरह देखा, जैसे मैं एक बेवकूफ मासूम बच्ची हूं, तभी तो इतना मूर्खतापूर्ण प्रश्न कर रही हूं। फिर एकदम से बोली–'वह......वह दोनों जून रोटी देता है।'

रोटी के नाम से ही जैसे उसके तन-बदन में एक भूख बिलबिला उठी। बिफरती हुई बोली–'माई दूसरी रोटी मांगने पर झिड़कती है। यही थिगलियों वाली धोती पहनाती है......' कहने के साथ ही उसने अपना बदरंग आंचल फैला दिया। 'वह, वह, पैंठ से फूलदार साड़ी लायेगा और कहता था, दो-एक महीने में सयानी भी कर देगा।'

मैंने दशहत-भरी दृष्टि उठायी। सामने बड़ी-छोटी ढेर-सी रंगीन थिगलियों वाला एक मासूम आंचल फैला था ...... और उसकी दृष्टि का नीलाकाश सपाट था–बेहद सपाट–उसमें कहीं किसी इंद्रधनुष की संभावना नहीं थी।

–द्वारा, आर. के. लाल,
ग्लैक्सो लेबोरेटरीज, दूसरी पोखरन लेन,
थाना, महाराष्ट्र

★

सेक्स-अपील का उपयोग मक्खियां मारने में भी अब होगा। टेक्सास (अमरीका) की एक कीटाणुनाशी कंपनी ने एक दानेदार सुगंधित मक्खीमार दवा बनायी है। इसकी गंध वैसी ही होती है, जैसी कि संभोगोत्सुक मादा मक्खी में से निकलती है। इस गंध से आकृष्ट होकर नर मक्खियां दवा के पास आकर बैठ जाती हैं और दवा को खाती हैं। नर मक्खियों को वहां बैठे देखकर मादा मक्खियां भी वहां चली आती हैं और खुद भी दवा खाने लगती हैं। इस तरह नर-मादा एक साथ परलोक को सिधारते हैं।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : शरद कांबली

संलाप के मध्य

कुछ याद नहीं आयेगा तुम्हारे नाम पर
न प्रवंचना, न अपमान, न मान,
न अभिमान: कुछ नहीं याद आयेगा जो मौसम
को तलाशे; हवा को सूंघे; फूल
मसले :
कुछ नहीं बांधेगा तुम्हें मेरे पास
न आस्कर वाइल्ड के किस्से, न तानाशाही
दंभ : तुम्हारा नाम
किसी जगह नहीं अटकेगा,
मुझ तक पहुंचेगा तुम्हारा आकार और गुण
हो जायेगा : तादात्म्य !

—सोना गुलाटी
९/२ दक्षिण पटेल नगर, नयी दिल्ली-८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलाकात एक सुखी आदमी से

मालकम मैक्डानल्ड

सब वीर विश्वप्रसिद्ध नहीं होते। कई तो नितांत विनम्र, अप्रसिद्ध नागरिक होते हैं, जिनसे हमारा सामना कभी भी कहीं भी हो सकता है। आपको ऐसे ही एक व्यक्ति का हाल सुनाऊंगा, जिनसे मेरी मुलाकात हुई और जिन्हें मैं एक महान गुण 'औदार्य' की जीवंत प्रतिमा मानता हूं।

वे सज्जन चीनी थे और नाम उनका अजीब-सा था—'पोंग'। उनसे मुलाकात होने से पहले मुझे उनके बारे में इतना ही पता था कि वे दक्षिण-पूर्व एशिया के सबसे बड़े धनियों में से एक हैं। अपार धन कमाया था उन्होंने खान, बैंक, जहाजरानी और व्यापार आदि कितने ही कारोबारों में। उनका नाम सुनते ही मेरी आंखों के सामने तस्वीर उभर आती थी—महलों के सुख-वैभव में जीने वाले, सुवेशधारी परिष्कृत मनुष्य की।

मैं उनसे मिलने गया। उनका घर विशाल था, उसका प्रवेश-द्वार शानदार था। जिस बैठक में मुझे ले जाया गया, वह भी विशाल ही थी; मगर उसमें कुछ भी फर्नीचर नहीं था और न कोई सजावटी सामान था। मैंने सोचा कि शायद बैठक को नये सिरे से सजाया जा रहा है और नौकरों ने सब सजावटी चीजें हटा दी हैं।

एक बूढ़े आदमी ने मुझे एक कोने में पड़े एकमात्र सोफे पर ले जाकर बैठाया। स्पष्ट ही वह कोई नौकर था, जो मुझे दो क्षण बातचीत में व्यस्त रखना चाहता था, जब तक उसका मालिक हमें न बुलाये। वह फटे-पुराने कपड़े पहने हुए था और ऐसा लगता था, जैसे उसे भरपेट खाना न मिलता हो। अपने बालों को तो जैसे उसने महीनों से कंघी नहीं छुआयी थी।

मैं उससे मौसम के बारे में बात करता रहा और उन दिनों के दो-तीन चर्चित किस्सों के बारे में भी। अब मेरे पास उसके साथ बतियाने के लिए कोई विषय नहीं रह गया था और मैं सोचने लगा था कि सुप्रसिद्ध मि. पोंग से कब मिलाया जायेगा मुझे।

मैंने कहा—'मि. पोंग तो हरदम काम में डूबे रहते होंगे—इतना जबर्दस्त है उनका कारोबार।'

'नहीं तो!' मेरे साथी ने उत्तर दिया। उसकी आंखों में विनोद की चमक थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'उन्हें फुरसत की कोई कमी नहीं । मैं ही मि. पोंग हूं ।'

मैं हैरान कि क्या यह अस्तव्यस्त बातूनी बूढ़ा, जिसके पास दस रुपये होंगे यह भी विश्वास नहीं होता, करोड़पति पोंग है ! हम दोनों ही हंस पड़े । फिर मुझे पता चला कि वे अपना पैसा कैसे खर्च करते हैं।

बाद में मैं उन चीजों को देखने गया, जिनकी स्थापना उन्होंने की थी और जिनका संचालन उनके पैसे से हो रहा था—गरीब बच्चों के लिए नर्सरी स्कूल, असहाय बूढ़ों के लिए निवास-गृह, अस्पतालों में बड़े-बड़े वार्ड और अपने पूर्वजों के नाम एक मंदिर। जिस आरामदेह फर्नीचर, परदे आदि का मि. पोंग के घर में अभाव था, वे

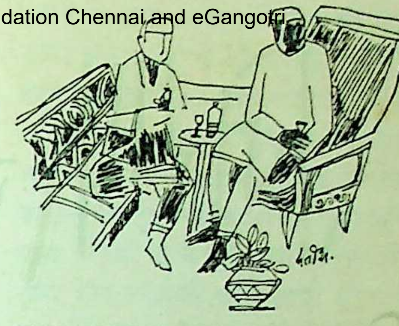

चित्र : सतीश चव्हाण

सब यहां मौजूद थे । मगर मि. पोंग यह सब उपकार कर रहे हैं, यह दूसरों को बताने की छूट किसी को नहीं थी।

निर्लिप्त दानियों के सरताज थे वे, और निहायत चिंतामुक्त और आनंदी स्वभाव के आदमी भी ।

★

बात उन्नीसवीं शताब्दी की है । बंगाल के मेदिनीपुर जिले के बीरसिंह नामक गांव के एक मकान में एक बेटा अपनी मां की सेवा कर रहा था। सहसा उसने मां से कहा—'मां; मेरी इच्छा है कि तुम्हारे लिए कुछ गहने बनवाऊं ।'

मां ने कहा—'बेटा, बहुत दिनों से मुझे तीन गहनों की चाह है।'

'कौन-से गहने चाहिये, मां ?' बेटे ने उत्सुकतापूर्वक पूछा।

मां बोली—'बेटा, इस गांव में अच्छा स्कूल नहीं है; एक अच्छे विद्यालय की स्थापना करवा दो । दवाखाने की कमी है; एक दवाखाना खुलवा दो। गरीब एवं अनाथ बच्चों के रहने व खाने के लिए कुछ व्यवस्था कर दो । यही मेरे लिए गहनों के समान हैं।'

बेटे की आंखों से आंसू बह निकले और वह मां के चरणों में गिर पड़ा । बाद में बेटे ने मां के वचनों को पूर्ण करने के लिए जी-तोड़ प्रयत्न किया ।

वह असाधारण मां थी भगवतीदेवी और वह बेटा था महान पं. ईश्वरचंद्र विद्यासागर । बीरसिंह गांव में विद्यासागर का स्थापित किया हुआ 'भगवती विद्यालय' आज भी उन अमूल्य गहनों की गाथा सुना रहा है । हाल में बंगाल सरकार ने मेदिनीपुर जिले में विद्यासागर की स्मृति में विश्वविद्यालय स्थापित करने का निश्चय किया है।

—सुरेंद्र श्रीवास्तव

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

• सुरजीत •

जिराफ जंगल का लंबू

जिराफ अफ्रीका महाद्वीप का अपना खास जीव है—ठीक वैसे ही जैसे कंगारू आस्ट्रेलिया का। उसकी गणना संसार के चार विशालतम जीवों में की जाती है और ऊंचाई में तो वह सर्वोपरि है। उसे यह रुतबा मिला है विशेषत: उसकी गरदन के कारण। युवा और वयस्क नर जिराफ की गरदन १०-११ फुट लंबी होती है, पर केवल सात कशेरुकाओं के जोड़ से बनी होती है। उसकी अगली दो टांगें पिछली टांगों की अपेक्षा अधिक लंबी होती हैं। इस कारण उसका कद और भी ऊंचा दिखाई देता है। इस शानदार शक्तिशाली जानवर का वजन ४२ मन से लेकर ६० मन तक होता है। मादा जिराफ आकार और वजन में नर से हल्की पड़ती है। सामान्यत: वह १५-१६ फुट ऊंची होती है।

जिराफ का जबड़ा प्रकृति ने विशेष प्रकार का बनाया है। उसके ओंठ लंबे-लंबे होते हैं। इन ओंठों पर घने बाल उगते हैं, जो उन्हें बबूल के कांटों से जख्मी होने से सुरक्षित रखते हैं। (बबूल जिराफ का प्रिय भोजन है।) निचले ओंठ की अपेक्षा ऊपरी ओंठ आगे को बढ़ा होता है। जीभ खुरदरी और डेढ़ फुट तक लंबी होती है। उसकी सहा[यता] से जिराफ झाड़ियों की पतली-प[तली] टहनियां और पत्ते नोचकर खाता है।

नर और मादा दोनों के सिर पर छोटे-छोटे सींग होते हैं, जो चमड़े से [ढके] होते हैं। इनके अलावा एक तीसरा छोटा सींग उनके माथे के ठीक बीच में होता है, जो उभार के रूप में दिखाई देता है। कई जिराफों के सींगों के पीछे एक जोड़ा अतिरिक्त सींग भी होते हैं, जिससे [वे] पांच सींगों वाले बन जाते हैं।

जिराफ का खुर एक फुट लंबा होता और उसके बीच में दरार होती है, जि[सके] कारण वह कठोर भूमि पर चल-फिर स[कता] है। असल में उसकी लंबी-लंबी टांगें द[ल]दली मैदानों या नरम धरती पर च[लने] लायक नहीं होतीं। वह मामूली दल[दल] और नदियों को पार नहीं कर सकता और गिर पड़ता है। मगर सख्त खुरों वाली टांगें उसका हथियार हैं। वह एक-एक [ओर] की दोनों टांगें एक साथ उठाकर च[लता] दौड़ता है। उसकी चाल प्रति घंटा ३० मी[ल]

अ[गले पृष्ठ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तक की होती है।

आजकल अफ्रीका का सहारा के दक्षिण का घास व झाड़ियों का इलाका जिराफ का घर है; किंतु जीव-विज्ञानियों के अनुसंधान के अनुसार उसके पूर्वजों का असली देश यूरोप और एशिया था। लाखों वर्षों के अरसे में भूमंडल पर हुई प्राकृतिक उथल-पुथल के कारण अब यह जानवर अफ्रीका में सीमित होकर रह गया है। वे यह भी बताते हैं कि जिराफ कोई बहुत पुराना जानवर नहीं है; उसे अस्तित्व में आये केवल डेढ़ करोड़ वर्ष हुए हैं। कद में ऊंट का बड़ा भाई लगने पर भी यह ऊंट का दूर का भी रिश्तेदार नहीं है। बल्कि इसका रिश्तेदार है ओकापी, जो केवल मध्य अफ्रीका के जंगलों में मिलता है।

अफ्रीका का आदिम मानव जिराफ का बहुत शिकार करता था। वह इसका मांस खाता और खाल ओढ़ने-बिछाने व वेशभूषा बनाने के काम लाता। जिराफ की खाल मुटाई में एक इंच से अधिक होती है और बेहद मजबूत भी। प्राचीन काल के अफ्रीकी कबीले उसकी खालों से घोड़े की बागें, कोड़े और युद्ध में उपयोग होने वाली ढालें आदि बहुत-सी वस्तुएं बनाते थे; और उसकी बड़ी-बड़ी हड्डियों से बरतन बनाये जाते थे। नसों और स्नायुओं को रस्सियों की तरह काम में लाया जाता था और धनुषों पर उन्हीं की बटी हुई डोर चढ़ायी जाती थी। उसकी बारीक रगें सुखाकर तंतुवाद्यों में लगायी जाती थीं और खूब बजती थीं।

कभी जिराफों का अफ्रीका के घास और झाड़-झंखाड़ वाले प्रदेशों पर साम्राज्य था। मगर अब उनकी संख्या तेजी से कम होती जा रही है। इसलिए उनके शिकार पर कठोर प्रतिबंध है। फिर भी जिराफ किसी न किसी दुर्घटना के कारण मरता ही है। केन्या देश में जिन दिनों टेलिग्राफ की छह

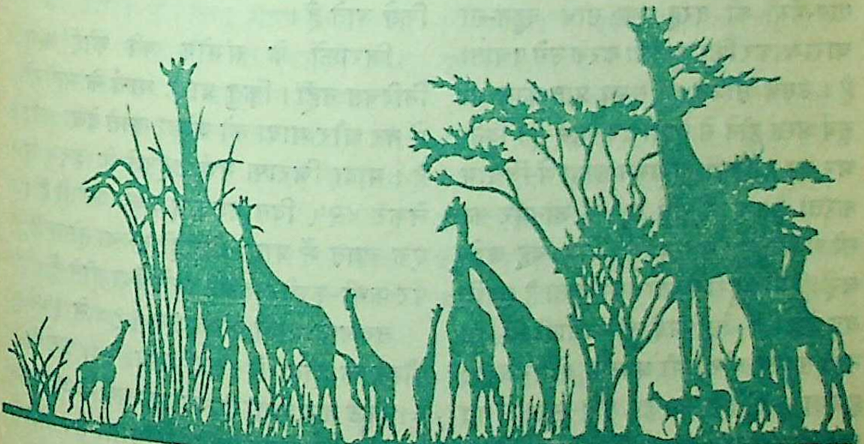

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौ मील लंबी तारलाइन लगायी जा रही थी, बहुत-से जिराफ उसमें उलझकर मर गये। आखिर लाखों रुपये खर्च करके दुबारा तार लगवाये गये और उसकी ऊंचाई तीस फुट तक रखी गयी।

सहारा की पहाड़ी चट्टानों पर अंकित प्राचीन चित्रों से पता चलता है कि कभी वहां भी जिराफ का अस्तित्व था। तब सहारा आज की तरह रेगिस्तान नहीं था। अब भी सुडान से लेकर आरेंज दरिया तक और अंगोला से लेकर नाइजीरिया तक के विशाल इलाके में जिराफ मिलता है। हां, घने जंगलों, दलदली मैदानों और नरम जमीन से वह दूर ही रहता है। नदियां उसके लिए अलंघनीय हैं। उसे वे मैदान आकर्षित करते हैं, जिनमें मीलों तक बबूल की कांटेदार झाड़ियां उगी हों, जिन्हें वह खड़े-खड़े आराम से चर सकें।

जिराफ शाकाहारी जानवर है और गाय-भैंसों की तरह एक साथ बहुत-सा चारा खाकर फिर जुगाली करके उसे पचाता है। उसके भोजन का समय प्रातःकाल या सूर्य अस्त होने से थोड़ी देर पहले है। दिन-भर वह झाड़ियों की सघन छाया में विश्राम करता है। इतन लंबे कद के जानवर का सोना भी एक समस्या है। प्रायः वह खड़े-खड़े ही नींद पूरी करता देखा जाता है। यदि वह लेट या बैठ जाये तो आसानी से उठ नहीं सकता और उसी अवस्था में शेर प्रायः हमला कर देता है। हां, यदि सुरक्षा का पूरा आश्वासन हो, तो वह लेटकर भी सोता है। तब वह अपनी गरदन मो सिर पिछली टांगों पर रख लेता है।

जिराफ अकेला बाहर नहीं निक प्रायः वह टोली के साथ रहता है। टो पांच से लेकर बीस तक जिराफ होते हां, बहुत बूढ़े जिराफ जवान जिरा साथ नहीं रहते; वे अकेले ही किसी के नीचे आराम करते हैं। पुराने वि से पता चलता है कि उनकी टोलियों में दो सौ तक सदस्य हुआ करते थे। अ कभी-कभी काफी बड़ी टोलियां दि दे जाती हैं। गत वर्ष नाइजीरिया में जिराफों की एक टोली देखी गयी, जि कुछ दिनों के अंदर-अंदर मीलों फैली बबूल की झाड़ियां साफ कर डालीं। हाथियों की तरह उन्हें भी विचरने के बहुत बड़ा प्रदेश चाहिये। टोली का दार सदा कोई अनुभवी और आयु में जिराफ होता है। सब कार्य उसके संकेत किये जाते हैं।

जिराफों के संभोग की कोई निश्चित नहीं। किंतु प्रायः मार्च के मही में नर और मादा को जोड़ा खाते देखा है। मादा जिराफ गर्भ ठहरने के ३९ लेकर ४२५ दिन पश्चात् बच्चे जनती है एक ब्यात में प्रायः एक ही बच्चा होता है पर कभी-कभी जुड़वां बच्चे पैदा होते हैं।

नवजात बच्चे का वजन ११० से पौंड तक होता है। कद प्रायः ५।। फुट ६।। फुट तक होता है, जो एक वर्ष के अंदर अंदर ११।। फुट तक पहुंच जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

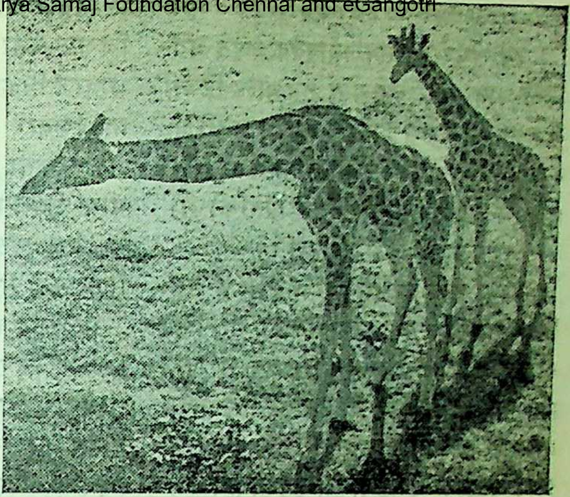

होने के बीस मिनट बाद ही बच्चा मां के थनों से दूध पीने लगता है और दो घंटे बाद उसके पीछे-पीछे चलने लगता है। आरंभिक दिनों में वह हर समय मां के साथ रहता है। नौ महीने तक वह मां के दूध पर पलता है। अब उसका कद इतना ऊंचा हो जाता है कि वह झाड़ियों की टहनियां स्वयं तोड़ सके, सो वह मां का दूध छोड़कर शाकाहार शुरू कर देता है।

बच्चा जब तक वयस्क न हो जाये, मां और बाप दोनों उसकी कड़ी देखभाल और रक्षा करते हैं। बात यह है कि जंगल के मांसाहारी जानवर इन बच्चों की ताक में लगे रहते हैं और अवसर पाते ही उन्हें चीरकर खा डालते हैं। किंतु माता-पिता की उपस्थिति में अन्य जीव तो क्या, शेर भी उनके पास फटकने का साहस नहीं करता; क्योंकि उसे पता रहता है कि जिराफ की एक दुलत्ती ही उसे मार डालने के लिए काफी है।

जिराफ की टांग सात फुट लंबी होती है और उससे वह बड़ी फुर्ती से हर दिशा में दुलत्तियां झाड़ सकता है। उसकी चोट बहुत घातक होती है। शेर जिराफ पर उसी समय हमला करता है, जब वह सख्त भूखा होता है। हमले का सर्वोत्तम समय वह होता है, जब जिराफ अपनी टांगें चौड़ी करके लंबी गरदन झुकाकर पानी पीने में मग्न हो।

जिराफ की आयु पंद्रह या अधिक से अधिक बीस वर्ष तक होती है। कई जिराफ इस सीमा को लांघ भी जाते हैं। लंदन के चिड़ियाघर में एक जिराफ अट्ठाईस वर्ष तक जिया था।

कई बार किसी मादा जिराफ की खातिर दो नर जिराफों में द्वंद्वयुद्ध छिड़ जाता है। दोनों आमने-सामने खड़े होकर एक दूसरे की गरदन में गरदन फंसाकर लड़ते हैं। दोनों अपने छोटे सींगों का भरपूर उपयोग करते हैं, जिनकी चोट बड़ी करारी होती है। जब तक एक योद्धा जख्मी होकर निढाल न हो जाये, युद्ध जारी रहता है। टोली के बाकी सदस्य मजे से खड़े-खड़े तमाशा देखा करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

०००००००००००००००००००००००००

जब अमरीका सफलतापूर्वक अपने अंतरिक्ष-यान उड़ाने लग गया, तब वाल्ट डिज्नी ने कहा था—'रूस द्वारा सर्वप्रथम अंतरिक्ष-यान के उड़ाये जाने से बहुत पहले मैंने इस क्षेत्र में डा. वान ब्राउन की सहायता की थी।'

'वह कैसे ?' किसी ने पूछा।

'मैंने उनके सहयोग से १९५४ में अंतरिक्ष-संबंधी एक फिल्म बनायी थी, जिसे लाखों लोगों ने देखा। मगर तब मुश्किल यह थी कि दर्शकों ने उसे फिल्मी चीज समझा और विश्वास नहीं किया कि सचमुच अंतरिक्ष में पहुंचा जा सकता है।'

०००००००००००००००००००००००००

स्वभाव से बड़ा शंकालु जानवर होता है जिराफ। पानी के निकट जाते समय उसकी होशियारी और चतुरता दर्शनीय होती है। पहले वह चारों ओर खूब ध्यान से देखता है और पूरा संतोष कर लेने के बाद चारों टांगें चौड़ी करके खड़ा होता है और अपनी लंबी गरदन झुकाकर पानी पीता है। जरा-सी आहट सुनते ही वह सचेत हो जाता है। वह बड़ी नदियों के पास नहीं फटकता, अपितु मामूली नदियों और पानी के सूराखों से, जो जंगल में जगह-जगह मिलते हैं, पानी पीता है। सप्ताह में वह लगभग दो गैलन पानी पीता है। खुश्क प्रदेशों में जिराफ कई-कई सप्ताह बिना पानी पिये बिता देते हैं। जो घास-पात या बबूल की टहनियां वे खाते हैं, उन्हीं में से आवश्यकतानुसार तरलता प्राप्त कर लेते हैं।

लंबे अरसे तक यह समझा जाता [illegible] जिराफ गूंगा होता है; क्योंकि उसे [illegible] आवाज निकालते नहीं देखा गया था। [illegible] यह विचार गलत सिद्ध हो चुका है। [illegible] आवश्यकता के समय आवाज करता [illegible] मादा जिराफ अपने बच्चे को आवाज [illegible] के लिए कंठ से तरह-तरह की आ[illegible] निकालती सुनी गयी है।

जिराफ की मुख्यत: दो उपजातियां [illegible] एक है जिराफा कैमेलियो पार्डेलिस [illegible] धब्बेदार होता है; यह ज्यादा आम [illegible] दूसरा है जिराफा रेटिक्युलेटा या [illegible] जिराफ, जिसके चकत्तों का पैटर्न ऐसा [illegible] है, जैसे उस पर जाली मढ़ दी गयी [illegible] इन दोनों उपजातियों की कुल मि[illegible] कोई बारह किस्में अफ्रीका में आज [illegible] मिलती हैं।

जिराफ शब्द अरबी के 'जराफा' [illegible] से बना है, जिसका अर्थ है तेज चलने वा[illegible] जिराफ को ४६ ई. पू. में जूलियस [illegible] पहले पहल यूरोप ले गया था। रोमनों [illegible] इस जीव का नाम 'कामेलो पार्डालिस' [illegible] जिस पर से बना 'कैमेलोपार्ड' शब्द [illegible] भी अंग्रेजी में है।

मध्य प्रदेश के कुछ शैलाश्रयों में [illegible] ऊंची गरदन और लंबी टांगों वाले एक [illegible] के चित्र देखकर यह प्रश्न उठाया गया था [illegible] क्या भारत में भी कभी जिराफ थे। [illegible] अब यह सिद्ध हो चुका है कि ये चित्र जि[illegible] के नहीं हैं।

—३४-सी, सुदर्शन [illegible]
मोतीनगर, नयी दिल्ली-११०[illegible]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा. महेंद्र भानावत

रक्षा-बंधन का प्रतीक

सरवण

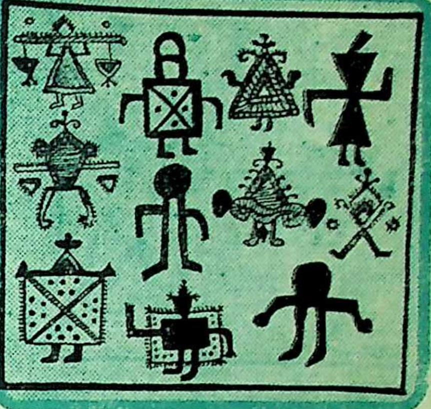

भाई-बहनों की कोमल एवं कमनीय स्नेह-भावना का प्रतीक रक्षाबंधन का त्योहार देश में विशेष उत्साह और उल्लास के साथ मनाया जाता है। अनेक प्रदेशों में इस पर्व का संबंध श्रवण के साथ जुड़ गया है। घरों के बाहर दरवाजे के दोनों ओर थोड़ी ऊंचाई पर सरवण के भांति-भांति के थापे कोरे जाते हैं। ये थापे कहीं गेरू से, कहीं कुंकुम से, कहीं मेहंदी से तो कहीं विविध रंगों से बनाये जाते हैं। राजस्थान के विविध अंचलों से मैंने सरवण के प्रतीकात्मक चित्रों के तीस-चालीस प्रकार एकत्र किये हैं। इनमें से कुछ यहां दिये जा रहे हैं।

सरवण के पाठे भी इस पर्व के दिन बाजारों, गांवों में चितेरों से मिल जाते हैं। इनमें सरवण को अपने अंधे माता-पिता को कांवर में बैठाकर तीर्थयात्रा पर ले जाते हुए बताया जाता है। छोटी-छोटी लड़कियां भी सरवण मांड़ने को ललक पड़ती हैं। इन पाठों-थापों पर चावल, कुंकुम, रुई तथा राखी लगाकर सरवण की पूजा की जाती है।

सरवण-विषयक कई गीतगाथाएं प्रचलित हैं, जिन्हें गाकर मंगणियार स्त्री-पुरुष अपनी उदर-पूर्ति करते हैं। इनमें अपने माता-पिता के प्रति सरवण का भक्तिभाव, माता-पिता का पुत्र-वात्सल्य, स्त्री-स्वार्थ, निरपराध का मरण तथा घोर मृत्युशोक से उत्पीड़ित शाप के भावों का निरूपण होता है। सरवण की लोककथा वाल्मीकि रामायण की श्रवण-कथा से थोड़ी भिन्न है। संक्षिप्त रूप में वह इस प्रकार है:

सरवण का अपने माता-पिता के प्रति भक्तिभाव उसकी पत्नी को असह्य था। एक दिन उसने कुम्हार से दो खंड वाली हंडिया बनवायी। वह उसके एक खंड में बढ़िया खीर तथा दूसरे में खट्टे मट्ठे की महेरी बनाती थी। सरवण को खाने को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

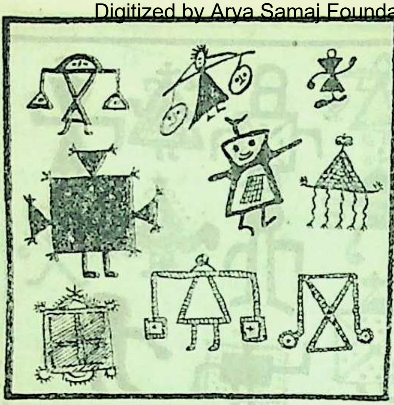

खीर तथा सास-ससुर को महेरी दी जाती। एक दिन सरवण को इसका पता लगा, तो वह बहुत नाराज हुआ; पर पत्नी ने उसकी नाराजगी की परवाह न करते हुए कहा कि अंधे मां-बाप को कहीं कुएं में डालकर मेरे मायके चलकर सुखपूर्वक जीवनयापन करो। सरवण को इस पर बहुत गुस्सा आया और वह यह कहकर कि तेरे मायके को आग लगे, अपने माता-पिता को कांवर में बैठाकर तीर्थाटन के लिए चल दिया।

एक बार रास्ते में उन्हें प्यास लगी, तो वह नदी से पानी भरने गया। शिकार के लिए आते हुए राजा दशरथ ने पानी भरने की गुड़गुड़ आवाज सुनकर शब्दवेधी बाण मारा, जो सरवण के आ लगा। सरवण गिरा और दशरथ को अपने माता-पिता को पानी पिलाने की बात कहकर उसने प्र[ाण] त्याग दिये। दशरथ पानी लेकर पहुं[चे] सरवण को न पाकर बूढ़े अंधदंपति ने [...] दशरथ को शाप दिया कि जिस तरह [...] हम अपने पुत्र के वियोग में व्याकुल हैं, [उसी] तरह एक दिन तुम भी पुत्र-वियोग में प्र[ाण] त्यागोगे। थोड़े हेरफेर के साथ यही क[था] भारत के कई अंचलों में सुनने को मिलती है। सरवण के साथ कहीं-कहीं नारियल, [...] राखी, सातिया आदि की आकृतियां बना[कर] भी पूजी जाती हैं।

रक्षाबंधन पर भाई-बहन लड्डू में [...] रखते हैं। गोवर्धन-पूजा पर यही राखी [...] के लड्डू में रखकर पूजी जाती है। वह [...] होली के साथ जलाया जाता है। कहीं [...] राखी-होली दोनों बहनें हैं तथा गोव[र्धन] उनका भाई है। लड़कियों व स्त्रियों के [...] यह नकटे त्योहार के रूप में भी प्रच[लित] रहा है, क्योंकि इस दिन उन्हें बिना नि[मं]त्रण के अपने भाई के यहां राखी बांधने [...] पड़ता है।

सरवण लोकजीवन में सुशील [...] सेवाभावी पुत्र के रूप में प्रशंसित है। [...] पुत्रों को माताएं 'सरवण पूत' कह[कर] उनकी प्रशंसा करती हैं।

—भारतीय लोककला मंडल, उद[यपुर]

★

आत्मा का विस्तार ही संगीत पैदा करता है। आत्मा प्रतिकूल ध्रुवों के आकर्ष[ण से] विस्तार पाती है। ये ध्रुव हैं—प्रतिकूल प्रवृत्तियां, रुचियां, आकांक्षाएं और अभीप्साएं। [जहां] दो ध्रुव नहीं हैं और ऊर्जा एक ही दिशा में सुगमता से प्रवाहित होती जाती है, वहां शो[र-] शराबा चाहे कितना ही हो, संगीत-लहरी का अस्तित्व नहीं हो सकता। —एरिक हा[...]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

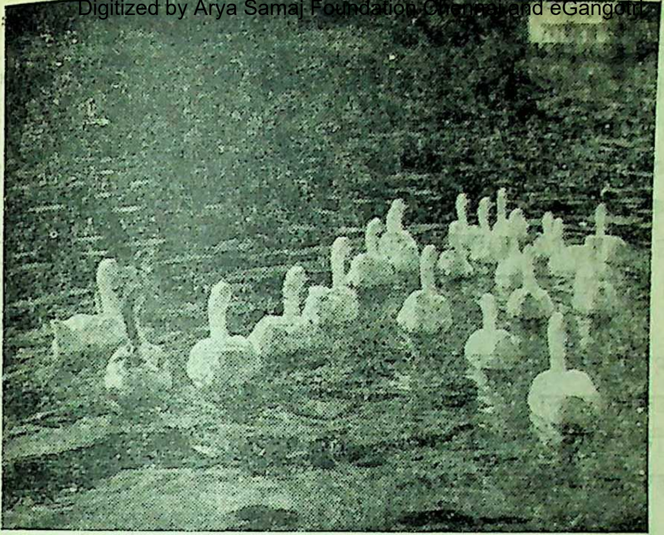

फोटो : दत्त डी. आनंद

धूप का गीत

धूप की तलाश, धुंध के वितान !
छिप गया शहर, खो गये मकान !!

टिमटिमा चुके, जुगनुई दिये ।
छपे हुए पन्नों के बीच हाशिये ।।
प्राची के ओंठ, रचा हुआ पान !

फूल में घुली, संदली सुगंध ।
गंगा की लहरों में, किरनों के छंद ।।
खोजता शिकार, बगुले का ध्यान !

सेमल के फूल, या कोमल धूप ।
दर्पण में ओस के सतरंगी रूप ।।
खोल रही भोर चाय की दुकान !
धूप की तलाश, धुंध के वितान !!

–गोपाल चतुर्वेदी–
मंडल कार्मिक अधिकारी, पूर्वोत्तर रेल्वे, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध के बाद 'इंडस्ट्रियल कार्पोरेशन' नामक उस संस्थान का स्वामित्व यूरोपीय व्यापारियों के हाथ में आ गया और उसका नाम बदलकर न्यू एंटरप्राइज कंपनी रख दिया गया। इन व्यापारियों का वेस्ट इंडीज में कई स्थानों पर काम चल रहा था। पचास हजार की रकम लगाकर नये मालिकों ने संस्थान की इमारत नयी जैसी बना दी।

जब इमारत की रंगाई-पुताई हो रही थी और फर्नीचर बदला जा रहा था, तब भी कर्मचारियों को इस बात की भनक तक न थी कि कंपनी का हस्तांतरण हो गया है।

* सेम्युअल सेल्वन *

अनुवाद : अटवाल रसूलपुरी

उन्हें महसूस हो रहा था कि इस नवी- करण की बड़ी आवश्यकता थी। उन्हें नयी मेज-कुर्सियों पर बैठकर उन्हें अजब कर देखा। कुछ में तो इस बात पर झ भी हो गयी कि फलां कुर्सी, फलां मेज कि मिलनी चाहिये।

जब सब-कुछ नये-जैसा हो गया और अपने काम में नये उत्साह तथा इस से जुट रहे थे कि वे वातावरण को संभव ऐसा ही रखने का प्र करेंगे, तभी उनके बॉस जोन्स ने एक शाम सभी कर्म चारियों को एकत्र किया कहा :

'मुझे अफसोस है कि आपको पहले सूचित न कर ......नये मालिकों के साथ कुछ व्यवस्था हुई है..... स्ट्रियल कार्पोरेशन यों भी होने जा रहा था। मुझे आ थी कि कुछ कर्मचारियों नयी व्यवस्था में खपाया सकेगा। परंतु दुःख है कि नहीं हो सका। सभी की सेवा समाप्त की जा रही हैं।'

उस समय दफ्तर में कर्मचारी थे, जो कि वेस्ट इंडी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नये मालिक

के मूल निवासी थे। इसके अतिरिक्त एक अधेड़ अवस्था का, इमारत के रख-रखाव की देखभाल करने वाला केयर-टेकर था, जिसके एक ही टांग थी। पारिया की खाड़ी में मित्रों के साथ मछली पकड़ते समय उसकी एक टांग को शार्क ने काट लिया था।

चार टाइपिस्ट युवतियां, छह क्लर्क—इन दस कर्मचारियों ने मजदूर-संघ जैसी किसी संस्था की सदस्यता प्राप्त करने के बारे में कभी सोचा तक न था। उनका विचार था कि वे गरीब संघर्षरत मजदूरों की श्रेणी में नहीं आते। जो हुआ, उस पर बड़बड़ाने के सिवा वे कुछ न कर सके। उनमें से एक ने स्थानीय समाचारपत्र के संपादक से संपर्क किया और पूरी कहानी बताते हुए इस मामले में उसकी सहायता मांगी। संपादक ने आश्वासन दिया। अगले दिन एक संवाददाता ने मि. जोन्स से साक्षात्कार किया। दूसरी सुबह समाचारपत्र में एक छोटा-सा समाचार छपा, जिसमें बतलाया गया कि इंडस्ट्रियल कार्पोरेशन एक समृद्ध यूरोपीय संस्थान द्वारा ले लिया गया है तथा इसमें संदेह नहीं कि इस व्यवस्था से उपनिवेश को लाभ पहुंचेगा, क्योंकि इससे नये उद्योग खुलेंगे।

दो सप्ताह के उपरांत वे दस कर्मचारी दफ्तर से निकल गये। बाकी रह गये मि. जोन्स तथा एक टांग वाला केयर-टेकर गसी। गसी जोन्स से मिला और बोला—'सा'ब, आप जानते हैं, मैं इतने वर्षों से इस कंपनी में हूं। मैं एक गरीब आदमी हूं सा'ब, और मेरी मां मुझ पर आश्रित है। और मुझे किसी दूसरी जगह काम भी नहीं मिल सकता। सा'ब मेहरबानी कीजिये। नये मालिकों से मुझ लंगड़े के बारे में आप सिफारिश कर दें कि वे मुझे निकालें नहीं। मेरा काम खास नहीं है, बस सिर्फ यह देखना है कि सब-कुछ अपने स्थान पर ठीक-ठाक रहे।......मेरे लिए कुछ करिये सा'ब; मैं आपका एहसान जीवन-भर नहीं भूलूंगा।'

गसी को लंबी प्रार्थना बुदबुदाते सुन मि. जोन्स ने आश्वासन दिया कि देखूंगा कि तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूं।

सप्ताह-भर में नया स्टाफ आ गया। गसी स्टोररूम के दरवाजे के पीछे छिपकर दरवाजे की फांक में से झांककर देखने लगा। इतने सब नये लोगों का एक साथ सामना करने से वह डर रहा था। नये स्टाफ में सभी गोरे थे। यह देखकर वह घबरा गया। क्या ये सभी मालिक हैं? औरतें भी?

बाद में जब वह यथासंभव बिना आवाज किये स्टोररूम की सफाई कर रहा था, तो नये स्टाफ में से एक युवक उसके पास आया और मधुरतापूर्वक बोला—'तुम्हीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केयर-टेकर गसी हो ?'

गसी ने झाड़न रख दिया और फुर्ती से बैसाखी बगल में दबाकर किसी सैनिक के समान 'सावधानी की मुद्रा' में खड़ा हो गया।

'हां मालिक, मैं ही केयर-टेकर हूं।'

'मि. ब्लेड तुमसे मिलना चाहते हैं। वे नये मैनेजर हैं, शायद तुम जानते हो?'

'मुझसे ? किस बारे में ? मैं केयर-टेकर का काम करता हूं। मेरा नाम गसी है। मैं बेलमोन्ट में रहता हूं। उम्र पैंतालीस। मेरे बच्चे नहीं हैं। मैं अपनी मां के साथ रहता हूं। मुझे हर शुक्रवार को वेतन मिलता है ......।'

'मैं यह सब जानता हूं।' युवक मुस्कराया–'मैं यहां के स्टाफ का हेड हूं। परंतु मि. ब्लेड तुमसे मिलना चाहते हैं, बस यों ही। बे अपने अधीन काम करने वालों से जान-पहचान करना चाहते हैं।'

गसी की आंखें फैल गयीं और दांत निकल आये–'सो मेरी नौकरी बरकरार है मालिक? आप लोग मुझे निकाल नहीं रहे ?'

'बिलकुल नहीं। आओ, मेरे साथ। मि. ब्लेड बहुत व्यस्त रहते हैं।'

कुछ देर बाद गसी इमारत के पिछवाड़े में अपने काम पर लौटा, तो वह नये मालिक के प्रति प्रशंसा-भाव से भरा हुआ था। वह खुद से ही फुसफुसा रहा था, क्योंकि वहां ऐसा कोई नहीं था, जिससे वह बातें कर सकता।

शाम को घर पहुंचा, तो मां से बोला–'मां ! तुम सोच भी नहीं सकतीं, वे कितने अच्छे हैं ! वे मिस्टर जोन्स से भी अ... हैं। उन्होंने कहा कि जब तुम इतने ... यहां केयर-टेकर हो, तो अब भी रह... हो। वे कितने भले हैं !'

परंतु जैसे-जैसे दिन बीतते गये, ... अपने काम में पहले जैसा खुश न रहा। ... और गोरों से घिरे रहने का वह अभ्य... हो सका। प्रत्येक गोरे को वह मि. ब्ले... समझकर व्यवहार करता था। ... बैसाखियों की खटखट कम से कम क... प्रयत्न करता हुआ वह गराज का ... खोलता या कूलर में पानी भरता था ... काम करता, जो उसे बताये जाते। ... पहले वह बाहर के मुख्य कार्यालय में ... बाहर होता रहता था और कभी कि... बात करता, कभी किसी से मजाक ... हुआ अपने काम में लगा रहता था। ... वह अपने आपको पिछवाड़े तक ही ... रखता था। सुबह वह दफ्तर लगने से ... घंटा पूर्व ही आकर, अन्य कर्मचारि... पहुंचने के पहले ही साफ-सफाई कर ... था। यह सच है कि वे उससे मित्र... व्यवहार करते थे, परंतु गसी इस धार... छुटकारा न पा सका कि वे सबके ... मालिक हैं।

एक सप्ताह में ही वह इस एकां... झेलने में असमर्थ हो गया। एक दि... मुख्य कार्यालय के द्वार तक पहुंच ... गोरे किस प्रकार काम करते हैं, यह ... के लिए उसने अंदर झांकने का साहस ... लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मि. गैरी ने, जिन्होंने कि पहले दिन गसी से बात की थी, उसे देखा और पास बुलाया।

बैसाखियां टेकता हुआ वह उनकी मेज तक गया और जैसे उसकी चोरी पकड़ी गयी हो, इस तरह स्पष्टीकरण में बहुत-कुछ कह गया—'मालिक, मैं तो सिर्फ यह देख रहा था कि सब कुछ ठीक-ठीक है या नहीं, किसी को कुछ चाहिये तो नहीं। इतनी गरमी पड़ रही है, मैं आपके लिए अभी बर्फ ला सकता हूं ......'

मि. गैरी बोले—'सब कुछ ठीक है गसी। तुम जब चाहो दफ्तर में आ-जा सकते हो।' फिर उन्होंने अपनी आवाज धीमी करते हुए कहा—'परंतु तुम्हें बड़े साहब की बीवी का ध्यान रखना होगा। कभी-कभी वे उनसे मिलने अचानक चली आती हैं। वे तुम्हें यहां देखकर खुश नहीं होंगी; क्योंकि...... क्योंकि यहां तुम्हारी उपस्थिति की आशा नहीं की जाती। यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है, समझे?'

'परंतु मालिक, आप निश्चिंत रहें। मैं यहां अब कभी नहीं आऊंगा, जब तक कि आप खुद न बुलायें। मेरा विश्वास कीजिये मालिक ...... !'

जहां तक कि बड़े साहब मि. ब्लेड का प्रश्न था, जैसे ही वे अपनी ब्यूक कार में पहुंचते, गसी पहले से ही हाथ में कपड़ा लिये कार साफ करने के लिए तैयार खड़ा मिलता।

एक बार मि. ब्लेड ने कहा था—'गसी, एक ही टांग रहते भी तुम किसी भी आम आदमी

चित्र : चरन शर्मा

से अधिक काम करते हो।'

'मालिक, यह तो आपकी दया है, एहसान है। दफ्तर साफ रहता है, कूलर में पानी भरा हुआ होता है। दावातों में स्याही भर देता हूं, और जैसा मि. गैरी चाहते हैं, स्टोररूम साफ सजाकर रखता हूं ......।' मि. ब्लेड के कमरे में प्रविष्ट हो जाने के बाद तक गसी बोलता ही रहा।

एक दिन शाम के समय बड़े साहब गराज में से कार निकाल रहे थे। गसी बाहर गेट पकड़े खड़ा था और कार बाहर निकालने के लिए अपनी बैसाखी से अनावश्यक संकेत दे रहा था, जिन्हें मि. ब्लेड देख भी नहीं रहे थे। तभी मि. ब्लेड ने खिड़की में से सिर निकालकर कहा—'भई, तुम्हें वेतन कितना मिलता है?'

'हफ्ते के दस डालर सा'ब! आप बुरा न मानें तो......यह अधिक नहीं है। मेरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : मार्विन पीक

मां मेरे साथ रहती है...... फिर भी काफी है सा'ब, चल रहा है। मैं इससे कम में भी चला सकता हूं, अगर आप समझते हों कि यह ज्यादा है ......'

'मैं तुम्हें और अधिक देने की सोच रहा था। कितनी महंगाई हो गयी है! मैं सोचूंगा। आज बुधवार है......तुम शुक्रवार की सुबह मुझसे मिलना, मैं तुम्हारे लिए कुछ करूंगा।'

धन्यवाद देने के लिए गसी अभी शब्द ही ढूंढ़ रहा था कि मि. ब्लेड की कार जा चुकी थी।

दूसरे दिन दुपहर को बेहद गरमी पड़ रही थी। गसी सुस्ताया हुआ-सा स्टोररूम में एक बक्से पर बैठा था। बाहर द
जाने की तीव्र इच्छा उसके भीतर
शीघ्र ही उसके वेतन में बढ़ोतरी होने
है, इस एहसास से उसे साहस मिला
उठा और बाहर जाकर द्वार के पास
हो गया। उस समय भीतर मि. गैरी
को बता रहे थे, किस प्रकार युद्ध में
वायुयान गिराया गया था।

तभी गसी ने अपने पीछे किसी की
चाप सुनी और वह पलटा। उसे नहीं
था कि ये बड़े साहब की पत्नी हैं;
इससे कोई अंतर न पड़ता। किसी भी
व्यक्ति से वह वैसा ही व्यवहार करत

'मैं तो सिर्फ यह देख रहा था मेम
कि सा'ब लोगों को किसी चीज की ज
तो नहीं। मेमसा'ब, मेरे दिल में.....'

घबराहट में उसके हाथों से बैसाखी
गयी।

तीखी नजरों से उसे देखते हुए वह
वहां से चली गयी।

मि. ब्लेड अपनी घूमने वाली कुर्सी
बैठे समुद्र की ओर ताक रहे थे। बेहद
पड़ रही थी। खिड़की खुली हुई थी;
हवा में कुछ भारीपन था, जैसे गर्मी
उसकी सारी शीतलता हर ली हो।

मि. ब्लेड दयावान व्यक्ति थे। वे
में ही इंग्लैंड से आये थे। उन्हें अपनी
जोरियों का पता था। कभी-कभी वे
से भयातुर हो उठते थे; क्योंकि वे
प्रकृति के व्यक्ति थे। परिस्थितियों
सचाई का सामना करना उनके लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाता था। वे कोई निर्णय नहीं ले पाते थे। जब भी वे उत्तेजित होते या किसी समस्या का समाधान न कर पाते, तब उनकी हथेलियां नम हो जाती थीं।

समुद्र की ओर देखते हुए वे अपने जीवन के विषय में यों ही सोच रहे थे, जब उनकी पत्नी झटके से कमरे में पहुंच गयी।

'ओहो! हैलो! आज तुम अचानक आ गयीं?'

'हर्बर्ट!' उनकी पत्नी की आदत थी कि वे सीधे नुक्ते पर पहुंचकर दूसरों को विचलित कर देती थीं—'मैं तो समझती थी, तुमने सभी देसी आदमियों को निकाल दिया।'

'बिलकुल ठीक। तुम देख सकती हो, यहां सभी यूरोपियन ही हैं।'

'अभी जब मैं भीतर आ रही थी, तो मेरा सामना एक लंगड़े आदमी से हो गया। वह कौन है?'

'वह? ...... वह तो केयर-टेकर है। निश्चय ही तुम उसे स्टाफ में नहीं गिन रही हो?' ब्लेड की आंखें पत्नी से हटती हुई दीवार पर लगे कैलेंडर पर चली गयीं।

'तुम्हें उसे भी निकालना ही होगा। ठीक है?'

'देखो, इस बात पर अभी बहस न करो। इतनी गरमी में मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लग रहा।'

अगली सुबह फिर मि. ब्लेड उसी जगह समुद्र की ओर मुंह किये बैठे थे। वे जानते थे कि वे केयर-टेकर को निकालने जा रहे हैं; परंतु वे यह सोचने का प्रयत्न कर रहे थे कि ऐसा नहीं किया जायेगा। उन्होंने हथेलियों को रूमाल से पोंछा। उनके जीवन में सदा ऐसा ही होता रहा है। उन्हें अनिश्चय के पुराने भय ने आ दबोचा, जिसके कारण उन्हें इंग्लैंड से निकल आना पड़ा था। बेचैनी से उनके ओंठ सूख रहे थे और वे जीभ फेरकर उसे नम कर रहे थे।

उन्होंने कुर्सी घुमायी और दीवार पर लगे कैलेंडर की ओर देखा। कैलेंडर को उन्होंने ऐसे संबोधित किया, जैसे पत्नी से बात कर रहे हों।

'हमें इस तरह बेतुका रुख नहीं अपनाना चाहिये।' उन्होंने दृढ़ आवाज में कैलेंडर से कहा—'तुम ऐसा नहीं कर सकते। बल्कि इस संस्था की प्रतिष्ठा के लिए तो यह उपयुक्त होगा कि यहां एक-आध काला कर्मचारी भी हो। मैं तो समझता हूं कि हमें और बहुत-से ऐसे लोगों को रखना चाहिये ... आखिर वे भी काम उतनी ही अच्छी तरह करते हैं।'

उन्होंने कैलेंडर की ओर व्यंग्य से देखा और फिर कमरे में गसी के प्रतीक के रूप में किसी दूसरी चीज को खोजा। उनकी दृष्टि मेज पर पड़ी 'आउट' की ट्रे पर रुक गयी। 'परिस्थितियां कुछ ऐसी हैं,' उन्होंने ट्रे से कहा—'कि मुझे डर है कि तुम्हें नौकरी से हटा दिया जायेगा। हमें केयर-टेकर की अब कोई आवश्यकता नहीं रही। किसी भी जमादारिन से दफ्तर की सफाई करवा ली जा सकती है। व्यक्तिगत रूप में इस सबमें मेरा कुछ भी हाथ नहीं है। मैं तुम्हें बता दूं यह ...... डाइरेक्टरों का निश्चय है। तुम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ईमानदार तथा परिश्रमी हो, तुम्हें खोकर मुझे बेहद दु:ख होगा, गसी।'

क्षण-भर के लिए मि. ब्लेड सोचते रह गये, क्या ऐसा कुछ नहीं हो सकता, जिससे इस विषय में व्यक्तिगत रूप से कुछ कर सकें—जैसे, प्रति-सप्ताह गुप्त रूप से इसे कुछ रुपये भेज दिये जायें या एकमुश्त कुछ रकम दे दी जाये, जिससे इसके कुछ महीने बिना कठिनाई के बीत जायें?

अगले ही क्षण वे बेमतलब हंस पड़े। हाथ से रूमाल गिर गया। हथेलियां अपने आप ही एक दूसरे को रगड़ने लगीं और उन्हें पसीने की चिपचिपाहट महसूस हुई। उन्होंने कमरे में रखी हर वस्तु से विचार-विमर्श किया, जैसे कि वे उनके साथी हों। कुछ वस्तुओं ने उनका साथ दिया, कुछ ने विरोध किया।

पेंसिल तथा दावात ने कहा—जो कुछ हो रहा है, ठीक है; तुम मूर्ख हो जो चिंता कर रहे हो। कैलेंडर ने कहा—भगवान के लिए इन सबसे जल्द छुटकारा पा लो। परंतु खिड़की, दीवारों तथा टेलिफोन का विचार था कि गसी एक निरीह आदमी है तथा ब्लेड ढुलमुल, सिद्धांतहीन व्यक्ति, जिसे अपनी ही सच्ची भावना का ज्ञान नहीं, जिसे जीने का अधिकार नहीं।

ऐसी बेचैन निश्चयहीनता की अवस्था में मि. ब्लेड ने बटन दबाया। एक अधीनस्थ युवती द्वार धकेलकर भीतर आयी।

'उस केयर-टेकर को—जो हमारे यहां काम करता है—गशर या गसी ...... या ऐसा ही कुछ नाम है ......' जानबूझकर नाम भूलने की नाटकीयता से वे आहत-से हो गये—'उसे मेरे पास भेजो ......'

गसी बुलाये जाने की प्रतीक्षा में ही था। उसने मि. गैरी को बताया था कि किस प्रकार बड़े साहब उसे बुलायेंगे, और इसीलिए वह दफ्तर के निकट खड़ा था, ताकि किसी को उसे खोजने की तकलीफ न करनी पड़े। गसी को इस बात की कल्पना न थी कि उसके वेतन में कितनी वृद्धि हो रही है; परंतु जितनी भी हो, सबसे पहले वह पालिश की एक बोतल खरीदकर बड़े साहब की कार को अनोखी चमक देकर उन्हें चकित कर देगा। उसके बाद ही और कुछ होगा।

एक कोने में खड़ा वह हिसाब लगा रहा था कि तीन महीनों का किराया पेशगी अदा करने के लिए कितने पैसों की जरूरत होगी।

गसी को बुलाने आ रही युवती ने उसे देखकर कहा—'तुम यहां हो! मि. ब्लेड ने तुम्हें बुलाया है, तुम अभी भीतर जाओ।'

'धन्यवाद मेमसा'ब! मैं यहीं था। अभी जाता हूं मालिक के पास।'

बगल में बैसाखियों को दबाते हुए मंद-गति से गसी बड़े साहब के द्वार की ओर बढ़ गया।

★

हास्य का मेल शायद यथार्थ की अपेक्षा पूर्वग्रह से अधिक आसानी से बैठाया जा सकता है।

—एक ईरानी अखबार के संपादकीय में

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

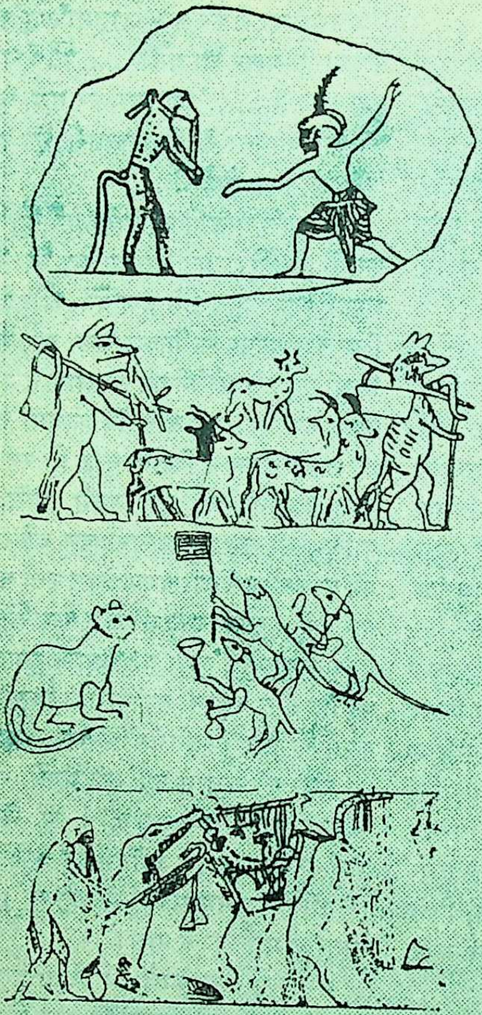

प्राचीनतम व्यंग्य

फिरऊनों के युग के
मिस्र का पर्यटन करने
यूनानी कवियों एवं यात्रि
लगभग एक स्वर से यह
कही है कि मिस्री लोग
'विनोदी, आनंदी एवं व्यंग्
होते हैं। उन्होंने यह भी
कि व्यंग्यचित्रों की कला मि
ने ही आरंभ की। पैपिरस के
टुकड़ों पर बने हुए अनेक प्रा
मिस्री व्यंग्यचित्र आज भी
क्षित हैं।

इन दिलचस्प चित्रों के
सामान्यतः पशु-पक्षी हैं औ
शाब्दिक टिप्पणियों से रहि
इनमें कुछ का उद्देश्य साम
और राजनैतिक है, तो कुछ
महज मनोरंजन। इस पृ
प्रस्तुत हैं ऐसे चार प्राचीन
व्यंग्यचित्र :

१. मदारी को नचाता
बंदर।

२. रेवड़ की रखवाली
ने संभाल ली है। (अब भगवान ही मालिक है रेवड़ का!)

३. आखिरकार चूहों ने बिल्ली के आगे संधि का झंडा फहरा दिया है। वे तो
स्वास्थ्य का जाम पीने को भी तैयार हैं।

४. पशुओं का वाद्यवृंद—तुर्रा यह है कि ये सब पशु एक दूसरे के जन्मजात शत्रु

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[शेष पृष्ठ १२२ का]

होती हुई एक पहाड़ी पर चढ़ती थी और मुख्य सड़क पर पहुंचने से पहले ही एक सशस्त्र अंगरक्षक-दल उसके साथ हो जाता था। क्यूबिस और गैब्सिक ने गांव में जाकर कारों और ड्राइवरों पर नजर रखनी शुरू कर दी। साइकल पर वे सड़कों के चक्कर काटते और हत्या के लिए उपयुक्त स्थान खोजते रहे। उन्होंने पाया कि गांव से ठीक बाहर का स्थान ही सर्वोत्तम है; क्योंकि चढ़ाई शुरू करने से पहले वहां हाइड्रिक की कार कुछ धीमी हो जाती है।

पूरे पांच माह की प्रतीक्षा के बाद १९ मई को लंदन से आदेश आया कि २७ मई को हाइड्रिक की हत्या कर दी जाये। गैब्सिक और क्यूबिस के अलावा वाल्सेक तथा अन्य कई लोग भी इस अभियान से जुड़े थे। उस दिन हाइड्रिक दफ्तर से सीधे बर्लिन जाने वाला था हिटलर से मिलने। घर से चलने में उसे देर हो गयी थी। सो निजी अंगरक्षक लिये बिना ही वह कोठी से रवाना हुआ। कार जब एक ट्राम-स्टाप से जरा दूर थी, वाल्सेक ने इशारा किया। गैब्सिक ने मशीनगन से हाइड्रिक की कार पर गोलियां बरसाने की कोशिश की; मगर मशीनगन जैम हो गयी थी, चली नहीं। तब क्यूबिस ने कार पर हथगोला दे मारा। फिर वे तीनों घटना-स्थल से भाग गये।

परंतु हाइड्रिक की किस्मत अच्छी थी। वह घायल तो हुआ, मगर बच गया। खुद पैदल चलकर वह ट्राम के अड्डे पर पहुंचा, वहां खड़े एक पुलिस वाले से उसने अपने दफ्तर फोन करवाकर हमले की सूचना दी। फिर वह उस राह से गुज़रती हुई एक लारी में लेटकर निकट के अस्पताल पहुंचा। जैसे घायल शेर और खूंख्वार हो जाता है, वैसे ही घायल हाइड्रिक और नृशंस बन गया।

हमलावरों की खोजबीन तेजी से शुरू हो गयी। उस क्षेत्र में रहने वाले हर व्यक्ति को पकड़कर उससे पूछताछ की गयी। उसी

वह मर्सिडीज कार, जिसमें हाइड्रिक पर हमला किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुपहर को फ्रैंक ने हिटलर को टेलिफोन किया। हिटलर इस बात से सख्त नाराज था कि हाइड्रिक पहरेदार साथ लिये बिना घर से निकला ही क्यों ! फोन पर ही उसने फ्रैंक को आदेश दिया कि फौरन तुम हाइड्रिक का कार्यभार संभाल लो; साथ ही यह ताकीद भी कर दी कि बिना पहरेदारों के बाहर मत निकला करो। हमलावरों को पकड़ने वाले को १० लाख मार्क का इनाम देने की घोषणा भी हिटलर ने की।

उस वार्तालाप में फ्रैंक को हिटलर का अंतिम आदेश यह था कि इस हमले से संबंधित हर व्यक्ति को गोली से उड़ा दो और जवाबी कार्रवाई के रूप में १० हजार चेक नागरिकों को पकड़कर मृत्युदंड दे दो।

उस शाम ५ बजे से चेक रेडियो पर बार-बार यह घोषणा दुहरायी जाती रही कि बोहीमिया और मोराविया में तत्काल मार्शल ला लागू कर दिया गया है; हत्या-प्रयत्न में भाग लेने वालों और उनका अता-पता छिपाने वालों को सपरिवार गोली से उड़ा दिया जायेगा।

२८ मई १९४२ को ही जर्मनी के कई मूर्धन्य सुरक्षा-अधिकारी प्राहा पहुंच गये। शहर में रात-भर का कर्फ्यू लगा दिया गया। सेना और पुलिस के सात हजार कर्मचारियों ने उस रात सारे शहर को छान डाला और ५४१ व्यक्तियों को गिरफ्तार किया, जिनमें १११ हवालात में रखे गये। असल में उस रात सारे बोहीमिया और मोराविया में खोजबीन हुई और उसमें ४।। लाख कर्मचारियों ने ३७।। लाख चेकों से ... की और उनमें से १३,११९ को ... किया। उसी रात दो महिलाओं ... लोगों को प्राणदंड दे दिया गया।

परंतु हत्या-प्रयास से संबंधित व्यक्ति हाथ नहीं आया। वे सब ... संत सिरिल और मेथोडियस ... चर्च के तहखाने में छिपे हुए थे। ... अपेक्षाकृत सुरक्षित थे; परंतु यदि ... को पता चल जाये, तो वे बुरी तरह ... भी सकते थे। क्यूबिस और उसके ... जो साइकल, रेनकोट और ब्रीफकेस ... स्थल पर छूट गये थे, गेस्टापो ने उन्हें ... के वेन्सेस्लास चौक में बाटा की ... शोकेस में रखवा दिया, ताकि कोई ... पहचान कर बताये कि वे किसके हैं।

इस बीच ४ जून १९४२ को अस्प... हाइड्रिक की मृत्यु हो गयी। उसके ... विष फैल गया था। पेनिसिलीन ... था नहीं। पुलिस ने जांच और जुल्म ... रखे। २८ मई से ९ जून १९४२ ... १,८०० चेक नागरिक मृत्युदंड के ...

९ जून को बर्लिन में हाइड्रिक ... को सैनिक संमान के साथ दफनाया ... हिटलर, गोयरिंग, हिमलर और फ्रैंक ... यात्रा में शामिल थे। शव-संस्कार ... ही यह फैसला किया गया कि लिडिस ... नष्ट कर दिया जाये।

× × ×

लिडिस के विध्वंस की कहानी की ... बड़े मामूली ढंग से हुई। ३ जून ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्लेनी नामक कस्बे के मेयर और वहां की एक फैक्टरी के संचालक जे. पाला के हाथ एक पत्र लगा, जो फैक्टरी की एक महिला श्रमिक के नाम था। उसने पत्र खोल लिया और पढ़ा। उसमें लिखा था :

'प्रिय एन, इतने विलंब से पत्र लिखने के लिए क्षमाप्रार्थी हूं। और शायद तुम समझ सकोगी, क्योंकि तुम जानती हो, मेरी बहुत-सी परेशानियां हैं। मैं जो करना चाहता था, मैंने कर लिया। उस रात मैं केवर्नी में कहीं सोया था। मैं ठीक हूं। आशा है, इस सप्ताह तुमसे मिल सकूंगा, और फिर हम कभी एक-दूसरे को नहीं देखेंगे। —मिलान।'

इस रहस्यमय पत्र से जे. पाला बुरी तरह डर गया। पत्र उस महिला को सौंपने अथवा नष्ट कर देने के बजाय उसने स्थानीय चेक पुलिस को फोन कर दिया। पुलिस-सिपाही वायबिरल आया, परंतु उसे वह एक सीधा-सादा प्रेमपत्र लगा। लेकिन पाला जोर देकर कहता रहा कि जरूर इसे संरक्षक (हाइड्रिक) के हत्यारों में से किसी ने लिखा है। उसने उस महिला का नाम व पता भी बताया, जिसे पत्र लिखा गया था।

वह युवती कुमारी एन मरुस्क्शाकोवा उस दिन काम पर नहीं आयी थी। वह बीमार थी और घर पर आराम कर रही थी। पुलिस-स्टेशन लौटते समय वायबिरल के मन में आया कि जाकर उसे चेतावनी दे आये; मगर उसकी मोटर-साइकल ठीक नहीं थी। वह चला जाता, तो शायद युवती और लिडिस दोनों की रक्षा हो जाती। पर ऐसा होना नहीं था।

वायबिरल के ऊपर के अधिकारी ने भी पत्र पढ़ा। उसे भी उसमें कोई रहस्य नजर नहीं आया। परंतु यह सुनकर कि जे. पाला अपनी बात पर अड़ा हुआ है, उसे वह पत्र क्लाडनो कस्बे के गेस्टापो के उप-अधिकारी थाम्सन के पास पहुंचाना पड़ा। थाम्सन ने उस युवती के घर की तलाशी लेने व उसे गिरफ्तार करने का आदेश दिया। तलाशी में कुछ नहीं मिला, फिर भी उस युवती को पकड़कर लाया गया। स्थानीय गेस्टापो उच्चाधिकारियों ने उससे पूछताछ की।

युवती मरुस्क्शाकोवा की कहानी बड़ी साफ और सीधी-सादी थी। उसने बताया कि कुछ समय पूर्व एक युवक से उसकी जान-पहचान हुई थी और तब से वह उससे कई बार मिल चुका है। युवक हमेशा साइकल पर आता है, जिस पर क्लाडनो के प्राहा आयरन वर्क्स का रजिस्ट्रेशन नंबर है। एक बार युवक ने उससे पूछा था कि क्या लिडिस में तुम्हारे कोई रिश्तेदार हैं। जब उसने बताया कि लिडिस में मेरे मित्र हैं, तो युवक ने उससे कहा था कि होराक-परिवार को —खासकर उनके लड़के जोसेफ को—मेरा सलाम देना। इससे मरुस्क्शाकोवा ने अनमान लगाया कि वह लड़का स्वयं जोसेफ होराक है; और चूंकि वह १९३९ में ब्रिटेन भाग गया था, सो वह छतरीधारियों में से एक होगा। हो सकता है, वह संरक्षक के हत्यारों में से एक हो।

इस भोली स्वीकारोक्ति से गेस्टापो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'श्री' की कुमकुम बिन्दी प्रतियोगिता

सरल... आनन्दप्रद!

आकर्षक इनाम!

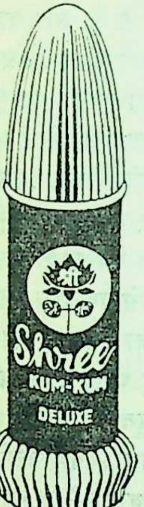

पहला इनाम : फ्रिज या ५००० रु. की लागत का ईनाम जीतने वाले की पसंद का कोई अन्य सामान

अन्य इनाम : डोमेस्टिक ग्राइंडर या सिलाई मशीन, स्टील कप-बोर्ड, कुकर, टाइम पीस, पेन-सेट वगैरह

कुल ४५००० रु. की कीमत के १००१ इनाम

प्रवेशपत्र तथा अधिक जानकारी के लिए श्री कुंकुम के अपने नजदीक के विक्रेता से सम्पर्क कीजिए।

श्री कॉस्मेटिक्स
कुर्ला. बम्बई ४०००७०.

Join **Shree's MATCH-THE-BINDI CONTEST,** today

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिकारी वाइसमन भी चकित रह गया—अवश्य ही उसे एहसास हुआ होगा कि कहीं कुछ गलती है। जब मरुस्क्शाकोवा को उन छतरीधारियों के चित्र दिखाये गये, जिन पर इस हत्या से संबद्ध होने का शक था, तब भी उसे उनमें अपने प्रेमी का चित्र नहीं मिला। इन सब विसंगतियों के बावजूद विस्तृत जांच की आज्ञा दी गयी।

जांच से पता चला कि लिडिस में कई होराक-परिवार हैं; परंतु एक ही परिवार ऐसा है, जिसका कोई लड़का गायब है। बस, इतनी-सी बात पर क्लाडनो, स्लेनी और प्राहा तक के सुरक्षा-अधिकारियों को होशियार कर दिया गया कि उस रात लिडिस की तलाशी लेने के लिए तैयार रहें।

उस रात लिडिस और उसके पास के छोटे-से खेड़े कैवर्नी को घेर लिया गया। पहले कैवर्नी में तलाशी ली गयी। पर वहां कुछ हाथ नहीं लगा, तो हारकर गेस्टापो-अधिकारी वाइसमन ने सब पुरुषों की गिरफ्तारी का आदेश दे दिया। फिर लिडिस की बारी आयी।

एक-एक घर की तलाशी ली गयी। घरों का ही नहीं, खेतों-खलिहानों का भी कोना-कोना छान डाला गया। परंतु जोसेफ होराक और स्ट्रिबनी के कुछ चित्रों के अलावा गेस्टापो को कुछ भी नहीं मिल पाया। दोनों के परिवारों को गिरफ्तार कर लिया गया। उन सबने बार-बार यही कहा कि दोनों युवकों का १९३९ से कुछ पता नहीं है। फिर भी उन्हें रिहा नहीं किया गया; क्योंकि मरुस्क्शाकोवा ने यह कह दिया था कि उन दो चित्रों में से एक उस युवक का है, जो उससे मिलने आता था।

इस बीच गेस्टापो ने क्लाडनो के प्राहा आयरन वर्क्स के तीन श्रमिकों को गिरफ्तार कर लिया, जिनकी साइकलों का रूप मरुस्क्शाकोवा के दिये गये ब्योरे से मिलता-जुलता था। मरुस्क्शाकोवा ने उन श्रमिकों में से एक को पहचान लिया और कहा कि यही मुझे पत्र लिखा करता था और इसी ने मुझे होराक-परिवार को सलाम देने को कहा था।

उस युवा श्रमिक वी. रिहा ने भी स्वीकार किया कि मैंने सलाम भिजवाया था, क्योंकि एक बार मुझे जोसेफ होराक मिला था और उसने मुझसे ऐसा करने का आग्रह किया था। यह सरासर मनगढ़ंत बात थी; क्योंकि जोसेफ होराक और स्ट्रिबनी तब ब्रिटेन की वायुसेना में विमान-चालक थे और प्रशिक्षित विमान-चालकों का हत्या के लिए भेजा जाना तर्कसंगत नहीं लगता। यह भी संभव है कि मरुस्क्शाकोवा और रिहा ने ये बातें कहीं ही न हों। लिडिस के विध्वंस के बाद उन दोनों को यातना-शिविरों में भेज दिया गया था और युद्ध समाप्त होने से पूर्व वहीं दोनों की मृत्यु भी हो गयी।

संरक्षक की हत्या में होराक का हाथ होने का कोई ठोस प्रमाण न पाकर गेस्टापो ने इन दो निरपराध युवक-युवतियों की स्वीकारोक्ति को ही बहाना बना लिया—लिडिस पर युद्धकाल के भीषणतम अत्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चार ढाने का।

लिडिस के भाग्य का अंतिम निपटारा फ्रैंक ने किया था और उसके निर्णय के पीछे न कोई तर्क था, न कोई कानूनी प्रमाण। उसके तईं लिडिस का विध्वंस विशुद्ध प्रतिशोध था। बाद में युद्ध की समाप्ति के अनंतर फ्रैंक ने दावा किया कि लिडिस के विध्वंस की कार्रवाई हिटलर के आदेश पर की गयी थी।

यह तो शायद हम कभी भी न जान पायेंगे कि लिडिस के बारे में फ्रैंक ने हिटलर से क्या सिफारिश की थी। लेकिन हाइड्रिक की अंत्येष्टि के दिन प्राहा के गेस्टापो-प्रमुख होर्स्ट बोह्‌म ने टेलिफोन पर प्राप्त निम्न आदेश टाइप किया था :

'९ जून १९४२ के सायं ७·४५ बजे फ्रैंक ने हिटलर से बातचीत के बाद टेलिफोन करके लिडिस के विषय में यह कार्रवाई करने को कहा :

१. सब पुरुषों को गोली से उड़ा दिया जाये।

२. सब स्त्रियों को यातना-शिविरों में भेज दिया जाये।

३. बच्चों में से जिन्हें जर्मन बनाया जा सकता हो, उन्हें नाजी सैनिकों के परिवारों में भेज दिया जाये और शेष को अन्यत्र।

४. लिडिस को जलाकर सपाट मैदान बना दिया जाये।'

१२ जून को फ्रैंक ने इस आज्ञा पर हस्ताक्षर किये; मगर इससे पूर्व ही उसे अमल में लाया जा चुका था।

उधर गेस्टापो को हाइड्रिक के ह का कोई अता-पता नहीं मिल रहा अनेक निरपराध व्यक्तियों को मौत के उतारा जा चुका था; मगर असली राधी लापता थे। जैसे निराशा में, अदना-सी घटना को पकड़कर बैठ गये। उलझी-सी प्रेम-कहानी और दो व्यक्तियों के चित्र घोर कुकृत्य का बन गये। (रिहा शादीशुदा था, शायद लिए उसने रहस्यमय व्यवहार किया और शायद झूठ भी बोला था।)

९ जून को क्लाडनो के गेस्टापो के वाइसमन ने अपने आदमियों को वर्दी कर तैयार रहने का आदेश दिया। लारी पर दो बैरल पेट्रोल लादा गया। के १० बजे सब आंगन में एकत्र हुए। अलग टुकड़ियां बनायी गयीं और अलग-अलग काम सौंपे गये। आदेश यह था कि सब घरों की तलाशी जाये और विशेष आदेश यह कि १४ अधिक उम्र के सब पुरुषों को 'होरा बाड़ी' में एकत्र किया जाये और सब व महिलाओं को स्थानीय स्कूल में ग्रामवासियों को यह भी निर्देश दिया था कि वे अपनी तमाम कीमती चीजें पासबुक साथ लेकर चलें।

अब तक सुरक्षा-पुलिस ने लिडिस घेर लिया था। गेस्टापो की कारें भी पहुंचीं। प्राहा के गेस्टापो-प्रमुख एवं पु प्रमुख की उपस्थिति में लिडिस के वाइसमन ने बाकायदा यह आदेश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'लिडिस को भूमिसात् कर दिया जाये और उसके निवासियों को गोलियों से उड़ा दिया जाये। हिटलर का आदेश।'

रात के ११ बज चुके थे। घरों के दरवाजे बंद थे। बत्तियां गुल। सारा गांव सो चुका था। पहले गांव के मेयर को जगाकर उससे सब कागजात, रोकड़, चाबियां आदि संभलवाने को कहा गया और गांव के सब कृषि-उपकरण, मवेशी आदि जब्त घोषित किये गये। फिर गेस्टापो की टुकड़ियां जाकर एक-एक घर के लोगों को जगाने लगीं। बच्चों-महिलाओं को अलग छांटकर स्कूल में ले जाया गया। सब पुरुष होराक की बाड़ी में पहुंचा दिये गये। गांव के मेयर से रजिस्टर मंगवाकर बंदी बनाये गये पुरुषों की चेकिंग की गयी। ११ आदमी गायब थे। वे रात-पाली में काम पर क्लाडनो गये थे। (अगले दिन सवेरे वे लौटे भी; मगर गांव पर पहरा देखकर उनमें से नौ तो वापस क्लाडनो पहुंच गये और दो जंगल में जा छिपे।)

उस रात कुल १७३ पुरुष होराक की बाड़ी में बंदी बनाये गये। उस वक्त उनमें से एक को भी इसका अंदाज नहीं था कि उसके भविष्य में क्या बदा है।

सुबह पेट्रोल से लदी गेस्टापो की लारी गांव के चौक में आ पहुंची। पुलिस ने छोटे डब्बों में पेट्रोल भरकर हर मकान में पहुंचाया। खाली ट्रक सारे गांव में घूमा। घरों में जो कुछ भी काम की चीज दिखी, ट्रक पर चढ़ा ली गयी—सिलाई-मशीनें, बच्चागाड़ियां, साइकलें, मोटर-साइकलें, फरनीचर। क्लाडनो के गेस्टापो-कर्मचारियों ने यह सब हड़प लिया।

यों तो सब कुछ बड़े व्यवस्थित ढंग से हुआ था। फिर भी बाद में एक सैनिक ने कहा—'मेरी नसें फट रही थीं। औरतें पागलों की तरह रो रही थीं, बच्चे चीख रहे थ, कुत्ते भौंक रहे थे, मवेशी इधर-उधर भाग रहे थे, मुर्गे सब तरफ उड़ते फिर रहे थे.....'

१० जून को सुबह ७ बजे फ्रैंक वहां आया। उसने हिटलर के आदेश को औपचारिक रूप से दुहराया। इसके बाद गेस्टापो की हत्यारी टोलियों ने अपना काम शुरू कर दिया। महिलाओं और बच्चों को स्कूल से निकालकर ट्रकों में भर दिया गया और क्लाडनो की ओर रवाना कर दिया गया। उन्हें अपने पतियों, भाइयों व पिताओं से अलविदा कहने का भी मौका नहीं दिया गया।

अब घरों को आग लगाने की बारी थी। एक-एक करके गांव के सारे घर धू-धू करके जलने लगे।

गिरजे के सब चांदी के बरतन आदि एक संदूक में भर लिये गये। प्राहा के गेस्टापो-प्रमुख बोह्‌म को उनमें दिलचस्पी थी। गांव के बूढ़े पादरी ने गिरजे को भ्रष्ट न करने की प्रार्थना की, तो उसे जमीन पर गिराकर लतियाया गया।

उधर होराक की बाड़ी में सामूहिक प्राणदंड की तैयारियां जोरों से चल रही थीं। आस-पास के तमाम घरों से गद्दे लाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

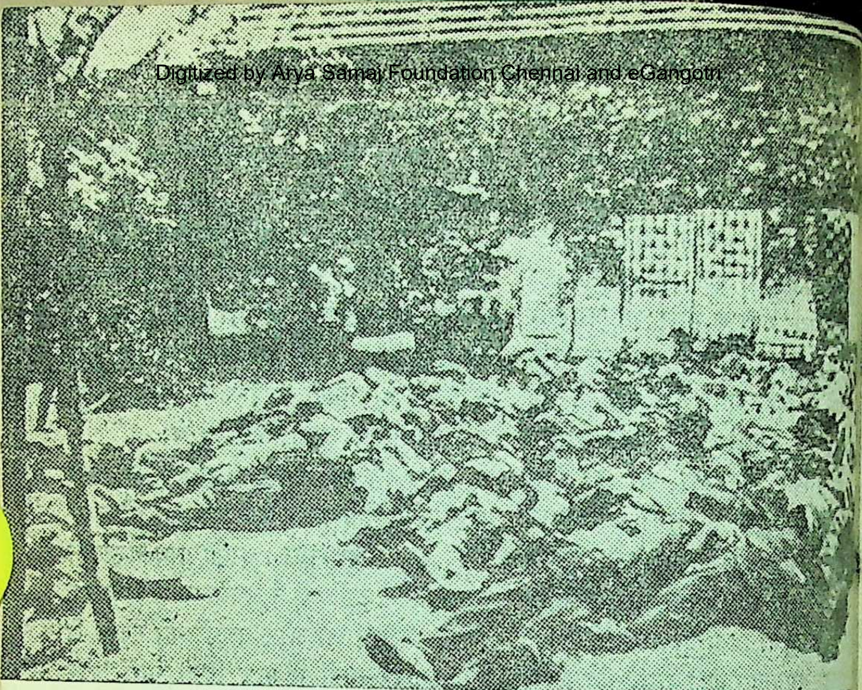

होराक की बाड़ी में लाशें ही लाशें—नरमेध के बाद का दृश्य।

एक किनारे की दीवार पर टांग दिये गये। तीस आदमियों का गोली-चालक दस्ता तैयार था। कुछ लोग रिजर्व में रखे गये थे, ताकि कोई बंदूकची बेहोश होने लगे तो दूसरे उसकी जगह ले सकें।

लिडिस के निरीह पुरुष अब दस-दस की टुकड़ियों में लाये जाते थे। बड़ा भयानक दृश्य था—जलते गांव की पृष्ठभूमि में दस निर्दोष व्यक्तियों का मौत के सामने लाया जाना, जिन्हें सिर पर मंडराते संकट का आभास भी नहीं था! उन्हें कोई सजा नहीं सुनायी गयी, कोई औपचारिकता नहीं बरती गयी, उनकी आंखों पर पट्टी भी नहीं बांधी गयी। फिर भी उन्होंने अपने हत्यारों के समक्ष अपनी शांति और आत्म बिखरने नहीं दिया।

प्रथम दस पुरुष चुपचाप आकर खड़े हो गये। गेस्टापो-प्रमुख बोह से कुछ नहीं कहा, सिर्फ सिर गोलीचालक दल के अफसरों ने किया और दस गोलियों ने दस का खात्मा कर दिया। एक अ आगे बढ़कर अपने रिवाल्वर से हर सिर में एक-एक गोली और दाग कोई जीवित न बच गया हो! द बाद और दस नागरिक लाये ग वहीं पड़े थे, जहां वे गिरे थे। नये द एक कदम आगे खड़े हो गये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इशारे.....और गोलियां।

पचास व्यक्तियों को गोलियों से उड़ा देने के बाद गोली-चालक दस्ते को आराम दिया गया और उनके स्नायुओं को स्थिर रखने के लिए उन्हें थोड़ी-थोड़ी शराब दी गयी। आराम के बाद उनमें से तीन ने फिर बंदूक उठाने से इन्कार किया और उनकी जगह रिजर्व जवानों ने ले ली।

रुका हुआ सिलसिला फिर शुरू हुआ। अपने मित्रों और संबंधियों की लाशों के सामने दस आदमी मूर्तियों की तरह खड़े थे। गांव के पादरी फादर स्टेम्बर्क ने इनके लिए प्रार्थना की थी। इस पर एक जर्मन सैनिक हंसकर बोला था—'बूढ़ा पादरी ठीक ही कर रहा है। प्रार्थना और आशीर्वाद के कारण लोग भेड़ों की तरह कत्लगाह पर पहुंच रहे हैं।'

छठे या सातवें दल में से एक युवक एफ. कुविक अचानक ही अधिकारी से पूछ बैठा—'हमें बताइये तो सही, आप क्या जानना चाहते हैं? हम जो कुछ बता सकते हैं, जरूर बतायेंगे।' अधिकारी थोड़ा झिझका। उसने गेस्टापो-अधिकारी की ओर देखा। कोई संकेत नहीं। अपील खारिज। फिर दस गोलियां..... वह युवक गिरा तो सही, पर मरा नहीं था—तड़प रहा था। एक साथ कई रिवाल्वर उसकी ओर तन गये, और वह भी खतम।

एक आदमी ने ब्लेड से गले की नस काट-कर आत्महत्या करने की कोशिश की, पर विफल रहा। उसे गोलियों से भून डाला गया।

जब सब खतम हो गया, तो लाशों के हाथों से सोने की अंगूठियां उतारी गयीं। यदि किसी के मुंह में सोने का दांत था, तो उसे भी तोड़ लिया गया। अब तक गोली-चालक दल नशे में चूर हो चुका था। उसमें से कई को गांव के बाहर भेज देना पड़ा। तात्कालिक काम खतम हो चुका था। सब पुरुष मर चुके थे, सब घर जल रहे थे।

लिडिस से बाहर उन ग्यारह आदमियों की तलाश जारी रही, जो पिछली रात गांव में न थे, वे भी पकड़े गये और मारे गये। सबके बाद होराक और स्ट्रिबनी परिवारों का नंबर आया—उन्हें बाकायदा सजा सुनायी गयी और फिर गोली मार दी गयी।

उधर स्त्रियों तथा बच्चों को क्लाडनो के स्कूल में रखा गया था। वहां उनकी सूची बनी और फिर १८५ स्त्रियां यातना-शिबिर में भेज दी गयीं। जीवित बची स्त्रियों में से एक ने महायुद्ध के बाद बताया :

'हम सबको स्कूल के जिम्नेशियम में ढकेल दिया गया। वहीं फर्श पर बिछी पुआल पर हमें सोना पड़ा। तीन दिन रोने और घोर निराशा में कटे। उसके बाद पचास जर्मन सैनिक आये। एक ने बताया कि हमें यातना-शिबिर में भेजा जायेगा। जब हमने पूछा कि हमारे आदमियों का क्या हुआ, तो उत्तर मिला, वे यातना-शिबिर में जायेंगे; बच्चे भी जायेंगे, पर अलग से और ज्यादा आराम से। हमें विश्वास नहीं हुआ। माताओं ने बच्चों को छाती से चिपका लिया। पर एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Zenlon

विविध किस्मों के
प्राकृतिक, रासायनिक व
मानव निर्मित
बुनाई के सूत

परदे, गाद्दियां व कवर बनाने के लिए मुलायम और बहुरंगी • क्रोशेसेटों के लिए सुंदर और चमकदार • वसन्त मे लचीले और नमीसोख

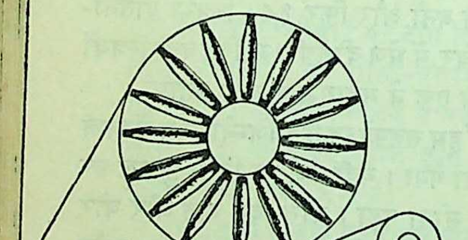

स्टेपल फाइबर विभाग
बिरला ज्यूट मैन्युफैक्चरिंग कं. लि.
९/१ आर. एन. मुकर्जी रोड
कलकत्ता—७०० ००१

कपड़ों की उज
धुलाई के लिय

चाँदनी
साबुन

निर्माता -
बरार ऑयल इंडस्ट्रीज
अकोला (महाराष्ट्र)

तरफ
थीं उ
बच्च
बच्चे
मात
पड़ा
मत
"रोज
पर ह
कि य
पर रि
ब
ही अ
'ह
फिर
कि वे
पूछत
नहीं
दादाउ
हुई।
रहीं,
इतने
कर र
'तं
बच्चों
दिया
चाहते
रही थ
वे बहु
मां को
१९७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरफ पचास सशस्त्र सैनिक थे, दूसरी ओर थीं डरी हुई असहाय औरतें !

'फिर जर्मन सैनिकों ने एक-एक करके बच्चों के नाम पुकारने शुरू किये। कुछ बच्चे तो चुपचाप बढ़ गये, पर कुछ को माताओं के हाथों से खींचकर अलग करना पड़ा। कुछ बच्चे चीख रहे थे—"मां, मुझे मत ले जाने दो !" दूसरे कह रहे थे— "रोओ मत मां ..... मैं लौट आऊंगा।" पर हममें शायद ही कोई समझ पा रही थी कि यह सब क्या हो रहा है। हम सब फर्श पर गिर पड़ीं और रोने लगीं।'

बच्चों का बयान और भी करुण है, साथ ही अधिक यथार्थवादी भी :

'हमें वे लोग स्कूल में ले गये। ..... फिर कुछ लोग आये। माताओं ने बताया कि वे गेस्टापो के थे। वे जब तक रहे, हमसे पूछताछ ही करते रहे ..... उस दिन कोई नहीं जानता था कि हमारे पिताओं और दादाओं को मार डाला गया है। फिर रात हुई। पर सारी रात रोने की आवाजें आती रहीं, कोई सो नहीं पाया। दूसरे दिन हम इतने थके हुए थे कि खेलने का भी मन नहीं कर रहा था।

'तीसरे दिन कई फौजी आये। उन्होंने बच्चों और माताओं को अलग-अलग कर दिया। दोनों को वे अलग-अलग ले जाना चाहते थे। माताएं बच्चों को छोड़ नहीं रही थीं। लेकिन जीत फौजियों की ही हुई— वे बहुत-से थे न ! उसके बाद मैंने अपनी मां को नहीं देखा। मैं दूर से चिल्लाता ही रह गया कि मां, मैं बस से गिरूंगा नहीं, तुम घबराना नहीं। फिर फौजियों ने रिवाल्वर से हवा में फायर करके हमें डरा दिया।

'इसके बाद सबके गले में छोटी तख्तियां टांग दी गयीं, जिन पर हमारा नाम और नंबर लिखा था। हम लड़के पहले तो लड़कियों के आगे आदर्श रखने के लिए बिना रोये चुप रहे, फिर हमारी भी रुलाई फूट पड़ी।'

शुक्रवार १२ जून की रात के ८ बजे तिरपाल से ढंकी लारियां आयीं। औरतों और बच्चों को अलग-अलग लारियों में भरकर पता नहीं कहां भेज दिया गया। युद्ध के बाद बच्चों का कुछ पता नहीं चल सका।

कत्ल किये गये पुरुष ११ जून को दफनाये गये। यह काम टरजिन शिबिर के तीस यहूदी कैदियों से कराया गया। इन तीस में जीवित बचे एक ने युद्ध के बाद बताया :

'हमें फावड़े, कुदालियां, बेलचे व खुरपे देकर एक लारी में भरकर ले जाया गया। एक जलते गांव के बाहर गाड़ी रुक गयी। वहां से हम पैदल ही एक बाड़ी में पहुंचे। दूर से हमें सब्जियों और आलू की क्यारियां दिखाई पड़ी थीं। मगर जब हम नजदीक पहुंचे, तो भौंचक्के रह गये। हमारे सामने बेतरतीब कतारों में लाशों के ढर लगे थे।

'फिर टरजिन के कैंप-प्रशासक ने लाशों से दस मीटर दूर जमीन पर लकीरें खींचकर एक सामूहिक कब्र के लिए निशान बनाया। चार मीटर गहरी कब्र हमें उसी रात १० बजे तक खोदकर तैयार कर देनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामला

एक तकलीफ देह और उतनीही खतरनाक बीमारी।

लेकिन कामला (पीलिया) के मरीजों को अब कोई चिन्ता नहीं है। साण्डू का सिरप जॉन्डेक्स अब आपके औषधि विक्रेता के पास उपलब्ध है।

यकृतोत्तेजक एवं पित्तस्त्रावक ऐसी कतिपय चुनी हुई वनोषधियोंसे निर्मित सिरप जॉन्डेक्स कामला में तुरन्त और निश्चय ही लाभ पहुँचाता है।

यकृत दुष्टि, यकृतमंदता आदि अन्य यकृत विकारों में भी सिरप जॉन्डेक्स बहुतही लाभकारी है।

औषधि की तथा कामला के मरीज के लिये खानपान आदि के परहेज सम्बन्धी पूरी जानकारी की पत्रिका बोतलके साथ रहती है।

तथा साण्डू अन्वेषण

सिरप
जॉन्डेक्स

द. कृ. साण्डू ब्रदर्स चेम्बूर प्रा. लि.
वि. ना. पुरव मार्ग, चेम्बूर-बम्बई ७१.
आयुर्वेदकी सेवामें ७६ गौरवशाली वर्ष

DKS/1/76/H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। आधे मीटर गहराई तक तो आसानी से खुद गया। मगर आगे चिकनी मिट्टी वाली जमीन थी। काम धीमा पड़ गया, मगर जर्मन पहरेदारों की मार ने हमें फिर काम में जोत दिया। हम बिना रुके, बिना खाये-पिये खोदते रहे।

'अगले दिन दुपहर तक खुदाई जारी रही। तभी कई बड़े अफसर वहां आये, जिनमें से एक कद्दावर आदमी को सभी फ्रैंक कह रहे थे। वे लोग मृतकों के बारे में आपस में हंसी-ठट्ठा करते रहे।

'फिर हमें सब लाशों की सामूहिक कब्र चिनने का हुक्म हुआ। पर उससे पहले हमें उन पर से बूट उतार देने थे; जेबें टटोलकर पैसे, कीमती चीजें और सिगरेटें निकाल-कर जमा करवानी थीं। बड़ी अनिच्छा से हम आगे बढ़े। हमने देखा, प्रायः हर लाश की जेब में खाने की छोटी-सी पोटली है। हमारे कैंप-प्रशासक ने हमसे कहा कि ये चीजें चाहो तो तुम लोग खा लो। मगर किसी ने उन्हें हाथ न लगाया।

'पांच लाशें तो निरे बालकों की थीं! हर लाश के सीने, सिर और ठुड्डी के नीचे गोली लगी थी। कई की खोपड़ियां फट गयी थीं। चेहरे सभी के भयाक्रांत थे। एक के हाथों की उंगलियां कुचली हुई थीं। एक लाश की दोनों बांहें कटी हुई थीं। हमें उन सबके कपड़े भी उतारने पड़े, फिर लाशों को कब्र में चिनना पड़ा। जब यह काम हो गया, एक जर्मन सिपाही ने एक कुत्ते को कब्र के पास बुलाने की कोशिश की। कुत्ता कूं-कूं करता भाग चला। सिपाही ने गोली दाग-कर उसे ठंडा कर दिया। उसकी लाश भी कब्र में पटक दी गयी। फिर मुर्दों पर चूना छिड़क कर कब्र पर मिट्टी डाल दी गयी।'

१३ जून को यहूदी कैदियों का दूसरा दल लिडिस लाया गया। इसे शेष काम पूरा करना था। दल के एक प्रत्यक्षदर्शी सदस्य का कहना है:

'लिडिस के रास्ते में हमें घरेलू सामान से भरी कई गाड़ियां मिलीं। लिडिस पहुंच-कर हमें एक बगीचे में ले जाया गया। सूना गांव बार-बार धमाकों से गूंज उठता था। कब्र के किनारे छोटे-छोटे पौधे रोपे गये थे। हमारे पीछे की ओर जले हुए मकान थे। हमें कब्र की जमीन को समतल करने को कहा गया।..... आस-पास की सारी ही जमीन खून से गीली थी। चारों तरफ कार-तूस बिखरे पड़े थे। जहां तक नजर जाती थी, शराब की खाली बोतलें, बटन, टोपियां नजर आती थीं। मुझे आदेश मिला कि एक गढ़ा खोदकर ये सब चीजें उसमें दफना दो। मुझे एक टोपी ऐसी भी मिली, जिसमें माथे और भेजे का कुछ हिस्सा चिपका हुआ था—मशीनगन की करामात!

'उधर गिरजाघर को बारूद से उड़ाया जा रहा था। एक जोरदार धमाका और धूल का बादल! कुत्ते भौंक उठे। कबूतर उड़ने लगे। जर्मन सैनिक उन भागते कुत्तों और उड़ते कबूतरों को गोलियों का निशाना बनाकर हंसते रहे।'

लिडिस अब खंडहरों के सिवा कुछ न था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

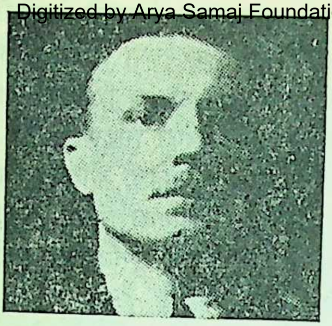

आत्मसमर्पणकारी के. कुर्दा

परंतु हिटलर का हुक्म था कि खंडहर भी न रहें। ८४ हजार घनमीटर जितनी मिट्टी और खंडहर समतल किये गये। गढ़े भर दिये गये। गांव के बीच से बहते नाले को पाट दिया गया। नाले की राह बदलना, नयी सड़क बनाना, तमाम पेड़ काट गिराना, मकानों की नीवें तक उखाड़कर और नयी मिट्टी बिछाकर वहां खेती के योग्य जमीन बनाना तकनीकी दृष्टि से आसान न था।

लिडिस के समग्र नाश के इस काम के विषय में फ्रैंक ने २२ जून को जर्मन श्रम-सेना के मुखिया को एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था – '..... गांव का नाम-निशान मिटाने का यह काम राजनैतिक दृष्टि से सर्वोपरि महत्त्व का है। इससे चेक जनता को पूरी तरह समझ में आ जायेगा कि जर्मन राष्ट्र अपने संरक्षित प्रदेश के किसी भी कोने में प्रतिरोध के किसी केंद्र के अस्तित्व को सहन नहीं करेगा।'

परंतु श्रम-सेना के जिन जर्मन सैनिकों को इस काम की जिम्मेवारी सौंपी गयी, उन्हें यह बेहद अरुचिकर लगा। वि... अरुचिकर था १४० पारिवारिक क... २०० अन्य कब्रों को उखाड़ना। तीन ... तक उन्हें ये विध्वंस-कार्य करने पड़े ... भी उन्हें ऐसा नहीं लगा कि उनमें ... चेक जनता में कोई ऐतिहासिक या ... तिक अंतर है और न वे इस समूची ... का राजनैतिक महत्त्व समझ पाये।

योजना यह बनी कि लिडिस के ... हिस्से को चरागाह बना दिया जाये ... बाकी हिस्सों में खेत हों। गांव को ... जोड़ने वाली सड़कों और गांव की ... को मिटाकर नये रास्ते नयी जगह ... जायें, ताकि पुराने स्थान का पता ... भी असंभव हो जाये। यह भी निर्णय ... गया कि इस सारे काम के लिए ... धन और यंत्रोपकरण चेक जनता ही ... करे। जून से लेकर अक्तूबर तक इस ... पर ३० लाख क्राउन व्यय हुए।

जर्मन सैनिकों ने यह सारा काम ... सफाई और मुस्तैदी से किया। फिर ... लिडिस का नाम-निशान हमेशा के ... मिटाने में विफल ही रहे। उन्हें ... था कि पड़ोस के चेक कृषक उनकी ... कार्रवाई को बड़े गौर से देख रहे हैं ... बाद इन कृषकों की मदद से सामूहिक ... और पूरे गांव का पता लगा लिया ...

लिडिस को नष्ट करने के फैसले ... उसके क्रियान्वय से संबंधित सभी ज... युद्ध के बाद यही कहा कि हमें इस ... पूरा विश्वास था कि यह गांव तोड़...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने वालों और शत्रु के एजेंटों का अड्डा था और इसीलिए हिटलर ने इसे सबके लिए एक मिसाल बनाने का फैसला किया था। परंतु यह बिलकुल स्पष्ट हो जाने के बाद भी कि हत्यारों का पता लग चुका है और वे सब खत्म हो चुके हैं, लिडिस के विध्वंस का तमाशा जारी रखा गया। यह भी सिद्ध हो चुका था कि प्रतिरोध-आंदोलन के किसी भी छतरीधारी ने लिडिस में कभी आश्रय नहीं लिया था। बस इतना ही था कि कुछ छतरीधारियों के पास लिडिस के कुछ लोगों के पते बरामद हुए थे। विडंबना तो यह है कि सारे गांव के समूल विनाश के बाद १४ नवंबर १९४२ को लिडिस के समस्त नागरिकों की सारी संपत्ति की जब्ती की आज्ञा जारी की गयी! इससे यह सिद्ध होता है कि लिडिस के विध्वंस की कार्रवाई चेकोस्लोवाकिया को आतंकित करने की जर्मन नीति का अंग थी। या संभव है, यहूदियों के 'अंतिम समाधान' जैसी ही कोई नीति चेक जनता के बारे में भी लागू करने की तैयारी रही हो।

× × ×

लिडिस में जो कुछ हुआ, उससे बोहीमिया में छिपे हुए के. कुर्दा नामक छतरीधारी की हिम्मत डिग गयी। उसने प्राहा के गेस्टापो को पत्र लिखा—अत्याचार बंद करो, हत्यारे मुझे पता हैं; फिर १६ जून को स्वयं प्राहा जाकर आत्मसमर्पण कर दिया। जब उसे यातना दी गयी, उसने प्रतिरोध-आंदोलन से संबंधित अनेक व्यक्तियों का अता-पता बता दिया। उसने हत्यारों द्वारा घटनास्थल पर छोड़ी गयी चीजों को भी पहचाना। मगर उसे पता न था कि हत्यारे कहां पर छिपे हुए हैं। अगले दिन जब कुर्दा के बताये हुए लोगों में से एक कच्ची उम्र के किशोर को पकड़कर सताया गया, उसने बता दिया कि हत्यारे प्राहा के संत सिरिल एवं मेथोडियस गिरजे में हैं।

१८ जून के सवेरे ४·१५ बजे ३६० फौजियों ने गिरजे को घेरकर मोर्चाबंदी कर ली। आस-पास के मकानों के बाशिंदों को खदेड़ दिया गया। गिरजे के पादरी को गिरफ्तार करके दरवाजा खुलवाया गया। फौजी भीतर घुसे।

लेफ्टिनेंट ओपाल्का के नेतृत्व में वाल्सिक, गैब्सिक, क्यूबिस, स्वार्क, बल्किक और ह्रुबी ये सात छतरीधारी मोर्चाबंदी करके मौजूद थे। उस रात ओपाल्का,

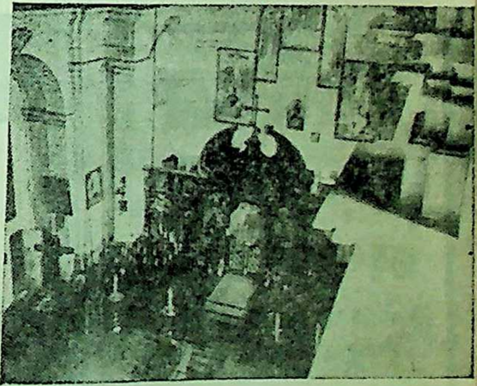

सिरिल एवं मेथोडियस गिरजे का अंतर्भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धर्मयुग के यशस्वी कथाकार परदेशी

द्वारा लिखित

तीन सरस सामाजिक उपन्यास

१- दूध के बादल
२- कुँआरी किरन
३- सिन्दूर की हथकड़ियाँ

प्रत्येक का मूल्य तीन रुपये

तीनों उपन्यास एक साथ मँगाने पर डाक व्यय फ्री

प्रकाशक- अनुपम पॉकेट बुक्स
कमलानगर दिल्ली-110007

जालिम लोशन

दाद खुजली की पेटेन्ट दवा

- चमड़ी की गहराई में पहूंचकर कीटाणु का नाश करता है
- सड़ी गली खराब चमड़ी को कागज की तरह निकाल फेंकता है
- 'जालिम लोशन' लगाते ही दाद खुजली की परेशानी मिट जाती है
- कपड़ों पर दाग नहीं लगता

हर जगह मिलती है

ORICHEM, RAO (INDORE)

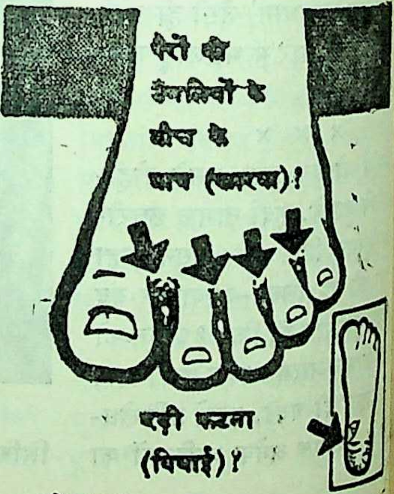

लिचेन्सा

इस्तेमाल कीजिये।

CC-0 In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यूबिस और स्वाक पहरे पर थे। गिरजे का गायक-दीर्घा से गोलियां दागकर उन्होंने फौजियों का स्वागत किया। जमकर मुठ-भेड़ हुई। जब छाताधारियों के पास गोलियां समाप्त हो चलीं, उन्होंने अंतिम गोलियों का निशाना खुद को बना लिया और दुश्मन के हाथ केवल उनकी लाशें आयीं।

कुर्दा से लाशों की शिनाख्त करायी गयी। उससे तहखाने में छिपे शेष चार छतरीधारियों के नाम लाउडस्पीकर पर अपील भी करायी गयी कि हथियार डाल दो, तुम्हारा बाल भी बांका नहीं होगा। छतरीधारियों ने गोलियों से जवाब दिया।

सुबह ७ बजे कार्रवाई का संचालन करने फ्रैंक स्वयं आ पहुंचा था। एक झरोखे में से हथगोले भीतर बरसाये गये; मगर छतरी-धारी उन्हें उठाकर बाहर फेंक देते थे। यही हाल अश्रुगैस के गोलों का हुआ। दमकलें बुलाकर तहखाने को पानी से भरने की कोशिश की गयी। छतरीधारियों ने पाइप काटकर योजना बेकार कर दी।

अंत में तहखाने के एक गुप्तद्वार का पता लगाकर सैनिक सीढ़ी के जरिये अंदर उतर आये। जमकर लड़ाई हुई। अपनी अंतिम गोलियों का निशाना अपने को ही बनाकर छतरीधारियों ने मृत्यु का वरण किया।

१८ जून की शाम को चेक रेडियो पर घोषणा की गयी कि संरक्षक की हत्या की जांच सफलतापूर्वक पूरी हो गयी है।

२४ जून को पूर्व बोहीमिया के एक छोटे गांव लेजास्की को घेरकर नष्ट कर दिया

जोसेफ गैब्सिक चिरनिद्रा में

गया। दक्षिण बोहीमिया के एक और गांव बर्नाट्रिस को भी तबाह करने की योजना

बलिदानी जान क्यूबिस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपके सपने सच हो सकते हैं..

मल्टी-बेनिफ़िट
एन्ड ओल्ड एज डिपोजिट स्कीम

हमने 5, 10 और यहां तक 20 वर्ष बाद आपकी आवश्यकताओं के बारे में सोचा है । हम आपको अपने सपने सच करने में सहायता देंगे ।

मल्टी-बेनिफ़िट एन्ड ओल्ड एज डिपोजिट स्कीम के अधीन जमा किए गए 5,000 रु० आपके बच्चे की उच्च/तकनीकी शिक्षा का खर्च उठाने या उसके लिए नया कारोबार शुरू करने के लिए काफी होंगे । इस राशि से आप निश्चित होकर रिटायर्ड जीवन भी बिता सकते हैं !

20 वर्षीय योजना में आपका पैसा 31.6% प्रति वर्ष की दर से बढ़ता है । आज लगाए गए 1,000 रु० अवधि समाप्ति पर 7,328 रु० और 5,000 रु० 36,640 रु० हो जाते हैं । इस योजना में आप 100 रु० या अधिक 13 महीने से लेकर 241 महीनों के लिए जमा कर सकते हैं ।

ब्योरे के लिए हमारी समीपस्थ शाखा से सम्पर्क कीजिए

पंजाब नैशनल बैंक

davp 75/691

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी, जिसमें अनेक छतरीधारियों ने शरण ली थी। मगर वह योजना लागू नहीं की गयी। अलबत्ता बारह व्यक्तियों को गोली मार दी गयी। शायद जर्मनों ने अनुभव कर लिया कि इस सबका उलटा ही असर हो रहा है।

× × ×

हाइड्रिक की मृत्यु के दो दिन बाद ही फ्रैंक ने चेक राष्ट्रपति डा. हाचा को बुलाकर फटकार सुनायी, जिससे हाचा को रेडियो पर घोषणा करनी पड़ी कि उनकी सरकार पंचममार्गियों का पता लगाने और उन्हें समाप्त करने में जर्मन सैनिकों को पूरी सहायता देगी, 'ताकि शांति और व्यवस्था फिर से कायम हो सके।' इसके बाद जब तक विश्वयुद्ध जारी रहा, चेक सरकार जर्मन शासकों के हाथ का खिलौना बनी रही।

दूसरी ओर लंदन में राष्ट्रपति बेनेस की निष्कासित सरकार ने दृढ़ संकल्प किया कि हर तरीके से जर्मनों से लड़ना है। अंततः ५ अगस्त १९४२ को ब्रिटिश सरकार ने म्यूनिख समझौते को रद्द घोषित करते हुए चेकोस्लोवाकिया की म्यूनिख-पूर्व स्थिति को मान्यता दे दी। लगभग डेढ़ माह बाद फ्रांस ने भी ब्रिटेन का अनुसरण किया।

उधर अमरीकी सरकार और जनता की सहानुभूति चेक जनता के साथ हो गयी थी। १३ जून १९४२ को ही अमरीकी नौसेना-मंत्री एफ. नॉक्स ने बोस्टन में घोषणा कर दी थी—'यदि भावी पीढ़ियां हमसे पूछें कि हम इस युद्ध में क्यों लड़े थे, तो हम उन्हें लिडिस की बात बतायेंगे।' (तब तक दुनिया को हिटलर के यातना-शिविरों के यथार्थ का पता नहीं था।)

ब्रिटेन की नेशनल यूनियन ऑफ माइनर्स ने दस लाख पौंड का एक कोष कायम करने और 'लिडिस जिंदा रहेगा' अभियान चलाने का प्रस्ताव रखा। सारे विश्व में इस कोष के लिए समितियां बनायी गयीं। वास्तुशिल्पियों ने लिडिस के युद्धोत्तर पुनर्निर्माण के नक्शे तैयार करने के उद्देश्य से अपनी एक समिति कायम की।

'लिडिस जिंदा रहेगा' अभियान अमरीका में भी तेजी से फैला। न्यूयार्क के मेयर की अध्यक्षता में एक राष्ट्रीय समिति बनी। १२ जुलाई १९४२ को अमरीका के एक छोटे कस्बे स्टर्न पार्क गार्डेन्स ने अपना नाम बदलकर लिडिस रखा। इस अवसर पर यह घोषणा की गयी—'बर्बर लोगों ने चेकोस्लोवाकिया के लिडिस को नष्ट कर दिया है। परंतु स्वतंत्रता-प्रेमियों के दिल में लिडिस हमेशा जिंदा रहेगा।' और भी कितने ही अमरीकी गांवों ने अपना नाम लिडिस रख लिया।

बर्बर नाजियों ने द्वितीय महायुद्ध की समाप्ति तक लगभग ढाई लाख चेक नागरिकों को मौत के घाट उतारा था—एक मौत के एवज में! युद्ध समाप्त होने के बाद लिडिस की २०३ महिलाओं में से केवल १४३ 'घर' लौटीं। लिडिस के १०४ बच्चों में से तो केवल १६ का ही पता चल सका।

मगर लिडिस आज भी जिंदा है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रंथ-लो

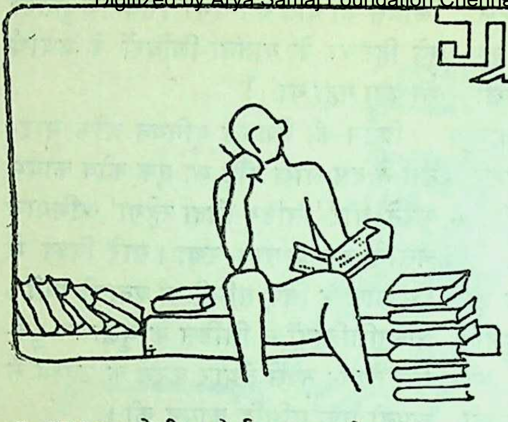

* अनुत्तर योगी : तीर्थंकर मह
* छायावादयुगीन स्मृतियां
* देवेश : एक जीवनी

*** अनुत्तर योगी : तीर्थंकर महावीर-१ * वीरेंद्रकुमार जैन; श्री वीर निर्वाण ग्रंथ प्रकाशन समिति, ४८ सीतलामाता बाजार, इंदौर-२; ३८० पृष्ठ; २० रुपये।**

तीर्थंकर महावीर की पचीसवीं निर्वाण-शती के अवसर पर उनके जीवनचरित एवं सिद्धांतों पर अनेक पुस्तकें प्रकाश में आयी हैं। लेकिन महावीर-जीवन के उपलब्ध स्रोतों के आधार पर उपन्यास लिखना सचमुच एक अति दुःसाध्य कार्य है। और फिर वह अनेक भ्रांत और परस्पर-विरोधी धारणाओं के कुहासे से भी ढंका है। राम, कृष्ण, बुद्ध, ईसा की भांति उन पर पर्याप्त काम भी नहीं हुआ है। इसलिए कोई महत्त्वपूर्ण सृजनात्मक कृति प्रतीक्षित थी। इस कमी को हिंदी की आधुनिक किसिम-किसिम की कविता-धारा के महत्त्वपूर्ण कवि वीरेंद्रकुमार जैन ने इस उपन्यास के माध्यम से एक हद तक पूरा करने का बीड़ा उठाया है। इरादा तो उनका महा-काव्य लिखने का था, लेकिन जब महाका[व्य] उपन्यास होने को मजबूर हुआ, तो वह काव्य हुए बिना नहीं रह सका और इसी प्रेक्ष्य में इसे पढ़ा जाना समीचीन लग[ता] (वैसे डा. छैलबिहारी गुप्त ने महा[वीर] जीवन को महाकाव्य का विषय बनाया है)

आलोच्य पुस्तक उपन्यास का प्रथम [खंड] है—'वैशाली का विद्रोही राजपुत्र'। [शीर्षक] से जाहिर है कि कथावस्तु ईसापूर्व [छठी] सदी की राजसत्ता के गिर्द है। इसे लेखक [ने] ३२ उपशीर्षकों में बांटा है। यह वि[भाजन] व्यक्तित्व-प्रधान दृष्टि से तो ठीक है, [पर] कथावस्तु के प्रवाह में रस-भंग की [स्थिति] भी लाता है।

इस उपन्यास में महावीर की व्यक्ति[त्व-] प्रधान वैचारिक महागाथा है, और [साथ ही] है आत्म-कथात्मक। लेखक ने इसमें [महा-] वीर-युगीन परिवेश और उनके व्यक्ति[त्व] को लोकव्यापी स्वरूप देने के लिए [मुख्य] तौर पर गल्प, पात्रों के नामों और [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संबंधों के आकलन, भौगोलिक स्थितियों तथा विचार-दर्शन आदि में कल्प-चेतना का सहारा लिया है। क्योंकि महावीर को (जैन धर्म-संप्रदाय में सीमित करने की अपेक्षा) युग-विधाता और युगांतर-दर्शी व्यक्तित्व देना अभीष्ट है। इसी कारण यह कृति विवाद से परे है नहीं। भीतर का कथ्य और संवेदन निसर्गधारा में बहता चलता है, उसमें कहीं-कहीं पिष्ट-पेषण भी हो जाता है। इससे बचा जा सकता था।

सत्योद्घाटन के द्वारा दो टूक बात कहकर महावीर के आत्मकथन के माध्यम से लेखक ने यत्र-तत्र श्वेतांबर और दिगंबर जैनों, ब्राह्मणों-क्षत्रियों की कट्टर सैद्धांतिक मान्यताओं तथा आचारशास्त्रीय सीमा-मर्यादाओं की अच्छी खबर ली है। कथ्य और संवेदना में अतिरंजना के सहारे लेखक ने महावीर को शाश्वत और समकालीन बनाया है। ऐंद्रिय और अतींद्रिय अनुभूति-संवेदन का संयोजन करते हुए उन्होंने आध्यात्मिक चेतना को मनोविज्ञान प्रदान करने की दिशा में अपने ढंग का प्रयोग किया है।

इस खंड में महावीर शिशु, बालक, किशोर, युवक, तपस्वी के रूप में अवतीर्ण हुए हैं। माता-पिता से उनकी ज्ञान-चर्चा सर्वत्र हावी है और उसमें लेखक ने मनोयोग से काम लिया है। माता-पिता द्वारा वर्द्धमान के लिए 'मानू' संबोधन तो संगत लगता है, मगर 'लालू'?

नायक के व्यक्तित्व के उभार में विचार, शैली, संवाद सहायक हुए हैं। काल-विरुद्ध (जैसे चलचित्र, संवादिय आदि) और गढ़े हुए गरिष्ठ शब्दों की भरमार कथा-प्रवाह और भाव-बोध में अवरोध डालती है।

अंत में दी गयी 'प्रस्थानिका' पाठक के मन में उत्पन्न कई भ्रांतियों, अतियों का निवारण करती है और समस्याओं का समाधान भी। फिर भी लेखक ने इतनी स्वतंत्रता अख्तियार कर ली है कि सभी बातों से सहमत होना संभव नहीं।

यह खंड पढ़ने के बाद पाठक में आगामी खंड को पढ़ने की आकांक्षा जागेगी। मुखपृष्ठ आकर्षक है। कहीं-कहीं प्रूफ की गलतियां अर्थ का अनर्थ कर बैठी हैं।

—डा. विष्णु भटनागर

०००

*** छायावादयुगीन स्मृतियां * स्वर्गीय रामनाथ 'सुमन'; द मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, दिल्ली; १९६ पृष्ठ; २० रुपये।**

ये संस्मरण एक संस्कारवान, संवेदनशील चित्त पर पड़े व्यक्ति-प्रतिबिंबों के सुंदर संयोजन हैं, जो इस सत्य को पुष्ट करते हैं कि संस्मरणों में जान स्मरणकर्ता की चेतना से आती है, न कि स्मरण किये जा रहे व्यक्ति या क्षण की महिमा से।

यहां चित्रित कुछ व्यक्ति छायावाद-युग के केंद्रीय व्यक्ति थे, जबकि कई उस युग में जीते हुए भी छायावादी धारा के न थे; परंतु सभी हिंदी को गढ़ने-संवारने में लगन से जुटे हुए थे। लेखक ने उनकी स्तुति न करके उनके इंप्रेशनिस्टिक चित्र प्रस्तुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम उद्योग की कई प्रकार से सेवा करते हैं।

हमसे संपर्क करना आपको सदा लाभप्रद होगा।

(१) पाईप्स–जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इंडस्ट्रीज लि. खोपोली के विक्रेता और स्टॉ...

(२) अल्युमिनियम–हम सभी प्रकार के शीटों और एक्सट्रुडेट सेक्शनों के ... हिन्दालको के एजेन्ट हैं।

(३) केबल–युनिवर्सल केबल्स लि. सतना (म.प्र.) के महाराष्ट्र (विदर्भ, गोवा ... गुजरात को छोड़कर) में बिक्री-एजेंट।

(४) फायर होज–जयश्री टेक्सटाइल एंड इंडस्ट्रीज लि. रिशरा (पं. बंगाल) ... निर्मित; 'वरुण' फ्लैक्स पाइप व 'जयश्री' एंगस R. R. L. होज पाइ... स्टाकिस्ट और वितरक।

एशियन डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड

क्वीन्स मेन्शन, तल मजला, प्रेस्काट रोड, बंबई-१.

तार : "ADPIPE" टेलेक्स : 011-2177 टेलिफोन : २६६६७१-...

हमदर्द

माँ के प्यार के बाद!

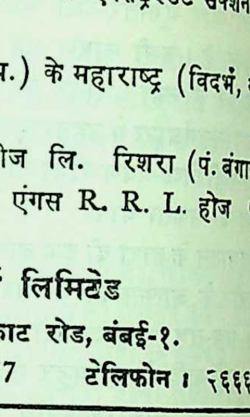

हमदर्द ग्राइप वाटर।
आप के प्यार की तरह कुदरती। इसमें पांच प्राकृतिक द्रव्य सम्मिलित हैं जो आपके बच्चे की कोमल पाचन क्रिया को ठीक करते हैं और पेट की खराबी, दर्द, अफ़ारा और दस्तों में आराम देते हैं।

हमदर्द ग्राइप वॉटर

HT-HGW-3707 A244

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किये हैं, जिनमें उन व्यक्तियों की शक्ति व विशिष्टता के अलावा उनकी विचित्रताओं और दुर्बलताओं की भी झांकी मिलती है।

न्याय-भावना इन पृष्ठों में सर्वत्र उपस्थित है। डा. श्यामसुंदरदास संबंधी संस्मरण उनके ग्रंथकर्तृत्व के साथ जुड़े एक लोकापवाद के जिक्र से शुरू होता है, मगर पाठक के चित्त पर छाप छोड़ता है उनकी अनन्य और कर्मठ हिंदीभक्ति की। निराला की लावा-सम प्रतिभा, उद्दाम वासना, तज्जनित सिफलिटिक चित्त-विक्षेप, उस विक्षेप को भुनाने वालों की पंडागिरी—सब कुछ पढ़ जाने पर अपने को संभालने में असमर्थ और संभाल सकने वाली नारी के सहारे से वंचित उस प्रतिभामय पुरुष के लिए मन में दर्द उठता है।

भीतर से रसार्द्र किंतु ओढ़ी हुई गंभीरता से घुटते हुए आचार्य शुक्लजी; ध्येयनिष्ठ किंतु जूझने में झिझकने वाले पराडकरजी; वेदांत और विज्ञान में अवगाहन करके भी हरसूत्रह्म के चक्कर में फंसे हुए प्रो. रामदास गौड़; रूक्ष, कट्टर हिंदूवादी परंतु 'नीची जात' वालों के लिए गहरी ममता लिये हरिऔध—सभी संश्लिष्ट त्रिविमीय चित्र हैं। किंतु सबसे मनोहारी और हृदयस्पर्शी है 'कादम्बिनी' में कई किस्तों में छपा और खूब पढ़ा गया प्रसादजी संबंधी प्रकरण। न जाने क्यों पुस्तक में यह बात नहीं कही गयी है कि ज्यादातर संस्मरण मूलतः (नवनीत-समेत) विभिन्न पत्रिकाओं में छपे थे।

काशी के कुछ संस्कृतज्ञों के अतिसंक्षिप्त परिचयों को छोड़कर कोई भी स्मृतिचित्र सपाट और इकरंगा नहीं है। पुस्तक दुगुनी बड़ी होती तो भी चाव से पढ़ी जाती।

—ना. व.

०००

*** देवेश : एक जीवनी * सत्यपाल विद्यालंकार; भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली ११०००१; १९६ पृष्ठ; १५ रुपये।**

यह लेखक का आठवां उपन्यास है—उनके मानस-पुत्र देवेश की जीवनी। जीवनी ही नहीं लेखक की अपनी वाणी भी, जिसे उसने स्थान-स्थान पर विचित्र पात्रों पर आरोपित किया है। यहां तक कि कई स्थलों पर, 'आत्मनिवेदन' से लेकर मूल कथा तक, उद्धरण आदि के रूप में दी गयी काव्य-पंक्तियां उपन्यास के प्रवाह में अवरोध उत्पन्न करती हैं; पर वे हैं, क्योंकि लेखक के दिमाग में लड़कपन से घुमड़ रही हैं। उपन्यास का सार उपन्यास की इस पंक्ति में है—'पहले इश्कमजाजी का अनुभव लो, तभी इश्कहकीकी के तुम हकदार होओगे।' (पृष्ठ १४२) उपन्यास के नायक देवेश में पशुता, कामुकता और प्रेम तीनों का दिग्दर्शन है, लेकिन इस सबके बावजूद वह एक आदर्शवादी पात्र ही ठहरता है। भावुक पाठकों को उपन्यास पसंद आना चाहिये।

—सतीश वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

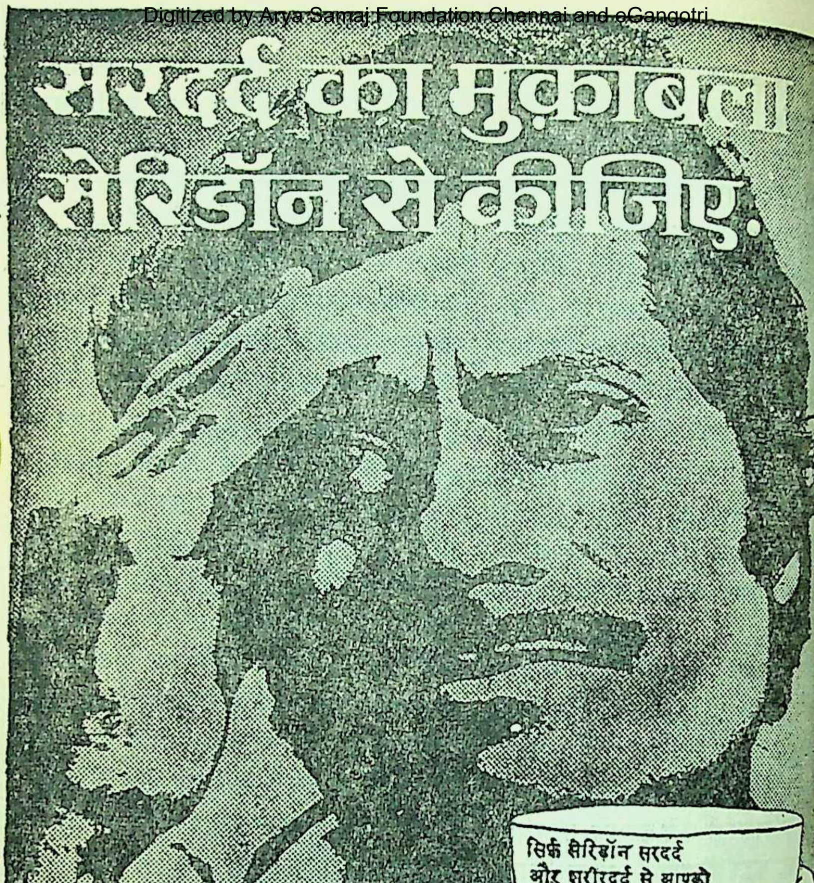

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

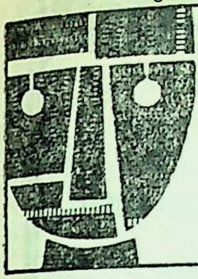

• मित्र

कुछ इधर से कुछ उधर से

एक जहाज भयंकर तूफान में फंस गया। उसमें ३० यात्री थे–१५ आदमी और १५ औरतें। जहाज को बचाने के लिए कप्तान ने यह फैसला किया कि १५ यात्री जहाज छोड़ दें। परंतु समस्या उठी कि कौन-से १५ यात्री जहाज छोड़ें। इसका फैसला कप्तान पर छोड़ दिया गया। उसने सब यात्रियों को एक गोल दायरे में खड़ा किया (चित्र-क) और निश्चय किया कि हर बार वह एक निश्चित स्थान से गिनती शुरू करेगा और जो भी यात्री १३ वां होगा, उसे समुद्र में फेंक दिया जायेगा। इस तरह १५ यात्री फेंक दिये गये। अंत में यह पाया गया कि केवल औरतें बच गयी हैं और सब आदमी समुद्र में फेंक दिये गये हैं। क्या आप बता सकते हैं कि कप्तान ने गोल दायरे में किन-किन नंबरों पर स्त्रियां खड़ी की थीं?

२. अब राजे-महाराजे तो नहीं रहे। लेकिन जब थे, समस्याएं उन्हें भी परेशान करती थीं। एक राजा साहब मृत्युशय्या पर थे और उनकी रानी साहिबा गर्भवती थीं। उन्होंने यह इच्छा व्यक्त की कि यदि उन्हें पुत्र हो, तो राज्य का बंटवारा इस तरह किया जाये कि लड़के को २/३ (दो तिहाई) और रानी साहिबा को १/३ (एक तिहाई) के अनुपात में राज्य मिले; और यदि लड़की हो तो अनुपात यों हो कि लड़की को १/४ (एक चौथाई) और रानी को बाकी ३/४ (तीन चौथाई)।

हुआ क्या कि राजा साहब की मृत्यु नहीं हुई और रानी साहिबा ने जुड़वां बच्चों–एक लड़का और एक लड़की–को जन्म दिया। क्या आप अंदाजा लगा सकते हैं कि यदि राजा साहब की मृत्यु हो जाती, तो राज्य का

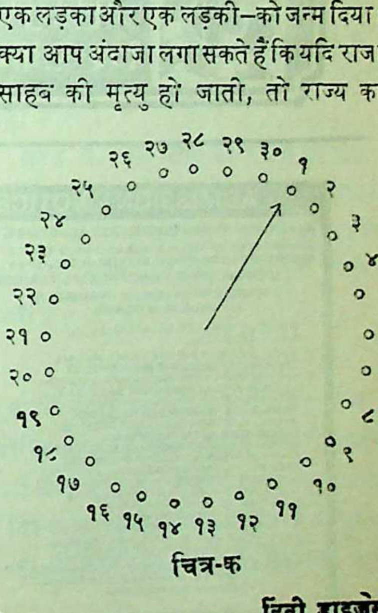

चित्र-क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपने क्यों ? पढ़ा है ?

यदि नहीं, तो भारतीय संस्कृति की आपकी जानकारी सर्वांगीण नहीं है

आज ही **शास्त्रार्थ महारथी पं० माधवाचार्य शास्त्री** द्वारा लिखित

"क्यों ?"

नामक ग्रन्थ मंगाकर पढ़िये और सरल हिन्दी भाषा में अपनी संस्कृति का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त कीजिए

क्यों (पूर्वार्ध)-पृष्ठ-७००-मूल्य १२) रु०

क्यों (उत्तरार्ध)-पृष्ठ-९००-मूल्य १५) रु०

★ १००) रु० के आर्डर पर हमारा मासिक पत्र "लोकालोक" एक वर्ष तक निशुल्क प्राप्त करें। नमूने की प्रति के लिए ५० पैसे का टिकट भेजिए।

★ पुस्तकालयों और पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन की विशेष व्यवस्था।

★ विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाईये।

माधव पुस्तकालय

१०३-ए. कमलानगर. दिल्ली ११०००७

ADMISSION - NOTICE - FOR (BOYS & GIRLS)

APPLICATIONS ARE INVITED FOR ADMISSION IN TO THE FOLLOWING CORRESPONDENCE COURSES

GOVERNMENT OF INDIA & INDIAN UNION STATES RECOGNIZED ENGINEERING DEGREES & DIPLOMAS

(BOYS & GIRLS • ONLY POSTAL TRAINING OFFERED • FOR EMPLOYED & UNEMPLOYED)

(THE COLLEGE OFFERS EXCELLENT OPPORTUNITY TO QUALIFY AS AN ENGINEER)

A.M.I.E. (I), A.M.I.E.T.E. (I), A.M.Ae. S.I. (I), A.M.I.I. CHEM. E. (I).

A.M.I.I.M.E. (I), I.E.R.E. (U.K.) A.M.E. etc. (ALL THE ABOVE COURSES ARE RECOGNISED BY. THE GOVERNMENT OF INDIA AND ALL INDIAN UNION STATES AS EQUIVALENT To B.E. OR B. TECH DEGREE) IN CIVIL, ELECTRICAL, MECHANICAL, CHEMICAL METALLURGICL, MINING, ELECTRONICS & COMMUNICATION ENGINEERING, METAL ENGINEERING: AERONAUTICAL ENGINEERING, ELECTRONICS & RADIO ENGINEERING MARINE ENGINEERING, PRODUCTION ENGINEERING NAVAL ARCHITECT SURVEYOR OF THE INSTITUTE OF SURVEYOR (India), AUTOMOBILE, L.C.E./L.M.E./L.E.E./ & L.C.R.E. RADIO & TV., AGRICULTURE ENGINEERING REFRIGERATION & AIRCONDITIONING ENGINEERING DRAUGHTSMANSHIP : (CIVIL & MECHANICAL ENGINEERING & MANY OTHER COURSES.

ADMISSION QUALIFICATION : S.S.C. or H.S.C. or P.U.C. or Inter. or B.Sc. or Diploma Holders with any subjects.

FOR FULL DETAILED PROSPECTUS & ADMISSION FORM send Rs. 7/- (RUPEES SEVEN ONLY) by M.O. (MONEY ORDER) to : "PRINCIPAL"

GOVERNMENT OF INDIA & INDIAN UNION STATES RECOGNIZED COURSES :-

1 I.C.W.A. COST & WORKS ACCOUNTANT
2 C.A. : CHARTERED ACCOUNTANCY
3 GRADUATESHIP : A.M.I.B.M (India)- Part-"A" & "B" in BUSINESS-MANAGEMENTS.
4 GOVERNMENT OF INDIA : COMPANY SECRETARIES EXAMINATIONS.
5 DIPLOMA : A.I.B.M. (India) in BUSINESS MANAGEMENT.
6 CHARTERED SECRETARIES (LONDON).
7 CITY & GUILDS of LONDON INSTITUTE— DIPLOMA COURSE in INDUSTRIAL ORGANIZATION, MANAGEMENT PLANNING ESTIMATING & COSTING ENGINEERING.

ADMISSION QUALIFICATION : S.S.C. or H.S.C. or P.U.C. or Inter. or B.Sc. or ANY GRADUATE with any subjects.

FOR FULL DETAILED PROSPECTUS & ADMISSION FORM send Rs. 6/- (RUPEES SIX ONLY) by M.O. (MONEY ORDER) to : "PRINCIPAL"

NOTE :- ONLY CORRESPONDENCE COURSES (POSTAL TRAINING) OFFERED FOR ALL ABOVE COURSES FOR EMPLOYED & UNEMPLOYED PERSONS.

INTERNATIONAL COLLEGE OF CORRESPONDENCE

KOTHI No. 17, SOUTH PATEL NAGAR, NEW DELHI-110008

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

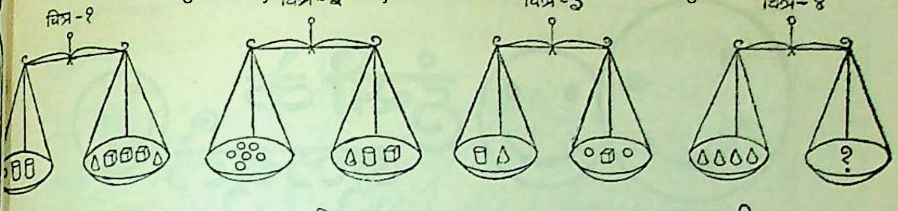

o - चीकू θ - केला ⊡ - आम Δ - नाशपाती

बंटवारा किस तरह किया जाता ?

३. क्या ऊपर के चित्रों में से चित्र-४ को पूरा किया जा सकता है ?

आपको बता दूं कि तराजू पासंग करने के कई तरीके हैं। परंतु शर्त सिर्फ यह है कि कम से कम वस्तुएं दायीं ओर के पलड़े में रखनी हैं। यह भी खयाल रहे कि यह तराजू धर्मकांटा है, भाजी वाले का नहीं।

४. कक्षा में अध्यापक ने अजय को गणित का एक सवाल दिया, जिसमें बाकी (ऋण) के निशान वह लगाना भूल गया। उसे उसने अपनी कापी में इस तरह लिखा और घर चला आया :

५४५४५४५४५४=२८

अब वह परेशान है कि सवाल का सही रूप क्या है ? आप उसकी मदद कर सकते हैं ? उसे इतना तो याद है कि इसमें चार से अधिक बाकी के चिह्न (−) नहीं हैं।

पिछले महीने के उत्तर

प्रश्न १. १ कंघा = २ नारियल
१ चाकू = ४ नारियल
१ रूमाल = ५ नारियल

प्रश्न २. विक्रेता ने ग्राहक को एक टी.वी. और ३९९·७५ रु. रोकड़ दिये। उसकी कुल हानि यही हुई। विक्रेता को टी. वी. १८००·७५ रु. में पड़ा था, इसलिए हानि हुई १८००·७५ + ३९९·७५ रु. = २२००·५० रु.। हो सकता है कि कुछ व्यापारी इस हिसाब से सहमत न हों, क्योंकि 'मुनाफे में घाटा' वाली मद हमने नहीं जोड़ी।

प्रश्न ३. उस भालू का रंग सफेद था; क्योंकि जो प्रश्न दिया गया है, वह उत्तर ध्रुव पर ही लागू होता है। उत्तर ध्रुव क्षेत्र के भालू (पोलर बेयर) का रंग सफेद होता है।

★

बाबू गुलाबराय शय्यागत थे। परंतु जब उनके स्वास्थ्य के संबंध में प्रश्न किया, तो वे तनिक मुस्कराते हुए बोले–'मधुमेह से पीड़ित हूं। यह सर्व-मधुमय जगत का ही प्रभाव है कि अधिकांश भारतवासी मधुमेह रोग से ग्रस्त होते हैं। मेरे मत से महादेवजी भी इस रोग से ग्रस्त होंगे, तभी तो दिन-रात बिल्वपत्र का सेवन करते हैं।' (आयुर्वेद में बिल्वपत्र मधुमेह की एक औषधि है।)

–डा. विनयमोहन शर्मा ('लोकराज' में)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसी के बुलबुले

आलोक मेहरोत्रा

एक लेखिका ने किसी दूसरी लेखिका को पत्र लिखा—'आपका नया उपन्यास पढ़ा, बहुत पसंद आया। किससे लिखवाया?'

लौटती डाक से उत्तर मिला—'प्रशंसा के लिए धन्यवाद। किससे पढ़वाया?'

०००

द्वितीय विवाह करने वाली विधवा ने खाने की मेज पर नये पति से कहा—'तुमसे अच्छा तो मेरा स्वर्गीय पति था। मैं जो भी पकाकर परोस देती चुपचाप खा लेता था।'

'बेचारे को चुप रहना कितना महंगा पड़ा!' नये पति ने मुस्कराते हुए कहा।

०००

'हमारे कर्मचारी दिन में आठ घंटे काम करते हैं, जबकि नरक के कर्मचारियों से दो ही घंटे काम लिया जाता है; ऐसा क्यों?' स्वर्ग-प्रशासन के एक अधिकारी ने दूसरे अधिकारी से पूछा।

'कभी तुमने यह सोचा है कि नरक में स्टाफ कितना ज्यादा है?' दूसरे ने समझाया।

०००

'अरे भाई खूब मिले! जरा चलकर वह छाता तो दे दो, जो पिछले माह तुम मुझसे लाये थे।' एक सज्जन ने सामने से आ[...] सज्जन से कहा।

'भाई, उसे तो मेरा एक मित्र ले ग[...] क्या उसकी बहुत जरूरत है?' दूसरे स[...] ने पूछा।

'मुझे तो नहीं है, पर जिससे मैं उसे ल[...] था, वह कह रहा था कि जिसका छा[...] उसे उसकी जरूरत है।' पहले सज्ज[...] बताया।

०००

एक लालची तथा कंजूस वकील ने अ[...] तैलचित्र बनवाया, जिसमें वह अपने [...] की जेबों में हाथ डाले मुस्करा रहा [...] उसके एक मित्र ने चित्र देखा तो बोला—'[...] इस तैलचित्र में एक गलती है, जिससे [...] अवास्तविक हो गया है।'

'क्या गलती है?' वकील ने चौंककर [...]

'चित्रकार ने तुम्हारे दोनों हाथ तु[...] ही जेब में दिखाये हैं। वास्तविकता तो [...] आती, जब तुम्हारे दोनों हाथ दूसरों [...] जेबों में दिखाये गये होते।' उत्तर मि[...]

०००

'चाचाजी, जन्मदिन पर मिले सारे [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

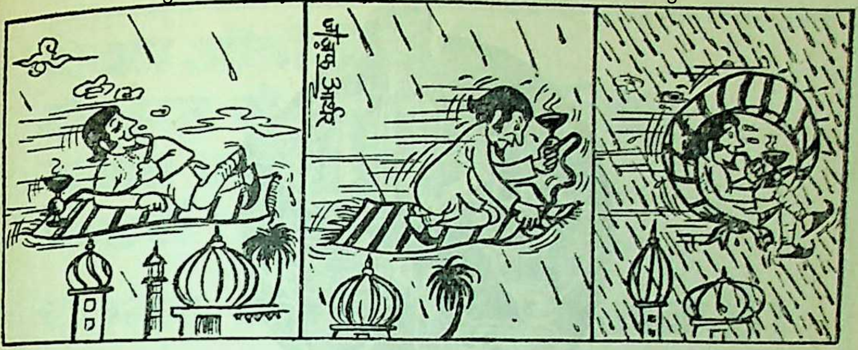

हारों में आपका दिया भोंपू श्रेष्ठ है।'

'क्यों बेटा, उसमें क्या खास बात है।'

'मैं उसे जब भी बजाता हूं, शोर से बचने के लिए मां मुझे दस पैसे देकर बाहर भेज देती है।' पप्पू ने मुस्कराते हुए बताया।

व्यंग्यचित्र : जोजफ आर्थर

[पृष्ठ ४० का शेष]

राजजी को उनके प्रकांड पांडित्य व संस्कृत की असाधारण सेवा के लिए ४ जून १९३४ को महामहोपाध्याय की उपाधि प्रदान की। स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेंद्रप्रसादजी ने उन्हें विशिष्ट विद्वत्ता के लिए प्रशस्ति-पत्र देकर संमानित किया। सन १९६४ में उन्हें 'पद्मविभूषण' अलंकरण से विभूषित किया गया। १९६५ में साहित्य अकादमी ने उनकी कृति 'तांत्रिक वाङमय में शाक्तदृष्टि' को पांच हजार रुपये का पुरस्कार प्रदान किया।

गत वर्ष उत्तर प्रदेश की हिंदी समिति ने उनकी महत्त्वपूर्ण कृति 'तांत्रिक साहित्य' का प्रकाशन किया। गत वर्ष ही १३ सितंबर को उत्तर प्रदेश के राज्यपाल श्री चेन्ना रेड्डी ने उनके निवास-स्थान आनंदमयी आश्रम में आकर राज्य-सरकार की ओर से उन्हें दस हजार रुपये का विशिष्ट पुरस्कार समर्पित किया था। उन्हें डाक्टर की उपाधि से विभूषित करने में देश के विश्वविद्यालय गौरव अनुभव करते थे।

स्वर्गीय गोपीनाथ कविराज ने साहित्य, संस्कृति, योग, तंत्र, पुरातत्त्व, इतिहास आदि के क्षेत्रों में अपने मौलिक चिंतन तथा अनुसंधान से जो विशिष्ट सारस्वत सेवा की और पांडित्य एवं आत्मविद्या का जो समन्वय प्रस्तुत किया, उसके लिए भारत उन्हें चिरकाल तक स्मरण करेगा।

—व्यास निवास, के ३१/५१ कालभैरव,
वाराणसी-१

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

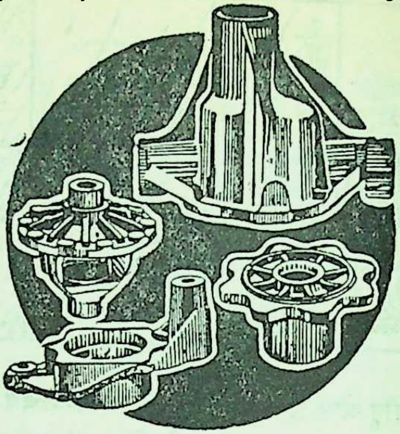

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

का आपको निमंत्रण है, आयात प्रतिस्थापन को सफल बनाइये

एस० जी० आइरन के कास्टिंग

कांसा, पीतल, गनमेटल या लौहेतर धातुओं तथा इस्पात के पुर्जों व हिस्सों का स्थान ले सकते हैं।

मैलिएबल आइरन के कास्टिंग

अनेक प्रकार की चीजों में इस्पात के कास्टिंग का काम दे सकते हैं।

एस. जी. आइरन और मैलिएबल आइरन के कास्टिंगों में उच्च भौतिक गुण होते हैं, वे खरीदने में सुगम, दृढ़ एवं तन्यतायुक्त होते हैं, उनमें घिसाव कम होता है।

संपर्क कीजिये :

फेरसफाउंड्री, पंचपाखाड़ी, पहला पोखरनलेन, थाना (महारा
उच्च श्रेणी के कास्टिंगस् व बचत के लिए डबल हैमर ब्रां
आग्रह कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ओडोमॉस ही दो तरह से आपकी निश्चित सुरक्षा करता है, मच्छरों को दूर भगाकर...

रातभर चैन की नींद सुलाता है!

ओडोमॉस जैसी सुरक्षा आपको अन्य किसी मच्छर-प्रतिरोधक से नहीं मिल सकती:

इसकी गंध मच्छरों को पास नहीं फटकने देती।

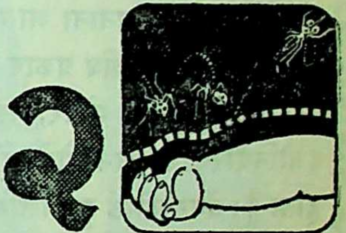

इसमें मिला अद्भुत तत्व रात भर आपकी त्वचा को एक आवरण देकर मच्छरों को दूर रखता है।

इसीलिए ओडोमॉस आज भारत में सर्वाधिक बिकने वाला मच्छर-प्रतिरोधक है।

मच्छरों के हमले से बचिये

ओडोमॉस

की सुरक्षा पाइये!

मच्छर का दुश्मन

यह बच्चों की कोमल त्वचा के लिए भी सुरक्षित है।

बलसारा —सुखी जीवन के लिए आधुनिक साधन

BALSARA

CHAITRA-BLS-86 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाने के लिए विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां 'ब्रोच' उत्पादन परमावश्यक होता है। डॅगर-फोर्स्ट टूल लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये 'ब्रोच' से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.,
पहिला पोखरण रास्ता,
थाना (बंबई)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अक्तूबर १९७६

नवनीत
हिंदी डाइजेस्ट

5/10/76

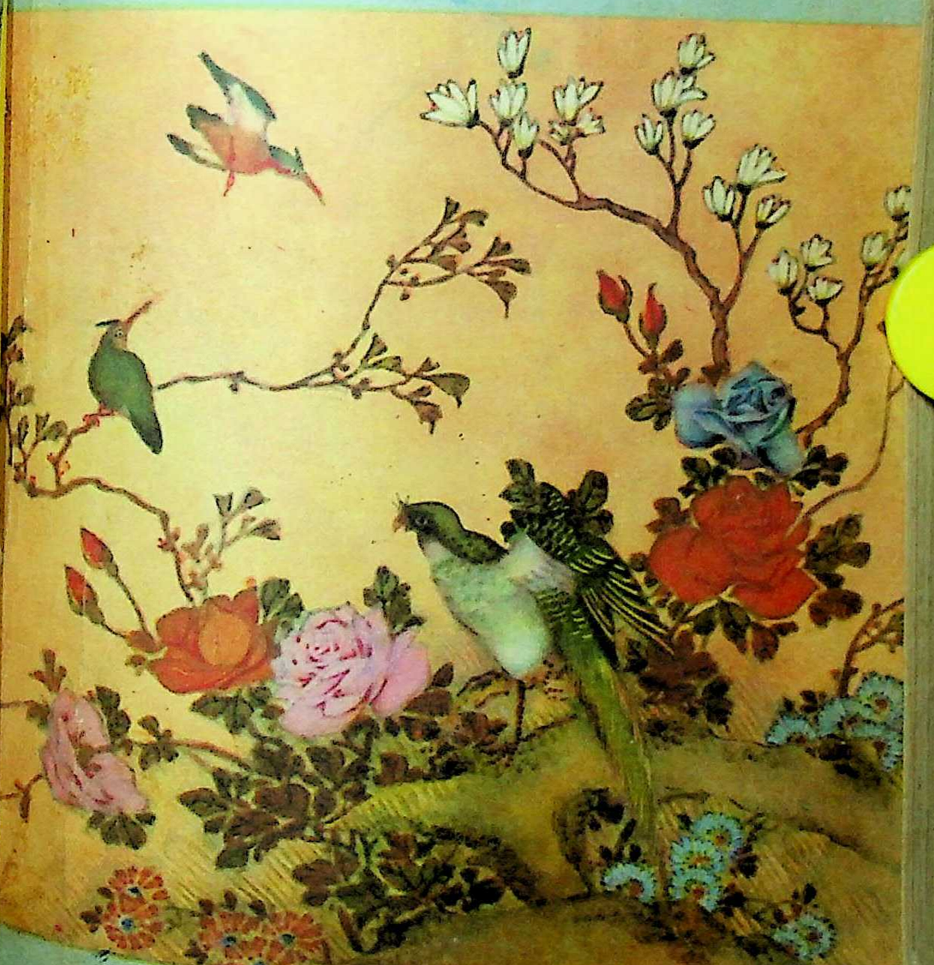

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मूल्य : २ रु.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी उमंग, नयी तरंग

सेन्चुरी के सूती कपड़ों के रंग

सेन्चुरी – १००% सूती कपड़ों के लिए।

दि सेन्चुरी स्पि. एण्ड मैन्यु.
कं. लि. बम्बई-४०० ०२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे अचारों व बेडेकर अचारोंमें फर्क क्या है?

सभी अचारों में नमक, मिर्च, हींग राई, कैरी अथवा नींबू व तेल—ये सभी चीजें डाली जाती हैं। मतलब यह कि वैसे देखा जाय तो दूसरे अचारों व बेडेकर अचारों में कोई फ़र्क नहीं पड़ता। लेकिन फिर भी तो पड़ता है, देखिए ऐसे:

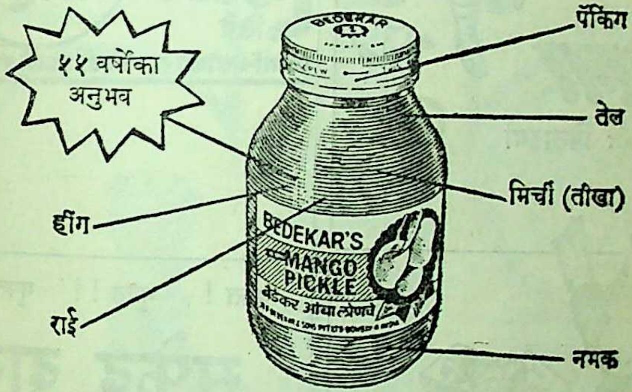

पहला कारण : उसमें डाला गया ऊँचे दर्जे का माल

हरे, कच्चे-कच्चे आम, एकदम लाल रंग की उम्दा मिर्च, सर्वोत्तम हींग, कोई ऐसा वैसा बाज़ारू नमक नहीं बल्कि टाटा का बढ़िया रिफ़ाइण्ड नमक, साफ़ छना हुआ तेल—इन सभी उत्तम चीजों के कारण बेडेकर अचारों का स्वाद बढ़िया होता है और जायका मजेदार!

दूसरा कारण : लम्बा अनुभव

अचार बनाने का लम्बे अरसे का अनुभव, सन् १९२१ से!
अच्छे अचार बनाना इतना आसान नहीं कि चट मँगनी, पट ब्याह! बढ़िया और वह भी कई तरह के अचार बनाना बेडेकर के बस की ही बात है क्योंकि अनुभव लेते लेते बेडेकर के अचार भी अपने ढंग के निराले हो गये हैं।

बेडेकर बम्बई ४.

Vasant/VPB/1-76

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ — एक सौदा करें !

मैं तुम्हें अपने सारे
खिलौने देती हूं,
तुम मुझे दे दो—

गोला

टॉफियां और मिठाइयां

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि.
गोलागोकर्णनाथ, जि.खीरी, उ. प्र.

सेलटेक्स

सेल-टेक्स

- खाज,
- चमड़ी फटने,
- खरोंच तथा
- फुन्सीयों के लिये

दाद का मलहम

फार्म-मेडीको (इण्डीया) प्रा.लि.

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

सफेद दाग

हमारी आयुर्वेदिक दवा शिवि... सेवन से ९९ प्रतिशत सफेद दा... रोगी चंगे हो रहे हैं। इससे तीन... में ही दागों का रंग बदलने लग... रोगी विवरण लिखकर शीघ्र एक... दवा मुफ्त मंगा लें।

इन्दिरा आयुर्वेद भवन
कतरीसराय (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपने क्यों ? पढ़ा है ?

यदि नहीं, तो भारतीय संस्कृति की आपकी जानकारी सर्वांगीण नहीं !

आज ही **शास्त्रार्थ महारथी**
पं० माधवाचार्य शास्त्री द्वारा लिखित
"क्यों?"
नामक ग्रन्थ मंगाकर पढ़िये और सरल हिन्दी भाषा में अपनी संस्कृति का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त कीजिए

क्यों (पूर्वार्ध)-पृष्ठ-७००-मूल्य १२) रु०
क्यों (उत्तरार्ध)-पृष्ठ-९००-मूल्य १५) रु०

★ १००) रु० के आर्डर पर हमारा मासिक पत्र "लोकालोक" एक वर्ष तक निशुल्क प्राप्त करें। नमूने की प्रति के लिए ५० पैसे का टिकट भेजिए।
★ पुस्तकालयों और पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन की विशेष व्यवस्था।
★ विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाईये।

माधव पुस्तकालय
१०३-ए. कमलानगर. दिल्ली ११०००७

होटलों में अति तीखा खाने से मुंह में जलन आना, चर्मरोग, फुन्सियां, खुजली, माता, खांसी तथा बवासीर, रक्तपात आदि से पीड़ित हों....

तब चरक का

गुलकंद

प्रवाल पिष्टी, रूपा, वंशलोचन युक्त उपयोग करें, आंतरिक तथा मानसिक स्वस्थता के लिये तमाम औषधि विक्रेताओं से प्राप्य।

CHARAK PHARMACEUTICALS चरक BOMBAY

चरक फार्मास्युटिकल्स (इंडिया) प्रा. लि., बम्बई-४०००११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

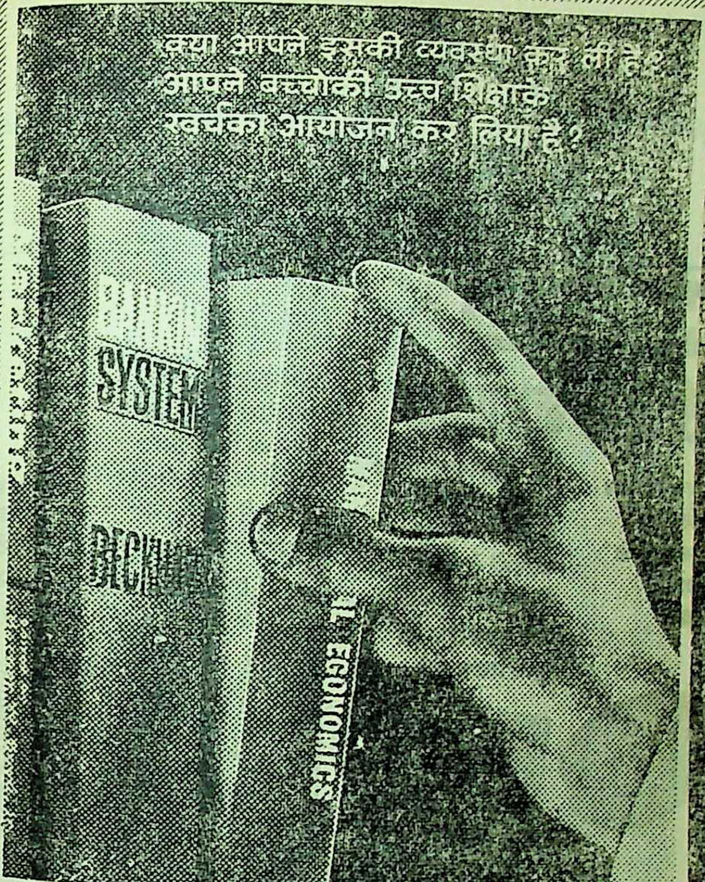

जब आपके बच्चें उच्च शिक्षा पानेके योग्य हो पायेंगे तब उनकी शिक्षाका खर्च आप उठा सकेंगे ?
देना बैंक में बचत खाता या मीयादी जमा खाता खोलकर अभीसे नियमित बचत कीजिये।

देना बैंककी अन्य ६ बचत योजनाएं –

नाबालिग बचत योजना • आवर्ती जमा योजना • मासिक बचत व वार्षिकी योजना • बहुप्रयोजनीय जमा योजना • नकदी प्रमाणपत्र बीमा संबद्ध बचत जमा योजना

देना बेंक

(गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया अंडरटेकिंग)
हेड ऑफिस : हॉर्निमेन सर्किल,
बम्बई ४००००१.

Ratan Batra/DB/H/238-A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

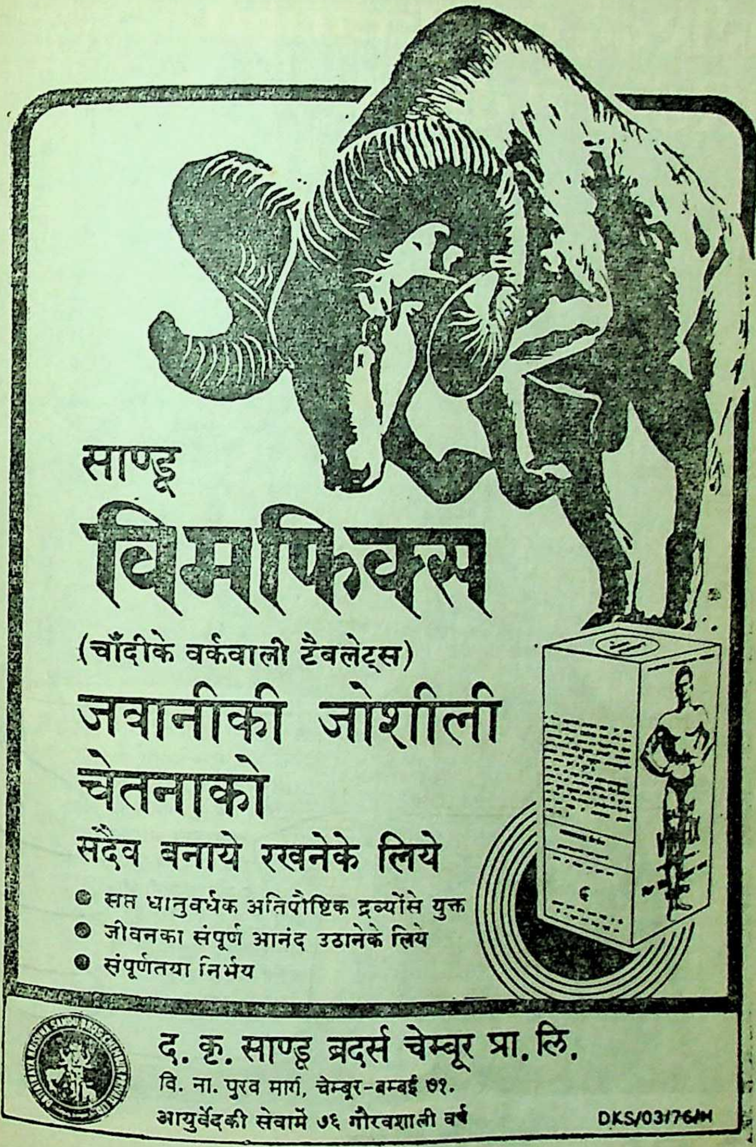

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

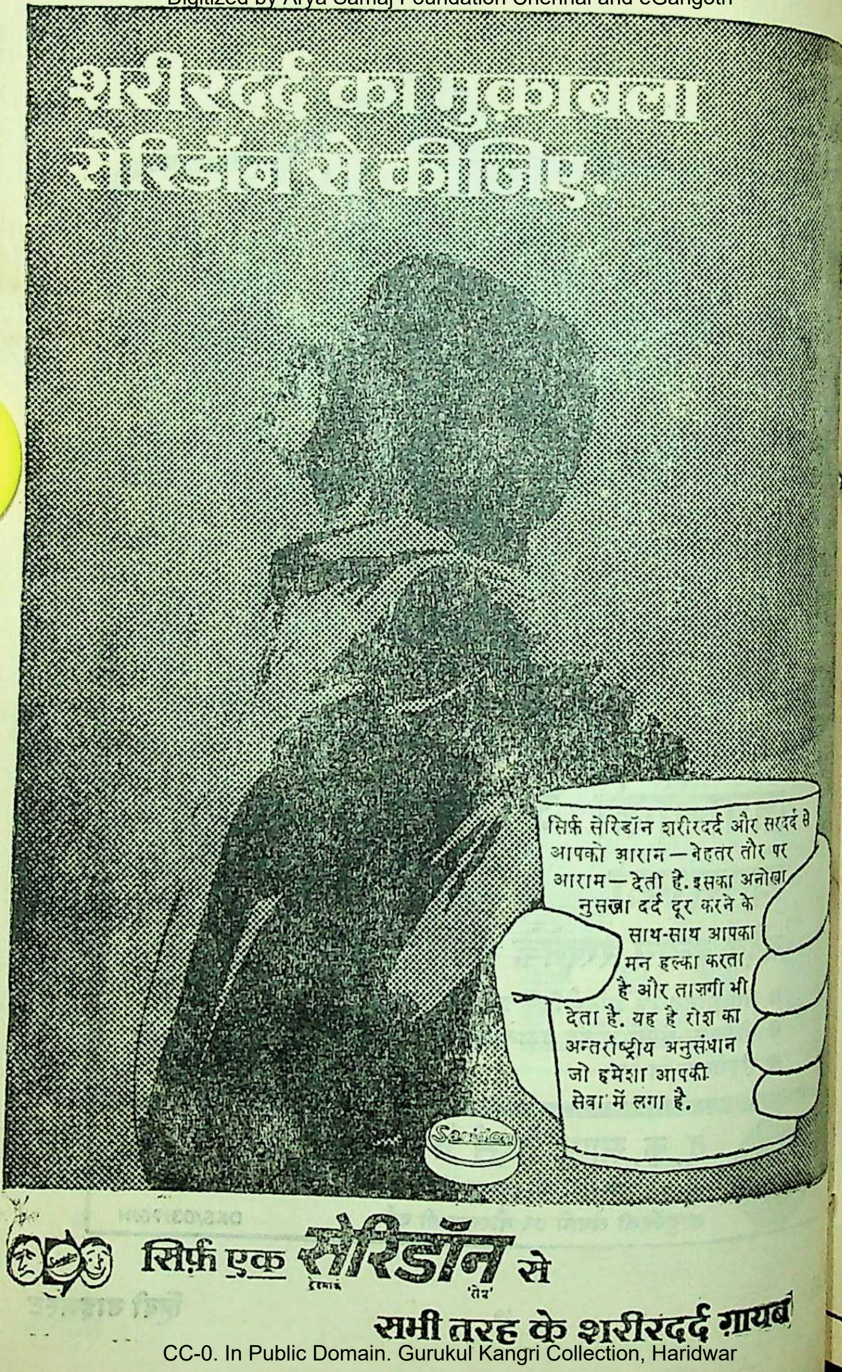

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जब भी Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
पानी के साथ बहा देती हैं. इसलिये अब बाल धोने के लिये लाइये...

स्वस्तिक
शिकाकाई
शैंपू साबुन

लिक्विड शैंपू के सभी गुणों से युक्त... और ख़र्च कम!

स्वस्तिक शिकाकाई शैंपू साबुन में शिकाकाई मिला है—भारतीय महिला के मनोरम बालों का पारम्परिक रहस्य.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वालियर रेयन के
२६
गौरवशाली वर्ष

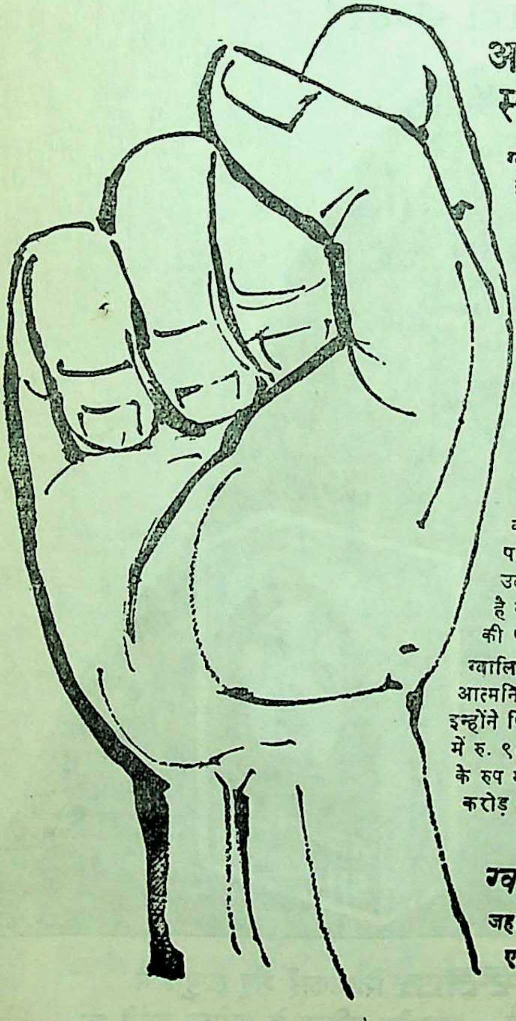

आत्मनिर्भरता का स्वप्न साकार

ग्वालियर रेयन ने देश के आज़ाद होने के साथ ही साथ रेयन वस्त्र, स्टेपल रेशे, रेयन-ग्रेड पल्प ओर रेयन स्टेपल रेशे बनानेवाले प्लांट की मशीनों का निर्माण शुरू कर दिया.

ग्वालियर रेयन, बांस व अन्य ... लकड़ियों से रेयन-ग्रेड के घुलनशील पल्प तथा रेयन, पल्प व संबंधित ... की आधुनिक मशीनों के अग्रणी ... हैं तथा रेयन उद्योग के क्षेत्र में देश ... आत्मनिर्भर बनाने के लिए प्रयत्नशील ...

आज ग्वालियर रेयन के स्टेपल रेशे ... उत्पादन, ५ करोड़ २० लाख देशवासियों की वस्त्र की जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त है. लकड़ी के पल्प का वार्षिक उत्पादन, एक लाख टन से भी ज्यादा ... है जो सेल्यूलोस के रेशों की दृष्टि से ... की ५.२ लाख गांठों के बराबर है.

ग्वालियर रेयन ने देश को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया ... इन्होंने पिछले दस वर्षों में, राष्ट्रीय अधिकोष ... में रु. ९० करोड़ से भी ज्यादा धनराशि टैक्स के रुप में दी और इसी दौरान रु. ३६० करोड़ की विदेशी-मुद्रा भी बचायी।

ग्वालियर रेयन
जहां राष्ट्र की प्रगति ही एकमात्र उद्देश्य है

दि ग्वालियर रेयन सिल्क मैन्यु. (वीविंग) कं. लि. ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत

वर्ष २५ : अंक १० * इस अंक में * अक्तूबर १९७६

पत्र-वृष्टि	१३	संपादक की डाक से
प्रतिरक्षा-उत्पादन में स्वावलंबन	२०	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
राष्ट्रनायक, जो विद्रोही कवि था	२८	प्रयागनारायण
पाठशाला यानी प्रयोगभूमि	३३	श्री मोटा
जीवन-तीर्थ	३४	अखिलेश सिन्हा
कला-चिंतन	३६	एन. एस. बेंद्रे
वाक्यदीप	३९	....
अयोध्या की हकीकत	४०	बलराम श्रीवास्तव
श्रद्धा-स्मरण (कविता)	५०	दिनकर सोनवलकर
बारहमासा	५२	चरन शर्मा
मिजो और उनका समाजिक जीवन	५३	आर. एल. थान्जाव्ना
भोंडा बतख-बच्चा	५७	हांस क्रिश्चन एंडरसन
विज्ञान-बिंदु	६०	केजिता
लेबनान से एक और पत्र	६२	निरंजन
सदुपयोग ही पूजा है	६४	....
क्रिकेट का राजाधिराज	६५	शिवेंद्र गुप्त
स्मृति के अंकुर	६९	वर्मन, जैन, ठाकुर, सिंह
नयी धरती, नये लोग	७२	स्टीफेन विन्सेन्ट बेनेट

संस्थापक	संपादक	सहसंपादक	व्यापार-व्यवस्थापक
स्व. श्रीगोपाल नेवटिया	नारायण दत्त	सुरेश सिन्हा	महेंद्र महेता
प्रवंध-संचालक	उपसंपादक	सज्जाकार	प्रबंधक
हरिप्रसाद नेवटिया	गिरिजाशंकर त्रिवेदी	ठाकोर राणा	सोहनराज पारेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगूरी से इलाज	७८	विश्वंभरनाथ
ट्रांसफर (हिंदी कहानी)	८०	प्रतिमा वर्मा
नख से शिख तक भारतीय	८४	शमां अख्तर
पाकिस्तानी पंजाबी कविता	८८	डा. नरेश
अंतिम अवशेष	९३	श्रीनिधि सिद्धांतालंकार
नैतिकता जीवन म	११५	सुरजीत
पांच छोटी कविताएं	११७	कुमार प्रशांत
दांपत्य के दस गुर	११८	डेविड गन्स्टन
यह पुस्तक समर्पित है	१२२	ब. सिं.
भगवान का घर	१२३	बेन वेक्स
चुभन (मराठी कहानी)	१२४	दि. बा. मोकाशी
एक पश्चात्ताप मेरे आगे	१३३	नीला चावला
ग्रंथ-लोक	१३६	सिन्हा, भानावत, सिंह, क. मि.
लेखक और लेखन	१३९	बकुल त्रिपाठी
हंसी के बुलबुले	१४३	कुमार, मेहरोत्रा, सु.
......शरमाने के पीछे	१४६	जूडिथ-एलन ब्राउन
खगोलिकी में क्रांति	१४९	निरंकार सिंह
विद्या और व्यवहार	१५६	गोविंद शास्त्री
पुस्तकालय और पाठक	१५७	अखिल
उर्दू कवि : पांच प्रसंग	१५९	नरेश कुमार शाद

★

चित्रसज्जा : बेंद्रे, कार्क, गुन्नार क्रोलिस, ओके, शेणै, शरद कांबळी, चरन शर्मा, वि... भटनागर, इंदु रस्तोगी, राणा और सतीश चव्हाण।

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत हिंदी डाइजेस्ट, ३४१, ताडदेव, बंबई-... फोन : ३७२८४७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, अशीष बि... ३३५, बेलासिस रोड, ताडदेव, बंबई-३४. फोन : ३९२८...

चंदे की दर : (भारत में) एक वर्ष २० रु.; दो वर्ष ३८ रु.; तीन वर्ष ५४ रु.। भारत में नवनीत का आजीवन सदस्यता-शुल्क ४०० रुपये है।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४ के लि... प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस,** ३६/४८ खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बंबई-४ में मुद्रित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र-वृष्टि

नवनीत और दिनमान देखने से पहले हिंदी पत्रिकाओं के संबंध में मेरी राय बहुत अच्छी नहीं थी। लेकिन अब स्थिति यह है कि पिछले एक वर्ष से **नवनीत** का कोई भी अंक ऐसा नहीं रहा है, जिसे मैंने पूरा 'चाट' न डाला हो। जानने योग्य बातों को स्तरीय भाषा में रोचक ढंग से प्रस्तुत करना वास्तव में एक कठिन कार्य है और मुझे इस बात की खुशी है कि **नवनीत** ने उक्त कठिन कार्य को लगातार सफलतापूर्वक किया है।

सितंबर अंक में प्रकाशित 'एन्टेबे में ५३ मिनट का नाटक' इस विषय पर अब तक हिंदी-अंग्रेजी में मेरे पढ़ने में आयी सभी रपटों में श्रेष्ठ लगा।

—अरविंद शर्मा, इलाहाबाद—३

०००

जैसे फिल्मों में वैसे ही लेखन में भी हास्य के नाम पर हमारे यहां स्लैपस्टिक ही अधिक चलता है। शब्दों की लक्षणा-व्यंजना शक्ति के आधार पर विनोद उत्पन्न करने वाला हास्य-लेखन हमारे यहां कम ही लिखा और उससे भी कम पढ़ा जाता है। ऐसे में इफ्राइम किशोन के 'टिप कितनी दें' जैसे लेख का रसास्वादन कितने पाठक कर पाये होंगे, कहना कठिन है। टिप के प्रसंग में एक बात याद आयी। अमरीका में टिप के विषय में भी विविध सर्वेक्षण होते रहते हैं। एक सर्वेक्षण में यह देखा गया कि जब चार-छह लोग एक साथ जाकर खाना खाते हैं, तब अगर वे अलग-अलग बिल बनवाते हैं तो बैरे को सामान्य की अपेक्षा अधिक टिप मिलती है (१९ प्रतिशत); मगर जब बिल एक ही बनता है तो टिप सामान्य से कम (१३·५ प्रतिशत) मिलती है। सामान्य दर है—१५ प्रतिशत। **—प्रतिभा कुमारी वर्मा, कानपुर**

०००

नवनीत बड़ा सुंदर निकल रहा है। उसमें सामग्री का चयन अत्यंत सूझबूझ तथा परिश्रम से कर रहे हैं आप लोग। रचनाओं में विविधता खूब रहती है। मेरा हार्दिक अभिनंदन स्वीकार करें।

—यशपाल जैन, नयी दिल्ली

०००

अमरीकी स्वाधीनता की द्विशताब्दी पर जुलाई अंक बहुत उपादेय रहा। इस अंक के लेखों में वर्णित अनेक ऐतिहासिक स्थानों को अपने अमरीका-प्रवास में देखने के कारण यह अंक मुझे बहुत अच्छा लगा। आपके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेख 'अमरीकी मित्रों से' में आपकी स्पष्ट-वादिता और चेतावनी बहुत सामयिक रही। 'परिहासिनी' ने पुरानी स्मृतियां जागृत कर दीं। 'पार्क रोड का वह मकान' में अंग्रेजी शब्दों के बदले हिंदी के शब्द प्रयोग किये जा सकते थे। प्रचलित अंग्रेजी शब्दों पर मुझे कोई आपत्ति नहीं है; परंतु इस कहानी में प्रयुक्त अधिकांश अंग्रेजी शब्दों को हिंदी पाठक नहीं समझ सकेंगे।

—व्योहार राजेंद्रसिंह, जबलपुर

०००

अगस्त अंक की चित्रसज्जा हमेशा की तरह पसंद आयी। मगर डा. भटनागर जैसे कुशल चित्रकार का एक चित्र (पृष्ठ ७८) अच्छा होते हुए भी खल गया। उसमें दायां पंजा कितना गलत है! **—प्रणय, रीवा, म.प्र.**

०००

नवनीत मेरे घर का अभिन्न सदस्य है। **नवनीत** में प्रकाशित सूक्तियां और आदर्श-वाक्य मुझे अत्यधिक प्रभावित करते हैं। वाक्यदीप और आरंभ का ३३ वां पृष्ठ जब पढ़ता हूं, तो लगता है– इन्हें चौबीसों घंटे मेरी आंखों के सामने रहना चाहिये। आज **नवनीत** के चौदह से भी अधिक पृष्ठ कांच में जड़े हुए मेरे घर में दीवारों पर टंगे हुए हैं और उन्होंने आश्चर्यजनक रूप से मेरा मार्गदर्शन किया है–मित्रों और किताबी गुरुओं से अधिक। क्या गुरु-दक्षिणा दूं **नवनीत** को?

—राकेश टंडन, शिवपुरी, म. प्र.

०००

'मजबूत काठी में नरम-सा दिल' [illegible] अंक) में श्री उदयन शर्मा ने लिखा [illegible] हमारे हाकी-दल के कप्तान श्री [illegible] सिंह ने निश्चय किया है कि यह [illegible] अंतिम अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता [illegible] तो क्या अजितपाल को इसका पूर्वा[illegible] हो गया था कि मांट्रियल में हमारी [illegible] दुर्गति होगी? आज हम कितने [illegible] है! जो देश हमसे हाकी की तकनीक [illegible] कियों की जानकारी लेते रहे, वे आज [illegible] हाकी के मालिक बन गये हैं। हमारी [illegible] का भविष्य क्या है, भगवान ही जाने।

—अजयकुमार सिंह, [illegible]

०००

नवनीत मेरे जैसे देहाती किसान के [illegible] भी अच्छा मित्र साबित हो सका है। [illegible] विषयों को सार रूप में समेटे नवनीत [illegible] जैसे अनेक पाठकों के लिए एक [illegible] पुस्तकालय की आवश्यकता की पूर्ति [illegible] है। जीवनोपयोगी लेख और रचना[illegible] ताएं **नवनीत** में मिलती हैं। इस [illegible] पुस्तक-संक्षेपों से मैं बहुत प्रभावित [illegible] 'आजादी आयी आधी रात' (फरवरी [illegible] 'लिडिस जिंदा है' (अगस्त)।

—लीला बहादुर पौडेल
सोनारेत, भैरहवा, [illegible]

०००

अगस्त अंक में 'लिडिस जिंदा है' [illegible] आया। मुझ-जैसे दूर देहात के पाठक [illegible] छोटे शहरों के निवासी चाहकर भी [illegible] पुस्तकें खरीद नहीं पाते हैं। आप [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्गीय वि. स. खांडेकर

श्रद्धांजलि

* स्वाधीनता-संग्राम के दिनों मे अग्निमय गीत उगलने वाले बंगला कवि काजी नजरुल इस्लाम (जन्म : २३ मई १८९९) दीर्घकाल तक मूक रहने के बाद २९ अगस्त १९७६ को ढाका में चिरमौन में विलीन हो गये।

* गांधीयुगीन चेतना को सुभगतम साहित्यिक अभिव्यक्ति देने वाले तथा १९७५ के ज्ञानपीठ पुरस्कार द्वारा संमानित मराठी उपन्यासकार श्री विष्णु सखाराम खांडेकर (जन्म : १९ जनवरी १८९८) २ सितंबर को मिरज में स्वर्गस्थ हुए।

* हिंदी के हास्य-साहित्य को ५० से अधिक उपन्यास एवं ३०० से अधिक कहानियां प्रदान करने वाले श्री जी. पी. श्रीवास्तव (पूरा नाम श्री गंगाप्रसाद श्रीवास्तव—जन्म-२३ अप्रैल १८९४) का १ सितंबर को गोंडा (उ. प्र.) में देहावसान हो गया।

इन सब साहित्योपासकों को नवनीत-परिवार की विनम्र श्रद्धांजलि।

ooooooooooooooooooooooooooooooo ooooooooooooo ooooooooo

पुस्तकों के सार देकर हमारा बड़ा उपकार कर रहे हैं। मेरी सलाह है कि आप 'सार-सरोवर', 'घर-परिवार', 'तंदुरुस्ती नियामत' तथा 'शब्दवेध' नाम के अपने पुराने स्तंभ फिर चालू कर दें। उनसे परिवार के सभी सदस्यों को अपनी पसंद की चीज मिलेगी; पत्रिका की लोकप्रियता भी बढ़ेगी।

—रणजीत राय रसिक,
कोइली भराव, मुजफ्फरपुर, बिहार

ooo

आपकी बारहमासा-चित्रावली में श्री चरन शर्मा ने श्रावण मास के चित्र की जो अनुकृति दी है, उसके विवरण के अंतिम वाक्य में लिखा है— 'श्रावण पर्वों का महीना है—कृष्ण के जन्म का महीना भी तो यही है।' यह गलत है। भगवान कृष्ण का जन्म भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की अष्टमी की रात्रि को हुआ था।

—गोपालकृष्ण अग्रवाल, जोधपुर

* इस विषय में हमें श्री सुरेंद्रसिंह रतनू (नागौर) आदि के भी पत्र मिले हैं। महाराष्ट्र, आंध्र, कर्नाटक आदि में प्रचलित शक संवत् की गणना के अनुसार कृष्णजन्माष्टमी वाला कृष्णपक्ष श्रावण मास में ही पड़ता है। संशोधित राष्ट्रीय पंचांग के अनुसार भी कृष्णजन्माष्टमी श्रावण में ही आती है। **—संपादक**

ooo

श्री उमाकांतजी की 'एक और शकुंतला कालिदास की प्रतीक्षा में' (अगस्त अंक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने लेखकों से

श्री संपादकजी, कृपया मुझे बतायें कि नवनीत में आप कैसी रचनाएं लेते हैं? इस आशय के अनेक पत्र हमें प्रतिदिन मिलते हैं। नवनीत के कुछ अंक देखने से भी इस प्रश्न का उत्तर मिल जायेगा। फिर भी यदि आप हमसे ही जानना चाहें, तो हम कहेंगे कि निम्नलिखित ढंग की रचनाएं हमें नहीं चाहिये।

क. जो जीवन में अनास्था जगायें, देश के विभिन्न समुदायों में स्नेहसूत्र तोड़ें, व्यक्तिगत आक्षेप करें, सहज-स्वस्थ सुरुचि को ठेस पहुंचायें; या जो कैलेंडर देखकर पर्वों, जयंतियों और पुण्यतिथियों के उपलक्ष्य में लिखी गयी हों।

ख. आपके अन्यत्र प्रकाशित लेख का नया संस्करण, कश्मीरी कविता का वाया तमिल उल्था, अल्बर्तो मोराविया के 'रोम की औरत' का भारतीय रूपांतर 'कौशांबी की कामकन्या,' सर्वविदित हास्योक्तियों का श्रेय आपके जिला-महाकवि या तहसील-राजनेता को देने वाले विनोद-प्रसंग।

ग. इन विषयों से हमें परहेज है – वेदों में हृदय-प्रतिरोपण, कोसी कलां के जंगल में जिराफ और बबरशेर की मुठभेड़, कामायनी में क अक्षर का प्रयोग, महावानर पुराण में मिर्जापुर का उल्लेख, कड़वी लौकी के रस से सर्वरोगों का उपचार, इत्यादि-इत्यादि।

* लेखमालाएं या मास-भविष्य लिखने के आश्वासन कृपया हमें न दें; न एक साथ सवा सत्ताईस कविताएं भेजें।
* रचना पर्याप्त हाशिया और पंक्तियों के बीच पर्याप्त स्थान छोड़कर सुंदर अक्षरों में कागज के एक ओर लिखकर या टाइप करवाकर भेजें। भेजने से पहले उसे एक बार पूरे मनोयोग से अवश्य पढ़ लें, भले उस दिन के बजाय अगले दिन की डाक में भेजनी पड़े। कार्बन-कापी न भेजें। लेख के आरंभ या अंत में अपना पूरा डाक-पता दें।
* रचना के साथ टिकट लगा और पूरा पता लिखा लिफाफा अवश्य रखें। अन्यथा रचना लौटायी नहीं जायेगी, न उसके बारे में पत्र-व्यवहार होगा।
* रचनाएं किसी व्यक्ति के नाम पर नहीं, निम्नलिखित पते पर भेजें।

संपादक—नवनीत हिंदी डाइजेस्ट,
नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ताडदेव, बंबई—३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़कर मेरा उनसे निवेदन है कि यदि वे स्वयं कालिदास की भूमिका वहन करें, तो एक मार्मिक प्रेमकथा जो पुराणों के पन्नों में छिपी पड़ी है, जनमानस के सम्मुख अद्वितीय रूप लेकर प्रस्तुत होगी।

इसी अंक में नलिनजी के बारे में पढ़कर आंखें पुनः नम हो गयीं। हां, इस अंक में युद्ध एवं विज्ञान संबंधी सामग्री का बाहुल्य रहा। **–सूरजप्रकाश नंदा, इलाहाबाद**

०००

आपके श्रेष्ठ डाइजेस्ट का मैं प्रशंसक हूं। परंतु वैज्ञानिक लेखों में मैंने पहले भी संपादकीय त्रुटि देखी है। जून अंक में डा. अरुणकुमार मिश्र लिखित 'फाज' अच्छा निबंध था। मगर उसका प्रारंभ चौंका देने वाला था। डा. मिश्र ने 'कालराफाज' को हैजे की प्रमुख दवा बताया है, जिसे 'अनपढ़ देहाती भी' जानते हैं। मैंने औषध-विज्ञान की प्रायः सभी सम्मानित एवं नवीनतम किताबें इस सिलसिले में देखी हैं, परंतु दवा के रूप में 'कालराफाज' का जिक्र उनमें कहीं नहीं पाया। हां, 'कालराफाज' का उपयोग महामारी फैलने पर कालरा-जीवाणु की जाति, वर्ग आदि का पता लगाने के लिए अवश्य किया जाता है।

दूसरी बात वैज्ञानिक शब्दों के संबंध में। इसी लेख में कहीं तो हिंदी शब्द पहले देकर कोष्ठ में अंग्रेजी शब्द दिये गये हैं, कहीं क्रम इससे उलटा है। ऐसा क्यों? मेरे खयाल में हमें वैज्ञानिक शब्दों के हिंदी रूपांतर के विषय में उदार होना चाहिये। परंतु यदि आप मानते हैं कि हिंदी के शब्द आगे चलकर प्रचलित होंगे, तो उनके आगे कोष्ठ में अंग्रेजी शब्द दे दें या लेख के अंत में छोटा संदर्भ-कोश दे दें। इस विषय में निश्चित नीति की आवश्यकता है।

–राजेंद्रकुमार झा, दरभंगा

०००

श्री देवलियाजी (पत्रवृष्टि, अगस्त अंक) निश्चित रहें कि हिंदी साहित्य के पाठ्यक्रम में स्थान पाकर धन्य होने की कोई तमन्ना बंगला, मराठी, तमिल, तेलुगु, आदि भाषाओं को पीडित नहीं कर रही है। श्री अश्कजी की बात को वे जान-बूझ कर गलत समझ रहे हैं। हिंदी वाले उर्दू को हिंदी की एक शैली भी कहें और उसे हिंदी के पाठ्यक्रम में स्थान देने से इन्कार भी करें, यह 'कड़वा-कड़वा थू थू, मीठा-मीठा गप्प' वाली नीति चलने वाली नहीं है। हिंदी-उर्दू के झगड़े में तटस्थ होते हुए भी मेरी तरह हजारों गैर-हिंदी-भाषी (मेरा मतलब मातृभाषा से है) यह सोचने को विवश हैं कि हिंदी का अगर अपनी जुड़वां बहन के साथ यह सलूक है, तो पूरी तरह राजभाषा बन जाने पर हमारी भाषाओं के प्रति उसका रवैया क्या होगा। **–गो. ना. नरहरि, बेंगलूर-४**

(१)

श्री अश्कजी द्वारा उठाये गये सभी मुद्दे महत्त्वपूर्ण हैं और मैं उनके विचार से सहमत हूं।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के लगभग तीस वर्षों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पश्चात् भी यदि हिंदी अपने संकीर्ण दायरे से बाहर नहीं आ पायी है, तो सारा दोष उन्हीं लोगों का है, जो हिंदी के प्रचारक-प्रसारक व हितैषी बनते हैं और जो समय एवं परिस्थितियों के अनुसार बदलना नहीं चाहते।

१. आज हिंदी का ऐसा रूप जनता के समक्ष प्रस्तुत किया गया है कि हिंदी का नाम लेते ही वे संस्कृतनिष्ठ क्लिष्ट शब्द हमारे मस्तिष्क में उभर आते हैं, जिनकी नकल करके हिंदी-विरोधी हिंदी की खिल्ली उड़ाते हैं। यदि हम कोई भी अंग्रेजी का शब्दकोश उठाकर देखें तो उसमें ढेर सारे हिंदी के शब्द पायेंगे। बंबई से प्रकाशित दो अंग्रेजी की फिल्म-पत्रिकाएं (जिनकी बिक्री बहुत ज्यादा है।) लेखों व समाचारों तक में हिंदी के शब्दों का प्रयोग करती हैं। यदि अंग्रेजी भाषा हिंदी के शब्द अपना सकती है, तो हिंदी क्यों नहीं अंग्रेजी, उर्दू व अन्य भाषाओं के प्रचलित शब्द अपना सकती? और यदि कोई हिंदी लेखक वैसा करता है तो उसकी भाषा को खिचड़ी क्यों कह दिया जाता है?

२. यदि हम पर्यवेक्षण करें तो यह जानकर हमें अत्यधिक आश्चर्य होगा कि इन वर्षों में हिंदी का सर्वाधिक भला करने वाले लोग वे हैं, जिनकी हिंदी जगत् में कोई पूछ नहीं। स्वतंत्रता-प्राप्ति के पश्चात् हिंदी के प्रचार-प्रसार में जितना योगदान हिंदी फिल्मों का है, उतना किसी का नहीं। लेकिन यह कैसी विडंबना है कि इन फिल्मों के निर्माताओं, निर्देशकों, गीतका[रों] लेखकों को हिंदी जगत् ने हमेशा हिका[रत] की दृष्टि से देखा है। यदि योजनाब[द्ध] रीति से हिंदी फिल्मों के निर्माताओं-लेख[कों] को विश्वास में लाकर उन्हें उनके योग[दान] का परिचय कराकर, हिंदी के सुफल प्रचा[र] हेतु मार्गदर्शन किया जाये तो हिंदी अ[पने] गंतव्य पर शीघ्रता से पहुंचेगी।

३. यह एक कटु सत्य है कि संपूर्ण दे[श] में कोई उच्च कोटि का हिंदी का समाचा[र]-पत्र नहीं। अंग्रेजी समाचारपत्रों की पृ[ष्ठ]-संख्या प्राय: १२ से २४ तक होती है, जबकि हिंदी के राष्ट्रीय स्तर के समाचारपत्रों की पृष्ठसंख्या भी कभी १२ से ऊपर नहीं होती। इसका क्या कारण है? क्या कु[छ] समाचार लेख व टिप्पणियां अंग्रेजी में ही छप सकती हैं, हिंदी में नहीं?

—सुरेश गोयल, उदयपु[र]

(३)

हिंदी साहित्यकारों ने जन-सामान्य से कटकर अस्तित्ववाद और अकेलेपन के दर्शन को अपनाया, आधुनिकता के नाम पर नये नारों की खोज की। लेकिन ऐसी कितनी पुस्तकें हमारे यहां लिखी गयी हैं जिन्हें हम साहित्यिक उपलब्धि मान सकें? डा. शिवमंगल सिंह सुमन ने ठीक ही तो लिखा है—'आजकल जो ढेर का ढेर छपता है, वह न तो मस्तिष्क में खपता है न पेट में। लेखन की खोखली लाचारी को ढोना, कुंठाओं को तथा वर्जनाओं की अ[ति]-रंजित करना; जीवन के स्खलन को उ[...]

अक्तूबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्तता का बाना पहनाना, मूल्यहीनता को कला की सर्वोच्च उपलब्धि बताना बहुत नहीं चल सकता . . . !' वास्तव में हिंदी के सबसे अधिक अहितकर्ता उसके साहित्यकार हो बैठे हैं। पत्र-पत्रिकाओं पर दृष्टिपात करें तो देखते हैं कि अजीबोगरीब कविताएं, लेख, उपन्यास प्रकाशित हो रहे हैं। दूसरी ओर गुरुदत्त जैसे लेखकों के सौ से लेकर हजार पन्नों तक के पोथे भी प्रकाशित हो रहे हैं, जिन्हें छूने से भी आम आदमी डरते हैं। आधुनिक कविता के नाम पर हिंदी से जो खिलवाड़ हो रहा है, वह सचमुच दुःख की बात है !

जब तीनों अकादमियों की स्थापना हुई थी, तब कहा गया था कि इनकी स्थापना का उद्देश्य कला और साहित्य को राजनीति की छत्रछाया में लाना या प्रभावित करना नहीं है। परंतु इस युग की सबसे बलिष्ठ हिंदी कृति को इस कारण से पुरस्कार नहीं मिल सका कि उसमें एक राजनेता की आलोचना की गयी थी। मेरा अभिप्राय यशपाल के 'झूठा सच' से है।

अकादमियों के सलाहकारों में भाई भतीजा-वाद और 'तू मुझे इस साल हाजी कह मैं तुझे अगले साल मुल्ला कहूंगा' वाली नीति चलती है। बेचारी हिंदी 'अपनों' के स्वार्थ से पीछा छुड़ाये या उन्नति करे।

आजकल राजनीति-ग्रस्त तथा व्यवसायिक उद्देश्यों वाली पत्रिकाओं की कमी नहीं है। इसका प्रभाव हमारी भाषा पर पड़ना स्वाभाविक है। 'पूछ वाले' लेखकों की घटिया रचनाएं भी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो जाती हैं; बिना 'पूछ वाले' लेखकों की रचनाएं संपादक के अभिवादन सहित लौट आती हैं। नये लेखकों में कला; योग्यता; सामर्थ्य सभी कुछ होते हुए भी उन्हें प्रायः निराश होकर साहित्य को प्रणाम करना पड़ता है। यह हिंदी-विकास के मार्ग में किसी पर्वत से कम नहीं है !

राष्ट्रीय एकता के नाम पर किसी पर हिंदी लादी नहीं जानी चाहिये। दक्षिण के हिंदी प्रचारक जो कार्य कर रहे हैं, वह प्रशंसनीय है। लेकिन उनमें से कुछ के भीतर जब 'सेवा की गंध' उभरती है, तो लगता है हिंदी का प्रचार करके वे हिंदी भाषियों पर एहसान कर रहे हैं। कुछ हिंदी-प्रचारकों का हिंदी प्रेम तो पागलपन की हद तक का होता है। फलस्वरूप स्वयं के साथ-साथ भाषा को भी बोझ बनाकर हिंदी का वे अपरोक्ष रूप में अहित ही करते हैं !

—गोविंद सागर, सनावद, म, प्र

★

हम भारतीय अपनी आध्यात्मिकता का दावा करने और पश्चिम को भौतिकतावादी कहकर उसकी निंदा करने को चट-से तैयार हो जाते हैं। सचाई यह है कि हमारे लोगों ने दिखा दिया है कि वे किसी से कम भौतिकवादी और बटोरने-खसोटने वाले नहीं है। कुछ तो असल में ज्यादा ही हैं।

—इंदिरा गांधी

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिरक्षा-उत्पादन में स्वावलंबन की ओर (२)

- जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी

जैसा कि पिछले लेख में हम बता चुके हैं, जब भारत स्वाधीन हुआ, तब हमारे यहां गोला-बारूद के १६ कारखाने थे; आज ३१ कारखाने हैं। परंतु इसका यह अर्थ नहीं समझना चाहिये कि आज इन कारखानों में जितना उत्पादन होता है, उसका आधा उस समय होता रहा होगा।

स्वाधीनता से पूर्व उन कारखानों से कितना कम काम लिया जाता था, इसका प्रमाण यह है कि सन १९४७-४८ में उनमें केवल ५ करोड़ रु. का सामान तैयार होता था। सन १९५८-५९ में जब ऐसा प्रतीत होने लगा कि शायद चीन या पाकिस्तान से कभी भिड़ंत हो सकती है, उत्पादन की रकम बढ़कर १९ करोड़ ६५ लाख हो गयी। सन १९५९-६० में वह २५ करोड़ ३७ लाख रु. पर पहुंची और १९६०-६१ में बढ़कर ४१ करोड़ ८८ लाख रु. हो गयी। फिर जब १९६२ में चीनी आक्रमण हुआ, तो इसमें और वृद्धि हुई, यानी ६३ करोड़ ९० लाख रु. का सामान तैयार हुआ और १९६३-६४ में यह मात्रा १२० करोड़ रु. पर जा पहुंची।

जैसा कि स्पष्ट है, यह अधिक उत्पादन युद्ध के कारण था और जब युद्ध समाप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया, तो उसमें कमी आ गयी। परंतु यह तैयारी १९६५ के भारत-पाक युद्ध में उपयोगी रही। १९६७-६८ में इन कारखानों से ९७ करोड़ ९ लाख रु. का माल सेना को दिया गया, १९६८-६९ में ११३ करोड़ ५६ लाख रु. का, १९६९-७० में १०८ करोड़ ५७ लाख का और १९७०-७१ में ११२ करोड़ ३० लाख रु. का।

इसके बाद फिर वृद्धि हुई। १९७१-७२ में १७८ करोड़ ४३ लाख रु. का माल सेना को दिया गया। १९७२-७३ में यह लक्ष्य रखा गया था कि १६० करोड़ रु. तक का माल तैयार हो; परंतु वास्तव में तैयार हुआ १९३ करोड़ रु. का। १९७४-७५ में इन फैक्टरियों में १९१ करोड़ ६३ लाख रु. के उत्पादन का अनुमान किया गया था, जब कि २१३ करोड़ ३८ लाख रु. का सामान जारी किया गया। १९७५-७६ में २०५ करोड़ रु. के मूल्य का सामान जारी होने का अंदाज है। इससे प्रकट होता है कि हमारे इन ३१ कारखानों के रक्षा-उत्पादन की दर कितनी बढ़ रही है। सन १९७५ में इन कारखानों में ९१,४८३ व्यक्ति काम पर लगाये गये।

रक्षा-मंत्रालय की १९७५-७६ की रिपोर्ट में बताया गया है—'इन कारखानों से तीनों सेनाओं की जरूरत के आधुनिकतम हथियार, गोला-बारूद, रसायन, धातु, विस्फोटक, औजार, पुल बनाने के उपस्कर, पनडुब्बी-रोधी प्रक्षेपास्त्र, सामान्य भंडार, वाहन, कपड़े, कवचित वाहन, तैयार निर्जलित मांस तथा अन्य रक्षा-उपकरणों की मांग पूरी की जाती है।'

चीनी आक्रमण के बाद पहला काम यह किया गया कि ईशापुर के राइफल कारखाने में ७·६ मिलिमीटर मुहाने की अर्द्धस्वचलित राइफल तैयार की गयी और उसका गोला-बारूद बनाया गया। इसके साथ ही एक नया भारी मार्टार तैयार किया गया, जो दूर तक मार कर सकता था। टैंकों के लिए नये ढंग का गोला-बारूद बनाया गया और नयी टैंकतोड़क बारूद बनायी गयी। विमानों पर मार करने वाली तोपों और उनके बारूद का निर्माण शुरू किया गया और स्टेनगनों के स्थान पर सुधरी हुई किस्म की कार्बाइनें बनायी गयीं। हल्की मशीनगनों में सुधार किया गया। एक बार निशाना मारने वाली राइफलों में ऐसा सुधार किया गया कि उनमें ईशापुर राइफल की ७·६ मिलिमीटर मुहाने की कारतूस लगायी जा सके। इसके साथ ही हल्की पहाड़ी तोप बनायी गयी, जो दूर तक मार कर सकती है। राकेटों के लिए ईंधन तैयार करने के लिए एक नया गोला-बारूद कारखाना खड़ा किया गया।

आज स्थिति यह है कि ये गोला-बारूद के कारखाने छोटे हथियारों के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो गये हैं। तीनों सेनाओं की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पर्याप्त मात्रा में राइफलें, हल्के मार्टार, कार्बाइनें और हल्की मशीनगनें इनमें तैयार हो रही हैं। पहाड़ी तथा मैदानी युद्ध-क्षेत्र के लिए बड़ी तोपें, भारी मार्टारों और हल्की विमान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

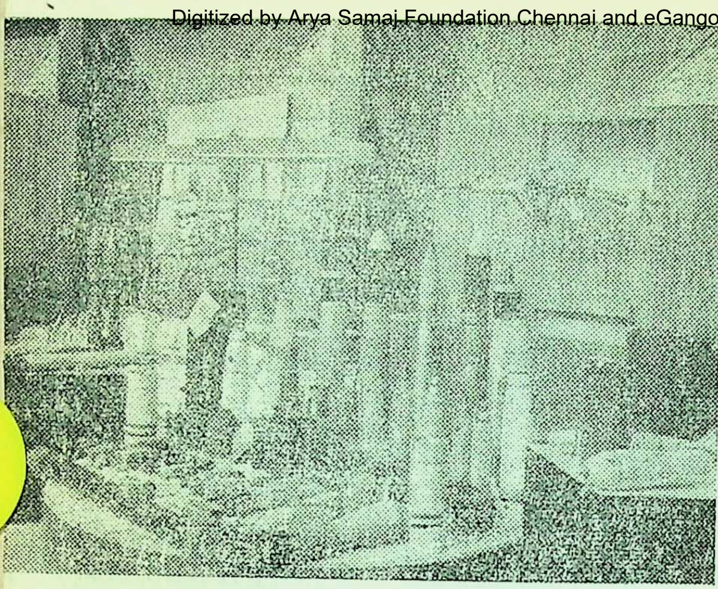

हमारे गोला-बारूद कारखानों में निर्मित बम, डेप्थ-चार्ज, टारपीडो, गोले, ग्रेनेड आदि।

भेदी तोपों के मामले में भी देश आत्मनिर्भर हो गया है। १०६ मिलिमीटर मुहाने की रिकॉयल-लेस टैंकभेदी तोपों का भी निर्माण किया गया है और विजयंत टैंक में लगायी जाने वाली तोपों के निर्माण का काम अधिक तीव्र गति से हो रहा है। २५ पौंड का गोला फेंकने वाली द्वितीय महायुद्ध के समय बनी तोप के स्थान पर नयी शक्तिशाली तोप बनायी जा रही है।

परिवहन की समस्या को हल करने के लिए ३ टन के शक्तिमान ट्रक, १ टन के निशान पर्सोनेल कैरियर और निशान जीपें बनायी गयीं, जिनमें उस समय भी प्रायः सामग्री का ३५ प्रतिशत और ३१ प्रतिशत भारती[य] ट्रकों और जी[पों] स्वदेशीकरण[...] इतना काम हो [...] है कि १९७[...] इसका पूर्ण [...] स्वदेशीकरण [...] जायेगा।

केवल ह[थि...] और गोला[...] बनाना इन का[...] का काम नहीं है[...] हमारे यहां [...] स्थापना हुई, त[...] हथियार ब्रि[टेन...] आते थे; जरूरत [...] पर कुछ गोला[...] तथा कुछ अन्य सामग्री तैयार कर[...] लिए ही कारखाने लगाये गये थे[...] तथा आम सामान तैयार करने वाले [...] खानों में १९७४-७५ के दौरान ४४ [...] रु. का माल तैयार हुआ, जबकि पि[छले...] ३२ करोड़ रु. का हुआ था। यह [...] ऐसा था कि इसी वर्ष १ करोड़ [...] रु. के मूल्य का सामान निर्यात [...] गया। अधिक ऊंचाई पर किस प्र[...] पैराशूटों की जरूरत होती है, कि[...] के कंबल चाहिये और क्या खाना चा[...] इस बारे में परीक्षण हुए हैं और उ[...] रूप सामग्री तैयार की गयी है।

यद्यपि इन कारखानों के द्वारा [...]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटी चीजें तैयार होती हैं, परंतु सेना के कार्य-संचालन के लिए इन छोटी चीजों का भी बड़ा महत्त्व है और इनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। फिर यह भी नहीं भूलना चाहिये कि सेना के लिए बहुत अधिक वस्तुओं की आवश्यकता होती है।

सन १९६५ में रक्षा-आपूर्ति के लिए ही एक विभाग खोला गया। इसका भी यह प्रयास रहा है कि सेना के काम में आने वाली सवारी, हथियार और इलेक्ट्रानिक्स एवं चिकित्सा-संबंधी सामग्री में आत्मनिर्भरता प्राप्त की जाये और इनका मानकीकरण भी किया जाये। इस विभाग ने ३१ मार्च १९७५ तक २१३ करोड़ रु. की २३ हजार वस्तुओं के लिए आर्डर दिये थे। इस विभाग के सहयोग से पुल बनाने के लिए नावें, विभिन्न प्रकार के जनरेटर, साइट-उपकरण (जिनके लगाने से विजयंत टैंक रात को भी देख सका और उड़ी तथा फिल्लौर की लड़ाई में १९६५ में पैटन टैंकों को समाप्त कर सका) और ५० व २० टन के ट्रेलर बनाये गये। सेना के काम में आने वाली ऐसी २३ हजार वस्तुओं का, जो पहले विदेश से आती थीं, इस विभाग के सहयोग से भारत में ही उत्पादन होने लगा।

हमने सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों के सिलसिले में हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स की चर्चा की है। वस्तुतः रक्षा-मंत्रालय के अंतर्गत सार्वजनिक क्षेत्र के नौ संस्थान हैं। ये हैं—हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लि., भारत इलेक्ट्रानिक्स लि., मझगांव डाक्स लि., गार्डनरीच वर्कशाप लि., गोवा शिपयार्ड लि., भारत डाइनेमिक्स लि., भारत अर्थमूवर्स लि., प्रागा टूल्स लि. और मिश्र धातु लि.।

विमानों और हेलिकाप्टरों के निर्माण की बात हम कह चुके हैं। विमानों के बाद जिस

स्व. श्रीकृष्ण मेनन (बायें) और स्व. जवाहरलाल नेहरू ने प्रतिरक्षा-उत्पादन में स्वावलंबन की जिस नीति का सूत्रपात किया, श्रीमती इंदिरा गांधी (बीच में) उसे आगे बढ़ा रही हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

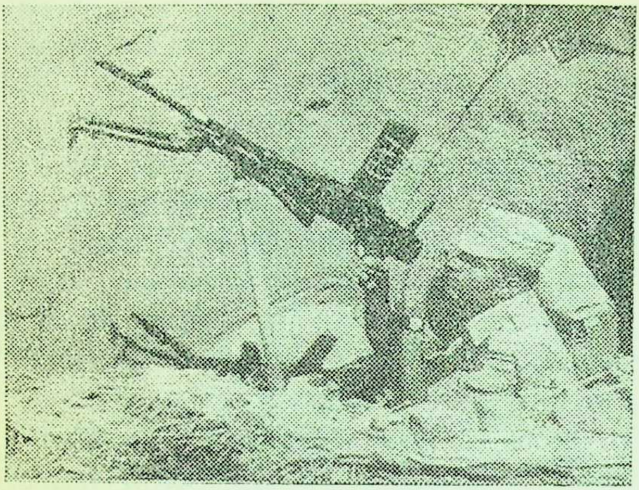

हमारे बनाये लाइट मशीनगन से लैस हमारा जवान।

अत्यंत महत्त्वपूर्ण क्षेत्र में भारत ने आत्म-निर्भरता प्राप्त की है, वह है समुद्री जहाजों का। जिस समय भारत स्वाधीन हुआ, तब जहाज और उसके सब उपकरण तो इंग्लैंड से आते ही थे, हमारी नौसेना का सेनापति भी अंग्रेज था और शायद वह भारत से जाने वाले सबसे आखिरी अंग्रेजों में था। समझा यह जाता था कि नौसेना की कल्पना ही भारत के लिए नयी है और भारत जो कुछ सीख सकता है—यहां तक कि नौसेना का शिष्टाचार भी—ब्रिटेन से ही सीख सकता है।

मझगांव गोदी, जो कि बंबई में है, १९७३-७४ तक जहाजों की मरम्मत का काम करती थी। परंतु बाद में वहां जहाज बनाने का काम शुरू हुआ और १८ महीनों में ही ४० करोड़ ४९ लाख रु. के आर्डर उसे प्राप्त हुए। अभी तक इस कारखाने से प्रति वर्ष लियेंडर प्रणाली का एक फ्रिगेट तैयार होता रहा है। अब तक उससे भारतीय नौसेना को 'नीलगिरि', 'हिमगिरि' और 'उदयगिरि' मिल चुके हैं और 'दूनगिरि' फरवरी १९७७ में प्राप्त होगा। इस कारखाने को एक फ्रिगेट तैयार करने में दो वर्ष लगते हैं।

इसमें जो फ्रिगेट बनेंगे, उनका ढांचा तो वही रहेगा; लेकिन उनमें हथियार दूसरे होंगे, मिसाइलें लगी होंगी, इनमें सी-किंग हेलिकाप्टर होगा, जबकि अभी तक चीता हेलिकाप्टर काम में लाया जाता है। ६ फ्रिगेट बनने के बाद और भी सुधार होगा—बड़ा फ्रिगेट बनेगा और उनमें नये हथियार होंगे। इन फ्रिगेटों में समुद्र की ध्वनि पकड़ने वाले सोनार और आकाश की छाया छूने वाले नयी किस्म के राडार भी लगाये गये हैं।

मझगाव गोदी में डिजाइन और विकास का काम भी हो रहा है और स्वयं डिजाइन बनाकर उसने ५० लाख रु. की विदेशी मुद्रा की बचत की है। सन १९७५-७६ में इसका लक्ष्य ४५ करोड़ रु. के उत्पादन का है। १९६० से पहले यह गोदी निजी क्षेत्र में थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जहाजों की मरम्मत का छोटा-सा यार्ड थी। सन ६५-६६ में इसका विस्तार किया गया। इस समय यह समूचे दक्षिण एशिया में पोत-निर्माण और मरम्मत में अग्रणी मानी जाती है।

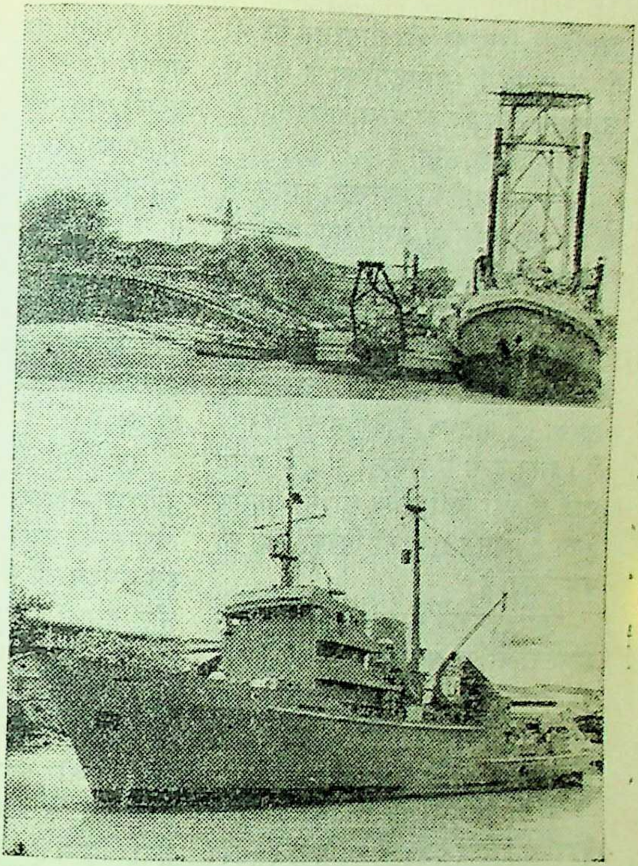

गार्डनरीच वर्कशाप में बना ड्रेजर (ऊपर) और एक अन्य जहाज।

नौसेना का दूसरा कारखाना है—गार्डनरीच वर्कशाप, जो कलकत्ते में है। यह समुद्री यानों के लिए डीजल इंजन बनाने के अलावा अत्यधिक क्षमता के ड्रेजर, टग और बजरे भी बनाता है और २८ हजार टन क्षमता तक के जलयान बना लेता है। सन १९७५-७६ में इसका लक्ष्य लगभग ४० करोड़ रु. का माल तैयार करने का होगा। यह नौसेना के अतिरिक्त अन्य ग्राहकों के लिए भी डीजल इंजन, कम्प्रेसर, कन्वेयर क्रेन, सड़क कूटने का इंजन तो बनाता ही है, इसने कुछ सीमा-रक्षक नावें भी बनायी हैं।

रक्षा-मंत्रालय के अंतर्गत जो अन्य कारखाने हैं, उनमें भारत इलेक्ट्रानिक्स का अपना ही महत्त्व है। इसने पिछले वर्ष ५४ करोड़ रु. का और इस वर्ष ६६ करोड़ रु. का माल तैयार किया। बड़े-बड़े राडार से लेकर छोटे-छोटे ट्रांजिस्टर डायोड और टेलिविजन ट्यूबें तक इस कारखाने में बनायी जाती हैं। यह कारखाना रेडियो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ट्रांसमिटर, रिसीवर और वायरलेस सेट भी तैयार करता है। इलेक्ट्रानिक्स के क्षेत्र में भारतीय सेना की जो भी आवश्यकताएं हैं, उनकी पूर्ति यह करता है।

अन्य कारखाने भी महत्त्वपूर्ण काम करते हैं। भारत अर्थमूवर्स धरती साफ करने के उपकरण बनाता है। यह रेल के डिब्बे भी बनाता है और मिट्टी खोदने तथा ढोने वाली क्रेनें भी। जो वस्तुएं यहां बनती हैं, पहले वे प्राय: विदेशों से आती थीं; लेकिन अब उनका ९५ प्रतिशत स्वदेशीकरण हो गया है। प्रागा टूल्स में मशीनों के पुर्जे बनाये जाते हैं तथा लेथों आदि का भी निर्माण होता है। इसके द्वारा भी विदेशी मुद्रा की बचत होती है।

गोवा शिपयार्ड में पहले मरम्मत की ही व्यवस्था थी, पर अब यह कंपनी एक हजार डी. डब्ल्यू. टी. के स्तर की नौकाएं, छोटे ड्रेजर, टग और अन्य अनेक नौकाएं बनाता है, उनकी मरम्मत भी करता है।

भारत डाइनेमिक्स लि. की स्थापना हैदराबाद में १९७० में की गयी। इसका काम है राकेटों और मिसाइलों के लिए उपकरण तैयार करना। ७० प्रतिशत हिस्से-पुर्जों का निर्माण यह कंपनी अपने यहां ही करने लगी है। वायुसेना, स्थलसेना तथा नौसेना—तीनों के लिए मिसाइलों की आवश्यकता पड़ती है। इसलिए यह कारखाना आत्मनिर्भरता के क्षेत्र में बहुत महत्त्वपूर्ण है।

जटिल उपकरण बनाने के लिए विशेष प्रकार की धातुओं की आवश्यकता पड़ती है। वे धातुएं हमें अभी तक विदेशों से ही मंगानी पड़ती थीं; क्योंकि या तो देश में उनकी प्रौद्योगिकी विकसित नहीं हुई थी या उनकी खपत इतनी नहीं थी कि कोई उद्योगपति इन्हें तैयार करने का काम हाथ में ले। इसलिए भारत सरकार ने नवंबर १९७३ में हैदराबाद में मिश्रधातु निगम की स्थापना की, जिसका उद्देश्य विशेष धातुएं और उत्तम कोटि की मिश्रधातुएं तैयार करना है। इसके लिए संयंत्र लगाने का प्रबंध हो रहा है।

एक विशेष वैज्ञानिक संघटन के अंतर्गत प्रतिरक्षा-उत्पादन संबंधी अनुसंधान और विकास का कार्यक्रम अलग से हो रहा है। इस संघटन की स्थापना १९५८ में हुई थी और इसकी परियोजनाओं के फलस्वरूप अब तक ४३० वस्तुएं देश में बनकर तैयार हो गयी हैं। राकेटों और मिसाइलों के विकास के बारे में भी इसने महत्त्वपूर्ण कार्य किया है और इसने वायुसेना, नौसेना तथा स्थलसेना के लिए बहुत-सा गोला-बारूद तैयार किया है तथा यह कुछ ऐसी स्वचालित तोपों का परीक्षण कर रहा है, जो विशेष यंत्रों से युक्त हैं। ये इस वर्ष तैयार हो जायेंगी। देश में इस शोध और विकास संस्थान की ३२ प्रयोगशालाएं और विभाग हैं, जहां पर रक्षा-विज्ञान और प्रौद्योगिकी की विभिन्न शाखाओं पर काम हो रहा है।

आज भारत के लिए आवश्यक मानक बंदूक और रिवाल्वर, १०५ मिलिमीटर मुहाने की तोप वाला विजयंत टैंक, ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और विमान—सबका निर्माण देशी जानकारी और देशी सामान से स्वदेश में ही होता है। एक समय था जब सेना के लिए रस्सियां भी यूरोप और अमरीका से मंगवायी जाती थीं और टिनों में बंद खाना भी विदेशों से आता था। आज यह सब कुछ बदल गया है और भारत इतना समर्थ हो गया है कि अपनी आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ कुछ सामग्री विदेशों को निर्यात भी कर सकता है। उसने बहुत-से छोटे-बड़े हथियार तथा अन्य सामग्री पड़ोसी देशों को—एशिया-अफ्रीका के देशों को—बेची है।

प्रतिरक्षा-उत्पादन कार्यक्रमों का विज्ञान के विकास पर बड़ा असर पड़ता है। इन कार्यक्रमों के लिए आवश्यक वैज्ञानिक शोध के लिए धन के व्यय में संकोच नहीं किया जाता और उसके परिणामस्वरूप जो गवेषणा होती है, उससे सेना को तो लाभ होता ही है, असैनिक कार्यों में भी सहायता मिलती है, सारे देश की प्रौद्योगिकी उन्नत होती है। देश के विभिन्न सैनिक कारखानों में जो उपलब्धियां हुई हैं, उसका लाभ नागरिकों को भी मिला है। आज हम जो भारत में निर्मित टेलिविजन देखते हैं, उनके लिए पिक्चर-ट्यूबें भारत इलेक्ट्रानिक्स में तैयार होती हैं। देश में छोटे-छोटे ट्रांजिस्टर बनने लगे हैं, इसमें भी इसी कारखाने का हाथ है। रक्षा-मंत्रालय के अधीनस्थ शोध-संघटनों, गोला-बारूद कारखानों तथा सार्वजनिक प्रतिष्ठानों द्वारा प्रौद्योगिक ज्ञान का लेखा-जोखा लिया जाये, तो पता चलेगा कि इसकी मदद से भारत सैनिक क्षेत्र में ही स्वावलंबन की ओर नहीं बढ़ा है, बल्कि उसने अन्य क्षेत्रों में भी स्वावलंबन की ओर बहुत बड़ा कदम उठाया है।

—५५ काकानगर, नयी दिल्ली-११०००३

★

'कंडिशन्ड रिफ्लेक्स' का पाठ पढ़ाने के लिए प्राध्यापक ने पिंजरे में बंद चूहों में से एक को निकाला और एक विशेष पिंजरे में रखा। इसमें एक पैडल लगा हुआ था, जिसे दबाने से घंटी बजती थी। प्राध्यापक ने विद्यार्थियों से कहा—'अब देखना, हर एक बार पनीर का टुकड़ा पिंजरे में डालने के साथ मैं पैडल को टकोरकर घंटी बजाऊंगा। अंततः चूहा समझ जायेगा कि पनीर और घंटी का आपस में संबंध है और स्वयं ही घंटी बजाने लगेगा।' सचमुच थोड़े समय बाद देखा गया कि चूहा स्वयं पैडल पर कूदकर घंटी बजाता, पिंजरे में डाली गयी पनीर खा लेता और प्रतीक्षा करने लगता।

जब चूहे को वापस उसके पिंजरे में डाला गया, तो फौरन उसके स्वजनों ने उसे घेर लिया। उसकी पत्नी ने पूछा—'आज का कार्यक्रम कैसा रहा।' चूहे ने उत्तर दिया—'बहुत अच्छा! अगर प्रयोग कुछ मिनट और चलता तो मैं प्राध्यापक को पूरी तरह "कंडिशन" करने में सफल हो जाता। जितनी बार भी मैं घंटी बजाता था, वह पनीर का टुकड़ा डालता था!'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रनायक जो विद्रोही कवि था

प्रयागनारायण

वह मूलत: कवि है, या राजनीतिज्ञ ? उदार-हृदय चिकित्सक, या सत्ता-संघर्ष में पूर्णत: सना हुआ क्रूर कट्टरपंथी? राष्ट्रीय उद्देश्यों से प्रेरित राजनेता या सोवियत महाशक्ति के संकेतों से परिचालित पक्का साम्यवादी ? ...... अफ्रीका के नव-स्वतंत्र देश अंगोला के प्रथम राष्ट्रपति एगोस्तिनो नेतो के बारे में ये प्रश्न पिछले एक वर्ष में कितनी ही बार पूछे गये हैं और हर बार ही प्रश्नकर्ताओं ने अपने को पहले से कुछ ज्यादा उद्भ्रांत पाया है।

इसलिए नहीं कि नेतो के जीवन में कोई गहरा उलझाव है; अपितु इसलिए कि स्वतंत्र होने के साथ ही अंगोला के आंतरिक सत्ता-संघर्ष और अंतरराष्ट्रीय शक्तिस्पर्धा का विचित्र गठजोड़ हो गया। नेतो के व्यक्तित्व को समझने का प्रयास या दावा करने वाले भी तो इस सबसे अछूते न रह सके !

एगोस्तिनो नेतो के सही व्यक्तित्व को तलाशने के लिए जरा उनके अतीत को कुरेदें। ५४ वर्ष पूर्व, पुर्तगाल-शासित अंगोला की राजधानी लुआंडा से ४० मील दूर एक छोटा-सा गांव। पिता प्रोटेस्टेंट पुरोहित हैं। घर में आठ बच्चे, पर आमदनी निहायत कम। इन्हीं आठ बच्चों में से एक है एगो-स्तिनो नेतो। जीवन की मामूली जरूरतें भी मयस्सर नहीं हैं; मगर पढ़ने-लिखने में वह काफी होशियार है। मेथोडिस्ट चर्च द्वारा संचालित प्राइमरी स्कूल से पढ़ाई शुरू करके लगातार छात्रवृत्ति लेता हुआ आगे पढ़ता जाता है और घोर परिश्रम एवं प्रतिभा के बूते पर एक दिन डाक्टरी शिक्षा के लिए पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन पहुंच जाता है।

वह भारत में स्वतंत्रता के अवतरण का वर्ष था। ब्रितानी साम्राज्य से भारत के छुटकारे के साथ गोरे उपनिवेशवाद के नीचे कराह रहे सभी एशियाई-अफ्रीकी देशों के राष्ट्रवादियों के मन में आशा की एक नयी ज्योति जगी। एगोस्तिनो नेतो भी एक ऐसा ही राष्ट्रवादी था। प्रभुओं के देश पहुंचकर उसका राष्ट्र-प्रेम कुछ और प्रगाढ़ हो गया। फुरसत का समय वह या तो कविताएं लिखने में बिताता या पुर्तगाली उपनिवेशों से आकर लिस्बन के गरीब मोहल्लों में बसे अफ्रीकियों से मिलने में।

उधर अंगोला में भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता के आदर्श से प्रेरित एक नयी पीढ़ी उभर रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। इस युवा कवि की कविताएं अक्सर अंगोला की राष्ट्रवादी पत्रिकाओं में छपतीं। परंतु राष्ट्रीय क्रांति कविता से कुछ अधिक की मांग करती है। अंगोला में नेतो की कविताओं के पाठकों में से कितनों ही ने उसे संदेश भेजा—लिस्बन में ही कुछ कीजिये न!

मगर लिस्बन में क्या हो सकता था? सालाजार का पुर्तगाल यानी फासिस्ट तानाशाही। सारी राजनैतिक गतिविधियों पर पुलिस की कड़ी निगरानी। सरकार-विरोधी गतिविधि के संदेह मात्र पर गिरफ्तारी और यातना का लंबा सिलसिला। और साधनों के नाम पर नेतो पूरी तरह से फूल-फकीर! कभी-कभी तो दोनों वक्त के भोजन तक का जुगाड़ जुट न पाता। पर अभाव और विषम परिस्थितियों के बीच ही तो उसने अपना एक छोटा-मोटा संघटन खड़ा कर लिया था। उस संघटन में तय हुआ कि तानाशाह की राजधानी में हो अंगोला की स्वाधीनता के पक्ष में जनमत बनाया जाये।

एक लंबी अर्जी अंगोला की आजादी के समर्थन में तैयार की गयी। पुर्तगाली जनता तक अपनी बात पहुंचाने के लिए उस पर हस्ताक्षर कराने का अभियान शुरू हुआ। नेतो इस अभियान में पूरी तरह से जुट गया। वह घर-घर जाता—खास तौर से लिस्बन के गरीब मोहल्लों में—और लोगों को अंगोला की स्थिति समझाता, उन्हें अर्जी पर हस्ताक्षर करने के लिए राजी करता। एक दिन उसने जिस आदमी को अपनी बात समझायी, वह गुप्त पुलिस का हवलदार था। जल्दी ही नेतो को गिरफ्तार कर लिया गया। अंगोला से डाक्टरी की शिक्षा के लिए गये युवक के जीवन में एक बड़ा मोड़ आया और कुछ समय बाद रिहा होने पर उसने पाया कि उसका भाग्य अंगोला की स्वतंत्रता के साथ पूरी तरह से जुड़ गया है।

सन १९५३। स्थान—फ्रांस की राजधानी पेरिस। फ्रांस में रहने वाले अफ्रीकी छात्रों की फेडरेशन का वार्षिक सम्मेलन था। उस बार पुर्तगाल से भी अनेक प्रेक्षक-प्रतिनिधि आये थे। पुर्तगाली अफ्रीकी छात्र-प्रतिनिधियों का प्रवक्ता था एगोस्तिनो नेतो। अपने धारा-प्रवाह भाषण में उसने पुर्तगाली उपनिवेशों में हो रहे शोषण व दमन का हूबहू चित्र खींचकर रख दिया। वह बहुत जोशीला वक्ता नहीं था। परंतु राजनीति के तथ्य और काव्य की लय के समन्वय से उसने श्रोताओं के मन को बांध

एगोस्तिनो नेतो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया था। उसने वहां अंगोला, मोजांबीक और पुर्तगाली गिनी की स्वाधीनता के लिए संघटित प्रयास का आह्वान किया—यह जानते हुए भी कि उसे अभी वापस लिस्बन ही जाना है, सालाजार को तानाशाही के जबड़ों के बीच।

वह लिस्बन पहुंचा। फिर से पढ़ाई में जुट गया। सालाजार की गुप्त पुलिस अब उस पर ज्यादा निगाह रखने लगी थी। जब तक पुर्तगाल की सागर-पार बस्तियों में सब कुछ शांत रहा, पुलिस ने उससे छेड़छाड़ नहीं की। परंतु १९५५ में इन बस्तियों में स्वाधीनता का संघर्ष तीव्र हो उठा। गोवा, दमण, दीव की मुक्ति के लिए हजारों भारतीयों ने सत्याग्रह किया, तो अंगोला भी उसके प्रभाव से अछूता नहीं रहा।

उपनिवेशों की जनता को उग्र होती हुई स्वातंत्र्य-आकांक्षा का पुर्तगाली फासिस्ट शासन के पास एक ही इलाज था—दमन, नृशंस दमन। न सिर्फ उपनिवेशों में, वरन स्वयं पुर्तगाल में भी दमन का शिकंजा मजबूत हो गया। इस दमनचक्र के चलते लिस्बन में नेतो की मामूली राजनैतिक गतिविधियां भी राज्य-विरोधी साजिशें मानी जाने लगीं। किसी घनी अंधेरी रात में नेतो के द्वार पर एकाएक दस्तक हुई। उस रात अंगोला के इस युवा राष्ट्रवादी को इस्पाती सींखचों को एक ऐसी बंद दुनिया में पहुंचा दिया गया, जहां से कोई उसकी आवाज न सुन सके।

परंतु पुर्तगाली तानाशाही को हैरत हुई। नेतो पुर्तगाल में कैद था और उधर दुनिया-भर के अग्रणी बुद्धिजीवी उसकी रिहाई की मांग करते हुए सालाजार को तार पर तार भेज रहे थे। जां पाल सार्त्र, एडुअर्ड पियान, फ्रांस्वा मोरियेक, निकोलस जिलेन, दियागो रिवेरा—सभी ने एक स्वर से मांग की कि नेतो को रिहा किया जाये। परंतु फासिस्ट तानाशाहों ने भला विवेक की सलाह कब मानी है?

इस बार नेतो को दो वर्ष जेल में गुजारने पड़े। जून १९५७ में जब वह जेल से बाहर आया, उसकी राष्ट्रवादी प्रतिबद्धता कविता के दायरों से बहुत आगे बढ़ चुकी थी। अब तक वह अपने देश के स्वतंत्रतायुद्ध की रणनीति तय कर चुका था। परंतु उसे यह समझते देर न लगी कि जेल से रिहा होकर भी वह स्वतंत्र व्यक्ति नहीं बन पाया है। हर क्षण गुप्त पुलिस उसका पीछा कर रही थी—परछाईं की तरह। इन डरावनी परछाइयों से घिरे-घिरे ही नेतो ने डाक्टरी की पढ़ाई पूरी की और १९५९ में वह स्वदेश लौट आया।

नेतो की जीवन-दिशा अंगोला पहुंचने से पहले ही निश्चित हो चुकी थी। उसे रोगियों की चिकित्सा से अधिक अपने राष्ट्र को ग्रस रहे गुलामी के कोढ़ के इलाज की ओर ध्यान देना था। मरहम-पट्टी से ठीक होने वाला नहीं था यह कोढ़। इसका तो एक ही इलाज था—सशस्त्र संग्राम, स्वातंत्र्य के लिए छापामार युद्ध। उसे पता था कि यह सब काम चंद पढ़े-लिखे लोगों के सहारे नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो सकेगा। इसके लिए आवश्यकता है प्राणों की बाजी लगाने वाले जांबाज नवयुवकों की। साथ ही आवश्यक है एक ऐसा संघटन, जो औपनिवेशिक शासन पर धारदार आक्रमण कर सके। सो अंगोलाई मुक्ति जन आंदोलन (एम.पी.एल.ए.) का गठन शुरू हो गया।

नेतो का पेशा इसके लिए सबसे अधिक सहायक सिद्ध हो रहा था। रोगियों के इलाज के बहाने वह गांवों-कस्बों में घूमता रहता और देश की युवा पीढ़ी को आने वाले संघर्ष के लिए प्रस्तुत रहने की प्रेरणा देता रहता। अंगोला में नेतो की उपस्थिति से राष्ट्रवादियों में एक नयी चेतना आ गयी थी। वे कुछ न कुछ कर दिखाना चाहते थे। वह अवसर जल्दी ही आ गया।

९ जून १९६० को नेतो गिरफ्तार कर लिया गया। जोखिम से बचने के लिए औपनिवेशिक शासकों ने उसे अंगोला में रखने के बजाय पुर्तगाल पहुंचा दिया। पर नेतो की गिरफ्तारी का सारे अंगोला में जबर्दस्त विरोध हुआ। उसके अपने गांव इकोलो-बेंगों में तो एसा रोषपूर्ण और उग्र प्रदर्शन हुआ कि पुलिस ने गोली चलाकर ३० लाशें बिछा दीं। जैसे-जैसे अंगोला में नेतो की रिहाई की आवाज उठी, वैसे-वैसे पुर्तगाली शासन की निगाह में वह अधिकाधिक खतरनाक कैदी बनता गया। परंतु बहुत सख्त निगरानी के बावजूद नेतो एक दिन पुर्तगाल की अलजुवे जेल की चहारदीवारी को लांघ गया। जेल की पगली घंटी चीखती रही, पर नेतो सालाजारशाही की पकड़ के बाहर जा चुका था।

पुर्तगाल से भागकर नेतो जैरे पहुंचा। वहां एम. पी. एल. ए. का सदर मुकाम था। जल्दी ही नेतो अंगोला के इस मुक्ति-संघटन का अध्यक्ष चुन लिया गया। वस्तुतः वह स्वातंत्र्य-संग्राम का स्वाभाविक नेता था। जिन दिनों अंगोला के अधिकांश राष्ट्रवादी नेता इधर-उधर भाग रहे थे, उन्हीं दिनों नेतो पुर्तगाली जेल से भागकर फिर मोर्चे पर आ डटा था। यों भी दूसरे नेताओं के पास न तो वैसा दृढ़ संकल्प था और न उसकी तरह बड़ी से बड़ी कीमत पर भी स्वातंत्र्य-संग्राम चलाते रहने का रण-चातुर्य। पुर्तगाली शासन के साथ उसके लंबे संघर्ष से प्रभावित होकर कितने ही राष्ट्रवादी युवक उसके पक्के अनुयायी बन चुके थे। अपनी कविताओं के कारण भी वह अंगोलाई राष्ट्रवाद के प्रवक्ता के रूप में अंतरराष्ट्रीय ख्याति पा चुका था।

नेतो की नेतृत्व-शक्ति की सबसे बड़ी परीक्षा सन १९७४ के बाद हुई। फासिस्ट तानाशाही का तख्ता पलटने के बाद पुर्तगाल के नये शासन ने घोषणा की कि वह सभी उपनिवेशों को स्वतंत्रता देना चाहता है। उस समय नेतो का संघटन एम. पी. एल. ए. बुरी तरह से फूट का शिकार था। स्वयं नेतो का अपना गुट उसमें कमोबेश अल्पमत में था। लुसाका में हुए एम. पी. एल. ए. के एकता सम्मेलन में नेतो की सख्त आलोचना भी की गयी। इतना ही नहीं, उसके प्रति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वंद्वी च्रिपेंदा को संघटन का अध्यक्ष भी चुन लिया गया।

परंतु अंगोला में सक्रिय छापामार सैनिकों पर अपने प्रभाव के बल पर नेतो ने कुछ ही समय में एम. पी. एल. ए. का नेतृत्व वापस अपने हाथ में ले लिया। और तो और, नवंबर १९७५ में अंगोला की मुक्ति के समय जब प्रतिद्वंद्वी राष्ट्रवादी संघटनों ने गृहयुद्ध छेड़ा, तो नेतो के ही नेतृत्व में एम. पी. एल. ए. को सोवियत रूस और क्यूबा से हर तरह की सहायता और समर्थन मिला।

इसी सहायता और समर्थन के कारण यह धारणा बन गयी है कि नेतो साम्यवादी है। परंतु कई जानकार व्यक्तियों के अनुसार, नेतो की साम्यवाद-प्रीति रूस के साथ मैत्री तक ही सीमित है—मैत्री भी वहीं तक, जहां तक रूस से अंगोला की स्वतंत्रता को सुदृढ़ करने के लिए मदद मिलती रहे। नेतो के मित्रों के अनुसार, आज के अंगोला में वही सबसे अधिक उदारपंथी, खुले मन का राजनीतिज्ञ है।

मजेदार बात यह है कि इतनी सारी राजनैतिक उथल-पुथल का केंद्रीय व्यक्ति होने के बावजूद स्वभाव से नेतो काफी शरमीला है। वह लोगों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार कर सकता है; परंतु उनमें पूरी तरह घुल-मिल नहीं सकता। सार्वजनिक सभाओं में उसका लहजा किसी लच्छेदार धुआंधार वक्ता के बजाय, अध्यापक-सा होता है। उसकी तुलना घाना के क्वामे एन्क्रूमा या मिस्र के अब्देल गमाल नासेर से नहीं की जा सकती। हां, उसका व्यक्तित्व तंजानिया के न्येरेरे या सेनेगल के लियोपोल्ड सेंगोर जैसे बुद्धिजीवी नेताओं से मिलता है।

यह कोई संयोगमात्र नहीं है कि आज अंगोला में नेतो सभी वर्णों के लोगों की मिली-जुली राष्ट्रीयता का प्रबल प्रवक्ता है। उसकी पत्नी पुर्तगाली है, और बच्चे मुलाट (मिश्रित रक्त वाले) हैं। नेतो के नेतृत्व में अंगोला औपनिवेशिक दासता से पूर्ण स्वतंत्रता की मंजिल तक पहुंचा है। राष्ट्र-निर्माण के नये दौर में नेतो की क्षमता-अक्षमता, सामर्थ्य-असामर्थ्य का परिचय अंगोला की भावी राजनीति देगी।

★

राष्ट्र के सामने दौलत प्राप्त करने के तीन रास्ते होते हैं। पहला युद्ध। रोमनों ने यही रास्ता अपनाया था। उन्होंने अपने पराजित पड़ोसियों को लूटकर दौलत जमा की। यह डाका है। दूसरा व्यापार। यह धोखाधड़ी का रास्ता है। तीसरा खेती। दौलत कमाने का एक मात्र ईमानदारीपूर्ण रास्ता यही है, जिसके द्वारा राष्ट्र निष्पाप जीवन और पुण्य-मूलक पुरुषार्थ के निमित्त ईश्वर की ओर से पुरस्कार-स्वरूप धरती में डाले गये बीजों का अनंत गुना वापस प्राप्त करता है। यह एक स्थायी चमत्कार है।

—बेंजामिन फ्रैंकलिन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठशाला यानी प्रयोगभूमि

संसार मिथ्या नहीं है। यों भी मनुष्य इसे मिथ्या मानता नहीं। अगर सच-मुच हृदय से ऐसा मानने लगा हो तो वह क्षण-भर भी संसार से चिपटा नहीं रह सकता। इसलिए जो संसार हमें मिला है, उसका आधार लेकर भाव का विकास करना है। जिस प्रकार विज्ञानी किसी आविष्कार के लिए पहले छोटे पैमाने पर कई तरह के प्रयोग करता है और उसमें सफल हो जाने पर वही प्रयोग विस्तृत रूप से करता है, उसी प्रकार जीवन के प्रयोग का क्षेत्र है हमारा संसार। इस संसार में समता, तटस्थता, धीरज, सहनशीलता, उदारता, मन की विशालता, अपार प्रेमभाव आदि सात्विक गुणों का विकास करना है, साथ ही बाद में उससे निरासक्त होने और निर्मलता-विकास का ज्ञान-भक्तिपूर्ण प्रयत्न भी। इसके अलावा संसार का कोई अन्य उद्देश्य हो नहीं सकता। संसार का त्याग जरूरी नहीं; लेकिन यहां त्याग-भावना का विकास करना है—ऐसा समझने से ज्ञान और अनुभव मिलते रहेंगे।

—श्री मोटाजी

गंगा (एलोरा)
[अनुकृति : बी. एन. ओके]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अखिलेश सिन्हा

जीवन-तीर्थ

महापुरुषों के चरित्र की विभूतियां असीम होती हैं—अहह महतां निःसीमानश्चरित्र विभूतयः। किंतु वे विभूतियां केवल महान कार्यों और विकट परीक्षा-क्षणों में ही नहीं, दैनिक जीवन के छोटे प्रसंगों में भी प्रकट होती रहती हैं, अपने आस-पास के जीवन को आलोक-दान करती रहती हैं।

आधुनिक भारत के निर्माताओं की अग्र-पंक्ति में आने वाले स्वामी दयानंद सरस्वती की दैनिक जीवन-चर्या में से ऐसे अनेक प्रकाशपूर्ण प्रसंग स्वामी सत्यानंदजी ने अपने ग्रंथ 'श्रीमद्दयानंद-प्रकाश' में दिये हैं।

एक उमेदा नाई अनूपशहर में रहता था। उसके भी हृदय में स्वामी दयानंदजी के लिए बहुत श्रद्धा हो गयी। एक दिन वह भक्ति-भावना से थाल में भोजन परोसकर स्वामी-जी की सेवा में लाया। स्वामीजी ने प्रेम-पूर्वक उस भोजन को लेकर खाना आरंभ किया। उस समय वहां कोई बीस-पचीस ब्राह्मण विद्यमान थे। वे कह उठे—'छिः-छिः! स्वामीजी, यह क्या कर रहे हैं? यह रोटी तो नाई की है!' महाराज ने हंसते हुए कहा—'नहीं, यह रोटी तो गेहूं की है, इसलिए मैं इसे अवश्य खाऊंगा।'

०००

स्वामीजी के निकटस्थ लोगों को विश्वास था कि स्वामीजी में दूसरों के मनोरथों और संकल्पों को जान लेने की शक्ति है। एक दिन स्वामीजी के रसोइये का चाचा आया और रसोइये से कहने लगा कि स्वामीजी के भोजन कर चुकने पर ही तुम भोजन पाते होगे; इस प्रकार तो रसोई जूठी हो जाती है। इसलिए तुम लकीर खींच दिया करो और उस लकीर के बाहर ही उन्हें भोजन दिया करो।

स्वामीजी उस समय स्नान करने गये हुए थे। जब स्नान करके आये, तो चौके के बाहर ही बैठ गये और कहने लगे कि हमें भोजन यहीं दे दो। रसोइये ने कहा कि महाराज! अब तक तो आप चौके में बैठकर भोजन किया करते थे; आज क्या कारण है कि आप चौके से बाहर बैठ गये हैं? स्वामीजी ने कहा कि तुम्हें और तुम्हारे चाचा को बिरादरी से बाहर निकाले जाने का भय है। मैं कहीं भी भोजन पा लूं, मुझे किसी का डर नहीं। उस रसोइये को बड़ा आश्चर्य हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि महाराज ने मेरे मन की गुप्त बात कैसे जान ली !

०००

एक दिन स्वामीजी के अनुचर पं. कृष्णराम इच्छाराम को ज्वर आ गया। वे एक कोठरी में जाकर पड़ गये। जब स्वामीजी को पता लगा, तो वे उनके पास जाकर उनका सिर दबाने लगे। पंडितजी ने कहा—'भगवन् ! आप ऐसा मत कीजिये । मैं आपसे सेवा कराना नहीं चाहता।' स्वामीजी ने कहा—'इसमें कोई दोष नहीं है। एक दूसरे की सहायता और सेवा करना तो मनुष्य का धर्म ही है। यों भी यदि बड़ी उम्र के लोग अपने से छोटों की सेवा न करें तो छोटों में सेवा का भाव आयेगा कैसे!'

०००

स्वामीजी के एक नौकर ने उनकी घड़ी चुरा ली। कर्मचारियों ने खोजबीन करके अपराधी को पकड़ लिया और लाकर स्वामीजी के सामने उपस्थित किया। नौकर रोता हुआ उनके चरणों में गिर पड़ा। कर्मचारी तो चाहते थे कि उसे पुलिस के हवाले करके दंड दिलवाया जाये। परंतु स्वामीजी ने कहा—'हमारा काम सांप को मारना है, न कि उसकी बांबी को कूटना।' उन्होंने बड़ी शांति से अपराधी को चोरी के दोष और कुफल समझाये, जिनसे कांपकर उसने प्रण किया कि मैं फिर कभी इस पाप-पंक में नहीं पड़ूंगा।

०००

एक दिन स्वामीजी बैठे हुए क्षौर करा रहे थे। उसी समय एक शास्त्री वहां आया और कहने लगा—'संन्यासियों का धर्म तो त्याग है। आप इस देह-विभूषा में क्यों लगे हुए हैं ?'

स्वामीजी ने हंसकर कहा—'यदि बाल बढ़ाने में ही त्याग है, तब तो रीछ सबसे बड़ा त्यागी सिद्ध होगा ! ऐसी बातों में त्याग और वैराग्य नहीं है। देह की रक्षा के लिए उसे संवारना, सुधारना धर्मानुकूल है। प्रमादी पुरुष पुष्ट शरीर से अधिक पापाचरण करते हैं; वैसे ही परोपकारी जन परिपुष्ट और बलिष्ठ काया से अधिक धर्म-कर्म करते हैं।'

०००

भागलपुर में एक वैश्य स्वामीजी के लिए भोजन की सामग्री भेजा करता था। परंतु स्वामीजी को पता लगा कि उसकी भावना यह है कि इस आतिथ्य-सेवा से उसे संतान की प्राप्ति हो। महाराज ने उसी समय से उसका स्वार्थ का अन्न ग्रहण करना छोड़ दिया।

०००

बड़ौदा राज्य के दीवान ने एक दिन स्वामीजी को भोजनार्थ अपने गृह पर निमंत्रित किया। जब स्वामीजी भोजन पाकर लौटने लगे, तो दीवान ने एक सहस्र रजत-मुद्राएं श्रीचरणों में भेंट कीं। स्वामीजी ने वह रुपया न लिया और कहा—'मैं कुरीतियों का खंडन करता हूं। यदि ये रुपये ले लूंगा, तो गोसाइयों को अपनी पधरावनी के लिए एक दृष्टांत मिल जायेगा।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कला-चिंतन

मस्तिष्क में जैसे ही कोई चाक्षुष अनुभव प्रस्फुटित होता है, मैं उसे कैनवस पर आकार दिये बिना नहीं रह पाता। यदि ऐसा न करूं, तो बेचैन हो उठता हूं। यही मेरे सृजन की अनिवार्यता है। कुछ … को स्केच में ढालकर या लघुचित्र (… स्केच) में गुंफित करके रख लेता हूं, … समय आने पर वह विस्तार पाता … विशाल कैनवस पर विभिन्न आकारों … रंगों में निखर आता है। उसमें कई … स्मृतियां और नयी तकनीकें आपो हीं … जुड़ती चली जाती हैं। लेकिन उसका … रूप जो मस्तिष्क में बेचैनी बनाये रहता … ओझल नहीं होने पाता।

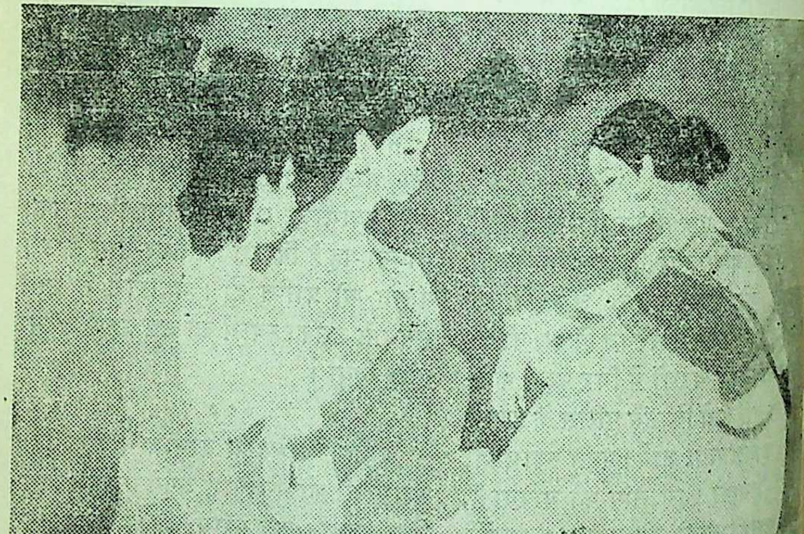

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य विधाओं का प्रेमी अवश्य हूं; और १९३६ से १९३९ तक कश्मीर में चित्रकार-पत्रकार और बाद में मद्रास में फिल्मों में कला-निर्देशक के रूप में रहकर जमकर काम किया है। मगर अपनी अभिव्यक्ति के लिए मुझे चित्रकला ही पर्याप्त माध्यम प्रतीत हुआ। इसके प्रति मेरी सहज, सीधी आत्मीय आसक्ति है। यह मेरी अंत:प्रेरणा का सूत्र भी है।

रचनात्मक उपलब्धि समाज की स्वीकृति के उपरांत जीने का सहारा बन जाती है। इस तरह की स्वीकृति से ही कलाकार में आत्मसंतोष और आत्मविश्वास जनमता है। कलाकार कभी कला को धन-संचय का साधन न बनाये; धन-पिपासा की गुलामी से सृजन व चिंतन के कलात्मक मूल्य नष्ट होते हैं—जबकि उसे हर हालत में इस मूल्य की रक्षा करनी है। इसके बिना जीवन कौतुकपूर्ण न होगा, कला का जीवन-मूल्य नहीं रहेगा।

अच्छी कला अच्छा जीवन प्रदान करती है। यह कोई अतिरिक्त व्यवसाय तो है नहीं, अत: कलाकार को अपनी प्रतिभा से जीवन-निर्वाह करना चाहिये।

आज मैं उम्र (६६ वर्ष) के इस स्तर पर अनुभव करता हूं कि चाक्षुष अनुभवों को सजीव बनाये रखने का गुण और आत्मिक अनुभव दोनों एक समान हैं।

मैंने कई राजनैतिक और सामाजिक परिवर्तन देखे; मगर मेरा सृजन उनसे उत्प्रेरित नहीं हुआ। इसे मैं अपने-जैसे कलाकार के लिए जरूरी भी नहीं समझता। यदि कोई आपके सृजन का अपने राजनैतिक उद्देश्य के लिए उपयोग करे, तो उसे आप अपना दुर्भाग्य ही समझिये। जीवन का समय तो निश्चित होता है; लेकिन कला तो कालातीत है, उसे किसी विशेष समय के घेरे से बांधना उचित नहीं।

राजनैतिक दलों का चरम उद्देश्य मानव-जाति की सुख-शांति ही तो है। और कलाकार स्वयं में एक राजनैतिक दल होता है।

० एन. एस. बेंद्रे ०

डा. विष्णु भटनागर द्वारा प्रस्तुत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह अपने तरीके से मानव-जाति की सुख-शांति के लिए प्रयत्न करता है।

मेरे काम को चाहने वाले दोनों वर्ग के लोग हैं—सुसंपन्न भी और आम लोग भी। कलाकृति के प्रति नियत दृष्टि या संसर्ग से उनमें कलात्मक मूल्यों की खोज को प्रोत्साहित किया जा सकता है। और, किसी भी अच्छी कृति में यह शक्ति होनी चाहिये।

कला की कोई भाषा नहीं होती, जैसी कि अन्य विधाओं की होती है। कला के माध्यम से कलाकार का अभिप्राय सीधे प्रकट होता है, किसी दूसरे माध्यम से नहीं।

ईश्वर-प्रदत्त और मानव-निर्मित चीजों को मैं बच्चों के समान आश्चर्य से देखता हूं। यह दृष्टि मुझे नित नया ज्ञान और अनुभव प्रदान करती है, जिन्हें मैं अपने चित्रों में भावात्मक रूप देता हूं।

कला आत्मानंद की चीज है और है आदि से अंत तक जीवन और जगत् को पूर्णता प्रदान करने वाली।

★

कला की कीमत

यह मेरा सौभाग्य है कि हालीवुड के साथ होने वाली मेरी कोई भी व्यापारिक बात-चीत सिरे नहीं चढ़ी है। वास्तव में हालीवुड वाले मेरा नाम चाहते हैं, मेरा संगीत नहीं। एक बार मुझे एक फिल्म का संगीत देने के लिए एक लाख डालर मिल रहे थे; पर मैंने इन्कार कर दिया। फिर मुझसे कहा गया कि अगर आप अपने नाम का उपयोग करने की इजाजत दे दें और संगीत कोई और ही रच दें तो भी आपको एक लाख डालर मिलेंगे। किंतु भी मैंने इन्कार कर दिया।

इसी प्रकार का एक उदाहरण (संगीतस्रष्टा) शूबर्ग का है। उसे अपनी संगीत-रचनाओं से कुछ भी पैसा नहीं मिला करता था। उसे फिल्म 'गुड अर्थ' का संगीत देने को कहा गया। बदले में उसे इतना धन मिलने वाला था, जिसकी वह कभी कल्पना भी नहीं कर सकता था। परंतु साथ ही उसे कुछ हिदायतें भी दी गयीं कि वह संगीत किस प्रकार का हो। शूबर्ग ने प्रस्ताव अस्वीकार करते हुए कहा—'क्या आप मुझे भूख की मौत से बचाकर दूसरी तरह मारना चाहते हैं?'

—**आइगर स्ट्राविन्स्की** [अमरीकी स्वरस्रष्टा]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

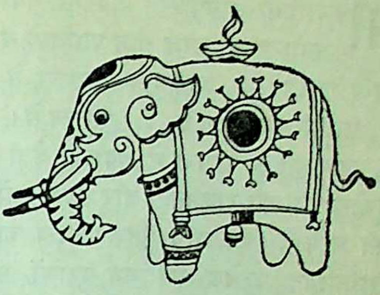

वाक्यदीप

विचार संसार के महान योद्धा हैं; और जिस युद्ध के पीछे कोई विचार नहीं है, वह मात्र बर्बरता है।
-जेम्स गार्फील्ड

आज के युग में हम विचारों के लिए लड़ते हैं और समाचार-पत्र हमारे किले हैं।
–हाइनरिश हाइन

विचार या तो इस संसार का नियंत्रण करते हैं, या उसे अस्त-व्यस्त करके रख देते हैं। दूसरे शब्दों में, समस्त सामाजिक प्रक्रिया विचारों पर आधारित है। –आगस्त कोम्ते

जो विचार खतरनाक नहीं है, वह विचार कहलाने का हकदार नहीं है।
–एल्बर्ट हबर्ड

लोग तभी तक शक्तिशाली हैं, जब तक कि वे किसी शक्तिशाली विचार का प्रतिनिधित्व करते हैं। उसका विरोध करने पर वे शक्तिहीन हो जाते हैं। –फ्रायड

जहां तक विचारों का संबंध है, जनता सस्ते और अश्लील विचारों को ज्यादा पसंद करती है।
–चार्ल्स पियर्स

एक चीज संसार-भर की सेनाओं से भी अधिक शक्तिशाली है–ऐसा विचार जिसका समय उपस्थित हो गया है।
–विक्टर ह्यूगो

किसी विचार के लिए जान देना निःसंदेह एक महान काम है। परंतु उससे भी महान काम है, उन विचारों के लिए जान देना, जो सच्चे हों। –मेनकेन

विचार, सच पूछा जाये तो, शक्तियां हैं। व्यक्तित्व की शक्ति भी अनंत है। इन दोनों का संयोग इतिहास को जन्म देता है। –हेनरी जेम्स

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो खुदाइयों के बीच अयोध्या की हकीकत

० बलराम श्रीवास्तव ०

मोक्षदायिनी सप्तपुरियों में गिनी गयी अयोध्या की खोज तीन पद्धतियों से होनी चाहिये—१. आनुश्रुतिक परंपरा से, २. साहित्यिक साक्ष्य से, ३. पुरातत्त्व से।

आनुश्रुतिक परंपरा में अयोध्या त्रेतायुगीन राम की राजनगरी और इक्ष्वाकुओं की भूमि है। इस आनुश्रुतिक परंपरा का साहित्यिक उल्लेख सर्वप्रथम पुराणों में मिलता है। आरंभिक वैदिक साहित्य में अयोध्या का उल्लेख नहीं मिलता। ऐतरेय ब्राह्मण में अयोध्या का एक बार उल्लेख है, परंतु 'ग्राम' के रूप में है। पुराणों के वंशानुचरित खंड में अयोध्या का इतिहास दिया हुआ है, जो प्राचीन अनुश्रुतियों के आधार पर संकलित है। महाभारत में युवनाश्व द्वितीय और उसके पुत्र मांधाता के शासन-काल को अयोध्या का उत्कर्ष-काल बताया गया है। परंतु उसका ऐश्वर्य हैहयों ने नष्ट कर दिया। उसकी पुनःप्रतिष्ठा वायु, पद्म और लिंग पुराणों के अनुसार भगीरथ और अंबरीष ने की।

वंशावली-गणना के अनुसार मनु-पुत्र इक्ष्वाकु से युवनाश्व १९ वीं, मांधाता २० वीं, भगीरथ ४४ वीं और अंबरीष ४७ वीं पीढ़ी में आते हैं। रघु, जो इक्ष्वाकु से ६१ वीं पीढ़ी में हुए, परम प्रतापी तथा चक्रवर्ती थे; अतएव उनके बाद इक्ष्वाकु-वंश 'रघुवंश' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। राम उनके प्रपौत्र थे अर्थात् वे रघु के बाद तीसरी पीढ़ी और इक्ष्वाकु की ६४ वीं पीढ़ी में थे। जो लोग वंशावली-गणना का अनुगमन करते हैं, उनके अनुसार राम का समय १९३० ई. पू. पड़ता है और महाभारत का समय १४०० ई. पू.।

इस आनुश्रुतिक परंपरा का समर्थन पुरातत्त्व से मिलना सर्वथा असंभव प्रतीत होता है। वंशगणना-पद्धति के अनुसार ऋग्वेद में आर्यों का दाशराज्ञ युद्ध सप्तसिंधु में हुआ था और राम के तीन या चार पीढ़ी के पूर्व-कालीन राजाओं के बीच हुआ था। इस हिसाब से दाशराज्ञ युद्ध का समय १९०० ई. पू. ठहरता है। १९०० ई. पू. के पहले अयोध्या की स्थिति का प्रमाण पुरातत्त्व से मिलना तो असंभव ही है; पुराणों के सिवा अन्य किसी साहित्यिक साक्ष्य से भी मिलना कठिन है। सप्तसिंधु में घटित दाशराज्ञ युद्ध के पूर्व राम के ऐतिहासिक अस्तित्व को स्वीकार करना समूचे आर्यों के संचरणकाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास में गड़बड़ और विसंगतियां पैदा कर देगा। फिर तो यह भी अवश्य ही मानना होगा कि आर्य सप्तसिंधु के पूर्व 'मध्यदेश' में ही थे।

ऊपर इसका जिक्र हो चुका है कि ऐतरेय ब्राह्मण के समय में अयोध्या एक साधारण ग्राम था। बौद्ध साक्ष्य के अनुसार ६०० ई. पू. में भी वह नगर नहीं था। अयोध्या का

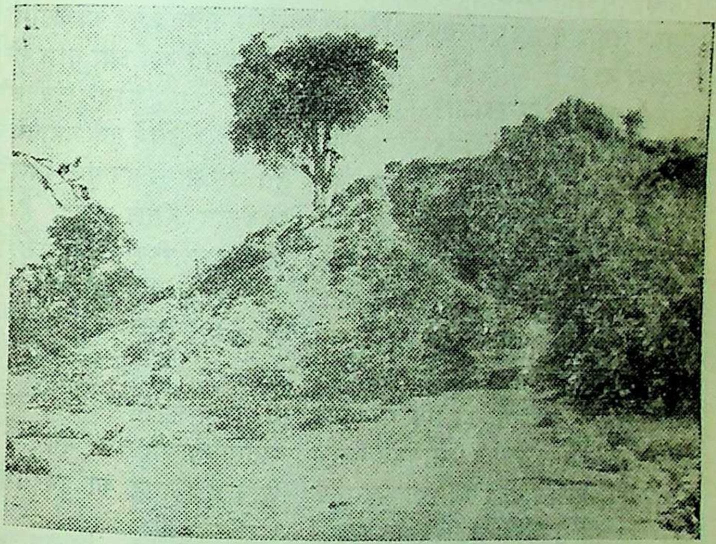

चित्र-१ : उत्खनन के पूर्व कुबेरटीला

नाम न तो महापरिनिब्बान-सुत्त के षोडश महाजनपदों की राजनगरियों की सूची में है और न जातक-कथाओं में ही उसका उल्लेख विशाल नगर के रूप में हुआ है। संभवतः बुद्ध के समय में भी अयोध्या एक ग्राम ही था। बौद्ध परंपरा (उदानकथा) के अनुसार बुद्ध ने वहां उपदेश दिये थे।

बौद्ध साक्ष्य से अयोध्या और साकेत दो पृथक् स्थान सिद्ध होते हैं। विनयपिटक और अंगुत्तरनिकाय के आधार पर राइस डेविड्स ने बुद्ध के समय में दोनों ही नगरों की पृथक् स्थिति स्वीकार की है और साकेत की अवस्थिति उन्नाव जिले में सुजानकोट में बतायी है। बौद्ध काल में अयोध्या की अपेक्षा साकेत का अधिक महत्त्व था और वही उत्तर कोशल की राजधानी के रूप में मान्य था।

संभवतः प्रथम शती ई. के आस-पास ही अयोध्या ने नगर के रूप में महत्त्व पाया। वहां से प्राप्त एक अभिलेख में इसका उल्लेख है कि वहां पुष्यमित्र शुंग (दूसरी शती ई. पू.) ने अश्वमेध यज्ञ किया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संभवत: उस समय उसका धार्मिक और राजनैतिक दोनों प्रकार का महत्त्व था। एक अन्य परिवर्तन से यह भी परिलक्षित होता है कि अयोध्या साकेत का पर्यायवाची बन गया। अपने राजनैतिक महत्त्व के कारण–जैसा कि पतंजलि ने स्पष्ट लिखा है–पुष्यमित्र के अश्वमेध यज्ञ के कुछ पूर्व ही उस पर यवनों का आक्रमण हुआ। बाद की एक परंपरा (युवान च्वाङ का विवरण) के अनुसार अशोक ने यहां एक स्तूप का निर्माण करवाया था।

जैन अनुश्रुति (जिसका ठीक-ठीक समय नहीं आंका जा सकता) में यह प्रचलित है कि अयोध्या जैनों का तीर्थ था और उसका विस्तार लंबाई में १२ योजन और चौड़ाई में ९ योजन था। 'विविधतीर्थकल्प' के अनुसार जैन तीर्थंकरों में से ऋषभ, अजित, अभिनंदन, सुमति, अनंत और अचलबाहु का जन्म अयोध्या में हुआ था।

पुराणों में अयोध्या को एक महानगर के रूप में बखाना गया है। भागवत पुराण में वह एक विशाल नगर है। स्कंद पुराण के अनुसार वह सरयू के तट पर मत्स्याकार बसा था और तमसा नदी के एक योजन उत्तर में था। बसाव की दृष्टि से उसकी व्याप्ति एक योजन बतायी गयी है। महाभारत में भी उसे एक 'पुण्यलक्षण नगर' कहा गया है। रामायण के विवरण के अनुसार अयोध्या में चार वर्णों की प्रतिष्ठा थी तथा वह हर तरह से बड़ा समृद्धशाली नगर था। किंतु वाल्मीकि-रामायण में अयोध्या का जो वर्णन है, वह तो किसी भी प्रकार प्राचीन अयोध्या का नहीं है। निश्चय ही वह बा... प्रक्षिप्त है।

वाल्मीकि-रामायण का अयोध्या-वर्णन संक्षेप में इस प्रकार है:

'सब प्रकार से प्रसन्न और उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त कोशल नामक एक महान जनपद है, जो सरयू नदी के तट पर बसा है और धन-धान्य से समृद्ध है। उसी कोशल देश में मानवेंद्र मनु की बसायी और त्रिलोक में विख्यात अयोध्या नाम की नगरी है। ... महापुरी बारह योजन लंबी और तीन योजन चौड़ी है। उसमें कई महापथ और राजमार्ग हैं। उन मार्गों पर पुष्प बिखरे रहते हैं और छिड़काव होता रहता है (मुक्तपुष्पावकीर्णेन जलसिक्तेन नित्यशः)। उसमें बड़े-बड़े फाटक और तोरण हैं। बड़े सुंदर ... से बाजार बने हुए हैं। सब प्रकार के ... प्राकारों पर लगे हुए हैं। ...... उस नगर में स्थान-स्थान पर तोपें लगी हैं (शतघ्नी-शतसंकुलाम्) तथा नगर में अनेक ... द्यान हैं। नगर का दुर्ग गंभीर परिखा ... सुरक्षित है।'

इस विवरण की ऐतिहासिकता का ... दो शब्द खोलते हैं। पहला है 'शतघ्नी' और दूसरा, इसी वर्णन में प्रयुक्त 'सामंत'। 'सामंत' शब्द का संदर्भ इस प्रकार है: सामन्तराजसंघैश्च बलिकर्मभिरावृताम् (बाल. ५·१४)।

प्रथम शती ई. के पूर्व संस्कृत में 'सामंत' शब्द का प्रयोग नहीं है और 'शतघ्नी' ...

अनुवृत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(तोप) में प्रयुक्त होने वाली बारूद का आविष्कार भी सातवीं शती ई. के पूर्व नहीं हुआ था। अतः सहज ही यह निष्कर्ष निकलता है कि वाल्मीकि-रामायण का अयोध्या-वर्णन (बालकांड, पंचम सर्ग) प्रक्षिप्त है। संभवतः पूर्वमध्यकालीन या मध्यकालीन नगर-रचना को ध्यान में रखकर लिखा गया यह अयोध्या-वर्णन वाल्मीकि-रामायण में बाद में कभी जोड़ा गया होगा।

गुप्त-काल तक तो अयोध्या ने एक प्रमुख तीर्थ के रूप में काफी प्रसिद्धि पा ली थी। फाहियान के विवरण के अनुसार, अयोध्या में बौद्ध और ब्राह्मण परस्पर संघर्षरत थे, उनमें धार्मिक सद्भाव नहीं था। सातवीं शती में युवान च्वाङ यहां आया। उसके दिये विवरण के अनुसार तब अयोध्या बौद्धों का एक प्रसिद्ध तीर्थ था। वहां लगभग एक सौ बौद्ध विहार थे, जिनमें तीन हजार से भी अधिक भिक्खु रहते थे। हिंदू मंदिरों की संख्या नगण्य थी, यद्यपि बौद्ध मंदिर लगभग दस थे। अयोध्या असंग और वसुबंधु की साधना-स्थली भी थी। वसुबंधु ने ८३ वर्ष

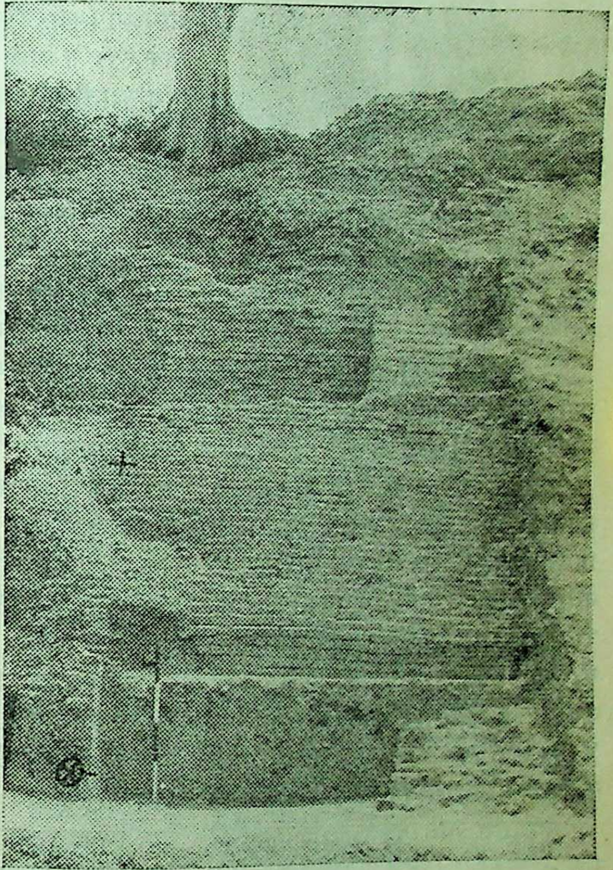

चित्र २ : उत्खनन से उद्घाटित अयोध्या (कुबेरटीला) के विभिन्न सांस्कृतिक स्तर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : मौर्यकालीन भूरे रंग वाली पशुमूर्ति

की अवस्था में यहीं देहत्याग किया था। उनके प्रयास से अयोध्या ने महायान बौद्ध धर्म के एक महान ज्ञानपीठ के रूप में ख्याति पायी।

इस प्रकार साहित्यिक साक्ष्य से एक नगरी के रूप में अयोध्या की ऐतिहासिकता मौर्यों से पूर्ववर्ती सिद्ध नहीं हो पाती।

पिछले दशक में अयोध्या में दो उत्खनन हुए। १९६९-१९७० में काशी हिंदू-विश्वविद्यालय के प्रो. अवधकिशोर नारायण के नेतृत्व में एक दल ने, जिसमें सर्वश्री टी. एन. राय, पुरुषोत्तम सिंह और भूपेंद्रपाल सिंह थे, वहां उत्खनन-कार्य किया। उत्खनन मुख्यतया कुबेरटीला में हुआ (चित्र १ : पृष्ठ ४१)। किंतु उसमें उपलब्ध प्रमाण अयोध्या को प्राङ-मौर्यकालीन सिद्ध नहीं कर पाते।

वहांप्राप्त सबसे निचला सांस्कृतिक स्तर मौर्य-कालीन है (चित्र २ : पृष्ठ ४३ में × चिह्नांकित), जिसमें से उत्तर भारत के काले चमकदार प्रकार के मृत्तिका-पात्र (पुरातत्त्व की भाषा में एन. बी. पी.—नार्दर्न ब्लैक पॉटरी) बहुत मात्रा में प्राप्त हुए हैं। इन बरतनों पर उसी प्रकार की चमक पायी जाती है, जैसी कि लगभग मौर्य-कालीन कलाकृतियों और अशोक-स्तंभों पर पायी जाती है। यही चमक और रंग (भूरा) अयोध्या (कुबेरटीला) के निम्नतम सांस्कृतिक स्तर से प्राप्त कुछ पशुमूर्तियों पर भी पायी जाती है (चित्र ३ : इसी पृष्ठ पर)।

इस प्रकार की और इस रंग की मृत्तिका-मूर्तियां ज्ञात प्रमाणों के आधार पर, मथुरा के पूर्व में केवल अयोध्या से ही उपलब्ध हुई हैं। कला के इतिहास और समृद्धि में यह अयोध्या की अनुपम देन है। इसी सांस्कृतिक स्तर के सामंजस्य (एलाइन्मेंट) में कुछ शुंग-कालीन मृत्तिका-मूर्तियां मिली हैं (चित्र ४ : पृष्ठ ४५)। ऊपर हम देख चुके हैं कि पुष्यमित्र शुंग के शासन-काल में निर्विवादतः अयोध्या का राजनैतिक-सांस्कृतिक महत्त्व था। यहां के उत्खाताओं ने मौर्य-शुंग-काल में कोई स्पष्ट सांस्कृतिक अंतर नहीं पाया है और इसे काल-१ की संज्ञा दी है।

अयोध्या का काल-२ कुषाण-गुप्त-युगीन है। उत्खनन में तो कोई सिक्के नहीं मिले; परंतु दूसरी शती ई. पू. उत्तरार्ध के स्थानीय राजाओं (मूलदेव, वासुदेव, धनदेव, विशाखदेव, शिवदत्त, सूर्यमित्र, संघमित्र, विजयमित्र) के तांबे के सिक्के यहां इतनी प्रभूत मात्रा में पाये गये हैं और आज भी प्राप्त होते हैं कि उनसे कुषाण-पूर्व अयोध्या का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतिहास सरलतापूर्वक जाना जा सकता है। इन सिक्कों पर स्वस्तिक, मत्स्य, वृष, हस्ती, बोधिवृक्ष, त्रिरत्न, लक्ष्मी, कुक्कुट, स्तूप आदि प्रतीक बने हैं। कुषाण-काल की तो कुछ ईंटें और कुछ मृत्तिका-पात्र ही उपलब्ध हुए हैं। गुप्त-कालीन स्तर में एक विशाल मंडलाकार वास्तु (स्तूप ?) का कुछ अंश भी उद्घाटित हुआ है। (इसका कुछ अंश चित्र २: पृष्ठ ४३ में चिह्न + से सूचित है।) इस वास्तु में प्रयुक्त पक्की ईंटों में से कुछ पर गुप्त-कालीन ब्राह्मी लिपि में 'च' अक्षर उत्कीर्ण है। ऐसे ही अक्षर से युक्त ईंटें मणि पर्वत से भी प्राप्त हुई हैं। गुप्त-काल में समुद्रगुप्त का जयस्कंधावार (सैनिक छावनी) अयोध्या में स्थापित था, ऐसा प्रमाण गया के अभिलेख से प्राप्त होता है।

अयोध्या का काल-३ गुप्त-काल के बहुत बाद आरंभ होता है। काल-२ और काल-३ में काफी अंतर है। काल-३ के सांस्कृतिक स्तर से यह पूरी तरह प्रमाणित होता है कि इस समय अयोध्या इस्लाम की चपेट में आ चुकी थी। काल-२ और काल-३ के बीच का अंतराल इस परंपरा से मेल खाता है कि प्राचीन अयोध्या नष्ट हो चुकी थी और वर्तमान अयोध्या किसी विक्रमादित्य ने बसायी है।

इस प्रकार एन. बी. पी. के प्रमाण के अनुसार अयोध्या का पुरातत्त्वीय अस्तित्व चौथी-पांचवीं शती ई. पू. से अधिक प्राचीन

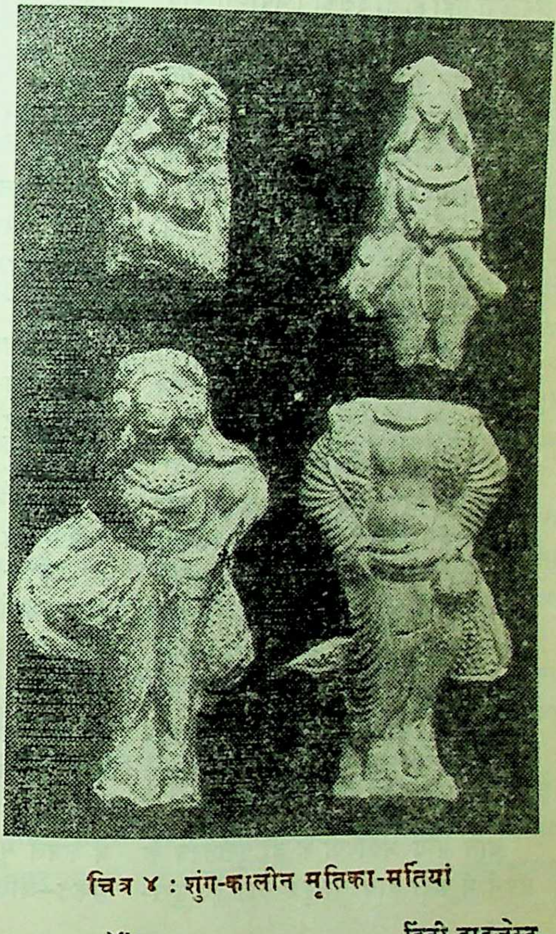

चित्र ४ : शुंग-कालीन मृतिका-मूर्तियां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं सिद्ध होता।

अयोध्या का दूसरा उत्खनन गत वर्ष प्रो. ब्रजबासी लाल के निर्देशन में अशर्फी भवन के पास किया गया। उत्खनन आरंभ होने के पूर्व ही इस स्थान का कुषाणोत्तर पुरातात्त्विक संदर्भ विनष्ट हो चुका था। प्रो. लाल की मान्यता है कि यदि राम की अयोध्या यही है, तो इसका (अयोध्या का) निम्नतम स्तर तथा उसकी भौतिक संस्कृति राम-कालीन संस्कृति होनी चाहिये। गत वर्ष के उत्खनन में उन्हें ऐसे कोई प्रमाण नहीं मिले, जिनसे अयोध्या एन. बी. पी. (अर्थात् पांचवीं-चौथी शती ई. पू.) से पूर्व-कालीन सिद्ध हो सकें। उनकी दूसरी खाई (ट्रेंच) का भी, जो उन्होंने कौशिल्या घाट में खोदी, यही परिणाम रहा।

अभी प्रो. लाल अयोध्या में जन्मभूमि, कनक-भवन आदि स्थलों पर खुदाई करेंगे और साथ ही रामकथा से संबद्ध अन्य स्थल शृंगवेरपुर, भारद्वाजाश्रम, चित्रकूट, बिठूर, परिहर, जनकपुर आदि में भी उत्खनन-कार्य संपन्न करेंगे। उनकी यह मान्यता है कि यदि इन सभी स्थलों के निम्नतम स्तर सांस्कृतिक लक्षणों में अयोध्या के निम्नतम उत्खनित स्तर से मेल खाते होंगे, तो वही निर्विवाद-तया रामायण-कालीन संस्कृति होगी। वैसे वे मानते हैं कि राम की ऐतिहासिकता को सिद्ध करने के लिए अभिलेख आदि प्रमाण भी आवश्यक हैं।

बात यदि अयोध्या के ही पुरातत्त्व के संदर्भ में कही जाये, तो कुछ ठीक है। पुरातत्त्व की अपनी सीमा है और भारतीय श्रुति एवं साहित्य के संदर्भ में पुरातत्त्व को अभी बहुत अधिक समर्थ होना है। जब पुरातत्त्वज्ञ उपलब्ध प्रमाणों से अधिक आगे बढ़कर बोलते हैं, तब स्थिति विवादास्पद हो जाती है। अयोध्या में चित्रित भांडों (पेन्टेड ग्रे वेयर, जिनका संबंध प्रो. लाल महाभारत-काल से जोड़ते हैं) का नहीं मिलना एक ऐसी पुरातात्त्विक स्थिति है, जो कल और अधिक उत्खनन होने पर तथा पात्रखंडों के अतिरिक्त प्रमाण मिलने पर सर्वथा बदल भी सकती है। ऐसी संभावनाओं के रहते अयोध्या को छोड़कर पुरातत्त्वज्ञों का राम का काल-निर्णय करना एक हेतुवाद मात्र है, जो विवादास्पद है और परिणाम में भ्रामक।

पहली बात तो यह है कि भूरे चित्रित मृत्तिकापात्र-खंडों का समय सर्वत्र एक नहीं है। वह कहीं १००० ई. पू. है, तो कहीं ९०० ई. पू., और कहीं ४०० ई. पू.। स्वयं हस्तिनापुर में (जिसकी खुदाई प्रो. लाल ने की है) भूरे चित्रित पात्रों का काल ६०० ई. पू. से भी कम है और समय की दृष्टि से काले मृत्तिका-पात्रों (एन. बी. पी.) से बहुत दूर नहीं।

दूसरे, भूरे चित्रित पात्रों (पेन्टेड ग्रे वेयर) को महाभारत अथवा कृष्ण से संबद्ध करने का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है।

तीसरे, राम और कृष्ण के काल-निर्णय में केवल मृत्तिकापात्र-खंड प्रमाण नहीं हो सकते—अंतिम प्रमाण तो सर्वथा नहीं।

अगले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब यदि केवल मृत्तिकापात्र-खंडों के आधार पर राम और कृष्ण का काल-निर्णय करना है, तो हमें एक और विषम स्थिति का सामना करना पड़ेगा। भूरे चित्रित मृत्तिका-पात्र-खंडों का प्राचीनतम ज्ञात समय रेडियो कार्बन तिथि-निर्धारण विधा के अनुसार १०२५ ई. पू. है। पुरातत्त्वज्ञों के अनुसार यह कृष्ण का समय है। एन. बी. पी. अर्थात् काले मृत्तिका-पात्रों का प्राचीनतम समय लगभग ५०० ई. पू. माना जाता है, अर्थात् पुरातत्त्वज्ञों के अनुसार राम का समय इसी मृत्तिकापात्र-खंड संस्कृति में पड़ सकता है। फिर तो यही बृहदारण्यक उपनिषद का समय होगा, जिसमें जनक का उल्लेख है; और यही महाजनक-जातक का भी समय होगा जो रामकथा की दृष्टि से नहीं, किंतु अभिधान की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है; और यही समय दसरथ-जातक का भी सिद्ध होगा, जिसमें रामकथा बीज रूप में है।

फलतः निष्कर्ष यही निकलता है कि पुरातत्त्वीय उत्खनन से अयोध्या की अति प्राचीनता भले सिद्ध न होती हो, फिर भी वर्तमान पुरातत्त्व रामायण-कालीन संस्कृति अथवा राम की ऐतिहासिकता के विषय में कुछ कहने की स्थिति में नहीं है। केवल मृत्तिका-पात्रों के आधार पर राम और जनक को कृष्ण के बाद का—और अधिक स्पष्ट कहें तो एन. बी. पी. काल का अर्थात् ५०० ई. पू. के आस-पास का—बताना न केवल अवैज्ञानिक पुरातत्त्वज्ञता है, अपितु एक ऐतिहासिक विसंगति है, जो समस्त साहित्यिक और आनुश्रुतिक परंपराओं को अकारण ही नकारती है।

जहां तक बात वर्तमान अयोध्या की हकीकत की है, साहित्य से लेकर पुरातत्त्व तक का निष्कर्ष लगभग एक-सा है—वह यह कि वर्तमान अयोध्या मौर्यों से कुछ ही अधिक पुरानी है।

—ओल्ड एफ/३ (जोधपुर कालोनी),
हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी-५.

★

जार्ज वाशिंग्टन तब अमरीका के राष्ट्रपति थे। एक ऊंचे सरकारी पद के लिए उन्हें एक आदमी की जरूरत पड़ी। पद का वेतन बहुत अधिक था, सो अर्जियों का ढेर लग गया। उसमें वाशिंग्टन के एक घनिष्ठ मित्र की भी अर्जी थी। लोगों का खयाल था कि वह जगह उसी को मिलेगी। मित्र को तो पूरा भरोसा था ही।

मगर जब परिणाम निकला तो देखा गया कि वाशिंग्टन ने विरोधी दल के एक सदस्य को उस पद के लिए चुना है। इससे नाराज होकर वाशिंग्टन से उनके कुछ साथियों ने कहा—'आपने न अपने मित्र का खयाल रखा और न ही अपने दल का।'

इस पर राष्ट्रपति ने उत्तर दिया—'मैं मित्र और दल दोनों का आदर करता हूं। मुझे तो पूरे देश के हित का ध्यान रखना है। जिस आदमी को मैंने चुना है, वह विरोधी दल का तो है, पर इस पद के लिए वही सबसे अधिक योग्य है।' **—सुरेंद्र श्रीवास्तव**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दीपावली विशेषांक

दीपावली ज्योति की पूजा का पर्व है, इसलिए वह जीवन की पूजा का भी पर्व है; क्योंकि ज्योति जीवन का ही दूसरा नाम है। जीवन की समग्र समृद्धि का आवाहन ही नवनीत के प्रत्येक अंक का आधारस्वर होता है—और उसके दीपावली विशेषांकों का तो विशेषतः।

इस वर्ष दीपावली २२ अक्तूबर को पड़ रही है। नवनीत का नवंबर का अंक दीपावली विशेषांक होगा; किंतु वह २० अक्तूबर के आस-पास ही आपको मिल जायेगा—दीपावली की रौनक बढ़ाने। अंक की सामग्री की बानगी पेश है :

'यदि आपके पास वेल्स का कालयंत्र हो तो आप किस ऐतिहासिक घटना को घटना-स्थल पर उपस्थित होकर अपनी आंखों देखना चाहेंगे?' इस प्रश्न का उत्तर हिंदी के प्रमुख साहित्यकारों की कलम से।

विश्व के सर्वाधिक प्राचीन महाकाव्य 'गिलगामेश' का कथासार; अमृता प्रीतम की आत्मकथा के कुछ अंश; कविता...

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

... होकर अपनी आँखों देखनी चाहिए ? इस प्रश्न
का उत्तर हिंदी के प्रमुख साहित्यकारों की कलम से।
विश्व के ... महाकाव्य 'गिलगमेश' का कथासार; अमृता प्रीतम

की आत्मकथा के कुछ अंश। कतिपय महत्त्वपूर्ण लेख :

* विदेशों में भारतीय साम्राज्य का विस्तार * मध्यकाल का महान इंजीनियर-राजनेता—अन्नपति सुय्य * वंदेमातरम् के शतवर्ष * गुरुदेव और बापू * भाई की मज्जा से भाई के प्राण बचे * कुद्रेमुख परियोजना * क्या लक्ष्मी आयतर देवी है ? * कंप्यूटर द्वारा चोरियां * विज्ञान पशुधन की सेवा में * वृक्ष काटने का दुष्फल * सुंदर बनना है आपको ? * सीता-तांडव *

पृष्ठसंख्या—२५६ : मूल्य—केवल ३ रुपये

अपने एजेंट को कहकर अपनी प्रति अभी से सुरक्षित करा लीजिये :

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता के देहावसान पर :

श्रद्धा-स्मरण

—दिनकर सोनवलकर—

[१]

आंसुओं का महत्त्व तो
जैसे भूल ही गयो है
दुनिया।
हम सबके दिल
जैसे चट्टानों को तरह सख्त
हो गये हैं
रेगिस्तान की तरह
सूख गयी हैं जिंदगियां।
मुश्किल यह है
कि भीतर की दुनिया को
रसमय, स-जल
नहीं कर सकती
कोई परियोजना।
सिर्फ आंसुओं से ही
जुड़ते हैं
टूटे हुए सेतु,
घुलता है
गर्दोगुबार मन का।
अहंकार में डूबे हुए
मेरे मन!
कभी तो फूटकर
रो लिया कर।

[२]

आखिर यह गुमान
किस बात का है?
— पैसे का?
कुछ काम नहीं आता
ऐश्वर्य
जब आ जाता है
महाकाल का आमंत्रण।
— रूप का?
सिर्फ राख ही बचती है
मुट्ठियों में
प्रवाहित करने के लिए।
कितनी हल्की है
अरथी
कितना भारी है
अहंकार!

[३]

चाचा के चेहरे पर भी
वैसी ही हैं झुर्रियां
जैसी पिता के चेहरे पर थीं-
झुर्रियां ही नहीं,
उनके हाथ की रेखाओं में भी
है वैसा ही नेह-स्पर्श।
बुआ की आंखें तो
बिलकुल पिता जैसी हैं —
उनमें भी जलती है
स्नेह-ज्योति
आरती के दीपक की तरह।
एक ही उत्स से
फूटे हुए झरने हैं हम सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर इसके पानी में
इतनी गंदगी क्यों है ?
यह प्रदूषण
कहीं बाहर से तो
नहीं आता।
हम सबने फेंके हैं
अपने-अपने विकार
इस सरिता में
और अब
प्यासे तरसते हैं
कि परिवार की नदी का जल
पीने लायक
नहीं रहा।

[४]

राह तुम्हारी अपनी है
सबकी अलग-अलग
अपनी तबीयत से चलो
अपनी-अपनी गति से।
जीवन-पद्धति और
व्यवसाय के चुनाव के लिए
पूरी तरह आजाद हो तुम
करो अपनी-अपनी मति से।
लेकिन
बूढ़े पीपल की छाया तो
रहने दो,
जहां तुम मिटा सको
अपनी यात्रा की थकान।
उन चरणों को मत भूलना
जहां तुम सब
झुक सको एक साथ
कम से कम –
एक मूर्ति तो रहने दो ऐसी
जहां तुम डूब सको
ध्यान में
समवेत।

[५]

सत्तर बरस
भरे-पूरे परिवार की जिम्मेवारियां
निभाते हुए
हर क्षण को पूरी सक्रियता
और अनासक्त तन्मयता से
जीने के बाद
आखिरी क्षण में–
तुमने स्वयं को
कैसा अकेला कर लिया
(स-प्रयास)
जैसे पूजा के लिए
हम बैठ जाते हैं
चुपचाप आसन पर अकेले
वैसे ही तुमने भेज दिया
सबको घर से बाहर
और एकाग्र पढ़ते रहे 'हास्यम्'[१]
सिर्फ एक झटका
और अगले ही क्षण
तुम सो गये चिरनिद्रा में।
सिर्फ एक पृष्ठ
खुला हुआ था
जिंदगी की पुस्तक का
आखिरी शीर्षक–
"यह तो होना ही था"।

१. हास्यम् वार्षिक संकलन १९७६

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ गया है आश्विन (सितंबर-अक्तूबर)। आकाश अब बादलों से मुक्त हो गया है। संध्याएं बड़ी सुहावनी होती हैं। वैसे ही सुहावने लगते हैं कमलों से भरे जलाशय, जिनमें बतखें आनंद से जल-विहार करती हैं। दशहरे के उत्सव में सभी के आनंद को द्विगुणित कर दिया है। सौगमग्न हैं राधा और कृष्ण।

[अनुकृति : चरन शर्मा]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिजो और उनका सामाजिक जीवन

आर. एल. थान्जावना

'मिजोरम' नया नाम है। पहले इस पहाड़ी इलाके को लुशाई पहाड़ियां कहा जाता था और आजादी आने के बाद असम की पहाड़ियां कहा जाने लगा। भारत के उत्तर-पूर्वी कोने में बर्मा और बाङ्लादेश के बीच पच्चर की तरह घुसे हुए मिजोरम की स्थिति सामरिक दृष्टि से बहुत महत्त्व की है और बर्मा एवं बाङ्लादेश के साथ उसकी ६३० मील की सीमा है।

लुशाई पर्वत उत्तर से दक्षिण की ओर फैले हुए हैं। वे जलविभाजक का काम करते हैं और अपने धोवन को ले जाने वाली नदियों का मार्ग निर्धारित करते हैं। ये पहाड़ समुद्र की सतह से ३,००० से लेकर ६,००० फुट तक ऊंचे हैं और वनाच्छादित हैं। बहुत थोड़ा इलाका मैदानी है। मिजोरम का क्षेत्रफल २१ हजार ८७ वर्गमील है और आबादी है ३॥ लाख। इस प्रकार आबादी की घनता केवल १६ मनुष्य प्रति वर्ग किलोमीटर है।

'मिजोरम' का अर्थ है 'मिजो' लोगों यानी पहाड़ी लोगों की भूमि। मिजो मंगोलीय नस्ल के हैं। वे १७ वीं-१८ वीं सदियों में उत्तर बर्मा से यहां आकर बसे। इनमें से कुछ चकमा और लखरे लोगों को छोड़कर शेष सब मिजो भाषा बोलते हैं और लगभग सभी ईसाई हैं। इनके बारे में एक दिलचस्प बात यह है कि हालांकि पढ़ने-लिखने की कला का परिचय इन्हें पहले-पहल आज से ८२ वर्ष पूर्व १८९४ में कराया गया, मगर आजकल इनमें ५४ प्रतिशत लोग साक्षर हैं।

मिजो समाज के गठन और जीवन में पिछली सदी में बहुत ज्यादा परिवर्तन हुए हैं। जब अंग्रेजों ने इन पहाड़ों में सचमुच प्रशासन शुरू किया, तब तक एक प्रकार से गांव और कबीला मिजो जीवन की इकाई थी। हालांकि युद्ध और प्रतिरक्षा की खातिर कई गांवों के संघ भी होते थे, मगर हर मिजो की वफादारी मूलतः अपने गांव के सरदार के प्रति होती थी। हर गांव का एक सरदार होता था, जो गांव के सयानों की मदद से प्रशासन करता था। सयानों को 'उ पा' कहा जाता था।

गांव सामाजिक जीवन की ईकाई था और मिजो-जीवन का केंद्र भी। मिजो गांव प्रायः पहाड़ की चोटी पर बनी चंद झोंपड़ियों का झुंड होता है। पहले गांव के बीचोंबीच सरदार का घर और कुंआरों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शयनागार–जाव्लबुक–होता था। जाव्लबुक शयन-स्थल ही नहीं, समूचे गांव का हृदय भी होता था। वह गांव के तरुणों का शिक्षा-स्थान होता था और इसी कुल्हिया में तपकर मिजो युवक समाज के जिम्मेवार नागरिक बनते थे।

मिजो समाज बहुत गुंथा हुआ समरस समाज है, जिसमें न वर्गभेद है, न स्त्री-पुरुष में बहुत अंतर किया जाता है। ९० प्रतिशत मिजो खेतिहर हैं और उनका गांव मानो एक विशाल परिवार होता है। जन्म, मरण, विवाह, प्रीतिभोज आदि सारे गांववाले मिलकर मनाते हैं। सामाजिक जिम्मेवारी को बहुत महत्त्व दिया जाता है।

मिजो नीतिशास्त्र या धर्म का आधार है–'त्लाम्नगाइह्ला'। इस शब्द का अनुवाद करना लगभग असंभव है। यह उस नैति शक्ति का सूचक है, जो मनुष्य को दू के लिए प्राण तक न्योछावर करने की प्रे देती है। यह मिजो जीवन-दर्शन का है। युद्ध और संधि, निजी और सामू व्यवहार सभी में विचार और कर्म को प्रेरित करता है।

सन १८९४ में जब ईसाई मिशनरि ने यहां ईसाइयत का प्रचार आरंभ कि तब मिजो लोग भूत और आत्माओं के पू थे। वे 'पथियन' नामक एक आत्मा विश्वास करते थे, जो उनकी दृष्टि में सृ कर्ता और सबका हितकर्ता था। वे यह मानते थे कि पर्वत, वृक्ष, चट्टान, नदी भूत और दैत्य रहते हैं, और वे तरह-त मनुष्य को कष्ट में डालकर मजा लेते हैं। इसलिए मिजो अनुष्ठानों द्वारा रिझाने की को किया करते थे।

जब से मिजो ने नया धर्म (इयत) अपनाया सब विश्वास कर्मकांड समाप्त गये हैं। उनका सामाजिक जी क्रम और वि पद्धति इस कदर गये हैं कि होता है।

बुनाई करती हुई मिजो महिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिजो, चाहे वे शहरी हों या देहाती, प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से ईसाई गिरजे के संघटनों से प्रभावित और परिचालित हैं और उनकी कद्रों-कीमतों में भी जबर्दस्त परिवर्तन हो गया है।

मिजो लोग खेतिहर हैं और उनका मुख्य भोजन है चावल। इसलिए खेती मुख्यत: धान की होती है। गौण फसलें हैं—मक्का, तिल, अदरक, सब्जियां आदि। गेहूं और बाजरा यहां नहीं बोये जाते। यों यहां की जमीन और आबोहवा ऐसी है कि उसमें लगभग सभी प्रकार की फसलें उगायी जा सकती हैं, बशर्ते सही विधियां अपनायी जायें और उचित देखभाल की जाये।

मगर मिजो कृषि-पद्धति आज भी बहुत ही अविकसित, अपव्ययपूर्ण और वनों का विनाश करने वाली है। वे झूम-खेती करते हैं। पहाड़ पर जंगल का कोई हिस्सा चुनकर उसके सब पेड़-पौधे काट डाले जाते हैं और उन्हें जला दिया जाता है। फिर उस राख में बुआई की जाती है। अगले साल पहाड़ के दूसरी ओर जाकर इसी तरह नया खेत तैयार किया जाता है। गांव भी उठकर नये खेत के पास जा बसता है। क्योंकि इनमें स्थायी खेती नहीं होती इसलिए जमीन का स्थायी स्वामित्व भी नहीं होता; जमीन सारे गांव की मिल्कियत होती है।

यदि सभ्यता और खेती में परस्पर संबंध है, तो झूम-खेती और उसके साथ जुड़ी पद्धतियों का मिजो लोगों के जीवन और सभ्यता पर गहरा प्रभाव पड़ा होगा। स्थायी जमीन व जायदाद न होने के कारण मिजो लोग केवल वर्तमान में जीते हैं; अज्ञात और अनागत की वे बहुत कम चिंता करते हैं। इस मामले में वे चार्वाकों की तरह हैं। झूम-खेती उन्हें शारीरिक कसरत और मानसिक चुस्ती दोनों का पर्याप्त अवसर देती है, जिससे वे जीवन को कठोरताओं का सामना करने योग्य बन जाते हैं। उनके सामूहिक भोज, सामूहिक कार्य और सामूहिक नृत्य सभी उनके कृषि-केंद्रित जीवन से उद्भूत हुए हैं। उनके प्राय: सभी परंपरागत उत्सव धार्मिक कर्मकांड से जुड़े हुए थे और खेती के मौसमों के अनुसार मनाये जात थे।

'मिमकूट' या मक्का उत्सव प्राय: अगस्त-सितंबर में मक्का की फसल कट जाने के बाद मनाया जाता था। इसमें बड़ी धूम-धाम होती, चावल की शराब खूब ढाली जाती, नाच-गान और भोज होते। नयी फसल से कब ले के मृत पुरखों की आत्माओं की नैवेद्य को जाती थी।

'चपचरकूट' प्राय: मार्च में मनाया जाता था—झूम-खेती के सबसे कठिन अंश यानी जंगल की कटाई के पूर्ण हो जाने के बाद। यह उनका वसंतोत्सव था जो, बड़े उल्लास से मनाया जाता था। इस समय उनके खलिहानों में भरपूर अनाज भरा होता था और साल-भर का श्रम पूरा हो चुका होता था। ऐसे में शानदार उत्सव न मनायें तो क्या करें?

जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं, ईसाइयत के प्रभाव से मिजो लोगों के रीति-रिवाज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और जीवन-क्रम में ऐसा भारी परिवर्तन हो गया है कि वे अपने कृषि से संबंधित पर्वों को भी छोड़ चुके हैं। तरुण मिजो तो अब क्रिस्मस और नये साल (प्रथम जनवरी) का उत्सव ही जानते हैं, इन्हें वे बड़े ही आनंदोल्लास से मनाते हैं।

खासी और गारो लोगों के विपरीत, मिजो समाज पितृमूलक है और इसमें पिता की जायदाद सबसे छोटे पुत्र को मिलती है। विवाह के बारे में उनके विचार उदार हैं। विवाह के पूर्व तरुण-तरुणियों में मनचाहा संबंध हो सकता है। वर्जित रिश्ते बहुत कम हैं और न ऐसा कोई बंधन रहता है कि अमुक कुल से ही लड़की लायी जा सकती है। विवाह प्रायः बातचीत से तय होते हैं और आजकल ईसाई विधि से संपन्न होते हैं। मगर नयी पीढ़ी में प्रेम-विवाहों की संख्या बढ़ती जा रही है।

मगर ईसाई विवाह-विधि अपनाने के बावजूद कन्याशुल्क देने की प्रथा अब भी इनमें जारी है। कन्याशुल्क हमेशा मिठुन के रूप में दिया जाता है। मिठुन भैंस जैसा एक अर्धपालतू जानवर है, जो मिजो लोगों के लिए बहुत मूल्यवान है। कन्याशुल्क की मात्रा कन्या-परिवार के हिसाब से कम या ज्यादा होती है।

कन्याशुल्क का कन्या के रिश्तेदारों में बंटवारा कर दिया जाता है। उद्देश्य यह है कि रिश्तेदारी का बंधन मजबूत बना रहे और पारिवारिक जिम्मेवारियों की भावना शिथिल न होने पाये। 'पुसुम' नामक अंश कन्या की मां की तरफ के सबसे निकटतम पुरुष रिश्तेदार को मिलता है। 'पल...' नामक अंश का हकदार कोई घनिष्ठ मित्र होता है; इस मित्र को आजीवन उस लड़की के हित का ध्यान रखना पड़ता है। 'नीमान' बुआ का हिस्सा होता है। 'नाउ पुआन पुआन मान' वधू की बड़ी बहन को दिया जाता है, छोटी बहन की छुटपन में देखभाल करने के एवज में।

मिजो समाज आज परिवर्तन की देहलीज पर खड़ा है। सामाजिक जीवन और धार्मिक अनुष्ठानों में काफी परिवर्तन हो चुके हैं। राजनैतिक हेरफेर से भी काफी परिवर्तन हुए हैं। सरदारों का पद समाप्त हो गया है। निर्वाचित पंचों की पंचायत अब ग्राम-प्रबंध करती है। जाव्लबुक (कुंआरों के शयनागार) अतीत की चीज रह गये हैं। परंपरागत उत्सवों एवं रस्मों का स्थान नयी रस्मों ने ले लिया है।

यातायात और संवाद-प्रेषण के साधनों के विकास के कारण अब मिजो ग्राम पहले की तरह शेष दुनिया से कटा हुआ आत्म-निर्भर जीवन नहीं जीता। सभी स्थानों और स्तरों पर अब मिजो लोगों का बाहर वालों से संपर्क होता रहता है। मगर इस बदलते परिवेश के बावजूद 'त्लाम्नगाइहना' की भावना से प्रेरित और पुष्ट मिजो अपने विशिष्ट व्यक्तित्व को बनाये रखेगा, इसमें संदेह नहीं। ['आकाशवाणी' से साभार]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

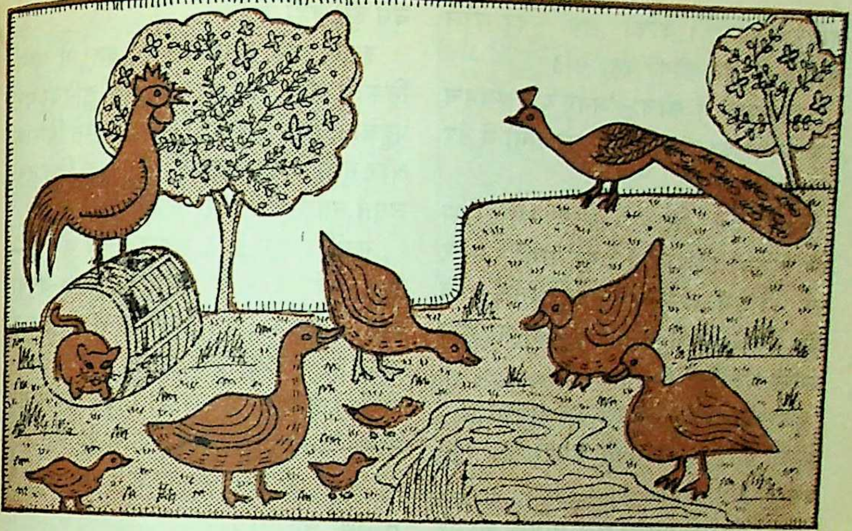

हांस क्रिश्चन एंडरसन की एक अमर बालकथा

भोंडा बतख-बच्चा

गरमी का दिन था। बतख बैठी अंडे से रही थी। चटाख् से एक अंडा फूटा। चटाख्! ... चटाख्! ... कुछ और अंडे फूटे।

'चीं! चीं!' चहकते हुए बतख-बच्चे अंडों में से बाहर निकल आये।

मां-बतख खुशी से बोली—'मेरे लाड़ले बच्चो, कितनी अच्छी बात है कि तुम सब अंडों में से निकल आये! सबके-सब निकल आये न? अरे ना, एक अंडा अभी बाकी है। मुझे उस पर अभी बैठना पड़ेगा। अच्छा हो कि ज्यादा देर इंतजार न करना पड़े।'

तभी एक बूढ़ी बतख उस ओर से निकली। बोली—'अच्छा, तो तुम्हारे बच्चे अंडों में से निकल ही आये!'

'हां', मां-बतख बोली—'सिर्फ एक को छोड़कर। और वह अंडा बहुत बड़ा है।'

बूढ़ी बतख ने इस पर कहा—'जरा देखूं तो ......अरे! यह तो टर्की-मुर्गी का अंडा है। छोड़ दो इसे।' मगर मां-बतख बोली—'थोड़ी देर और बैठकर देख लेती हूं।'

जल्दी ही बड़ा अंडा भी चटाख् से फूटा और उसमें से अजीब-सा, भूरा-सा बच्चा

* अनुवाद: नंदिता सिन्हा — चित्र: ठाकोर राणा *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहर निकला। बाकी सब सुंदर पीले बच्चों से वह काफी बड़ा था।

मां-बतख ने सोचा—'अगर यह सचमुच टर्की-मुर्गी का बच्चा होगा, तो पानी में तैर नहीं सकेगा।'

अगले दिन वह सारे बच्चों को तलैया पर ले गयी। छपाक से वे सब पानी में उतर पड़े। वे सभी छोटे-छोटे गुदगुदे बतख-बच्चे बड़े मजे से तैरने लगे। वह बड़ा-सा भूरा बच्चा भी तैरने लगा।

इसके बाद मां-बतख उन सबको बाड़े में ले गयी। उसे अपने बच्चों पर बहुत गर्व था।

मगर दूसरी बतखों और मुर्गियों को वह बड़ा बच्चा बिलकुल भी पसंद नहीं आया। वे उड़-उड़कर उसे ठोंग मारती थीं और 'भोंडा बच्चा' कहकर उसे चिढ़ाती थीं।

वह बेचारा बहुत दु:खी हो गया और एक दिन वहां से उड़ गया।

उड़कर वह एक दलदल के किनारे पहुंचा। दलदल में जंगली बतखें रहती थीं। वे सब बोलीं—'तुम हो तो बहुत ही भोंडे, पर चाहो तो यहां हमारे साथ रह सकते हो।'

मगर थोड़ी ही देर में 'ठांय! ... ठांय!' गोलियां छूटीं और दो जंगली बतखें मरकर गिर पड़ीं। बार-बार 'ठांय! ठांय!' होती रही। कुछ लोग बतखों का शिकार करने दलदल पर आये थे।

जंगली बतखें अपनी जान बचाने उड़ गयीं। भूरा बतख-बच्चा घास में छिप गया। एक कुत्ता उसके पास तक आया भी, मगर उसे ढूंढ़ नहीं पाया।

इसके बाद बतख-बच्चा वहां से भाग निकला और पास ही बनी एक कुटिया पर पहुंचा। उसमें एक बूढ़ी औरत अपने बिलाव और मुर्गी के साथ रहती थी। कुछ दिन तक उसने बतख-बच्चे को अपने पास रखा।

मुर्गी ने एक दिन बतख-बच्चे से पूछा-'तुम अंडे दे सकते हो?' बतख-बच्चा बोला—'नहीं।' 'तुम कमर ऊंची करके गुर्रा सकते हो?' बिल्ली ने सवाल किया। बतख-बच्चे ने उत्तर दिया—'नहीं।' इस पर वे दोनों बोले—'तब तो तुम किसी काम के नहीं!'

'मगर मैं तैर सकता हूं।' बतख-बच्चे ने उन्हें बताया।

'कैसी बेतुकी बात!' मुर्गी बोल उठी।

एक दिन बतख-बच्चा चुपचाप वहां से भी चल दिया। वह जाकर झील में तैरना चाहता था। उसे तैरना बहुत अच्छा लगता था। लेकिन वह बहुत ही उदास था; क्योंकि दुनिया में कोई भी तो उसे चाहता नहीं था।

तभी उसे कई सफेद पक्षी दिखाई दिये। वे बहुत बड़े थे और बहुत सुंदर भी थे। वे लंबी गरदनों वाले पक्षी थे—हंस! वे झील पर से उडते हुए जा रहे थे। बतख-बच्चे ने जोर से उन्हें पुकारा। मगर उन्होंने उसकी आवाज नहीं सुनी और वे उड़ गये। उसे उनकी बहुत याद आती रही।

अब सरदियां आ पहुंचीं। कड़ाके की ठंड पड़ने लगी। झील का पानी जमने लगा। बतख-बच्चा अब उसमें तैर नहीं सकता था; क्योंकि उसके चारों ओर बर्फ जम गयी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थी। वह भी बर्फ में जम-सा गया और ठंड से अधमरा हो गया।

तभी उधर से जा रहे एक आदमी ने उसे देखा, बर्फ तोड़कर उसने उसे छुड़ाया और अपनी पत्नी के पास घर ले गया। वहां बतख-बच्चे को जरा आराम मिला।

घर के बच्चे उससे खेलना चाहते थे मगर उसे उनसे डर लग रहा था। उनसे बचने के लिए वह उड़ा। कभी वह दूध से टकराता, कभी मक्खन से और कभी आटे से। वे सब चीजें गिर गयीं। बच्चों की मां इस पर चिल्ला उठी। बच्चे हंसने लगे और बेचारे पक्षी को पकड़ने को दौड़े। मगर कुटिया का दरवाजा खुला हुआ था और बतख-बच्चा निकलकर बर्फ में भाग गया।

उस साल बहुत ठंड पड़ी और बतख-बच्चा मरते-मरते बचा। अंत में वसंत के दिन आये। अब तक बतख-बच्चा बड़ा और बलवान पक्षी बन गया था। वह नदी में तैरता हुआ एक सुंदर बगीचे में पहुंचा, जिसमें फूलों से लदे हुए पेड़ थे।

नदी-तट पर कई हंस थे — सफेद हंस। उन्हें देखकर बतख-बच्चे के मन में प्यार उमड़ पड़ा। वह उनसे मिलने को तैरता हुआ आगे बढ़ा।

तैरते हुए वह सोच रहा था—'अगर मैं उनके पास गया, तो शायद वे मुझे मार डालेंगे। कितने सुंदर हैं वे, और कितना भोंडा हूं मैं! कोई भी तो मुझे नहीं चाहता! मैं कितना दुःखी हूं। सो यह अच्छा ही होगा कि वे मुझे मार डालें।'

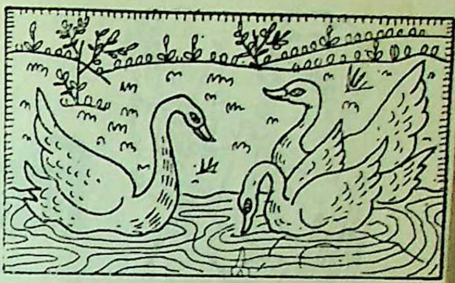

ऐसा सोचकर तैरता हुआ वह हंसों की ओर बढ़ चला। हंसों ने भी उसे देखा और वे उससे मिलने आगे बढ़े। बतख-बच्चे ने उनके आगे अपना सिर झुका दिया। उसे पूरा विश्वास था कि वे उसे मार डालेंगे।

तभी उसे पानी में अपनी परछाईं दिखाई दी और वह खुशी से चीख पड़ा। बात यह थी कि अब वह भोंडा बतख-बच्चा नहीं रह गया था। अब वह एक सुंदर नौजवान हंस बन चुका था।

दूसरे हंसों को उसे देखकर बहुत खुशी हुई और वे उसे घेरकर तैरने लगे। उन्होंने अपनी चोंचों से उसे सहलाया, प्यार जताया।

तभी कुछ बच्चे बगीचे में आ पहुंचे। वे हंसों के लिए रोटी के टुकड़े और दाने लाये थे। 'वह देखो!' वे चिल्ला उठे—'एक नया हंस आया है! कितना सुंदर!'

नये हंस को देखकर सब बच्चे बहुत ही खुश हुए। वह भी बाकी हंसों के साथ खुशी से उसी बगीचे में रहने लगा।

लेकिन उसे कभी अपने रूप का घमंड नहीं हुआ। वह यह नहीं भूला कि कभी उसे 'भोंडा बतख-बच्चा' कहा जाता था।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विज्ञान-बिंदु

जून १९७६ के **नवनीत** में इस स्तंभ में लखनऊ के राज्य आयुर्वेद कालेज के डा. वी. पी. त्रिवेदी द्वारा हृदय-रोगियों के लिए खोजी गयी एक दवा की चर्चा की गयी थी। इस सिलसिले में स्तंभ-लेखक से अनेक पाठकों ने विस्तृत जानकारी मांगी है।

शोधकर्ता डा. त्रिवेदी ने लिखा है कि **नवनीत** के जो पाठक इस संबंध में कोई विशेष जानकारी चाहें, उन्हें जवाबी पत्र भेजकर उनसे पत्र-व्यवहार कर सकते हैं। यह दवा अभी खुले बाजार में उपलब्ध नहीं है और इसकी निर्माण-विधि काफी जटिल है। हां, जो हृदय-रोगी लखनऊ के राज्य आयुर्वेदिक कालेज अस्पताल में भरती होकर इलाज कराते हैं उनका उपचार आवश्यकता पड़ने पर इस दवा से किया जाता है। डा. त्रिवेदी का पता है :

डा. वी.पी. त्रिवेदी, ए. आर. ओ., राज्य आयुर्वेदिक कालेज, लखनऊ-२२६००४।

मलेरिया से मोर्चाबंदी

बढ़ते हुए मलेरिया के खतरों से आगाह करते हुए विश्व स्वास्थ्य संघटन ने कहा है कि यदि समय रहते कोई प्रभावी उपाय इस दिशा में न अपनाये गये तो आगामी [illegible] वर्षों के दौरान इस बीमारी से लगभग चालीस लाख आदमियों के मर जाने की आशंका है। विश्व स्वास्थ्य संघटन ने एक ऐसे परजीवी कीट (पैरासाइट) का भी पता लगाया है, जो एक नयी किस्म के मले-रिया के लिए जिम्मेवार है और सामान्य एंटिबायोटिक दवाओं से भी प्रभावित नहीं होता। नयी किस्म का यह मलेरिया सीधे मनुष्य के मस्तिष्क पर असर करता है और इस कारण अधिक हानिकर है। पिछले [illegible] असम, नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश और मिजोरम में इस मलेरिया के कारण बड़ी संख्या में मौतें हुई थीं।

मलेरिया हमारे देश में लगभग समाप्त हो गया था। अब फिर से उसके सिर उठाने का एक कारण यह बताया जा रहा है कि मच्छरों को नष्ट करने के लिए डी. डी. टी. और बी. एच. सी. आदि जो दवाएं काम में लायी जाती हैं, उनसे अप्रभावित रहने की क्षमता (इम्यूनिटी) धीरे-धीरे मच्छरों ने विकसित कर ली है। सो [illegible] मच्छरों के नष्ट करने के नये ढंग के उपाय [illegible]

अनुक्रम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचे जा रहे हैं। इनमें से एक यह है कि कोई ऐसा कीड़ा खोजा जाये, जो मच्छर का जानी दुश्मन हो और जो उसे देखते ही चट कर जाये! यह खोज अब सफल होती दिखाई देती हैं। इंडियन कौंसिल आफ मेडिकल रिसर्च की पांडिचेरी स्थित एक यूनिट (वेक्टर कंट्रोल रिसर्च सेंटर) ने दावा किया है कि वह एक ऐसे खूनचूसू कीड़े की तलाश करने में कामयाब हो गयी है, जो मच्छर के लार्वे का खून चूसकर उसे खत्म कर देता है। वह उसके अंडों तक को नहीं बख्शता। इस कीड़े की जिंदगी लगभग पैंतीस दिन लंबी होती है। इसके प्रजनन और पालन की योजनाएं बनायी जा रही हैं।

इसके अलावा पांडिचेरी-केंद्र ने एक ऐसे कवक (फंगस) का भी पता लगाया, जो धान के खेतों में उपजता है और मच्छर के लार्वे को नष्ट करने में पूरी तरह समर्थ है। कोशिश की जा रही है कि इसका उत्पादन भी बड़े पैमाने पर किया जाये।

चूहे के जिगर से एक ऐसा एन्टिजन पदार्थ प्राप्त करने की बात भी कही गयी है, जिससे मलेरियारोधी टीके तैयार किये जा सकेंगे। मेडिकल कौंसिल की एक रिपोर्ट के अनुसार, नयी दिल्ली के राष्ट्रीय संक्रामक रोग संस्थान के शोधकर्ताओं ने इस दिशा में काम किया है।

वर्तिका-वमन

सुरक्षित गर्भपात की नयी तकनीकों की जानकारी इस स्तंभ में समय-समय पर दी गयी है। हाल में स्वीडन के कैरोलिन्स्का संस्थान के वैज्ञानिक प्रो. सूने बर्गस्ट्रोम ने एक और सरल व सस्ती तकनीक का विकास किया है, जिसकी मदद से गर्भवती महिला बिना किसी दूसरे व्यक्ति की मदद के स्वयं ही सुरक्षित रूप से गर्भमुक्त हो सकेगी।

इस तकनीक का आधार मात्र एक वर्तिका है। गर्भाधान के कुछ महीनों के भीतर ही यदि गर्भवती स्त्री इस वर्तिका को हाथ से सुविधानुसार अपनी योनि में प्रवेश कराये, तो गर्भाशय की दीवार से चिपका हुआ विकासशील निषेचित अंडाणु विगलित होकर बाहर निकल जाता है।

वर्तिका का निर्माण एक संश्लेषित कार्बनिक यौगिक प्रोस्टेग्लैंडिन से किया गया है। योनिश्लेष्मा के संपर्क में आने पर यह पदार्थ वर्तिका से मुक्त हो जाता है और गर्भाशय की दीवारों में संकुचन पैदा कर देता है। परिणामत: भ्रूण दीवार से हटकर बाहर आ जाता है।

यूरोप के कई देशों की हजारों गर्भवती महिलाओं पर इस वर्तिका का परीक्षण किया जा चुका है। स्वीडन के कई अस्पतालों में भी काफी बड़े पैमाने पर इसका प्रयोग किया गया है। सभी जगह यह लगभग शत-प्रतिशत सफल सिद्ध हुआ है।

खोजकर्ता बताते हैं कि वर्तिका को इस्तेमाल करने के बाद लगभग बारह घंटों में इसका असर सामने आ जाता है। उलटी, रक्तस्राव जैसे कुछ अवांतर प्रभाव (साइड इफेक्ट) भी देखे गये हैं। परंतु न तो इन्हें गंभीर माना गया है और न असामान्य।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेबनान से एक और खत

साथ के चित्र में जो चेहरा आप देख रहे हैं, वह चौदह साल के एक लेबनानी ईसाई बालक गिल्बर्ट होनेला का है। गिल्बर्ट ने विजवाट (इंग्लैंड) में रहने वाले अपने हमउम्र पत्र-मित्र टिमथी को अंग्रेजी में एक चिट्ठी लिखी है, जिसका विषय है लेबनान। गिल्बर्ट का अंग्रेजी व्याकरण कच्चा है। परंतु उसके चिंतन एवं भावनाओं का व्याकरण सर्वथा शुद्ध और उसका तर्क पुख्ता है। चिट्ठी यों है :

'प्रिय टिमथी,

'अभी तो मैं लेबनान में जिंदा हूं, पर भविष्य में भी जिंदा रहूंगा या नहीं, मैं नहीं जानता। मुझे इंग्लैंड पसंद है; वह सुंदर देश है। वहां शांति है, हर आदमी दूसरे से प्यार करता है, सो वहां लड़ाई नहीं है। मैं तुम्हें अपनी तस्वीर भेजूंगा, जिससे मैं अगर मर जाऊं तो भी तुम मुझे याद रख सको। इंग्लैंड में हर एक को अपनी सरकार से मांग करनी चाहिये कि वह इस छोटे-से देश लेबनान की मदद करे, जिसमें भयंकर लड़ाई चल रही है।

'रोज ही घरों में बम गिरते हैं और बहुतों की जान लेते हैं। बहुत-से बच्चे बिना मां-बाप के हैं और वे खाने के लिए सड़क पर भीख मांगते फिरते हैं।

'बिजली नहीं है, पानी नहीं है और एक अजीब सवाल है। अगर हर आदमी इस सवाल के बारे में सोचे, तो कोई लड़ाई नहीं रह जायेगी। सवाल यह है—हम एक दूसरे की हत्या क्यों कर रहे हैं? अब तक मेरी समझ में नहीं आया कि हम कारण जाने बिना ही एक दूसरे की हत्या क्यों कर रहे हैं?

'मैं तुम्हें एक उदाहरण दूंगा। मान लो कि तुम एक मुसलमान आदमी हो और एक ईसाई आदमी तुम्हें रोककर तुम्हारा सिर काट देता है और तुम्हारे पेट में चाकू घोंप देता है। क्या यह अच्छा होगा? मैं तो ऐसा नहीं समझता।

'लेबनान में एक तीसरी लड़ाई भी चल रही है। हर अरब देश अपनी सेना लेबनान भेज रहा है, ताकि वहां जाकर वह दूसरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

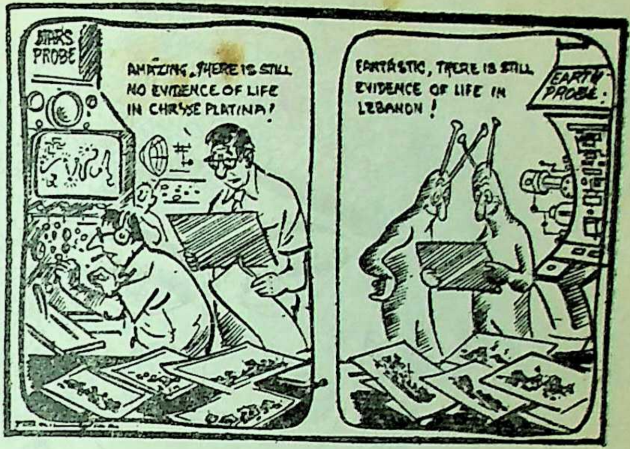

मंगल की टोह :
कमाल है, अभी तक क्रिसप्लैटिना में जीवन का कोई प्रमाण नहीं !
पृथ्वी की टोह :
कमाल है, अभी तक लेबनान में जीवन का प्रमाण है !
[लक्ष्मण : टाइम्स ऑफ़ इंडिया]

अरब देश की सेना से लड़े। और इसमें मारे कौन जा रहे हैं? बस, लेबनान के लोग।

'तो पिछले तेरह महीनों से आज तक यह है हमारा जीवन; और मैं नहीं समझता कि अगले बारह महीनों के अंत से पहले यह (युद्ध) खत्म होगा। इसलिए कृपा करके यह पत्र अपने छोटे-से गांव के हर एक निवासी को पढ़ने को देना। तुम्हारा–गिल्बर्ट'

[जून १९७६ के **नवनीत** में आप लेबनान-युद्ध के बारे में १०॥ वर्षीय लेबनानी बालिका गादा यास्मीन का भावपूर्ण लेख भी पढ़ चुके हैं। –संपादक]

★

जाल में फंसे पक्षी

एक शिकारी ने झील के पास जाल बिछाया। कई प्रकार के पक्षी उसमें फंस गये। वे सब बड़े-बड़े पक्षी थे और इसके पहले के शिकारी वहां आये, वे जाल को लेकर उड़ने लगे।

शिकारी उनके पीछे भागा। रास्ते में एक किसान ने उसे देखकर कहा–'ये तुम्हारे हाथ नहीं आयेंगे।' शिकारी ने उत्तर दिया–'अगर एक ही पक्षी जाल में होता, तो मैं शायद छोड़ देता। पर इतने सारे पक्षियों को मैं पकड़कर ही रहूंगा।' और वह उनका पीछा करता ही रहा।

जब शाम हुई तो प्रत्येक पक्षी अलग दिशा में उड़ने की कोशिश करने लगा–कोई जंगल की ओर, कोई दलदल की ओर, कोई खेतों की ओर। सो कुछ ही देर में जाल नीचे आता हुआ धरती से आ लगा।

शिकारी ने लपककर सभी पक्षियों को पकड़ लिया। **–तालसताय**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

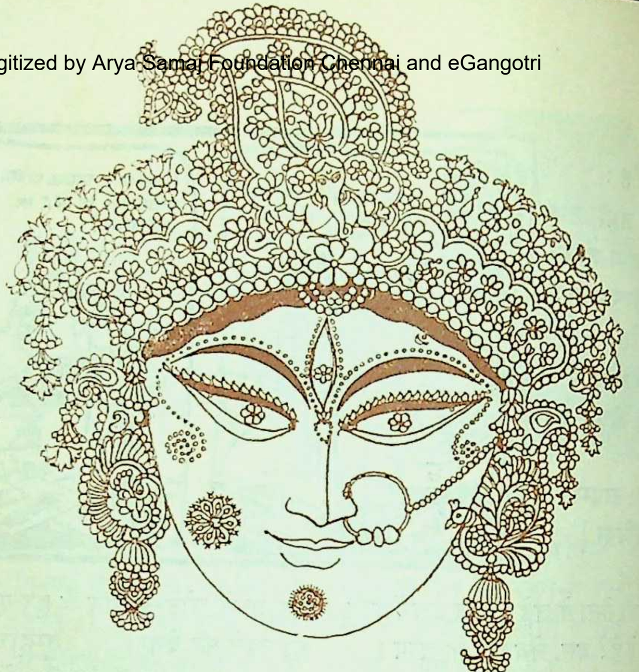

सदुपयोग ही पूजा है

बंगाल के विख्यात शिक्षा-अधिकारी एवं नेता भूदेव मुखोपाध्याय का द्वितीय पुत्र उन दिनों हुगली की एक पाठशाला में पढ़ता था। एक दिन शिक्षक ने बात-बात में उन्हें कहा—'तुम्हारा घर तो कंजूस का घर है। इतना अधिक वेतन पाते हैं तुम्हारे पिताजी, तो भी तुम्हारे यहां दुर्गापूजा का उत्सव नहीं होता।' पुत्र ने घर आकर पिता से यह बात कही और पूछा—'पिताजी, अपने घर दुर्गापूजा क्यों नहीं होती?' भूदेव बाबू ने कहा—'बेटा, हमारे घर भी चंडीपाठ, घटपूजा और ब्राह्मण-भोजन तो होता ही है। हां, दुर्गा मां की प्रतिमा को बाहर से गाजे-बाजे के साथ लाना, गाना-तमाशा आदि हम अपने यहां नहीं करते और ये बातें पूजा का अंग हैं भी नहीं।'

तेईस साल बाद विशेषत: संस्कृत-शिक्षा के लिए डेढ़ लाख रुपये का दान देकर विश्वनाथ ट्रस्ट फंड के दस्तावेज पर सही करते हुए भूदेव बाबू ने अपने उसी पुत्र से कहा—'रहन सहन सादा रखकर और दुर्गापूजा जैसे त्योहारों के प्रसंगों में धूमधाम में व्यर्थ पैसा न खर्च करके यह पैसा बचाया था; तभी तो एक सत्कार्य के लिए यह स्थायी कोष स्थापित किया जा सका। मामूली चीजों में शक्ति अथवा धन का निरर्थक उपयोग कर देने पर वस्तुत: वास्तविक आवश्यक काम करने की क्षमता बाकी नहीं रह जाती।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

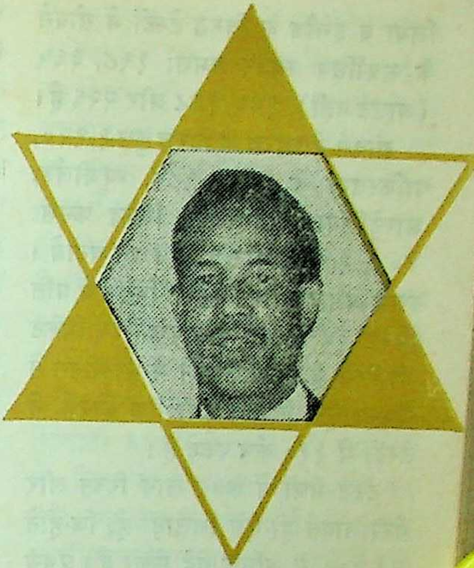

क्रिकेट का राजाधिराज गैरी सोबर्स

* शिवेंद्र गुप्त *

'ब्रैडमन भले ही ज्यादा अच्छे बल्लेबाज रहे हों, लेकिन वे भी इतना उत्तेजक खेल नहीं खेलते थे। फ्रेडी ट्रुमन ने भले टेस्टों में कुछ ज्यादा विकेट लिये हों, लेकिन अगर किसी को "क्रिकेट-नरेश" की पदवी देनी हो, तो वे केवल सोबर्स ही हो सकते हैं।' प्रसिद्ध अंग्रेज क्रिकेट-समीक्षक क्राफोर्ड ह्वाइट ने यह टिप्पणी की है।

वास्तव में गैरी सोबर्स क्रिकेट-इतिहास के आज तक के सर्वश्रेष्ठ आल-राउंडर हैं। अभी तक किसी भी खिलाड़ी ने क्रिकेट के हर विभाग में इतनी दक्षता कभी प्रदर्शित नहीं की।

सोबर्स का जन्म २८ जुलाई १९३६ को हुआ था। उन्होंने अपने टेस्ट-जीवन का प्रारंभ वामहस्त स्पिनर के रूप में ३० मार्च १९५४ को किंग्सटन, जमैका में खेले गये इंग्लैंड के विरुद्ध पांचवें टेस्ट में किया था। सोबर्स उस समय महज सत्रह बरस के थे। बाद में उन्होंने अपने खेल में बहुत सुधार किया और अपने को एक श्रेष्ठ आल-राउंडर के रूप में विकसित किया। आज तक उन्होंने कुल ९३ टेस्ट मैच खेले हैं। पोर्ट ऑफ स्पेन में १९५४-५५ की टेस्ट-शृंखला में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेले गये दूसरे टेस्ट से लेकर १९७२-७३ की न्यूजीलैंड के विरुद्ध की शृंखला के दूसरे टेस्ट तक उन्होंने ८५ टेस्ट लगातार खेले। इस बीच एक बार भी वे दल से अलग नहीं किये गये। अभी तक टेस्ट-क्रिकेट में उन्होंने ५७·७८ की औसत से कुल ८,०३२ रन बनाये हैं, जो टेस्ट-क्रिकेट में अन्य किसी भी बल्लेबाज द्वारा बनाये रनों से अधिक हैं। वास्तव में सोबर्स ऐसे पहले खिलाड़ी हैं, जिन्होंने टेस्ट-क्रिकेट में ८,००० रन पूरे किये हैं।

सोबर्स ने टेस्टों में कुल २६ शतक बनाये हैं और इस मामले में वे दूसरे स्थान पर हैं। पहले स्थान पर सर डोनाल्ड ब्रैडमन हैं, जिन्होंने टेस्ट मैचों में २९ शतक बनाये हैं। भारत, पाकिस्तान, न्यूजीलैंड, आस्ट्रे-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया व इंग्लैंड के विरुद्ध टेस्टों में सोबर्स के सर्वाधिक स्कोर क्रमशः १९८, ३६५ (आउट नहीं), १४२, १६८ और २२६ हैं।

सोबर्स ने भारत के विरुद्ध कुल १,९२०, पाकिस्तान के विरुद्ध ९८४, न्यूजीलैंड, आस्ट्रेलिया व इंग्लैंड के विरुद्ध क्रमशः ४०४, १,५१० और ३,२१४ रन बनाये। इसके अलावा सोबर्स ने टेस्ट-क्रिकेट में प्रति विकेट ३४·०५ रन देकर कुल २३५ विकेट भी लिये हैं। कैच लपकने में भी सोबर्स ने सैकड़ा पूरा किया। अभी तक सोबर्स ने टेस्टों में ११० कैच पकड़े हैं।

टेस्ट मैचों में केवल लांस गिब्स और गैरी सोबर्स ही ऐसे खिलाड़ी हैं, जिन्होंने २०,००० से अधिक गेंदें फेंकी हैं। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में सोबर्स एक ओवर में ६ छक्के भी लगा चुके हैं। ऐसा करने वाले पहले और एकमात्र खिलाड़ी हैं सोबर्स।

जहां तक टॉस जीतने की बात है, गैरी सोबर्स दुनिया के सबसे भाग्यशाली कप्तान कहे जायेंगे। लगातार दो बार पांचों टेस्ट मैचों में सोबर्स ने टॉस जीता है। इंग्लैंड के विरुद्ध १९६६ में और न्यूजीलैंड के विरुद्ध १९७२ की टेस्ट-शृंखलाओं के हर टेस्ट में टॉस जीतकर सोबर्स क्रिकेट-इतिहास में दो टेस्ट-शृंखलाओं के हर टेस्ट में टॉस जीतने वाले पहले कप्तान बन गये। कप्तान के रूप में सोबर्स ने टेस्ट मैचों में कुल २७ बार टॉस जीता, जो एक विश्व-रेकार्ड है।

टेस्ट-शृंखलाओं में सोबर्स ने तीन बार ७०० से अधिक रन बनाये हैं। पाकिस्तान के विरुद्ध १९५७-५८ में, इंग्लैंड के विरुद्ध १९५९-६० में और फिर इंग्लैंड के विरुद्ध १९६६ में खेली गयी टेस्ट-शृंखलाओं में सोबर्स ने क्रमशः ८२४, ७०९, और ७२२ रन बनाये। जब सोबर्स ने इंग्लैंड के विरुद्ध एक शृंखला में ७०९ रन बनाये, तो रोहन कन्हाई ने टिप्पणी की–'लगता था जैसे सोबर्स ने अंग्रेज गेंदबाजों पर जादू-सा कर रखा हो। जैसे ही सोबर्स पिच की ओर रुख करते थे, गेंदबाज समझ जाते थे कि एक और लंबी पारी शुरू होने वाली है। वे ज्यादातर सोबर्स के रन बनाने वाले स्ट्रोकों को काबू में रखने की कोशिश करते थे।'

बिना आउट हुए ३६५ रन बनाकर सोबर्स ने टेस्टों में एक पारी में व्यक्तिगत रूप से सर्वाधिक रन बनाने का रेकार्ड स्थापित किया है। यह श्रेय उन्होंने पाकिस्तान के विरुद्ध १९५७-५८ की टेस्ट-शृंखला में प्राप्त किया। कन्हाई ने अपनी आत्मकथा में लिखा है–'जब सोबर्स ने फजल महमूद की गेंद को एक रन के लिए खेलकर लेन हटन का बीस साल पुराना रेकार्ड तोड़ा तो २०,००० दर्शकों ने चिल्लाकर तथा तरह-तरह की आवाजें निकालकर ... "नायक" का अभिनंदन किया।'

सोबर्स कई बार विश्व एकादशों के कप्तान भी रह चुके हैं। सन १९७१-७२ में सोबर्स 'शेष विश्व-एकादश' के कप्तान की हैसियत से आस्ट्रेलिया गये थे। इसी शृंखला के तीसरे मैच में आस्ट्रेलिया के विरुद्ध सोबर्स

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने २५४ रन बनाये। 'क्रिकेट में इससे महान पारी पहले कभी नहीं खेली गयी'—जैक फिंगलटन ने लिखा। सर डोनाल्ड ब्रैडमन ने इसे आस्ट्रेलिया में बल्लेबाजी का महानतम प्रदर्शन बताया। 'मैंने इससे अच्छी पारी दूसरी लड़ाई के बाद से मेलबोर्न के मैदान पर नहीं देखी', कोलिन मैकडानल्ड ने टिप्पणी की। आस्ट्रेलिया के भूतपूर्व कप्तान लिंडसे हैसेट ने इसे अपनी आंखों देखी महानतम पारी बताया। इस पारी में जब सोबर्स खेलने के लिए पिच पर पहुंचे, उस समय विश्व-एकादश का योग ३ विकेट पर १४६ रन था। चार घंटे बाद भी वे १३९ रन बनाकर खेल रहे थे। अगले दिन उन्होंने अपना द्विशतक पूरा किया। पचीस हजार से भी अधिक दर्शकों ने उस हर मिनट का रसपान किया, जब वे अपनी बल्लेबाजी का प्रदर्शन कर रहे थे। जैसे ही २५४ रन बनाकर वे पैवेलियन की ओर लौटे, दर्शकों ने गगनभेदी हर्षध्वनि से उनका अभिनंदन किया। मेलबोर्न क्रिकेट-मैदान से मीलों दूर तक वे आवाजें सुनी जा सकती थीं।

यह तो रही आंकड़ों की बात। अब जरा सोबर्स के खेल पर नजर डाल ली जाये। सोबर्स के खेल की एक खास बात यह है कि वे परिस्थितियों के अनुरूप उसे ढाल लेते हैं। बल्लेबाजी के क्रम में उन्होंने प्रारंभिक बल्लेबाज से लेकर नौवें बल्लेबाज तक के रूप में खेला है। यानी अपनी बल्लेबाजी की तकनीक को हर स्थान के अनुरूप ढालने की क्षमता सोबर्स में है। क्रिकेट के इतिहास में शायद ही कोई ऐसा बल्लेबाज हुआ हो, जिसमें अपनी तकनीक को समय, परिस्थिति और स्थान के अनुरूप ढालने की इतनी क्षमता हो। कई खिलाड़ी ऐसे भी हुए हैं, जिन्होंने अच्छा प्रदर्शन किया तो जरूर, लेकिन कुछ चुनी हुई पिचों पर ही। कई खिलाड़ी व कई मैदान इनकी कमजोरी थे, जिन पर ये अच्छा प्रदर्शन नहीं कर सके। यह बात आजकल इंग्लैंड के भूतपूर्व प्रारंभिक बल्लेबाज बायकाट के बारे में कही जा रही है।

गजब की अदाकारी

कई समीक्षकों का विचार है कि बायकाट इंग्लैंड की ओर से इसलिए नहीं खेल रहे कि उन्हें लिली और थामसन की तेज गेंदों से डर लगता है। सोबर्स के संबंध में ऐसी बात कभी नहीं कही गयी। कोई ऐसा बल्लेबाज नहीं, जिसने सोबर्स के गेंदों पर पूर्ण महारत हासिल की हो और न ऐसा कोई गेंदबाज है, जो यह कह सके कि सोबर्स उसके सामने टिक नहीं सकते। और तो और क्षेत्ररक्षण में भी उन्हें चाहे जहां खड़ा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीजिये, आप उन्हें मुस्तैदी से क्षेत्ररक्षण करते पायेंगे।

सोबर्स की बल्लेबाजी में काउड्रे के स्ट्रोकों की सुंदरता है तो बैरिंगटन की दृढ़ता। ब्रैडमन जैसी रन जोड़ने की कला भी उनमें है तो सी. के. नायडू जैसी निडरता भी। वे हुक भी उसी खूबी से लगाते हैं, जैसे पुल। उन्हें मैदान के हर हिस्से में स्ट्रोक लगाने में महारत हासिल है।

सोबर्स ऐसे एकमात्र गेंदबाज हैं, जो तेज गेंदबाजी से लेकर स्पिन तक हर तरह की गेंदबाजी बखूबी कर लेते हैं। धीमी गेंदबाजी करते हुए सोबर्स चाइनामैन तक फेंक लेते हैं। चाइनामैन वामहस्त गेंदबाज द्वारा फेंकी गयी गुगली को कहते हैं। गेंदबाजी की कला में इतनी पूर्णता पहले किसी को हासिल नहीं हुई।

अपने खिलाड़ियों व विरोधी पक्ष के खिलाड़ियों में सोबर्स समान रूप से लोकप्रिय रहे हैं। किसी अंपायर के साथ सोबर्स की कहा-सुनी आज तक नहीं हुई। यह बात बहुत कम कप्तानों के बारे में कही जा सकती है। क्रिकेट को सोबर्स ने उसी तरीके से खेला जैसे खेला जाना चाहिये। गलत या भ्रष्ट तरीकों से जीतने की कोशिश उन्होंने कभी नहीं की।

आज अगर कोई संसार की सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ टेस्ट एकादश चुनने बैठता है, तो सोबर्स को निर्विवाद रूप से जरूर चुनता है। चाहे कोई भी समीक्षक हो, एक नाम के बारे में सब सहमत हैं और वह नाम है सोबर्स का। ब्रायन क्लोज, इलिंगवर्थ आदि सोबर्स को सर्वकालीन सर्वश्रेष्ठ एकादश में स्थान देने के बारे में एकमत हैं।

'सोबर्स "नरेश" के पद पर शोभायमान होने को पैदा हुए थे और वास्तव में सुशोभित हुए भी।' क्राफोर्ड ह्वाइट ने कहा है। महरानी एलिजाबेथ ने सोबर्स को सर की उपाधि से विभूषित किया है।

आगे आने वाले समय में निश्चय ही बहुत-से महान खिलाड़ी होंगे और पहले भी हुए हैं, लेकिन इस धरती पर दूसरा सोबर्स शायद ही जन्म ले।

—होस्टल एक, कमरा नं. सी एफ-५
एस. वी. रीजनल कालेज ऑफ इंजी. एंड
टेक्नालाजी, सूरत-३९५००१

पुनश्च : सोबर्स ने क्रिकेट से अभी विधिवत् अवकाश ग्रहण नहीं किया है। उन्होंने घोषणा की है कि वे अब भी आवश्यकता पड़ने पर वेस्ट इंडीज को अपनी सेवाएं देने को तैयार हैं। उत्कृष्ट खिलाड़ी भावना का इससे बेहतर उदाहरण क्या हो सकता है! —संपादक

★

'क्या बाहर निकलते समय मैंने आपका पैर कुचला था?' इंटरवल के बाद हाल में लौटते हुए अंधकार में एक दर्शक ने सीट पर बैठे एक आदमी से पूछा।

'जी हां, लेकिन क्षमा मांगने की कोई आवश्यकता नहीं।' उसका वाक्य पूरा होने से पहले ही प्रश्नकर्ता मुड़कर बोला—'चली आओ, इसी लाइन में हमारी सीट है।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

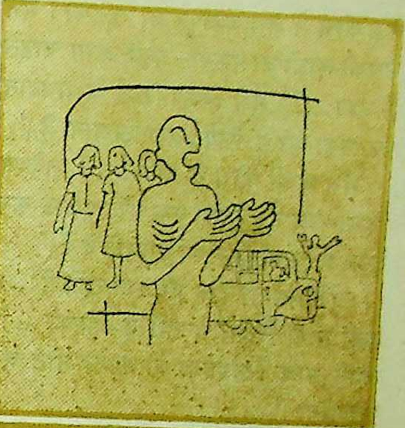

स्मृति के अंकुर

मेरठ में सर्विस शुरू किये पूरा एक वर्ष भी नहीं हुआ था। छात्रावास में रहती थी। अचानक मेरी पूज्य मां का देहांत हो गया। समाचार शाम छह बजे मिला, मैं अत्यधिक घबरा गयी। समस्या यह थी कि मैं अकेले आगरा कैसे जाऊं। आगरा की आखिरी बस शाम तीन बजे चली जाती थी। मेरठ से वहां कोई ट्रेन नहीं जाती। अकेले सफर करने का अभ्यास भी न था। खैर, एक रिश्तेदार मुझे दिल्ली तक पहुंचाकर रात १० बजे वाली ट्रेन में बैठा आये। रोते हुए और भीड़ के कारण कभी खड़े होकर तो कभी नीचे बैठकर सफर तय किया। ट्रेन रात को ढाई बजे आगरा पहुंची।

अब समस्या हुई कि घर तक अकेली कैसे जाऊं? कुछ देर इधर-उधर देखती रही कि शायद कोई लेने आया हो; परंतु कोई दिखाई न दिया। अचानक मेरी दृष्टि एक परिवार पर पड़ी, जो टैक्सी कर रहा था। उसे लेने कुछ लोग आये थे और वे सब आपस में मिलकर आंसू बहा रहे थे। जाने किस प्रेरणा से मैं उस ओर बढ़ गयी और उन्हें बताया कि मेरी मां की मृत्यु हो गयी है, मुझे घर तक छोड़ दीजिये। वे लोग तुरंत तैयार हो गये। शायद उन लोगों के साथ भी कोई ऐसी ही दुर्घटना घटित हो गयी थी। उनमें से एक महिला ने कहा—'बेटी, तुम्हें ही पहले घर छोड़ देंगे!' इसके अतिरिक्त रास्ते-भर कोई बात नहीं हुई। मैंने रास्ता बताया और जब मेरे घर के सामने टैक्सी रुकी, उनमें से कुछ ने उतरकर मुझे अंदर पहुंचाया। मैं न तो उन्हें धन्यवाद दे पायी, न ठीक से उनके चेहरे ही देख पायी। पर आज भी उस अपरिचित परिवार के लिए मेरे दिल से दुआ निकलती है, जिसकी दयालुता की बदौलत मैं अपनी पूज्य मां के अंतिम दर्शन कर पायी।

—इंद्रा वर्मन, आगरा-१

०००

संघर्ष का नाम ज़िंदगी

साफ-सुथरी सूती बुशशर्ट पहने, आंखों पर काला चश्मा चढ़ाये, लगभग तीस वर्ष का वह दुबला-पतला नेत्रहीन यात्री हापुड़ रेल्वे-स्टेशन पर दिल्ली-लखनऊ मेल में जगह प्राप्त करने की चेष्टा में सफल नहीं हो पा रहा था। मैं उसी ट्रेन से मेरठ-लख-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नऊ कोच में शाहजहांपुर आ रहा था। मैंने उसकी लाठी जा पकड़ी—'कहां जाना चाहते हैं आप ...?' 'मुझे किसी डिब्बे के पायदान पर खड़ा कर दीजिये; लखनऊ जाना है।'

मैंने अपने कोच के कंडक्टर से निवेदन किया—'या तो इनको एक सीट एलाट कर दें या मेरे साथ बैठने की अनुमति दे दें।'

'ऐसे अंधे तो रोज ही आते रहते हैं...। कहीं सीट दिखाई दे रही है आपको ...? अपने साथ बैठाइयेगा तो अपनी सीट भी खोइयेगा।'

परंतु कंडक्टर के उत्तर से वह यात्री तनिक भी हताश नहीं हुआ। मुस्कराया और मुझसे सहज भाव से बोला—'आप कंडक्टरों के चक्कर में मत पड़िये। बस, किसी पायदान पर खड़ा कर दीजिये। जगह तो मैं स्वयं बना लूंगा!'

'नहीं जी, आइये, मैं आपको कहीं और बैठाता हूं।' और मैं उसकी लाठी पकड़कर बंद दरवाजों और खिड़कियों के आगे मार्च-पास्ट करने लगा। हर दरवाजे और खिड़की से, प्रकारांतर से वही उत्तर मिलता—'अंधा है तो क्या करें साहब! यहां तो पैर रखने की जगह नहीं है।' हर बार वह उतने ही विश्वास के साथ कहता—'भाईजी, आप जगह नहीं दिलवा पायेंगे। मुझे बस किसी पायदान पर खड़ा कर दीजिये ... जगह तो मैं स्वयं ही कर लूंगा...!'

उसी मार्च-पास्ट के दौरान वार्तालाप से ज्ञात हुआ कि वह सुशिक्षित है, देहरादून की किसी संस्था में काम करता है और अकेले यात्रा करने का अभ्यस्त भी है। 'इस... अकेला चलने से तो बहुत दिक्कतें ... होंगी आपको?' इसका उसने अद्भुत ... दिया—'दिक्कतें...? दिक्कतें कैसी...! ... संघर्षों का नाम तो जिंदगी है साहब...'

ट्रेन चलने लगी, तो न चाहते हु... मुझे उसे एक डिब्बे के पायदान पर ... देना पड़ा। वापस भागकर अपने क... मेंट में चढ़ते हुए मैंने उस ओर देखा, ... अपने आत्मविश्वास, मुस्कान व ... सहारे डिब्बे में जगह बना चुका था।

—नरेश जैन, शाहज...

०००

तैयार बैठी मौत

उस अबोध बालक की आयु छह-सा... रही होगी, जो कालेज की उन ... छात्राओं से गिड़गिड़ाकर भीख मां... था। उसके शरीर पर मांस नाममात्र... था और सीने की सभी हड्डियां आ... गिनी जा सकती थीं।

'मेम साहब, दो रोज से मैंने कुछ ... खाया। भगवान के लिए दस पैसे...' बच्चा वाक्य भी पूरा न कर पाया था ... एक हिप्पीनुमा छात्रा ने जोर से ... दिया—'ब्लडी...भागता है कि नहीं! ... खोर यों ही भूख की दुहाई देते हैं!' ... भी आशा लिये बच्चा उनके पीछे ... दूरी तक चला गया था। मगर ... निराश होकर वह रुक गया और ... किनारे खड़ा होकर दूसरे राहगीरों ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतीक्षा करने लगा। मैं दूर से यह दृश्य देख रहा था कि तभी भयानक चीख सुनाई दी और देखा कि वह बच्चा सड़क पर गिरा छटपटा रहा है। कुछ क्षण पहले एक ट्रक उस बच्चे के पास से गुजरी और उसके पिछले टायर के नीचे आये एक पत्थर ने तोप से निकले गोले की तरह उस बाल-भिखमंगे की खोपड़ी को फोड़ डाला।

काश! वह बच्चा उन युवतियों के पीछे इतनी दूर तक न आया होता, जहां मौत उसे निगलने के लिए तैयार बैठी थी।

—खुशहाल ठाकुर, चंडीगढ़

०००

जीवन-भर की शिक्षा

अप्रैल १९४८ में हमारा बी. टी. सी. का प्रशिक्षण समाप्त हुआ। अंतिम दिन शाला में विदाई-समारोह मनाया गया। छात्राध्यापकों ने बारी-बारी से गुरु-जनों के प्रति आभार प्रकट किया तथा अपनी भूलचूक के लिए क्षमा-प्रार्थना की। तत्पश्चात् शिक्षकों ने अपने-अपने ढंग से हित-वचन कहे। अंत में एक वयोवृद्ध पंडितजी

चित्र : चरन शर्मा

उठे और ग्रामीण भाषा में बोले :

'हे मोरे भाइउ, हमका भाषण देइ नहीं आवत। पै दुइ बाति हमरिउ सुनि ल्या। दिनवां मा ऐसन काम किहे कि रतिया नींद भरि सोये। और रतियां मा ऐसन काम किहे कि दिनवां मा मुंह देखावइ लायक रहा।' उन चंद सरल वाक्यों में उन्होंने जीवनभर की शिक्षा हमें दी थी।

—मनवहोर सिंह, मानगढ़, सागर, म.प्र.

★

* एक लड़की को किसी कवि से प्रेम था। अंततः उन्होंने शादी करने का फैसला किया। लड़की बोली—'पता नहीं क्यों, मुझे डर-सा लगता है कि शादी के बाद तुम कहीं बदल न जाओ।' कवि ने आश्वासन दिया—'नहीं बदलूंगा, बशर्ते तुम अपनी नौकरी न छोड़ो और मुझे कविताएं लिखना छोड़कर कोई और काम करने को न कहो।'

* कक्षा में अध्यापक ने पढ़ाना रोककर विद्यार्थियों से कहा—'मेरी तबीयत अचानक खराब हो गयी है। मैं जा रहा हूं। घंटी बजने में अभी दस मिनट बाकी हैं। चुपचाप बैठकर पढ़ना। कोई शोर न मचाये, वरना आस-पास की कक्षाओं के सोये विद्यार्थी जाग जायेंगे।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमरीकी कहानी :

नयी धरती, नये लोग

स्टीफेन विन्सेन्ट बेनेट

यह कहानी गुजरे जमाने की है। तब अमरीका आज से बहुत अलग था। आज के लोग यदि उसे देखते तो शायद ही पहचान पाते। क्योंकि तब न तो बसें थीं, न रेलगाड़ियां, न आज की कई और चीजें।

तब तो बस छोटे-छोटे उपनिवेश थे, और बाकी देश में रेड इंडियन लोग रहते थे। सारे देश में घने जंगल फैले हुए थे और उनमें जंगली जानवर रहा करते थे। मुझे अपना बचपन याद है, और वह जमाना भी आज से काफी अलग था। फिर मेरे परदादा के परदादा का जमाना कितना अलग रहा होगा, इसका अंदाज किया जा सकता है।

मेरे परदादा के परदादा का नाम था जेकब स्टाइन और वे जर्मनी के एक छोटे-से कस्बे से अमरीका आये थे। यहां वे सीधे फिलाडेल्फिया आकर उतरे। वे कोई साधारण व्यक्ति नहीं थे। यहूदियों की एक शाला में उन्होंने धर्म की गहन शिक्षा पायी थी और धर्मशास्त्र के वे पंडित थे। पर जर्मनी में महामारी फैल गयी थी और वे वहां से भाग निकले थे।

वे बड़े-बड़े सपने लेकर यहां आये थे; पर सपनों के अनुरूप कुछ भी नहीं हुआ। आकर उन्हें महसूस हुआ कि उनका ज्ञान यद्यपि अपने आपमें बहुत बढ़िया चीज़ है पर वह उनका पेट नहीं भर सकता। उनके पास पैसा भी नहीं था, इसलिए उन्होंने फेरी लगाकर छोटा-मोटा सामान बेचना शुरू कर दिया। वे पीठ पर बोझ लादे घर-घर जाते और अपना सामान बेचते। इसमें कोई शरम की बात भी नहीं थी, क्योंकि अधिकांश लोग यहां जिंदगी की शुरूआत इसी तरह करते थे। पर विद्वान के लिए ऐसी परिस्थितियां बिल्कुल ही अनुकूल नहीं थी, और उन्हें अक्सर ... की याद आती थी। पर एक सफर ... करने के बाद कोई वापस नहीं लौट ... वापस कभी भी नहीं जाया जा सकता।

कुछ समय के बाद उन्हें लगा कि उनकी किस्मत चमकने वाली है। वे ... एटेलसन से अपना फेरी का सामान ... थे, और एक दिन जब साइमन ... मित्र से धर्म पर गूढ़ चर्चा कर रहा था ... वे दोनों ही गलत तथ्य रख रहे थे, ... नहीं रहा गया और उन्होंने दोनों की ...

अनुवाद : डा. राजेंद्र शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधारी। कंधे पर अपनी गठरी लादे—वे तब साइमन से माल लेने आये थे—वे उन दोनों को आधे घंटे तक पूरी बात विस्तार से बताते रहे। साइमन उनके ज्ञान से प्रभावित हुआ और उसने उन्हें घर पर खाना खाने को बुलाया। फिलाडेल्फिया आने के बाद पहली बार उन्हें स्वादिष्ट और भरपेट खाना नसीब हुआ और वहीं उन्होंने मिरियम एटेलसन को देखा, जो साइमन की सबसे छोटी लड़की थी और खिले गुलाब की तरह खूबसूरत थी।

साइमन से परिचय के बाद जेकब की हालत कुछ सुधरी, चूंकि उन्हें एक समृद्ध व्यक्ति का संरक्षण प्राप्त हो गया था। पर उन्हें संतोष नहीं हुआ। साइमन उन्हें घर बुलाता था और उनकी इज्जत करता था, पर इसलिए कि वे विद्वान थे, इसलिए नहीं कि वह उन्हें अपना दामाद बनाना चाहता था। वे यह बरदाश्त भी कर लेते यदि वहां एक और आदमी न होता—मेयर कैपलविस्ट। मेयर शरीर व स्वभाव में उनसे बिलकुल विपरीत था। वे दुबले-पतले थे, जब कि मेयर शरीर से गठा हुआ और लंबा-चौड़ा था। उसके सिर और हाथों पर लाल-लाल बाल थे। वह खूब खाने-पीने और मौज करने में विश्वास करता था, और मजे-

चित्र : शेणै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार किस्से सुनाता था। इसमें कोई शक नहीं था कि यह आदमी तरक्की करेगा। उसने भी जेकब की तरह से बोझा ढोकर सामान बेचने से शुरूआत की थी, पर वह बड़ी जल्दी स्वतंत्र व्यापारी बन गया था और पैसा कमाने लगा था—काफी पैसा।

जेकब चाहते थे कि वे भी कुछ बढ़िया किस्से सुनायें, पर उन्हें हजारों साल पुराने बाइबल के किस्से ही आते थे। दूसरी तरफ मेयर रेड इंडियनों के बारे में ऐसे रोचक किस्से सुनाता था कि मिरियम की आंखें खुशी से चमक उठती थीं।

आखिर एक बार जेकब पूरा साहस बटोरकर साइमन से मिलने उसकी दुकान में गये। 'मैं यह छोटा धंधा करते-करते ऊब गया हूं,' उन्होंने कहा।

'तुम और क्या करना चाहते हो ?' साइमन ने सहानुभूति से पूछा।

'मैं जिंदगी में कुछ और चाहता हूं—बीवी, खुद का घर। पर मैं बीवी को रखूंगा कैसे ? सूई और पिन बेचकर ?'

'हां, ऐसे भी गुजारा हो सकता है', साइमन ने कहा—'क्यों नहीं तुम भटियारे लेवी की लड़की से शादी कर लेते ? बेशक वह कुछ भेंगी है, पर दिल की बहुत अच्छी है।'

'मैं लेवी की लड़की के बारे में नहीं सोच रहा हूं', जेकब ने कहा।

'सुनो जेकब', साइमन ने कहा—'मैं जानता हूं कि तुम क्या चाहते हो। यह सही है कि तुम बड़े अच्छे नौजवान हो, विद्वान भी हो और अगर हम समुद्र-पार अपने देश में होते तो मुझे तुमसे रिश्ता कर देने में दिक्कत नहीं होती। पर यहां मेरी दो... कियां धनी परिवारों में ब्याही हैं... इससे सारी बात अलग हो जाती है।'

'और मैं यदि मेयर कैपलविस्ट की... होता तो ?'

'उसकी बात अलग है। वह व्यापा... और वह कुछ समय में धनी हो जाये...'

'ठीक है, मैं भी रेड इंडियनों से व्या... करूंगा।' जेकब ने कहा। पर इतना क... कर वे खुद ही डर से कांप गये।

साइमन ने उनकी तरफ ऐसे देखा, ... कि वे एकाएक पागल हो गये हों। '... जेकब, बेवकूफी मत करो।' उसने ... से कहा—'तुम एक विद्वान हो, न कि व्यापा... रेड इंडियनों से व्यापार करने के लिए ... और गुण चाहिये। ऐसे काम मेयर-जैसे ... ही कर सकते हैं।'

'और तुम्हारी सुंदर लड़की—क्या ... भी मैं मेयर के हवाले कर दूं ?' जेक... तीखी आवाज में पूछा।

साइमन कुछ घबरा गया। 'जेकब ... कुछ निश्चित नहीं है, पर ......!'

'यदि वह दूर तक जा सकता है तो मैं ... जाऊंगा। मैं बहुत दूर जंगली प्रदेश ... जाऊंगा और ईश्वर यह फैसला करेगा ... हम दोनों में कौन बेहतर आदमी है!' ... कहकर उन्होंने अपनी गठरी वहीं फर्श ... पटक दी और दुकान से बाहर निकल ...

बाहर सड़क पर जेकब ने अपनी जे... पड़े कुल पैसे गिने। पैसे ज्यादा नहीं ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन्होंने सोचा था कि साइमन से उधार लेकर अपना व्यापार शुरू किया जाये; अब यह संभव नहीं रह गया था। फिलाडेल्फिया की सड़कों पर चमकीली धूप बिखरी हुई थी, पर वे बहुत ही मायूस वहां खड़े थे।

हालांकि वे जानते थे कि काम नहीं बनेगा, फिर भी मजबूरी उन्हें राफेल सान्चेज के मकान तक ले गयी।

राफेल साइमन से भी अधिक धनी था। उसकी आंखें कालो व चमकीली थीं और उसकी दाढ़ी वर्फ की तरह सफेद थी। दरवाजा राफेल ने खुद खोला। 'क्यों फेरीवाले, तुम क्या वेच रहे हो?' उसने पूछा।

'धर्मशास्त्र का एक विद्वान खुद बिकने के लिए आया है,' जेकब ने शुद्ध यहूदी भाषा में तल्ख लहजे में कहा।

राफेल ने एक पैनी निगाह उन पर डाली और फिर उन्हें आदर से भीतर बुला लिया। दोनों ने साथ-साथ दुपहर का खाना खाया और जेकब ने सारी बात वृद्ध राफेल को बतायी।

'नौजवान, एक समुद्र पार करके तुम इधर आये हो ताकि सुख से जी सको', राफेल ने कहा–'पर यहां तुम एक ही चीज देख पाते हो–एक लड़की का चेहरा!'

उसने एक नक्शा निकाला और वह जेकब को समझाने लगा–'देखो, यहां लोग नयी-नयी वस्तियां बसा रहे हैं और फैलते जा रहे हैं। पर दक्षिण में फ्रांसीसियों का कब्जा है और मुझे उन पर कतई विश्वास नहीं है। जब तक दक्षिण की बड़ी नदियां उनके कब्जे में हैं, हम आगे नहीं फैल पायेंगे। कुछ लोग समझते हैं कि अमरीका एक खदान-भर है; जहां से माल निकाल लो और बाहर भेज दो। पर यह एक जिंदा देश है और हमें यहां रहना है। जब तुम जंगली प्रदेश में जाओ तो यह बात याद रखना। अभी तुम इसलिए जा रहे हो कि एक लड़की का चेहरा तुम्हें परेशान किये हुए है। पर हो सकता है कि तुम्हें वहां कुछ ऐसी चीजें मिलें, जिनकी तुमने कल्पना भी नहीं की थी।'

और इस प्रकार जेकब एक स्काटलैंड-वासी साथी मैकैम्बेल के साथ अपनी पहली व्यापार यात्रा पर चल दिये। मैकैम्बेल दिलेर और मजबूत डीलडौल का आदमी था और वह बहुत कम बोलता था।

उन दोनों ने पहले शहर छोड़े, फिर गांव और अंत में वे निपट जंगली प्रदेश में पहुंच गये। शुरू-शुरू में जेकब को बेहद घबराहट होती थी और वे ठीक से सो नहीं पाते थे। जंगल की हर आवाज उन्हें हमला करने के लिए छिपकर बढ़ते हुए रेड इंडियनों की पदचापों-जैसी लगती थी। पर धीरे-धीरे उनका डर कम होता गया। उन्होंने गौर किया कि मैकैम्बेल कितने चुपचाप तरीके से जंगलों से गुजरता है। वे भी वैसा ही करने लगे। उन्होंने कई चीजें सीखीं, जो किसी धर्मशास्त्री को अपने सारे ज्ञान के बावजूद नहीं पता होतीं–घोड़े पर सीट कैसे कसना, आग कैसे जलाना, जंगल की सुबह और शाम कैसी होती है, यह देखना। यह सब कुछ उनके लिए नया था। जब उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहली बार जंगल में रेड इंडियनों को देखा था, तो डर से उनकी टांगें लड़खड़ाने लगी थीं—पर धीरे-धीरे डर गुजर गया था।

जैसे-जैसे वे दोनों इस अनजानी दुनिया में भीतर घुसते गये, जेकब इन नये रास्तों को बारीकी से देखते रहे और उन्हें एक नक्शे में अंकित करते रहे, जैसा कि राफेल का आदेश था। जर्मनी उन्हें अब बड़ा छोटा लगता था—उन्हें पहली बार भान हो रहा था कि दुनिया कितना बड़ी है।

उनका रूप-रंग भी बदल गया था। उनके नाजुक सफेद हाथ अब मजबूत हो गये थे और धूप से बादामी। उनके चेहरे पर घनी काली दाढ़ी उग आयी थी। वे जानवरों की खाल के कपड़े पहनते थे। उन्हें घर से निकले कितना समय गुजर गया है, इसका भी उन्हें कोई अंदाज नहीं रह गया था। उन पर तो सिर्फ अपना नक्शा बनाने और व्यापार करने की धुन सवार थी। काफी समय बाद उन्होंने महसूस किया कि अब उन्हें वापस चल देना चाहिये; क्योंकि उनके पास बहुत-सा सामान इकट्ठा हो गया था। पर उनका साथी लौटने को तैयार नहीं था। अंत में वे एक विशाल नदी के किनारे पर आ गये। मैकैम्बेल यहां बीमार पड़ गया और बाद में मर गया।

जेकब अब इस विशाल जंगली प्रदेश में बिलकुल अकेले थे। जाड़ों में इंडियन लोगों के शॉनी कबीले ने उन्ह पकड़ लिया। एक बार तो वे उनके हाथों मरते-मरते बचे। पर वसंत ऋतु आने पर वे उनके चंगुल से

चित्र : शरद कांबळी

बच निकले।

लौटने में उनकी मुलाकात मैग्यूवरे के लड़के से हो गयी। बाद में ये दोनों दोस्त और व्यापार म भागीदार थे। दोनों ने शॉनी कबीले से व्यापार और बहुत-सी समूरदार खालें प्राप्त

फिलाडेलफिया वापस आते में मुलाकात मेयर कैपलविस्ट से हो मेयर की आंखें जेकब के खालों से लदे को लालच से देख रही थीं। जेकब बात अच्छी नहीं लगी, और न ही रेड इंडियन उन्हें अच्छे लगे, जो मेयर साथ थे। जेकब और मैग्यूवरे दोनों अपनी बंदूकों पर हाथ रखे हुए चौकन्ने

मेयर चाहता था कि वे साथ-साथ करें, पर जेकब ने मना कर दिया। वे रास्ते से चल पड़े। मैग्यूवरे इस से परिचित था। यह उनके लिए अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ; क्योंकि जब वे आगे एक कस्बे में पहुंचे तो उन्हें खबर मिली कि मेयर को उसके साथी रेड इंडियनों ने मार डाला है। मेयर की खोपड़ी जेकब के हवाले कर दी गयी, चूंकि वे फिलाडेल्फिया जा रहे थे।

फिलाडेल्फिया आकर जेकब सीधे राफेल के घर पर पहुंचे। दरवाजा राफेल ने खुद खोला। 'सीमांत पर रहने वाले, तुम्हें क्या चाहिये ?' राफेल ने उनसे पूछा। वह उन्ह पहचान नहीं पाया था।

'देश के लिए खून-पसीना एक कर देने की कीमत!' जेकब ने कहा। उनकी आवाज में एक ऐसा आत्मविश्वास था, जो पिछली बार नहीं था। वृद्ध ने उसकी तरफ देखा। 'मेरे बेटे, भीतर आओ।' उसने कहा।

सभ्यता के बीच पुनः आकर जेकब को बड़ा अजीब-सा लग रहा था।

'बेटे, तुमने वहां क्या देखा ?' राफेल ने पूछा।

'मैंने एक ऐसा सुंदर प्रदेश देखा, जहां हर चीज की बहुतायत है। मैंने कुछ भयानक चीजें भी देखीं। मैं अठारह घोड़ों पर लादकर समूरदार खालें लाया हूं। मैं समझता हूं कि आपको इस यात्रा से काफी लाभ होगा। मैंने नक्शा भी बनाया है, जिसमें कई नये प्रदेश अंकित हैं।' पर जेकब बहुत थके हुए थे और इतना कहकर उन्होंने अपना सिर अपनी बांहों पर झुका लिया।

'मैंने तुमसे कहा था न कि जंगल में एक लड़की के चेहरे के अलावा भी कई दिलचस्प चीजें हैं!' राफेल ने उनका कंधा छूते हुए कहा।

'लड़की का चेहरा? हां, मुझे याद आया। मैंने सुना है कि जल्दी ही उसकी शादी होने वाली है। पर इसके सामने लड़कियों के चेहरे क्या हैं?' उन्होंने मेयर की सूखी खोपड़ी टेबल पर फेंकते हुए कहा।

'यह मेयर कैपलविस्ट है', वे फिर बोले—'मैं कमजोर था और वह ताकतवर। पर इस बीच मैं भी बहुत-से हादसों से गुजरा हूं। और अब हमें इसकी आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करनी चाहिये।'

'जरूर!' राफेल ने कहा।

'आप नहीं समझे', जेकब कहने लगे—'मैंने जंगली जानवरों के मांस पर बहुत दिन गुजारा किया है और वहां मैं यह भी भूल गया कि महीने और साल क्या होते हैं। मैं खूंख्वार रेड इंडियनों के साथ रहा हूं और मैंने अपने दुश्मन की खोपड़ी अपने हाथ में पकड़ी है। मैं पहले वाला जेकब नहीं।'

'नहीं, तुम वही रहोगे, और न तुम्हारी विद्वत्ता में कोई कमी आयेगी। पर यह एक नया देश है।'

'हां, इसे सब पंथों के लोगों का देश होना चाहिये।' जेकब ने कहा।

'मुझे उम्मीद है ऐसा ही होगा।

जेकब ने सिर उठाकर ऊपर देखा। आसमान में शाम ढल रही थी और सूरज डूब रहा था। तभी राफेल की नातिन शाम का खाना लगाने के लिए कमरे में आयी। जेकब उसकी मासूम व सुंदर आंखों को एकटक देखने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वंभरनाथ

अंगूरी से इलाज

गाजर, गेहूं-घास के रस जैसी किसी एक ही मामूली चीज से तमाम रोगों का इलाज करने के दावे दुनिया में सदा से किये जाते रहे हैं, किये जाते रहेंगे; उन दावों पर विश्वास करने वाले भी सदा रहे हैं और रहेंगे। कारण यह कामना कि सब रोगों की कोई एक दवा हो और यह आस्था कि सब बीमारियां खान-पान की चीजों से दूर की जा सकती हैं, सारे संसार में रही हैं।

मगर इस कोटि का सबसे नया दावा सुनकर आप चौंक उठेंगे। फ्रांस में बसे एक निवृत्त अंग्रेज चिकित्सक डा. माउरी ने हाल में फ्रांसीसी में एक किताब लिखी है, जिसके शीर्षक का हिंदी अनुवाद यह है—'अंगूरी से अपना इलाज कीजिये'। इसमें उन्होंने प्रतिपादित किया है कि प्रायः हर किस्म की बीमारी अंगूरी की अलग-अलग किस्में अलग-अलग मात्रा में पीने से दूर हो सकती हैं। उनके दिये हुए कुछ नुस्खे पढ़िये :

लाल अंगूरियों में से क्लैरेट इन रोगों में मुफीद है—टान्सिल की सूजन, टाइफाइड और कई प्रकार के नेत्ररोग। इन्हीं रोगों में क्लैरेट के बजाय लाल बर्गंडी अंगूरियां भी लाभकारी हैं। मेडाक मधुमेह की दवा है; मात्रा—दोनों वक्त भोजन में दो-दो गिलास। वह उन लोगों के लिए भी मुफीद है जो मनो-व्यथा या क्रोध से ग्रस्त रहते हैं। १४० डिग्री तक गरम किया हुआ चेंबरटिन या पोमार्ड एक प्याला सुबह, दुपहर व रात को पीजिये, खांसी से छुट्टी।

सफेद अंगूरियों में से ग्रेव्स के सेवन से रक्तहीनता (एनीमिया) दूर होती है। एंत्रे-द्यू-मर्स सूखा रोग की दवा है। अल्सेस प्रांत की अंगूरियों में सिल्वैनर और रीसलिंग उच्च रक्तचाप में गुणकारी हैं।

शैम्पेन उनके लिए उत्तम दवा है, जिन्हें कारोनरी थ्राम्बासिस की आशंका हो। तपेदिक के मरीजों को तो इसे नित्य के भोजन का अंग बना लेना चाहिये। इसी तरह पुराने गठिया के रोगियों को दिन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दो-एक गिलास शैम्पेन पीनी चाहिये।

डा. माउरी बताते हैं कि अंगूरी में ग्लूसिड, प्रोटिड, फेनाल, टैनिन, डायस्टेस फास्फेट, कैल्शियम, मैग्नीशियम, सिलिकान, विटामिन सी, बी, ई, आदि कोई ३०० रासायनिक द्रव्य होते हैं। डाक्टर भी तो प्रायः यही चीजें दवाओं के रूप में खिलाते-पिलाते हैं। डाक्टर साहब का सिद्धांत है कि अंगूर जिस प्रदेश में उगे हों, वहां की मिट्टी की रासायनिक संरचना के अनुसार अंगूरी में रोग-निवारण क्षमता आती है। हां, उन्होंने अपनी पुस्तक में केवल फ्रांसीसी अंगूरियों का ही चिकित्साशास्त्रीय विवेचन किया है।

चौहत्तर वर्षीय माउरी होमियोपैथ हैं और लंदन के रायल होमियोपैथिक हास्पिटल में चिकित्सक रहे हैं। उनका निश्चित

पीपा-भर अंगूरी

[मूल : फ्रांस हाल्स; अनुकृति : ओके]

मत है कि आजकल हमें जो पानी पीना पड़ता है, उसके मुकाबले में तो कोई सच्ची या शुद्ध अंगूरी कभी हानिकारक हो ही नहीं सकती।

★

एक मास्टर साहब शब्दों के सही प्रयोग पर बहुत जोर देते थे। एक बार कुछ दिन के लिए उनका तबादला पास के कस्बे में कर दिया गया। वहां जाकर उन्होंने अपना सामान-असबाब खोला, तो पता चला कि चप्पलें तो वे घर पर ही भूल आये हैं। फौरन उन्होंने अपनी पत्नी को यह चिट्ठी लिखी :

'यह चिट्ठी लाने वाले के हाथों तुम्हारी चप्पलें भेज दो। ध्यान दो, मैंने "तुम्हारी चप्पलें" लिखा है। अगर मैं "मेरी चप्पलें" लिखता तो तुम "मेरी चप्पलें" पढ़कर अपनी चप्पलें भेज देतीं। भला मैं तुम्हारी चप्पलों का क्या करता! सो मैंने "तुम्हारी चप्पलें" लिखा है, ताकि तुम "तुम्हारी चप्पलें" ही पढ़ो और मेरी चप्पलें भेज दो।'

मास्टर साहब कहते थे—'दुनिया बिलकुल उलटी है। देखो तो, धनियों को सब कुछ उधार पर मिल जाता है, जबकि वे पैसा देकर खरीद सकते हैं। गरीब, जो कि पैसा दे नहीं सकते, उन्हें सब चीज नकद पर खरीदनी पड़ती है। होना तो यह चाहिये कि धनी नकद दें और गरीब उधार पर ले सकें।' किसी ने आपत्ति की—'इस तरह तो उधार देने वाला दुकानदार गरीब हो जायेगा।' जवाब मिला—'गरीब हो जायेगा, तो उधार लिया करेगा।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखने में सब कुछ वैसा ही था, ज्यों का त्यों। फरवरी की खुली धूप में खुश-खुश सिर उठाये वह खूबसूरत बंगला, पोर्टिको पर चढ़ी मखमली पत्तों की बेल और सीधे-सीधे मकान के बगल से आगे तक चले गये लान। फूल तथा गमले अपनी जगह पर थे।

इनके लिए सिंह साहब की प्रसिद्धि भी थी, फिर भी कुछ अभाव था, जो मुझे खटक रहा था। मैंने अपने आपको समझाने की कोशिश की कि यह मेरी अपनी विशेष मनःस्थिति है, जो ऐसे मौकों पर सिर उठा लेती है। कोई बसा-बसाया घर उखाड़कर जाने वाला हो, तो वहां की हवा मुझे बोझिल लगती है, दम घुटता मालूम होता है। दोनों हालत में ऐसा ही होता है। जाने वाला जब अतिरिक्त मोह-ममता से भर उठता है और जीवन-भर दोस्ताना संबंध बनाये रखने की बातें कई तरह से कहता है तब भी, या जब वह उदासीन और बेमुरौव्वत दिखने का प्रयत्न करता है तब भी। दोनों हालतों में मुझे एक ही स्वर सुनाई देता है— दुःख का उदास स्वर, आहत झंकार का स्वर। मैं उसे कभी नजरअंदाज नहीं कर पाता हूं।

मैंने पाया कि सिंह साहब लान को घेरकर लगी मेंहदी की बाड़ से ही कहीं से निकलकर सामने आ गये हैं। ओंठों पर स्वागत वाली मुस्कराहट, बदन पर कुरता-पाजामा। हुलसते हुए पूछा— 'कहिये ...! हो आये आजमगढ़ से ?'

चारों ओर फैली हुई मेंथी की गंध में सांस लेते हुए मैंने कहा—

चित्र : डा. विष्णु भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हां ...... कल शाम आया तो आपके ट्रान्सफर की खबर लगी ......'

उनके पीछे-पीछे बाड़ के भीतर जाकर मैं उनके समीप लान-चेयर पर बैठ गया। वे बैठने के साथ ही एक ओर देखने लगे। मैंने भी देखा—खुरपी, कुदाल और फावड़े से लैस कई आदमी वहां इकट्ठा हैं; खेत में काम हो रहा है; सिंह साहब उनकी निगरानी कर रहे हैं और समय-समय पर आवश्यक निर्देश दे रहे हैं। काम कैसा, वह भी थोड़ी देर बाद समझ गया, जब भदभद करके दो-चार कच्चे पपीते मेरे पैरों के पास गिर पड़े। पपीते गिराने वाले को पीछे घूमकर देखना पड़ा, हाथ में लंबा मजबूत बांस, खुद भी बांस-सा दुबला और ऊंचा।

'तो, चार्ज दे दिया आपने ?' मैंने पूछा, फिर स्नेह दरशाकर कहा—'सुना, आपका ट्रान्सफर रुकवाने की बहुत लोगों ने कोशिश की। आपको यहां से जाने तो देना कोई नहीं चाहता ...... !'

सिंह साहब गद्‌गद हुए, पर विरक्ति का आवरण डालकर बोले—'अजी छोड़ो ...! अच्छा हुआ। मेरी तो तबीयत उचट गयी थी। जहां देखो वहीं गुटबंदी, भाई-भतीजावाद ! हां, आप लोगों से बिछुड़ने का अफसोस जरूर रहेगा।'

मुझे लगा, वाक्य का अंतिम अंश महज औपचारिकता के नाते जोड़ दिया गया है। पर इसका मैं अभ्यस्त हो गया हूं। यह फैशन का एक खूबसूरत टुकड़ा समझा जाता है, जिसे लोग अपनी बदसूरती में जोड़ लेते हैं। यों भी मैं उनके बारे में अच्छी जानकारी रखता था; जातिवाद और दलबंदी के मोर्चे में उनकी महत्त्वपूर्ण भूमिका के बारे में भी। दारोगा राधेश्याम सिंह, चकबंदी के दृकपाल सिंह और कोआपरेटिव के छबिनाथ सिंह अपना-अपना तबादला करवाकर यहीं आ गये थे—वह क्यों, यह भी

हिंदी कहानी

प्रतिमा वर्मा

जानता था। दोस्त होने के नाते मैं इस पर हमेशा सोच सकता था, लेकिन कह कभी नहीं सकता था। कहने का वक्त आया तो मैंने कहा—'हां यह तो है। शरीफ आदमी के लिए इतना ही बरदाश्त करना मुश्किल है।'

मैं गोभी के जरा-जरा से फूलों को टूटते देखता रहा। पतली-पतली गाजरों के उखड़ने का साक्षी बना। अभी-अभी जड़ पकड़ती मूली के गरम अंगों पर खुरपी के प्रहार होते देखता रहा। बंदगोभी तो जरा-जरा-सी ही जमी थी। देख-देखकर मुझे बेचैनी-भरी सिहरन का अनुभव होता रहा, जैसे किसी की अकाल मृत्यु देख ली हो। उनकी उदार मुस्कराहट के पीछे कुत्सित ईर्ष्या को मैं नाचते देख रहा था। मैं पूछना चाहता था, पर मैंने अपने को रोक लिया। ऐसे मामलों में छोटी-छोटी बातें लोगों को गाली प्रतीत होती हैं, यह मैं अब समझने लगा था। पहले जब अनजान था, दो-एक सज्जनों से पूछ बैठा था—'भला ऐसी गाजर-मूली का आप क्या करेंगे ? यह बंदगोभी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किस काम की? इस गोभी का क्या कुछ बन सकता है? सुनकर वे आहत हुए थे। किसी न किसी तरह मुझे भी चोट पहुंचाने का रुख अपनाया था। अब तो जानता हूं, मूली के पत्तों का दो दिन साग बनेगा। गाजर और बंदगोभी गाय या भैंस खा डालेगी, नरम गोभी का आमलेट बढ़िया बनता है और कच्चे पपोतों का अचार ......जवाब जब मालूम हो तो सवाल पूछा ही क्यों जाये? पूछा–'तो, पैकिंग हो रही है?'

'बड़े जोर-शोर से, पूछिये मत!'

परेशानी की कितनी ही सलवटें उनके माथे पर उभर आयीं। अपने सारे आदमियों की ओर उन्होंने ऐसे देखा, जैसे वे सबके सब उनके सिर या कंधों पर चढ़े हुए हों और बोझ-तले वे दबे जा रहे हों। अपने सांवले पिचके चेहरे को बेतरह सिकोड़कर उन्होंने कहा–'यह मुसीबत भी क्या कम है? पैकिंग में जरा भी गड़बड़ी हुई नहीं कि कीमती से कीमती सामान खत्म हो जाता है। यहां आते वक्त ड्रेसिंग-टेबल का शीशा ही टूट गया। बैठे-बिठाये पचास रुपये की चपत लग गयी!'

'हां, नुक्सान तो कुछ न कुछ हो ही जाता है!' मैंने जल्दी से हामी भरी, फिर एक सुना-सुनाया जुमला जोड़ दिया–'सरकार हर जगह फर्निश्ड क्वार्टर का इंतजाम रखे तो ट्रान्सफर किसी को इतना खले भी नहीं!'

उत्तर में उन्होंने भी सुनी-सुनायी-सी बात कही–'अजी, यह हमारी सरकार! लोगों का पेट भरना ही मुश्किल है, और तो क्या होगा। ये सब बड़ी एड्वान्स्ड मु... की बातें हैं। यहां तो लिफाफे में भर... कागज थमा दिया, हो गया! ऐसी-ऐ... जगह उठाकर भेज देते हैं कि जानवरों ... तबेले में दिन काटना पड़ जाता है......दे... देखिये, कितनी मुश्किल से दूसरा कमरा बनवाया, लान में पाइप फिट करवाया, खिड़कियों का शीशा लगवाया और अब ... ठीक हो गया है तो बाहर भेजे दे रहे हैं!'

'तो वहां अभी बंगले का इंतजाम नहीं हुआ?'

'अभी कहां जी!'

हम लोग उजड़े-उखड़े बगीचे पर ... दृष्टि डालकर ऊपर बरामदे में आ गये। यहां तीन-चार फोल्डिंग कुर्सियां पड़ी थीं। यहां बैठना मुझे हमेशा अच्छा लगता था। सामने शीशम और साखू के फैले हुए पेड़ों के बीच से धूप छन-छनकर आती रहती और हम लोगों की निरर्थक बातों और बनावटी कहकहों का दौर चलता रहता। पत्तों की सरसराहट के बीच मुझे अव्यक्त रूप से ... अनुभूति होती कि हम शहर से बाहर कहीं बैठे हैं। इस बीच चाय आती, तो पिक... निक की वह कमी भी दूर हो जाती। पुरानी यादों को ताजा करने के लिए मैंने चारों ओर देखा, तो मेरा जी धक्-से रह गया। वे दोनों पेड़ थे ही नहीं! मेरी दृष्टि का मौन प्रश्न ताड़कर सिंह साहब ने कहा–'एक पलंग और डाइनिंग टेबल बनवा लिया है। एक अच्छा कारीगर मिल गया था। मैंने सोचा, रोज-रोज कहां ऐसे आदमी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलते हैं ? और, इधर की इतनी सारी जमीन पेड़ों की वजह से बेकार पड़ी रहती थी। अब जो आयेगा, उसे खेती-बारी की और सुविधा हो जायेगी ......'

लेकिन मुझे इस वक्त सचमुच गुस्सा आ रहा था, कुछ बोला नहीं; फिर मैंने पाया कि मैं उनके पीछे-पीछे घर के भीतर जा रहा हूं। चाय पीते हुए उन्होंने फिर यहां के कार्यालयों में घुसी राजनीति आदि की बात की। मैं भी अभ्यासवश फिर हां-हां करने लगा। औरों के साथ मैंने भी प्लेट-प्यालों को एहतियात से लपेटने में थोड़ा हाथ लगाया। बत्तीस रुपयों वाले उनके टी-सेट की बाबत जान बूझकर पूछा—'कॉस्टली मालूम होते हैं! ... इम्पोर्टेड हैं क्या सिंह साहब ?'

एक चिपचिपी प्रसन्नता उनके मुखमंडल पर झलक आयी, पर शायद इतना खुला झूठ बोलने का उनका साहस नहीं हुआ, बोले—'नहीं......है तो यहीं का शायद......'

संगमरमर का आठ इंची ताजमहल पैक हो चुका, तो लेमन सेट की बारी आयी और फिर हलचल मची। इन्हीं सबके बीच उनके आठ और दस वर्ष के दोनों बेटे हाथ में क्रिकेट का बैट और गेंद लिये प्रकट हुए। मैंने हंसकर उनसे दो बातें कीं, गेंद वाले को बेदी कहकर संबोधित किया, जिससे वह और उसकी मम्मी काफी खुश दिखे। लड़के ने धप् से जमीन पर गेंद मारी तो मिसेज़ सिंह की मुस्कराहट लुप्त हो गयी, बौखलाकर बोलीं—'क्या करते हो ? दिखाई नहीं देता ? इतना कीमती सामान फैला है यहां ...... !'

सिंह साहब ने भी आजिजी से कहा—'अरे यार! बाहर जाकर खेलो!'

बच्चों को प्रस्ताव पसंद नहीं आया, मुंह बनाकर बोले—'ऊं sss......बाहर बहुत धूप है डैडी!'

'तो भइ, ड्राइंगरूम में चले जाओ, पूरा खाली पड़ा है।'

बच्चे चले गये।

क्राकरी रखी जा चुकी, तो दूसरी पेटी में पुआल डाली गयी और एक-एक करके शो-पीस रखे जाने लगे। तभी ड्राइंगरूम में जोरों की झनझनाहट हुई।

'हाय! दरवाजे का शीशा टूट गया क्या?' श्रीमती सिंह ने घबराकर कहा, फिर उस कमरे की ओर दौड़-सी पड़ीं। सिंह साहब अपनी जगह पर खड़े रहे, अनुत्तेजित ढंग से बोले—'जाने दो, रामनाथ उठा देगा। जाओ रामनाथ, बच्चों के चुभ न जाये ......'

लगभग सभी व्यक्ति उधर चले गये तो वे अपूर्व संतोष के साथ हंसकर मुझसे बोले—'मैं भी जब आया था तो नया शीशा लगवाना पड़ा था ...... !'

मैंने नहीं पूछा—खर्चा आपका लगा था या सरकार का ? अब मैं पहले से अनुभवी हो गया हूं और ऐसी बहुत-सी बातों का उत्तर जानता हूं।

—के ६४/५, गोला दीनानाथ, वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* शमां अख्तर

नख से शिख तक भारतीय

बेगम अख्तर मेरी मामी थीं। उन्होंने मुझे हमेशा अपनी बेटी माना। मैं अंत तक उनके साथ रही। उनकी कला के विषय में बहुत-कुछ लिखा गया है। परंतु वे कलाकार के अलावा भी बहुत कुछ थीं। इंद्रधनुष के विविध रंगों की भांति उनका व्यक्तित्व विविधता से पूर्ण था। अगर वे महान कलाकार न होतीं, तो भी एक महान व्यक्ति कहलातीं।

वे राष्ट्रीय एकता की उत्कट समर्थक थीं। उनका घर मानो राष्ट्रीय एकता का दर्पण था। भिन्न-भिन्न धर्मों के लोग उनसे मिलने आते थे। उन्हीं के शब्दों में, 'कला का कोई धर्म नहीं होता। कोई भी कलाकार कला की ऊंचाइयों को तभी छू सकता है, जब वह धार्मिक द्वेष से परे हो।' और सचमुच धार्मिक द्वेष उन्हें छू भी नहीं गया था। वे कहा करती थीं—'बच्चा जब जन्म लेता है, तो उसका कोई धर्म नहीं होता। वह जिस धर्म के वातावरण में आंखें खोलता है, उसी को अपना लेता है।'

सब जानते हैं, वे एक मुस्लिम परिवार में पैदा हुई थीं। इस्लाम उनका धर्म था और उसके नियम, व्रत, विधि-निषेध सबका पालन वे पूरे मन से और निष्ठा से करती थीं। तीन बार हज भी कर आयी थीं। इसके बावजूद, दूसरे धर्मों की जो बातें उन्हें अच्छी मालूम होती थीं, उन्हें वे अपना लेती थीं।

उनके प्रशंसकों और उनकी शिष्याओं में गैर-मुस्लिमों की संख्या निस्संदेह अधिक थी। प्रत्येक प्रदेश और संप्रदाय के उनकी शिष्य-मंडली में थे—शांति हीरानंद (सिंधी), रीता कोठारी और अंजलि बनर्जी, दीपा दास (बंगाली); श्रीमती सिद्धू और श्रीमती जोगिंदर सिंह (सिक्ख); श्रीमती शीला धर और उमा चकबस्त (कश्मीरी); श्रीमती वसुंधरा पंडित (गुजराती)। शिष्याओं के

अनुवाद : नारायण लाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे अपनी संतान की तरह प्यार करती थीं और शिष्याएं भी उन्हें 'अम्मी' कहती थीं।

उनकी मृत्यु के बाद जो हजारों तार और पत्र आये, इनमें से अधिकांश गैरमुस्लिमों के थे। इनमें से बहुत-से लोग तो ऐसे थे, जो उनसे बस एक बार किसी कार्यक्रम में, किसी के घर पर, हवाई जहाज पर या रेल म मिले थे और सदा के लिए उनके प्रशंसक बन गये थे।

जुलाई १९७४ में उन्हें दिल का दौरा पड़ा। डाक्टरों ने पूर्ण विश्राम का परामर्श दिया। २० अगस्त को बेंगलूर में उनका कार्यक्रम तय था। डाक्टरों ने जाने की अनुमति नहीं दी। परंतु उनकी जिद थी कि मैं अवश्य जाऊंगी। उन्होंने केवल मुझे बताया– 'मैं कार्यक्रम के लिए नहीं जा रही हूं। मैंने सुब्बुलक्ष्मी (दक्षिण की महान गायिका) से वादा किया था कि अब जब बेंगलूर आऊंगी, तो आपको गजलें जरूर सिखाऊंगी। मेरे लिए यह बहुत संमान की बात है कि वे इतनी बड़ी आर्टिस्ट होकर मुझसे सीखना चाहती हैं। शायद फिर मौका न मिले और मैं उनकी इच्छा पूरी न कर पाऊं।'

डाक्टरों के मना करने पर वे बेंगलूर चली गयीं। मालूम नहीं, श्रीमती सुब्बुलक्ष्मी को उनसे गजलें सीखने का मौका मिला या नहीं। पर जब वे वापस आयीं, तो बहुत प्रसन्न थीं कि इतनी बीमारी के बावजूद कार्यक्रम बहुत सफल रहा।

वे ईद और दूसरे इस्लामी त्योहार जितनी निष्ठा और सुरुचि के साथ मनाती थीं, उतने ही जोश से दीपावली और होली भी मनाती थीं। होली में वे अबीर-गुलाल प्रचुर मात्रा में मंगवातीं; पास-पड़ोस के लोग आ जाते, खूब रंग खेला जाता। बच्चों को पिचकारियां पहले ही मंगवाकर दी जातीं। शाम के समय सब लोग होली मिलने आते। वे माथे पर टीका लगवा लेतीं, स्वयं अपने हाथों से सबको मिठाई खिलातीं।

दीवाली में छत पर दिये रोशन किये जाते। एक-एक दिया घर के विशेष स्थानों पर—जैसे भीतर आने वाले मार्ग पर, कमरे की चौखट पर, तिजोरी पर रखा जाता। असल में यह प्रथा उनकी माताजी के समय से चली आ रही थी। रक्षाबंधन पर उनकी शिष्याएं घर के बच्चों को राखी बांधने आती थीं। वसंत पंचमी उन्हें बहुत पसंद थी। उस दिन वे स्वयं भी वसंती साड़ी पहनतीं और घर के दूसरे लोगों को भी पहनने को कहतीं। वसंती फूल सजाये जाते।

इन सब त्योहारों में घरेलू सेवक-सेविकाओं का हिस्सा होता। जमादारिन से भी वे गले मिलतीं और उसे त्योहारी देतीं। वे नहीं चाहती थीं कि जमादारिन हीनभावना की शिकार बने। घर के सब लोग जमादारिन से टीका लगवाते, राखी बंधवाते और फिर उसे पैसे देते। इसी प्रकार क्रिस्मस और नया साल भी मनाये जाते।

मुहर्रम में वे बहुत जबर्दस्त प्रबंध करतीं, हालांकि वे सुन्नी संप्रदाय की थीं। शिया लोगों की तरह एक बहुत सुंदर इमामबाड़ा सजाया जाता। दस दिन तक मजलिसें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होतीं और वे स्वयं भी मातम में शामिल होतीं। ताजिया करबला जाता। वे स्वयं सारी रात जागती थीं और उनकी ओर से लंगर तकसीम होता रहता था।

गुरु नानक में उन्हें असीम श्रद्धा थी। कई गैरमुस्लिम बुजुर्गों और धार्मिक नेताओं की तस्वीरें उनकी बैठक में अब भी मौजूद हैं। आखिरी साल एक कार्यक्रम के सिलसिले में दिल्ली गयी थीं। वहां उनकी तबीयत खराब हो गयी। किसी शिष्या ने साईं-बाबा की तस्वीर लाकर उनके सिरहाने रख दी। जब वे घर वापस आयीं, तो वह तस्वीर उनके साथ थी। जब तक वे घर पर रहीं, तस्वीर उनके सिरहाने रखी रही।

उनके पास आर्थिक सहायता के लिए पत्र आते ही रहते थे और वे भी यथासंभव सबको सहायता करती थीं। इसी प्रकार का एक पत्र उनकी गैरहाजिरी में लखनऊ के एक मुहल्ले से किसी सिक्ख सज्जन का आया था; लड़की के विवाह के सिलसिले में उन्होंने उनसे आर्थिक सहायता मांगी थी। संयोग से वे उसी दिन वापस लखनऊ पहुंचीं, जिस दिन शादी थी। पत्र पढ़कर उन्होंने घर के एक आदमी के हाथ कुछ रुपये भिजवा दिये। वह आदमी रुपये दिये बिना ही वापस आ गया; क्योंकि वहां की शान-शौकत किसी धनी परिवार की-सी थी। बेगम साहिबा ने उस आदमी को दुबारा भेजा। उसने जाकर उन सज्जन को रुपये दिये। उस सज्जन ने सधन्यवाद बेगम साहिबा को निमंत्रण-पत्र भी भेजा।

पंडितों और ज्योतिषियों से उन्हें बहुत लगाव था। उन्होंने अपनी व अपने पति बैरिस्टर अब्बासी साहब की जन्म-कुंडलियां बनवा रखी थीं। दो-एक ज्योतिषी तो लगे ही रहते थे, जो हर दो-चार महीने बाद घर आकर कुछ न कुछ बता जाते थे। मृत्यु से एक मास पूर्व वे कलकत्ता गयी थीं। वहां एक ज्योतिषी ने उन्हें बताया कि २० नवंबर के बाद वे पूर्ण रूप से स्वस्थ हो जायेंगी। घर आकर उन्होंने यह सुखद समाचार हम सबको सुनाया। परंतु मौत ने उन्हें ३० अक्तूबर को ही हमसे जुदा कर दिया। ज्योतिषियों ने उन्हें बतलाया था कि वे अस्सी वर्ष तक जियेंगी। काश, यह भविष्यवाणी सच निकलती!

उन्होंने जब अपने घर के आंगन में नया काटेज बनवाया, उसमें जाने से पहले इस्लाम के अनुसार रस्में तो अदा की ही गयीं; वहीं पंडितजी से शुभमुहूर्त भी निकलवाया गया और पंडितजी ने जो कुछ कहा, वह सब किया गया। कुछ समय तक वे गले में मंगलसूत्र और पांव में बिछुवे भी पहनती थीं। वे प्रायः बंगाली ढंग से और सीधे पल्ले से साड़ी पहनती थीं। उनका कहना था कि साड़ी पहनने का यह ढंग आसान है। उनकी एक हिंदू शिष्या को मुस्लिम संस्कृति बहुत पसंद थी। वह बहुत-सी बातों में उनका अनुकरण करने लगी। एक दिन उसे रोजे रखने का शौक पैदा हुआ। बेगम साहिबा ने उसे समझाया– 'देखो बेटी! तुमने जिस धर्म में जन्म लिया है, उसकी कद्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहचानो। सबका अभीष्ट स्थान एक है। जो हमारा खुदा है, उसे तुम भगवान कहती हो। बस, सिर्फ इतना फर्क है। पैदा करने वाला सबका एक ही है।'

उनके नौकरों में सभी जातियों के लोग थे। उनकी मृत्यु से एक साल पहले उनके यहां एक हिंदू पहाड़ी पाचक हरि था। वे कहती थीं कि ये लोग रसोईघर और बरतन बहुत साफ रखते हैं। उनके हिंदू नौकरों में राजाराम, रामावतार और फकीरे के नाम उल्लेखनीय हैं। राजाराम जाति का पासी था। घर वालों ने जब उसकी नियुक्ति पर आपत्ति की, वे बहुत नाराज हुईं। वे घर का हर काम उसी से लेती थीं—बरतन उसी से साफ करवातीं, चाय भी उसी से बनवातीं। अंत में घर के हर आदमी को उनका दृष्टिकोण अपनाना पड़ा।

जमादारिन से भी वे छूतछात नहीं करती थीं। स्नान से पूर्व उससे मालिश करवातीं। कहतीं—'मनुष्य अपने कर्मों से नीच अथवा महान बनता है। जमादारिन को तो हमें महान मानना चाहिये; क्योंकि वह हमारी एक ऐसी सेवा करती है, जिसे करते हुए शायद हमारी अपनी औलाद को भी घिन महसूस हो।'

उनकी कला भी राष्ट्रीय एकता का नमूना थी। वे उर्दू में गजलें और नातें गाती थीं, हिंदी में ठुमरी, दादरा और भजन। उन्होंने बंगला में कुछ रिकार्ड तैयार करवाये थे, जो बहुत ही लोकप्रिय हुए। गुजराती में भी उन्होंने रिकार्डिंग करायी थी; मगर अफसोस है कि उनके जीवन काल में वह रिकार्ड तैयार न हो सका।

सांस्कृतिक शिष्ट-मंडलों के साथ जब वे भारत से बाहर जाती थीं, तो एक ही सप्ताह के बाद उनका दिल घबराने लगता था। कार्यक्रमों के सिलसिले में वे तीन बार अफगानिस्तान गयी थीं। अंतिम बार मैं भी साथ थी। हमें एक सप्ताह से ज्यादा वहां ठहरना पड़ा। चार ही दिन के बाद वे घबरा उठीं। रोज पूछतीं—'अब कितने दिन बाकी हैं?' जब हमारा जहाज दिल्ली हवाई-अड्डे पर आकर रुका, तो उन्होंने खुदा का शुक्रिया अदा किया।

एक महीने की रूस-यात्रा के दौरान उनके जितने भी पत्र आये, सबमें उकताहट का जिक्र था। एक में लिखा था—'दुआ करो, जल्दी से दिन गुजर जायें और हम घर वापस आ जायें।' जब आयीं तो कहने लगीं—'मालूम नहीं, लोग विदेशों में जाकर कैसे बस जाते हैं? मुझे तो एक दिन भी अच्छा नहीं लगता।'

देश-विभाजन के बाद बहुत-से लोगों ने उन्हें पाकिस्तान जाने की सलाह दी थी। लेकिन बेगम साहिबा का जवाब था—'हम इसी देश में पैदा हुए और इसी का पैवंद हो जायेंगे।' और वे इसी देश का पैवंद हो गयीं।

[उर्दू 'हुमां' से साभार]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तानी पंजाबी कविता: नयी करवट

डा. नरेश

पिछले कुछ वर्षों में पाकिस्तान में क्षेत्रीय भाषाओं के आंदोलन ने काफी जोर पकड़ा है। बाङ्ला देश के स्वतंत्र अस्तित्व में भले ही राजनैतिक कारण रहे हों, परंतु उसका मूल आधार बंगाली मुसलमानों का बंगला भाषा के प्रति अगाध प्रेम ही था।

पाकिस्तानी पंजाब की स्थिति इससे तनिक भिन्न रही है। पाकिस्तान बनने के बाद वहां के पंजाबी स्वयं को परिवर्तित परिवेश में रखने के इच्छुक हुए। अपनी संस्कृति एवं अपनी सभ्यता को नकारकर उन्होंने एक नितांत शरई मुस्लिम समाज के निर्माण का प्रयास किया। उनका यह प्रयास दिवास्वप्न सिद्ध हुआ। फलतः वे अपने मूल की ओर लौटने लगे। कारण, लोक-मानस अपनी सदियों की संस्कृति, अपने प्रदेश की सभ्यता एवं अपने सुदीर्घ इतिहास से न टूट सका।

कृत्रिमता से वास्तविकता की ओर उनके इस प्रयाण से सर्वाधिक हानि हुई उर्दू को तथा सर्वाधिक लाभ हुआ पंजाबी को। पंजाबी के प्रति पंजाबियों का मोह जागृत हुआ। पंजाब विश्वविद्यालय (लाहौर) में पंजाबी विभाग की स्थापना हुई; रेडियो पाकिस्तान पर पंजाबी कार्यक्रमों की संख्या में वृद्धि हुई; पंजाबी पत्रिकाओं के प्रकाशन का प्रचलन हुआ; दूसरी भाषाओं के अनेक ग्रंथों के पंजाबी अनुवाद प्रकाशित हुए; तथा पहली बार वहां के साहित्यकारों ने पंजाबी में साहित्य-रचना करने में गौरव का अनुभव किया।

इससे पूर्व वहां पंजाबी कवियों को उर्दू कवियों की अपेक्षा बहुत हल्का समझा जाता था तथा पाकिस्तानी विद्वान उनके प्रति उदासीन थे। हीनता की इस भावना के लिए हम तत्कालीन कट्टर, शरई, मुस्लिम समाज के निर्माण के विफल प्रयास से उत्पन्न कृत्रिमतापूर्ण जीवन-दिशा को उत्तरदायी ठहरा सकते हैं।

विभाजन-रेखा के 'इस पार' तथा 'उस पार', दोनों ओर रचे गये पंजाबी साहित्य में विरोधी स्वर तो विभाजन से पूर्व भी विद्यमान थे। जहां उस पार सूफियों का कलाम शरीयत तथा तरीकत के ठोस धरातल पर टिका था, वहां इस पार गुरुओं की बानी में सहज भक्ति पर बल दिया गया था। फिर भी दोनों ओर रचे गये साहित्य में सदा ही एक समानता रही है। वह है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पांच नदियों के इस प्रदेश की संस्कृति तथा यहां का जन-जीवन, जिससे न मुस्लिम कवि विमुख हो सके तथा न गैर-मुस्लिम कवि। परंतु पिछले कुछ वर्षों से पाकिस्तानी पंजाबी मुसलमान अपनी पंजाबियत को तनिक भावुकता से अनुभव करने लगा है। इस्लामी कट्टरता उसके निकट निस्तेज हो गयी है। यद्यपि पाकिस्तानी पंजाबी कवि उर्दू-फारसी के शब्दों तथा इस्लामी मिथकीय अंतःकथाओं का विपुलता से उपयोग करते हैं, तथापि अब उनका साहित्य अपने मूल (अविभाजित भारत की सहिष्णुतापूर्ण सामाजिकता) से कटा हुआ नहीं है।

वर्तमान पाकिस्तानी पंजाब में कविता के तीन रूप उपलब्ध होते हैं। पहला रूप वह है, जिसे 'लोक-साहित्य' कहा जा सकता है। दूसरा वह, जिसे 'परंपरात्मक कविता' कहा जा सकता है। इसमें बैत, कवित्त तथा किस्सा-काव्य की प्रचलित तर्जों पर रची गयी गेय कविताएं संम्मिलित हैं। तीसरा वह रूप है, जिसे 'आधुनिक कविता' कहा जा सकता है।

पहले प्रकार की कविता मात्र लोकाचार को अभिव्यक्त करती है और इस साहित्य की परंपरा बहुत लंबी तथा बहुत पुरानी है। दूसरे प्रकार को कविता का संबंध पंजाबी कवि-सम्मेलनों से है, जिनमें श्रोताओं को लुभाने का प्रयास ही कवि का धर्म माना जाता है। ऐसी कविता में यदि बौद्धिकता का पुट अधिक हो, तो श्रोता उससे घबराता है तथा परिणामस्वरूप कवि असफल रह जाता है। तीसरे प्रकार की कविता आधुनिक कविता है, जिसमें चिंतन का पुट अधिक रहता है। अपने इसी रूप में पाकिस्तानी पंजाबी कविता प्रगतिशील भी हुई है, आत्म-विश्लेषणात्मक भी तथा यहीं आकर उसने मानव के अंतर्मन को टटोला है।

परंतु इस कविता की अपनी कुछ समस्याएं भी हैं। पाकिस्तान की राजनैतिक परिस्थितियों ने वहां के साहित्यकार को बोलने तथा लिखने की वह स्वतंत्रता कभी प्रदान नहीं की, जो भारत में रही है। इसका प्रभाव पाकिस्तानी पंजाबी कविता पर यह पड़ा है कि कविता अभिधा से कन्नी काटकर नितांत लाक्षणिक हो गयी है। अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के लिए उन लेखकों ने अनेक नये प्रतीकों एवं नूतन बिंबों की सृष्टि की है, जो स्पष्टतया पंजाबी की समृद्धि के सूचक हैं; परंतु इनसे पंजाबी कविता में अस्पष्टता तथा दुरूहता भी आ गयी है।

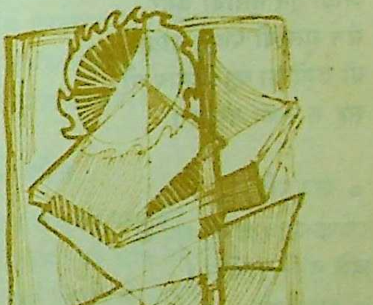

चित्र : ठाकोर राणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाकिस्तानी पंजाबी की प्रतिनिधि कविताएं

अनुवाद : डा. नरेश

० मजबूरी
० आसी रिज़वी

शरम-हया के दरवाजे के
पीछे बैठी है मजबूरी
तेरी आस करेगी पूरी
यह मजबूरी।
दिन के इस प्रकाश उज्ज्वल में
मसि घोलेगी।
तू धीरे-से
दरवाजे पर दस्तक तो दे
यह मजबूरी
कुंडी तो खुद ही खोलेगी।

० ईर्ष्या
० बाक़ी सिद्दीक़ी

ओढ़ी तूने गुलाबी चूनर
मैंने गुलाबी पगड़ी बांधी
दो रूहों का यह मिलाप भी
सह न सका संसार।

० जवानी

ज्येष्ठ-आषाढ़ की धूप में
चले कहीं पुरवैया।

० आजादी

ऊंची-ऊंची दीवारें भी
बांध नहीं पाती हैं
फूलों की सुगंध को।

० मौला खैर करे
० शरीफ़ कुंजाही

युद्ध फिर छिड़े कि छिड़े।
राष्ट्र फिर भिड़े कि भिड़े।
दूर कहीं गरजते हैं जो
आंगन में बरसेंगे जब
क्या होगा तब ?
क्या करेंगे तब ?
कहां जायेंगे तब ?

घुल-मिल आयेंगे जो बादल चारों ओर से
रक्त-भरे।
मौला खैर करे।।

मन कहता है देखो गेहूं उभर आयी है
पकी हुई फसलें
कि रूप मांगें उधार जिनसे शुचि नारियां।

फिर सावनी की कटकें
मक्के के पौधे शरीर से भी ऊंचे हैं
लहलहाकर सरू को लजायें जो
इधर-उधर लगे हुए
बित्ते से भी लंबे-लंबे भुट्टे।
नवयौवनाएं जैसे
बालकों को साथ लिये
खड़ी हों उघाड़े तन अपना।
आसमान इन पर अंगार बरसायेगा क्या ?
खैर करे।
मौला खैर करे।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचता हूं इनसे
श्रमिकों-कृषकों के लिए एक दाना भी तो
न बचेगा

ज्येष्ठ की आषाढ़ की
धूप झेली जिन्होंने सिरों पर
पौष-मार्गशीर्ष का शीत लिये सिर पर
पाली हैं जिन्होंने ऐसी फसलें।
रक्त जब स्वेद रूप धरता है
स्वेद जब नदिया-सा बहता है
तब ऐसी फसलें उगती हैं

तब ऐसे पौधे हैं उभरते।
आज इनकी डाली-डाली
आज इनका अंग-अंग
सर्पजिह्वा बना फुफकारता है।

सोचता हूं
हमें इनका चाव कैसा, रीझ कैसी ?
इनसे हमें क्या मतलब ?
ये हैं किस काम की हमारे ?
तब भी जाने लगे हैं क्यों ऐसे प्यारे-प्यारे
अमर देश मेरे के लुभावने नजारे।
और मेरे अधरों से बरबस
निकले एक दुआ
दूर रहे इनसे बिजली की चमक
तड़ित न गिरे।
मौला खैर करे।।

° सूरज का बेटा

° अफ़ज़ल अहसन

धरती मेरा तख्त और
बादल है मेरा छत्र

चित्र : गुन्नार कोलिस

मेरे पांव हवा
हाथ मेरे बिजली का चाबुक
आंख मेरी आकाश
न मुझको हाथ लगाओ।
मेरे पीछे पागल होकर यों मत भागो
मुझको यों आवाजें मत दो।
संग तुम्हारा मेरा कैसा ?
तुम धरती की बेटी ठहरीं
मैं सूरज का बेटा।

° खोज

हाथ में सूरज पकड़कर
ओढ़ सिर पर छांव अपनी
खोजने निकले थे तुमको
भूल बैठे हैं
मगर
निज नाम भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

○ वहम

बाहर बालीं पर बैठा
नन्हा-सा कौआ
कब से कां-कां बोल रहा है।
भीतर
मैंटलपीस से गिरकर
टूट गयी तस्वीर तुम्हारी ।।

○ गाड़ी चांद घड़ी और वह

○ मंजूर अहमद

खिड़की एक मुसाफिर दो
पहियों की अंधी रफ्तार
सांसों की नंगी तलवार
सुर्ख नदी का गर्म प्रवाह
जिस्मों की खुशबू।
सब जैसे रुक गये अचानक
गाड़ी
चांद
घड़ी
और वह ।।

○ मैं ही मैं

○ महमूद शाम

अब तो मैं ही मैं हूं
चारों ओर मेरे अपने ही रंग बिखरे हैं
मैं जिस ओर भी देखूं
दीखे मुझको अपना आप।
जाने चौगिर्दा बदला है
या बदली है मेरी आंखें।

अब मुझको
अपने स्वर के अतिरिक्त
सुनाई दे न कोई स्वर
गलियां ही कुछ कहें न मुझसे
दीवारें ही बोलें।

सब दरवाजे मूक हो गये
अंधी सभी खिड़कियां
मुझे न कुछ भी और दीखता।
चारों ओर दिखाई देता
मुझको अपना आप ।।

○ प्रश्न

○ अल्ताफ़ कुरेशी

आंधी चली प्रलय-सी
जिसमें
तृणवत् सारे मार्ग उड़ गये
धरती तिनका-तिनका बिखरी
बसते स्थल शमशान हो गये।
भोर समय जब समाचार ये मिले
तो सीने में आहें प्रज्वलित हो उठीं।

रात-रात में
बारी-बारी
बनीं काल का ग्रास सभी की माताएं क्या?
ओ बुद्धि के ठेकेदारों।
अब मैं किसको
और कहां जाकर यह ताजा खबर सुनाऊं?

—पंजाब विश्वविद्यालय, ईवनिंग कालेज,
चंडीगढ़-१६००१४

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंतिम अवशेष

जिस तरह हम यह जान गये हैं कि इस देश में शेरों की संख्या दिनो-दिन घटती जा रही है, वैसे ही क्या शेरों को भी यह बात पता लग गयी है? .... एक वन-कर्मचारी के इस अटपटे प्रश्न ने लेखक को महावन में भटकने को विवश किया। अंत में महावन ने क्या उत्तर दिया? ....पढ़िये अगले पृष्ठों में।

* श्रीनिधि सिद्धांतालंकार *

फोटो : राजेश बेदी

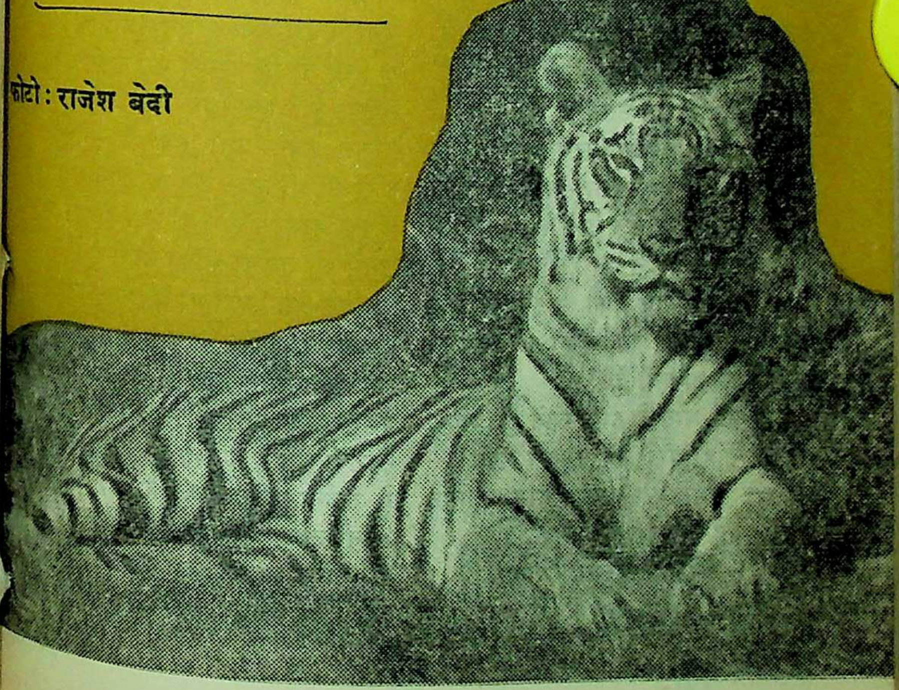

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन सुबह की सैर से वापस लौटते हुए मैं जब झड़बेरियों के जंगल में से निकलकर वन-विभाग की चौड़ी सड़क पर पहुंचा, देखा—सामने से एक साइकल-सवार तेजी से उसी सड़क पर भागा आ रहा है। उसकी खाकी पोशाक दूर से ही बता रही थी, वह वनरक्षक है और 'लेट' हो जाने के कारण काफी हड़बड़ाहट में है। उसे मार्ग देने के लिए मैं पांच कदम पीछे हटकर पास खड़े कचनार के नीचे ठहर गया। किंतु यह देखकर विस्मय हुआ कि मेरे सामने से गुजरते समय उसकी दृष्टि जैसे ही मुझ पर पड़ी, उसने तत्काल साइकल रोक ली और मेरे पास आकर इस सहजभाव से नमस्कार किया, जैसे मेरा कोई चिर-परिचित हो। मैंने भी शिष्टाचारवश पूछ लिया—'कहिये, आपके जंगल में सब ठीक-ठाक तो है न?' और पूछता भी क्या उससे?

किंतु प्रश्न जितना निरर्थक था, उत्तर भी वैसा ही निरर्थक मिला—'अजी' जंगल का अब क्या ठीक-ठाक। शेरों के समाप्त हो जाने के बाद जब से इन हाथियों ने अपने माथे पर "वनराज" का साइनबोर्ड टांग लिया है, जंगल की शोभा तो लगभग समाप्त ही हो गयी है!'

'हां भई, बात तो ठीक कहते हो। शोभा तो शेर से ही थी।' मैंने समर्थन किया।

'खैर, छोड़िये! आपका नाम श्रीनिधि है न?' वह अचानक ही पूछ बैठा।

'हां।' मैंने कुछ विस्मय से कहा।

'तब तो साहब, आपको मेरे एक प्रश्न का उत्तर देना ही होगा। बहुतों से ... चुका हूं। सभी सुनकर हंस पड़ते हैं। ... कोई नहीं देता। आप ही बताइये, मेरा ... क्या हंसने योग्य है?'

'पहले प्रश्न तो पता चले।' मैंने ... हुए कहा।

'यह देखिये, आप भी हंस पड़े ... पहले प्रश्न तो सुन लीजिये।' ...... स्वयं भी हंस पड़ा। फिर बोला—'प्रश्न ... यह है कि जिस तरह हम लोग यह जानते हैं कि इस देश में शेरों की संख्या प्रति... घटती जा रही है, वैसे ही क्या शेरों को ... यह पता होगा?' और इस बार वह ... नहीं, गंभीर ही रहा।

प्रश्न शायद हंसने योग्य ही था, ... लगा कि पशु-जगत् के मनोवैज्ञानिक अ... के लिए तो यह काफी मनोरंजक प्रश्न ... सकता है। इसीलिए मैंने किंचित् ... होकर कहा—'जहां तक मैं समझता ... शेरों को भी अपने इस महाविनाश का ... न कुछ आभास मिल ही गया होगा। ... उनमें भी तर्कना-शक्ति होती है।'

'बस-बस! यही था मेरे प्रश्न का ... इस तर्कना-शक्ति के बारे में ही मैं ... मत जानना चाहता था। ये तथा... वैज्ञानिक लोग तो कभी-कभी बहुत-से ... धार निर्णय दे डालते हैं। कहते हैं, ... में तर्कना-शक्ति नहीं होती; पशु ... "इन्स्टिंक्ट" से अपनी जीवन यात्रा ... हैं। मगर अनुभव की कसौटी पर ... यह लचर निर्णय बार-बार असत्य ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो चुका है। इन वनों में घूमते रहने के कारण मेरा यह स्थिर मत बन चुका है कि वन्यपशु–खासकर शेर, हाथी, रीछ, तेंदुआ आदि हिंस्रपशु–किसी नयी समस्या के अचानक ही आ खड़े होने पर ऐसे धूर्ततापूर्ण समाधान निकाल लेते हैं कि बड़े-बड़े शिकारी भी चक्कर में पड़ जाते हैं।'

बात जरा लंबी होती जा रही थी। मैं बीच में ही बाधा देकर कह उठा–'अच्छा, एक बात बताइये। आप तो इन जंगलों का कोना-कोना छान चुके हैं। क्या यह सचमुच ठीक है कि चंडीघाट से कण्वाश्रम तक फैले इस पांच सौ पचपन वर्गमील के महावन में केवल एक ही शेर बच गया है, शेष सब मार डाले गये?'

गंभीर हो गया वह। 'वन-विभाग की रिपोर्ट से तो यही पता चलता है कि पहले इस महावन में पंद्रह शेर पाये जाते थे। पर अब केवल एक ही बच रहा है।' फिर अपनी बात को अधूरेपन का पुट देते हुए उसने इतना और जोड़ दिया–'संभव है, एक-आध शेर और भी बच रहा हो। मगर वह कभी दिखाई नहीं पड़ा।'

'यह पता चलाना तो अधिक कठिन नहीं है। शेरों के पदचिह्न एक दूसरे से पृथक् होते हैं। उनका मिलान करके इस बात का बड़े आराम से पता चलाया जा सकता है, इस महावन में एक शेर है या दो हैं।'

'पता तो अवश्य चलाया जा सकता है, निधिजी। मगर इस लंबे-चौड़े महावन में, ऐसी कमरतोड़ महंगाई और पैसे की हाय-हाय से भरी इस निगोड़ी जिंदगी में, किसके पास इतनी फुरसत है जो शेरों के पदचिह्नों का मिलान करके यह पता लगाता फिरे कि इसमें एक शेर रहता है, या दो?'

और खिलखिलाता हुआ साइकल पर बैठ गया वह, और 'अच्छा, नमस्ते!' कहकर, शायद पैसे की हाय-हाय का उपाय करने के लिए ही तेजी से भाग निकला।

[२]

रास्ते-भर यही एक बात याद आती रही–'पहले इस महावन में पंद्रह शेर पाये जाते थे। पर अब केवल एक बच रहा है।' मैं सोच रहा था, उस अकेले अभागे शेर का एकाकी जीवन कैसे बीतता होगा अब? साथी की खोज में वह जब यदा-कदा इस विशाल महावन में घूमने निकलता होगा और कहीं भी कोई साथी न मिल पाता होगा, तो उसके मन में यह अवसाद-भरा प्रश्न न उठ आता होगा–'इतने ही दिन में वे सब कहां चले गये? खोजने पर भी मिल क्यों नहीं रहे?' तब काल-कोठरी में पड़े कैदी की तरह वह अपने को निपट अकेला पाकर क्या अपने उन बीते दिवसों को याद न कर बैठता होगा, जब मदमाती मिथुन-ऋतु के आने पर वह किसी अभीष्ट सहचरी की खोज में ऊंची पुकारें लगाता वन-वन घूमा करता था?

प्रियतम द्रुमों का आलिंगन करती हुई पुष्पित लताएं वासना को प्रवृद्ध कर दिया करती थीं और प्रेयसी-मिलन के उपरांत वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों किस तरह मद-घूर्णित होकर अपने मधु-दिवस बिताने में प्रवृत्त हो जाया करते थे। एक साथ आखेट। एक साथ जलपान। एक साथ आहार-विहार और संचार। फिर किसी एकांत कंदरा में जाकर सो जाना। बाद में मादक गंध भरी वन्य हवाओं और प्रवास से लौटे पक्षी-मिथुनों के प्रणय-गीतों से सांध्यवेला के अवतीर्ण होने की सूचना पाकर कंदरा का आश्रय छोड़ आहार की खोज में एक साथ निकल पड़ना।

ध्वांत गह्वरों में छिपी रातें क्रमशः संध्या को पराजित कर देतीं। समूचा जंगल प्रगाढ़ निद्रा में अचेत हो जाता। पंछी आश्रय-वृक्षों पर सो जाते। केवल झिल्ली-झंकार निशा-प्रहरी का कर्तव्य निभा रही होती। तब प्यास से व्याकुल हिरनों और नीलगायों को जलाशयों की तरफ जाना पड़ता और वहीं शेर-दंपति को अपना रात्रि-भोजन प्राप्त हो जाता।

कितने अच्छे दिन थे! अब क्या वे फिर लौट सकेंगे? इस तरह सहचरी-शून्य रहते और कितने दिन उसे बिताने होंगे? कितने दिन उसके लौटने की प्रतीक्षा करनी होगी?

ऐसी ही बहुत-सी स्मृतियां। बहुत-सी वेदनाएं! लेकिन बंधु मेरे! अब क्या लाभ इन सब अतीत स्मृतियों से? ये तो आयी-गयी हो गयीं। न उस प्रेयसी का आगमन होगा अब, न उन प्रणय-प्रसंगों का पुनरावर्तन। अब तो यही बहुत है, यदि तुम किसी तरह अपने प्राण ही बचा सको।

तो भी, एक धीमी-सी आशा मन में उठ रही है। कोई जैसे कह रहा है—धूर्ततापूर्ण उपाय सोचने की क्षमता रखने वाले एकाकी शेर ने अवश्य ही इस कठिन स्थिति में अपना अस्तित्व बचाने के उपाय सोचे होंगे और शायद वह उनका प्रयोग भी कर रहा होगा। या संभव है करुणामयी प्रकृति ने ही उसकी लुप्त जाति के इस 'अंतिम अवशेष' की रक्षा कोई व्यवस्था कर दी हो।

चलो, मान लेता हूं, वह सुरक्षित जीवित है; मगर होगा कहां इन दिनों किस वन में? कितने ही दिन से यह प्र उठ रहा है मन में। इसीलिए घूमने नशा भी जागता जा रहा है। सोचता एक बार क्यों न इस समूचे महावन को छान बीन करके उससे भेंट कर ही आऊं। सचमुच ही वह कहीं होगा, दिखाई तो ही जायेगा।

[३]

समझा तो यह था, पंद्रह ही दिन में महावन को छान डालूंगा। मगर लग पूरे छब्बीस दिन। जानता हूं, ऐसी में जितना हल्का रहा जाये, ठीक रहता इसीलिए बहुत थोड़ा-सा सामान लि साथ में। एक हैवरसैक में किलो-भर किलो-भर भुने हुए चने, आधा किलो एक पैकेट नमक और चार माचिस से रखकर ऊपर से चम्मच, कड़छी, भगोना और दो गिलास रख लिये थे। चावल तो बीच में पड़ने वाले इक्के जंगली गांवों से और दूध-मक्खन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुज्जरों के डेरों से मिल ही सकते थे। उनका बोझ उठाना व्यर्थ था। हां, पानी के लिए कैन्वस की एक छागल और एक बड़ी टार्च दोनों कंधों पर अवश्य लटका ली थीं। और दो फुट लंबे सवा फुट चौड़े आयल क्लाथ की मचान भी शिवजी के गजचर्म की तरह कमर पर लपेट ली थी। रह गयी थी, नौ फुट लंबी मशाल; उसे भाले की तरह दायें हाथ में संभाल मैं अपने इस 'शेर की खोज' नामक अभियान पर चल पड़ा था। मुझे पता था, वन-देवताओं का स्नेह मेरे साथ है। वे मार्ग में अपनी खजूरों, म्यालाफलों और पके हुए आंवलों का उपहार तो मुझे देते ही रहेंगे।

खैर, छोड़िये इन ब्योरों को। जरा उधर देखिये। वे जो मेरी जंगल-कोठी से कोई फर्लांग-भर दूर, गंगा के दो मील चौड़े पाट में बिखरे हुए कितने ही छोटे-छोटे वन दिखाई पड़ रहे हैं न, इधर के लोग इन्हें 'मझाड़े' कहकर पुकारते हैं। हैं ये एक प्रकार के कृत्रिम टापू ही, जिनकी रचना स्वयं मां गंगा ने की है। इनमें खैर और झड़-बेरियों का ही बाहुल्य है। कहीं-कहीं सेमर, ढाक और शीशम भी दिखाई पड़ जाते हैं। वस्तुत: इन्हें 'वन' कहना 'वन' शब्द का एक प्रकार से अपमान करना है। तो भी प्रत्येक मझाड़े में घनी झाड़ियों से भरा एक-आध छोटा-मोटा वन होता ही है, जिसमें दिन में भी सन्नाटा खिचा रहता है। इन्हीं झाड़ी-झुरमुटों में हिरन, नीलगाय और वराहों के इक्के-दुक्के यूथ और गीदड़, लोमड़ी, खरगोश, सेह आदि छोटे जानवर छिपकर पड़े रहते हैं। दिन में पास के गांवों के ढोर-डंगर भी चरने यदा-कदा इनमें आ जाते हैं। शेर के लिए यह प्रलोभन काफी है। रात्रि-वेलाओं में वह बहुधा ही इन मझाड़ों में चक्कर काटता रहता है। कभी-कभी दिन में भी छिपकर पड़ जाता है। किंतु बहुत कम।

कैसे भूल सकूंगा अनेक वर्ष पहले की उस नौ बजे की रात को, जब गंगा-पार के एक तथाकथित 'भेडियागांव' से लौटते हुए मैं इन्हीं मझाड़ों के चक्रव्यूह में फंसकर पथभ्रष्ट हो गया था और नरभक्षक न होते हुए भी एक शेर ने कंधे पर एक प्रबल चपेट मारकर मुझे धराशायी कर दिया था। उस समय यदि मैंने अपने गरमकोट को आग उगलने वाली मशाल न बना लिया होता, तो मेरा जीवन-प्रदीप तो इन्हीं मझाड़ों में बुझ गया होता।

उस शेर को आज भी नहीं भूल पाया हूं। सोचता हूं, शेरों के इस सर्वनाश में शायद वह आज भी बच रहा हो। यही आशा तो मुझे इन मझाड़ों में खींच लायी है। जानता हूं, इस सूर्य के प्रकाश में उस अंधकार-प्रिय प्राणी के प्रत्यक्ष दर्शन तो शायद न हो सकें। मगर मझाड़ों के चारों तरफ फैली गंगा की इस सूखी रेत पर यदि उसके पदचिह्न ही दिखाई पड़ जायें तो मान लूंगा, वह आज भी जीवित है। यही एक बात मेरे लिए बड़ी सांत्वना हो सकती है।

मगर यही तो हो नहीं पा रहा। बड़े

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवेरे से इन मझाड़ों में भटकता फिर रहा हूं। प्रभात की कोमल धूप मध्याह्न बनकर उत्तप्त हो उठी है। थका शरीर विश्राम मांगने लगा है। मगर पांच-छह मझाड़े अभी शेष जो रह गये हैं। उन्हें भी देख लूं, तभी तो बात बने।

बारह-साढ़े बारह बजे थोड़ा-सा विश्राम किया तो था। एक शीशम-वृक्ष की छाया में बैठकर मध्याह्न भोजन किया था। फिर छाया में लेटकर अर्धनिद्रा का स्वल्प-सा सुख भी प्राप्त किया था। मगर कुल आधा घंटा। उसके तुरंत बाद मझाड़ों के चारों तरफ फैले रेत के मैदानों में उतर आया था। चप्पा-चप्पा धरती देख डाली थी। मगर शेर का एक भी पदचिह्न दिखाई नहीं पड़ा था। तब और क्या करता? दुपहर बीतकर तीसरा पहर भी जब बीत गया और प्रवास से लौटने वाले पक्षी जब संध्या-सुंदरी के आगमन की सूचना देने लगे, मैं पीछे लौट पड़ा।

सामने ही पंद्रह-सोलह बरस का एक चरवाहा अपने डंगरों को हांकता चला जा रहा था। उसी से पूछ लिया—'क्यों लड़के! तुम इन मझाड़ों में इस तरह अकेले घूमते फिर रहे हो! शेर का डर नहीं लगता?' सुनकर उसका चेहरा जैसे प्रश्नचिह्न बन उठा—'शेर? ..... आज दस बरस से इन्हीं मझाड़ों में डंगर चराता आ रहा हूं, बाबूजी! शेर की तो छाया भी नहीं दिखाई पड़ी।'

'ठीक कहते हो, भाई। शेर हो तो दिखे, न हो तो कैसे दिखे?'

[४]

इस तरह एक जंगल की छानबीन ... समाप्त हुई। मगर यह जंगल था ही कहां ... जंगल तो इसे कहते हैं—इस अंजन-वन ... कोई नौ-साढ़े नौ बजे पहुंचा था यहां पर ... सही नाम इसका है—'अंजनावन'। ... घने पेड़ों के झुरमुट में वे जो तीन-चार ... के वृक्ष खड़े हैं, उनकी छाया में प्रायः ... बरस पहले एक छोटा-सा मंदिर खड़ा ... जिसके आज खंडहर मात्र रह गये हैं। ... कुआं भी है इसमें—सूखा हुआ। सो ... आओ तो अपने थर्मास में जल भरकर ... आओ और बैठ जाओ इन खंडहरों में। ... जाओगे, इसका नाम अंजनावन क्यों पड़ा।

अरे भई! अंजना मां थीं न पवन... हनुमान की। उन्हीं के किसी भक्त ने ... स्थान पर यह अंजना-मंदिर प्रतिष्ठि... किया था। अवश्य ही मां के भक्त उन दिनों ... इस मंदिर में नैवेद्य-समर्पण के लिए आ... करते होंगे। अच्छी चहल-पहल रहा करती ... होगी। प्रातः-सायं की शंखध्वनियों से ... सिंह-व्याघ्र-सेवित महावन प्रतिध्वनित ... जाया करता होगा। मगर आज वे सब ... नहीं हैं। मंदिर के अवशेष अमृता और ... कंदूरी की लताओं में मुंह छिपाये मौन ... हैं। सघन अरण्यानी और भी सघन हो ... है और उसमें हिंस्र पशु ठाट से रह रहे हैं।

ऐसे घोर वन में शेर न हो, यह हो ही ... सकता था। वह भी था ही ..... और ... इक्कड़ हाथी भी था। एकदम खूनी। ... जाते पथिकों का पीछा करने वाला। ...

अक्तूबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मजाल कोई फटक तो जाये जंगल में ! जैसे यह उसके बाप की जागीर रही हो।

एक दिन इसी अधिकार के प्रश्न को लेकर यहां के शेर से उसकी ठन गयी थी। विकट द्वंद्व-युद्ध हुआ था। मैं तब बैठा था उस आम के वृक्ष पर। सुबह के चार बज रहे थे। हरिद्वार के मंदिरों में प्रथम शंख की ध्वनि सुनाई दी ही थी कि हठात् एक चिंघाड़ उठी, एक दहाड़ और समूचा जंगल गूंज उठा। उस विराट गूंज में बेचारी शंख-ध्वनि जाने कहां डूब गयी। पलड़ा हाथी का ही भारी रहा। मगर वह शेर का भी कुछ अधिक नहीं बिगाड़ सका। उसके श्याम नितंबों से बहती रक्तपंक्ति स्पष्ट बता रही थी कि शेर ने उसे ऐसा सबक सिखाया है, जिसे वह कभी भूलेगा नहीं।

कहां होगा वह साहसी शेर ! उसी की खोज में तो इस वनश्रेणी में आया हूं। रातें आम के वृक्ष पर, दिन जंगल की गहराइयों में। दो दिन से यही चक्कर। मगर शपथ मां अंजना की जो एक भी दहाड़ सुनाई पड़ी हो, एक भी पदचिह्न दिखाई पड़ा हो ! रीछ-तेंदुओं ने तो दर्शन दिये। शेर के प्रिय भोजन हिरन-काकड़ों ने भी अपने अस्तित्व की सूचना देने में संकोच नहीं किया। मगर यदि कोई नहीं दिखाई पड़ा तो शेर। एकमात्र शेर। सिर्फ वही न जाने काफूर बनकर इस जंगल में से कहां उड़ गया !

और हां ! इस अंजन-वन के साथ ही, वह जो गौरीशंकर का प्रसिद्ध मंदिर है,

उसका भी तो एक शेर था, जो मां चंडिका का वाहन माना जाता था। प्रसिद्ध था कि रात्रि-वेलाओं में हरसिंगार-माला-धारिणी मां भगवती अपने इस प्रिय वाहन पर बैठकर इस संपूर्ण पंचपुरी का निरीक्षण किया करती हैं। मुझे लगा, मां चंडिका का वाहन होने के कारण उसके शिकार का साहस तो किसी ने नहीं किया होगा। चलकर पूछना चाहिये मंदिर के पुजारी बाबा से, ठीक बात वे ही बता सकेंगे। वैसे, बाबा सदा उससे नाराज ही रहे हैं। वह कभी-कभी उनकी गायों पर हाथ जो साफ कर जाता है।

वह सामने ही, मंदिर के साथ लगे पक्के कमरे में बाबा आदम के जमाने की चटाई पर बाबा आसीन हैं। लंबा कद, छरहरा बदन, कंधे तक केश, छोटी-सी दाढ़ी, पतले शरीर पर भभूत। मुझे देखकर किंचित् मुस्क-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राये—'आओ, श्रीनिधिजी। सब कुशल है, न?'

'कृपा बाबाजी की !' और दो रुपये का एक लाल नोट सामने रख दिया। नोट से तो देवता भी प्रसन्न हो जाते हैं। बाबाजी तो बाबाजी ही ठहरे।

'ठंडाई पियोगे, न?'

प्रश्न एकदम निरर्थक था, मात्र औपचारिकता। वे यह जानते हैं, मैं भांग नहीं पीता। और मंदिर की ठंडाई में भांग न पड़े, असंभव है। मैं अपने मतलब की बात पूछ बैठा—'आजकल इधर शेर का उपद्रव तो नहीं होता, बाबाजी ?'

'अब तो बाबू, बहुत दिनों से वह दिखाई ही नहीं पड़ा। पहले तो उस सामने की टेकरी पर खड़े होकर नंदी वृषभ की उपस्थिति-पंजिका में अपनी हाजिरी भरवा जाया करता था। न जाने अब क्यों नहीं आता। नंदी महाराज कह रहे थे, अगर कुछ दिन और न आया, तो पंजिका में से उसका नाम काट दिया जायेगा।'

'अजी, नंदीजी तो जब काटेंगे, तब काटेंगे। हमारे वन-विभाग की उपस्थिति-पंजिका में से तो उसका नाम बहुत पहले ही कट चुका है।'

सुनकर बाबाजी ऐसे हंस पड़े, जैसे यह हंसने की ही बात रही हो। तो भी, इतना तो अच्छी तरह समझ में आ गया कि मां चंडिका का वाहन वह शेर भी अब नहीं रहा। अवश्य किसी तस्कर शिकारी के हाथों मारा गया।

लेकिन थोड़ी-सी आशा तो अब भी बनी ही थी। चूंकि बहुत दिनों से बाबाजी के … नहीं आया, इसलिए मारा ही गया हो … यह निर्णय मुझे बहुत विश्वसनीय नहीं … इसलिए मैं गौरीशंकर मंदिर में और … तीन दिन ठहरा। रातें मंदिर के चबूतरे … बिताकर दिन का अधिकांश समय … रेंज के सूखे नालों में ही बिताने लगा।

मगर नाला क्या एक है! पर्वतों के … व्यूह में घूमते ऐसे बीसियों नाले हैं, … शायद सृष्टि के प्रारंभ में जो सन्नाटा … बार खिंचा वह आज भी वैसे ही खिंचा … आ रहा है। भय की छायाएं प्रतिक्षण … राती ही रहती हैं उनमें। ये ही तो हैं … रहने के उपयुक्त स्थान। मगर शेर … हो, तब तो ! एक भी पदचिह्न नहीं। न … न पुराना। हां, उसकी अशरीरी … यदि उन घाटियों में भटकती फिर रही … तो कह नहीं सकता।

सोचता था, मां चंडिका को आ… यह हो क्या गया है ! सुनते हैं, … रिणी हैं वे—शुंभ-निशुंभ-मर्दिनी ! … जन-विनाशिनी ! जगन्नियंत्री ! तब … वाहन के वध कर दिये जाने पर भी वे … उस चंडिका रूप को धारण क्यों नहीं … उन्हें अपना अपमान करने वाले इन … को दंड देने की इच्छा क्यों नहीं होती … चुप क्यों बैठी हैं ? या कहीं ऐसा तो … कि इस वैज्ञानिक युग में उन्होंने अपना … ही बदल लिया हो, शेर के स्थान पर … रख ली हो ! नहीं तो इस देश में … मारे जा रहे अपने सहस्रों वाहनों की …

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्यों नहीं करतीं ?

[५]

खैर, जो भी हो। सिद्धाश्रम के अपने उस मित्र के पास तो जाना ही पड़ेगा। वे ही— वटदादा। उधर की एक छोटी-सी पहाड़ी पर वे न जाने कितने वर्षों से खड़े होकर कठोर साधना कर रहे हैं। पहुंचे हुए सिद्ध हैं। कितनी ही पहाड़ियां, कितने ही जंगल लांघकर पहुंचना हो पाता है उनके पास। जंगलों में हिरन, नीलगाय, वराह और बंदर तो खैर दिखाई पड़ते ही हैं, दो-एक रीछों के अड्डे भी पड़ते हैं, जहां बहुत सतर्क रहकर चलना पड़ता है। एक नंबर के बद-माश! मगर भेंट नहीं हुई उनसे। भरपेट मधु पीकर पड़े होंगे कहीं किसी अंधेरी गुफा में। मिल जाते तो ठीक ही रहता। पूछता तो सही, इधर कोई शेर भी रहता है क्या? तुम्हें तो पता होगा।

गौरीशंकर के मंदिर से लगभग आठ बजे चल पड़ा था, और यहां सिद्धाश्रम में पहुंच-कर घड़ी बारह बजा रही थी। ...... वे खड़े हैं हमारे वटदादा, शरणागत हिरनों को छायामृत पिलाते, स्वयं कठोर धूप का हलाहल पीते—अनुभवति हि मूर्ध्ना पादप-स्तीव्रमुष्णम्। दादा शायद ध्यानावस्थित थे। मेरा आना नहीं जान सके। परंतु जब उनके विशाल तने का स्नेहस्पर्श करते हुए उनसे कुशल-क्षेम पूछी, सहसा जागृत हो उठे।

'अरे, श्रीनिधि हो ? ...... तो सुनो भाई, तुम्हारा वह मित्र—समझ रहे हो न, किसके बारे में कह रहा हूं ?'

'उस शेर के ही बारे में तो ?'

'हां, उसी के। वही, जिसने उस दिन तुम्हारी मचान की छत पर पहुंचकर तुम्हारा नाम दिवंगतों की तालिका में लिखवा देना चाहा था, अब नहीं रहा।'

'क्या कह रहे हैं ? कहां गया वह ?'

दादा संस्कृत जानते हैं। बोले—'या गतिः सर्वभूतानां ते रिपुस्तां गतिं गतः।'

'रिपु मत कहो, दादा। सखा कहो, मित्र ......। किसी बंदूकधारी की गोली का ग्रास बन गया क्या वह ?'

'वह तो खैर हुआ ही। किंतु शिकारी भी सामान्य नहीं था।'

'यानी ?'

'यानी, क्या ? हम क्या उसका नाम जानते हैं ? इतना हो दिखाई पड़ा था—हाथ में बढ़िया राइफल, लंबा कद, गौर वर्ण ......।'

'अजी, अमरीकन रहा होगा कोई।..... राइफल में साइलेंसर लगा था क्या ?'

'साइलेंसर ?'

'अजी, गोली छूटने पर आवाज हुई थी क्या ?'

'जरा भी नहीं। कटड़े के लोभ में बेचारे ने चुपचाप गोली के सामने आत्मसमर्पण कर दिया था।'

'तस्कर कहीं का! ......नीच!'

'मगर हम पूछते हैं, दिन दहाड़े इतनी बड़ी हत्या हो गयी और किसी वनाधिकारी को पता तक नहीं चला। है न, आश्चर्य ?'

'बहुत भोले हो दादा। सौ-सौ के नोट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुमने कभी देखे नहीं न ! किसी दिन लाकर दिखाऊंगा। आज तो जेब में हैं नहीं। हजारों वरस पहले चित्ररथ गंधर्व ने संमोहनास्त्र के रूप में हम मानवों को दिये थे ये। तभी से चले आ रहे हैं। इनके केवल एक ही प्रहार से क्या वनाधिकारी क्या महाधिकारी, सब धराशायी हो जाते हैं। कर्तव्य-अकर्तव्य चला जाता है जहन्नुम में। ...... अच्छा, चलूं दादा।'

'मचान नहीं बांधोगे ?'

'अब मचान किसलिए ?'

'अरे भई, आये हो तो एक बार उसके "विश्राम-गृह" को तो देखते जाओ। कैसा बढ़िया किया था उसने अपनी रक्षा का प्रबंध। आखिर था न जंगल का राजा। एक बार बाघघाटी में जाकर देख तो आओ उसकी गुफा को।'

संध्या उतरो आ रही थी। बाघघाटी जाने का समय नहीं रहा था। उसे कल के लिए स्थगित करके पहले पास की जलधारा से छागल में पानी भरा, फिर वटदादा की शाखाओं पर जा पहुंचा और आयलक्लाथ की मचान बांधकर आराम से बैठ गया।

रात-भर दादा जंगल के कितने ही किस्से सुनाते रहे। हाथियों पर उन्हें विशेष कोप था। 'उन हाथियों को आजकल बड़ा अभिमान हो गया है। उस दिन एक तो वह गंवार हम से विना पूछे ही हमारी इस पहाड़ी पर चढ़ आया, फिर इस उजड्डपन से हमारे तने पर पीठ रगड़ने लगा कि हमारी त्वचा ही छिल गयी.....वन्यद्विपेन्मथिता त्वगस्य.....'

'तब ?'

'तब क्या ! तुम तो जानते हो हमारी उस पालिता काष्टकूट-कन्या (मादा कठफोड़वा) को। उसने चुपचाप पहुंच कर लंबी चोंच से उसकी आंख इस तरह फोड़ डाली कि तिलमिलाकर पहाड़ी से फिसलता हुआ वह अगले ही क्षण दूर भाग निकला.....' हंसने लगे दादा।

सुबह बाघघाटी की तरफ चल पड़ा। वटदादा के चरणों में बहने वाला नाला सीधा उधर ही जा रहा है। तीन-एक फर्लांग बाद बायीं तरफ की पहाड़ियों में से निकलकर एक संकीर्ण-सा नाला उस मुख्य नाले में आकर मिला है। दोनों के संगम पर रेत से भरा एक सुंदर मुहाना बन गया है जिस पर मेरे बचपन में सदा ही शेरों के पदचिह्न दिखाई पड़ा करते थे। अभी दो साल पहले जब आया था, तब भी देखे थे, मगर अब एक भी नहीं है।

वही है बाघघाटी। उसी में है कहीं वह वनराज की गुफा, जिसे ये वटदादा 'विश्राम-गृह' कहते हैं। घाटी है संकरी-सी ही, जिसे दर्रा कहना अधिक ठीक होगा। उसी में चला जा रहा हूं, बहुत सावधान होकर। पहले भी बीसियों बार आया हूं और हर बार शेर की उपस्थिति का कोई न कोई प्रमाण मिलता ही रहा है। कभी ताजे पदचिह्न, कभी किसी हिरन या नील गाय की ताजी रुधिर-पंक्ति। कभी ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

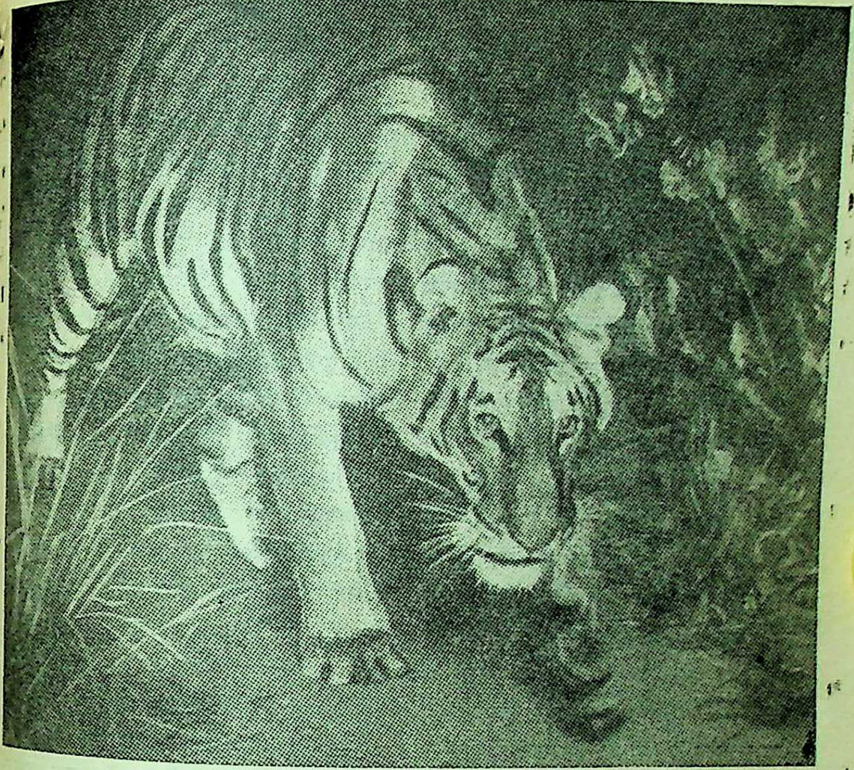

दुनिया कहती है, शेर क्रूर होता है......असल में क्रूरता ही तो इसमें नहीं है।

व्याकुल पंछियों की चांय-चांय। एक-दो बार हलकी-सी गुर्राहट भी, जो शायद मुझे या मेरे साथियों को दी गयी चेतावनी होती थी। एक बार तो श्रीमान के दर्शन भी हुए थे– झांकी मात्र। इस सबसे यह विश्वास बना रहता था कि अपनी संपूर्ण भयानकता के साथ वह इस वन में रहता है और उसके इस अधिकार-क्षेत्र में अत्यधिक सतर्कता की आवश्यकता है।

मगर आज न जाने क्यों वैसा कोई भय मन में नहीं उठ रहा है। न कोई नया-पुराना पदचिह्न मिल रहा है, न किसी अभागे हरिन की रुधिराक्त पंक्ति। लगता है, जैसे किसी ने उसकी उपस्थिति के सब चिह्न ही मिटा दिये हों। न पंछियों के स्वरों में घबराहट के संकेत मिल रहे हैं, न झिल्ली-झंकारों में भय की सूचना। तो भी उसके 'विश्राम-गृह' के दर्शन तो करने ही हैं। वटदादा का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदेश जो है।

फर्लांग-भर बाद, वृक्ष-झाड़ियों से भरे एक छोटे-से मैदान के दोनों तरफ दो सूखे नाले दिखाई पड़े, जिनमें से बायीं तरफ का अधिक भयजनक लगा। उसी में चल पड़ा। नाला दूर तक पत्थरों से भरा था। दोनों तरफ आठ-आठ फुट ऊंचे तट खड़े थे, जिन पर छाये सघन वृक्षों के कारण दिन के समय भी संध्या का-सा अंधकार फैला हुआ था। यह आशंका प्रतिक्षण बनी हुई थी कि अगर सामने से कोई हाथी आ निकला तो बचने का कोई उपाय नहीं है। हाथी की बात इसलिए कहता हूं कि इस वन में एक इक्कड़ हाथी भी रहता है।

लेकिन वैसी कोई बात हुई नहीं और लगभग दो सौ कदम चलने के बाद ऐसी जगह पहुंचा, जहां दो तरफ से आकर दो छोटे-छोटे सूखे नाले इस प्रमुख नाले में मिल रहे थे। नाले दोनों ही संकीर्ण थे, चौड़ाई तीन गज से अधिक न रही होगी। दोनों में से किसमें चलना चाहिये, यह निर्णय करना जरा कठिन हो गया। अंत में सहजभाव से अपने पैर बायीं तरफ के नाले में बढ़ा दिये और आगे चल पड़ा। मगर पचास-एक कदम के बाद ही वह बायीं तरफ घूम गया और एक पहाड़ी दीवार के नीचे पहुंचकर एकाएक समाप्त हो गया।

अब किधर चला जाये? मैं सोचने लगा। यदि मेरी ही तरह शेर भी उसी मार्ग से आया करता हो, तो यहां से आगे वह किधर और कैसे जाता होगा? रास्ता तो कोई दिखाई नहीं पड़ रहा। तभी मेरी दृ[ष्टि] पहाड़ी दीवार पर पड़ी। दीवार एक[दम] ढालू थी। पैंतीस अंश का कोण बना[ती] हुई। थोड़ा ही ध्यान देने से साफ पता च[ल] जाता था कि वर्षाकाल में उसी ढलान पर से बहती हुई जलधारा इस नाले [में] आकर गिरती है और इसे जल-प्रवाह [से] भर देती है।

मुझे लगा, अवश्य ही शेर इस ढलान पर चढ़कर कहीं ऊपर निकल जाता हो[गा]। तो जरा मैं भी देखूं, चढ़ सकता हूं कि नहीं। जब चढ़ने लगा तो पता चला, दीवार के[वल] ढलवान नहीं, फिसलनी भी है। प्रा[यः] वर्षाकाल में बहने वाली जलधाराओं ने उसे काफी चिकना कर दिया था। तो [भी] ले-देकर पहुंच तो गया ही मैं दीवार [के] शिखर पर। दीवार थी ही कितनी। [कुल] कोई दस-बारह फुट। लोग माउंट एवरेस्ट पर चढ़ जाते हैं, मैंने इस छोटी-सी दीवार पर चढ़कर कौन बड़ा मैदान मार लिया।

वहां पर पहुंचकर मेरी दृष्टि जब शिखर के नीचे बने खड्डे में पड़ी, मुझे लगा—मैंने सचमुच ही मैदान मार लिया है। खड्ड दस फुट से अधिक गहरा नहीं है और उसके एक कोने में अजदहे-सा मुंह बाये वह [एक] अंधेरी-सी गुफा दिखाई पड़ रही है, जो [मानो] लक्ष्य करके जैसे कोई चुपचाप कान [में] कह रहा है — जरा संभलकर रहना, [मित्र] यही है शेर की वह गुफा, जिसे वह [अपना] 'विश्राम-गृह' कहते हैं। सोचने लगा, एक विश्राम के लिए कितने सुरक्षित स्थान [को] ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्वाचन किया है शेर ने! अच्छे से अच्छा शिकारी भी यहां तक नहीं पहुंच सकेगा।

मगर न जाने क्यों वटदादा की बात पर अविश्वास-सा होने लगा। वे जो कहते हैं कि उन्होंने अपनी आंखों से शेर को गोली का शिकार होते देखा है, यह कहीं उनकी भ्रांति तो नहीं है। यह भी तो संभव है कि गोली से वह केवल घायल ही हुआ हो और पांच-छह घंटे मूर्छित पड़े रहने के बाद चेतना आने पर उठकर चला गया हो? शेर महाप्राण जानवर है। कई बार ऐन निशाने पर लगी हुई घातक गोली भी उसके प्राण लेने में असफल हो जाती है। मुझे अपना यह तर्क अनुचित नहीं लगा और मैं यह मान ही बैठा कि सिद्धाश्रम का यह शेर अभी जीवित है और अपने दैनिक नियम के अनुसार इस दुपहरी में अपनी उस प्रिय गुफा में निद्रा का आनंद ले रहा है।

इस इतने से ही विचार ने हृदय को दो तरह से मथ डाला—आनंद से, और भय से। आनंद इसलिए कि मैं जिस प्रश्न को लेकर इस खोज-यात्रा पर निकला था, उसका उत्तर मुझे यहां मिल गया। इस सिद्धाश्रम में शेर अब भी जीवित है, इस विचार मात्र ने हृदय में आनंद की लहर दौड़ा दी। किंतु इसके क्षण-भर बाद ही जो दूसरा विचार मन में सहसा उठ आया, उसने भयभीत भी कम नहीं किया। मेरी किसी भी आहट से, पैर की किसी भी ध्वनि से यदि उसे मेरे यहां होने का हल्का-सा भी आभास हो गया तो छोड़ेगा नहीं—गुफा में से निकलकर सीधा सिर पर आ पहुंचेगा।

तुरंत पेट के बल रेंगता पास के घने झुरमुट में जा बैठा और बाइनाक्युलर आंखों पर लगाकर गुफा की तलाशी लेने लगा। अंधेरे के कारण पहले तो कुछ दिखाई नहीं दिया, मगर बाद में आंखें जब अभ्यस्त हो गयीं, तो एक ही साथ चौंक जाने के अतिरिक्त मेरे पास दूसरा कोई चारा नहीं रहा। गुफा के बीचों-बीच बना हुआ शेर का एक पदचिह्न बहुत ही स्पष्ट शब्दों में घोषणा कर रहा था, शेर इस समय गुफा में ही है।

तब तो भई, चुपचाप लौट ही चलना चाहिये। शेरों का सर्वनाश नहीं हुआ है, वे अब भी कहीं-कहीं जीवित हैं—यह मेरे लिए इतनी बड़ी उपलब्धि थी कि उसके बाद यात्रा जारी रखने की कोई आवश्यकता नहीं थी। वटदादा को यह शुभ समाचार देकर घर की तरफ लौट पड़ूंगा।

बहुत ही धीरे-धीरे, ताकि आहट न हो, झुरमुट में से निकलकर पेट के बल रेंगता हुआ ढलवान के पास जा पहुंचा और गुफा की तरफ अंतिम दृष्टि डालकर उतरने की तैयारी करने लगा।

लेकिन उतरने के लिए बढ़ा हुआ बायां पैर अचानक ही रुक गया। क्या उस अकेले पदचिह्न ने गुफा में शेर की उपस्थिति का सचमुच ही विश्वास दिला दिया है तुम्हें? पदचिह्न पुराना भी तो हो सकता है, भई। इससे अधिक विश्वसनीय प्रमाण तो सोते हुए शेर के नासारंध्रों से अनवरत निकलता हुआ श्वास हुआ करता है, जो तुम्हारे कानों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में एक बार भी तो नहीं पड़ा। तुम तो जानते हो, सोते या लेटे हुए शेर को मक्खियां बहुत परेशान किया करती हैं और इसी लिए वह बार-बार अपना स्थान-परिवर्तन करता रहता है। ऐसा कोई प्रमाण मिला तुम्हें?

इस तर्क की प्रबल प्रेरणा से अंत में मैंने गुफा में झांककर देखने का निर्णय कर लिया और शिखर से लटकती एक जड़ के सहारे चुपचाप खड्ड में उतर ही गया। अब जैसा भी हो देखा जायेगा।

मैदान एकदम साफ था। टार्च की सहायता से उस छोटी-सी गुफा का कोना-कोना छान मारा। शेर तो क्या, उसकी छाया भी न दिखाई पड़ी। सिर्फ उसका एकमात्र पदचिह्न टार्च के प्रकाश में चमककर मेरा उपहास-सा करता प्रतीत हुआ। लेकिन पदचिह्न अद्‌भुत था। होगा, दो-तीन साल पुराना। चिकनी मिट्टी से बनी उस गुफा का भीतरी भाग वर्षाकाल में किसी दिन बौछार से भीग गया होगा और अपने दैनिक नियमानुसार शेर जब गुफा में आया होगा, दो-दो इंच गहरे इस कीच में उसका पंजा छप गया होगा। बाद में शीत और ग्रीष्म की सहायता पाकर वह भट्ठे में पकी ईंट की तरह सूखकर कड़ा हो गया होगा। पूरे पांच मिनट तक मैं उस दिवंगत शेर के इस अंतिम पदचिह्न को देखता रहा। अनेक दृश्य घूम गये, अनेक घटनाएं, उस कथा शेष-प्राणी की अनेक शक्लें।

मगर कब तक देखता उस सुदुर्लभ पद-चिह्न को! संध्या उतरी आ रही थी। पक्षी विदा होने की चेतावनी दे रहे थे। चोटी पर चढ़कर जैसे-तैसे उस ढलवान से नीचे उतर आया और लौटकर वटदादा को बता दिया शेर जीवित नहीं है। उन्हीं का संवाददाता बनकर गया था; संवाद उन्हें देना आवश्यक था न।

[६]

दस दिन तक लगातार वन-वन भटकने के बाद भी किसी भी वन में शेर का कोई भी चिह्न न पाकर मैं निराश हो उठा होऊंगा और शेष यात्रा स्थगित करने की सोच रहा होऊंगा, ऐसी बात नहीं थी। अभी तो पांच सौ पचपन वर्गमील में फैले इस महावन के आधे ही भाग की तलाशी ले पाया हूं। आधा अभी शेष है। संभव है, इस आधे में ही आशा का कोई सूत्र हाथ लग जाये। मैंने यात्रा समाप्त नहीं की और श्रीकुंड की तरफ चल पड़ा।

कोई शायद पूछ बैठे, इतने कंटकाकीर्ण भयंकर जंगल का यह इतना सुंदर नाम किसने रख डाला? रखा किसी ने नहीं, अपने आप ही रखा गया है। इस जंगल में बिल्ववृक्ष बहुतायत से पाये जाते हैं, और बिल्वफल का एक नाम श्रीफल भी है। 'श्री' यहां से लिया। रह गया कुंड। वह तो उस जंगल का प्राणभूत स्थान है। कोई पैंतीस फुट ऊंचे एक पर्वत-शिखर से उतरती हुई एक स्वच्छ जलधारा निर्झर का रूप ग्रहण कर इसे निरंतर आपूर्ण करती रहती है। इसीलिए कुंड अतिशय दिव्य है। श्री भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य है। दो दिव्य वस्तुओं के मिलन से यह सुंदर 'श्रीकुंड' नाम पड़ गया है।

नाम चाहे कितना ही सुंदर हो, जंगल अत्यंत भयंकर है। इसीलिए सिद्धाश्रम से श्रीकुंड जाने वाला जो मार्ग पहाड़ की धार (रिज) पर से होता हुआ गया है, उसे ही मैंने अधिक सुरक्षित समझा था और बड़े सवेरे ही वटदादा को अशेष प्रणाम करके उस पर ही चल पड़ा था।

मगर बड़ा ऊबड़-खाबड़ है यह मार्ग। कभी चोटी पर पहुंचा देता है, कभी दस-दस फुट गहरे खड्ड में। कभी-कभी ऐसी संकीर्ण चोटियों पर से चलना पड़ता है कि जरा पैर फिसला और सौ फुट गहरी खाई में। ऐसे में कौन सहायता करेगा मुझ अकेले की! इसलिए कमर और पीठ पर लदे समूचे भार को संभाले नौ फुट लंबे मशाल-दंड का सहारा लेता हुआ सावधानी से आगे बढ़ रहा था। मन सहित आंखें पैरों पर एकाग्र लगी थीं। न इधर, न उधर।

न जाने कितने वन्य पशुओं ने मुझे इस अवस्था में देखा होगा! कुछ भाग खड़े हुए होंगे। कुछ दुबक गये होंगे। कुछ खड़े होकर एकटक देखते रहे होंगे। और, यह भी तो संभव है कि जो अपने को इस जंगल के शासक-वर्ग का प्रतिष्ठित सदस्य मानते हों, उन्होंने कदाचित् मुझ पर अपने शौर्य के प्रदर्शन का विचार भी किया हो। हुआ जो भी हो, मगर मैं तो वैशेषिक दर्शन के महामुनि अक्षपाद की तरह केवल अपने पैरों पर ही दृष्टि लगाये चला जा रहा था।

किसी को भी नहीं देख सका।

और अंत में मैं जा पहुंचा उन खजूर-वृक्षों के पास, जो पचासों वर्षों से पथिकों को श्रीकुंड पर आ पहुंचने का आश्वासन देते आ रहे हैं और अपने मीठे फलों से तृप्त भी करते रहे हैं। इनके पास ही वह जलधारा वह रही है, जो पंद्रह ही हाथ बाद प्रपात बनकर अनाहत नाद करती हुई श्रीकुंड में जा गिरती है।

यही है श्रीकुंड, जिसमें से निकलती हुई एक जलधारा दस फुट नीचे नाले में जा गिरती है और फिर आगे बह जाती है। दो बजे होंगे। कुंड के तट पर जा बैठा और आधे घंटे के विश्राम के बाद हाथ-मुंह धोकर हैवरसैक में से भगोना निकाल आधा लिटर पानी भर लिया। चीनी घोल दी और उसमें पाव-भर सत्तू मिलाकर पी डाला। एकदम तृप्त!

चालीस बरस हो गये इस कुंड पर आते हुए। कई-कई रातें भी वितायी इस पर। पर ऐसा एक बार भी नहीं हुआ कि इस जंगल के शेर ने कभी दिन में, कभी रात में दर्शन न दिये हों। जंगल में बहने वाले नालों की सूखी रेत पर पड़े पदचिह्नों ने सदा ही उसकी उपस्थिति की सूचना दी है। मगर चार दिन हो गये भटकते इस चालीस वर्ग-मील के सघन वनखंड में, शपथ से कहता हूं, एक जरा-सी झांकी भी कहीं दिखाई पड़ी हो शेर की, कहीं एक नया-पुराना भी पद-चिह्न दिखाई दिया हो उसका! वे ही तो वनभूमियां हैं ये, जिन पर उसकी धाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यमदूत की तरह मंडराया करती थी दिन-रात। हिरनों की आंखों में उसका भय भरा रहता था। वृक्ष-शाखाओं पर बैठे बंदरों की भयभीत आंखें उसे ही खोजने में लगी रहती थीं। समूचा जंगल सन्नाटा खींचे पड़ा रहता था।

वह रात क्या कभी भूल सकता हूं। हम चार साथी श्रीकुंड की इन्हीं गुफाओं में सो रहे थे। लगता है, थकान के कारण हमारे न चाहते हुए भी नींद काफी गहरी आ गयी होगी। सुबह उठकर इस श्रीकुंड की तटवर्ती रेत पर निशीथ-जलपान के लिए आने वाले वन्य पशुओं के पदचिह्नों में शेर के पंजों की छाप देखकर जैसा एक भयमिश्रित आनंद समस्त देह में व्याप्त हो गया था, वह आज भी रोमांचित-सा कर देता है। दुनिया कहती है—शेर क्रूर होता है, मनुष्य को मारे बिना नहीं छोड़ता। तब उस रात हमें क्यों छोड़ दिया? हम-से अधिक सुगम शिकार उसे कहां मिल सकता था? मगर वह क्रूर हो तब न! क्रूरता हो तो इसमें नहीं है। लेकिन अब इस चर्चा से क्या लाभ? जब वे तीनों शेर इस जंगल को सदा के लिए छोड़कर और फिर कभी न लौटने की भविष्यवाणी करके चले हो गये, तो उनकी अतीत गाथाओं को इन्हीं वृक्षों, इन्हीं चट्टानों और इन्हीं शस्य-श्यामल भूमियों में छिपी पड़ी रहने दो। उनके स्मरण की अब आवश्यकता नहीं।

[७]

आशा के जिस सूत्र को पकड़कर इस यात्रा पर निकला था, उसे कहीं भी तो सफलता नहीं मिली। सब जगह विफलता ही विफलता, निराशा ही निराशा! सचमुच आश्चर्य ही होता है सोचकर। हाथी भी मिले। रीछ भी। और बघेरे भी। रात्रि-वेलाओं में लकड़बग्घे के दानवी हास्य भी कानों में आकर लगे। हिरनों की तो बात ही क्या है; वे तो सभी वनभागों में दिखाई पड़े। नहीं दिखा तो केवल शेर। दूसरा कोई नहीं। काफी अभागा प्राणी मालूम देता है। नहीं तो रीछ-हिरनों को छोड़कर विपत्ति के दानव ने अकेले इसी को अपने कोप का पात्र क्यों बनाया? अंत में जब कुछ नहीं सूझा, लालढांग की अरण्यानियों को, रवासन की सैकत स्थलियों को अशेष प्रणाम कर लौट पड़ा अपनी जंगल-कोठी की तरफ। और करता भी क्या?

[८]

लौटते हुए विशेष कठिनाई नहीं हुई। मगर तीस मील लंबे मार्ग को लांघते हुए जब बीच में ही सांझ उतर आयी, रात बिताने की समस्या तो सामने आ ही खड़ी हुई। लेकिन जब देखा, जहां आ पहुंचा हूं वह मुंढाल नदी के सुपरिचित जंगल के अतिरिक्त और कोई नहीं है, तो चिंता की कोई बात नहीं लगी। तो भी, नदी सूखी ही है। पानी नहीं है। हां, कहीं-कहीं कोई इक्का-दुक्का जलस्रोत कहीं से निकलकर कहीं बह गया है। जल खूब स्वच्छ है। सो, एक जलधारा के निकट सामान कंधे से उतार कुछ देर विश्राम किया। फिर हाथ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुंह धो, मीठे चूरमे से भूख मिटा, छागल में पानी भर लिया और रात बिताने के लिए पास खड़े एक पर्कटी वृक्ष की शाखाओं पर कैन्वस की मचान बांध आराम से बैठ गया। सरदियों की जंगली रात अपरिचित नहीं लगी। आराम से ही कट गयी और दिन निकलते ही सामान समेट नीचे उतर आया।

नीचे उतर आने का अर्थ था, मुंढाल के जंगल में भटकना। जब पिछले बीस दिन से लगातार जंगल-घाटियों में भटकता ही फिर रहा हूं तो और भी एक-दो दिन जंगल की छानबीन कर डालूं तो नयी बात क्या हो जायेगी? कोई भी तो नहीं। और नयी बात हुई भी कहां; दिन-भर भटकते रहने के बाद, जैसे और जगहों पर शेर का कोई चिह्न नहीं मिला था, ऐसे ही यहां भी नहीं मिला। जैसे वहां निराशा ही हाथ लगी थी, ऐसे ही यहां भी लगी। सब वही हुआ जो बीस दिन तक होता आया था। समझ लिया यह वन भी वैसा ही है, जैसे वे थे। तब और अधिक भटकने से लाभ?

नदी के दायीं तरफ छोटी-छोटी पहाड़ियों की शृंखला चली गयी थी। सोचा, इस मुंढाल के घिसे-पिटे जंगल से निकलकर यदि इन पहाड़ियों के पीछे जा पहुंचूं, तो कैसा रहे? रहेगा तो अच्छा ही। कम से कम नया जंगल तो देखने को मिलेगा ही। दिन तीन घंटे शेष था। पहाड़ी पर चढ़ गया और घंटे-भर की कठिन चढ़ाई के बाद पिछली तरफ उतर गया।

सचमुच जंगल नया था। ऐसा लगता था, जैसे मानवों का इधर आवागमन नहीं होता। वनरक्षक भी शायद आने का कष्ट नहीं उठाते। केवल वन्य पशु-पक्षी अथवा प्रकृति, इन दोनों का ही यहां अखंड राज्य है। एक पहाड़ी नाला यहां भी वह रहा है, मगर है सूखा ही। एकदम सूखा। पानी का नाम नहीं। मगर यह तो कोई अच्छी बात नहीं। पानी के बिना रात कैसे बीतेगी?

दिन-भर तो शेर के लिए भटका था, लगता है, अब रात-भर पानी के लिए भटकना होगा। मगर सौभाग्य से अधिक भटकना नहीं पड़ा। जैसे ही एक जगह गीली रेत दिखाई पड़ी, वहीं बैठ गया और बीस-पच्चीस मिनट में तीन फुट चौड़ा, दो फुट गहरा गढ़ा खोद डाला। पानी भी निकल आया। मगर गंदला। सोचा, जब तक पानी साफ हो, किसी पेड़ पर मचान बांध ली जाये। पेड़ों की जंगल में क्या कमी! पास ही शीशम का एक मजबूत पेड़ मिल गया। उसी पर चढ़ गया। मचान बांध डाली। सब सामान उस पर जमा दिया और हल्का होकर जैसे ही छागल संभाल नीचे उतरने लगा, देखा गढ़े पर कोई खड़ा है। अंधेरा उतर आया था और गढ़े पर खड़ा जानवर जरा भी नहीं पहचाना जा रहा था। लेकिन उसके पानी पीने का चप्-चप् शब्द ही बता रहा था, वह कोई शष्पभोजी प्राणी तो नहीं है। कौन है—यह या तो उस गढ़े को पता था या उस गहराते हुए अंधेरे को। जानवर कोई भी हो, अब नीचे उतरना विचार से खाली नहीं था। इसलिए वृक्ष पर ही बैठे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहना पड़ा। रात-भर परेशान तो किया प्यास ने, मगर सरदी के दिन रहने से परेशानी बहुत नहीं हुई। और जैसे ही दिन निकला, नीचे उतर आया।

गढ़े पर पहुंचते ही चौंक पड़ा। जिसकी खोज में बीस दिन तक निरंतर वन-वन भटकता फिरा था और जिसको जरा-सी भी साक्षी न पाकर निश्चित रूप से मान बैठा था कि पांच सौ पचपन वर्गमील का यह महावन शेर-जाति से सर्वथा शून्य हो उठा है, वह इस अदना-से गढ़े पर अपने स्पष्ट पदचिह्न छोड़कर बहुत ही स्पष्ट शब्दों में कह गया था कि शेर-जाति का कम से कम एक अवशेष अब तक जीवित है। काफी देर तक मैं बहुत ही विस्मय से उस पदचिह्न को जांचता रहा, उसकी एक-एक रेखा को परखता रहा और अंत में इस परिणाम पर पहुंचा कि शेर अत्यंत वृद्ध है। अट्ठाईस-तीस बरस से कम का न रहा होगा वह।

उत्सुकता इतनी बढ़ गयी कि पदचिह्नों के पीछे चल पड़ा। यह जानकर भी कि जिसका पीछा कर रहा हूं वह शेर है, न जाने भय क्यों नहीं लगा। खूब सतर्क पदचिह्नों के साथ-साथ चलने लगा। चालीस-एक कदम चलने के बाद एक और नया रहस्य सामने आया। लगा, जैसे वह रातवाला शेर किसी हिरन का ताजा शिकार करके उसे किसी अज्ञात स्थान की तरफ घसीटता लिये जा रहा था कि बीच में ही प्यास लग जाने के कारण लाश को यहां छोड़ उसी गढ़े पर पानी पीने चला आया था और लौटकर उसे फिर उठाकर घसीटता हुआ आगे चल पड़ा था। सो यहां से उसके पदचिह्नों के साथ-साथ लाश की घिसटन का चिह्न भी बनने लगा था। इसीलिए यहां से आगे दोनों ही चिह्न साथ-साथ मिलने लगे थे।

पदचिह्नों के असाधारण फैलाव से यह बात भी स्पष्ट हो रही थी कि लाश को उठाने में शेर को काफी कष्ट हो रहा है। मैंने लक्ष्य किया कि इस आधे हो मील के रास्ते में उसे कम से कम तीन बार लाश को जमीन पर रखकर विश्राम के लिए बैठना पड़ा है। समझ में नहीं आ रहा था कि वह व्यर्थ ही इतना कष्ट क्यों उठा रहा है। क्या यह संभव नहीं था कि किसी एक जगह बैठकर लाश का दस-बारह किलो मांस अपने पेट में डाल ले और इस प्रकार अपने बोझ को काफी हल्का बना ले? मगर वैसा न करके वह समूची लाश को आगे ही आगे घसीटता ले जा रहा है! बात कुछ विचित्र-सी ही लग रही थी।

अब जो भी हो, मैं तो दोनों सम्मिलित चिह्नों का अनुसरण करता आगे ही आगे बढ़ता गया। बढ़ना अंत में तब रुका, जब मील-भर चलने के बाद एक ऐसी तंग घाटी में जा पहुंचा, जिसके दोनों तरफ ढालू पहाड़ियां खड़ी थीं, और आगे बढ़ने का कोई सूत्र दिखाई न पड़ रहा था। स्थान भयंकर लगा। सोचने लगा, पदचिह्नों के मोह में पड़कर व्यर्थ ही इस निर्जन घाटी में आ फंसा मैं। वहां का घोर सन्नाटा बार-बार कानों में आकर परामर्श देने लगा—'लौट जाओ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक ! यह स्थान तुम मानवों के मतलब का नहीं है !' मगर उस परामर्श को अमान्य कर जब दबे पांच मैं पास खड़ी एक चट्टान की ओट में हो गया, जैसे किसी ने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा :

'शाबाश ! यहां पहुंचकर तुमने जरा भी भूल नहीं की। इस शून्य घाटी में ही तुम्हारी सारी खोज की सार्थकता निहित है। यहीं मिलेगा तुम्हारे प्रयत्नों को चरम विश्राम। देख नहीं रहे हो उस गड़े के पास पड़े किसी अभागे हिरन की अधखायी लाश को और उसके पास बैठे उस मासूम-से व्याघ्र-शिशु को, जो उसके रक्त को बहुत ही मुग्ध भाव से चाट रहा है ! यही है पांच सौ पचपन वर्गमील में फैले महावन में शेर-जाति का एकमात्र अंतिम अवशेष, जिसे करुणामयी प्रकृति ने निष्ठुर तस्कर-शिकारियों और अर्थलोलुप वनाधिकारियों की कुदृष्टियों से बचाकर इस रहस्यमयी घाटी में सुरक्षित रखा हुआ है।'

बहुत ही विस्मय से मेरी प्रतीक्षामयी आंखें इन दुर्लभ दृश्यों को देख रही थीं। वह हिरन की अधखायी लाश, जिसे कल रात वह घसीटकर ला रहा था; वह व्याघ्र-शिशु जिसके लिए ही वह इस लाश को ... कष्ट से उठाकर ला रहा था; और वह ... लाश से लगभग पांच गज दूर बैठा हुआ वृद्ध शेर, जो संतान-वत्सल मां की तरह इसका स्वयंसिद्ध संरक्षक बना हुआ है... सभी बाइनाक्युलर की आंखों में बहुत स्पष्ट दिखाई पड़ रहे थे।

सभी बातें अद्भुत और अविश्वसनीय थीं। सुना तो यह था कि नर शेर ... शेरनी के बच्चे को मार डालने की ताक में रहते हैं। मगर यहां एक नर शेर किसी ... गता शेरनी की संतान को निःस्वार्थ ... से पाल रहा था, जननी की तरह उसकी प्रत्येक आवश्यकता का ध्यान रख रहा ... तो क्या उसे अपने किसी सहज ज्ञान ... यह आभास हो चुका था कि इस ... महावन में यह शेर-जाति का 'अंतिम अवशेष' है, जिसकी रक्षा जैसे भी हो ... ही चाहिये ? ...नन्दस्य भवने कोऽपि ... बालः प्रवर्धते।

—वानप्रस्थाश्रम, पो.-ज्वाला...
जि. सहारनपुर, उ...

★

एक बकरी खेतों में चरने के लिए जाने लगी, तो अपने नन्हे बच्चों को बाड़े में ... करते हुए बोली—'देखना, किसी को अंदर न आने देना। और दरवाजा तभी खोलना, ... मेरी आवाज सुनना।' एक भेड़िये ने उसे यह सब कहते सुन लिया। उसके जाने के ... ही देर बाद वह बाड़े के पास आकर हूबहू उसकी नकल करते हुए बोला—'मेरे बच्चो, मैं ... गयी हूं, दरवाजा खोलो। तुम्हारी मां तुम्हारे लिए चारा लायी है।' बकरी के बच्चों ने खिड़की में से झांककर देखा, फिर बोले—'आवाज तो हमारी मां की ही लग रही है, पर टांगें किसी भेड़िये की हैं सो, दरवाजा नहीं खोलना चाहिये।'

—लेव ताल...

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नैतिकता जीवन में

सुरजीत

निजामल्मुल्क तूसी अपने दरबार में आने वाले विद्वानों का कुछ कदम चलकर स्वागत किया करता था और बारी-बारी उनके कंधों पर हाथ रखकर उन्हें अपनी मसनद के दायें-बायें बिठाता था। लेकिन एक विद्वान ऐसा भी था, जिसका स्वागत वह दरवाजे पर जाकर करता और उसे हमेशा अपनी मसनद पर बैठाता था। अन्य विद्वान इस बात से उद्विग्न थे।

एक दिन उनमें से एक ने तूसी से कहा—'आपके दरबार के सभी विद्वानों को शिकायत है कि आप कइयों से विशिष्ट व्यवहार करते हैं।'

तूसी ने जवाब दिया—'केवल एक विद्वान से विशिष्ट व्यवहार रखा जाता है। उसके सिवा अन्य ऐसा कोई उदाहरण न मिलेगा।'

'लेकिन यह एक से भी क्यों?' रुष्ट विद्वान ने पूछा।

उत्तर मिला—'आप सब मुझमें मौजूद ऐबों का बयान इस तरह करते हैं कि वे ऐब के बजाय गुण नजर आने लगते हैं। मगर यह विद्वान, जिसे मैं अपनी मसनद पर जगह देता हूं, मेरे ऐब ऐब ही की तरह पेश करता है। सच्चा दोस्त वही है, जो सच बात कहकर रुला दे।'

०००

मामूं रशीद ने बहुत शान और दबदबे से राज्य किया। उसका शासन आदर्श समझा जाता था। एक बार किसी दरबारी ने उससे पूछा—'आखिर आपकी कामयाबी का राज क्या है?'

मामूं रशीद ने जवाब दिया—'कुछ बुनियादी उसूल हैं, जिन पर मैं अमल करता रहा हूं। जहां चाबुक से काम निकल सकता है, वहां मैं तलवार से परहेज करता हूं। जहां जुबान से काम चल सकता हो, वहां मैं चाबुक से बचता हूं। मैं यथासंभव कोशिश करता हूं कि जनता से दूर न रहूं। यदि जनता रस्सी खींचकर तोड़ने की कोशिश करती है तो मैं उसे ढील दे देता हूं; और जब ढील उसकी ओर से होती है, तो मैं रस्सी खींच लेता हूं।'

०००

हजरत उमर बिन अब्दुल-अजीज के पास एक प्रतिनिधि-मंडल आया। उसमें कुछ बूढ़ों के अलावा एक नौजवान भी था। नौजवान ने जुबान खोली और प्रतिनिधि-मंडल की ओर से कुछ कहने लगा।

उमर बिन अब्दुल-अजीज ने नौजवान को हाथ के इशारे से बरजते हुए हुक्म दिया—'नौजवान, तुम खामोश रहो। किसी बुजुर्ग को बोलने का मौका दो।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नौजवान ने उत्तर दिया–'हुजूर ! बुद्धि और समझ का संबंध उम्र से नहीं होता। वरना आज खिलाफत की मसनद पर आपकी जगह कोई बूढ़ा आदमी बैठा होता।'

'नौजवान ! तुम सही कहते हो। मुझे अपनी गलती का एहसास हो गया। हां, अब तुम प्रतिनिधि-मंडल की ओर से जो कुछ भी कहना चाहते हो, खुलकर कहो। मैं सुनूंगा।' हजरत उमर बोले।

○○○

सुलतान कुतुबुद्दीन अपने घोड़े पर सवार कहीं जा रहा था। एक कब्रिस्तान से गुजरते समय उसने एक फकीर को देखा। बादशाह ने लगाम खींच ली और पूछा–'फकीर! तुम यहां क्या कर रहे हो ?'

फकीर ने बेपरवाही से जवाब दिया–'मैं कब्रिस्तान के मुर्दों से बातें किया करता हूं।'

बादशाह ने पूछा–'क्या कहते हैं वे ?'

'वे कहते हैं कि कभी हम भी इसी तरह हाथी-घोड़े पर सवार होकर सैर करने को निकला करते थे; पर आज उल्टा मामला है और जमीन हम पर सवार है।' फकीर ने बताया।

○○○

अबू-खलीफा कपड़े का व्यवसाय करते थे। उन्होंने दुकान के नौकर से एक थान की ओर इशारा करते हुए कहा–'देखो, यह थान एक जगह से मसका हुआ है। ग्राहक को उसका यह ऐब जरूर बता देना और आधी ही कीमत लेना।'

नौकर व्यस्तता में यह बात भूल गया

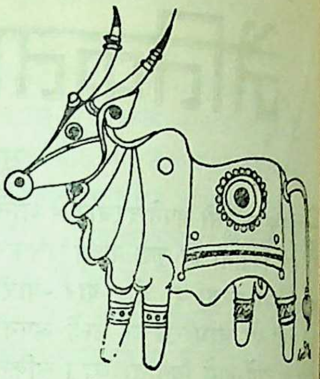

चित्र : सतीश चव्हाण

और उसने वह थान पूरी कीमत पर बे[illegible] दिया। शाम को जब मालिक ने उस था[illegible] के बारे में पूछा, नौकर भयभीत हो ग[illegible] लेकिन असली बात बता दी।

खलीफा व्यग्र होकर उस ग्राहक [illegible] तलाश में फौरन निकल पड़े। रास्ते में [illegible] चला कि ग्राहक तो हजाज के काफि[illegible] शामिल होकर दुपहर को ही चला गया [illegible] उन्होंने एक तेज-रफ्तार ऊंट लिया [illegible] हजाज की ओर चल दिये। और उसे [illegible] मंजिल में जा लिया, उसे थान का [illegible] बताया, आधी कीमत वापस की और [illegible] तक अपने नौकर की लापरवाही और [illegible] चूक की माफी मांगते रहे।

जब वे उससे विदा लेकर वापस [illegible] को हुए, ग्राहक ने गद्गद होकर [illegible] 'अबू खलीफा ! तुम उस उम्मत की [illegible] ताकत और जिंदगी हो, जिस पर हम [illegible] गर्व करें, कम है।' –सी-३४, सुदर्शन [illegible] मोतीनगर, नयी दिल्ली[illegible]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : इदु रस्तोगी

पांच छोटी कविताएं

–कुमार प्रशांत–

[१]

इतनी भयावह है सचाई की सूरत
कि स्वप्नों ने भय से चेहरा छिपा लिया है।
सबने जीने का जंगली तरीका अपना लिया है।

[२]

जहां तक उजाला दीखता है
प्रकाश वहां तक हो
कोई जरूरी नहीं।
आदमी से दूर भी होती है आदमियत।

[३]

ऊपर से जो जितना दीखता, दिखाता है
अंदर से वह उतना ही सूखा कठैला है।
जीवन-संगीत जो भीतर गाता है तेरे
उसे सुनने का अमृत-आनंद घेरे
तुझे, इतना तो शांत बन।
ऊपर से सूखा, कठैला भले ही रहे
भीतर की वेदना-सरणि तेरी बांह गहे।

[४]

सब कुछ खरीदने के बाद भी हम
ठगे-से खड़े हैं :
जितना ही ऊपर चढ़े, अंदर
दरिद्रता से पगे हैं।
जो खरीद सकते थे, खरीद लिया।
अब जो चाह है वह खरीदने की नहीं
उन्मुक्त देने की, सामुक्त पाने की है।
ऐसी उन्मुक्तता इस बाजार में
कहां पाने की है ?

[५]

किसी से प्यार करने का मानी
उसके साथ जीना नहीं
उसमें जीना है।
पहले बाहर जितना भटके
प्यार का मानी
अब उतना ही भीतर अटकना है–
अंतर-आलोक से
बहिर्जगत प्रकाशित करना है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

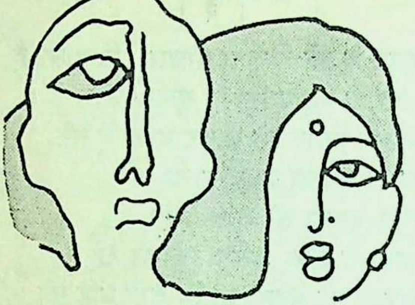

• डेविड गल्स

दांपत्य के दस गु

तलाकों के मामले बढ़ते जा रहे हैं। ऐसे में सहज ही यह पूछा जा सकता है कि क्या दांपत्य सफल भी हो सकते हैं। जरूर हो सकते हैं। मगर इसके लिए पति-पत्नी दोनों की ओर से कोशिश जरूरी है। यहां हम दस सुझाव दे रहे हैं, जो दांपत्य को सफल बनाने में सहायक होंगे।

१. पृथक् व्यक्तित्व बनाये रखें। अपने व्यक्तित्व को रक्षा कीजिये। जीवन को अपने जीवन-संगी या जीवन-संगिनो के माध्यम से जीने की कोशिश न करें (हर-दम यह न कहें कि 'वे ऐसा सोचते हैं'..... 'वह यह चीज बिलकुल पसंद नहीं करती' ......) अपने विचार, अपने मंतव्य कायम रखिये। किसी सयाने ने एक बार कहा था— 'अपनी अजनबीयत कायम रखिये।' इसका अर्थ यह है, सब कुछ न बता देना। असल में यह निरी भ्रांति है कि कोई किसी को पूरी तरह जान सकता है, भले वह उससे कितना भी प्यार क्यों न करता हो। असल में होता यह है कि सब कुछ बता दिये जाने पर दूसरा व्यक्ति ऐसा व्यवहार करने लगता है, जैसे वह दूसरे को पूरा जान गया है जबकि पूरा का पूरा जानना वस्तुतः ... भिन्न चीज है। आपके प्रति आपके जीवन-संगी या जीवन-संगिनी के आकर्षण का मु... कारण तो यही है कि आप आप हैं। अ... ही परछाई के संग या बिलकुल खुली किताब के संग कोई नहीं जीना चाहता। प्रेम का ... विलक्षण गणित सदा याद रखिये—इसमें दो आधे मिलकर एक 'पूरा' नहीं बनता, दो पूरे मिलकर एक 'पूरा' बनता है। अ... दांपत्य दो चीजों का जोड़ है, दो चीजों का एकीभाव नहीं।

२. बच्चों का स्थान दूसरा। इस बात को एक क्षण को भी मत भूलिये कि पहले आप पति-पत्नी बने, फिर बच्चे आये। आपकी चिंताओं और खयालों में पह...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान आपके पति का या पत्नी का होना चाहिये। यह बात सदा याद रखिये—बच्चे बड़े होकर दूर हो जायेंगे। क्या उपेक्षा के कारण, दोयम स्थान दिये जाने के कारण आपका पति या आपकी पत्नी आपसे दूर—यानी दिल से दूर—हो जाये, यह आपको स्वीकार होगा?

३. परिवर्तन के लिए प्रयत्न न करें। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि दांपत्य की समस्याओं की इतनी चर्चा के बावजूद लोग (विशेषतः स्त्रियां) यह उम्मीद लेकर विवाह करते हैं कि हम अपने जीवन-संगी या जीवन-संगिनी को बिलकुल नया व्यक्ति बना देंगे। यह सरासर पागलपन है। मनुष्य इस तरह बदला नहीं करते। कोई भी बालिग दूसरे बालिग में बुनियादी परिवर्तन करने की जिम्मेवारी नहीं ले सकता; बुनियादी परिवर्तन अंदर से ही हो सकते हैं। इसी तरह कोई बालिग आदमी किसी दूसरे के सलूक के लिए पूरी तरह जिम्मेवार नहीं बन सकता, जैसा कि वह अपने सलूक के लिए होता है।

४. सेक्स को हौवा न बनायें। इसका यह अर्थ नहीं कि सेक्स में साझेदारी गंभीर चीज नहीं। मगर उसकी गंभीरता, महत्ता इसमें है कि यह आप दोनों की चीज है। विवाह के इस क्षेत्र में भावना का बहुत महत्त्व है। उतना ही महत्त्व विचार का भी है, जिसे कम ही लोग समझ पाते हैं। मगर इसके बावजूद सेक्स आनंद और उल्लास की चीज होनी चाहिये; उसका उपभोग विनोद और प्रफुल्लित मन के साथ किया जाना चाहिये। सेक्स को सहज और उल्लासमय बनाइये।

५. निर्बंध रहें। अपने को स्वतंत्र अनुभव कीजिये और अपने जीवन-संगी या संगिनी को भी वैसा ही अनुभव कराइये। अच्छा दांपत्य कभी बंधन या बेड़ी नहीं होता, नीरस दैनिक कार्य नहीं होता, बोझिल कर्तव्य नहीं होता। वह जेल नहीं है, दासता नहीं है। सो कोई दूसरे को जकड़े नहीं।

६. प्रेम परिवर्तनशील है। वैचारिक दृष्टि से यह सबको मालूम है। परंतु कितने नवदंपति इस बात को मानने या कबूल करने को तैयार होंगे। प्रकृति के नियम के अनुसार प्रेम भी बदलेगा, बढ़ेगा-पनपेगा या मुरझायेगा-झड़ेगा। सारे जीवन की बात क्या, एक साल भी वह वैसे का वैसा बना नहीं रह सकता। इस तथ्य को स्वीकार कर लीजिये; जीवन ठीक रहेगा।

७. बोल सुन लीजिये। या अगर आप बहुत गुस्से में हैं तो एक नोट लिख दीजिये अपने पति या पत्नी को। आपको अचरज होगा कि लिख देने के बाद उसे अपने पति या पत्नी को देने की बहुधा इच्छा ही नहीं होगी। यदि आप दोनों में से कोई एक बात कहने को तैयार नहीं है, तो आप अंदर ही घुटते रहेंगे। यह भी तो संभव है कि दूसरे की बात ही ठीक हो। और यह कहना-सुनना तत्क्षण हो जाये, पूरी तरह उन्मुक्त हो, यह जरूरी नहीं। परंतु दांपत्य के बचे रहने के लिए यह जरूरी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम उद्योग की कई प्रकार से सेवा करते हैं।
हमसे संपर्क करना आपको सदा लाभप्रद होगा।

(१) **पाईप्स**—जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इंडस्ट्रीज लि. खोपोली के विक्रेता और स्टाकिस्ट।

(२) **अल्युमिनियम**—हम सभी प्रकार के शीटों और एक्सट्रुडेड सेक्शनों के लिए हिन्दालको के एजेन्ट हैं।

(३) **केबल**—युनिवर्सल केबल्स लि. सतना (म. प्र.) के महाराष्ट्र (विदर्भ, गोवा और गुजरात को छोड़कर) में बिक्री-एजेंट।

(४) **फायर होज**—जयश्री टेक्सटाइल एंड इंडस्ट्रीज लि. रिशरा (पं. बंगाल) द्वारा निर्मित, 'वरुण' फ्लैक्स पाइप व 'जयश्री' एंगस R. R. L. होज पाइपों के स्टाकिस्ट और वितरक।

एशियन डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड
क्वीन्स मेन्शन, तल मजला, प्रेस्काट रोड, बंबई-४००००१.

तार : "ADPIPE" **टेलेक्स :** O11-2177 **टेलिफोन :** २६६६७१-३-४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८. शांति पायें और दें। एक तरह से विवाह एक पलायन है। बाहरी दुनिया की कठोरता और निष्ठुरता से पलायन। लोग आशा करते हैं कि दांपत्य में उन्हें शांति मिलेगी, इन बाहरी बोझों व दबावों से त्राण मिलेगा। क्या सचमुच मिल पाती है शांति, मिल पाता है त्राण? तभी जब हमारा जीवन-संगी या जीवन-संगिनी इस शांति और त्राण का स्रोत बनने को तैयार हो। सो दूसरे को यथाशक्ति यह शांति और यह त्राण देना अपना काम बना लीजिये। और इसका सर्वोत्तम समय है—दिनांत में, नींद की गोद में जाने के पूर्व।

९. मनोयोग से सुनिये। इस कथन में काफी अर्थ है कि दंपत्ति ऐसे जियें जैसे अविवाहित हों और साथ-साथ रहते हों। जब प्रेम-प्रसंग चल रहा होता है, पुरुष और स्त्री को अक्सर माफ कर देना, सुनना, भावनाओं को जब्त कर लेना, आंसुओं को रोक लेना, जबान काट लेना पड़ता है—वरना उनका साथ नहीं निभ पाता। इसके बिना चारा नहीं। दांपत्य को ऐसा ही दृष्टिकोण सफल बनाता है। विशेषतः दूसरे की बात सुनने के बारे में। हर पुरुष और हर स्त्री को किन्हीं क्षणों में ऐसे श्रोता की आवश्यकता होती है, जिसमें उसके प्रति दिलचस्पी, चिंता और सहानुभूति हो। पुरुषों को तो प्रायः हमेशा ही ऐसे श्रोता की आवश्यकता रहती है। अविवाहित प्रेमी-प्रेमिका इस बात को सहज ज्ञान से जानते हैं, जब कि दंपति प्रायः इसे भूल जाते हैं।

१०. दूसरे के एकांत की रक्षा करें। पति व पत्नी को दूसरे के एकांत को भंग होने से बचाने को तत्पर रहना चाहिये। हम सभी को एकांत के क्षण की आवश्यकता पड़ती है—केवल शारीरिक एकांत नहीं, मानसिक एवं आत्मिक एकांत। जो पति या पत्नी इस बात की उपेक्षा करे मानो उसने दांपत्य को विफल बनाने की ठान ली है। मगर जो इस बात को समझे और इस मामले में दूसरे के अधिकार की रक्षा करने को तत्पर हो, मानो उसने तीन-चौथाई बाजी जीत ली है।

★

* उस दिन मैं अपने मित्र पंकज के घर गया, तो उसकी नन्ही बहन शिप्रा आकर कहने लगी—'अंकल जी, भैया ने भाभी का गाल चूम लिया।' मैंने पंकज को घूरकर देखा तो उसने मामले का खुलासा किया—'शिप्रा का दायां गाल उसकी भाभी चूमती है और बायां मैं। आज गलती से मैंने दायां गाल चूम लिया। तभी से वह हल्ला कर रही है।'

* 'क्या मैं यहां उतरकर कुछ फूल तोड़ सकता हूं?' सिग्नल के बाहर बहुत देर से रुकी गाड़ी के यात्री ने गार्ड से पूछा।

'तोड़ेंगे कहां से? मुझे तो आस-पास कहीं फूल दिख नहीं रहे हैं।' गार्ड ने चारों ओर नजर डालते हुए कहा।

'इसकी आप चिंता न करें। फूल के बीज बो देता हूं, गाड़ी चलने तक निकल आयेंगे।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह पुस्तक समर्पित है....

प्रसिद्ध मानव-विज्ञानी जान ग्रीन्वे ने अपनी पुस्तक 'आदिकालीन जातियों में साहित्य' पर यह समर्पण-वाक्य लिखा है :

'मैक् एड्वर्ड लीच को, जो मेरे प्रिय मित्र और आदरणीय शिक्षक हैं और जिनकी प्रेरणा, परामर्श और प्रोत्साहन के अभाव में मैं आज कोई अधिक लाभदायक काम कर रहा होता।'

वेशभूषा के डिजाइनर चार्ल्स क्रीड ने अपनी पुस्तक 'मेड टु मेजर' का समर्पण इन शब्दों में किया है :

'यह पुस्तक मैं अपने मित्र एल्स्वर्थ ग्रांट को समर्पित करता हूं, जिन्होंने कि यह मेरे लिए लिखी है।'

जेराल्ड लाइवरमैन ने अपनी हास्य-रचनाओं का संकलन तैयार किया और उसे अपने जीवन में आयी महिलाओं के नाम यों समर्पित किया :

'अपनी मां श्रीमती फ्रेडा साइडमैन, अपनी बेटियों लारी जो और मोना हेलेन और अपनी पत्नी सिल्विया को, जो सब मुझे एक-सी प्रिय हैं—पर जिनके नाम मैंने खतरे से बचने के लिए (रोमन) वर्णमाला के अक्षर-क्रमानुसार लिखे हैं।'

प्रसिद्ध अमरीकी लेखिका जीन कर ने अपनी पुस्तक 'द स्नेक हैज ऑल द लाइन्स' में आभार प्रकट करते हुए लिखा है:

'मैं हेलेन कार्सन की कृतज्ञ हूं। उन्होंने इस पुस्तक की पांडुलिपि को पढ़ा और कई सुझाव दिये। तो भी, मैंने सोचा कि पुस्तक छपनी ही चाहिये।'

प्रसिद्ध फिल्म कंपनी आर. के. ओ. के एक निर्देशक ने अपनी पुस्तक के समर्पण में लिखा :

'अपनी पत्नी के नाम, जिसकी अनुपस्थिति के बिना यह पुस्तक कभी न लिखी जाती।'

फ्रैंक्लिन एडम्स ने अपनी पुस्तक 'नाइट्स एंड बेक्स' छपने पर उसकी एक प्रति दैनिक 'न्यूयार्क पोस्ट' के संपादक को भेजी, जिनके अधीन उन्होंने कुछ समय काम किया था। पुस्तक के पहले पृष्ठ पर लिखा था:

'टैड थैकरे को, जिन्होंने मुझे महत्त्वाकांक्षा के साथ (नौकरी से) निकाला था।'

दंपति रोजमेरी बेनेट और स्टीफन विन्सेंट बेनेट ने मिलकर एक पुस्तक लिखी 'बुक ऑफ अमेरिकन्स' और उसे अपने बच्चों के नाम समर्पित किया :

'स्टेफनी, टॉमस और रैशेल को, जो कि हमारी अन्य संमिलित कृतियां हैं।' —ब. ति.

★

नृतत्त्वशास्त्र पर दो-चार नवीनतम पुस्तकें पढ़कर अपने को 'बुद्धिजीवी' कहना आसान है मगर राज होना व मामूली-सा भी मकान खड़ा करना कठिन है। —हसमुख धी. सांकलिया

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान का घर

बेन वेक्स

उस सुबह मेरी छह वर्षीय बेटी मुझे दाढ़ी बनाते गौर से देखती रही और अचानक पूछ बैठी—'बापू, भगवान का घर कहां है?'

'कुएं में', कुछ दूसरे ही खयालों में खोया कह बैठा। 'हुंहऽऽ!' इस बेतुके उत्तर पर उसने रोष प्रकट किया।

नाश्ते की मेज पर मैं अभी बैठा ही था कि पत्नी ने टोका—'यह तुमने इससे क्या कह दिया है कि भगवान कुएं में रहता है?'

'कुएं में?' मैंने अपने कहे का अटपटापन अनुभव किया—'आखिर ऐसा मैंने क्यों कहा?'

पत्नी चुप रही, पर पिछले तीस वर्षों से मेरी स्मृति के किसी कोने में दबी एक घटना जैसे सजीव हो उठी।

यह घटना घटी थी दक्षिण-पूर्व पोलैंड के कैलीस गांव में, जहां मेरा जन्म हुआ था। हमारे अहाते में बने कुएं पर कहीं से भटकता-घूमता जिप्सियों का एक दल आ रुका था। उस वक्त मेरी उम्र लगभग पांच वर्ष रही होगी।

उनकी विचित्र वेशभूषा से आकर्षित मैं जब कुएं के निकट पहुंचा, तो उनमें से एक हट्टे-कट्टे जिप्सी ने मेरा ध्यान अपनी ओर खींच लिया। उसने कुएं में अपनी बालटी डुबायी और खड़े-खड़े ही बालटी से अपने मुंह में पानी उड़ेलने लगा। पानी की मोटी धार उसके मुंह में गिर रही थी और एक पतली धार उसकी जीर्ण-शीर्ण पोशाक को भिगोती नीचे राह बना रही थी। इससे बेखबर वह बालटी इस प्रकार उठाये था, जैसे चाय की प्याली हो। पानी पीकर उसने गले में लिपटा रंगीन स्कार्फ खोलकर अपना गीला चेहरा पोंछा। मैं उसकी हर गतिविधि को बड़े ध्यान से देख रहा था।

अचानक कुएं के भीतर झांककर वह कुछ देखने लगा। मैं अपने को रोक नहीं सका—आखिर यह भीतर क्या देख रहा है? मैंने भी चुपके-से आगे बढ़कर कुएं में झांकना चाहा। मेरी तरफ देखकर वह जरा-सा मुस्कराया और अगले ही क्षण उसने मुझे अपनी बांहों में उठा लिया।

'क्या तुम जानते हो, इसके अंदर कौन रहता है?' उसने पूछा।

मैंने इन्कार में सिर हिला दिया।

'वहां भगवान रहता है।' उसने कहा।

'झांककर देखो!' सावधानी से उसने मुझे कुएं के अंदर देखने दिया।

नीचे की शांत, आईने की तरह चमकती सतह पर मैंने अपनी ही सूरत देखी।

'अरे, यह तो मैं हूं!'

'हां!' जिप्सी ने आनंद से डूबे स्वर में कहा और धीरे-से मुझे अपनी गोद से उतारकर नीचे रख दिया—'हां, अब तुम जान गये हो, ईश्वर कहां रहता है।' अनुवाद : कु. प्र.

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुभन

अपनी बहन के संबंध में मैं पूरी तरह से अनभिज्ञ रहा। उससे कभी कोई प्रेम करेगा, यह मैंने सपने में भी नहीं सोचा था। ऐसी धुंधली कल्पना भी मैं नहीं कर सकता था। क्योंकि अपनी शादी करने के लिए मैं उसके मरने की राह देख रहा था।

छह-छह उंगलियों वाले छोटे-छोटे हाथ, मैला काला रंग। चार फुट से भी कम ऊंचे तन में प्रेम-भावना का प्रस्फुरण कैसे संभव था? यह विचार ही कितना घिनौना था।

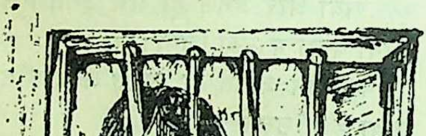

मगर मेरी सब दुर्भावनाओं के बाव... बंडू ने मेरी बहन से शादी कर ली। ... इलाके में इतना बदसूरत जोड़ा शायद ही किसी ने देखा हो। अब तो वे दोनों ... दुनिया में नहीं रहे और उनकी मौत से ... मेरी छाती पर का कभी न हटने वाला ... पत्थर हट गया। मैंने राहत की सांस ...

सामाजिक समारोहों में परिचय देने के बाद अब लोगों के तिरस्कार-भरे ... निहारने की नौबत भी पैदा नहीं होगी। उन दोनों की परछाइयों से बचने के लिए ... से ही कतराकर भागने वालों के दर्शन ... अब नहीं करने पड़ेंगे।

गत पचीस वर्षों की वह एक अविरत चुभन एवं कठिनाई थी। बहन के विवाह के बाद से उसके मरने तक यह चुभन ... कठिनाई बढ़ती ही गयी थी। कुरूपता में मेरी बहन आगे है या बहनोई यह कहना कठिन था। जब वह छोटी थी, तब मैं ... खिलाने बाहर ले जाता था। दूसरे लड़के ... देखकर 'बंदरिया' कहकर चिढ़ाते थे। ... कभी कोई नया लड़का हमारी टोली में आ... वह अवश्य पूछता—'यह ऐसी क्यों है?'

मैं भला इस प्रश्न का क्या उत्तर देता ... चुप रहकर ग्लानि एवं अपमान को पी ... पड़ता था; मेरे मन में विचार-चक्र ... घूमने लगता। सचमुच यह ऐसी क्यों हुई ... बाकी लोगों से इसकी बनावट और ... इतना भिन्न क्यों है? कुहनी के नीचे ... छोटे हाथ, दोनों में छह-छह उंगलियां— ... के पास निकली वह छठी विचित्र उंगली ...

अ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारे घराने में पिछली सात पीढ़ियों में ऐसी विकृति कभी नहीं देखी गयी थी।

यद्यपि मेरी मां का कद छोटा था, परंतु पिता ऊंचे, गोरे एवं सुडौल थे। मैं भी अपने पिता-जैसा गोरा और ऊंचा था। तब फिर मेरी बहन ही ऐसी क्यों हुई ?

उसकी बदसूरती में दो चीजें आकर्षक थीं। उसकी तेजस्वी आंखें और सदैव हंसी-भरा चेहरा। उसके आनंदित होने के लिए किसी खास कारण की जरूरत नहीं होती थी। घर में चिड़ियों के आने अथवा मकड़ी का जाला दिख जाने पर भी उसके आनंद का पार नहीं रहता था। ताली बजा-बजाकर वह नाचती। यह खुशी उसके बेडौल-कुरूप शरीर को और भी कुरूप बना देती थी।

जैसे-जैसे वह बड़ी होती गयी, उसकी खुशी बढ़ती गयी। वह दौड़कर कमरे के एक कोने से दूसरे कोने तक जाती। जब वह मोटी हो गयी, तब उसका यह दौड़ना मुझे ऐसा लगता था मानो कोई काला गोला इधर से उधर लुढ़क रहा हो। बड़ी होने पर आईने के सामने घंटों बैठकर अपने बाल संवारती। गरदन टेढ़ी करके चमकती आंखों से वह अपनी कुरूपता को निहारती।

मां उसके आनंद से आनंदित होती थी। मगर दूसरे ही क्षण उसकी कुरूपता से उतनी ही दुःखी भी हो उठती थी। मेरे जन्म के समय ही वह चाहती थी कि उसे लड़की हो। उसकी यह इच्छा बाद में पूरी हुई। मेरी बहन का जब जन्म हुआ, तब वह बिल्ली के बच्चे-जैसी थी।

मराठी कहानी

*** दि. बा. मोकाशी ***

अनुवाद : कृष्णकुमार गौड़

उसका विवाह नहीं हो पायेगा, यह बात मेरे माता-पिता जानते थे। मरने तक उसकी देखभाल कौन करेगा, सिर्फ इसी चिंता में वे रात-दिन घुलते रहते थे। बहन के जन्म के बाद मां का पूजा-पाठ बढ़ गया। सप्ताह में चार दिन तो वह उपवास रखती थी। उसकी पूजा-अर्चना से बहन की बदसूरती कम होने वाली नहीं थी। लेकिन पिछले जन्म के जिन पापों के कारण ऐसी लड़की

चित्र : डा. विष्णु भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पैदा हुई, वह अगले जन्म तक बाकी न बचा रहे इसके लिए यह शायद जरूरी था। मां बीच-बीच में मुझसे कहतीं—'किशा, हमारे मरने के बाद ऐसा कोई काम न करना कि चिमा को किसी प्रकार का कष्ट पहुंचे।'

माता-पिता ने मेरे कंधों पर बहन का भार छोड़कर मर जाना अच्छा समझा। मेरी नौकरी लगने तक दोनों मृत्यु से लड़ते रहे। पर जब देखा कि मैं चार पैसे कमाकर बहन को पाल सकता हूं, तब उनकी जीने की आस मिट गयी। मेरी नौकरी लगने के एक महीने के भीतर ही दोनों का निधन हो गया।

उनकी मौत का असर बहन पर भी पड़ा। उसकी हंसी और नाच विलुप्त हो गये। आम लोगों की तरह वह भी भावनाएं रखती है, यह एहसास मुझे अच्छा लगा। वह मन से विकृत नहीं थी।

मां के मरने के बाद उसकी तमाम चीजों से वह बेहद प्रेम करने लगी। अब वह मां की ही तरह करुण स्वर में बोलने लगी—घर का सारा कामकाज भी मां की पद्धति से ही करने लगी। काम खत्म हो जाने के बाद वह घंटों खिड़की के पास खड़ी रहती और बाहर देखा करती। वह कभी बाहर नहीं जाती थी और मैं भी किसी मित्र को घर नहीं लाता था।

अब लोग मुझसे शादी करने को कहने लगे। 'अब शादी कर लेनी चाहिये।' 'शादी क्यों नहीं करता?' लेकिन कोई किसी लड़की वाले की ओर से प्रस्ताव भी नहीं लाता था। किंतु यदि ऐसा प्रस्ताव आते तो शादी करनी है या नहीं, यह सवाल मेरे लिए अभी तक उलझा हुआ ही था। घर में इतनी कुरूप ननद हो, उस घर कौन अपनी लड़की देगा? इस बदसूरत की समाप्ति तक प्रतीक्षा करना भी संगत नहीं था।

इसी सोच-विचार में मेरी रातें कटने लगीं। पहले ही मुझे बहन से घृणा थी, अब वह और भी तेज हो गयी। वह घर में सोती थी, मैं बाहर के कमरे में। फिर भी उसके शरीर की प्रत्येक हलचल, उसकी सांस, उसकी धड़कनें, सपने में की बड़बड़ाहट—सब कुछ जैसे मुझे कंठस्थ था। माता-पिता उसी की फिक्र में घुल-घुलकर मरे और अब वह मेरे पीछे पड़ी थी। रत की आग में जलकर मैं भी मर जाऊं, बाद में वह अकेली ही यहां रहेगी। किसी दिन बुढ़ापे में मरेगी या भुखमरी से निष्प्राण होकर।

उसके प्रति मेरी घृणा इतनी गहरी हो गयी कि मैं उसकी मृत्यु की कामना करने लगा। यह एकदम अनुचित था। परंतु कोई परामर्श देने वाला उस समय मुझे कोई नहीं मिला। उसकी सांसें सुनता हुआ मैं बगल के कमरे में पड़ा करवटें बदल-बदलकर रातें काटता था। कभी-कभी मेरे मन में यह खयाल भी पैदा होता था कि इन सांसों की आवाज यदि बंद हो जाये तो मुझे कितनी शांति मिलेगी। मां ने परिस्थितियों से लड़कर उसकी परवरिश की थी, मुझे

अक्तूबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये—ऐसा सुविचार मेरे मन में कभी पैदा नहीं हुआ।

उसे भी मेरी नफरत का पता चल गया। उसका बोलना कम हो गया, हंसना-नाचना बंद हो गया। घर-काम करना और खिड़की में बैठे रहना बस उसके जीवन के यही दो कार्यक्रम रह गये।

और एक दिन उसकी शादी भी हो गयी—एकदम अनपेक्षित। उसका पति हमारी चाल के निकट ही एक चुंगी-नाके में क्लर्क था। वह हमारे इतना करीब रहता था, यह बात बहुत दिनों तक मैं जान नहीं पाया। उसे मैंने कभी देखा भी नहीं था।

हमारी चाल की ओर आने के लिए उस नाके पर से ही आना पड़ता था। एक दिन वहां भीड़ देखकर कौतूहलवश मैं भी पहुंच गया। एक किसान से चुंगी-बाबू झगड़ रहा था। किसान के पास चुंगी चुकाने के लिए पैसे नहीं थे। सो वह उससे पैसे के बदले बैंगन ले लेने का अनरोध कर रहा था।

दर्शकों में से कोई बोला—'गरीब है बेचारा! बैंगन लेकर छोड़ दो उसे।'

चुंगी-बाबू ने जवाब दिया—'यह नहीं हो सकता। अगर अभी उसके पास चुंगी चुकाने के लिए पैसा नहीं है, तो बैंगन बेचने के बाद दे जाये। इतनी सुविधा मैं उसे जरूर दे सकता हूं।'

बोलते समय उसका स्वर बारीक हो गया। उसके हाथ आवेश में हिल उठे। उसकी एक आंख जोर से चमकी। वह अपनी जिद नहीं छोड़ेगा, यह बात सबने जान ली।

उसी वक्त मैंने उसे पहली दफा देखा। वह एकदम ठिगने कद का था। चेहरा चेचक के दागों से भरा। चेचक से ही गयी हुई एक आंख मेरी नजर में तुरंत आ गयी। उसने पूरी बांह की घुटनों के नीचे तक लटकती कमीज पहन रखी थी। कफ को धागे से बांध रखा था। कमीज के नीचे से पाजामे की नाड़ी लटक रही थी। सिर पर खादी की टोपी थी। वह अधिकारियों के हुक्म का आंख मूंदकर पालन करने वाला आदमी था।

मैं उस घटना को एक मामूली वाकया मानकर भुला देता। मगर उस किसान ने चुंगी के पैसे चुकाये अथवा नहीं, इसे जानने की उत्कंठा से मैं दूसरी बार नाके पर पहुंचा। पता चला, किसान ने ईमानदारी से पैसे अदा कर दिये।

न जाने किस अजीब आकर्षण में बंधकर मैं बीच-बीच में उसके पास जाने लगा। वह भी मेरी बहन की नाईं कुरूप था। उसकी बदसूरती से भी मेरे मन में घृणा उत्पन्न होनी चाहिये थी। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। एक ही लीक पर चलने वाली उसकी दृढ़ता, नाटे शरीर में न समाने वाला उसका आवेश और जिद ही मुझे वहां खींच ले जाती थी।

जब मैं दूसरी बार वहां गया, तो उसने डेस्क पर की एक कापी झट से छिपा ली। मैं दीवार के सहारे बैठ गया। मैंने खपरे की छत को देखते हुए कहा—'गर्मी के दिनों में तो यहां ज्यादा उमस होती होगी?'

उसने जवाब दिया—'नीम के उस पेड़ की छाया आती है, इसलिए उतनी महसूस नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होती।'

डेस्क पर पड़ी एक कापी मैंने उठायी। उसके पन्ने पलटे। सब पर श्रीराम-श्रीराम लिखा था।

मैंने पूछा—'बहुत भक्ति करते हो, भगवान की।'

बोला—'मेरे जैसों के लिए तो वही एक सहारा है। मैं ऐसा क्यों पैदा हुआ? चेचक से मेरी एक आंख क्यों चली गयी? शारीरिक विकृति ने मेरी पढ़ाई रोक दी। नौकरी मांगने जाता हूं, तो लोग दरवाजे से ही मुझे वापस लौटा देते हैं। जिसने मुझे पैदा किया, वही मेरा पालनकर्ता है। शरीर को तो मैं बड़ा कर नहीं सकता। मगर मन को बड़ा करना मेरे हाथ में है। जहां तक बन पड़े, दूसरों की भलाई करूं, यही मेरी अभिलाषा है।'

छिपायी गयी कापी की याद आने पर मैंने उसे ताना मारा—'क्या तुम प्रेम-पत्र भी लिखते हो?'

हंसकर उसने जवाब दिया—'क्या आप सोचते हैं कि मेरे-जैसे आदमी से कोई प्रेम करेगा? मुझे देखकर तो पुरुष भी दूर भागते हैं। मुझसे इस तरह आत्मीयता से बात करने वाले आप ही पहले पुरुष हैं। उस दिन देखा नहीं था? सब कैसे दूर-दूर खड़े थे। मेरे निकट आने के डर से किसान झट से चुंगी के पैसे डालकर चले जाते हैं। मेरे समीप आने की अपेक्षा चुंगी के पैसे चुकाना उन्हें अच्छा लगता है।'

'प्रेम-पत्र की बात छोड़ो। लेकिन क्या लिखते हो, सच-सच बताओ। कविता... हो क्या?'

'क्या मैं इतना पढ़ा-लिखा हूं? ... इतना जोर दे रहे हैं, तो दिखा देता ... लेकिन हंसियेगा नहीं।'

उसने सकुचाते हुए एक कागज ... सामने रख दिया। मैंने उसे उठाया। ... तिरछी रेखाओं में अगड़म-बगड़म ... था। एक कोने में लड़की का माथा, ... बाल तथा आंखें थीं। 'पुनश्च हरि ...' बार लिखा था। उड़ते पक्षी का चित्र ... बनाया था। अंग्रेजी में ए, बी, सी, डी ... ही अक्षर लिखे थे। दायें कोने में अमरीका, ... चीन, इंग्लैंड, रशिया इन राष्ट्रों के ... लिखे थे।

मैं हंसने लगा। उसने झेंपते हुए कहा— 'मैंने तो पहले ही कहा था कि आप ... हंसेंगे।'

मैंने हंसते-हंसते ही उत्सुकता प्रकट ... 'यह सब क्या है?'

'जो-जो मन में आया, लिख दि... अकेला मन कहां और कैसे भटकता ... देखिये!' फिर कुछ क्षण रुककर बोला— 'मेरे मां-बाप मर गये। उनकी सजी-... गृहस्थी धूल खा रही है। उसका मेरे लिए ... कोई उपयोग नहीं। कौन चूल्हा-... करेगा? बाहर खाता हूं। मां के कुछ ... पड़े हैं। बाप की जमा की हुई कुछ ... भी है। सबको बांट-बूंटकर किसी ... में जाकर रहूंगा। शांति मिलेगी। मेरी ... सूरती देखकर वहां कोई हंसेगा तो नहीं ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घृणा तो नहीं करेगा। क्योंकि वहां तो सर्वत्र कुरूपता देखने की आदत हो जाती है।'

इसके बाद कई मर्तबा मैंने उसे डेस्क पर झुककर लिखते देखा था। मेरा कुतूहल शांत हो गया। मैंने उसकी क्षमता नाप ली थी। वह 'नमः शिवाय' के अतिरिक्त और क्या लिख सकेगा?

परंतु मेरा यह अनुमान गलत निकला। मुझे उसके डेस्क का प्रत्येक कागज पढ़कर देखना चाहिये था। कम से कम नाके पर बैठने के बाद अथवा नाके के समीप आते हुए अथवा नाके के पास खड़े होकर मुझे अपनी चाल की खिड़कियों की ओर देखना चाहिये था। उस वक्त मेरी बहन सदा की भांति खिड़की में बैठी मुझे दिखाई देती। उसकी आंखों के बदलते रंग काश मैं जान पाता! जो कागज उसने छिपाये थे, निश्चय ही वे मेरी बहन के प्रेमपत्र थे।

एक दिन मेरे वहां पहुंचते ही उसने एक कागज मेरे सामने बढ़ाया। उसे पढ़ते ही मेरा सिर जोर से चकराने लगा। मेरी कनपटियां गरम हो गयीं। पांवों तले से जमीन खिसकती-सी लगी। कुछ क्षण तक मेरी नजरें कागज पर ही जमी रहीं। वह भी मेरी ओर अपलक देख रहा था।

उसने लिखा था—'आपकी बहन के साथ शादी करने की मेरी इच्छा है। वह भी राजी है।' उस पंक्ति पर से नजर हटाकर मैंने अपनी चाल की ओर देखा। खिड़की की सलाखें पकड़कर मेरी बहन खड़ी थी। मुझे देखते ही वह भीतर भाग गयी।

मुझे तेजी से बाहर निकलते देखकर वह दीनता से बोला—'उसे मारना मत, हम दोनों का सच्चा प्रेम है।'

उसका कागज हाथ में पकड़े मैं चाल की ओर तेजी से बढ़ा। मेरी नजरें अपनी खिड़की पर स्थिर थीं। अब खिड़की खाली थी। घर पहुंचने तक मेरा दिमाग विचारों के तूफान में डूबता-उतरता रहा।

यह सब कब तय हुआ? खिड़की में बैठकर उसने प्रेम की यह आग जलायी होगी। दोनों के बीच नजरों का आदान-प्रदान हुआ होगा। दोनों एक दूसरे को देखकर हंसे भी होंगे। पहले तो यही उसे देखकर हंसी होगी अपनी आदत के अनुसार। मेरी अनुपस्थिति में शायद यह नाके के कमरे पर भी गयी होगी। इसने ही पहला प्रेमपत्र लिखा होगा। वह तो डरपोक शरमीला लगता है। फिर उसने भी पत्र का जवाब दिया होगा।

उनके प्रेमपत्र, उनकी मुलाकातें—यह कल्पना भी मुझे बेहद घिनौनी लगी। इन सबके फलस्वरूप होने वाले उनके विवाह का अंत मेरी कल्पना में और भी बीभत्स था। मेरा मन कह रहा था, ऐसे लोगों को विवाह की क्या जरूरत है? यदि उनकी संतानें भी उनके जैसी हुईं, तो उनका क्या होगा? फिर और आगे चलकर संतानों के भी वैसे ही बच्चे पैदा हुए तो? तब तो समूचा गांव छह उंगलियों वाले बदसूरत बौनों से भर जायेगा।

मैं सिहर उठा। यदि मैं बहन की पिटाई करूं तो यह शादी टूट जायेगी, यह मैं जानता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। पर इस शादी को मैंने अपनी नजर से न देखकर अपने मां-बाप की नजर से देखा। मां को तो इससे बहुत खुशी होती। उस खुशी की बात सोचने पर भी शादी की वास्तविकता मुझे असह्य लगने लगी। दो बदसूरत व्यक्तियों का चार स्वस्थ-सामान्य लोगों की तरह शादी करने का निश्चय करना मेरी राय में संसार का सबसे तिरस्करणीय कर्म था।

मैं किवाड़ ठेलकर भीतर आया। बहन का वहां पता न था। मेरे डर के मारे वह भीतर के कमरे में अंधेरे कोने में छिप गयी थी। बचपन में भी मां की मार से बचने के लिए वह उसी कोने में जा छिपती थी।

पलंग के पास आकर मैं क्रोध में भरकर चिल्लाया–'चिमा, बाहर निकल आ!'

थरथराती वह बाहर निकली और मुंह पर हाथ रखकर खड़ी हो गयी। उसकी आंखों में भय के बजाय सजा भुगतने के कठोर निश्चय की झलक देखकर मैं विस्मित हो गया। अपना क्रोधावेश संयत करके मैं बोला–'यहां से दूर किसी तीर्थ में चलकर तेरा ब्याह कर दूंगा। डर मत....मैं तुझे पीटूंगा नहीं।'

वह दौड़कर खिड़की के पास गयी और बाहर देखने लगी। बहन की शादी करने के बाद मैंने उसे जगजाहिर भी कर दिया। उसके बाद मेरी भी शादी हो गयी। विवाह तय हो जाने के बाद ही मैंने पत्नी से बहन के बारे में बताया था। जब मैंने पत्नी से बहन-बहनोई की मुलाकात करायी, तब उसका रंग सफेद पड़ गया।

उसी क्षण से वह बहन के प्रति घोर [illegible] प्रकट करने लगी। उसने निश्चयात्मक [illegible] में कहा–'तुम जब चाहो अपनी [illegible] यहां जा सकते हो। लेकिन उन दोनों [illegible] मैं अपने घर में नहीं आने दूंगी। [illegible] देती हूं।'

उसके चेहरे पर विषाद की गहरी [illegible] फैल गयी। मैंने उसके साथ विश्वा[illegible] किया, यह भावना उसके हृदय को [illegible] जा रही थी। बहन के साथ मैंने [illegible] निर्दयता का बरताव किया था। [illegible] पत्नी की क्रूरता मुझे अच्छी नहीं [illegible] किंतु कुछ कह नहीं सकता था। [illegible] उनकी शादी मैंने चुपके-से दूसरे स्था[illegible] जाकर जो करायी थी, संकोच व [illegible] मारे ही तो?

विवाह के बाद मैं पहले तो हर चार[illegible] के बाद, फिर सप्ताह में एक बार और [illegible] महीने में एक बार बहन को देखने [illegible] था। रात को भोजन के बाद अंधेरे [illegible] उसके यहां जाता था।

जब मैं दरवाजे पर दस्तक देता, [illegible] वह बिस्तर में होती। दरवाजा खुलने [illegible] मैं उनके चेहरों पर तृप्ति का आनंद दे[illegible] कृत्रिम हंसी मेरे ओंठों पर आ जाती [illegible] बनावटी मजाक करने का प्रयास [illegible] लेकिन उनके बौने शरीरों को देखकर [illegible] के शब्द जैसे गले में ही गल जाते थे। [illegible] रात को वह मेरे लिए कोई न कोई [illegible] चीज बनाती थी।

अगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा नकली परिहास जरूर उन दोनों के मन को चोट पहुंचाता होगा। परंतु उन्होंने कभी यह प्रकट नहीं होने दिया। पहली बार बहन ने पूछा था—'भाभी को क्यों नहीं लाये?'

'नहीं लाया—बस!' जिस ढंग से मैंने उसके सवाल को उड़ा दिया। उससे वह ताड़ गयी कि उसकी भाभी उसके बारे में कैसे खयाल रखती होगी। बाद में वह केवल इतना ही कहती—'एक बार तो भाभी को यहां लाना।'

उसकी भाभी कभी उसके यहां नहीं गयी। अलबत्ता वे दोनों एक बार सत्य-नारायण का प्रसाद लेने मेरे यहां आये थे। मेरी पत्नी उनसे सिर्फ चार शब्द बोली। उसने उन्हें चाय पिलायी थी, प्रसाद दिया था और उनके चले जाने के बाद उनकी चाय की प्यालियां अलग एक कोने में रख दी थीं। मुझे भी बहन के हाथ का खाने में घिन लगती थी। पत्नी को दोष देने का अधिकार मुझे नहीं था।

मेरी पत्नी के मन में उन दोनों के प्रति नफरत इतनी ज्यादा बढ़ गयी कि उसने नाके की ओर खुलने वाली खिड़की ही बंद करवा दी।

मेरी पत्नी गर्भवती हुई। अब वह अधिक क्रोधी एवं जिद्दी बन गयी थी। एक रात तो वह फूट-फूटकर रोयी। मेरे बार-बार पूछने पर बोली—'मेरे बच्चे पर तुम्हारी मनहूस बहन की छाया भी नहीं पड़नी चाहिये।'

बाद में उसने जिद पकड़ी कि या तो मैं तबादला करा लूं, या बहन को किसी दूसरे गांव भेज दूं। उसने अपना संकल्प घोषित कर दिया—'मेरा बच्चा पैदा होने के बाद वे दोनों इस गांव में न रहने पायें।'

पत्नी को छठा महीना लगा था। मैंने जी-तोड़ कोशिश करके बहनोई को अपने बैंक में अर्दली की नौकरी दिलवा दी, फिर अगले महीने उसका तबादला दूसरे शहर की शाखा में करवा दिया।

उनका सामान बंधवाने, रवाना करने में मैंने मदद की। बहन ने जाते समय भाभी से मिलने की इच्छा प्रकट की थी। लेकिन मैंने ही उसके बीमार होने का बहाना बनाकर बरज दिया। दोनों के चले जाने के बाद पत्नी ने नाके वाली खिड़की फिर से खोल दी। उसका मनस्ताप कम हो गया। इस तरह तीन वर्ष बीत गये। बहन की चिट्ठियां आती रहीं।

एक दिन मुझे तार मिला। दोनों सख्त बीमार थे। मैं तत्काल रवाना हुआ, लेकिन मेरे वहां पहुंचने के पहले सब कुछ समाप्त हो गया था। असल में दोनों ने आत्महत्या कर ली थी। मेरे नाम एक चिट्ठी लिख गये थे। दोनों का अंतिम संस्कार करके मैं वापस लौटा।

क्या हमारे तिरस्कार के फलस्वरूप ही उन्होंने अपना जीवन इस तरह समाप्त कर लिया? गाड़ी में मैं रोया। उन दोनों ने ऐसी कुरूप काया में क्यों जन्म लिया? इसका उत्तर किसी के पास नहीं था। उनकी असुंदरता से हमने इतनी नफरत क्यों की?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरी, मेरी पत्नी को तथा अन्य लोगों की नफरत के जहर ने उनका जीना नरक बना डाला था। उससे मुक्ति पाने के लिए उन्होंने आत्महत्या का मार्ग अपनाया। उन दोनों का मन सुंदर है, यह मैं जानता था। हमारी तरह उनकी भावनाएं भी सजग-उत्कट थीं। उनका प्रेम, राग, लोभ हमारे जैसा ही था। लेकिन चारों ओर से बरसने वाली घृणा ने उनकी जानें ले लीं।

हमें शायद इसका एहसास नहीं होगा। परंतु हर छोटे-बड़े जीव के लिए उसके अपने अस्तित्व का महत्त्व होता है। चींटी को भी अपनी जिंदगी प्यारी होती है। मेरे सदृश प्राणों का दूसरों के लिए महत्त्व न हो, परंतु परमात्मा के लिए निश्चित ही होगा।

अब बहन-बहनोई का नाम हमारे कभी नहीं पड़ेगा। अब कहीं पर भी मुठभेड़ हो जाने का डर शेष नहीं। पत्नी को भी अब अपने लड़के को मेरे का स्पर्श होने की आशंका नहीं।

मेरे हृदय का भारी बोझ टूट नि:संकोच-निर्भय जीने के लिए मैं पूर्ण स्वतंत्र हो गया।

★

किसी ने मुझसे कहा–'दुनिया में तुम्हारे तीन प्रकार के मित्र हैं–वे जो तुम्हें करते हैं; वे जो तुम्हारी बिलकुल फिक्र नहीं करते; वे जो तुमसे द्वेष करते हैं।

किसी ने कहा है कि प्राचीन पुस्तकों में से चुराना भूमध्य रेखा के उस पार डालने की तरह है; मगर आधुनिक लेखकों की रचनाओं में से चुराना गली के नुक्कड़ जेब काटने जैसा।

संसार से निवृत्त एक दार्शनिक महानुभाव ने मुझे दुनियावी नसीहतों से भरा पत्र लिखा। उसके अंत में ये शब्द थे–'अलविदा मेरे मित्र, जो दिलचस्पियां तुम्हें बांधती हैं उन्हें जहां तक बन पड़े, बनाये रखो; मगर उन भावनाओं का विकास तुम्हें समाज से काट देती हैं।'

'एम.' को उनके एकांत प्रेम के लिए आड़े हाथ लिया गया। वे बोले–'बात ऐसी है दूसरों के अवगुणों की अपेक्षा मैं अपने अवगुणों का अधिक अभ्यस्त हूं।'

मदाम रोश फोर्ट से पूछा गया कि क्या आप अपना भविष्य जानने को उत्सुक बोलीं–'नहीं, वह अतीत से बहुत मिलता है।'

'एम. एन.' से मैंने पूछा कि आजकल आपने सभा-सोसायटी में आना-जाना दिया है। बोले–'स्त्रियों में मुझे दिलचस्पी नहीं रही; पुरुषों को मैं जानता हूं।'

मैं एक मानव-द्वेषी को जानता था, जो अच्छे मूड में आने पर कहा करता था– दुनिया के किसी कोने में कोई एकदम गुमनाम ईमानदार आदमी का अचानक पता चल तो मुझे बिलकुल अचरज न होगा।'

—सेबास्तियन रोश निकोला शाम्फोर

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पश्चात्ताप मेरे आगे

• नीला चावला •

कुछ वर्ष पूर्व भातखंडे संगीत महाविद्यालय में नेत्रहीन विद्यार्थियों को थ्योरी के पेपर के लिए लिपिक मुहैया किये जाते थे। व्यक्तिगत रूप से परीक्षा में सम्मिलित होने वाले छात्रों को लिपिक कालेज देता था और उसका पारिश्रमिक छात्र को पहले ही जमा करा देना होता था। मैं उस वर्ष द्वितीय वर्ष की छात्रा थी, पर कालेज के इन नियमों से अपरिचित थी। एक दिन पुस्तकालय में बैठी पढ़ रही थी कि चपरासी एक नोटिस लेकर आया। नोटिस कुछ इस प्रकार था—'नेत्रहीन विद्यार्थियों के उत्तर-पत्र लिखने के लिए लिपिकों की आवश्यकता है। जो विद्यार्थी इसमें सहयोग देना चाहें, वे पुस्तकालयाध्यक्ष श्री सिंह के पास अपना नाम-पता लिखवा दें। याद रखें, यह पुण्य कार्य है और इसमें सबको स्वेच्छया सहयोग देना चाहिये। —प्राचार्य।'

नोटिस पढ़कर न जाने क्यों एक अनाम पीड़ा मेरे अंदर उबलने लगी और मुझे कोई जवाब नहीं सूझा। चपरासी ने यही समझा कि औरों की तरह मैं भी शायद नकारात्मक उत्तर दूंगी, सो चुपचाप चला गया। नाम उस दिन देने आवश्यक थे। और यह भी नियम था कि 'राइटर' ऐसे हों, जो परीक्षार्थी से निचली क्लास के हों और जो प्रश्न हल करने में अपनी ओर से किसी प्रकार की सहायता न कर सकें। मैंने एक स्लिप पर अपना नाम, पता, कक्षा आदि लिखकर सिंह साहब के पास भिजवा दिया।

जिस परीक्षार्थी का पर्चा लिखने के लिए मुझे नियुक्त किया गया, वह पांचवें वर्ष का था और काफी दूर से किसी जगह से आया था—इस आशा के साथ कि इस महत्त्वपूर्ण परीक्षा में प्रथम श्रेणी आ जाये तो नौकरी मिलने में सुविधा रहेगी। मौखिक-परीक्षा उसकी बहुत अच्छी गयी; मगर लिखित में वह बहुत घबराहट अनुभव कर रहा था। उसने मुझे छूकर 'देखने' की इच्छा व्यक्त की। मैंने अपना हाथ उसकी कलाई पर रख दिया। उसके मुंह से निकला—'तुम तो बहुत छोटी लगती हो, लिखना आता है?' मैं हंस पड़ी और धीमे-से उसका हाथ थपथपाकर बोली—'मैंने इसी वर्ष इंटर की परीक्षा दी है।' उसे सांत्वना मिली, पता नहीं मेरी बात से या स्पर्श से।

वह बोलता रहा, मैं लिखती रही। एक प्रश्न पर वह बार-बार हाथ पर ठेका देता और उसके मुंह से सरगम के टुकड़े निकलते, सिर को झटका देकर वह मुझे लिखने से बरजता। मैं समझ गयी कि अतिशय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरी एयरलाइनों के मुक़ाबले एयर-इंडिया अब आपके ज़्यादा क़रीब है!

भारत भर में स्थित ४० दफ़्तर. आपकी बेहतर और तत्पर सेवा के लिए.

आगरा
फ़ोन : ७३४३४
अहमदाबाद
फ़ोन : २३१००, २२२३२
अमृतसर
फ़ोन : ४६१२२
बैंगलोर
फ़ोन : ७५१४३, ७५१४४
बड़ोदा
फ़ोन : ६५६७९
भोपाल
फ़ोन : ६११५५
भुबनेश्वर
फ़ोन : ५०५३३, ५०५४४
बंबई
फ़ोन : २९९६९६
कलकत्ता
फ़ोन : ४४-२३५९
चंडीगढ़
फ़ोन : २८२१२

कोचिन
फ़ोन : ३१२९५
कोयम्बतूर
फ़ोन : २३९३३
दार्जिलिंग
फ़ोन : ३५५
दिल्ली
फ़ोन : ४४२११
दुर्गापुर
फ़ोन : २४८०
गोआ
फ़ोन : ३०८१
हैदराबाद
फ़ोन : ३६७४७, ३३७८७
इंदौर
फ़ोन : ५३५५
जयपुर
फ़ोन : ६५५५९
जमशेदपुर
फ़ोन : ३८०९

जोरहाट
फ़ोन : ११२८
जालंधर
फ़ोन २६६९
कानपुर
फ़ोन : ६४४३२
लखनऊ
फ़ोन : २६१७१
लुधियाना
फ़ोन : २०२१
मद्रास
फ़ोन : ८६१९३
मदुरई
फ़ोन : २४९४७
मंगलोर
फ़ोन : ४६६९
मोगा
फ़ोन : २८५३
मुरादाबाद
फ़ोन : १२९४

नागपुर
फ़ोन : ३३२४१, ३३९११
नवांशहर
फ़ोन : १०२
पटना
फ़ोन : २२७१९
पूना
फ़ोन : २६३३१
रांची
फ़ोन : २१८४१
श्रीनगर
फ़ोन : ६१४१
सूरत
फ़ोन : २८७५९
त्रिवेन्द्रम
फ़ोन : ६१७७१
वाराणसी
फ़ोन : ६४१४६, ६६११६
विशाखापट्टनम
फ़ोन : ४६६५

इनमें से किसी भी दफ़्तर या अपने ट्रैवल एजेंट से संपर्क कीजिए.

एयर-इंडिया

AI.1216

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घबराहट के कारण वह भूल रहा है। मैंने प्रश्न-पत्र ध्यान से पढ़ा। पांचवें वर्ष की स्वरलिपि लिख लेना द्वितीय वर्ष के छात्र के लिए वास्तव में दुष्कर होता है। और समय था कि पर लगाकर उड़ रहा था। एक लेखनुमा सामान्य-ज्ञान का प्रश्न था। मैंने सुझाव दिया क्यों न उसे किया जाये। वह बोला–'वह ? मैं तो उसका क-ख भी नहीं जानता।' परोक्ष रूप से अनजाने ही उसकी नेत्रहीनता पर चोट हो गयी थी। प्रश्न कदाचित संगीत और प्रकृति था या ऐसा ही कुछ जिससे दृश्य जगत जुड़ जाता है। ग्लानि से मन भर गया। अंततः मैंने उससे कहा कि निरंतर हथेली पर ठेका देते रहो तथा कुछ न कुछ बोलते रहो, और कलम चालू कर दी। अंतिम दो-तीन मिनटों में जब लिखित लेख उसे पढ़कर सुनाया तो उसका चेहरा खुशी से चमक उठा। क्योंकि स्वरलिपि अभी तक सुधि में लौटी नहीं थी और निरीक्षकों की निगरानी तीव्र हो उठी थी। उसने मानो मूक भाव से ईश्वर को धन्यवाद दिया। कापी जमा करके दोनों बाहर निकल आये। मेरी बस सामने खड़ी थी, मैं लपककर चढ़ गयी और हमारी कोई बातचीत न हो पायी।

पंद्रह दिन बाद जब मैं कालेज पहुंची तो कैशियर का बुलावा आया। फीस मैं पहले ही जमा करा चुकी थी, अतः आश्चर्य लिये वहां पहुंची। वहां कुछ रुपये मुझे दिये गये और हस्ताक्षर लिये गये। पूछा तो बताया गया कि ये राइटर का काम करने के पैसे हैं। मैंने पैसों के लिए यह काम किया नहीं था। श्री सिंह के पास पहुंची और उनसे खूब लड़ी। वे समझाते रहे कि पैसे देने पर भी शुद्ध लिखने वाले राइटर नहीं मिलते और परीक्षार्थियों का नुक्सान होता है, इसलिए ऐसी व्यवस्था करनी पड़ी है। मगर मुझे तो बार-बार यही लग रहा था– इनसे वह बेचारा एक कमीज बनवा सकता था। कितने पुराने कपड़े थे उसके। मैंने उसकी विवशता का अनुचित लाभ उठाया है। निदान एक नेत्रहीन गरीब को वे पैसे देकर छुट्टी पायी।

दूसरे दिन उस विद्यार्थी का पता बहुत खोजा पर व्यर्थ। कालेज में यदि उसका स्थानीय पता था, तो भी कालेज के नियमों के अनुसार नहीं मिल सकता था।

समय उड़ता रहा, परीक्षाफल घोषित हुए। और एक दिन कालेज के गेट से निकलते हुए किसी ने हाथ पकड़ लिया। पलटकर देखा तो वही परीक्षार्थी। उसने बताया कि घ्राण-शक्ति द्वारा उसने मुझे पहचाना था। बोला–'मैं प्रथम आया हूं। आपकी कृपा से। इसलिए आपको ......'

'सच्च ?' मैंने अपनी खुशी को छलकते देखा। पर दूसरे ही पल मैं उदास हो गयी; क्योंकि मेरे पास बस-किराये के २० पैसे-भर थे और उसका देय मैं लौटा नहीं सकती थी। मैंने उसका पता पूछा तो टाल गया। पर बोला–'मुझे तो नौकरी भी मिल गयी है ! सब आपकी कृपा ...'**–चावला स्टोर्स,**

बाबगंज, फैजाबाद रोड, लखनऊ

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रंथ-लोक

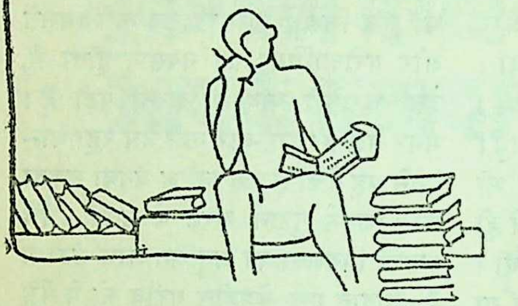

* भारतीय चलचित्र का इतिहास
* भारतीय लोकनाटय-वस्तु और ...
* एक दुर्लभ व्यक्तित्व
* हास्यम् (वार्षिकी)
* रथचक्र
* श्यामसुंदर दास जन्मशती ... सम्मेलन पत्रिका

*** भारतीय चलचित्र का इतिहास * फिरोज रंगूनवाला; राजपाल एंड सन्स कश्मीरी गेट, दिल्ली-६; १४४ पृष्ठ; १२ रुपये ५० पैसे।**

जैसा कि नाम से ही प्रकट होता है, लेखक ने भारतीय सिनेमा के आरंभ से लेकर अब तक की गतिविधि को बड़े परिश्रम से इस पुस्तक में संजोया है। जिन्हें इस कला में, इस उद्योग में दिलचस्पी है वे इस पुस्तक से निश्चय ही लाभान्वित होंगे। सच तो यह है कि इतने कम पृष्ठों में इतने बड़े इतिहास को पिरोना अपने आपमें कमाल है।

पृष्ठ ५४ पर लिखा गया है—'सरस्वती फिल्म कंपनी के बंद होने के बाद जिसकी आखिरी फिल्म "सामाजिक डाकू" (बंबई की रातें) थी, भोगीलाल दवे ने नानाभाई देसाई को अपना साझीदार और डाइरेक्टर बना लिया और अपने चचेरे भाई माया-शंकर भट्ट से पैसे का इंतजाम किया।' यहां 'चचेरे भाई' शब्द शायद अंग्रेजी के 'कजिन' का अनुवाद है। मायाशंकर भट्ट अ... भोगीलाल दवे के फुफेरे भाई थे नकि चचे... गलती छोटी है, मगर उससे बचा जा सक... था। एक बात और, मूल पुस्तक अ... अंग्रेजी में लिखी गयी है तो अनुवादक... नाम नहीं दिया गया है। —सुरेश ...

०००

*** भारतीय लोकनाटय : वस्तु और शि... देवीलाल सामर; भारतीय लोक कला मं... उदयपुर, राजस्थान; १२४ पृष्ठ; १० ...**

हमारे देश के विविध अंचलों में लो... नाटयों की बड़ी समृद्ध परंपराएं हैं... बंगाल की जात्रा; हरियाणा का स्वां... असम का अंकिया; महाराष्ट्र का गों... तमाशा, दशावतार; हिमाचल का क... याला; ब्रज की रासलीला, भगत; उत्त... प्रदेश की रामलीला; गुजरात का भवा... कश्मीर का भांडपथर; मालवा का मा... राजस्थान की कठपुतली; केरल का च... ट्टु; कर्नाटक का दोड्डाटा; तमिल...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का तेरुकत्तु–इन सब विधाओं की जनपदीय रंगीनी से युक्त लोकानुरंजक जीवंतता लोकनाटच जगत् की ही नहीं, समग्र नाटच-जगत् के लिए अद्वितीय वस्तु है। इन नाटचों में भारतीय लोकमानस की अंतरंगता, एकता और इंद्रधनुषी विविधता है।

श्री देवीलाल सामर ने इन विधाओं को खूब देखा, परखा और स्वयं नाचा-गाया है। अनेक प्रयोग और प्रशिक्षण उन्होंने किये हैं। उनका चालीस वर्ष का दीर्घ गहरा, अनुभूति-परक अध्ययन-अन्वेषण ही इस कृति के रूप में प्रकट हुआ है। मेरे खयाल में पहली बार भारतीय लोकनाटचों के प्रस्तुती-करण, रंगदर्शन, आंतर गठन, कला-शिल्प, आधुनिक परिवेश तथा इनकी सही भूमि की तलाश पर इतने विस्तार से किसी लेखक ने अपना पैना और प्रखर विश्लेषण प्रस्तुत किया है। लेखक ने विदेशों में भी अपनी सांस्कृतिक यात्राओं के दौरान वहां के रंगपीठों तथा प्रयोगों को बहुत निकट से देखा है। विश्वसंदर्भ में नाटक के समग्र परिवेश को लेकर जो विचार इस कृति के अंत में पिरोये गये हैं, उनसे इन पारंपरिक नाटकों की रंगश्री का महत्त्व सहज ही आंका जा सकता है।

–डा. महेंद्र भानावत

०००

*** एक दुर्लभ व्यक्तित्व * मनोहर श्याम जोशी; पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली-५१; १४० पृष्ठ; १० रुपये।**

पुस्तक में संकलित ९ छोटी-बड़ी कहानियां, स्वयं लेखक के कथनानुसार, उनकी आरंभिक कहानियां हैं। इनमें भावुकता है; फिर भी कहानियां पठनीय हैं। वास्तविकता की झलक के साथ ही उनमें गहराई भी है और विषमताओं पर व्यंग्य भी। एक सहजता भी है। कहीं कुछ भी दुर्बोध्य नहीं। इन्हें पढ़ने का अपना एक अलग आनंद है। 'एक दुर्लभ व्यक्ति' और 'धरती, बीज और फल' औरों से अधिक अच्छी लगीं। छपाई साफ-सुथरी है, आवरण आकर्षक।

०००

*** हास्यम् (वार्षिकी), अंक-२ * संपादक : मुकुल उपाध्याय; ८१ सुनीता, पोस्ट आफिस के सामने, कोलाबा, बंबई-५; २५२ पृष्ठ; २५ रुपये।**

'सुरुचिपूर्ण हास्य और समीचीन व्यंग्य लिखने वाले तो बहुत हैं; पर लिखते नहीं'–यह कहना है 'हास्यम्' के संपादक मुकुल उपाध्याय का। मुमकिन है सही हो, न हो। किंतु सुरुचिपूर्ण हास्य और समीचीन व्यंग्य की पत्रिका निकालने वालों की हमारे यहां सख्त कमी रही है। 'हास्यम्' ने उसी कमी को दूर करने का सफल प्रयास किया है। रचनाओं में अधिकांश पठनीय और दिलचस्प हैं। व्यंग्यचित्रों से उनका सौंदर्य और बढ़ा है। वैसे कहानियां, लेख और कविताओं के साथ-साथ हास्य-नाटिकाओं का भी समावेश किया जा सकता था। 'मुकर्रर इर्शाद' के अंतर्गत चुटकुलों का संग्रह अच्छा बन पड़ा; पर कुछ चुटकुलों के भारतीयकरण में बात पूरी तरह बन नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायी है और जैसा कि स्वाभाविक है, कुछ के साथ सुपरिचितता की गंध जुड़ी है। छपाई साफ-सुथरी है; साज-सज्जा सादी पर प्रभावोत्पादक है। सब मिलाकर 'हास्यम्' बरबस मन को खींच लेता है। मूल्य कुछ कम होता, तो अधिक लोग इसका आनंद ले पाते।

०००

*** रथचक्र * हिमांशु जोशी; पांडुलिपि प्रकाशन, दिल्ली ११००५१; ११२ पृष्ठ; ८ रुपये।**

इस संग्रह की १२ कहानियां कोरी कहानियां नहीं, वरन जिंदगी के विभिन्न-पहलुओं की तस्वीरें हैं, जिनमें जीवन की वास्तविकता झलकती है। टूट-टूटकर जीने की तमन्ना लिये संघर्षरत इंसान और मुखौटा लगाकर जीने वाले इंसान, सब इन कहानियों में अपनी सहजता और स्वाभाविकता के साथ सजीव हो उठे हैं। यही विशेषता पाठकों के मन-प्राण को छू लेती है। 'कोई एक मसीहा', 'छोटी इ' और 'न जानना' शीर्षक कहानियां विशेष रूप से अच्छी बन पड़ती हैं। छपाई बढ़िया है, आवरण साधारण।

—दिनेश मि

०००

*** श्यामसुंदर दास जन्मशती विशेषांक-सम्मेलन पत्रिका * संपादक: प्रेमनारायण शुक्ल; हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग; पृष्ठ २९४; मूल्य: १५ रुपये।**

बाबू श्यामसुंदर दास मानो स्वयं में एक योजना-आयोग थे, हिंदी के विकास की सर्वांगीण योजनाएं बनाने एवं क्रियान्वित करने में आधी सदी तक व्यस्त। उनका कर्तृत्व उनकी हिंदी-भक्ति का परिचायक होने के साथ, उस युग को स्वावलंबी हिंदी के आत्मतेज का प्रतीक भी था। बाबूजी की जन्म-शताब्दी (१४ जुलाई १९७५) के एक वर्ष बाद छपे इस विशेषांक में हिंदी के वर्तमान का सर्वेक्षण और भविष्य का आकलन हो सकता था। उसके बजाय २१ संस्मरणात्मक लेख (जिनमें पुनरुक्ति काफी है) और २० शोध लेख (जिनमें एक के लेखक को देवनागरी और भारतीय वर्णमाला का अंतर पता नहीं है) जुटा दिये गये हैं। क्या हिंदी की समुन्नति के महान आयोजक को हम योजनाबद्ध श्रद्धांजलि नहीं दे सकते? —क्ष. वि.

★

जब सन १८७६ में कार्ल मार्क्स का महाग्रंथ 'पूंजी' अंग्रेजी में छपा तो 'सैटर्डे रिव्यू' नाम की अंग्रेजी पत्रिका ने मार्क्स की शैली के बारे में लिखा—'विषय का प्रस्तुतीकरण अर्थशास्त्र के नितांत शुष्क मसलों को भी एक विशिष्ट मोहकता से मंडित कर देता है।' इसके विपरीत रूस के सेन्सर विभाग ने 'पूंजी' को यह कहकर पास कर दिया—'यद्यपि पुस्तक में बहुत स्पष्ट समाजवादी रुझान है, ... तथापि (यह) जनता की समझ में आने वाली शैली में नहीं लिखी गयी है ......और आम जनता में से (इसे) बहुत पाठकों के मिलने की संभावना नहीं है।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लेखक और लेखन : संपादक की दृष्टि में

बकुल त्रिपाठी

बंबई की गुजरात साहित्य परिषद ने 'लेखक और लेखन : संपादक की दृष्टि में' परिसंवाद का आयोजन किया था। हमारी विशेष सूचना पर उस परिसंवाद में अनुपस्थित रहे हमारे विशेष प्रतिनिधि द्वारा एकत्र किये गये कतिपय मौक्तिक और अवतरण नीचे दे रहे हैं।

× × ×

संपादक का काम कौए का-सा है। कौए के घोंसले में उसके अंडों के साथ ही कोयल के अंडे भी सेये जाते हैं। संपादकों को भी किस्म-किस्म के उदीयमान लेखकों को पालना-पोसना पड़ता है। उनमें से जो उत्तम होते हैं, वे कोयल के बच्चे की तरह बड़े होते ही कुहू-कुहू करते हुए उड़ जाते हैं, जबकि कांव-कांव करते काक-बच्चे घोंसले को गुंजाते वहीं पड़े रहते हैं।

उदीयमान लेखक जब अपने को उदित लेखक मान लेता है, तब वह अपना संपादक बदल लेता है। जिस संपादक ने उसके जन्म के लिए दाई का काम किया, उसके यहां रचनाएं छपवाते रहने में उसे हेठी महसूस होती है—दूसरे संपादक के पास जाने में वह अपने को प्रतिष्ठित अनुभव करता है।

× × ×

दान देने में ना करने वाले तो दुनिया में लाखों हैं, मगर कुछ देने के लिए आने वाले को निरंतर नकार सुनाने वाला वीर तो बस एक ही है—पत्रिका का संपादक !

× × ×

संपादकपन एक मर्ज है। संपादक होना सरासर घाटे का सौदा है, तो भी संपादक बनने का शौक जूड़ी के ताप की तरह बहुतों को चढ़ता है। चेचक आदि की तरह 'एन्टी-एडिटर फीवर' टीका बच्चों को लगाना जब तक अनिवार्य न कर दिया जाये, तब तक समाज से इस रोग का उन्मूलन होने वाला नहीं है।

× × ×

उदीयमान लेखक की तीन गतियां संभव हैं। यदि वह उत्तम गुणों वाला है, तो वह महान लेखक बनता है, जिससे वह सुखी होता है। कनिष्ठ गुणों वाला होता है, तो लिखना छोड़कर किसी धंधे से लग जाता है, जिससे उसकी पत्नी सुखी होती है। लेकिन अगर वह मध्यम श्रेणी का हो तो ? तो वह लेखक न रहकर कोई पत्रिका निकालकर उसका संपादक बन जाता है ! इसके

गुजराती से अनुवाद : गिरिजाशंकर त्रिवेदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Zenlon

विविध किस्मों के
प्राकृतिक, रासायनिक व
मानव निर्मित
बुनाई के सूत

परदे, गाद्दियां व कवर बनाने के लिए मुलायम और बहुरंगी • क्रोशेसेटों के लिए सुंदर और चमकदार • वसन्त मे लचीले और नमीसोख

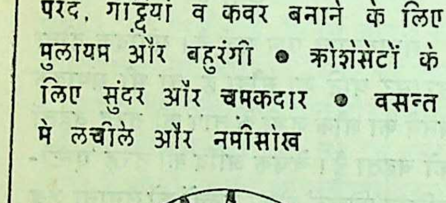

स्टेपल फाइबर विभाग
बिरला ज्यूट मैन्युफैक्चरिंग
कं. लि.
९/१ आर. एन. मुकर्जी रोड
कलकत्ता—७०० ००१

कपड़ों की उज
धुलाई के लिये

चाँदनी
साबुन

निर्माता -
बरार ऑयल इंडस्ट्रीज
अकोला (महाराष्ट्र)

वाद
उसक

श्र
एक ह
१००
गोपी
रास

सं
उदीय
लेखक
केवल
रने,स
संपाद
ब
नहीं ह

यि
सुधार
कानून
वाले
(बशते

संप
वह है,
है यह
बहुत-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद तो न वह कभी सुखी होता है और न उसकी पत्नी कभी सुखी होती है।

× × ×

श्रीकृष्ण के विषय में कहा जाता है कि एक होते हुए भी वे १००८ रूप धारण करके १००८ गोपियों को रिझा सकते थे। प्रत्येक गोपी यही मानती कि कृष्ण केवल मेरे संग रास रचा रहे हैं।

संपादक स्वयं तो एक ही होता है और उदीयमान लेखक दर्जनों होते हैं। प्रत्येक लेखक यह मानने को उत्सुक रहता है कि केवल उस अकेले की कहानियां पढ़ने, सुधारने, सजाने-संवारने, विवेचना करने के सिवा संपादक को दूसरा कोई काम नहीं होता।

बदकिस्मती यह है कि संपादक श्रीकृष्ण नहीं होता!

× × ×

यदि संपादकों को भारत का संविधान सुधारने का काम सौंपा जाये तो वे पहला कानून यह बनायेंगे कि खराब अक्षर लिखने वाले को भारत से जलावतन कर दिया जाये (बशर्ते वह संपादक न हो।)।

× × ×

संपादक की दृष्टि में उदीयमान लेखक वह है, जो लेख भेजे, वह छप क्यों नहीं रहा है यह पूछने के लिए पत्र पर पत्र लिखकर बहुत-सा डाकखर्च करे, मगर एक बार भी उत्तर के लिए टिकट न भेजे।

संपादक की दृष्टि में उदित लेखक वह है, जो लेख भेजे, उत्तर के लिए टिकट न भेजे, एक महीने के अंदर लेख न छपने पर उसे अस्वीकृत मानकर दूसरे के पास भेज दे, ताकि जब लेख प्रकाशित हो, तो एक साथ दो जगह प्रकाशित हो।

संपादक की दृष्टि में प्रौढ़ लेखक वह है, जो लेख भेजे, लेख छपने पर पारिश्रमिक स्वीकारे, पर पारिश्रमिक-प्राप्ति की रसीद न भेजे—संपादक रिमाइंडर पर रिमाइंडर भेजता रहे तो भी नहीं।

× × ×

पाठकों की दृष्टि में संपादक: दूध-सूखी गायों जैसे लेखकों को दुहने का निरर्थक प्रयत्न करने वाला पुरुषार्थी।

लेखक की दृष्टि में संपादक: पाठक-रूपी गाय को लेखक-रूपी ग्वाले से दुहवाकर सारा घी-दूध स्वयं खा जाने वाला सेवाभावी।

रद्दी वाले की नजर में संपादक: दूसरों (अर्थात् रद्दी वाला) की खातिर अपने को खपा देने वाला दैवी पुरुष!

पत्नी की दृष्टि में संपादक: जिनका लिखा किसी को पढ़ना नहीं है, उनके लिखे को जिन्हें किसी का लिखा पढ़ना नहीं है ऐसों को पढ़ाने में खुद तबाह हो जाने वाला पूर्ण आशावादी! ['जन्मभूमि' से]

★

परिभाषाएं

आरामकुर्सी: जो कठिनाई से ही खाली मिलती है।

बस: जो हमेशा उलटी दिशा में खाली जाती हुई नजर आती है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

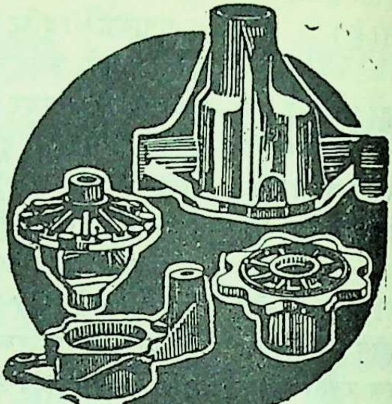

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

का आपको निमंत्रण है, आयात प्रतिस्थापन को सफल बनाइये

एस० जी० आइरन के कास्टिंग

कांसा, पीतल, गनमेटल या लौहेतर धातुओं तथा इस्पात के पुर्जों व हिस्सों का स्थान ले सकते हैं।

मैलिएबल आइरन के कास्टिंग

अनेक प्रकार की चीजों में इस्पात के कास्टिंग का काम दे सकते हैं।

एस. जी. आइरन और मैलिएबल आइरन के कास्टिंगों में उच्च भौतिक गुण होते हैं, वे खरीदने में सुगम, दृढ़ एवं तन्यतायुक्त होते हैं, उनमें घिसाव कम होता है।

IS

संपर्क कीजिये :

फेरसफाउंड्री, पंचपाखाड़ी, पहला पोखरनलेन, थाना (महाराष्ट्र) उच्च श्रेणी के कास्टिंग्स् व बचत के लिए डबल हैमर ब्रैंड का आग्रह कीजिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसी के बुलबुले

बेटा टब में बैठा रोनी-सी सूरत बनाये कहता जा रहा था—'मां, तुम मुझे रोज-रोज नहलाती हो, मैं क्या ऐसा गंदा हूं।' मां ने प्यार से कहा—'बेटे, तुम तो गंदे नहीं हो, मगर धूल में खेलने से शरीर गंदा हो जाता है, नहाये बिना साफ नहीं होता। इसमें भला रोने की क्या बात है।' प्रतिभाशाली बेटे ने जवाब दिया—'धूल तो मेज-कुर्सी पर भी जम जाती है, उसे कपड़े से झाड़-पोंछकर साफ कर लेती हो। क्या उसी तरह मुझे साफ नहीं कर सकतीं ?'

०००

डिफेंस फेलोशिप के एक समारोह में प्रख्यात फिल्म-अभिनेता चार्ली चैपलिन ने यह किस्सा सुनाया :

एक नवविधवा अपने छोटे बेटे की बांह थामे अपने पति के अंतिम संस्कार के निमित्त होने वाली प्रार्थना सभा में गयी। वहां पादरी ने दिवंगत की आत्मा के लिए शांति की प्रार्थना की। फिर ज्यों ही उसने यह कहना शुरू किया कि 'दिवंगत सज्जन एक दयालु और उदार पिता, तथा गंभीर, प्रेमल और आदर्श पति थे,' त्यों ही विधवा और उसका बेटा उठ खड़े हुए तथा दोनों एक-दूसरे से यह कहते हुए गिरजाघर से बाहर चले गये—'हम गलती से किसी और आदमी के अंतिम संस्कार में पहुंच गये हैं।'

०००

लार्ड बर्कट आम तौर पर यह कहानी सुनाया करते थे :

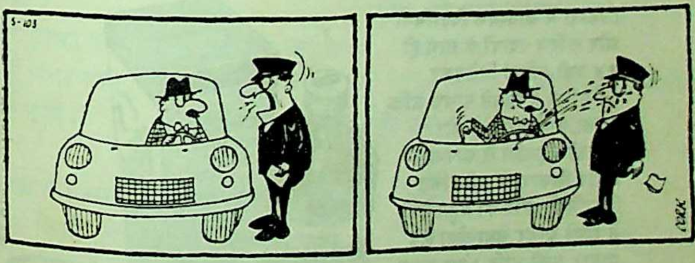

व्यंग्यचित्र : कार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ताक़त

अपनी ताक़त को बनाए रखने के लिए ओकासा की चांदी चढ़ी टॉनिक टिकियाँ लीजिए. शक्ति और स्फूर्ति के लिए मशहूर टॉनिक ओकासा. तंदुरूस्ती की एक निशानी ओकासा.

ओकासा

टॉनिक टिकियाँ
पुरुषों के लिए चांदी वाली

सभी बड़े-बड़े केमिस्टों के यहाँ मिलता है।

OKASA CO. PVT. LTD.
12K Gunbow Street,
P. B. No. 396 Bombay 400 001

यह आवश्यक नहीं कि किसी टॉनिक के द्रव्य क्या हैं। आवश्यक बात यह है कि आपके शरीर को उससे क्या मिलता है?

सिंकारा मे आवश्यक विटामिनों और खनिज पदार्थों के साथ ही १४ जड़ी-बूटियां विशेषकर सम्मिलित हैं जिनसे पाचन शक्ति अच्छा कार्य करती है और जिनकी सहायता से आपका शरीर सिंकारा में सम्मिलित विटामिनों आदि को बहुत तेज़ी से अपने अन्दर समा लेता है। आहार भली-भांति शीघ्र हज़म होकर आपके शरीर को बहुत जल्द शक्ति प्रदान करता है।

हमदर्द

सिंकारा आपके शरीर को बहुत कुछ देता है।

सिंकारा

हर मौसम में पूरे परिवार के लिये अद्वितीय टॉनिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

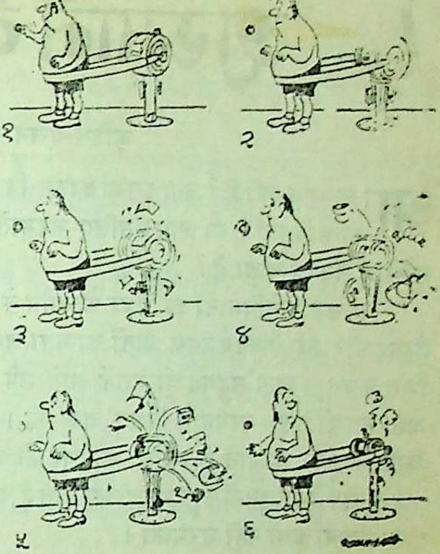

एक बहरे न्यायाधीश की अदालत में एक बहरा मुद्दई और मुद्दालेह आये। अदालत की कार्रवाई शुरू हुई। न्यायाधीश ने मुद्दई से कहा कि तुम अपना पक्ष प्रस्तुत करो। मुद्दई ने कहा–'श्रीमन्, मैंने किराये की रकम का दावा पेश किया है।' न्यायाधीश सुनने में असमर्थ था, फिर भी उसने मुद्दालेह से पूछा–'तुम्हें क्या कहना है?' मुद्दालेह भी सुनने में असमर्थ था, मगर वह बोला–'श्रीमन्, यह कैसे हो सकता है जब मैं अपना अनाज रात को पीसता हूं?' अंत में न्यायाधीश ने फैसला सुनाया–'दोनों पक्षों की बात सुनने और समझने के बाद मैं इस निर्णय पर पहुंचा हूं कि वह औरत तुम दोनों की मां है, इसलिए उसका खर्च तुम दोनों को उठाना चाहिये।'–**अखिल कुमार**

०००

एक दिवालिया अमीर पर मुकद्दमा चल रहा था। बहस के बीच जज ने पूछा–'आपके पास तो बहुत रुपया था, सब कहां चला गया?'

'हुजूर काफी रुपया रेस में धीमे घोड़ों के चक्कर में चला गया, जो बचा था उसे तेज औरतें ले गयीं।' **–आलोक मेहरोत्रा**

०००

एक आदमी साम्यवाद का प्रचार कर रहा था। किसी ने उससे पूछा–'आपका मतलब है कि साम्यवाद में हर कोई बांट-कर खायेगा?'

'बेशक।'

'यानी अगर आपके पास दो कारें होंगी, तो उनमें से एक कार आप मुझे दे देंगे?'

'बेशक।'

'या अगर आपके पास दस हजार रुपये होंगे, तो पांच हजार रुपये मुझे दे देंगे?'

'बेशक।'

'या अगर आपके पास दो कमीजें होंगी तो एक कमीज मुझे दे देंगे?'

'नहीं!'

'क्यों?'

'मेरे पास दो ही कमीजें हैं।' **–सु.**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरमाने के पीछे

जूडिथ-एलन ब्राउन

आप शरमाते क्यों हैं ? क्या इसका कारण विनम्रता है, या आपके मन में छिपी अपराध की भावनाएं ? या आप इसलिए शरमाते हैं कि आपको लोगों की नजरों का केंद्र बनने में संकोच होता है ?

प्रसिद्ध मनोविज्ञानी डा. सैंडर फेल्डमैन ने चालीस वर्षों तक इस विषय का अध्ययन किया और कई आश्चर्यजनक बातों का पता लगाया है। नीचे कुछ कथन हैं। उन्हें पढ़ें। जिस कथन से आप सहमत हों उसके आगे छपे 'सही' शब्द को रेखांकित कर दें, जिनसे असहमत हों उसके सामने के 'गलत' शब्द को। अगर आपके आठ उत्तर सही हैं, तो समझिये कि आप शरमाने के असली कारणों को जानते हैं।

१. लोग केवल दूसरों के सामने ही शरमाते हैं, अकेले में कभी नहीं शरमाते। सही गलत

२. बच्चा कभी नहीं शरमाता। सही गलत

३. स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा अधिक शरमाती हैं। सही गलत

४. केवल गोरी जातियों के लोग ज्यादा शरमाते हैं। सही गलत

५. उम्र के बढ़ने के साथ शरमाना कम होता जाता है। सही गलत

६. आजकल की स्त्रियां उतना नहीं शरमाती, जितना कि उनकी दादियां शरमाती थीं। सही गलत

७. लोग सिर्फ अपनी ही हरकतों पर शरमाते हैं। सही गलत

८. किसी को शरमाते देखकर दूसरे भी शरमाने लगते हैं। सही गलत

९. शरमाने पर आपका सिर्फ चेहरा ही लाल होता है। सही गलत

१०. कोशिश करने पर आप शरमाने से बच सकते हैं। सही गलत

उत्तर

१. **गलत**। लोग अकेले में भी शरमाते हैं—जब उन्हें कोई ऐसी बात या स्थिति याद आ जाती है, जिसमें वे शरमाये थे, या शरमा सकते थे।

२. **सही**। बच्चे में शरम का एहसास तभी पैदा होता है, जब वह कुछ भावनाओं और कामों को गलत मानना और लोगों की नापसंदगी से बचने के लिए उन्हें छिपाना चाहता है। और यह लगभग उसी उम्र में पैदा होता है, जब वह किसी मजाक पर हंसना सीखता है।

३. **गलत**। पुरुष और स्त्रियां एक जैसा ही शरमाती हैं। अगस्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४. **गलत** । सभी जातियों और वर्गों के लोग सामान्य रूप से शरमाते हैं।

५. **सही** । युवावस्था से ३० साल की उम्र तक आदमी काफी अवसरों पर शरमाता है। उसके बाद उसका शरमाना कम होने लगता है।

६. **सही** । पुराने समय में स्त्रियां अपनी मासूमियत दिखाने के लिए शरमाती थीं, सच कहें तो उनसे इस तरह की आशा भी की जाती थी। आज उनसे ऐसी आशा नहीं की जाती; न वे इसे पसंद ही करती हैं।

७. **गलत** । मनुष्य किसी दूसरे वर्ग या समूह के व्यक्ति की किसी बुरी हरकत पर शरमा सकता है।

८. **सही** । मनुष्य किसी दूसरे को शरमाते हुए देखकर सोचता है, शायद यह आदमी ऐसी किसी स्थिति में है, जिसमें मैं भी शरम अनुभव करता। इस प्रकार वह अपने को उस व्यक्ति के रूप में देखता है और स्वयं भी शरमा जाता है।

९. **गलत** । शरमाने पर चेहरे के अलावा कान, गरदन, और छाती के ऊपरी भाग का भी रंग लाल हो सकता है। जो लोग प्रायः नंगे रहते हैं, उनके पेट और बाहों का भी रंग लाल हो जाता है।

१०. **गलत** । एक बार शरमसारी या घबराहट का भाव पैदा हुआ नहीं कि आदमी कोशिश करने पर भी शरमाने से बच नहीं सकता।

★

आज जब मैं महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के हिंदी विभागों के अध्यक्षों को कार में अपने-अपने धाम और काम पर जाते देखता हूं, तो मेरे सम्मुख वह चित्र सहसा उभर आता है कि बनारसी इक्के पर अंग्रेजी पोशाक में एक ओर पैर लटकाये बाबू श्यामसुंदर दास बैठे हैं, सामने इक्केवान के पास सटे हुए पाजामे और अचकन में उकडूं लाला भगवानदीन डटे बैठे हैं और दूसरी ओर ओष्ठच्छद मूंछों वाले लौट कालर के कोट में टाई बांधे और कमीज को धोती में खोंसे हुए तथा फेल्ट टोपी लगाये हुए दिग्गज विद्वान और समालोचक आचार्य पंडित रामचंद्र शुक्ल बैठे हैं। कभी-कभी इस त्रिमूर्ति में हेरफेर हो जाता था और लंबी दाढ़ी, सफेद अचकन और सफेद पगड़ी में हरिऔधजी भी दिखाई पड़ जाते थे। यह वह युग था, जब इन तपस्वियों को ७५ और १५० रुपये के बीच वेतन मिलता था–'शाकाय वा स्यात् लवणाय वा स्यात्'। पर ये ही वे महापुरुष हैं, जिन्होंने तन गलाकर, मन लगाकर और धन की उपेक्षा करके उस हिंदी साहित्य का सर्जन किया, जिनके बनाये हुए भवन में महंत बने हुए अनेक डाक्टरम्मन्य लोग गद्दी संभाले हुए केवल चांदी काट रहे हैं और हिंदी साहित्य को लाल करने के बदले राजनीतिक गोटियां लाल करने के फेर में पड़े हुए हैं।

—**सीताराम चतुर्वेदी** (श्यामसुंदरदास जन्म शती अंक, सम्मेलन पत्रिका)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

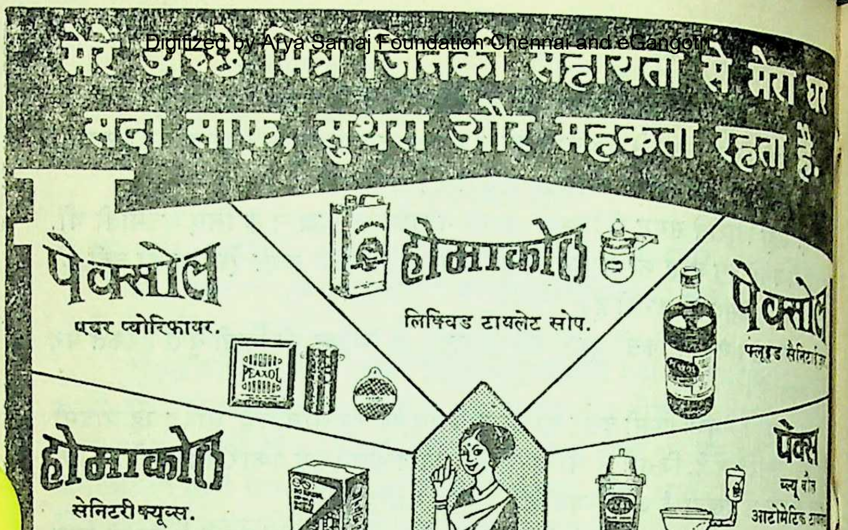

लिंक चेन

जिसकी एक-एक कड़ी मजबूत, परखी हुई और पूर्णतः विश्वसनीय है।

सभी उद्योगों व वाहनों में उपयुक्त

एलोय स्टील चेन एक विशेषता

इंडियन लिंक चेन मैन्यु. लि., भांडुप, बंबई-७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खगोलिकी में क्रांति

निरंकार सिंह

इस भूमंडल पर मनुष्य अपने जन्मकाल से ही सूर्य, चंद्रमा और तारों से भरे स्वच्छ नीले आकाश की सुंदरता को देखता रहा है; और जब से उसमें विचार और विवेचना का प्रादुर्भाव हुआ, तभी से वह ब्रह्मांड और उसके इन ज्योतिर्मय पिंडों के रहस्य को समझने का प्रयत्न करता रहा है। हजारों वर्षों के प्रेक्षण और अध्ययन के बाद भी इस आदि-अंतहीन ब्रह्मांड के अनेक रहस्य अभी तक रहस्य ही हैं। लेकिन पिछले कुछ वर्षों में अंतरिक्ष का जो अन्वेषण-कार्य हुआ है, उससे खगोलिकी में क्रांति हो गयी है और जन-साधारण में भी ब्रह्मांड के प्रति गहरी जिज्ञासा उत्पन्न होने लगी है।

इस ब्रह्मांड में अनंत दूरियां हैं, अनंत तारे हैं। रात में जो छोटे-छोटे तारे हमें परस्पर सटे हुए दिखते हैं, उनके बीच की दूरी अरबों मील की हो सकती है। देखने में बहुत छोटे लगने वाले ये तारे वास्तव में बड़े-बड़े सूर्य हैं; कई तो इतने बड़े हैं कि उनके समक्ष हमारा अपना सूर्य एक कण के तुल्य है। हमारा सूर्य, जिसे हम प्रतिदिन उगते-डूबते देखते हैं और जिससे हम प्रकाश पाते हैं, एक औसत तारा है। इस तारे के पृथ्वी-समेत नौ मुख्य ग्रह हैं, जो इसकी परिक्रमा करते हैं।

हमारा सूर्य तथा हमारी पृथ्वी जिस आकाशगंगा के अंतर्गत हैं, उसी आकाशगंगा के तारों को हम रात में देख पाते हैं। इस विराट ब्रह्मांड में अब तक लगभग १९ अरब आकाशगंगाओं का पता चला है। हर आकाशगंगा में लगभग दस अरब तारे हैं और औसत आकाशगंगा का व्यास लगभग एक लाख प्रकाश-वर्ष है।

मानवीय आंखों की दृष्टिशक्ति सीमित है और दूरबीनों की भी एक सीमा है; इसलिए हम ब्रह्मांड के अत्यंत छोटे भाग को ही देख पाते हैं। यदि इस ब्रह्मांड से बाहर निकलकर देखने का कोई साधन उपलब्ध होता, तो समस्त आकाश को घेरे हुए जान पड़ने वाली हमारी आकाशगंगा एक छोटे-से बादल के समान दिखाई देती। या संभव है, असंख्य आकाशगंगाओं के नीहार में वह हमें ढूंढ़े नहीं मिलती।

विराट ब्रह्मांड की इस विलक्षण शोभा का चिंतन मात्र जहां साधारण मनुष्य के मस्तिष्क को चकित और स्तब्ध कर देता है, वहां खगोलविज्ञानी उसके रहस्यों का उद्‌घाटन करके विज्ञ मनुष्य के आनंद को अभिवृद्धि करते हैं।

अंतरिक्ष-अभियान में प्रगति के फलस्वरूप खगोलिकी में क्रांति-सी हो गयी है। मनुष्य ने चंद्रतल पर पैर रख दिये हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेनिथ

औद्योगिक जगत में
एक विख्यात नाम है।

स्टील पाइप
स्टील कटर

इसके मुख्य उत्पादन हैं।
देश-विदेश में सर्वत्र
इसका प्रचार है।

जेनिथ स्टील पाइप्स एंड
इन्डस्ट्रीज लि.

खोपोली स्थित औद्योगिक निर्माण का स्थान अनुपम है, आदर्श है, उसके उत्पादन के द्वारा उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, निर्यात के द्वारा देश को विदेशी विनिमय की प्राप्ति होती है, और विविध करों के द्वारा देश के अर्थकोष की वृद्धि होती है।

सबकी सेवा में प्रस्तुत
जेनिथ स्टील पाइप्स
एंड इन्डस्ट्रीज लि.
खोपोली (कुलाबा) बंबई.

दि इंडियन टूल
मैन्यूफैक्चर्स लि.
१०१, सायन रोड, सायन,
बंबई-४०००२२

सुनिश्चित होकर चुनाव
कीजिये

'डॅगर' ट्विस्ट ड्रिल्स रीमर्स,
कटर्स, टॅप्स, टूलबिट्स
और माइक्रोमीटर्स
डॅगेलाय कार्बाइड
टूल्स और टिप्स
डॅगर-साके गियर हॉब्स
और गियर शेपिंग कटर्स

प्रिसिशन का प्रतीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनुष्य के बनाये स्वचलित अंतरिक्ष-यान शुक्र व मंगल पर उतरे हैं। पिछले दस-पंद्रह वर्षों में हमने ग्रहों के बारे में इतनी जानकारी हासिल कर ली है, जितनी पिछली कई सदियों में नहीं की थी। आकाश में स्थित कई प्रकार के नये पिंडों की जानकारी हमें मिली है। रेडियो-तारे, क्वासर, पल्सर, अदृश्य इन्फ्रारेड तारे तथा विनष्ट खंडहर आदि ऐसे पिंडों का पता चला है, जिनकी संरचना इस विश्व की रचना से भिन्न हो सकती है।

नवीन तथ्यों के प्रकाश में ब्रह्मांड-विद्या अर्थात् खगोलिकी संबंधी हमारी धारणाएं शिथिल होती जा रही हैं। अब से लगभग २२ वर्ष पूर्व हायल, गोल्ड और बोंडी ने ब्रह्मांड की जिस स्थिरावस्था के सिद्धांत का प्रतिपादन किया था (जिसके अनुसार ब्रह्मांड अविनाशी और अजन्मा है), उसकी सत्यता में शंका उत्पन्न हो गयी है। क्वासर और पल्सर की खोज तथा फैलते हुए ब्रह्मांड के किसी कोने से निःसृत हो रही सूक्ष्म तरंगें इस बात का संकेत दे रही हैं कि अरबों वर्ष पूर्व महाप्रलय की जो ज्वाला स्फुटित हुई थी (जिसके फलस्वरूप हमारा भौतिक ब्रह्मांड बना), उसी के अवशेष से ये तरंगें आ रही हैं। इस प्रकार प्रसरणशील ब्रह्मांड का सिद्धांत फिर बल पकड़ रहा है।

ब्रह्मांड की प्रसरणशीलता के संबंध में १९२५-३० के आस-पास महत्त्वपूर्ण कार्य हुआ था। हबल ने सुदूरस्थ आकाशगंगाओं से आने वाले प्रकाश का परीक्षण डाप्लर-प्रभाव द्वारा करके सिद्ध किया कि सुदूरस्थ आकाशगंगाएं हमसे दूर जा रही हैं। डाप्लर प्रभाव के अनुसार, दूर से आने वाले प्रकाश की स्पेक्ट्रमीय रेखाएं स्पेक्ट्रम के नीले छोर की ओर तथा दूर जाने वाले स्रोत के प्रकाश की स्पेक्ट्रमीय रेखाएं स्पेक्ट्रम के लाल छोर की ओर हटी हुई दिखाई देती हैं।

आकाशगंगाओं के परस्पर दूर हटने की प्रक्रिया को खगोलज्ञों ने माउंट पालोमर की २०० इंच व्यास वाली दूरबीन से तथा शक्तिशाली आधुनिक रेडियो-दूरदर्शियों द्वारा भी देखा-जाना है। इससे यह विश्वास और भी दृढ़ हो गया है कि ब्रह्मांड का एक समान गति से विस्तार हो रहा है और उसका प्रत्येक घटक बिंदु अन्य घटकों से दूर हटता जा रहा है।

अधिकांश वैज्ञानिकों के मतानुसार ब्रह्मांड की उत्पत्ति एक महापिंड के विस्फोट से हुई है; और हम चारों ओर जो पिंड देख पाते हैं वे उसी महापिंड के टुकड़े हैं। महापिंड के विस्फोट से मिली गति से आज आकाशगंगाएं परस्पर दूर भागती जा रही हैं। बात को अधिक अच्छी तरह समझने के लिए अपनी कल्पना में ब्रह्मांड का उलटा चलचित्र सामने रखिये। आपको आकाशगंगाएं परस्पर निकट आती हुई और अंत में मिलकर एक महापिंड का रूप धारण करती हुई दिखाई देंगी। ब्रह्मांड की उत्पत्ति और विकास को समझाने वाला यह सिद्धांत महाविस्फोट सिद्धांत (बिग बैंग थ्योरी) के नाम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'औरमो' छाप अमोनिया कागज़

(पैरा-डाइजो टाइप)

- चमकदार और सुन्दर छपाई
- बरतने और रखने में टिकाऊ
- जल्दी और अच्छे परिणाम
- कम खर्च और सस्ता

स्टैंडर्ड साइज के रोल और शीटस हर प्रकार की मीडियम फास्ट और सूपर फास्ट की स्पीड्स में मिलते हैं. रोशनी और नमी से बचाव के लिये पोलीथीन के ट्यूब और रैपरों में पैक किया हुआ होता है. यह देर तक खराब न होने वाला अच्छी क्वालिटी की छपाई के लिये गारन्टी किया हुआ है, क्योंकि औरमो का बेस पेपर भी ओरियंट पेपर मिल्स का बनाया हुआ है।

ओरियंट पेपर मिल्स लिमिटेड
ब्रजराज नगर, उडीसा

बवासीर की पीड़ा और जलन से, बिना ऑपरेशन के, शीघ्र आराम पाने के लिए हडेन्सा मरहम इस्तेमाल कीजिए।

OBM: 2670 HIN

जालिम लोशन
दाद खुजली की पेटेन्ट दवा

- चमड़ी की गहराई में पहुंचकर कीटाणु का नाश करता है
- सड़ी गली खराब चमड़ी को कागज की तरह निकाल फेंकता है
- 'जालिम लोशन' लगाते ही दाद खुजली की परेशानी मिट जाती है
- कपड़ों पर दाग नहीं लगाता

हर जगह मिलती है.
ORICHEM, RAO (INDORE)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से जाना जाता है। इस सिद्धांत को विशेष सम्मान दिलाया विख्यात खगोलज्ञ ज्योर्ज गैमोव ने।

भारतीय वैज्ञानिक डा. जयंत विष्णु नारळीकर का कहना है कि आइन्स्टाइन, डा. सिटर, एडिंग्टन, लेमेत्र आदि के सिद्धांतों की सहायता से महाविस्फोट के समय का पता चल सकता है और ब्रह्मांड की आयु का हिसाब निकाला जा सकता है, जो ५ से लेकर १० अरब वर्ष तक होगी। कतिपय खगोलभौतिक वैज्ञानिकों ने कुछ आकाशगंगाओं की आयु इससे भी बहुत अधिक निकाली है। लेकिन ब्रह्मांड की उम्र उसके अपने ही भागों (अर्थात् आकाशगंगाओं) से कम हो, यह इतनी असंगत बात है कि इस सिद्धांत की सत्यता में इसने शंका उत्पन्न कर दी है। तो क्या ये हिसाब गलत लगाये गये हैं, अथवा सिद्धांत ही गलत है? खैर जो कुछ भी हो, अभी इस दिशा में तीव्र गति से अनुसंधान जारी है।

ब्रह्मांड को तो अनादि और अनंत माना गया है, तब ब्रह्मांड के प्रसारण जिसकी तुलना फूलते गुब्बारे के फैलने से की गयी है का अर्थ क्या है? कोई भी वस्तु फैलने यानी अपने आयतन या घेरे को बढ़ा लेने के बाद उस जगह को भी घेर लेती है, जहां वह पहले नहीं थी। अब यदि ब्रह्मांड फैलता है, तो कहां और किस जगह में फैलता है? ब्रह्मांड नाम का तो अर्थ ही यह है कि सब कुछ उसमें है। तब फिर ब्रह्मांड कहां फैलता है? यदि कहें कि अपने आपमें फैलता है, इसका कोई भौतिक अर्थ नहीं है। ब्रह्मांड के बाहर क्या कुछ हो सकता है? इसका ठीक उत्तर हम नहीं जानते हैं।

इस ब्रह्मांड में अंतरिक्ष के अतिरिक्त एक और सत्ता है—समय। वह अतीत से वर्तमान होते हुए भविष्य की ओर संचार करता है। अतः यह कहा जा सकता है कि ब्रह्मांड का फैलाव समय में होता है। परंतु फैलाव दिखाई तो अंतरिक्ष में देता है। तब समय क्या है? समय और अंतरिक्ष में क्या संबंध है? भौतिकी और खगोलिकी के लगभग सारे नियम 'देश' से संबंधित हैं, जबकि समय के संबंध में अभी तक हमारा ज्ञान बहुत कम है। और ये सब प्रश्न ऐसे हैं, जिनसे आज का खगोलज्ञ बच नहीं सकता है। ब्रह्मांड फैलता है या नहीं फैलता, क्या हमारे इस ब्रह्मांड के बाहर इसके अतिरिक्त किसी अन्य प्रकार का ब्रह्मांड है? हो सकता है कि यह ज्ञान हमारे अस्तित्व के लिए महत्त्वपूर्ण हो।

अभी हम जितने परमाणुओं को जानते हैं, उनके केंद्र में न्यूट्रान व प्रोटान होते हैं और केंद्र के चारों ओर इलेक्ट्रान परिक्रमा करते रहते हैं। ऐसे परमाणुओं और उनके समुच्चय को द्रव्य (मैटर) कहते हैं। लेकिन कुछ भौतिकीविज्ञों की धारणा है कि ऐसे भी परमाणु होते हैं, जिनके केंद्र एंटीप्रोटान होते हैं और उनके चारों ओर एंटीइलेक्ट्रान परिक्रमा करते हैं। ऐसे परमाणुओं के समुच्चय से बना कोई ब्रह्मांड होगा तो वह हमारे ब्रह्मांड से बिलकुल उलटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

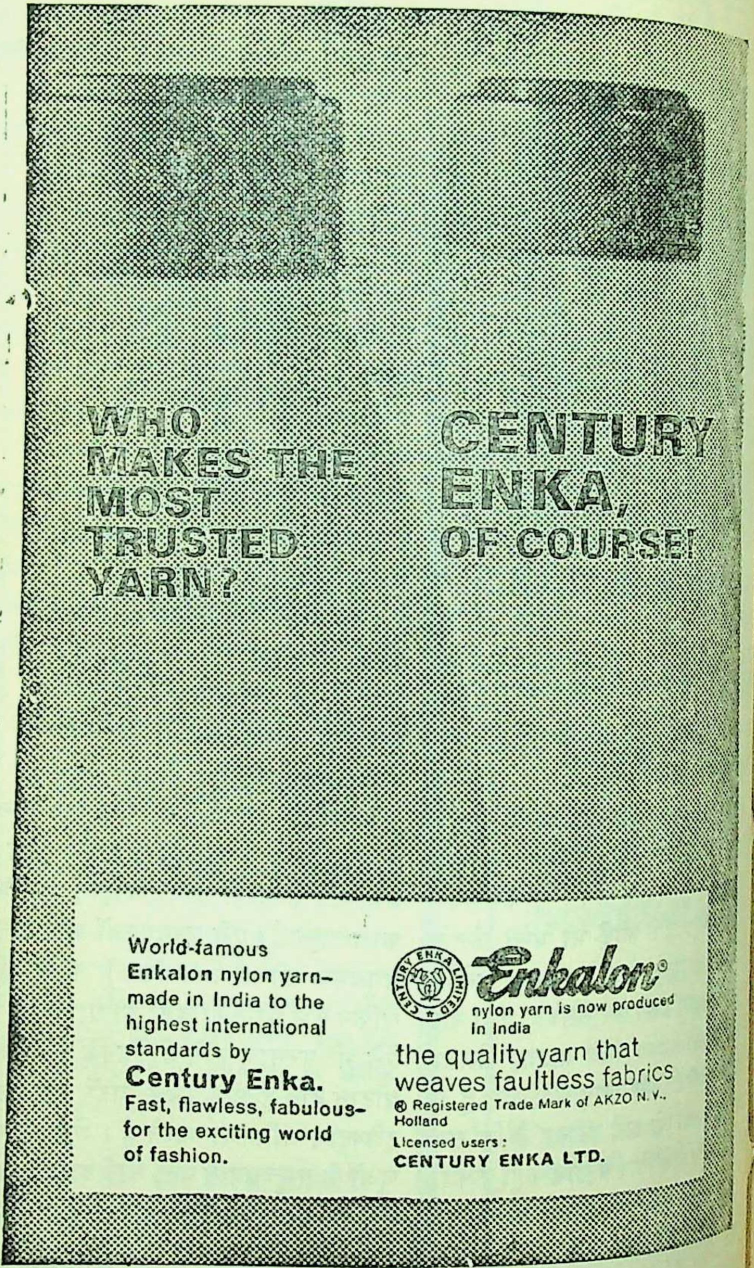

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगा। यदि द्रव्य और प्रतिद्रव्य के एक-एक परमाणु परस्पर मिलें, तो विस्फोट होकर द्रव्य का अस्तित्व विलुप्त हो जायेगा और केवल ऊर्जा रह जायेगी। यदि वास्तव में प्रतिद्रव्य का ब्रह्मांड है और यदि द्रव्य और प्रतिद्रव्य दोनों प्रकार के ब्रह्मांड मिलते और टकराते हैं, तो उससे होने वाले महाविस्फोट को महाप्रलय ही कहा जायेगा। तब केवल ऊर्जा अवशिष्ट रह जायेगी। शायद इसी से भौतिक परमाणुओं का जन्म हुआ है। जिस प्रकार बुलबुले जल में विलीन हो जाते हैं, उसी प्रकार भौतिक पदार्थ ऊर्जा सागर में लीन हो जाते हैं। इसी प्रकार सृष्टि-प्रलय का क्रम चलता है।

एक दूसरे दृष्टिकोण से विचार करने पर एक और प्रश्न उत्पन्न होता है। आकाशगंगाओं के एक दूसरे से दूर हटने का, ब्रह्मांड के प्रसरण का क्रम कभी रुकेगा, या यों ही चलता रहेगा? वैज्ञानिकों का कहना है कि ऊर्जा का नाश नहीं होता; परंतु इस अर्थ में उसका छीजन होता है कि वह कार्य करने लायक नहीं रह पाती है। अतः उस फूटते महापिंड से आकाशगंगाओं को चाहे जितना वेग क्यों न मिला हो, वह एक दिन समाप्त हो जायेगा, अर्थात् आकाशगंगाओं का वेग शून्य हो जायेगा। उस दिन ब्रह्मांड का प्रसरण बंद हो जायेगा। हम यह नहीं जानते कि गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत उस दिन काम करेगा या नहीं, परंतु सभी आकाशगंगाएं एक दूसरे से इतनी दूर जा चुकी होंगी कि विकर्षण की तुलना में आकर्षण प्रायः नहीं के बराबर होगा। उस दिन ब्रह्मांड पूर्णतया निष्क्रिय, निष्प्राण और निस्तब्ध हो जायेगा। ऐसे दिन को क्या महाप्रलय कहा जा सकता है?

हो सकता है, जिस अज्ञात और अज्ञेय शक्ति ने एक दिन इन आकाशगंगाओं व नीहारिकाओं को दूर धकेला था, वह फिर प्रकट हो जाये और उन्हें उलटी गति प्रदान करे—आकाशगंगाएं एक दूसरे के निकट आने लगें और एक दिन फिर सब कुछ उसी अवस्था में पहुंच जाये, जिस अवस्था में उत्पत्ति का क्रम प्रारंभ हुआ था। संभवतः फिर वैसा ही महाविस्फोट होकर प्रसरण की प्रक्रिया पुनः प्रारंभ हो जाये और इस प्रकार ब्रह्मांड के प्रसरण और संकुचन का क्रम चलता रहे। प्राचीन भारतीय दर्शन में भी तो सृष्टि एवं प्रलय को अटूट चक्रीय शृंखला की कल्पना की गयी है।

नवीन खोजों एवं अनुसंधानों के फलस्वरूप ब्रह्मांड का जो रूप सामने आया है, उससे मनुष्य को समय और दूरी की दृष्टि से अपनी कल्पना को इतनी दूर तक ले जाना पड़ता है, जिसकी मानव-इतिहास में कोई मिसाल नहीं मिलती है। आज विज्ञान उस स्थल पर पहुंच रहा है, जिसे अध्यात्म और दर्शन भी अपनी भूमि मानते हैं।

—द्वारा, दैनिक सन्मार्ग, वाराणसी-१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या और व्यवहार

नगरसेठ धनपति का पुत्र धर्मकीर्ति जब विद्याध्ययन करके घर लौटा, तो परिवा[र के] हर्ष का पार न रहा। उनके कुल में इतनी शिक्षा प्राप्त करने वाला वही पहला व्य[क्ति] था। धर्मकीर्ति के विवाह के लिए प्रस्ताव आने लगे। पिता ने भी कहा कि अब तुम्हें वि[वाह] कर लेना चाहिये। परंतु धर्मकीर्ति ने उत्तर दिया–'यह शरीर, यह संसार और ये संबंध [सब] नाशवान हैं। मुझे ऐसे संबंध चाहिये जो जीर्ण और नष्ट न हों।' धनपति ने बहुत सम[झाया] पर वह नहीं माना। पिता ने कुछ उत्तर नहीं दिया, किंतु पुत्र को अगले दिन महर्षि या[ज्ञ]वल्क्य के आश्रम में भेज दिया।

एक दिन महर्षि ने उसे समिधा लाने को कहा तो उत्तर मिला–'यह संसार, यह दे[ह] सब अनित्य हैं फिर यज्ञ क्यों?'

महर्षि ने मुस्कराकर कहा–'वत्स! मैं तुम्हें बाद में समझाऊंगा। पहले तुम कु[छ] फूल चुनकर लाओ।'

धर्मकीर्ति दौड़ा-दौड़ा गया और निकट के उपवन से फूल तोड़ने लगा। इतने में उस उपवन के स्वामी जो स्वयं भी तप:सिद्ध ऋषि थे, वहां आ पहुंचे। धर्मकीर्ति को बि[ना] अनुमति लिये फूल तोड़ते देखकर क्रोध में आ गये और उसे उन्होंने शाप देकर बकरा ब[ना] दिया। फिर क्या था, धर्मकीर्ति बकरे के रूप में वहां चक्कर काटने और चिल्लाने लगा।

शिष्य के लौटने में विलंब हुआ देख याज्ञवल्क्य स्वयं उसे ढूंढ़ते हुए वहां आये [और] बकरे के रूप में भी उसे पहचान गये। बकरा धर्मकीर्ति उनके पैरों में लोटने लगा, [और] कातर दृष्टि से देखने लगा। याज्ञवल्क्य ने उन ऋषि से अनुनय-विनय करके उसे फिर [से] मनुष्य बनवा दिया।

जब धर्मकीर्ति थोड़ा स्वस्थ और आश्वस्त हुआ, तो महर्षि याज्ञवल्क्य बोले–'वत्स! अनित्य देह के लिए तुम इतने विकल क्यों हो रहे थे? तुम्हारी नित्य आत्मा को तो इस[ने] नहीं बांधा था, न शरीर परिवर्तन से आत्मा में कोई परिवर्तन आया था। फिर तुम इत[ने] आतुर क्यों हो रहे थे?'

धर्मकीर्ति की आंखें खुल गयीं। तब याज्ञवल्क्य ने उसे समझाया–'आत्मा सत्य है किंतु देह भी सत्य है। इसलिए देह के धर्म भी सत्य हैं। जाओ, ज्ञान को व्यवहार में उतारो।' धर्मकीर्ति घर आ गया, किंतु व्यावहारिक बनकर।

–गोविंद शास्त्री

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय और पाठक

पुस्तकालय से उधार ली गयी पुस्तकें ठीक समय पर न लौटाना, उनकी सुरक्षा का पूरा ध्यान न रखना, उनमें से अपने काम के पन्ने फाड़ लेना, पढ़ते समय पुस्तकों में निशान लगाना तथा उनके हाशिये में छोटी-बड़ी टिपणियां लिख डालना—ये सब ऐसी वहशियाना आदतें हैं, जिनसे आजकल के पुस्तकालयाध्यक्षों को निरंतर जूझना पड़ता है।

किंतु प्राचीनकाल में इस मामले में इतनी ढिलाई नहीं थी। मिस्र के फिरऊनों के शाही पुस्तकालय में यह नियम था कि पुस्तकें देर से लौटाने वाले को फांसी लगा दी जाती थी तथा पुस्तक बिगाड़ने वाले को कोड़े लगाये जाते थे।

प्रशिया के फ्रेडरिक महान को पुस्तकों से बहुत प्रेम था। वह अपनी पुस्तकें पढ़ने के लिए दूसरों को उधार दिया करता। एक बार किसी ने उसकी कोई पुस्तक निश्चित समय के बीस दिन बाद लौटायी। उसने उसे बुलवाकर कहा कि आपने मेरी पुस्तक बीस दिन तक कैद में रखी, मैं तुम्हें बीस बरस तक कैद में रखूंगा और उसे जेल भिजवा दिया।

लंदन में सर्वप्रथम चल-पुस्तकालय की स्थापना सेम्युअल फैंकोर्ट ने की थी। वह भी इस मामले में बहुत कठोर था। एक बार किसी ने पुस्तक में से कुछ पृष्ठ फाड़ लिये तो फैंकोर्ट ने उसे कोड़े लगवाये तथा सात वर्ष की सजा दिलवायी।

उस जमाने में पुस्तकालयाध्यक्षों के क्या तेवर होते थे इसका एक उदाहरण लीजिये। जब इंग्लैंड का राजा चार्ल्स प्रथम आक्सफर्ड में पढ़ता था, उसने बोडलियन पुस्तकालय से कुछ पुस्तकें लाने के लिए अपने सेवक को भेजा। पुस्तकालयाध्यक्ष ने उसे पुस्तकें नहीं दीं तथा कहा कि जाकर चार्ल्स (प्रथम) से कह देना कि यदि उन्हें पुस्तकें लेनी हों तो वे स्वयं आयें। चार्ल्स ने पुस्तकालयाध्यक्ष के आदेश का पालन किया।

विश्व का सबसे बड़ा पुस्तकालय अमरीका में 'संयुक्त-राज्य कांग्रेस पुस्तकालय' है। इसकी स्थापना १८०० में हुई थी। यह वाशिंगटन में है। इसमें ७ करोड़ २० लाख ग्रंथ और पुस्तिकाएं-पत्रिकाएं ३२७ मील लंबे तख्तों पर रखी हुई हैं।

ब्रिटेन का सबसे बड़ा पुस्तकालय लंदन का ब्रिटिश म्यूजियम है। इसमें १० लाख पुस्तक-पुस्तिकाएं हैं, जिसमें से सवा लाख पांडुलिपियां भी हैं। ये १५८ मील लंबे बुक-शेल्फों पर रखी हैं।

—अखिल

★

परिश्रम से पहले कामयाबी केवल एक ही जगह
मिलती है—शब्द-कोश में। —चिंग चाओ

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धांगध्रा केमिकल वर्क्स लिमिटेड

'निर्मल,' तीसरी मंजिल, २४१ बैकबे रिक्लेमेशन,
नरीमन पाइंट, बंबई ४०० ०२१

तार : SODACHEM — फोन : २९२४०७-२९१२१४, २९३२३५-२९१११०

भारत में हैवी केमिकल्स के क्षेत्र में अग्रणी
अब अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी प्रस्तुत :

* अपग्रेडेड इलमनाइट *
(सिंथेटिक रूटाइल ९०-९२ TiO_2

हमारे बनाये हुए रसायन :

* कास्टिक सोडा — * सोडा एश
* सोडियम बाइकार्बोनेट — * अमोनियम बाइकार्बोनेट
* कैलशियम क्लोराइड — * ट्राइक्लोरो एथिलीन
* लिक्विड क्लोरीन — * हाइड्रोक्लोरिक एसिड

* साल्ट *

फ्लू, सर्दी-जुकाम और मलेरिया बुखार का बढ़िया इलाज !

आयुर्वेदिक औषधि **त्रिशून** गोलियां

इन तकलीफों को दूर रखने के लिए 'त्रिशून' की एक गोली दिन में तीन बार पानी चाय, या काफी के साथ लीजिए ।

१० गोलियां एक पैकबन्द स्ट्रीप में मिलती हैं।

बनाने वाले : झण्डू फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड
गोखले रोड साउथ, बंबई ४०००२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्दू कवि : पाँच प्रसंग

मुशायरे में हफीज जालंधरी अपनी गजल सुना रहे थे। उन्होंने स्टेज पर बैठे चराग हसरत को संबोधित करते हुए कहा—'हसरत साहब, मुलाहजा फरमाइये, मिसरा अर्ज करता हूं।'

हसरत साहब ने उनका मिसरा सुनने से पहले ही निहायत बेचारगी से कहा—'फरमाइये हजरत, शौक से फरमाइये। अपनी तो उम्र ही गजलों के मिसरे उठाने और मुर्दों को कंधा देने में कट गयी है।'

* कुछ साहित्यकार उर्दू के एक कवि के बारे में बातें कर रहे थे। एक ने कहा—'साहब, उनकी क्या बात है! बहुत बड़े शायर हैं। सरकारी खर्चे पर यूरोप भी हो आये हैं।'

हरीचंद अख्तर भी वहीं बैठे थे। उन्होंने कहा—'जनाब, अगर किसी दूसरे मुल्क में जाने से ही कोई शायर बड़ा बन जाता है, तो मेरे पिताजी दूसरी दुनिया में जा चुके हैं। लेकिन खुदा गवाह है कि वे कभी एक शेर भी ठीक से नहीं कह सके।'

* जोश मलीहाबादी ने पंजाबी भाषा के अक्खड़पन से तंग आकर कुंवर महिंदरसिंह बेदी से कहा—'कुंवर साहब, क्या दोजख (नरक) की सरकारी जबान आपकी पंजाबी ही है?'

कुंवर साहब ने झट उत्तर दिया—'तब तो, जोश साहब, आपको उसे जरूर सीख लेनी चाहिये।'

* किसी महफिल में जोश मलीहाबादी कविता सुना रहे थे। वहीं बैठे कुंवर महिंदरसिंह बेदी ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा—'देखिये, कमबख्त पठान होकर कैसे बढ़िया शेर पढ़ रहा है।'

तभी जोश साहब ने कहा—'और देखिये, जालिम सिक्ख होकर कितनी अच्छी दाद दे रहा है!'

* एक मुशायरे में एक नौजवान कवि अपनी गजल सुना रहा था, जिसकी जमीन थी :

नजारों से खेला, बहारों से खेला।

गजल खत्म हुई, तो मंच पर बैठे मजाज साहब ने दाद देते हुए कहा—'वेल प्लेड, मिस्टर!'

—नरेश कुमार 'शाद

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाने के लिए विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां 'ब्रोच' उत्पादन परमावश्यक होता है। डॅगर-फोर्स्ट टूल लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये 'ब्रोच' से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.,
पहिला पोखरण रास्ता,
थाना (बंबई)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सितंबर

नवनीत हिंदी डाइजेस्ट

मूल्य : २ रु.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयी उमंग, नयी तरंग

सेन्चुरी के सूती कपड़ों के रंग

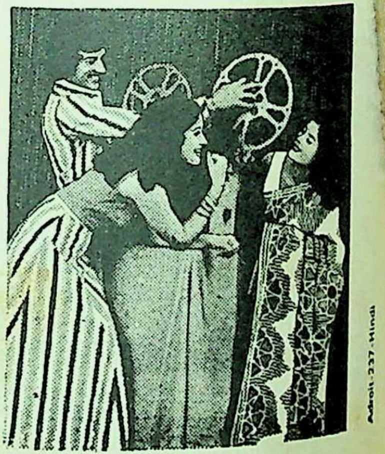

सैन्चुरी – १००% सूती कपड़ों के लिए।

दि सेन्चुरी स्पि. एण्ड मैन्यु.
कं. लि. बम्बई-४०० ०२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे अचारों व बेडेकर अचारोंमें फर्क क्या है?

सभी अचारों में नमक, मिर्च, हींग राई, कैरी अथवा नींबू व तेल— ये सभी चीज़ें डाली जाती हैं। मतलब यह कि वैसे देखा जाय तो दूसरे' अचारों व बेडेकर अचारों में कोई फ़र्क नहीं पड़ता। लेकिन फिर भी तो पड़ता है, देखिए ऐसे:

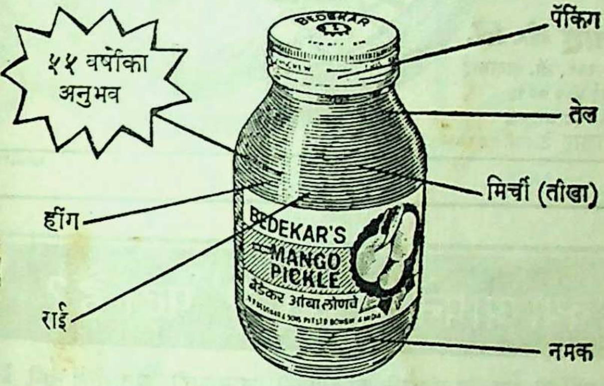

पहला कारण : उसमें डाला गया ऊँचे दर्जे का माल

हरे, कच्चे-कच्चे आम, एकदम लाल रंग की उम्दा मिर्च, सर्वोत्तम हींग, कोई ऐसा वैसा बाज़ारू नमक नहीं बल्कि टाटा का बढ़िया रिफ़ाइण्ड नमक, साफ़ छना हुआ तेल—इन सभी उत्तम चीजों के कारण बेडेकर अचारों का स्वाद बढ़िया होता है और ज़ायका मज़ेदार!

दूसरा कारण : लम्बा अनुभव

अचार बनाने का लम्बे अरसे का अनुभव, सन् १९२१ से! अच्छे अचार बनाना इतना आसान नहीं कि चट मँगनी, पट ब्याह! बढ़िया और वह भी कई तरह के अचार बनाना बेडेकर के बस की ही बात है क्योंकि अनुभव लेते लेते बेडेकर के अचार भी अपने ढंग के निराले हो गये हैं।

Vasant/VPB/I-76

बेडेकर बम्बई ४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोना खेल-कूद के जूते

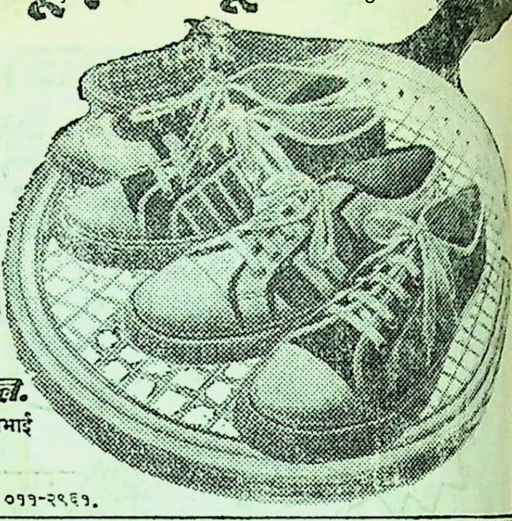

करोना साहू कं. लि.
रजिस्टर्ड ऑफिस : २२१, डॉ. दादाभाई
नौरोजी रोड, बम्बई ४०० ००१.
टेलिफोन : २६७८२१ (८ लाइन).
टेलिग्राम : करोनासाहू टेलेक्स : ०११-२९६१.

CHAITRA-CS

क्या आपने क्यों ? पढ़ा है ?

यदि नहीं, तो भारतीय संस्कृति की आपकी जानकारी सर्वांगीण नहीं है

आज ही **शास्त्रार्थ महारथी**
पं० माधवाचार्य शास्त्री द्वारा लिखित
"क्यों?"

नामक ग्रन्थ मंगाकर पढ़िये और सरल हिन्दी भाषा में अपनी संस्कृति का सम्पूर्ण परिचय प्राप्त कीजिए

क्यों (पूर्वार्ध)-पृष्ठ-७००-मूल्य १२) रु०
क्यों (उत्तरार्ध)-पृष्ठ-९००-मूल्य १५) रु०

★ १००) रु० के आर्डर पर हमारा मासिक पत्र "लोकालोक" एक वर्ष तक निशुल्क प्राप्त करें। नमूने की प्रति के लिए ५० पैसे का टिकट भेजिए।
★ पुस्तकालयों और पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन की विशेष व्यवस्था।
★ विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाईये।

माधव पुस्तकालय
१०३-ए, कमलानगर, दिल्ली ११०००७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्वालियर रेयन के २६ गौरवशाली वर्ष

आत्मनिर्भरता का स्वप्न साकार

ग्वालियर रेयन ने देश के आज़ाद होने के साथ ही साथ रेयन वस्त्र, स्टेपल रेशे, रेयन–ग्रेड पल्प और रेयन स्टेपल रेशे बनानेवाले प्लांट की मशीनों का निर्माण शुरू कर दिया.

ग्वालियर रेयन, बांस व अन्य सख्त लकड़ियों से रेयन–ग्रेड के घुलनशील पल्प तथा रेयन, पल्प व संबंधित प्लांटों की आधुनिक मशीनों के अग्रगण्य निर्माता हैं तथा रेयन उद्योग के क्षेत्र में देश को आतमनिर्भर बनाने के लिए प्रयत्नशील है.

आज ग्वालियर रेयन के स्टेपल रेशों का उत्पादन, ५ करोड़ २० लाख देशवासियों की वस्त्र की जरूरतें पूरी करने के लिए पर्याप्त है. लकड़ी के पल्प का वार्षिक उत्पादन, एक लाख टन से भी ज्यादा का है जो सेल्यूलोस के रेशों की दृष्टि से रुई की ५.२ लाख गांठों के बराबर है.

ग्वालियर रेयन ने देश को आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है. इन्होंने पिछले दस वर्षों में, राष्ट्रीय अधिकोष में रु. ९० करोड़ से भी ज्यादा धनराशि टैक्स के रुप में दी और इसी दौरान रु. ३६० करोड़ की विदेशी-मुद्रा भी बचायी।

ग्वालियर रेयन

जहां राष्ट्र की प्रगति ही एकमात्र उद्देश्य है

दि ग्वालियर रेयन सिल्क मेन्यु. (वीविंग) कं. लि. बिरलाग्राम, नागदा (म. प्र.)

Sobhagya GR

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत

वर्ष २५ : अंक ९ * इस अंक में * सितंबर १९७६

पत्र-वृष्टि	९	संपादक की डाक से
एन्टेबे में ५३ मिनट का नाटक	१०	हरिशंकर
प्रतिरक्षा-उत्पादन में स्वावलंबन	२३	जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी
शांत और अक्षुब्ध	३३	सेंट जान ऑफ क्रास
जीवन-तीर्थ	३४	सुबीर
कुरान-सार	३६	यदुनाथ थत्ते
वाक्यदीप	४०	....
केनेडी का सत्य	४१	निरंजन
बूढ़े सेनापति की विदाई	४४	विश्वनाथ
भूदान-आंदोलन के पचीस वर्ष	४८	डा. विश्वनाथ टंडन
दुनिया का धन्नासेठ कौन	५३	हरिश्चंद्र मिश्र
बारहमासा	५६	चरन शर्मा
चिंतनिका	५७	सर नेविल कार्डस
एक मूल्यवान सुझाव	५९	काका कालेलकर
विज्ञान-बिंदु	६१	केजिता
स्मरणांजलि	६४	नवनीत-परिवार
आलोक और सौरभ	६५	गोपीनाथ अमन
गीता का उर्दू तर्जुमा	६७	ईश्वरचंद्र मिश्र

संस्थापक	संपादक	सहसंपादक	व्यापार-व्यवस्थापक
स्व. श्रीगोपाल नेवटिया	नारायण दत्त	सुरेश सिन्हा	महेंद्र महेता
प्रबंध-संचालक	उपसंपादक	सज्जाकार	प्रबंधक
हरिप्रसाद नेवटिया	गिरिजाशंकर त्रिवेदी	ठाकोर राणा	सोहनराज पारेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय उद्यान : एक दर्शन, एक उद्योग	७०	रामलखन सिंह
मातृभाषा	७६	रसूल हमजातोव
क्या नेफरतीति आर्य थी ?	७८	वी. एस. प्रमार
जिंदादिल कवि	८३	श्रीनारायण चतुर्वेदी
टिप कितनी दें ?	८५	इफ्राइम किशोन
मोना लिसा का दीवाना	८९	अखिल
काठ का अफसर (हिंदी कहानी)	९२	डा. देवव्रत जोशी
आर्यभट और कोपर्निकस	९५	डा. श्रीनिवास भागवत
स्मृति के अंकुर	९७	शर्मा, भारती, सरोज, कौशिक, अन्नोलिया
चाय की दिग्विजय	१००	रिचार्ड एम. क्लीन
मौत: मेरी दिलरुबा (कविता)	११२	वीरेंद्र कुमार जैन
चुशूल का शूरमा	११४	महेशकुमार कटरपंच
चट्टान	११६	एडोगावा रम्पो
ग्रंथ-लोक	१२९	ना. द., वर्मा, लूथरा
अचानक हुए आविष्कार	१३३	यूसुफ जे. गुजरीवाला
कुछ इधर से, कुछ उधर से	१३९	मित्र
आखिरी मांग (बालकथा)	१४३	बलवीर सिंह
मामूली होटल में भोजन	१४९	कृष्णचंद्र गुप्त
मौत की हार	१५३	कु. रजनी वर्मा
हंसी के बुलबुले	१५७	....

मुखपृष्ठ : शरद कांबळी

चित्रसज्जा : नंदलाल बसु, तोयोकुनी, उतामारो, लक्ष्मण, अबू, भाऊ समर्थ, ओके, ग्रंथ, राम वाईरकर, विष्णु भटनागर, चरन शर्मा, प्रमोद कुमार यादव।

संपादकीय पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत हिंदी डाइजेस्ट, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४. फोन : ३७२८४७

व्यवस्था-संबंधी पत्र-व्यवहार का पता : नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, अशीष बिल्डिंग ३३५, बेलासिस रोड, ताडदेव, बंबई-३४. फोन : ३९२८८७

चंदे की दर : (भारत में) एक वर्ष २० रु.; दो वर्ष ३८ रु.; तीन वर्ष ५४ रु.। भारत में **नवनीत** का आजीवन सदस्यता-शुल्क ४०० रुपये है।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४ के लिए प्रकाशित तथा **श्री वेंकटेश्वर प्रेस**, ३६/४८ खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बंबई-४ में मुद्रित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्र-दृष्टि

अगस्त अंक में यह देखकर खुशी हुई कि नवनीत का कागज काफी अच्छा है एवं मूल्य भी कम कर दिया गया है। इसके लिए आपको एवं व्यवस्था-विभाग को हार्दिक धन्यवाद।

सिंधी कहानी 'भाई अब्दुर रहमान' रोचक और शिक्षाप्रद है। मगर मुझे याद आता है कि यह लगभग दस-बारह वर्ष पूर्व **कादम्बिनी** में या **नवनीत** में ही छप चुकी है।

—एम. एस. ठाकुर, बरगीनगर

०००

वैज्ञानिक लेख **नवनीत** के विशेष आकर्षण होते हैं मेरे लिए। अत: अगस्त अंक की विषय-सूची में वाइकिंग-यान और मंगल के बारे में किसी लेख का संकेत न पाकर मैं निराश हुआ। मगर पहला ही लेख 'पृथ्वी से आया तोहफा' पढ़ा, तो पाया कि यह पृथ्वी और मंगल के संबंध को लेकर एक श्रेष्ठ विज्ञान-कथा है—ऐसी विज्ञान-कथा, जो पाठक को दार्शनिक भूमिका पर पहुंचा देती है। इस कथा को ऐसे मौके पर चुनकर देने में आपकी सूझ-बूझ की जितनी सराहना की जाये कम है।

—कमल म. त्रिपाठी, अहमदाबाद-५

०००

संदर्भ : अगस्त अंक का लेख 'गीतगोविंद'। 'गीतगोविंद' शब्द की व्याकरण-सम्मत व्याख्या यों है—गोविंद को अधिकृत करके निरूपित ग्रंथ 'गीतगोविंद' है। भगवान कृष्ण के लिए प्रयुक्त बहुत-से नामों में 'गोविंद' भी एक है। इंद्रिय, पृथ्वी, गौ, किरण, जल, स्वर्ग आदि अनेक अर्थों को प्रकट करने के लिए 'गो' शब्द प्रयुक्त होता है। 'गो' पूर्वक 'विद्लृ' धातु में 'श' प्रत्यय लगाने से 'गोविंद' शब्द बनता है। जिस प्रकार इंद्रियों का स्वामी होने से योगेश्वर श्रीकृष्ण को 'हृषीकेश' (हृषीकाणि इन्द्रियाणि) कहा जाता है, उसी प्रकार उसी अर्थ में 'गोविंद' भी कहा जाता है।

कवि जयदेव ने जगदानंददायक भगवान कृष्ण के मनोरम चरित्र को अतीव सुंदर रूप से प्रस्तुत करके कलि-कलुषित हृदय की विक्षिप्तता को दूर करने के लिए यह काव्यात्मक प्रयास किया है। सगुण ब्रह्म का निरूपण करते हुए निर्गुण ब्रह्म की ओर ले जाना ही कवि को यहां अभिप्रेत है। कुंभ नृपति ने अपनी टीका 'रसिकप्रिया' में कहा भी है :

निर्विशेषं परं ब्रह्म साक्षात्कर्त्तुमनीश्वराः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यानासी के संबंध में विशेष शोध करने वाले डा. हकीम, जिनका आकस्मिक देहांत इस साल मई मास में लंदन में हो गया। उनका लेख आपने जुलाई अंक में पढ़ा था।

ये मन्दास्तेऽनुकम्प्यन्ते सविशेषनिरूपणैः ।।

—डा. निगम शर्मा,
गुरुकुल वि. वि. कांगड़ी, हरिद्वार, उ. प्र.

०००

ओलिंपिक के उपलक्ष्य मे आपने इतने योजनापूर्वक लेख लिखवाया ('मजबूत काठी में नरम-सा दिल', अगस्त अंक) और उसे स्वयं 'लेखनायक' अजितपाल सिंह और उनके साथियों ने बेकार बना दिया! अगली वार पंचवर्षीय योजनाओं की आलोचना करते समय आप शायद याद रखेंगे कि किस प्रकार अप्रत्याशित परिस्थितियां उत्पन्न होकर सुनिर्धारित योजनाओं को विफल या व्यर्थ बना डालती हैं।

—सत्यशरन सिंह, जालंधर-२

०००

'एक और शकुंतला किसी कालिदास की प्रतीक्षा में' बड़ी अनोखी चीज थी। श्री उमाकांत मालवीय ने पुराणों में से सचमुच एक मोती ढूंढ निकाला है।

—ललिता राघवेंद्रन्, त्रिचूर, केरल

०००

हिटलर और उसके साथियों के एक घृणित कारनामे का परिचय देने वाला पुस्तक-सार 'लिडिस जिंदा है' अगस्त अंक की विशिष्टता है।

'जल जाने पर' में जले के घाव पर ठंडे पानी का प्रयोग करने की सलाह दी गयी है। परंतु अब तक तो यही सुना था कि ऐसी अवस्था में पानी का प्रयोग बिलकुल न किया जाये। क्या इस बारे में स्पष्टीकरण करेंगे?

—माणकचंद सिरोहिया, दिल्ली-६

* 'टुडेज़ हेल्थ' जिसमें से हमने 'जल जाने पर' उद्धृत किया है, अमेरिकन मेडिकल एसोसियेशन की पत्रिका है। उसकी बातें प्रामाणिक मानी जा सकती हैं। —संपादक

०००

डा. सोहराब ए. ई. हकीम का लेख 'सत्यानासी : यथा नाम तथा गुण' बहुत ही पसंद आया और ज्ञानवर्धक रहा। किंतु अच्छा होता कि उस पौधे व बीज का चित्र भी दिया जाता। आशा है आगामी अंक में इस न्यूनता का परिहार करेंगे।

—रामकृष्ण ध्रुव, रामपुर, म. प्र.

* चित्र प्राप्त करने की पूरी कोशिश की गयी थी। लेखक डा. हकीम के कार्यालय से भी संपर्क किया और वहां से हमें यह दुःखद समाचार मिला कि उन्हीं दिनों लंदन में उनका देहांत हो गया। सत्यानासी का चित्र प्राप्त करके इस स्तंभ में छापने के लिए हम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रयत्नशील हैं। —संपादक

०००

जुलाई अंक बहुत ही आकर्षक लगा। 'अपराध-कथाओं की पटरानी', 'परिहासिनी' और 'छाते' रोचक और उत्तम लेख थे। पर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण थी ४ जुलाई के उपलक्ष्य में प्रकाशित विविध सामग्री। जार्ज वाशिंग्टन की जीवन-कथा का सचित्र वर्णन अच्छा लगा। परंतु पृष्ठ १३८ के चित्र के नीचे लिखा था—'सन १८८७ में संविधान-परिषद में भाषण करते हुए वाशिंग्टन'। 'सन १७८७ में' होना चाहिये था। मेरे पत्र के प्रकाशित होने की आशा कम है, क्योंकि वह एक गलती की ओर भी इंगित करता है। **—कुमकुम भटनागर, मेरठ**

* गलती का हमें अफसोस है। **—संपादक**

०००

श्री सुदीप ने 'वेस्ट इंडीज टेस्ट-शृंखला' (जुलाई अंक) में लिखा है—'ताज्जुब की बात थी कि गिब्स को भारत के विरुद्ध किसी भी टेस्ट में खेलने नहीं दिया गया।' शायद लेखक को अभी तक यह सूचना नहीं मिली है कि वेस्ट इंडीज-आस्ट्रेलिया शृंखला के पश्चात् ही गिब्स क्रिकेट से संन्यास ले चुके हैं और आस्ट्रेलिया क्रिकेट बोर्ड उनका विशेष अभिनंदन कर चुका है।

—गुरदयाल सिंह टोटेजा,
४, सोमेश्वर रोड, बड़नगर, म. प्र.

०००

नवनीत अपने आपको 'हिंदी डाइजेस्ट' कहता है। फिर भी उसमें ज्यादातर अन्य भाषाओं से अनूदित कहानियां और पुस्तक-संक्षेप छपते हैं। क्या हिंदी में कहानी-लेखन का स्तर इतना नीचा है कि हिंदी कहानी **नवनीत** में नहीं छापी जा सकती? सार-संक्षेप भी बहुधा अंग्रेजी, बंगला, पंजाबी आदि की पुस्तकों के होते हैं। आज जब हिंदी का प्रचार और प्रसार इतने जोर-शोर से हो रहा है तो हिंदी कहानी के प्रति **नवनीत** इतनी उपेक्षा क्यों दिखा रहा है?

—राका पांडेय, सत्यनगर, रायबरेली, उ.प्र.

* प्राय: हम प्रत्येक अंक में तीन कहानियां देते हैं—एक हिंदी की, एक अन्य किसी भारतीय भाषा की, एक किसी विदेशी भाषा की। जनवरी १९७५ से अगस्त १९७६ तक के बीस महीनों में केवल अगस्त ७५, मार्च एवं अप्रैल ७६ के अंकों में हिंदी की कहानी नहीं छप सकी है। हिंदी में छपी नयी पुस्तकों का हिंदी में सार-संक्षेप छपवाना प्राय: लेखक व प्रकाशक को स्वीकार नहीं होता; क्योंकि उससे पुस्तक की बिक्री पर बुरा असर पड़ता है। **—संपादक**

ओलिंपिक में भारत की साधना।
[इंडियन एक्सप्रेस में अबू]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

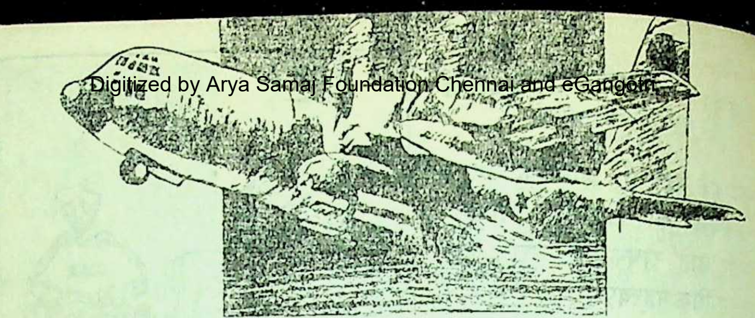

एन्टेबे में ५३ मिनट का नाटक

हरिशंकर द्वारा प्रस्तुत

वह अमरीका के द्विशताब्दी महोत्सव का दिन था—४ जुलाई १९७६। मगर उस दिन दुनिया-भर के पत्रकारों और राजनीतिज्ञों की जबान पर जिस देश का नाम था, वह तो और ही था—इस्रायल। पिछली रात इस्रायल सवा दो हजार मील दूर युगांडा के एन्टेबे हवाई-अड्डे पर छापा मारकर उन १०५ अपहृत हवाई-यात्रियों को छुड़ा लाया था, जिन्हें आतंकवादियों ने एक सप्ताह से बंधक बना रखा था। संसार स्तब्ध था उसके आयोजन-कौशल और साहस पर।

नौ वर्ष एक मास पूर्व, ५ जून १९६७ को भी संसार इसी तरह स्तब्ध हुआ था, जब इस्रायल के लड़ाकू विमानों ने मिस्र के तमाम हवाई-अड्डों पर छापा मारकर सुबह के चंद घंटों में उसकी समूची वायुसेना को नष्ट कर डाला था। मगर उस दिन इस्रायल को धिक्कारने वालों की संख्या बहुत बड़ी थी; आज प्रशंसा का भाव ज्यादा था।

वायुयान-अपहरण की कथा का ऐसा अंत सर्वथा अप्रत्याशित था।

* * *

सात दिन पहले रविवार २७ जून को यह अपहरण-कथा आरंभ हुई थी। सवेरे ९ बजे एयर-फ्रांस का दो जेट वाला वायुयान तेल अवीव से पेरिस जाने के लिए उड़ान नं. १३९ पर रवाना हुआ था। उसमें २४७ यात्री और १२ विमान-कर्मचारी थे। उसका कप्तान था मिशेल बास्कोस। ११ बजे वायुयान एथेन्स पहुंचा और एक घंटे बाद उसने फिर उड़ान भरी। कुछ ही मिनट बाद विमान-अपहर्ताओं ने उस पर कब्जा कर लिया।

अपहर्ता एथेन्स में चढ़े थे और संख्या में चार थे। उनमें दो तो अरब थे—दोनों पुरुष। वे टिन के कुछ डब्बे हाथ में लेकर चढ़े थे जिन पर लिखा था—'भरवा खजूर'। शेष दो व्यक्ति जर्मन थे—२४ वर्ष की गेब्रिएल क्रोन-टाइडमन और २७ वर्ष का विलफ्रीड बोएस।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टोली का मुखिया दो अरबों में से एक था– अलहाज जायेद [illegible] जो दिसंबर १९[illegible] में रोम में पान अमेरिकन कंपनी के जेट विमान पर हुए आक्रमण का आयोजक रहा था। उस कांड में ३१ आदमी मारे गये थे।

अपहर्ताओं ने एलान किया कि अब विमान चे ग्वेवारा दल और पी. एफ. एल. पी. के कब्जे में है। उन्होंने तमाम यात्रियों की तलाशी ली। उनकी आज्ञा से वायुयान का रुख बेनगाजी (लीबिया) की ओर कर दिया गया, जहां वह १५·०० बजे उतरा। वहां एक गर्भवती अंग्रेज यात्रिणी पेट्रीशिया हेमन को छोड़ दिया गया, क्योंकि उसे रक्त-स्राव होने लगा था। शेष यात्रियों के पास-पोर्ट जब्त कर लिये गये। यात्रियों को ब्यालू कराया गया। अपनी टंकियों में तेल भरवा-कर वायुयान २१·३५ बजे फिर रवाना हो गया। यात्रियों का खयाल था कि उन्हें पेरिस या दमिश्क ले जाया जायेगा। मगर वायुयान ने दक्षिण का रुख पकड़ा। वायुयान के जमीन को छूने के बड़ी देर बाद जब यात्रियों को परदे हटाकर खिड़कियों से बाहर झांकने की अनुमति दी गयी, तब उन्होंने अपने को एक विशाल झील के किनारे किसी अपरिचित हवाई-अड्डे पर पाया। यह [illegible] युगांडा की राजधानी कंपाला से २१ मील दूर झील विक्टोरिया के किनारे स्थित एन्टेबे हवाई-अड्डा। यात्रियों ने देखा कि हथियारों से लैस युगांडाई सैनिक चारों ओर उकडूं बैठे हैं।

अपहर्ताओं ने अपने को पी. एफ. एल. पी. (पाप्युलर फ्रंट फॉर लिबरेशन ऑफ पैलेस्टाइन) का सदस्य बताया था। यह संघटन येसर अरफात के पी. एल. ओ. अर्थात् फिलिस्तीन मुक्ति संघटन से भिन्न है और साम्यवादी डा. जार्ज हबाश इसके नेता हैं। मगर पी. एफ. एल. पी. ने कहा कि उसका इस अपहरण से कोई संबंध नहीं है। फिर भी इतना निश्चित है कि इसका आयोजन और संचालन डा. वहीद हद्दाद ने सोमालिया में बैठकर किया था। ४६ वर्षीय डा. हद्दाद पी. एफ. एल. पी. से संबंधित

विमान-अपहर्ता–गेब्रिएल क्रोश-टाइडमन और विलफ्रीड बोएस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हैं और कई विमान-अपहरणों के आयोजक रहे हैं। १९७० में उन्होंने पान अमेरिकन कंपनी के तीन जेट-विमानों को जोर्डन के डासन फील्ड हवाई-अड्डे पर जबरन उतरवाया था।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसा कि अपहर्ताओं ने बंदी यात्रियों को और रेडियो युगांडा के जरिये सारी दुनिया को बताया, अपहरण का उद्देश्य था इस्रायल, फ्रांस, पश्चिम जर्मनी, स्विट्जरलैंड और केन्या की जेलों में बंद ५३ 'स्वातंत्र्य-योद्धाओं' को मुक्त कराना। ४० 'स्वातंत्र्य-योद्धा' तो इस्रायल में ही बंद थे। उनमें मुख्य थे फिलस्तीनी गेरिल्लों को शस्त्रास्त्र मुहैया करने के अपराध में कैद किये गये आर्चबिशप इलेरियन कापुच्ची और जापानी 'लाल सेना' का सदस्य कोजा ओकामोटो, जो १९७२ में तेल अवीव के हवाई-अड्डे पर २७ आदमियों की जान लेने वाले तीन जापानियों में से एक था। अपहर्ताओं ने यह शर्त रखी थी कि गुरुवार १ जुलाई के मध्याह्न १२ बजे तक ये ५३ 'स्वातंत्र्य-योद्धा' युगांडा के सुपुर्द कर दिये जायें, वरना यात्रियों को 'सख्त और कष्टदायक दंड भुगतना पड़ेगा'। दंड का स्वरूप समझाया नहीं गया था; मगर समझना कठिन नहीं था कि शायद यात्रियों समेत वायुयान को विस्फोटकों से उड़ा दिया जायेगा।

कापुच्ची (बायें) और ओकामोटो—दो 'स्वातंत्र्ययोद्धा'।

यह 'वरना' वाली बात आतंककारियों ने यात्रियों को नहीं बतायी थी। इसका पता चलता है एक यात्री मोशे पेरेत्ज की डायरी से। २६ वर्षीय मोशे पेरेत्ज तेल अवीव में चिकित्सा-शास्त्र की स्नातकोत्तर पढ़ाई कर रहे हैं। उन्होंने चोरी-छिपे यह डायरी लिखी उन थैलों पर, जो विमान-यात्रियों को कै आने पर काम में लाने के लिए दिये जाते हैं। डायरी का अनुवाद बाद में दुनिया के कई अखबारों में छपा। इसके अनुसार, आतंककारियों ने सोमवार की दुपहर के १२·१५ बजे सब यात्रियों को वायुयान से उतारकर हवाई-अड्डे के पुराने टर्मिनल-भवन के हाल में पहुंचा दिया था। यही अगले पूरे सप्ताह अधिकांश यात्रियों का घर रहा।

* * *

संकट के बीच जीने के अभ्यस्त इस्रायल के लिए यह अपहरण-कांड एक विकट मामला था। इस्रायल की दृढ़ मान्यता रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि विमान-अपहरण एक अंतरराष्ट्रीय अपराध है; अपहर्ताओं से समझौता करना, उन्हें रियायतें देना ऐसे अपराधों को बढ़ावा देना है। १९७० के आस-पास जब विमान-अपहरणों का दौर शुरू हुआ, तभी इस्राइल ने एक स्थायी अपहरण-निरोधक दस्ते का संघटन किया था। बड़े ही चुस्त दिमाग और जीवट वाले सैनिक इसमें लिये जाते थे। उन्हें दुनिया के तमाम प्रकार के हवाई-जहाजों का परिचय कराया जाता था और उनमें से यात्रियों को मुक्त करना सिखाया जाता था।

मगर इस बार का अपहरण केवल इस्राइल का मामला नहीं था। वायुयान फ्रांस का था, वैमानिक-दल भी फ्रांसीसी था। अपहृत यात्रियों में से आधे से अधिक गैरइस्रायली थे। और अपहृत विमान सवा दो हजार मील दूर अफ्रीका के हृदय में था।

इस्रायल का युगांडा से राजनयिक संबंध नहीं है। सो उसने फ्रांस और पश्चिम जर्मनी से संपर्क किया। फ्रांस ने युगांडा में अपने राजदूत को आदेश दिया। उन्होंने कंपाला में सोमालिया के राजदूत हाशी फराह को फील्ड मार्शल अमीन और आतंककारियों से बातचीत करने को राजी किया।

सोमवार २८ जून को शाम के ५.३० बजे इस्रायली मंत्रिमंडल की बैठक हुई। 'हम आतंककारियों के आगे झुके तो विदेश जाने वाला कोई इस्रायली सुरक्षित न रह पायेगा।' यातायात-मंत्री याकोवी ने सब मंत्रियों के मन की बात कही। प्रधान-मंत्री रेबिन ने सेना-प्रमुख जनरल मोर्डकाइ गुर से पूछा—'क्या कोई सैनिक विकल्प है?' उत्तर मिला—'फिलहाल तो नहीं है।' प्रतिरक्षा-मंत्री ने तुनककर कहा—'सरकार ढुलमुल और कमजोर है, यह धारणा मिटाने के लिए कुछ तो करना होगा।' रेबिन ने उन्हें डपटते हुए उत्तर दिया—'हम राजनीति की नहीं, सैनिक संभावना की बात कर रहे हैं।' जन-

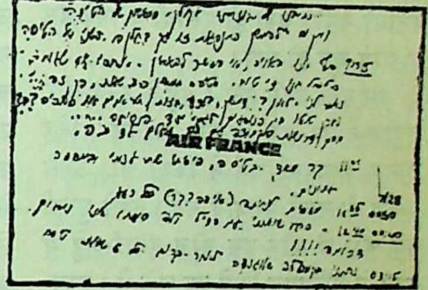

'कै के थैले' पर लिखी गयी पेरेत्ज़ की डायरी।

रल गुर का स्पष्ट कहना था कि सैनिक कार्रवाई के लिए आवश्यक जासूसी जानकारी न होने से वह संभव नहीं।

देश का 'मूड' भी कुछ ऐसा ही था। तेल अवीव में प्रधान-मंत्री के सप्ताहांत के कार्यालय के आगे सौ नागरिकों ने प्रदर्शन किया था संधिचर्चा चलाने के पक्ष में। एक प्रदर्शनकारी चिल्ला-चिल्लाकर कह रहा था—'मेरे तीन भाई उस विमान पर थे; अगर मेरा परिवार मारा जाता है, आतंककारियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना-प्रमुख गुर

को टोली को कैद में रखने का क्या लाभ?

सर्वसम्मति से निश्चिय हुआ कि बातचीत व समझौते से कोई रास्ता निकाला जाये। मगर साथ ही सैनिक कार्रवाई के लिए आवश्यक तैयारियां भी शुरू कर देने की आज्ञा जारी की गयी। सात मंत्रियों की एक संकट-समिति बनायी गयी। बड़ी ही मुस्तैदी व पक्के ढंग से काम शुरू हो गया।

दस साल पहले एन्टेबे अड्डे के रनवे और कंट्रोल-टावर का निर्माण सोलेल बोनेह नामक इस्रायली फर्म ने किया था। उससे एन्टेबे के नक्शे मंगवाये गये। नक्शे पुराने पड़ चुके थे और इस बीच हवाई-अड्डे में बहुत-से परिवर्तन किये जा चुके थे। इस्रायली गुप्तचर-संघटन मोसाद ने अपहरण के ४८ घंटों के भीतर अपने वेतनभोगी अफ्रीकी गुप्तचर कंपाला और एन्टेबे पहुंचा दिये। पर्यटक होने का दिखावा करके विक्टोरिया झील पर नौका-विहार करते हुए या हल्के विमानों में उड़ान भरते हुए ये लोग एन्टेबे का निरीक्षण करके सूचनाएं और फोटोग्राफ इस्रायल भेजते रहे, नैरोबी के रास्ते। साथ ही अमरीकी सेना-मुख्यालय से भी एन्टेबे के नक्शे व चित्र देने की प्रार्थना की गयी।

युगांडा के पास टैंक-भेदक प्रक्षेपास्त्र हैं, जिनसे हवाई-जहाज की भी धज्जियां उड़ायी जा सकती हैं। युगांडा के पास रूसी टी-५४ और चेकोस्लोवाकियाई ओ.टी.-६४ टैंक भी हैं। गुप्तचरों को यह भी पता लगाना था कि ये उपकरण एन्टेबे से कितनी दूरी पर हैं और उन्हें एन्टेबे लाने में कितना समय लगेगा।

एक 'विशेष टुकड़ी' का संघटन किया गया। इसमें ३५ हवाई ब्रिगेड और गोलानी इन्फेन्ट्री के १५० चुनिंदा जवान थे। जेरिको के पास रेगिस्तान में एक गुप्त स्थान पर उनका प्रशिक्षण और अभ्यास शुरू कर दिया गया। फर्जी एन्टेबे पर आक्रमण करना, चलते हरक्युलिस विमान से जीप और जवान उतारकर टर्मिनल-भवन की ओर भागना, फर्जी युगांडाई सैनिकों और आतंककारियों से जूझकर यात्रियों को छुड़वाना और उन्हें विमान पर वापस लाना—यह सब उनके अभ्यास में शामिल था।

एक सवाल विशेष पेचीदा था। एन्टेबे इस्रायल से लगभग २,२०० मील दूर था। हरक्युलिस सी-१३० विमान की रेंज होती है २,४२० मील। अर्थात् हरक्युलिस एन्टेबे जाये और बिना बीच में पेट्रोल भरवाये लौट भी आये, यह संभव नहीं था। आसमान में उड़ते-उड़ते पेट्रोल भरवाने के लिए हवाई टैंकर साथ ले जाने पड़ते। इससे कठिनाइयां बढ़तीं। क्या युगांडा का कोई पड़ोसी देश विमानों को अपने यहां उतरने और पेट्रोल भरवाने देगा? नजर केन्या पर जा टिकी। बहुत छिपे-छिपे पूछताछ शुरू की गयी कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या नैरोबी हवाई-अड्डे का उपयोग करने दिया जायेगा।

राजदूतों की मार्फत तो बातचीत चल ही रही थी, फील्ड मार्शल इदी अमीन से सीधे भी संपर्क किया गया। इसमें सहायक हुए तेल अवीव की हाइ-फाइ की एक दुकान के मालिक निवृत्त ले. कर्नल बरुच बार लेव। १९७२ में जब अमीन ने इस्रायल से संबंध तोड़ा, तब ये सज्जन कंपाला के इस्रायली दूतावास में मिलिटरी अटैशे थे। उनकी व उनकी पत्नी की अमीन से खासी मित्रता हो गयी थी। अमीन को पैराशूट के साथ विमान से कूदना उन्हीं ने सिखाया था। उन्होंने अब अमीन से संपर्क साधा। सारी फोन-वार्ता टेप की जाती रही।

बाद में बार लेव ने बताया—'मैंने उनसे (अमीन) से कहा कि दुनिया में आप बड़े बेरहम आदमी के रूप में मशहूर हैं। दुनिया की नजरों में आपकी तस्वीर बहुत अच्छी नहीं है। मैंने उन्हें उनकी स्वर्गीय माता की याद दिलायी और कहा कि माताजी आपसे जरूर कहतीं कि "अहले किताब" लोगों का बुरा न करो; उनके साथ बुरा करोगे, तो खुदा तुम्हारे साथ बुरा करेगा।'

इदी अमीन ने बार लेव को गुरुवार (१ जुलाई) को एन्टेबे पहुंचने को कहा। इस्रायल सरकार ने बार लेव के लिए एक वायुयान की व्यवस्था भी कर दी, मगर अमीन ने अपना विचार बदल दिया।

बुधवार ३० जून को आतंककारियों ने ४७ स्त्रियों, बच्चों एवं रोगियों को रिहा कर दिया।

अगले दिन यानी गुरुवार १ जुलाई को मध्याह्न के १२ बजे आतंककारियों की दी हुई मियाद पूरी होती थी। उसके ठीक एक घंटा पूर्व इस्रायली रेडियो पर घोषणा की गयी कि सरकार समझौता-वार्ता जारी रखेगी; वह बंदी 'स्वातंत्र्य-योद्धाओं' में से आधों को रिहा करने की बात पर विचार कर रही है। इस पर एन्टेबे में आतंककारियों ने मियाद रविवार ४ जुलाई के मध्याह्न तक बढ़ा दी और कहा कि हम यात्रियों को छोड़ देंगे।

उस शाम को उन्होंने यात्रियों को मुक्त तो किया, मगर केवल १०१ को—सो भी केवल गैर-यहूदियों को। अब १०५ यात्री रह गये बंधक के रूप में—६० इस्रायली, २२ फ्रांसीसी युवक, ११ दुहरी नागरिकता वाले व्यक्ति, १२ फ्रांसीसी विमान-कर्मचारी। अब यह बिलकुल स्पष्ट था कि आतंककारी सिर्फ इस्रायल पर दबाव डालना चाहते हैं।

विशेष टोली के मुखिया ले. जन. शाम्रोन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मगर असर इसका उलटा ही पड़ा। इस्रायल का रास्ता साफ हो गया।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी रात प्रधान-मंत्री रेबिन ने जनरल ज़ीवी को पेरिस भेजा। ज़ीवी अपहरण-निरोध के मामले में प्रधान-मंत्री के सलाह-कार हैं। उन्होंने व फ्रांसीसी गुप्तचरों ने एन्टेबे से मुक्त होकर आये यात्रियों से विस्तार से बातचीत की और एन्टेबे की स्थिति, आतंककारियों एवं युगांडाई सैनिक पहरेदारों की गतिविधि, तैयारी आदि की पूरी जानकारी पायी। उन्हें पता चला कि आतंककारियों ने टर्मिनल-भवन में सुरंगें नहीं बिछायी हैं।

जनरल ज़ीवी जो जानकारी लेकर शुक्र-वार को लौटे, उससे कंपाला में सोमालिया के राजदूत फराह द्वारा किसी पश्चिमी राज-नयिक से कही गयी एक बात की पुष्टि हुई। राजदूत फराह ने कहा था—'आतंककारी तो मजे में घूम-फिर रहे हैं! लगभग एक हफ्ता हो गया है और वे इतने निश्चिंत हो गये हैं कि कोई अच्छी फौजी टुकड़ी न्यूनतम क्षति उठाते हुए उन पर धावा करके उन्हें काबू में कर सकती है।'

शुक्रवार तक अमरीकी सेना मुख्यालय से एन्टेबे हवाई-अड्डे के विस्तृत फोटोग्राफ आ पहुंचे, जो अमरीकी उपग्रह से लिये गये थे। केन्या से भी संकेत मिल गया था कि वह इस्रा-यली विमानों को सुविधाएं देने को तैयार हो जायेगा। परिस्थितियां सैनिक कार्रवाई के सर्वथा अनुकूल होती जा रही थीं।

शुक्रवार २ जुलाई को ही जनरल गुर ने 'विशेष टुकड़ी' के मुख्य अधिकारियों को उनके विशिष्ट काम सौंपे। ये अधिकारी थे-१. लेफ्टिनेंट जनरल डान शाम्रोन (३[illegible] वर्ष), जो प्रधान पैराट्रुपर और इन्फेंट्री अफसर हैं; २. लेफ्टिनेंट कर्नल जोनाथन नेटान्याहू (३० वर्ष)। दोनों जन्मजात रण-बांकुरे थे और दोनों ने १९६७ और १९७३ के अरब-इस्रायल युद्धों में अपूर्व पराक्रम और कर्तव्यनिष्ठा का परिचय दिया था।

शनिवार ३ जुलाई को मुंहअंधेरे इस्रायल के किसी कोने में ले. जन. शाम्रोन और ले. कर्नल नेटान्याहू के नेतृत्व में 'विशेष टुकड़ी' ने जनरल गुर के सामने फर्जी एन्टेबे पर हमला किया और फर्जी युगांडाई सैनिकों व आतंककारियों को ठिकाने लगाकर फर्जी यात्रियों को छुड़ा लिया और वापस कूच कर दिया। सारी कार्रवाई में उसे कुल ५५ मिनट लगे। असली एन्टेबे पर तो केवल ५३ मिनट लगे। 'विशेष टुकड़ी' का संघटन, अभ्यास सभी कुछ इतने गुप्त रूप से हुआ था कि सेना-मुख्यालय के कई वरिष्ठ अधि-कारियों को भी उसकी भनक न थी।

उसी दिन सुबह ७ बजे प्रतिरक्षा-मंत्री पेरेत्स और सेना-प्रमुख जनरल गुर प्रधान-मंत्री से मिले; उन्हें पूरी योजना ब्योरेवार समझायी। प्रधान-मंत्री ने अनुमति दी और दुपहर के १ बजे राष्ट्रीय सुरक्षा-समिति की बैठक बुलाकर उसकी अनुमति ली, फिर ३ बजे शेष मंत्रि-मंडल की सहमति ली।

* * *

दो घंटे बाद (शनिवार, ३ जुलाई को)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शाम के चार बजे सिनाई प्रायद्वीप के शर्म एल शेख के पास से छह इस्रायली विमान 'विशेष टुकड़ी' को लेकर उड़े—चार हरक्युलिस सी-१३० और दो बोइंग ७०७ जेट। मिस्र और अरब के आकाश से बचते हुए वे लाल सागर पर से उड़े, फिर इथियोपिया और केन्या पर से उड़ चले। वे यथासंभव ऊंचा उड़ रहे थे, ताकि इन देशों के राडार-स्टेशन उनका सुराग न पायें। कुछ हरक्युलिस शायद सुडान पर से भी गये। (मगर पिछले ही दिन वहां राष्ट्रपति निमेरी का तख्ता उलटने का प्रयत्न हुआ था और दक्षिण सुडान में एक के सिवा सब राडार-स्टेशन बंद कर दिये गये थे।) बहुत ऊंचाई पर उड़ते फाइटर विमान कुछ दूर तक उनकी रक्षा करते रहे।

कोई २५,००० फुट की ऊंचाई पर ३०० मील घंटे की रफ्तार से उड़ते हरक्युलिसों को एन्टेबे पहुंचने में ७ घंटे लगे, जबकि बोइंग जेट विमानों के लिए पांच घंटे काफी थे। एक जेट विमान एन्टेबे पहुंचने से कुछ पूर्व साथ आ मिला; यह संचार-व्यवस्था विमान था। दूसरा जेट, जो कि अस्पताल विमान था, सीधे नैरोबी चला गया और रात के ११.२६ बजे (स्थानीय समय) वहां उतरा।

एन्टेबे पर बादल छाये थे। सौभाग्य से हवाई-अड्डे की बत्तियां जल रही थीं; यह बहुत अनुकूल बात थी। कंट्रोल-टावर और राडार आपरेटर निश्चित थे; क्योंकि निश्चित कार्यक्रम के अनुसार अगला वायुयान रात के २·३० को आने वाला था।

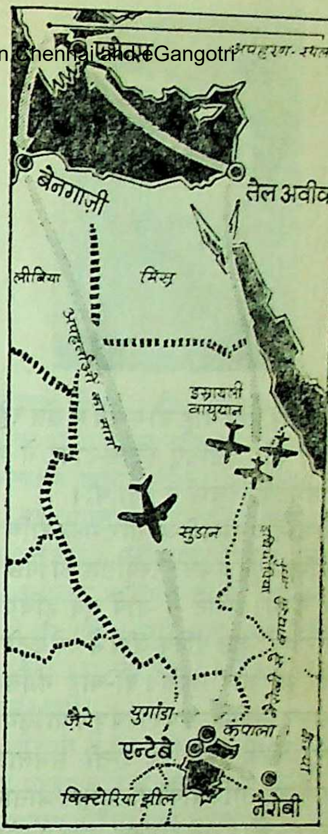

अपहृत विमान और विशेष टोली के मार्ग।

वैसे तो कोई आंख-कान से काम लेता तो भी उसे पांच भारी वायुयानों के आने का पता लग ही जाता। (इदी अमीन ने इस असावधानी के लिए चार राडार आपरेटरों को फौरन मृत्युदंड दे दिया।)

पहला हरक्युलिस पुराने टर्मिनल-भवन से तीन चौथाई मील दूर अंतरराष्ट्रीय रनवे पर उतरा। बीच में २०० फुट ऊंची

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ले. कर्नल नेटान्याहू जो एन्टेबे में खेत रहे।

पहाड़ी थी; इसलिए कंट्रोल-टावर से वह स्थान ठीक दिखाई न देता था।

स्थानीय समय के अनुसार मध्य रात्रि से एक मिनट पूर्व प्रथम हरक्युलिस का पिछला द्वार खुला। झपाटे से जीपें एवं हथियार उतारे गये; कुछ सैनिक जीप में नये कंट्रोल-टावर की ओर लपके। दो-चार गोलियां चलाकर उन्होंने उस पर नियंत्रण पा लिया। दूसरे सैनिक रनवे पर दस्ती सर्चलाइटें जमाने लगे, ताकि बाकी हरक्युलिस आसानी से उतर सकें। पुराने टर्मिनल-भवन में लोगों ने गोलियां दगने की आवाजें तो सुनीं, मगर वे कुछ समझ न पाये। दो-तीन मिनट बाद ही बाकी तीन हरक्युलिस भी उतर गये। उनमें से दो तो चुपचाप पुराने टर्मिनल-भवन की ओर बढ़ गये, तीसरा पहले विमान के पास अंतरराष्ट्रीय रनवे पर खड़ा हो गया।

प्रत्येक वायुयान के सैनिकों को अलग काम सौंपे गये थे। एक टोली गोलियां चलाती हुई सीधे पुराने टर्मिनल-भवन की ओर लपकी। युगांडाई सैनिक अचकचाकर रह गये। उनमें से बीस मारे गये। एक और टोली पुराने रनवे के निकट खड़े युगांडाई वायुसेना के मिग विमानों की ओर बढ़ी और देखते-देखते उसने छह मिग नष्ट कर डाले। तीसरी टोली हवाई-अड्डे की परिधि पर खड़ी हो गयी—बाहर से आने वाली युगांडाई सेना की कुमुक को रोकने के लिए। मगर उसे कुछ भी न करना पड़ा; क्योंकि कोई कुमुक नहीं आयी। हर काम अक्षरशः योजना के अनुसार हुआ था।

जनरल शाम्रोन की टोली ने कंट्रोल-टावर काबू में कर लिया था। नेटान्याहू और उनकी टोली उज़ी मशीन-गनें लेकर टर्मिनल-भवन में घुस पड़ी। वे यह प्रार्थना करते हुए आये थे कि आतंककारियों ने वंधकों का वध न शुरू कर दिया हो। जर्मन आतंककारी बोएस लपकता हुआ उस कमरे में गया, जिसमें इस्रायली थे। (पेरेत्ज़ की डायरी के अनुसार, आतंककारियों ने शुक्रवार को ही इस्रायलियों को बाकी यात्रियों से अलग कर दिया था।) उसने अपनी गन यात्रियों पर तान दी, मगर फिर जैसे उसका विचार बदल गया और वह गोली चलाये बिना ही टर्मिनल-भवन के बाहर चला गया। नेटान्याहू के एक सैनिक की गोलियों ने उसका खात्मा कर डाला। गोलियों की उसी बौछार में जर्मन आतंककारिणी गेब्रियल टाइडमन भी मारी गयी। अपने आ पहुंचने का एलान करते हुए इस्रायली सैनिक चिल्लाये—'इस्रायल! इस्रायल!' फिर कमरे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में घुसते हुए उन्होंने हिब्रू में चिल्लाकर कहा–'तिस्कावू !' (लेट जाओ !)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यात्री एक दूसरे पर लेट गये। कुछ शौचालयों में घुस गये। उन्हें यह समझने में कुछ क्षण लगे कि उनके त्राणदाता आ पहुंचे हैं। जो लोग समझ पाये, उन्होंने चिल्लाकर कहा कि बाकी आतंककारी छत पर हैं। इस्रायली सैनिक उनसे निबटने छत पर लपके। आपाधापी में दो यात्री मारे गये–१९ वर्ष का हंसमुख युवक जां जाक मेइमोनी, जो सबको बड़े प्यार से नाश्ता आदि कराया करता था; और श्रीमती पास्को कोहेन, जो नाजी यातना-शिविर से जीवित बच आयी थीं। आतंककारियों में से कोई जिंदा बच न पाया।

अब इस्रायली सैनिकों ने भोंपू पर घोषणा की, हमारे साथ विमान की ओर भागो। लोग जैसे अधूरे कपड़ों में थे, वैसे ही हरक्युलिस विमान की ओर लपके। इस्रायली सैनिक उनकी रक्षा भी कर रहे थे, मदद भी। एक सैनिक एक हाथ में एक बच्चे को उठाये हुए था और दूसरे में अपना उज़ी गन। लेफ्टिनेंट कर्नल नेटान्याहू कार्रवाई की देखभाल करने टाइमैक पर आये। तभी पुराने कंट्रोल-टावर के पास से एक युगांडाई सैनिक ने गोली दागकर उन्हें समाप्त कर दिया।

४४ मिनटों में यह सब कार्रवाई पूरी हो गयी और स्थानीय समय के अनुसार ठीक ००.४५ बजे प्रथम हरक्युलिस हवा में उड़ गया। ऊपर मंडरा रहे बोइंग ने तेल अवीव को इसकी सूचना दी। अगले पांच मिनट में दूसरे, तीसरे व चौथे हरक्युलिस भी हवा में उठ गये। सबका लक्ष्य था नैरोबी, जहां अस्पताल विमान पहले से ही मौजूद था।

फील्ड मार्शल अमीन

एक यात्रिणी ७३-वर्षीया डोरा ब्लाक भोजन गले में फंस जाने के कारण कंपाला के अस्पताल में भरती करायी गयी थीं। वे वहीं छूट गयीं। उसके बाद उनके अस्तित्व का कुछ पता नहीं चला। अंदाज है, वे मार डाली गयीं।

नैरोबी में सब ठीक-ठाक रहा। घायलों की मरहम-पट्टी की गयी। एक यात्री को अस्पताल भेजना पड़ा। विमानों में पेट्रोल भरा गया। स्थानीय समय के अनुसार रविवार ४ जुलाई की सुबह छहों इस्रायली वायुयान इस्रायल की ओर उड़ गये।

छहों विमान जब इस्रायल की धरती पर उतरे, इस्रायली रेडियो ने घोषित किया–'असंभव बात हो गयी है।' पर्यटन-मंत्री मोशे कोल ने कहा–'हमने असंभव को कर दिखाया है।' एन्टेबे से मुक्त होकर आयी साठ वर्ष की एक यात्रिणी बोली–'हमें सेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केवल ओडोमॉस ही
दो तरह से आपकी निश्चित
सुरक्षा करता है,
मच्छरों को दूर भगाकर...
रातभर चैन की नींद सुलाता है!

ओडोमॉस जैसी सुरक्षा आपको अन्य किसी मच्छर-प्रतिरोधक से नहीं मिल सकती:

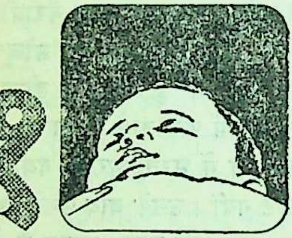

इसकी गंध मच्छरों को पास नहीं फटकने देती।

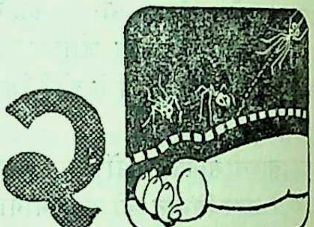

इसमें मिला अद्भुत तत्व रात भर आपकी त्वचा पे एक आवरण देकर मच्छरों को दूर रखता है।

इसीलिए ओडोमॉस आज भारत में सर्वाधिक बिकने वाला मच्छर-प्रतिरोधक है।

मच्छरों के हमले से बचिये
ओडोमॉस
की सुरक्षा पाइये!

यह बच्चों की कोमल त्वचा के लिए भी सुरक्षित है।

बलसारा
—सुखी जीवन के लिए
आधुनिक साधन
BALSARA बलसारा एण्ड कं. (प्रा.) लि.
CHAITRA.BLS-86 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

का बजट बढ़ाना चाहिये, इस प्रकरण ने यह सिद्ध कर दिया है। हवाई जहाजों ने आकाश में धुएं से लिखा–'जहाल को सलाम!' 'जहाल' इस्रायली सेना के हिब्रू नाम के अक्षरों से निर्मित ह्रस्वनाम है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाद में संयुक्त राष्ट्रसंघ में जब इस सारे प्रकरण पर बहस हुई, तब इस्रायली राजदूत केइम हरजोग ने गर्व से घोषणा की–'यह दुनिया को दरशाता है कि आतंकवाद और ब्लैकमेल के आगे झुकने का विकल्प मौजूद है।'

* * *

इस समूचे नाटक में युगांडा के राष्ट्रपति फील्ड मार्शल इदी अमीन दादा की भूमिका क्या थी? अमीन का दावा रहा कि उन्होंने अपहृत विमान को अपने यहां केवल इसलिए उतरने दिया था कि विमान में केवल पंद्रह मिनट की उड़ान के लायक पेट्रोल रह गया था। मगर दूसरों का आक्षेप है कि विमान-अपहर्ता आरंभ से जानते थे कि उन्हें एन्टेबे पहुंचना है। यह भी आक्षेप है कि जब अपहृत विमान एन्टेबे पहुंचा, उसका स्वागत करने अमीन स्वयं हवाई-अड्डे पर उपस्थित थे और वे आतंककारियों से गले मिले थे। उन्होंने आतंककारियों को पूरी सुविधा दी, शस्त्र दिये और उनकी ओर से अपने सैनिकों द्वारा बंधकों पर पहरेदारी करायी।

अपहरण-कांड के समय मारिशस में अफ्रीकी एकता संघटन का अधिवेशन चल रहा था और अमीन उसकी अध्यक्षता से निवृत्त हो रहे थे। पहले अनुमान यह था कि वे इस कांड की सफलता से रफा-दफा कराकर अपनी कीर्ति में चार चांद लगाने को उत्सुक हैं। मगर इस्रायल और उसके समर्थकों का आक्षेप है कि वस्तुतः अमीन इस्रायल पर ही दबाव डालकर अरब राष्ट्रों की नजरों में ऊंचे उठना चाहते थे। (लीबिया, अल्जीरिया और कुवैत से वे काफी आर्थिक सहायता पाते हैं।)

इल्जाम तो यहां तक है कि वे प्रत्येक बंधक यात्री के लिए इस्रायल से १०-१० लाख डालर ऐंठना चाहते थे। बात कल्पित अधिक लगती है, वास्तविक कम। असल में अमीन ने अपने अहंकार, विदूषकपन और क्रूरता से सारी दुनिया में इतने दुश्मन पैदा कर लिये हैं कि उनके विषय में बड़े से बड़ा झूठ लोगों के गले आसानी से उतारा जा सकता है। (हम भारतीय भी तो उनसे खफा हैं; क्योंकि १९७२ में उन्होंने ५०,००० भारतीयों को युगांडा से खदेड़ दिया था!)

इस कांड में केन्या का हिस्सा भी कम विचारणीय नहीं। आरंभ में इस्रायल यही कहता रहा कि उसके विमान नैरोबी हवाई अड्डे पर जबरन उतरे थे। मगर सचाई छिपी न रह सकी कि केन्या ने इस्रायली विमानों को नैरोबी उतरने व वहां से पेट्रोल लेने की पूर्वानुमति दे दी थी। असल में बुधवार ३० जून को ही इस्रायल ने अपनी विमान-सेवा एल आल के नैरोबी दफ्तर के नये कर्मचारी बताकर पचास जासूस नैरोबी भेज दिये थे, जिन्होंने केन्या के उच्च अधिकारियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संपर्क किया था। शनिवार की रात को जो इस्रायली जेट (अस्पताल विमान) नैरोबी पहुंचा, उस पर केन्या के सैनिकों का पहरा बैठाया गया था। अलबत्ता शायद नैरोबी हवाई-अड्डे के अफसरों को इस्रायल-केन्या की सांठगांठ का पता न था। जब शनि-रवि की मध्यरात्रि के बाद अचानक पांच इस्रायली विमान आ पहुंचे, उन्होंने चकित होकर सरकार के बड़े अफसरों को फोन किये। किसी ने फोन नहीं उठाया। केवल पुलिस मुख्यालय से उत्तर मिला—'सब ठीक है; ..... चिंता न करो।'

शायद राष्ट्रपति केन्याटा को शनिवार तक इस योजना का पता नहीं था। मगर पुलिस-मुख्यालय के अफसर लियोनेल ब्रायन डेविस, राष्ट्रपति की अंगरक्षक सेना 'जनरल सर्विस यूनिट' के मुखिया ज्योफ्री कैरीथी, केन्या के भूतपूर्व अंग्रेज मंत्री ब्रूस मैकिन्जी, वर्तमान एटार्नी जनरल चार्ल्स एन्जोएन्जो को सारी बात पहले से पता थी।

केन्या और युगांडा के बिगड़े हुए आपसी संबंधों को देखते हुए यह बहुत आश्चर्य नहीं कि एक अफ्रीकी देश दूसरे अफ्रीकी देश को नीचा दिखाने की योजना में शामिल हो गया। वस्तुतः राष्ट्रीय स्वार्थ एवं राष्ट्रीय हठ अंतरराष्ट्रीयता से ज्यादा प्रबल होता है। एक बात और, अपहर्ताओं ने जिन ५३ 'स्वातंत्र्य-योद्धाओं' की मुक्ति की मांग की थी, उनमें से पांच को केन्या ने कैद किया था। ये 'स्वातंत्र्य-योद्धा' नैरोबी में इस्रायली विमान-सेवा एल आल के एक जहाज को नष्ट करने युगांडा की राह से घुसे थे। और इस्रायल ने उनके आने की खबर केन्या को दे दी थी और राष्ट्रपति केन्याटा के अंगरक्षक-दल (जनरल सर्विस यूनिट) ने उन्हें पकड़कर उनका खात्मा कर दिया था।

* *

क्या बंदी यात्रियों को आतंककारी सचमुच खत्म कर डालते? कहना कठिन है। बंदी यात्री पेरेत्ज़ की डायरी से प्रकट होता है कि एक-आध को छोड़कर शेष आतंककारी क्रूर या हिंस्र नहीं थे। बेशक विमान-अपहर्ताओं के आगे घुटने टेकना इस अंतर-राष्ट्रीय अपराध को बढ़ावा ही देगा। मगर क्या इस्रायल इस समूचे कांड में अपने लड़ाकूपन और अजेयत्व की टूटी हुई धाक फिर से जमाने की प्रेरणा से प्रवृत्त नहीं हुआ? इस बारे में शायद मतभेद रहेगा।

★

* पिछली पीढ़ी के विद्वान कवि-लेखक श्री देवीरत्न अवस्थी 'करील' का १८ जुलाई १९७६ को प्रातः लालगंज (रायबरेली) में देहांत हो गया। उन्हें **नवनीत** की श्रद्धांजलि।

× × ×

* इसी अंक में पृष्ठ ९८ पर 'थप्पड़' शीर्षक प्रसंग के लेखक का नाम गलती से शिवशंकर सरोज छप गया है। लेखक का नाम शंकर शर्मा सरोज है।

* अगस्त-अंक में छपे लेख 'एक विभूतिमान मनीषी' में पृष्ठ ३६ पर डा. गोपीनाथ कविराज के देहांत की तारीख २२ जून १९७६ छपी थी। कविराजजी का देहांत १२ जून को हुआ था। इन भूलों के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं। —संपादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

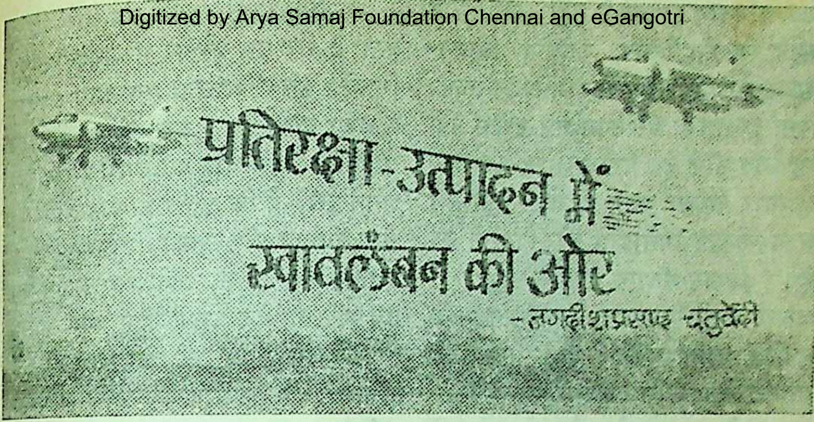

प्रतिरक्षा-उत्पादन में स्वावलंबन की ओर

-जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी

एक समय था जब भारत की बनी तलवारें संसार-भर में प्रसिद्ध थीं। भारत का बना हुआ इस्पात जब दमिश्क में पहुंचा, तो उससे वहां तलवारें ढाली गयीं और वहां के निवासियों ने अपने से कहीं अधिक उन्नत और शक्तिशाली मिस्र के साम्राज्य को पराजित कर दिया। उस समय दमिश्क नाम भी नहीं था। वहां पर मितन्नी लोग रहते थे, जो इंद्र और नासत्य के नाम की दुहाई देकर जीवन-यापन करते थे। कहने का तात्पर्य यह कि जहां तक रक्षा-उपकरणों का संबंध है, यह देश प्राचीन काल से उनके निर्माण में सन्नद्ध रहा है।

महाभारत में अनेक प्रकार के हथियारों का विवरण है। इनमें से कुछ को प्राप्त करने के लिए अर्जुन को हिमालय में तपस्या करके भगवान शंकर को प्रसन्न करना पड़ा था। यदि महाभारतकार कोई आधुनिक विज्ञान-वेत्ता होता, तो शायद यह कहता कि हिमालय की उन उपत्यकाओं में वे खनिज और रसायन प्राप्त होते थे, जिनसे अमोघ अस्त्र बनते थे।

आज तो अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण में खनिजों और रसायनों का युग है। चाहे परंपरागत युद्ध हो या आणविक युद्ध—सभी में रसायनों और आधुनिक रसायनशास्त्र का, तरह-तरह के रासायनिक मिश्रणों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। और जिस रसायन-युद्ध की बात अब भयपूर्वक की जाती है, वह तो पूरी तरह रसायनों पर ही आश्रित है।

इसी तरह आज के युद्धोपकरण अत्यंत जटिल धातुओं और मिश्र-धातुओं पर निर्भर होते हैं। सिर्फ इस्पात का नाम लेना काफी नहीं है। यों भी आज के सर्वाधिक सांघा-

शीर्षक के साथ : १९६५ के भारत-पाक युद्ध में पराक्रम दिखाने वाले नैट विमान—यह तथा इस लेख के अन्य चित्र प्रतिरक्षा जनसंपर्क अधिकारी भारत सरकार के सौजन्य से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिक हथियार इस्पात से नहीं बनते ? आप कहेंगे कि टैंक, तोप, जलपोत, विमान-वाहक, पनडुब्बी, मिसाइल-बोट इन सबका बिना इस्पात के कैसे काम चल सकता है? यह बात ठीक है। पर आज जिन्हें भीषण हथियार समझा जाता है, वे ये नहीं हैं। आज का युग मिसाइलों और विमानों का है। (विमान भी एक तरह से पीछे पड़ते जा रहे हैं।) विमान तो अल्युमिनियम के बनते हैं। और राकेट ? उनके निर्माण में तो स्टेनलेस स्टील, फाइबर ग्लास, टिटे-नियम और न जाने कौन-कौन-सी नयी-नयी धातुएं और रासायनिक मिश्रण काम में आते हैं ! उनमें जो आणविक नोकें या उद्जन-बम रखे जाते हैं, वे भी दूसरी ही धातुओं की देन हैं।

यह सब सिद्ध करता है कि कोई भी राष्ट्र तभी शक्ति-शाली बन सकता है, जब वह औद्योगिक और वैज्ञानिक दृष्टि से स्थान-मान प्राप्त कर ले। किसी देश के पास चाहे कितना भी रुपया हो, जब तक वह प्रौद्योगिक उन्नति न कर ले, शक्तिशाली नहीं हो सकता—भले बाहर से कितने भी हथियार खरीद सकता हो।

पहली बात तो यह कि जब आवश्यकता होती है, तब धन देने पर भी हथियार नहीं मिलते। इसके अलावा एक-आध अपवाद छोड़कर बाकी देश, दूसरे देशों को सहायता या बिक्री में हथियार देते समय इसका पूरा ध्यान रखते हैं कि उनके साथ उस देश का कैसा संबंध है और उनकी संसारव्यापी राज-नीति में उस देश का उनके लिए क्या महत्त्व है। यदि वह देश उनके लिए काम का है, तो चाहे उसके पास पैसा हो या न हो, वे उसे हथियार देते हैं। यदि वह उनके काम का नहीं है, या किसी और के काम का है, तो समझौता होते हुए भी, व्यापारिक करार होते हुए भी हथियारों की बंदी कर देते हैं। १९६५ में भारत-पाक युद्ध के समय ब्रिटेन व अमरीका ने भारत के साथ यही तो किया था।

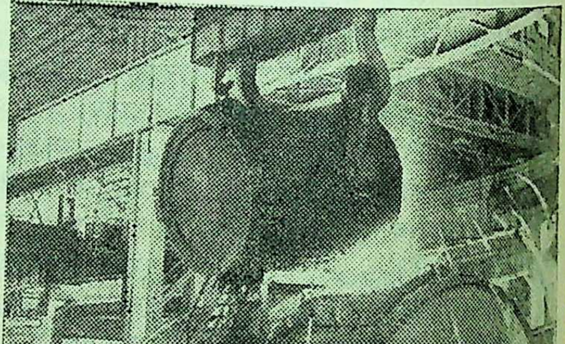

इस्पात प्रतिरक्षा में स्वावलंबन का आधार है—राउरकेला इस्पात कारखाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

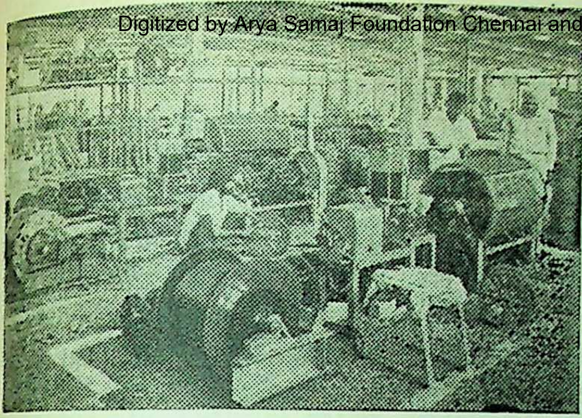

सेना के लिए केबलों का निर्माण–केबल फैक्टरी, चंडीगढ़।

इसलिए आज से बहुत पहले ही हमारे प्रथम प्रधान-मंत्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने यह निर्णय किया कि भारत के औद्योगिक आधार को मजबूत किया जाये। इसके लिए उन्होंने बड़े विरोध के बावजूद भिलाई, राउरकेला और दुर्गापुर में तीन इस्पात-कारखाने खड़े कराये। तब कौन जानता था कि इनमें से एक कारखाना (यानी राउरकेला) ही प्रतिरक्षा-मंत्रालय की विभिन्न इकाइयों को ६० हजार टन प्लेट और १ लाख ६० हजार टन इस्पात की चादरें देने लगेगा! आज भारत के गोला-बारूद कारखानों को इस्पात की जितनी प्लेटों और चादरों की जरूरत होती है, उसका ७० प्रतिशत राउरकेला कारखाने से मिलता है। परिणामत: पिछले चार वर्षों से विशेष प्रकार की इस्पात की चादरों या प्लेटों की थोड़ी-सी मात्रा (जो कि कुछ ही सौ टन होगी) को छोड़कर, विदेशों से प्लेटों और चादरों का बिलकुल भी आयात नहीं हुआ है; सारी आवश्यकताएं स्वदेशी उत्पादन से पूरी हुई हैं।

प्रधान-मंत्री ने बोकारो इस्पात कारखाने में जिस हाट-स्ट्रिप मिल का उद्घाटन हाल में किया है, उसमें बनने वाली चादरों का उपयोग हमारे जहाज, टैंक और मोटर बनाने के कारखानों में किया जायेगा। अभी तक जहाज बनाने के लिए विशेष प्रकार की चादरों का आयात किया जाता था; अब वह भी बंद हो जायेगा। हमारे इस्पात-कारखानों ने विशेष प्रकार की चादरें बनायी हैं, जिनसे रक्षा-मंत्रालय के 'शक्तिमान' व 'निशान' ट्रकों तथा जीप-गाड़ियों के लिए चैसिस बनायी जा सकती है।

इसी तरह रक्षा-मंत्रालय के अधीनस्थ बड़े-बड़े कारखाने–जहाज बनाने वाली मझगांव गोदी (बंबई), गार्डनरीच वर्कशाप (कलकत्ता), गोवा शिपयार्ड तथा भारत अर्थमूवर्स–इन प्लेटों को लेते हैं। हमारे जो नये लियेंडर किस्म के फ्रिगेट बन रहे हैं, उनके लिए आवश्यक इस्पात की चादरें हमारे ही इस्पात-कारखानों से प्राप्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो रही हैं। अब तो यह भी कोशिश हो रही है कि हमारे जहाजी कारखाने विशाखापत्तनम् तथा कोचीन शिपयार्ड के लिए भी बड़ी-बड़ी चादरें इन्हीं कारखानों से प्राप्त हों। आवडी (मद्रास) की फैक्टरी में जो विजयंत टैंक बनते हैं, उनके कवच अब स्वदेश में ही तैयार होते हैं। इसके लिए दुर्गापुर के मिश्र-इस्पात कारखानों में पिंड बनते हैं और राउरकेला में चादरें बनायी जाती हैं।

इस तरह हमारे रक्षा-मंत्रालय के लिए आवश्यक विभिन्न प्रकार का इस्पात आज फिर हमारे अपने कारखानों से मिल रहा है, जैसा कि शताब्दियों पहले तलवार, भाले खंजर तथा अन्य शस्त्र बनाने वाले कारीगरों को हमारे लुहारों के पास से प्राप्त हुआ करता था।

अब जरा इस बात पर नजर डालें कि रक्षा-मंत्रालय को किन-किन चीजों की जरूरत होती है और उनमें से किन-किन में हम आत्मनिर्भर हो गये हैं। एक दुर्भाग्यपूर्ण दौर ऐसा था जब कपड़े सीने की सुई भी हम विदेशों से मंगानी पड़ती थी। यह स्थिति बहुत दिनों तक चली। यहां तक कि जब अक्तूबर १९६२ में चीन ने भारत पर आक्रमण किया और हमें पहली बार एक शक्तिशाली शत्रु का मुकाबला करना पड़ा, तब प्रकट हुआ कि न केवल अस्त्र-शस्त्रों में

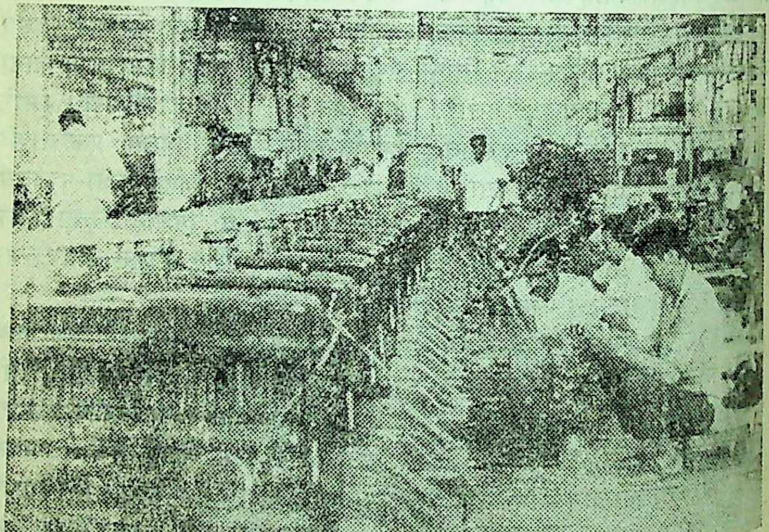

जबलपुर की वेहिकल्स फैक्टरी में सेना के शक्तिमान ट्रकों के इंजन बनाये जा रहे हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि अन्य अनेक सैनिक साजो-सामान में भी हम बहुत पिछड़े हुए तथा परावलंबी हैं। उस समय यह शिकायत की गयी थी कि हमारे सिपाहियों के पास बर्फ में पहनने के जूते भी नहीं थे, जिससे उनके पैरों को पाला मार गया। तभी यह भी पता चला कि हमारी ३०३ की बंदूकें चीनियों की स्वचलित राइफलों के सामने कुछ नहीं थीं। न हमारे पास वे मार्टार थे जो पहाड़ियों में ठीक निशाना लगा सकें, न वे टैंक-तोड़क तोपें थीं जिनसे शत्रुओं के टैंकों को रोका जा सके, और न ऐसे टैंक ही थे जो पहाड़ पर चढ़कर वार कर सकें।

यह हालत तब थी, जब हमारी सरकार ने और हमारे रक्षा-विशेषज्ञों ने यह स्वीकार कर लिया था कि रक्षा के मामले में हमें आत्मनिर्भर होना चाहिये। स्वदेश में विमान बनाने के लिए रूस के साथ हमारा एक समझौता हो चुका था, परंतु उसके अनुसार अभी काम शुरू नहीं हो सका था। वैसे द्वितीय महायुद्ध के दिनों में ही बेंगलूर में एक कारखाने की स्थापना हो गयी थी, जिसमें पहले तो विमानों की मरम्मत-भर हुआ करती थी, परंतु बाद में विमान बनने भी लगे थे। कई विदेशी कंपनियों की साझेदारी में विमान बनाने के प्रस्ताव तो थे, परंतु काम शुरू होने में देर थी या प्रस्तावित कारखाने की क्षमता बहुत सीमित थी।

सन १९६२ के युद्ध ने हमारी आंखें खोल दीं और राष्ट्र ने संकल्प किया कि वह युद्ध-सामग्री के बारे में आत्मनिर्भर होगा। इसलिए नवंबर १९६२ में रक्षा-मंत्रालय में एक अलग 'रक्षा-उत्पादन' का विभाग खोला गया। हमारे पास उस समय तक अपने कोई युद्धोपकरण कारखाने नहीं रहे हों, ऐसी बात तो नहीं थी। अंग्रेजों ने द्वितीय महायुद्ध के समय गोला-बारूद के कई कारखाने खोले थे और जब हम स्वतंत्र हुए, तब ऐसे १६ कारखाने थे। सन १९६२ में २० गोला-बारूद कारखाने काम कर रहे थे और चार कारखाने निर्माणाधीन थे।

मोर्चे पर आगे बढ़ता हुआ हमारा विजयंत टैंक।

यों भारत में गोला-बारूदखाना बहुत पुराना है। आज जो ईशापुर गन एंड शेल फैक्टरी कहलाती है, वह १८०१ में स्थापित हुई थी। इसके बाद १८५९ में कानपुर में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

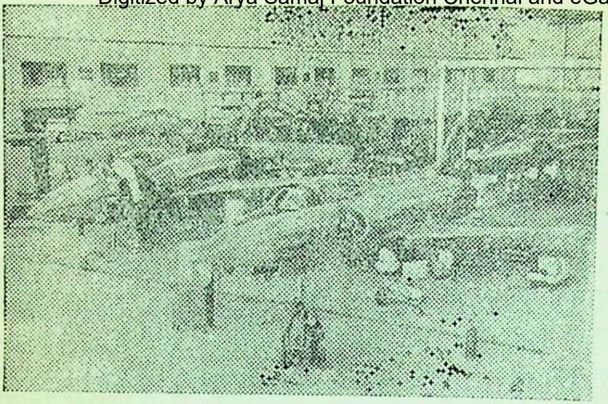

हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट्स लि. में मरुत विमानों का निर्माण।

(जो कि चमड़ा-उद्योग का केंद्र बनता जा रहा था) घुड़सवार फौज के लिए जीन और लगाम तैयार करने की फैक्टरी कायम की गयी। बाद में १९०५ में एम्युनिशन फैक्टरी, गनकैरेज फैक्टरी, राइफल फैक्टरी, कॉर्डाइट फैक्टरी, मेटल एंड स्टील फैक्टरी खड़ी हुई। शाहजहांपुर की क्लोदिंग फैक्टरी प्रथम महायुद्ध के प्रारंभ में चालू की गयी और द्वितीय महायुद्ध के दौरान १९४२ से लेकर १९४४ तक १ गोला-बारूद कारखाने और खड़े किये गये।

स्वाधीनता-प्राप्ति के पश्चात हमारे यहां युद्ध के प्रश्न को कोई महत्त्व नहीं दिया गया। देश में गांधीजी की विचारधारा का बोलबाला था और हमारी नीति यह थी कि हमें किसी के साथ नहीं लड़ना है। चीन के साथ हमारी मित्रता थी और हमें विश्वास था कि पाकिस्तान और भारत के सैनिक बलाबल में हमारा पलड़ा पाकिस्तान से हमेशा ही भारी रहेगा। विभाजन के कारण भारत को

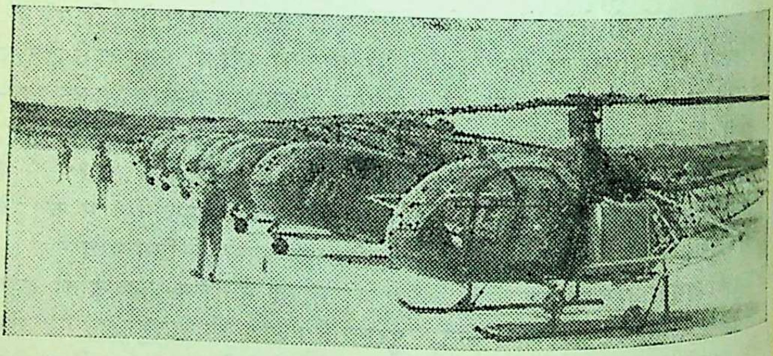

हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट्स के हेलिकाप्टर-विभाग में हेलिकाप्टरों की कतार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़ी-बड़ी साम[illegible] हिस्से में चली गयीं; लेकिन सैनिक सामान तैयार करने वाले कारखाने भारत में रह गये। वैसे युद्ध के बाद इन गोला-बारूद कारखानों में भी छंटनी हो गयी थी।

यह तो श्री कृष्ण मेनन के रक्षा-मंत्रित्व के काल में तय किया गया कि इन कारखानों की क्षमता को कायम रखा जाये और सैनिक सामान न सही, असैनिक सामान ही तैयार करते हुए इन्हें चालू रखा जाये तथा इनके कुशल कारीगरों को न निकाला जाये। इस नीति की संसद में कड़ी आलोचना हुई, खिल्ली भी उड़ायी गयी। उसी काल में चार नये सैनिक कारखाने खोलने का निश्चय किया गया। ये थे—आर्डनेंस केबल फैक्टरी आवडी की हैवी वेहिकल या टैंक फैक्टरी, नयी विस्फोटक फैक्टरी तथा जाबिंग फैक्टरी।

बेंगलूर के विमान कारखाने का उल्लेख हमने ऊपर किया है। हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट कंपनी नामक यह कारखाना सन १९४० में सेठ वालचंद हीराचंद और मैसूर रियासत की सरकार के सहयोग से स्थापित हुआ था। अगले साल भारत सरकार इसमें साझेदार हो गयी और उससे अगले वर्ष उसने सेठ वालचंद हीराचंद से सारे हिस्से खरीदकर कंपनी को सार्वजनिक उपक्रम बना दिया। लेकिन अंग्रेजी शासन में यह कारखाना केवल मरम्मत का काम करता था।

सन १९४७-४८ में इसने विमानों के डिजाइन बनाने तथा उनके विकास का काम हाथ में लिया और १९५१ में इसने १०० टाइगर मॉथ विमानों को आयातित पुर्जों से जोड़कर बनाया। इसके बाद ५० प्रेंटिस विमान बनाये। फिर एक अधिक आधुनिक प्रशिक्षण-विमान एच-२ का निर्माण किया। सन १९५० में इसने २८० वैंपायर जेट

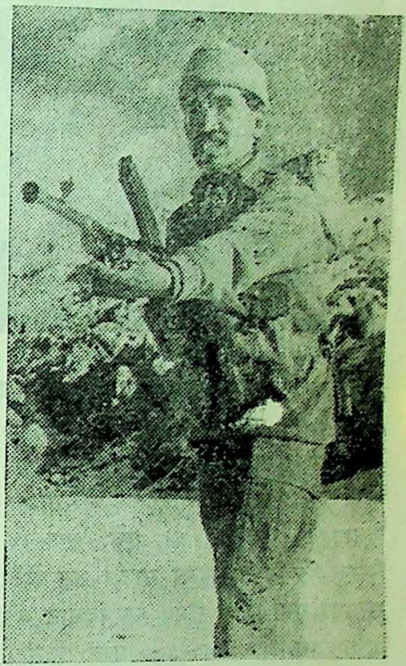

देश में बने शस्त्रों-वस्त्रों से सज्जित और देशरक्षा के लिए सतत जागरूक हमारा जवान।

विमान बनाये। १९५८ में एक प्रशिक्षण-विमान 'पुष्पक', जो वजन में बहुत ही हल्का था, बनाया और उसके बाद 'कृषक' भी।

लेकिन २४ जून १९६१ को इस कार-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

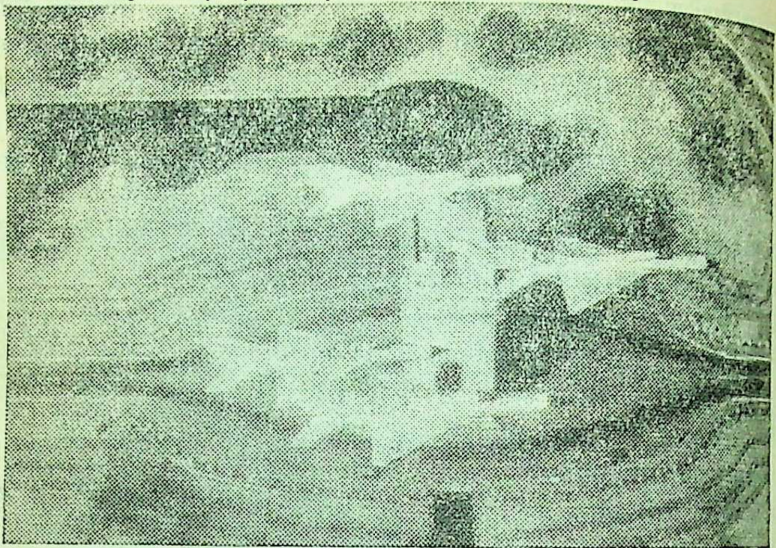

दिल्ली के इंडिया गेट पर से उड़ान भरते हुए मिग विमान।

खाने ने एक ऐसा विमान बनाया, जिसका नमूना भी हमारे यहीं तैयार किया गया था और जो पूर्णतया हमारे देश में बनाया गया। यह विमान था एच. एफ-२४ 'मरुत', जिसका पहला माडल उस दिन उड़ाया गया। उस समय इस विमान की अधिकतम गति ६००-७०० मील प्रतिघंटा थी। बाद में इसकी गति को दुगना करने का विचार किया गया। एच. एफ-२४ 'मरुत' इस समय भारत का एक प्रसिद्ध बम-वर्षक और युद्धक विमान है। इसमें आर्फियस-७०१ इंजन लगता है। अधिक शक्तिशाली इंजन बनाने का हमारा प्रयास अभी सफल नहीं हो सका है।

साथ ही ब्रिटेन की एक कंपनी से लाइसेंस लेकर 'नैट' विमान का निर्माण प्रारंभ कर दिया गया। इसमें आर्फियस-७०१ इंजन लगता था। इस विमान का निर्माण इंग्लैंड में बंद हो गया और वह केवल भारत में तैयार होता रहा। इसने १९६५ के युद्ध में हमारी वायुसेना को अपूर्व यश प्रदान किया। कीलर-बंधु इसी विमान को चलाने की कुशलता के कारण लोकप्रसिद्ध हो गये।

हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट कंपनी ने फ्रांस की एक विमान कंपनी की सहायता से एलाउट हेलिकाप्टरों का निर्माण आरंभ किया और उसके लिए आरतूस्त इंजन भी बनाया। बेंगलूर में ही इसने एक प्रशिक्षण-विमान 'किरण' का निर्माण किया और एव्रो-७४८ का परीक्षण भी। लेकिन बाद में इनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कानपुर वाले कारखाने में एवो एच-एस ७४८ विमान तैयार किया गया। यह विमान सेना के लिए सैनिक और माल ढोने के काम में आता है और भारतीय उड्डयन संस्थान 'इंडियन एयरलाइन्स' भी इसका प्रयोग करता है।

चीनी आक्रमण के पश्चात्, हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट लिमिटेड को 'हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स' नाम देकर उसका विस्तार किया गया। रूस के साथ यह समझौता हुआ कि भारत में मिग-२१ विमानों का निर्माण हुआ करेगा और कोरापुट (उड़ीसा), नासिक (महाराष्ट्र) तथा हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) में तीन कारखाने खड़े हुए। एक में इंजन, दूसरे में विमान का फ्रेम, तथा तीसरे में विमानोपयोगी इलेक्ट्रानिक उपकरण तैयार होते हैं। पहले मिग के सब पुर्जे रूस से आते थे और यहां उन्हें जोड़ा जाता था। बाद में सिर्फ छोटे-छोटे पुर्जे आने लगे, जिन्हें मिलाकर बड़े पुर्जे यहीं बनाये जाने लगे। अब तो सिर्फ कुछ कच्चा माल विदेश से आता है और बाकी सब स्वदेश से ही प्राप्त होता है और पूरा निर्माण-कार्य इन कारखानों में होता है। अब भारत ने मिग-२१ विमानों को और भी सुधारा है, जिससे कि वे आधुनिक विमानों की तुलना कर सकें।

इसी काल में हेलिकाप्टरों के लिए बेंगलूर में एक नया कारखाना खड़ा किया गया है, जिसमें सात सीट वाला 'चेटक' और कम वजन वाला 'चीता' तैयार होता है।

हिंदुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड रक्षा-मंत्रालय का सबसे बड़ा संस्थान है। इसकी प्रगति का अंदाज इसी से लगाया जा सकता है कि इस समय इसके ११ कारखाने हैं, जो अलग-अलग राज्यों में स्थित हैं। सन १९७४-७५ में इन कारखानों से १०१·६७ करोड़ रु. के मूल्य का उत्पादन और ८·३५ करोड़ रु. का लाभ हुआ। आशा है कि गत वर्ष (१९७५-७६ में) १२० करोड़ रुपये का माल तैयार हुआ होगा। जब हम यह देखते हैं कि सन १९६१-६२ में हिंदुस्तान एयरक्राफ्ट को लाभ केवल ७३ लाख रु. का था, तो उससे इसकी प्रगति का पता चलता है।

आज मरुत मार्क-१, मरुत मार्क-ट्रेनर, किरण, वसंत, चेटक, चीता, मिग-२१-एम और एच-एस ७४८ विमान इस कंपनी की ओर से तैयार होते हैं। इनके अतिरिक्त यह मरुत विमान के लिए आर्फियस ७०१ इंजन, मिग-२१-एम विमान के लिए इंजन, एच-एस ७४८ विमान के लिए डार्ट इंजन, चेटक और चीता हेलिकाप्टरों के लिए आरतूस्त १११-बी इंजन भी तैयार करती है।

विमान के सहायक उपकरणों के लिए लखनऊ में एक अलग कारखाना खड़ा किया गया है। नैट विमान का उत्पादन अब बंद हो गया है। उसके स्थान पर उसके सुधरे हुए रूप 'अजीत' का प्रोटोटाइप तैयार हो गया है, जिसकी परीक्षण-उड़ानें शुरू हो चुकी हैं। इस विमान के हिस्से-पुर्जे बनाने का काम भी शुरू हो गया है और एच-एस ७४८ विमान के मालवाहक संस्करण के लिए हिस्से-पुर्जे बनाने का काम भी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विमानों [illegible] निर्भर हो गये हैं, इसकी एक झांकी रक्षा-मंत्रालय की १९७५-७६ की रिपोर्ट में मिलती है। उसमें कहा गया है–'ढालकर और गढ़कर बनायी जाने वाली तरह-तरह की चादरें, धात्विक व गैर-धात्विक कच्चा माल, केबल, विभिन्न प्रकार के विमानों के लिए ब्रेक, पैराशूट जैसी वस्तुएं, जो पहले विदेशों से मंगायी जाती थीं, अब अपने यहां बनने लगी हैं। आर्फियस और आरतूस्त इंजन बनाने के लिए वेस्टन ढलाई की चादरें भी तैयार की जाने लगी हैं। विमान में लगाने के लिए एच-पी-एफ-४ पिस्टन इंजन के लिए सिलिंडर एवं हेडकास्टिंगों का भी सफलतापूर्वक विकास और निर्माण किया गया है। मिग–२१ विमान और उसके इंजन में लगने वाले उपकरणों को देश में ही तैयार करने की योजना बनायी गयी है। सन १९७५-७६ में देशीकरण के परिणाम-स्वरूप लगभग ६० लाख रुपये की विदेशी मुद्रा की बचत होने का अनुमान है।

विमान और हेलिकाप्टर आज के युद्ध में अत्यंत आवश्यक हैं। वायुसेना को तो विमान चाहिये ही, स्थलसेना को भी चौकसी के [illegible] विमानों और कम दूर के स्थानों पर जाने के लिए हेलिकाप्टरों की जरूरत पड़ती है। भारत की तरह जिस देश में कहीं पहाड़ हों और कहीं रेगिस्तान, उसमें तो हेलिकाप्टर और भी ज्यादा आवश्यक होते हैं। नौसेना भी विमानों का और हेलिकाप्टरों का प्रयोग करती है। यह सही है कि अभी भी नौसेना के लिए हम जो विमान काम में ला रहे हैं, वे स्वदेशी नहीं हैं और हमारी नयी फ्रिगेटों में जो हेलिकाप्टर रखे जायेंगे, वे ब्रिटेन के सीकिंग हेलिकाप्टर होंगे; परंतु अनेक फ्रिगेटों पर हमारे 'चीता' और 'चेतक' हेलिकाप्टर काम में आ रहे हैं।

इस प्रकार विमानों के संबंध में भारत लगभग आत्मनिर्भरता के निकट है। विमान-उद्योग के विकास का एक लाभ यह भी है कि विमान में बहुत-से इलेक्ट्रानिक उपकरण काम में आते हैं और विमान-निर्माण में स्वावलंबी होने के लिए इलेक्ट्रानिक उपकरणों में भी स्वावलंबी होना पड़ता है। विमान में काम आने वाले राडार, उसके हथियार यानी मिसाइलें, तोपें आदि भी हम बनाने लगे हैं। [अगले अंक में समाप्त]

–५५ काकानगर, नयी दिल्ली-३

★

अंक्टाड के एक अध्ययन के अनुसार, किसी 'डाक्टर के भारत से जाकर अमरीका में बसने का अर्थ है–भारत को ३ लाख ३० हजार रुपयों की हानि और अमरीका को ५१ लाख ७५ हजार रुपयों का लाभ।' इसी तरह किसी विज्ञानी के वहां जा बसने से हमारे देश को १ लाख ७२ हजार रुपये का घाटा होता है और अमरीका को १८ लाख ७५ हजार रुपयों का मुनाफा। अकेले १९७० में ३,१४१ भारतीय डाक्टर और विज्ञानी अमरीका में जा बसे, जिससे अमरीका की संपदा में ६५६ करोड़ रुपयों की वृद्धि हुई।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत

नूतन-पुरातन ज्ञान-विज्ञान
और मनोरंजन

शांत और अक्षुब्ध

हृदय को शांत रखो; दुनिया की किसी भी चीज से उसे उद्विग्न न होने दो–हर चीज का अंत होता है। सभी परिस्थियों में–भले ही वे कितनी भी विकट क्यों न हों–हमें विषण्ण होने के बजाय आनंदित ही होना चाहिये, ताकि हम उस सर्वाधिक हितकारी चीज, आत्मा की शांति एवं अक्षोभ्यता को खो न बैठें।

यदि सारी दुनिया और उसकी सारी चीजें अस्तव्यस्त कर दी गयी हों, तो भी उसके लिए अशांत होना व्यर्थ है; क्योंकि वह अशांति हित की अपेक्षा हानि अधिक करेगी। सब चीजों को अक्षुब्ध और शांत मन से सहना आत्मा को अनेक वरदानों से भरने के अलावा, हमें अपनी विपदाओं के बीच भी उनके प्रति सही निर्णय करने और उनका समुचित उपचार करने योग्य बनाता है।

–सेंट जान ऑफ द क्रास

वंशीवादिनी
[अनुकृति : वी. एन. ओके]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-तीर्थ

पंद्रहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध इतालवी कवि तोर्क्वातो तासो ने विश्वविद्यालय में कानून के बजाय दर्शनशास्त्र की पढ़ाई पसंद की, तो उनके पिता को बड़ी निराशा हुई। एक बार उन्होंने गलत विषय का चुनाव करने के लिए बेटे को काफी बुरा-भला कहा और अंत में बड़े गुस्से से पूछा–'आखिर दर्शन पढ़ने से तुम्हें क्या फायदा होगा ?'

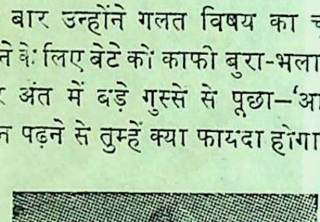

बुद्ध [अंगकोर वाट]

उत्तर मिला–'फिलहाल एक फायदा तो यही हुआ है कि इसने मुझे अपने पिता की नाराजगी को सब्र से सुनने-सहने की शक्ति दी है।'

सब्र और सज्जनता अपने आपमें बड़ी शक्ति है। –ली हंट

अभिनेता हेन्डरसन तब आक्सफोर्ड में पढ़ते थे। एक दिन एक सहपाठी के साथ किसी विषय पर उनकी बहस छिड़ गयी। बहस में हेन्डरसन जितने शांत और गंभीर थे, उनका सहपाठी उतना ही कटु और उग्र हो उठा था। अंत में तो हेन्डरसन की किसी बात पर वह इस कदर गुस्से में आ गया कि पानी से भरा गिलास उठाकर सारा पानी उनके मुंह पर उछाल दिया।

हेन्डरसन ने बड़ी ही शांति से रूमाल निकालकर अपना चेहरा पोंछा। फिर हल्का-सा मुस्कराकर कहा–'यह भला क्या दलील हुई ? मेरी बात का जवाब पानी के बजाय दलील से दो।'

महान सत्यों और चिरंतन विषयों को सामने रखकर जीना और चिरस्थायी आदर्शों का अनुसरण करना ऐसी चीज है

तिलक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिसकी बदौलत मनुष्य ऐसे समय धैर्यवान रहता है, जब संसार उसे उपेक्षा की दृष्टि से देख रहा होता है; और जब संसार उसकी प्रशंसा कर रहा होता है, तब वह लड़खड़ाता नहीं है।
—बालज़ाक

जब टामस हार्ट बेन्टन के घर में आग लगी, वे अमरीकी संसद की बैठक में गये हुए थे। खबर पाकर वे आये; मगर तब तक घर जलकर मलबे की ढेरी बन चुका था। वे शांति से कुछ क्षण उन खंडहरों को देखते रहे। फिर बोले—'अब मरना और भी आसान होगा। उस समय इस बात का गम नहीं होगा कि अपने पीछे बहुत कुछ छोड़कर जाना पड़ रहा है।'

स एव धन्यो विपदि स्वरूपं यो न मुञ्चति।
त्यजत्यर्ककरैस्तप्तं हिमं देहं न शीतताम्॥

—धन्य है वह, जो विपदा में भी अपनी प्रकृति को नहीं छोड़ता। सूर्य की किरणों से तपा हुआ हिम अपना शरीर छोड़ देता है (पिघलकर पानी हो जाता है), मगर शीतलता नहीं छोड़ता।

संत जान बोस्को किसी को शिकायत-भरा पत्र लिखना चाहते थे। वे रात-भर सोचते रहे कि उसमें क्या कुछ लिखें। सुबह जब वे लिखने बैठे, तो उनके मन में आया कि इस समय मैं गुस्से में हूं, सो मेरे बजाय मेरा गुस्सा यह पत्र लिखेगा, इसलिए अभी उसे लिखना ठीक न होगा। वे उठकर दूसरे कामों में लग गये।

कुछ समय बाद जब वे फिर पत्र लिखने बैठे, उनके मन में फिर गुस्सा जागा। वे फिर उठ खड़े हुए। दो-तीन बार और ऐसा ही हुआ। आखिर सांझ घिर आयी। अब जब वे पत्र लिखने बैठे तो उनका मन शांत था।

संत संत क्यों हैं? इसलिए कि वे ऐसे समय प्रसन्न रहते हैं, जबकि प्रसन्न रहना कठिन होता है; वे ऐसे समय धीरज नहीं खोते, जब धीरज न खोना कठिन होता है; वे ऐसे समय आगे बढ़ रहे होते हैं, जब जी चाह रहा होता है कि बैठकर आराम करें; वे ऐसे समय जबान नहीं खोलते, जब उनका मन बोलने को उत्सुक होता है। —अज्ञात

संमानित नीग्रो विज्ञानी जार्ज वाशिंग्टन कार्वर ने जिस बैंक में अपनी जीवन-भर की कमाई जमा करवायी थी, उसका दिवाला निकल गया। यह सुनकर एक मित्र ने सहानुभूति प्रकट की — 'सचमुच, बड़ा नुक्सान हुआ आपका। सारी की सारी जमा-पूंजी जाती रही।'

कार्वर हल्का-सा मुस्कराये और शांतिपूर्वक बोले—'इस तरह वह पूंजी शायद किसी के काम आयी हो। मैं तो उसका उपयोग नहीं कर रहा था। बेकार में वह बैंक में पड़ी हुई थी।' गुणों के आराधक योगी कवि भर्तृहरि ने एक श्लोक में धीरज को सत्पुरुष का पिता कहा है, जो कि ठीक ही है।

अपने लक्ष्य के पथ पर एक बार में एक ही कदम उठाकर संतोष करना और धीरज न खोना कठिनतम कामों में से एक है।
—वाल्टर जर्मन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनोबाजी द्वारा संपादित 'रूहुल कुरान' के संस्करण कई भारतीय भाषाओं में तथा अंग्रेजी में निकल चुके हैं। लेकिन बहुत कम लोगों को इसका पता है। 'रूहुल कुरान' के बारे में विनोबाजी ने कहा है— 'धर्मग्रंथ से चयन नहीं करना चाहिये, उसे पूरा का पूरा उसी स्थिति में ले लेना चाहिये ऐसा कहना सनातनी वृत्ति का द्योतक है। "रूहुल कुरान" के बारे में ऐसी मनोवृत्ति आम तौर पर मुसलमानों ने नहीं दिखायी, इसे मैं संतोष की बात मानता हूं। समन्वय के लिए धर्म-विचारों का दृढ़भाजक निकालना होगा ......आज धर्म-समन्वय आवश्यक हो गया है। अगर समन्वय करना है, तो गौण-मुख्य का विवेक करना होगा और विवेक से धर्मग्रंथों का चयन करना होगा। धर्म-विचारों का दृढ़भाजक निकालने पर शुद्ध अध्यात्म हाथ लगेगा और विज्ञान-युग में वही काम की वस्तु है।'

यदुनाथ थत्ते

'रूहुल कुरान' अर्थात् 'कुरान-सार'। यह सार ९ खंडों में तथा ९० परिच्छेदों में बंटा हुआ है। ग्रंथारंभ, ईश्वर, भक्ति-रहस्य, भक्ताभक्त, धर्मनीति, मानव, पैगंबर, तथा गूढसाधन–ये ९ खंड हैं। इनके निर्देशन के लिए विनोबाजी ने संस्कृत में श्लोकों की रचना की है। इन श्लोकों की सहायता से समूचा ग्रंथ स्मृति-पटल पर अंकित हो सकता है। अखिल भारतीय उपयोग को दृष्टि में रखकर श्लोकों की रचना संस्कृत में की गयी है। वैसे तो उनका मराठी में होना स्वाभाविक कहा जाता।

इन श्लोकों में जो प्रसाद-गुण तथा अर्थानुसंधान है, वह बड़ा ही सहज है। इन संस्कृत श्लोकों को पढ़ने पर कुरान का परायापन मिट जाता है और षड्दर्शनों के साथ सातवां इस्लाम दर्शन अपने आप जुड़ जाता है। नमूने के तौर पर कुछ श्लोक यहां प्रस्तुत हैं। नौ खंडों के विषय को विनोबाजी ने एक श्लोक में इस तरह ग्रथित किया है:

आरम्भे तदनुध्यानं भक्त्या भक्तैर्निषेवितम्।
धर्मनीती मनुष्याणां प्रेषितैर्गूढशोधनम्॥

आगे कुरान का अर्थानुसंधान करने वाले श्लोक आते हैं:

एक एवाद्वितीयश्च प्रकाशो ज्ञानमेव च।
दयालुर्दानवान् कर्ता सुरूपः सुप्रकेतनः॥
सर्वशक्तिः स्वतन्त्रेच्छो मनोवाचामगोचरः।
नामभिर्घोषितश्चाविः प्रार्थनीयः पुनःपुनः।
उपासनोपदिष्टेयं या धृता भौतिकैरपि।
निष्ठा त्यागस्तपश्चर्या धैर्यं मद्भक्ति-
लक्षणम्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्संगः क्षणिको भावो वैराग्यं च
तदुतद्भवम् ।
लक्षण्याः प्रार्थनावन्तो नैष्ठिका धैर्य-
शालिनः।।
अहिंसका ये मद्भक्ता मद्दूतैरभि-
रक्षिताः ।
नास्तिका भ्रान्तचित्तास्तु मोघा निरय-
गामिनः ।।
सत्यधीरो वदेद्वाक्यं सत्यं शिव-
मनिन्दितम् ।
न्यायं रक्षेत् परं न्यायात् करुणैव
गरीयसी।।
अहिंसायां दृढश्रद्धा स्नेहेन सहजीवनम् ।
पापैरसहकारश्च प्रतिकारश्च संयतः ।।
अस्वादो वासनाशुद्धिरस्तेयं मितसंग्रहः ।
दानं शिवानुसन्धानं नीतिराचार-
पालनम् ।।

इन श्लोकों को पढ़ने पर ऐसा लगता है कि यह तो भारतीय दर्शन का ही कोई हिस्सा है । विनोबाजी ने इसे 'भाषा की अहिंसा' का नाम दिया है । पुराने शब्द नये संदर्भ में नये अर्थ को प्रतीति कराते हैं। वस्तुतः यह अनुवाद कोई कोरा अनुवाद नहीं है; बरसों के चिंतन की उपलब्धि है ।

विनोबाजी हमेशा कहा करते हैं कि जिस भाषा में ज्ञानेश्वर-जैसे संत पैदा हुए, वही मेरी मातृभाषा है इसमें मैं गौरव अनुभव करता हूं । ज्ञानेश्वर के कारण मराठी को इतनी क्षमता प्राप्त हुई है कि वह दुनिया

जन्मदिन पर 'जय जगत् !'

का सूक्ष्म से सूक्ष्म विचार प्रकट कर सकती है । विनोबाजी का सहजोद्गार मराठी में होता है, इसलिए कुरान के अनुवाद का प्रारंभ उन्होंने मराठी में ही किया । 'अल् फातिहः' तथा 'अल् इखलास' कुरान के बहुत ही महत्त्वपूर्ण अंश माने जाते हैं। पैगंबर मुहम्मद ने 'अल् फातिहः' को लुब्बे-लुबाब यानी कुरान का सारभूत अंश माना है और कहा है कि 'अल् इखलास' को पढ़ने से एक तिहाई कुरान पढ़ने का सवाब अर्थात् पुण्य हासिल होता है। विनाबाजी ने प्रासादिक मराठी में इनका अनुवाद किया है :

قال رسول الله : اطلبوا العلم من المهد الى اللحد

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरंभी ईशाचे नाव, कृपाळू जो कनवाळू
स्तुति त्या देवाची, प्रभू जो विश्वाचा
कृपाळू ! कनवाळू, स्वामी शेवटच्या
दिवसाचा
तुझी करू भक्ती, तुझीच रे याचना
सरळ मार्ग दाखव तू आम्हा
ज्यावरी तू करतोस कृपा त्यांचा
न ज्यावरी तुझा प्रकोप उतरे
नवा भ्रमित जो त्यांचा . . .

कृपाळू, कनवाळू, प्रभू—ये सभी शब्द मराठी संतों की परिभाषा के हैं; अत: मराठी मन 'अल् फातिह:' के इस मराठी रूप को सहज ही अपना सकता है।

'अल् इखलास' का यह मराठी रूप भी कितना सुंदर है !

म्हण रे देव तो एक
देव तो निरपेक्षचि
नव्हे जनिता, नव्हे जन्य
नसे कोणीही तत्सम

मराठीभाषी मुसलमान अरबी के 'अल् फातिह:' तथा 'अल् इखलास' को रटने से एक अवास्तविक-सा आध्यात्मिक समाधान अनुभव करते हैं। वे मराठी में 'अल् फातिह:' तथा 'अल् इखलास' पढ़ने से सीधे उसके अर्थ की गहराई में पहुंच सकते हैं और जीवन-मार्ग का बोध प्राप्त कर सकते हैं।

विनोबाजी के अनुवाद की खूबी यह है कि उसमें हम मराठी संतवाणी का हुंकार सुन सकते हैं। गैरमुसलमान मराठीभाषी भी मराठी 'अल् फातिह:' तथा 'अल् इखलास' में जरा भी परायापन अनुभव नहीं करेंगे।

धर्मग्रंथों के ऐसे सारग्रंथ यदि प्रत्येक भाषा में प्रकट हों, तो निश्चय ही धर्म-समन्वय का काम सुगम होगा। विनोबाजी ने अपने कार्य से इस दिशा में जो मार्ग-संकेत दिया है, वह बड़े महत्त्व का है।

जब 'रूहुल कुरान' प्रकाशित हुआ, तो कुरान के पारंगत विद्वानों ने उसकी समीक्षा की। इनमें भारत के उलेमा थे और पाकिस्तान के भी। इन समीक्षाओं में दिये गये सुझावों का लाभ नये संस्करण प्रकाशित करते समय उठाया गया।

विनोबाजी ने कुरान का अध्ययन क्यों और कैसे शुरू किया, इसकी कहानी भी बहुत रोचक है। जब विनोबाजी वर्धा आये और वहां आश्रम की स्थापना हुई, उसमें एक मुसलमान बच्चा भी शामिल हुआ। विनोबाजी आश्रम के संचालक तथा अध्यापक थे। उस बच्चे ने सोचा कि क्यों न मैं कुरान का अध्ययन विनोबाजी से ही करूं? विनोबाजी ने उसकी इच्छा सुनकर मूल अरबी कुरान और अनुवाद लेकर स्वयं उसका गहरा अध्ययन शुरू किया। आकाश-वाणी पर प्रसारित कुरान की तिलावत का लाभ उठाकर उन्होंने शुद्ध और सस्वर कुरान-पाठ करना भी सीखा।

इस तरह १९३७ में इसका आरंभ हुआ। चौथाई शताब्दी के चिंतन व निदिध्यासन के बाद 'रूहुल कुरान' तैयार हुआ। कुरान का विनोबाजी का अध्ययन इतना गहरा और विस्तृत है कि इने-गिने ही मुसलमान इस बारे में उनकी बराबरी कर सकेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौलाना अबुल कलाम आजाद कुरान के भाष्यकार के रूप में प्रसिद्ध थे। विनोबाजी के कुरान-अध्ययन को देखकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की थी। कश्मीर-निवासी कुरान-विशेषज्ञ हजरत मौलाना मुहम्मद सईद मसूदी ने 'रूहुल कुरान' को पढ़कर कहा था—'अगर इस काम के लिए कोई कमिटी बनती, तो भी इतने छोटे अरसे में इतनी खूबसूरती से यह काम न हो पाता।' हां, यह बात सही है कि विनोबाजी को भी चौथाई शताब्दी इसमें लगी, लेकिन एक ही हाथ से सब काम हुआ और धर्म-समन्वय की दृष्टि को अपनाकर हुआ।

कुरान के बारे में जो-जो साहित्य मिल सकता था, उस सबका विनोबाजी ने अध्ययन किया है। अंग्रेजी में पामर, पिक्थाल, यूसुफ अली, मौलवी शेरअली आदि ने जो लिखा है, उसका अध्ययन विनोबाजी ने किया है। साथ ही उन्होंने हजरत शेख उल हिंद मौलाना शबीर अहमद उस्मानी का 'कुरानुल मजीद', शाह रफीउद्दीन देहलवी तथा अशरफ अली थानवी का 'कुरानुल हकीम', मौलवी हाफिज नजीर अहमद खां का 'हमाइल शरीफ', मिर्जा बशीरुद्दीन अहमद की 'तफ्सीरे सगीर', दिल्ली की जामा मस्जिद द्वारा प्रस्तुत 'लगातुल कुरान' आदि ग्रंथों का लाभ भी इस काम के लिए उठाया है। एक गैर-मुसलमान ने कुरान की यह जो सेवा की है, वह अद्वितीय ही मानी जायेगी।

विनोबाजी के राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य विषयों से संबंधित विचारों तथा उनसे प्रेरित कार्यक्रमों के बारे में तो लोग काफी जानकारी रखते हैं; लेकिन धर्मग्रंथों के बारे में उन्होंने जो महत्त्वपूर्ण कार्य किया है, वह प्रायः अपरिचित ही रहा है।

मनुष्य को ईश्वर के संदेश से परिचित कराना तथा मनुष्य को भगवान के बताये रास्ते का भान कराना इस्लाम में 'तब्लीग' कहा जाता है। विनोबा ने 'कुरान-सार' द्वारा तब्लीग का जो काम किया है, उसकी बराबरी कर पाना किसी गैरमुसलमान के लिए लगभग असाध्य ही है।

—शिवशक्ति प्रसाद, ३१३, शुक्रवार पेठ, पुणे-४११००२

एक दिन विनोबाजी ने कहा—'हिंदू धर्म आधे दोहे में है—दया धर्म का मूल है, पाप मूल अभिमान।' फिर कुछ रुककर बोले—'अभिमान नौ प्रकार का होता है—१. अनुभव, २. कुल, ३. कर्तृत्व, ४. चारित्र, ५. बल, ६. बुद्धि, ७. रूप, ८. सत्ता एवं ९. संपत्ति का।'

—शैलेंद्रकुमार निर्मल

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

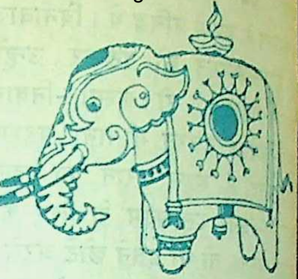

वाक्यद्वीप

मनुष्य जितना दूसरों की भलाई के लिए काम करता है, स्वयं उतना ही महान बनता जाता है।
—महात्मा गांधी

मुझे उस कीड़े में वास्तविक महानता महसूस होती है, जो चुपचाप, हर क्षण काम में जुटा हुआ अपना कर्त्तव्य पूरा करता है।
—स्वामी विवेकानंद

जिसका अपने ऊपर जितना ही काबू है, वह उतना ही महान है। —बिशप हाल

अगर मैं महान कार्य नहीं कर सकता, तो भी छोटे कार्यों को महान ढंग से तो कर सकता हूं।
—क्वार्ल्स

महानतम संत वह नहीं है, जो असाधारण कार्य करता है; बल्कि वह है, जो साधारण कार्यों को असाधारण रूप से अच्छी तरह करता है।
—फ्रांसिस

जो मनुष्य अपने छोटेपन की मर्यादा में नहीं रहता, वह अपनी महानता खो बैठता है।
—फ्रांसिस

जो व्यक्ति न्यायपरायण नहीं है, वह कभी महान नहीं हो सकता। —डा. जानसन

महान व्यक्ति इसलिए महान लगते हैं कि हम खुद घुटनों के बल बैठे हुए हैं। हमें उठकर खड़े होना चाहिये।
—दूं

महान व्यक्ति का लक्षण यह है कि वह अपने समय से बहुत आगे होता है।
—हेनरी पीटर ब्राउहम

वह देश सर्वश्रेष्ठ और सर्वाधिक गौरववान है, जिसमें महान व्यक्तियों की संख्या सबसे अधिक है।
—सिंक्लेयर हुं

केवल वह मनुष्य 'महान' कहलाने का हकदार है, जो या तो महान कार्य करता है या महान कार्य करना सिखाता है, या महान कार्यों के हो चुकने पर उसका शानदार ढंग से वर्णन करता है।
—मिल्टन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जान एफ. केनेडी शायद इस युग के सर्वाधिक प्रचारोन्मुख विश्व-राजनेता थे। आलोचकों का कहना है कि उनकी महिमा मुख्यतः प्रचार-तंत्र द्वारा निर्मित और मसनूई थी। तथ्य क्या कहते हैं? ...... **निरंजन** द्वारा प्रस्तुत।

केनेडी का सत्य

एक संपादक मित्र ने अभी उस दिन मुझसे कहा था–'यकीन करेंगे आप? अमरीका की द्विशताब्दी के सिलसिले में हम आठ-दस महान अमरीकियों के वचन उद्धृत करना चाहते थे। ऐसे अमरीकियों की सूची बनाने बैठे तो हमें हेलन केलर और मार्टिन लूथर किंग तक याद आये, मगर केनेडी की याद नहीं आयी। हालांकि फिर जब क्यूबा-कांड की याद आयी तो हम सबने कहा, निश्चय ही केनेडी महान राजनेता थे–यदि वे (और ख्रुश्चोव) महान न होते तो क्यूबा-कांड का अंत बड़ा भीषण होता।'

क्या आज से दस साल पहले हम-आप इसकी कल्पना कर सकते थे कि महान अमरीकियों की गणना करते समय केनेडी का नाम फौरन याद न आये? केवल बारह-तेरह वर्षों में–२२ नवंबर १९७६ को केनेडी की तेरहवीं बरसी है–इतना अवमूल्यन कैसे हो गया?

जैसा कि विख्यात इतिहासज्ञ आर्नाल्ड टायन्बी ने नेहरूजी विषयक एक निबंध में आलंकारिक ढंग से कहा था, प्रत्येक महापुरुष की मृत्यु के बाद गिद्ध और कौवे उसके शव को नोचते-खाते हैं। यह एक स्वाभाविक और अनिवार्य प्रक्रिया है। परंतु केनेडी के मामले में एक कारण और नजर आता है।

केनेडी की 'महानता' का बहुत-सा अंश प्रचार-विद्या के आधुनिकतम गुरों के जरिये गढ़ा गया था। प्रचार और जनसंपर्क के विशेषज्ञों ने चटक रंगों से केनेडी का अतिरंजित रूप से विशाल और भव्य चित्र खींचा था। वे रंग बहुत जल्दी फीके पड़ गये; क्योंकि वे कच्चे रंग थे।

हाल में प्रकाशित एक अमरीकी पुस्तक ने इस अतिरंजित चित्र के पीछे की वास्तविकता को पेश करने की कोशिश की है। पुस्तक का नाम है–'द सर्च फार जे. एफ. के.'। (जे. एफ. के. यानी जान फिट्ज़-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेरल्ड केनेडी।) उसे लिखा है बंद हो चुकी अमरीकी पत्रिका 'सैटर्डे ईवनिंग पोस्ट' के भूतपूर्व प्रधान-संपादक क्ले ब्लेयर और उनकी पत्नी जोन ब्लेयर ने। लेखक-युगल ने केनेडी के संबंध में प्रचलित या प्रचारित अनेक बातों के सचाई को चुनौती दी है।

सचमुच ही केनेडी राष्ट्रपति की कुर्सी पर बैठने वाले सबसे कमउम्र अमरीकी थे। पद-ग्रहण करते समय वे ४३ वर्ष २३६ दिन के थे। मगर उन्हें तरुणाई और स्वास्थ्य के प्रतीक के रूप में जो चित्रित किया गया था, वह कहां तक ठीक था?

ब्लेयर-दंपति ने अपनी पुस्तक में यह दरशाया है कि केनेडी उपवृक्क (एड्रीनल) ग्रंथियों की विफलता से होने वाले एडिसन रोग के शिकार थे और जीवन के अंतिम पंद्रह वर्ष दवा की बदौलत जिये। वे प्रतिदिन २५ मिलिग्राम कार्टिसोन का सेवन करते थे और उनकी जांघ में 'डी.ओ. सी. ए.' नामक दवा की गुटिकाएं प्रविष्ट करा दी जाती थीं, ताकि शरीर को वह निश्चित मात्रा में स्वयं मिलती रहे।

केनेडी के एक डाक्टर का तो यह भी कहना था कि केनेडी-परिवार ने देश के विभिन्न हिस्सों में ये दवाइयां सेफ डिपाजिट बक्सों में छिपा रखी थीं, ताकि आवश्यकता पड़ने पर तुरंत गुप्त रूप से प्राप्त हो सकें।

सन १९५९-६० में केनेडी के स्वास्थ्य के बारे में सार्वजनिक रूप से सवाल उठाया गया था। राष्ट्रपति चुने जाने के कुछ ही दिन बाद १० नवंबर १९६० को केनेडी ने स्पष्ट शब्दों में कहा था-'मुझे कभी एडिसन रोग नहीं हुआ।' यह सरासर गलत बात थी और केनेडी का निजी स्टाफ इस बात को प्रायः स्वीकार करता था कि केनेडी को उपवृक्क ग्रंथियों की शिकायत थी और यह शिकायत द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान दक्षिण प्रशांत में नौसैनिक के रूप में काम करते समय मलेरिया हो जाने से शुरू हुई थी। वस्तुतः १९४७ में लंदन के एक क्लिनिक में जांच से यह बात सिद्ध हो चुकी थी कि केनेडी को एडिसन रोग है और बोस्टन के एक क्लिनिक में इसकी पुष्टि भी हुई थी।

पूछा जा सकता है, केनेडी इतने बीमार थे तो वे इतने यौवनपूर्ण कैसे लगते थे। एडिसन रोग में वजन और भूख में कमी हो जाती है, शरीर की रोग-संक्रमण (इन्फेक्शन) रोकने की क्षमता भी घट जाती है। मगर रोगी युवा-सा बना रहता है।

ऊपर बताया गया है कि केनेडी रोज २५ मिलिग्राम कार्टिसोन का सेवन करते थे। इस हारमोन के असर से बहुधा मुंह फूल-सा जाता है, जैसा कि केनेडी को भी हुआ करता था। साथ ही, हारवर्ड मेडिकल स्कूल के विशेषज्ञ डा. जार्ज डब्ल्यू. थार्न के कथनानुसार, 'कार्टिसोन से खुशहाली की तीव्र अनुभूति होती है, बिलकुल सुखभ्रांति के स्तर की ...... ताकत और मन के केंद्रीकरण की शक्ति में सचमुच वृद्धि होती है।' वे यह भी कहते हैं कि अधिकांश रोगियों में इससे कामेच्छा भी बढ़ती है। सो संभव है कि

निरंतर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केनेडी की तथाकथित शाश्वत तरुणाई उनके रोग का फल रही हो।

केनेडी को पीठ-दर्द की शिकायत थी, जिससे वे डोलन-कुर्सी (रॉकिंग चेयर) पर बैठा करते थे। पहले कहा जाता था कि यह दर्द हारवर्ड विश्वविद्यालय में फुटबाल खेलते समय लगी चोट का परिणाम था। बाद में कहा जाने लगा कि १९४३ में सालोमन द्वीपों में मोटर-टारपीडो किश्ती पीटी-१०९ के डूबने के समय रीढ़ में लगी चोट इस स्थायी दर्द की जड़ थी। ब्लेयर-दंपति का कहना है कि असल में केनेडी जन्म से ही 'अस्थिर पीठ' वाले थे और इस बात को उनका परिवार छिपाता रहा।

पुस्तक में यह भी कहा गया है कि पीटी-१०९ किश्ती-कांड के 'हीरो' के रूप में केनेडी की ख्याति भी काफी हद तक मसनूई है और केनेडी के पिता ने इस घटना में अपने पुत्र की भूमिका का अतिरंजित वर्णन एक विश्वविख्यात अमरीकी मासिक पत्रिका में उद्देश्यपूर्वक दुबारा छपवाया था।

केनेडी कहते थे कि वे लंदन स्कूल ऑफ़ इकनामिक्स में पढ़े थे। यही बात उनकी मां ने अपनी आत्मकथा में तथा प्रो. जेम्स एम. बर्न्स ने केनेडी की 'प्रामाणिक' जीवनी में भी कही है। मगर ब्लेयर-दंपति बताते हैं कि केनेडी ने लंदन स्कूल में केवल नाम दर्ज कराया था, मगर वे एक दिन भी वहां बैठकर पढ़े नहीं।

बड़े साफ शब्दों में ब्लेयर-दंपति अपनी पुस्तक में कहते हैं—'यह छाप डाली गयी है कि जैक (यानी जॉन एफ. केनेडी) स्वस्थ-बलिष्ठ युवक थे ...... इससे उलटी बात सच थी। दूसरे, यह प्रभाव पैदा किया गया है कि जैक बहुत लगनशील और मेधावी छात्र थे। इस मामले में भी हम मानते हैं कि असलियत बिलकुल उलटी थी। ..... यह छाप बड़े प्रयत्नपूर्वक पैदा की गयी है कि जैक युद्धवीर थे......प्रमाणों से यह सिद्ध नहीं होता। असल में वे गढ़ंत युद्धवीर थे।'

वे तो यहां तक कहते हैं कि केनेडी १९४१ में एक डेनिश स्त्री से घनिष्ठता के कारण नौसेना से निकाल दिये जाने वाले थे। यह स्त्री 'इंगा बिगा' नाम से मशहूर थी। इस पर जासूस होने का शक था।

पुस्तक में ब्लेयर-दंपति ने दावा किया है कि यह सब जानकारी उन्होंने सैकड़ों अप्रकाशित पत्रों से तथा केनेडी को अच्छी तरह जानने वाले १५० व्यक्तियों से अपनी बातचीत से जुटायी है।

सवाल उठता है कि अब इन सब बातों को लिखने-जानने का महत्त्व क्या है? ब्लेयर-दंपति का उत्तर है कि इससे प्रकट होता है कि किस प्रकार प्रचार-साधनों के चालाकी-भरे उपयोग द्वारा किसी को सं. रा अमरीका का राष्ट्रपति बनाया जा सकता है।

जो भी हो, यह सब पढ़कर एक बात मन में उठे बिना नहीं रहती कि पंद्रह साल तक रोग और तीव्र दर्द से निरंतर जूझते हुए जो आदमी इतनी कम उम्र में इतने बड़े देश का राष्ट्रपति बन जाये, उसमें कितनी संकल्प-शक्ति रही होगी।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बूढ़े सेनापति की विदाई

विश्वनाथ

घटना आज से लगभग आधी सदी पहले की है। आधुनिक चीन के निर्माता माओ तब अस्तित्व के लिए जूझ रहे थे। उनके थके-हारे हताश सैनिक एक-एक करके उनका साथ छोड़ते जा रहे थे। 'कुछ करना ही पड़ेगा', माओ जानते थे। और निरंतर पराजय से घनीभूत निराशा के उन क्षणों में जिस व्यक्ति को उन्होंने सहायता के लिए पुकारा, उसका नाम था–चू तेह।

चू तेह (सही उच्चारण 'जू देह' बताया जाता है) तब कुओमितांग सेना की एक बागी टुकड़ी के नेता थे। माओ के छोटे भाई जब माओ का निमंत्रण लेकर पहुंचे, चू तेह बिना किसी झिझक के उनके साथ हो लिये और १९२८ के वसंत में हुई माओ-चू तेह मुलाकात ने चीन के विद्रोही युवकों को एक नये वसंत का सपना दिया। इसके बाद की सारी लड़ाई माओ और चू तेह के संयुक्त नेतृत्व में लड़ी गयी। विद्रोह की राजनैतिक बागडोर माओ संभालते थे, सेना का संचालन चू तेह करते थे। यह साझी मुखियागिरी इतनी सफल हुई कि बहुतों को भ्रम हो गया कि माओ और चू तेह एक ही व्यक्ति हैं।

यह भी एक विडंबना ही है कि पाश्चात्य समाचार-एजेंसियों की मेहरबानी से दुनिया ने माओ के बारे में लगभग सब कुछ जान लिया, मगर चीन की लाल सेना के संस्थापक चू तेह का जीवन लंबे अरसे तक रहस्य ही बना रहा।

पिछले दिनों ९० वर्षीय मार्शल चू तेह की मृत्यु का समाचार सारी दुनिया के अखबारों में बड़ी प्रमुखता से छपा। चाऊ एन-लाई की मृत्यु के बाद की उठापटक और माओ की लंबी बीमारी से डगमगा उठी चीनी राजनीति को इस मृत्यु ने और डावांडोल कर दिया है। चू तेह चीनी संसद के अध्यक्ष थे और पोलिट ब्यूरो के एक वरिष्ठ सदस्य भी। परंतु उनका यह परिचय अधूरा ही नहीं, भ्रामक भी है। अधूरा इसलिए कि वे इसके अलावा भी बहुत-कुछ थे; भ्रामक इसलिए कि वे मूलतः राजनीतिज्ञ नहीं सैनिक थे। इतिहास में उन्हें चीन की लाल-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना के संस्थापक और लंबी कूच के महान सेनापति के रूप में याद किया जायेगा।

किंतु चू तेह की कहानी लाल सेना की कहानी से कहीं अधिक लंबी है और कहीं अधिक रंगीन भी। इस विलक्षण सैनिक ने राजसी ठाटबाट को ठोकर मारकर संघर्ष की कांटों-भरी राह पर स्वेच्छा से कदम रखा था। लंबा-चौड़ा हरम, नौकर-चाकरों की फौज, सुख-सुविधाएं सब कुछ उनके पास था। मगर कुछ ऐसा हुआ कि सब कुछ छोड़कर वे जन-नेता बन गये। यह सब कैसे और क्यों हुआ, इसका उत्तर पाने के लिए हमें चू तेह की जीवन-कथा को आरंभ से पढ़ना होगा।

आरंभ से अर्थात् चू तेह के जन्मकाल से। किंतु यहीं से विवाद शुरू हो जाता है। एक अरसे तक उनकी जीवनी की जो रूपरेखा दुनिया को दी जाती थी, वह साम्यवादी 'भक्तमाल' की आदर्श संतकथाओं के ढर्रे की थी—गरीब किसान के घर पैदा हुए, स्कूल के दिनों में ही स्थानीय जमींदार के खिलाफ विद्रोह कर दिया, संघर्ष की आग में तपकर कुंदन बन गये इत्यादि-इत्यादि। इसमें एक पाठभेद यह था कि उन्होंने कुली के रूप में जीवन प्रारंभ किया था।

मार्शल चू तेह

मगर साम्यवाद के इतिहासविद् एडगर स्नो ने इन कथाओं को कल्पना की उड़ान माना। १९३७ में छपी अपनी क्लासिकी पुस्तक 'रेड स्टार ओवर चाइना' में उन्होंने लिखा—'चू तेह के व्यक्तित्व की विशेषता यह है कि जमींदार घराने का यह वंशज, जो युवावस्था में ऐश्वर्य और भोग-विलास की सीढ़ियां चढ़ता रहा, प्रौढावस्था में सारी सुख-सुविधाओं को ठोकर मार सका, संकल्प-बल द्वारा अफीम की लत छोड़ सका और एक ऐसे आदर्श की प्राप्ति के लिए अपना सारा वैभव लुटा सका, जिसे उसने अपने युग का महानतम उद्देश्य माना।'

मगर इन्हीं एडगर स्नो ने तीस साल बाद चीन संबंधी अपनी नवीन पुस्तक 'द अदर साइड ऑफ़ द रिवर' में लिखा कि चू तेह एक ऐसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसान-परिवार में पैदा हुए थे, जिसमें गरीबी के कारण पांच बच्चों को पैदा होते ही पानी में डुबोकर मार डाला गया था; चू तेह केवल इसलिए बच व पल सके थे कि उन्हें एक संबंधी ने गोद ले लिया था।

इन दो विवरणों में से चाहे कोई भी सच हो, मगर यह तो सभी ने स्वीकार किया है कि चू तेह मनमौजी किस्म के दुस्साहसी युवक थे और युन्नान की सेना-अकादमी से प्रशिक्षण पाने वाले उन प्रथम चीनी युवकों में से थे, जिन्हें आधुनिक सैनिक प्रशिक्षण मिला था। प्रशिक्षण के बाद वे युन्नान की सेना में अफसर बने और तीस वर्ष की अवस्था में ही ब्रिगेडियर-जनरल के पद पर पहुंच गये। फिर धीरे-धीरे राजनैतिक और सैनिक सत्ता के बढ़ने के साथ-साथ उनका प्रभाव-क्षेत्र भी विस्तृत होता गया। अब उनमें वे तमाम 'गुण' थे, जो उन दिनों चीनी सैनिक सत्ताधारियों में होते थे—भ्रष्टाचार, ऐयाशी, अफीम की लत। उनकी महलनुमा कोठी में अनेक पत्नियां और रखैलें थीं।

साथ ही चू तेह में एक 'अवगुण' भी था—उन्हें पढ़ने का बहुत शौक था। एक दिन इसी शौक ने उनके जीवन का नक्शा पलट दिया।

वह चीन में क्रांतिकारी साहित्य का उदय-काल था। चू तेह ने भी उस साहित्य को पढ़ा। परिणाम यह हुआ कि उन्होंने राजसी ठाटबाट को ठोकर मार दी, पत्नियों और रखैलों को पेंशन देकर विदा कर दिया और स्वयं 'नये चीन' के निर्माण का सपना ... की खोज में निकल पड़े। युन्नान से वे शंघाई गये, जहां उनकी भेंट युवा क्रांतिकारियों से हुई। इसी बीच ... इच्छाशक्ति के बल पर उन्होंने अफीम के चंगुल से अपने को छुड़ा लिया। शायद यह उनके जीवन की सबसे विकट लड़ाई थी और इसमें वे विजयी हुए।

इसके बाद ४० वर्ष की उम्र में चू तेह एक बार फिर विद्यार्थी बने। जर्मनी में वहां मार्क्सवाद पढ़ा। सामाजिक क्रांति के नये शास्त्र से परिचित हुए। उन्हें यह ... पढ़ाने वाले अध्यापक उनके बेटों की उम्र के थे। बुखारिन और लेनिन के साहित्य ने उनके सामने एक नयी दुनिया का नक्शा खोल दिया। वे जर्मनी में स्थापित चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य बन गये।

जर्मनी से वे फ्रांस गये और वहां से मास्को। मास्को से पूरे कम्युनिस्ट बनकर १९२५ में चीन लौटे। दो वर्ष बाद च्यांग काई-शेक और कम्युनिस्टों में मतभेद होने पर वे कुओमितांग छोड़कर चीन की ... क्रांति की राह पर चल पड़े। उन्हीं दिनों माओ त्से-तुंग ने इस भावी महासेनानी को बुलावा भेजा, जिसका जिक्र हम लेख के आरंभ में कर चुके हैं।

इसके आगे चू तेह की कहानी माओ के जीवन से इस कदर जुड़ गयी कि दोनों को अलग-अलग नहीं किया जा सकता। उन दिनों लाल सेना के नाम जारी होने वाले सभी आदेशों पर चू तेह और माओ दोनों के हस्ताक्षर रहते थे। समाचारपत्र उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लेख 'चू माओ' के जुड़वां नाम से करते थे। अनेक चीनियों का विश्वास था कि चू तेह और माओ एक ही व्यक्ति के नाम हैं।

चीनी साम्यवादियों की इतिहास-प्रसिद्ध लंबी कूच की सारी व्यूह-रचना चू तेह की सूझ थी। आज भी विश्व के सेना-विशेषज्ञ उस व्यूह-रचना पर आश्चर्य करते हैं। अपनी सेना से ८०-९० गुना विशाल सेना से लोहा लेना मजाक नहीं है; पर चू तेह ने लोहा लिया, और सफलतापूर्वक लिया।

असल में, छोटे कद और मजबूत काठी के चू तेह आदर्श सैनिक थे और आदर्श सेनापति थे। सैनिक उनसे प्यार करते थे; क्योंकि वे सैनिकों से गहरा प्यार करते थे। मशहूर है कि वे सैनिकों को ऐसा कोई आदेश नहीं देते थे, जिसे स्वयं नहीं कर सकें। सेनापति होते हुए भी वे वही खाते थे, जो उनके सैनिकों को मिलता था; वही पहनते थे, जो उनके सैनिकों को मयस्सर था। उनकी आंखें सैनिकों की छोटी से छोटी कठिनाई को देख लेती थीं। शायद इसीलिए सैनिक उन्हें 'लाओ मा-मा' (बूढ़ी अम्मा) कहते थे।

सैनिकों में उनका एक और नाम भी प्रचलित था—'मुख्य पाचक'। लेकिन यह नाम उन्होंने स्वयं ओढ़ा था। क्रांति के प्रारंभिक दिनों में एक बार वे कुओमितांग सैनिकों के हाथ पड़ गये। शत्रु सैनिक चू तेह को पकड़ना चाहते थे, पर उन्हें पहचानते नहीं थे। चू तेह ने चिल्लाकर उनसे कहा—'मुझे मत मारो। मैं तो चू तेह का मुख्य पाचक हूं, आप लोगों के भी काम आ सकता हूं।' उनकी वेशभूषा सचमुच ऐसी थी कि वे सेनापति तो हरगिज नहीं लगते थे। कुओमितांग के सैनिक छलावे में आ गये। चू तेह बच निकले।

यों चू तेह लाल सेना के सेनापति थे और संघर्ष का राजनैतिक पक्ष माओ संभालते थे। मगर चू तेह राजनैतिक रूप से भी कम जागरूक न थे। प्रमाण है वह पत्र, जो उन्होंने १९३७ में जवाहरलाल नेहरू को लिखा था, जो उन दिनों भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष थे। इस पत्र में चू तेह ने चीन के मुक्ति-संग्राम में भारत से धन-जन की सहायता की अपील की थी, और एशिया की भावी राजनीति के प्रति अपनी दूर दृष्टि का भी परिचय दिया था। उन्होंने लिखा था—'...... हम अच्छी तरह समझते हैं कि हम एशिया में आज क्या भूमिका निभा रहे हैं और भविष्य में हमें कौन-सी भूमिका निभानी है। हम जानते हैं कि हमारी लड़ाई सिर्फ चीनी जनता के लिए नहीं है—हम पूरी एशियाई जनता का युद्ध लड़ रहे हैं और हम कुचले हुए राष्ट्रों और कुचले हुए वर्गों की मुक्ति के लिए लड़ने वाली विश्व-सेना का हिस्सा हैं।'

बेशक लाल चीन की भूमिका वही नहीं रही, जिसकी कल्पना चू तेह ने की थी। पर यह भी सच है कि इस दौरान स्वयं चू तेह का जीवन भी उतार-चढ़ाव के दौरों से गुजरता रहा। चीन की सांस्कृतिक क्रांति के दौरान जिन चीनी नेताओं को लांछित

[शेष पृष्ठ ५५ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा. विश्वनाथ टंडन

भूदान-आंदोलन के पचीस वर्ष

१८ अप्रैल १९५१ को जब विनोबाजी शांति-स्थापना के उद्देश्य से अशांति-ग्रस्त तेलंगाना क्षेत्र की पदयात्रा कर रहे थे, तब पोचमपल्ली ग्राम (जि. नलगुंडा) में स्थानीय भूमिहीनों के लिए उन्हें प्रथम भूमिदान प्राप्त हुआ था। इसकी स्वयं विनोबाजी ने कोई कल्पना नहीं की थी। अतः इस घटना ने उन्हें एक नये ढंग से सोचने को प्रेरित किया था और उसके फल-स्वरूप भूदान आंदोलन का जन्म हुआ था।

इस वर्ष भूदान-आंदोलन पचीस वर्ष पूरे हुए हैं, और इस बीच वह कई अवस्थाओं में से गुजरा है। उसमें उतार-चढ़ाव आये, उसे विश्वख्याति मिली, देश में उसकी प्रशंसा भी हुई और निंदा भी। आज जो स्थिति है, उसके आधार पर आंदोलन के सभी अंगों के बारे में निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता है। फिर भी, इस आंदोलन पर एक विहंगम-दृष्टि डालना उचित लगता है; क्योंकि यह समाज-परि-वर्तन का एक अनूठा प्रयास रहा है, और इतिहास में इसका स्थान सुरक्षित है।

आंदोलन और गांधीजी

वर्तमान सर्वोदय-विचार जिस प्रकार गांधीजी के विचार से जुड़ा हुआ है, उसी प्रकार यह आंदोलन उनके आंदोलनों से संबंधित है। यह बात कुछ को आश्चर्यजनक लग सकती है; क्योंकि गांधीजी के आंदोलनों की बात आने पर सर्वप्रथम ध्यान जाता है उनके चलाये विभिन्न सत्याग्रहों की ओर, और बहुतों को यह अखरता रहा है कि विनोबाजी साधारणतया प्रतिकारात्मक सत्याग्रह के विरुद्ध रहे हैं। इसमें संभवतः कुछ सत्य है; किंतु फिर भी यह आंदोलन दो प्रकार से गांधीजी के आंदोलनों के साथ जुड़ा हुआ है :

प्रथम, गांधीजी के आंदोलनों का ध्येय अंततः स्वराज्य को गांव-गांव पहुंचाना था। अपने जीवन-काल में वे उसे दिल्ली तक लाने में सफल हुए थे। भूदान उसे गांव-गांव पहुंचाने का आंदोलन रहा है। इस प्रकार यह गांधीजी के अधूरे काम को पूरा करने वाला अथवा उनके आंदोलनों का अगला चरण है।

दूसरे, इसका स्पष्ट संबंध गांधीजी के रचनात्मक कार्यों से है। गांधीजी स्वयं उस कार्य को स्वाधीनता के लिए सत्याग्रह से अधिक महत्त्व देते थे। १९४५ के अंत में उन्होंने कहा था—'यदि आप रचनात्मक कार्य को सचमुच सफल बनायें, तो आप सविनय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज्ञाभंग के बगैर ही भारत के लिए स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे।' उनका यह कथन स्वाधीनता के बाद की परिस्थिति के लिए तो और भी सही रहा है और आवश्यकता इस बात की रही है कि रचनात्मक कार्य को जन-आंदोलन का रूप दिया जाये। सर्वोदय-नेताओं का यही प्रयास रहा है।

आंदोलन का संक्षिप्त इतिहास

इसका प्रारंभ विनोबाजी की व्यक्तिगत गतिविधि से हुआ, जब वे पं. जवाहरलाल नेहरू के निमंत्रण पर योजना-आयोग के सदस्यों से मिलने सितंबर १९५१ में वर्धा से पैदल दिल्ली रवाना हुए। इसी पदयात्रा के बीच दीपावली के अवसर पर मथुरा में एकत्र हुए उत्तर प्रदेश के गांधीनिष्ठ कार्यकर्ताओं ने विनोबाजी की उपस्थिति में यह निर्णय लिया था कि हम अपने प्रदेश में एक वर्ष के भीतर ५ लाख एकड़ भूमि भूदान में प्राप्त करेंगे। इसके पश्चात् दिल्ली के बाद विनोबाजी ने भूदान-प्राप्ति के लिए उत्तर प्रदेश का दौरा किया था और १९५२ के ग्रीष्म में वाराणसी के निकट सेवापुरी में सर्वोदय संमेलन हुआ था। उस अवसर पर पूरे देश के कार्यकर्ताओं ने यह संकल्प किया था कि दो वर्षों में वे २५ लाख एकड़ भूमि प्राप्त करेंगे। इस प्रकार यह आंदोलन विनोबाजी के व्यक्तिगत प्रयास के रूप में प्रारंभ होकर अखिल भारतीय बन गया था।

सन १९५५ के निकट यह आंदोलन भूदान का हो रहा। फिर कुछ दिनों तक भूमिदान के साथ-साथ ग्रामदान-आंदोलन भी चलता रहा। किंतु शनैः-शनैः भूदान-आंदोलन की परिणति ग्रामदान-आंदोलन

[फोटो-सौजन्य : 'सर्वोदय साधना']

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में हो गया, ... उसके बाद भी वर्जित नहीं हुआ।

भूदान-आंदोलन का लक्ष्य १९५७ तक पूरे देश में पांच करोड़ एकड़ भूमि प्राप्त करने का था, और उस समय तक इसका रूप गांधोजी के आंदोलन को याद दिलाने वाला था। किंतु तमाम प्रयासों के बावजूद लक्ष्य के १० प्रतिशत जितनी भूमि भो प्राप्त नहीं हो सकी। कुछ इससे उत्पन्न निराशा के कारण, कुछ कार्यकर्ताओं को थकावट के कारण तथा कुछ अन्य कारणों से आंदोलन १९५७ के बाद दुर्बल पड़ने लगा था। १९६० में स्थिति यह थी कि उच्च कोटि के कुछ सर्वोदय-नेता भी उसमें कुछ आस्था खोतेप्रतोतहोतेथे। किंतु विनोबाजो की आस्था कभी नहीं डगमगायो।

इस समय ग्रामदान के साथ शांतिसेना और ग्रामाभिमुख खादी का भी कार्यक्रम स्वोकार कर लिया गया था। 'ग्रामदान' में भूमिदान, साधनदान, संपत्तिदान, श्रम-दान इत्यादि कार्यक्रमों का समावेश था, और ग्रामामिमुख खादी का यह अर्थ था कि खादी-उत्पादन में प्रमुखता नगरों में खादी-बिक्री को न देकर गांव तथा वहां रहनेवालों के वस्त्र-स्वावलंबन को दो जानी चाहिये।

मोटे रूप में यह शिथिलता की स्थिति १९६५ तक रही। उस वर्ष जब विनोबाजी की उपस्थिति में बिहार में 'सुलभ ग्रामदान' का तूफानी अभियान चला, तो उसका अनुकरण अन्य प्रदेशों में भो किया गया और आंदोलन ने पुनः जोर पकड़ा। यह माना ... वाले पुराने ग्राम-दान की तुलना में यह 'सुलभ ग्रामदान' जन-मानस के अधिक अनुकूल और ग्राम-स्वराज्य स्थापना की दृष्टि से बेहतर सिद्ध होगा। आज ग्रामदान के जो आंकड़े हैं, वे ज्यादातर इसी प्रकार के ग्रामदानों के हैं।

किंतु इस काल में प्राप्त ज्यादातर ग्राम-दान कहने मात्र के ग्रामदान ही थे। उनके द्वारा ग्रामोणों ने ग्रामदान के विचार को-प्राय: बगैर समझे ही—केवल मान्यता दी थी। यही कारण था कि १९७० में और उसके बाद जब उनकी पुष्टि के प्रयास कुछ विशेष क्षेत्रों में किये गये, तो वे सफल नहीं हुए।

स्वयं विनोबाजी १९७० में अपने पुराने निवास-स्थान पवनार आश्रम लौट आये थे और उन्होंने वहीं रहने का—क्षेत्र-संन्यास का—निर्णय कर लिया था। उसके बाद आंदोलन धोरे-धोरे समाप्त-सा होता गया।

यह स्थिति थी जब १९७३ में श्री जय-प्रकाश नारायण ने युवजनों का क्रांति के लिए आह्वान किया और १९७४ में बिहार-आंदोलन शुरू किया गया। इस आंदोलन के परिणाम-स्वरूप सर्वोदय कार्यकर्ता विभा-जित हो गये। अधिकांश ने आंदोलन का समर्थन किया। शेष, जो विनोबाजी के 'पंच-शक्ति' के सिद्धांत को मानते थे, उससे सहमत नहीं हो सके। उन लोगों का यह भी कहना था कि आंदोलन पक्षमुक्त नहीं है।

पंचशक्ति के इस सिद्धांत में जन-शक्ति, सज्जन-शक्ति, विद्वज्जन-शक्ति, महाजन-शक्ति और शासन-शक्ति के सहयोग से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामाजिक समस्याओं को हल करने तथा देश को आगे ले जाने की बात है। इसमें आस्था रखने वाला अल्पमत बिहार-आंदोलन के कारण निष्क्रिय हो गया था; किंतु अब वह पुन: सक्रिय हो गया है और विनोबाजी की अनुमति से सरकार के सहयोग से भूमि-वितरण के कार्य में लगा है।

पिछले २५ दिसंबर से, अर्थात् विनोबाजी के मौन की समाप्ति के बाद से, इसका भी प्रयास चल रहा था कि सर्वसेवा संघ फिर सक्रिय हो और सर्वोदय-कार्यकर्ताओं में पुन: एकता स्थापित हो जाये। इसके लिए ३० जून व १ जुलाई को पवनार में सर्वसेवा संघ का अधिवेशन हुआ। इसमें ३०० लोक-सेवकों ने भाग लिया, जब कि साधारणतया ४५० लोक-सेवक भाग लेते रहे हैं। विनोबाजी संघ के विसर्जन के पक्ष में हैं; किंतु अभी केवल इतना हुआ है कि श्री रा. कृ. पाटील को कार्यवाहक अध्यक्ष चुना गया। संघ के बारे में अंतिम निर्णय बाद में किया जायेगा, जब वे लोक-सेवक जो अभी जेल में हैं, भाग ले सकें। जमीन के वितरण में लगे कुछ प्रमुख सर्वोदय-कार्यकर्ताओं ने भाग नहीं लिया है।

आज सर्वोदय के प्रथम पंक्ति के सभी नेता ७५ की आयु के निकट हैं, या उसे पार कर चुके हैं। ऐसी स्थिति में अब उनसे अधिक मार्गदर्शन की आशा नहीं रखी जा सकती है। किसी ऐसे व्यक्तित्व का विकास भी नहीं हुआ है, जो विनोबाजी का स्थान उस प्रकार ले ले, जैसे उन्होंने रचनात्मक कार्य के क्षेत्र में गांधीजी का स्थान लिया था। स्वयं विनोबाजी की पिछले दस वर्षों से यह प्रयास था कि सर्वोदय आंदोलन में 'गण-सेवकत्व' (सामूहिक नेतृत्व) उभरे; किंतु बिहार आंदोलन से उत्पन्न फूट से इसकी आशा अब समाप्त-सी हो गयी है।

आंदोलन की उपलब्धियां

आंदोलन के मूल्यांकन के लिए सर्वप्रथम उसके उद्देश्यों को जानना आवश्यक है। इन्हें मोटे रूप में दो भागों में बांट सकते हैं – स्थूल और सूक्ष्म। स्थूल उद्देश्य यह था कि ५ करोड़ एकड़ भूमि प्राप्त की जाये और उसका वितरण भूमिहीन खेतिहरों में किया जाये; इस प्रकार एक न्यायपूर्ण भूमि-व्यवस्था कायम हो और फिर इससे उत्पन्न वातावरण के आधार पर समाज के अन्य क्षेत्रों में भी आर्थिक न्याय की स्थापना हो।

सूक्ष्म दृष्टि से आंदोलन का ध्येय था हृदय-परिवर्तन तथा परिस्थिति-परिवनर्त के द्वारा समाज में सत्य और अहिंसा से मेल खाने वाले नये मूल्यों की स्थापना करना, भूस्वामित्व की भावना समाप्त करना और समाज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना। सर्वोदय-नेताओं के सामने काल और परिस्थिति की मर्यादा में आदर्श समाज का वही चित्र था, जिसकी कल्पना गांधीजी ने की थी।

जहां तक भूमि की प्राप्ति एवं वितरण का संबंध है, यह संकेत किया ही जा चुका है कि ५ करोड़ एकड़ भूमि का लक्ष्य स्वप्न ही रहा। जून १९७५ के आंकड़ों के अनुसार, ४१,९४,२७९ एकड़ भूमि प्राप्त हुई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसमें से १८,५७,३९८ एकड़ भूमि विभिन्न कारणों से वितरण के अयोग्य थी। केवल १२,८५,७३८ एकड़ भूमि बंटी थी और शेष १०,५१,१४३ एकड़ बंटनी बाकी थी, इस शेष भूमि में कितनी बंटने योग्य है, इसका पता अगले वर्ष ही लगेगा, जब भूमि-वितरण में इस समय लगे हुए कार्यकर्ता अपना काम समाप्त कर देंगे। पिछले वर्ष तक जो स्थिति रही है, उसमें वितरित भूमि लक्ष्यांक का केवल ३% है। अतः स्थूल ध्येय की दृष्टि से आंदोलन असफल लगता है।

किंतु यदि इस बात को ध्यान में रखा जाये कि यह सब काम केवल थोड़े-से कार्यकर्ताओं के प्रयास से ही हुआ और ऐसी परिस्थिति में हुआ जबकि सरकार और उसके कर्मचारी उदासीन-से थे, जबकि समाचार-पत्रों ने आंदोलन की ज्यादातर अवहेलना की तथा कुछ प्रमुख नेताओं ने उससे अपनी असहमति तक प्रकट की, तो यह सफलता भी कम नहीं प्रतीत होती।

जहां तक ग्रामदानों का सवाल है, पूरे देश में १,४५,१५४ ग्रामदान मिले। एक और प्रकार से ये १ प्रदेश-दान, ३७ जिलादान तथा १,०९९ प्रखंड-दान के अंतर्गत आते हैं। किंतु अधिकांश रूप से ये निरे आंकड़े ही हैं। इतना अवश्य है कि एक नया विचार ग्रामीण जनता के सामने आया।

पुराने ग्रामदानी गांवों में अवश्य कुछ काम हुआ है। उनमें भूमि का न्यायपूर्ण वितरण हुआ है और उन गांवों ने अलग-अलग प्रकार से उन्नति की है। यदि उनमें और अधिक काम नहीं किया जा सका तो उसके कई कारण थे—निहित स्वार्थों का विरोध, सरकारी तंत्र का सहयोग न मिलना, कार्यकर्ताओं का पर्याप्त संख्या में और पर्याप्त योग्यता वाले न होना। आज निर्माण-कार्य में विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है और सर्वोदय में उनका अभाव रहा है।

अन्य प्रकार के दानों में तो सफलता नहीं के बराबर ही है। आंदोलन शहरी क्षेत्रों को छू न सका। शांतिसेना के क्षेत्र में कुछ सफलता मिली; किंतु ग्रामाभिमुख खादी की बात हवा में ही रही।

आंदोलन सूक्ष्म उद्देश्य में अधिक सफल माना जायेगा। जन-मानस में परिवर्तन तो नहीं आया; परंतु समाज का ध्यान दुर्बल और उपेक्षित वर्ग की ओर अवश्य गया। सर्वोदयी नेताओं को इसका श्रेय है कि वे ही पहले लोग थे, जिन्होंने अपरिग्रह पर बल देकर संपत्ति के अधिकार की मान्यता पर प्रहार किया। यह एक क्रांतिकारी बात थी। आज प्रधान-मंत्री के २० सूत्री कार्यक्रम के कई बिंदु तथा उसे सफल बनाने का जो तरीका अपनाया गया है, वह इसका प्रमाण है कि भूमिदान-आंदोलन तथा पदयात्राओं की पद्धति कितनी सही थी।

इस प्रकार इस आंदोलन की कुछ उपलब्धियां हैं, जिनसे आंख मूंदना असंभव है। वैसे, अहिंसक क्रांति का यह अनूठा प्रयास अपनी सफलताओं और विफलताओं दोनों के द्वारा नसीहत देने वाला और भविष्य में मार्गदर्शन करने वाला है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरिश्चंद्र मिश्र

दुनिया का धन्नासेठ कौन ?

पाल गेटी की प्रसिद्ध उक्ति है—'जो बता सके कि उसके पास कुल संपत्ति इतनी है, वह तो खास धनी नहीं।' हाल में इहलोक से विदा हुए पाल गेटी का नाम आपके लिए अनजाना नहीं होगा। व्यापार-जगत का वेद समझे जाने वाली अमरीकी पत्रिका 'फारचून' के अनुसार, वे दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति थे!

अमरीकी धनपति हावर्ड ह्यूज़ और यूनानी जहाजपति (जैकीपति) अरिस्टाटल ओनासिस धन-दौलत में पाल गेटी से पीछे होते हुए भी उनसे पहले ही परलोकगामी हो गये थे। इससे यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि अब दुनिया का धन्नासेठ कौन है।

सहज ही फोर्ड, राकफेलर, मेलन, ड्यूपांट आदि करोड़पति अमरीकी परिवारों की ओर नजर उठती है। मगर ये लोग करों से बचने के लिए अपने नजदीक व दूर के रिश्तेदारों में अपना पैसा खुले हाथ बांट रहे हैं। फोर्ड द्वितीय तो 'फारचून' पत्रिका की 'सौ सर्वाधिक धनिकों की सूची' में भी नहीं आते।

कोका कोला वाले वुडराफ, एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका वाले बेन्टन, रीडर्स डाइजेस्ट वाले डीविट वैलेस, मार्स बार्स वाले फारेस्ट ई. मार्स और चार्ल्स डब्ल्यू. एंगलहार्ड आदि अमरीकी धनपति तो पाल गेटी और हावर्ड ह्यूज़ की तुलना में छुटभैये ही ठहरते हैं।

ब्रिटेन की रानी की धन-दौलत की कितनी भी चर्चा होती हो, मगर उस देश के सर्वाधिक धनी परिवार हैं—काउड्रे, एलरमान और क्लोर। मगर 'फारचून' की सूची में इनके नाम नहीं आते।

आजकल ब्रिटेन में अपनी दौलत

पाल गेटी

हावर्ड ह्यूज़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का प्रदर्शन करने वालों में एक हैं रवि टिक्कू जिनके पिता हिमाचल प्रदेश की मंडी रियासत के मंत्री थे। श्री टिक्कू की ग्लोबटिक कंपनी दुनिया के सबसे विशाल टैंकर-जहाज की मालिक है। उनके पास पांच रोल्सराय कारें हैं और दस लाख पौंड का निजी जेट-विमान है। वे रेस के ७५ घोड़ों के भी स्वामी हैं। फिर भी हांगकांग की 'वर्ल्ड वाइड शिपिंग' के मालिक यू कांग काओ श्री टिक्कू से कम से कम १० करोड़ डालर से अधिक मालदार हैं।

आजकल लंदन में रहने वाले एक अरब राजनयिक का नाम भी इस सिलसिले में याद आना स्वाभाविक है! वे हैं सैयद मुहम्मद महदी अल ताजिर। वे लंदन में संयुक्त अरब अमीरात के राजदूत हैं और तेल के मामले में अपने देश की सरकार के सलाहकार हैं। राजनय तो उनका शग़ल है; मूलतः वे हैं व्यापारी।

उनकी आर्थिक हैसियत का आपको इससे अंदाज हो जायेगा—लेबनान और फारस की खाड़ी में उनके कई प्रकार के कारोबार चल रहे हैं; अफ्रीका में उनकी खानें हैं; पश्चिम यूरोप में उनकी काफी जायदाद है; ब्रिटेन में दो शानदार कोठियां और एक गढ़ी है। यों तो अपनी दौलत के बारे में वे प्रायः चुप ही रहते हैं। मगर एक बार उन्होंने कहा था कि एक अरब डालर की व्यवस्था करना कई राष्ट्रों के लिए भी कठिन हो जाता है; लेकिन इसमें मुझे बस एक सुबह लगेगी।

'मैनेजमेंट टुडे' के संपादक राबर्ट हेलर की राय है कि इस समय दुनिया का सर्वाधिक धनवान व्यक्ति स्विट्जरलैंड का कोई निवासी होगा। उस देश का बुर्ले परिवार सचमुच बहुत धनवान है—कितना धनवान, यह कोई नहीं कह सकता। इस परिवार के हाथ में कई शस्त्रास्त्र-कारखाने हैं।

फर्डिनैंड लुंडबर्ग ने 'रिच एंड सुपररिच' नामक पुस्तक लिखी थी। उनकी मान्यता है कि दुनिया का धन्नासेठ कोई ऐसा आदमी होगा, जिसने दौलत की सीढ़ियां स्वयं चढ़ी हैं, यानी जिसकी दौलत मृत्युकर के चक्कर में अभी तक नहीं आयी है।

टेक्सास के व्यापारी रास पेरोट ऐसे ही व्यक्ति हैं। १९६२ तक उनकी यह हालत थी कि उनका सारा सामान-असबाब एक टैक्सी में समा जाता। उन्होंने महज १,००० डालर की पूंजी से इलेक्ट्रिक डेटा सिस्टम नाम की कंपनी आरंभ की थी। आज यह कंपनी एक अरब डालर से अधिक मूल्य की है और उसके ८१ प्रतिशत शेयर पेरोट महाशय के हैं।

मगर विशेषज्ञों की राय में दुनिया के धन्नासेठ कहलाने के अधिकारी तो डेनियल लुडविग हैं। इनके पिताश्री जमीन-जायदाद की दलाली का मामूली-सा कारोबार करते थे। नौ वर्ष की उम्र में ही लुडविग साहब में कमाल की व्यापारिक बुद्धि थी। उन्होंने एक डूबी हुई किश्ती को पानी से निकाला और किराये पर चढ़ा दिया। जब स्कूल छोड़ने की उम्र आयी, तब तक उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास ५,००० डालर जमा हो गये थे ! उनसे एक और किश्ती खरीदकर वे माल-ढुलाई का धंधा करने लगे। सन १९२१ में उन्होंने अपना पहला टैंकर-जहाज खरीदा।

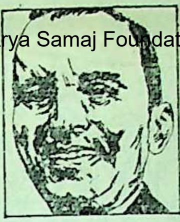
पेरोट

लुडविग

अल ताजिर

हावर्ड ह्यू ज़ की भांति लुडविग भी बहुत गुपचुप और लुके-छिपे रहना पसंद करते हैं। अपनी पूरी जिंदगी में उन्होंने सिर्फ एक बार प्रेस-संदर्शन दिया है—बेशक 'फारचून' पत्रिका को। जैसा कि उन्होंने उस संदर्शन में बताया था, उनकी किस्मत तब खुली जब उन्होंने सन तीस वाले दशक में अपने टैंकर लंबी मियाद के चार्टरों पर उठाकर उससे मिले पैसों से और टैंकर खरीदे।

आज लुडविग की संपत्ति में उल्लेखनीय हैं- टैंकरों के विशाल बेड़े वाली अमरीकी कंपनी नेशनल बल्क कैरियर्स, जापान में एक जहाज निर्माण कंपनी, फ्लेरिडा में गहरे पानी का एक बंदरगाह, अमरीकी नेशनल मार्टगेज बैंक के ढेर सारे शेयर, इथियोपिया में पोटाश का और पनामा में संतरों का कारोबार, वेनेजुएला में १० लाख और ब्राजील में ३० लाख एकड़ जमीन, आस्ट्रेलिया एवं अमरीका में विशाल जमीन और जायदाद। भारत से भी उनका लोहे को कच्ची धातु के आयात का व्यापार चलता है।

★

[पृष्ठ ४७ का शेष]

किया गया, उनमें चू तेह भी एक थे। किसी समय माओ और उन्हें 'दो शरीर एक प्राण' कहा जाता था; परंतु सांस्कृतिक क्रांति के दौरान चू तेह पर आरोप लगाया गया कि वे माओ के खिलाफ ल्यू शाओ-ची का साथ दे रहे हैं। १९६६ में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी में उनका स्थान चौथा था। फिर नौवां हुआ। फिर गायब ही हो गया। लेकिन एक वर्ष के अज्ञातवास के बाद वे फिर पोलिट ब्यूरो की स्थायी समिति के सदस्य बना दिये गये। माओ से मतभेद के बावजूद उनका फिर से पोलिट ब्यूरो में आना उनकी लोकप्रियता का प्रमाण था। सच तो यह है कि उन्होंने कभी कोई राजनैतिक आकांक्षा नहीं पाली—वे सैनिक थे और सैनिक ही बने रहना चाहते थे।

मां-बाप ने उनका नाम चू तेह रखा था। चीनी भाषा में इसका अर्थ होता है—लाल नैतिकता। शायद उन्होंने कल्पना भी नहीं की होगी कि एक दिन उनका बेटा लाल चीन का महानतम सेनापति बनकर अपने नाम को सार्थक करेगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाद्रपद मास (अगस्त-सितंबर)। वर्षाकाल अभी जारी है। पशु-पक्षी आनंदमग्न हैं। नमी-भरी शीतल हवाएं हरित तरुलताओं को झुमाती हैं। नाले व नदियां भर-भरकर बह रही हैं। बादल-भरे आसमान में बिजली रह-रहकर नर्तन कर उठती है। उसे निहारने मेघश्यामल कृष्ण और विद्युत की गौर कांति वाली राधा छज्जे पर आकर खड़े हैं।

अनुकृति : बरन शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व. सर नेविल कार्डस
[प्रसिद्ध ब्रिटिश पत्रकार]

चिंतनिका

कला हमें इसकी कल्पना कराती है कि जीवन क्या-कुछ बन सकता है।...... कला जीवन को आलोकित करने वाली हो। कलाकार मानो जीवन को परमात्मा की नजरों से देखता है। मैं परमात्मा की कल्पना सर्वशक्तिमान प्रभु के रूप में नहीं करता, बल्कि अपनी सामग्री से जूझते हुए दिव्य कलाकार के रूप में देखता हूं। उससे बहुत-सी गलतियां भी हुई हैं। अब वह दुनिया-संबंधी अपनी बुनियादी कल्पना को पूर्ण करने का अवसर मोजार्ट और रेम्ब्रां जैसे मानवीय कलाकारों को देता है।

कलाकार परमात्मा के संदेशवाहक हैं। वे वह काम कर रहे हैं, जिसे करने के लिए भगवान के पास समय नहीं था—ठीक वैसे ही जैसे ब्राउनिंग की कविता में आंद्रिया देल सार्तो चाहता है कि वह लियोनार्दो द विंची, राफेयल और माइकलेंजेलो के संग स्वर्ग जाये और स्वर्ग की चार विशाल दीवारों पर चित्र बनाये, क्योंकि उसे मालूम है कि परमात्मा के पास उन्हें चित्रित करने को वक्त नहीं है।

कलाकार जीवन को जीने योग्य बनाने में मदद करता है। दुर्जेय शक्तियां उसके विरुद्ध होती हैं, परंतु संकटों और कष्टों के बिना कला संभव नहीं है। मानव-आत्मा के समक्ष चुनौतियां न हों तो बीठोफेन नहीं उपजेंगे। समृद्धि से भरा संसार, जिसमें स्वर्ग से दिव्य भोजन झरता हो, बड़ी नीरस और पंगु बनाने वाली जगह होगी।

०००

मेरी तो सदा यह मान्यता रही है कि मनुष्य को उस दिन का जीवन उसी दिन जीना चाहिये। मैं कभी अगले सप्ताह या अगले महीने के बारे में नहीं सोचता। मैं कभी योजनाएं नहीं बनाता। जीवन में मैंने कभी योजनाएं नहीं बनायीं। मेरी दृष्टि में, हाथ लगी कलियां बटोरते चलने का नाम ही जीवन है। अगर मेरा आज अच्छा बीता तो वाह—एक कली और बटोर ली। कल भी एक कली बटोर पाऊंगा या नहीं, मैं नहीं जानता।

मुझे मैक्स बीरबोह्म की एक बात याद आती है। जब वे अभी साठ के थे (वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्सी पार करके मरे थे), कहने लगे कि नौजवानों को देखकर मुझे दया आती है। किसी ने पूछा भला कि क्यों? बोले–'बेचारे अभी कितने कमउम्र हैं। हो सकता है कि सड़क पर बस के नीचे आ जायें। हो सकता है, मर जायें। हो सकता है, जीवन की शान और समृद्धि से वंचित ही रह जायें।'

ooo

लेखक के जीवन का महान दुर्भाग्य है–निपट एकाकीपन। और उत्पादन-क्रिया की दृष्टि से लेखन सबसे नीरस कला है। अगर मैं चित्रकार होता तो मुझे कैन्वास पर रंग बिखेरने का आनंद मिलता। आप मास्टरपीस रचें या नहीं, चित्रांकन की क्रिया में शारीरिक आनंद तो निःसंदेह है। मूर्तिकार, वायलिन-वादक, बैले-नर्तकी–सभी के लिए कला उत्साहवर्धक और प्रेरणादायक होती है। मगर कमरे में कागज-कलम के साथ या टाइपराइटर की खटखट के साथ अकेले बैठना सचमुच बड़ा एकाकी जीवन है; और आपको अपने परिश्रम का फल भी बहुत कम ही देखने को मिलता है। शायद कभी कोई पत्र आ जाये और एक-आध अच्छी समालोचना भी छप जाये; मगर अन्य कलाकारों की तरह लेखक जनता द्वारा अपनी कृति के आनंदोपभोग में भागी-

*** संगीत के मास्टरपीस इसलिए मास्टरपीस होते हैं कि वे अनेक दृष्टिबिंदुओं से देखे जाने के काबिल होते हैं। हर बार उनमें नया कुछ खोजा जा सकता है। एक ही मास्टरपीस कई-कई ढंग से पेश किया जा सकता है और वे सब ढंग कमोबेश 'सही' हो सकते हैं। मगर उन्हें पेश करने के गलत ढंग और भी ज्यादा हो सकते हैं।**

*** अक्सर मुझसे पूछा जाता है कि मेरा सबसे प्रिय स्वरस्रष्टा कौन है। कई बार यह भी पूछा जाता है कि संसार की सुंदरतम संगीत-कृति कौन-सी है। उत्तर में मैं यह प्रश्न पूछ लिया करता हूं–'संसार की सुंदरतम नारी कौन है?'–एडवर्ड वान बेनुम**

oooooooooooooooooooooooo

दार नहीं बन सकता। लोग बसों-ट्रेनों में मुझे अपनी पुस्तक पढ़ते देखने को नहीं मिलेंगे, मैं नहीं जानता कि कौन उसे पढ़ रहा है। लेकिन मैं चित्रकार होता तो अपनी कृति को जनता द्वारा पसंद या नापसंद किये जाते देख सकता। अगर मैं संगीत-स्रष्टा होता, तो संगीतशाला में अपने संगीत को बजाये जाते सुन सकता। अगर मैं नाटककार होता तो नाट्यशाला में बाल्कनी में बैठ सकता और दर्शकों को तालियां बजाते सुन सकता।

★

फ्लारेन्स नाइटिंगेल ने मजदूरों के लिए कला को सुलभ बनाने की आवश्यकता पर जोर देते हुए अपने भानजे फ्रेडरिक वर्वी को एक पत्र में लिखा था–'मैं मानती हूं, शेक्सपीयर का नाटक देखने के बाद किसी आदमी के शराब पीकर धुत्त होने की उतनी आशंका नहीं होती, जितनी कि धार्मिक सत्संग के बाद होती है।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक मूल्यवान सुझाव

काका कालेलकर

भारतीय राष्ट्र के हर एक सदस्य को हम नागरिक क्यों कहें ? नगरों का इतना महत्त्व क्यों चलने दें? क्या 'नगरवासी ही राष्ट्रसेवा का भार उठा सकते हैं' ऐसा सनातन सिद्धांत मान्य कर लें ?

परस्पर सहयोग की, सर्वत्र यात्रा करने की और राष्ट्रशक्ति का संघटन करने की शक्ति नगरों के हाथ में ही थी। इसलिए नगरवासी सज्जनों को राष्ट्र का सारा भार उठाना पड़ता था। इसलिए राष्ट्र का भार उठाने वालों को 'नागरिक' कहना उस परिस्थिति में स्वाभाविक था।

अब हम काफी बढ़ गये हैं। केवल भारत के ही नहीं, सारी दुनिया के मानव, अब यंत्रों की सहायता से शक्ति-संपन्न हो गये हैं। अब हम किसी छोटे गांव की झोंपड़ी में रहकर भी सारे राष्ट्र का संघटन कर सकते हैं और गांवों के लोगों से समग्र मानवता की सेवा की अपेक्षा कर सकते हैं।

अपेक्षा करना एक बात है और राष्ट्रीय जीवन का संघटन करने योग्य बनना दूसरी बात है। गांव के लोग अब परावलंबी नहीं रहे हैं। अपना सारा जीवन स्वावलंबी पद्धति से विकसित कर सके हैं। लेकिन इतना ही काफी नहीं है। गांव में रहने वाले मानवों का खेती के साथ पूरा संबंध रहता है। दुनिया के प्राणियों को जीने के लिए अन्न की आवश्यकता है, इस सार्वभौम परिस्थिति से लाभ उठाकर दुनिया का नेतृत्व खेती-प्रधान ग्रामसेवकों को ही उठाना चाहिये।

इसके लिए हमारे अखबारों को अपना सारा मानस ही बदलना चाहिये। अखबारों को चाहिये कि वे दुनिया के सब महाद्वीपों के गांवों की परिस्थिति से पाठकों को परिचित करायें। इसके लिए हर एक समर्थ स्वावलंबी सेवापरायण अखबार को अपने प्रतिनिधि हर एक महाद्वीप में और हर एक महाद्वीप के छोटे-बड़े देश में भेजने चाहिये। अपने केंद्र से अपने प्रतिनिधि को पसंद करके देश-देशांतर में भेजना शायद बड़े से बड़े अखबार के लिए भी आसान नहीं होगा। लेकिन हर एक अखबार और पाक्षिक, मासिक आदि नियतकालिक के लिए हर एक देश के मानव-सेवकों में से अपना प्रतिनिधि चुनना अशक्य नहीं है। कठिन होगा, लेकिन पुरुषार्थी सेवकों के लिए ऐसा संघटन करना अशक्य नहीं है।

['मंगल प्रभात' से साभार]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्व. श्री श्रीगोपालजी नेवटिया

इसी १९ सितंबर को एक वर्ष पूरा हो जायेगा आपको हमारे बीच से विदा हुए। परंतु यह पूरा ही वर्ष आप हमारे हृदयों में जिये हैं, और चिरकाल तक उसी तरह जियेंगे। आपकी स्मृतियां हमारी संपदा हैं; और वे हमें उसी तरह प्रेरणा, प्रोत्साहन और मार्ग-दर्शन देती रहेंगी, जिस तरह अपने जीवन-काल में आप दिया करते थे। प्रणाम !

—नवनीत-परिवार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्जिता

विज्ञान-बिंदु

क्या हमारी पृथ्वी पर फिर हिमयुग आने वाला है? इस प्रश्न से अनेक वैज्ञानिक चिंतित हैं। जलवायु-विशेषज्ञों ने ज्वालामुखी पर्वतों से निकलने वाली धूल, पृथ्वी की गति, वृक्षवलय, सूर्य से मिलने वाली धूप आदि के अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि अब से लगभग १०,००० वर्ष बाद पृथ्वी पर एक नये हिमयुग का आरंभ होने की पूरी आशंका है। अगर यह 'भविष्यवाणी' सच निकली, तो आज से दस हजार साल बाद न्यूजीलैंड, ब्रिटेन, कनाडा और नेपाल जैसे अनेक देश हिमावरण से आच्छादित हो जायेंगे और फ्रांस का नजारा लैपलैंड जैसा हो जायेगा।

परंतु दूसरे कुछ विज्ञानी ऐसा मानते हैं कि यह हिमयुग उस 'लघु हिमयुग' (लिटल आइस एज) जैसा होगा, जो १४३० से १८५० ई. के बीच यूरोप में आया था। अलबत्ता इस बार वह यूरोप तक सीमित न रहकर पूरे विश्व पर छा सकता है। यूरोप के उस लघु हिमयुग में वहां की अनेक नदियां जमकर बर्फ की चादर बन गयी थीं और अनेक हरे-भरे मैदान हिमाच्छान्न हो गये थे।

इस नये संभावित लघु हिमयुग में अमरीका के वैदेशिक गुप्तचर संस्थान सी. आई. ए. की भी दिलचस्पी है! उसकी एक गुप्त रिपोर्ट में विस्तार से चर्चा की गयी है कि संभावित लघु हिमयुग में विश्व के किन-किन देशों को क्या दुर्दशा हो सकती है।

मसलन, यदि तापमान हर चार वर्ष में १ अंश शतांश के हिसाब से गिरता रहा, जैसी कि आशंका है, तो दुनिया की जलवायु में बहुत परिवर्तन हो जायेगा। तब उत्तरी समशीतोष्ण वलय में बहने वाली नम पश्चिमी हवाओं की पट्टी काफी दक्षिण को खिसक आयेगी और यही बात मानसून हवाओं की उत्तरी रेखा के बारे में भी लागू होगी। पश्चिमोत्तर यूरोप, कनाडा और कजाकिस्तान के उपजाऊ इलाके सूखे व ठंडे होकर बंजर बन जायेंगे। शायद सहारा और ईरान फिर से कुछ उपजाऊ हो जायेंगे; मगर भारत का उत्तरी मैदान मानसून से वंचित हो जायेगा और लगभग पंद्रह करोड़ आदमियों की मृत्यु हो जायेगी। चीन में हर पांचवें वर्ष भयंकर अकाल पड़ेंगे।

यदि यह सब हुआ, तो दुनिया के अनेक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

देशों में Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
जायेगी। इसीलिए सी. आइ. ए. को इस मामले में दिलचस्पी है।

चूंकि ये सब बातें अभी काफी विवादास्पद हैं, इसलिए विश्व मौसम-विज्ञान संघटन (जिनीवा) ने अपनी हाल की बैठक में निश्चय किया है कि इस विषय पर एक प्रामाणिक बयान जारी किया जाये।

कैन्सर से छुटकारा

प्रकृति ने मानव-शरीर में ऐसी व्यवस्था कर रखी है कि वह किसी अन्य शरीर की कोशिकाओं को आसानी से अपनाता नहीं। हृदय, गुर्दा आदि के प्रतिरोपण में आने वाली मुख्य वैज्ञानिक समस्या यही है। इससे निबटने के लिए अलग-अलग रास्ते खोजे जा रहे हैं। मगर मानव-शरीर की इसी क्षमता को आधार बनाकर वैज्ञानिकों का एक वर्ग कैन्सर की नयी उपचार-विधि का विकास करने में व्यस्त है।

भारत में इस नयी खोज के शोधकर्ताओं में प्रमुख हैं चित्तरंजन आयुर्विज्ञान संस्थान के युवा निदेशक डा. प्रशांत कुमार राय। उन्होंने हाल में बताया कि मानव-शरीर जिस प्रकार किसी भी बाह्य कोशिका को आसानी से अपनाने से परहेज करता है, वैसा ही परहेज वह कैन्सरी कोशिकाओं के मामले में भी कर सके, यह शक्ति उसमें लाने की कोशिश की जा रही है। इसके लिए पशुओं पर किये गये परीक्षणों से यह आशा बंधने लगी है कि भले आरंभ में सब प्रकार के कैन्सरों के लिए यह संभव न हो, तो भी कम से कम कुछ विशेष प्रकार के कैन्सरों के प्रति मानव-शरीर को इस नयी तकनीक द्वारा रोगक्षम (इम्यून) बनाना सैद्धांतिक रूप से ही नहीं, व्यवहारतः भी संभव है।

उपचार की यह पद्धति रोगक्षमता-चिकित्सा अथवा प्रतिरक्षा-चिकित्सा (इम्यूनोथैरेपी) कहलाती है। इसका लक्ष्य है, मानव-शरीर में किसी विशेष प्रकार की वांछित रोगक्षमता का विकास करना। डा. राय ने अपने प्रयोगों के दौरान इसके लिए एक टीके (वैक्सीन) का विकास किया है, जो कैन्सरी ट्यूमर से प्राप्त पदार्थ और एक विशिष्ट एन्जाइम से बनाया गया है।

प्रारंभ में एक स्वस्थ चूहे को यह टीका लगाया गया और देखा गया कि इससे वह कैन्सर के प्रति पूरी तरह रोगक्षम हो गया। कुछ चूहे जो पहले से ही कैन्सर से ग्रस्त थे, इस टीके की बदौलत कैन्सरी ट्यूमर से मुक्त हो गये। फिर उनमें रोग-प्रतिरोधिता भी विकसित हो गयी।

कैन्सर ऐसा व्यापक और गंभीर रोग है कि उसके विरुद्ध जितने भी हथियार ढूंढे जा काम में लाये जा सकें, लाभ ही लाभ है।

विसंक्रामक टिकिया

देश के करोड़ों ग्रामवासी और शहरों की गंदी बस्तियों के निवासी स्वच्छ पेय जल की सुविधा से वंचित हैं। उन्हें पास के नाले या नहर के बहते पानी अथवा तालाब और पोखरों के बंद थमे हुए पानी का प्रयोग खाने-पीने और नहाने-धोने के कामों से लेकर टट्टी-पेशाब को साफ करने तक के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिए करना पड़ता है। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह स्थिति बहुत भयंकर है।

दूषित जल बीमारी का घर है। अच्छा तो यही है कि जहां पीने व पकाने के लिए बंद पानी ही उपलब्ध हो, वहां उसे उबालकर और छानकर ही उपयोग में लाया जाये। मगर यह तो परिवार के स्तर पर ही हो सकता है। दूसरा उपाय है रासायनिक विसंक्रामक पदार्थों का उपयोग। इसके लिए सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला रसायन है क्लोरीन गैस। मगर यह उपाय केवल बड़े पैमाने पर ही काम में लाया जा सकता है—ज्यादातर वाटर-वर्क्स वगैरह बड़े संस्थानों में। अब भारतीय अनुसंधान निगम द्वारा जारी की गयी एक सूचना में बताया गया है कि नागपुर के नेशनल एन्वायरनमेन्टल इंजीनियरिंग रिसर्च इंस्टिटयूट ने एक ऐसी तकनीक और विधि का विकास किया है, जिससे क्लोरीन की टिकिया का निर्माण भारत में किया जा सकेगा। दूषित पानी को शुद्ध बनाने के लिए इसका उपयोग घरों में आसानी से किया जा सकेगा।

नमक, विरंजक चूर्ण (ब्लीचिंग पाउडर), खड़िया और सोडियम कार्बोनेट (कपड़ा धोने का सोडा) इस टिकिया के मुख्य घटक हैं। इसके निर्माण के लिए किसी बहुत बड़े या कीमती संयंत्र की भी आवश्यकता नहीं। मात्र ड्राइ मिक्सर, टिकिया ढालने की मशीन, बोतल भरने व बंद करने तथा लेबल चिपकाने वाली मशीन जैसे मामूली उपकरण काफी हैं। अनुमान है कि भारत में इन टिकियों की मांग और खपत लगभग साढ़े चार लाख बोतल प्रति माह रहेगी। प्रत्येक बोतल में ढाई ग्राम वजन की सौ गोलियां रखी जा सकती हैं।

चुंबकी फसल

क्या बीज को बुआई से पहले चुंबकित करने के द्वारा उपज बढ़ायी जा सकती है? इस प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने में लगे हुए हैं इंग्लैंड के नार्दम्बर कृषि कालेज के विज्ञानी।

बताया जाता है कि लेदब्रिज (कनाडा) के कृषि अनुसंधान केंद्र में ग्रेन हॉपर में एक विद्युत-चुंबकीय व्यवस्था की सहायता से बीज को बुआई से पहले चुंबकित किया गया था। देखा गया कि चुंबकित बीज का अंकुरण एवं विकास अपेक्षाकृत तेजी से होता है, उपज की मात्रा भी अधिक होती है। यह परीक्षण जौ और गेहूं पर किया गया था।

इन परीक्षणों के दौरान ब्रिटिश कृषि-विज्ञानी प्रो. फिलिप ब्लेक लेदब्रिज में मौजूद थे। उन्होंने इंग्लैंड लौटकर इसे दुहराने का निश्चय किया। मगर इंग्लैंड में उन्होंने जो परीक्षण शुरू किया है, वह तनिक भिन्न है। उन्होंने बीज के चुंबकीकरण के लिए एक दूसरा ही तरीका अपनाया। खेत के चारों तरफ बाड़ के रूप में कसे हुए तारों में बिजली गुजारकर पूरे खेत को पहले विद्युत-क्षेत्र में बदल दिया गया।

यदि इस परीक्षण से कनाडा के परीक्षण के परिणाम की पुष्टि हुई, तो आशा है कि कृषि-उपज बढ़ाने का एक और उपाय मनुष्य के हाथ लग जायेगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीगोपाल नेवटिया लेख-प्रतियोगिता

नवनीत के संस्थापक श्री श्रीगोपाल नेवटिया को दिवंगत हुए इस १९ सितंबर को एक वर्ष पूरा होता है। यों नवनीत स्वयं ही उनका स्मारक है, फिर भी इस अवसर पर उनके विशेष स्मरणार्थ एक लेख-प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है।

स्वर्गीय श्रीगोपालजी यात्रा-रसिक थे और सरस यात्रा-वर्णन लिखने में विशेषतः सिद्धहस्त थे। इसलिए इस लेख-प्रतियोगिता का विषय यात्रा-वर्णन ही रखा गया है। इसमें आप देश या विदेश की अपनी किसी यात्रा का वर्णन लिखकर भेज सकते हैं। वर्णन मौलिक, रसपूर्ण तथा वर्णित स्थान के रंग-गंध से भरा हो।

पुरस्कार तीन होंगे : प्रथम ५०० रु.; द्वितीय ३०० रु.; तृतीय २०० रु.।

शब्दसीमा : २००० शब्द के आस-पास।

लेख भेजने की अंतिम तिथि : १ अक्तूबर १९७६।

यह प्रतियोगिता सभी के लिए खुली है। **नवनीत** द्वारा नियुक्त विशेष समिति इसमें निर्णायक होगी और उसका निर्णय अंतिम होगा।

लेख भेजने का पता :

श्रीगोपाल नेवटिया लेख-प्रतियोगिता

नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आलोक और सौरभ

गोपीनाथ अमन

उन दिनों वाइसराय लार्ड अर्विन और गांधीजी में सुलह की बातचीत हो रही थी। एक दिन बातें करते हुए काफी देर हो गयी, तो गांधीजी ने अपना खाना वहीं वाइसराय-भवन में मंगवा लिया। खाना था-खजूरें और बकरी का दूध।

लार्ड अर्विन ने कहा-'देखूं तो आप क्या खाते हैं!'

गांधीजी खाना उनके सामने रखते हुए बोले-'वही जो यीशु ख्रिस्त खाया करते थे।'

o

आश्रम में किसी नौजवान ने गांधीजी से मजाक में कहा-'आज कस्तूरबा ने चरखे पर आपके मुकाबले में तीन पूनियां ज्यादा काती हैं!'

'तो क्या हुआ?' गांधीजी ने उत्तर दिया-'वे मुझसे तीन महीने बड़ी भी तो हैं।'

o

आर्यसमाज के शास्त्रार्थ-महारथी पंडित रामचंद्र देहलवी ने एक बार गांधीजी को पत्र में लिखा-'आप सभी धर्मों की एक-सी महानता बताते हैं। पर वेदों की शिक्षा कुरान की शिक्षा से कहीं ऊंची है। मुझे किसी दिन समय दीजिये, मैं इस मसले पर आपसे बहस करना चाहता हूं।'

गांधीजी धार्मिक बहसों में पड़ने से संकोच करते थे। उत्तर में उन्होंने लिखा-'आप आने का कष्ट न करें और मुझे अपने देश का एक पागल आदमी समझकर मेरे खयालों पर छोड़ दें।'

o

गांधीजी जिन दिनों अफ्रीका में वकालत करते थे, उन्होंने अपने यहां एक ब्राह्मण खाना बनाने के लिए रखा हुआ था, जो बिना नहाये कोई काम नहीं करता था।

एक बार किसी ने उसकी सफाईपसंदगी का जिक्र किया, तो गांधीजी ने कहा-'वह अपने शरीर पर पानी तो रोज डालता है, पर नहाता कभी नहीं।'

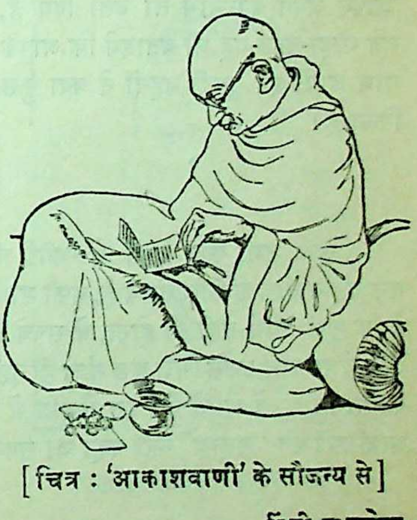

[चित्र : 'आकाशवाणी' के सौजन्य से]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन १९२५ के अंत में कानपुर में कांग्रेस का सालाना संमेलन हुआ। उस साल गांधीजी कांग्रेस के अध्यक्ष थे और अगले साल के लिए श्रीमती सरोजिनी नायडू को अध्यक्ष चुना गया था। गांधीजी ने अपने भाषण में कहा—'अब यह अध्यक्षता का भार मैं अपने कमजोर कंधों पर से उतारकर सरोजिनी बहन के तगड़े और सुंदर कंधों पर डाल रहा हूं।'

०

महात्मा गांधी मेरठ आये, तो मेरठ की कांग्रेस-कार्यकर्त्री उर्मिला शास्त्री एक प्रतिनिधि-मंडल लेकर उनके पास गयीं और बड़े विस्तार से बताने लगीं कि उन्होंने स्त्रियों के बीच क्या काम किया है।

गांधीजी चुपचाप सुनते रहे और जब लगभग दस मिनट बीत गये, तो उन्होंने उर्मिला बहन की बात काटते हुए कहा—'आपने अपने कारनामे तो बता दिये हैं, अब थोड़ा-बहुत यह भी बताइये कि आपके साथ आयी इन दूसरी बहनों ने क्या कुछ किया है।'

०

सन १९४६ में जब कैबिनेट-मिशन से राष्ट्रीय मंत्रिमंडल के निर्माण के बारे में बातचीत हो रही थी, तो पंडित मदनमोहन मालवीय भी दिल्ली पधारे और गांधीजी से मिले। उन दिनों पंडितजी की सेहत ठीक नहीं थी और उसके कुछ ही महीने बाद ही उनका देहांत भी हो गया।

गांधीजी ने उस भेंट में पंडितजी से कहा—'आप इलाहाबाद वापस जाइये। यह काम तो हम नौजवानों पर छोड़ दीजिये।' उस समय गांधीजी की उम्र ७७ वर्ष की थी।

०

जब पंडित मोतीलाल नेहरू ने अपना घर 'आनंदभवन' कांग्रेस को दान कर दिया और उसका नाम 'स्वराज्य-भवन' रखा गया, तो देश के कोने-कोने से बधाई के तार और पत्र आये।

महात्मा गांधी ने अपनी पत्रिका 'हरि-जन' में इस बारे में सिर्फ इतना ही लिखा:

'मोतीलाल नेहरू ने आनंदभवन देश को दे दिया है। पर यह आनंदभवन चूने और ईंटों का बना है। वे तो जवाहरलाल नेहरू को देश को दे चुके हैं।'

★

सूफी अली कहा करते थे—'कोई भी तब तक सत्य तक नहीं पहुंच सकता, जब तक यह न सोच सके कि संभव है, सूफी मार्ग स्वयं ही गलत हो। बात यह है कि जो मानते हैं कि सूफी मार्ग सही ही होगा, वे सच्चे विश्वासी नहीं हैं—बल्कि ऐसे आदमी हैं जो जैसा वे समझते उससे भिन्न कुछ सोच ही नहीं सकते। पशुओं की तरह वे कई विश्वासों का पालन करते चलते हैं। इस स्थिति में वे कुछ भी सीख नहीं सकते। और चूंकि ऐसे आदमियों को "मनुष्य" नहीं कहा जा सकता, सो वे सत्य तक नहीं पहुंच सकते।'

—इदरीज शाह

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीता का उर्दू तर्जुमा

ईश्वरचंद्र मिश्र

श्रीमद्भगवद्गीता के सात सौ श्लोक दीर्घकाल से भारतीय मनीषा के मनन और चिंतन के प्रिय विषय हैं। एक भव्य जीवनदर्शन प्रस्तुत करने वाली इस विचार-मंदाकिनी में जी-भरकर अवगाहन करने का अवसर आज से कोई चालीस बरस पहले उर्दूप्रेमियों को भी प्राप्त हुआ, जब सन १९३३-३४ के करीब पं. योगिराज (नज़र सोहानवी) ने उसका पद्यमय उर्दू अनुवाद 'कलामे रब्बानी' (पवित्र वाणी) नाम से प्रस्तुत किया। इस अनुवाद में प्रवाहमय उर्दू भाषा में गीता के अर्थ को सर्वसाधारण के लिए बोधगम्य बनाने का सत्प्रयास किया गया है।

पं. योगिराज वाराणसी के समीप निवास करते थे और महामना पं. मदनमोहन मालवीय के अनन्य भक्त थे। उन्होंने 'कलामे रब्बानी' का पद्यमय समर्पण महामना मालवीय के नाम करते हुए पुस्तक के प्रारंभ में लिखा:

'ऐ बनारस के बिरहमन मालवी
ऐ मदनमोहन महामन मालवी
हिंदुओं का दर्द तेरे दिल में है
तेरा सानी कौन इस महफिल में है
नज़्म करता है ये रब्बानी कलाम
जिन्दये जावेद लाफानी कलाम।'

हिंदुओं की मुकद्दस किताब का उर्दू नज्म में किया गया यह तर्जुमा श्री योगिराज की इल्मी, अदबी और मजहबी खिदमत का जीता जागता नमूना है। इस तर्जुमे पर अपनी राय उपन्यास-सम्राट् मुंशी प्रेमचंद ने नीचे लिखे शब्दों में प्रकट की थी:

'हजरते नज़र सोहानवी की ताज़ा तसनीफ़ कलामे रब्बानी के मुतालिये से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि आप इसको नज़्म करने में कामयाब हुए हैं। अभी तक के तर्जुमों में कलामे रब्बानी को मुमताज दर्जा हासिल है।'

पार्थसारथी [नंदलाल बसु]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'कलामे [illegible]' [illegible] है इसका शब्द-माधुर्य। पुस्तक जब प्रकाशित हुई थी, उन दिनों पं. योगिराज जहां भी जाते थे, प्रबुद्ध श्रोताओं को नज़्म के रूप में इसे गाकर सुनाते थे। यह पुस्तक आजकल अप्राप्य है। उर्दू का महत्त्व घट जाने के कारण कदाचित् इसे शायद पुनः छापा नहीं गया। मुझे जो प्रति प्राप्त हुई, वह नागरी लिपि में छपी है और उसमें उर्दू शब्दों के हिंदी पर्याय भी दिये हुए हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि पं. योगिराज के अनुवाद में रवानी है और गीता के जीवन-दर्शन को स्पष्ट करने की अद्भुत क्षमता है। गीता के कतिपय प्रसिद्ध श्लोकों का अनुवाद इसे स्पष्ट करता है :

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥
[२·२३-२४]

इसे अब उर्दू नज़्म में पढ़िये :

'तेग से जिनहार ये कटती नहीं
बादे तुन्दोतेज से घटती नहीं
आतिशे शोला फिशानो शोलारेज़
करती है खुद इसके शोलों से गुरेज़
पानियों में गल नहीं सकती है ये
आतिशों में जल नहीं सकती है ये
आग में जलना, हवा में सूखना
आब में गलना तबर में टूटना
इसका दम इन सबकी ज़द से दूर है
इसकी हस्ती सरबसर पुरनूर है।'

[illegible] और प्रसिद्ध श्लोक :

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः॥ [२·६९]

इसका उर्दू नज़्म में तर्जुमा कितना सुंदर किया गया है :

'जानते हैं रात जिसको सब बशर
नेक इंसानों को है मिस्ले सहर
और जब बेदार हो सारा जहां
जानते हैं शब उसे आरिफ़ यहां।'

मृत्यु के प्रति निडरता की प्रेरणा गीता के प्रत्येक श्लोक में है; किंतु शरीर की नश्वरता संबंधी निम्नांकित श्लोक का अनुवाद द्रष्टव्य है :

देहिनोऽस्मिन् यथा देहे कौमारं यौवनं जरा।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति॥
[२·१३]

इसका उर्दू रूपांतर पं. योगिराज ने यों किया है :

'जिस तरह तिफ़्ली व पीरी वा शबाब
इस किताबे जिस्म के हैं तीन बाब
बस युं ही जब छोड़ते हैं यह बदन
दूसरा पाते हैं फिर मल्बूसे तन
इसलिए हर साहिबे होशोहवास
जीने-मरने से है बेयासो हिरास।'

गीता के पहले अध्याय का नाम ही है 'अर्जुन-विषाद-योग'। उसमें अर्जुन की विकल स्थिति का जो मनोवैज्ञानिक निरूपण हुआ है, उसे उतने प्रभावपूर्वक दूसरी भाषा के दूसरे छंद में ढालना बहुत मुश्किल काम था। मगर पं. योगिराज ने नज़्म की शक्ल

सिर्तंबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में उसे बड़ी खूबसूरती से पेश किया है :

'भीष्म बाबा पर दरोण उस्ताद पर
किस तरह ऊंचा करूं दस्ते तबर
हम खुशी से शादमां हों मस्त हों
तीर इनके जिस्म में पैवस्त हों
यह तो हरगिज़ मुझसे हो सकता नहीं
अपने हाथों इनको खो सकता नहीं ।'

[२.४-५]

अंत में अर्जुन प्रार्थना करता है :

'आप मुझको वह नसीहत दीजिये
वहम मेरे दिल से रुखसत कीजिये
दिल से मैं हूं आपका ताबे गुलाम
आपका बंदा हूं ऐ रब्बे अनाम
बेकसी में बेकसों के कारसाज़
इस तरफ भी इक नजर बंदानवाज़ ।'

[२.७]

संपूर्ण अठारह अध्यायों का अनुवाद नज्म में किया गया है तथा प्रत्येक अध्याय के अंत में लिखा है :

'खुदावंदे मुतलक और अर्जन के अफ्सोसनाक अलमखेज खयालात पर मुश्तमिल मकद्दस गीता का जो सरबसर इल्मे इलाही खुलासए रमूज़े मारिफ़त और मुकम्मल हक्कानी उलूम की इल्हामी किताब है और जिसको पं. नज़र सोहानवी ने उर्दू नज़्म का लिबास दिया है ...... बाब खत्म हुआ ।'

पं. योगिराज उर्फ नजर सोहानवी ने गीता के जीवन-दर्शन को जन-साधारण तक पहुंचाने की इच्छा से यह अनुवाद किया था । उर्दू की उन दिनों अदालतों में पहुंच थी और उत्तर भारत के हिंदुओं में भी उर्दू पढ़ने की काफी पुष्ट परिपाटी थी । आज भी नागरी लिपि में लिखी उर्दू हिंदी की एक कामयाब शैली मानी जाती है। आशा है, इस लेख से विज्ञजनों का ध्यान इस अनुवाद की ओर आकृष्ट होगा और शायद इस उपयोगी ग्रंथ का पुनर्मुद्रण हो सकेगा ।

—४३९, ब्यौहार बाग, जबलपुर, म. प्र.

★

महाभिक्षु

अपने शरीर पर बादलों की भस्मी लगाकर और हाथ में सूरज का कटोरा लेकर जब आकाश-पुरुष भिक्षा के लिए निकला, तो दिग्दिगंत कांप उठे। नदियों ने वेग से दौड़कर उसके चरण पखारे और वृक्षों ने श्रद्धा से झुककर उसे पुष्पांजलि अर्पित की। धरती ने अपने खेतों की फसलों का अंजुरियां भर-भर दान दिया। पर्वतों ने अपने हृदयों में छिपाकर रखे रत्नाभूषण तक दे डाले । लेकिन सूरज का कटोरा नहीं भरा, सो नहीं भरा ।

यह सब देखकर अपने घर की दहलीज पर खड़ी संध्या को बहुत दया आयी और उसने अपने शरीर पर का अंतिम वस्त्र लाल रंग की चुनरिया भी उतारकर सूरज के कटोरे में डालते हुए अपने आपको घने अंधकार की ओट में छिपा लिया ।

और तब इस सर्वस्व-दान की खबर पाकर, आकाश का सूरज रूपी मन भर आया और वह अपनी यात्रा समाप्त कर पश्चिमी दिशा की कंदराओं में चला गया ।

—रामनारायण उपाध्याय

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्रीय उद्यान एक दर्शन, एक उद्योग

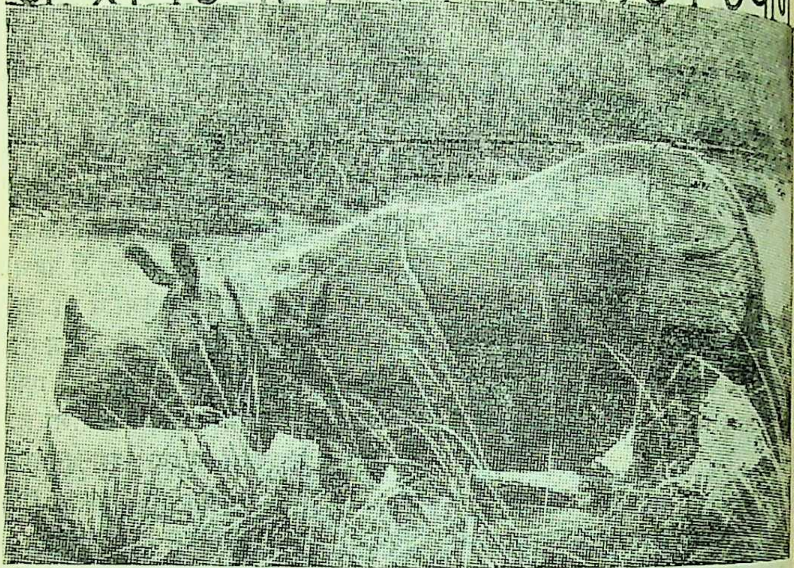

रामलखन सिंह

'नहीं ! प्रकृति के इस विराट एवं अद्वितीय रूप को बदलने का हमें कोई अधिकार नहीं है। इससे लाभान्वित होने का अधिकार मात्र हमारी पीढ़ी को ही नहीं, आने वाली हजारों-हजारों पीढ़ियों को भी है। आओ, हम इसे अछूता छोड़ दें ! एक ऐसा पवित्र क्षेत्र घोषित कर दें, जहां आने वाली पीढ़ियां आकर देख सकें कि कभी उनका देश कितना सुंदर था, कितना मनोरम था।'

अमरीका की येलोस्टोन नदी-घाटी के विकास की संभावनाओं का सर्वेक्षण कर रहे एक विशेषज्ञ ने सन १८७० में ये शब्द कहे थे।

उस अधिकारी के देखे इस सपने के आधार पर ही १८७२ में विश्व के सर्वप्रथम नेशनल पार्क 'येलोस्टोन' को जन्म मिला। फिर तो 'नेशनल पार्क' का यह दर्शन संपूर्ण विश्व में फैल चला। औद्योगिक प्रगति की होड़ में जुटे प्रत्येक राष्ट्र ने सोचना प्रारंभ किया—क्या हम भी अपनी धरती का कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भाग ऐसा नहीं छोड़ सकते, जहां मशीनों का शोर न पहुंचे ? जहां मुक्त गगन में उड़ानें भरती चिड़ियों की चहचहाहट सुनी जा सके ? जहां नदी-नालों एवं झरनों का सरगम अबाध गति से गूंजता रहे ? जहां विचित्र प्रकार के पेड़-पौधों एवं उनकी ओट में लुका-छिपी का खेल खेलते वन्य पशुओं को किसी का भय न हो ?

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस आत्मविवेचन के परिणामस्वरूप शताब्दी बीतते-बीतते विश्व के एक सौ तीस राष्ट्रों में लगभग दो हजार नेशनल पार्क एवं उस ढंग के रक्षित क्षेत्रों का जाल फैल गया। मूलत: पूरे एक सौ वर्षों (१८७२ से १९७२ तक) में हुई यह प्रगति बहुत प्रभावकारी तो नहीं कही जा सकती। किंतु यदि हम इसे इस परिपेक्ष्य में देखें कि आज विश्व का प्रत्येक राष्ट्र औद्योगीकरण के लिए कच्चे माल की खोज में धरती का सीना छलनी किये दे रहा है, तो निश्चय ही यह सोचकर सांत्वना मिलेगी कि कम से कम प्रत्येक राष्ट्र में कुछ तो ऐसे सुरक्षित क्षेत्र हैं, जहां की वनस्पति और जीव-जंतु अपने प्राकृतिक रूप में विद्यमान हैं और हम कभी भी वहां जाकर उनके साथ कुछ पल गुजार सकते हैं।

नेशनल पार्क की स्थापना के पीछे यही भावना प्रधान होती है कि वे मशीनों के जंगल में भटके हुए आधुनिक मानव के प्राकृतिक घर होंगे और वहां वह दर्शक नहीं, सहभोगी बनकर जायेगा। इस दृष्टि से नेशनल पार्क नगरों में मनोरंजनार्थ बनाये जाने वाले पार्क, चिड़ियाघर अथवा वैज्ञानिक प्रयोगों के लिए स्थापित किये जाने वाले बोटैनिकल गार्डनों से सर्वथा भिन्न होते हैं। मूलत: अनूठे प्राकृतिक सौंदर्य से भरे ऐसे क्षेत्र ही नेशनल पार्क बनाये जाते हैं, जो उस राष्ट्र की परंपरागत वनस्पति एवं जीव-जंतुओं से परिपूर्ण हों और जहां प्रकृति के स्वच्छंद क्रिया-कलापों में किसी भी प्रकार की बाधा डालना (जैसे पेड़ों का काटना, वन्य पशुओं का शिकार, नदी-नालों को बांधना, खनिजों की खुदाई आदि) अवैध एवं अपराधपूर्ण घोषित किया जा चुका हो।

नेशनल-पार्क की एक और खासियत होती है, उसकी विशालता। उदाहरणार्थ, भारत के सर्वप्रथम नेशनल पार्क 'कार्बेट नेशनल पार्क' का क्षेत्रफल ५२५ वर्ग किलोमीटर है और मध्यप्रदेश स्थित 'कान्हा नेशनल पार्क' का प्रस्तावित क्षेत्रफल १,३८० वर्ग किलोमीटर है।

स्पष्टत: नेशनल पार्क की स्थापना करने वाली पीढ़ी को कुछ त्याग करना पड़ता है; क्योंकि उन विशाल क्षेत्रों से उपलब्ध हो सकने वाला कच्चा माल उसे उपयोग के लिए नहीं मिल पाता। इसी कारण विश्व के लगभग प्रत्येक राष्ट्र में नेशनल पार्क के समर्थकों को वहां के अर्थशास्त्रियों का विरोध सहना पड़ा है।

आर्थिक दबाव में आकर शायद नेशनल पार्कों का भविष्य धुंधला जाता, किंतु बीसवीं सदी की तकनीकी क्रांति से उत्पन्न एक नये उद्योग—पर्यटन उद्योग—ने नेशनल पार्कों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोरदार हिमायत की है।

नगरों के शोर-गुल से भरे प्रदूषित वातावरण से उकताये हुए पर्यटकों की टोलियां कुछ घंटों अथवा कुछ दिनों के लिए प्रकृति की गोद में सुस्ताने की लालसा लिये राष्ट्रीय उद्यानों की ओर मुड़ती हैं। यह क्रम पश्चिम के राष्ट्रों में सर्वाधिक देखने को मिलता है; क्योंकि वहां के नागरिकों का जीवन-क्रम पूरब की तुलना में कहीं अधिक कृत्रिम होकर प्रकृति से दूर जा चुका है। अमरीकी आंकड़ों के अनुसार सन १९२५ में राष्ट्रीय उद्यानों एवं वनों में जाने वाले पर्यटकों की संख्या ५० लाख थी; १९६५ तक वह बढ़कर १५ करोड़ हो गयी। मात्र चालीस वर्षों में ३० गुनी वृद्धि।

परंतु इसका एक अप्रिय पहलू भी है। इसने नेशनल पार्कों को भी कृत्रिमता से भर दिया है। वहां भी नगरों की भांति पर्यटकों की कारों की लंबी कतारें लगने लगी हैं। वैभवशाली होटल और रेस्तरां खड़े हो गये हैं। पिकनिक मना रहे हजारों-लाखों लोगों के तंबू चारों ओर फैले मिलते हैं। इससे बचने के लिए संपन्न लोग अब अपना क्रिस्मस का अवकाश विशेष ढंग से मनाने की लालसा लिये अफ्रीका और एशिया के राष्ट्रीय उद्यानों एवं वन-पशु-विहारों (वाइल्ड लाइफ सैंक्चुअरी) की ओर उड़ानें भरने लगे हैं।

आज तो अफ्रीका के कुछ राष्ट्रों की आय का मूलस्रोत है वहां के राष्ट्रीय उद्यानों में छुट्टियां बिताने आने वाले विदेशी पर्यटक।

इस दृष्टि से भारतीय भूखंड का महत्त्व विशेष रूप से बढ़ गया है; क्योंकि हमारे राष्ट्रीय उद्यानों का प्राकृतिक सौंदर्य एवं उनके वन्य जंतुओं की अनोखी छटा विश्व के श्रेष्ठतम नेशनल पार्कों से कम नहीं है। अकेले भारतवर्ष में अभी भी पशुओं की ५०० प्रजातियां, रंग-बिरंगे पक्षियों की २,१०० एवं कौतूहलपूर्ण कीट-पतंगों की ३० हजार प्रजातियां सुरक्षित हैं। अफ्रीका के इने-गिने राष्ट्रों को छोड़कर, विश्व का कोई भी राष्ट्र इतने बड़े प्राकृतिक वैभव का दावा नहीं कर सकता।

मूलतः राष्ट्रीय उद्यान का बुनियादी विचार भारत के लिए नया नहीं है। हमारी समूची संस्कृति ऋषि-मुनियों के उन आश्रमों में जनमी थी, जहां विचरते पशु-पक्षियों को क्षति पहुंचाने का दुःसाहस चक्रवर्ती सम्राट भी नहीं कर सकते थे। निश्चित ही 'नेशनल पार्कों' का इतिहास अनेक सदियों पूर्व ही स्थापित हो चुके इन अभयारण्यों से प्रारंभ होता है। किंतु यह भी कटु सत्य है कि दासता-काल में जहां हमारी अनेक स्वस्थ परंपराओं को आघात पहुंचा, वहीं आदिकाल से ही भारतीय भूमि पर पलते आ रहे वन्य-जंतुओं के लिए खतरा पैदा हो गया। अंग्रेज बहादुर की देखादेखी छोटे-मोटे महाराजाओं, जमीदारों एवं सरकारी अफसरों में भी अधिक से अधिक शेर, बाघ, चीते, गैंडे, हिरन, सूअर आदि मारने की होड़ लग गयी। मरे हुए बाघ-चीतों की खाल महलों एवं बंगलों में टांगना पौरुष का

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचायक बन गया। शेर, बाघ या चीते की लाश पर खड़े बंदूकधारियों की तस्वीरें पत्र-पत्रिकाओं में बड़े संमान के साथ छपने लगीं। जीप, सर्चलाइट, राइफल आदि से सुसज्जित, बीसवीं सदी के इन शिकारियों के सामन निहत्थे वन्य-पशुओं का पलड़ा हल्का पड़ता गया।

दूसरी ओर, आर्थिक अभाव के कारण आम भारतीय का उत्साह भी प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति मंद पड़ता गया। बढ़ती आबादी के कारण रोटी, व्यवसाय, आवास आदि की निरंतर जटिल होती समस्या ने हमारे चिंतन एवं सौंदर्यबोध को अत्यंत संकुचित कर दिया। हरे-भरे जंगल, उनमें विचरते हुए पशु-पक्षी, बहते हुए नदी-झरने आदि तभी सुहाते हैं, जब हमारे पास रहने को घर हो, खाने को रोटी हो।

इन सब बातों का दुष्प्रभाव हमारे जंगलों एवं उनमें पलने वाले वन्य जंतुओं पर सीधा पड़ा। उनके प्राकृतिक विकास के लिए सुरक्षित घोषित किये गये वन-क्षेत्रों (राष्ट्रीय उद्यान एवं वन्यपशु विहार) में लकड़ी की कटाई एवं घरेलू जानवरों की चराई को नहीं रोका जा सका। परिणामस्वरूप इन पशुओं के प्रजनन एवं जीवन-निर्वाह हेतु आवश्यक वातावरण का ह्रास होता रहा। हम प्रकृति का यह सरल-सा नियम भी भूल गये कि बाघ हिरन पर पलता है; हिरन हरी घास पर; हरी घास पलती है भूमि-जल-वायु-सूर्य के प्रकाश पर; और इस चक्र में यदि एक भी कड़ी टूटी, तो शेष इकाइयों

गीर के सिंह का नाश्ता [चित्र : अबू]

का बिखर जाना निश्चित है।

इस चक्र के टूटने का एक दुष्परिणाम यह भी हुआ कि प्राकृतिक आहार की कमी होने से बाघ और शेर भूख मिटाने के लिए निकट चर रहे पालतू जानवरों (भेड़, बकरी, गाय, भैंस आदि) का शिकार करने लगे। बदले में उन पशुओं के स्वामी उनके शत्रु बन गये और विष देकर या अवैध शिकारियों के साथ सांठ-गांठ करके उन्हें मार डालने का षड्यंत्र रचने लगे। दूसरी ओर, जंगल में चारे के अभाव के कारण जो हिरन, नीलगाय आदि बस्ती की ओर चले गये, जिंदा लौट न सके।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद हमें कुछ समझ आयी और हमने सोचना प्रारंभ किया कि रोटी, लकड़ी अथवा चारे के अभाव की समस्या वन्य पशुओं के लिए सुरक्षित छोड़ी गयी थोड़ी-सी भूमि के अपहरण अथवा दुष्प्रयोग से नहीं, बल्कि कृषि के लिए उपलब्ध भूमि में अनाज एवं चारे की उपज बढ़ाने तथा जनसंख्या की असंयमित वृद्धि रोकने से दूर होगी। फिर भी प्रकृति के बिगड़े हुए चक्र को सुधारने में समय लगता है। सो दृष्टिकोण परिवर्तन के उपरांत भी वन्य पशुओं की संख्या निरंतर घटती गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका प्रथम आघात हमें तब लगा, जब यह तथ्य सामने आया कि भारतभूमि से चीता लुप्त हो गया है और यदि शीघ्र ही कुछ न किया गया तो बबर शेर (सिंह), बाघ (टाइगर), कस्तूरी मृग, गैंडा समेत लगभग ३९ अन्य जंगली जीवों एवं १२१ पक्षियों की जातियां भी हमारे यहां से सदा के लिए समाप्त हो जायेंगी।

बबर शेर जो २०० वर्ष पूर्व संपूर्ण भारत में पाया जाता था, अब केवल गुजरात के गीर जंगलों में ही देखा जा सकता है। १९५५ में की गयी गणना के अनुसार वहां बबर शेरों की कुल संख्या १९० आंकी गयी थी; किंतु १९६८ में वह मात्र १७७ रह गयी। इस 'राष्ट्रीय पशु' को एक नया घर देने की दृष्टि से 'चंद्रप्रभा वन्य पशु-विहार' (वाराणसी, उ. प्र.) में कुछ बबर शेर छोड़े गये; किंतु एक-एक करके वे सब मर गये। इसलिए पुनः गीर जंगलों में ही ठोस एवं दूरगामी कदम उठाये गये। यह हर्ष का विषय है कि परिणाम आशाप्रद निकला और १९७४ के सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है कि गीर के वन में शेरों की संख्या बढ़ी है।

भारतीय वनों की शान और पौरुष का आदि प्रतीक समझा जाने वाला विश्व-विख्यात रायल बंगाल टाइगर (बाघ) भी संकट में पड़ गया है। १९३० में संपूर्ण देश में बाघों की संख्या ४० हजार के लगभग आंकी गयी थी, किंतु १९६९ में वह मात्र ३ हजार निकली। संपूर्ण विश्व के लोग स्पष्ट रूप से सोचने लगे, क्या अपनी दहाड़ से जंगल का कलेजा कंपा देने वाला बाघ शीघ्र ही कहानियों तक ही सीमित रह जायेगा? इसलिए इंटरनेशनल यूनियन फार कन्जर्वेशन ऑफ नेचर ने अपनी ११६९ की बैठक नयी दिल्ली में की और भारत सरकार से अनुरोध किया कि बाघ के शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाकर उसे सर्वनाश से बचाने का प्रयास किया जाये। परिणामस्वरूप १९७० की जुलाई से भारत में बाघ का शिकार दंडनीय घोषित कर दिया गया।

किंतु अवैध शिकारियों एवं बाघ की खाल का गुप्त व्यापार करने वालों की कार्रवाई पूरी तरह समाप्त नहीं हुई और बाघ-परिवार छोटा होता रहा। अंततः १९७२ में 'वर्ल्ड वाइल्ड-लाइफ फंड' के संरक्षक ने सीधे हमारे प्रधान-मंत्री से बाघ के संरक्षण के लिए ठोस कदम उठाने का अनुरोध करते हुए इस काम के लिए दस लाख डालर की आर्थिक सहायता देने का प्रस्ताव रखा। परिणामतः बाघ की स्थायी सुरक्षा के निमित्त एक विशेष योजना बनी-प्राजेक्ट टाइगर। साथ ही बाघ की खाल बेचने, खरीदने अथवा विदेश भेजने को जबर्दस्त अपराध घोषित कर दिया गया।

प्राजेक्ट टाइगर के अंतर्गत हुए विस्तृत सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ कि १९६९ में बाघों की जो संख्या ३,००० के लगभग आंकी गयी थी, वह घटकर १९७२ में मात्र १,८२७ ही रह गयी है। इससे इस योजना को और बल मिला।

सिंह (बबर शेर) की तुलना में बाघ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक लजीला और एकांतप्रिय होता है। स्वभावतः वह अपनी मादा से वर्ष में दस-बारह दिन के लिए ही मिलता है। इसी अल्पकाल में उसे बाघिन को रिझाना, प्रेमालाप के लिए उकसाना और अंततः गर्भ-धारण कराना होता है। उसके उपरांत अकेली मादा ही बच्चों के पालन-पोषण का भार उठाती है। जन्म के प्रथम एक-दो माह बाघ के बच्चों के लिए बड़े नाजुक रहते हैं, क्योंकि वे अंधे पैदा होते हैं और आंखें खुलने तक मां की देखभाल उनके लिए अनिवार्य रहती है। इस काल में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप करने वाला बाघिन के क्रोध का शिकार बनता है।

प्राजेक्ट टाइगर के अंतर्गत ऐसे ९ राष्ट्रीय उद्यान एवं वन-विहार चुने गये हैं, जिनका क्षेत्रफल लगभग अठारह हजार वर्ग किलोमीटर होगा। बाघों के ये घर असम, बिहार, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं कर्नाटक के वनक्षेत्रों में स्थित हैं। इनमें स्वच्छंद विचरते हुए बाघ एवं अन्य वन्य जीवों को पूर्ण राजकीय सुरक्षा प्राप्त होगी।

वन्य जंतुओं की सुरक्षा के लिए राजकीय स्तर पर किये जा रहे इन प्रयासों की सफलता जनसाधारण के सहयोग पर निर्भर होगी। मात्र कानून बना देने से जब हत्या, डकैती, कालाबाजारी, जमाखोरी जैसे अपराध नहीं मिटाये जा सके, तो शेर, बाघ, गैंडा आदि का अवैध शिकार तो क्या रुकेगा।

इस संदर्भ में प्राजेक्ट टाइगर के डाइरेक्टर श्री कैलाश सांखला का यह कथन मननीय है—'यदि आप दस वर्ष पूर्व किसी बाघ का शिकार करते, तो हाथ में बंदूक थामे, एक पैर मृत बाघ पर रखे हुए किसी सचित्र साप्ताहिक में छापे जाते। किंतु आज कोई साहस करके तो देखे। संपादक के नाम पत्रों द्वारा उसके चिथड़े उधेड़ देंगे लोग......।' ('न्यू सांइटिस्ट', लंदन के मार्च १९७४ के अंक में छपे जान टिंकर के लेख से साभार उद्धृत।)

भारतीय मानस में आया यह परिवर्तन ही हमारे राष्ट्रीय उद्यानों एवं वनों में विचरते इन शानदार जीवों को सुरक्षित रख सकेगा। हमें अपने वन्य पशुओं की विविधता एवं उपयोगिता का संदेश प्रत्येक माध्यम से जनसाधारण तक पहुंचाना है। ऋषि-मुनियों एवं दार्शनिकों की संतान निश्चय ही इतनी अनुदार नहीं हो गयी है कि अपनी धरती पर आदिकाल से पलते आ रहे वन्य जीवों को अभय-दान न दे सके।

इस प्रकार से हमारे ये राष्ट्रीय उद्यान भावी पीढ़ियों के लिए हमारी भेंट होंगे। नगरों के दमघोटू वातावरण से दूर, प्रकृति की गोद में विचरते हुए वे यह सोचकर नतमस्तक होंगी कि कठिन आर्थिक संकट से जूझते हुए भी हमारे बाप-दादों ने प्राकृतिक सौंदर्य को नष्ट नहीं होने दिया। कृतज्ञता का यह भाव उन्हें प्रेरित करेगा कि वे भी इन्हें मूल रूप में सुरक्षित रखते हुए अगली पीढ़ी को सौंप जायें।

—विभागीय वन-अधिकारी, टिहरी, उ. प्र.

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मातृभाषा

रसूल हमजातोव

एक बार पेरिस में एक दागिस्तानी चित्रकार से मेरी मुलाकात हो गयी। रूसी क्रांति के कुछ ही समय बाद वह पढ़ाई के लिए इटली चला गया था। वहीं एक इतालवी लड़की से उसने शादी कर ली थी और अपने घर नहीं लौटा था। पहाड़ी जीवन के अभ्यस्त उस दागिस्तानी को नयी मातृभूमि के अनुरूप अपने को ढालना मुश्किल हो गया। वह कई देशों में घूमता रहा और जहां भी गया घर की याद उसे सताती रही। मैं यह देखना चाहता था घर की याद उसके चित्रों में कैसे व्यक्त हुई है। सो, उससे चित्र दिखाने का अनुरोध किया।

एक चित्र का नाम था 'मातृभूमि की याद'। उसमें एक इतालवी स्त्री (उसकी पत्नी) पुरानी 'अवार' पोशाक में दिखाई गयी थी। होत्सातल के मशहूर कारीगरों की बनायी नक्काशी वाली चांदी की गागर लिये वह एक पहाड़ी चश्मे के पास खड़ी थी। पहाड़ी ढलान पर पत्थर के मकान वाला उदास-सा अवार गांव दिखाया गया था और गांव के ऊपर सिर उठाये पहाड़ और भी ज्यादा उदास-से लग रहे थे। उनकी चोटियां कुहासे से लिपटी हुई थीं।

'पहाड़ों के आंसू ही कुहासा हैं', चित्रकार ने कहा—'वह जब ढलानों को ढंक देता है, तो चट्टानों की झुर्रियों पर चमकदार बूंदें बहने लगती हैं। मैं भी कुहासा ही हूं।'

दूसरे चित्र में कंटीली झाड़ी में बैठा हुआ एक पक्षी था। पक्षी को गाते हुए दिखाया गया था और पहाड़ी मकान की खिड़की में से एक उदास पहाड़िन उसकी तरफ देख रही थी। चित्र में मेरी दिलचस्पी देखकर चित्रकार ने बताया—'यह चित्र पुरानी अवार किंवदंती के आधार पर बनाया गया है।'

'किस किंवदंती के आधार पर?'

'एक पक्षी को पकड़कर पिंजरे में बंद कर दिया गया। बंदी पक्षी दिन-रात एक ही रट लगाये रखता "मातृभूमि, मातृभूमि, मातृभूमि, मातृभूमि, मातृभूमि ......" ठीक उसी तरह जिस तरह कि इन पिछले सालों के दौरान मैं भी रटता रहा हूं। पक्षी के मालिक ने सोचा—पता नहीं, कैसी होगी इसकी मातृभूमि और कहां होगी। निश्चय ही वह कोई बहुत ही सुंदर देश होगा। मैं इसे आजाद कर दूंगा और देखूंगा कि वह उड़कर किधर जाता है। इस तरह मुझे उस अद्भुत देश का पता चल जायेगा। उसने पिंजरा खोल दिया और पक्षी उड़ गया। मगर वह कुछ ही कदम की दूरी तक उड़कर पत्थरों के बीच उगी एक जंगली झाड़ी में जा बैठा। झाड़ी की शाखाओं में उसका घोंसला था। ...... सो मैं भी अपनी मातृभूमि को अपने पिंजरे की खिड़की से ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

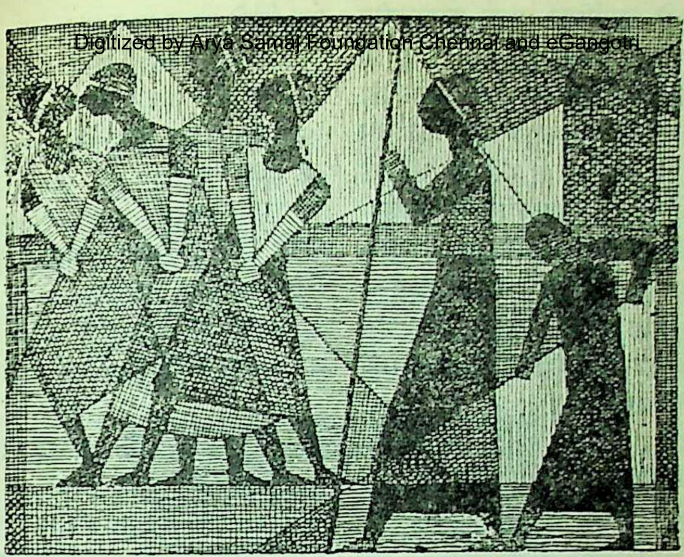

देखता हूं।'

'तो आप लौट क्यों नहीं जाते ?'

'अब बहुत देर हो चुकी है। कभी मैं जवान और जोशीला दिल लेकर अपनी मातृभूमि से आया था। अब उसे मैं सिर्फ बूढ़ी हड्डियां कैसे लौटा सकता हूं ?'

* * *

पेरिस से घर लौटकर मैंने चित्रकार के सगे-संबंधियों का पता लगाया। मुझे यह जानकर बड़ी हैरानी हुई कि उसकी मां अभी तक जिंदा है। अपनी मातृभूमि को छोड़कर विदेश में जा बसने वाले बेटे के बारे में उसके सगे-संबंधियों ने बातें उदासी के साथ सुनीं। मुझे लगा कि उन्होंने उसे माफ कर दिया है और वे खुश हैं कि वह जिंदा है। लेकिन तभी उसकी मां अचानक पूछ बैठी—'क्या तुम दोनों की बातचीत अवार भाषा में हुई?'

'नहीं। दुभाषिये के जरिये हुई। मैं रूसी बोलता था और तुम्हारा बेटा फ्रांसीसी।'

मां ने काले दुपट्टे से अपना चेहरा ढंक लिया, जैसा कि बेटे की मौत की खबर मिलने पर किया जाता है। पहाड़ी घर की छत पर बारिश ताल दे रही थी। हम अवारिस्तान में बैठे थे। अपनी मातृभूमि को त्याग देने वाला वह दागिस्तान का बेटा भी शायद पृथ्वी के दूसरे छोर पर पेरिस में बारिश का राग सुन रहा था। काफी देर बाद चित्रकार की मां ने मुझसे कहा:

'जरूर तुम्हें गलतफहमी हुई है। मेरा बेटा मर चुका है। वह मेरा बेटा नहीं था। मेरा बेटा कभी वह भाषा नहीं भूल सकता, जो एक अवार मां ने उसे सिखायी थी।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या नेफरतिति आर्य थी?

• वी. एस. प्रसार •

दुनिया के सर्वाधिक सुंदर पुरातत्त्वीय अवशेषों में से एक है १४०० ई. पू. के पास मिस्र पर शासन करने वाली सुप्रसिद्ध रानी नेफरतिति की आवक्ष प्रतिमा। बर्लिन के राजकीय संग्रहालय में रखी इस रंगी हुई प्रतिमा में हमें एक संवेदनशील किंतु शासन-प्रिय व्यक्ति के बड़ी नफासत से तराशे हुए, संस्कारी नाक-नक्श देखने को मिलते हैं।

नेफरतिति की ख्याति केवल उसके रूप-लावण्य के कारण ही नहीं, बल्कि इस कारण भी है कि वह उस क्रांतिकारी मिस्री राजा इख्नातोन की राजमहिषी थी, जिसने पुरोहित-वर्ग के उग्र विरोध के बावजूद मिस्र की प्राचीन संस्कृति में सूर्योपासना का नया और नाटकीय संप्रदाय प्रविष्ट कराया।

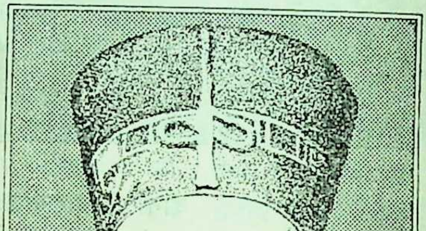

हाल के शोध-कार्य से प्रकट हुआ है कि नेफरतिति जन्म से मिस्री नहीं थी, बल्कि वह मितन्नी नामक कबीले की थी, जिसका उस समय मेसोपोटामिया के एक हिस्से पर शासन था। अब यह बात निर्भ्रांत रूप से ज्ञात है कि ये मितन्नी लोग आर्य थे और संस्कृत से गहरा संबंध रखने वाली एक भाषा बोलते थे। इसका मतलब यह हुआ कि १४०० ई. पू. में मिस्र की महारानी आर्य थी। यह बड़ी चौंका देने वाली खोज है, जिसका व्यापक सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक महत्त्व है।

नेफरतिति की नस्ल के बारे में यह खोज जर्मन कला-इतिहासज्ञ फिलिप वांडरबर्ग ने हाल में अपनी पुस्तक (नेफरतिति : एन आर्कियोलाजिश्चे बायोग्राफी; शेर्ज वेर्लाग, बर्न एंड म्यूनिख) में प्रकाशित की है। उन्होंने यह विवरण दिया है:

अमारना में आतोन का एक विशाल मंदिर है जो फिरऊन अमेनहाटेप चतुर्थ (बाद में जिसने अपना नाम इख्नातोन रख लिया) के जमाने में बना था। यह मंदिर इस कदर ध्वस्त हो गया था कि चित्रलिपि में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंकित उन इबारतों को, जो कभी उसकी दीवारों की शोभा थीं, समझ पाना बिलकुल असंभव हो गया था।

रे डब्ल्यू. स्मिथ नाम के गैरपेशेवर अमरीकी पुरातत्त्वज्ञ को यह बात सूझी कि मलबे के ढेर के रूप में पड़े मंदिर के १,६०० से अधिक टुकड़ों को सिलसिले से बैठाने के लिए कंप्यूटर की मदद क्यों न ली जाये! जब वैसा किया गया तो रानी नेफरतिति की पूरी जीवनी प्रकाश में आयी। उससे पता चला कि वह दुशरत्त (दशरथ?) नामक मितन्नी राजा की बेटी थी और सत्रह साल की उम्र में मिस्री राजकुमार अमेनहाटेप को ब्याही गयी थी, जो तब केवल बारह बरस का था।

मितन्नियों के बारे में ये ऐतिहासिक तथ्य सुविदित हैं कि वे भारत-आर्य जाति के लोग थे और ऐसे एक प्रदेश पर शासन करते थे, जिसके एक ओर हत्ती लोग तथा दूसरी ओर अशुर लोग रहते थे। आक्सफर्ड विश्वविद्यालय के प्राध्यापक ओ. आर. गर्नी ने अपनी पुस्तक 'द हिट्टाइट्स' में उनके बारे में लिखा है–'मितन्नी के शासक इंद्र, वरुण नासत्यौ आदि भारत-आर्य देवताओं को पूजते थे और उनके निजी नाम भी इसी (भारत-आर्य) मूल को सूचित करते हैं। इसलिए हमें यह परिणाम निकालना पड़ता है कि यह आर्य-वंश पश्चिम की ओर बढ़ते हुए......' आगे वे फिर लिखते हैं–'इस तरह यह स्पष्ट है कि मितन्नी में हूरियन (अर्थात् विजित लोगों) की आबादी पर एक भारत-आर्य शासक जाति का शासन था।'

और भी कई प्रतिष्ठित विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि मितन्नी लोग उन्हीं आर्यों की एक शाखा थे, जो ठीक उन्हीं दिनों भारत पर आक्रमण कर रहे थे और वहां बसने लगे थे। और यह बात ध्यान देने योग्य है कि ये मितन्नी आर्य मेसोपोटामिया में एक समय इतने शक्तिशाली हो गये थे कि वे असीरियनों को नजराना देने के लिए और मिस्रियों को वैवाहिक संबंधों के लिए बाधित कर सकते थे!

इस तरह यदि नेफरतिति आर्य राजकुमारी ठहरती है, तो हम यह मान सकते हैं कि उसके साथ कुछ आर्य-प्रभाव भी मिस्र में पैठा होगा। और यह निरा कल्पना-विलास नहीं है, बल्कि अन्य साक्ष्यों से भी यही सिद्ध होता है।

अव्वल, नेफरतिति किशोर-राजा अमेनहाटेप से पांच साल बड़ी थी। इस कारण तो अपने पति पर उसका प्रभाव था ही। इसके अलावा, वांडरवर्ग यह दिखाते हैं कि अमेनहाटेप की मां राजमाता तेजे भी मितन्नी थी। इस तरह अमेनहाटेप चतुर्थ (बाद के इख्नातोन) की मां और पत्नी दोनों मितन्नी थीं और इन दोनों आर्य स्त्रियों का किशोर-राजा पर पूरा वर्चस्व था और उसके जरिये वे मिस्र पर शासन कर रही थीं।

अब यह बात स्पष्ट हो जाती है कि सूर्योपासना का क्रांतिकारी संप्रदाय जो जाहिरा तौर पर इख्नातोन ने मिस्र में प्रचलित किया, वस्तुतः इन दो आर्य रानियों की कारस्तानी

* 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' से साभार *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इख्नातोन

थी। सूर्योपासक संप्रदाय का मूलतः विदेशी होना इस बात का भी खुलासा कर देता है कि स्थानीय अमीर-उमरा ने उसका इतना उग्र प्रतिरोध क्यों किया और अंततः उसे क्यों उखाड़ फेंका।

इख्नातोन के नये धर्म का आकस्मिक आविर्भाव इतिहासकारों को सदा ही चकित करता आया है और विल ड्युरैंट ने अपने बृहद् ग्रंथ 'द स्टोरी ऑफ सिविलिज़ेशन' में उसका वर्णन इन शब्दों में किया है—'तीस सदियों बाद भारत में हुए अकबर की भांति इख्नातोन को भी सबसे बढ़कर देवत्व का दर्शन हुआ सूर्य में, जो कि समस्त पार्थिव जीवन एवं प्रकाश का मूल स्रोत है। हम नहीं कह सकते कि क्या उसने यह सिद्धांत शाम (सीरिया) से ग्रहण किया था, या कि आतोन (यूनानी) एडोनिस का ही एक और रूप था।'

अब यह स्पष्ट हो जाता है कि सर्वोपरि देवता के रूप में सूर्य की उपासना आर्यों के विचार-जगत् की कल्पना है। उसका अस्तित्व आरंभिक वैदिक साहित्य में परिव्याप्त देखा जा सकता है और बाद में भी वह निश्चय ही सूर्य संप्रदाय के रूप में भारत में कायम रहा। यह बात रोचक है कि भारत में सूर्य देवता की जितनी भी मूर्तियां हैं, उन सभी म सूर्य को घोड़ों से खींचे जाने वाले रथ पर आरूढ़ दिखाया गया है और यह चीज इस संप्रदाय की प्राचीनता को प्रमाणित करती है।

स्वयं मिस्र में इख्नातोन के शासन-काल में मिस्री कला ने नयी दिशा पायी और रिचार्ड हैमन ('जेश्चिश्टे डर कुन्स्ट') जैसे विद्वानों का अनुमान है कि परंपरा से यह विच्छेद उत्तर की 'असभ्य' जातियों के प्रभाव के कारण हुआ था। इस उद्भट कला-इतिहासज्ञ ने केवल अंतर्ज्ञान के बल से सही समाधान ढूंढ़ लिया था। अब तो यह सुनिश्चित जान पड़ता है कि कोई बीस वर्षों तक मिस्र कला, धर्म और राजनैतिक जीवन के क्षेत्र में आर्यों के प्रभाव के अधीन रहा। इसका अध्ययन अभी होना बाकी है कि इस विदेशी प्रभाव का कितना अंश मिस्री परंपरा के साथ स्थायी रूप में घुल-मिल गया और क्या मिस्री विचारों ने मितन्नी आर्यों को भी प्रभावित किया? संस्कृतियों के इस परस्पर मिलन पर विद्वानों का अधिक ध्यान देना उचित है।

मध्यपूर्व पर आर्य-प्रभाव का एक महत्त्वपूर्ण उदाहरण पुरातत्त्व द्वारा भी सिद्ध हो चुका है और उसका संबंध एक असाधारण विषय से है। बोग़ाजकोई में (जो हत्ती साम्राज्य की राजधानी था और उस जमाने में हत्तुसरा कहलाता था) हजारों की संख्या

सितंबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में मिले मृत्फलकों में से चार ऐसे हैं जो घोड़ों के प्रशिक्षण और प्रजनन के विषय में हैं। लेखक किक्कुलि नाम का कोई मितन्नी था।

प्रो. गर्नी लिखते हैं कि उस लेख की इबारत म 'कतिपय पारिभाषिक शब्द' मिलते हैं, 'जो उत्तर भारत के आर्यों की प्राचीन भाषा संस्कृत से मिलती किसी भाषा के हैं'। इस तरह ऐसा जान पड़ता है कि ये मितन्नी आर्य घुड़सवारी में बहुत सिद्धहस्त थे और यह नया पेशा सीखने के लिए प्राचीन बाबुल, मिस्र और असीरिया के लोगों को मितन्नी शिक्षकों को बुलाना पड़ता था।

हत्तियों और मितन्नियों के ही जमाने (यानी १४०० ई. पू.) में एक नये क्रांतिकारी युद्धोपकरण का आविर्भाव होता है, वह है घोड़े का रथ। मध्यपूर्व अब तक ठोस पहियों वाले रथ से ही परिचित था, जो कि भारी और असुविधाजनक होता था। अब सामने आये आरे वाले पहिये और ऐसा हल्का-फुल्का रथ, जो घोड़ों से खींचे जाने पर रफ्तार में और मोड़ने-घुमाने की सुविधा में अन्य सब रथों को पछाड़ सकता था। इस तीव्रगामी रथ ने उस समय की तमाम युद्ध-व्यवस्था को बदल डाला और भारत-यूरोपीयों को (जिनमें हत्ती भी समाविष्ट थे) समस्त मध्यपूर्व, ईरान और अंततः भारत पर छा जाने में समर्थ बनाया।

इस क्रांतिकारी आविष्कार का श्रेय आर्यों को है और इस प्रकार यह निरा काकतालीय नहीं है कि संस्कृत शब्द 'रथ' अनेक आर्य राजाओं के नामों में उत्तर-पद है, जैसे कि मितन्नी 'दुशरत्त' और भारतीय 'दशरथ' में। रथ की कल्पना हमारी संस्कृति में इस कदर व्याप्त है कि मंदिर भी रथ के रूप में बनाये गये हैं।

इस विवरण से यह निश्चित रूप से सिद्ध होता है कि १४०० ई. पूर्व के आस-पास भारत में आर्यों का आप्रवास विश्व-इतिहास की महत्तर घटनाओं से अनजुड़ी अलग-थलग घटना नहीं थी; अपितु वह प्राचीन क्लासिकी सभ्यताओं के सीमांतों पर क्रियाशील एक सशक्त और गतिशील जाति की

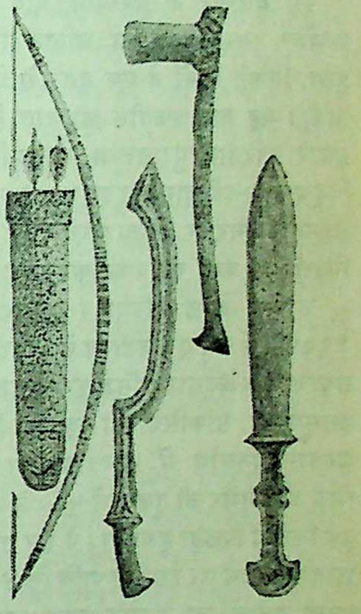

रेमसिस तृतीय के समय के मिस्री शस्त्रास्त्र जो मुख्यतः लकड़ी, तांत और कांसे के बने हुए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

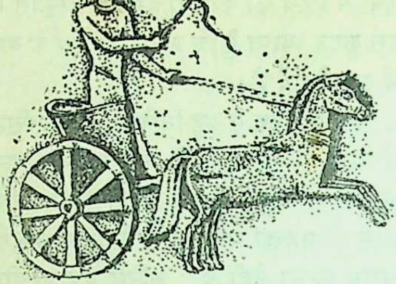

रथारूढ़ मिस्री योद्धा

व्यापकतर हलचल का अंग था।

इस हलचल के दरम्यान आर्य तथा आर्येतर संस्कृतियों का घनिष्ठ मिलन हुआ, जिससे दोनों ने एक दूसरे से प्रेरणा पायी। यह बड़े अफसोस की बात है कि हमारे भारतीय पुरातत्त्वज्ञ, प्राच्य-विद्याविद् व कला-इतिहासकार इस घटना के अनुशीलन की निरंतर उपेक्षा करते रहे हैं और विद्वत्ता की कमी को प्रकट करते रहे हैं।

'टाइम्स ऑफ़ इंडिया' (२५ दिसंबर १९७५) में छपे एवं चंडीगढ़ से प्रेषित एक समाचार के अनुसार प्रसिद्ध पुरातत्त्वज्ञ प्रो. हसमुख धी. सांकलिया की यह राय है कि शस्त्रास्त्र-निर्माण में भारतीयों का ज्ञान मिस्र और सुमेर की तुलना में ५०० से ७०० वर्ष जितना पिछड़ा हुआ था। वे इस सर्वथा भ्रांत परिणाम पर इसलिए पहुंचे कि उन्होंने अपनी दलीलों का आधार केवल भारत में मिले प्रमाणों को बनाया है। तर्क की यह पद्धति—और कुछ न कहें तो—निहायत सतही है। ऐसे थोथे आधार पर तो कोई यह भी सिद्ध कर सकता है कि प्राचीन आर्य नमक का उपयोग कतई नहीं करते थे। क्योंकि न तो वैदिक साहित्य में उसका नाम मिलता है, न पुरातत्त्वीय स्थलों पर ही नमक प्राप्त हुआ है। किसी वस्तु की अनुपस्थिति से उस वस्तु का अनस्तित्व सिद्ध नहीं होता।

इस समस्या को एक और दृष्टि से भी परखा जा सकता है। सभी विद्वान इस बारे में सहमत हैं कि आर्य पश्चिम से भारत में आये। पश्चिम से अपनी इस यात्रा के दौरान क्या उनका और किसी भी संस्कृति से संपर्क नहीं हुआ? जिन इलाकों में से गुजरते हुए वे यहां आये, वे सब क्या निर्जन रेगिस्तान थे?

प्रमाण तो इससे उलटे ही हैं। प्राचीन आर्य ऐसे रास्ते से आये, जिससे ईरान और भारत में आने से पहले अनिवार्यतः उनका संपर्क मेसोपोटामिया और अक्काद से हुआ, और इसकी तो कल्पना ही नहीं की जा सकती कि उनके व उनके पड़ोसियों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान न हुए होंगे।

मेसोपोटामिया के बीचो-बीच मित्तन्नियों के राज्य जैसा शक्तिशाली राज्य हरगिज स्थापित न हो पाता, अगर आर्यों के पास अपने विरोधियों के बराबर के या उनसे बढ़िया शस्त्रास्त्र न होते। आर्यों के बारे में केवल भारतीय प्रमाणों के आधार पर बोलना, और मध्य पूर्व में उपलब्ध प्रमाणों की उपेक्षा करना हाथी को टटोलने वाले अंधों जैसा बरताव करना है—उनमें से हर एक सत्य का एक अंश ही पकड़े हुए था, इसलिए उसका गलत अर्थ लगा रहा था।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

श्रीनारायण चतुर्वेदी

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिंदादिल कवि

लुच्चेशजी अवस्था में मुझसे पांच-छह साल बड़े थे। अभी प्राय: तीन वर्ष पूर्व उनका स्वर्गवास हुआ है। उनसे मेरा परिचय १९३७ में हुआ। वे प्रथम चुनाव में बस्ती जिले से उत्तर प्रदेश की विधानसभा के सदस्य होकर लखनऊ आकर रहने लगे।

उनका पूर्ण नाम था—पं. रामचरित्र पांडे। अच्छे जमींदार थे। साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति थे। उनके पास पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं का अच्छा संग्रह था। वे तीन उपनामों से कविता करते थे—'पावन', 'गंवार' और 'लुच्चेश'। गंभीर कविताएं 'पावन' नाम से, लोकभाषा में 'गंवार' की छाप से, और शेष—जिनका पूरा विवरण देना कठिन है—'लुच्चेश' के उपनाम से। वे समदर्शी थे—श्लील-अश्लील का भेद नहीं करते थे। कोई विषय ऐसा नहीं था, जिसे वे काव्य का आधार न समझते हों। उन्होंने ढेला, ईंट, कोना आदि विषयों पर भी कविताएं (एक दो छंद नहीं—अष्टक या पचीसी) लिखीं।

लुच्चेशजी बड़े जिंदादिल आदमी थे। जमींदारी उन्मूलन के बाद उनकी आर्थिक दशा बहुत बिगड़ गयी थी, क्योंकि उन्होंने कुछ दूरदर्शी जमींदारों की तरह अन्य संपत्ति नहीं बनायी थी। परिवार भी बड़ा था। नेतागीरी और चुनाव का खर्च बर्दाश्त न कर सकने के कारण वे बाद में राजनीति से विरक्त हो गये थे। वार्द्धक्य में उन्हें अपनी बची हुई खेती आदि की रक्षा और पौत्रियों के विवाहों के लिए दर-दर भटकना पड़ता था। पर उनके चित्त पर और हास्य-बोध पर इन संकटों और कठिनाइयों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।

वे प्राय: तीसरे-चौथे महीने लखनऊ आकर मुझसे मिला करते थे। घंटों काव्य-चर्चा और विनोद में ही जाते। मृत्यु से साल-दो साल पूर्व उनका आना-जाना कम हो गया। उनके जिले के किसी आदमी से मैंने उन्हें न आने का उलाहना भेजा और उनके स्वास्थ्य का समाचार पूछा। मेरा संदेश मिलने पर उन्होंने (उस समय उनकी अवस्था प्राय: ८४ वर्ष की थी) मुझे एक कार्ड पर यह छंद लिखकर भेजा :

जैसो रह्यौ कछु पूरब काल, हुलास है वैसो ही ह्रास नहीं है।
पंथ दराज न, काज अकाज न, बाधक भूख-पियास नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible] नहीं है।
छांड़ि जरा-जुवती पै कहूं अब जाइबे को अवकाश नहीं है॥

स्नेहभाजन—लुच्चेश।

चौरासी वर्ष में जरा-युवती से आशनाई! विवाह तो (कम से कम भारत में) इस उम्र में हो नहीं सकता, अवैध संबंध ही हो सकता है। उनके सारे बाल पक गये थे। शृंगार-रस के छंद 'पावन' नाम से लिखते थे। मैंने यह सोरठा एक कार्ड पर लिख भेजा:

विमल धवल तुव केश, देखि कह्यो 'पावन भए'।
अब सार्थक लुच्चेश, जरा-जार जब ते बने॥

इसके बाद वे अपने कई पत्रों में हस्ताक्षर की जगह 'आपका वही जरा-जार' लिखते रहे। मृत्यु से कुछ सप्ताह पूर्व भी यही लिखकर पत्र भेजा था। यह उनकी आमरण जिंदादिली का नमूना है।

एक कवि-संमेलन में आये। मैं उसका अध्यक्ष था। बड़ी गंभीर मुद्रा बनाकर मंच पर बैठे। स्वतंत्रता आने ही वाली थी। बोले—'मैं बड़ी परेशानी में हूं, मेरे आने में विलंब हो गया। मेरी प्रिया के भागने की तैयारी की खबर ने मुझे परेशान कर दिया था।' वयोवृद्ध और गंभीर लगने वाले विधायक की यह बात सुनकर सभा में सन्नाटा छा गया। कुछ देर चुप रहकर बोले—'उसी परेशानी का वर्णन मैं आपको एक छंद में सुनाता हूं।' यह कहकर छंद सुनाया:

आयी किती दूर ते, निशंक ह्वै समाई अंक, भाई, माई-बाप की न कानि उर आनी है।
लगन लगाई हौं हू नेह की निकाई हेरि, तेरे ही संयोग में महान मोद मानी है।
ए री परतंत्रते! हमारी राजरानी हाय! कौने अपराधैं आज रूठी है रिसानी है?
भागी जात कायके सुहागिनी! हंसेंगे सबै, काहे को लुचेस कौ उतारे देति पानी है?

इसे उन्होंने कुछ ऐसे ढंग से पढ़ा कि सारे श्रोतावृंद गद्गद हो गये।

['लोकराज' से संक्षेप में उद्धृत]

★

प्रसिद्ध विद्वान विलियम वेब को एक कालेज में भाषण देने के लिए बुलाया गया। भाषण का विषय था—'शिक्षा-प्रणाली में मानवता का स्थान'। उनके पूर्व बोलने वाले सज्जन ने इस बात पर जोर दिया था कि विद्यार्थियों को व्यावहारिक शिक्षा देनी चाहिए और कहा था—'उदाहरणार्थ, मैं चाहता हूं कि मेरा बेटा यह सीखे कि गाय को कैसे दुहा जाता है।' विलियम वेब ने अपने भाषण में वक्ता की उपर्युक्त बात की तारीफ करते हुए कहा—'बहुत अच्छा खयाल है यह, मैं भी अपने बेटे को यह सिखाना चाहता हूं। लेकिन साथ ही चाहता हूं कि वह ऐसी बातें भी सीखे, जिसे बछड़ा नहीं सीख सकता।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टिप कितनी दूं?

~ इफ्राइम किशोन

इस्रायली हास्य

चित्र : राम वाईरकर

इन पंक्तियों का लेखक दुनिया की अधिकांश गुत्थियां सुलझा चुका है—और तो और अटके हुए ज़िप को छुड़ाने की गुत्थी भी। मगर एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण समस्या को सुलझाने में विफल ही रहा है। वह यह कि टिप कितनी देनी चाहिये साहब, कितनी?

आज की मुद्रास्फीति आदि से इसका कोई संबंध नहीं है। जी नहीं, यह पूरी तरह मनोवैज्ञानिक प्रश्न है। जब भी दुकान से सामान घर पहुंचाने वाले डेलिवरी बॉय से या होटल में छाते और ओवरकोट की हिफाजत करने वाली डायन-सी औरत से मेरा पाला पड़ता है, मुझ पर हल्की-सी बेहोशी छा जाती है और मेरी हथेलियों पर पसीना छलक आता है। मैं अपने आपको यह कहकर हिम्मत बंधाने की कोशिश करता हूं कि भई, यह मुसीबत केवल तुम्हारी ही नहीं है, सभी का इस समस्या से पाला पड़ता है और यह समस्या उतनी ही पुरानी है जितने पुराने बाबा आदम थे। जब आदम साहब की चर्चा चल पड़ी है तो कह ही दूं—मैं शर्त लगा सकता हूं कि अदन के बगीचे के उन तमाम पेड़ों में से सही पेड़ दिखाने की कुछ तो टिप सांप ने आदम और हौवा से अवश्य ही वसूल की होगी।

'यह समस्या सबके सामने आती है।'

असल में, टिप के बारे में मुझे सब कुछ पता है। फिर भी जब वेटर आकर तंदूरी चिकन खा रहे मुझे टोककर पूछता है कि 'साहब, आप अमरीकी तो नहीं? बड़े मूंजी होते हैं अमरीकी लोग!' तो मुझे कंपकंपी हो आती है। ऐसा सूक्ष्म संदेश मिलने पर मेरा मन मचल उठता है कि मैं अपना बटुआ मेज पर दे पटकूं और उस मरदूद से कहूं कि ले लो, इसमें से जितना मुनासिब समझो! एक बार पेरिस के एक छोटे रेस्तरां में मैंने यही किया ..... और फिर अपने होटल तक वापस पैदल ही लौटा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'दरवाजा खोलने के लिए हाथ बढ़ाते ही दरबान का लपकते हुए आगे आना।'

कई बार मुझे लगता है कि इसका कोई समाधान संभव नहीं है। टिप का यह मामला दो शत्रु-पक्षों के बीच बिना तैयारी का आकस्मिक युद्ध है, जिसमें एक पक्ष सदा हारता है—एक पक्ष यानी मैं। मैं कभी भी नहीं समझ पाता कि टिप कितनी देनी चाहिये साहब, कितनी?

और सबसे बुरी बात यह है कि वारदात हो गुजरने के बाद में मैं हर बार ठीक-ठीक तय कर पाता हूं कि कितनी टिप देनी चाहिये थी। मेरा मतलब है कि जब टैक्सी-ड्राइवर मेरे सूटकेसों को एक-एक करके घसीटता हुआ होटल के काउन्टर तक ला देता है, तब मैं जान जाता हूं कि मैंने ज्यादा टिप दी। ज्यादा मोटी टिप दे बैठने के दूसरे लक्षण हैं इस कान से उस कान तक चिरी बत्तीसी निपोरती हुई मुस्कान; दरबान का अपनी टोपी एक इंच से ज्यादा ऊंची उठाना और दरवाजा खोलने के इरादे से हाथ बढ़ाने मात्र से उसका लपकते हुए आगे आना।

इस नियम के अपवाद हैं ब्रिटिश दरबान क्यों कि मोटी से मोटी टिप को भी बिल्कुल अविचल भाव से अंगीकार करते हैं। दूसरी ओर हैं तुर्की के हमाल, जिन्हें आप खुश कर ही नहीं सकते; आप चाहे कितनी भी मोटी टिप दें, मगर उनकी हथेली फैली ही रहेगी—'ठीक। यह तो टिप हुई, अब बख्शीश?'

सो टिपशास्त्र का भूगोलशास्त्र से बड़ा गहरा नाता है। अक्षांश और देशांतर के साथ यह बढ़ती-घटती है। मोटे तौर पर टिप धूप के साथ चढ़ती है, गर्मी के साथ फैलती है। भूमध्य सागर के आस-पास तो वह आसमान में पहुंच जाती है।

वेनिस में ग्रैंड कैनाल के पास घाट पर एक फटेहाल आदमी जाने कितनी सदियों से खड़ा रहता है और गोंडोला पर सवार हो रहे पर्यटकों को बिना मांगी सलाह देता रहता है—'संभल के चलियेगा, संभल के।' यदि कोई इस पर उसे २०० लीरा से ज्यादा टिप दे तो वह इटालियन में कहता है 'ग्राज़िया!' ५०० लीरा तक दे तो अंग्रेजी में 'थैंक्यू!' ५० लीरा से कम दे तो चुपचाप थूक देता है।

'यह तो टिप हुई, मगर बख्शीश?'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुश्किल यह है कि टिप की दर का दारो-मदार बहुत सारे जटिल तत्त्वों पर है। उदाहरण के लिए, जिन देशों में आयकर-दरें ऊंची हों वहां वह ऊंची होती है; क्योंकि टिप तो शुद्ध आय है। साम्यवादी देशों में भी वह खूब ऊंची होती है; क्योंकि वहां टिप को कानून-विरुद्ध अपमानपूर्ण पूंजीवादी प्रथा समझा जाता है। और आप जानते ही हैं, कानून तोड़ना कई बार बहुत महंगा साबित हो सकता है।

और भी बहुत जगह लोग इसे बुरी नजर से देखते हैं, विशेषतः समाजशास्त्री, मजदूर संघों के नेता और श्रम मंत्रालय के अफसर, जो कि इसे श्रमजीवी जनता के आत्मसंमान को ठेस पहुंचाने वाला मानते हैं। मगर खुद 'जनता' ज्यादा लचीली है और वह टिप को उतना अपमानजनक नहीं मानती, जितना कि छोटी टिप को। इस सारे मामले पर उसका नजरिया यह है कि अगर आप होटल से जाते समय टेबल पर चुपचाप टिप छोड़ जायें कि बैरा आकर उठा ले, तो सारी चीज शिष्ट और गौरवपूर्ण है। इसमें खराबी सिर्फ यह है कि बाज दफा यह रकम अगले ग्राहक की जेब में पहुंच जाती है।

ये तमाम सुधारक और नैतिकतावादी लोग जिस महत्त्वपूर्ण मुद्दे को सरासर नजर-अंदाज कर बैठते हैं, वह यह है कि टिप सामाजिक समानता स्थापित करने का बहुत उत्तम साधन है। कल्पना तो कीजिये कि आपका बैरा सवेरे हजामत के लिए नुक्कड़ वाले नाई के यहां जाता है और तनिक-सी

इफ्राइम किशोन

लल्लोचप्पो और हार्दिक 'नमस्कार!' के बदले मोटी-सी टिप दे आता है। फिर दुपहर होती है और आपका नाई दुकान बंद करके खाना खाने सामने के रेस्तरां में पहुंचता है और जरा-सी लल्लोचप्पो और हार्दिक 'नमस्कार!' के बदले में बैरे को वही मोटी-सी टिप लौटा आता है। अगर यह सामाजिक समता नहीं है, तो फिर आप ही समझाइये कि सामाजिक समता है क्या चीज?

परंतु यह सब गंभीर चिंतन तब धरा रह जाता है, जब इस सवाल से पाला पड़ता है कि टिप कितनी दी जाये साहब, कितनी?

चाहे कुछ भी कहें असल बात यह है टिप के जरिये हम जो चीज खरीदते हैं, वह या तो महज दूसरे आदमी की मुस्कान है, या उसकी गाली से बचाव। मतलब यह हुआ कि टिप की रकम आपके अपने चरित्र का प्रतिफल होती है। चरित्र आपका जितना ही ढुलमुल होगा, क्षण-भर की शांति के लिए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सर, सर्विस चार्जेज़ बिल में शामिल हैं।'

आप उतनी ही मोटी घूस देने को राजी हो जायेंगे। दिक्कत सिर्फ यह है कि काफी-हाउस के द्वार पर आपका ओवरकोट और छाता आपको वापस संभलाने वाली बुढ़िया की नजरों में आपकी इज्जत की कीमत कितनी है, यह फैसला आपको बिना कंप्यूटर की मदद के और क्षण-भर में करना पड़ता है। इससे भी बढ़कर, आपको सिर्फ अपनी इज्जत का ही नहीं, हर ऐरे-गैरे दरबान या बैरे की ऊटपटांग बोलने की क्षमता का भी मूल्यांकन करना पड़ता है, जो चंद चुनिंदा फब्तियों द्वारा आपकी उस सुहावनी शाम का कत्ल कर डाल सकता है।

इस मामले में महज मानवीय सूझबूझ काफी नहीं है। मसलन, स्विट्जरलैंड की सरकार वर्षों से टिप-प्रथा को समाप्त करने की कोशिश कर रही है। किसी नन्हे स्विस रेस्तरां में परिचारिका को टिप देने की हिमाकत तो कीजिये, वह त्योरियां चढ़ाकर कहेगी—'सर, सर्विस चार्जेज़ बिल में शामिल हैं।' इस पर भी यदि आप अड़ ही जायें, तो आपका गिलास काउंटर पर तब तक आगे-पीछे फेंका जाता रहेगा, जब तक आप दोनों में से एक हार न मान ले।

इसी तरह टैक्सी वाले को कितनी टिप देनी है, यह भी वहां सरकार ने तय कर दिया है। स्विस आयकर-अधिकारी टैक्सी वाले की घोषित आय में आंख मूंदकर ... प्रतिशत की वृद्धि कर देते हैं—इसकी ... फिक्र किये बिना कि इस्रायली टूरिस्ट ... टैक्सियों का उपयोग करते हैं! सो ... आप अपनी मंजिल पर पहुंचते हैं, ज्यूरिख का टैक्सी वाला घोषणा करता है—'... १० फ्रैंक किराया और १।। फ्रैंक टिप।'

कोई भोले बाबा पूछ सकते हैं कि ... '११।। फ्रैंक किराया' क्यों न कहा जाये? जो इस सवाल का उत्तर दे सके, वह मानव-स्वभाव के रहस्य को सुलझा सकता है। मैं तो बस इतना जानता हूं कि स्विस टैक्सी वाले अन्य किसी देश के टैक्सी वालों से ज्यादा सुखी नहीं नजर आते। सरकार द्वारा निर्धारित टिप-दर ने उनके पेशेवराना आत्मसंमान की भले रक्षा की हो, मगर 'सस्पेन्स' का वह बेशकीमती क्षण उनसे छीन लिया है, जिसकी बदौलत टिप-प्रथा सारी दुनिया में इस कदर लोकप्रिय है।

इस व्याख्यातीत स्विस अनुभव से हमें सदा के लिए यह सीख मिलती है कि टिप मानवीय परिदृश्य का वैसा ही अविभाज्य अंग है, जैसी कि ट्रैफिक की बत्तियां—उनसे जूझना बेकार है। सो अब सवाल सिर्फ यही है कि टिप कितनी दी जाये साहब, कितनी?

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोना लिसा का दीवाना

अखिल

लियोन मेकूसा पेरिस | का एक संपन्न व्यापारी था। वह बटन बनाने के एक कारखाने का मालिक था, जिसमें १०० आदमी काम करते थे। उसका दांपत्य-जीवन बहुत सुखी था। उसकी पत्नी एंजेला एक प्रसिद्ध चित्रकार थी। एक दिन एंजेला पति को लूव्र संग्रहालय दिखाने ले गयी। संग्रहालय में घूमते-घामते जब मेकूसा मोना लिसा के सामने पहुंचा, तो ठगा-सा रह गया। देर तक वह उसे घूरता रहा, फिर उसी का हो गया। एंजेला बहुत मुश्किल से उसे घर ले आ पायी।

पचास वर्ष का मेकूसा मोना लिसा पर ऐसा मोहित हो गया था कि अब तो वह प्रतिदिन संग्रहालय जाता और मोना लिसा की मधुर मुस्कान को अपनी आंखों से पीता रहता। अंततः स्थिति यहां तक आ पहुंची कि उसे मोना लिसा से क्षण-भर का वियोग भी कष्ट देने लगा। उसने अपने कारखाने को बेचने की घोषणा कर दी। फिर वह संग्रहालय के निदेशक के पास जाकर बोला कि मैं मोना लिसा के समीप पहरे पर रहना चाहता हूं।

संग्रहालय के अधिकारियों को पहले यह शंका हुई कि कहीं यह आदमी पागल तो नहीं हो गया है और लियोनार्दो द विंची की इस महान कलाकृति को हानि पहुंचाये! किंतु जब उन्हें भरोसा हो गया कि मेकूसा भला आदमी है, तब उन्होंने उसे चपरासी की वर्दी दे दी। मेकूसा दौड़कर घर गया और उसने अपनी पत्नी को यह खुशखबरी सुनायी। इससे उस बेचारी को इतना आघात लगा कि वह बेहोश हो गयी और

मोना लिसा : रहस्य-भरी मुस्कान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे अस्पताल ले जाना पड़ा।

मेकूसा का कहना है—'अब मैं जितना खुश हूं, उतना पहले कभी न था। जब मैंने मोना लिसा को पहली बार देखा, तो मुझे ऐसा लगा कि उसकी आंखों और उसके हाथों में सारा ब्रह्मांड समाया हुआ है। उसकी मुस्कान में तो विश्व के समूचे साहित्य से भी बढ़कर सौंदर्य, लालित्य और आकर्षण भरा है। उसकी आंखों का जादू मेरे मस्तिष्क पर पहले ही दिन चढ़ गया था और मैं कारखाने में कुछ भी काम ठीक से नहीं कर पाता था।'

मेकूसा ने जब अपना कारखाना बंद करने का निश्चय किया, तो उसकी पत्नी तथा सभी रिश्तेदारों व मित्रों ने उसे पागल समझा था। एंजेला कहती है—'शुरू में मेकूसा की इस हरकत को मैं बेहूदगी समझती थी। मगर आखिरकार प्रेम बेहूदगी ही तो है। एक सफल व्यापारी को चपरासी की पोशाक में देखकर पहले तो मैं घबरा गयी थी। मगर शायद मेकूसा को मैं अब अधिक समझ पायी हूं। मैं उसे तलाक नहीं दे सकती, मुझे उससे प्यार है।'

मेकूसा का आचरण मीरां के पद 'म्हाने चाकर राखो जी गिरधारी लला म्हाने चाकर राखोजी। चाकर रहसूं बाग लगासूं, नित उठ दरसन पासूं।' की याद दिलाता है। मेकूसा मोना लिसा का अरदली बन गया है। वह उसकी सेवा-चाकरी करता है और 'नित' उसका 'दरसन' करके कृतार्थता की अनुभूति से भर उठता है। समझदार लोग इसे पागलपन कहते हैं। म-
मेकूसा कहता है—'मोना लिसा के संमो-
में फंसना पागलपन नहीं है।'

मोना लिसा का जादू केवल व्यक्तियों पर ही नहीं चलता; उसने संसार के आधुनिकतम राष्ट्रों को भी अपने पीछे दीवाना बनाया है। १९७३ में जापान के तत्कालीन प्रधान-मंत्री काकुई तनाका फ्रांस गये थे। वहां उन्होंने फ्रांसीसी सरकार से प्रार्थना की कि महासुंदरी मोना लिसा को जापान की यात्रा पर भेजा जाये। मोना लिसा उससे पहले १९६३ में सं. रा. अमरीका की यात्रा कर आयी थी। फ्रांसीसी सरकार ने जापान का प्रणय-निवेदन स्वीकार कर लिया और अप्रैल १९७४ के तीसरे सप्ताह में मोना लिसा टोक्यो के राष्ट्रीय संग्रहालय में जा पहुंची पूरे सुरक्षा-प्रबंध के साथ।

पचास दिन की इस राजकीय यात्रा के लिए मोना लिसा एक ऐसे सुरक्षित कक्ष में जापान पधारी, जिसे गोली भी नहीं बेध सकती थी। उसके आगमन से पहले ही जापान में 'मोना-संमोहन' फैल गया था। बैंकों ने अपने कैलेंडरों पर भी मोना लिसा के चित्र छापे। समाचारपत्रों ने उसके स्वागत में विशेषांक प्रकाशित किये। मोना लिसा पोस्टर छापे गये और बेचने के लिए जापान की श्रेष्ठ सुंदरियों को चुना गया। एक दुकानदार ने विज्ञापन किया—'मोना लिसा हमारे माल पर मुस्करा रही है।'

एक जापानी लड़की ने मोना लि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरीखा चेहरा प्राप्त करने के लिए प्लास्टिक सर्जरी करायी। फ्यूजी जीरॉक्स कंपनी ने कंप्यूटरों द्वारा मोना लिसा के चेहरे और स्नायुओं की संरचनाओं का अध्ययन कराया तथा उसके आधार पर मोना लिसा की आवाज के रेकार्ड तैयार करने पर डेढ़ लाख रुपया खर्च किया। सबसे अधिक मजेदार बात यह है कि मोना लिसा को देखकर १५ लाख दर्शकों में से कई लाख ने कहा कि मोना लिसा का जन्म फ्लोरेंस में नहीं, टोक्यो में हुआ होगा।

कुछ विरोध भी हुआ। एक लड़की मोना लिसा पर तारकोल पोतने गयी और पकड़ी गयी। जापान के सबसे बड़े श्रम-संघटन ने पोस्टर पर कंकालनुमा मोना लिसा और उसके नीचे यह इबारत छापी कि मोना लिसा मुद्रास्फीति का विरोध कर रही है।

मोना लिसा को विश्व की सबसे अधिक कीमती कलाकृति माना जाता है। जब उसे १४ दिसंबर १९६२ से १२ मार्च १९६३ तक वाशिंगटन और न्यूयार्क के दौरे पर भेजा जा रहा था, तब लूव्र संग्रहालय (पेरिस) के अधिकारियों ने निश्चय किया कि उसका बीमा कराया जाये। बीमा-कंपनियों से बातचीत शुरू हुई और एक कंपनी ने ३ करोड़ ५७ लाख पौंड का बीमा करना स्वीकार किया, मगर किस्त इतनी बड़ी मांगी कि मोना लिसा की सुरक्षा-व्यवस्था का सारा खर्च उससे कहीं कम था। अंततः संग्रहालय ने बीमे की योजना ही रद कर दी। अपनी जापान-यात्रा के समय भी मोना लिसा ने बीमा नहीं कराया।

★

धमकी

एक नवाब का घोड़ा किसी ने चुरा लिया। अगले दिन समाचारपत्रों में उसके नाम से एलान छपा–'अगर घोड़ा मुझे वापस नहीं किया गया, तो मजबूर होकर वही कदम उठाना पड़ेगा, जो ऐसी हालत में मेरे पिताजी ने उठाया था।'

चोर को इस बात का ज्ञान नहीं था कि नवाब क्या कदम उठायेगा; पर इस भय से कि उसे कोई बहुत ही सख्त सजा न भुगतनी पड़े, वह डर गया और सबकी नजर बचाकर घोड़ा वापस कर गया।

नवाब ने दोस्तों के सामने अपने भाग्य को सराहा कि उसे वह नहीं करना पड़ा, जो उसके पिताजी को करना पड़ा था।

'पिताजी ने क्या किया था ?' दोस्तों ने पूछा।

'जब उनका घोड़ा चुराया गया, उस समय वे एक होटल में ठहरे हुए थे। सो उन्होंने उसकी काठी अपने कंधे पर रखी और पैदल ही घर की ओर चल पड़े। अगर चोर घोड़ा न लौटाता, तो मुझे भी वही करना पड़ता।'

–एंटन चेखोव

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कद का अफसर

हिंदी कहानी

* डा. देवव्रत जोशी *

ललचायी आंखों से उसने गद्दीदार कुर्सी को देखा। कुछ देर ठिठका। फिर याचना-भरे शब्दों में कलेक्टर से बोला—'अब तो बेंत की कुर्सी पर नहीं बैठा जाता साहब ...... इजाजत हो तो पांच हजार के कंटिन्जेंसी फंड में से एक सोफा, अच्छी कुर्सियां खरीद लूं।' कलेक्टर ने जो उस दिन अपेक्षाकृत अच्छे मूड में था, मुस्कराते हुए कहा—'मिस्टर जोशी, अब आप भी छोटे-मोटे अफसर हैं, मामूली बातों के लिए न पूछा करें। जो जरूरी हो, खरीद लें।' जोशी की बांछें खिल गयीं। वह खरीदेगा, जो चाहेगा। लेकिन फिलहाल कलेक्टर के कमरे में पड़ी गद्दीदार कुर्सी उसके मन में बुरी तरह धंसी हुई है। हिम्मत करके उसने उस कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा—'जब तक नयी खरीद न ली जाये, तब तक यह कुर्सी ......' कलेक्टर उसकी कमजोरी भांप गये—'हूं.....ले जाइये।' कहकर उन्होंने फाइलों में निगाहें गड़ा दीं।

जोशी को इंद्रासन मिलने-जैसी प्रसन्नता हुई—जीवन में पहली बार। अब तक वह मामूली मास्टर था। प्रमोशन लेकर बाहर गया था और अब अपने ही कस्बे में लौटा था संस्था का प्रधान बनकर। अच्छी कुर्सी शुरू से उसकी कमजोरी रही है। किसी भी तरह अपने कस्बे के हायर सेकेंडरी स्कूल में प्रिंसिपल बनकर आना, रौब ज[माकर] कुछ साल रहना—बाद की बाद में दे[खी] जायेगी। उसने बाहर खड़े अपने चपरासी को बुलाया और इशारे से कुर्सी उठाने को कहा। कलेक्टर को नमस्कार करके वह तुरंत चेंबर से बाहर आ गया। एक संतोष, एक तृप्ति, एक अद्‌भुत आनंद से उसका चेहरा खिल उठा। आफिस में यह कुर्सी कितनी जमेगी और उस पर बैठा वह.....

ट्रेन में वह अपने मातहत टीचरों को कसने, पठन-पाठन में चुस्ती लाने, अपने व्यक्तित्व से पूरे कस्बे को आतंकित करने के दिवास्वप्नों में खोया रहा। चार्ज उसने ले लिया था। अभाव था तो कुर्सी का। कुर्सी और अच्छी कुर्सी के बिना कैसी अफसरी! अब वह मास्टर नहीं है। था ... बरस पहले। उसके बाद तो लेक्चरर बनकर बाहर गया, बड़ी संस्थाओं में बड़े लोगों के बीच अदना बनकर रहा। मजा नहीं आ[या] था वहां। सब बड़े और वह नया-नया प्रमोटी लेक्चरर। इज्जत कस्बे में होती है। वह जरूर अपने स्थान पर फिर जायेगा, सबसे बड़ा बनकर रहेगा। संस्था की काया पलट कर देगा। बढ़िया रिजल्ट देगा, अधिकारी उस पर खुश रहेंगे और ...

सितंबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सात बरस में वह एक और प्रमोशन लेकर फिर बाहर चला जायेगा।

चार्ज लेने के बाद उसने नये सिरे से आफिस सजाया, कुछ रौबीले आदेश प्रसारित किये। लेकिन बेंत की कुर्सी जिस पर अब तक हेडमास्टर बैठते आये, उसे जमती नहीं थी। अच्छी कुर्सी के बिना अफसरी का मजा नहीं आता। उस दिन कलेक्टर के चेंबर में रखी गद्दीदार कुर्सी देखकर उसे कई रात नींद नहीं आयी थी। वही कुर्सी वह एक दिन लायेगा। कलेक्टर का मुंहलगा तो वह शुरू से ही था। अन्य शिक्षा-संस्थाओं के प्रधान होते हैं जिला-शिक्षाधिकारी। किंतु उसकी संस्था आदिम जाति विभाग के अंतर्गत आती है; अतः उसका इमीजिएट बॉस कलेक्टर है। कलेक्टर को नाराज और खुश करने के तरीके वह पिछले दस वर्षों से जानता है।

अपने को 'मनवाना', अपनी ऊंची इमेज बनाये रखना, छोटों के बीच बड़ा बनकर रहना, दूसरों को टार्चर करते रहना उसकी पुरानी आदत है। इस आदत से कभी-कभी आत्मग्लानि भी हो आती है। लेकिन थोड़ी देर बाद हिटलरी तानाशाही फिर सवार हो जाती है और वह ऊटपटांग बकना, ऊलजलूल आदेश देना शुरू कर देता है।

मातहत अध्यापक ऊपर से उससे आतंकित हैं, लेकिन भीतर एक असंतोष निरंतर उनके मन में उभरता रहता है। टी-रूम में वे अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं, ठहाके लगाकर, जुमले कस-कसकर। वह अपने आफिस में अकेला बैठा सब सुनता और कुढ़ता रहता है। हिटलों में भी उसके बारे में कई तरह की चर्चाएं होती हैं। कोई उसे भावुक और कोई सनकी कहता है। ज्यादातर लोग उसे हीनता-ग्रंथि से पीड़ित बताते हैं। जिन अध्यापकों के साथ उसने काम किया है, उन्हीं का बॉस बनकर आज बैठा है और हुक्म चलाता है। दूसरों को दुःख देने में उसे शुरू से ही मजा आता रहा है,

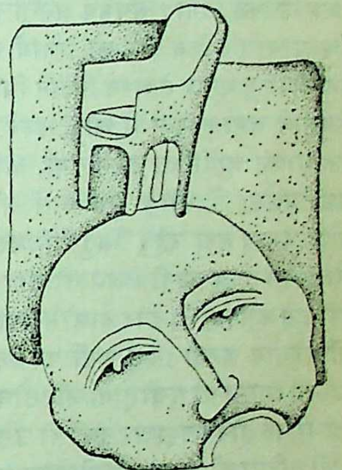

अब यह मजा दुगुना हो गया है।

धीरे-धीरे उसके प्रति युवा अध्यापकों में असंतोष बढ़ने लगा, जो कभी-कभी आक्रोश के रूप में आफिस में भी प्रकट होने लगा। परिस्थितियों से वह समझौता करना जानता है; लेकिन एक सीमा तक ही वह झुक सकता है। उसका विश्वास कुचलने में है। बाङला देश में जब मुक्ति-संग्राम चल रहा था, तो उसे कस्बे के लोग यह्या कातो

चित्र : टी. ए. राणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नहीं, भुट्टो का प्रतीक जरूर बनाते थे। अब उसे लगने लगा कि यहां आकर उसने फिर भयंकर भूल की है; किंतु भूल हो चुकी थी और जल्दी यहां से ट्रांसफर करवाना उसकी प्रतिष्ठा के प्रतिकूल था। वह अपनी जकड़ और मजबूत करना चाहता था—बढ़िया सूट पहनकर स्कूल जाना, बेवजह छात्रों को फटकारना, लेट आने वाले शिक्षकों से एक्स-प्लेनेशन मांगना, उसका रुटीन बन गया।

अब उसका दिमाग लगभग असंतुलित हो चला था। लेकिन रौब तो जमाये ही रखना है। वह बाहर से अपने विद्वान मित्रों को बुलाने लगा। स्कूल में और कस्बे में उनके भाषण आयोजित करने लगा, ताकि उसकी प्रशंसा में भी वे कुछ बोलें और उसका प्रभाव बना रहे। किंतु अधिकतर निराशा ही हाथ आती। अब तो नींद में में भी उसे कलेक्टर के चेंबर वाली गद्दीदार कुर्सी परेशान करती। इस कुर्सी पर बैठने से उसकी आत्मा भी सुखी होगी और टीचर्स भी प्रभावित होंगे। गद्दीदार कुर्सी ही उसके पद की गरिमा को अक्षुण्ण रखने में सहायक हो सकती है। उसका रौब और आतंक उस कुर्सी के इर्द-गिर्द ही सुरक्षित है। वह कुर्सी उसे कब मिलेगी? कैसे मिलेगी? गद्दीदार कुर्सी के लिए वह छटपटाने लगा।

आज वह आखिर पहुंच ही गया और कुर्सी का स्वामी भी बन गया। उसका व्यक्तित्व उसी कुर्सी पर निर्भर है। यह कुर्सी उसे ऊंचा उठायेगी। उसकी सनक, उसके आतंक, उसके गलत-सही आदेशों के क्रियान्वय में इस कुर्सी का योगदान कितना लाभदायी सिद्ध होगा! उसे लगा कि वह कुर्सी पर बैठा है, कुर्सी पर ही उसे नींद आ गयी है। बिच्छुओं के डंकों का अनुभव उसे नहीं होता अब। कुछ और समय तक वह निर्द्वंद्व भाव से राज्य करेगा। शानदार कुर्सी का प्रभाव ही कुछ और होता है। कुर्सी उस पर सवार हो गयी।

एक झटका लगा, ट्रेन रुकी। स्टेशन आ गया था। चपरासी ने उतरकर उसका सामान लिया। कुर्सी सुरक्षित थी और चप-रासी उसे सिर पर लादे स्कूल की तरफ आ रहा था। एक चरम उपलब्धि, एक परम संतोष उसके मन में था। वह चाहता था कि पहले स्कूल में ही जाये और उस कुर्सी पर बैठ जाये। भले थोड़ी देर ही सही। कुर्सी उसी की है और वह उस पर बैठेगा ही।

स्टेशन से घर आने पर उसने आदत के अनुसार पहले डाक देखी। कुछ सरकारी पत्र थे। एक लिफाफा फाड़कर कुछ अति-रिक्त उत्साह से पत्र पढ़ने लगा। भोपाल की डाक थी। शायद एक प्रमोशन और मिल गया हो समय से पहले, अफसरों की मेहरबानी से।......पत्र पढ़कर उसका माथा घूमने लगा। वह जमीन पर गिर पड़ा। कुछ देर के लिए वह संज्ञाशून्य हो गया। उसे लगा कि एक साथ कई कुर्सियां उसके सिर पर गिर पड़ी हैं। नये प्रिंसिपल आ रहे थे, उसका स्थानांतर हो गया था—अप्रत्याशित, अयाचित स्थानांतर!......

—रावटी, रतलाम, म.प्र.

★

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्यभट और कोपर्निकस

जून १९७६ के **नवनीत** में प्रो. हरिदत्त वेदालंकार के लेख 'आर्यभट' को पढ़कर पूना के **डा. श्रीनिवास भागवत** ने इसी विषय पर मराठी पत्रिका 'सह्याद्री' में प्रकाशित अपना लेख हमारे पास भिजवाया था, जिसके कतिपय महत्त्वपूर्ण अंश यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

भूभ्रमण-सिद्धांत का प्रथम प्रतिपादक कोपर्निकस नहीं, अपितु आर्यभट था। यह 'आर्यभटीयम्' के गोलपाद के नौवें श्लोक से सिद्ध होता है। श्लोक यों है:

अनुलोमगतिर्नौस्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
अचलानि भानि तद्वत् समपश्चिमगानि लंकायाम्॥

अर्थात्, जिस तरह सरल दिशा में गमन कर रही नौका में बैठे हुए मनुष्य को किनारे पर की स्थिर वस्तुएं विरुद्ध दिशा में गति करती हुई दिखती हैं, उसी प्रकार विषुववृत्त (लंका) पर स्थित मनुष्य को सूर्य-नक्षत्र आदि आकाशस्थ पिंड पश्चिम की ओर जाते हुए दिखाई देते हैं।

परंतु जिस तरह कोपर्निकस के पश्चात् भी टाइको ब्राह प्रभृति वैज्ञानिकों ने उसके सिद्धांत को नहीं माना, उसी तरह हमारे यहां भी आर्यभट के सिद्धांत के कई विरोधी थे। उन्हीं में से किसी ने ऊपर उद्धृत श्लोक के नीचे उससे उलटे अर्थ का एक श्लोक प्रक्षिप्त कर दिया, जो इस प्रकार है:

उदयास्तमयनिमित्तं नित्यं प्रवहेण वायुना क्षिप्तः।
लंकासमपश्चिमगो भपञ्जरसाग्रहो भ्रमति॥

अर्थात्, सूर्य-नक्षत्रादि आकाशस्थ गोलों के उदय एवं अस्त के निमित्त यह नक्षत्र-गोल 'प्रवह' नामक वायु द्वारा विषुववृत्त (लंका) पर सदा पश्चिम दिशा को भ्रमण करता है।

यह श्लोक भूभ्रमण एवं सूर्यकेंद्र के सिद्धांत के किसी विरोधी ने ही यहां घुसेड़ा है, इस विचार की पुष्टि इस बात से होती है कि आर्यभट के परवर्ती वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, लल्ल, श्रीपति इत्यादि विद्वानों को 'आर्यभटाचार्य ने ऐसा प्रतिपादन किया ही नहीं' या 'उनके कहने का अर्थ यह होता ही नहीं' कहना पड़ा।

उदयदिवाकर ने अपने ग्रंथ 'लघुभास्करीयम्' में लिखा है—**भूभ्रमणमप्याचार्येणाऽभ्युपगतं नक्षत्राणां स्थिरता च;** अर्थात् आचार्य (आर्यभट) जानते थे कि पृथ्वी भ्रमण करती है और नक्षत्र स्थिर हैं। उदयदिवाकर के पश्चात् नौवीं सदी ई. में पृथूदक नामक ज्योतिर्वैज्ञानिक ने भी लिखा—**आचार्यार्यभटेनाऽपि भूभ्रमणमुपागतम्।** (आचार्य आर्यभट ने भी भूभ्रमण-सिद्धांत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त किया।) आगे वे लिखते हैं—लोक-**भयाद् भास्करादिभिरन्यथा मत्वेयमार्या व्याख्याताः**, अर्थात् भास्कराचार्य आदि विद्वानों ने लोकभय से (यानी प्रचलित विश्वास से विरुद्ध मत प्रतिपादित करने का साहस न होने से) मूल श्लोक का भिन्न अर्थ लगाया।

अपने ग्रंथ 'गोलाध्याय' में पृथूदक ने जगह-जगह विश्लेषण करके आर्यभट के भूभ्रमण-सिद्धांत की पुष्टि की है। ब्रह्मगुप्त के भूभ्रमण-विरोधी मत का खंडन करके उसने आर्यभट के सिद्धांत की पुष्टि करते हुए लिखा—'**भपञ्जरः स्थिरो भूरेवावृत्यावृत्य प्रतिदैवासिकौ उदयास्तसमयौ सम्पादयति ग्रहनक्षत्राणाम्;**' अर्थात् तारामंडल (भपंजर) स्थिर है और भूभ्रमण के कारण ही ग्रह-नक्षत्र आदि का उदयास्त संपादित होता है।

कोपर्निकस की विशेषता इसमें है कि उसने प्रबल साहस दिखाते हुए तत्कालीन प्रस्थापित मत के विरुद्ध सूर्यकेंद्रक भूभ्रमण-सिद्धांत विद्वानों के सामने पेश किया। इसी प्रकार का साहस पृथूदक ने नौवीं शताब्दी में दिखाया था। उसका ग्रंथ 'गोलाध्याय' कोपर्निकस तक पहुंचा था या नहीं, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। परंतु आर्यभट का ग्रंथ (आर्यभटीयम्) लैटिन में अनूदित हुआ था, इसका प्रमाण डा. सुब्रह्मण्यम ने अपनी पुस्तक 'इंडियाज़ कान्ट्रिब्यूशन टु वर्ल्ड थॉट एंड कल्चर' में प्रस्तुत किया है। आर्यभटीयम् का यह लैटिन अनुवाद पाडोवा, बोलोन्या या फेराने के विश्वविद्यालयों में शायद कोपर्निकस के पढ़ने में आया हो।

यह भी संभव है कि यूरोप में सूर्यकेंद्रक भूभ्रमण कल्पना का प्रसार १५ वीं शताब्दी से पहले भी हुआ हो और वह विद्वानों की अंतर्दृष्टि के सामने शतकों तक एक संदेह के रूप में घुमड़ती रही हो। कोई विशिष्ट बौद्धिक कल्पना या कल्पित प्रमेय (हाइपॉथिसिस) एक ही समय कई एक विद्वानों के मस्तिष्क में, अनेक देशों में उमड़ सकता है। कुछ विद्वानों का कहना है कि कृष्ण यजुर्वेद में भी भूभ्रमण संबंधी उल्लेख मिलता है।

★

एक बार मैंने कुछ महीने फुरसत का समय 'पिग्मेलियन' नामक नाटक लिखने में लगाया था, जिसके बदले में कापी राइट कानून की कृपा की बदौलत मुझे उन अभिनेताओं और रंगमंच के अन्य कर्मचारियों के मुकाबले में कहीं ज्यादा पैसा मिला, जिन्होंने सारा श्रम किया। फिर जब उस नाटक की फिल्म बनी, तो मुझे २९,००० पौंड और मिले। लेकिन उन्हीं दिनों मुझे दो वर्षों में इन्कम टैक्स के तौर पर ५०,००० पौंड चुकाने पड़े। नतीजा यह हुआ कि अब मैं कापी राइट कानून की कृपा की ही बदौलत अपने दूसरे नाटक फिल्मीकरण के लिए देने से इन्कार कर रहा हूं, ताकि मेरी आमदनी एक सीमा से नीचे रहे और मैं उस पर गुजारा कर सकूं।

—जार्ज बर्नार्ड शा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाठशाला-भवन का निर्माण-कार्य चल रहा था। पाठशाला-समिति के कुछ सदस्य वहीं पर खड़े थे। अचानक एक हट्टा-कट्टा भिखारी आया और उनके सामने हाथ फैलाकर भीख मांगने लगा। एक सदस्य ने पूछा–'कमाने लायक होकर भी भीख मांगते हो?' भिखारी ने चिढ़कर कहा–'पर काम मिलता ही कहां है? कोई दे तब ना!' दूसरे सदस्य ने तुरंत कहा–'ठीक है, मैं तुम्हें काम देता हूं। यहां उधर-उधर ईंटों के जो टुकड़े पड़े हैं, उन्हें इकट्ठा करो। ढाई रुपये मिलेंगे।'

भिखारी ने दस-पंद्रह मिनट तक तो काम किया, फिर चुपचाप खिसकने लगा।

उसे रोककर खिसकने का कारण पूछा गया, तो खीजकर बोला–'बाहर जाकर घूमूंगा, तो एक-डेढ़ किलो चावल मिल जायेगा और भात-रोटी अलग से। यहां तो समय गंवाना है।' और चल दिया।

जो लोग स्वर्ग में रखी 'पर्सनल फाइल' में अपना रेकार्ड सुधारने के लिए किसी भी पात्र-कुपात्र को दान दे देते हैं, क्या भिक्षा-वृत्ति को फैला ने में उनका भी हाथ नहीं है?

–भागवत प्रसाद शर्मा, भिलाई, म. प्र.

ooo

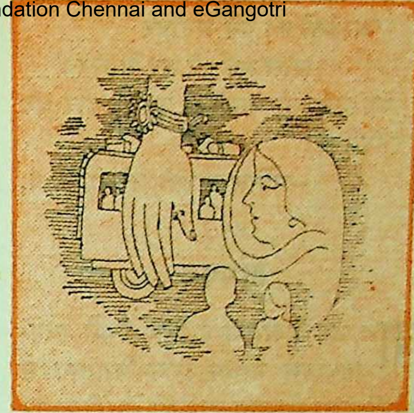

स्मृति के अंकुर

उर के द्वार

राखी का दिन था। सुबह अपनी एक बहन से राखी बंधवाकर मैं बस से दूसरी बहन के पास रुद्रपुर जा रहा था। बस में बहुत ही भीड़ थी। रास्ते में और भी सवारियां चढ़ीं। उन्हीं में एक मुस्लिम महिला भी थी। उसके साथ तीन बच्चे थे, जिनमें से एक को वह गोद में उठाये थी। शेष दो–ढाई साल का लड़का और चार साल की लड़की–मेरे पास लोगों की टांगों के बीच खड़े थे। लड़के को उठाकर मैंने अपनी गोद में बैठा लिया और लड़की को सीट के आगे खड़ा होने का स्थान दे दिया।

बालक ने मेरी कलाई में राखी देखी और कुतूहल से उसे छेड़ने लगा। मन में आया कि राखी खोलकर उसे दे दूं। तभी अचानक उसकी माता की नजर राखी पर पड़ गयी। उसका चेहरा एकदम बदल गया, उसने बेटे को नीचे उतर आने को कहा।

इसके कुछ ही घंटे पूर्व मैंने अपना लिखा 'राखी का संदेश' बहन को दिया था, जिसको

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक पंक्ति यों थी:

'आदर्शों का पर्व मनोहर
खोल सके जो उर के द्वार।'

पर यहां तो राखी ने उर के द्वार बंद कर दिये थे!

—अनिल भारती, बरेली, उ. प्र.

०००

थप्पड़

बात उन दिनों की है, जब मैं श्री सत्यनारायण माधव मिश्र विद्यालय में नौवीं कक्षा में पढ़ता था। श्री केशरी कुमार तिवारी हमारे हिंदी-अध्यापक थे। एक दिन पाठ पढ़ाने के पश्चात् उन्होंने पूरी कक्षा से कहा कि इस पाठ का अर्थ जो भी बतायेगा, उसे थप्पड़ इनाम-स्वरूप दूंगा।

भला कौन पाठ का अर्थ बताये और थप्पड़ भी खाये! किसी ने भी नहीं बताया। तब उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा—'महोदय, आप बतायेंगे!' मैंने यह सोचकर अर्थ बता दिया कि मारेंगे तो क्या, मजाक ही करेंगे।

अर्थ सुनकर उन्होंने मुझे पास बुलाया—'आइये हुजूर .....' पूरी कक्षा मेरी नादानी पर हंसने लगी। मैं जब पास गया, तो उन्होंने कहा—'शंकर, ये लो थप्पड़ इनाम, और पूरी कक्षा के गाल पर मारो।'

अब तो सब लड़कों की बोलती बंद हो गयी। गर्व में फूलकर जैसे ही मैंने एक लड़के को थप्पड़ मारना चाहा, तिवारीजी ने मेरा हाथ रोक लिया और बोले—'बेवकूफ, मैंने लड़कों को मारने के लिए तो नहीं कहा ... मैंने तो कक्षा को मारने के लिए कहा है।' और ठहाका मारकर हंस पड़े।

—शिवशंकर सरोज, हवड़ा-१

०००

स्वदेश में ही विदेशी

एक सिंधी मित्र के साथ मैं अजमेर से उदयपुर जा रहा था। डिब्बे में एक सिंधी परिवार नीचे की दो बर्थों पर अधिकार जमाये हुए था। जगह इतनी थी कि हम आसानी से बैठ सकते थे। अतः वहीं पर बैठ गये। उस परिवार की एक महिला ने आपत्ति की और कहा कि कहीं और बैठ जाओ। किंतु वहीं बैठे रहने का हमने निश्चय किया। बर्थ आरक्षित भी नहीं थी। मेरे मित्र ने विनम्रता के साथ शुद्ध हिंदी में बता भी दिया कि हम वहां से नहीं हटेंगे। इस पर काफी कहा-सुनी हो गयी। इसी बीच मेरे मित्र के मुंह से सिंधी में एक वाक्य निकल गया। सिंधी भाषा सुनते ही उस महिला ने हम पर स्नेह की वर्षा कर दी। उसने हमें न केवल बैठने का स्थान दिया वरन अच्छा-खासा नाश्ता भी कराया। फिर उलाहने के स्वर में मेरे मित्र से बोली—'पोइ तो विदेशी बोलीय में छो गाल्हायो?' (तो फिर तुम विदेशी भाषा में क्यों बोले?)

यह सुनकर मेरे मित्र को धक्का-सा लगा। उसने प्रतिवाद किया—'हिंदी अपने ही देश में विदेशी कब से हो गयी? हम भारतवासी हैं और हिंदी हमारी भाषा है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे दोनों एक ही समुदाय के थे। एक के अनुसार हिंदी विदेशी भाषा थी और दूसरा हिंदी के लिए अपने ही समुदाय के दूसरे व्यक्ति से लड़ पड़ा था!

–देवप्रकाश कौशिक, गुलाबपुरा, राजस्थान

०००

मान-अपमान

बारह-तेरह साल की उम्र में मैं ऊंची-नीची घाटियों से घिरे गांव आमा (हरदा, म. प्र.) में अपने पिताजी के साथ ठहरा हुआ था। पहाड़ी लोगों को पास से देखना चाहता था, इसलिए एक शाम को मैं उनके घरों की ओर गया। फटे-पुराने कपड़े पहने एक वृद्धा दिखाई दी। इस आशा से मैंने

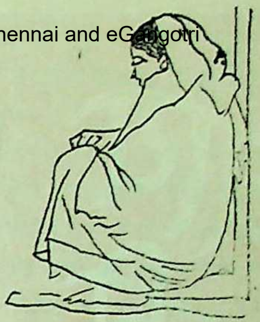

चित्र : प्रमोद कुमार यादव

उसे 'नमस्ते मां' कहा कि वह इस संमान से खुश होगी। लेकिन उसका उत्तर सुनकर मैं हैरान रह गया। वह बोली–'क्या मैं तेरे बाप की औरत हूं, जो तू मुझे मां कहता है!'

–कमलेश अत्रोलिया, सिवनी, म. प्र.

★

एक घर : अनेक रूप

घर अपने आपमें एक छोटा-सा संसार होता है। यदि उसमें दस पुस्तकें हों, तो वह अंशत: पुस्तकालय होता है; यदि तीन चित्र हों, तो छोटी-सी चित्रशाला होता है; यदि छह औजार हों, तो कारखाना होता है; यदि प्राचीन वस्तुओं से भरी हुई अलमारी हो, तो संग्रहालय होता है। जब भी कभी उसमें पियानो या वायलिन की धुनें गूंजती हैं, वह कुछ समय के लिए थियेटर बन जाता है। जब खाना खाने से पहले प्रार्थना की जाती है, या ईश्वर के संबंध में बच्चे के पूछे हुए सवाल का जवाब दिया जाता है, वह किसी हद तक गिरजा बन जाता है। दलीलबाजी या बहस की गरमी में वह अदालत, और बीमारी और तीमारदारी में अस्पताल बन जाता है। जब आपको उसके किसी कोने में पड़े ट्रंक में पुराने, भूले-बिसरे पत्र, चित्र और उपहार मिलते हैं, तो वह पुरातत्त्व-संग्रहालय का हिस्सा बन जाता है।

बच्चा घर को खुद अपने लिए और अपने माता-पिता के लिए शिक्षा का माध्यम बनाता है; दो बच्चे घर को चटशाला बनाते हैं; तीन या अधिक बच्चे विद्यालय।

जब तक घर एक प्रतिष्ठित संस्था बना रहेगा, जब तक उसकी विशिष्टता और वैयक्तिकता कायम रहेगी, तब तक संसार सुख-चैन और शांति का आनंद प्राप्त करता रहेगा।

–नार्मन कोमिन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय की दिग्विजय

पानी के बाद दुनिया में शायद सबसे ज्यादा पिया जाने वाला पेय चाय है। वह केवल पेय ही नहीं है, अनेक राष्ट्रों में जीवन और संस्कृति का अनिवार्य अंग बन गया है तथा उसने उनके शिष्टाचार और कला पर गहरा प्रभाव डाला है। उसका आर्थिक महत्त्व तो सर्वविदित है ही।

वनस्पतियों के वैज्ञानिक वर्गीकरण एवं नामकरण का क्रम खोजने वाले स्वीडिश विज्ञानी कार्ल लिन्नेयस ने चाय के पौधे का नाम 'कैमेलिया जैपोनिका' रखा था, क्योंकि उसके वनस्पति-उद्यान में चाय-पौधे का जो नमूना था, वह जापान से लाया गया था। लेकिन यह पौधा मूलतः भारत का है। अनुश्रुति के अनुसार चीन इससे पांच हजार साल से परिचित है, जबकि इसे जापान पहुंचे सिर्फ हजार-एक साल हुए हैं।

हान-वंश (२०६ ई. पू.–२२० ई.) के जमाने में चीन सरकार ने एक चिकित्सा ग्रंथ की प्रतिलिपि तैयार करवायी। यह ग्रंथ २७३७ ई. पू. में लिखा गया और इसमें वर्णित सम्राट् शेन-नुंग द्वारा प्रणीत माना जाता था। इसमें 'चा' (चाय) को रिसौंत, फोड़े और मूत्राशय की बीमारियों की दवा बताया गया है। शेन-नंग ने यह बात विशेष रूप से लिखी थी कि चाय 'सोने की इच्छा को कम करती है' और 'हृदय को उल्लसित एवं प्रफुल्लित बनाती है'।

* रिचार्ड एम. क्लीन के एक लेख का सार *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर अधिक प्रा[illegible] कि भारत से लौटते हुए चीनी यात्री चाय-पौधे के बीज पहले-पहल चीन लाये होंगे। चौथी सदी ई. तक चीन में चाय की खेती, चाय-पत्तियों के परिष्करण और चाय बनाने की विधि के प्रामाणिक विवरण रखे जाने लगे थे। आरंभ में वहां पर चाय की बट्टियों का रिवाज था। चाय की कोमल पत्तियां चावल के साथ मिलाकर पकाकर बट्टी के रूप में सुखा ली जाती थीं। फिर जब चाय पीनी हो, बट्टी को तोड़कर कूट लिया जाता और पानी में डालकर प्याज की कतरनों, अदरक के टुकड़ों और नारंगी के छिलके के साथ उबाला जाता। यह पेय नशे और नींद को दूर भगाने में समर्थ होता था। किसानों को [illegible] से संतोष करना पड़ता था। उन्हें वे नमक के साथ पानी में उबालकर पीते थे।

तांग-वंश (६१८-९०७ ई.) के जमाने से ही चीन चाय का निर्यात करने लगा था। तब तक उस पर कर भी लगने लगा था और चाय पर दस खंडों का एक क्लासिकी ग्रंथ 'चा चिंग' लिखा जा चुका था। इस पुस्तक में चाय के गुण तो बखाने ही गये हैं, साथ ही उसे उगाने, उसका परिष्कार करने, सुरक्षित रखने और उसका पेय तैयार करने की विधियां भी बतायी गयी हैं। उत्परिवर्तन (म्यूटेशन) से उत्पन्न होने वाली चाय की नयी किस्मों का चयन बड़ी सावधानी से किया जाता था। चाय-पत्तियों के परि-

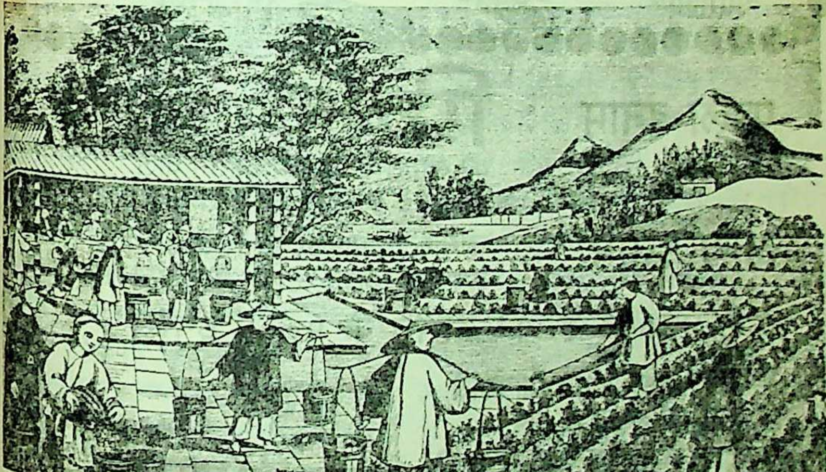

चीन में चाय की खेती—एक पुराने चित्र पर से।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'श्री' की सुमेल बिन्दी प्रतियोगिता

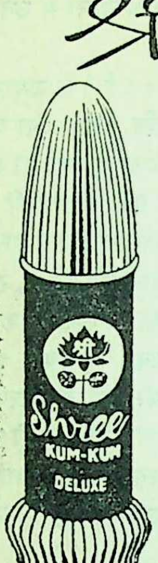

सरल... आनन्दप्रद!

आकर्षक इनाम!

पहला इनाम : फ्रिज या ५००० रु. की लागत का ईनाम जीतने वाले की पसंद का कोई अन्य सामान

अन्य इनाम : डोमेस्टिक ग्राइंडर या सिलाई मशीन, स्टील कप-बोर्ड, कुकर, टाइम पीस, पेन-सेट वगैरह।

कुल ४५००० रु. की कीमत के १००१ इनाम

प्रवेशपत्र तथा अधिक जानकारी के लिए श्री कुंकुम के अपने नजदीक के विक्रेता से सम्पर्क कीजिए।

श्री कॉस्मेटिक्स
कुर्ला, बम्बई ४०००७०.

Join **Shree's MATCH-THE-BINDI CONTEST**, today!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करण की प्रक्रिया को पूर्ण विकास पर पहुंचाया गया।

चाय की बट्टी बनाने या पत्तियों से काढ़ा तैयार करने की अपरिष्कृत विधियां छोड़कर सुंग-वंश (९६०-१२७९ ई.) के जमाने में तेजी से सुखायी गयी और बारीक पीसी हुई पत्तियों को गरम पानी में फेंटकर हरे रंग की गाढ़ी चाय तैयार की जाने लगी।

इसी दौर में बौद्धधर्म के 'चान' नामक चीनी संप्रदाय ने अपने कर्मकांड में चाय का समावेश किया। ('चान' शब्द संस्कृत के 'ध्यान' शब्द का चीनी रूप माना जाता है।) चान-भिक्खु व्रतों में रात्रि-जागरण के लिए तथा ध्यान के अनुकूल शांत मन:स्थिति को पाने के लिए चाय का पान करने लगे। चूंकि चीनी किसान बौद्ध थे (उच्च वर्ग ताओ धर्म का अनुयायी था), इससे जनता में भी चाय का प्रचार बढ़ा। चाय की यह लोकप्रियता मंगोलों के आक्रमण (१२७९ ई.) के बाद भी बनी रही, हालांकि कुबला खां के दरबार में चाय की कोई इज्जत नहीं थी। मार्को पोलो ने अपने यात्रा-वृत्तांत में चाय का कोई जिक्र नहीं किया है; उसने शायद उसे देखा-चखा न था। फलत: और तीन सौ साल तक यूरोप चाय के परिचय-लाभ से वंचित ही रहा।

सदियों तक जापान एक तरह से चीन का रक्षित राज्य था; ज्ञान और संस्कृति वह चीन से ग्रहण किया करता था। जापानी सम्राट् ने ७२९ ई. में चीन के सम्राट् से चाय प्राप्त की और एक सौ जापानी बौद्ध भिक्खुओं को अपने साथ चाय की चुस्कियां लेने के लिए निमंत्रित किया। मगर चूंकि चाय तैयार करने की विधि ठीक से समझायी नहीं गयी थी, चाय बहुत गाढ़ी और कड़वी बनी और जापानियों को उसमें तनिक भी आनंद नहीं आया।

तेरहवीं सदी के मध्य में चान-संप्रदाय जापान पहुंचा और वहां 'ज़ेन' संप्रदाय कहलाया। उसे जापान लाने का श्रेय एक महान भिक्खु को है, जिसने सुफ़ुकूजी मंदिर की स्थापना की। ज़ेन संप्रदाय के साथ ही वह भिक्खु चाय और चाय-पान के पात्र भी लाया था। बाद में क्योटो में ज़ेन बौद्ध मंदिर की स्थापना करने वाले एक और जापानी भिक्खु ने चाय-पान की रस्म को जापानी रूप में ढाला और उसका नाम 'चा-नो-यू (गरम पानी की चाय की रस्म) रखा।

ज़ेन बौद्धों ने चाय के साथ अपना ही पुराण भी गढ़ लिया। इन मिथकों में सबसे प्रसिद्ध यह है कि एक बौद्ध संत ने बोध पाने के लिए सात वर्षों का जागरण-व्रत शुरू किया, मगर पांचवें वर्ष उसे नींद आ गयी। तब उसने प्रायश्चित्त के लिए अपनी आंखों की पुतलियां निकालकर जमीन पर फेंक दीं। आंखें जहां गिरीं, वहां चाय का पौधा उग आया। इस प्रकार चाय देवताओं की देन मानी गयी।

चा-नो-यू अर्थात् रस्मी चाय-पान का जापानी संस्कृति पर गहरा और आश्चर्यजनक रूप से व्यापक प्रभाव पड़ा। जापान में बारहवीं सदी से उन्नीसवीं सदी के मध्य तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

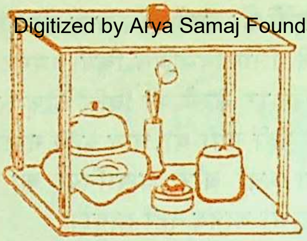

चा-नो-यू के बरतन

सैनिक शासकों (शोगुन) और उनके योद्धा सेवक सामुराइयों का बोलबाला था। ये सादगीपूर्ण कठोर जीवन को पसंद करते थे और इनमें सदा युद्ध चलते रहते थे। जो लोग युद्धों में मारे जाने से बच जाते थे, वे ढलती वय में युद्ध और राजनीति से विरत होकर शांत जीवन बिताते थे। इन लोगों को ज़ेन संप्रदाय ने विशेषतः आकृष्ट किया। सैनिकों और भिक्खुओं के इस समागम ने चा-नो-यू और जापानी उद्यानों के स्वरूप पर गहरा प्रभाव डाला। आठवें अशिकागा शोगुन ने क्योटो में रजत-मंडप (सिल्वर पैवेलियन) बनवाया। मंडप के अहाते में उसके ज़ेन पुरोहित ने एक चाय-कुटिया बनायी। उसके पास बगीचा भी लगाया गया।

पहले चा-नो-यू के कक्ष मुख्य मकान के अंदर ही बनाये जाते थे। मगर बाद में उसके लिए अलग कुटिया बनायी जाने लगी। कुटिया का स्वरूप चीनी चित्रों में अंकित झोंपड़ों जैसा होता। फूस की छप्पर वाली इस अनगढ़ कुटिया का दरवाजा बहुत नीचा होता था और घुटनों के बल चलते हुए इसमें प्रवेश किया जाता था। कठोर और तपस्या का वातावरण बनाने के लिए कुटिया के आस-पास वैसे बगीचे बनाये जाने लगे, जैसे कि सुंग-वंश (९६०-१२७९) के जमाने के चीनी तूलिका-चित्रों में देखने को मिलते हैं। इनमें सपाट ज़मीन पर कुछ चट्टानें, जिन पर काई लगी हो, बड़ी सूझबूझ से चिनकर रखी जाती हैं। वृक्षों का इस बगीचे में विशेष महत्त्व नहीं होता। कुटिया की छोटी खिड़कियों में से झांकने पर यह सपाट बगीचा अधिक लंबा-चौड़ा प्रतीत होता है।

यह चाय-कुटिया और उसकी सजावट जापानी जीवन-दर्शन के प्रतीक बन गये-सादगी, निराडंबरता और विलास-शून्यता। इसकी भीतरी दीवारें खुरदरी रखी जातीं और उन पर प्रायः सलेटी रंग की मिट्टी की पुताई की जाती, खिड़कियां बांस की बनायी जातीं, अंदर एक नियत संख्या से ज़्यादा चटाइयां न बिछायी जातीं, शहतीरों पर कुल्हाड़ी के निशान बने रहने दिये जाते। सब चीजें धीरे-धीरे नियम में बदल गयीं।

यों जापानी घरों में तोकोनोमा (आले) पहले भी रहा करते थे। मगर चाय-कुटिया में उन्होंने धार्मिक महत्त्व प्राप्त कर लिया। उनमें बुद्ध की प्रतिमा या चित्र रखा जाता या मंत्रपट (स्क्रोल) टांगे जाते, या सामने की चौकी पर कोई सुंदर प्रस्तर-खंड रखा जाता। ये सब चीजें ऐसी होतीं कि जिन पर ध्यान जमाया जा सके, ताकि मन शांत और समाहित हो।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाय-कुटिया के आले में जो पुष्पसज्जा की जाती थी, उसी से कालांतर में जापान की विशिष्ट पुष्पसज्जा-पद्धति 'इकेबाना' विकसित हुई। 'इकेबाना' का चाय-रस्म से बहुत गहरा संबंध रहा है। सच तो यह है कि सोलहवीं सदी के बाद से सभी सुप्रसिद्ध पुष्प-सज्जक चाय-रस्म के आचार्य रहे हैं।

चाय-रस्म या चा-नो-यू केवल चाय-पान नहीं है। यों भी वह चाय झागदार, हरी और कड़वी होती है। असल में चाय-रस्म ज़ेन भावना अर्थात् शांति, सहज शिष्टता और सौंदर्य के समन्वय का प्रतीक है।

जापान के संभ्रांत परिवार चाय-कुटिया पर बड़ी-बड़ी रकमें खर्च कर डालते हैं। चा-नो-यू के पुराने बरतन भारी कीमत देकर खरीदे जाते हैं और पैतृक संपत्ति के रूप में उत्तराधिकार में दिये जाते हैं। यों हालांकि अब भी चा-नो-यू के साथ कुछ-कुछ धार्मिक भावना जुड़ी हुई है, मगर वह परिष्कृत नागरिक संस्कृति का भी अंग है। इसलिए संभ्रांत परिवारों की नवयुवतियां चाय-रस्म के संचालन की बाकायदा तालीम लेती हैं।

अंततः एक बात और। चा-नो-यू में पांच व्यक्ति एक साथ-चाय-पान करते हैं। इसीलिए जापान में चाय के प्याले ही नहीं, साधारण गिलास आदि भी पांच-पांच के सेट में बेचे जाते हैं, न कि आधे दर्जन या दर्जन के सेट में।

यूरोपवासियों को चाय का पता चला पूर्व से लौटे हुए यात्रियों-व्यापारियों से। जब पुर्तगालियों ने दक्षिण चीन सागर के मकाओ द्वीप पर दखल कर लिया, उन्होंने चायपत्तियों से भरी कई पेटियां स्वदेश भेजीं। मगर वे यूरोप में चाय का व्यापार जमा नहीं पाये।

डच ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यापारियों ने चाय पहले-पहल पुर्तगालियों से ही प्राप्त की थी। उन्हें यह पेय बहुत अच्छा लगा। इंडोनेशिया के बड़े टापुओं में पांव जमाने के बाद उन्होंने चीन के साथ चाय-व्यापार शुरू किया। यह व्यापार कैंटन के बंदरगाह से होता था, जो कि विदेशियों के लिए खुला हुआ एकमात्र चीनी बंदरगाह था। कालांतर में डचों ने पुर्तगालियों को कैंटन से खदेड़ दिया और बढ़ते चाय-व्यापार पर एकाधिकार जमा लिया। कैंटन प्रदेश की भाषा में चाय को 'ते' कहा जाता था। 'टी' शब्द उसी का यूरोपीय रूप है।

जापान में रस्मी चाय-पान

× × ×

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कड़ा बन्दोबस्त ?

जी हाँ! जब आप पेचिश, अतिसार, गैस्ट्रो जैसे धूर्त दुश्मनों से अपनी रक्षा करना चाहते हैं तो उनके मुकाबले के लिए अपनी तैयारियाँ भी जोरदार होनी चाहिए!

पेचिश, अतिसार आदि बीमारियाँ विभिन्न कारणों से होती हैं। इसलिए, अगर आप इन बीमारियों का प्रभावशाली ढंग से सामना करना चाहते हैं तो इसके लिए असरदार और व्यापक इलाज ज़रूरी हैं।

साण्डू ब्रदर्स के बर्बेन्टेरोन में मिश्रित असरदार दवाएँ इसी सिद्धान्त पर काम करती हैं। वे पेचिश की तुरन्त रोकथाम करने के अलावा उस के मूल कारणों को भी तेज़ी के साथ नष्ट करती हैं।

* बालिगों के लिए टिकियाँ : बच्चों के लिए बालचिकित्सा निलम्बन (पेडियाट्रिक सस्पेन्शन)।
* सुविधाजनक सफ़री पैकेटों में भी उपलब्ध हैं।

बर्बेन्टेरोन

पेचिश, अतिसार, संग्रहणी आदि आँतों की बीमारियों के लिए रामबाण।

द. कृ. साण्डू ब्रदर्स चेम्बूर प्रा. लिमिटेड
साण्डूवाडी, वि. ना. पुरव मार्ग, चेम्बूर, बम्बई-४०००७१
आयुर्वेद की सेवा का ७३ वां गौरवशाली वर्ष

DKS/11/76/H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रिटिश सामंत परिवारों के आडंबरपूर्ण चाय-पान पर एक कटाक्ष।

क्याख्ता नामक नगर तत्कालीन रूस-चीन सीमा पर स्थित था और उन दोनों देशों के बीच एकमात्र व्यापार-केंद्र था। चीन की चाय उसी राह रूस जाती थी। रूसियों ने चाय बनाने-पीने का अपना ही ढंग विकसित किया, जिसमें समवार का उपयोग किया जाता था, चाय प्यालों के बजाय गिलासों में परोसी जाती थी और हर गिलास में चम्मच-भर जैम घोला जाता था। कई बार तो शक्कर की टिकिया दांतों के बीच दबाकर गरम चाय उसमें से सोखी जाती थी। आज भी रूस में यही तरीका है चाय पीने का। चाय में नीबू की कतरनें तैराने की प्रथा रूस ने ही चलायी, जिसे शेष यूरोप ने उससे सीखा।

यूरोप ने चाय के आगे चटपट घुटने नहीं टेक दिये। सत्रहवीं सदी के अंतिम और अठारहवीं के आरंभिक वर्षों में भी इंग्लैंड मुख्यतः काफी-प्रेमी ही था। अकेले लंदन में तब पूरे ५०० काफी-घर थे। १६६० में लंदन के एक दुकानदार ने चाय का प्रचार करने का प्रयत्न किया। उसने घोषणा की कि चाय कामवासना की वृद्धि करती है, पेट का दर्द और आंतों का शूल दूर करती है। मगर ५० पौंड प्रति पौंड के भाव पर चाय की पत्ती खरीदने को कोई तैयार नहीं था—सिवा चंद प्रदर्शनप्रिय धनियों के। सैम्युअल पीप्स ने चाय चखकर देखी और उसे वह तनिक भी न रुची। मगर तभी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपने राजा चार्ल्स द्वितीय को चाय भेंट की और राजा को वह पसंद आ गयी। फिर तो १६६७ में जब पीप्स साहब ने दुबारा चाय चखी, उन्हें उसका रुचना स्वाभाविक ही था।

चार्ल्स ने सत्रहवीं सदी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी को चाय-आयात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का एकाधिकार दे दिया। कंपनी कैंटन से बड़े पैमाने पर चाय लाने लगी, जिससे चाय का भाव गिरा। १६८० में ब्रैडफोर्ड की डचेस अपने घर अतिथियों को अपराह्न में काफी के बजाय चाय परोसने लगीं। इससे चाय की इज्जत समाज में एकदम बढ़ गयी और चाय के व्यापार पर सीधा असर पड़ा। सन १६८० में इंग्लैंड ने १०० पौंड से भी कम चाय आयात की थी। सन १७०० तक आयात की मात्रा १० लाख पौंड हो गयी। फिर तो लंदन के काफी-हाउस काफी के साथ चाय भी परोसने लगे।

इन काफी-हाउसों ने ईस्ट इंडिया कंपनी की मार्फत चीन से चीनी मिट्टी के चाय के प्याले भी आयात किये थे, जिनमें हत्थे नहीं होते थे। उनसे चाय पीती आंग्ल ललनाओं की सुकुमार उंगलियां झुलस जाती थीं। उनकी सुविधा के लिए ब्रिटेन की स्पोड और वेजवुड जैसी कंपनियों ने हैंडल वाली प्यालियां बनाना शुरू किया। बाद में जब ड्रेस्टन में चीनी मिट्टी के बरतन बनाने की कला का अपूर्व विकास हुआ, तब तो चाय के सुंदर सेट दहेज में देने का रिवाज चल पड़ा। धनी लोग चांदी और सोने के चाय-सेट बनवाने लगे।

सन १७८० तक तो लंदन के काफी-हाउस कहने को ही काफी-हाउस रह गये। अब उनमें मुख्यत: चाय ही परोसी जाती थी। इंग्लैंड १ करोड़ ४० लाख पौंड चाय आयात करने लगा था। डा. सैम्युअल जान्सन ने अपने को 'पक्का और बेशरम चाय-पियक्कड़' घोषित कर दिया। ईसाई धर्म-सुधारक एवं मेथोडिस्ट संप्रदाय के प्रवर्तक जान वेस्ली ने आरंभ में चाय को शराब जैसी बुराई कहा था। मगर अंत में वे स्वयं चाय के जादू में आ गये और वेजवुड से अपने लिए विशेष चायदानी बनवायी।

ईस्ट इंडिया कंपनी अमरीका के ब्रिटिश उपनिवेशों को चाय बेचकर खासा मुनाफा कमाती थी। जब १७७६ में ब्रिटेन ने उस चाय पर एकाएक कर बढ़ा दिया, तो उपनिवेशियों ने चाय खरीदने से इन्कार कर दिया और बोस्टन के बंदरगाह पर सैकड़ों पेटी चाय विद्रोहियों ने समुद्र के हवाले कर दी। यह घटना अमरीका के इतिहास में 'बोस्टन टी-पार्टी' के नाम से मशहूर है। हां, इस सारे बहिष्कार के बावजूद अमरीकियों को चाय से वंचित नहीं रहना पड़ा था। कनाडा से चोरी-छिपे चाय उपनिवेशों में पहुंच जाती थी।

अंग्रेजों ने चाय को कोई धार्मिक दर्जा तो नहीं दिया है, मगर उसके साथ बहुत-से विधि-निषेध जोड़ लिये हैं। केतली से चाय कैसे ढालना, प्याला कैसे पकड़ना, प्याले में पहले दूध डालना या चाय—सभी के निश्चित नियम हैं। दुपहर के भारी भोजन और रात के ब्यालू के बीच सैंडविच, डबलरोटी और जैम के संग पी जाने वाली 'लो टी' में इन नियमों का सख्ती से पालन किया जाता है। 'हाइ टी' सामान्यत: ढलती सांझ में पी जाती है और समाज के निम्नतर तबकों की चीज समझी जाती है। उसमें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

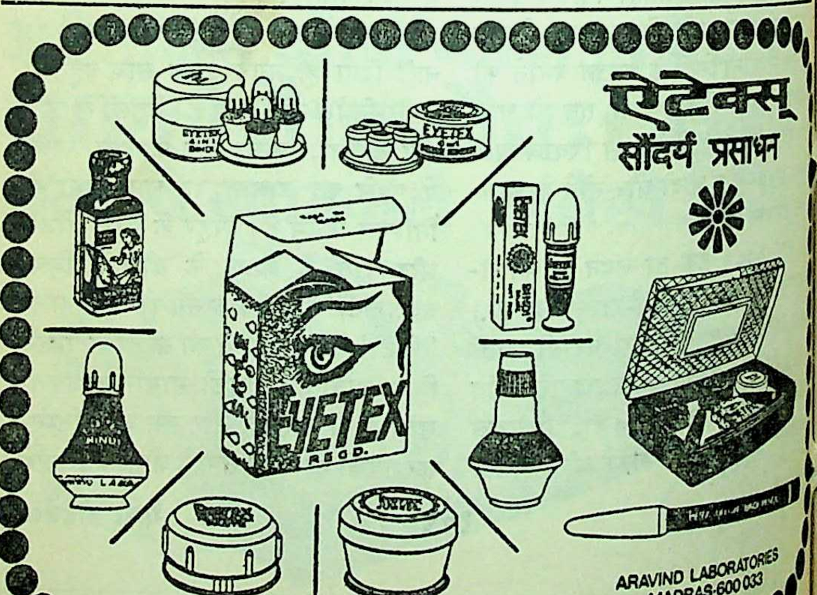

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

चाय के साथ तरह-तरह की चीजें खायी जाती हैं–एक तरह से वह भोजन ही है।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठंडी चाय रिचर्ड ब्लेचिन्डेन नामक अंग्रेज की सूझ थी। १९०४ के सेंट लुई विश्व-मेले में वह श्रीलंका की एक चाय-कंपनी का जनसंपर्क अधिकारी था। गरमी का दिन था। कोई दर्शक उसके मंडप में आकर गरम चाय पीने को तैयार नहीं था। उसने गरम चाय बर्फ के टुकड़ों पर उड़ेलकर नीबू और चीनी के साथ परोसी और चाय पीने का एक नया तरीका ईजाद कर डाला!

चाय की छोटी-छोटी थैलियां प्यालियों में डालकर चाय बनाने की बात न्यूयार्क के थोक चाय-विक्रेता टामस सलीवन की सूझ है। पहले थैलियां रेशम की बनायी जाती थीं; लेकिन अब सेलोफेन की बनायी जाती हैं।

'इन्स्टेंट टी' का आविष्कार १९४० में हुआ। चाय-भक्तों का आक्षेप है कि 'इन्स्टेंट टी' ने चाय-पान के साथ जुड़ी हुई सारी संस्कारिता और सुंदरता को विनष्ट करके उसे महज खान-पान बना डाला है।

★

एक प्रोटेस्टैंट पादरी हर साल एक धार्मिक विद्यालय में जाया करता था और उसके अध्यक्ष के घर ठहरा करता था। अध्यक्ष छोटी उम्र का, मगर सुयोग्य वैज्ञानिक था। रात के भोजन के बाद, अक्सर उनकी बातों का विषय होता–संसार के अंत।

पादरी कहता–'संसार का अंत बहुत दूर नहीं है; क्योंकि प्रकृति के बारे में हर बात का पता लगाया जा चुका है और सभी संभव आविष्कार अस्तित्व में आ चुके हैं।'

अध्यक्ष उसकी इन बातों से सहमत न होता और तनिक झिझकते हुए कहता कि अगले पचीस वर्षों में और बहुत-से आविष्कार होंगे।

'नहीं, इसकी बिलकुल संभावना नहीं है', पादरी उसकी बात काटता–'ऐसे किसी एक आविष्कार का नाम बताइये।'

'एक दिन मनुष्य पक्षियों की तरह उड़ने लगेगा।'

'असंभव!' पादरी बड़ी दृढ़ता से कहता–'केवल देवता ही उड़ सकते हैं।'

उस पादरी का नाम था राइट और वह आर्विल और विल्बर नामक दो बेटों का पिता था, जिन्होंने हवाई जहाज का आविष्कार किया।

★

इंटरव्यू के दौरान प्रेस-रिपोर्टर ने बड़े आदमी से कहा–'आप बहुत अधिक काम करते हैं। मनोविनोद के लिए भी कुछ समय निकाला कीजिये, जैसे मछली का शिकार आदि, ताकि उसका जिक्र आप इंटरव्यू में भी कर सकें।'

बड़े आदमी ने उत्तर दिया–'आप शौक से यह बात अपने अखबार में छाप दें। मैं कल ही अपने सेक्रेटरी को मछली के शिकार पर भेज दूंगा।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौत : मेरी दिलरुबा

* वीरेंद्र कुमार जैन *

चित्र : भाऊ समर्थ

नहीं मोह सकी मुझे
ईरानी सुंदरी के मुखड़े की गुलाबी गोराई :
क्योंकि उसके गाल के तिल की गहरी सियाही
मुजस्सिम होकर आ गयी है मेरे पास :
ऐसी दिलकश, कि नहीं है उसका जवाब
दुनिया के हुस्नो-जमाल के इतिहास में–
सिर्फ एक लैला के अलावा,
जिसके अनंत आलिंगन को पाने के लिए,
क़ैस को उसके साथ
क़ब्र के अंधियारों को पार करना पड़ा था......!
अब तक के जाने-अनजाने
तमाम काले ज़हरों की मोहिनी
मेरी जिंदगी के प्याले में
अगर आबे-हयात बनकर ढल गयी है,
तो मैं क्या करूं ...... !
हाय, जवाब नहीं है इस काली शराब का,
कि जिसका नशा उतरना नहीं जानता :
कि जिसमें खुली है एक ऐसी आईने की खिड़की,
जिसमें नमूदार होती सांवली सूरत का जल्वा
मौत की सल्तनत को चुनौती देता-सा लगता है!
हाय, लग उठा है अचूक,
कि तन-बदन की यह ऊष्मा,
यह प्यार, यह छुवन,
सिर्फ काल की तरंग नहीं
कालातीत के अक्षय अपार घनत्व के
ओंठों का चुंबन है :

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह महज अपनी लगती-सी शक्ल
फानी नहीं, रूहानी है :
अरे, यह तो रूबरू मुक़ाबिल है शायद उसकी सूरत–
जिसकी उंगलियों का लापरवाह खेल है ......!
...... क्या यह सिर्फ एक अकस्मात था
कि प्रेम और सौंदर्य के सबसे बड़े देवता कृष्ण को
आषाढ़ की पहली बदली का
घनश्याम रूप लेना भाया था ?
इसी से तो अपने कौमार्य की
एकाकिनी सावनी सांझों के दरद में,
मुझे उस सांवले रूप की पुकार ने बारंबार विकल किया था ......!
मेरी कुंवारी रातों की वही कजरारी कसक
अगर मुजस्सिम हो उठी है मेरे पहलू में,
तो दुनिया की कौन सचाई,
इस सचाई से ऊपर और बड़ी हो सकती है ?
...... मौत के अंतहीन अंधकारों ने
मेरी तड़पन के जवाब में,
जिस मुखड़े में रूप धारण कर लिया है :
उसे मुझसे छीन ले, या उसका विनाश कर दे,
ऐसी ताकत, हस्ती में और दूसरी कौन-सी हो सकती है ?
जब मौत खुद मेरी दिलरुबा बनकर
आ गयी है मेरे आगोश में,
तो वह अमृत के सिवा और क्या हो सकती है ?

—गोविंद निवास, सरोजिनी रोड,
विले पार्ले (प.) बंबई-५६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुशूल का सूरमा

महेशकुमार कटरपंच

१९६२ के चीनी आक्रमण के समय १८ नवंबर के दिन राजस्थान की वीर-गाथाओं की परंपरा में एक कड़ी और जुड़ गयी। उस दिन चुशूल की ऊंची चौकी पर तैनात राजस्थानी शूरमा मेजर शैतानसिंह रक्त की अंतिम बूंद तक दुश्मन से जूझते हुए जन्मभूमि की रक्षा के लिए वीरगति को प्राप्त हुए।

शैतानसिंह बहादुर बाप के बहादुर बेटे थे। उनका जन्म राजस्थान के जोधपुर जिले की फलौदी तहसील के वानासर गांव में १ सितंबर १९२४ को एक राजपूत परिवार में हुआ था। बहादुरी उन्हें अपने पिता से विरासत में मिली थी। पिता ने प्रथम विश्वयुद्ध में फ्रांस में विलक्षण रण-कौशल तथा पराक्रम दिखाकर 'ब्रिटिश वार मेडल' प्राप्त किया था।

बचपन में अधिक नटखट और चंचल होने के कारण ही इस वीर बालक का नाम 'शैतान' पड़ गया था। निर्भीकता उनकी विशेषता थी। रात के अंधेरे में भी वे अकेले खेतों में घूम-फिर आते थे।

१९४७ में द्वितीय श्रेणी में बी. ए. करने के पश्चात् जब शैतानसिंह फौज में भरती हुए तो अपने कालेज के दोस्तों से बोले—'यार देखना, वक्त आने पर तुम्हारा नाम भी रोशन करूंगा।' शायद अपने ये शब्द उन्हें १८ नवंबर १९६२ को अपने जीवन के अंतिम घड़ियों में भी याद आये हों। जसवंत कालेज का हर विद्यार्थी आज भी शैतानसिंह को अपना 'कालेज-मेट' कहकर गौरवान्वित होता है।

उनका सैनिक जीवन एक केडेट के रूप में प्रारंभ हुआ। अपनी सूझ-बूझ और योग्यता के आधार पर वे १९५५ में स्थायी कमीशन प्राप्त कर लेफ्टिनेंट से कैप्टन बन गये। १९६२ में गोवा के भारत में विलय के समय प्रदर्शित उनकी कर्त्तव्यपरायणता तथा बहादुरी के परिणामस्वरूप उन्हें मेजर बना दिया गया।

चीनी आक्रमण के समय उन्हें लद्दाख की महत्त्वपूर्ण चौकी चुशूल पर तैनात किया गया। कैसी विचित्र स्थिति! राजस्थान की रेत में पले मेजर को १८ हजार फुट की ऊंचाई पर बर्फीली घाटी में अपना जौहर दिखाना था। पर वे उस राजस्थान के वंशज थे, जिसने सदैव दुश्मन को ललकारा है।

कड़ाके की सरदी में भी अपने बहादुर जवानों की छोटी-सी टुकड़ी के साथ मेजर शैतानसिंह चुशूल की चौकी की रक्षा कर रहे थे। अठारह हजार फुट ऊंची चोटी और १८ नवंबर की उषा बेला। सवेरे के लगभग ५ बजे पांच हजार से अधिक चीनी सैनिकों ने चुशूल की चौकी पर हमला बोल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिया। एक ओर दुश्मन के हजारों सैनिक, और दूसरी ओर १३० जवानों के साथ शैतानसिंह। परंतु वे घबराये नहीं, वरन उन्होंने आगे बढ़कर मोर्चा ले लिया और अपने जवानों को 'पोजीशन' दे दी।

बहादुर मेजर का बहादुर नेतृत्व। दुश्मन धराशायी होते गये। परंतु वे हजारों की तादाद में थे; टिड्डी-दल की तरह बढ़ते रहे। मोर्चे पर डटे शैतानसिंह के साथी दुश्मनों को मारते हुए एक-एक करके वीर-गति को प्राप्त होने लगे। परंतु शैतानसिंह का धैर्य नहीं डगमगाया। वे स्वयं फायर करते रहे और एक खाई से दूसरी खाई में कूदकर अपने सैनिकों का हौसला बढ़ाते रहे।

लेकिन मुट्ठी-भर आदमी हजारों से भला कब तक लड़ते! अंत में बच गये मेजर शैतानसिंह और उनके दो साथी। तभी अचानक मेजर के हाथ में गोली लगी और हाथ जख्मी हो गया। फिर भी वे परवाह न करते हुए एक हाथ से ही दुश्मनों का सफाया करते रहे और उन्हें अपने पास न आने दिया। तभी दुश्मन की एक गोली उनके सीने में लगी और वे बुरी तरह जख्मी होकर गिर पड़े। पर पड़े-पड़े उन्होंने अपने सैनिकों से कहा—'मुझे सुरक्षित स्थान पर ले जाने की चिंता न करो। मुझे यहीं पड़ा रहने दो और जाकर अधिकारियों को चुशूल की चौकी की स्थिति की सूचना दो।'

रणक्षेत्र में दुश्मन के हाथ लगे मेजर शैतानसिंह को तीन मास तक लापता माना जाता रहा। परंतु इस मोर्चे में बचे लांस-नायक रामचंद्र सदैव यही कहते रहे—'मेजर जिंदा नहीं हैं। वे मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बलि दे चुके हैं।' सचाई भी यही थी। १३ फरवरी १९६३ को चीनियों ने उनका शव लौटाया। तब उनका दाह-संस्कार वीरोचित सैनिक संमान के साथ किया गया और उन्हें मरणोपरांत 'परमवीर चक्र' से अलंकृत किया गया।

उनका रण-कौशल और शौर्य आज राज-स्थान के लोकगीतों में गुंथ गया है। आज भी कालेज के साथी उन्हें याद करते हैं उन्हीं के शब्दों में—'यार देखना, वक्त आने पर तुम्हारा भी नाम रोशन करूंगा।'

—जी-३९/६, साउथ टी. टी. नगर,
भोपाल, म. प्र.

श्रीमती ड्वाइट मोरो से उनके बेटे ने एक बार पूछा—'दुनिया के लोगों को कितने वर्गों में बांटा जा सकता है?'

मां ने उत्तर दिया—'दो वर्गों में। एक वर्ग उन लोगों का है, जो काम करते हैं; दूसरा वर्ग उस काम का फायदा उठाने वाले लोगों का है। जहां तक हो सके बेटा, तुम पहले वर्ग में शामिल होना; क्योंकि वहां बहुत कम प्रतियोगिता है।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

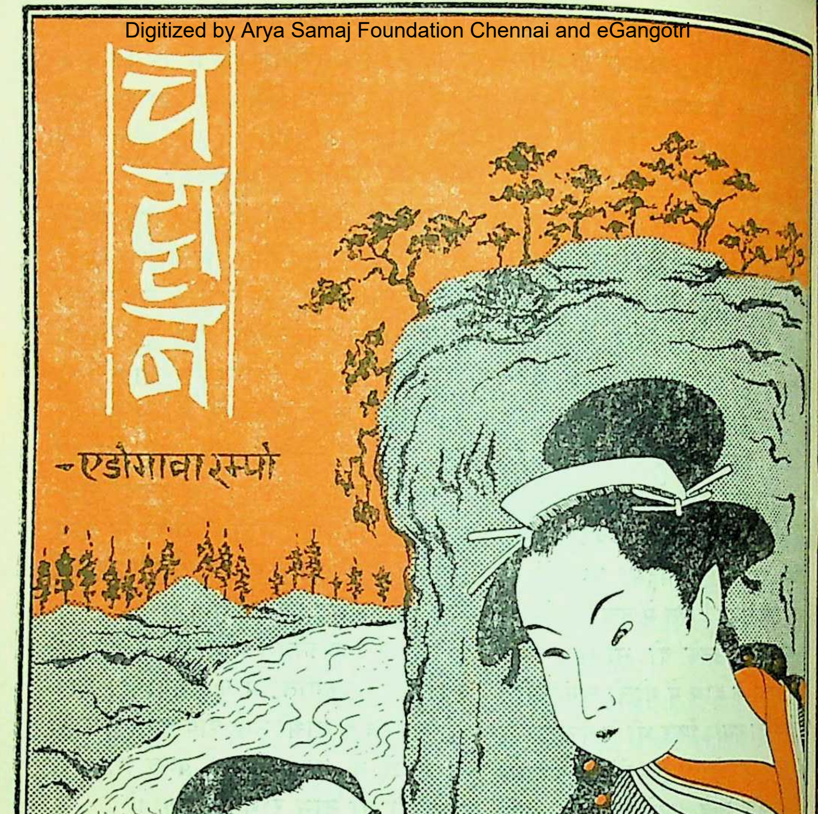

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जापान के रहस्यकथा-सम्राट **एडोगावा रम्पो** का जन्म २१ अक्तूबर १८९६ को एक वकील के घर हुआ था। १९१६ में टोक्यो के वासेदा विश्वविद्यालय से स्नातक होने के बाद उन्होंने कई जगह क्लर्की की, मगर वे अच्छे क्लर्क नहीं बन पाये। बेकारी के दिनों में पश्चिमी रहस्यकथाओं का पारायण किया और एक रहस्यकथा लिखकर एक पत्रिका को भेजी, जो फौरन छप गयी। इस कथा के साथ लेखक के रूप में उन्होंने अपना नाम दिया था—एडोगावा रम्पो, जो कि अमरीकी लेखक एडगर एलन पो के नाम के जापानी उच्चारण पर आधारित है। उनका असली नाम है—हिराई तारो। अब तक उनकी ३० से अधिक पुस्तकें और अनगिनत कहानियां छप चुकी हैं। [चित्र : कमलाक्ष शेणै]

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुवाद : शरद राकेश

वसंत ऋतु। स्वास्थ्यकर गर्म पानी के सोते का......से कोई मील-भर दूर एक खड़ी चट्टान पर दो व्यक्ति एक पत्थर पर बैठे हैं। उनसे बहुत नीचे घाटी में से नदी की कलकल ध्वनि आ रही है। युवक पचीस-छब्बीस के आस-पास का है, युवती उससे जरा बड़ी है। दोनों गर्म पानी के सोते के पास के किसी होटल के रूई-भरे बाहरी किमोनो पहने हुए हैं।

युवती : क्या यह बात अटपटी-सी नहीं कि इस सारे अरसे में हमने कभी उन घटनाओं की चर्चा नहीं की, जो हमारे मन को इस कदर कुरेदती रहती हैं! कभी-कभी मुझे लगता है कि अगर उनकी चर्चा नहीं करूंगी, तो मेरा दम घुट जायेगा। चूंकि आज मुझे काफी फुरसत है, आज उन बीती बातों के बारे में जरा बतिया लें। तुम्हें कोई उज्र तो न होगा, प्रिय?

युवक : कतई नहीं, प्रिये! तुम बोले जाओ, बीच-बीच में मैं अपनी टिप्पणी जोड़ता चलूंगा।

युवती : तो ठीक है, जरा सोच लें......शुरूआत से ही शुरू किया जाये। तो उस रात को मैं बिस्तर में लेटी हुई थी साइतो की बगल में। हमेशा की तरह वह मेरे मुखड़े से अपना मुखड़ा सटाकर रो रहा था, और उसके आंसू-चू चूकर मेरे मुंह में गिर रहे थे.....

युवक : इतने स्पष्ट वर्णन की जरूरत नहीं। पहले पति से तुम्हारी अंतरंगता का ब्योरा मुझे नहीं सुनना है।

युवती : मगर यह तो कहानी का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, क्योंकि पहली बार तभी मुझे उसकी योजनाओं को स्पष्ट झांकी मिली। मगर ठीक है—तुम्हारी खातिर मैं ब्योरा गोल कर जाती हूं......

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो उसके आंसुओं का खारापन चखते हुए एकाएक मैंने अपने आपसे कहा कि मामला कुछ अटपटा है। उस दिन उसका रोना और दिनों से अधिक उद्वेग से भरा था, जैसे कोई गुप्त कारण हो। चौंककर मैं पीछे खिसकी और उसकी आंसूभरी आंखों में झांकने लगी।

युवक : तुम्हारी धमनियों का लहू जम गया होगा—अपने दांपत्य-सुख को एकाएक भय में बदलते देखकर। मुझे याद आता है, तुमने बताया था कि जब उसने तुमसे आंखें मिलायीं तो तुम्हें उनमें दया-सी नजर आयी थी।

युवती : हां, उसकी आंखें बड़ी मुखरता से कह रही थीं कि उसे मुझ पर दया आ रही है। मैं मानती हूं कि मनुष्य के अंतरतम रहस्य उसकी आंखों में पढ़े जा सकते हैं। और इस मौके पर सचमुच साइतो की आंखें इतनी मुखर थीं कि मैं उसके विचारों को उसी क्षण समझ गयी।

युवक : वह तुम्हें मार डालने की योजना बना रहा था, है न ?

युवती : हां, मगर यह सब उसके लिए तो सिर्फ एक खिलवाड़ था। कई दृष्टियों से वह 'सेडिस्ट' था, तुम जानते ही हो; और मैं थी इससे बिलकुल उलटी। मुझे पूरा विश्वास है, वह इसीलिए खिलवाड़ करना चाहता था। निश्चय ही हम दोनों एक दूसरे से प्यार करते थे, मगर हम दोनों हरदम उत्तेजना के लिए उत्सुक रहते थे।

युवक : मालूम है, मुझे मालूम है। और ज्यादा कहने की जरूरत नहीं।

युवती : उस रात पहली बार मुझे लगा कि उसके मन की बात मैं साफ-साफ पढ़ सकती हूं। अस्पष्ट संदेह तो कुछ समय से मुझे परेशान कर ही रहे थे; मगर अब असली भय ने मेरे दिल को दबोच लिया। मैं यह सोचकर कांप उठी कि क्या वह यहां तक आगे बढ़ सकता है ! मगर इन भयों के बावजूद मैं रोमांचित हो उठी थी।

युवक : दया की वह झलक जो तुम्हें उसकी आंखों में दिखी थी, वह भी खिलवाड़ का ही हिस्सा थी, है न ? वह चाहता था कि तुम डर जाओ, और यह उसका अपना ढंग था तुम्हें यह जताने का कि तुम्हारा हश्र क्या होगा। और फिर.....

युवती : फिर वह नीले ओवरकोट वाला आदमी !

युवक : हां, नीला फेल्ट हैट, काला चश्मा और झबरी मूंछें।

युवती : तुम तो उसे पहले भी देख चुके थे, है न ?

युवक : हां, मैं भी तो मौजूद था ......संघर्ष कर रहा एक चित्रकार, जो पैसे देकर तुम्हारे यहां खाता और रहता था, जो तुम्हारे और तुम्हारे पति के मामलों में विदूषक की भूमिका निभाता था। हां, एक रोज सड़कों पर मटरगश्ती करते हुए मेरा ध्यान उस आदमी पर पहले पहल गया। जब मैंने नुक्कड़ की चाय-दुकान की मालकिन से पूछा, तो उसने बताया कि वह अजनबी तुम्हारे मकान के बारे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत-से सवाल पूछ रहा था।

युवती : तुमने जब यह खबर लाकर दी, उसके बाद ही मेरी नजर उस पर पड़ी। पहली बार हमारे रसोईघर के बाहर, फिर दो बार सामने वाले फाटक के पास। हर बार वह इस ढंग से खड़ा रहा, मानो परछाईं हो—ढीला-ढाला ओवरकोट पहने और दोनों हाथ जेबों में धंसाये।

युवक : मैंने तो समझा था कि कोई उठाईगीर होगा, और पास-पड़ोस के घरों के कई नौकरों ने उसके बारे में मुझे आगाह भी किया था।

युवती : मगर वह तो उससे भी बुरा निकला, निरे उठाईगीर से कहीं ज्यादा खतरनाक! है न? जो भी हो, उस भयंकर रात को अपने पति की आंसू-भरी आंखों में झांकने के साथ ही उस आदमी का अनिष्टकारी हुलिया मेरे मन में उभर आया।

युवक : और तब तुम्हें अपने पति की योजनाओं का तीसरा संकेत मिला, है न?

युवती : हां और वे जासूसी कहानियां, जो तुम ला-लाकर हमें देने लगे थे। अलबत्ता हमने पहले भी जासूसी कहानियां पढ़ी थीं, मगर अपराध की कला में हमारी दिलचस्पी तो तुमने ही जगायी। इसकी शुरूआत हुई थी उस रहस्यमय अजनबी को देखने के कुछ महीने पहले, और हर रात को हम बस एक ही विषय की चर्चा किया करते—सफल अपराधों की। और मेरा पति साइतो तो इस विषय में हम सबसे बढ़कर उत्साही था, तुम्हें तो याद होगा?

युवक : और उसी अरसे में उसने सबसे बढ़िया षड्यंत्र की कल्पना भी की।

युवती : तुम्हारा मतलब दुहरे व्यक्तित्व वाली तरकीब से है। दुहरा व्यक्तित्व रचने के ढेर सारे तरीके हैं, हैं न? मुझे वह लंबी फेहरिस्त याद है, जो तुमने बनायी थी।

युवक : हां, अगर मेरी याद गलत नहीं, तो पूरे तैंतीस तरीके।

युवती : मगर साइतो सबसे अधिक प्रभावित हुआ था, सर्वथा अस्तित्वहीन चरित्र खड़ा करने की कल्पना से।

युवक : इसका गुर बिलकुल सीधा था। मसलन, अगर आदमी ने हत्या करने का निश्चय कर लिया हो तो वह अपराध से बहुत पहले ही एक कल्पित चरित्र की सृष्टि करेगा। यह चरित्र उसका 'डबल' होगा। उसका हुलिया बहुत ही आसान होगा—जैसे, बनावटी मूंछें, काला चश्मा, औरों से हटकर दिखाई देने वाले कपड़े। वह अपने इस 'डबल' को अपने असली निवास-स्थान से दूर कहीं बसायेगा और फिर दुहरा जीवन जीना शुरू कर देगा। जब असली चरित्र काम पर गया हुआ समझा जाता हो, तब यह 'डबल' उसके घर पर होगा; और जब असली चरित्र घर पर हो, तब 'डबल' और कहीं होगा। अगर दोनों में से एक चरित्र लंबी यात्रा पर गया हो, तब तो मामला और भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : तोयोकुनी

आसान हो जायेगा। इस तरह भूमिका तैयार करके किसी भी अनुकल मौके पर हत्या कर दी जा सकती है। मगर अपराध से ठीक पहले कल्पित चरित्र जानबूझकर अनेक गवाहों की नजरों के सामने से गुजरेगा। और फिर, अपराध के बाद धरती के तख्ते पर से एकदम छूमंतर हो जायेगा। इस तरह वह तो हमेशा के लिए अपने घर से लापता हो जायेगा, जबकि असली चरित्र पहले के ढर्रे पर फिर से जीने लगेगा। और चूंकि अपराध तो अस्तित्वहीन आदमी ने किया होगा, इसलिए यह आदर्श अपराध होगा।

युवती : साइतो इसके बारे में इस कदर बोलता रहा था कि मुझे महसूस होने लगा कि वह पागल होता जा रहा है। जब मैंने उसकी आंखों में झांका, तो ये सब बातें मुझे याद हो आयीं। मगर उसके गूढ़ विचारों का एक संकेत और था। वह थी उसकी डायरी, जो उसने इसी इरादे से 'छिपायी' थी कि वह मेरे हाथ में पड़ जाये। मगर चूंकि डायरी मेरे पढ़ने के लिए ही रखी गयी थी, इसलिए उसमें साइतो के असली रहस्यों का जिक्र था ही नहीं। मसलन, उसमें उसकी रखैल के बारे में एक भी शब्द नहीं था।

युवक : यानी, चिट्ठी में कोई बात लिखकर उसे जरूर पढ़ा जाये इस मकसद से उस पर लकीर खींच देने जैसी बात थी यह !

युवती : मैंने डायरी पहले पन्ने से आखिरी पन्ने तक पढ़ डाली। अनेक पन्ने दुहरे व्यक्तित्व की कल्पना में रंगे गये थे। साइतो की सूझबूझ-भरी कल्पनाओं ने मुझे चकित कर दिया। मुझे कहना पड़ेगा, वह कलम का जादूगर था।

युवक : कहती जाओ।

युवती : तो ये तीन सुराग मेरे पास थे। पहला, उसकी आंखों का वह भाव; अगला, नीले ओवरकोट वाला आदमी; और अंततः दुहरे चरित्र की युक्ति का वर्णन करने वाली डायरी। मगर जाने क्यों, मुझे यही लगता रहा कि तस्वीर अधूरी है। कोई मकसद नहीं नजर आता था उसके यह सब करने का। और वह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुहैया किया तुमने, उसकी रखैल के बारे में बताकर। उसके बाद तो जब भी मैं उसकी आंखों में झांकती, वहां मुझे प्रतिबिंब नजर आता था किसी सुंदर लड़की का, जिसे मैं उसकी रखैल समझती थी। कई बार तो उस लड़की के इत्र की गंध भी मुझे साइको के पास महसूस-सी हुई।

युवक : दूसरे शब्दों में, उन चार सुरागों ने तुम्हें यह विश्वास दिला दिया कि वह तुम्हारी हत्या की योजना बना रहा है, ताकि तुम्हें अपने पिता से विरसे में मिली सब संपत्ति को पाकर अपनी रखैल के साथ रह सके।

युवती : मगर साथ ही मैं यह भी जानती थी कि वह सिर्फ मुझे डराने के लिए खिलवाड़ कर रहा है।

युवक : हां, मुमकिन है कि तुमने यही सोचा हो। मगर उसका इरादा बिलकुल सच्चा था। उसकी योजना भेस बनाकर तुम्हारे कमरे में घुस आने और तुम्हारी हत्या करके नदारद हो जाने की थी। बाद में असली साइतो वापस आता, तुम्हारी हत्या का 'पता पाता' और शोक-विह्वल पति की सुकुमार भूमिका निभाता।

युवती : हां, मगर जैसा कि मैं पहले कह चुकी हूं, यह सब मुझे डराने और मजा लेने के खेल का ही हिस्सा था। तुम कल्पना कर सकते हो कि कितना डरावना खेल था यह! यही आनंद वह पाना चाहता था। कितनी चमत्कारी बात है, ये सब विवरण उस क्षणार्ध में पूरी स्पष्टता के साथ मेरे मन में आ गये, जब मैंने उसकी आंखों में झांका।

युवक : मगर साइतो ने इसकी सीमा क्या सोची थी? नीले ओवरकोट वाले आदमी का भेस बनाने के पीछे उसका असली मकसद क्या था?

युवती : मेरा खयाल है, असल में उसका इरादा था नकली भेस में मेरे कमरे में चुपचाप घुस आने और मुझे बुरी तरह डरा देने का। मेरी पागलाना चीख-पुकार का मजा लेने के बाद वह ठहाका मारकर हंस पड़ता।

युवक : मगर हुआ तो कुछ और ही, न?

युवती : हां, हुआ कुछ और ही। तब तक हर चीज लगभग मजाक ही थी। मगर इसके बाद जो हुआ, उससे जैसे मेरी रगों का खून जम गया। उसका खयाल भी आने पर मैं कांप उठती हूं।

युवक : मगर मुझसे अधिक नहीं। पर बोलती जाओ, अपने दिल का बोझ उतार लो, हमारी बातें सुनने वाला दूसरा कोई यहां नहीं है।

युवती : तो ठीक......कई बार और विस्तर में उस पर रोने का भूत सवार हुआ और धीरे-धीरे मुझे ऐसा लगने लगा कि मैं उसकी आंखों के भाव की थाह अब नहीं ले पाती हूं। असल में अब मैं नहीं जानती थी कि वह खिलवाड़ कर रहा है या......

युवक : तुम्हें ...... तुम्हें शक होने लगा था कि सचमुच वह तुम्हारी हत्या करने की योजना बना रहा है, है न?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : तोयोकुनी

युवती : हां। अब उसकी कांचनुमा घूरती आंखें यह कहती-सी जान पड़तीं कि पहले मैंने एक काल्पनिक चरित्र की सृष्टि की, ताकि तुम्हें गजब का रोमांच हो। मगर इस हद तक नाटक खेल चुकने के बाद अब मैं हैरत में पड़ गया हूं। तुम्हें सचमुच मार डालना और फिर भी संदेह से बिलकुल बरी रहना कितना आसान होगा। इसके अलावा, तुम्हारे पास बहुत संपत्ति है ...... वह मेरी हो जायेगी। कितना बड़ा प्रलोभन! क्योंकि असल में, तुम जानती हो, मैं तुमसे ज्यादा किसी और को प्यार करता हूं। मगर मुझे सचमुच तुम पर दया आती है ...... सचमुच। उन यातना-भरी रातों में मेरा डर तीव्र होता चला गया। और इन्हीं दिनों, जब वह और मैं अंधेरे बेडरूम में मन में भयंकर उथल-पुथल लिये आपस में गुंथा-उलझा करते, मैं अपने मुंह में रिसते उसके आंसुओं का लोना स्वाद फिर से अनुभव करने लगी।

युवक : यही वक्त था जब तुम मुझसे बात करने आयीं।

युवती : हां, मगर तुमने तो मुझसे यही कहा कि तुम हिस्टीरिया में हो, और तुमने मेरे भयों को हंसकर उड़ाने की कोशिश की। मगर तुम्हारी हंसी के बावजूद, मैंने तुम्हारी आंखों में एक छिपी हुई परछाईं देखी और मुझे शक होने लगा कि तुम्हें भी वही भय है, जो मुझे है।

युवक : हो सकता है कि तुमने वैसा समझा हो, मगर ऐसी कोई बात नहीं थी। तुम्हारी आंखें सदा ही दूसरे के दिल की बात पढ़ने वालों की-सी पैनी रही हैं, है न? दूसरों के अवचेतन तक को पढ़ लेने की तुम्हारी-जैसी शक्ति बहुत थोड़े लोगों में होती है।

युवती : उसके बाद तो उसकी आंखों में झांकने से मुझे डर लगने लगा। और उससे भी ज्यादा डर मुझे इसका था कि शायद वह मेरी आंखों में मेरा भाव न पढ़ ले। धीरे-धीरे उसकी पिस्तौल का खयाल मेरे मन को सताने लगा ...... एक सांझ को फिर मैंने नीले ओवरकोट वाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदमी को फाटक के बाहर देखा। लगभग अंधेरा हो गया था, मगर मुझे लगा कि वह मुझे ही घूर रहा है। मेरी रीढ़ में ठंडी सिहरन दौड़ गयी। और उस क्षण मुझे फिर से पिस्तौल की याद आयी—पिस्तौल जो साइतो की दराज में छिपी हुई थी।

युवक : पिस्तौल की बाबत मुझे भी मालूम था। साइतो जानता था कि पिस्तौल रखना गैरकानूनी है, फिर भी वह हमेशा पूरी भरी हुई पिस्तौल डेस्क की दराज में छिपाकर रखता था—मेरा खयाल था कि सिर्फ पिस्तौल रखने की खातिर वह उसे रखे हुए है।

युवती : एकाएक मुझे सूझा कि शायद वही पिस्तौल अब नीले ओवरकोट वाले आदमी के पास हो। मैंने तुरंत जाकर साइतो की डेस्क की दराज खोलकर जांच की। मगर पिस्तौल वहां मौजूद थी। मैंने अपने मन में सोचा, अगर साइतो ही उस आदमी के भेस में है तो वह स्वयं अपनी पिस्तौल का इस्तेमाल करने की बेवकूफी हर्गिज नहीं करेगा। इसका मतलब यह है कि उसने दूसरा कोई हथियार इस्तेमाल करने की योजना बनायी होगी। इस तरह मेरा भय बढ़ता ही गया।

युवक : तो तुमने वह पिस्तौल आत्मरक्षा के लिए अपने पास रखने का निश्चय किया?

युवती : हां, मैंने पिस्तौल दराज में से निकाली और मैं उसे हरदम अपने पास रखने लगी। रात को मैं उसे साथ लेकर ही सोती।

युवक : उस पिस्तौल का अस्तित्व एक दुर्भाग्य बन गया था। अगर वह पिस्तौल न होती तो ......

युवती : उन्हीं दिनों मैंने तुमसे पूछा था कि अगर कोई आदमी रात को मेरे बेडरूम में घुस आये और भले उसका कोई अपराध करने का इरादा न हो, तो भी अगर मैं उसे गोली मार दूं तो मेरा क्या होगा? याद है?

युवक : हां, याद है। और अगर मैं गलती नहीं करता, तो मैंने तुम्हें बताया था कि यह आत्मरक्षा होगी और इसे अपराध नहीं गिना जायेगा। बाद में मुझे इसका अफसोस रहा कि मैंने यह बात तुमसे क्यों कही।

युवती : और तब अंततः वह आ ही पहुंचा। आधी रात बीत चुकी थी। बाड़ फलांगकर वह रसोईघर की खिड़की में से घर में चुपचाप आ घुसा। पहले तो मैंने देखा कि मेरे बेडरूम का दरवाजा बहुत धीमे-धीमे खुल रहा है। फिर मेरी नजर उस पर पड़ी। वह वही था, बिलकुल वही। वही नीला ओवरकोट उसने पहन रखा था। अपना फेल्ट हैट उसने नीचे तक खींच लिया था; काला चश्मा उसकी आंखों को ढंके हुए था—और वे भयानक मूंछें! बस, वक्त आ गया था। मैं सोने का बहाना करती रही, मगर मैंने चोरी से उस पर एक नजर डाली और पिस्तौल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र : तोयोकुनी

कसकर पकड़ ली ......

युवक : और तब ?

युवती : मैं अपने दिल की धड़कन मानो कानों से सुन सकती थी। मैं चाहती थी—ओह, कितना चाहती थी—कि ट्रिगर दबा दूं। मगर मैं प्रतीक्षा करती रही। वह दरवाजे पर खड़ा था, दोनों हाथ जेबों में डाले। जाने कैसे, मुझे लगा कि उसे मालूम है कि मैं नींद का ढोंग कर रही हूं। जैसे घंटों हम एक-दूसरे की टोह लेते रहे। मैं चीख उठना चाहती थी, बिस्तर से कूदकर भाग जाना चाहती थी; मगर मैंने दांत भींच लिये और अपने आपको काबू में रखा।

युवक : और तब ?

युवती : तब एकाएक वह मेरे बिस्तर की और तब मैंने चादर में से झांक-कर देखा। उसका चेहरा नाइट-लैंप के पास मंडरा रहा था। उसने बड़ी चतुराई से भेस बनाया था, मगर मैं देख सकती थी कि निश्चय ही वह साइतो है। काले चश्मे के पीछे से उसकी आंखें मुस्कराती-सी लगीं। धीरे-धीरे उसका चेहरा निकट और निकट आने लगा। ...... मैं उसके हाथ का चाकू देख नहीं पायी; मगर इसमें कतई शक नहीं था कि उसका इरादा मुझे मार देने का था। मैंने चादर के नीचे से पिस्तौल धीरे-से घुमायी और उसके दिल का निशाना साधा। फिर मैंने ट्रिगर दबा दिया ...... इस पर तुम और मेरी नौकरानी दौड़े हुए मेरे कमरे में आये, मगर तब तक मैं बेहोश हो चुकी थी।

युवक : मरे आदमी को देखते ही मैं समझ गया कि हुआ क्या था। चाकू उसके पास ही पड़ा था।

युवती : सो पुलिस आयी और कुछ दिन बाद तुम्हें और मुझे पुलिस-वकील के दफ्तर में बुलाया गया। मैंने शुरू से अंत तक सारी कहानी कह दी, तुम गवाह थे, और जल्दी ही उन्होंने मुझे बरी कर दिया। तुमने फर्श पर जो चाकू पड़ा हुआ पाया था, उसी ने यह सिद्ध किया कि मैंने साइतो की हत्या आत्मरक्षा के लिए की थी ...... उसके बाद मेरा नर्वस ब्रेक-डाउन हो गया और महीना-भर मैं बिस्तर पर पड़ी रही। मुझे यह बहुत ही अच्छा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा कि तुम प्रतिदिन आते रहे और रिश्तेदारों और मित्रों के अभाव की पूर्ति करते रहे। तुमने ही मेरी ओर से साइतो की रखैल के मामले को भी रफादफा किया।

युवक : और कल्पना तो करो, एक साल पूरा हो चुका ! और हमें शादी किये भी पांच महीने हो गये ! ...... ठीक है, अब होटल लौट चलें।

युवती : नहीं, अभी और भी बातें बाकी हैं।

युवक : सच ? और क्या कहने को बाकी है ? क्या सारी बातों की चर्चा हमने कर नहीं ली ?

युवती : हां, मगर अभी तो हमने विषय की सतह ही छुई है।

युवक : विषय की सतह ? मुझे तो लगता है, हमने विषय का काफी गहरा विश्लेषण कर डाला है।

युवती : मगर प्रिय, तुम यह भूल रहे हो कि परदे के पीछे दूसरा परदा भी होता है.....

युवक : मेरे सिर की कसम, मैं नहीं जानता तुम कह क्या रही हो ! आज तुम्हारा सारा ही व्यवहार अजीब ही है।

युवती : तुम्हें डर लग रहा है, है न ?

[आदमी का चेहरा ऐंठता है; मगर उसकी आंखें भावशून्य बनी रहती हैं। मगर औरत की आंखें चमक उठती हैं और उसके ओंठ दुर्भावपूर्ण मुस्कान से खिल जाते हैं।]

युवती : अगर कोई आदमी मानसिक संकेत द्वारा ही दूसरे आदमी से कोई गंभीर अपराध करवा सकता हो, तो उस आदमी को उससे कितना अधिक संतोष मिलता होगा ! एक नादान कठपुतली के हाथों अपनी योजनाएं पूरी कराकर, वह पकड़े जाने से पूरी तरह बचा रहेगा। मैं समझती हूं, यह वह आदर्श हत्या है, जिसकी चर्चा हम लोगों ने कभी नहीं की।

युवक : क्या......क्या मतलब है तुम्हारा ?

युवती : मैं तो तुम्हें सिर्फ यह बता रही हूं कि तुम किस तरह के आदमी हो ..... मगर चौंको नहीं। चीखते-चिल्लाते हुए पुलिस के पास जाने का मेरा कोई इरादा नहीं है। मैं काफी समझदार औरत हूं, तुम तो जानते ही हो। तो आओ, अब गोल-मोल बातें न करें।

युवक : सुनो, काफी देर हो चली है.....

युवती : वाह, देखो तो ! मैंने कहा था न

चित्र : उतामारो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि ...... कि तुम्हें मुझसे डर लग रहा है ...... सो मेहरबानी करके मुझे बोल लेने दो ...... तुम्हारे लिए साइतो आदर्श कठपुतली था। पहले तुमने जासूसी कहानियों में उसकी दिलचस्पी जगायी। फिर तुमने उसे यह विश्वास दिलाया कि दुहरे चरित्र वाली तरकीब बिलकुल अचूक है। और एक-एक कदम करके तुम उसे अपराध के गढ़े में गहरे, और गहरे उतारते चले गये..... साइतो की रखैल का होना आकस्मिक बात थी; मगर तुमने उसका भी उपयोग किया।

युवक : तुम पागल हो गयी हो.... किन्हीं दो असंबद्ध बातों को आपस में जोड़कर कुछ भी अर्थ निकाल लेना बहुत आसान है।

युवती : मगर पिछली बातें तो जरा सोचो। तुम यह बखूबी जानते हो कि तुम्हारे—हां, सिर्फ तुम्हारे ही किये, एक से दूसरी, दूसरी से तीसरी घटना पैदा होती चली गयी— यहां तक कि अंत में मैंने साइतो की हत्या कर दी। यह सब तुम्हीं ने किया था— अपनी मानसिक संकेत की शक्ति द्वारा— और तुम यह अच्छी तरह जानते हो।

युवक : मगर तुम एक बात भूल रही हो। तुम साइतो की हत्या न करतीं, यह भी संभव था।

युवती : उस हालत में तुम फौरन और कोई चाल चलते। सभी तरह के अपराधियों में तुम सबसे कुटिल हो, क्योंकि तुम्हारी चालें हमेशा ही संभावना पर निर्भर होती थीं। एक योजना विफल हो गयी तो तुम झटपट दूसरी....तीसरी... योजना सोच लेते। कोई तो सफल होकर ही रहती। हां, सचमुच तुमने आदर्श अपराध किया।

युवक : मुझे अब तुम पर गुस्सा आने लगा है। तुमने सारा किस्सा अपने ही ढंग से गढ़ लिया है, सब बकवास है। मैं होटल वापस जा रहा हूं।

युवती : जरा अपनी शक्ल तो देखो!... तुम्हारा चेहरा पसीने से नहा गया है! तुम्हें मतली आ रही है, अब यह न कहना कि नहीं आ रही है। मगर तुम्हें मेरी बात पूरी सुननी पड़ेगी। जब मैंने पिस्तौल का ट्रिगर दबाया तो मैंने साइतो को हाथ में चाकू पकड़े नहीं देखा था। यह तो मेरा अनुमान था कि वह मेरी हत्या की कोशिश कर रहा है—सो मैंने उसकी हत्या कर दी ..... मगर मेरे पास दूसरा कारण भी था। मैं तुमसे प्रेम करती थी, और तुम यह जानते थे। ...... चाकू तो मैंने बेहोशी से जगने के बाद ही देखा—वह साइतो के मुर्दे के पास पड़ा हुआ था। और, मैंने जब साइतो की हत्या कर दी तो हत्यास्थल पर सबसे पहले तुम्हीं आये थे, और चाकू पर साइतो की उंगलियों की छाप लगाकर उसे उसके मुर्दे के पास रख देना तुम्हारे लिए बहुत आसान था। इस तरह तुमने न सिर्फ साइतो की हत्या कर दी, बल्कि मेरी आत्मरक्षा की दलील के लिए प्रमाण भी जुटा दिया।

युवक : तुम्हारी कल्पना-शक्ति सचमुच बड़ी विलक्षण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिलचस्प है। अ ह हा ....

युवती : अपनी इस हंसी से तुम मुझे उल्लू नहीं बना सकते! देखो तो, तुम तो कांप रहे हो। तुम्हें कांपने की जरूरत नहीं। मैं किसी को नहीं बताऊंगी। तुमसे मैं विश्वासघात कैसे कर सकती हूं, जबकि तुमने मुझे पाने के लिए इतनी सब तकलीफ झेली है? मैं तो बस एक बार तुम्हारे साथ ये सब बातें कह लेना चाहती थी। ...... मैं किसी को नहीं बताऊंगी, बिलकुल मत डरो।

[आदमी चुपचाप बेंच से उठता है और औरत पर ऐसी नजर डालता है, जो नजर साफ कह रही है कि तुम जैसी पागल से भर पाये। औरत भी उठ खड़ी होती है और निश्चल खड़े आदमी की उपेक्षा करती हुई धीरे-धीरे चट्टान के कगार की ओर बढ़ने लगती है। क्षण-भर बाद आदमी उसका अनुगमन करता है।

चट्टान के किनारे से सिर्फ दो फुट की दूरी पर पहुंचकर वह रुक जाती है। नीचे, बहुत नीचे बहती नदी की मंद आवाज खड्ड में भरी धुंध में से आ रही है।

पीछे मुड़कर देखे बिना ही युवती अपने पीछे खड़े युवक से बोलती जाती है।

युवती : आज हमने अपने सबसे अंदरूनी विचारों को नंगा कर दिया, है न? मगर एक चीज और बाकी है, जो मुझे तुमसे कहनी ही पड़ेगी। मैं तुमसे सिर्फ तुम्हारे खातिर प्रेम करती थी; मगर तुम्हें मेरे पैसे से भी प्रेम था और मुझसे भी। और अब तुम्हें सिर्फ मेरे पैसे से प्रेम है। मुझे सब मालूम है। और तुम्हें मालूम है कि मुझे मालूम है। है न? इसीलिए तुम आज मुझे इस सूनी जगह पर लाये थे..... हूबहू साइतो की तरह, तुम भी मेरे पैसे के बिना नहीं जी सकते, सो तुम चाहने लगे हो कि मेरे साथ कोई दुर्घटना घट जाये। अगर मुझे कुछ हो गया, तो मेरा सारा रुपया-पैसा उत्तराधिकार में तुम्हें ही मिलेगा, क्योंकि तुम मेरे पति हो..... मुझे यह भी मालूम है कि तुम्हारी भी एक रखैल है—और तुम मुझसे द्वेष करते हो, क्योंकि मैं तुम्हारी राह का कांटा हूं।

[इस क्षण युवती को अपने ठीक पीछे से पति की तेज सांस सुनाई देती है और वह जानती है कि पति धीरे-धीरे उसके पास, और पास खिसकता आ रहा है। वह अपने आपसे कहती है कि वक्त आ पहुंचा है। वह अनुभव करती है कि युवक के कांपते हाथों ने एकाएक उसके कंधों को पकड़ लिया है। वे हाथ उसे धक्का देने लगते हैं—जोर से—और जोर से। और ठीक उस वक्त, जब युवक के हाथ उसे आखिरी धक्का देते हैं, वह बिजली की-सी फुर्ती से छिटककर बाजू में कूद जाती है।

संतुलन गंवाकर आदमी आगे को लड़खड़ा जाता है, आकाश को पंजों से नोचने लगता है। अगले क्षण उसके पैर हवा को गूंध रहे होते हैं, और उसका शरीर कलाबाजियां खाता हुआ विलुप्त हो जाता है। मुंह बाये हुए खड्ड में।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ क्षण बाद आस-पास की झाड़ियों से चिड़ियों की आनंद-भरी चहचहाट सुनाई देती है। दूर डूबता सूरज धधकती गेंद की तरह, मंडराते बादलों को गहरे लाल रंग में रंग रहा है। युवती चट्टान की चोटी पर बिलकुल निश्चल खड़ी है। फिर, धीरे-से और बड़ी उदासी से वह अपने आपसे बुद-बुदाने लगती है।]

युवती : इस बार भी वही बात..... आत्म-रक्षा ! कितनी मजेदार बात ! एक साल पहले साइतो ने मुझे मारने की कोशिश की थी। मगर मारा गया खुद वही, न कि मैं। और अब इस मूर्ख ने मुझे इस चट्टान से गिराने की कोशिश की। मगर फिर खुद ..... दोनों की असली हत्यारिन मैं थी। मगर कानून मुझे दंड नहीं देगा... कितना आसान है हत्या करना! कौन जाने, शायद सचमुच ही मैं डायन हूं, जैसे कि दिखाई भी देती हूं ...... हो सकता है, यही मेरी नियति हो कि मैं इस तरह जीती चली जाऊं, एक के बाद एक की जान लेती हुई.....

[चट्टान के कगार पर युवती एकाकी देवदार की तरह निश्चल खड़ी रहती है और धीमे-धीमे अंधकार के अवतरण के साथ नजरों से ओझल होती जाती है।]

★

यह किस्सा ब्रिटिश पत्रकार पीटर ब्लैक ने 'गार्जियन' में अपने स्तंभ में लिखा है। वे गुमनाम लेखन (गोस्ट राइटिंग) भी करते हैं और उन्होंने किसी सज्जन की आत्मकथा लिखकर दी थी। पुस्तक छपी और उसकी छह प्रतियां डाक से उसने उनके नाम रवाना कीं और फोन पर उन्हें इसकी सूचना भी दी। जब कई दिन बाद भी पुस्तकें न आयीं तो उन्होंने डाकिये से कहा कि मेरी लिखी हुई एक पुस्तक की प्रतियां डाक से मुझे भेजी गयी थीं, मगर अब तक आयी नहीं। डाकिया उनसे बोला—'पुस्तक आप ही ने लिखी है तो आपको पता हो होगा कि पुस्तक में क्या-क्या है, सो चिंता की क्या बात है!'

★

प्रसिद्ध संपादक क्लिटन बर्नार्ड को एक व्यक्ति बहुत रूखे और कठोर स्वभाव का लगता था। सो जब भी उससे सामना होता, वे काफी रुखाई से पेश आते थे। फिर एक दिन उन्होंने उसे किसी के साथ बड़ी दया-माया बरतते देखा। खास बात यह थी कि उस आदमी को उस समय पूरा विश्वास था कि कोई देख नहीं रहा है। इससे उस आदमी के बारे में क्लिटन बर्नार्ड की राय एकदम बदल गयी। सो अगली बार जब उससे सामना हुआ तो उन्होंने मुस्कराकर 'हैलो' कहा। फिर इधर-उधर की बातों के बाद बोले—'कल इतवार है, फुरसत हो तो आइये गोल्फ खेलेंगे।'

खेल के बाद जब वे दोनों आराम करने बैठे, उस आदमी ने कहा—'हैरानी की बात है कि एकाएक आप कितना बदल गये हैं! कल तक तो आप बड़े रूखे स्वभाव के लगते थे।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रंथ-लोक

* मिला तेज से तेज
* जाने आलम
* भारत की संपदा

*** मिला तेज से तेज * सुधा चौहान; हंस प्रकाशन, इलाहाबाद; ३२८ पृष्ठ; २१ रुपये।**

मेरी पीढ़ी के पाठकों के लिए श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान अपने अत्यंत लोकप्रिय गाथागीत की नायिका झांसो वाली रानी का नया संस्करण थीं–वैसी ही शौर्यमयी और देशभक्ति-पगी, किंतु समयुगीन और कवि होने के कारण अधिक मानवीय। वे उन साहित्यकारों में थीं, जिनकी दृष्टि में भारत-सेवा और भारती-सेवा एक ही व्रत के दो अंग थे। उनके काव्य की शक्ति और सोमा दोनों इसमें थी। उनका काव्य अनुभूति की प्रामाणिकता और अभिव्यक्ति की अकृत्रिमता से दीप्त था और यह दीप्ति–जैसा कि उनकी पुत्री की लिखी यह पुस्तक सिद्ध करती है–उनके व्यक्तित्व का सार थी।

किंतु यह पुस्तक सिर्फ सुभद्राकुमारीजी पर नहीं है। जैसे उनके जीवन और देश-सेवा-व्रत में, वैसे ही इस पुस्तक में भी, उनके पति स्व. लक्ष्मणसिंह चौहान का समभाग है। यदि पति-पत्नी का जीवन-व्रत एक ही हो, तो उनकी व्रत-साधना निष्कंटक और जीवन-यात्रा कष्टमय हो जाती है–इसका दृष्टांत है उनका दांपत्य। किंतु वे कांटों पर हंसते-हंसते चले और विंधे पांवों के लहू को दुनिया की नजरों से छिपाते रहे। पांवों पर चुपके-से लाल स्याही उड़ेलकर कराहने और उस बलिदान की हुंडी भुनवाने का जमाना जब आ गया, तब भी ये दोनों जीव गांधी-युग के आदर्शवाद से चिपटे रहे और एक शानदार 'एनेक्रानिज़्म' बन गये।

श्रीमती सुधा चौहान ने अपने धवल-चरित माता-पिता का यह युगल-चित्र भावना और तटस्थता के दुःसाध्य मिश्र-रंग से अंकित किया है; चित्र अतिरंजन से मुक्त और मानवीय होने के कारण अभिराम है। हिंदी साहित्यकारों के संबंध में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजके 3,000 रुपये पाँच सालमें हो जायेंगे 5,018.53 रुपये

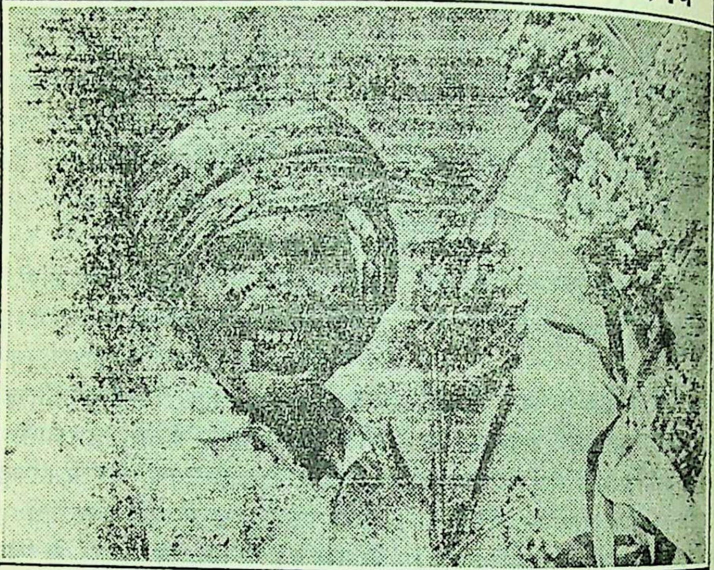

बैंक ऑफ़ इंडियाने यह संभव कर दिखाया है।

यह कोई चमत्कार नहीं है। बस आप बैंक ऑफ़ इंडिया के दोहरा लाभ जमाराशि प्रमाणपत्र (डबल बेनिफिट डिपोज़िट सर्टिफिकेट) के अन्तर्गत केवल 5 साल और 2 महीने के लिए 3,000 रुपये जमा करें और फिर देखें कि यह राशि दिनदूनी रात चौगुनी बढ़कर 5,018.53 रुपये तक पहुँच जाती है।
संकटकालीन स्थितियों के लिए यह बचत का सर्वोत्तम तरीका है: हो सकता है आपके बच्चे की शिक्षा, विवाह आदि खर्च के काम आये।
आज ही, बैंक ऑफ़ इंडिया की अपनी समीपवर्ती शाखा में पधारें। बैंक ऑफ़ इंडिया में धन जमा करने का मतलब पूरी सुरक्षा और साथ ही साथ अधिक लाभ।

आपके मार्गदर्शन के लिए—

यदि आप निम्न रकम जमा करते हैं रु.	तो निम्न अवधि के पूरी होने पर इतना पायेंगे।				
	13 महीने	25 महीने	37 महीने	49 महीने	62 महीने
	रु.	रु.	रु.	रु.	रु.
1000	1090.22	1180.71	1318.46	1442.14	1672.84
2000	2180.44	2361.41	2636.92	2884.28	3345.69
3000	3270.66	3542.12	3955.38	4326.42	5018.53
4000	4360.88	4722.83	5273.84	5768.56	6691.38

और आगे भी इसी प्रकार बढ़ती रहेगी...

सहायता के लिए हमारी नज़दीक की शाखा में पधारिए।

बैंक ऑफ़ इंडिया
भारत सरकार का उपक्रम
जहाँ सेवा ही हमारी विशिष्टता है।

CONCEPT-BOI-2621 HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखी गयी कितनी पुस्तकों के बारे में यह बात कही जा सकती है ? प्रसंगवश आये अन्य व्यक्तियों की झांकियां पैनी हैं, प्रायः न्यायपूर्ण भी। लेखिका के मंझले मामा 'छुटके भैया' का चित्र उत्तम शब्द-चित्रों में स्थान पाने का अधिकारी है। –ना. द.

○○○

*** जाने आलम * इकबाल बहादुर देवसरे; साहित्य भवन प्राइवेट लि. इलाहाबाद; ३६३ पृष्ठ; २५ रुपये।**

यह एक रोचक ऐतिहासिक उपन्यास है। चरित्रनायक वाजिदअली शाह का 'शाहे अवध' वाला रूप ही 'जाने आलम' में प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने उसके साथ पूरा न्याय किया है और अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों-दस्तावेजों के साथ स्वयं वाजिदअली शाह की लिखी आपबीती 'हुज्न अख्तर' को अपना आधार बनाया है। आशा की जाती है कि 'बेगम हजरत महल' के उपन्यासकार इकबाल बहादुर देवसरे के इस नये ऐतिहासिक उपन्यास 'जाने आलम' का पाठक स्वागत करेंगे। पुस्तक की छपाई और साजसज्जा पुस्तक के स्तर के अनुरूप बन पड़ी है।

–सतीश वर्मा

○○○

*** भारत की संपदा : प्राकृतिक पदार्थ-मत्स्य और मात्स्यिकी–पूरक खंड) * प्रधान संपादक : स्वामी (डा.) सत्यप्रकाश; वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद, नयी दिल्ली-११००१२; १६५ + VIII पृष्ठ; १०७ चित्र; ४९ रुपये।**

वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद द्वारा देश के जीवों, वनस्पतियों एवं खनिजों के विश्वकोश के रूप में प्रकाशित की जा रही 'भारत की संपदा' का प्रस्तुत खंड 'द वेल्थ ऑफ इंडिया' के पूरक खंड के रूप में १९६२ में प्रकाशित 'फिश एंड फिशरीज़' का हिंदी अनुवाद है। इसमें सूचनाओं और आंकड़ों को यथासंभव अद्यतन भी बनाया गया है।

मांसाहार में मछलियों का प्रमुख स्थान है। मछली प्रोटीन का बहुत अच्छा स्रोत है। मछलियों के उपयोग की संभावनाओं तथा मात्स्यिकी की तकनीकों में विकास होता जा रहा है। भारत की विभिन्न मछलियों के पालन, देखभाल, पकड़ने, प्रशीतन एवं हिमीकरण, संघटन एवं उपयोग, उत्पादन, विपणन और व्यापार आदि की समस्त वैज्ञानिक जानकारी इस खंड में दी गयी है। अनुवाद का स्तर पिछले खंडों जैसा ही है। हां, कागज पिछले खंडों के मुकाबले में कुछ घटिया है।

जैसा कि पिछले खंडों की समीक्षा में कह चुका हूं, यह समग्र आयोजन किसके लिए है, कहना मुश्किल है। फिर भी यह प्रयास सराहनीय है। **–डा. जगदीश लूथरा**

★

सबकी सब पुस्तकें अपने पाठकों जितनी नीरस होती हों, ऐसी बात नहीं है। **–हेनरी डेविड थारो**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम उद्योग की कई प्रकार से सेवा करते हैं।
हमसे संपर्क करना आपको सदा लाभप्रद होगा।

(१) पाईप्स—जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इंडस्ट्रीज लि. खोपोली के विक्रेता और स्टाकिस्ट
(२) अल्युमिनियम—हम सभी प्रकार के शीटों और एक्सट्रुडेड सेक्शनों के लिए हिन्दालको के एजेन्ट हैं।
(३) केबल—युनिवर्सल केबल्स लि. सतना (म. प्र.) के महाराष्ट्र (विदर्भ, गोवा और गुजरात को छोड़कर) में बिक्री-एजेंट।
(४) फायर होज—जयश्री टेक्सटाइल एंड इंडस्ट्रीज लि. रिशरा (पं. बंगाल) द्वारा निर्मित, 'वरुण' फ्लैक्स पाइप व 'जयश्री' एंगस R. R. L. होज पाइपों के स्टाकिस्ट और वितरक।

एशियन डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड
क्वीन्स मेन्शन, तल मजला, प्रेस्काट रोड, बंबई-४००००१.
तार : "ADPIPE" टेलेक्स : O11-2177 टेलिफोन : २६६६७१-२-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अचानक हुए आविष्कार

यूसुफ जे. गुजरांवाला

'आविष्कार' कहने पर गहरी सूझबूझ, लंबे अध्ययन और परिश्रम का ख़याल मन में आता है। परंतु हमारे दैनिक जीवन में बहुत काम में आने वाली कई वस्तुओं का आविष्कार बिना किसी पूर्व-तैयारी के बातों ही बातों में हो गया था।

'स्टिकिंग प्लास्टर' यानी घाव पर लगाने की दवा-चुपड़ी टेप के आविष्कार की कहानी बड़ी मनोरंजक है। अर्ल डिकिन्स नामक आदमी की पत्नी मूर्ख और फूहड़ थी। खाना बनाते या छुरी से कोई चीज काटते समय वह इतनी लापरवाही बरतती कि बहुधा उसका हाथ कट या जल जाता था। बेचारा पति उसके जले-कटे अंगों पर मरहम-पट्टी लगाते-लगाते थक जाता।

आखिरकार उसने बहुत सोच-साचकर एक आसान तरीका निकाला। अवकाश के समय वह पचीस-पचास पट्टियां दवा चुपड़-कर पहले से तैयार रखने लगा। जैसे ही बीवी जलती या कटती, फौरन वह तैयार पट्टी लगा देता। यह युक्ति बड़ी सुविधा-जनक सिद्ध हुई। अर्ल डिकिन्स ने अपने इस आविष्कार को पेटेंट करा लिया और इस प्रकार पट्टियां बनाकर बाजार म बेचना भी आरंभ कर दिया। देखते ही देखते 'स्टिकिंग प्लास्टर' लोकप्रिय हो गया और उसका इस्तेमाल सारे संसार में होने लगा।

डाक-टिकट का आविष्कार भी एक छोटी-सी घटना से हुआ। पहले डाक-व्यव-हार तो चलता था; परंतु टिकट या प्रयोग नहीं होता था। जिसके नाम पत्र भेजा गया हो, उससे डाक-महसूल लेकर उसे पत्र दिया जाता था।

लंदन में एक बुढ़िया रहती थी। उसका इकलौता बेटा कहीं बाहर नौकरी करता था। बेटे ने बूढ़ी मां के नाम एक बार पत्र भेजा। दुर्भाग्य से उस समय बुढ़िया के पास पैसे नहीं थे। उसने डाकिये से बहुत कहा कि तुम अभी पत्र दे दो, दो-तीन दिन में पैसे चुका दूंगी। परंतु डाकिया कानून से बंधा था। जिस समय बुढ़िया गिड़गिड़ा रही थी, उसी समय रोनाल्ड नामक एक आदमी उधर से गुजर रहा था। उसने चिट्ठी छुड़ाने के लिए बुढ़िया को पैसे दे दिये। साथ ही उसके दिमाग में विचार उठा कि यह व्यवस्था ही गलत है। अगर चिट्ठी भेजने वाला ही डाक-खर्च पहले से चुका दे, तो ऐसी समस्या ही न उठे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन भर मासिक आय की गारंटी

आजीवन मासिक आय योजना

आप हर महीने जो भी राशि 7 वर्ष तक बचाकर जमा करायेंगे, उसके बाद पंजाब नैशनल बैंक वही राशि आपको हर महीने जिन्दगीभर देता रहेगा। और, आपकी पूंजी भी आपके नाम जमा रहेगी। यह है हमारी नई योजना—आजीवन मासिक आय योजना

आपको क्या करना है — हर महीने हमारे पास 10 रु० या अधिक, जितना भी आप चाहें, जमा कराइए। 84 महीने तक जमा करते रहिए। फिर बन्द कर दीजिए।

हम क्या करेंगे — इसके बाद हमारा काम शुरू होता है। हम हर महीने आपको उतनी ही राशि देना शुरू करेंगे, जितनी आपने जमा कराई थी। हम यह राशि आपको जिन्दगीभर या उसके बाद आपके उत्तराधिकारियों को भी देते रहेंगे।

आपकी 'भविष्य निधि' — इस योजना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि सात वर्ष बाद हमारे पास आपकी एक अच्छी खासी राशि—आपकी मासिक किस्त की 120 गुनी—इकट्ठी हो जाएगी। यह आपकी भविष्य निधि होगी, और यह हमेशा उतनी ही बनी रहेगी।

कौन शामिल हो सकता है — कोई भी, यहां तक कि अवयस्क बच्चे भी। आप संयुक्त खाता भी खोल सकते हैं।

अधिक ब्योरे के लिए हमारी पास की शाखा में पधारिए

पंजाब नैशनल बैंक

davp 76/27

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काफी सोचने पर रोनाल्ड को डाक-टिकट की कल्पना सूझी। उसने यह सुझाव सरकार के सामने रखा। सुझाव पसंद कर लिया गया और विश्व में ६ मई १८४० के दिन से डाक-टिकट का चलन शुरू हुआ।

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में बर्कनशायर (इंग्लैंड) की एक कागज-मिल के एक कर्मचारी ने जरा-सी लापरवाही बरती, जिसके परिणाम से स्याही-चूस (ब्लाटिंग-पेपर) का आविष्कार हुआ। एक दिन वह कर्मचारी खुरदरे कागज की एक गड्डी के कागजों पर चिकनाहट लाने के लिए सरेस लगाना भूल गया। सरेस लगाये जाने पर ही कागज लिखने के काबिल बनता था। कागज की वह सारी ही गड्डी बिगड़ गयी। उस पर लिखने की कोशिश करने पर स्याही फैल जाती और कागज स्याही को चूस लेता था। मिल के मैनेजर ने कुछ सोचा और स्याहीचूस कहकर उसे बाजार में बेच दिया। यानी एक उपयोगी वस्तु का आविष्कार हो गया। इसके पहले कागज पर लिखने के बाद स्याही को सुखाने के लिए महीन रेत इस्तेमाल की जाती थी।

अमरीका में वाल्टर हंट नामक एक लुहार था। उसकी बीवी बेहद झगड़ालू थी। छोटी-छोटी बातों पर पति को परेशान किया करती थी। एक दिन उसकी फ्राक के बटन टूट गये। उसने धमकी दी—'फौरन बाजार से बटन लाकर दो, वरना आज चूल्हा नहीं जलेगा।'

वाल्टर हंट भी कम आलसी न था। न वह बाजार जाना चाहता था और न पत्नी को नाराज करके भूखा ही रहना चाहता था। उसे एक उपाय सूझा। उसने पास ही पड़े तार के एक टुकड़े को विशेष रूप से मोड़कर बीवी को देते हुए कहा—'लो, बटन के बजाय यह पिन लगा लो।'

पत्नी ने वैसा ही किया। उसे लगा कि बटन की अपेक्षा इस प्रकार मुड़ा हुआ तार कपड़ों में लगाना अधिक सरल है। फिर हंट ने उसमें तनिक नफासत लाकर अपना यह आविष्कार अमरीका के एक उद्योगपति को सौ डालर में बेच दिया। कारखाने में निर्मित इस मुड़े हुए तार को 'सेफ्टी पिन' नाम दिया गया और छोटे-बड़े सभी ने इसे अपना लिया। यह सब हुआ १८४९ में।

अब अंत में सुनिये एक अत्यंत उपयोगी आविष्कार की बात। १९ वीं शताब्दी के मध्य में फ्रांस में नयी-नयी रेल्वे-लाइन बिछायी गयी। उस समय सिग्नलमैन को अपनी कोठरी से निकलकर सिग्नल के खंभे तक जाकर उस पर चढ़ना और सिग्नल गिराना पड़ता था। इस प्रकार सिग्नलमैन को अच्छा-खासा श्रम करना पड़ता था।

इस काम पर नियुक्त एक आलसी आदमी के दिमाग में एक नयी तरकीब सूझ गयी। उसने सिग्नल के खंभे पर वजन बांधकर एक तार का रस्सा अपनी कोठरी के साथ बांध दिया। जब भी संकेत देना होता, वह अपनी कोठरी में बैठे-बैठे ही रस्सा खींचकर सिग्नल गिरा देता और फिर उसे वापस ठीक कर देता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आओ — एक सौदा करें !

मैं तुम्हें अपने सारे
खिलौने देती हूं,
तुम मुझे दे दो—

टॉफियां और **मिठाइयां**

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि.
गोलागोकर्णनाथ, जि.खीरी, उ. प्र.

कपड़ों की उजली धुलाई के लिये !

चाँदनी

साबुन

निर्माता -
बरार ऑयल इंडस्ट्रीज
अकोला (महाराष्ट्र)

कु
कारि
उन्हों
कुछ स
अपना
अ
सामा
मशीन
अपने
स्वयं
करें अ
कर्मच
से कह
मांग
वह ब
वे क
हुई है
चाहि
डाल
चाह
तस्वी
दान
अख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुछ समय बाद [illegible] के बड़े अधिकारियों को इस तरकीब का पता चला, तो उन्होंने उस कर्मचारी की सराहना की। कुछ समय बाद यह तरीका सारी दुनिया में अपना लिया गया।

आप भी सोच लीजिये, कहीं ऐसी कोई सामान्य घटना आपकी जिंदगी में तो नहीं घटी है, जिससे [illegible] कोई नया आविष्कार हो सके? एक बात और। ज्यादातर ऐसे आविष्कार आलसी आदमी मेहनत से बचने के प्रयत्न में अनायास ही कर डालते हैं। सो पहले यह सोच लीजिये कि क्या आप इतने आलसी हैं?—**७५०, पांचपीपली, जमालपुर, अहमदाबाद—१**

★

कैलिफोर्निया (अमरीका) के ओकलेन नगर में रेफ्रिजरेटर तथा कपड़ा धोने की मशीनें आदि गृहोपयोगी चीजें बेचने वाले व्यापारी आर्थर फ्रीडमैन ने १५ कर्मचारियों के अपने स्टाफ के सामने एक अनोखी योजना रखी। उसने कहा कि कर्मचारी अपना वेतन स्वयं निश्चित करें; दिन के किस समय और कितने घंटे काम करना है, यह भी स्वयं निश्चित करें और अपनी इच्छा से छुट्टी ले लिया करें।

यह योजना सुनकर कई तो हंस पड़े, पर कई गंभीर हो गये। कुछ समय बाद एक कर्मचारी ने वेतन-वृद्धि की मांग की। फ्रीडमैन ने कहा कि कितनी बढ़ती चाहिये, कैशियर से कह दो। फिर कंपनी के ट्रक-ड्राइवर चार्ल्स रियान ने वेतन-वृद्धि की मांग की। उसकी मांग भी पूरी की गयी। वेतन बढ़ने के बाद से रियान सुबह जल्दी काम पर आने लगा। वह बाहर के काम भी निबटाता और दफ्तर में आकर पूछता कि और क्या काम है।

कई कर्मचारी ऐसे भी थे, जिन्होंने वेतन-वृद्धि की मांग नहीं की। कारण पूछने पर वे कहते—'हमें कठोर श्रम नहीं करना है।' सभी कर्मचारी-संघ के सदस्य हैं।

यह नयी पद्धति अपनाने के बाद से फ्रीडमैन को व्यापार में तनिक-सी भी हानि नहीं हुई है। उनकी मान्यता है कि कर्मचारियों को जो चाहिये, वह दोगे, तो उनसे तुम्हें जो चाहिये, वह मिलेगा।

०००

एक महाशय को चूहों ने बड़ा परेशान कर रखा था। उनकी हर चीज वे कुतर डालते। तंग आकर उन्होंने चूहेदान खरीदा। पर कंजूसी के कारण उनका दिल नहीं चाहता था कि उसमें रोटी का टुकड़ा डालें। संयोगवश अखबार में पनीर के एक टुकड़े की तस्वीर दिखाई दी। उन्होंने वही तस्वीर काटकर चूहेदान में रख दी। सुबह उठकर चूहेदान को देखा, तो विस्मित रह गये। उसमें पनीर के टुकड़े की तस्वीर के बराबर एक और अखबार से कतरा हुआ पुरजा रखा था और उस पर चूहे की तस्वीर बनी हुई थी।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र में एक बार फिर आत्मविश्वास जागा है
1975-76

काले धंधे के विरुद्ध अभियान

* तस्करों की बदमाशी के अड्डे खत्म। कुख्यात तस्कर सींखचों में बंद। 42 तस्कर फरार घोषित और उनकी जायदाद जब्त।
* शहरों में पड़ी खाली जमीन की सीमाबंदी। अधिकतम सीमा के अंदर आने वाली जमीन के हस्तांतरण पर रोक।
* रिहायशी मकानों का क्षेत्रफल निर्धारित। करों की चोरी रोकने के लिए आलीशान इमारतों का मूल्यांकन। छापों के परिणामस्वरूप जुलाई 1975 के बाद से प्रत्यक्ष करों की वसूली में 27 4 प्रतिशत की वृद्धि।
* स्वेच्छया प्रकटन योजना के अंतर्गत 2 लाख 50 हजार व्यक्तियों द्वारा 15 लाख 87 करोड़ रुपये से अधिक की आय और धन की घोषणा। लगभग $2\frac{1}{2}$ अरब रुपये के राजस्व की प्राप्ति।

डीएवीपी 76/90

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

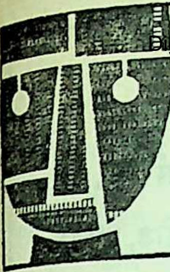

कुछ इधर से कुछ उधर से

१. पिछली बार जो सवाल पूछा गया था, वह काफी पुराना और कई रूपों में प्रचलित है। इसका हल कई तरह से निकाला जा सकता है। एक सीधा तरीका यह है कि एक गोल चक्कर में ३० चीजें रख दें और एक निश्चित स्थान से गिनती शुरू कर दें। जैसे ही तेरहवां स्थान आये, उसे काट दें। इस तरह यह देख लें कि कौन-से पहले १५ काट के निशान लगते हैं। उन्हीं स्थानों पर पुरुष खड़े कर दिये जायें, तो बारी-बारी से समुद्र में फेंक दिये जायेंगे।

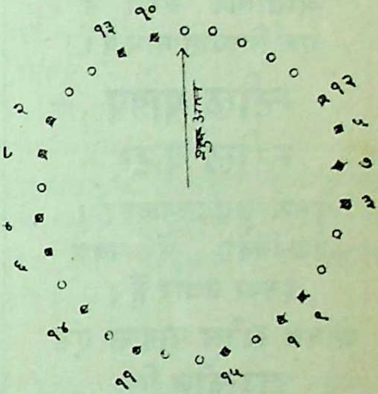

२.

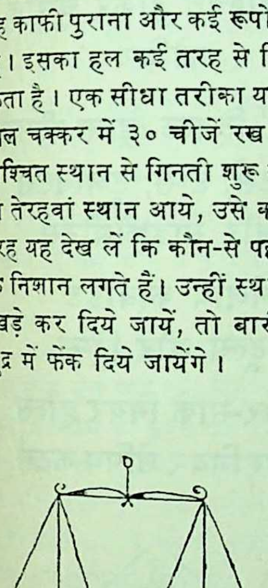

३. राजा साहब की इच्छा थी कि उनकी जायदाद पुत्र और रानी साहिबा में २ : १ के अनुपात में और पुत्री और रानी साहिबा में १ : ३ के अनुपात में बांटी जाये। यदि जायदाद इस तरह बांटी जाये कि ६ भाग लड़के को ३ भाग रानी साहिबा को और १ भाग लड़की को मिले, तो ऊपर बताया गया अनुपात लागू होगा।

४. अजय ने स्कूल में जो गलती की थी, उसका सही हल यह है :

५४५–४५४–५४–५–४ = २८

नये प्रश्न

१. हमने पिछली बार भी कहा था, अजय स्कूल में बड़ा ही लापरवाह है। उसे स्कूल में ६७३,१०६ को ४,७८३, २०५, ४६८, से गुणा करने का सवाल दिया गया। उसने बीच के चरणों को किसी और कागज पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेनिथ

औद्योगिक जगत में
एक विख्यात नाम है।

स्टील पाइप
स्टील कटर

इसके मुख्य उत्पादन हैं।
देश-विदेश में सर्वत्र
इनका प्रचार है।

जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इन्डस्ट्रीज लि.

खोपोली स्थित औद्योगिक निर्माण का स्थान अनुपम है, आदर्श है, उसके उत्पादन के द्वारा उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, निर्यात के द्वारा देश को विदेशी विनिमय की प्राप्ति होती है, और विविध करों के द्वारा देश के अर्थकोष की वृद्धि होती है।

सबकी सेवा में प्रस्तुत
जेनिथ स्टील पाइप्स
एंड इन्डस्ट्रीज लि.
खोपोली (कुलाबा) बंबई.

दि इंडियन टूल मैन्यूफैक्चर्स लि.
१०१, सायन रोड, सायन,
बंबई-४०००२२

सुनिश्चित होकर चुनाव
कीजिये

'डॅगर' ट्विस्ट ड्रिल्स रीमर्स,
कटर्स, टैप्स, टूलबिट्स
और माइक्रोमीटर्स

डॅगेलाय कार्बाइड
टूल्स और टिप्स

डॅगर-साके गियर हॉब्स
और गियर शेपिंग कटर्स

प्रिसिशन का प्रतीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके अपनी कापी में यह उत्तर लिखा : ३,२१९,६०–,२९९, ७४३,६०८। उत्तर तो सही है, पर वह एक अंक लिखना भूल गया। घर आने पर उसके भाई संजय ने उसकी गलती पकड़ी और बिना पूरा गुणा किये बता दिया कि कौन-सा अंक छूट गया था। देखें क्या आप बिना गुणा किये बता सकते हैं कि कौन-सा अंक छूट गया था ?

२. कनाडा में विश्व ओलिंपिक में एक समस्या खड़ी हो गयी। टेनिस के सिंगल चैंपियनशिप के लिए २४ खिलाड़ी भाग लेने आये। वहां के प्रबंधकर्ता की समझ में नहीं आ रहा था कि विजेता का पता लगाने के लिए कितने मैच खेले जाने चाहिये। क्या आप कुछ मदद कर सकते हैं ? हालांकि तब तक तो वह कोई न कोई हल निकाल ही चुका होगा।

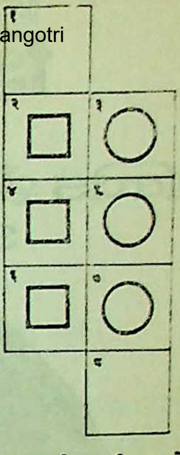

३. रसोई में एक समस्या खड़ी हो गयी है। शीला यह चाहती है कि वर्गाकार डिब्बे जो २,४,६ स्थिति में हैं, ३, ५, और ७ में आ जायें और गोलाकार डिब्बे २, ४, ६ में आ जायें। वर्गाकार को पहले हटाना होगा तब गोलाकार, इस तरह बारी-बारी कूदने की अनुमति नहीं है। पड़ोस के खाली स्थान में ही हटाया जा सकता है। क्या आप यह कर सकते हैं ?

★

सन ७५ के उत्तरार्ध में जब वेस्ट इंडीज और आस्ट्रेलिया के बीच टेस्ट-शृंखला का दूसरा टेस्ट मच चल रहा था, दक्षिण आस्ट्रेलिया के कुछ शोधार्थियों ने यह पता लगाना चाहा कि विश्व का सबसे तेज बोलर कौन है। अपने शोध से वे इस परिणाम पर पहुंचे कि आस्ट्रेलिया का जेफ थाम्पसन संसार का सबसे तेज बोलर है। उसके द्वारा फेंके गये गेंद की गति प्रति घंटा ९९.६८८ मील की थी। दूसरा नंबर वेस्ट इंडीज के एंडी राबर्ट का है। उसकी गति ९३.६ की थी। तीसरे नंबर पर है ९२.३ की गति से गेंद फेंकने वाला वेस्ट इंडीज का माइकल होल्डिंग। आस्ट्रेलिया के तेज बोलर डेनिस लीली की गति ८६.५ थी और वेस्ट इंडीज के बोलर कीथ वायूस की गति ८५.२। गतियों को नापने के लिए फोटोसोनिक कैमरे का उपयोग किया गया था।

—हसमुखराय व्यास

०००

इस समय दुनिया में सबसे अधिक पारिश्रमिक पाने वाली मॉडल है, लेखक अर्नेस्ट हेमिंग्वे की पोती मार्गाड हेमिंग्वे। २१ वर्ष उम्र और ६ फुट कद की मार्गाड को अमरीका की इत्र-विक्रेता कंपनी फेबरजे ने अपने नये इत्र 'बेब' के प्रचार में माडल बनने के लिए १० लाख डालर का कंट्राक्ट दिया है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पानी के साथ बहा देती है. इसलिये अब बाल धोने के लिये लाइये...

卐 स्वस्तिक
शिकाकाई
शैंपू साबुन

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिक्विड शैंपू के सभी गुणों से युक्त...
और खर्च कम!

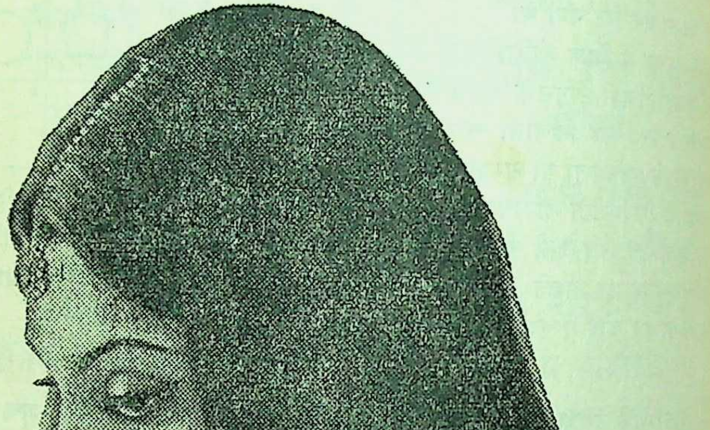

卐 स्वस्तिक शिकाकाई शैंपू साबुन में शिकाकाई मिला है—भारतीय महिला के मनोरम बालों का पारम्परिक रहस्य.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिरी मांग

बलवीर सिंह

एक बूढ़ा आदमी था। बुढ़िया बीवी के सिवा उसका और कोई नहीं था। दोनों ने अपना सारा जीवन गरीबी में बिताया था। बूढ़ा जंगल से लकड़ियां काट-कर बेचता और अपनी कमाई में रूखी-सूखी खाकर संतोष कर लेता। पर उसकी पत्नी कई बार अपनी किस्मत को कोसती कि उनकी सारी उम्र गरीबी में ही बीती है।

एक दिन बूढ़े ने जंगल में जाकर पीपल का पेड़ काटने के लिए कुल्हाड़ी उठायी ही थी कि पीपल मनुष्य की आवाज में बोला—'न-न, मुझे मत काटो!'

बूढ़े का हाथ रुक गया और वह हैरानी से पीपल को देखने लगा।

तभी पीपल ने कहा—'धन्यवाद! मेरी जान बख्शने के बदले में, जो चाहो, मांग लो।'

बूढ़ा आंखें फाड़े पीपल को देखता रहा। फिर उसे डर लगा कि कहीं वह कोई भूत-प्रेत न हो। उसने वहां से चले जाने में ही अपनी भलाई समझी।

घर पहुंचकर उसने अपनी बीवी को सारी बात बतायी। वह बोली—'निरे बुद्धू हो तुम तो, जो खाली हाथ लौट आये! पीपल से कुछ मांगा क्यों नहीं?'

'मैं डर गया था।'

'डर कैसा?.....उसमें कोई देवता रहता होगा। अभी वापस जाओ और उससे बैलों की एक जोड़ी और एक बैलगाड़ी मांगो। बैलगाड़ी पर हम लकड़ियां और दूसरा सामान ढोया करेंगे।'

बूढ़ा वापस पीपल के पास गया और बोला—'तुमने मुझे कुछ मांगने के लिए कहा था न!'

'हां-हां। बोलो, क्या चाहिये?'

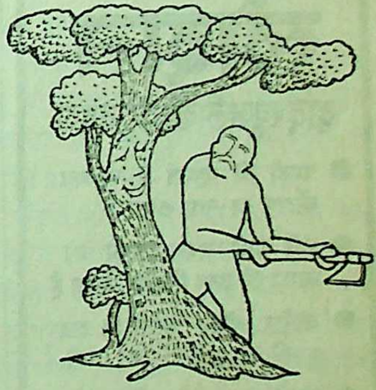

चित्र : टी. ए. राणा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिंक चेन

जिसकी एक-एक कड़ी मजबूत, परखी हुई और पूर्णतः विश्वसनीय है।

सभी उद्योगों व वाहनों में उपयुक्त

एलोय स्टील चेन एक विशेषता

इंडियन लिंक चेन मैन्यु. लि., भांडुप, बंबई-७८

जालिम लोशन

दाद खुजली की पेटेन्ट दवा

- चमड़ी की गहराई में पहुंचकर कीटाणु का नाश करता है
- सड़ी गली खराब चमड़ी को कागज की तरह निकाल फेंकता है
- 'जालिम लोशन' लगाते ही दाद खुजली की परेशानी मिट जाती है
- कपड़ों पर दाग नहीं लगता

हर जगह मिलती है

ORICHEM, RAO (INDORE)

लिचेन्सा

इस्तेमाल कीजिये।

1613D-HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'एक बैलगाड़ी और बैलों की एक जोड़ी।'

'ठीक है। घर जाओ। तुम्हारी मांग पूरी होगी।'

किसान घर पहुंचा, तो क्या देखता है कि वहां एक नयी बैलगाड़ी और दो जवान बैल खड़े हैं। पास ही उसकी पत्नी खड़ी है, वह बहुत खुश नजर आ रही है। बूढ़े को भी बेहद खुशी हुई।

'हमारी तो किस्मत ही पलट गयी।' बुढ़िया ने कहा–'बैलगाड़ी के आ जाने से अब हमारी कमाई बढ़ने लगेगी। हम किसी के साथ साझेदारी में खेती भी करेंगे। पर मुझे अपने घर की चिंता है। वह इतना पुराना हो चुका है कि किसी भी दिन गिर सकता है।'

'कमाई ज्यादा होने पर हम एक दिन नया घर बना लेंगे।' बूढ़े ने कहा।

'पर उस पीपल से ही नया घर क्यों नहीं मांग लेते?' बुढ़िया ने कहा–'एक बार फिर जाओ और नया घर मांगो।'

'बार-बार मांगना ठीक नहीं लगता। हमने पहले ही उससे बहुत कुछ पा लिया है।'

'नहीं, जाकर उससे घर भी मांगो।' बुढ़िया ने आज्ञा-सी देते हुए कहा।

पीपल के पास जाकर बूढ़े ने कहा–'मेरी घरवाली ने भेजा है कि मैं तुमसे नया घर मांगूं। मैं तो नहीं चाहता था, मगर......'

'कोई बात नहीं', पीपल ने कहा–'जाओ, तुम्हारी मांग पूरी होगी।'

लौटने पर बूढ़े ने अपने पुराने घर की जगह नया घर देखा।

उसके आते ही बुढ़िया ने कहा–'नया घर तो मिल गया, पर उसमें सामान तो वही पुराना है। जाकर पीपल से कहो कि हमें सामान भी नया चाहिये।'

'वह हम खुद खरीद लेंगे।'

'तुम तो निरे बुद्धू ही रहे! जब मुफ्त में मिल सकता है, तो खरीदने की क्या जरूरत है? जाओ, वरना ऐसा मौका फिर हाथ नहीं आयेगा।'

बूढ़े को विवश होकर जाना पड़ा। इस बार भी मांग पूरी हुई।

'एक चीज तो मैं भूल ही गयी', उसके लौटते ही बुढ़िया ने कहा–'अभी उलटे कदम वापस जाओ और कुछ पैसे मांगो, जिनसे हम व्यापार कर सकें। बिना पैसों के हम खरीदेंगे क्या और बेचेंगे क्या? तुम इतना भी नहीं सोच सकते? हर बात मुझे ही तुम्हें बतानी पड़ रही है!'

इस बार भी पीपल ने बूढ़े की मांग पूरी की। बूढ़े ने जितने पैसे मांगे थे, उससे कहीं ज्यादा उसे मिले।

घर पहुंचते ही वह पत्नी से बोला–'देखो, अब और कुछ मत मांगना। हमें सभी कुछ मिल गया है। किसे पता था कि बुढ़ापे में ये दिन देखने नसीब होंगे।'

बुढ़िया बोली–'मेरे कहने पर ही सब मिला है। वरना तुम तो खाली हाथ लौट आये थे! अब हमारी बाकी जिंदगी सुख से बीतेगी। पर...... पर अगर हमें काम-धाम करना पड़ा तो जिंदगी सुख से कैसे बीतेगी? सुख से जीने के लिए एक चीज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राष्ट्र में एक बार फिर आत्मविश्वास जागा है
1975-76

नौजवानों के लिए नयी सुविधाएं और नये अवसर

* **10,490** होस्टलों को नियंत्रित मूल्यों पर आवश्यक वस्तुएं पहुँचने से **9,56,000** से अधिक विद्यार्थियों को लाभ।

* छपाई का सफेद कागज रियायती दरों पर सप्लाई करने से किताबों और कापियों के मूल्यों में कमी। कालजों और स्कूल में **88,600** पुस्तक-बैंक कार्यरत।

* **103** व्यवसाय और **216** उद्योग अब अप्रेंटिसशिप योजना के अधीन।

* **18,800** सीटें बढ़ने से अप्रेंटिसशिप योजनाओं के अंतर्गत कुल **1,33,900** से अधिक सीटें। **1,28,900** सीटों पर अप्रेंटिस काम कर रहे हैं, जिनमें से **28,000** (**20** प्रतिशत से अधिक) अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति तथा अन्य पिछड़े वर्गों के हैं।

डीएवीपी 76/91

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और मांगनी पड़ेगी।'

'बस-बस, अब मैं और कुछ नहीं मांगूंगा।'

'फिर वही मूर्खता!' बुढ़िया सख्ती से बोली–'जाओ और उससे कहो कि हमें काम करने के लिए नौकर-चाकर चाहिये। तो कुछ ऐसा करो कि गांव के सभी लोग हमारे नौकर बन जायें।'

'यह तो अन्याय होगा', बूढ़े ने कहा– 'नहीं, मैं यह चीज कभी नहीं मांग सकता, बिलकुल नहीं मांग सकता।'

'अगर मांगने से तुम्हारी जबान घिसती है, तो मैं मांगने को तैयार हूं। चलो, मुझे लेकर चलो वहां।'

जब बुढ़िया ने पीपल के सामने अपनी मांग रखी, तो पीपल ने कहा–'ऐसी मांग तुम्हें नहीं करनी चाहिये।'

'तुम्हें इससे क्या?' बुढ़िया ने कहा– 'अगर तुम मांग पूरी नहीं करोगे, तो हम तुम्हें काट डालेंगे।'

पीपल कुछ क्षण चुप रहा। फिर उसने आह भरकर कहा–'यह बात कहकर तुमने समझो मुझे काट डाला है। अब मुझे और क्या काटोगी।'

'तो हमारी मांग पूरी नहीं करोगे?' बुढ़िया ने कहा।

पीपल ने कोई जवाब नहीं दिया। बुढ़िया ने फिर पूछा, तो भी वह चुप ही रहा।

'कल आकर इसे काट डालना, समझे?' बुढ़िया ने अपने पति से कहा और वापस चल दी।

गांव आकर उसने देखा कि उसका घर नये के बजाय वही पुराना था, वहां न बैल थे, न बैलगाड़ी थी, और घर का नया सामान भी नदारद था।

चलती बस में बतियाती दो औरतों में से एक को अचानक याद आया कि उसने टिकट नहीं लिया। वह टिकट खरीदने कंडक्टर के पास जाने को उठी। दूसरी ने कहा–'अब तो तुम्हारी मंजिल आ ही गयी है। वैसे ही उतर जाना।' पहली यह कहती हुई आगे बढ़ गयी– 'नहीं, ईमानदारी हमेशा फायदेमंद होती है।' और जब टिकट लेकर लौटी तो फिर बोली– 'मैं कह रही थी न, ईमानदारी हमेशा फायदेमंद होती है। मैंने कंडक्टर को एक रुपये का नोट थमाया था, उसने गलती से उसे दो का समझकर उसी हिसाब से बाकी पैसे चुकाये हैं।'

०००

सुपुत्र को मोटर में लंबी यात्रा करने का शौक हुआ। चलते समय उसने अपने पिता से कहा–'प्रार्थना कीजिये मैं सुरक्षित वापस आ जाऊं और कोई दुर्घटना न हो।'

पिता ने कहा–'मैं प्रार्थना करता रहूंगा। पर याद रखो कि मेरी प्रार्थना केवल २५ मील प्रतिघंटे की गति का साथ दे सकती है, अधिक का नहीं।'

–हरपाल अरोड़ा

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रांगध्रा केमिकल वर्क्स लिमिटेड

'निर्मल,' तीसरी मंजिल, २४१ बैकबे रिक्लेमेशन,
नरीमन पाइंट, बंबई ४०० ०२१

तार : SODACHEM

फोन : २९२४०७-२९१२१४
२९३२३५-२९१११

भारत में हैवी केमिकल्स के क्षेत्र में अग्रणी
अब अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी प्रस्तुत :

* अपग्रेडेड इलमनाइट *
(सिथेटिक रूटाइल ९०-९२ TiO_2

हमारे बनाये हुए रसायन :

* कास्टिक सोडा
* सोडा एश
* सोडियम बाइकार्बोनेट
* अमोनियम बाइकार्बोनेट
* कैल्शियम क्लोराइड
* ट्राइक्लोरो एथिलीन
* लिक्विड क्लोरीन
* हाइड्रोक्लोरिक एसिड
* साल्ट *

फ्लू, सर्दी-जुकाम और मलेरिया बुखार का बढ़िया इलाज !

आयुर्वेदिक औषधि **त्रिशून** गोलियां

इन तकलीफों को दूर रखने के लिए 'त्रिशून' की एक गोली दिन में तीन बार पानी चाय, या काफी के साथ लीजिए।

१० गोलियां एक पैकबन्द स्ट्रीप में मिलती हैं।

बनाने वाले : **झण्डू फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड**
गोखले रोड साउथ, बंबई ४०००२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मामूली होटल में भोजन

कृष्णचंद्र गुप्त

इस साल के शुरू के महीनों में अमरीकी राष्ट्रपति फोर्ड चुनाव-प्रचार के सिलसिले में विस्कान्सिन राज्य के मिलवाकी नगर की यात्रा करने वाले थे। उन्हें सूझा कि यदि वे उस शहर के किसी मामूली होटल में जाकर खाना खायें, तो आम मतदाताओं पर अच्छा असर पड़ेगा। सो उन्होंने घोषणा करवा दी कि वे फलां दिन दुपहर को मेडर्स नाम के होटल में खाना खायेंगे। जनता पर इसका क्या प्रभाव पड़ा, यह कहना कठिन है; मगर राष्ट्रपति के सुरक्षा-कर्मचारियों में इससे खलबली मच गयी।

भोजन की तारीख से पांच दिन पहले गुप्त पुलिस (सीक्रेट सर्विस) के दो कर्मचारी मेडर्स में खाना खाने पहुंचे। खाते-खाते उन्होंने बड़ी चतुराई से होटल का निरीक्षण किया। तीन दिन बाद गुप्त पुलिस की 'राष्ट्रपति सुरक्षा यूनिट' तथा ह्वाइट हाउस के कई कर्मचारी एक साथ आ धमके और उन्होंने एक 'संचालन-चौकी' होटल में कायम की। होटल में एक रेडियो ट्रांसमिटर लगाया गया; चार फोन लगाये गये, जिनके जरिये सीधे ह्वाइट हाउस से संपर्क किया जा सकता था।

इलेक्ट्रानिक यंत्रों की मदद से तमाम होटल की तलाशी ली गयी कि कहीं कोई बम-वम तो नहीं छिपाया गया है। खिड़कियों और झरोखों में से किस-किस कोण से गोलियां आ सकती हैं, इसकी भी जांच की गयी। इसका नक्शा तैयार किया गया कि जिस मेज पर बैठकर राष्ट्रपति जीमेंगे, उससे निकटतम दरवाजा किस ओर कितनी दूर है। होटल का एक कमरा पूरी तरह खाली करवा लिया गया, ताकि खतरे की हालत में अंगरक्षक-दल सब-मशीनगनों की छांव में राष्ट्रपति को वहां सुरक्षित पहुंचा सके।

गुप्त पुलिस ने होटल के तमाम कर्मचारियों तथा अक्सर वहां आने वाले ग्राहकों के नाम-पते लेकर उनके रेकार्ड की जांच की। देखा गया कि कहीं ये लोग उन ३८,००० व्यक्तियों की सूची में तो नहीं हैं, जिनसे राष्ट्रपति के लिए खतरा संभावित माना जाता है। (आपको आश्चर्य होगा कि इस सूची में हास्य-अभिनेता ग्राउचो मार्क्स का नाम भी था, क्योंकि एक बार उन्होंने अपने कार्यक्रम में निक्सन के बारे में एक अविवेकपूर्ण मजाक कर दिया था। मगर उन दो स्त्रियों के नाम इस सूची में न थे, जिन्होंने फोर्ड पर हमला करने की कोशिश की।) विस्कान्सिन राज्य के २७५ से लेकर ३०० तक 'खतरनाक' व्यक्तियों पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड कार्यालय

लालबहादुर शास्त्री मार्ग, भांडुप, बंबई ७८ एन. बी.

केबल: 'लकी' भांडुप   फोन : ५८४३८१

१. **नानफेरस यूनिट**

सेमिस रोलिंग विभाग :

नानफेरस शीत, स्ट्रिप और काइल,
नानफेरस प्लेट और सर्कल

एलाय और कास्टिंग विभाग :

ऐंटिफ्रिक्शन बेयरिंग मेटल्स
गनमैटल्स और ब्रोजेन्स, ब्रेजिंग सोल्डर्स और टिन सोल्डर्स फाइन जिंक डाइकास्टिंग एलाय्स **'इस्माक ३,'** अल्युमिनियम बेस्ड डाइकास्टिंग एलाय्स, ब्रास और ब्रोन्ज राड्स सालिड कोर्ड, फिनिश्ड कास्टिंग रफ और मशीन्ड।

२. **फेरस यूनिट :**

फाउंड्री डिविजन

एस० जी० आयर्न और स्पेशल स्टील कास्टिंग्स
मेलिएबल आयर्न कास्टिंग्स

आइ० एस० एस०, बी० एस० एस०, एस० एस० आइ० एम० के पेसिफिकेशन्स तथा ग्राहक की विशेष आवश्यकता के अनुसार सप्लाई किये जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खास नजर रखने की व्यवस्था की गयी।

इस बीच ह्वाइट हाउस के कर्मचारियों का एक और दल होटल में आ पहुंचा। उसने होटल-मालिक से बिना पूछे ही तय कर दिया कि राष्ट्रपति की टोली के भोजन का खर्च ७।। डालर प्रति व्यक्ति के हिसाब से चुकाया जायेगा; जबकि होटल के दस्तूर के मुताबिक उसका दाम ११ डालर प्रति व्यक्ति बैठता था।

आखिर वह ऐतिहासिक दिन भी आ पहुंचा। सुबह से ही होटल पर मोर्चाबंदी हो गयी। दो सुरक्षा-अधिकारी और एक स्वास्थ्य-विभागीय इंस्पेक्टर पाकशाला में पाचक की अगल-बगल में खड़े हो गये, ताकि खाद्य पदार्थों से कोई छेड़छाड़ न कर सके। होटल के भीतर, होटल की छत पर तथा आस-पास के मकानों की छतों पर वर्दीधारी और सफेदपोश पुलिस एवं सुरक्षा-अधिकारी तैनात हो गये। बहुत-से सफेदपोश बाहर आ जुटी भीड़ में शामिल होकर उस पर नजर रखे हुए थे। ये लोग सुरक्षा-दल के मनोवैज्ञानिक दस्ते (साइको स्क्वाड) के सदस्य थे।

निश्चित समय पर राष्ट्रपति महोदय २३ कारों के कारवां के साथ पधारे। आपाधापी में उन्होंने भोजन किया और रवाना हो गये। कुल छब्बीस मिनट वे वहां रहे।

इतनी जबर्दस्त सुरक्षा-व्यवस्था की जाने के दो कारण थे। एक यह कि श्री फोर्ड राष्ट्रपति हैं। दूसरा यह कि वे इस साल होने वाले राष्ट्रपति-चुनाव में उम्मीदवार भी हैं। राष्ट्रपतियों की सुरक्षा की व्यवस्था तो हमेशा ही बड़ी सावधानी और मुस्तैदी से की जाती है। पर राष्ट्रपति-पद के प्रत्याशियों की सुरक्षा की सरकारी व्यवस्था नयी चीज है।

सन १९७२ के चुनाव में उम्मीदवार गवर्नर जार्ज वैलेस को एक चुनाव-सभा में गोली मारकर घायल कर दिया गया था, जिससे वे कमर से नीचे के अवयवों पर काबू खो बैठे और अभी भी पहियेदार कुर्सी का उपयोग करने को विवश हैं। इस प्रकार के वाकयों की रोकथाम के लिए यह तय किया गया कि अब से राष्ट्रपति-पद के प्रत्याशियों की सुरक्षा की व्यवस्था सरकार की ओर से रहेगी। इस पर इस साल ८० लाख डालर (लगभग ६ करोड़ रुपये) खर्च होने की संभावना है।

सन १९६४ में जब ऐसी कोई व्यवस्था नहीं थी, रिपब्लिकन पार्टी के उम्मीदवार बैरी गोल्डवाटर को अपनी सुरक्षा की व्यवस्था पर ४ लाख डालर खर्च करने पड़े थे और उनका कहना है, वह खर्चा बेकार नहीं गया। ओहायो में सचमुच एक सिरफिरा आदमी उन्हें गोली का निशान बनाने आया था।

लगभग सभी उम्मीदवार इस सुरक्षा-व्यवस्था के पक्ष में हैं; हालांकि वर्ष के आरंभ में फ्रेड हैरिस नामक उम्मीदवार ने सुरक्षा-व्यवस्था का लाभ उठाने से इन्कार कर दिया था। बाद में वे उम्मीदवारी से भी हट गये।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब की संस्कृति, कला, साहित्य, और जनजीवन का सचित्र दर्पण

जागृति (हिंदी मासिक)

अनुशासन पर्व के युग में ही नहीं, पंजाब ने इतिहास के हर दौर में अनुशासन को आत्मसात किया है।

अनुशासन की परम्परा यहां शताब्दियों से इसकी बहुपयोगी जल-धाराओं के साथ-साथ गतिमान है। फलस्वरूप पंजाब को मिला है वैभवपूर्ण अतीत और उसकी नींव पर परिश्रम के बलबूते पर सुखद-सुनहरा भविष्य।

★

इस प्रदेश के पर्व और यहां का साहित्य परस्पर सापेक्ष रूप से सूत्रबद्ध हैं।

★

पंजाब की खुशहाली आपको जरूर आकर्षित करती होगी और आप चाहेंगे कि आपको इस बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी मिले।

जागृति हर माह देश-विदेश की कविता, कहानियों और आलोचना लेखों के अतिरिक्त, प्रांत के विकास एवं इसकी प्रगति के बारे में तथ्यात्मक सामग्री उपलब्ध करवाती है और वह भी कम पैसों में।

पृष्ठ संख्या : ५२ मूल्य एक प्रति : साठ पैसे सालाना-सात रुपये

संपादकीय पत्राचार के लिये—
संपादक जागृति हिंदी मासिक
लोक संपर्क विभाग, पंजाब
कोठी नं. : १६६, सेक्टर ११ ए,
चंडीगढ़-१६००११

अंक, चंदा, एजेन्सी और विज्ञापन के नियमादि के लिये सम्पर्क
विक्रय अधिकारी
लोक संपर्क विभाग, पंजाब
चंडीगढ़-१६०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मौत की हार

कु. रजनी वर्मा

अगस्त का महीना, कृष्णपक्ष की अंधेरी रात, बाढ़ से उफनती नर्मदा नदी की प्रलयकारी आवाज, बिना रेलिंग का लंबा-सा नर्मदा नदी का फिसलन-भरा पुल और उस पर से गुजरते इक्के-दुक्के लोग तथा मैं, माताजी और छोटी बहन मंगला। रात के लगभग साढ़े दस बजे थे और हम लोग मंडला से प्रोग्राम देखकर महाराजपुर अपने घर लौट रहे थे। नींद के मारे मेरा बुरा हाल था। मैं सबके पीछे-पीछे उनींदी-सी चल रही थी कि मां ने कहा—'रजनी, हमारे साथ हाथ पकड़कर चलो जल्दी-जल्दी!'

मैंने जवाब दिया—'रोज जब हम अकेले यहां से स्कूल जाते हैं, तब कौन हाथ पकड़ता है? हम ठीक हैं, आप चलिये।' और मैं पुनः नींद के वशीभूत चलती रही।

अचानक मुझे होश आया, तो मैंने अपने आपको नर्मदा की भीषण तूफानी धाराओं के बीच तेजी से बहते पाया। मैं पुल से गिर गयी थी। तैरना जानने के कारण उस अवस्था में भी मैंने होश कायम रखा। पानी पीते-पीते, बहते-बहते मैं चारों ओर विकराल धाराओं के बीच मौत का तांडव नृत्य देख रही थी। अचानक सामने मुझे किसी टापू का आभास हुआ और मेरे पैर किसी पत्थर से टकराये। जीने की अदम्य लालसा ने मुझे उस टापू को पकड़ने की प्रेरणा दी और किसी प्रकार मैंने उसके उभरे हुए पत्थर को पकड़ लिया। लेकिन पीछे से ठेलती पानी की तूफानी धार मुझे उस पर चढ़ने नहीं दे रही थी और पानी के निरंतर पड़ते थपेड़े अपनी संपूर्ण शक्ति से मुझे मौत के मुंह में ढकेलने का प्रयत्न कर रहे थे। मेरा हाथ छूटा जा रहा था, घुटी-घुटी आवाज में मैं सहायता की प्रार्थना कर रही थी। पर किससे? ......और मेरा हाथ छूट गया। मैं बहने लगी।

यह क्या! किसी ने मुझे खींचकर टापू पर चढ़ाने की कोशिश की। किसी तरह

चित्र : चरन शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या आपको डाकघर बचत बैंक से कोई शिकायत है?

कृपया अपनी शिकायत अथवा सम्बन्धित 'डाकघरों के अधीक्षक' (सुपरिन्टेंडेन्ट आफ पोस्ट आफिसेज) को भेजें।

अगर आपको १५ दिन के भीतर संतोष-जनक उत्तर न मिले तो महाडाकपाल (पोस्ट-मास्टर जनरल) को लिखें।

पिन कोड से डाक भेजें

डाक-तार

डी ए वी पी ७६/१३१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टापू पर पहुंचकर मैंने अपने जीवनदाता की ओर देखा। एक काले-कलूटे आदमी को अंधेरे में अपने सामने पाकर मैं कांप गयी। लेकिन तभी उसका स्नेहिल स्वर सुनकर मेरा सारा भय जाता रहा–'अरे! डरो मत बेबी! पहचाना नहीं क्या मुझे। मैं तो तुम लोगों के पीछे ही आ रहा था। तुम जैसे पुल से गिरीं, मैं भी वहीं से कूद पडा। अच्छा बताओ, तुम्हें चोट-वोट तो नहीं लगी?' और वह मेरे सिर और पीठ पर प्यार से हाथ फेरने लगा।

मैंने पुल की ओर देखा, जो हमसे डेढ़ फर्लांग दूर था। उस पर बहुत-से आदमी भागते, टार्च घुमा-घुमाकर कुछ देखते नजर आये। हम दोनों ने सारी शक्ति से चिल्लाकर उन्हें टापू पर अपनी उपस्थिति की सूचना दी। लगभग चार घंटे के अथक प्रयास के बाद रस्से से बंधी एक नाव लेकर दो आदमी हम तक पहुंचे। जिस समय हम लोग पानी से निकलकर पुल पर चढ़े, सुबह के पांच बज रहे थे।

बाद में मालूम हुआ कि पहले भी उसी जगह कई मौतें हो चुकी हैं। जिस टीले पर हम बैठे थे, वह अंतिम टीला था और उसके बाद यदि कुछ था तो केवल पानी, पानी और पानी।

बात दस साल पुरानी है, पर आज भी वहां से गुजरते समय एक प्रश्न सामने खड़ा हो जाता है–यदि वह आदमी उस समय न आ पहुंचता तो? और फिर मैं ईश्वर का अस्तित्व स्वीकारने को बाध्य हो जाती हूं।

–मंडला, म. प्र.

पतझड़ और बहार

दो दार्शनिक दो अलग नदियों के तटों पर रहते थे–एक रेतीली सूखी नदी के किनारे, दूसरा जलपूरित नदी की नीलधारा के तट पर।

एक दिन दोनों मिले। विचार-विनिमय करते हुए उनमें से एक बोला–जीवन शुष्क है। दूसरा वाला–जीवन सरस है। फिर आपस में सहमत होते हुए दोनों बोले–वास्तव में जीवन के दो दर्शन हैं एक पतझड़ का, दूसरा बहार का।

इस बात को ऋतुरानी की दोनों सखियों ने सुना। पतझड़ के गले में पीछे से बांहें डालते हुए बहार ने कहा–कितना भ्रम है इन लोगों को। क्या हम-तुम अलग-अलग हैं! बताओ, क्या तुम्हारे बिना मैं कभी आयी हूं? हम दोनों ही मिलकर तो ऋतुरानी को सजाते हैं। इतना ही अंतर है न हममें! तुम पुराने कपड़े उतारती हो, मैं नये कपड़े पहनाती हूं–हैं तो हम एक ही।

–योगेश्वर देव

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसी के बुलबुले

आधी रात को टेलिफोन की घंटी बज उठी और डाक्टर साहब को एक अपरिचित रोगिणी को देखने दो मील दूर जाना पड़ा। रोगिणी को खास कुछ तकलीफ नहीं थी, थोड़ा बुखार था। डाक्टर ने दो-एक दवाइयां दीं, फिर खीझ-भरी आवाज में रोगिणी के पति से पूछा—'क्या आप दिन में फोन नहीं कर सकते थे ?'

उत्तर मिला—'असल में डाक्टर साहब, हम लोग गरीब हैं। हमने सोचा, दिन में तो आप बहुत व्यस्त रहते हैं। दिन में आपकी फीस बहुत ज्यादा होगी। सो जब आप कम व्यस्त हों, तब बुला लें। फीस कम देनी पड़ेगी।'

०००

मेडिकल कालेज में प्रोफेसर साहब लेक्चर दे रहे थे। एक आदमी के शरीर के ढांचे का चित्र दिखाकर बोले—'यह आदमी लंगड़ाकर चलता है; क्योंकि इसकी एक टांग दूसरी से छोटी है।' फिर एक छात्र की ओर मुड़कर उन्होंने पूछा—'ऐसी अवस्था में तुम क्या करोगे?'

'और क्या कर सकता हूं प्रोफेसर साहब, मैं भी लंगड़ाकर चलूंगा।' छात्र ने विवशता जताते हुए उत्तर, दिया।

०००

अमरीका से नवीनतम तकनीकें सीखकर लौटे एक सर्जन महाशय इस बात के पक्के समर्थक थे कि आपरेशन के बाद रोगी को जल्दी से जल्दी सामान्य जीवन शुरू कर देना चाहिये। एक रोगी को यह बात समझाते हुए उन्होंने कहा—'मैं चाहता हूं कि आपरेशन के चार घंटे बाद आप बिस्तर पर उठ बैठें और टांगें पलंग से नीचे लटका लें। मैं चाहता हूं, दुपहर के भोजन के बाद आप चंद मिनटों के लिए अपनी टांगों के बल खड़े हों। मैं चाहता हूं, रात के भोजन तक आप अपने कमरे में टहलना शुरू कर दें।'

'मगर डाक्टर साहब ..... आपरेशन के दौरान तो मैं लेटा रह सकता हूं न ?' घबराये हुए रोगी ने पूछा।

०००

बूढ़ा आदमी मृत्युशय्या पर पड़ा था। आस-पास बैठे उसके पारिवारिकजन और मित्र उसे प्रसन्नचित्त रखने की कोशिश कर रहे थे।

'तुम बहुत अच्छे दिख रहे हो आज !' पत्नी ने उत्साह-भरी आवाज में कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

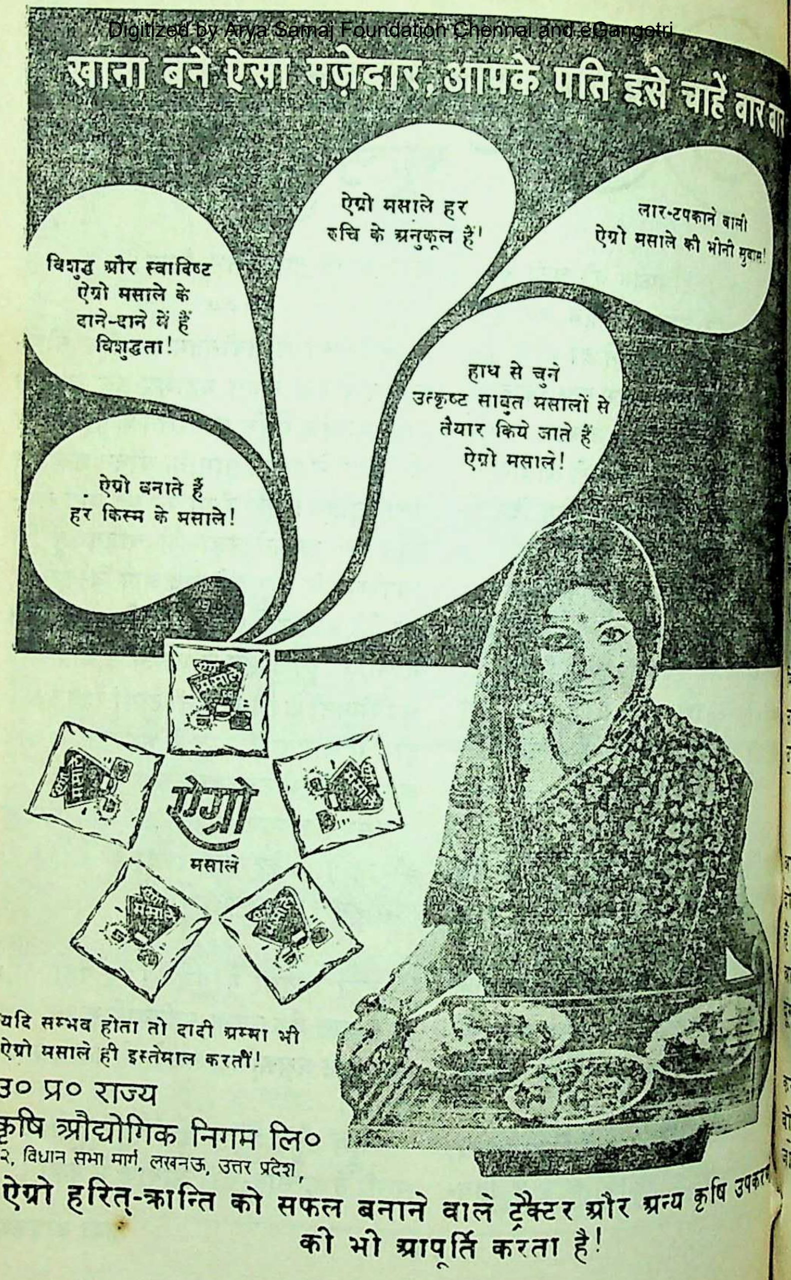

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'आप काफी आराम में नजर आ रहे हैं, पिताजी!' बेटे ने कहा।

'तुम्हारी आंखें साफ हो गयी हैं, सांस भी स्वाभाविक चल रही है, भैया!' बहन ने कहा।

'धन्यवाद!' बूढ़ा बोला–'यह जानकर मुझे बड़ी खुशी हुई कि मैं नीरोग मर रहा हूं।'

०००

प्रोफेसर साहब मनोरोगों के बारे में पढ़ा रहे थे। एक विद्यार्थी ने एक सवाल पूछने की अनुमति मांगी। अनुमति मिल जाने पर वह बोला–'प्रोफेसर साहब, आपने केवल अपसामान्य (एबनार्मल) व्यक्तियों के बारे में हमें बताया! मगर जो सामान्य (नार्मल) हों उनका क्या करें?'

'अगर कोई सामान्य (नार्मल) व्यक्ति मिल जाये, तो हमारे पास ले आइये। हम उनका इलाज कर देंगे।' प्रोफेसर साहब ने उत्तर दिया।

०००

एक रोगी मानस-चिकित्सक के पास आया और बताने लगा कि रोज रात को तीन सिर वाले दो राक्षस मुझसे लड़ने आते हैं। चिकित्सक ने उसकी बात सुनी और आश्वासन दिया कि मैं आपका इलाज कर दूंगा–केवल पांच हजार रुपये लगेंगे।

पांच हजार की बात सुनते ही रोगी उठकर दरवाजे की ओर चल दिया और बोला–'इससे अच्छा तो यह है कि मैं घर जाकर राक्षसों से सुलह कर लूं।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

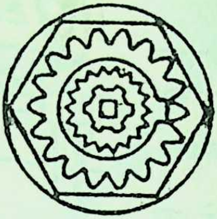

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाने के लिए विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां 'ब्रोच' उत्पादन परमावश्यक होता है। डॅगर-फोर्स्ट टूल लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये 'ब्रोच' से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.,
पहिला पोखरण रास्ता,
थाना (बंबई)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Regd. No.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

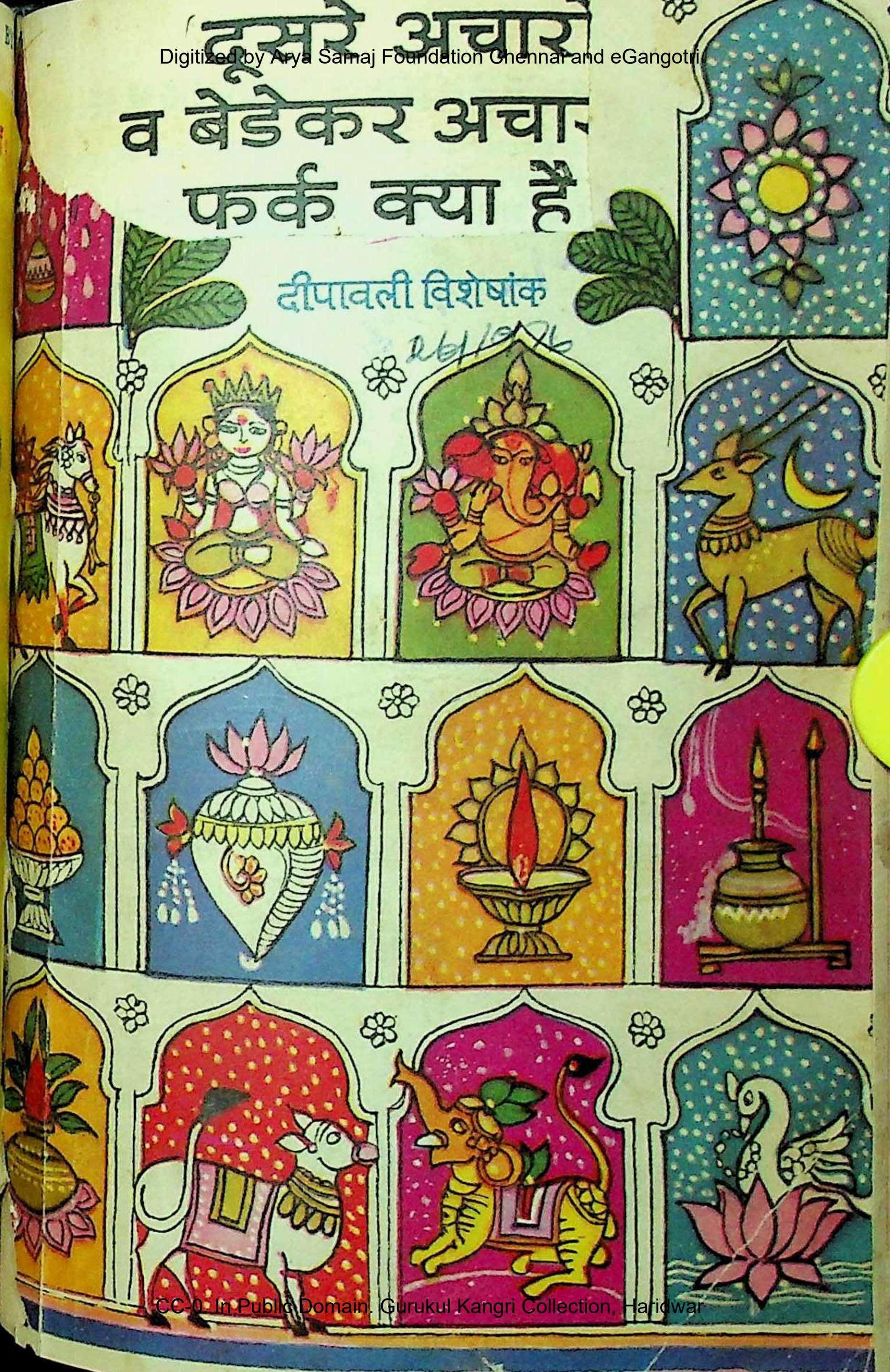

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मूल्य रु. २-७०
Regd. No.

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म, हर अवसर के लिए लाजवाब साड़ियाँ

नयी

सेन्चुरी के सूती कपड़ों के संग

सेन्चुरी – १००% सूती कपड़ों के लिए।

दि सेन्चुरी स्पि. एण्ड मैन्यु.
कं. लि. बम्बई-४०० ०२५

Adroit-237-Hindi

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे अचारों व बेडेकर अचारोंमें फर्क क्या है?

सभी अचारों में नमक, मिर्च, हींग राई, कैरी अथवा नींबू व तेल— ये सभी चीज़ें डाली जाती हैं। मतलब यह कि वैसे देखा जाय तो दूसरे अचारों व बेडेकर अचारों में कोई फ़र्क नहीं पड़ता। लेकिन फिर भी तो पड़ता है, देखिए ऐसे:

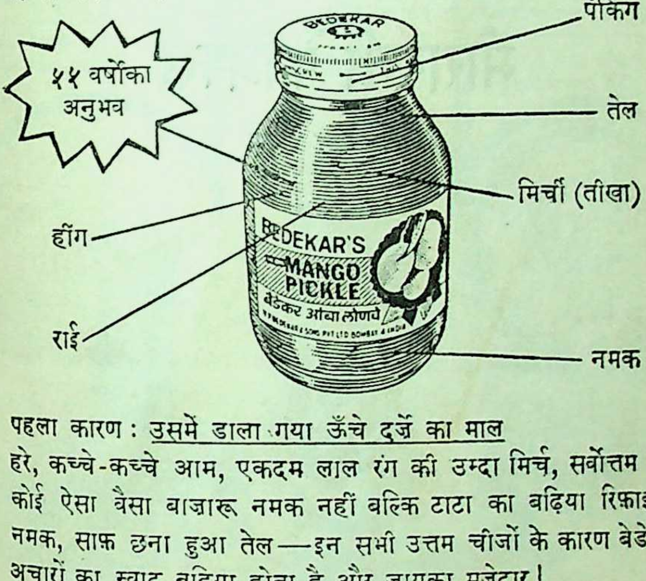

पहला कारण : उसमें डाला गया ऊँचे दर्जे का माल

हरे, कच्चे-कच्चे आम, एकदम लाल रंग की उम्दा मिर्च, सर्वोत्तम हींग, कोई ऐसा वैसा बाज़ारू नमक नहीं बल्कि टाटा का बढ़िया रिफ़ाइण्ड नमक, साफ़ छना हुआ तेल—इन सभी उत्तम चीजों के कारण बेडेकर अचारों का स्वाद बढ़िया होता है और ज़ायका मज़ेदार!

दूसरा कारण : लम्बा अनुभव

अचार बनाने का लम्बे अरसे का अनुभव, सन् १९२१ से! अच्छे अचार बनाना इतना आसान नहीं कि चट मँगनी, पट ब्याह! बढ़िया और वह भी कई तरह के अचार बनाना बेडेकर के बस की ही बात है क्योंकि अनुभव लेते लेते बेडेकर के अचार भी अपने ढंग के निराले हो गये हैं।

बेडेकर बम्बई ४.

B.Vasant/VPB/1-76

Adroit-237-Hindi

CC-0. In ... Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली के शुभ अवसर पर मंगल कामनाएं

उत्तम वस्त्रों के लिए

मोरारजी फैब्रिक्स

को याद रखें

दी मोरारजी गोकुलदास स्पिनिंग एंड वीविंग कं. लि.

डा. अंबेडकर रोड, परेल, बंबई-४०० ०१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारे परिवार के मन पसन्द ये डिस्कॉन उत्पादन

(डिस्कॉन के हर एक उत्कृष्ट उत्पादन के साथ हमेशा एक मुफ्त उपहार)

डिस्कॉन टूथब्रश
'स्टर्नाइज' करने योग्य एकमात्र टूथ ब्रश

डिस्कॉन शेविंग ब्रश
अधिक मजबूत अधिक लम्बे, छूने में नरम नाईलोन रेशे, अधिक मजबूत पकड.

डिस्कॉन फीडिंग बोतल
मां के स्तन जैसी ही सुखद आपके मुन्ने को दूध पिलाने की बढ़िया डिज़ाइन की बोतल.

डिस्कॉन शुद्ध नीम साबुन
परिवार के लिए आदर्श नहाने का साबुन, त्वचा को गर्मी व फाड़नेवाली सर्दी से बचाता है.

मद्रास
फोन : ७७०५४.
टेलेक्स : एम एस/७४५१
बम्बई
५०९, प्रसाद चैम्बर्स, ५वीं मंजिल,
आपेरा हाउस, बंबई-४०० ००४
फोन : ३८४१७३

डिस्कॉन सेल्स प्रा. लि.

क्रय-विक्रय कार्यालय :

नयी दिल्ली
फोन: ५८१८९५० टेलेक्स ३००३

कलकत्ता
फोन : २३८४२५, २३५४१८,
२३०१३७ टेलेक्स : २२१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

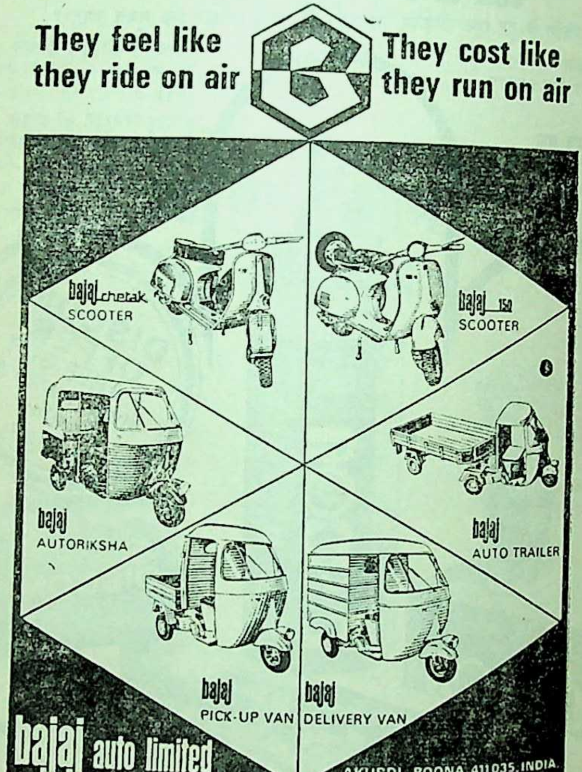

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विजय-दशमी और दीपावली
के उल्लास भरे इन महीनों में
आप मनोरंजक पुस्तकें पढ़ना चाहेंगे?

और अपनी गौरवपूर्ण परम्परा में

स्टार पाकेट सीरीज़

आप के पूरे परिवार के लिए प्रस्तुत करते हैं!

ये नई स्टार बुक्स

राजवंश **परदेसी** ३/-
समीर **गहरा सागर** ३/-
लोकदर्शी **काजल** ३/-
अमृता प्रीतम **तीसरी औरत** ३/-
संगीता **सूखा सावन** ३/-
हरचरण वैद्य **सरिता** ४/-
गुप्तदूत **पिस्तौल का शिकार** ३/-
भगवान रजनीश **जीवन रस गंगा** ३/-
शकील वदायुनी **शकील की शायरी** ३/-
1977 मे आप का भाग्य ३/-

अत्याकर्षक गेट-अप एवं अधिक पृष्ठों में ये नई स्टार बुक्स देश भर के बुक स्टालों पर प्राप्य है।

ये तथा २५० अन्य स्टार बुक्स और भी कम मूल्य में 'स्टार लायब्रेरी योजना' के सदस्य बनकर घर बैठे प्राप्त करें!

सदस्यता-नियम एवं सुविधाएं

- सदस्यता शुल्क का केवल १/- भेज कर प्रत्येक मास ११/- की पुस्तकें १०/- की वी. पी. से घर बैठे प्राप्त करें। वी. पी. भेजने का पूरा खर्च—जो प्रति मास ३/- से भी अधिक होता है—हम देंगे। इस प्रकार आप को १४/- के स्थान पर केवल १०/- देने होंगे और ४ नई एवं रोचक स्टार बुक्स आप को डाक द्वारा घर बैठे प्रत्येक मास पहुंचती रहेगी।
- योजना सदस्यों को पहिली वी. पी. में एक सुन्दर प्लास्टिक बुक कवर निःशुल्क भेजा जाता है।
- छः वी. पी. निरन्तर मंगाने वाले सदस्यों कों सातवीं वी. पी. में तीन रुपये मूल्य की एक और पुस्तक भी भेंट में निःशुल्क दी जाती है।
- समय समय पर अन्य कई उपहार भी योजना-सदस्यों को दिए जाते हैं।
- और यदि कोई सदस्य किसी मास वी.पी. न मंगाना चाहें तो यथासमय सूचित करने पर वी. पी. नहीं भेजी जाती—फिर भी सदस्यता जारी रहती है। इसी प्रकार यथा समय पत्र प्राप्त होने पर सदस्य अपनी पसन्द की कोई भीं अन्य पुस्तक मंगा सकते हैं।

Jupiter

स्टार पब्लिकेशज़ं (प्रा०) लि० आसफ अली रोड़, नई दिल्ली ११०००२

२५० स्टार बुक्स की सूची पत्र लिख कर निःशुल्क मंगायें

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

The widening horizons of GST

Gujarat Steel Tubes
now give a wider dimension to progress.
By manufacturing pipes and tubes
from 15 mm to 200 mm dia.
For agricultural use and for application
in a wide range of industries.

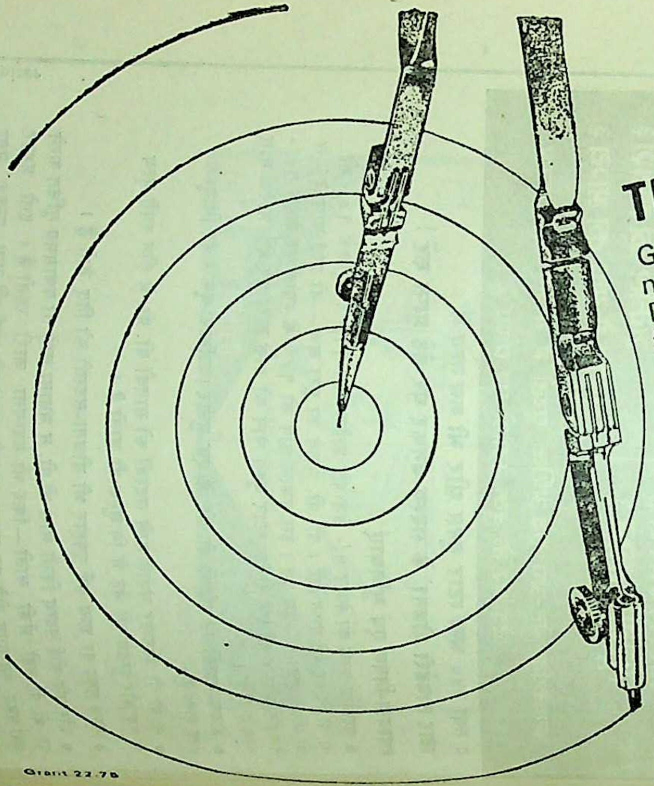

GST *PIPELINES TO PROSPERITY*

Gujarat Steel Tubes Ltd.
Bank of India Building,
Bhadra, Ahmedabad 380 001

Grant 22.78

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

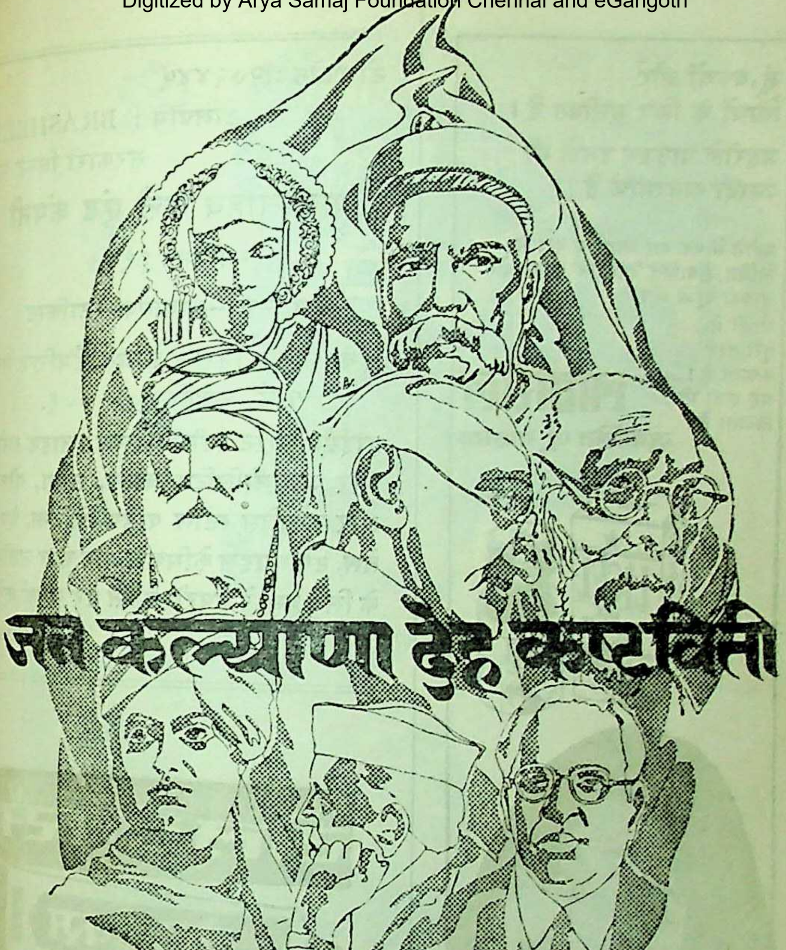

स्टेट बँक

आपल्या प्रिय पंतप्रधानांच्या २० कलमी सूत्राधारे
समाजांच्या सर्व थरांतील, विशेषतः आजपर्यंत
उपेक्षिलेल्या व गरीब जनतेच्याही घरांत
सुखसमृद्धीचा नंदादीप सतत तेवत रहावा म्हणून
प्रयत्नांची शिकस्त करण्यास आम्ही सदैव तत्पर आहोत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जूं, बच्चों और स्त्रियों के लिए मुसीबत हैं।

जहरीले पाउडर उनसे भी ज्यादा खतरनाक हैं!

महीने में एक बार आधुनिक रूप से निर्मित, सुवासित 'लाइसिल' का उपयोग आपको जूओं और लीखों से पूरी तरह बचाता है। यह रूसी भी मिटाता है।

लाइसिल

सुवासित जूं नाशक

सुजानिल केमो इंडस्ट्रीज
चिंचवड, पुणे-३३

Expresso HN

टेलिफोन : २७२४४५

टेलिग्राम : BRASHE

सरकारी लिस्ट

भाऊसाहब थत्ते एंड कंपनी

स्थापना १९४७

इंजीनियर–आयातक–स्टाकिस्ट

५ वां माला, क्रिसेन्ट चेम्बर्स, टैमरिन्ड
फोर्ट, बम्बई–४०० ००१.

हाईग्रेड कास्ट स्टील पेरेलल स्लाइड
और आयसोलिटिंग वाल्स, तांबा,
और स्टेनलेस स्टील पाइप फिटिंग्स,
तेल, टेक्सटाइल केमिकल और रबर उद्योगों
के लिये हमारे उपरोक्त पते पर संपर्क करें

Regul

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तार : **DIGJAM**
जामनगर

फोन : २२८५
२२८६
टेलेक्स : 0161-208

दिग्जाम सूटिंग

शुद्ध ऊन, डबल प्लेन, 'टी. जे.' और
टेरीन-ऊन के सर्व प्रकार के सूटिंग
में सर्वाधिक लोकप्रिय नाम :–

★

दिग्जाम

: निर्माता :

श्री दिग्विजय वुलन मिल्स लिमिटेड
एरोड्रोम रोड, जामनगर–३६१ ००३ (गुजरात)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वसनीय तीन

परिवार के सर्वोत्तम मित्र

दिवाली के शुभ अवसर पर इनको अच्छी तरह पहचान लीजिए। जीवन बीमा निगम ने तीन नई पालिसियां— विशेष तौर पर आप ही के लिए बनाई हैं।

जीवन बीमा निगम की
मनी बैक, कैश एण्ड कवर
और प्रोग्रेसिव प्रोटेक्शन पालिसी।

लाइफ इन्श्योरेन्स कारपोरेशन ऑफ इण्डिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CORRUGATED CONTAINERS, PRINTED BOXES, CARTONS & PLASTIC COATED WATER PROOF SHIPPING BOXES & PACKING REQUIREMENTS.

Please Contact :

JAYDIP & CO.

341, Tardeo Building,
Near Tardeo Circle,
Bombay-400 034

Phone : 371453

EVERY TIME ALL TIMES IN TIME

COMMERCIAL & ART PRINTERS

TIME PRINTING PRESS

113, J. K. Industrial Estate, 35/43, Mussa Killedar Street,
Keshavrao Khadye Marg, (Jacob Circle) BOMBAY—400011

JUST PHONE 377171

We Undertake :

Printing of Souvenirs, Balance Sheets and
All Kinds of Jobs, Magazines Etc.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द स्वस्तिक टेक्सटाइल्स मिल्स लि.

टेरीन ब्लेन्डेड फैब्रिक्स, टेरीन, आर्टसिल्क
और सूती वस्त्रों के अग्रगण्य प्रोसेसर्स

★

स्क्रीन प्रिंटिंग हमारी विशेषता

★

रजिस्टर्ड आफिस :

सायन ट्राम्बे रोड;
चेम्बूर; बंबई-४०००७१
टे. नं. ५२३७६१–२-३

प्रोसेसिंग एजेंट्स :

मेसर्स यमुना टेक्सटाइल्स
५३५, चन्द्र चौक, एम. जे. मार्केट;
छठा माला, बंबई-२
टे. नं. ३१००६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फोन नं. { कार्यालय :—३२१६६
३२०२१
गोदाम : ३९४६१ }

दि बॉम्बे रजिस्टर्ड पाइप डीलर्स सिंडिकेट लिमिटेड

सब साइजों के ब्लैक और गाल्वनाइज्ड पाइपों के सबसे बड़े स्टाकिस्ट

दि इंडियन ट्यूब कं० लि० कलकत्ता के टाटा-मेक

पाइप के वितरक

और

श्री अंबिका ट्यूब, अहमदाबाद तथा

जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इंडस्ट्रीज लि०, खोपोली के स्टाकिस्ट

शाखा :—५२२/२, सरोज मेन्शन, पंचकुवा गेट के बाहर, अहमदाबाद

तार :— **Pipedealers** फोन :— ३४३४१

हार्दिक शुभेच्छा

ध्रुव वुलन मिल्स प्राइवेट लिमिटेड

कूम्बर्स और वर्स्टेड स्पिनर्स, वीवर्स

कूम्बिग यूनिट :	**स्पिनिंग और वीविंग यूनिट**
बल्कुम, थाना	पो. बॉ. नं. ६३०४, बंबई-१३
फोन नं. ५९१६३२/५९१३७७	फोन नं. ३९५७६८/६९/६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली की शुभकामनाएं
और
नववर्ष का अभिनंदन

पंडित प्रोसेस स्टूडियो

फोन : ४५८४८०

दूसरी मंजिल, ब्लाक नं. १५
प्रभादेवी इंडस्ट्रियल इस्टेट
वीर सावरकर रोड,
बंबई–४०० ०२५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप भारतीय हैं, क्या आप भारतीय संस्कृति का सर्वाङ्गीण परिचय पाना चाहते हैं ? तो

शास्त्रार्थ महारथी **पं. माधवाचार्य शास्त्री**

द्वारा लिखित निम्नांकित साहित्य का अध्ययन कीजिये

वैदिक साहित्य

अथर्ववेद (प्रथम भाग)	२५) रु.
अथर्ववेद (द्वितीय भाग) (हिन्दी सनातन भाष्य सहित)	४०) रु.
वेद दिग्दर्शन	१०) रु.
मन्त्रालोक	३) रु.

भारतीय संस्कृति की विशिष्ट वैज्ञानिक विवेचना करने वाला साहित्य

क्यों ? (प्रथम भाग)	१२) रु.
क्यों ? (द्वितीय भाग)	१५) रु.
सार्वभौम हिन्दू	४) रु.
सनातन धर्म	२) रु.
हमारे पर्व-त्योहार	२) रु.
शिखा सूत्र	२) रु.
श्राद्ध विज्ञान	२) रु.
मूर्तिपूजा विज्ञान	१) रु.
हिन्दू और हिन्दू राष्ट्र	२) रु.
शास्त्री जेष्यति पाण्डवान्	१) रु.
आंख का शहतीर	

पौराणिक साहित्य

पुराण दिग्दर्शन	१५) रु.
पुराण परिशिष्ट	२) रु.

विविध साहित्य

दृष्टान्त दिग्दर्शन	१०) रु.
संस्कार विधि	१०) रु.
विविध रामायण सार	३) रु.
प्रेरक कथाएं	३) रु.
धर्म शिक्षा २ भाग	२) रु.
शास्त्रार्थ महारथी	४) रु.
चार शास्त्रार्थ	२) रु.
शास्त्रार्थ पंचक	५) रु.
लबड धौं धौं	१) रु.

- हमारा विस्तृत सूचीपत्र मुफ्त मंगाइये ।
- पचीस रुपये से ऊपर आर्डर पर डाक खर्च माफ ।
- पुस्तकालयों और पुस्तक विक्रेताओं को कमीशन की विशेष व्यवस्था ।

शीघ्र सम्पर्क करें—

माधव पुस्तकालय
१०३-ए, कमलानगर, दिल्ली ११०००७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Much nicer in colour

Think what a difference colour makes. Colour sells, attracts attention, and creates happiness.

Colour-Chem pigments beautify textiles, plastics, rubber, paints, leather, printing inks, myriad other materials.

And Colour-Chem's various intermediates for dyestuffs help manufacturers save on import licences.

An added service: Our technically trained experts help you achieve superb results.

COLOUR-CHEM LIMITED
Ravindra Annexe, Dinshaw Vachha Road,
Bombay 400 020.

In technical collaboration with
Bayer AG, West Germany and
Hoechst AG,
West Germany.

Colour-Chem

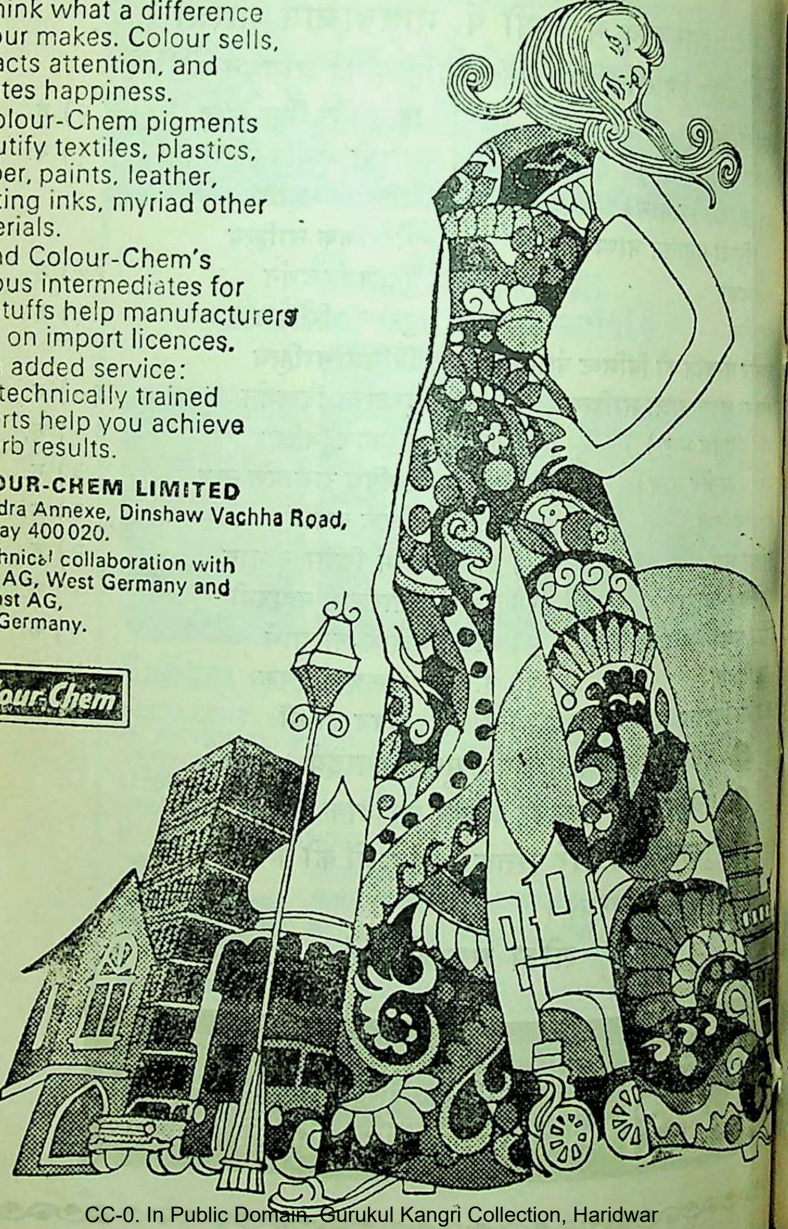

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुस्तान अल्युमिनियम कार्पोरेशन लि.

(भारत के अग्रगण्य अल्युमिनियम के निर्माता)

निर्माता

* प्राइमरी मेटल
* प्रापर्जी रॉड्स
* रोल्ड प्राडक्ट्स
* एक्सट्रूशन्स

और

बरतनों के लिये हिन्दालियम एलॉय

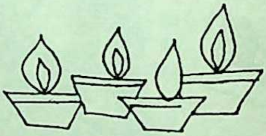

कारखाना

पो. ओ. रेणुकट, जिला : मिर्जापुर (उ. प्र.)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

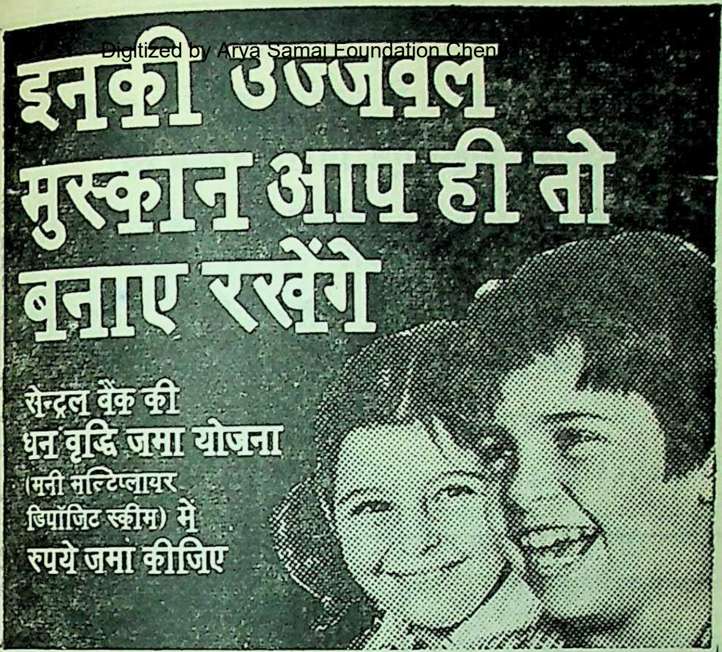

5,000 रुपये 7 वर्षों में बढ़कर करीब 10,040 रुपये और 10 वर्षों में करीब 13,536 रुपये हो जाते हैं.

वापस मिलनेवाली रकम				
	अवधि			
रकम	12 माह	36 माह	61 माह	120 माह
रु.	रु.	रु.	रु.	रु.
500	541.50	654.32	829.51	1,353.52
1,000	1,083.00	1,308.64	1,659.02	2,707.04
2,000	2,166.00	2,617.28	3,318.04	5,414.08
3,000	3,249.00	3,925.92	4,977.06	8,121.12
4,000	4,332.00	5,234.56	6,636.08	10,828.16
5,000	5,415.00	6,543.20	8,295.10	13,535.20
10,000	10,830.00	13,086.40	16,590.20	27,070.40

CBI/234/76/Hin

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया

(भारत सरकार का उपक्रम)

(यही वह बैंक है जो हर जगह हर मनुष्य को सहायता देने में तत्पर है)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुनिन्दा रंगों, फैशन व डिजाइनों के कपड़ों के प्रोसेसर्स

केलिको डाइंग एंड प्रिंटिंग मिल्स लि.

इंडस्ट्रियल स्टेट, ४१ ई., डा. अम्बेडकर रोड, पो. बा. नं. ६००३,
लालबाग, बंबई ४०००१२

केडीटेक्स रंगाई व छपाईवाली साटीन, शर्टिंग्स, पापलिन्स, केम्ब्रिक, लान्स, २×२ वायल व कोटेड कपड़े

रंग-बिरंगे केलिको का घर

फोन : ४४२५६१-६२-६३ तार * DYEPRINT

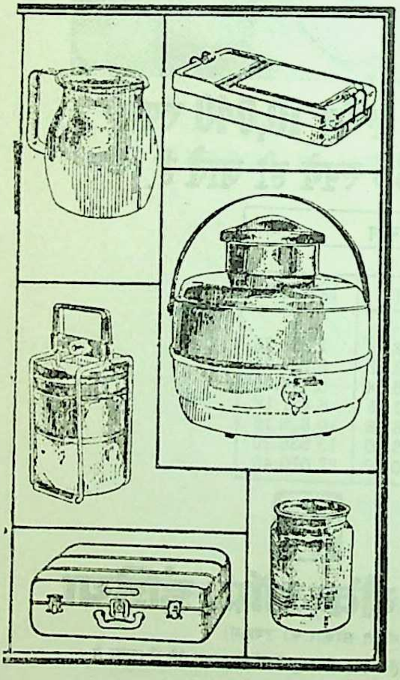

क्राउन ब्रांड

आज की प्रगतिशील गृहिणियां हर प्रकार के सर्वोत्तम क्राउन-ब्रांड अल्युमिनियम के बर्तन खरीदने का आग्रह रखती हैं। उनका विश्वास संपादित करने के लिए हम सतत कार्यशील रहते हैं। सुंदर, चमकदार, सुडौल-मजबूत क्राउन-ब्रांड बर्तन खरीदना आपके लिए एक अपूर्व अवसर है।

जीवनलाल (१९२९) लि.

लिबर्टी बिल्डिंग, मरीन लाइन्स, बंबई-२०
टेलीफोन : २९११९
शो रूम : कंसारा चाल, कालबादेवी
बंबई-२ टेलि : ३३४८
कलकत्ता, मद्रास, हैदराबाद, कोचीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

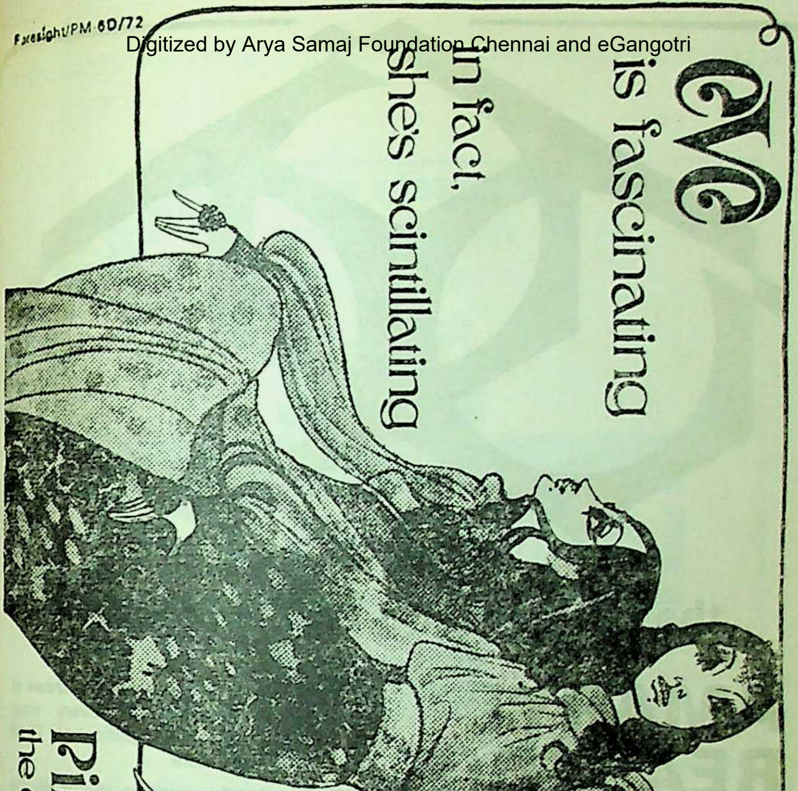

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

here are the outstanding advantages of

AMARYL REACTIVE DYES...

We proudly announce that, for the first time in India, AMARYL REACTIVE DYES have been entirely developed by our OWN Research. We produce the full range of Hot and Cold type of REACTIVE DYES. These dyes compare with those of international standards in every way. They are economical in application. Their quality is indisputable.

We constantly continue in our efforts to widen the range of this class of dyes.

Our range of products include Naphthols and Fast Colour Bases, TPM Basic and Acid Colours, Printamar Pigment Printing Emulsions and Binders, Dry Pigments, Dye-Intermediates, Rubber Chemicals, Peroxides, Beta Naphthol, BON Acid, DEMAF etc.

ADC — *to enrich India's life with colour!*

AMAR DYE-CHEM LTD.

Rang Udyan, Mahim, Bombay 400016

BRANCHES: AHMEDABAD • CALCUTTA • DELHI • JAIPUR • MADRAS • MADURAI • [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रस्तुत है

अधिक शक्तिशाली
अधिक प्रभावशाली
अधिक सुरक्षित
प्लसप्रिन

PLUSPRIN

यह अधिक तेज असर करती है

सिर दर्द, पीठ दर्द,
शरीर दर्द
मांस पेशियों में दर्द,
जुकाम और फ्लू
आदि से छुटकारा पाने के लिये आपको केवल एक ही टिकिया की आवश्यकता है यह सुरक्षित है फिर भी प्रभावशाली है।

यही बस नहीं
प्लसप्रिन हानि-रहित है।
इससे आलस्य, अधिक पसीना आना, पेट से खून बहना, तेजाबी मादे का बढ़ना, पेट में गड़बड़ी या आदत बन जाना आदि विकार उत्पन्न नहीं होते।
प्लसप्रिन एसप्रिन नहीं है।

शीघ्र आराम के लिए अधिक शक्तिशाली PLUSPRIN लीजिये

JAISONS

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ADMISSION - NOTICE FOR (BOYS & GIRLS)

APPLICATIONS ARE INVITED FOR ADMISSION IN TO THE FOLLOWING CORRESPONDENCE COURSES

GOVERNMENT OF INDIA & INDIAN UNION STATES RECOGNIZED ENGINEERING DEGRESS & DIPLOMAS

(BOYS & GIRLS • ONLY POSTAL TRAINING OFFERED

(THE COLLEGE OFFERS EXCELLENT OPPORTUNITY TO QUALIFY AS AN ENGINEER)

A.M.I.E. (I), A.M.I.E.T.E. (I), A.M.Ae. S.L (I), A.M.I.I. CHEM. E. (I).

A.M.I.I.M.E. (I), I.E.R.E. (U.K.) A.M.E. etc. (ALL THE ABOVE COURSES ARE RECOGNISED BY THE GOVERNMENT OF INDIA AND ALL INDIAN UNION STATES AS EQUIVALENT To B.E. OR B. TECH DEGREE) IN CIVIL, ELECTRICAL, MECHANICAL, CHEMICAL METALLURGICL, MINING, ELECTRONICS & COMMUNICATION ENGINEERING, METAL ENGINEERING: AERONAUTICAL ENGINEERING, ELECTRONICS & RADIO ENGINEERING MARINE ENGINEERING, PRODUCTION ENGINEERING NAVAL ARCHITECT SURVEYOR OF THE INSTITUTE, OF SURVEYOR (India), AUTOMOBILE, L.C.E/L.M.E.(L.E.E.)/ & L.C.R.E. RADIO & TV., AGRICULTURE ENGINEERING, REFRIGERATION & AIRCONDITIONING ENGINEERING DRAUGHTSMANSHIP (CIVIL & MECHANICAL ENGINEERING & MANY OTHER COURSES.

ADMISSION QUALIFICATION : S.S.C. or H.S.C. or P.U.C. or Inter. or B.Sc. or Diploma Holders with any subjects.

FOR FULL DETAILED PROSPECTUS & ADMISSION FORM send Rs. 7/- (RUPEES SEVEN ONLY) by M.O. (MONEY ORDER) to : "PRINCIPAL"

GOVERNMENT OF INDIA & INDIAN UNION STATES RECOGNIZED COURSES :—

• FOR EMPLOYED & UNEMPLOYED)

1 I.C.W.A. COST & WORKS ACCOUNTANT
2 C.A. : CHARTERED ACCOUNTANCY
3 GRADUATESHIP . A.M.I.B.M (India)- Part-"A" & "B" in BUSINESS-MANAGEMENT&
4 GOVERNMENT OF INDIA : COMPANY SECRETARIES EXAMINATIONS
5 DIPLOMA : A.I.B.M. (India) in BUSINESS MANAGEMENT.
6 CHARTERED SECRETARIES (LONDON).
7 CITY & GUILDS of LONDON INSTITUTE— DIPLOMA COURSE in INDUSTRIAL ORGANIZATION, MANAGEMENT PLANNING ESTIMATING & COSTING ENGINEERING.

ADMISSION QUALIFICATION : S.S.C. or H.S.C. or P.U.C. or Inter. or B.Sc. or ANY GRADUATE with any subjects.

FOR FULL DETAILED PROSPECTUS & ADMISSION FORM send Rs. 6/- (RUPEES SIX ONLY) by M.O. (MONEY ORDER) to : "PRINCIPAL"

NOTE - ONLY CORRESPONDENCE COURSES (POSTAL TRAINING) OFFERED FOR ALL ABOVE COURSES FOR EMPLOYED & UNEMPLOYED PERSONS.

INTERNATIONAL COLLEGE OF CORRESPONDENCE
KOTHI No. 17, SOUTH PATEL NAGAR, NEW DELHI-110008

RAMA KRISHANA—VIVEKANANDA

LITERATURE

LIFE OF SRI RAMAKRISHNA
Ordy. Rs. 11, Deluxe Rs. 16

RAMKRISHNA : A BIOGRAPHY IN PICTURES Rs. 56

TEACHINGS OF SRI RAMAKRISHNA
S.B. Rs. 6·75, H.B. Rs. 9

THE LIFE OF SWAMI VIVEKANANDA Price Per Set Rs. 2[illegible]

COMPLETE WORKS OF SWAMI VIVEKANANDA
(In 8 Vols.) S.B. Rs. 80, C.B. Rs. 116

विवेकानन्द साहित्य (दश खण्डों में) Price Per Set Rs. 112

संक्षिप्त जीवनियां

श्री रामकृष्ण Rs. 2·50. श्री शारदादेवी Rs. 2·50. स्वामी विवेकानन्द Rs. 2·50.

And various other Books both in English and Hindi. Also Vedantic Scriptures with Original and English translations.

For details Please contact

ADVAITA ASHRAMA, 5 Dehi Entally Road, CALCUTTA-700 014

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठ दिन की साधना!

अपने मुन्ने के स्वास्थ्य के लिये!

जी हाँ! सिर्फ आठ ही दिन लेकिन एकदम नियमित रूपसे, अपने मुन्नेको स्नान कराने से पहले, साण्डू एलिगेंन्स से उसे मालिश कीजिये। और स्वयं देखिये कि स्वास्थ्य और उत्साहसे भरपूर होकर वह कैसे किलकारियाँ भरता है।

साण्डू

एलिगेंस

एक नवीन-आयुर्वेदीय अभ्यंग तैल

• त्वचामें आसानी से समा जाता है। • बच्चे की कोमल पेशियों का पोषण करता है। • कांती को स्वास्थ्यपूर्ण निखार देता है। • उत्तम पुष्टिदायक आयुर्वेदीय जडी बूटियोंसे संस्कारित। • मोहक सुगन्ध से युक्त।

आयुर्वेदकी सेवामें ७६ गौरवशाली वर्ष

द. कृ. साण्डू ब्रदर्स चेम्बूर प्रा. लि.

वि. ना. पुरव मार्ग, चेम्बूर, बम्बई ७१

DKS/04/78 H

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत
दीपावली विशेषांक

इस अंक में

३५ एक किरण बन जाऊं तेरी
टी. एल. वासवानी
[अनुवाद : दिनकर सोनवलकर]
३६ भाव-बिंदु
हजरत इनायत खां
३८ जीवन एक अखंड ज्ञानसत्र
४२ शुभकामना
नवनीत-परिवार
४३ ज्ञात से अज्ञात इतिहास में
जैनेंद्र कुमार
४५ पुनर्नवा (कविता)
अंचल
४६ अराजनयिक संस्मरण
ऊ नू
४९ श्रीलक्ष्मी आर्येतर देवी थी ?
जैनेंद्र वात्स्यायन
५३ पशुधन की सेवा में विज्ञान
रमेशदत्त शर्मा
६१ मधुर कंठ : मधुर व्यक्तित्व
चंद्रशेखर पांडेय
६५ महानतम जर्मन चित्रकार ड्यूरर
जेनेट रूबर्ट
७१ माओ-मंत्र
....
७२ कालयंत्र के जरिये इतिहास की सैर
अनेक लेखक एवं पत्रकार
८० पौधों के बीच : एक अनुभव
डा. जगदीश गुप्त
८१ वंदे मातरम् के शत वर्ष
अमित्रसूदन भट्टाचार्य
८७ कल्पना और जीवन
जान सिवेल्यूस
८८ गुंबज (पंजाबी कहानी)
हरपाल सिंह लखीयां
९० ऊर्जा का उपयोग ......
सरलादेवी
९३ गुरुदेव और बापू
विष्णु प्रभाकर
९९ महानता की कसौटी
ब्रूस बार्टन

संस्थापक
स्व. श्रीगोपाल नेवटिया
प्रबंध-संचालक
हरिप्रसाद नेवटिया

संपादक
नारायण दत्त
उपसंपादक
गिरिजाशंकर त्रिवेदी

सहसंपादक
सुरेश सिन्हा
सज्जाकार
ठाकोर राणा

व्यापार-व्यवस्थापक
महेंद्र महेता
प्रबंधक
सोहनराज पारेख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१०० भाई की मज्जा से भाई के प्राण बचे
डा. एडवर्ड कोहेन
१०६ प्रेरक पुस्तक
प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त'
१०८ तीन स्नेह-कथाएं
ब्रह्मदत्त
११२ चट्टान (कविता)
रामदरश मिश्र
११३ कथा-कणिकाएं
इदरीस शाह
११६ विदेशों में भारतीय साम्राज्य-विस्तार
सुधामयी आनंद
१२५ एक और सैम्सन
डा. बी. सीताराम सिंह
१२९ अन्नपति सुय्य
हरिदत्त वेदालंकार
१३७ सुंदर बनना है आपको ?
एम. जे. रीडिंग
१४० अगर ऐसा हुआ होता (कहानी)
हेनरी सिसिल
१४५ देखी, सुनी और बीती घटनाएं
अमृता प्रीतम
१५६ धर्मराज (हिंदी व्यंग्य-कथा)
श्यामसुंदर घोष
१६० टूटती व्यवस्था (कविता)
मधुप पांडेय
१६० यायावर (कविता)
इंदुकांत शुक्ल
१६१ कुदुरेमुख : एक अनोखो परियोज
राजन गांधी
१६८ चहलकदमी और हम
मुज्तबा हुसैन
१७६ गिलगामेश (महाकाव्य-सार)
एन. के. सैंडर्स
१९६ दैया, कहां गये वे लोग
शिवानी
२०२ टी. वी. पर आखिरी ओलंपि
राबर्ट योकुम
२०४ कंप्यूटर के जरिये चोरियां
डा. कुसुम भार्गव
२१३ हाइजनबर्ग और अनिश्चितताव
डा. मोहन रामचंदाणी
२३९ कविताएं
नरेंद्र भारद्वाज, गोपालचंद्र मि

कालयंत्र संबंधी चर्चा में :

डा. रामकुमार वर्मा, प्रभाकर माचवे, इलाचंद्र जोशी, विनयमोहन शर्मा, शमशेर बहादु झाबरमल्ल शर्मा, बनारसीदास चतुर्वेदी, रामविलास शर्मा, चंद्रगुप्त विद्यालंकार, प्रभुदया अग्निहोत्री, अक्षयकुमार जैन, भैरवप्रसाद गुप्त, सीताराम चतुर्वेदी, क. ला. मिश्र 'प्रभाक सुधाकर पांडेय, बाबूराम सक्सेना, अरविंद कुमार, श्रीनरेश मेहता, विष्णु प्रभाक यशपाल जैन, हंसराज रहबर, व्योहार राजेंद्रसिंह, विनोद रस्तोगी, राजेंद्र अवस्थी, वच त्रिपाठी, राधाकृष्ण, रामेश्वर दयाल दुबे, काका हाथरसी, के. नरेंद्र, अमर बहादुर सि 'अमरेश', रवींद्र त्यागी, जगदीशप्रसाद चतुर्वेदी, शौरिराजन्, गुलजार, डा. जगदीश गुप्त श्रीनारायण चतुर्वेदी, विजयेंद्र स्नातक।

आवरण-चित्र : सत्यकाम राहुल

चित्रसज्जा : ड्यूरर, नंदलाल बसु, लक्ष्मण, अबू, भाऊ समर्थ, ओके, शेणै, एन. सी. ता डा. भटनागर, चरन शर्मा, निमिषा शर्मा, रानी, राणा, अमर वर्णेकर।

श्री हरिप्रसाद नेवटिया द्वारा नवनीत प्रकाशन लिमिटेड, ३४१, ताडदेव, बंबई-३४ के लि प्रकाशित तथा श्री वेंकटेश्वर प्रेस, ३६/४८ खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बंबई-४ में मुद्रि

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनीत

एक किरण बन जाऊं तेरी

प्रभु, तेरे पद-कमलों में है यही प्रार्थना मेरी–
मुझे बनाना प्रतिदिन, प्रतिपल
एक ज्योति-कण; एक किरण–
अपने स्वर्गिक पावन प्रकाश की
नित नवीन; आभामय; उज्ज्वल !
मात्र यही आकांक्षा मेरी–
एक किरण बन पाऊं तेरी
किरण सत्य की; मुक्त प्रेम की
अशुभ और दुःख-भरे जगत में
एक किरण ममता-मरहम की ।
भूले भटके, निपट अकेले जन-मन से समरस हो जाऊं
और तुम्हारे पुत्रों-जैसा;
परम पिता हे–निर्भय; सत्यपथिक बन पाऊं ।

–टी. एल. वासवानी

[अनुवाद : दिनकर सोनवलकर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजरत इनायत खां
['गायन, वादन, नर्तन' से]

भाव-बिंदु

काल ! मैंने तुम्हें कभी देखा नहीं,
मगर मैंने तुम्हारी पदचाप सुनी है।
काल ! मेरे दुःख में तुम रेंगते हो; मेरे सुख में तुम दौड़ते हो;
मेरे सब्र-भरे प्रतीक्षा-क्षणों में तुम निश्चल खड़े रहते हो।
काल ! तुम महासागर हो, और जीवन की
हर हलचल तुम्हारी लहर है।

०

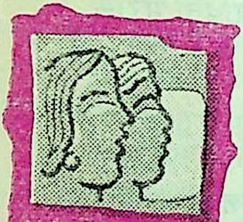

नर में हमने अपनी आकृति उकेरी है;
नारी में हमने उसे पूर्णता दी है।
नर में हमने अपना भद्र स्वभाव झलकाया है;
नारी में हमने अपनी दिव्य कला दरशायी है।

०

तुम्हारे संगीत से हमारी आत्मा नाच उठती है;
हवा की मर्मर में मैं सुनता हूं तुम्हारी वंशीध्वनि;
सागर-तरंगें मेरे थिरकते पगों के संग ताल देती हैं।

०

गुलाब-कली, सारी रात तुम क्या कर रही थीं ?
—हाथ जोड़ परमात्मा से प्रार्थना कर रही थी कि
प्रभो, मेरा हृदय खोल दो।
कुमुद, तुम्हारा श्वेत परिधान किसका प्रतीक है ?
—इस झील के अंतर की पवित्रता का।
ट्यूलिप, तुमने अपने ओंठ क्यों खोले हैं ?
— मौन में मैंने क्या सीखा, यह तुम्हें बताने।
— और सीखा क्या तुमने ?
— अपने को रीता प्याला बना लेना।
आर्किड, तुम्हारी पंखुरियां किसका प्रतीक हैं ?
— नृत्य की अभिराम गति का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्र :
ठाकोर राणा

-और क्या व्यक्त करता है तुम्हारा नृत्य ?
-अंतरिक्ष को पृथ्वी का प्रणाम ।

०

पूर्णिमा के चंद्र, यहां से कहां जाकर रहोगे ?
- एकांत में ।
- पूर्णता के बाद यह एकांत-वास किसलिए ?
- अपने को रीता पात्र बनाने, ताकि फिर से भरा जा सकूं ।

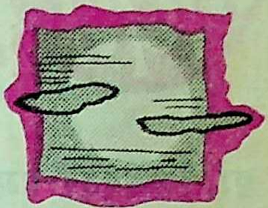

०

लोबान ! गिरजे की प्रार्थना के समय
तुम क्या फुसफुसा रहे थे ?
- कि वही प्रार्थना प्रभु तक पहुंच सकती है,
जो सुलगते दिल से निकली हो ।
लोबान ! गिरजे में तुमने क्या उपदेश दिया ?
- कि जो दूसरों के वास्ते दर्द झेलता हो, उसे
नश्वर संसार से उठकर अमरता के लोक को छूना चाहिये ।
लोबान ! तुम्हारी सुगंध का अर्थ क्या है ?
- मेरी सुगंध मेरे आत्मोत्सर्ग का प्रमाण है ।
लोबान ! अपने अस्तित्व का रहस्य तो हमें बताओ ।
- मैं प्रभु के प्रेमी का हृदय हूं, जिसकी गहरी आह
ऊपर को उठती है और चहुं ओर सुगंध फैलती है ।

०

भ्रम में न रहो, रात ! सुबह फिर होगी ही ।
सावधान, अंधकार ! सूरज फिर चमकेगा ही ।
इतराओ मत कुहरे ! धुंध तो छंटेगी ही ।
भूलो मत मेरे शोक ! आनंद फिर जागेगा ही ।

०

फूल मत चुनो, उससे पथ पर बिलम जाओगे ।
यों भी वे कुम्हला जायेंगे तुम्हारे चलते-चलते ।
इसलिए भर आंख उन्हें तुम देखो, सराहो उनका सौंदर्य,
और बढ़ जाओ अपनी राह पर—
तब वे सारी राह तुम्हारे स्वागत में मुस्करायेंगे ।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* सुनीति कुमार चाटुर्ज्या * रमेश चंद्र मजूमदार * सिद्धेश्वर वर्मा * मास्ति वेंकटेश अय्यंगार * सालिम अली * मंगलदेव शास्त्री * सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव * बनारसीदास चतुर्वेदी * केशव मेनन * विश्वनाथ सत्यनारायण

जीवन एक अखंड ज्ञानसत्र

डा. सिद्धेश्वर वर्मा

१. आजकल मैं 'भारतीय भाषाओं का सर्वेक्षण' नामक ग्रंथ के तीसरे भाग पर काम कर रहा हूं। इसके दो भाग १९७२-७३ में पंजाब विश्वविद्यालय और विश्वेश्वरानंद वैदिक संस्थान ने मिलकर प्रकाशित किये हैं। तीसरा भाग अनुक्रमणियों का है, जिसकी उपयोगिता संशोधन-प्रिय लेखक अच्छी तरह समझ सकते हैं। इसके अतिरिक्त आजकल मैं चरक के दर्शनशास्त्र पर अपने प्रिय शिष्य डा. रामदत्त वासिष्ठ के साथ काम कर रहा हूं। यह ग्रंथ संस्कृत में लिखा जा रहा है।

२. मेरा सारा दिन—लगभग ११ घंटे—अध्ययन में जाता है। मेरे प्रिय आचार्य हैं पाणिनि, चरक और भरत। सप्ताह के दिन स्वाध्याय के लिए इस तरह बंटे हुए हैं: सोम—आचार्य पाणिनि; मंगल और शुक्र—आधुनिक भाषाएं; बुध—तमिल; बृहस्पति—रूसी भाषा व साहित्य; शनि—आचार्य भरत; रवि—आचार्य चरक। मेरे जीवन में कोई रविवार नहीं आया, जिसमें मैंने छुट्टी मनायी हो। छुट्टी का दिन वही होता है, जब कभी हाथ का काम समाप्त हो जाता है। तब मैं किसी रिश्तेदार या मित्र से मिलना चाहता हूं। हां, जिज्ञासुओं से बातचीत करने में मुझे आनंद आता है।

मैंने कभी बोलकर नहीं लिखवाया, सदा अपने हाथ से लिखा है। आजकल बहुत कम ही लिखता हूं। यों विश्वेश्वरानंद वैदिक रिसर्च जर्नल में मेरी कलम से कुछ न कुछ छपता ही रहता है।

३. इस समय मेरी अवस्था ८९ वर्ष की

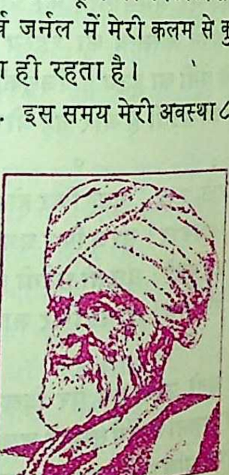

भाषा-विज्ञानी (इसी मास ९० वर्ष)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। ३ नवंबर १९७६ को ९० वर्ष का हो जाऊंगा। योजनाएं कोई नहीं हैं।

[डा. सीताराम सहगल द्वारा प्रस्तुत]

०००

मास्ति वेंकटेश अय्यंगार

१. अभी-अभी मैंने एक लंबी कहानी 'शेषम्मा' (२४० पृष्ठ की) लिखकर छपवायी है, जो कि एक मां के जीवन का वर्णन है। मैं अपने स्वर्गीय मित्र श्री नवरत्न रामराव से संबंधित संस्मरण छपवा रहा हूं। इसके साथ मेरे नाम उनके लिखे कुछ पत्र तथा उनके कुछ लेख भी होंगे। सन १९१७ से अब तक स्वयं मेरे लिखे तथा मुझे दूसरों से मिले चुनिंदा पत्रों का संग्रह भी छपवा रहा हूं।

२. ज्यादा नहीं; न प्रतिदिन ही। अगर चीज छोटी है, तो मैं स्वयं लिख डालता हूं। लंबी चीजें बोलकर लिखवाता हूं।

३. जब मैं ७५ वर्ष का था (वह दस साल पहले की बात है), किसी यूरोपीय देश

कन्नड साहित्यकार (८५ वर्ष)

अस्सी के पार पहुंचकर भी युवकों के से उत्साह से अपने-अपने विद्या-क्षेत्र में कार्यरत कतिपय विशिष्ट प्रतिभाओं से हमने ये तीन सीधे-से प्रश्न किये थे :

१. आजकल आप किस पुस्तक के लेखन या संपादन में व्यस्त हैं?

२. प्रतिदिन कितने घंटे इस काम को देते हैं और क्या अपने हाथ से लिखते हैं या बोलकर लिखवाते हैं?

३. अगले पांच वर्षों के लिए आपकी योजनाएं क्या हैं?

उनके उत्तर, जो इन पृष्ठों पर प्रस्तुत हैं, इस प्राचीन उक्ति की याद दिलाते हैं कि बुद्धिमान मनुष्य विद्या की बात सोचते हुए अपने को अजर-अमर माने।

से आये एक मुलाकाती ने मुझसे पूछा—'भविष्य की आपकी योजनाएं क्या हैं?' मैंने उत्तर दिया—'पचहत्तर की उम्र में भविष्य की योजनाएं बनाना बुद्धिमत्ता की बात नहीं है।' वे हंसे और बोले—'बात तो ठीक है। मगर अभी और कई वर्ष का काम आपके भाग्य में हो सकता है!' मैंने कहा—'हां। जो मुझे उम्र देगा, वही योजनाएं भी देगा।' मुलाकाती ने इस पर प्रसन्नता प्रकट की। जो बात ७५ की उम्र में सही थी, वही ८५ की उम्र में भी सही है।

०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजनयिक, मलयालम पत्रकार, साहित्यकार (९० वर्ष)

के. पी. केशव मेनन

प्रश्नों का क्रम से उत्तर देना जरा कठिन है। सो अपने लेखन तथा अन्य कार्यों का संक्षिप्त परिचय दे डालूं, यही शायद ठीक रहेगा।

आजकल मैं मलयालम के 'मातृभूमि' दैनिक तथा सचित्र साप्ताहिक 'मातृभूमि' का प्रधान संपादक हूं, जिनकी स्थापना मैंने १९२३ में की थी। पत्रकारिता के अलावा मैं पुस्तकें भी लिखता रहा हूं, जिनमें से पहली १९१६ में छपी थी। अब तक २९ पुस्तकें लिख चुका हूं, जिनमें कहानियां, निबंध, जीवन-चरित, नाटक और आत्म-कथा (साहित्य अकादमी से पुरस्कृत) सभी हैं। इस समय मैं 'गाइड टु जर्नी थ्रू लाइफ' नामक पुस्तक लिख रहा हूं, जिसे पूरा करने में मुझे शायद चार महीने और लगेंगे।

अब मैं ९० वर्ष का हूं और पूरी तरह अंधा हूं। आंखें गंवाने के बाद मैंने अठारह बड़ी पुस्तकें रची हैं। आंखें गंवाने के बाद से हाथ से तो नहीं लिख पाता; बोलकर लिखवाता हूं। लिखने-पढ़ने के लिए मुझे दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है—घर में भी, दफ्तर में भी। प्रतिदिन मैं तीन घंटे बोलकर लिखवाता हूं—दो घंटे सुबह, एक घंटा शाम को। रात को तीन घंटे मैं मित्रों से आग्रह करके वे पुस्तकें पढ़वाकर सुनता हूं, जिनमें मेरी दिलचस्पी होती है—मुख्यतः जीवन-चरित, धर्म और दर्शन की पुस्तकें।

पांच पुस्तकें और लिखने की मेरी योजना है, बशर्ते स्वास्थ्य साथ दे। यह भी कह दूं कि साहित्यिक काम के अलावा मैं कोई आधे दर्जन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं सेवा-कार्य करने वाली संस्थाओं से संबद्ध हूं।

०००

डा. सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या

१. कई पुस्तकें इस समय हाथ में हैं जिनमें से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं :

भाषा-विज्ञानी, अध्यक्ष : साहित्य अकादेमी (८६ वर्ष)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क. रामायण के निर्माण पर एक पुस्तक;
ख. हिंदू कर्मकांड पर एक पुस्तक;
ग. एक आत्मचरितात्मक पुस्तक, जो कि काफी बड़ी होगी।

२. इस समय मेरा ८६ वां साल चल रहा है, शीघ्र ही मैं ८७ का हो जाऊंगा। राष्ट्रीय प्राध्यापक और साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष के नाते मुझे काफी काम देखना-निबटाना पड़ता है। सो निजी साहित्यिक काम के लिए पर्याप्त समय नहीं निकल पाता। फिर भी जितना कुछ समय खाली निकाल पाता हूं, लगाता हूं। काम के कोई निश्चित घंटे बंधे हुए नहीं हैं। अपने हाथ से लिखना ज्यादा पसंद है; मगर अंग्रेजी की पुस्तकें व लेख बोलकर लिखाना ज्यादा सुविधाजनक प्रतीत होता है, जो फौरन टाइप कर दिये जाते हैं।

३. दोनों आंखों में मोतियाबिंद हो गया है, जिनका आपरेशन कराना जरूरी है। इसके अलावा मधुमेह और कालेस्टोरोल की शिकायतें हैं। सो अगले पांच सालों के लिए कोई योजनाएं नहीं हैं, भले तब तक जीवित रह जाऊं।

०००

डा. रमेशचंद्र मजुमदार

१. इस समय मैं 'हिस्टरी एंड कल्चर ऑफ़ द इंडियन पीपल' का आठवां खंड संपादित कर रहा हूं, जो कि समाप्तप्राय है। साथ ही मैं निम्नलिखित पुस्तकों के संशोधित संस्करण निकलवाने में व्यस्त हूं :

इतिहासकार, शिक्षाशास्त्री (८८ वर्ष)

क. कंबुज देश (कंबोडिया);
ख. बंगला में लिखित अपने 'बंगाल का इतिहास' के खंड का अंग्रेजी अनुवाद;
ग. 'हिस्टरी ऑफ़ द फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया', खंड ३।

२. मैं प्रतिदिन सामान्यतः छह घंटे पढ़ता-लिखता हूं।

३. मेरी उम्र ८८ वर्ष की है, सो अगले पांच वर्षों के लिए कोई योजनाएं नहीं हैं।

०००

विश्वनाथ सत्यनारायण

इस प्रकार की प्रश्नावलियां मुझे परेशानी में डाल देती हैं, क्योंकि मेरी लिखने की आदत व्यवस्थित नहीं है। कई बार महीनों मैं कुछ भी नहीं लिखता हूं। फिर किसी की मांग आती है कि रचना चाहिये। तब किसी भी ढंग का उपन्यास, कोई साहित्यिक विमर्श, निबंध या नाटक जो भी मांगा

[शेष पृष्ठ २४१ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

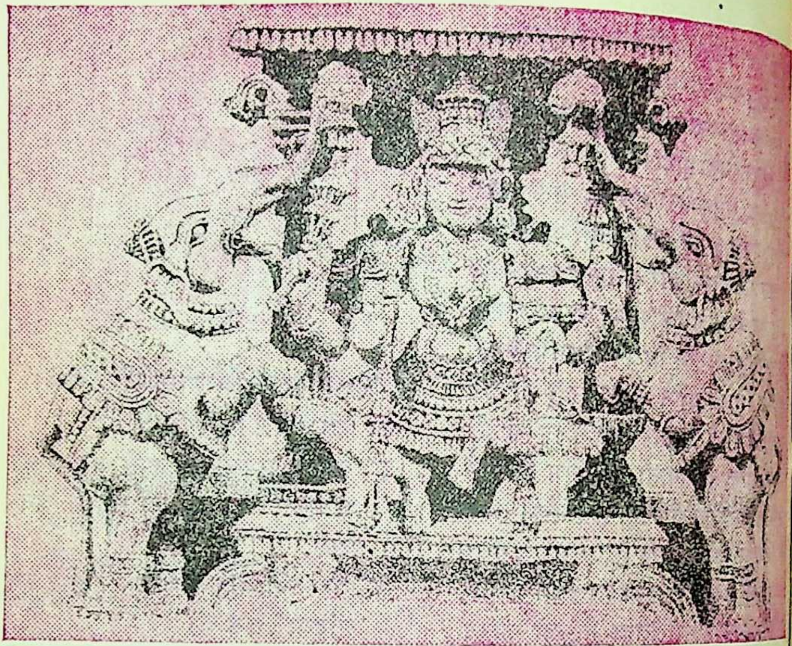

शुभकामना

दीपावली के मंगलमय अवसर पर
हम आपके और आपके परिवार के
सुख, सौमनस्य एवं उत्कर्ष की मंगलकामना करते हैं।
पाठक, लेखक, शुभचिंतक एवं विज्ञापनदाता के रूप में
आपने नवनीत-परिवार को जो स्नेह दिया है,
उसके लिए हम आपके आभारी हैं।
हमें आशा है कि आपका स्नेह नवनीत को इसी तरह मिलता रहेगा,
जिससे हम आपकी सेवा और भी उत्साह से कर सकें।

भवदीय – नवनीत परिवार

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्ञात से अज्ञात इतिहास में जाने के साहस के लिए क्षमाप्रार्थी हूं। देखना चाहता हूं महाभारत के युद्ध को। असल में समूचे मानव-इतिहास का प्रमुख उद्योग युद्ध रहा है। महाभारत का युद्ध आपकी परिभाषा से अनैतिहासिक ही माना जाना चाहिये। समय पीछे की ओर लौटे और खुले, तो मैं उस महाभारत का साक्षी होना चाहूंगा। इसलिए नहीं कि वह युद्ध था, वरन इसलिए कि उसके नायक श्रीकृष्ण थे। कृष्ण सनातन परंपरा में परमावतार माने जाते हैं। वही जिस युद्ध में नायक हों, वह विलक्षण होना चाहिये।

'महाभारत' भारतीयों के लिए सबसे मान्य ग्रंथ है। भगवद्गीता उसी का एक अंग है और हिंदुओं के लिए उसने परम शास्त्र का स्थान प्राप्त किया है। उसका प्रभाव संसार और इतिहास के समस्त मनीषियों पर पड़ा है और उसमें उन्होंने पदार्थ-समन्वय के दर्शन किये हैं। महाभारत-युद्ध को टालने की कृष्ण ने पूरी कोशिश की। जैसे पांडव उनके अपने थे, कौरव भी वैसे ही उनके अपने थे। पर युद्ध अनिवार्य हुआ और दोनों पक्ष उनकी सहायता के प्रार्थी थे। दोनों की सहायता भी उन्होंने की। कौरव-पक्ष के दुर्योधन से उन्होंने कहा—'क्या लोगे? मेरी सेना या मुझे? जो चाहो चुन लो।' दुर्योधन अकेले कृष्ण का क्या बनाते! उन्होंने सेना को मांग लिया। और अर्जुन प्रसन्न हुए कि उन्हें स्वयं कृष्ण का लाभ हुआ।

अर्थात् कौरवों के पास शक्ति थी—पांडवों की अपेक्षा कहीं अधिक सैन्य-शक्ति। पर पांडवों के पक्ष में नीति थी और उसके प्रतीक स्वयं कृष्ण थे।

युद्ध का निवारण इतिहास में कभी नहीं हो सका है। आगे भी कभी न हो पायेगा। कृष्ण उसे नहीं टाल सके, तो आज के किसिंजर जैसे राजनीतिज्ञ क्या टाल सकेंगे! पर युद्ध का स्तर बदलेगा और विकसित होगा। आखिर जिसमें लोग हजारों-लाखों की संख्या में मरते और मारते हैं, वह हंसी-खेल की चीज नहीं। अवश्य उसमें कुछ तत्त्व होते हैं, जो मूल्य में जीवन से बढ़ जाते हैं, जिसकी रक्षा में मृत्यु का देना और लेना हल्का पड़ जाता है। अर्थात् युद्ध में से जाने-अनजाने मानव-मूल्य की प्रतिष्ठा होती आयी है—असत्य के विरोध में सत्य और अधर्म के विरोध में धर्म की प्रतिष्ठा।

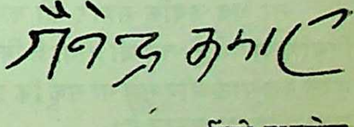

युद्ध प्रबल, संघटित राजशक्तियों के बीच होता है। राजशक्ति विविध समाजसत्ताओं का प्रतीक होती है। उनकी टकराहट मानव-जाति के गहरे आत्मालोडन में से निकलती है और उससे भी गहरे आत्ममंथन को जन्म देती है। भारत के धर्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

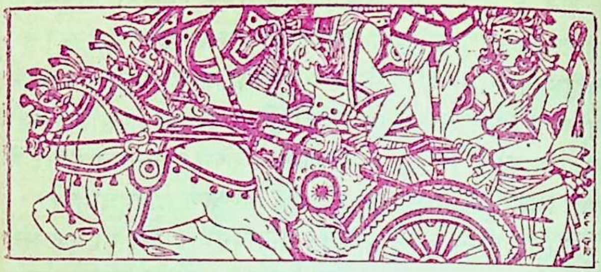

कुरुक्षेत्र की रणभूमि में कृष्ण का गीतोपदेश। भारतीय संविधान की मूल प्रति पर नंदलाल बसु द्वारा अंकित।

को थामने वाले दोनों महापुराण—रामायण, महाभारत—युद्ध के ही चहुं ओर बने गये हैं।

कृष्ण का प्रण था कि रण में वे शस्त्र हाथ में नहीं लेंगे। यह प्रतिज्ञा क्या युद्ध के नायक की शोभा हो सकती है ? और जो नायक स्वयं योद्धा नहीं है, योद्धा का सारथी है। सारथी रहकर ही उसे पांडवों को जय प्राप्त करानी है।

मैं चाहता हूं कि साक्षात् देख सकूं उस अनोखे युद्ध को और उसके सूत्रधार कृष्ण को। वह कृष्ण कैसा रहा होगा, जिसने कौरवों और पांडवों की सन्नद्ध सेनाओं के बीच अर्जुन से कहा कि कौन मरता है, कौन मारता है ? यह तो सृष्टि की और स्रष्टा की लीला है और आदमी बस निमित्त है, कर्ता नहीं है। लड़ो पर पहले वैर को त्याग दो। स्थितप्रज्ञ बनो। और फिर तुम अपने ही कर्म की सीमा में नहीं बंधोगे। तुम कर्तृत्व से छूटोगे और भाव के माध्यम बने रहोगे।

देखना चाहूंगा उस कृष्ण को, जो यह सब कहता है और आदर्श के भुलावे से जवान गांडीवधारी अर्जुन को युद्धोद्यत कर देता है। देखना चाहूंगा उसको, जो कौरव-सेनाध्यक्ष भीष्म से सीधे जाकर उनकी मृत्यु का उपाय उन्हीं से पूछ लेता है। कृष्ण के नेतृत्व में लड़े जाने वाले उस युद्ध को मैं प्रत्यक्ष देखना चाहूंगा, जिसमें जो दिन में लड़ते हैं संध्या को कहीं गप्पाष्टक में मिल आते हैं।

युद्ध-जैसे मार-काट वाले लौकिक व्यवहार को अध्यात्म से जोड़ देने वाले अलौकिक कृष्ण को मैं साक्षात् कर्म-व्यापार के बीच देखना और समझना चाहूंगा। हजारों वर्ष बाद भारत में हुए गांधी को भी संसार ने देखा। सारी आयु उनकी लड़ते बीती, पर प्रेम और सत्य रूप परमेश्वर एक क्षण के लिए उनके भीतर से लुप्त न हुए। छाती पर तीन गोलियां शत्रु की खाकर मुंह से उनके निकला—'हे राम !'

तो अब जबकि संहार की कला चरम तक पहुंची है और महाभीषण अणु-अस्त्र निर्माण पा गये हैं, तब जी होता है कि प्राचीन कृष्ण और अर्वाचीन गांधी को फिर से काम करते देख पाऊं और सूझ पा सकूं कि इन अवतारों को आसन्न संकट में क्या और कैसे प्रवर्तमान पाया जा सकता है।

* कालयंत्र संबंधी हमारे प्रश्न (द्रष्टव्य पृष्ठ ७२) से प्रेरित चिंतन *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर तुम्हें लिख दूं धरा के भाल पर
फिर तुम्हें रच दूं गगन के गाल पर

हो गये मुझको बहुत-से दिन तुम्हारी छबि संवारे
झर गये कितने धरा के फूल, नभ के नील तारे
भूल बैठे रात दिन आलोक की पगडंडियों को
भूल बैठी है नदी सौंदर्य से जकड़े किनारे
फिर तरंगों को तुम्हारी बांह दूं
फिर कमल-वन को तुम्हारी छांह दूं

है समय छिछला, बहुत ओछा, नशे के ज्वार जैसा
स्वप्न मेरा गुरु-गहन है जागरण के सार जैसा
मुक्त, चिर निर्बंध में मेरे उदय की भव्यता हो
इन घृणा के कंटकों में तुम दया की दिव्यता हो
रागवंधों का तुम्हें सत्कार दूं
पूर्ण अर्पण का अकंपित प्यार दूं

यक्षिणी ! गूंजूं तुम्हें प्रत्येक बादल की भंवर में
आक्षितिज फिरती, सिमटती, कौंधती सुधि की घहर में
इस थमी, सहमी, विरहणी सृष्टि में तुमको निहारूं
प्रति दिवा की कोख की लज्जित ललाई में पुकारूं
शुक्तिवर्षी ऋतु तुम्हीं में आंक दूं
छोर सुषमा के तुम्हीं में टांक दूं

गीत के सारे गुनाहों में तुम्हें सब दिन उभारा
देख पाया पर न सागर-सा अथाही मन तुम्हारा
जो बयारों-सा उमड़ मोती लड़ी-सा टूटता है
जो विभा की वक्र किरणों के कलश में फूटता है
मैं तुम्हें बांधू गिरा के प्राण से
रूप-श्री लालित्य के दिनमान से

—अंचल—
पचपेढ़ी, दक्षिण सिविल लाइन्स, जबलपुर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अराजनयिक संस्मरण

सन १९५४ में ऊ नू की पीकिंग-यात्रा के समय समूची चीनी जनता अमरीका के विरुद्ध आगबबूला हो रही थी। उसकी अमरीका-विरोधी भावना की अभिव्यक्ति हो रही थी लगातार चलने वाले प्रदर्शनों में। चूंकि पीकिंग की आबादी बहुत अधिक है और चूंकि अलग-अलग मुहल्ले अलग-अलग वक्त पर जुलूस निकालते थे, सो सारे दिन प्रदर्शन चलते रहते थे। ऊ नू की टोली जब भी कहीं बाहर जाती, प्रदर्शन चल रहा होता, नारों व चिल्लाहट से आकाश गूंज रहा होता, भिंची मुट्ठियां हवा में तनी होतीं। जब वे अतिथि-गृह में होते, तब वे उन अंतहीन विरोध-प्रदर्शनों के शोर-शराबे से बच न पाते थे।

इस हालत में अन्य कोई भी राजकीय अतिथि चीन-अमरीका मैत्री की वकालत करने वाली बातें कहने से झिझकता-बचता। जहां तक ऊ नू का मामला है, माओ-ल्यू-चाऊ की त्रिपुटी से उनकी सहज घनिष्ठता भी नहीं बनी थी। असल में वे अभी उनसे ठीक परिचित ही हो पाये थे। मगर ऊ नू तो दोनों राष्ट्रों के बीच सद्भाव के लिए प्रयत्न करने का संकल्प लेकर आये थे; क्या चीज मौजूं और अराजनयिक है, यह जानने की तमीज की भी उनमें कमी थी। वे तो बस इतना जानते थे कि इसका जिक्र अगर और किसी से किया, तो आपत्तियां उठायी जायेंगी और उन्हें इस मामले से बचने के लिए समझाया जायेगा। निदान उन्होंने अपना निर्णय किसी को नहीं बताया—न मंत्रिमंडल के सदस्यों को, न अपने प्रतिनिधि-मंडल को, न पीकिंग स्थित बर्मी राजदूत को। उन्होंने पीकिंग के हृदय-स्थल में अपना तैयार भाषण दे ही डाला।

अवसर था उनके सम्मान में दिया गया सरकारी भोज। ऊ नू के उस लिखित भाषण में दस पैराग्राफ थे। बर्मी भाषा में उसका एक-एक पैराग्राफ वे पढ़ते और एक चीनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुभाषिया उसका चीनी में अनुवाद करता। भाषण के पूर्वार्ध का विषय यह था कि वर्मा छोटा देश है, हालांकि वह किसी बड़ी शक्ति की 'छड़ी' न बनने को कृतसंकल्प है। उन्होंने यह बात जोर देकर कही कि वर्मा नये मित्र बनाना चाहता है, और मित्र बनाने के बाद वह कभी बेवफाई न करेगा; और वह शांति की स्थापना और रक्षा को सर्वाधिक महत्त्व देता है। इनमें से प्रत्येक भावना की अभिव्यक्ति पर सम्मानित श्रोता-वर्ग ने तालियां बजाकर अपनी सहमति प्रकट की।

ऊ नू ने जोर देकर कहा—'चूंकि हमारा देश एक छोटा देश है, सो इन दो महादेशों (संयुक्त राज्य अमरीका और जनवादी चीनी गणतंत्र) के विषय में हमारी दृष्टि पूर्वग्रह से आच्छादित नहीं है।' इसके बाद उन्होंने अमरीका का वर्णन किया और अंत में कहा कि वह 'महान पुरुषों और महान स्त्रियों का देश है, जो दुनिया को बेहतर दुनिया बनाने में समर्थ हैं ...... ऐसे वीरों का देश जिन्होंने दुनिया को नात्सीवाद और फासीवाद के अभिशाप से बचाया, जो जरूरतमंदों को अरबों रुपयों की चीजें मुफ्त में देकर ऐसा उपकार कर रहा है जिसकी कोई मिसाल नहीं, जबकि अन्य अधिकांश देश दान देने के बजाय ऐयाशी कर रहे हैं।'

इसके बाद प्रधान-मंत्री ने जनवादी चीनी गणतंत्र का इससे भी लंबा यशोगान किया और उसकी सरकार के साहस को सराहा और चीनी जनता को वह जो कुछ दे रही है उसकी तारीफ की। अंत में ऊ नू ने

पड़ोसी देश बर्मा के भूतपूर्व प्रधान-मंत्री ऊ नू एशिया के स्वातंत्र्योदय-काल के विशिष्ट और सम्मानित नेता रहे हैं। 'ऊ नू : सैटर्डेज सन' (भारतीय संस्करण, भारतीय विद्या भवन, बंबई से हाल में प्रकाशित), जिसके कुछ पृष्ठ यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं, उनकी आत्मकथा है। प्रथम पुरुष (थर्ड पर्सन) में लिखी गयी यह विलक्षण आत्मकथा ऊ नू की छिपाव-रहित स्पष्टोक्ति, तटस्थ दृष्टि व अपने पर हंसने की शक्ति के कारण रोचक और अनूठी बन पड़ी है।

सौजन्य:

भारतीय विद्या भवन, बंबई-७

कहा—'इसलिए हम ऐसा अनुभव करते हैं कि शक्ति की राजनीति में तटस्थ होने के नाते हमें ऐसा कुछ करना चाहिये, जिससे अमरीका और चीन रक्तपाती युद्ध का आसरा लिये बिना अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकें।'

फिर इन दोनों देशों को क्या करना चाहिये, इस बारे में कुछ सामान्य किस्म की और अस्पष्ट सलाहें देने के बाद उन्होंने अपना भाषण इस प्रकार समाप्त किया:

'हाइड्रोजन-बमों और परमाणु-बमों का एक ही परिणाम होगा। अगर इन हथियारों का उपयोग किया गया, तो निश्चय ही देश के देश तबाह हो जायगे। उस राख में से अनिवार्य रूप से उपजेगा इन भयंकर शस्त्रों का उपयोग करने वाले अंग्रेजों व अमरीकियों के प्रति द्वेष; और उसी राख में से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपजेगा साम्यवाद, जो कि विनाश और गरीबी पर पनपता है।

'इसलिए दक्षिण-पूर्वी एशिया के हर बाशिंदे की यह इल्तिजा है कि जो लोग इस मामले से मुख्यत: संबद्ध हैं वे उसकी आवाज सुनें, ताकि विश्वव्यापी विनाशकारी आग न सुलग उठे।

'मेरी प्रार्थना है कि संयुक्त राज्य अमरीका और जनवादी चीनी गणतंत्र विश्व-शांति और प्रगति के लिए मिल-जुलकर और परस्पर सद्भावपूर्वक काम कर सकें।'

भाषण के इस उत्तरार्ध में श्रोता-वर्ग पत्थर के बुतों की तरह चुप बैठा रहा। अनूदित भाषण के इस अंश के बीच में या अंत में तालियां बिलकुल नहीं बजीं। वातावरण ऐसा था कि सूई गिरे तो भी सुनाई दे जाये।

उस वक्त पीकिंग में ब्रिटेन का कोई राजदूत नहीं था। दूतावास का काम-धाम एक सचिव ही प्रभारी राजदूत के रूप में संभाला करते थे। शायद उन्होंने ऊ नू के भाषण की रिपोर्ट बेतार से लंदन भेजी थी; क्योंकि दो दिन बाद लंदन से ब्रिटेन के विदेश-मंत्री सर एंटनी ईडन का एक संदेश बेतार से ऊ नू के पास आया। संदेश यह था आप अपने प्रभाव का उपयोग करते हुए चीनी शासकों से अपील करें कि युद्ध-बंदी के रूप में चीन में कैद छह अमरीकी हवाबाजों को रिहा कर दिया जाये।

ज्यों ही संदेश पढ़ा गया, ऊ नू ने कहा कि मैं प्रधान-मंत्री चाउ एन-लाइ से बात करूंगा। प्रधान-न्यायाधीश ऊ म्यिट थियेन के लि[ए] बर्मी प्रतिनिधि-मंडल के सभी सदस्यों ने इसका विरोध किया और इस ओर ध्यान खींचा कि अमरीकियों की ओर से ऊ नू पर अपील करने का चीनी नेता गलत अर्थ लगायेंगे। मगर ऊ नू ने उनकी बात मानने से इन्कार कर दिया। बोले, यह कष्ट में पड़े लोगों की मदद का काम है; ऐसी परिस्थिति में चीनियों के लिए भी मैं यही करूंगा। निदान उन्होंने प्रधान-मंत्री चाउ से अपील की और चाउ ने उदात्त भाव से वचन दिया कि अमरीकी हवाबाज रिहा कर दिये जायेंगे; यही नहीं, जब वे रिहा किये जायेंगे, उसकी जानकारी सबसे पहले ऊ नू को दी जायेगी।

ऊ नू के रंगून लौटने के शीघ्र बाद चीनी राजदूत ने उनसे मुलाकात का समय मांगा। कार्याधिक्य के कारण ऊ नू ने तीन दिन बाद का समय दिया। जब चीनी राजदूत मिलने बाकायदा पधारे, तो उन्होंने यह खबर लाकर दी कि चीन सरकार अमरीकी हवाबाजों को रिहा करने को तैयार है। ऊ नू ने विदेश-विभाग की मार्फत फौरन यह खबर रंगून के अमरीकी राजदूत को दी। अगले दिन हवाबाज रिहा कर दिये गये।

हो चीं मिन्ह से मुलाकात

चीन से लौटते हुए १९५४ में ऊ नू उत्तर वियतनाम की राजधानी हनोई में अल्पकाल के लिए रुके। जब बर्मी प्रतिनिधि-

[शेष पृष्ठ २४९ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शीर्षक के साथ : गजलक्ष्मी (सांची)

श्रीलक्ष्मी आर्येतर देवी थी?

जैनेंद्र वात्स्यायन

शतपथ ब्राह्मण में श्रीलक्ष्मी से संबंधित एक कथा मिलती है। वह इस प्रकार है। प्रजापति की साधना के मूल रूप में श्री उनके हृदय से निकलकर दिव्य सौंदर्यमयी, ओजोमयी देवी के रूप में उपस्थित हुई। देवताओं ने पहले तो उसका वध करने का विचार किया। किंतु फिर यह सोचकर कि किसी का वध नहीं करना चाहिये, उन्होंने श्री के संपूर्ण वैभव और ऐश्वर्य का अपहरण कर लिया। इन अपहृत गुणों में अन्न, राज्य, राष्ट्र, रूप व क्षेत्र आदि थे। फिर जब श्री ने प्रजापति की सम्मति से यज्ञ किया, तो अपने सभी गुण उसे वापस मिल गये।

उसी ग्रंथ में अन्यत्र यह भी उल्लेख मिलता है कि श्री से ही अग्नि ने भक्षणीय अन्न, सोम ने राज्य, वरुण ने साम्राज्य, मित्र ने क्षात्र, इंद्र ने बल, बृहस्पति ने ब्रह्मवर्चस, सविता ने राष्ट्र, पूषा ने ऐश्वर्य, सरस्वती ने पुष्टि और त्वष्टा ने रूप प्राप्त किये।

तस्या अग्निरन्नाद्यमादित । सोमो राज्यं वरुणः साम्राज्यं मित्रः क्षात्रमिन्द्रो बलम् बृहस्पतिर्ब्रह्मवर्चसं सविता राष्ट्रं पूषा भगं सरस्वती पुष्टिं त्वष्टा रूपाणि ।।

शतपथ ११.४.३.३ ।।

उपर्युक्त कथा पर अपना मत व्यक्त करते हुए डा. राय गोविंद चंद्र ने लिखा है— 'इस प्राचीन कथा से यह संकेत मिलता है कि शायद यह भारत के आदिवासियों की देवी थी; इससे आर्य देवताओं को आहुति दिलवाने का कथा-प्रकरण बनाकर इसे अपने देवताओं में मिला लिया गया (प्राचीन भारत में लक्ष्मी, पृष्ठ २५)।

उनकी इस राय से सहमत होने में कठिनाइयां आती हैं; क्योंकि इस कथा से तो यही सिद्ध होता है कि श्री प्रजापति की संतान है। प्रजापति आर्य संस्कृति का सर्वोच्च देवता, जगत् का स्रष्टा, पालक एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संहारक है। भला उससे उत्पन्न तत्त्व अवैदिक, अनार्य या आदिवासी कैसे हो सकता है?

श्रीलक्ष्मी आर्य है अथवा अनार्य है, इसे निर्भ्रांत रूप से सिद्ध करने के लिए यह आवश्यक है कि हम वेद आदि का भी निरीक्षण करें। तभी हम श्रीलक्ष्मी के स्वरूप को सही ढंग से समझ सकेंगे।

आर्यों द्वारा श्रीलक्ष्मी की पूजा का सर्वाधिक स्पष्ट साक्ष्य है ऋग्वेद के मंडल पांच के खिल भाग में प्राप्त होने वाला 'श्रीसूक्त'। यह सूक्त निश्चय ही अत्यंत लोकप्रिय रहा होगा; क्योंकि संहिता-साहित्य में विशेष रूप से इसकी चर्चा हुई है और अनेक विद्वानों ने इस पर स्वतंत्र भाष्यों की रचना की है।

आज 'श्रीसूक्त' में २९ मंत्र ही उपलब्ध हैं। इसके कुछ मंत्र लक्ष्मी-परक हैं तथा कुछ श्री-परक। किंतु उन सबको एक साथ पढ़ने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि इनमें श्री और लक्ष्मी में कोई भेद नहीं है। ऐश्वर्य का प्रतीक मानकर लक्ष्मी का वर्णन श्रीसूक्त में हुआ है। उसमें कहा गया है कि समृद्धि, संपत्ति, आयु, आरोग्य, पुत्र-पौत्रादि परिवार, धन-धान्य की विपुलता आदि की प्राप्ति के लिए श्री एवं लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

श्रीलक्ष्मी के स्वरूप और गुणों का प्रतिपादन करने वाले करीब पांच दर्जन नाम श्रीसूक्त में मिलते हैं। इनमें से उल्लेखनीय हैं—अच्युतवल्लभा, अश्वपूर्वा, अश्वदा, आर्द्रा, करीषिणी, चंद्रा, त्रिभुवनभूतिकरी, देवजुष्टा, पद्मप्रिया, पद्ममालिनी, पद्माक्षी,

भगवती, भूमि, महालक्ष्मी, [illegible]
सूर्या, हिरण्यमयी, हेममालिनी [illegible]

इस सूक्त में प्रार्थना की [illegible]
सुवर्ण, गायें, अश्व और नौकर- [illegible]
परिवार से युक्त लक्ष्मी मुझे [illegible]
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं [illegible]
धन-धान्य इत्यादि सांसारिक [illegible]
नहीं, वरन सैन्य-संपत्ति का [illegible]
ही समावेश किया गया है। [illegible]
की गयी है कि अश्व, रथ, [illegible]
सुसज्जित सैन्य का रूप धारण [illegible]
लक्ष्मी मुझे प्राप्त हो एवं [illegible]
निवास मेरे घर में हो:

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद [illegible]
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवी [illegible]

लक्ष्मी का संबंध यहां सुवर्ण [illegible]
रता आदि से किया गया है। [illegible]
ही देवी का उल्लेख आर्द्रा, [illegible]
करीषिणी या गोबरयुक्त, [illegible]
रिणी, ज्वलंती और चिक्लीत [illegible]
में भी किया गया है। कमल से [illegible]
का संबंध बताया गया है और [illegible]
की आवाज से आनंदित होने [illegible]
गया है। श्री से इस प्रकार की [illegible]
गयी है कि वह अन्न एवं पशुद्वारा [illegible]
में निवास करे। उसे ऐसे रथ [illegible]
बताया गया है, जो सुवर्ण का [illegible]
आगे अश्व जुते हैं, जिसके दोनों [illegible]
चिंघाड़ रहे हैं। श्री की प्रसन्नता [illegible]
अर्पण से होती है।

श्रीसूक्त के अनुसार इन मंत्रों [illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चक्लीन, श्रोत और आनंद। एवं इसकी उपासना के प्रवर्तक थे।

र:श्रीदाश्चिक्लीन इति विश्रुता:।
पुत्राश्च श्रीर्देवीर्देवता मता:।।

हार हम देखते हैं कि श्रीसूक्त में लक्ष्मी में कोई अंतर नहीं दिखाई तीनों शब्द एक ही देवी के नाम हैं यवाची हैं। पौराणिक काल में के जो विविध रूप और नाम मिलते मूल स्रोत श्रीसूक्त ही है। इसी र्वप्रथम श्रीलक्ष्मी को विष्णुपत्नी गया है :

लीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।
प्रियसखीं भूमिं नमाम्यच्युतवल्लभाम्

में हमें लक्ष्मी का गायत्री मंत्र भी है :

म्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि।
मी: प्रचोदयात्।।

क्त का रचना-काल विवादास्पद विद्वान इसे उत्तर-वैदिक काल की ानते हैं। वैदिक परंपरा के 'बृह- ात्मक ग्रंथ में इस सूक्त का इस ल्लेख हुआ है :

ाशीर्वादस्तु श्रीं पुत्राणां पराणिषट्।
लक्ष्म्युपनुदमग्निस्तत्रनियातभाक्।।

ता' का समय पाणिनि के आस- जाता है। इसलिए ई.पू. चौथी- ाती तक श्रीलक्ष्मी की पूजा का विकास हो चुका होगा और दोनों (श्री और लक्ष्मी) का समन्वय भी र कर लिया गया होगा।

ऐसा लगता है कि उत्तर वैदिक काल तक श्री एक देवी का रूप ग्रहण कर चुकी थी। उत्तर-वैदिक काल के साहित्य में श्री की चर्चा अनेक प्रकार के सुख देने वाली देवी के रूप में है। यजुर्वेद वाजसनेयि संहिता में श्री और लक्ष्मी को पुरुष प्रजापति की पत्नियां माना गया है (३१.२२)।

आधुनिक विचारकों का मत है कि 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग मूलत: चिह्न-लक्षण या शुभ-लक्षण के रूप में होता था और संभवत: इसी प्रकार लक्ष्मी को शुभ-लक्षण या सौभाग्य की देवी माना जाने लगा। अकल्याणकारी देवी के रूप में अलक्ष्मी का भी वर्णन मिलता है। इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण उल्लेख अथर्ववेद में है। वहां एक मंत्र में कहा गया है कि प्रत्येक मनुष्य का जन्म होने के साथ एक सौ एक लक्ष्मियां भी पैदा होती हैं, जिनमें कुछ अकल्याणकारी, कुछ कल्याणकारी होती हैः

लक्ष्मी : मथुरा
[अनुकृति : रानी]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकशतं लक्ष्मयो मर्त्यस्य
साकं तन्वा जनुषोधि जाताः।

फिर आगे कहा गया है कि जो पुण्यमयी पवित्र लक्ष्मियां मेरे स्वभाव को दरशाने वाली उत्तम प्रवृत्तियां हैं, वे मेरे जीवन में बार-बार प्रकट हों और जो पापजनक बुरी प्रवृत्तियां हैं, उन्हें मैं अपने में से निकालकर दूर कर दूं:

तासां पापिष्ठा निरितः प्र हिण्मः
शिवा अस्मभ्यं जातवेदो नियच्छ।।

अथर्ववेद में ऋत, सत्य, बल, वीर्य आदि से लक्ष्मी की एकता स्थापित की गयी है:

ऋतं सत्यं तपो राष्ट्रं श्रमो धर्मश्च कर्म च।
भूतं भविष्यदुच्छिष्टे वीर्यं लक्ष्मीर्बलं बले।।

उपर्युक्त तथ्यों पर विचार करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि श्रीलक्ष्मी एक आर्य देवी है, आर्येतर नहीं। स्वयं डा. राय गोविंद चंद्र ने एक अन्य स्थल पर 'श्री' को प्रजापति की पत्नी आर्य देवी माना है (प्राचीन भारत में लक्ष्मी-प्रतिमा, पृष्ठ ७)। किंतु शतपथ ब्राह्मण की कथा की व्याख्या करते हुए वे उसे आदिवासी (अनार्य) देवी मान लेते हैं। शतपथ ब्राह्मण की कथा में यज्ञ के द्वारा लक्ष्मी अपने गुणों को पुनः प्राप्त करती है, यज्ञ द्वारा उसकी शुद्धि नहीं होती। यज्ञ द्वारा शुद्ध होकर किसी आदिवासी या विदेशी देवी-देवता के आर्य देवताओं में सम्मिलित होने की परंपरा हमें किसी प्राचीन ग्रंथ में नहीं मिलती।

श्रीलक्ष्मी को आर्येतर देवी सिद्ध करने के लिए डा. राय गोविंद चंद्र ने एक दूसरा साक्ष्य भी प्रस्तुत किया है ... सभ्यता से प्राप्त एक मुहर ... देवी को पद्मासीन रूप में प्र... है (वहीं, पृष्ठ १२, १५, १...) यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा ... सिंधु सभ्यता की ... मुहर ... चित्र लक्ष्मी का ही है। उस ... को पढ़ने में सफलता नहीं मि... तक इसमें सफलता न मिल ... अनिश्चितता बनी ही रहेगी ... में देवीपूजा यानी मातृपूजा ... मिलते हैं; परंतु यह देवी कौ... जानकारी अभी तक नहीं मि...

इसके अलावा यह कहना ... बलि से लक्ष्मी (दूसरी मुहर) ... सिद्ध होती है, उचित नहीं है; ... प्रथा आर्यों में भी थी और वि... सनाओं और यज्ञों में पशुबलि ... थी। भोजन में भी आर्य मांस ... से सेवन करते थे। पशुबलि ... वस्तुतः वैदिकोत्तर परंपरा है। ... के विकास के साथ-साथ उपास... क्रूर रूप का निषेध हुआ। वै... पशुबलि को ही नहीं, प्रत्युत मांस... भी निषिद्ध कर दिया।

इसलिए यदि प्राचीन परंपरा ... भी देवी-देवता को बलि दी जा... उससे वे अनार्य नहीं सिद्ध हो ... उससे उनके आर्यत्व की ही पुष्टि ...

—इंडियन नेशनल चर्च, अ...
पो. बारतपुर, गोरखपुर-...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ाल पहले जब देश में सूखा पड़ा था, की चपेट में सबसे ज्यादा कराहा । अनेक सरकारी-गैरसरकारी मिले-जुले प्रयत्न से इंसानों को जबड़ों से बचा लिया गया; ों की समस्या बड़ी विकट थी। सूखे थे, पेड़ों पर भी हरियाली एक पत्ती तक नहीं बची थी। ें तो क्या खायें ? इस चुनौती कया कुछ वैज्ञानिकों ने। राहत- लगे दूसरे कार्यकर्ताओं की तरह कों का भी एक तंबू लग गया के सबसे अधिक अकाल-पीड़ित और पशुओं के लिए उस समय लब्ध सामग्री से आहार जुटाने संधान शुरू हो गया।

दिनों में ही इन वैज्ञानिकों ने गन्ने को खोई और पत्तियों के साथ शीरा, यूरिया, खाने का नमक, हड्डी का चूरा और कुछ खनिज नपी-तुली मात्रा में मिलाकर पशु-आहार तैयार कर डाला। यह मिश्रण तुरंत बड़े पैमाने पर तैयार कराया गया। कोई ३४ हजार पशु छह महीने तक उसे खाकर जीवित रहे। सामान्य आहार देने पर प्रति पशु पर कम से कम डेढ़ रुपया दैनिक खर्चा आता, जबकि इस संकटकालीन आहार को तैयार करने, उसकी यातायात-व्यवस्था करने, उसके वितरण के लिए कैंप लगाने वगैरह का खर्चा कुल मिलाकर सिर्फ ३८ पैसे प्रति पशु बैठा।

महाराष्ट्र के उन भूख-पीड़ित मूक पशुओं की सेवा करने ये वैज्ञानिक आये थे उत्तर प्रदेश के बरेली शहर से सात किलो-

[शीर्षक के साथ का चित्र : अमर वर्णेकर]

रमेशदत्त शर्मा

शुधन ी सेवा में ैज्ञान

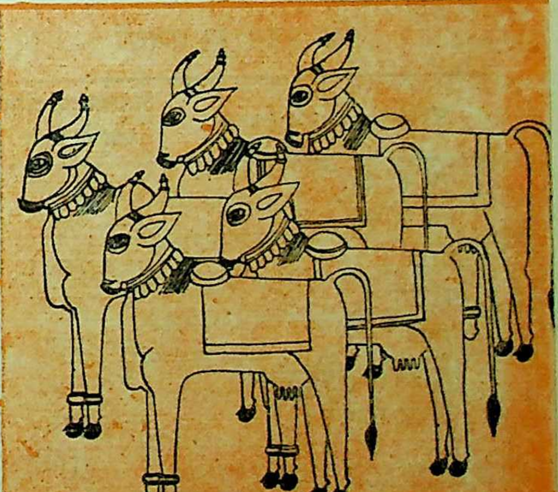

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

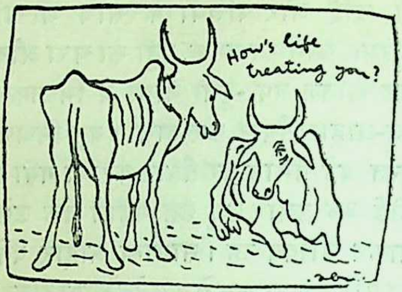

'क्यों भाई, कैसी चल रही है जिंदगी ?'
[अबू : इंडियन एक्सप्रेस]

मीटर दूर इज्जत नगर के भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान से । करीब ७५० एकड़ भूमि में फैला हुआ यह संस्थान पूर्वी दुनिया का अपने ढंग का विशिष्ट संस्थान है।

सन १९७२ में जब इसने अपनी ८० वीं बरसगांठ हीरक-जयंती के रूप में मनायी, तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि उसमें शरीक हुए थे और उन्होंने अंग्रेजी के वाई अक्षर के आकार की उसकी विशाल नयी प्रयोगशाला का शिलान्यास किया था। परंतु इस हीरक-जयंती वर्ष में संस्थान की सबसे बड़ी देन थी पशुओं का 'सूखा राशन' जिसने महाराष्ट्र में हजारों पशुओं की जीवन-रक्षा की और देश के दूसरे भागों के लिए भी संकटकालीन पशु-भोजन सुलभ कर दिया।

इज्जतनगर के वैज्ञानिकों ने घोड़, गाय, भैंस, सूअर और मुर्गी जैसे पशु-पक्षियों के लिए सस्ता और पौष्टिक आहार जुटाने पर बड़े उपयोगी अनुसंधान किये हैं। मक्का वगैरह अनाज मनुष्यों के लिए ही कम पड़ता है, इसलिए खेतों और जंगलों की बेकार जाने वाली चीजों से पशु-आहार बनाने

सूखा पड़ने पर पशुओं के लिए जीवन-रक्षक आहार

पदार्थ	अनुत्पादक प्रौढ़ पशु के लिए	बढ़वार में चल रहे पशु के लिए
गन्ने की खोई	२·० किलो	२·० किलो
गन्ने के पत्ते	८·० किलो	३·० किलो
शीरा	०·४ किलो	०·५ किलो
यूरिया	२२ ग्राम	५० ग्राँम
नमक	३० ग्राम	२० ग्राम
हड्डी-चूरा (विसंक्रमित)	२० ग्राम	२० ग्राम
खनिज-मिश्रण	०·५ ग्राम	०·५ ग्राम

(प्रति पशु सप्ताह में दो बार)

एक बालटी में ये सब पदार्थ मिला दीजिये, एक पशु का दिन-भर का आहार तैयार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की इन खोजों की बड़ी उपयोगिता है।

इनके विषय में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के महानिदेशक डा. एम. एस. स्वामिनाथन् का कहना है—'टैपियोका के चूरे, फल और डिब्बाबंदी उद्योग की उपजात वस्तुओं, शराब-कारखानों की उपजात वस्तुओं, मछली के चूरे, बूचड़खानों द्वारा फेंकी गयी चीजों, रेशम-उद्योग की उपजात वस्तुओं और साल तथा बांज जैसे वन-वृक्षों के बीजों से पशुओं का आहार बनाने की संभावनाओं को देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई है।' बात सचमुच ही प्रसन्नता की है, जैसा कि साल-बीजों के उदाहरण से स्पष्ट हो जायेगी।

केवल उड़ीसा राज्य की बात करें। वहां ७,००० वर्गमील में फैले जंगलों में से लगभग ३,५०० वर्गमील में साल के पेड़ उगे हैं। एक वर्ष में साल के एक पेड़ से दो-तीन मन तक फल इकट्ठे किये जा सकते हैं। अर्थात् प्रतिवर्ष प्रति वर्गमील ४८,००० मन फल मिल सकते हैं। अब आप स्वयं कल्पना कीजिये कि पंजाब से असम तक, उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा और पूर्वी मध्य प्रदेश में फैले विशाल साल-वनों से कितना बड़ा फल-भंडार प्राप्त किया जा सकता है! प्रयोगों से पता चलता है कि पशुओं के रातब में २० प्रतिशत तक साल-फल के बीजों का चूरा मिलाकर खिलाया जा सकता है। पशु उसे चाव से खाते हैं और उनकी बढ़वार पर इसका कोई बुरा असर भी नहीं पड़ता।

मुक्तेश्वर के जैविक उत्पाद विभाग में टीके तैयार हो रहे हैं।

अकाल के दिनों में महाराष्ट्र के पशुओं की सेवा करके असल में भारतीय पशु-चिकित्सा संस्थान ने एक तरह से बहुत ही पुराना पितृ-ऋण चुकाया था; क्योंकि उस संस्थान का जन्म महाराष्ट्र की सांस्कृतिक राजधानी पूना में ही सन १८८३ में जीवाणु-विज्ञान संबंधी एक छोटी-सी प्रयोगशाला के रूप में हुआ था। कहते हैं कि चिकित्सा-विज्ञान के क्षेत्र में यह भारत में सबसे पहली अनुसंधानशाला थी। फिर इस प्रयोगशाला के संस्थापक अल्फ्रेड लिनगार्ड इसे पूना के पठार से उठाकर नैनीताल से ५१ मील दूर पहाड़ियों में बसे मुक्तेश्वर में ले आये।

हिमालय की सुंदर पर्वत-शृंखला में साढ़े सात हजार फुट की ऊंचाई पर बसे मुक्ते-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्वर तक पहुंचने के लिए उन दिनों कोई सड़क भी नहीं थी। इसलिए जब सन १८८७ में जर्मनी के विश्वविख्यात जीवाणु-विज्ञानी राबर्ट कॉख और फाइफर इस प्रयोगशाला को देखने भारत आये, तो मुक्तेश्वर पहुंचने के लिए उन्हें टट्टुओं की सवारी करनी पड़ी थी। उन दिनों लिनगार्ड साहब यहां पशुओं की महामारी रिंडरपेस्ट या पोंका का टीका बनाने की कोशिश कर रहे थे। तब कॉख ने भी इस टीके के परीक्षण किये थे।

इस टीके से संबंधित परीक्षण वस्तुतः १८८० में ही शुरू हो गये थे। उन दिनों हर साल कोई दो लाख मवेशी रिंडरपेस्ट से मर जाते थे। लिनगार्ड के उत्तराधिकारी एडवर्ड और उनके सहयोगियों ने भी मुक्तेश्वर की प्रयोगशाला में इस टीके पर ... जारी रखा। आखिरकार १९२६-... रिंडरपेस्ट का टीका तैयार हो पाया। ... अनुसंधान से और भी सस्ता टीका ... जा सका।

इतने साल पहले ही टीका तैयार ... जाने पर भी भारत से रिंडरपेस्ट का ... निशान मिटा देने का फैसला १९५४ में ... गया। उस समय तक मुक्तेश्वर की प्रयोगशाला फैल-फूटकर आज के महान ... इंडियन वेटेरिनरी रिसर्च इंस्टिटयूट (आइ. वी. आर. आइ.) का रूप ले चुकी थी ... उसकी शाखा-प्रशाखाएं सारे देश में ... चुकी थीं। इसीलिए रिंडरपेस्ट-उन्मूलन अभियान के लिए टीके का उत्पादन इज्ज... नगर के साथ ही हिसार (हरियाणा), ... (मध्य प्रदेश), ... नऊ, कलकत्ता ... रानीपेट (तमिलनाडु) में भी किया ...। असल में पूरे देश ... इस टीके की ... करोड़ खुराकों ... जरूरत थी।

पहली पंचवर्षीय योजना में कृष्णा ... के परे के दक्षिण भा... में लगभग डेढ़ ... मवेशियों को टीके लगाये गये। ... योजना में ...

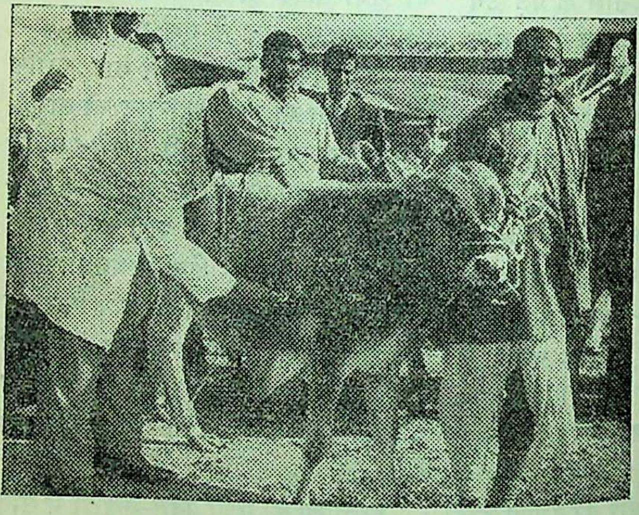

विज्ञान—गोसेवा में निरत है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

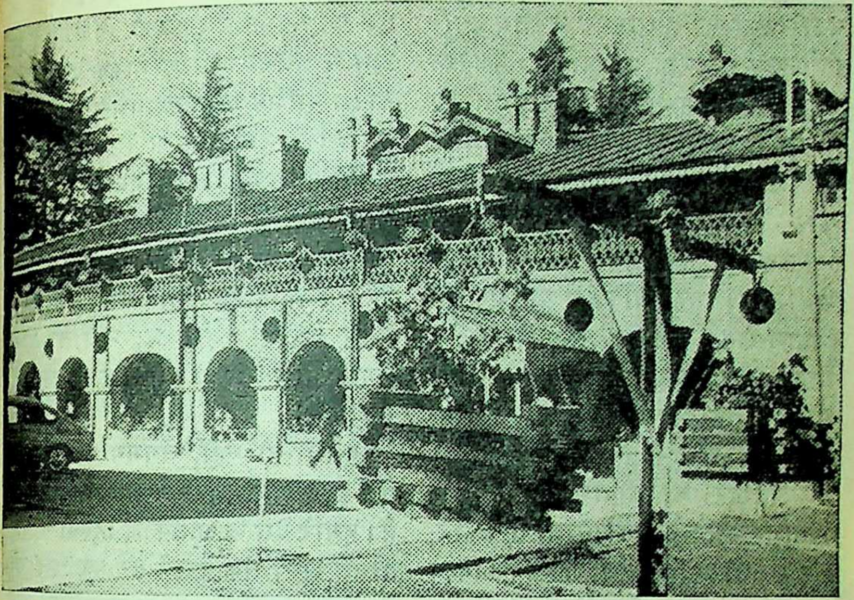

मुक्तेश्वर में भारतीय पशु-चिकित्सा अनुसंधान संस्थान की प्रयोगशालाओं की इमारत, जिसमें पशुओं की महामारियों के टीकों की खोज और विकास का काम होता है।

प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, बंगाल, उत्तर प्रदेश, पंजाब (हरियाणा सहित), दिल्ली, जम्मू-कश्मीर, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश और असम में अभियान चला। तीसरी योजना की अवधि में सारा देश इस अभियान के व्याप्तिक्षेत्र में आ गया। इस टीके की बदौलत देश को रिंडर-पेस्ट से पशुओं के मरने से हर साल होने वाली ३० करोड़ रुपये की हानि से बचा लिया गया। हमारे विशेषज्ञों ने नेपाल और अफगानिस्तान में भी इस रोग के विरुद्ध अभियान आयोजित किये हैं।

अनुसंधान अभी भी जारी है। पहले रिंडरपेस्ट टीके के लिए हर साल ३०-४० हजार बकरियां मारी जाती थीं। अब टिश्यू-कल्चर से यह टीका तैयार किया जाता है।

पशुओं के एंथ्रेक्स या गिल्टी रोग का टीका भी मुक्तेश्वर में १९०२ में ही तैयार कर लिया गया था। फिर ब्लैक क्वार्टर या जहरबाद, हीमोरेजिक सेप्टीसीमिया या गलघोंटू रोग तथा खुरपका-मुंहपका रोग के टीके तैयार किये गये। खुरपका-मुंह-पका से हमारे देश में हर साल ४ करोड़ रुपये की हानि होती है और गलघोंटू से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगभग ८५ लाख रुपये की। विदेशों से नयी पशु-नस्लों के आगमन के साथ हमारे यहां कुछ नये रोग भी आये हैं, जिनका मुकाबला यह संस्थान बराबर करता है। जयपुर में १९६० में घोड़ों में एक बीमारी फैल गयी, जिसके कारण पांच महीने में कोई २०,००० घोड़े मर गये। उस समय मुक्तेश्वर के एक वैज्ञानिक को जयपुर भेजा गया। पता चला कि ये घोड़े एक नये विषाणु-रोग 'अफ्रीकन हार्स सिकनेस' के शिकार हो गये थे। अध्ययन के बाद उसका भी टीका तैयार किया गया और उस अश्व-रोग को भी काबू में कर लिया गया।

मुक्तेश्वर की जीवाणु-विज्ञान और विषाणु-विज्ञान प्रयोगशालाओं ने संसार-भर में ऐसी ख्याति अर्जित की है कि विश्व स्वास्थ्य संघटन और विश्व खाद्य-कृषि संघटन ने ब्रूसेलोसिस या ब्रूसेला रोग के लिए दुनिया-भर में स्थापित पंद्रह केंद्रों में से एक की स्थापना मुक्तेश्वर में की है। इस रोग में ब्रूसेला एर्बोटस नामक जीवाणु के कारण गाभिन गायों का गर्भस्राव हो जाता है। इसकी रोकथाम के लिए अभी तक जीवंत जीवाणु से बनाया गया टीका लगाया जाता रहा है। मुक्तेश्वर में अब निर्जीव जीवाणु से निर्मित टीके पर परीक्षण चल रहे हैं। यह टीका लगाते समय बड़ी सावधानी बरतनी पड़ती है; नहीं तो टीका लगाने वाले को ही ब्रूसेला का संक्रमण हो सकता है।

ब्रूसेला ही नहीं, लगभग डेढ़ सौ रोग ऐसे हैं, जो जानवरों से आदमी को लगते हैं। हमारे देश के अधिकांश हिस्सों में पशु-पालन अभी तक पुराने ढर्रे पर चल रहा है। कभी ग्वाले पशुओं के गलबहियां डाले नजर आते हैं, तो कभी पशु अपने स्वामी को चाटते हुए। इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रेम की मार अक्सर ग्वालों पर पड़ती है, और वे अनेक पशुजन्य रोगों के शिकार हो जाते हैं। कुछ रोग तो संक्रमित दूध और मांस के जरिये फैलते हैं। इस प्रकार के रोगों पर यहां अनुसंधान होता है।

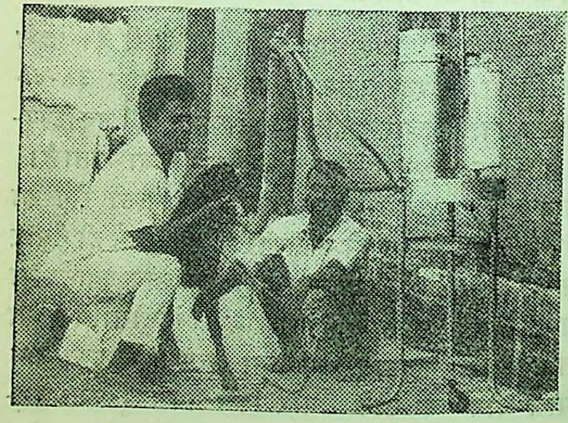

स्पाइरोमीटर यंत्र द्वारा बकरी की जांच।

मुक्तेश्वर के जैविक उत्पाद विभाग ने १९६८ में जैविक सीरम, टीके और निदान के काम आने वाले पदार्थों की कोई २८० लाख

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुराकें सारे देश को मुहैया कीं।

मगर सारा काम मुक्तेश्वर में ही नहीं होता। वहां तो केवल जीवाणु और विषाणु विज्ञान तथा टीके एवं सीरम आदि बनाने के विभाग हैं। १९१३ में इसकी एक शाखा इज्जतनगर में एक छोटी-सी प्रयोगशाला के रूप में खोली गयी थी। १९२५ में वही बढ़ते-बढ़ते इंपोरियल इंस्टिटयूट ऑफ वेटेरिनरी रिसर्च बन गया। आजादी के बाद 'इम्पीरियल' हो गया 'इंडियन'। यहां रोगविज्ञान, परजीवी-विज्ञान, पशुपोषण, पशु-आनुवंशिकी, पशुकार्यिकी (फिजियोलाजी), कुक्कुट-विज्ञान, जीवरसायन, भैषज विज्ञान (फार्मकालोजी) और मादा रोग-विज्ञान (गाइनिकालोजी) की शिक्षा और अनुसंधान का उत्तम प्रबंध है। हाल में ही महामारी-विज्ञान (एपिडेमियालोजी) का विभाग भी खुला है। सारे दक्षिण-पूर्व एशिया से यहां विद्यार्थी आते हैं; कई बार तो 'विकसित' देशों से भी।

संस्थान के निदेशक डा. चिंतामणि सिंह उत्साही विज्ञानी हैं। एक भेंट में उन्होंने बताया–'पशु-चिकित्सा के क्षेत्र में संस्थान ने अनेक चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना किया है। परंतु नयी-नयी समस्याएं उठती रहती हैं। विदेशों से जो विभिन्न नयी नस्लें मंगायी जाती हैं, उनमें बहुत-से गुण होते हैं; परंतु एक बड़ी कमजोरी भी होती है। इस गरम देश में आकर वे ऐसे अनेक रोगों की शिकार हो जाती हैं, जिन्हें देशी पशु बरदाश्त कर लेते हैं। उदाहरण के लिए,

चूजों को रोग से बचाने के लिए दवा का छिड़काव।

रक्त में पलने वाले मेटाजोआ वर्ग के सूक्ष्म जीवों के कारण होने वाले रोग थाइलेरियासिस, एनाप्लाज़्मोसिस और पाइरोप्लाज़्मोसिस विदेशी नस्लों के अस्तित्व के लिए खतरा बन गये हैं। संस्थान में इनकी रोक-थाम के उपाय तेजी से खोजे जा रहे हैं। इसी तरह भेड़ों म चेचक और मसूरिका रोग की समस्या भी विदेशी नस्लों के साथ पैदा हुई है।

'मुर्गियों में पिछले दिनों एक नये विषाणुजन्य रोग मैरक ने बड़ी तबाही मचा दी थी। खास तौर से दिल्ली और महाराष्ट्र के पोल्ट्री-फार्मों में विदेशी नस्लों के कुक्कुटों

[शेष पृष्ठ २०९ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

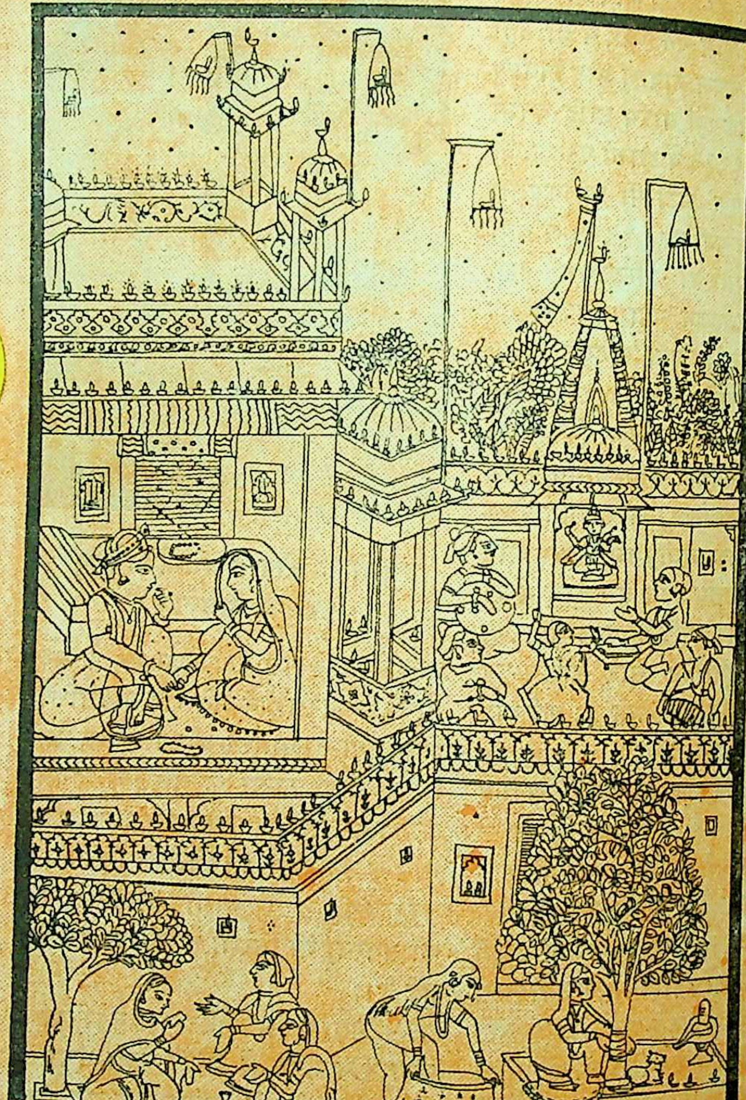

कार्तिक मास (अक्तूबर-नवंबर)। धूलिमुक्त निरभ्र आकाश रात को काजलवर्णी हो उठता है और उसमें जगमगाते हैं हीरों-जैसे तारे। कार्तिक की अमावस को मनाया जाता है मंगल-पर्व दीपावली, जिसमें घर-घर में दीपक जलाकर लक्ष्मी का आवाहन किया जाता है। दीप-पंक्तियों से सजे महल के छज्जे पर राधाकृष्ण विराजित हैं। [अनुकृति : चमन शर्मा]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मधुर कंठ मधुर व्यक्तित्व

चंद्रशेखर पांडेय

मैंने स्वप्न में भी कल्पना नहीं की थी कि कभी ऐसा लेख भी मुझे लिखना पड़ेगा। शनिवार २८ अगस्त का दिन भी कितना अशुभ था, जब डिट्रायट (अमरीका) में मुकेशजी का देहांत हो जाने का समाचार यहां मिला। मुझे क्या, किसी को भी सहसा विश्वास नहीं हो रहा था। किंतु सत्य को मन की भावना कब तक झुठला सकती है! जैसे-जैसे यह हृदय-विदारक समाचार फैलता गया, वैसे-वैसे उनके घर पर उनके प्रियजनों का समूह जुटता गया।

टी.वी. वालों ने विशेष तत्परता दिखायी और उसी शाम को ८। बजे मुकेशजी को श्रद्धांजलि अर्पित करने का कार्यक्रम प्रस्तुत कर दिया। उसमें संगीत-निर्देशक नौशाद, शंकर, रवींद्र जैन, गायिका आशा भोंसले गीतकार हसरत तथा इंदीवर ने मुकेशजी के संबंध में भावनापूर्ण शब्द कहे। संचालन मनमोहन कृष्ण ने किया था। राज कपूर के कहने से मुकेशजी के घर का टी. वी. चालू किया गया और मुकेशजी यह गाते हुए दिखाई पड़े :

'आंसू-भरी हैं ये जीवन की राहें।
कोई उनसे कह दे हमें भूल जायें।।'

सभी फफक-फफककर रो पड़े। अपने को इस संबंध में बहुत धीर समझने वाला मैं भी रुदन-वेग को शमित न कर सका और बच्चों की तरह रो दिया।

रविवार की रात को २-२॥ बजे मुकेशजी का शव बंबई आया। सोमवार को २ बजते-बजते उनका पार्थिव शरीर ज्वाला की लपटों में भस्म हो गया। फिल्म-क्षेत्र का शायद ही कोई व्यक्ति बचा हो, जो शव-यात्रा में सम्मिलित न हुआ हो। अन्य क्षेत्रों के लोग भी थे। उनकी आत्मा की शांति के लिए पंडितों ने वेदमंत्रों का पाठ किया, एक मौलवी साहब ने कुरान की आयतें पढ़ीं,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिक्ख ज्ञानी ने गुरु ग्रंथसाहिब के पद पढ़े और गिरजे की स्वाध्वियों ने ईश-प्रार्थना की। विशेषता यह थी कि इनमें से किसी को बुलाया नहीं गया था; सब अपनी इच्छा से प्रेमवश आये थे। इससे ही पता चलता है कि मुकेश सभी को कितने प्यारे थे।

मुकेश पैंतीस वर्षों तक फिल्मों के पार्श्व-गायक रहे और इतने समय में लगभग पांच हजार गाने उन्होंने गाये, जिनमें से कई सौ गीत अविस्मरणीय कहे जा सकते हैं। किंतु उनकी सर्वप्रियता का एकमात्र कारण यही नहीं है। वे गायक के अतिरिक्त भी बहुत कुछ थे। उनके कंठ की मधुरता तो भगवान की देन थी; किंतु व्यक्तित्व की मधुरता उनकी अपनी थी, जिसे उन्होंने बड़े परिश्रम, त्याग और प्रयत्न से अर्जित किया था।

जहां तक मैंने देखा-समझा है, मुकेश को सर्वप्रिय बनाने वाले गुण थे—विनम्रता, सरलता, परदु:ख-कातरता एवं उदारता। बहुत ही विनम्र और मृदुभाषी थे वे। सफलता-प्राप्ति के पूर्व तो सभी को विनम्र और मृदुभाषी रहना पड़ता है; किंतु सफलता की चरम सीमा पर पहुंचकर किसी बिरले में ही ये गुण शेष रह जाते हैं। मुकेश उन्हीं बिरलों में एक थे।

जब हिज़ मास्टर्स वाय्स कंपनी ने तुलसी-कृत 'रामचरितमानस' के सात एल. पी. रेकार्ड बनाने का निश्चय किया और मुकेश उसके मुख्य गायक और कविवर नरेंद्र शर्मा संपादक नियुक्त हुए, मुकेश से दोहे-चौपा-इयों का शुद्ध उच्चारण कराने का भार मुझ पर डाला गया। कंपनी ने मुझसे कहा कि मुकेशजी से बात हो चुकी है, आप उनसे संपर्क करें। मैंने उन्हें फोन किया और यह सोचकर कि वे बहुत व्यस्त पार्श्व-गायक हैं, उनसे पूछा कि आप घर पर कब मिलेंगे? वे बड़ी ही नम्रता से बोले—'पांडेजी, आप अपने घर का ठीक पता बता दें, मैं स्वयं आपके दर्शन करूंगा।' काफी देर तक हम दोनों ने एक-दूसरे के घर आने की बात कही। अंत में जीत उन्हीं की हुई।

नियत समय पर पेड़ों का डिब्बा लिये मुकेश इस मुद्रा में मेरे घर पधारे, जैसे कोई शिष्य अपने गुरु के पास जाता है। मैंने भगवान की प्रतिमा के सामने बैठाकर उनसे दो चौपाइयां पढ़वायीं और उन्हें प्रसाद तथा आशीर्वाद दिया। अब कभी-कभी विचार आता है कि मेरे दुर्भाग्य की काली छाया ही तो उन्हें नहीं निगल गयी?

बड़ों के साथ ही नहीं, अपने से छोटों के साथ भी उनका वही नम्र व्यवहार होता था। रेकार्डिंग के समय प्रायः रोज ही उनसे मिलने के लिए बहुत लोग आ जाते थे। वे किसी को भी निराश नहीं करते थे। साधा-रण से साधारण व्यक्ति से भी वे उसी तरह हंसते हुए मिलते, दो-चार बातें करके फिर अपने काम में लग जाते। मैं नहीं समझता कि उन्हें अपने 'बड़ा आदमी' होने का कभी एहसास हुआ होगा। सभी वादकों से वे इस प्रकार घुल-मिलकर बातें या विनोद करते जैसे वे हर एक के परिवार के सदस्य हों। उनके आने तक स्टूडियो में एक अजीब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूनापन छाया रहता था और उनके आते ही जैसे स्टूडियो गुलजार हो जाता था। घर से वे सदा सैंडविचों का पैकेट लाते थे, ताकि बीच में भूख लगने पर खा सकें। किंतु दो-तीन से अधिक सैंडविच उन्हें किसी दिन नहीं मिल पाये—वे सबको खिलाते थे।

एक दिन रेकार्डिंग के बाद हम दोनों मेरीन ड्राइव के रास्ते घर लौट रहे थे। फुटपाथ पर मक्का के भुने हुए भुट्टे बिकते देख मुकेश ने गाड़ी रोक दी और भुट्टे भूनने को कह दिया। हम दोनों सागर-तट की दीवार पर बैठे भुट्टे खा रहे थे। शाम का समय था। हवा खाने के लिए आने-जाने वालों का तांता लगा हुआ था। बहुत-से लोग उन्हें घूरते हुए निकल रहे थे। कुछ मुस्करा भी देते थे। एक से रहा नहीं गया। सामने खड़ा होकर बोला—'आप मुकेशजी ही हैं न?' मुकेश ने बड़े प्रेम से मुस्कराते हुए कहा—'हां भाई, मैं मुकेश हूं। आइये बैठिये, भुट्टा खाइये।' और भुट्टे वाले को पुकारा। परंतु वह व्यक्ति बड़े संकोच के साथ हाथ जोड़कर यह कहता हुआ चला गया—'धन्यवाद! आपके दर्शन हो गये, यही बहुत है।' अपरिचितों के साथ जब ऐसा व्यवहार था, तो परिचितों के साथ कैसा रहा होगा, स्वयं अनुमान कर लें।

अल्प आय वाले वादकों व पार्श्व-गायकों की आर्थिक सहायता करने के लिए मुकेश सदा प्रस्तुत रहते थे। प्राय: नित्य ही रेकार्डिंग के बाद मैं देखता कि कोई व्यक्ति 'जरा सुनिये!' कहकर उन्हें कुछ अलग ले जाता था। मैं समझ जाता था और दो ही मिनट बाद देखता था कि मुकेश अपनी जेब से पर्स निकाल रहे हैं। किसी के भी दुःख से द्रवित हो जाना उनका स्वभाव था।

उनमें एक और निराली बात मैंने देखी। एकदम नये या बहुत साधारण संगीत-निर्देशक का गाना रेकार्ड कराने के लिए वे बहुत जल्दी समय दे देते थे, भले ही किसी बड़े संगीत-निर्देशक का गाना दो-एक दिन बाद गायें। मैंने इसका कारण पूछा, तो बोले—'देखिये पांडेजी, मैं जानता हूं कि कितनी कठिनाइयों को पार करने के बाद इस बेचारे को संगीत-निर्देशन का चांस मिला होगा। अब अगर इसका गाना गाने में मैं देर कर दूं, तो हो सकता है निर्माता बिदक जाये और इसका चांस चला जाये। दूसरी बात यह है कि गाना रेकार्ड होने के बाद ही इसे पैसे मिलेंगे। इसलिए गाने में मैं जितनी देर करूंगा, उतनी ही देर में इसे माल मिलेगा; कौन जाने, इसकी आर्थिक स्थिति कैसी है! इसीलिए ऐसे संगीत-निर्देशकों का गाना चटपट गा देता हूं। बड़े संगीतकारों को इस प्रकार का कोई भय नहीं रहता, उलटे निर्माता ही उनसे डरते हैं।'

मुकेश की मातृ-पितृ-भक्ति भी उच्च कोटि की थी। आरंभ के दिनों में उनकी कमाई बहुत थोड़ी थी। रहने के लिए एक कमरा और एक छोटा रसोईघर था। तब माता-पिता साथ थे और विवाह भी हो चुका था। कमरे में माता-पिता के सोने का प्रबंध था और रात के भोजन के बाद सफाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो जाने पर आप और आपकी पत्नी रसोई-घर में सोते। अंतिम समय में पिताजी की आंखों की रोशनी चली गयी थी। उन्हें सदा से शाम को बाहर की हवा खाने का शौक था। मुकेश ने बताया कि उन्होंने अंत तक अपने पिता को इस सुख से वंचित नहीं होने दिया। बाबागाड़ी-जैसी एक आरामकुर्सी वाली गाड़ी में बैठाकर वे नित्य शाम को पिताजी को बाहर ले जाते। भरी सड़क पर गाड़ी ठेलते हुए उन्हें शरम नहीं आती थी; बल्कि सुख और संतोष मिलता था।

इधर चार वर्षों से मेरा अधिकांश खाली समय उन्हीं के साथ बीतता था। कभी वे मेरे घर आते, कभी मैं उनके घर जाता। रामायण की रेकार्डिंग के दिन तो हम दोनों आठ-आठ घंटे साथ ही रहते थे। चौपाई-दोहा गाने के पहले वे उसके भावार्थ को भली भांति हृदयंगम कर लेते थे। तभी तो वे उसमें इतनी भावना ला पाये! कुछ दिनों तक गाने के बाद रामायण से उन्हें इतना प्रेम हो गया कि सदा अपने बैग में एक गुटका रखते थे। प्रतिदिन कुछ पृष्ठ पढ़ने का नियम उन्होंने बना रखा था। दिन में समय न मिले, तो रात को सोने से पूर्व २-४ दोहे-चौपाई अवश्य पढ़ लेते थे।

'रामचरितमानस' के अंत में संस्कृत का श्लोक है। निश्चय किया गया कि इसे भी मुकेश ही गायें। अभी तक एक भी संस्कृत-रचना उन्होंने नहीं गायी थी। जिसके लिए अवधी भाषा के शब्दों का उच्चारण एक कठिन समस्या हो, उसके लिए संयुक्त वर्णों वाली सामासिक पदावली का उच्चारण कितना कठिन होगा, यह समझना सरल है। किंतु साहसी मुकेश ने कहा कि मैं गाऊंगा। अपने घर पर मुझसे श्लोक गवाकर उन्होंने टेप कर लिया। नित्य प्रातः उठकर वे उस टेप को सुनकर अनुकरण करते थे। पंद्रह दिनों तक उन्होंने रोज लगभग एक घंटा अभ्यास किया! जब रिकार्डिंग हुई, मुकेश ने ऐसा गाया कि सुनकर कोई नहीं कह सकता कि उन्हें संस्कृत का ज्ञान नहीं था।

रामायण का अंतिम और आठवां एल. पी. (बाद में एच. एम. वी. ने ७ के बजाय ८ एल. पी. बनाने का निर्णय किया था) शेष था और मुकेश के अमरीका जाने का दिन करीब आ गया था। सभी चिंतित थे, क्योंकि दशहरे के अवसर पर सातवां और आठवां दोनों एल. पी. एक साथ बाजार में आने वाले थे। परंतु मुकेश ने अपने अत्यंत व्यस्त कार्यक्रम में से अधिक से अधिक समय निकालकर अमरीका जाने के पहले रामायण की रेकार्डिंग पूरी की। अंतिम दिन बोले-'मेरे जीवन का एक महान कार्य पूरा हो गया।' कौन जानता था कि इस महान कार्य के पूरा होते ही भगवान उन्हें अपने पास बुला लेगा?

फिल्मक्षेत्र में काम करने वाले प्रायः इस बात पर गर्व करते हैं कि वे फिल्म-जगत् के हैं। किंतु फिल्म-क्षेत्र इस बात पर गर्व कर सकता है कि उसमें मुकेश जैसे सच्चे इंसान भी काम करते थे। -ए ब... -एपार्टमेंट्स, २१६ वालकेश्वर रोड, बंबई-

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानतम जर्मन चित्रकार ड्यूरर

जेनेट रूबर्ट

'प्रकृति में जो जीवन है, वह पदार्थों के सत्य को उद्घाटित करता है; इसलिए परिश्रमी बनो और मनोयोग से काम करो। यह मानकर प्रकृति की उपेक्षा न करो कि तुम स्वयं अधिक अच्छी चीज खोज लोगे। चूंकि वस्तुत: कला प्रकृति में छिपी हुई है और जो भी उसे चीरकर निकाल सके, वह उसे जरूर पायेगा।'

ये शब्द हैं अल्ब्रेश्ट डचूरर के, जिसे बहुत-से लोग सर्वश्रेष्ठ जर्मन चित्रकार मानते हैं। ये शब्द उसने अपने मृत्यु-वर्ष १५२८ में छपी अपनी पुस्तक 'अनुपातों की पुस्तिका' में लिखे थे। इस पुस्तिका में उसके वर्षों लंबे शास्त्रीय अध्ययन का सार है और कला की खोज में बीते उसके जीवन का सार भी।

डचूरर ऐसे युग में जिया, जब मध्यकालीन संकुचितता और धार्मिक रूढ़िवाद के बादल छंटने लगे थे और जो कि महान आशाओं और महान निराशाओं का युग था। मनुष्य सीखने-जानने की उत्सुकता से भरकर उमड़ रहे थे; मगर जो कुछ वे देख रहे थे, उस सबको समझने के साधन और मानसिक उपकरण उनके पास नहीं थे।

उदाहरण के रूप में, डचूरर के चित्र 'विषाद' (मेलेन्कली) को ही लीजिये। इसमें पंखयुक्त नारी-आकृति पूर्ण निराशा की मुद्रा

[डचूरर का आत्मचित्र–१५०० ई.]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में बैठी है—उसके चारों ओर ढेर लगे हुए हैं उन उपकरणों के, जो सत्य की खोज में बेकार साबित हो चुके हैं।

अथवा ड्यूरर के ही एक आरंभिक आत्मचित्र को लें। सत्य की खोज आत्म-परीक्षा और आत्मज्ञान से आरंभ होती है। कुछ-कुछ बीमार उस अंतर्मुख बालक का पूरा चरित्र मानो उसके मुखड़े में चित्रित हो उठा है। जर्मनी में यह पोर्ट्रेट-अंकन की उस शैली के आरंभिक प्रयत्नों में से है, जिसमें मनुष्य का आंतरिक रूप मुखाकृति में प्रतिबिंबित हो उठता है, फिर भी शक्ल अपनी पहचान नहीं खो बैठती।

ड्यूरर का जन्म २१ मई १४७१ को बावेरिया (पश्चिम जर्मनी) के नूरेम्बर्ग नगर में हुआ। एक संभ्रांत व्यापारी नगर था नूरेम्बर्ग, जिसे अनेक नामी कलाकारों, आविष्कारकों और विद्वानों ने अपना घर बना लिया था। ड्यूरर का पिता सुनार था। सो ड्यूरर ने पहले यही धंधा सीखना शुरू किया। मगर धीरे-धीरे उसकी समझ में आ गया कि उसकी प्रतिभा की दिशा दूसरी ही है। उसके पिता ने भी यह बात स्वीकार की और तय किया कि बेटे को माइकेल वोल्गेमट का शिष्य बना दिया जाये, जो उन दिनों का नामी चित्रकार और एन्ग्रेवर था।

कहते हैं कि वोल्गेमुट ने अपने नये शिष्य की असाधारण प्रतिभा को फौरन समझ लिया; फिर भी चित्रांकन करने की छूट देने से पूर्व उसने उसे श्रमपूर्ण प्रशिक्षण-प्रक्रिया में से गुजारा। ड्यूरर को ब्रश साफ करना, पैनल तैयार करना आदि सब सीखना पड़ा; उसके बाद मिलने लगा छोटा-मोटा चित्र-काम शुरू करने का मौका। अंततः वोल्गेमुट को पूरा संतोष हो गया और उसने शिष्य को अपने मानसिक-बौद्धिक क्षितिज का विस्तार करने के लिए यात्रा करने की सलाह दी।

ड्यूरर घर से चल पड़ा; सारे दक्षिण जर्मनी में घूमा। वह बड़े-बड़े कलाकारों की कला-कर्मशालाओं में जाता; उनकी विधियों का अध्ययन करता और सब कुछ सीखता। शायद बासेल में उसका प्रथम परिचय हुआ इतालवी चित्रकला से, जो कि रंग और गति से लबालब भरी थी और उस युग की कुछ घुटी-घुटी-सी जर्मन कला से बहुत भिन्न थी। अंत में वह ठेठ इटली जा पहुंचा। महान इतालवी चित्रकारों की कला ने उसे बहुत प्रभावित किया—विशेषतः कारपाच्चियो, मान्तेन्या और जियोवान्नी बेलिनी के चित्रों ने।

बेलिनी के चित्र ड्यूरर ने वेनिस में देखे। इस कलाकार ने रंगों के उपयोग के बारे में बहुत महत्त्वपूर्ण खोजें की थीं। वह बहुत वैविध्यपूर्ण रंगतों (टोन) का उपयोग करता था, जो एक-दूसरे में ढलती जाती थीं। ये रंगतें उसने प्रकृति में से पायी थीं। ड्यूरर भी प्रकृति में सत्य को तलाश रहा था। बेलिनी का चित्रकर्म प्रवाहमय, सजीव और अत्यंत वैविध्यमय था। उसके भूदृश्यों का अपना ही महत्त्व था; वे चित्र में यों ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोड़ दिये गये अंश नहीं होते थे, जैसा कि पहले प्रथा थी। यह भी ड्यूरर को आकर्षक जान पड़ा। वह खुद ही इस दिशा में काम शुरू कर चुका था। पोर्ट्रेट-अंकन में बेलिनी ने यथार्थ के प्रति सच्चे रहते हुए भी व्यक्ति के आंतरिक रूप को चित्रित करने की दिशा में जबर्दस्त प्रगति की थी। इसमें भी ड्यूरर की दिलचस्पी थी।

अंततः ड्यूरर की गांठ का पैसा खत्म हो चला और उसने घर लौटने का फैसला किया। शायद उस समय वह जो कुछ ग्रहण कर सकता था, वह सब उसने देख लिया था और वेनिस में सीखे पाठों का अब अभ्यास करना चाहता था। १४९५ में वह अपनी पत्नी एग्नेस के पास नूरेम्बर्ग लौट आया। एग्नेस से उसका विवाह उससे पिछले साल हुआ था।

वेनिस की भव्यता देख लेने के बाद नूरेम्बर्ग उसे बहुत तंग और घुटा-घुटा लगा होगा—विशेषतः इसलिए कि बड़े चित्रों के लिए वहां बहुत कम मांग थी। यों भी कलाकार के रूप में जिसका सिक्का अभी जमा न हो, उसे चित्रों के लिए आर्डर मिलने की संभावना बहुत कम ही होती है। एन्ग्रेविंग और वुडकट नाम कमाने के सबसे अच्छे साधन थे, और जीविकोपार्जन के भी।

हालांकि शैली के विषय में ड्यूरर का मन अभी अनिश्चय में था, फिर भी उसके उस समय के चित्र भी दक्षतापूर्ण थे और

दायीं ओर: (ऊपर) ड्यूरर की मां; (नीचे) 'सैर' जिसकी चर्चा पृष्ठ ६८ पर है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

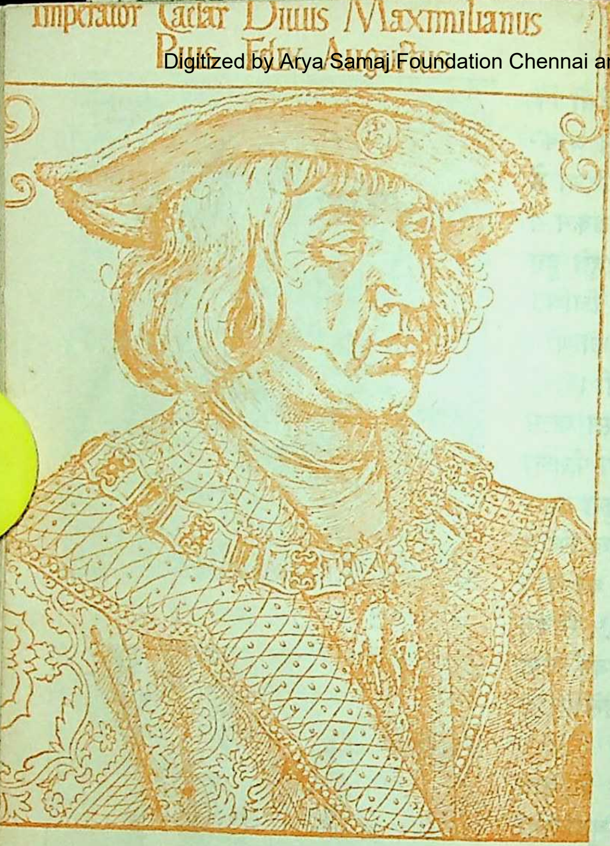

सम्राट् मैक्सिमिलियन : १५१९ ई. में रचित वुडकट

उसकी भावी महानता को स्पष्ट ही प्रकट करते थे। १४९८ में उसने 'रहस्योद्घाटन' (एपोकैलिप्स) नामक महान वुडकट चित्र-माला समाप्त कर ली थी। दुनिया की समाप्ति के विषय में संत जान को हुए दिव्य-दर्शन का जो वर्णन नये टेस्टामेंट में है, उसका निरूपण इस चित्रमाला में हुआ है।

यह शायद निरा संयोग नहीं था कि ड्यूरर ने यह विषय चुना। १५ वीं शताब्दी का अंत भवितव्यता के संकेतों से लदा हुआ काल था। शहरों में अजीबोगरीब बीमारियां लोगों को सता रही थीं। अकाल नियमित रूप से पड़ने लगे थे और उन्हें भगवान की नाराजगी का चिह्न कहा जा रहा था। 'भविष्य-द्रष्टाओं' की बन आयी थी, जो दुनिया के खात्मे की भविष्यवाणियां कर रहे थे और लोग उन पर विश्वास कर रहे थे।

ड्यूरर अगर चाहे तो भी इस वातावरण के प्रभाव से बच नहीं सकता था। यों भी उसे तो इन बातों में विश्वास था, जैसा कि १४९७ में निर्मित 'सैर' नामक कृति से प्रकट होता है। इसमें एक दंपति को सुंदर प्राकृतिक स्थल में सैर करते दिखाया गया है। सब कुछ बड़ा सुहावना नजर आता है, मगर तभी तक जब तक कि वृक्ष के पीछे छिपी और अश्लील ढंग से मुस्करा रही डरावनी आकृति पर नजर नहीं पड़ती। यह आकृति मृत्यु का प्रतीक है।

'रहस्योद्घाटन' में सभी कुछ भयानक है। घोड़े पर सवार चार आकृतियां-जिनमें से शायद एक यीशु की है, और शेष तीन युद्ध, अकाल और मौत हैं—आगे को तन रही हैं। मगर पूरा दृश्य नितांत स्वाभाविक ढंग से चित्रित है; जैसे कि वे घुड़सवार सच-मुच संसार में से इसी प्रकार आगे बढ़ रहे हों। सभी चित्र जैसे तेज आंधी से प्रताड़ित हैं। यह आंधी शायद भविष्यवाणी का प्रतीक है और ड्यूरर को प्रवाहमय आकृतियों से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंकन में अपना कौशल दिखाने का अवसर देती है।

सन १५०० में उसने एक आत्मचित्र बनाया, जो दुनिया के बहुत ही गजब के आत्मचित्रों में से एक है। तीव्रतायुक्त चेहरा, सुडौल भरे-भरे ओंठ, तनिक आलंकारिक रूपवान मुखड़ा—नितांत वैयक्तिक शैली में रचित एक चित्र, इस बात का प्रमाण कि ड्यूरर कला में अपने पांवों पर खड़ा हो चुका था। आर्थिक दृष्टि से भी उसकी हालत अब काफी अच्छी थी। उसका अपना प्रेस था, जिससे अब वह आश्रयदाताओं की कृपा पर निर्भर न रहकर स्वतंत्र रह सकता था।

छत्तीस वर्ष की उम्र में १५०५ में उसने फिर से इटली जाने का निश्चय किया। इस प्रकार उसे वेनिस में बसे धनी-मानी जर्मनों से चित्रांकन के आर्डर मिल सकते थे। इस बार वह कला-शिक्षार्थी के बजाय, प्रतिष्ठित कलाकार के रूप में यहां आया था। पर लगता है कि उसे यहां पिछली बार जितना आनंद नहीं प्राप्त हुआ। न उसे इतालवी चित्रकला ही उतनी प्रभावशाली लगी, क्योंकि उससे प्राप्त अनेक पाठ वह पूरी तरह पचा चुका था। यों भी सौंदर्य की कुंजी खोजता हुआ ड्यूरर इस समय तक परिप्रेक्ष्य और अनुपात के अध्ययन में काफी आगे बढ़ चुका था।

सौंदर्य की कुंजी की इस श्रमपूर्ण खोज में उसे जो कुछ हस्तगत हुआ, उसे उसने बाद में अपने शास्त्रीय लेखन में निबद्ध किया—'अच्छे चित्रकार में आकृति की गहरी पकड़ होनी चाहिये।' और निश्चय ही ड्यूरर में वह पकड़ थी। उसके तैलचित्रों में भी आकृति की उसकी गहरी तमीज सदा ही बहुत स्पष्ट देखी जा सकती है।

फिर भी बीच-बीच में वह प्राकृतिक चित्र बनाता था—अपने को यह तसल्ली कराने के

'रहस्योद्घाटन' (एपोकैलिप्स)—विवरण **पृष्ठ ६८ पर।**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी मेरी एग्नेस

लिए कि रंग और आकृति में मैं प्रकृति के संपर्क से कट नहीं गया हूं। इस तरह उसने बहुत बड़ी संख्या में बड़े ही आनंददायक चित्र बनाये। इन चित्रों में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं–खरहा और स्टैगबीटल नामक कीड़ा।

उसने लिखा–'तर्क का अत्यधिक उपयोग विषाद को जन्म देता है।' सो 'विषाद' उसका बहुत ही निजी चित्र हो सकता है। शायद था भी। क्योंकि लगभग उन्हीं दिनों उसने एक और प्रसिद्ध चित्र बनाया–'मृत्यु और सरदार'। एकमात्र निश्चित वस्तु–मृत्यु–का चित्रण इसमें है। सरदार अपने पास खड़ी क्षीणकाय मृत्यु की सर्वथा उपेक्षा कर रहा है और अपने काम-धाम में व्यस्त है। मगर मृत्यु अंत में उसे दबोच ही लेगी।

सन १५१५ में सम्राट् मैक्सिमिलियन ने डयूरर की पेन्शन बांध दी; क्योंकि ... राजघराने के सदस्यों के १२ पोर्ट्रेट ... थे। डयूरर ने सम्राट् के लिए एक ... सजीली प्रार्थना-पुस्तक तैयार की ... सम्राट् के कई पोर्ट्रेट भी बनाये। ... वर्षों में उसने ईसा मसीह की मां मरियम ... अपनी कला का मुख्य विषय बनाया ... उसके अनेक रेखाचित्र, एन्ग्रेविंग, वुड... और वर्णचित्र बनाये; सभी अनुपम ... से युक्त हैं। इन्हीं दिनों डयूरर कैथोलिक संप्रदाय छोड़कर लूथर का अनुयायी ...

सन १५२० में पचास वर्ष की अवस्था ... डयूरर फिर यात्रा पर निकला, जो ... जीवन में उसकी आखिरी यात्रा थी। ... बीच मैक्सिमिलियन की जगह चार्ल्स ... गद्दीनशीन हो चुका था। डयूरर उसके ... प्रार्थना करने हालैंड गया कि पिछले सम्राट ... द्वारा शुरू की गयी पेंशन जारी रखी जाये। अपनी पत्नी के संग मेन और राइन नदियों पर उसने किश्ती से यात्रा की। सब जगह उसका स्वागत व सम्मान हुआ। सम्राट ने उसकी पेंशन पक्की कर दी और घर लौटकर वह जुट गया अपने आखिरी पोर्ट्रेटों पर और ईसा मसीह के चार पट्टशिष्यों का चित्रण करने वाले उन विशाल पैनलों पर, जो ... उसने नूरेम्बर्ग नगर-निगम को भेंट में दिये।

सन १५२८ में जब उसकी मृत्यु हुई तब भी उसे अपनी कला से पूर्ण संतोष नहीं था। उसने लिखा था–'अपने तईं मैं अपनी कला का बहुत कम मूल्य आंकता हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरी कमियां क्या हैं।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माओ-मंत्र

बाइबल के बाद सर्वाधिक बिकने वाली पुस्तक माओ की 'लाल पोथी' की चंद 'सूक्तियां'।

* हमारा शत्रु जिसका भी विरोध करे उसका समर्थन, और हमारा शत्रु जिसका समर्थन करे उसका विरोध हमें करना चाहिये।

* गंभीर समस्या है कृषकों को शिक्षित करना। कृषि अर्थव्यवस्था बिखरी हुई है और रूसी अनुभव को प्रमाण मानें तो कृषि का सामाजिकीकरण लंबे समय और परिश्रम की अपेक्षा करता है। कृषि के सामाजिकीकरण के बिना समग्र और ठोस समाजवाद संभव नहीं।

* जनता में आदर्श-संबंधी प्रश्नों अथवा पारंपरिक मामलों को सुलझाने का एकमात्र मार्ग है प्रजातंत्रीय तरीका यानी चर्चा का, आलोचना का, समझाने-मनाने का और शिक्षण का तरीका, न कि दबाव और दमन का तरीका।

* हर साम्यवादी को यह सत्य हृदयंगम करना चाहिये—सत्ता बंदूक की नली में से उपजती है।

* हम युद्ध के उन्मूलन के हिमायती हैं, हम युद्ध नहीं चाहते; मगर युद्ध का उन्मूलन केवल युद्ध के द्वारा संभव है और बंदूक से छुटकारा पाने के लिए बंदूक उठाना जरूरी है।

* क्रांतिकारी युद्ध जनता का युद्ध है; यह जनता को संघटित करके और उसके भरोसे ही लड़ा जा सकता है।

* अगर जनसेना नहीं है तो जनता के पास कुछ भी नहीं।

* हमारा सिद्धांत यह है कि बंदूक (साम्यवादी) पार्टी की वशवर्ती होती है; पार्टी को कभी बंदूक की वशवर्ती नहीं होने देना चाहिये।

* छोटी मगर खूब अच्छी सेना, और सरल प्रशासन। प्रवचन, भाषण, लेख और प्रस्ताव सब सारगर्भ और 'टु द पाइंट' होने चाहिये। सभाएं भी बहुत लंबी नहीं चलनी चाहिये।

* साधारण-जन असली हीरो हैं, जबकि हम लोग बहुधा बचकाने और अज्ञानी होते हैं।

* दुनिया में असली महत्त्व की चीज है दयानतदारी, और साम्यवादी पार्टी को दयानतदारी पर बहुत ध्यान देना चाहिये।

* हमारी शिक्षा-पद्धति ऐसी होनी चाहिये कि जिसने भी शिक्षा पायी है, वह नैतिक, बौद्धिक और शारीरिक दृष्टि से विकसित हो, और ऐसा कार्यकर्ता बने जो समाजवादी चेतना और संस्कृति दोनों से युक्त हो।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

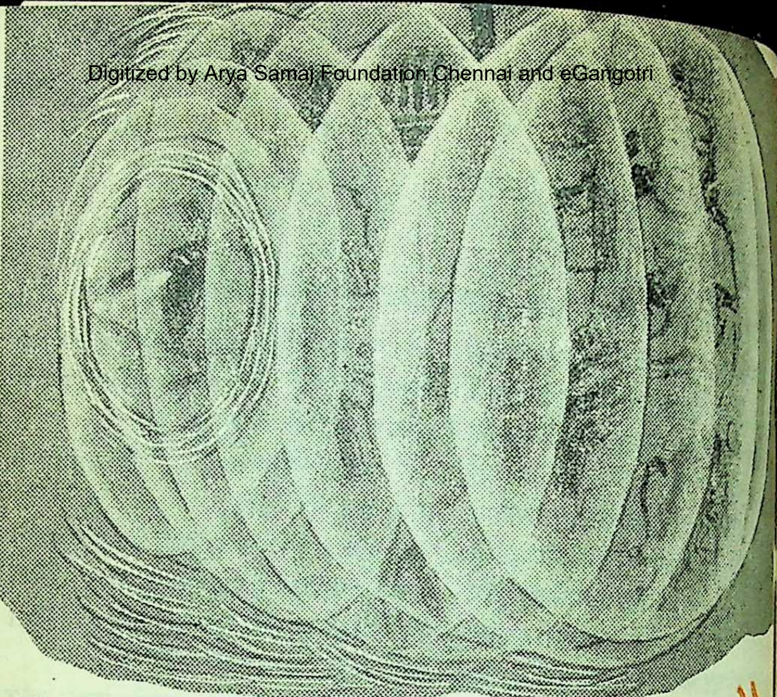

कालयंत्र के जरिये इतिहास की सैर

मैं कलिंग युद्धस्थल पर खड़े विजयी अशोक की मुखमुद्रा को देखना चाहूंगा, जिसमें अपार नरसंहार पर करुणा और पश्चात्ताप ही अंकित नहीं, अपितु युद्धमात्र के प्रति घोर वितृष्णा भी मुद्रित है। अशोक के माथे पर मानव-मात्र के लिए एक नयी शांति-व्यवस्था प्रारंभ करने के पुण्य-संकल्प की रेखाएं किस तरह उभर रही हैं, मैं वही देखना चाहूंगा। मेरे नजदीक वह विश्व-इतिहास और सांस्कृतिक धारा को बदलने वाला सचमुच एक निर्णयकारी और महान क्षण था।

—शमशेर बहादुर

○○○

घटना इस प्रकार है—१४ अगस्त १९४ की आधी रात। ठीक बारह के अंक पर घड़ी की सूइयां एकत्र हो रही थीं। संविधान सदन के केंद्रीय कक्ष में बाबू राजेंद्रप्रसाद सभापति के आसन पर आसीन थे। लार्ड माउंटबैटन ने प्रधान-मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को औपचारिक रूप से शासन-सूत्र सौंप दी थी कि कक्ष के बाहर और भीतर घंटे बज उठे, शंखध्वनि गूंज उठी। बाहर जनता हर्षोन्माद में झूम रही थी। तथा भवन की दर्शक दीर्घा खचाखच भरी हुई थी। नेहरूजी के भाषण पर रह-रहकर करतल-ध्वनि होती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परंतु हर्ष के बीच विषाद की एक रेखा भी जनता के मुख पर छायी हुई थी। उसकी आंखें उस व्यक्ति को खोज रही थीं, जिसने इन घड़ियों को निकट ला दिया था। वह व्यक्ति था महात्मा गांधी। और वह तो कलकत्ते में एक मुसलमान के घर में दो भाइयों को प्रेम का पाठ पढ़ा रहा था; क्योंकि उस घर के बाहर की गलियां हिंदू-मुसलमान भाइयों के रक्त से रंजित थीं। वह खंडित भारत के स्वराज्योत्सव में सम्मिलित नहीं होना चाहता था। उसका विश्वास था कि जब तक हिंदू-मुसलमान भाइयों में प्रेमभाव दृढ़ नहीं होगा, स्वराज्य का सुख जनता नहीं भोग पायेगी। प्रेम और त्याग की वह घटना विश्व-इतिहास में दुर्लभ है। उसका मैं अपनी आंखों से दर्शन करना चाहता हूं। —विनयमोहन शर्मा

०००

रामचरितमानस का लिखा जाना एक ऐतिहासिक घटना है, आप भी मानेंगे। पूरी घटना देखने में बहुत समय लगेगा और यह उचित नहीं कि कालयंत्र हाथ आ जाने पर मैं ही उस पर अधिकार जमाये रहूं। इसलिए मैं केवल उस क्षण बाबा तुलसीदास का मुंह देखना चाहता हूं, जब उन्होंने रामचरितमानस समाप्त करके लेखनी एक ओर रखी ही थी, जब उनकी आंखों में जितनी थकान थी उतनी ही चमक थी, और जब वे निराला की पंक्ति 'अवसन्न भी हूं प्रसन्न मैं प्राप्तवर' की सजीव झांकी बने हुए थे। —रामविलास शर्मा

★ ★ ००० ★ ★

हिंदी के अग्रणी लेखकों, पत्रकारों से कोई रोचक प्रश्न पूछना और उनके उत्तर प्रस्तुत करना नवनीत के दीपावली अंक की परिपाटी बन गयी है। इस वर्ष हमारा प्रश्न यह था :

'स्वर्गीय एच. जी. वेल्स ने एक कालयंत्र (टाइम मशीन) की कल्पना की थी, जिसकी मदद से मनुष्य भूत और भविष्य के किसी भी कालबिंदु पर पहुंच सकता है। यदि वह कालयंत्र आपके पास हो, तो आप विश्व-इतिहास की किस घटना को घटना-स्थल पर उपस्थित होकर अपनी आंखों से देखना चाहेंगे? कृपया इतिहास की वैज्ञानिक परिभाषा का ध्यान रखें, जिसमें पुराण, अनुश्रुति, लोकाख्यान आदि का समावेश नहीं होता।'

वैज्ञानिक परिभाषा की बात अधिकांश उत्तर-लेखकों को स्वीकार नहीं हुई। इसी तरह हमारी सुझायी १००-१५० की शब्द-मर्यादा का पालन भी इने-गिने लेखकों ने ही किया। लेखक स्वतंत्र जीव होते हैं। फिर, नवनीत तो उनकी अपनी पत्रिका है। इस वर्ष समय पर प्राप्त सभी उत्तर एक ही किस्त में प्रस्तुत किये जा रहे हैं। —संपादक

★ ★ ★ ★ ★

बहुत-सी ख्वाहिशों में एक ख्वाहिश यह भी है कि मैं गौतम बुद्ध के साथ होता और वह भी उस वक्त जब वह सिद्धार्थ था और जिंदगी के मानी ढूंढ़ रहा था—उन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सन ११३६ ई.। पिंगल वर्ष, माघ मास, शुक्ल पक्ष की दशमी का दिन। प्रातःकाल से ही सुप्रसिद्ध वैष्णवधाम श्रीरंगम् क्षेत्र (तमिलनाडु) में एक भव्य मठ में भक्तों का समूह भरा हुआ है। वह विशाल मठ, जो कि श्रीवैष्णव संप्रदाय का केंद्र है, भगवान श्री रंगनाथ के मंदिर के निकट अवस्थित है। मठ के भीतरी प्रांगण में, १२० वर्ष के एक वृद्ध पुरुष मृत्युशय्या पर पड़े हैं। भव्य-प्रशांत मुख-मंडल पर दिव्य तेज की आभा अब भी है। वे हैं श्रीमद्रामानुजाचार्य।

सभी जातियों-उपजातियों के नर-नारी, जो श्रीवैष्णव-मंडल के भागवत हैं, उन्हें घेरे हुए भाव-विह्वल और शोकभार से शिथिल खड़े हैं। श्रीरामानुजाचार्य एक-एक को समीप बुलाकर क्षमा-याचना करते हैं–'मेरी ओर से जाने-अनजाने में कोई अपराध या अपकार हुआ होगा। कृपया मुझ अकिंचन को क्षमा कर दें और अनुग्रह करें कि इस दीन को सद्गति मिले।' सुनने वाले रो पड़ते हैं। कई भागवत तो स्वयं प्राणत्याग कर देने पर तुले हैं। आचार्यवर उन्हें समझा-बुझाकर शांत करते हैं। बहुत परिक्लांत होते हुए भी, क्षीण स्वर में भक्त भागवतों को संबोधित कर वे आज अंतिम बार अपना उपदेश दुहराते हैं:

'वैष्णवों के मध्य जातिगत या कुलगत ऊंच-नीच का भाव कभी नहीं बरतना चाहिए। विचार-शुद्धि से कर्मशुद्धि होती है। दूसरों के दोष मत देखा करो। कोई भी मनुष्य पूर्ण नहीं है। वैष्णव-जन की पहचान यह है–वह जीवमात्र से दयाभाव रखे, दुःखी की सहायता करे और निरहंकार होकर शुद्ध एवं स्नेहशील जीवन बिताये। भगवान श्रीमन्नारायण ही तुम्हारे आराध्यदेव हैं तथा श्रीवैष्णव-जन तुम्हारे आप्त बंधु हैं। ......'

आचार्यवर की वाणी क्षीण होती जा रही है। उनकी समस्त इंद्रियां भगवद्ध्यान में लीन हैं। उनकी प्रशांत, प्रोज्ज्वल मुखमुद्रा में संतृप्ति की छाया बिछी है। मध्याह्न का समय है। भक्तजनों का शोक-संतप्त हृदय द्रवित होता है। उनका आर्त-क्रंदन रोके नहीं रुक पाता।

मैं भी वहां खड़ा-खड़ा आंसू बहा रहा हूं। मैं बिलकुल भूल गया हूं कि मेरे झोले में वह अद्भुत कालयंत्र है, जिसके सहारे मैं सुबह ही यहां पहुंचा था। –र. शौरिराजन

लम्हों में जो उसे सत्य की खोज के लिए मजबूर कर रहे थे–शायद सारथी छन्नक की शक्ल में या सिर्फ वक्त की शक्ल में, लेकिन उसके साथ होता। खास तौर पर वह एक लम्हा देखने के लिए, जब वह पत्नी और बच्चे को छोड़कर जा रहा था और उसने एक बार, सिर्फ एक बार दरवाजे से मुड़कर उनकी तरफ देखा था। त्याग और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोह का वह एक लम्हा, मैं बुद्ध की—या कहिये, सिद्धार्थ की—आंख में खुद देखना चाहता हूं।

—गुलज़ार

०००

आप जिस प्रकार का उत्तर चाह रहे हैं वैसा उत्तर दे सकना मेरे लिए इसलिए संभव नहीं है कि किसी भी इतिहास, इतिहास-पुरुष या इतिहास-घटना में मेरी कोई रुचि या आस्था अब शेष नहीं है।

श्री वेल्स ने जिस कालयंत्र की कल्पना की है, वह असंभव नहीं है; पर जिस दिन ऐसा हो जायेगा, उस दिन सारी मानवता मेरी ही भांति इतिहासहीन हो जाना चाहेगी। इसलिए कि समस्त राजकीय सुगंधि के बाद भी इतिहास बदबू देता है। कामना करता हूं कि ऐसा कालयंत्र बने और मानवता देखे कि उसके साथ कितना बड़ा छल निरंतर होता आ रहा है। मानव-मुक्ति में सबसे बड़ी बाधा इतिहास और इतिहास-पुरुष ही रहे हैं। चूंकि पत्र में आपने इतिहास की वैज्ञानिक परिभाषा की परिधि सामने रखी है, इसीलिए मैं उसके बाहर नहीं जा सकता। पर अंत में इतना निवेदन अवश्य करना चाहूंगा कि जिज्ञासा करते समय यदि उस पर बंधन लगा दिया जायेगा 'आधुनिकता' या 'वैज्ञानिकता' आदि का, तो निश्चय समझिये कि तत्त्व की प्राप्ति संभव नहीं होगी।

—श्रीनरेश मेहता

०००

कालयंत्र द्वारा मैं सन १८५७ के भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम को देखना पसंद करूंगा। (इसका यह अर्थ नहीं कि यह संसार की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना थी।) सन १८५७ का संग्राम भारतीय जनता का एक व्यापक आंदोलन था। अगर वह सफल हो जाता, तो विश्व-इतिहास कुछ दूसरा होता; क्योंकि तब अंग्रेज अगले सौ वर्षों के लिए संसार की सर्वश्रेष्ठ शक्ति के रूप में न उभर पाते।

मैं खास तौर पर लखनऊ शहर के मोर्चे को देखना चाहूंगा, जब ब्रिटिश सेना महीनों लखनऊ को घेरे रही और लखनऊ के नागरिकों ने एक-एक गली या एक-एक नुक्कड़ के लिए नहीं, घरों की एक-एक सीढ़ी के लिए लड़ाई लड़ी। यह संघर्ष लेनिनग्राद और स्तालिनग्राद की रक्षा से बहुत पहले

सिद्धार्थ का गृहत्याग, कराची म्यूजियम—अनुकृति : चरन शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

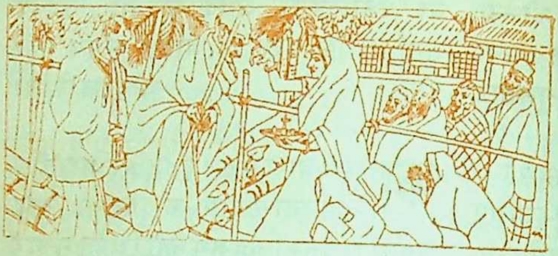

बंगाल में बापू की शांतियात्रा (नंदलाल बसु)

हुआ था। पर इस सबका विवरण उसी रूप में मिलता है, जिस रूप में विजयी अंग्रेजों ने उसे देखा-लिखा।

मैं कालयंत्र की मदद से देखना चाहता हूं कि किस तरह संचार-साधनों एवं केंद्रीय नेतृत्व के बिना सारे देश में जन-जागृति का शंखनाद किया गया और किस तरह गद्दारों और आपसी फूट के कारण यह क्रांति असफल हुई, रानी लक्ष्मीबाई की मृत्यु हुई, बहादुरशाह के पुत्रों का खून हुआ, नानासाहब की लड़की जलायी गयी और कानपुर-इलाहाबाद-दिल्ली के पेड़ों पर लोगों को फांसी देकर लटका दिया गया।

—जगदीश प्रसाद चतुर्वेदी

०००

मैं तो एक नहीं, अनेक घटनाएं देखना पसंद करूंगा। पर चूंकि आपने केवल एक ही घटना देखने की अनुमति प्रदान की है, मैं द्वितीय महायुद्ध में रूसी वीरों के उस महान पराक्रम को देखना चाहूंगा, जिसके द्वारा उन्होंने नाजी आक्रमणकारियों को खदेड़कर अभूतपूर्व विजय प्राप्त की थी और जिसकी प्रशंसा गांधीजी ने भी मुक्तकंठ से की थी। यदि फासिस्ट ... विजयी हो जाते, तो ... संसार का नक्शा दूसरा ही होता। अमर शहीद ... और शूरा के बलिदान ... दर्शनीय होंगे ही, पर ... लाखों वीरों की ... वीरता के लिए क्या कहा ... जिनकी समाधि लेनिनग्राद में बनी हुई है, जहां अग्नि निरंतर प्रज्ज्वलित रहती है और दीवार पर खुदा हुआ है—'कोई बलिदान भुलाया नहीं गया और भुलाया ... जायेगा!'

मुझे दो बार उस तीर्थस्थल की यात्रा करने का सौभाग्य प्राप्त हो चुका है—१९... में तथा १९६६ में। और मैं इसी आशा में जीवित हूं कि हम लोग भी भारतवर्ष में अपने प्रगतिशील शहीदों की कीर्ति ... उसी प्रकार कर सकेंगे, जिस प्रकार रूसी भाइयों ने की। (वैसे अगर आप छूट दें तो मैं उस लड़की एन फ्रैंक के भी दर्शन करूं, जिसकी डायरी सुरक्षित है और जिसके घर के सब प्राणी एक के बाद एक चल बसे।)

—बनारसीदास चतुर्वेदी

०००

जिस ऋषि ने सावित्री (गायत्री) मंत्र के दर्शन किये थे, उसने निश्चय ही सविता देव के उस 'वरेण्यं भर्गः' का भी दर्शन किया था, जिसके ध्यान का संकल्प उसने मंत्र में किया है। मैं भी उसके साथ उपस्थित होकर उस समग्र 'वरेण्यं भर्गः' का दर्शन ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्रैल १६९९ की १३ वीं तारीख और वैसाखी का दिन। वैसाखी पंजाब का सांस्कृतिक उत्सव है, जो गेहूं पकने पर हर वर्ष धूमधाम से मनाया जाता है। लेकिन इस वर्ष यह उत्सव नये ढंग से मनाया जा रहा था। गुरु तेगबहादुर ने दिल्ली में शहादत का जाम पिया था और अब संघर्ष को आगे बढ़ाने की जिम्मेवारी उनके पुत्र गोविंदराय पर आ पड़ी थी। उन्होंने संदेश भेजकर प्रांत के कोने-कोने से अपने अनुयायियों को केशगढ़ में एकत्र किया था। हजारों व्यक्ति एकत्र हुए थे और यह जानने को बहुत ही उत्सुक थे कि गुरु गोविंदराय अन्याय के विरुद्ध लड़ने की कौन-सी नयी योजना प्रस्तुत करने वाले हैं।

तरुण गुरु अपनी योजना प्रस्तुत करने के लिए जब सभा में पधारे तो करतल-ध्वनि से वातावरण गूंज उठा। 'प्रियजनो!' गुरु ने अपनी खनखनाती आवाज में भाषण शुरू किया—'आप मेरी जिस योजना को जानने के लिए इतने उत्सुक हैं, उसे सफल बनाने के लिए मुझे पांच ऐसे व्यक्ति चाहिये, जो तुरंत अपने प्राणों का बलिदान कर सकें।'

सभा में बहुत-से धनी-मानी व्यक्ति उपस्थित थे, जो धर्म के नाम पर प्राणों की आहुति देने की डींग बहुत हांकते थे; लेकिन अब गुरु की बात सुनी, तो उन्हें सांप सूंघ गया। लेकिन सभा में पांच स्थानों पर पांच व्यक्ति एकाएक उठ खड़े हुए। वे पांचों बढ़ई, लुहार, नाई आदि उन दलित जातियों के प्रतिनिधि थे, जिन्हें वर्ण-व्यवस्था ने सदियों से अंत्यज-अछूत बना रखा था। गुरु गोविंदराय उनमें से एक को साथ लेकर भीतर गये और कुछ क्षण बाद खून से सनी तलवार हाथ में लिये बाहर आये। लेकिन शेष चारों व्यक्ति अडिग रहे और प्राणों की आहुति देने गुरु के साथ भीतर चले गये।

दृश्य कितना रोमांचक था! बताने की आवश्यकता नहीं कि तलवार बकरे के खून से सनी हुई थी और गुरु सिर्फ भक्तों को आजमा रहे थे। गुरु ने इन पांचों 'प्यारों' को 'अमृत' पिलाया, कंघा-कच्छा-केश-कड़ा-किरपान धारण करवाये और उनके नामों के साथ 'सिंह' शब्द जोड़ा और स्वयं भी गोविंदराय से गोविंदसिंह बन गये।

दलित जातियों को भारत में पहली बार मान मिला और गुरु गोविंदसिंह ने उन्हें अन्याय के विरुद्ध लड़ने का काम सौंपा। उस दिन सिक्ख सेना की नींव पड़ी और विदेशी आक्रमण से संस्कृति की रक्षा करने के लिए चले आ रहे भक्ति-आंदोलन को विधिवत् सशस्त्र संघर्ष का रूप दिया गया।

—हंसराज रहबर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यदि मेरे पास कालयंत्र हो, तो मैं उस पर बैठकर जर्मनी पहुंच जाऊंगा और ... की चांसलरी में उतरूंगा। यह वह दिन होगा, जब हिटलर मान गया है कि अब आत्म-हत्या के सिवा कोई मार्ग नहीं है; क्योंकि जर्मनी की पराजय अब एक-दो दिन की बात है।

मैं वहां खड़ा होकर देखूंगा, सुनूंगा कि विश्वविजय का स्वप्न देखने वाला हिटलर अपने विश्वसनीय सेवक हैज़लिंगे से कह रहा है कि मैं तुमसे खुश हूं और तुम्हें अपनी सेवा से मुक्त करता हूं; अब तुम चाहे जहां जाओ। हैज़लिंगे सेल्यूट करता है और कहता है—'फ्यूहरर, आपने मुझे अपने सेवक के पद से मुक्ति दो; पर मैं आपको अपना स्थायी स्वामी मानता हूं।' हिटलर खुश होकर उससे कहता है—'जितने पेट्रोल का प्रबंध कर सको, ... तक करो।' बर्लिन पर बमबारी हो रही है, मैं देखता हूं कि बमों को पिघली हुई ... सड़कों पर पानी की तरह बह रही है।

हिलटर अपनी प्रेमिका ईवा ब्राउन से कहता है—'मैं जा रहा हूं। तुमने मुझे बहुत सुख दिया। मैं तुम्हारे लिए क्या करूं?' ईवा शांत-मुग्ध स्वर में कहती है—'मैं भी साथ ही चल रही हूं; पर मेरी इच्छा यह नयी यात्रा आपकी समाज-सम्मत पत्नी के रूप में करने की है। इसलिए शाम से पहले विवाह हो जाये, ऐसा प्रबंध कीजिये।' बड़ी मुश्किल से पादरी मिलता है, शादी होती है। बगीचे में हिटलर, ईवा, गोयबल्स आदि विवाह की पार्टी में शरीक होते हैं। शराब के जाम उठते हैं, नाच होता है और हिटलर सबको विदा करके ईवा के साथ सुहागरात मनाने कमरे में चला जाता है। तब हैज़लिंगे को पास बुलाकर अपने दाह-संस्कार की बात समझाता है फ्यूहरर।

तीन घंटे बाद एक कमरे से गोली चलने की आवाज आती है। ईवा गयी। ... फ्यूहरर अपनी दाढ़ में लगी विष की नन्ही-सी शीशी को जीभ से दांतों के बीच में लेकर चबाता है। वह भी गया। हैज़लिंगे दोनों शवों को उठाकर बाहर के लान पर पास-पास लिटाकर सेल्यूट करता है और दोनों पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा देता है। शव जलते रहते हैं, पेट्रोल पड़ता रहता है। जब हड्डियां तक जल जाती हैं, हैज़लिंगे अपनी राह चला जाता है।

मैं यह सब देखता हूं। ईवा का समर्पण मुझे प्रभावित करता है। मैं सोचता हूं, इति-हास में ऐसा कोई दूसरा विवाह नहीं है।

मैं कालयंत्र पर बैठकर लौटता हूं और सोचता हूं कि हिटलर विध्वंस का विधाता था; विध्वंस ही उसके हाथ लगा। दूसरों को इससे पाठ पढ़ना चाहिये और चिंतन को रचनात्मक रखना चाहिये।

—कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना चाहता हूं। उस 'भर्गः' का आंशिक दर्शन तो सामान्य ध्यान-योग से प्राप्त हो जाता है, परंतु समग्र नहीं।

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्॥

—डा. बाबूराम सक्सेना

०००

मैं तो किसी कालयंत्र की कल्पना ही नहीं कर सकता; क्योंकि काल-व्यवस्था मनुष्य ने की है—वह प्रकृति का कोई रहस्य नहीं है, जिसे मनुष्य या वैज्ञानिक एक दिन पा लेने का स्वप्न देख सकें। खैर!

इतिहास का निर्माण मनुष्य करता है। फिर भी वह यह नहीं कह सकता कि इतिहास के फलां महत्त्वपूर्ण अध्याय का निर्माण वह फलां समय कर देगा; क्योंकि यह आवश्यक नहीं कि जैसा वह सोचता है, घटनाएं उसी क्रम में घटें—घटनाओं के मोड़ लेने का अपना हिसाब भी होता है।

लेकिन अगर सचमुच कोई कालयंत्र एच. जी. वेल्स मुझे देते, तो मैं उसमें यह देखता कि हिंदुस्तान में समाजवादी क्रांति कब होगी। फिर उस समय मैं केवल दर्शक की तरह देखता ही नहीं, उसमें सम्मिलित भी होता। वह मेरे जीवन की सबसे बड़ी खुशी का समय होता। **—भैरवप्रसाद गुप्त**

०००

भारतीय चिंतन के अनुसार 'इच्छा' की शक्ति असीम है। सृष्टि का प्रारंभ ही परमात्मा की इच्छा से हुआ—'सोऽ काम्यत'। यदि आपकी 'कामना' से हर्बर्ट जार्ज वेल्स का कालयंत्र कुछ समय के लिए मुझे मिल जाये, तो उसके द्वारा मैं भूतकाल नहीं, बल्कि मानव-जाति का भविष्य देखना चाहूंगा। पर क्योंकि आपका आदेश सिर्फ भूत को देखने का है, उसके द्वारा मैं ये झांकियां देखना चाहूंगा :

क. जब विश्व के महान स्वतंत्र चिंतक सुकरात को तत्कालीन ग्रीक विचारों की रक्षा के लिए जहर का प्याला दिया गया।

ख. जिस दिन सम्राट अशोक की असीम राजनैतिक महत्त्वाकांक्षाएं एक धर्म-विजयी मानव-सेवक का रूप धारण कर गयीं।

ग. विश्व के अत्यंत विलासी राजाओं की काम-क्रीड़ाएं और उनके प्रति तत्कालीन मानव-नारियों की प्रतिक्रियाएं।

सब चीजें तो लिखना जरूरी नहीं है न? क्योंकि मैं तो और भी बहुत कुछ देखूंगा।

—चंद्रगुप्त विद्यालंकार

०००

इस समय मैं जिस मूड में आपके प्रश्न का उत्तर देने बैठा हूं, उसमें मैं विश्व-इतिहास की किसी घटना के बीच उपस्थित होने की इच्छा अपने में नहीं जगा पा रहा हूं। हां, आपके पाठकों के विनोदार्थ यह बता दूं कि इस संबंध में एक कल्पना मन में उठ रही है।......गुप्त-युग में कालिदास के जीवन-काल में उज्जयिनी की सब्जीमंडी में उस समय उपस्थित रहने की बात मैं सोच रहा हूं, जब कालिदास वहां उपस्थित हों। मैं यह देखना चाहूंगा कि कालिदास को

[शेष पृष्ठ २१७ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पौधों के बीच : एक अनुभव

—डा. जगदीश गुप्त

सिनेरिया हो चाहे नेस्टार्शियम
गेंदा हो या गुलाब
कुम्हलाया हुआ फूल
मुरझाया हुआ पौधा
मुझसे देखा नहीं जाता।

उतरा हुआ चेहरा
चाहे वह किसी का हो
और भी ज्यादा परेशान करता है मुझे।

सोचता रहता हूं
कैसे सींच दूं
सहानुभूति से
हर गमले, हर इंसान को
इंसानों-हैवानों के हुजूम
इस सारे जहान को
—एक साथ।

कैक्टस भी तो प्यासे नजर आते हैं,
कंटीले पौधे भी तो गुल खिलाते हैं।

फूल-सा खिल उठे
सबका स्वभाव
कहीं भी
न दर्द रहे
न उदासी
न दुराव
पर क्या कभी ऐसा हो सकेगा ?
जिंदगी शायद इतनी आसान नहीं है।

—१, नागवासुकि, दारागंज, इलाहाबाद-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वंदे मातरम् के शत वर्ष

* अमित्रसूदन भट्टाचार्य

राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम्' की मंत्र-रचना हुए एक शताब्दी पूरी हुई इस वर्ष। इस उपलक्ष्य में उस मंत्र के स्रष्टा साहित्य-सम्राट् बंकिमचंद्र के प्रति हम अपनी श्रद्धा निवेदित करते हैं।

वंदे मातरम् गीत पहले प्रकाशित हुआ था बंकिमचंद्र के उपन्यास आनंदमठ में, जिसका प्रथम संस्करण १२८९ बंगाब्द (१८८२ई.) में प्रकाशित हुआ था। लेकिन इसके पहले यह उपन्यास 'बंगदर्शन' नामक मासिक पत्र में धारावाहिक रूप में छपा था। यह गीत उपन्यास की पहली किस्त में ही छपा था–१२८७ बंगाब्द के चैत्र अंक में ५५५-५६ पृष्ठ पर। वस्तुतः यह गीत उसके भी पांच वर्ष पूर्व १२८१-८२बंगाब्द(१८७५-७६ ई.) में स्वतंत्र रूप से रचा गया था। बंकिम ने जब इसे लिखा, वे 'बंगदर्शन' के संपादक थे। १२८२ के चैत्र तक बंकिम ने उस पत्रिका का संपादन किया; अर्थात् इस गीत की रचना १२८२ के चैत्र में ही हुई।

कांठालपाड़ा-निवासी पंडित रामचंद्र बंद्योपाध्याय 'उस समय कार्याध्यक्ष, अथवा प्रूफरीडर या इसी तरह की किसी हैसियत से "बंगदर्शन" के साथ संबद्ध थे।' कहा जाता है, एक दिन वे 'बंगदर्शन' के लिए कंपोज कराने की सामग्री मांगने संपादक बंकिमचंद्र के पास आये। बंकिमचंद्र ने शायद कहा–'सामग्री लिखी नहीं है।' रामचंद्र ने तब बताया कि सामग्री के अभाव में प्रेस का काम रुका रहेगा। तभी बंकिमचंद्र ने तुरंत वंदे मातरम् लिखकर उन्हें दे दिया।

इस घटना का उल्लेख करते हुए बंकिम के जीवनीकार शचीशचंद्र चट्टोपाध्याय ने लिखा है–'मेरा विश्वास है, यह गीत झटपट लिखा जा सके ऐसा नहीं है। आत्मस्थ हुए बिना, तन्मय हुए बिना यह गीत नहीं लिखा जा सकता। इसके अलावा बंकिमचंद्र साधा-रण लेखकों की तरह कुछ भी तुरंत लिख-

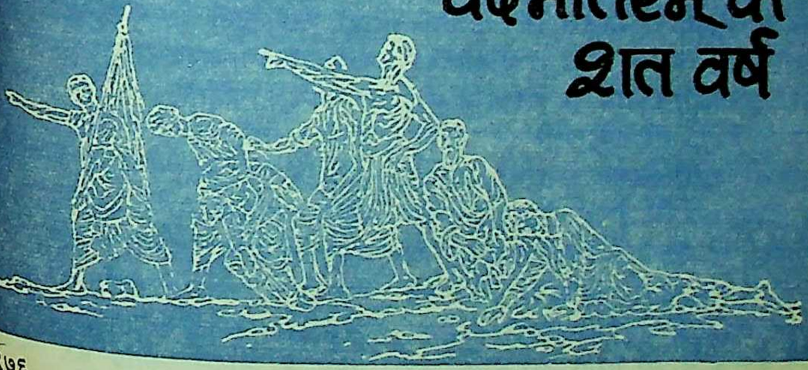

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर उसे छपने नहीं दे देते थे।'

इस विषय में विश्वास के योग्य साक्ष्य मिलता है बंकिमचंद्र के अनुज पूर्णचंद्र चट्टोपाध्याय की रचना से। पूणचंद्र का महत्त्व सिर्फ बंकिम के छोटे भाई होने की वजह से नहीं, बल्कि इसलिए भी है कि वे बंकिम के संपादन-काल में 'बंगदर्शन' से घनिष्ठ रूप से संबद्ध थे। जिस समय की बात कही जा रही है, उस समय वे ही 'बंगदर्शन' के कार्याध्यक्ष थे।

अब पूर्णचंद्र के लिखे में से वंदे मातरम् गीत-रचना का प्रसंग उद्धृत करता हूं:

' "बंगदर्शन" में बीच-बीच में दो-एक पन्ने मैटर कम पड़ने पर पंडित महाशय आकर संपादक को बताते। वे तुरंत लिखकर उन्हें दे देते। इन सब छोटे-छोटे लेखों में से दो-एक "लोकरहस्य" में प्रकाशित हुए हैं, लेकिन अधिकांश नहीं भी प्रकाशित हुए। वंदे मातरम् गीत-रचना के कुछ दिन बाद पंडित महाशय ने बताया कि लगभग एक पृष्ठ मैटर कम पड़ रहा है। संपादक बंकिमचंद्र ने कहा—ठीक है, आज ही मिल जायेगा। एक कागज टेबल पर पड़ा था और पंडित महाशय की नजर उस पर पड़ चुकी थी, शायद वे पढ़ भी चुके थे; उस पर वंदे मातरम् गीत लिखा हुआ था। पंडित महाशय बोले कि देर होगी तो काम बंद रहेगा; यह गीत जो लिखा है खराब तो नहीं है, यही क्यों नहीं दे देते! संपादक बंकिमचंद्र ने खीजकर कागज उठाकर टेबल की दराज में रख लिया और बोले—"वह अच्छा है या खराब, अभी तुम नहीं समझ पाओगे; कुछ दिनों बाद समझ पाओगे—मैं शायद उन दिनों जीवित नहीं रहूंगा, लेकिन तुम रह सकते हो।" (बंकिम-प्रसंग, 'बंकिमचंद्रेर बाल्यकथा'।)

'वंदे मातरम् ठीक किस साल के किस महीने में रचा गया था, यह सुनिश्चित रूप से कहना कठिन है। लेकिन बहुत कुछ अनुमान किया जा सकता है।

' "बंगदर्शन" के १२८१ के कार्तिक अंक में "कमलाकांतेर दफ्तर" के अंतर्गत "दुर्गोत्सव" नामक मेरी रचना प्रकाशित हुई थी। इस गद्य-निबंध में मातृमूर्ति की जिस प्रकार वंदना की गयी है, क्या उसी का किंचित् परिवर्तित और परिमार्जित रूप नहीं है वंदे मातरम् मंत्र? लगता है, मेरी "दुर्गोत्सव" रचना के कुछ ही दिनों के अंदर ही वंदे मातरम् गीत रचा गया था। नीचे "दुर्गोत्सव" निबंध के कुछ अंश उद्धृत करता हूं।

' "यह क्या मां! हां, यही मां। पहचान... यही मेरी जननी जन्मभूमि—यही मृण्मयी मृत्तिकारूपिणी-अनंतरत्नभूषिता—इसी... कालगर्भ में निहिता। रत्नमंडित दस भुजा... दशदिक्—दसों दिशाओं में—प्रसारित; उनमें नाना आयुधों के रूप में नाना शक्तियां शोभित हैं; पदतल में शत्रु विमर्दित है, पदाश्रित वीरजन केशरी शत्रु-निष्पीड़न में नियुक्त है! ...... आओ मां, घर ... आओ—छह कोटि संतान एकत्र हो, ... समय में, द्वादश कोटि कर जोड़कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे पादपद्म की पूजा करेंगे।... ये छह कोटि मुंड इस पदप्रांत में लुंठित होंगे, छह कोटि कंठों से इसी नाम का हुंकार करेंगे, यही छह कोटि देह तुम्हारे लिए गिरेंगे—नहीं हुआ तो यही द्वादश कोटि आंखें तुम्हारे लिए रोयेंगी। आओ मां, घर में आओ—जिसकी छह कोटि संतान है, उसे किसकी चिंता?... आओ, हम लोग द्वादश कोटि भुजाओं से इस प्रतिमा को उठाकर छह कोटि माथों पर उठाकर घर में लायें।" (वंगदर्शन १२८१ कार्तिक, पृष्ठ ३२६-२७।)

'इस रचना में क्या वंदे मातरम् गीत का पूर्वाभास नहीं मिलता? दोनों रचनाओं में विषयगत प्रभेद मुख्यत: यही है कि गद्य में जहां "छह कोटि कंठ" और "द्वादश कोटि भुज" था, वहां गीत में "सप्तकोटि कंठ" और "द्विसप्तकोटि भुज" हो गया है। इस अंतर से यह बात भी प्रकट होती है कि गद्य-निबंध की रचना के बाद ही किसी समय वंदे मातरम् की रचना हुई है। अर्थात् १२८१ कार्तिक और १२८२ चैत्र के बीच किसी समय वंदे मातरम् की रचना हुई थी; ऐसा लगता है।'

ऋषि अरविंद के लिखने से भी प्रमाणित होता है कि वंदे मातरम् १८७५ ई. में रचा गया था। 'बत्तीस वर्ष पहले बंकिम ने इस महान गीत की रचना की थी, जिसे कुछ लोगों ने सुना था; लेकिन किसी आकस्मिक क्षण में बंगाल के लोगों ने मोहनिद्रा से जाग-कर सत्य की खोज में इधर-उधर नजर डाली और उस भाग्य-क्षण में कोई वंदे मातरम् गा उठा।' (श्रीअरविंद जन्म-शताब्दी संस्करण, खंड-१७, 'ऋषि बंकिमचंद्र'।)

पहले ही कह चुका हूं, 'आनंदमठ' ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हुआ १२८९ बंगाब्द में। १२८२ बंगाब्द के ज्येष्ठ मास में ठाकुरबाड़ी की 'बालक' पत्रिका में वंदे मातरम् गीत का कुछ अंश और उसकी स्वरलिपि प्रकाशित हुई थी। यह स्वरलिपि बनायी थी—प्रतिमासुंदरी देवी ने। वंदे मातरम् के भाव के आधार पर पूरे पृष्ठ का एक चित्र भी 'बालक' के इस अंक में छापा गया था। चित्र के नीचे छपा था—'वन्दे मातरङ'। स्वरलिपि की भूमिका में लिखा था—'बंकिम बाबू रचित विख्यात गीत वंदे मातरम् यहां पूरा नहीं दिया गया है; कारण, इस गीत का सुर अत्यंत कठिन है, पूर्ण सुर दे देने पर पाठकों को सहज ही ग्राह्य नहीं होगा।'

'बालक' पत्रिका ने वंदे मातरम् को बंकिमचंद्र रचित 'विख्यात गीत' कहा है। प्रश्न उठता है, 'आनंदमठ' के प्रकाशन के मात्र तीन वर्ष के अंदर ही वंदे मातरम् इतना विख्यात कैसे हुआ कि ठाकुरबाड़ी से प्रकाशित ऐसी पत्रिका में यह गीत सचित्र एवं स्वरलिपि-सहित प्रकाशित हुआ? क्या ऐसा हो सकता है कि बंकिम का यह गीत 'आनंदमठ' में प्रकाशित होने के पूर्व ही प्रचारित हुआ हो और क्रमेण उसने देश-वासियों के बीच अत्यंत ख्याति प्राप्त की हो? नहीं तो हाल में प्रकाशित एक नये उपन्यास में छपा गीत इतने अल्प समय में ही इस प्रकार विख्यात कैसे हो गया?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रदाता बंकिम

'बंगदर्शन' में वंदे मातरम् गीत का स्वरोल्लेख इस प्रकार है :

मल्लार–कव्वाली ताल

० १ ×१

यथा–वंदे मात रङ इत्यादि।

'बालक' पत्रिका का निर्देश–रागिनी देश, ताल कव्वाली।

बंकिमचंद्र के प्रसंग में रवींद्रनाथ ने एक जगह कहा है–'उनके वंदे मातरम् गीत को मैंने ही पहले उन्हें सुर में सुनाया था। मैंने पूरे गीत को सुर में नहीं बांधा था–जितने भाग को सुर में बांधा था, उतना ही सुनाया। सुनकर वे बहुत प्रसन्न हुए थे।' (बंकिम जन्म-शतवर्ष पर रवींद्रनाथ का भाषण; द्रष्टव्य आनंदबाजार पत्रिका, २४ श्रावण १३८५।)

सरला देवी के 'शतगान' ग्रंथ में वंदे मातरम् की स्वरलिपि है। रवींद्रनाथ कृत ग्रंथ में भी उसी स्वरलिपि का निर्देश है।

शांतिनिकेतन के रवींद्र-सदन संग्रहालय में रवींद्रनाथ के कंठस्वर में वंदे मातरम् गीत एक निधि के रूप में सयत्न संभालकर रखा हुआ है। रवींद्र-सदन में बैठकर उस गीत को कई बार सुनने का सुयोग्य मुझे मिला है। सुमधुरभाषी रवींद्रनाथ के उस मधुर मोहन कंठ में ऋषि बंकिमचंद्र का वंदे मातरम् गीत सुनना न सिर्फ किसी बंगाली के लिए अपितु किसी भी भारतवासी के लिए एक दुर्लभतम आनंदमय पवित्र उपलब्धि होगी। गीत सुनते-सुनते बार-बार मन में प्रतीत हो रहा था–कवि अपने रचित सुर में उदात्त कंठ से वंदे मातरम् गा रहे हैं, और स्रष्टा बंकिमचंद्र गायक के सामने ही किसी ऊंचे आसन पर उपविष्ट हैं–और उनकी विमुग्ध-स्तव्ध दृष्टि जैसे दूर किसी एक संभावनामय भविष्य की ओर प्रसारित है।

कवि का गाया यह गीत रेकार्ड हुआ था १९०४-५ ई. में–एच. बोस की 'टॉकिंग मशीन' में। यही था ग्रामोफोन यंत्र के लिए रवींद्रनाथ का दिया प्रथम कंठस्वर। रेकार्ड की कालावधि है २ मिनट ३३ सेकेंड।

वंदे मातरम् गीत के संबंध में बंकिमचंद्र के साथ कवि नवीनचंद्र सेन की कुछ बातें हुई थीं। श्रीशचंद्र मजुमदार ने इस संबंध में अपनी रचना में लिखा है। एक बार नवीन सेन ने बात ही बात में आनंदमठ के विषय में वंदे मातरम् गीत के एक अंश का पाठ करके बंकिम से कहा था–'इतनी अच्छी चीज को आधा संस्कृत, आधा बंगला में लिखकर मिट्टी में मिलाया गया है; यह तो गोविंद अधिकारी के गीत जैसा हो गया; लोगों को अच्छा नहीं लगता।' उत्तर में बंकिम थोड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुपित हो बोले थे—'अच्छा भाई, नहीं अच्छा लगता है, मत पढ़ो। मुझे अच्छा लगता है, इसीलिए ऐसा लिखा है। लोगों को अच्छा लगेगा या नहीं, सोचकर लिखूंगा क्या मैं?' म. म. हरप्रसाद शास्त्री की रचना में भी इस घटना का इसी रूप में उल्लेख है।

इस घटना के संबंध में स्वयं नवीन सेन क्या कहते हैं, देखें :

'एक दिन सुबह बंकिमबाबू से मिलने गया। वे उस समय बऊबाजार में एक दुमंजिले मकान में रहते थे। ...... उनके आनंदमठ के संबंध में अनेक बातें हुईं। उसी समय आनंदमठ का प्रकाशन हुआ था। मैंने कहा—आपका वंदे मातरम् गीत भारतवर्ष का "मारसेल्ज गीत" होगा। वे बोले—अच्छा, यह तुम्हें इतना अच्छा लगा? उसके बाद मैंने गीत की अत्यधिक प्रशंसा करते हुए कहा कि बीच-बीच में बंगला की पंक्तियां डालकर गीत को मिट्टी कर दिया है; ये पंक्तियां गीत के प्राण व गांभीर्य को नष्ट करती हैं—कैसा बिखरा-बिखरा-सा लगता है! सरल संस्कृत में होता तो ज्यादा अच्छा होता। वे बोले—बंगला पंक्तियां तुम्हें नहीं अच्छी लगती हैं तो उन्हें छोड़कर पढ़ो। मैंने कहा—आपके इस मिजाज से ही हम लोग मारे गये हैं। फिर वे किंचित् हंसकर बोले—तुमने यह गीत गाये जाते हुए सुना है? मैंने कहा—नहीं। तब वे बोले—गाये जाते हुए सुनकर ऐसा नहीं कहोगे।'

सन १८८६ में कलकत्ते में जो कांग्रेस अधिवेशन हुआ था, उसमें वंदे मातरम् गाया गया था। इसका पता चलता है हेमचंद्र वंद्योपाध्याय की 'राखीबंधन' शीर्षक कविता से। उसमें लिखा है :

प्रणय-विह्वले धरे गले गले
गाहिलो सकले मधुर काकोले
गाहिलो—'वंदे मातरङ;
सुजलाङ सुफलाङ मलयजशीतलाङ
शस्यश्यामलाङ मातरङ
... ...
बहुबलधारिणीङ नमामि तारिणीङ
रिपुदलवारिणीङ मातरङ।'
उठिलो से ध्वनि नगरे नगरे
तीर्थ देवालय पूर्ण जय स्वरे
भारत-जगत मातिलो।

१८९६ में कलकत्ते में फिर से जो कांग्रेस अधिवेशन हुआ था, उसमें स्वयं रवींद्रनाथ ने वंदे मातरम् गाया था। (द्रष्टव्य—प्रफुल्ल कुमार सरकार की पुस्तक 'जातीय आंदोलने रवींद्रनाथ' एवं लेखक की पुस्तक 'अन्योन्यदर्शन : वंकिमचंद्र-रवींद्रनाथ'।) यह घटना बंकिम की मृत्यु के दो वर्ष बाद की है।

काली प्रसन्न घोष 'आनंदमठ का मूल-मंत्र' के विषय में एक लेख लिखने को प्रयत्न-शील थे। वंदे मातरम् ही आनंदमठ का मूल-मंत्र है। बंकिमचंद्र ने एक पत्र में काली प्रसन्न को लिखा—'मैं ही आनंदमठ लिखकर क्या करूंगा, या आप ही उसके मूलमंत्र को समझाकर क्या करेंगे? इस ईर्ष्यापरवश आत्मोदर-परायण जाति की उन्नति नहीं है। बोलो—वंदे उदरम्।'

लेकिन बंकिम जबर्दस्त आशावादी थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वे मानस चक्षु से देख सके थे कि भारतवर्ष के घर-घर में, मंदिर-मंदिर में देशमाता की मूर्ति प्रतिष्ठित हो गयी है। मृत्यु के कुछ समय पहले अपनी ज्येष्ठ पुत्री से उन्होंने कहा–'एक दिन देखना–बीस-तीस वर्ष बाद एक दिन देखोगी, इस गीत को लेकर बंगाल उन्मत्त हो उठा है, बंगाली पगला गये हैं।'

२९ जनवरी १९०८ को एक भाषण में श्रीअरविंद ने वंदे मातरम् एवं उसके रचयिता के विषय में कहा था–'उसने (बंकिम ने) भविष्यवाणी की थी कि एक समय ऐसा आयेगा जब पूरा भारतवर्ष इस गीत (वंदे मातरम्) से गूंजेगा और उस ऋषि के शब्द आश्चर्यजनक रूप से चरितार्थ हुए।' (श्री-अरविंद जन्मशताब्दी संस्करण, प्रथम खंड)

['देश' से साभार]

'र' का राज्य

कुछ अक्षरों के साथ विशेष शक्ति जुड़ी होती है, यह मान्यता भारत में बहुत पुरानी है और तंत्रशास्त्र में इसका विशेष स्थान है। ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे देश के नाम 'भारत' में आने वाले तीन व्यंजनों में मध्यवर्ती 'र' (व्याकरण की भाषा में 'रेफ') के साथ कोई रहस्यमय शक्ति शायद जुड़ी हुई है।

भारत के अब तक के पांच राष्ट्रपतियों में से पांचों के नाम में 'र' एक या अधिक बार आया है–राजेंद्र प्रसाद (तीन बार), सर्वपल्ली राधाकृष्णन् (दो बार), जाकिर हुसैन (एक बार), वराहगिरि वेंकट गिरि (तीन बार), फखरुद्दीनअली अहमद (एक बार)। हमारे प्रथम भारतीय गवर्नर-जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी के नाम में चार रकार थे।

अब तक के हमारे तीनों प्रधान-मंत्रियों के नाम भी रकार-युक्त रहे हैं–जवाहरलाल नेहरू (दो बार), लालबहादुर (एक बार–अगर 'शास्त्री' को नाम का ही अंश मानें तो दो बार), इंदिरा गांधी (एक बार)। दो बार कार्यवाहक प्रधान-मंत्री रहने वाले गुलजारीलाल नंदा का नाम भी रकार-युक्त था।

भारत के राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों में से लगभग दो तिहाई के नामों में रकार आता है। आप स्वयं सूची बनाकर देख लीजिये। (इससे आपके सामान्य ज्ञान की परीक्षा भी हो जायेगी।)

इस प्रकार बार-बार आकर 'र' हमें कहीं यह तो नहीं याद दिलाना चाहता कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी भारत को रामराज्य बनाना चाहते थे!

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पना और जीवन

कल्पना : मैंने लंबी जिंदगी जी है; मगर मैंने अभी तक ऐसे दो दिन नहीं देखे हैं, जो एक दूसरे से मिलते-जुलते हों। प्रकृति के चमत्कार हमेशा ही मेरे दिल को खुशी से ओतप्रोत किये रहते हैं। अधिकांश लोग अपनी आंखों पर जैसे पट्टी बांधकर जीवन बिताते हैं। मुझे उन पर तरस आता है। हर मनुष्य को अपनी कल्पना का अधिकाधिक लाभ उठाना चाहिये। कल्पना मेरी सबसे अच्छी दोस्त रही है। उसने संकट-काल में मेरी सहायता की है, उसने मेरे खुशी-भरे पलों को और अधिक खुशी से भरा है; और वह मुझे तब तक खुशी देती रहेगी, जब तक मैं जीवित रहूंगा।

छेनी : मैंने जीवन को हमेशा किसी ठोस चट्टान के टुकड़े की तरह महसूस किया है। आप अपनी इच्छा-शक्ति की छेनी से उस चट्टान को काटते-तराशते हैं। पर इससे पहले यह जरूरी है कि आपके सामने वह खास शक्ल हो, जिसे कि आप साकार करना चाहते हैं, जिस तरह कि छेनी का तेज होना जरूरी है। हममें से हर किसी में इन दोनों चीजों को पाने का सामर्थ्य है।

[अनुकृति : रानी]

—जान सिबेल्यूस—

[फिनलैंड के संगीतस्रष्टा]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुंबाज

हरपाल सिह लखीयां

पंजाबी से अनुवाद : मनोहर गर्ग * चित्र : निमिषा शर्मा

घर की दीवार की छाया में चारपाई पर लेटा हुआ मैं एक किताब के पन्ने पलट रहा था। नजदीक ही मेरा तीन-एक साल का बेटा खेलने में मगन था। वह अपनी रेलगाड़ी में चाबी भरकर छोड़ चुका था और गाड़ी दौड़ने लगी थी। मेरा ध्यान किताब से उचटकर उसकी तरफ हो गया था। किताब बंद करके मैं उसकी तरफ देखने लगा था।

अब उसने गाड़ी को दो-तीन बार चाबी देकर छोड़ा, और उसे दौड़ते हुए देखने लगा। उसकी आंखों में खुशी की चमक थी। वह इतना खुश नजर आ रहा था, जैसे उसने हिमालय की कोई चोटी सर कर ली हो।

खेल में वह इतना मगन था कि उसे यह एहसास नहीं भी था कि मैं भी उसके पास बैठा हूं। न उसे अपनी मां ही का ध्यान था जो कि पास ही बरतन साफ कर रही थी। मेरी पत्नी ने पहले मेरी ओर देखा, फिर लड़के की ओर। लड़के की ओर देखने के बाद उसकी आंखों में कुछ शब्द तैर आये थे–'देखो, मेरा लड़का कितना समझदार है!'

मैं भी उसकी तरफ देखकर मुस्करा दिया। मेरी मुस्कराहट जैसे कह रही थी–'और कितना प्यारा भी.....'

कुछ देर तक वह अपनी रेलगाड़ी से खेलता रहा। फिर जैसे उसके लिए यह खेल पुराना हो गया। वह गाड़ी को अंदर रख आया और रबर की गेंद उठा लाया। वह गेंद को दूर फेंकता और फिर उसे पकड़ने के लिए दौड़ने लगता।

वह अपने खेल में इतना एकाग्रचित था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कि उसे हमारे होने का एहसास तक न था। कितनी ही देर वह खेलता रहा।

'पप्पू !' मैंने पुकारा, प्यार से।

'हां,जी?' उसने एक बार मेरी ओर देखा, मुस्कराया और फिर खेल में मस्त हो गया।

मेरा ध्यान किताब से बिलकुल हट चुका था। पप्पू भी मुझे किताब का एक पन्ना नजर आ रहा था। उसकी मां भी बरतन साफ करने के बाद किसी और काम में व्यस्त हो गयी थी। बरतन साफ करने की जगह पर रेत के ढेर के पास, अब पप्पू आकर बैठ गया था तथा रेत पर आड़ी-तिरछी बेतरतीब लकीरें खींचने लग गया था। मैं उसकी अर्थहीन लकीरों में अर्थ तलाश करने की कोशिश कर रहा था।

०००

अंदर पलने में सोयी हुई मेरी पांच महीने की बच्ची जाग गयी थी। मेरी पत्नी दाल धोने में व्यस्त थी, इसलिए उसकी सुविधा के लिए मैंने पप्पू को आवाज दी।

वह अपने खेल में मस्त था। उसने मेरी आवाज को अनसुना कर दिया। या शायद उसे मेरी आवाज सुनाई ही नहीं दी थी। परंतु मुझे गुस्सा आ गया। अभी से मेरी परवाह नहीं करता, इतना बित्ता-सा.....

दूसरी बार मैंने ऊंची आवाज में पुकारा— 'पप्पू..... !'

उसने मेरी तरफ देखा, मगर कुछ बोला नहीं।

'बोलता क्यों नहीं ? .....' मैंने लाल-पीला होकर कहा।

'नहीं बोलता।' वह इठलाकर बोला।

'अंदर गुड्डी रोये जा रही है। उसका पलना झुला दे जरा।' मैंने उसे आदेश दिया। मगर वह उठा नहीं। खेलता रहा, पूर्ववत्। मुझे और भी गुस्सा चढ़ रहा था। दिल चाहता था कि उसे चपतिया दूं।

मेरी पत्नी ने मेरी ओर देखा, मेरे चेहरे पर चढ़ते गुस्से को लक्ष्य किया। फिर उसने पप्पू को बड़े प्यार से बुलाया—'पप्पू बेटा !'

मेरी आशा के विपरीत पप्पू उसी वक्त बोल उठा—'हां जी ?'

मैं उसके भोले और प्यारे लहजे पर हैरान था।

'अंदर बहन रोये जा रही है, उसे झुला दे, बेटा!' पत्नी ने कहा।

पप्पू उसी वक्त उठा और अंदर चला गया।

मेरी पत्नी के चेहरे पर सफलता की मुस्कान खेल रही थी।

★

समय की बात

पांच साल के बच्चे की कलाई में असली घड़ी देखकर मैंने पूछा—'क्यों बेटा, यह समय बताती है क्या ?'

'नहीं चाचीजी,' बच्चे ने उत्तर दिया—'यह खुद नहीं बताती। मुझे ही देखकर पता लगाना पड़ता है।'

—सविता कृष्ण

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊर्जा का उपयोग
व्यापक लोकशिक्षण का प्रश्न

सरलादेवी

व्यापक प्रौढ़ शिक्षा में तीन दिशाओं पर ध्यान देने की अत्यधिक आवश्यकता है–ईकॉलाजी (पारिस्थितिकी), इकनामिक्स (अर्थशास्त्र), इनर्जी (ऊर्जा)। अब तीन 'आर' के बनिस्बत तीन 'ई' का सवाल ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया है।

ऊर्जा के वर्तमान उपयोग (या दुरुपयोग) का हमारी समग्र पृथ्वी के मौसम पर बड़ा खतरनाक प्रभाव पड़ रहा है। सिर्फ प्राकृतिक मौसम पर नहीं, बल्कि मनुष्य के फेफड़ों पर भी उसका भारी असर पड़ रहा है। उससे कई समस्याएं पैदा हो रही हैं। तेलवाही पोतों से तेल के रिसने से समुद्र दूषित हो रहे हैं। मछलियों तथा उनकी खुराक पर, समुद्री चिड़ियों पर उसका प्रभाव पड़ रहा है। भू-स्खलन बहुत तेजी से बढ़ रहा है। दुनिया में रेगिस्तानी इलाके बढ़ रहे हैं। ऊर्जा के लिए आवरण-खनन (स्ट्रिप-माइनिंग) से प्रदूषण और भू-स्खलन बढ़ते हैं। नदियों का पानी अपशिष्टों से दूषित हो रहा है। ऊर्जा-संयंत्रों को ठंडा करने के लिए काम में लाये गये पानी से आस-पास की नदियों तथा झीलों का तापमान बढ़ रहा है, जिससे पानी के पौधे, मछली व कीट मर रहे हैं और पानी सूख रहा है। कारखानों के कच्चे माल के लिए वनों के काटने का बुरा नतीजा सबके सामने स्पष्ट हो रहा है।

लेकिन ऊर्जा की समस्या, जो कि इन सब बातों की जड़ में है, उसकी ओर लोगों का ध्यान शायद अब तक कम ही गया है। संयुक्त राज्य अमरीका ने नाभिकीय ऊर्जा की एक बृहद् योजना बनायी है। लेकिन जितनी ऊर्जा उसके द्वारा पैदा होती है, उसके दो तिहाई जितनी ऊर्जा उस ऊर्जा को पैदा करने में लगती है। इसलिए सवाल सिर्फ नाभिकीय संदूषण का नहीं है। असली समस्या यह है कि इस तमाम खर्च और व्यवस्था के अंत में बहुत कम ऊर्जा हाथ आती है। उन संयंत्रों में सुरक्षा (अर्थात् दुर्घटनाओं का न होना) केवल इंजीनियरी का सवाल नहीं है–उन संयंत्रों को संभालने वालों के दिमाग, मनोयोग एवं चरित्र पर बहुत कुछ निर्भर है। क्या आज की शिक्षा से ऐसे सावधान लोग तैयार हो रहे हैं?

हाल ही में अमरीका में कई उच्च-स्तरीय अभियंताओं ने सरकार के नाभिकीय संयंत्रों से इस्तीफा दे दिया है; क्योंकि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी मान्यता है कि उन संयंत्रों में सुरक्षा की व्यवस्था अपर्याप्त और अपूर्ण है। लेकिन इस समस्या को लेकर इस्तीफा देने वालों की संख्या कम है; इस्तीफा न देने वालों का बड़ा भारी बहुमत है। जो यंत्र या मनुष्य अपना कार्य उचित ढंग से न कर रहे हों, उनसे संरक्षण कैसे होगा ? यदि किसी नालायक नौसिखिये के हाथ में रीएक्टर-ग्रेड का कुछ ही किलोग्राम प्लूटोनियम पहुंच गया, तो एक परमाणु-बम बना डालना उसके लिए कोई कठिन काम न होगा।

आजकल की तकनीकी की बदौलत व्यक्तियों, संघटनों तथा सरकारों के हाथ में हिंसा तथा बल-प्रयोग के अपूर्व अवसर मौजूद हैं। अंतरराष्ट्रीय कूटनीति में उनका प्रभाव अब भी बहुत पड़ रहा है। बीस वर्ष के बाद बीस हजार परमाणु-बम बनाने लायक सामान हमारे अंतरराष्ट्रीय समाज में घूम रहा होगा। जो समाज बैंक की डकैतियों को, विमान-अपहरणों को तथा नशीले पदार्थों के व्यापार को रोकने में असमर्थ है, क्या वह उन साधनों के गलत उपयोग को रोक सकेगा ? सिद्धांततः ऐसा प्रतीत होता है कि उस समस्या का कोई हल निकालना असंभव होगा। उससे बचने के लिए बनाये जाने वाले संरक्षणात्मक कानून दबावकारी किंतु असफल रहेंगे, उनसे नागरिक स्वतंत्रता को बहुत बड़ा खतरा होगा।

ज्यादातर माना यह जाता है कि ऊर्जा को बनाने तथा संभालने की कठिनाइयां केवल तकनीकी तथा आर्थिक हैं। लेकिन वास्तव में ये कठिनाइयां सामाजिक और नैतिक हैं। आजकल की नीतियों द्वारा हम अपनी संतान पर ऐसा अनुत्तरदायित्वपूर्ण नाभिकीय बोझ डाल रहे हैं, जिसे हम खुद संभालना सीख नहीं पा रहे हैं। जिस रफ्तार से हम जीवाश्मीय ईंधनों—कोयला और पेट्रोलियम—का अपव्यय कर रहे हैं, उसका कोई भी नैतिक औचित्य नहीं है।

यदि हम हल्की ऊर्जा वाली योजनाएं बनायें तो नागरिकों के विकास और कार्य में विविधता होगी और व्यक्तित्व-विकास का ज्यादा अवसर मिलेगा और वे ज्यादा अर्थ-पूर्ण, सामाजिक भूमिकाओं को अपना सकेंगे। तब सामाजिक वातावरण का विघटन रुक सकेगा; काम के यंत्रीकरण तथा ऊर्जा की भूख से समाज के जीवन में जो अलगाव, कृत्रिमता, दुराव व शून्यता आ गयी है, कार्य की अपूर्णता से जो चरित्र-हानि हो रही है, वह टल सकेगी।

सन १९०९ में अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में गांधीजी ने लिखा था कि मानवीय स्वतंत्रता के लिए ऊर्जा का निर्माण स्थानीय स्रोतों से, उसी क्षेत्र के लिए छोटे पैमाने पर होना चाहिये। तब से सड़सठ साल तक उससे विपरीत दिशा में जाने के बाद अब पश्चिम में लोग चेतने लगे हैं कि वे गलत मार्ग पर हैं। बहुत लोग सोचने लगे हैं कि वे उस मार्ग से लौटें कैसे। लेकिन भारत में हमारी दृष्टि और लक्ष्य क्या है?

—हिमदर्शन कुटीर, पो. धरमधर,
वाया—बेरीनाग, जि. पिथौरागढ़, उ. प्र.

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

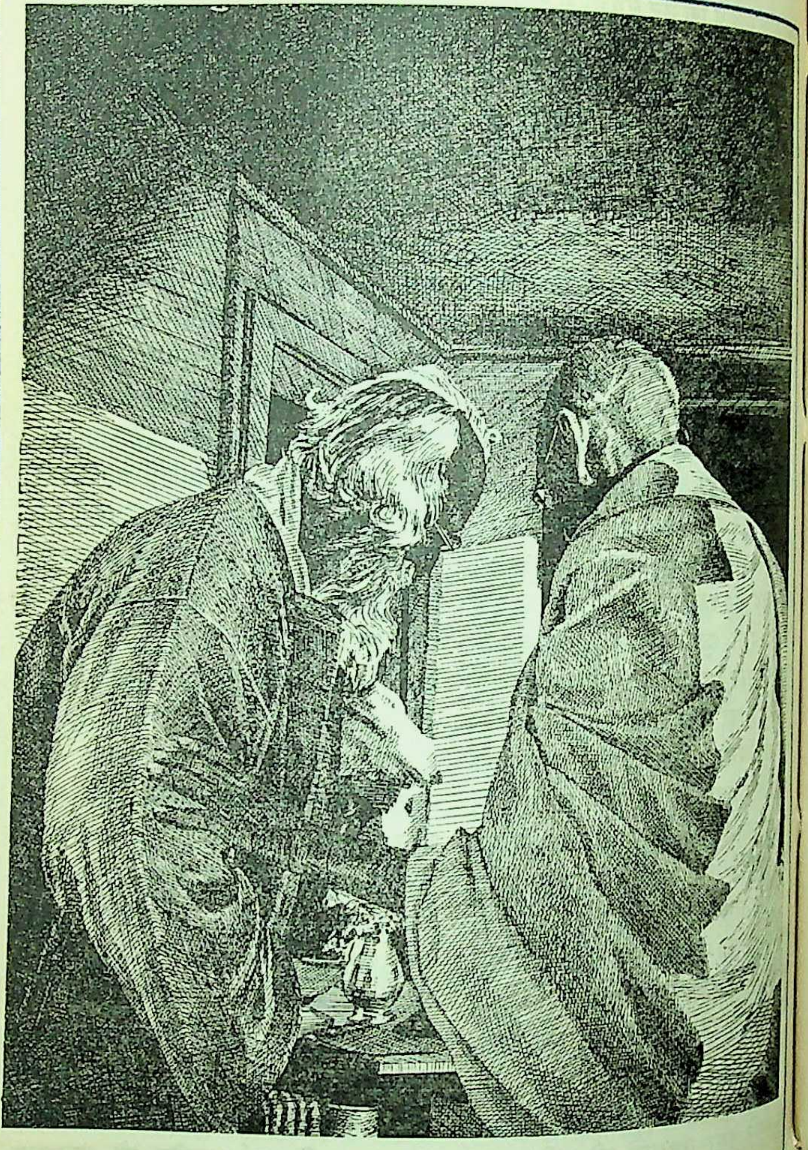

चित्र : वी. एन. ओके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुदेव और बापू

• विष्णु प्रभाकर •

गुरुदेव और बापू दोनों का लक्ष्य एक ही था; परंतु मार्ग उनके भिन्न-भिन्न थे। इस भिन्नता को समझने के लिए एक उदाहरण देना पर्याप्त होगा। उस बार गांधीजी शांतिनिकेतन आने वाले थे। गुरुदेव ने उनके स्वागत की जोरदार तैयारी की। उनके ठहरने के कमरे को बड़े कलात्मक ढंग से सजाया—ऐसा कि उसका सौंदर्य देखने वाले को मुग्ध कर देता था।

गांधीजी आये। साथ में खादी प्रतिष्ठान (सोदपुर) के सतीश बाबू आदि और भी साथी थे। सभी का स्वागत प्राचीन वैदिक पद्धति से किया गया। गुरुदेव ने स्वयं अपने हाथ से गांधीजी के भाल पर चंदन और कुंकुम का टीका लगाया और फिर ले चले सबको उनके आवास-स्थल की ओर। गांधीजी ने अपने कमरे की सजावट पर एक दृष्टि डाली और बड़े जोर से हंस पड़े। बोले—'यह सब क्या है? आखिर मुझे इस सुहाग-कमरे में क्यों लाया गया?'

गुरुदेव भी कम विनोदप्रिय नहीं थे। कहा—'आप यह न भूलें कि यह एक कवि का आवास है।'

गांधीजी ने पूछा—'अच्छा, तो फिर वधू कहां है?'

कवि बोले—'हमारे हृदयों की चिरयुवती रानी शांतिनिकेतन आपका हार्दिक स्वागत करती है।'

गांधीजी ने कहा—'सच मानो, वह इस पोपले मुंह के बूढ़े भिखारी को मुश्किल से ही दूसरी बार आंख उठाकर देखेगी।'

गुरुदेव बोले—'नहीं, सो नहीं होगा। हमारी रानी ने सदा सत्य को प्यार किया है और इस लंबी अवधि में उसी की पूजा की है।'

गांधीजी हंसे—'तब तो इस पोपले मुंह के बूढ़े आदमी के लिए यहां कुछ आशा है।'

दूसरा दिन आया। गुरुदेव मेहमानों की सुख-सुविधा की देखरेख के लिए मेहमान-घर पहुंचे। देखते हैं कि सब लोग कभी के उठकर अपने-अपने काम में लग चुके हैं। प्रार्थना हो चुकी है। सतीश बाबू लड़के-लड़कियों की एक टोली को हाथ के पींजन से कपास धुनना सिखा रहे हैं। पींजन का स्वर जैसे संगीत का स्वर हो। गुरुदेव को यह स्वर बहुत प्यारा लगा।

वहां से पहुंचे वे गांधीजी के कमरे में। चकित रह गये। कमरे का सारा शृंगार उतार दिया गया था। गांधीजी का पलंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुली छत पर पड़ा हुआ था। चारों ओर फाइलें थीं, चरखे थे। विनोदप्रिय गुरुदेव बोले–'हरे राम, हरे राम! भला इस सुहाग के कमरे का क्या हुआ! देखता हूं कि दुलहिन जहां की तहां है, पर क्या दुलहा भाग गया है?'

गांधीजी भी जोर से हंस पड़े। उत्तर दिया–'मैं तो पहले ही चेतावनी दे चुका था कि दुलहिन बिना दांत के बूढ़े आदमी को गांठने वाली नहीं है।'

इस विनोदपूर्ण घटना के पीछे इन दोनों महापुरुषों के चिंतन और कर्म में जो अंतर दिखाई देता है, उसे इन दोनों के संपर्क में रहने वाले स्वर्गीय गुरुदयाल मल्लिक के इन शब्दों में व्यक्त किया जा सकता है– 'गांधीजी की दृष्टि में यह जगत् प्रभु का एक कार्यालय था; गुरुदेव की दृष्टि में यह जगत् भगवान का एक बगीचा था। परंतु दोनों ने अविरत कार्य में अपना जीवन बिताया। एक का काम था आनंदमय करना और दूसरे का काम था आनंद उत्पन्न करना।

'एक ने यह माना कि जीवन संगमरमर का एक ढेर है; पर दूसरे ने यह माना कि जीवन प्रेम का अभिसार है। इसलिए गांधीजी ने उस अनगढ़ ढेर में से मूर्तिकार के समान मूर्ति गढ़ी, दूसरे ने फूल बीने और अपनी प्रिया की वेणी का शृंगार किया। परंतु दोनों ने जीवन को स्वीकार किया। एक ने सेवक के रूप में और दूसरे ने संगीतकार के रूप में। एक ने दासी के रूप में और दूसरे ने कुमारी के रूप में।'

गांधीजी कर्मयोगी थे, गुरुदेव कवि थे। गांधीजी ने कहा–'दर्द मनुष्य को पवित्र करता है। बिना दर्द से पवित्र हुए किसी देश का उत्थान नहीं हुआ। जननी इसलिए दर्द सहती है कि उसके बच्चे जीवित रह सकें।' और उनका कहना था–'मैंने सदा एक सच्चा शूद्र–मानवता का सेवक–बनने की आकांक्षा की है।'

कवि ने कहा है–'मुझे यह तारों से भरा अंधकार बहुत अच्छा लगता है। जब दुनिया के झगड़े-रगड़े मिट जायेंगे, तब भी इन तारों की सत्य-साक्षी हमेशा की तरह बनी रहेगी, जैसी कि हजारों वर्ष से रहती आयी है। वे तो हमेशा शांतं, शिवं, अद्वैतं का गान गाते रहते हैं।'

कवि ने जो कुछ कहा वह प्रेम की व्याख्या है; गांधीजी ने जो कुछ चाहा वह भी प्रेम ही है। प्रेम के अभाव में काव्य नहीं जन्म लेता है। प्रेम न हो तो कोई सेवा कैसे करेगा? अहिंसा प्रेम ही तो है। और ईश्वर?–वह सत्य भी है, सर्वोत्तम सौंदर्य भी है और सर्वोच्च प्रेम भी और सबसे गहरा दर्द भी। दर्द न हो तो न कोई कवि हो सकता है, न कर्मयोगी।

दोनों के विचारों की मूल आत्मा को समझें, तो वहां यही दर्द कुंडली मारे बैठा है। तभी तो दोनों जीवन-भर कोलाहल में संगीत पैदा करते रहे। जड़ को चेतन करना, संघर्ष में से सहयोग जुटाना, बुराई में से भलाई उपजाना भी तो कोलाहल में संगीत पैदा करना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर भी उनके जीवन में ऐसे अवसर आये, जब दोनों के चिंतन की धारा दो विपरीत दिशाओं में बहती दिखाई दी। सन १९३४ के बिहार-भूकंप को गांधीजी ने हमारे (अस्पृश्यता-रूपी) पापों का दंड घोषित किया था, तब कवि ने जोरदार शब्दों में इस अंधविश्वास का प्रतिवाद किया। उससे भी बहुत पहले सन १९२१ में कवि ने गांधीजी के असहयोग के सिद्धांत को खंडन और निराशा का सिद्धांत कहकर उसका विरोध किया था। तब गांधीजी ने बड़े जोरदार शब्दों में इसका प्रतिवाद करते हुए कहा था—'हम लोगों ने "नहीं" कहने की शक्ति बिलकुल गंवा दी है। सरकार के किसी काम में "नहीं" कहना पाप और अराजकता गिना जाने लगा है। जिस तरह बोने से पहले निराई करना बहुत जरूरी है, उसी तरह से सहयोग करने के पहले जानबूझकर पक्के इरादे के साथ, असहयोग करना हम लोगों ने जरूरी समझा है।'

कवि का चरखे में भी वैसा विश्वास नहीं था। तब गांधीजी ने कहा था—'मैं यह नहीं चाहता कि कवि अपना संगीत छोड़ दे, किसान अपना हल, वकील अपने मुकद्दमे और डाक्टर अपना शल्य-शालाक्य। मैं तो उनसे सिर्फ इतना त्याग चाहता हूं कि वे तीस मिनट रोज कातें। मैंने भूखे मर रहे बेकार स्त्री-पुरुषों को गुजारे के लिए और अधपेट रहने वाले किसानों को अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए चरखा कातने की सलाह जरूर दी है।'

उन्होंने कवि के लिए अपने एक पत्र में जैसे अपनी आत्मा उड़ेल दी है, जैसे वे भी कवि हो उठे हैं। उन्होंने लिखा:

'अपने काव्य के प्रति सच्चा रहकर कवि आगामी कल के लिए जिंदा रहता है और दूसरों को भी उस काल के लिए जीवित रहने का आदेश देता है। वह हमारे चकित चक्षुओं के सामने उन सुंदर चिड़ियों के सुंदर चित्र खींचता है, जो उषा के आगमन पर महिमा के गीत गाती हुई शून्य में अपने रंगीन पंखों से उड़ान भरती हैं। ये चिड़ियां दिन-भर का अपना भोजन प्राप्त करती हैं और रात के आराम के बाद आकाश में उड़ती हैं। उनकी रगों में पिछली रात नये रक्त का संचार हो चुका है। पर मुझे ऐसे पक्षियों को देखने से वेदना भी हुई है, जो निर्बलता के कारण पंख फड़फड़ाने का साहस भी नहीं कर सकते।

'भारत के विस्तृत आकाश के नीचे मानव-पक्षी रात को सोने का ढोंग करता है। भूखे पेट उसे नींद नहीं आती और जब वह सुबह बिस्तर से उठता है, तो उसकी शक्ति पिछली रात से भी कम होती है। लाखों मानव-पक्षियों को रात-भर भूख-प्यास से पीड़ित रहकर जागरण करना पड़ता है, अथवा जागृत स्वप्नों में उलझे रहना पड़ता है। यह अपने अनुभव की, अपनी समझ की, अपनी आंखों देखी अकथ दुःखपूर्ण अवस्था की कहानी है। इस पीड़ित मानवता को कबीर के गीतों से सांत्वना दे पाना असंभव है। यह लक्षावधि भूखी मान-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वता हाथ फैलाकर, जीवन के पंख फड़फड़ाकर, कराहकर, केवल एक कविता मांगती है–पौष्टिक भोजन।'

इसीलिए कवि ने दो शब्दों में उनके लिए कहा था–'वे विचारों से नहीं, मनुष्यों से प्रेम करते हैं।'

मतभेद एक दूसरे को समझने में रुकावट नहीं होते। दोनों ने एक दूसरे को अच्छी तरह पहचान लिया था। तब की बात है, जब गुरुदेव शांतिनिकेतन के लिए धन-संग्रह करने निकले थे। वे बहुत वृद्ध हो चुके थे, फिर भी स्वयं मंच पर आते थे। गांधीजी को यह सब अच्छा न लगा। क्या यह हमारे लिए लज्जा की बात नहीं है? ...... वे बार-बार सोचते। उनसे रहा नहीं गया। उन्होंने महादेव देसाई को बुलाया। कहा–'महादेव, तुम्हें पता है कि गुरुदेव दिल्ली आये हुए हैं। वे अपनी संस्था के लिए धन-संग्रह करना चाहते हैं। इसके लिए वे देश-भर में नाटक खेलेंगे।'

महादेव देसाई ने उत्तर दिया–'हां बापू, मुझे मालूम है।'

एक क्षण बाद महादेव देसाई ने फिर कहा–'आपको याद है न बापू कि दक्षिण अफ्रीका से लौटकर जब आप गुजरात में आश्रम स्थापित करना चाहते थे, तब पूना में गोखले ने अपने सहायक को बुलाकर कहा कि आपको जितने रुपयों की जरूरत हो, वह देता जाये। कितने उदार थे गोखले!'

गांधीजी तुरंत बोल उठे–'तुमने ठीक याद दिलाया। अच्छा, तुम अभी गुरुदेव के पास चले जाओ और उनसे पूछो कि उन्हें कितने रुपयों की आवश्यकता है। उसके बाद तुम श्री..... के पास चले जाना। मैं पत्र लिख दूंगा। वे गुरुदेव के लिए उतना रुपया गुप्तदान के रूप में दे देंगे।'

और गुरुदेव को जितना चाहिये था, उतना रुपया मिल गया। वे शांतिनिकेतन लौट गये।

यह सब इसीलिए तो संभव हुआ कि गांधीजी गुरुदेव को सचमुच पहचानते थे। उनके मानव-प्रेम को उन्होंने प्रत्यक्ष देखा था। तभी तो वे लिख सके थे–'गुरुदेव ने जो रोशनी फैलायी, वह आत्मा के लिए थी। सूरज की रोशनी जैसे हमारे शरीर को फायदा पहुंचाती है, वैसे गुरुदेव की फ़ैलायी रोशनी ने हमारी आत्मा को ऊंचा उठाया है। वे कवि थे। यही क्यों, वे ऋषि

बुलबुल और गुलाब

तारों से आलोकित आकाश के तले सिंधु नदी के तट पर एक बगीचे में हम लोग बैठे थे। अचानक ही बुलबुल का गीत सुनाई देने लगा और हमारी आंखों में आंसू उमड़ आये। फिर एकाएक गीत थम गया और हमारे हृदय उसके लिए तरसने लगे।

हमारी मनःस्थिति को भांपकर दादाजी (साधु वासवानी) बोले–'क्या प्रत्येक के हृदय में बुलबुल का गीत नहीं बसा है? बुलबुल गुलाब के लिए प्रेम में भरकर गाती .....हमारे भीतर स्थित अनश्वर गुलाब के लिए।'

–जे. पी. वासवानी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। उन्होंने कवि के नाते ही नहीं, ऋषि की हैसियत से भी लिखा है। वे कलाकार थे, नृत्यकार थे और गायक थे। बढ़िया से बढ़िया कला में जो मिठास और पवित्रता होनी चाहिये, वह सब उनमें और उनकी चीजों में थी। नयी-नयी चीजें पैदा करने की उनकी ताकत ने हमें शांति-निकेतन, श्रीनिकेतन और विश्वभारती जैसी संस्थाएं दी हैं। उनके रचे राष्ट्रीय गीत को आप सुन चुके हैं। हमारे देश के जीवन में इस गीत की एक जगह बन गयी है। यह सिर्फ गीत ही नहीं है, बल्कि भक्तिभाव से भरा भजन भी है।'

गांधीजी गुरुदेव की प्रतिभा का सम्मान करने से कभी नहीं चूके। और गुरुदेव तो; जब गांधीजी ने ब्रिटिश सरकार के सांप्रदायिक निर्णय (कम्युनल एवार्ड) को लेकर आमरण अनशन करने का निश्चय किया, तब भावविभोर होकर पुकार उठे थे—'मैं इस जन्म में भी और उस जन्म में भी उनका अनुसरण करूंगा।' उन्होंने काले वस्त्र पहनकर शांतिनिकेतन की एक सभा में उपवास के महत्त्व पर प्रकाश डाला और श्रोताओं को अस्पृश्यता-निवारण के काम में कमर कसकर जुट जाने को उद्‌बोधित किया। उपवास शुरू करने से पूर्व गांधीजी ने गुरुदेव को लिखा था—'... यदि आपकी अंतरात्मा मेरे कार्य की निंदा करे तो भी आपकी आलोचना को मैं बहुमूल्य समझूंगा। आपका हृदय यदि मेरे काम को पसंद करे तो मैं आपका आशीर्वाद चाहता हूं। उससे मुझे सहारा मिलेगा।'

परंतु गुरुदेव तो पत्र मिलने से पूर्व ही तार दे चुके थे—'भारत की एकता और सामाजिक अविच्छिन्नता के लिए बहुमूल्य जीवन का दान श्रेयस्कर है। हम लोग ऐसे हृदयहीन नहीं हैं कि इस राष्ट्रीय वज्रपात को चरम सीमा तक पहुंचने दें। हमारे व्यथित हृदय आपकी लोकोत्तर तपस्या को श्रद्धा और प्रेम से निहारते रहेंगे।'

उन्होंने 'मृत्युंजय' शीर्षक से एक लंबी कविता लिखी है। उसमें वे जैसे भविष्यवाणी कर जाते हैं गांधीजी के बलिदान की और उनके संदेश के पुनर्जीवित होने की।

'मृत्युंजय' को उनके अधीर-शंकालु साथी ही समाप्त कर देते हैं और फिर रोते हैं :

रो पड़ीं औरतें धाड़ मार,
दल पुरुषों के हो गये दीन।
कुछ ने चुपचाप चले जाने की कोशिश की
गति मिली नहीं,
उनको शहीद से बांध रहीं थीं जो कड़ियां
वे हिली नहीं।

× × ×

आपस में पूछ रहे हैं अब
'पथ हमको कौन दिखायेगा?'
बोला पूरब का वृद्ध—
जिसे मारा है वही दिखायेगा।
सब मौन और नतशिर,
बूढ़े ने फिर से कहा—जिसे हमने
संशयवश त्यागा और क्रोधवश हत्या की
यदि आज उसे हम करें प्रेम से ग्रहण,
न क्यों वह महाप्राण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम सबके जीवन में होगा संजीवित
वह है मृत्युंजय ।
सब खड़े हो गये, कंठ मिलाकर गाया—
जय जय मृत्युंजय ।

यह कविता किसी टिप्पणी की अपेक्षा नहीं करती । वस्तुतः गुरुदेव और बापू के संबंध भी किसी टिप्पणी की अपेक्षा नहीं करते । समझ और स्नेह से पूर्ण वे संबंध इस बात को प्रमाणित करते हैं कि दोनों मनुष्य-जाति के प्रति प्रगाढ़ प्रेम से प्रतिबद्ध थे । एक ने मनुष्य-जाति के दुःखी दिल को दिलासा दिया, तो दूसरे ने उसे आत्मा का आनंद दिया ।

एक बार फिर श्री गुरुदयाल मल्लिक के शब्दों में कहें—'गांधीजी मानते थे कि व्यक्तिगत समस्या जगत् की समस्या है, गुरुदेव मानते थे कि जगत् की जो समस्या है वही व्यक्तिगत समस्या है; पर दोनों ही जानते थे कि जीवन एक सीधी लकीर नहीं है, एक वर्तुल है ।'

यह जानना ही सत्य है । शेष सब ऊहापोह हैं; क्योंकि 'संगीत का आनंद और किसी वस्तु के निर्माण का आनंद एक ही है ।' कल्पना और कर्म, स्वप्न और सत्य, मनुष्य के विकास और पूर्णता के लिए दोनों अनिवार्य हैं । इसलिए ईश्वर को सत्य ही नहीं, सौंदर्य और प्रेम के रूप में भी पहचाना जाता है । इसीलिए कवि ने स्वयं एक दिन कहा था—'शांतिनिकेतन आनंदमय सत्य का प्रतीक है, साबरमती तपोमय सत्य का।'

अर्थात् गुरुदेव सत्य को आनंद के माध्यम से प्राप्त करते थे और बापू तप के द्वारा। अंतर साधन का था, साध्य का नहीं।

—८१८, कुंडेवालान अजमेरी गेट, दिल्ली-६

कवि की नैतिकता

स्व. गोविंद पै (कन्नड के बुजुर्ग कवि) जब 'वैशाखी' नामक काव्य की रचना कर रहे थे, तब उन्हें पाली ग्रंथ 'महापरिनिब्बानसुत्त' की आवश्यकता हुई। मैंने अपनी प्रति रजिस्ट्री से उनके पास भेजी और लिखा कि जब अगली बार आपसे मिलने आऊंगा, तो आपसे पुस्तक ले लूंगा । जब उनका काम हो गया और अगली बार मैं मंजेश्वर गया, उन्होंने मेरी पुस्तक वापस की । जिस कागज में मैंने पुस्तक को लपेटकर डेढ़ रुपये का टिकट लगाकर पता लिखा था, वह भी साथ था । ऊपर दक्षिणा की तरह डाकखर्च के वे १।। रुपये रखकर लौटाते हुए बोले—'गलत तो नहीं है न ?' बड़ों की बात का प्रतिवाद नहीं किया जा सकता, यह सोचकर मैंने रेजगारी जेब में और पुस्तक झोले में रख ली। ऐसे थे श्री गोविंद पै।

—जी. पी. राजरत्नम् ('गोविंद पै स्मृतिग्रंथ' से)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महानता की कसौटी

ब्रूस बार्टन

एक बार मैंने एक बहुत बड़े इतिहासकार से पूछा–'आपने मनुष्य की प्रगति के इतिहास का अध्ययन किया है। क्या आप ऐसे आधे दर्जन व्यक्तियों के नाम बता सकते हैं, जिन्हें सचमुच महान कहा जा सकता हो?'

उन्होंने सोचने के लिए एक-दो दिन का समय मांगा और फिर एक दिन छह व्यक्तियों के नाम गिनाते हुए अपने चुनाव का कारण भी बताया। वे नाम थे–यीशु ख्रिस्त, बुद्ध, अशोक, अरस्तू, बेकन और लिंकन।

उन हजारों सम्राटों के बारे में सोचिये, जिन्होंने यश पाने के लिए लड़ाइयां लड़ीं। परंतु उस इतिहासकार ने उनमें से केवल अशोक का नाम चुना–उसकी विजयों के कारण नहीं, बल्कि इसलिए कि उसने जान-बूझकर युद्ध का परित्याग किया और अपने आपको अपनी प्रजा की भलाई के लिए सर्मापित कर दिया। उन सब सम्राटों के बारे में सोचिये, जिन्होंने धन-दौलत के लिए संघर्ष किया; परंतु उनमें से अशोक के सिवा किसी का नाम नहीं चुना गया।

जब यीशु सलीब पर लटकाये गये, तो उस समय रोम के सिंहासन पर कौन विराजमान था? जब अरस्तू चिंतन और अध्ययन में लीन थे, उस समय दूर-दूर तक किसका राज्य फैला हुआ था? जब फ्रांसिस बेकन ने आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान की बुनियाद डाली थी, तो उस समय इंग्लैंड का बादशाह कौन था?

इतिहासकार, जब किसी ऐसी चीज को ढूंढ़ता है, जिसका अस्तित्व कई सदियों तक बना रहा हो, तब वह किसी विचारक के संदेश, किसी वैज्ञानिक के सपने, किसी चिंतक की दृष्टि को ही खोजता है। उस इतिहासकार ने मुझसे कहा था –'ये छह महापुरुष इतिहास के मोड़ों पर खड़े थे। वे अपने समय की घटनाओं की चूल थे। उस समय मनुष्य की विचारधारा कहीं अधिक स्वतंत्र और स्पष्ट थी, क्योंकि इन महापुरुषों ने उस दौर में जीवन बिताया था। वे संसार से कुछ न लेकर, उसके लिए बहुत-कुछ छोड़ गये। उन्होंने लिया नहीं, बल्कि दिया।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल स्मिथ बीमार था। शुरूआत कमर-दर्द से हुई, जो जाने का नाम न लेती थी; फिर कुछ दिन तक तबीयत नरम-सी रही। डाक्टर ने उसकी जांच की और रक्त-परीक्षा करवाने को कहा। परीक्षा से प्रकट हुआ कि उसे माइएलोसाइटिक ल्यूकेमिया है, जो ल्यूकेमिया (रक्त-कैन्सर) का बहुत ही उग्र प्रकार है।

यह है चार साल पहले की बात। अगर इतिहास के किसी और जमाने में यह बात

भाई की मज्जा से भाई के प्राण बचे

भाई की मज्जा से भाई के प्राण बचे

ई होती, तो सीएटल (अमरीका) का यह उनतीस वर्षीय युवक शायद शीघ्र ही दिवंगतों की सूची में सम्मिलित हो चुका होता। ल्यूकेमिया की यह उग्र किस्म सदा ही जानलेवा रही है। मगर अब एक नयी चिकित्सा-विधि की बदौलत स्मिथ जीवित एवं स्वस्थ है और डाक्टरों को उसमें कोई रोग-लक्षण दिखाई नहीं देते हैं। जो थोड़े-से डाक्टर इस नयी विधि का उपयोग कर रहे हैं, उनमें वाशिंगटन विश्वविद्यालय (सीएटल) के डा. डानैल टामस तथा उनके सहयोगी भी हैं। असल में डा. टामस ने ही फिल स्मिथ का इलाज किया है।

इस चिकित्सा में फिल के शरीर से मज्जा निकालकर नयी मज्जा प्रतिरोपित की गयी। मज्जा ही इस रोग का मूल स्थान है। मज्जा-प्रतिरोपण से फिल का रोग दूर हो सकता है, यह विश्वास उसके डाक्टरों के वर्षों लंबे प्रयोगों और परीक्षणों पर अवलंबित था और फिल के साहस पर भी।

'ल्यूकेमिया' का शाब्दिक अर्थ है—श्वेत रक्त। यह रक्त के श्वेत कणों की एक घातक बीमारी है। रक्त के श्वेत कण रोग-संक्रमण (इन्फेक्शन) के विरुद्ध शरीर की मुख्य रक्षा-पंक्ति हैं। इनका जीवन-काल कुछ ही दिन का होता है। सामान्य अवस्था में श्वेत कण हड्डी के मज्जा-विवर में निर्माण होते हैं और बहुत ही नियमित संख्या में रक्त में छोड़े जाते रहते हैं। वहां वे बूढ़े होकर अथवा रोग-जीवाणुओं या विषाणुओं से लड़ते हुए मारे गये श्वेत कणों का स्थान लेते हैं।

ज्यादातर श्वेत कण शरीर के भीतर घुसने वाले रोग-कीटाणुओं को घेरकर और नष्ट करके हमारी रक्षा करते हैं और कुछ श्वेत कण 'एंटी बाडीज़' उत्पन्न करते हैं और ये 'एंटी बाडीज', रक्त में घुल जाते हैं और रोग-जीवाणुओं एवं विषाणुओं को खोजकर उनमें समाविष्ट होकर उन्हें बेकार बना देते हैं।

तीव्र रोग-संक्रमण होने पर मज्जा अधिक

* 'टु डेज हेल्थ' से साभार *

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या में श्वेत कणों का उत्पादन करके उन्हें रक्त में भेजती है, ताकि वे लड़ाई में भाग ले सकें। सामान्यतया रक्त में श्वेत कणों की संख्या लगभग स्थिर रहती है। शरीर की अन्य कोशिकाओं की तरह ये इतने छोटे होते हैं कि केवल सूक्ष्मदर्शक से ही देखे जा सकते हैं। रक्त की एक बूंद में लगभग दस लाख श्वेत कण होते हैं।

ल्यूकेमिया में न जाने क्यों, श्वेत कणों के बाद में, रोग-संक्रमण से लड़ने में समर्थ श्वेत कण शरीर में पर्याप्त संख्या में न होने से ल्यूकेमिया का मरीज बहुत मामूली रोग-संक्रमण को भी झेल नहीं पाता।

आरंभ में फिल स्मिथ को ऐसी दवाइयां दी गयीं, जिनसे अपरिपक्व श्वेत कण मर जायें। उग्र ल्यूकेमिया के रोगियों की चिकित्सा की यह परंपरागत विधि है। इसमें आशा तो यही रखी जाती है कि सभी

ल्यूकेमिया से पीड़ित होने का अर्थ ही प्रायः मृत्यु के निकट होना समझा जाता है। ल्यूकेमिया-ग्रस्त फिल स्मिथ (चित्र में दायें) को किस प्रकार अमरीकी डाक्टरों ने उसके भाई गैरी (चित्र में बायें) के प्रेम और मज्जा-प्रतिरोपण की जटिल एवं विकासाधीन चिकित्सा-विधि के द्वारा मौत के मुंह से उबारा, इसका विवरण डा. एडवर्ड कोहेन के शब्दों में।

उत्पादन, क्षय और मृत कणों की जगह नये कणों के आगमन की सूक्ष्म प्रक्रिया असंतुलित हो जाती है। स्वस्थ-सामान्य कणों की जगह बहुत बड़ी संख्या में अपरिपक्व कणों का उत्पादन तथा रक्त में विसर्जन होने लगता है, जो अभी रोग-संक्रमण से जूझने में समर्थ नहीं होते। इससे रक्त में श्वेत कणों की संख्या सामान्य अवस्था की तुलना में १० से १५ गुना तक बढ़ जाती है।

रोगी श्वेत कण मर जायेंगे। इस चिकित्सा को 'रसायन-चिकित्सा' (केमोथैरेपी) कहा जाता है। मगर दुर्भाग्य से इसमें अनेक समस्याएं पैदा होती हैं। एंटीबायोटिक दवाइयां केवल अवांछनीय जीवाणुओं को नष्ट करती हैं; मगर रसायन-चिकित्सा के लिए जो दवाइयां हमें अभी तक उपलब्ध हैं, वे अपरिपक्व श्वेत कणों को ही नहीं, स्वस्थ-सामान्य श्वेत कणों तथा अन्य अनेक आव-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्यक कोशिकाओं को भी नष्ट कर देती हैं। इसलिए ल्यूकेमिया-विरोधी दवाइयां एक समय में बहुत सीमित मात्रा में ही दी जा सकती हैं, वरना वे खतरा पैदा कर देंगी। इसके अलावा, प्रत्येक दूषित कण को खत्म करना संभव नहीं हो पाता। हमेशा ही ऐसा होता है कि जो थोड़े दूषित श्वेत कण बचे रहते हैं, वे अपनी तादाद बढ़ा लेते हैं और आवश्यक स्वस्थ कणों को अपदस्थ कर देते हैं।

फिल स्मिथ की आरंभिक चिकित्सा थोड़े ही दिन चली। बचे रह गये रोगी श्वेत कण दो या तीन सप्ताह में ही रक्त और मज्जा में फिर प्रकट हो गये। फिर से रसायन-चिकित्सा की गयी; मगर कोई लाभ नहीं हुआ और चार ही महीनों में फिल एवं उसके डाक्टर समझ गये कि अगर अन्य कोई लाभकारी चिकित्सा न हुई, तो जल्दी ही मौत आ पहुंचेगी।

ऐसी हालत में डा. टामस ने मज्जा-संक्रमण का जिक्र किया। उन्होंने फिल स्मिथ को समझाया कि इस समय इस चिकित्सा के विषय में डाक्टरों का अनुभव बहुत ही सीमित है और बहुत थोड़े रोगी जीवित बच पाते हैं। फिल बताता है—'डाक्टर साहब ने मुझे बताया कि इस चिकित्सा द्वारा मेरे बचने की उम्मीद केवल २ प्रतिशत है। मगर शून्य प्रतिशत से तो २ प्रतिशत कहीं बेहतर है।'

मज्जा-प्रतिरोपण में रोगी श्वेत कणोंकी जगह स्वस्थ श्वेत कण स्थापित करने का प्रयत्न किया जाता है। इसके लिए, [illegible] दाता के शरीर से मज्जा लेकर ल्यूके[illegible] रोगी के शरीर में उसे प्रविष्ट किया जा[illegible] है। मज्जा बहुत कुछ रक्त-जैसी ही [illegible] है। मगर उसे एक मनुष्य के शरीर से [illegible] दूसरे मनुष्य के शरीर में पहुंचाना [illegible] लेने-पहुंचाने की तुलना में कहीं कठिन [illegible] जटिल होता है। दाता के शरीर से म[illegible] लेकर उसे छानकर उसमें से हड्डी और [illegible] के अंश हटा दिये जाते हैं। फिर उसे रो[illegible] की बांह की शिरा में इंजेक्शन द्वारा प्रवि[illegible] कराया जाता है। वह रक्त में मिल[illegible] क्रमेण हड्डियों के मज्जा-विवर में पहुंचती है और वहां पनपकर और परिपक्व हो[illegible] श्वेत कण स्वाभाविक रूप में रक्त में [illegible] मिलते हैं।

मज्जा-प्रतिरोपण से पहले सभी रो[illegible] श्वेत कण मर जायें, इसके लिए फिल स्मि[illegible] के सारे शरीर को एक्स-किरणों की [illegible] भारी 'डोसेज' दी गयी—डाक्टरों के द[illegible] खानों और अस्पतालों में सामान्यतया दी जाने वाली 'डोसेज' से बहुत ऊंची। इ[illegible] एक्स-किरण-प्रक्रिया में शरीर के स्वस्थ [illegible] कण भी बहुत बड़ी संख्या में मर जाते हैं। इसलिए फिल का जीवित बच पाना त[illegible] संभव था, जब मज्जा-प्रतिरोपण द्वा[illegible] स्वस्थ और कीटाणुरोधी श्वेत कण पर्या[illegible] मात्रा में उसके शरीर को प्राप्त हो जायें। [illegible] बीच में रक्त और प्लेटलेट (एक प्रकार के सूक्ष्म रक्त-कण) के देने की भी आव[illegible]कता पड़ने वाली थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिल के बड़े भाई गैरी ने कहा कि मैं अपनी मज्जा दूंगा। मगर उसका प्रस्ताव स्वीकार करने के पहले प्रयोगशाला में काफी बारीक और लंबी-चौड़ी जांच-पड़ताल कर लेना जरूरी था। यह बहुत ही आवश्यक है कि दाता और ग्रहीता के मज्जा-कण संरचनात्मक दृष्टि से एक दूसरे से मेल खाते हों, 'मैच' करते हों। यदि वे मेल न खाते हों, तो दाता के दिये श्वेत कण ग्रहीता के ऊतकों से लड़ने लगते हैं। ऐसी लड़ाई रोगी के लिए जानलेवा सिद्ध हो सकती है। चूंकि फिल के शरीर की प्रतिरोध-व्यवस्था तो एक्स-किरणों ने नष्ट कर दी थी, इसलिए दाता के श्वेत कणों के आक्रमण से उसका शरीर टक्कर न ले पाता।

जुड़वां भाइयों या जुड़वां बहनों के स्वस्थ कणों में इतनी समानता होती है कि दाता के स्वस्थ श्वेत कणों को ग्रहीता के शरीर के ऊतक पराये नहीं लगते। अन्य किन्हीं भी दाता-ग्रहीता की कोशिकाओं में पूरा-पूरा मेल नहीं होता। हां, बहुत अधिक मेल हो सकता है, और बहुधा वह रोगी के अपने ही परिवार के लोगों में पाया जाता है। अगर ऐसा दाता न मिले, तो बड़ी कठिनाई पेश आती है। तब मज्जा-प्रतिरोपण की सफलता की संभावना बहुत ही कम रह जाती है।

फिल का परिवार बहुत बड़ा था और बहुत प्रेमल भी। उसमें से भी गैरी को ही सर्वाधिक हानिरहित समझा गया। पांच बच्चों का पिता गैरी कहता है–'मेरा भाई फिल और मैं सदा ही परस्पर बहुत घनिष्ठ रहे हैं। बेशक इसमें मुझे बहुत ही डर लगा; मगर फिल के लिए सभी लोग इतना सब कर रहे थे, सो मैंने भी इस चिकित्सा पर विश्वास किया। अगर किसी की जान बचाने का कोई चान्स हो, तो सब कुछ करना ही पड़ता है। दूसरे की जान की तुलना में सचमुच यह बहुत ही छोटी चीज है।'

जब फिल इस उपचार के योग्य हुआ तो गैरी के कूल्हे की हड्डी में से सूई की मदद से मज्जा निकाली गयी। इसके लिए विसंज्ञक दवा देकर गैरी का छोटा-सा आपरेशन किया गया। मज्जा काफी बड़ी मात्रा में निकालनी पड़ी; मगर थोड़े ही समय में शरीर ने उसकी भरपाई कर दी। सौभाग्य से इसमें दाता को कोई स्थायी नुक्सान नहीं पहुंचता।

उसी समय उधर, एक्स-किरण-उपचार और रसायन-चिकित्सा के कारण फिल के शरीर में श्वेत कणों की दर शून्य पर पहुंच गयी थी। फिल को हर तरह के खतरनाक जीवाणुओं से बचाये रखने के लिए विशेष रूप से निर्मित कक्ष में रखा गया था। इसमें फिल के बिस्तर पर हमेशा छनी हुई तनिक गरम हवा बहती रहती और पास फटकने वाले जीवाणुओं और विषाणुओं को उड़ा ले जाती। उसके बिस्तर और भोजन को भी जीवाणु-मुक्त बनाया जाता था। डाक्टर और नर्सें छनी हवा के परदे के पीछे से उससे बातें करते।

एक्स-किरण-उपचार के बाद अगले दिन गैरी की मज्जा फिल की शिरा में सूई द्वारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

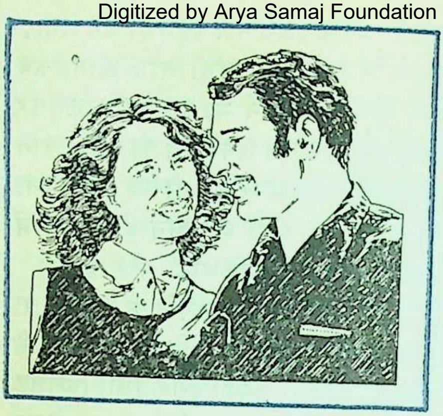

फिल और उसकी पत्नी गेल

प्रविष्ट करायी गयी। दो हफ्ते के अंदर उसके रक्त में नये श्वेत कण प्रकट हुए और वे कण स्वस्थ दिखाई देते थे। वे फिल की हड्डियों के भीतर मज्जा में निर्मित होकर उसके रक्त में आ मिल रहे थे। ल्यूकेमिया वाले रोगी श्वेत कण बिलकुल अनुपस्थित थे। अब उसके शरीर में, आनुवंशिकी के हिसाब से, दो भिन्न प्रकार के कण थे।

मगर फिल की सब समस्याएं अभी खत्म नहीं हुई थीं। दो सप्ताह बीत पाये थे कि डाक्टरों ने देखा कि फिल की त्वचा पर लाल दरोरे उभर आये हैं। यह इसका प्रथम लक्षण था कि 'प्रतिरोपित बनाम अतिथेय' प्रतिक्रिया प्रारंभ हो गयी है। गैरी के दिये हुए मज्जा-कण जो अब फिल के मज्जा-विवर में और रक्त में घूम रहे थे, फिल के ऊतकों पर आक्रमण करने लगे थे। इसका परिणाम घातक रूप न धारण करे, इसके लिए और चिकित्सा आवश्यक थी। फिल को सूक्ष्म मात्रा में ऐसी दवाइयां दी गयीं, जो प्रतिरोपित मज्जा-कणों को फिल के शरीर के ऊतकों का विरोध करने से रोकें और वे नये परिवेश के प्रति सहिष्णु बन जायें। इस प्रकार प्रतिक्रिया रुक गयी।

जब फिल के रक्त में श्वेत कणों की संख्या सामान्य पर पहुंच गयी, उसमें रोग-संक्रमण से जूझने की शक्ति वापस आ गयी। फिर उसे जीवाणुमुक्त वातावरण से हटा-कर अंत में घर वापस भेज दिया गया। अब समय-समय पर उसकी जांच की जाती रहती है और रोग की वापसी का कोई लक्षण अब तक प्रकट नहीं हुआ है। वह पूरी तरह सामान्य जीवन जी रहा है।

मगर दुर्भाग्यवश ल्यूकेमिया का हर रोगी ऐसी सुखद रोग-समाप्ति की आशा नहीं कर सकता। अभी तो स्थिति यह है कि मज्जा-प्रतिरोपण हर एक के लिए सुलभ नहीं हो सकता। जब यह लेख लिखा गया, तब तक डा. टामस ने मज्जा-प्रतिरोपण के ४६ आपरेशन किये थे और उनमें से १३ रोगी तब तक जीवित थे। एक बड़ी समस्या यह है कि 'घनिष्ठ रूप से मेल खाने वाले दाता' आसानी से मिल नहीं पाते। (गुर्दा-प्रतिरोपण के मामलों में भी यही समस्या सामने आती है।) फिर 'प्रतिरोपित बनाम आतिथेय प्रतिक्रिया' की संभावना मज्जा-प्रतिरोपण को और भी उलझनपूर्ण बना देती है। अगर यह प्रतिक्रिया शुरू हो जाये तो प्रतिरोपित कण रोगी के सारे शरीर के ऊतकों पर हमला कर देते हैं, जिसका दुष्प-रिणाम रोगी के बहुत-से अवयवों पर होता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। रोग-संक्रमण का भय तो सदा ही बना रहता है, विशेषतः एक्स-किरण-उपचार के समय से लेकर मज्जा के फिर से ठीक काम करने लगने के समय तक।

यद्यपि मज्जा-प्रतिरोपण के कुछ मामलों में इन समस्याओं का उपचार सफलतापूर्वक किया जा सका है, फिर भी अभी बहुत-सा शोधकार्य होना बाकी है। उसके बाद ही मज्जा-प्रतिरोपण ल्यूकेमिया का आम उपचार बन सकेगा।

एक्स-किरण-उपचार के बाद भी यदि कुछ-एक रोगी श्वेत कण शरीर में बच गये हों, तो कई बार मज्जा-प्रतिरोपण के बाद भी ल्यूकेमिया फिर उभर आता है। पिछले साल तक अमरीका में किये गये मज्जा-प्रतिरोपणों में से ५० प्रतिशत में ऐसा हुआ है। डा. टामस के किये प्रतिरोपणों में से ३० प्रतिशत में ल्यूकेमिया वापस लौटा है। कुछ मामलों में यह विचित्र बात देखी गयी है कि प्रतिरोपित मज्जा में रोग पाया गया है, जबकि मज्जा का दाता बिलकुल स्वस्थ रहता है। शायद इसमें रोग-संक्रमण का हाथ रहता हो।

गंभीर रोग में तीव्र दवा जरूरी होती है। यद्यपि मज्जा-प्रतिरोपण में सफलता की दर बहुत कम है, तो भी इस दिशा में तेजी से तरक्की हो रही है। १९७३ तक हालत यह थी कि मज्जा-प्रतिरोपण के हर तीन मामलों में से दो में रोगी एक महीने के भीतर चल बसते थे—साधारणतया रोग-संक्रमण के कारण। १९७४ में ९० प्रतिशत प्रतिरोपी संकटपूर्ण पहले महीने में जीवित बच गये। जब प्रतिरोपित मज्जा ठीक से अपना काम करने लगती है और शरीर की रोग-संक्रमण से जूझने की शक्ति लौट आती है, तब जीवित बचने की दर में आश्चर्यकारी वृद्धि हो जाती है।

अभी मज्जा-प्रतिरोपण उन्हीं मामलों में किया जाता है, जिनमें रोगी बहुत चिंताजनक रूप से बीमार हो और जिन पर बाकी सब 'परंपरागत' इलाज बेकार साबित हो चुके हों। जब अनुभव बढ़ेगा और रोग की आरंभिक अवस्था में ही मज्जा-प्रतिरोपण किया जाने लगेगा, तब सफलता की दर बढ़ेगी। कई दृष्टियों से स्थिति वैसी ही है, जैसी गुर्दा-प्रतिरोपण के आरंभिक काल में थी। हालांकि गुर्दा-प्रतिरोपण अब भी कोई मामूली बात नहीं है, मगर उसमें सफलता की दर इतनी ऊंची है कि अगर अनुरूप दाता मिल जाये तो डाक्टर प्रतिरोपण की सलाह देने में नहीं झिझकते।

बेशक फिल स्मिथ के इलाज में डा. टामस ने जो सफलता पायी है, वह कुल मिला कर अपवाद ही है। मगर फिल स्मिथ जिंदा है और स्वस्थ है, यह बात ल्यूकेमिया के रोगियों एवं विज्ञानियों के लिए उत्साहवर्धक है।

गैरी स्मिथ ठीक ही कहता है—'मेरे भाई को जान जो बच गयी, इसके लिए अपनी कृतज्ञता की अनुभूति को ठीक से व्यक्त करने का कोई उपाय नहीं है।' फिल स्मिथ शरमीला है, शब्दों में यह नहीं कह सकता; मगर उसकी हर सांस मानो यही कहती है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

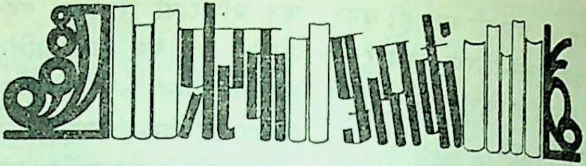

प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त'

जहां तक स्मरण है, सस्ता साहित्य मंडल से प्रकाशित सबसे पहली जो पुस्तक मैंने पढ़ी थी, वह थी गांधीजी द्वारा लिखित 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास'। उस समय मेरी उम्र सोलह वर्ष के आस-पास रही होगी। पढ़ने का व्यसन बहुत पहले से लग चुका था, लेकिन मेरी विशेष रुचि कथा-साहित्य में या यात्रा-वृतांत में थी। आखिर 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' मैंने कैसे पढ़ा? क्यों पढ़ा? स्पष्ट है कि पुस्तक के लेखक गांधी हमारे अति परिचित हो चुके थे। सत्याग्रह भी हमारे देश में स्थापित हो चुका था, हो रहा था। आत्मीयता की इस डोर ने ही मुझे 'दक्षिण अफ्रीका के सत्याग्रह का इतिहास' पढ़ने को उन्मुख किया। और कैसे बताऊं कि उस पुस्तक का मेरे किशोर मन पर क्या प्रभाव पड़ा? उसने मेरे मन में नये गवाक्ष खोले, नयी रुचियां जागृत कीं, मैं गांधी-साहित्य पढ़ने को उत्सुक रहने लगा।

कालांतर में गांधीजी की आत्मकथा पढ़ने को मिली। उसने एक रहस्य-लोक का परदा उठाया। सत्य का इतना प्रबल आग्रह भी किसी व्यक्ति के लिए संभव हो सकता है, यह उस समय तो अविश्वसनीय ही लगा था। लेकिन जो अविश्वसनीय [illegible] वही सच था। गांधीजी कितने निर्मम [illegible] अपने प्रति, अपनों के प्रति! सत्य से स्खलन न तो वे अपने में बरदाश्त कर सकते थे [illegible] अपने निकट के लोगों में। ऐसी निर्मम, निरा-सक्त भावना कोई हाड़-मांस का पुतला अपने में विकसित कर सकता है, यह सच-मुच विश्वास के योग्य बात नहीं थी। लेकिन आने वाले दिनों में वह सब प्रत्यक्ष देखने को मिला। मैंने जाना नहीं, मुझे पता नहीं चला, लेकिन इन दो पुस्तकों ने न जाने कब कैसे, किस तरह मेरी मनोरचना आरंभ कर दी थी। मेरी रुचियां, मेरी मान्यताएं, मेरे विश्वास बदल रहे थे और मैं जानता भी नहीं था कि परिवर्तन की यह प्रक्रिया किस तरह काम कर रही है।

जवाहरलालजी उन दिनों भारतीय तरुणों के हृदय-सम्राट् थे। मेरे लिए वे बहुत निकट थे, इस अर्थ में कि जो इलाहा-बाद उनकी कार्यभूमि था, वही मेरी निवास-भूमि था। आनंद भवन से हमारे मानस का एक अदृश्य अंत:संबंध बन गया था। राज-कुमारों-जैसे जवाहरलाल का अधिकांश समय जेलों में बीतता था और इसके कारण गौरव से हमारे मस्तक तने रहते थे। (...)

['जीवन साहित्य' के स्वर्ण-जयंती अंक से]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी आत्मकथा प्रकाशित हुई, कमलाजी का देहावसान हो चुका था। उसके समर्पण की दो पंक्तियां—कमला को, जिसकी अब याद ही रह गयी है—मर्म को छेद गयी थीं। लेकिन आत्मकथा में उस अवसाद का कहीं पता नहीं था; उसमें था उत्कट देशप्रेम, देश की आजादी के लिए लेखक के हृदय में धधकती हुई आग। जैसे उस आत्मकथा का नायक व्यक्तिगत संबंधों से, हर्ष-विषादों से दूर, बहुत ऊंचे, एक अदम्य लालसा के पंखों पर उड़ रहा हो और वह लालसा हो अपने परतंत्र देश की मुक्ति!

देशरत्न राजेंद्रप्रसाद की आत्मकथा भी हमें 'मंडल' के माध्यम से ही मिल सकी। यह आत्मकथा राजेंद्रबाबू की तरह ही शालीनता, विनय और आत्मगोपन का दस्तावेज थी। यह पुस्तक यद्यपि एक व्यक्ति की जीवन-कथा थी, लेकिन व्यक्ति उसमें प्रायः अनुपस्थित था। उसके बदले वह स्वतंत्रता-संग्राम की एक क्रमबद्ध व जीवंत कहानी थी, जिसमें चरित-नायक प्रसंगवश जहां-तहां आ गया था। यह राजेंद्रबाबू की शालीनता के योग्य ही था कि उन्होंने आत्मकथा लिखने के व्याज से स्वतंत्रता-संग्राम का वह प्रामाणिक इतिहास लिखा था, जिसके

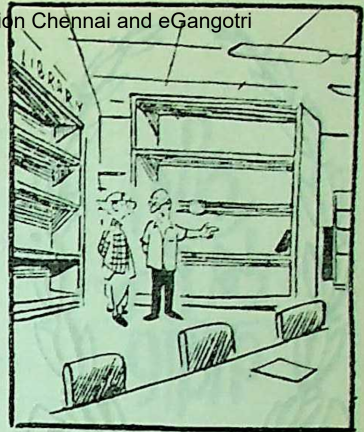

'किताबें बेहद महंगी हो गयी हैं, सो धीमे-धीमे ही जुट पायेंगी। मसलन, वह किताब ही देखिये, उसे हमने सरकारी अनुदान, अपने फंड और सार्वजनिक चंदे से खरीदा है।'

[लक्ष्मण : टाइम्स आफ इंडिया में]

वे स्वयं सेनानी थे।

सन १९२० में गांधीजी के नेतृत्व में स्वतंत्रता का जो आंदोलन आरंभ हुआ था, उसकी परिणति १९४७ की स्वतंत्रता-प्राप्ति के रूप में हुई थी। मैं और मेरे-जैसे देश के करोड़ों लोग उसके जीवित किंतु मूक साक्षी थे। इन पुस्तकों ने हमें नयी दृष्टि दी और हम अपने स्वतंत्रता-आंदोलन को अंतरंग रूप में देख जान सके।

★

पुस्तक अच्छी बनती है अच्छे पाठक की बदौलत; हर पुस्तक में उसे ऐसे हिस्से मिलते हैं जो बाकी सबसे छिपाकर सिर्फ उसी के सुनने के लिए कहे गये राज या स्वगत हैं। पाठक की संवेदनशीलता के अनुपात में ही पुस्तक लाभकारी होती है; नितांत गहरी चिंतना या भावना मानो खान में दबी पड़ी होती है कि कोई समानधर्मी मस्तिष्क या हृदय आये और उसे खोज निकाले।

—राल्फ वाल्डो एमरसन

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन स्नेह-कथाएं

*** ब्रह्मदत्त ***

१. भ्रातृत्व

ट्रेन आने में अभी बीस मिनट बाकी थे। समय काटने के लिहाज से रघुवीर प्लैटफार्म पर टहलने लगा। टहलते-टहलते जब वह प्लैटफार्म के उत्तर की तरफ गया, तो एक विवाहिता स्त्री को पेड़ के नीचे बने चबूतरे पर बैठकर रोते देखा। आस-पास एक-दो युवक घूम रहे थे; पर रघुवीर को लगा कि शायद स्त्री अकेली है। कुछ सोचकर वह उसके निकट पहुंचकर बोला–'बहनजी! बहनजी! ...... क्या हो गया है, क्या बात है?'

स्त्री ने सिर उठाकर एक बार उसकी ओर देखा और फिर फौरन अपना आंसू-भीगा चेहरा अपने दोनों उठे हुए घुटनों में छिपा लिया।

'तबीयत खराब है?' रघुवीर से रहा न गया। स्त्री ने बिना चेहरा उठाये, सिर हिलाकर 'नहीं' किया।

'कहीं जा रही हैं?'

'कहीं नहीं।' कुछ तेज स्वर में उत्तर आया। रघुवीर सकपका गया। वह वहां से हट जाने की सोच ही रहा था कि एक युवक आ उपस्थित हुआ।

'क्यों मिस्टर, क्या बात है?' उसने दांत पीसते हुए पूछा। उसके पूछने के ढंग पर रघुवीर को गुस्सा तो आया, पर औरत का मामला सोचकर वह धीरे-से बोला-'बात कुछ नहीं है, भाई। ये बहन बड़ी देर से रो रही हैं, सो मैंने पूछा कि क्या कोई तकलीफ है।'

'हूं।' युवक गुर्राया–'आपने अपनी ड्यूटी कर ली, अब जाइये। ...... मैं ......मैं...... इनका पति हूं।'

'अच्छा? औरत को इस तरह अकेला छोड़कर आप घूम रहे हैं!' रघुवीर ने कुछ गुस्से से कहा।

'नहीं भाई, मैं इनकी सेवा करने के लिए ही गया हुआ था।' युवक ने मुस्कराते हुए अपने हाथ का झोला दिखाया।

'बहनजी ......?' रघुवीर ने युवक की बात की सचाई जानने के लिए स्त्री से पूछना चाहा।

'बोलिये, क्या बात है?' स्त्री ने गुस्से से उसकी ओर देखा।

'ये ऽऽ ......?'

'ठीक है, ठीक है। अब आप जाइये यहां से। पति-पत्नी के बीच में आपको ......'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'सॉरी, सॉरी।' रघुवीर शर्मिंदा हो बोला।

युवक हंसकर बोला–'कोई बात नहीं यार। लगता है तुम अभी इस जाल में नहीं फंसे हो?' उसने हाथ उठाकर पत्नी की ओर इशारा किया।

रघुवीर ने सिर हिलाकर सहमति प्रकट की। 'तभी।' युवक मुस्कराकर बोला–'अरे यार, इनको कोई दुःख नहीं है। स्त्रियों की जो सामूहिक पीड़ा है, वही इनकी भी है।'

'अच्छा, वह क्या?' रघुवीर ने उत्सुकता से पूछा।

'अपनी ससुराल से विदा कराकर इन्हें इनकी ससुराल ले जा रहा हूं, और क्या!' युवक ठहाका मारकर हंस पड़ा।

साड़ी के आंचल से अपने आंसू पोंछते हुए स्त्री उठ खड़ी हुई।

'क्षमा करियेगा, भाई साहब।' दोनों हाथ जोड़कर वह बोली।

'नमस्कार बहन जी, नमस्कार!' रघुवीर गद्गद हो, वहां से चल पड़ा।

०००

२. ममता

'बेबी, कहां गयी थी?' श्रीकांत ने गंभीरता से पूछा।

बेबी ने डरकर सिर नीचे झुका लिया।

'नहीं बोलती! ...... टी. वी. देखने गयी होगी, आज भी! कितना मना करता हूं, पर तुम लोग अभी से आंखें खराब करने पर तुले हो। राजू कहां है? सुधीर? और मम्मी?'

'क्या है जी?' उसकी कुर्सी के पीछे से पत्नी ने कहा–'चाय बनाऊं?'

'नहीं।' श्रीकांत ने पीछे घूमकर कहा–'अपनी संजीवनी तुम्हीं लो। आज कौन-सी फिल्म थी?'

'धूप-छाया।'

'धूप-छाया?' श्रीकांत खुश होकर बोला–'अरे, उसमें तो मेरी अनारकली हीरोइन है।'

पत्नी ने सिर उठाकर बेबी की ओर देखा और पति को न बोलने का इशारा किया।

'ऐ बेबी।' श्रीकांत ने कुर्सी पर तनकर बैठते हुए कहा–'तुझे मालूम है, अनारकली से मैं शादी करने वाला था?'

'ओ ......!' बेबी मुंह के आगे हाथ रखकर बोली।

'सुंदर है न वह?' श्रीकांत ने बेबी से

चित्र : चरन शर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछा–'पर तेरी मम्मी मेरे पैर पड़ने लगी तो मैंने उससे शादी कर ली !'

'फिर? ...... फिर क्या हुआ पापा ?' बेबी ने हाथ नचाकर पूछा।

'फिर तू हुई। मगर तू इसकी तरह काली हुई।'

'ऊं हूं, मैं काली थोड़े ही हूं।' बेबी ने अपने दोनों हाथों को उलट-पुलटकर देखा।

'उतनी काली नहीं है।' बेबी को अपने पास खींचकर श्रीकांत बोला–'मगर अनारकली से शादी होती तो तू दूसरे कलर की होती।'

पत्नी मुस्करायी।

'न बाबा, ऐसा कभी न होता।' बेबी ने सिर हिलाकर कहा।

'क्यों?' श्रीकांत मन ही मन हंसा।

'क्योंकि तब तो मैं होती ही नहीं।' बेबी कुछ दुःखी स्वर से बोली।

'बाप रे! ऐसा क्यों, प्यारी बेबी ?' श्रीकांत ने पत्नी की ओर देखा।

'फिर मम्मी रोती न?' बेबी ने अत्यंत भोलेपन से कहा। पत्नी की आंखें भर आयीं। श्रीकांत ने तेजी से कुर्सी से उठाकर बेबी को छाती से चिपटा लिया।

ooo

३. वात्सल्य

बिजली के खंभे के नीचे सफेद साड़ी में कोई महिला खड़ी है, यह तो मनोहर ने दूर से ही देख लिया था; मगर जब तक वह निकट पहुंचे, एक छोटी-सी भीड़ वहां इकट्ठी हो चुकी थी। कुतूहलवश मनोहर भी खड़ा हो गया। सात-आठ साल का बालक सिंधी में बड़बड़ाता उस महिला का हाथ पकड़कर खींच रहा था–'डाडी हल्लु।'

'मां न हलन्दसि।' श्वेतवसना महिला, जो कि उम्र में साठ-सत्तर वर्ष की लगती थी, अपना हाथ छुड़ाकर बोली।

'कसम थो खणा, त हिन खां पोइ कडहिं माशी न कंदुस।' बालक रुआंसा होकर बोला। उसने पुनः अपनी दादी का हाथ पकड़ लिया–'डाडी हल्लु।'

'मां न हलन्दसि।' श्वेतवसना दादी क्रोध तो दिखा रही थीं, किंतु गोरे चेहरे पर झिलमिलाती झुर्रियां उनके मायालु होने का परिचय भी दे रही थीं।

'डाडी हल्लु।' बालक ने अपने गले की नस को चुटकी से पकड़कर कहा–'कसम थो खणा ......।'

दादी ने उसका हाथ झटककर, आंखें तरेरते हुए कहा–'तुहिंजो पीउ दादागीरी करे, मुंहिजे नूंअए पोटे खे थो मारे ......।'

'क्या, है क्या?' मनोहर ने पास खड़े एक युवक से पूछा।

'कुछ भी नहीं!' युवक ने कुछ मुस्कराते में कहा–'ये मेरी मदर हैं। ...... बच्चे शरारत करते हैं, तो कुछ डांटना-डपटना तो पड़ता ही है। वह मेरा लड़का है। लगा दिया एक लाफा। बीच में वाइफ आ गयी, तो उसको भी लग गया एक ......।' युवक ने हवा में थप्पड़ चलाकर कहा। मनोहर मुस्करा उठा–'फिर दादी नाराज हो गयीं'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युवक ने सिर हिलाया और कहा—'दर-असल मदर के लाड़ के कारण ही ये सब......' युवक ने बालक की तरफ हाथ उठाकर कहा—'बहुत चढ़ गये हैं।'

'कोई बात नहीं, भाई, अब मना लो माताजी को।' मनोहर ने हल्के-से हंसकर कहा।

युवक आगे बढ़ा। दादी-पोते में अभी भी खींचातानी चल रही थी।

'माफ करि आईन्दह गलती न कंदुसि।' युवक ने दोनों हाथ जोड़कर मां से कहा—'हांअु तमाशो छडि घर हलु।' युवक ने धनुष से छूटे वाण की तरह लपककर वृद्धा का हाथ पकड़ लिया।

'छड मूंखे!' वृद्धा ने बिजली की तरह तड़पकर कहा—'निरिदई काथूं जा!' उन्होंने अपना हाथ छुड़ा लिया। युवक ने पुनः हाथ पकड़ने की कोशिश की, लेकिन वृद्धा में गजब की शक्ति और चपलता थी। युवक मातृ-शक्ति के आगे विवश हो गया।

उसने 'क्या करूं?' दृष्टि से मनोहर की ओर देखा। मनोहर को यह सब देखकर एक मजा-सा आ गया। 'सब्र करो' का इशारा हाथ से करके वह आगे बढ़ा।

'माता दी जय!' मनोहर ने मुस्कराकर नारा लगाया और दोनों हाथों को वृद्धा के गिर्द लपेटकर, हुमककर उन्हें उठा लिया।

'बच्चा लोग ताली बजाओ। मैं माताजी को किडनैप कर रहा हूं।' किसी छोटे बच्चे की तरह उछलता-कूदता मनोहर चिल्लाकर बोला। दादी का पोता ताली बजाकर हंसा, युवक ने आगे बढ़कर मनोहर के कंधे पर हाथ रखा—'सामने के मकान में।'

मकान के अहाते में पहुंचकर मनोहर ने वृद्धा को उतार दिया—'बाप रे! माताजी तो बड़ी वजनदार हैं।' माथे पर चुहचुहा आये पसीने को रूमाल से पोंछते हुए मनोहर ने हंसकर कहा। वृद्धा का चेहरा खिल उठा, उन्होंने अपने दोनों हाथ मनोहर के कंधे पर रखकर अत्यंत प्यार से पूछा—'तूं सिंधी आहीं?'

मनोहर को सिंधी तो आती न थी, पर वह समझ गया। उसने अपने दोनों हाथ वृद्धा के कंधों पर हल्के से रखकर बड़े जोर से कहा—'मैं सिंधी नहीं, हिंदी हूं।'

'हिंदी?' वृद्धा के पोपले मुंह से हंसी फूट निकली। उन्होंने मनोहर को अपनी ओर खींचकर छाती से लगा लिया।

—१२/३४६ बेलासिस ब्रिज,
ताडदेव, बंबई-३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चट्टान

तुमने मुझे बुलाया है ?
सच, तुमने मुझे बुलाया है ?
ओह, मैं तो तुम्हें कब से बुला रहा था
लेकिन
तुम दूर से हाथ उठाकर
आने का आश्वासन देते रहे
और न जाने किन अंधेरी गलियों की ओर
मुड़ जाते रहे
मैं अपनी राह में लेटी
इस विशाल कुरूप चट्टान से
अकेला लड़ता रहा
और लहू-लुहान होता रहा
उछल-उछलकर लात मारता रहा
और अपना ही अंग तोड़ता रहा
लड़ते-लड़ते गिर पड़ा
और बड़बड़ाने लगा
तुम समझे
कि मैं तुम्हारे खिलाफ बड़बड़ा रहा हूं
तुम्हारी रिक्त आंखों में
अविश्वास उभर आया।
नहीं मालूम मैं कब तक बड़बड़ाता रहा
फिर बेहोश हो गया

आज तुम्हारी आवाज से मैं चौंक उठा
सुना—तुम मुझे बुला रहे थे
आंख खोलकर देखा—
मेरे सामने की चट्टान फैलकर
तुम्हारे आगे पसर गयी थी
और तुम मुझे बुला रहे थे
अच्छा हुआ आज तुम समझ गये-
कि चट्टान किसी के लिए फूल
किसी के लिए पत्थर नहीं होती
चट्टान-चट्टान होती है
और उससे
अकेले-अकेले नहीं लड़ा जा सकता।

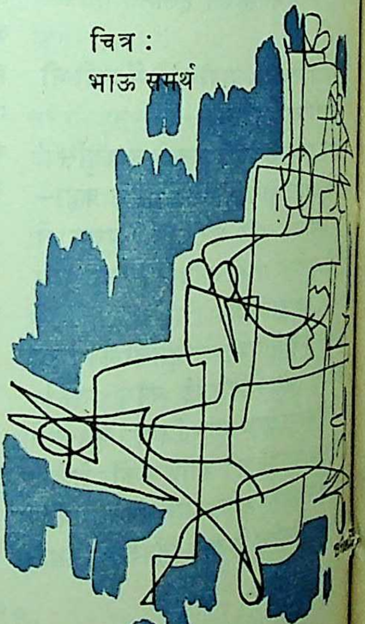

चित्र :
भाऊ समर्थ

—रामदरश मिश्र—
ई ४/११ माडल टाउन, दिल्ली-९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथा-कणिकाएं

इदरीस शाह

कहते हैं, सूफी कवि जलालुद्दीन रूमी ने एक मामूली कंकड़ में ऐसी आव भर दी कि देखने वालों को वह मानिक नजर आने लगा और अंत में एक जौहरी ने उसे एक लाख दिरहमों में खरीद लिया।

मगर इस तत्त्वांतरण की चर्चा करते हुए स्वयं रूमी ने यह कहा :

'पारस की मदद से तांबे को सोने में बदल डालना चमत्कार है। मगर उससे भी बड़ा चमत्कार तो यह है कि किस प्रकार पारस (यानी मनुष्य) अपने ही प्रमाद से धीरे-धीरे तांबे में बदल जाता है।'

०००

अबू ओमदुरमान से पूछा गया—'बूढ़ा होना अच्छा है कि जवान होना।'

उत्तर मिला—'बूढ़ा होने का अर्थ है आगे थोड़ा-सा समय, और पीछे ढेर सारी गलतियां। अब तुम ही फैसला करो कि यह स्थिति अच्छी है या इससे उलटी स्थिति अच्छी है।'

०००

हसन ने अजमी से पूछा —'आप अध्यात्म में इस ऊंची स्थिति तक कैसे पहुंचे ?'

अजमी ने उत्तर दिया—'ईश्वर के चिंतन से हृदय को सफेद बनाकर, न कि लिख-लिखकर कागज को काला करके।'

०००

गुरु के उत्तरदायित्व की गुरुता को समझाते हुए हसन बसरी ने यह कथा दृष्टांत रूप में सुनायी थी :

'नशे में धुत एक आदमी को मैंने दलदल में उतरते देखा और उससे कहा कि भाई सावधान! यह दलदल है। कहीं डूब न जाओ। शराबी ने उत्तर दिया कि हसन ! अगर मैं डूब गया तो केवल मेरा ही अनर्थ होगा। लेकिन अपने बारे में तो सोच। क्योंकि अगर तू डूब गया, तो तेरे अनुयायी भी डूब जायेंगे।'

०००

एक सूफी से किसी ने शिकायत की कि आप जो कथाएं सुनाते हैं, उनके अलग-अलग लोग अलग-अलग अर्थ लगाते हैं।

इस पर सूफी ने उसे समझाया—'इसीलिए तो उन कथाओं का महत्त्व है। जिस प्याले से दूध तो पिया जा सके मगर पानी न पिया जा सके, इसी तरह जिस तश्तरी में मांस तो खाया जा सके मगर फल न खाये जा सकें—क्या उसका कोई मूल्य है ? प्याला और तश्तरी तो छोटे बरतन हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

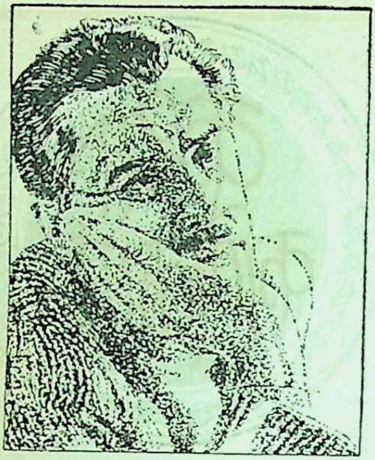

सूफी इदरीस

उनकी तुलना में भाषा कितना अधिक भोजन दे सकती होगी ! सो सवाल यह नहीं है कि कोई इस कहानी के कितने अर्थ देख सकता है, या कि वह इसका एक अर्थ क्यों नहीं देख पाता । सवाल तो यह है कि कोई व्यक्ति इस कहानी का जो भी अर्थ समझ रहा है, उससे वह लाभान्वित होगा या नहीं।'

०००

एक आदमी चिंतन या साधना की सभी पद्धतियां जानने का शौकीन था। उसने एक दरवेश को (कहा जाता है कि मक्का के अब्दुल अजीज को) पत्र लिखा कि क्या मैं इन सब पद्धतियों का तुलनात्मक विवेचन करने के लिए आपसे मिलने आऊं ?

दरवेश ने उसके पास एक बोतल (जिसमें पानी और तेल था) और एक बत्ती भेजी और साथ ही यह चिट्ठी भी :

'प्रिय मित्र, अगर तुम बत्ती को तेल में रखकर उसे लौ छुआओगे, वह जल उठेगी। अगर तुम सारा तेल गिराकर बत्ती को पानी में रखोगे तो न बत्ती जलेगी, न रोशनी होगी। अगर तुम तेल और पानी को खूब जोर से हिलाकर उसमें बत्ती रखकर जलाओगे, तो बत्ती जोर से भभककर बुझ जायेगी। जब यह परीक्षण इन मामूली चीजों की मदद से हो सकता है, तो उसके लिए इतनी दूर से चलकर आने और लंबी बातचीत करने की क्या आवश्यकता है !'

०००

जुनैद बताते थे कि एक बार उन्होंने एक नाई को एक धनिक की हजामत बनाते देखा। वे तो दरवेश थे न! उन्होंने नाई से पूछा कि क्या मेरी भी हजामत बना दोगे। नाई धनी ग्राहक का काम आधे में ही छोड़कर उनकी हजामत बनाने बैठ गया और अंत में उनसे पैसा लेने के बजाय उसने कुछ पैसे उन्हें भेंट किये।

जुनैद ने फैसला किया कि आज जो कुछ भी दान में मिलेगा, लाकर इस नाई को दे दूंगा। थोड़ी देर बाद किसी ने अशर्फियों से भरी थैली लाकर उनके चरणों में रख दी। जुनैद फौरन नाई की दुकान पर पहुंचे और वह थैली उसे देने लगे।

नाई ने झल्लाकर कहा—'आपको शर्म नहीं आती कि जो काम मैंने भगवान की सेवा समझकर किया था, आप उसके पैसे देने की कोशिश कर रहे हैं ?'

०००

सूफी हल्कवी से किसी ने पूछा—तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का असली रूप जानने के लिए आप क्या करते थे ?'

उत्तर मिला—'मैं अक्सर उनसे बहुत ही विनम्रता से पेश आता था। जो मेरे इस व्यवहार को देखकर उद्धत हो उठते थे, उनसे मैं बचता था; और जो मेरी विनम्रता के कारण मेरा मान करने लगते थे, उनसे मैं और भी ज्यादा बचता था।'

०००

सूफी निजरानी कहा करते थे—'यह कहना कि मैंने बात लगभग समझ ली है, बेमानी है।' एक विद्वान को उनका यह वाक्य बहुत अच्छा लगा। उसने कहा—'क्या दैनिक व्यवहार की भाषा में भी आप इस बात को कह सकते हैं ?'

नजरानी बोले—'हां। यह ऐसा ही है, जैसे कोई कहे कि यह लगभग सेव है।'

०००

कोई आदमी इमाम जैनुल आबिदीन के पास जाकर बोला—'मैं आपको अपना मार्ग-दर्शक और गुरु मानता हूं; कृपया मुझे शिक्षा दीजिये।' इस पर इमाम ने उससे पूछा—'तुम्हें यह विश्वास कैसे हुआ कि मैं मार्गदर्शक और गुरु हूं ?'

आगंतुक ने उत्तर दिया—'मैं जीवन-भर खोजता फिरा हूं; मगर मुझे ऐसा दूसरा कोई नहीं मिला, जिसकी दयालुता और सहृदयता की इतनी प्रसिद्धि हो और जिसके चेहरे पर इतना भलापन हो।'

इस पर इमाम रो पड़े और बोले—'भैया, मनुष्य कितना कच्चा है और कितने खतरे में है ! तुम मेरी जिन बातों की प्रसिद्धि की चर्चा कर रहे हो, वे बातें दुनिया के कई निहायत खराब आदमियों में भी हैं। और अगर शक्ल से ही आदमी को परखा जाये, तब तो हर शैतान संत कहलायेगा और हर श्रेष्ठ पुरुष को मानव-जाति का शत्रु समझ लिया जायेगा।'

०००

उवैस से पूछा गया—'आपको कैसा महसूस हो रहा है ?'

उत्तर मिला—'जैसे कोई सवेरे उठे और उसे पता न हो कि शाम तक वह जिंदा भी रहेगा या नहीं।'

इस पर दूसरे ने कहा—'हर एक मनुष्य की यही तो स्थिति है !'

उवैस बोले—'हां, मगर इसे महसूस कितने लोग करते हैं ?'

★

शाही मेहमान

आइंस्टाइन बेल्जियम के राजा-रानी के निमंत्रण पर उस देश गये। शाही मेहमान की अगवानी करने राजमहल के उच्च पदाधिकारी शानदार कार के साथ रेल्वे-स्टेशन पहुंचे। मगर स्टेशन पर आइंस्टाइन कहीं नजर न आये। वे तो अपना छोटा-सा संदूक हाथ में उठाकर पैदल ही राजमहल की ओर चल पड़े थे। बाद में जब राजदंपति ने उनसे इसका कारण पूछा, तो उन्होंने बड़ी मासूमियत से कहा—'मुझे पैदल घूमने में आनंद आता है।'

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुधामयी आनंद

विदेशों में भारतीय साम्राज्य-विस्तार

भारतीय इतिहास को बहुधा ईरानी, यूनानी, शक, कुषाण, पह्लव, अरब, तुर्क, मुगल और यूरोपीय जातियों के आक्रमणों की आविच्छिन्न परंपरा के रूप में प्रस्तुत किया जाता है और भारतीयों द्वारा विदेशों में किये गये साम्राज्य-विस्तार तथा आक्रमणों की चर्चा बहुत कम की जाती है। वस्तुत: दिग्विजय करना प्राचीन भारतीय परिपाटी है। कीर्तिलोलुप महत्त्वाकांक्षी राजा चक्रवर्ती सम्राट् बनने के लिए दूसरे राज्यों को जीतने का प्रयास प्राय: किया करते थे और उसकी सफल समाप्ति पर अश्वमेध और राजसूय यज्ञ करते थे। महाभारत में राजसूय के अवसर पर पांडवों द्वारा चारों दिशाओं के विभिन्न राज्यों के जीते जाने का उल्लेख है। इनमें अनेक विदेशी राज्य भी थे।

सामान्य रूप से हिमालय से कन्याकुमारी तथा द्वारका से पुरी तक फैला विशाल भारतीय भूखंड ही भारतीय राजाओं की दिग्विजय का क्षेत्र होता था। तब भारत की स्वाभाविक सीमाएं थीं—उत्तर में हिमालय पर्वतमाला, पश्चिमोत्तर दिशा में सिंधु नदी, पूर्व में ब्रह्मपुत्र और लौहित्य, तथा दक्षिण में समुद्र। रूस-रहित यूरोप के बराबर क्षेत्रफल वाला यह विशाल भूखंड पराक्रमी राजाओं के दिग्विजय और साम्राज्य-प्रसार के लिए पर्याप्त था। परंतु कई भारतीय राजाओं ने इन सीमाओं का अतिक्रमण करके विदेशों में भी अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

इस प्रकार का पहला प्रयास था चंद्रगुप्त मौर्य (३२५-२९८ ई. पू.) द्वारा हिंदुकुश पर्वतमाला तक अपने साम्राज्य का प्रसार। चंद्रगुप्त के राजगद्दी पर बैठने के पूर्व सिकंदर ने ३२७ ई. पू. में पश्चिमोत्तर भारत पर हमला किया था। प्रबल भारतीय प्रतिरोध के कारण वह केवल व्यास नदी तक के प्रदेशों को जीत पाया। वहां पहुंचकर उसे अपने सैनिकों के दबाव के कारण स्वदेश की ओर वापस लौटना पड़ा और मार्ग में ही बाबुल (बैबिलोन) में उसकी मृत्यु हो गयी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३२३ ई. पू.)।

सिकंदर के पूर्वी साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना सेल्यूकस, जिसने ३०६ ई. पू. में अपने प्रतिद्वंद्वी एन्टीगोनस को हराकर 'निकेटर' (राजा तथा विजेता) की उपाधि धारण की तथा सिकंदर द्वारा जीते गये भारतीय प्रदेश को फिर से जीतने के उद्देश्य से अगले साल (३०५ ई. पू.) सिंधु नदी पार की। सिकंदर की मृत्यु के बाद पंजाब के सभी प्रदेश यूनानी प्रभुता से मुक्त होकर चंद्रगुप्त मौर्य के साम्राज्य का अंग बन चुके थे; अतः सेल्यूकस का चंद्रगुप्त की सेनाओं के साथ पंजाब में संघर्ष हुआ। 'विजेता' की पदवी धारण करने वाले उस यूनानी राजा को इस युद्ध में मुंह की खानी पड़ी और सिंधु नदी के पश्चिम में अफगानिस्तान के निम्नलिखित चार प्रांत मौर्य सम्राट् को सौंप देने पड़े – पेरोपेनिसस (काबुल प्रदेश), एरिया (हिरात), आर्खोसिया (कंधार) तथा जिड्रोशिया (बिलोचिस्तान)।

इस व्यवस्था को स्थायी बनाने के लिए दोनों राजाओं के बीच ३०३ ई. पू. में एक मैत्रीसंधि हुई। संधि को पुष्ट करने के लिए सेल्यूकस ने अपनी कन्या चंद्रगुप्त को विवाह में प्रदान की। चंद्रगुप्त ने भी अपने श्वसुर को ५०० हाथियों का बहुमूल्य उपहार दिया। ये हाथी पश्चिम एशिया में अपने शत्रुओं के साथ लड़ने में सेल्यूकस के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुए। उसने ३०२ ई. पू. में मेगस्थनीज को अपना दूत बनाकर मौर्य सम्राट् के दरबार में भेजा।

इस संधि-व्यवस्था से मौर्य साम्राज्य का विस्तार सिंधु नदी के पश्चिम में कंधार तक और उत्तर में हिंदूकुश पर्वतमाला तक हो गया। इस पर टिप्पणी करते हुए सुप्रसिद्ध इतिहासकार विन्सेंट स्मिथ ने लिखा है– 'इस तरह २००० वर्ष पहले चंद्रगुप्त मौर्य ऐसा पहला भारतीय शासक था, जिसने वह वैज्ञानिक सीमांत प्राप्त किया, जिसके लिए उसके ब्रिटिश उत्तराधिकारी व्यर्थ में आहें भरते रहे।हैं'

चौथी सदी ई. पू. में चंद्रगुप्त मौर्य द्वारा

सेल्यूकस प्रथम की मुद्रा पर बनी मुखाकृति (बायें); सिकंदर की मुखाकृति उसके सेनापति तथा थ्रेस के राजा लिसिमेकस (३२१ से २८१ ई. पू.) की रजतमुद्रा के आधार पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

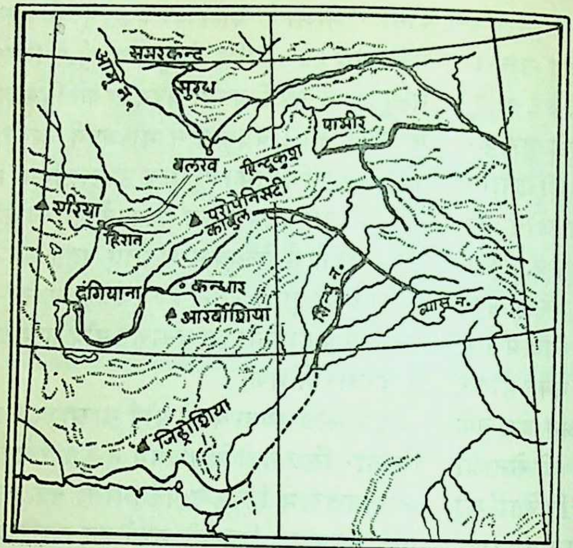

प्राचीन पश्चिमोत्तर भारत
▲–सेल्यूकस द्वारा चन्द्रगुप्त को दिये गये प्रान्त
— सिकन्दर के भारत-आक्रमण का मार्ग

निर्धारित की गयी हिंदुकुश पर्वतमाला वाली सीमा को लांघकर उसके भी उत्तर में सैनिक अभियान करने वाला एक अन्य भारतीय राजा था–चंद्रभूपति। दिल्ली में कुतुब मीनार के पास खड़े लौहस्तंभ पर उत्कीर्ण अभिलेख में इस राजा की यशोगाथा देते हुए कहा गया है–'उसने वंगदेश में शत्रु राजाओं के सम्मिलित संघ को परास्त किया और सिंधु नदी के सात मुखों को पार करके युद्ध में बाह्लीकों पर विजय प्राप्त की। उसकी शक्ति के समीर से दक्षिण का समुद्र सुवासित है।'

इस अभिलेख में वर्णित वंगदेश आज का बाङलादेश है और डा. काशीप्रसाद जायसवाल तथा डा. रमेशचंद्र मजूमदार के मतानुसार सिंधु के सात मुखों का अभिप्राय पंजाब की पांच नदियों तथा अफगानिस्तान की ओर से आकर सिंधु में मिलने वाली काबुल और कुनार नदियों से है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार बाह्लीक भारत के उत्तरी भाग में था। डा. रमेशचंद्र मजूमदार और डा. दिनेशचंद्र सरकार इसे बल्ख (बैक्ट्रिया) प्रदेश समझते हैं, जो कि आमू नदी के दक्षिण तथा हिंदुकुश पर्वतमाला के उत्तर में वर्तमान उत्तरी अफगानिस्तान में है।

भारत की परंपरागत सीमा से सैकड़ों मील दूर हिंदूकुश के ऊंचे दर्रों को पार करके बल्ख को जीतने वाला चंद्रभूपति कौन था, इस विषय में अभी तक इतिहासज्ञ एकमत नहीं हो सके हैं। फिर भी उनमें से अधिकांश इसे गुप्तवंशी सम्राट् चंद्रगुप्त द्वितीय (३७८-४१४ ई.) समझते हैं। ऐसा माननेवाले प्रमुख इतिहासज्ञ हैं सर्वश्री काशी-प्रसाद जायसवाल, दिनेशचंद्र सरकार, अ. स. आळतेकर, राधाकुमुद मुखर्जी और आर. एन. दांडेकर। इनका यह मत है कि समुद्रगुप्त के समय में पश्चिमोत्तर भारत के अधिकांश राज्य गुप्त सम्राटों के वशवर्ती थे अथवा उनके साथ मैत्रीसंधि के सूत्र में आबद्ध हो चुके थे। अतः इस प्रदेश पर विजय किसी भारतीय राजा द्वारा ही संभव थी। इसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अलावा, लौहस्तंभ वाले इस अभिलेख की लिपि चौथी-पांचवीं शताब्दी ई. की है।

चंद्रगुप्त द्वितीय के अनेक सिक्कों पर उसका नाम केवल 'चंद्र' के रूप में मिलता है। अतः बल्ख को जीतने वाला चंद्रभूपति चंद्रगुप्त द्वितीय माना जाता है। सुदूरवर्ती प्रदेशों की विजय में उसका प्रयोजन किसी विद्रोह का दमन करना भी हो सकता है अथवा सीमावर्ती प्रदेश को सीधे अपने प्रभुत्व में रखने की महत्त्वाकांक्षा भी। बल्ख जीतने के बाद मध्य एशिया की आमू अथवा वंक्षु नदी गुप्त राज्य की उत्तरी सीमा हो गयी। अनेक इतिहासज्ञों की मान्यता है कि कालिदास ने रघुवंश के चौथे सर्ग में रघु की दिग्विजय के व्याज से चंद्रगुप्त द्वितीय की दिग्विजय का उल्लेख करते हुए उसमें वंक्षु (आमू या आक्सस) नदी का तथा पारसीकों (ईरानियों) की पराजय का वर्णन किया है।

आठवीं शताब्दी ई. के आरंभ में जब मुहम्मद बिन कासिम के नेतृत्व में मुस्लिम सेनाओं ने सिंधु और मुल्तान को जीतकर (७१२ ई.) भारत में राज्य-विस्तार करना चाहा, कश्मीर के राजाओं ने इसका सफल प्रतिरोध किया। कश्मीर के प्रतापी राजा ललितादित्य (७२४-७६० ई.) ने न केवल इस अरब संकट को समाप्त किया, अपितु कश्मीर के उत्तर में दरद, कंबोज, तुखार व तुर्क जातियों को एवं तिब्बत के प्रदेश को जीता तथा समूचे भारत की दिग्विजय करके गुप्तों के बाद भारत में सबसे प्रतापी साम्राज्य स्थापित किया।

कल्हण ने भारत के भीतर तथा भारत से बाहर के प्रदेशों में उसकी दिग्विजय का जो वर्णन अपनी राजतरंगिणी (४.११८-२६, १३१-८०) में किया है, वह कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण होते हुए भी सत्य प्रतीत होता है। इसके अनुसार, ललितादित्य ने अपनी दिग्विजय में उत्तर भारत में कान्यकुब्ज (कन्नौज) के राजा यशोवर्मा को हराकर उसके दरबार से भवभूति को अपने यहां बुलाकर प्रतिष्ठा दी। मगध, गौड, कामरूप व कलिंग की विजय के बाद दक्षिण में कर्नाटक को जीता; तदनंतर कोंकण, द्वारका तथा अवंति की विजय की; उसके द्वारा उत्तर भारत के जीते जाने की पुष्टि फैजाबाद, सारनाथ व मुंगेर में उसके 'श्रीप्रताप' वाले सिक्कों के पाये जाने से होती है।

किंतु ललितादित्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विजय उत्तरापथ में थी। उसने भारत की उत्तरी सीमा पर विद्यमान निम्नलिखित देशों व जातियों को जीता—दरद, भौट्ट,

चंद्रगुप्त द्वितीय की सिंहहंता शैली की मुद्रा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंबोज, तुखार तथा मुम्मुनि। दरद और भौट्ट प्रदेश कश्मीर की घाटी के उत्तर और उत्तर-पूर्व में थे। दरद प्रदेश कश्मीर के एकदम उत्तर में कृष्णगंगा नदी की घाटी में तथा उसके उत्तर में था और उसमें आज के चितराल, यासीन, गिलगित, चिलास और बुंजी के प्रदेश थे। दरद के साथ ही उसके पूर्व में भौट्ट का प्रदेश था, जिसमें वर्तमान द्रास, लद्दाख और स्कर्दू के इलाके थे।

'तारातंत्र' के अनुसार कश्मीर से कामरूप तक मानसरोवर के दक्षिण का प्रदेश भौट्ट है। यह सामान्य रूप से तिब्वत का द्योतक है। तिब्वतियों का रंग पीला-सा होता है; उसकी चुटकी लेते हुए कल्हण ने लिखा है कि जब ललितादित्य ने तिब्वतियों को जीता, तो उनके स्वाभाविक रूप से पीले मुंह पर पराजय की भीति के चिह्न उसी तरह स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर नहीं हुए, जैसे बंदरों के स्वाभाविक रूप से लाल मुंह पर गुस्से का पता नहीं चलता है (४.१६८)।

ललितादित्य द्वारा जीता गया तीसरा प्रदेश कंबोज था। आधुनिक इतिहासज्ञ इसे वर्तमान पामीर-बदख्शां प्रदेश समझते हैं। इस समय इसका कुछ भाग अफगानिस्तान में तथा कुछ रूस में है। महाभारत के अनुसार यह इलाका घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था। कल्हण ने लिखा है कि जब ललितादित्य ने इसे जीता, तो कंबोज लोगों की घुड़सालें खाली हो गयीं। (संभवत: सब घोड़े कश्मीर के सम्राट् को उपहार के रूप में दे दिये गये थे।) कंबोज के पश्चिम में उससे लगा हुआ तुखारिस्तान (वल्ख) का प्रदेश है। ... घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था। ललितादि... आक्रमण का लक्ष्य घोड़े प्राप्त करना ... क्योंकि कल्हण ने लिखा है कि जब ... ललितादित्य की सेना पहुंची, तो तुखार... अपने घोड़े छोड़कर आत्मरक्षार्थ पहाड़ों ... चोटियों पर चले गये।

तुखार देश के बाद ललितादि... मुम्मुनि, उत्तरकुरु, वालुकांवुधि, स्त्री... तथा तुरुष्कों की विजय की। इनके वा... विक स्वरूप और स्थिति के संबंध में विद्वा... में बड़ा मतभेद है।

मुम्मुनि अरब आक्रांता समझे जाते हैं। मुस्लिम अरबों का नेतृत्व करने वाले ख... फाओं को 'अमीरुल मोमिनीन' अर्थात् 'पै... वर हजरत मुहम्मद में विश्वास (ईमान) रखने वाले मुसलमानों के शासक' कहा जा... था। इसी उपाधि के पिछले पद 'मोमिनी...' का संस्कृत रूपांतर शायद 'मुम्मुनि' है। ललितादित्य के समय अरब लोग भारत के लिए एक महान संकट बने हुए थे और मध्य एशिया में वे चीन के साम्राज्य के लिए खतरा पैदा कर रहे थे। चीनी इतिहा... के अनुसार, कश्मीर के राजाओं ने अर... के विरुद्ध सहायता पाने के लिए अ... दूत-मंडल चीन भेजे थे। कल्हण के वर्ण... नुसार ललितादित्य ने मुम्मुनि अर्थात् अ... आक्रांताओं को तीन बार हराया।

यशोवर्मा, ललितादित्य तथा गुर्जर ... प्रतिहार राजाओं द्वारा अरबों के प्रब... प्रतिरोध का ही यह परिणाम था कि अ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेगिस्तानी प्रायद्वीप से निकलकर लगभग एक ही झपाटे में पश्चिम में सुदूर स्पेन तक इस्लामी साम्राज्य का विस्तार कर डालने वाली विश्वविजयिनी अरब सेनाओं को भारत में सिंध में आकर थम जाना पड़ा और अगले दो सौ वर्ष तक वे इस प्रदेश में विशेष सफलता नहीं पा सकीं।

उत्तरकुरु की पहचान बहुत विवादास्पद है। नंदलाल दे उसे हिमालय से उत्तर का प्रदेश समझते हैं; लैस्सन उसे मध्य एशिया में मानते हैं; वा. रामायण (किष्किंधा कांड, अध्याय ४३) के अनुसार वह पूर्वी तुर्किस्तान प्रतीत होता है; और बुन्सेन के मत में वह पामीर का उच्चतम प्रदेश है। वालुकांबुधि का शब्दार्थ है—रेत का समुद्र। संभवतः यह मध्य एशिया की तारिम नदी (पुराना नाम—सीता) का बालुकामय प्रदेश है, जिसका भारत और कश्मीर के साथ पुराना संबंध था और जहां भारतीय संस्कृति के अवशेष बड़ी मात्रा में मिले हैं। तुरुष्क (४.१७९) मध्य एशियावासी तुर्कों की कोई शाखा थी। स्त्रीराज्य चीनी यात्री युआन च्वांग के मतानुसार ब्रह्मपुर के उत्तर में गढ़वाल-कुमाऊ में अथवा सतलुज नदी की उपरली घाटी में था। ललितादित्य के स्त्रीराज्य-विजय का कल्हण कृत वर्णन (४.१७३-४) कल्पना से परिपूर्ण है; फिर भी यह स्पष्ट है कि ललितादित्य ने हिमालय के अलावा हिमालय के उत्तर-पश्चिम में बल्ख, बदख्शां, पामीर तथा मध्य एशिया के अनेक प्रदेश जीते थे।

दक्षिण भारत में शासन करने वाले चोल-वंशी सम्राटों ने ११ वीं शताब्दी में अपनी नौसेना द्वारा बंगाल की खाड़ी के अंडमान-निकोबार, हिंद महासागर के जावा, सुमात्रा आदि द्वीपों तथा मलय और

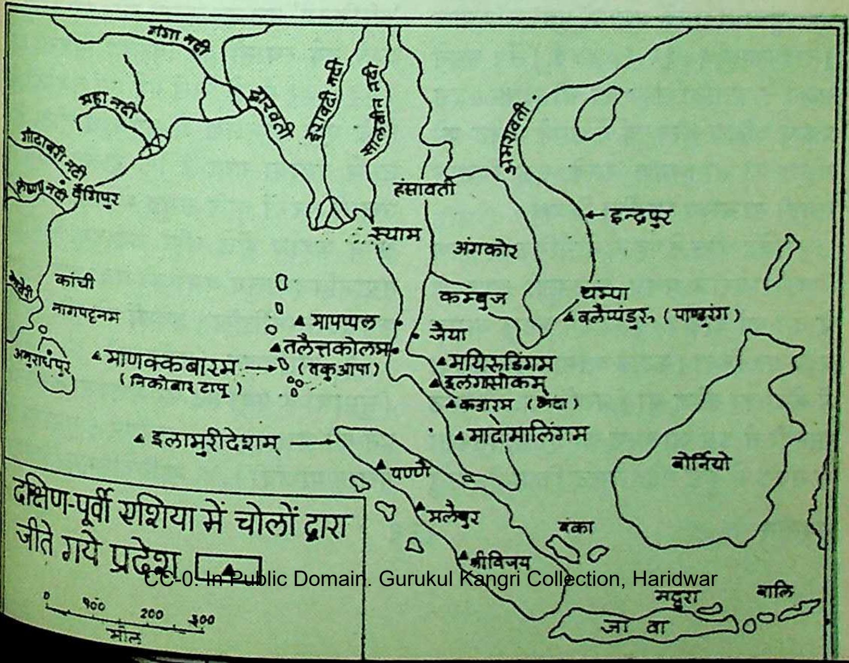

दक्षिण-पूर्वी एशिया में चोलों द्वारा जीते गये प्रदेश ▲

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निचले बर्मा के प्रदेशों को लगभग उसी समय जीता, जब उत्तर भारत पर महमूद गजनवी (९९८-१०३० ई.) आक्रमण कर रहा था। सुप्रसिद्ध इतिहासज्ञ श्री के. एम. पणिक्कर ने लिखा है—'चोल प्रथम भारतीय राजा थे, जिन्होंने समुद्री सेना के महत्त्व को समझा और समुद्री विजय की नीति का अनुसरण किया। उन्होंने न केवल बंगाल की खाड़ी पर वास्तविक नियंत्रण स्थापित किया, अपितु सौ वर्ष तक मलय में अपनी प्रभुसत्ता बनाये रखी और इस प्रकार बंगाल की खाड़ी को चोलों की झील बना डाला।'

चोलों के समुद्री आक्रमणों का श्रीगणेश १००७ ई. में राजराज प्रथम (राज्यकाल ९८५-१०१२ ई.) ने अरब सागर में मालदीव के टापुओं को जीतकर किया। किंतु समुद्री विजय की इस नीति को पराकाष्ठा पर पहुंचाया उसके यशस्वी पुत्र राजेंद्र चोल (राज्यकाल १०१२-१०४४ ई.) ने। उसने मलय के अलावा लंका को भी जीता। इस प्रकार दक्षिण और पूर्व में उसने भारत की सीमा का अतिक्रमण करके एक विशाल समुद्री साम्राज्य स्थापित किया।

राजेंद्र चोल ने पहला नौसैनिक आक्रमण पिता राजराज प्रथम के समुद्री आक्रमण के दस वर्ष बाद १०१७ ई. में कटाह नामक प्रदेश पर किया। कटाह वर्तमान मलयशिया में केदा का प्रदेश था। यद्यपि डा. नीलकंठ शास्त्री ने इस आक्रमण की ऐतिहासिकता के संबंध में कुछ संदेह प्रकट किया है, परंतु डा. रमेशचंद्र मजूमदार ने अनेक प्रमाणों से इसकी सत्यता को पुष्ट किया है। [illegible] संभवत: भावी बड़े आक्रमण का पूर्वाभ्यास मात्र था। इसमें आयी कठिनाइयों पर विचार करके राजेंद्र चोल ने अगले [illegible] वर्ष तक जबर्दस्त तैयारी की और [illegible] ई. में दक्षिण-पूर्व एशिया पर ऐसा [illegible] आक्रमण किया, जो भारत के इतिहास में संभवत: अभूतपूर्व था। भारत ने अपनी [illegible] से सैकड़ों मील की दूरी पर स्थित [illegible] टापुओं पर पहले कभी इतनी बड़ी [illegible] और इतनी बड़ी सेना के साथ आक्रमण [illegible] किया था।

उत्तर भारत में सोमनाथ के सुप्रसिद्ध मंदिर पर महमूद गजनवी की [illegible] (१०२६ ई.) से ठीक एक वर्ष पहले राजेंद्र चोल ने बंगाल की खाड़ी के टापुओं पर [illegible] उस समय के विशालतम समुद्री साम्राज्य 'श्रीविजय' पर यह चढ़ाई की। इस हमले में जीते गये स्थानों का विस्तृत विवरण हमें १०३०-३१ ई. में लिखे गये एवं तंजाऊर में मिले एक अभिलेख में उपलब्ध होता है। उसमें बताया गया है कि राजेंद्र चोल ने उत्ताल तरंगों वाले समुद्र में बड़ी संख्या में अपने जहाज भेजे और कडारम् के राजा संग्रामविजयोत्तुंग वर्मा को बंदी बनाकर क्रमश: निम्नलिखित प्रदेशों को जीता:

१. श्रीविजय (पलेंबांग), २. [illegible] (सुमात्रा के पूर्वी तट पर मलक्का के [illegible] पने की बस्ती), ३. मलैयूर (सुमात्रा [illegible] मलायु या जंबी), ४. मायिरुडिंगम् ([illegible]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के पड़ोस की बस्ती), ५. इलंगाशोकम् (लंकासुक), ६. मापप्पलाम् (पेगू के समुद्री तट पर स्थित एवं महावंश में वर्णित पपफाल), ७. मेविलिंबंगम् (लिगोर के स्थलडमरुमध्य पर कर्मरंग की बस्ती), ८. वलेप्पंडुरु (चंपा का पांडुरंग), ९. तलेत्तक्कोलम् (क्राके स्थलडमरुमध्य पर तक्कोल की बस्ती), १०. मादामार्लिगम् (ताम्रलिंग, लिगोर), ११. इल्लामुरिदेसम् (सुमात्रा के उत्तरी छोर पर स्थित एवं अरबों द्वारा वर्णित लामुरी की बस्ती), १२. माणक्कवारम् (निकोबार टापू), १३. कडारम् (केदा)।

यह निश्चित नहीं है कि राजेंद्र चोल की समुद्री सेना ने इन स्थानों को ऊपर दिये क्रम से ही जीता था। यदि ये स्थान विजय-यात्रा के क्रम को भी सूचित करते हैं (जैसा कि क्रोम का मत है), तो यह स्पष्ट है कि राजेंद्र ने सर्वप्रथम श्रीविजय साम्राज्य की सुमात्रा-स्थित राजधानी पलेंबांग पर हमला किया और उसे जीतकर श्रीविजय के राजा संग्रामविजयोत्तुंग वर्मा को बंदी बनाया। इसके बाद उसकी सेना ने सुमात्रा के पूर्वी तट के कुछ स्थानों को जीता और तदनंतर मलय प्रायद्वीप में श्रीविजय के प्रमुख सैनिक नाकों पर प्रभुत्व स्थापित किया। अचिन और निकोबार टापू को जीतने के बाद अंत में मलय प्रायद्वीप में श्रीविजय के प्रमुख केंद्र केदा पर अधिकार किया। चोलों द्वारा समुद्र पार के प्रदेशों की सैनिक विजय भारतीय साम्राज्य के विस्तार में

राजा रणजीतसिंह
[इंडिया आफिस, लंदन में रखे चित्र पर से]

अनुपम महत्त्व रखती है।

चोल राजाओं ने न केवल सुमात्रा और जावा-जैसे सुदूरवर्ती टापुओं की विजय की, उसके साथ-साथ श्रीलंका पर अपना सुदृढ़ शासन भी स्थापित किया और उसे अपने साम्राज्य का अंग बनाया। इस निकटस्थ द्वीप पर तीसरी शती ई. पू. से ही दक्षिण भारत के राजा आक्रमण कर रहे थे। अशोक के समकालीन सिंहली राजा देवानाम्पिय तिस्स की मृत्यु के बाद तीसरी शती ई. पू. में दक्षिण भारतीयों ने दो बार इस टापू पर हमला किया और इसकी राजधानी अनुराधपुर को जीता। दूसरा भारतीय आक्रांता था एलार; वह उत्तरी सिंहल पर तब तक शासन करता रहा, जब तक सुप्रसिद्ध सिंहली राजा दुट्टगामिणी (१६१-१३७ ई. पू.) ने उसका वध नहीं कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीलंका के इतिहास में समुद्रगुप्त (३३५-३८० ई.) के समकालीन मेघवर्ण के राज्यकाल से १५०९ ई. तक का काल 'चूल-वंश' कहलाता है। इसे यह नाम मिलने का बड़ा मनोरंजक कारण है। पालि में 'चूल' का अर्थ है क्षुद्र या छोटा। इस युग के राजा पहले के सिंहली राजाओं की तुलना में छोटे कहलाये; क्योंकि वे इस सारे समय में दक्षिण भारत के राजाओं से दबे रहे।

पांड्य राजा श्रीमारश्रीवल्लभ (८१५-८६० ई.) ने श्रीलंका पर हमला किया,

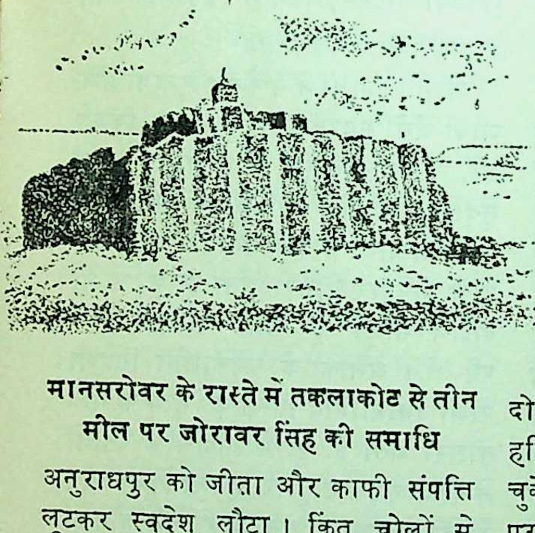

मानसरोवर के रास्ते में तकलाकोट से तीन मील पर जोरावर सिंह की समाधि

अनुराधपुर को जीता और काफी संपत्ति लूटकर स्वदेश लौटा। किंतु चोलों से पहले किसी भारतीय राजा ने श्रीलंका पर स्थायी रूप से अधिकार नहीं किया था। चोलों ने १०१७ ई. में समूचे द्वीप को जीता और १०७० ई. तक अपने विशाल साम्राज्य के एक प्रांत के रूप में उस पर शासन किया। श्रीलंका के स्वतंत्र राज्य का अस्तित्व समाप्त कर दिया।

१९ वीं शताब्दी में पंजाब के रणजीतसिंह ने भारत की सीमाओं को करते हुए उत्तर-पश्चिम दिशा में साम्राज्य का विस्तार किया। पिछले हजार वर्ष में वह पहला भारतीय राजा जिसने उत्तर-पश्चिमी सीमा से होने आक्रमणों की धारा को न केवल अपितु उस दिशा में आगे बढ़कर हमले और अपने राज्य को चीन की सीमा छुआ दिया।

सन १८०९ में अंग्रेजों के साथ हो जाने के बाद सतलुज नदी के सिक्ख साम्राज्य के विस्तार का बंद हो गया। अब सिक्ख अपना प्रसार केवल पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत अफगानिस्तान और कश्मीर, लद्दाख तिब्बत की ओर कर सकते थे। अक्तूबर १८१८ को रणजीतसिंह पठानों के प्रदेश जीतने के लिए से पेशावर की ओर कूच किया। दो प्रधान सेनापति अकाली फूलसिंह हरिसिंह नलवा उनसे पहले ही रवाना चुके थे और उनके एक अग्रिम दल ने पर सिंधु नदी को किश्तियों से पार किंतु खट्टक कबीले के पठानों ने इस का पूर्णत: विध्वंस कर दिया।

यह समाचार पाकर रणजीतसिंह क्रुद्ध हुआ और शीघ्र ही सिंधु नदी के

[शेष पृष्ठ १२८ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक और सैम्सन

डा. सीताराम सिंह

सैम्सन और डिलाइला की पौराणिक कथा आप सबने सुनी है। मगर हमारे सैम्सन के बारे में आपने शायद ही सुना हो। अपनी प्रिया एलिजाबेथ से मिलने के लिए उसने जो अपूर्व साहस दिखाया, वह उन मुट्ठी-भर लोगों को सदा स्मरण रहेगा, जो उसे जानते थे।

सैम्सन ठेठ भारत का रहने वाला था और सोनपुर (बिहार) से अंडमान लाया गया था। पहली नजर में प्यार के सिद्धांत में उसे विश्वास नहीं था। बकुलतला की घाटी में वह जैसे अपनी 'डिलाइला' एलिजाबेथ के लिए ही अपने हृदय का प्यार संजोये प्रतीक्षा करता रहा था। इस प्यार का उसने कभी ढिंढोरा नहीं पीटा। बल्कि वह चुपचाप मन ही मन अपनी प्रिया से प्यार करता रहा, अपनी छोटी आंखों और विशाल सूंड की छोटी-छोटी हरकतों से अपने प्यार का इजहार उस पर करता रहा। मगर एलिजाबेथ थी कि उसकी ओर नजर उठाकर भी नहीं देखती थी—प्रेम का प्रतिदान करने की तो बात दूर। फिर भी वह उसके निकट जाता, उसकी समीपता में मोद मनाता।

शीघ्र ही सैम्सन के अफसरों का ध्यान इस ओर गया; क्योंकि अब वह प्रायः रोज ही काम पर विलंब से आता था। उन्हें बात बहुत अखरी। हां क्षमा करें, मैं यह बताना तो भूल ही गया था कि सैम्सन सरकारी कर्मचारी था—भारत सरकार का कर्मचारी; और इस नाते उसे दफ्तर के नियमों का पालन करना ही चाहिये था।

यदि कोई सरकारी कर्मचारी अपनी सह-कर्मचारिणी से प्रणय जताने में अपना वक्त गंवाने लगे, तो परिणाम क्या होगा, जानते हैं न? अधिकारियों ने यही ठीक समझा कि उसका तबादला कर दिया जाये—उसे उसकी

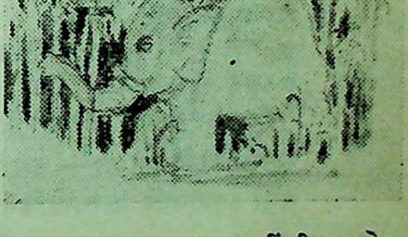

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे ग्लायकोडिन पर भरोसा है

ये इन्हें खांसी से जल्द राहत दिलाएगा

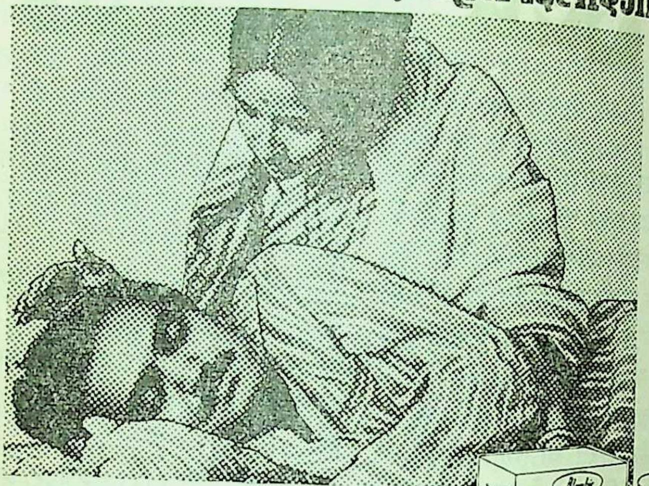

ग्लायकोडिन ने खांसी की दूसरी दवाओं के मुकाबले, भारत भर में ज़्यादा से ज़्यादा लोगों की खांसी दूर की है. इसीलिये ये सबसे आगे है.

जहां जहां खांसी का प्रभाव हुआ हो, वहां-वहां यह तेजी से असर करता है... खांसी से जल्द और शर्तिया छुटकारा दिलाता है.

- गले की खराश मिटाता है.
- छाती में जमे बलगम को निकालता है और सर्दी-खांसी से राहत दिलाता है.
- छाती की जकड़न दूर करता है जिससे सांस लेने में आसानी होती है... आप चैन की नींद सो सकते हैं.

खांसी कैसी भी हो— उस पर पूरा काबू पाने के लिए आप मधुर स्वादवाले ग्लायकोडिन पर भरोसा कर सकते हैं.

Alembic

ग्लायकोडिन— भारत में खांसी को पछाड़ने वाला चैम्पियन... विश्वसनीय दवाएं बनानेवाली कंपनी एलेम्बिक की ओर से.

everest/520/ACW-hn

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एलिजाबेथ से दूर कहीं भेज दिया जाये। तबादले की आज्ञा जारी कर दी गयी। मगर बेचारे सैम्सन को इस सबकी भनक भी नहीं लग पायी।

एक दिन सचमुच उसे उसकी एलिजाबेथ से जुदा करके एक विशाल किश्ती में सवार किया गया। समुद्र की छाती चीरती हुई किश्ती उसे ले चली हेनरी लारेन्स द्वीप की ओर। बेचारे सैम्सन को अब तक इसकी कल्पना भी नहीं थी कि उसे उसकी प्रिया से इस तरह एकाएक विलग कर दिया जायेगा। किश्ती तेजी से आगे बढ़ती गयी। धीरे-धीरे सारा षड्यंत्र सैम्सन की समझ में आ गया।

शार्कों से भरे समुद्र में अठारह मील का रास्ता तय करने के बाद सैम्सन को जमीन पर उतारा गया। अब उसे यहीं काम करना था। वहां अपने साथी कर्मचारियों के साथ उसके रहने-खाने की व्यवस्था थी। मगर उसने भोजन को छुआ तक नहीं। अपने अतिप्रिय भोजन गन्ने की भी उपेक्षा कर दी। उसने अपनी प्रिया एलिजाबेथ के लिए उपासे रहने की ठान ली।

वह बिलकुल चुप, शांत और उदास रहने लगा। शायद अपनी प्रिया की प्यारी सूरत का ध्यान करता रहता था वह। उसे लगता था, वह भी उसकी अनुपस्थिति में बहुत दुःखी होगी। और यह खयाल कि वह भी उपवास पर उतर आयी होगी, उसके लिए असह्य था। उसे चाव से गन्ना चूसते और उसके मीठे रस का स्वाद लेते देखकर वह कितना आनंद-विभोर हुआ करता था! अपने लाल अधर से मधुर इक्षुरस चुआती कितनी मोहक लगती थी वह! वह दृश्य ही उसकी सारी भूख-प्यास हर लेने में समर्थ था।

रात गहरायी, सबकी पलकों पर नींद की मुहर लग गयी। सैम्सन ने फैसला कर लिया। फैसला कर लेने के बाद उसके मन में कोई 'अगर-मगर' नहीं उठा।

अगले दिन हेनरी लारेन्स द्वीप के वन-अधिकारी के शिविर में खलबली मच गयी। चारों ओर सैम्सन को तलाशा जा रहा था। सारा द्वीप छान डाला गया, मगर सैम्सन का कहीं पता न चला। लोगों को भय हुआ कि कहीं वह मर ही न गया हो; क्योंकि यहां आने के बाद से ही उसने भोजन नहीं छुआ था। मगर मरा होता तो उसका मुर्दा तो मिलता। इतनी विशाल काया झाड़ियों में तो छिप नहीं सकती थी।

लांग आइलैंड के विभागीय वन-अधिकारी को यह सूचना भेजी गयी कि सैम्सन लापता है। वहां से जो उत्तर आया, वह हैरान कर देने वाला था। सैम्सन रातों-रात बकुलतला घाटी में अपने मूल स्थान पर जा पहुंचा था—शार्क मछलियों से भरे समुद्र में अठारह मील की दूरी तैरकर!

कौन था यह सैम्सन? शायद आपको कुछ भनक मिल गयी हो। यह एक हाथी था—नर हाथी। जब उसने देखा कि उसे अपनी प्रिया हथिनी एजिलाबेथ से जुदा कर दिया गया है, तो उसने तैरकर वापस उसके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पास जाने की ठान ली और उसके लिए अपनी जान भी खतरे में डालने से वह नहीं झिझका।

अगली सुबह जब वह प्रिया को सूंड से सहला रहा था, उसे देखकर वन-अधिकारी चकित भी हुए और प्रेम की दुर्निवार शक्ति के आगे नतमस्तक भी। उन्होंने सैम्सन के तबादले की आज्ञा रद्द कर दी और उसे अपनी प्रेयसी के संग रहने दिया। भी पूरी वफादारी और लगन के साथ सरकार के कर्मचारी के रूप में नौ बजाने लगा।

सैम्सन को गुजरे कुछ बरस हो चुके एलिजाबेथ की कोख से उपजी उसकी अब अंडमान-निकोबार के वन-विभाग सेवा कर रही है। ['आकाशवाणी']

★

[पृष्ठ १२४ का शेष]

पर पहुंचा। उस समय सिंधु पूरे उफान पर थी। नदी को प्रसन्न करने के लिए उसकी पूजा करके अशर्फियां नदी में डाली गयीं। फिर रणजीतसिंह ने दूसरे तट पर पहुंचने के लिए अपना हाथी पानी में आगे बढ़ा दिया। किंवदंती है कि रणजीतसिंह के पानी में प्रवेश करते ही नदी का पानी कम हो गया।

नदी पार करके सिक्ख सेना ने १९ नवंबर १८१८ को पेशावर पर अधिकार कर लिया। पेशावर के बाजारों में विजेता का जुलूस निकला। पठानों को विश्वास हो गया कि खुदा खालसा के साथ है (खुदा खालसाशुद)। अफगान नेता दोस्त मुहम्मद ने लाहौर दरबार को एक लाख रुपये का वार्षिक कर देना और पेशावर पर सिक्खों की सत्ता मानना स्वीकार कर लिया। बाद में पठानों ने कई बार विद्रोह किया और स्वतंत्र होना चाहा; परंतु रणजीतसिंह ने मृत्यु-पर्यंत (१८३९ ई. तक) इस प्रदेश पर अपना अधिकार बनाये रखा।

सन १८१९ में रणजीतसिंह ने अफगानों को हराकर कश्मीर प्राप्त किया और डोगरा सेनापति जोरावरसिंह को १८ में लद्दाख की विजय के लिए भेजा। लद्दाख पर महाराजा का शासन स्थापित करने के बाद १८३५ में बालतिस्तान विजय की और पांच वर्ष बाद १८४० तिब्बत पर हमला किया। जब ल्हासा चीनियों को इस हमले की खबर मिली, पहले उन्होंने ३०० सैनिक भेजे, जिनमें अधिकांश पहली ही मुठभेड़ में मारे गये। इसके बाद चीनियों ने १०,००० की विशाल सेना भेजी। १० दिसंबर को तीर्थपुरी के पास तीन दिन तक युद्ध होता रहा और तीसरे दिन जोरावरसिंह ने कंधे में गोली लगने से वीरगति पायी; किंतु चीनियों को लद्दाख पर भारतीय प्रभुत्व स्वीकार करना पड़ा। श्योक नदी के उद्गम से गिलगित नदी के उद्गम तक का समूचा पर्वतीय प्रदेश भारतीय साम्राज्य का अंग बना और भारत की सीमा मध्य एशिया में चीनी साम्राज्य से स्पर्श करने लगी।

–V/१३५८, पंतनगर, नैनीताल, उ.प्र.

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्ययुग का महान इंजीनियर-राजनेता

अन्नपति सुय्य

• हरिदत्त वेदालंकार •

धरती का स्वर्ग कहलाने वाली सुरम्य कश्मीर-घाटी नौवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में वितस्ता (जेहलम) नदी में प्रतिवर्ष भीषण बाढ़ों के आने से नरक-तुल्य बन गयी थी। भारत की मीठे पानी की सबसे बड़ी झील महापद्म सरोवर (वुलर) में भी पानी की असाधारण वृद्धि हो जाने से उसके चारों ओर जलप्लावित एवं दलदली भूमि का क्षेत्र बढ़ रहा था, कृषियोग्य भूमि सिकुड़ रही थी और धान की पैदावार घट रही थी। इससे उत्पन्न भीषण महंगाई से जनता त्राहि-त्राहि कर रही थी। राजा अवंतिवर्मा (८५६-८८३ ई.) और उसके मंत्री किंकर्तव्यविमूढ़ थे।

ऐसी विषम परिस्थिति में सुय्य नामक कश्मीरी तरुण श्रीनगर के राजमार्गों पर और विद्वानों की गोष्ठियों में बाढ़ों की चर्चा छिड़ने पर बार-बार कहता था—'मेरे पास इस समस्या को सुलझाने की बुद्धि तो है, परंतु साधन नहीं हैं, मैं क्या करूं?' (धीरस्ति मे निरर्थस्तु किं कुर्यामिति सो ब्रवीत्—राजतरंगिणी ५·८०।) किंतु कोई उस पर विश्वास नहीं करता था, सब उसे पागल और सनकी (वातूल) समझते थे। उनके वैसा समझने के कारण भी थे।

एक तो सुय्य का कुल-गोत्र और माता-पिता अज्ञात थे। वस्तुतः सुय्या नामक चांडाली को सड़क पर झाड़ू देते हुए एक दिन मिट्टी का एक बड़ा-सा ढंका हुआ बरतन मिला। कुतूहलवश उसने उसे खोला, तो उसमें कमलपत्र जैसी बड़ी आंखों वाला एक सुंदर शिशु लेटा हुआ मिला, जो अपना अंगूठा चूस रहा था। सुय्या को यह समझने में देर नहीं लगी कि किसी अभागिनी माता ने इसे छोड़ दिया है। उसकी मातृत्व-ममता उमड़ पड़ी। उसने उस परित्यक्त शिशु को पाल-पोसकर बड़ा किया, उसे अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलवायी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम उद्योग की कई प्रकार से सेवा करते हैं।
हमसे संपर्क, करना आपको सदा लाभप्रद होगा।

(१) **पाईप्स**—जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इंडस्ट्रीज लि. खोपोली के विक्रेता और स्टाकिस्ट
(२) **अल्युमिनियम**—हम सभी प्रकार के शीटों और एक्सट्रुडेड सेक्शनों के लिए हिन्दालको के एजेन्ट हैं।
(३) **केबल**—युनिवर्सल केबल्स लि. सतना (म. प्र.) के महाराष्ट्र (विदर्भ, गोवा और गुजरात को छोड़कर) में बिक्री-एजेंट।
(४) **फायर होज**—जयश्री टेक्सटाइल एंड इंडस्ट्रीज लि. रिशरा (पं. बंगाल) द्वारा निर्मित, 'वरुण' फ्लैक्स पाइप व 'जयश्री' एंगस R. R. L. होज पाइप के स्टाकिस्ट और वितरक।

एशियन डिस्ट्रिब्यूटर्स लिमिटेड
क्वीन्स मेन्शन, तल मजला, प्रेस्काट रोड, बंबई-४००००१.
तार : "ADPIPE" **टेलेक्स : 011-2177** **टेलिफोन : २६६६०७...**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुय्या का यह पोषित पुत्र सुय्य अब किसी गृहस्थ के बच्चों को पढ़ाकर आजीविका चला रहा था। इस प्रकार समाज में अतीव निम्न स्थिति रखने वाले व्यक्ति की बातों पर लोगों का अविश्वास करना स्वाभाविक था। वैसे, उस अति निम्न सामाजिक स्थिति ने सुय्य को जनता की शोचनीय दशा का प्रत्यक्ष अनुभव कराया था और उसे बचपन से इस समस्या के प्रतिकार के उपाय सोचने के लिए भी प्रेरित किया था।

सुय्य की बातों पर लोगों के कान न देने का दूसरा कारण था जलप्लावन-समस्या की गुरुता। कल्हण ने अपनी राजतरंगिणी में लिखा है कि महापद्म सरोवर (वुलर) से प्रायः ही कश्मीर में बाढ़ें आया करती थीं, छोटी नदियां भी इस संकट में वृद्धि करती थीं। ललितादित्य मुक्तपीड (७२४-७६० ई.) ने बाढ़ों के नियंत्रण का प्रयत्न किया था। उसके समय में थोड़े-से पानी की निकासी हुई (किंचिदाकृष्टसलिलः), पैदावार भी कुछ बढ़ी। परंतु बाद में जयापीड जैसे निर्बल शासकों के समय में बाढ़ों का प्रकोप पुनः प्रबल हुआ; भूमि के जलप्लावित होने से खेती बरबाद होने लगी, पैदावार घटने से अनाज के भाव आसमान को छूने लगे। एक खारी (चार मन) धान का दाम २५० दीनार से बढ़कर १,०५० दीनार (उस समय प्रचलित तांबे का सिक्का जो १०० कौड़ियों के बराबर मूल्य रखता था) हो गया। दुर्भिक्ष की स्थिति उत्पन्न हो गयी।

इस विषम स्थिति को दूर करने के लिए आवश्यक था कि बाढ़ों पर नियंत्रण पाया जाये, पानी की निकासी की व्यवस्था की जाये, कृषिभूमि बढ़ायी जाये तथा सिंचाई का प्रबंध करके अनाज की पैदावार में वृद्धि की जाये। बड़ी विराट और विकट समस्या थी यह; और अकिंचन युवक सुय्य कह रहा था कि मैं इस समस्या का उपाय कर सकता हूं!

अंततः राजा अवंतिवर्मा को अपने गुप्तचरों से सुय्य की बातों का पता चला और उसने सुय्य को बुलाकर उसकी योजना पूछी। संभवतः उसके उत्तरों ने राजा को बहुत प्रभावित किया। उसने योजना को कार्यान्वित करने के लिए राजकोश से आवश्यक धनराशि सुय्य को देने का आदेश जारी कर दिया।

राजतरंगिणी के अनुसार, सुय्य स्वर्णमुद्राओं की एक बड़ी राशि लेकर नौका द्वारा पहले तो श्रीनगर के दक्षिण में स्थित मडव राज्य के नंदन (वेशौ नदी पर नंदी) नामक स्थान पर गया और वहां उसने सोने के सिक्कों से भरा एक पात्र पानी में फेंक दिया। इसके बाद वह श्रीनगर के उत्तर में क्रमराज्य में वितस्ता नदी पर स्थित यक्षदर (ग्यारदल) नामक स्थान पर गया, जो वराहमूल (बारामूला) से तीन मील दक्षिण में नदी के पूर्वी तट पर था। यहां पर उसने कई बार मुट्ठी भर-भरकर स्वर्णमुद्राएं पानी में फेंकीं। उसकी इन हरकतों से राजदरबारियों को पूरा विश्वास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया कि वह पागल है। उन्होंने राजा अवंतिवर्मा से चुगली खायी कि हम तो पहले ही आपसे कहते थे कि सुय्य का दिमाग ठिकाने नहीं है, अब उसने अपने पागल होने का सबूत दे दिया है।

किंतु शीघ्र ही सुय्य की बुद्धिमत्ता प्रमाणित हो गयी। ज्यों ही दुर्भिक्ष-पीड़ित ग्रामवासियों को वितस्ता के जल में स्वर्णमुद्राएं फेंकी जाने का समाचार मिला, वे सैकड़ों की संख्या में वहां आ पहुंचे और वितस्ता के जल को रोकने वाली चट्टानों को हटाते हुए उन स्वर्णमुद्राओं को खोजने लगे। इस स्थल पर वितस्ता का मार्ग दोनों ओर के पहाड़ों से गिरी शिलाओं से इस प्रकार अंट गया था कि नदी का पानी उलटी दिशा में अर्थात् वुलर झील की ओर बहने लगा था। दो-तीन दिनों में ही स्वर्णमुद्राओं के खोजी किसानों ने लगभग सभी चट्टानें नदी के मार्ग से हटा दीं और रुका हुआ पानी तेजी से बहने लगा।

एक कुषाण मूर्ति

इसके बाद सुय्य ने वितस्ता का पानी रोकने के लिए कारीगरों से एक बांध बनवाना शुरू किया। एक सप्ताह में बांध बन गया और नदी का सारा पानी उसके पीछे रुक गया। अब सुय्य ने बांध के आगे नदी के पाट (अधःप्रवाह) की अच्छी तरह सफाई करवायी और उसे गहरा करवाया। पत्थरों का गिरना रोकने के लिए उसने नदी के दोनों ओर तटबंध बनवाये और इसका प्रयास किया कि भविष्य में पहाड़ों से स्खलित होने वाले पत्थरों को नदी में गिरने से रोका जा सके। यह सब काम पूरा होने के बाद उसने नदी के बांध को तोड़ दिया।

कल्हण के शब्दों में, 'चिरकाल तक रुके रहने के कारण नदी अपने पति समुद्र से मिलने के लिए अतीव उत्कंठित होकर तेजी से उसकी ओर बहने लगी' (राज. ५.९३)। इससे कश्मीर की घाटी में अवरुद्ध अधिकांश जल की निकासी तेजी से होने लगी। पानी के बह जाने से कीचड़ और मछलियों वाली भूमि उसी प्रकार जल से बाहर आने लगी, जैसे मेघों के हट जाने पर नीला नभस्थल अपने विशुद्ध रूप में प्रकट होता है।'

बाढ़-नियंत्रण के लिए सुय्य ने जो दूसरा कार्य किया, वह था नहरें निकालना। वस्तुतः उसने समूची घाटी में घूमकर वितस्ता के प्रवाह का सूक्ष्म निरीक्षण किया और यह पता लगाया कि बाढ़ आने पर कहां-कहां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

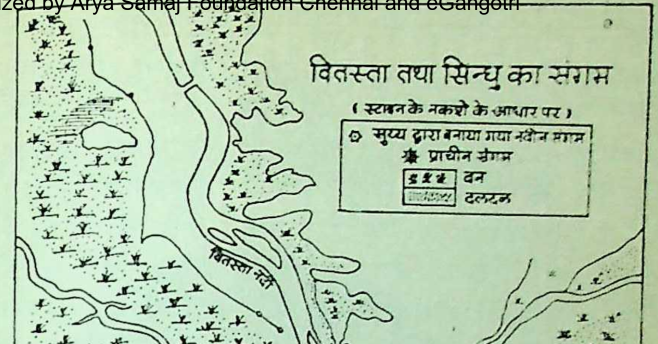

नदीजल कगार तोड़-कर चारों ओर फैल जाता है। ऐसे सभी स्थानों पर उसने नदी का अतिरिक्त पानी निकालने के लिए वितस्ता से छोटी-छोटी नहरें और जल-प्रणालियां बनवायीं। कल्हण के शब्दों में, एक मूल धारा से अनेक नहरें और धाराएं निकलने पर नदी उस काली नागिन की भांति शोभायमान हो रही थी, जिसके शरीर से अनेक फन निकले हुए हों (राज.५·९६)।

सुय्य ने बाढ़ रोकने के लिए जो तीसरा कार्य किया, वह था वितस्ता तथा सिंधु (जोजीला के निकट से निकलकर जेहलम से मिलने वाली एक छोटी नदी) नदियों के प्रवाह एवं उनके संगम-स्थान को बदलना। उन दिनों त्रिगामी (त्रेगांव) नामक स्थान के बायीं ओर से सिंधु और दायीं ओर से वितस्ता आती थी और उनका संगम वैन्यस्वामी के मंदिर के पास हुआ करता था। सुय्य ने दोनों नदियों के प्रवाह को परिवर्तित करके उनका संगम लगभग पांच मील नीचे श्रीनगर के पास परिहासपुर (शादीपुर) के निकट करवाया। राजतरंगिणी (४.१०१) से पता चलता है कि कल्हण के समय में भी उन नदियों के पुराने पाटों के तट पर उगे हुए जीर्ण पेड़ों के तनों पर मांझियों द्वारा रस्सों से नौकाओं के बांधे जाने के निशान देखे जा सकते थे, जिनसे उन नदियों के प्राचीन प्रवाह-मार्गों का पता चलता था।

नदियों का संगम-स्थल बदलने का यह कार्य बड़ा महत्त्वपूर्ण था। उस पर टिप्पणी करते हुए कल्हण ने कहा है कि उस समय सुय्य नदियों के प्रवाह को अपनी इच्छा के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

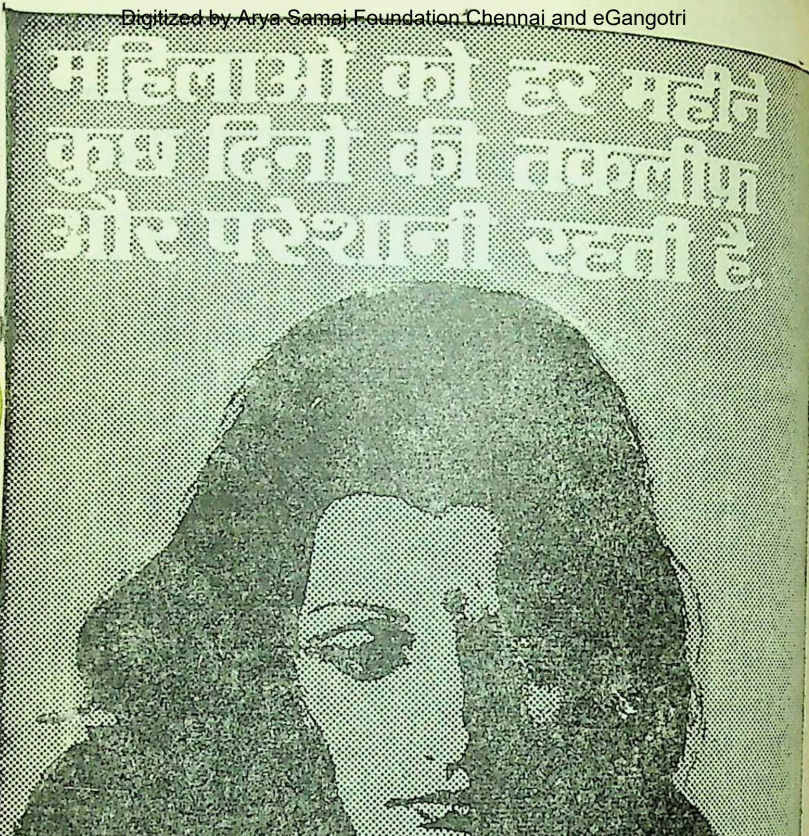

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनुसार काबू में करने में वैसे ही समर्थ था, जैसे मंत्र-तंत्र जानने वाला सपेरा नागिन को अपने वश में कर लेता है।

बाढ़-नियंत्रण तथा पानी की निकासी के लिए महापद्म सरोवर (वुलर) के जल पर नियंत्रण स्थापित करना भी अत्यंत आवश्यक था। गरमियों में बर्फ पिघलने पर तथा वर्षा ऋतु में वितस्ता में बाढ़ें आने पर महापद्म का पानी तटों को तोड़कर इर्द-गिर्द के इलाके को दूर-दूर तक जलमग्न कर देता था। सुय्य ने पहले तो झील का विस्तृत निरीक्षण करके उसके अधिक गहरे हिस्सों का पता लगाया, फिर उसने वितस्ता के प्रवाह को गहरे भाग की ओर लाने के लिए नदी के दोनों तटों पर सात-सात योजन (एक योजन=लगभग साढ़े चार मील) तक पत्थर वाले बांध बनवाये, ताकि नदी उनके अंदर बहते हुए ही महापद्म सरोवर में प्रवेश करे और उसके गहरे भाग में अपना जल डालते हुए उसमें से 'वैसे ही वेग से निकल जाये, जैसे धनुष से बाण तेजी से निकलता है।'

इस व्यवस्था से वितस्ता और महापद्म सरोवर का जल नियंत्रित होकर बहने लगा, जल में निमग्न बहुत-सी जमीन शुष्क होकर कृषि के योग्य बन गयी। साथ ही सुय्य ने महापद्म के पास बसे हुए गांवों की रक्षा के लिए वृत्ताकार बांध भी बनवाये थे। उन दिनों जनता इन गोल बांधों को 'कुंडल' कहती थी। कुंडलों के निर्माण से इस प्रदेश में बाढ़ का खतरा दूर हो गया और जनता को खेती के लिए पुष्कल मात्रा में भूमि प्राप्त हुई। इन सब उपायों से कश्मीर में बहुत दिनों से एकत्र हुआ सारा जल निकल गया। यहां तक कि नंदन (वर्तमान नंदी) में अगाध प्रतीत होने वाला जल भी कम हो गया और शीघ्र ही वहां धरती निकल आयी।

बाढ़-नियंत्रण की ये सब योजनाएं सफलतापूर्वक क्रियान्वित करके सुय्य ने सिंचाई की कुछ योजनाएं शुरू कीं। इनका आधार थी भूमि-परीक्षा। कश्मीर में ऐसे बहुत-से स्थान थे, जहां वर्षा बहुत कम होती थी। ऐसे इलाकों को उस युग की परिभाषा में 'अदेवमातृक' कहा जाता था। उसने अदेवमातृक ग्रामों की भूमि का विस्तृत सर्वेक्षण किया। जहां भी पानी की कमी थी, वहां उसने नदियों से नहरें निकालकर पानी पहुंचाया। विभिन्न गांवों से मिट्टी के नमूने मंगवाकर उसने उनकी जांच की और अपने अनुभव एवं सूझबूझ से यह पता लगाया कि किस जमीन में पानी कितनी देर में सूखता है और इसलिए उसे कितने समय बाद सिंचाई की जरूरत होगी। इसके आधार पर उसने निश्चय किया कि हर गांव में सिंचाई के लिए पानी की कितनी मात्रा की आवश्यकता होगी और किन दिनों में होगी। उसी के अनुसार गांवों को नहरों से स्थायी आधार (निरत्यय) पर पानी देने के लिए उसने वितस्ता, अनूला एवं अन्य नदियों से आवश्यक सिंचाई की व्यवस्था की।

बाढ़-नियंत्रण, पानी की निकासी और सिंचाई के इन नये आयोजनों से कश्मीर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घाटी में कृषियोग्य भूमि की ही नहीं, अपितु उत्पादन को भी असाधारण वृद्धि हो गयी। दुर्भिक्ष को दशा दूर हुई, सुभिक्ष और समृद्धि के स्वर्णयुग का श्रीगणेश हुआ। इसी का विवरण देते हुए कल्हण ने लिखा है कि कश्मीर की घाटी में अच्छी से अच्छी फसल होने पर भी धान की एक खारी का मूल्य २०० दीनार हुआ करता था; किंतु सुय्य के कर्तृत्व से यह चमत्कार हुआ कि एक खारी धान ३६ दीनार में अर्थात् पहले की तुलना में लगभग छह गुना कम दाम पर बिकने लगा (राज. ५.११६-१७)।

सुय्य द्वारा सोची और कार्यगत की गयी इन बहुमुखी योजनाओं के परिणामस्वरूप कश्मीर में अपूर्व समृद्धि से भरे जिस नव-युग का सूत्रपात हुआ, उसकी झलक हमें मिलती है 'ध्वन्यालोक' के रचयिता आचार्य आनंदवर्धन जैसे मनीषी के संरक्षक और 'मांधाता के समान पृथ्वी का पालन करने वाले' अवंतिवर्मा के शांतिपूर्ण शासन में। राज्य में संपन्नता आने पर अवंतिवर्मा ने वितस्ता नदी के एक अति सुंदर मोड़ पर श्रीनगर से पंद्रह मील दक्षिण-पूर्व में अवंतिपुर (वांतिपुर) नाम से नयी राजधानी बसायी और वहां अवंतिस्वामी, अवंतीश्वर, त्रिपुरेश्वर, भूतेश और विजयेश के मंदिर बनवाये। ऑरेल स्टाइन के मतानुसार, इन मंदिरों के खंडहर कश्मीर की वास्तुकला के भव्यतम स्मारक हैं और अपने निर्माता राजा की आर्थिक समृद्धि को सूचित करते हैं।

अपने जीवन-काल में ही सुय्य को प्रभूत सम्मान और यश मिला। उसे भगवान अन्नपति का अवतार और एक ही जन्म में कई अवतारों का काम एक साथ करने वाला लोकोत्तर व्यक्ति माना गया। कल्हण ने लिखा है कि अवंतिवर्मा के पुण्य-प्रताप से प्राणियों की प्राणरक्षा के लिए सुय्य के रूप में भगवान अन्नपति इस धरती पर स्वयं अवतीर्ण हुए (राज. ५·७२)। कश्मीर के जन्मदाता कश्यप ने तथा संकर्षण ने भी कश्मीर पर इतने उपकार नहीं किये थे, जितने सुय्य ने किये।

कवि कल्हण ने सुय्य की प्रशंसा करते हुए उसे विष्णु के अवतारों से ऊंचा स्थान दिया है और यहां तक कहा है कि भगवान विष्णु ने चार अवतार धारण करके चार जन्मों में जो महान कार्य संपन्न किये, वे सुय्य ने एक ही जन्म में कर डाले। विष्णु ने वराहावतार में जलमग्न भूमि का उद्धार किया था; परशुराम के रूप में क्षत्रियों का विध्वंस करके ब्राह्मणों को भूमि का दान किया था; राम के रूप में सेतुबंध का महान कार्य किया था; कृष्णावतार में कालिय नाग का दमन किया था। किंतु सुय्य ने एक ही जन्म में वितस्ता और महापद्म सरोवर के जल में निमग्न कश्मीर की धरती का उद्धार किया; उसे कृषि के योग्य बनाकर ब्राह्मणों को दान दिया; वितस्ता की बाढ़ का नियंत्रण करने के लिए नदी के तटबंध और सेतुबंध बनाये; तथा महापद्म सरोवर के जल का नियमन करके उसमें रहने वाले

[शेष पृष्ठ १४४ पर]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर बनना है आपको?

क्या आपको अपने रूप-रंग से पूरा संतोष है? क्या कभी आपकी इच्छा नहीं होती कि आपकी भी क जैसी नीली आंखें होतीं, या ख जैसे सुडौल चमकीले दांत होते, या ग जैसे घने-घुंघराले बाल होते?

अधिक अच्छे रूप और रंग की कामना दुनिया के हर इंसान के दिल में कुलबुलाया करती है। इसी कामना की कृपा से तो सौंदर्य-प्रसाधन का करोड़ों रुपये का व्यवसाय सारी दुनिया में चल रहा है, जिससे हजारों-लाखों की रोजी-रोटी चलती है। इसी कामना के कारण तो हर थोड़े दिन बाद वेशभूषा और शृंगार के फैशन एकाएक बदल जाया करते हैं।

यदि आप अपने रूप-रंग से असंतुष्ट हैं और उसे सुधारने के लिए प्रयत्नशील हैं, तो संभव है आपका यह प्रयत्न गलत दिशा से चल रहा हो, यानी मुखड़े के बाहर की ओर से। शायद क्रीम-पाउडर और रूज पर, केशसज्जा पर (यदि आप पुरुष हैं तो हेयर-कट और भड़कीली टाइयों पर) आपका बहुत-सा पैसा खर्च हो रहा है, मगर आपको संतोष नहीं मिल पा रहा है।

असल में शायद आपके रूप-रंग को इन बाह्य साधनों के बजाय आंतरिक सहारे की आवश्यकता है। मेरा मतलब आत्मविश्वास से नहीं है। मेरा मतलब है अच्छे हृदय से। शायद आपका हृदय आपके चेहरे को सहारा नहीं दे रहा है। तमाम क्रीम-पाउडर, वेश-भूषा एवं केशसज्जा के पीछे से झांककर, वह आपका हुलिया बिगाड़ देता है। चतुरतम सौंदर्य-सज्जाकार और दक्षतम दर्जी भी हृदय को ऐसा करने से रोक नहीं सकते। आपके चेहरे के पीछे जो चीज है वह अगर असुंदर है, तो दुनिया को वह दिख ही जायेगी, भले आप उसे छिपाने की लाख कोशिश करें।

इसलिए अगर आपको सुंदर बनना है, तो अपने चेहरे के पीछे से प्रयत्न आरंभ कीजिये। प्रतिदिन अपने हृदय की शृंगार-सज्जा कीजिये।

सौंदर्य को निखारने का एक बेजोड़ नुस्खा यहां दिया जा रहा है। अगर आप लगन के साथ इसका उपयोग करेंगे, तो आपके चेहरे में चमत्कारी परि-

एम. जे. रीडिंग
['मीरा' में 'यूनिटी' से उद्धृत]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्तन आ जायेगा। पर हां, नुस्खे में बताया लेप आपको खुद तैयार करना पड़ेगा। वह कहीं बना-बनाया बिकता नहीं है। न किसी और से उसे बनवाया जा सकता है। उसमें पड़ने वाली चीजें बाजार में नहीं बिकतीं; फिर भी हैं वे सर्वथा सुलभ। यह लेप स्त्री-पुरुष सभी के लिए एक-सा उपयोगी है।

अब लीजिये नुस्खा :

एक : भरपूर मात्रा में प्यार लीजिये। जितना अधिक लें, उतना अच्छा। यह मृदुताकारी है। इसके बिना नुस्खा बेकार।

दो : मुट्ठी-भर सहृदयता मिलाइये। यह चिकनाई देगा। इससे घर्षण मिटेगा। इसके बिना मामला गड़बड़ा जायेगा।

तीन : ढेर सारी प्रसन्नता उड़ेलिये। यह मनहूसियत दूर करके आनंद फैलायेगी।

चार : करुणा को मत भुलाइये। मगर हां, उसके उपयोग में विवेक जरूरी है।

पांच : अब विनोद को बड़ी-सी डली इसमें घोंट दीजिये। विनोद जीवन में वही काम करता है, जो कि भोजन में मसाला।

छह : खूब सारा सब्र मिलाइये। इससे सफलता का मार्ग प्रशस्त होगा।

सात : दूसरों के प्रति विश्वास की भावना काफी मात्रा में मिलाइये। इससे महत्त्वाकांक्षा को बल मिलेगा, प्रयत्न पुष्ट होगा।

आठ : पर्याप्त मात्रा में आशा घोलिये। यह मायूसी को भगायेगी।

नौ : इनके साथ खूब सारा साहस मिलाइये जो आपको पीला पड़ने से बचायेगा।

दस : जितनी भी मुस्कान बटोर सकें, बटोरकर इस पर छिड़क दीजिये। जैसे अचार-मुरब्बे से बेस्वाद भोजन का बेस्वादपन छिप जाता है, उसी तरह मुस्कान भी बहुत-सी न्यूनताओं को छिपा देती है।

ये सब चीजें जब आपस में अच्छी तरह मिलकर बढ़िया गुलाबी क्रीम का रूप धारण कर लें, तब प्रतिदिन अपने हृदय पर इसका लेप किया करें। जरा मोटा लेप लग जाये तो कोई हर्ज नहीं। लगा रहने दीजिये, वह भी जज्ब हो जायेगा।

इसके बाद अच्छी तरह मालिश कीजिये और कम से कम एक घंटा कसरत कीजिये। किसी को स्नेह दीजिये। किसी का कोई हित कीजिये। ज्यादा नहीं तो जब आपने पूरा तांगा किराये पर किया हो और उसमें सीट खाली हो, उसी राह पैदल जाते किसी को बुलाकर बैठा लीजिये। यह भी संभव नहीं तो दो मीठे शब्द ही बोलिये। हंसिये-हंसाइये। रोजमर्रा के जीवन में विनोद के काफी अवसर रहते हैं, उन्हें हाथ से चूकने न दीजिये। दूसरों के दोषों को सब्र से सहार लीजिये। (आखिर हम सब जानते हैं कि स्वयं हम कितने दोषों से भरे हैं!) दूसरों में आस्था रखिये। सदा शुभ-मंगल की आशा रखिये। जीवन का साहसपूर्वक सामना कीजिये। मुस्कराइये।

इन निर्देशों का निष्ठा से पालन कीजिये। थोड़े समय में आपको भीतर से अनुभव होगा कि आपका रूप-रंग निखर रहा है और जब आप आईने में झांकेंगे, तब आपका बदला हुआ मुखड़ा उसकी पुष्टि करेगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्रह साल पहले की बात है। मैं अपने फ्लैट में बैठा हुआ था कि टेलिफोन की घंटी घनघना उठी। उस समय मेरी उम्र पचास साल पार कर चुकी थी। मैं विधुर था और वर्षों से जज का काम कर रहा था। मैंने टेलिफोन का चोंगा उठाया।

'हेलो! ......' बड़ी अच्छी और आकर्षक आवाज थी, जिसे मैं नहीं पहचानता था। 'कहिये!' मैंने कहा!

'मैं एंजेला बोल रही हूं। छोटी-सी छबीली इतालवी गुड़िया।'

'कौन हो तुम ?'

'बस, एंजेला। छोटी-सी छबीली इतालवी गुड़िया।'

'मुश्किल है! मैं किसी भी छोटी-सी छबीली इतालवी गुड़िया को नहीं जानता। यह तो छोटी-सी गुड़िया है, मैं बड़ी-बड़ी गुड़ियाओं को भी नहीं जानता।' किसी भी ऐसी लड़की को नहीं जानता, जिसकी आवाज इतनी अच्छी हो। किसी एंजेला को जानने के लिए मैं उत्सुक हो उठा। मुझे अपनी बुआ एंजेला याद आ गयी, जिन्हें मरे एक जमाना गुजर चुका है। साफ बात थी कि किसी छोटी-सी छबीली ने गलत नंबर डायल किया है।

गलत नंबर वाली बात बतलाकर मैं बातचीत खत्म करने जा रहा था कि मेरे दिमाग में बहुत-सी बातें मचलने लगीं। इन बातों का खयाल था, जैसे कि उस इतालवी लड़की से मिलना पसंद करूंगा। जैसी मीठी उसकी आवाज

चित्र : कमलाक्ष शेणै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंग्रेजी कहानी :

अगर ऐसा हुआ होता

—हेनरी सिसिल

है, अगर वैसा ही मनोहर उसका रूप है तो निश्चय ही वह युवती अद्वितीय है। मगर पचास-पार की उम्र वह उम्र है जब लोग, चाहे वे विधुर ही क्यों न हों, इतालवी लड़की के साथ देखे नहीं जाते—भले ही वह लड़की आवाज में, रूप में, आकृति में, चाल-ढाल में निराली ही क्यों न हो। गलत नंबर पर फोन जारी रखने का लाभ यह होगा कि उससे मुलाकात हो जायेगी। मगर मुसीबत यह है कि ऐसी जगहें बहुत कम हैं, जहां पचास साल से ऊपर के लोग सुंदर नवयुवतियों के साथ मुलाकात-बात कर सकें। एक ओर आनंद है, दूसरी ओर दर्द है। कुछ तो करना ही होगा।

मस्तिष्क बड़ी तेजी से काम करने लगा और विचारों को शीघ्र साकार रूप दिया गया। मैंने पाया कि एंजेला की आंखों में आमंत्रण है, उसके काले केश चमक रहे हैं। मैंने सोचा कि अगर मैं सेवानिवृत्त जज...... से अनुरोध करूं, तो वे मेरा काम कर देंगे।

'अगर मैं एक दिन की छुट्टी ले लूं, तो क्या तुम मेरे साथ खाना खाओगी ?'

'वह अवसर तो बड़ा प्यारा होगा।'

'एक बात है तो बेवकूफी की, मगर कहनी ही पड़ रही है। मैं तुम्हारा पता भूल गया हूं। ...... हां-हां, मैं साढ़े बारह बजे तुम्हारे पास पहुंच जाऊंगा। मगर तुम मेरी प्रतीक्षा करती रहना; क्योंकि वहां गाड़ी पार्क करना कठिन है और मैं गाड़ी पर ही रहूंगा।......अच्छा, तो फिलहाल बाइ-बाइ !'

तो मेरा साहसिक तिकड़म शुरू हो गया। अब अगला कदम आसान है।

'हेलो, मैं जज डीन से बात करना चाहता हूं। अच्छा तो आप जार्ज हैं। आशा है, आप मेरा एक काम कर देंगे। क्या आज आपको कोई खास काम है ? ...... यह तो बड़ी अच्छी बात हुई। अगर आज मेरी कचहरी आप ले पायें। ...... ठीक है, बहुत-बहुत धन्यवाद ......नहीं-नहीं, मैं ठीक-ठाक हूं, मेरी तबीयत ठीक है।......बात यह है कि मैं......मैं......मुझे एक अच्छा-सा आकर्षक निमंत्रण मिला है और मैं उसे छोड़ना नहीं चाहता। ...... धन्यवाद।'

बात कुछ गलत थी, क्योंकि डिप्टी जज की फीस मुझे अपनी जेब से देनी पड़ेगी। मगर क्या इसमें सचमुच नुक्सान था ? अगर किसी जज को बढ़िया-सा अवसर मिल रहा हो तो वह चूके क्यों ? जनता अक्सर कहती है जज लोग बड़े रूखे और गंवार किस्म के

अनुवाद : राधाकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते हैं। अगर मैं एंजेला के साथ थोड़ी सैर कर लूं, तो मेरा गंवारूपन कुछ कम हो जायेगा।

वह दरवाजे की सीढ़ी पर खड़ी मेरी प्रतीक्षा कर रही थी और बिलकुल वैसी ही थी, जैसी कि मैंने उसकी कल्पना की थी।

'गुड मार्निंग !' मैंने कहा।

'गुड मार्निंग !' उसने मित्रवत् कहा, यद्यपि उसकी ध्वनि से आश्चर्य अभिव्यक्त हो रहा था।

'एंजेला', मैंने कहा–'मुझे क्षमा करो, क्योंकि तुम्हारी आवाज सुनकर मैं अपने आपको नहीं रोक पाया। तुमने आज सवेरे रिंग किया था!'

'मगर', उसने कहा, फिर हंस पड़ी–'अच्छा तो यह बात है!...... मगर आप तो मुझे जानते भी नहीं।'

'मैं तुम्हें पसंद करता हूं।' मैंने कहा–'मेरे साथ लंच के लिए चलोगी?'

'मैंने ऐसा काम पहले नहीं किया है।' वह बोली।

'और मैंने भी ऐसा काम पहले नहीं किया है।' मैंने कहा–'हम लोगों को कहां चलना चाहिये?'

आश्चर्य है कि उसे बढ़िया भोजन के मामले में अच्छी जानकारी थी। उसने उसी रेस्तरां का नाम लिया, जो लंदन-भर में स्वादिष्ट भोजन के लिए प्रसिद्ध था। अगर आपको रसीले और स्वादिष्ट भोजन से दिलचस्पी है, तो आप भी उसी रेस्तरां को पसंद करेंगे। सचमुच वहां हम लोगों को लाजवाब खाना मिला। जब तक [illegible] सामने भोजन और सुरा नहीं [illegible] हम खुशी-खुशी बातें कर रहे थे। मुझे [illegible] हुआ कि वह सत्ताईस साल की है, [illegible] हुई है और छुट्टी बिताने के लिए [illegible] आयी है। बड़ी मौज-मस्ती के [illegible] अपना समय व्यतीत कर रही थी। [illegible] जीवन में जवानी एक ही बार तो [illegible]

'मगर पुरुषों पर यह बात लागू नहीं [illegible] उसने कहा--'पुरुष सदा जवान रहते हैं।

मेरे लिए यह ताज्जुब की बात [illegible] मेरे बारे में उसे कुछ भी मालूम नहीं [illegible] मैंने उससे कहा कि मेरा नाम जार्ज [illegible] है और मैं शेयर की दलाली का धंधा [illegible] हूं। अपनी बातों में मैंने यह भी जोड़ [illegible] मैंने तुम्हारी जितनी शानदार लड़की [illegible] तक नहीं देखी और मैं विधुर हूं।

'मगर', उसने कहा–'मेरे बारे में [illegible] आश्वस्त क्यों थे? टेलिफोन तो [illegible] बोलता है।'

'मगर इस बार वह झूठ नहीं बोला' मैंने कहा।

हम लोगों ने खाना खत्म किया और टहलने के लिए हाइड पार्क में गये। [illegible] प्यारा दिन था और मैं अपने आपको [illegible] महसूस कर रहा था। बहुत सारे [illegible] पर हमने बातें कीं–संगीत, चित्र[illegible] पर्वतारोहण, और सारी बातों के बाद [illegible] की बात।

'मुझे प्यार हो गया है।' उसने कहा।

'वह पुरुष बड़ा भाग्यवान होगा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'ओह, वह कोई व्यक्ति नहीं है। मुझे जीवन की उन सारी चीजों से प्यार है, जो जीवन से संबंध रखती हैं। उनमें आप भी सम्मिलित हैं।'

मैंने उसका हाथ थाम लिया। मुझे इस बात की परवाह नहीं थी कि मेरी कचहरी के पेशकार और नाजिर और क्लर्क मेरे बारे में क्या सोचेंगे। जिस लड़की से आज तक कभी नहीं मिला था, उसके साथ हाथ में हाथ डालकर मैं इधर-उधर चक्कर लगाता रहा। मगर मुझे और भी कई अच्छी चीजों के बारे में विचार करना था।

'आज की रात भी खाना मेरे साथ ही खाओ तो कैसा रहेगा?'

'बड़ी प्यारी बात होगी।' वह बोली।

मैंने उसे आठ बजे बुलाया और हम लोग एक बड़े-से होटल में पहुंचे। खाते समय वह बड़ी तेज बातें कर रही थी; मगर उससे भी ज्यादा तेजी उसकी आंखों में थी। एक क्षण के लिए मैंने सोचा कि अगर कोई गवाह उन आंखों को देख ले, तो कोई जज क्या कर पायेगा? इस लड़की पर अविश्वास भी कैसे किया जाये?

एक गिलास ब्रांडी पीने के बाद मैंने उसके निकट पहुंचने का मार्ग बनाया।

मैंने कहा—'मैं अपने साथ एक सूटकेस भी लाया हूं।'

'बड़ी अच्छी बात है!' उसने जवाब दिया—'साथ में सामान देखकर वे लोग प्रसन्न होंगे।'

मैं इस बात से खुश था कि उसे मनाने की

चीनी मिट्टी के पात्र पर अंकित
एक पनामाई चित्र की अनुकृति।

जरूरत नहीं पड़ी। ऐसी स्थिति में आप इसे जोर-जबर्दस्ती भी नहीं कह सकेंगे। आखिर वह सत्ताईस साल की थी और अपनी देखभाल स्वयं कर सकती थी।

खाने-पीने के बाद मैं कोई कमरा बुक कराने के लिए स्वागत-कक्ष में गया। जैसे ही मैंने अपना नाम बतलाना चाहा कि पीछे से आवाज आयी—'हेलो सर, आप जज साहब हैं न?'

मैं एकदम पीछे की ओर घूम गया। चेहरे पहचानने के मामले में मेरी स्मरण-शक्ति अच्छी नहीं है और मैं उस आदमी को नहीं पहचान पाया। मगर यह बात भी ठीक थी कि वह मुझे पहचानता था।

'गुड ईवनिंग।' मैंने कहा—'मुझे बहुत अफसोस है कि मैं अभी आपका नाम नहीं याद कर पा रहा हूं।'

'आपको याद नहीं आयेगा।' उस व्यक्ति ने कहा—'जब आप वकालत करते थे, उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय एक वार आप मेरी ओर से खड़े हुए थे। इस वात को मैं भूल नहीं पाया हूं, क्योंकि मुकद्दमा बुरी तरह से उलझा हुआ था और आपने मुझे छुड़ा लिया। जव आप जज नियुक्त हुए, उस समय मैं आपको बधाई भेजने वाला था, मगर फिर सोचा कि आपको मेरी याद नहीं होगी। और आखिर आज वही वात हुई। आज आप मुझे पहचान नहीं सके।'

मैंने कहा–'मुकद्दमा तो मुझे याद रह जाता है, मगर आदमियों के नाम मुझे याद नहीं रहते।'

और इसी समय एंजेला मेरे पास आयी। वह एकदम मेरे पास आ गयी थी, इसलिए मुझे कुछ करना जरूरी था। जज होने के नाते मैं जानता था कि ऐसे समय में किस तरह निबटा जाता है।

उस आदमी की ओर देखते हुए मैंने कहा–'ये हैं मिस्टर.....'

'क्रोथ्र ेान।' उसने वात पूरी की।

'ये मिस्टर क्रोथ्र ेान हैं।' मैंने क... मिस.....' और मैंने एक खास ... की आवाज की। स्वर और व्यंजन ... और गले की मिली-जुली आवाज। ... उस समय एंजेला न आ गयी होती ... शायद मैं भाग चुका होता। मगर ... उसे देखा, तो मुझे लगा कि इसके लि... भी खतरा झेला जा सकता है। कुल मि... कर मैं क्रोथ्र ेान से विरक्त हो उठा।

उसके वाद मैंने एक कमरा बुक क... और हम दोनों वहां गये। जव मैंने दर... वंद करके एक मजेदार रात को अपने ... देखा, तो मुझे याद आया कि मैं इसका ... भी नहीं जानता। मैंने उससे नाम पूछा।

'वस, एंजेला, छोटी-सी इतालवी ल...'

'मुझे खेद है।' मैंने कहा–'आपने ... नंबर रिंग किया है।' और मैंने रिसीवर ... यथास्थान रख दिया।

[पृष्ठ १३६ का शेष]

नाग का दमन किया।

सुय्य ने अपनी जननी सुय्या की स्मृति में सुय्याकुंडल नामक गांव निर्माण करके ब्राह्मणों को दान में दिया। सुय्यासेतु नाम का पुल भी उसने अपनी माता की स्मृति में बनवाया। कृतज्ञ कश्मीरी जनता ने भी अपने इस उपकर्ता विश्वकर्मा (इंजीनियर) की स्मृति को अक्षुण्ण रखने के लिए सुय्य-पुर नाम की बस्ती उस स्थल पर ब... जहां वितस्ता महापद्म सरोवर (वुल...) ... निकलती है। वहां मछलियों और प... को न मारने की व्यवस्था (अमारन...) करके प्राचीन अभयारण्यों की परंप... पुनरुज्जीवित किया गया। सुय्यपुर आ... सोपुर नाम से मौजूद है और नवम ... के उस महान इंजीनियर का अमर स्म... बना हुआ है। –पंतनगर, नैनीताल, उ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखी, सुनी और बीती घटनाएं

अमृता प्रीतम

जीवन की देखी, सुनी या बीती घटनाएं कब और किस प्रकार लेखक की रचना का अंश बन जाती हैं—कभी चेतन तौर पर और कभी बिलकुल अचेतन तौर पर—यह किसी हिसाब की पकड़ में नहीं आता।

विशेषकर अचेतन तौर पर जो अनुभव किसी रचना का अंश बन जाता है, वह कई

लेखिका की आत्मकथा 'रसीदी टिकट' का एक अंश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार अपनी आंखों के लिए भी एक अचंभा-सा हो जाता है।

रवींद्रनाथ ठाकुर से जब भेंट हुई थी, बहुत छोटी थी। कविताएं तब भी लिखती थी, पर बचकानी-सी। उन्होंने जब एक कविता सुनाने के लिए कहा तो सकुचाकर सुनायी थी; मगर उन्होंने जो प्यार और ध्यान दिया था, वह कविता के अनुरूप नहीं था, उनके अपने व्यक्तित्व के अनुरूप था। उसका प्रभाव मुझ पर गहरा हुआ। फिर जब रवींद्रनाथ ठाकुर की जन्म-शताब्दी मनायी जाने वाली थी, तब मैंने उन पर एक कविता लिखनी चाही। कुछ पंक्तियां लिखी भी, पर तसल्ली नहीं हुई। फिर मैं मास्को चली गयी (१९६१ में)। वहां जिस होटल में ठहरी थी, उसके सामने मायाकोव्स्की का बुत बना हुआ था; और जिस जगह वह होटल था, उसका नाम गोर्की स्ट्रीट था।

एक रात की बात—लगभग दस बजे होंगे, मैंने होटल की खिड़की से देखा कि एक जन-समूह मायाकोव्स्की के बुत के गिर्द इकट्ठा है। ज्ञात हुआ कि कई नौजवान कवि प्रायः रात के समय वहां आकर खड़े हो जाते हैं और बुत के चबूतरे पर खड़े होकर कभी मायाकोव्स्की की कोई कविता पढ़ते हैं, और कभी अपनी। रास्ता चलते लोग उनके इर्द-गिर्द आकर खड़े हो जाते हैं और कविताएं सुनते हैं, फरमाइशें भी करते हैं; और इस प्रकार यह खुला कवि-सम्मेलन आधी रात तक चलता रहता है। हवा ठंडी लगने लगे तो लोग अपने कोटों के कालर ऊपर पलट लेते हैं, मेंह बरसने लगे तो सिर के ऊपर छतरी तान लेते हैं।

मैं भी कोट पहनकर कुछ देर के लिए उस खुले कवि-सम्मेलन में चली गयी। यों रूसी भाषा का एक भी शब्द मेरी समझ में नहीं आया, पर उनके स्वर की गरमाहट मेरी समझ में जरूर आयी। जब मैं अपने कमरे में लौटी मेरे सामने रवींद्रनाथ ठाकुर का चेहरा भी था, मायाकोव्स्की का भी और गोर्की का भी—सारे चेहरे मिश्रित हो गये, जैसे एक हो गये हों। और उस रात रवींद्रनाथ वाली कविता पूरी हो गयी:

महरम इलाही हुस्न दी,
क़ासद मनुक्खी इश्क़ दी,
एह क़लम लाफ़ानी तेरी,
सौगात फ़ानी जिस्म दी......
[हमराज दैवी सौंदर्य की,
संदेशवाहक मानव-प्रेम की,
यह लेखनी अमर तेरी,
सौगात भंगुर देह की ......]

०००

'आक के पत्ते' उपन्यास में उसका मुख्य पात्र जब रोज शाम के समय स्टेशन जाकर आने वाली गाड़ियों में अपनी खोयी हुई बहन का चेहरा ढूंढ़ता है, तो एक दिन अ... यास ही उसके पैर उसे अपने गांव ... वाली गाड़ी के अंदर ले जाते हैं। जाड़े के दिन, कोई गरम कपड़ा पास नहीं, वह ... की ठंड में गुच्छा-सा बैठ जाता है। वि... में डूबा हुआ उसका मन नींद में भी ... जाता है। एक स्टेशन पर गाड़ी रुकती है ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतरने-चढ़ने वाली सवारियों की आहट से वह जाग उठता है—देखता है, उसके गिर्द एक रजाई लिपटी हुई है.....एक बड़े नरम-से चेहरे का बूढ़ा आदमी पास की सीट पर बैठा हुआ है एक खेस लपेटे हुए, अपनी रजाई उसे उढ़ाकर।

एक दिन अचानक इस उपन्यास का यह अंश सामने आया तो याद आया—यह उपन्यास लिखने के चार वर्ष पहले मैं जब रुमानिया से रेलगाड़ी में बल्गारिया जा रही थी, रात बहुत ठंडी थी, पास में अपने कोट के सिवा कुछ नहीं था, वही घुटने जोड़कर ऊपर तान लिया था। फिर भी जब उसे सिर पर खींचती थी तो पैरों को ठिठुरन लगती थी, पैरों पर डालती थी तो सिर और कंधों को ठंड लगती थी। न जाने कब मुझे नींद आ गयी—लगा कि सारे शरीर में गरमी आ गयी है। बाकी रात खूब गरमाइश में सोती रही। तड़के जागी तो देखा—मेरे डिब्बे में सफर करने वाले एक बल्गारियन आदमी ने अपना ओवरकोट मुझ पर रजाई की तरह डाल दिया था।

यह घटना मैंने चेतन तौर पर इस उपन्यास में नहीं डाली थी; पर लिख चुकने के कितने ही वर्ष बाद जब पढ़ा तो लगा कि उस रात की गरमाइश मेरी रगों में कहीं एक अमानत की तरह पड़ी हुई थी।

०००

'यात्री' उपन्यास १९६८ में लिखा था। उसकी एक पात्र सुंदरां बिलकुल कल्पित थी। मैं मुख्य पात्र की जन्मकथा जानती थी, उसके संबंध में लिखा भी था—'नायक को जानती हूं, उस दिन से जिस दिन उसे साधुओं के किसी डेरे में चढ़ाया गया था। बहुत बरसों की बात है, पर अब भी ध्यान आ जाती है तो बहुत तराशे हुए नक्श वाला उसका सांवला चेहरा, उसकी सारी उदासी के समेत, आंखों के सामने आ जाता है। पर सुंदरां मेरी कल्पना से निकलकर इस उपन्यास के पृष्ठों में उतरी थी, और मेरी समझ में नहीं आता था कि सुंदरां का पात्र चित्रित करते समय मेरी आंखें क्यों भर-भर आती रही थीं?'

उपन्यास लिखकर सबसे पहले इमरोज को सुनाया था, और सुनाते-सुनाते जब सुंदरां का जिक्र आया, मेरे अपने कलेजे को जैसे किसी ने कचोट लिया। फिर यह उपन्यास हिंदी में उल्था हुआ। हर अनुवाद छपने से पहले सुना करती हूं। इसे सुनते समय जब फिर सुंदरां की बात आयी तो मैं बेचैन हो गयी।

उपन्यास हिंदी में छप गया। तब १९६९ था। पंजाबी में दो वर्ष बाद छपा था १९७१ में, और उसके प्रूफ देखते समय फिर जब सुंदरां आयी तो मैं व्याकुल हो गयी।

अपने आपको, इस अपने दिल में पड़ने वाली कसक का कुछ पता नहीं लगता था। पर १९७३ में इस उपन्यास का अंग्रेजी में अनुवाद हो रहा था। उस समय जब सुंदरां सामने आयी तो ऐसा प्रतीत हुआ, जैसे मैं स्वयं अपनी नब्ज देख रही हूं......

लेखक के अपने जीवन की घटनाएं उप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्यासों, कहानियों के पात्रों में सदा ढलती हैं, छाती में से उठती हैं कागजों पर जा उतरती हैं। परंतु यह सुंदरां इसके विपरीत अनुभव है—यह कागजों से उठकर मेरी छाती में उतर गयी थी। और अचानक लगा—जैसे घोर अंधेरे में एकाएक दिया जल उठे—कि यह सुंदरां तो मैं हूं ......

'मैं' को मैंने चेतन तौर पर सुंदरां में नहीं ढाला था, इसलिए कई वर्ष तक इसे पहचान नहीं सकी थी। यह अपना अस्तित्व मुझे भीतर ही भीतर खरोंचता था। मैं मन की तहों को टटोलती थी, फिर भी यह पहचान में नहीं आता था। पर जब पहचान में आया, तो अपना एक-एक विचार तक पहचान में आ गया ......

सुंदरां जब मंदिर में जाकर शिव और पार्वती के चरणों पर फूलों की झोली उलटती है, ताकि जब शिव-पार्वती के चरणों पर माथा नवाये तब फूलों के ढेर के नीचे से बांह फैलाकर मूर्तियों के पास खड़े हुए अपने प्रिय के पैरों को भी हथेली से छू ले, और उसके हाथ पर किसी की नजर भी न पड़े—तो लगा, यह मैं हूं, जो अनेकों वर्ष एक चेहरे की इस प्रकार कल्पना करती रही कि अक्षर ही अक्षर फूलों के ढेर की भांति अंबार लगा दिये और उनके नीचे से बांह ले जाकर किसी को इस तरह छू लेना चाहती थी कि ऊपर से किसी देखने वाले को दिखाई न दे।

सुंदरां बहुत समय तक—चुपचाप—फूल चुनती रही, और सबकी चोरी से अपने प्रिय के पैर छूती रही। मैं अनेक वर्षों तक कविताओं के अक्षर जोड़ती रही, और चुप... अपने प्रिय के अस्तित्व को छूती रही...

सुंदरां का प्रिय जीता-जागता था—पत्थर की मूर्ति के समान था, जिसे सुंदरां के मन का सेक नहीं पहुंचता था। और मैं भी अनेक वर्षों तक सुंदरां की जगह पर खड़ी रही थी—मेरे मन का सेक भी कहीं नहीं पहुंचता था, एक पत्थर-जैसी चुप्पी से टकराता था और सुलगता-बुझता फिर मेरे पास ही लौट आता था।

सुंदरां जब शरीर पर विवाह का जोड़ा और नाक में सोने की नथ पहनकर मंदिर में अपने प्रिय को अंतिम प्रणाम करने के लिए आती है, कुछ आंसू ढुलककर उसकी नथ के तार पर अटक जाते हैं—मानो नथ की आंखों में आंसू भर आये हों—तो यह सुंदरां मैं थी, मेरे हर छाप-छल्ले की आंखों में इस तरह आंसू भर-भर आते थे ......

ओ खुदाया! कभी अपना आपा भी अपने से किस तरह छिप-छिप जाता है!... यह अचेतन मन का कैसा खेल है!

000

पूरे ग्यारह वर्ष की नहीं थी, जब मां मर गयी थी। मां की जिंदगी का आखिरी दिन मुझे पूरी तरह याद है। 'एक सवाल' उपन्यास में कथा-नायक जगदीप मरती हुई मां की खाट के पास जिस तरह खड़ा हुआ है, उसी तरह मैं अपनी मरती हुई मां की खाट के पास खड़ी हुई थी और मैंने जगदीप की भांति एकाग्र-मन होकर ईश्वर से कहा था—'मेरी मां को मत मारो!' और मुझे...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगदीप की तरह विश्वास हो गया था कि अब मेरी मां की मृत्यु नहीं होगी, क्योंकि ईश्वर बच्चों का कहा नहीं टालता......पर मां की मृत्यु हो गयी, और मेरा भी जगदीप की तरह ईश्वर से विश्वास उठ गया।

और जिस प्रकार जगदीप उस उपन्यास में मां के हाथ की पकायी एक आले में रखी हुई दो सूखी रोटियों को संभालकर अपने पास रख लेता –'इन रोटियों को टुकड़े करके कई दिन खाऊंगा'–उसी प्रकार मैंने उन सूखी हुई रोटियों को पीसकर एक शीशी में रख लिया था......

यह सब कुछ मैंने चेतन तौर पर उस उपन्यास में डाला था। परंतु 'यात्री' उपन्यास में महंत किरपासागर के किसी भी वर्णन में मैंने चेतन तौर पर अपने पिता की याद को नहीं डाला था। पर वर्षों बाद उस उपन्यास को पढ़ा। जहां महंत किरपासागर की मृत्यु के बाद उपन्यास का नायक उसकी आवाज का अपने मन में ध्यान करता है, वहां मुझे लगा–यह मैं स्वयं अपने पिता की आवाज का ध्यान कर रही हूं ...'उनकी आवाज में कुछ खास तरह का ऐसा था–नदी के जल के समान, हल्का-सा होते हुए भी बहुत भारी और अपने ही जोर से बहता हुआ। कोई पत्थर, कंकड़, पत्ता या हाथों का मैल उसमें फेंक दे तो उससे बेपरवाह उसे बहाकर ले जाता, या उसे पैरों में फेंककर उसके ऊपर से गुजर जाता। उनकी आवाज एक सीध में चलती जाती थी, इर्द-गिर्द की बातें सुनकर कभी रुकती हुई नहीं लगती थी। साधुओं के डेरों में भी, घर-गृहस्थियों की भांति झगड़े-झमेले और निंदा-चुगली रचते-बसते हैं–जाले इनके कोनों में भी लगते हैं, पर उनकी आवाज नदी के वेग के समान, इस सब कुछ को बहाकर ले जाती थी, और इसकी ओर आंख भरकर देखती तक नहीं थी। यह आवाज दो तरह की थी–एक भारी गहरी और वेगवती; दूसरी बहुत सूक्ष्म, उदास और पवन की भांति पवन में मिलती हुई ......'

और उपन्यास में महंत किरपासागर जिस बोल को बार-बार दुहराते हैं, याद आया कि वही बोल मेरे पिता के ओंठों पर हुआ करते थे–'मुद्दतें गुजर गयीं बेयार औ मददगार हुए ......'

महंत किरपासागर की कहानी का कुछ अंश मैंने चेतन तौर पर अपने पिता के एक मित्र साधु के जीवन से लिया था। पर जब महंत किरपासागर के स्वभाव का वर्णन किया, तो अचेतन तौर पर मुझसे अपने ही पिता के स्वभाव का वर्णन हो गया।

१५ मई १९७३ को जब मुझे दिल्ली विश्वविद्यालय ने डी. लिट् की आनरेरी डिग्री दी थी, मेरे घर लौटने पर देविंदर ने अपनी जेब में कुछ छिपाते हुए कहा था–'दीदी! आज कुछ मन-आयी करने को जी कर रहा है, नाराज मत होना।' जवाब में मैंने हंसकर कहा था–'भाई! तुम्हारे मन में जो भी आयेगा, अच्छा ही होगा।' और देविंदर ने जेब से एक रेशमी रूमाल, मिसरी और इक्कीस रुपये निकालकर कहा–'दीदी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे पिता या भाई कोई होता, तो कुछ न कुछ शगुन करता—यह शगुन उनकी तरफ से......'

आंखें भर आयीं और याद आया 'एक सवाल' उपन्यास में उपन्यास का नायक अपने पिता की मृत्यु के बाद अपनी भरपूर जवान सौतेली मां का अपने हाथों उसके मन का विवाह करता है और वह जवान लड़की थाली में रोटी डालकर कहती है—'आ! मां-बेटे साथ खायें।' तो वह रोटी का पहला ग्रास तोड़ते हुए कहता है—'पहले यह बताओ कि तुम मेरी मां लगती हो, या बहन, या बेटी!' उपन्यास का यह अंश लिखते समय देविंदर मेरे सामने नहीं था, पर चौदह वर्ष बाद जब देविंदर ने वह रुमाल, मिसरी और वे रुपये मेरी झोली में डाले, मेरे मन में आया हुआ बोल निरा पूरा वही था—'तुम पहले यह बताओ कि तुम मेरे पिता लगते हो, या मेरे भाई, या मेरे पुत्र?'

ooo

एक कहानी 'पिघलती चट्टान' मैंने १९७४ के आरंभ में लिखी थी। तब बिलकुल नहीं जानती थी कि मेरे अचेतन मन की यह कौन-सी अभिव्यंजना है। मैंने इसकी पृष्ठभूमि बनाया था नेपाल के स्वयंभू पर्वत के शिखर पर स्थित एक मंदिर को, जहां एक नवयुवती राजश्री रात के चौथे पहर में जाती है और वहां पहुंचकर दूसरी ओर की ढलान की ओर उतरते हुए बसीगा नदी के पथ को पहचान लेती है, जिस नदी में कभी दो सौ वर्ष पूर्व उसके वंश की एक कुमारी ने जीवन से मुक्ति प्राप्त करने का मार्ग खोज लिया था।

राजश्री, मन के असमंजस में, वही मार्ग चुनती है जो कि कभी उसके वंश की एक कुमारी ने चुना था। साथ ही सोचती है, पैरों के लिए एक यही रास्ता क्यों बना है?

कहानी आगे बढ़ती है, तो राजश्री के मन में एक युग पलटता है। वह स्वयं को पहचान जाती है, जान जाती है कि एक समय का सत्य हर समय का सत्य नहीं होता ...... और वह मृत्यु के ढलान की ओर से पैर लौटाकर जीवन की चढ़ाई के रास्ते को पकड़ लेती हैं।

पूरे दो वर्ष बीत गये। इस कहानी के पात्र के साथ अपने आपको जोड़कर कभी भी नहीं देखा था कि एक रात को अर्ध-निद्रा की अवस्था में मेरे जीवन का समय-चक्र लगभग पैंतीस बरस पीछे चला गया और मैंने देखा, मैं मुश्किल से कोई बीस बरस की हूं, गुजरांवाला गयी हूं, उसी गली उसी घर में, जहां कभी मेरे पिता की बहन 'हाको' तहखाने में उतरकर चालीसा काटते हुए मर गयी थी ......

कानों में वही आवाज आयी, पैंतीस बरस पहले की, जब मुझे देखकर गली की 'जीवी' नाम की भक्तिन, जो पहले तो मुझे देखती रह गयी थी, फिर अपने चकित चेहरे पर हाथ रखकर बोली थी—'हाय, मैं मर गयी, बिलकुल वही, वही हाको ...... वैसी की वैसी ......'

उस गली में मेरी बुआ हाको के समय की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपड़ों की उजली धुलाई के लिये !

चाँदनी

साबुन

निर्माता -
बरार ऑयल इंडस्ट्रीज
अकोला (महाराष्ट्र)

Zenlon

विविध किस्मों के प्राकृतिक, रासायनिक मानव निर्मित

बुनाई के सूत

परदे, गद्दियां व कवर बनाने के मुलायम और बहुरंगी • कोट के लिए सुंदर और चमकदार • मे लचीले और नमीसोख

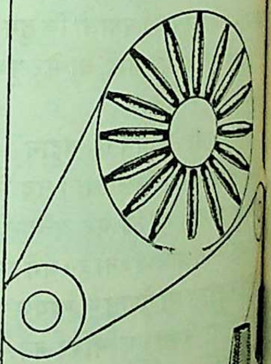

स्टेपल फाइबर विभाग
बिरला ज्यूट मैन्युफैक्चरिंग कं. लि.
९/१ आर. एन. मुकर्जी रोड
कलकत्ता–७०० ००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वही एक स्त्री थी, जो अभी जीवित थी। उसने यह कहा, तो मैंने शीशे में अपने चेहरे की ओर देखकर पहली बार हाको के चेहरे की कल्पना की ...... यों तो अपनी बुआ की सूरत से मेरी सूरत का मिल जाना स्वाभाविक बात हो सकती थी, पर लगा– यह प्रकृति का कोई रहस्य है, शायद होनी का संकेत। ......मैं उस समय मन की गहरी परेशानी में से गुजर रही थी। ब्याह हो चुका था, पर मन उखड़ा-उखडा था। ......अपने चेहरे में हाको का चेहरा देखा, तो आंखें भर आयीं, लगा–हाको का अंत ही मेरा अंत है ......

वही दिन थे जब मैंने मरना नहीं, जीना चाहा। तड़पकर सोचा–'पैरों के लिए एक यही रास्ता क्यों बना है?' और फिर तड़पकर फैसला किया–'मैं हाको की तरह मरूंगी नहीं...... जिऊंगी ......'

जन्मों की बात नहीं जानती थी, पर सोचा–जीवी भक्तिन के कहे अनुसार यदि यह सच भी है कि पिछले जन्म में मैं ही हाको थी, तब भी इस जन्म में उस तरह मरूंगी नहीं ......

पर यह आपबीती मुझे १९७४ में 'पिघलती चट्टान' कहानी लिखते समय चेतन तौर पर बिलकुल याद नहीं थी। मेरा अचेतन मन न जाने किस समय ऊपर आकर यह कहानी लिखवा गया, फिर मेरी आंखों से भी अपने आपको चुराता हुआ मन की तहों में उतरकर लोप हो गया......

०००

चित्र : एन. सी. नाथ

कुछ घटनाएं बहुत ही थोड़े समय के बाद किसी रचना का अंश बन जाती हैं; पर कुछ घटनाओं को कलम तक पहुंचने के लिए बरसों का फासला तय करना पड़ता है। पहली तरह की घटनाओं में मुझे एक याद है। जब मैं १९६० में नेपाल गयी थी, लगभग पांच दिन तक रोज शाम के समय किसी न किसी बैठक में कवि-सम्मेलन होता था, जहां कुछ नेपाली कवि रोज मिल जाते थे। उनमें एक कवि थे तो चढ़ती जवानी में, किंतु बहुत ही गंभीर स्वभाव के। मैंने केवल इतना ही जाना था कि वे रोज धीरे-से मेरी एक खास कविता की फरमाइश अवश्य करते थे, इससे ज्यादा कुछ नहीं। पर जिस दिन दिल्ली वापस आना था, दूसरे कई कवियों के साथ वे भी एयरपोर्ट आये थे, और संयोग था कि उस दिन प्लेन एक घंटा लेट था। प्रतीक्षा के सारे समय में वे मेरा भारी गरमकोट उठाये रहे। फिर प्लेन के आने पर जब मैं उनसे कोट लेने लगी, तो उन्होंने धीरे-से कहा–'यह जो भार दिखाई देता है यह तो आप ले लीजिये, जो नहीं दिखाई देता वह मैं लिये रहूंगा।'......और मैं बस चौंक-सी गयी थी। दिल्ली पहुंचकर एक कहानी लिखी 'हुंकारा'–उनके बारे में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दि इंडियन स्मेल्टिंग एंड रिफाइनिंग कंपनी लिमिटेड

रजिस्टर्ड कार्यालय

लालबहादुर शास्त्री मार्ग, भांडुप, बंबई ७८ एन. बी.

केबल : **केबल :** 'लकी' भांडुप फोन : ५८४३८

१. **नानफेरस यूनिट**

सेमिस रोलिंग विभाग :

नानफेरस शीत, स्ट्रिप और काइल,
नानफेरस प्लेट और सर्कल

एलाय और कास्टिंग विभाग :
एंटिफ्रिक्शन बेयरिंग मेटल्स
गनमैटल्स और ब्रोजेन्स, ब्रेजिंग सोल्डर्स और टिन सोल्डर्स
फाइन जिक डाइकास्टिंग एलाय्स **'इस्माक ३,'** अल्युमिनियम
बेस्ड डाइकास्टिंग एलाय्स, ब्रास और ब्रोन्ज राड्स सालिड
कोर्ड, फिनिश्ड कास्टिंग रफ और मशीन्ड।

२. **फेरस यूनिट :**

फाउंड्री डिविजन

एस० जी० आयर्न और स्पेशल स्टील कास्टिंग्स
मेलिएबल आयर्न कास्टिंग्स

आइ० एस० एस०, बी० एस० एस०, एस० एस० आइ० एम० के
पेसिफिकेशन्स तथा ग्राहक की विशेष आवश्यकता के अनुसार
सप्लाई किये जाते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं, पर यह वाक्य अनायास ही उस कहानी में आ गया।

दूसरे प्रकार की घटना—जो कलम तक पहुंचने में बरसों लगा देती है—का एक उदाहरण मेरी कहानी 'दो औरतें' है, जिसमें एक औरत 'शाहनी' है और दूसरी एक वेश्या, शाह की रखैल। यह सब आंखों देखा था। लाहौर में एक धनी परिवार के लड़के का ब्याह था और घर की लड़की-त्रालियां गा-बजा रही थीं। उस परिवार से मामूली-सा परिचय था; पर उस समय मैं भी वहां थी जब यह पता चला कि लाहौर की प्रसिद्ध गायिका तमंचाजान वहां आ रही है। वह आयी—बड़ी ही छबीली, नाज-नखरे से आयी। उसे देखकर एक बार तो घर की मालकिन का रंग हल्दी-जैसा पीला पड़ गया। पर वह आखिर थी तो लड़के की मां। तमंचाजान जब गा चुकी, तब शाहनी ने सौ रुपये का एक नोट निकालकर उसके आंचल में खैरात की तरह डाल दिया। इस समय नाज-नखरे वाली की हैसियत मिटने-जैसी हो आयी; पर अपना गरूर कायम रखने के लिए औरतों की भरी मजलिस में बोली—'रहने दो, शाहनी ! आगे भी तो तुम्हारे घर का ही खाती हूं !' और इस प्रकार शाह से नाता जोड़कर उसने शाहनी को छोटा कर दिया। मैंने देखा, शाहनी औरतों की उस भरी मजलिस में एक बार खिसियानी-सी हुई, पर फिर संभलकर लापरवाही से नोट को तमंचाजान को लौटाते हुए बोली—'सुन री, शाह से तो हमेशा ही लेगी, पर मुझसे तुझे कब-कब मिलेगा।'

यह दो औरतों का अजीब टकराव था, जिसकी पृष्ठभूमि में सामाजिक मूल्य थे। तमंचा चाहे लाख जवान थी, छबीली थी, कलाकार थी, और शाहनी मोटी और ढलती आयु की थी, और हर प्रकार से उस दूसरी के सामने साधारण थी; पर उसके पास पत्नी और मां होने का जो मान था, वह बाजार की सुंदरता पर भारी था।

पर यह कहानी मैं पूरे पचीस वर्ष बाद लिख पायी।

★

फुटबाल खेलना कविता लिखने से कई दृष्टियों से आसान है। अगर आप गोल कर दें, तो सबकी आंखों को पूरा सबूत मिल जाता है कि फुटबाल बल्लियों के बीच से निकल गया है। परंतु कविता में अगर आप 'गोल' कर दें, तो हजारों 'रेफरी' भी उसे मानने से इन्कार कर देते हैं और आप यह साबित नहीं कर पाते कि सचमुच आपने 'गोल' किया है। कई बार तो 'आफ-साइड' को ही गोल घोषित कर दिया जाता है।

खेल के साथ चाहे कितनी भी धूल-मिट्टी और चालाकियां जुड़ी हुई हों, फिर भी वह साहित्य-रचना के मुकाबले में ज्यादा साफ-सुथरा काम है। कई बार मुझे अफसोस होता है कि मैं कवि के बजाय पेशेवर खिलाड़ी क्यों नहीं बन गया।

—येव्गेनी येव्तुशेंको (रूसी कवि)

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन रविवार। सुबह का वक्त। समय जाड़े का। देर से उठने का लुत्फ ले रहा था। जानता था आज का दिन व्यस्त और छोटा है। लेकिन आज ही तो मैं देर से उठने का ऐश कर सकता था। बिस्तर से निकलने के बाद तो खटराग शुरू ही हो जायेगा। तो फिर क्यों न......

इसी समय छोटी पोती ने आकर कहा–'दादाजो, "वो" आये हैं।' मैंने प्रश्न को अनसुना कर उसे रजाई में खींचने और दुलार करने की कोशिश की। लेकिन उसने पकड़ में न आते हुए कहा–'"वो" बाहर बैठक में बैठे हुए हैं।'

'"वो" कौन ?' मैंने उत्सुकता से पूछा।

'जो उस दिन भैंसे पर चढ़कर आये थे।'

मेरा माथा ठनका। मैं समझ तो गया, लेकिन बच्ची से कहा–'जा बेटा, पूछ तो वे कौन हैं और क्या काम है।'

'उस बार भी आपकी उनसे बहुत बातें हुई थीं। वे कहीं जाने को कह रहे थे।' बच्ची ने तुनककर कहा–'फिर उसी काम से आये होंगे।'

'अरे तू जाकर पूछ तो सही। तब तक

हिंदी व्यंग्य-कथा

धर्मराज

श्यामसुंदर घोष

मैं तैयार होता हूं।'

यह कहते ही मैं उछलकर बिस्तर से बाहर निकला और शौचालय की ओर भागा। मैं शौचालय में ही था कि बच्ची ने बाहर से चिल्लाकर कहा–'वे अपना नाम इस बार धर्मराज बता रहे हैं और कहते हैं कि आपको लेने आये हैं।'

मैंने शौचालय से निकलते हुए बच्ची से कहा–'तू उन्हें चाय दे और बबलू को तैयार होने को कह।'

मैंने तुरंत हाथ-मुंह धोया और बैठक में आकर उन्हें नमस्कार किया–'महाराज, कुछ छोटे-मोटे काम हैं, निवटा लूं तो....'

'देखिये, आप बराबर यही करते हैं। हर रविवार तो मैं लौट गया हूं। मेरे दूत कभी आने का नाम नहीं लेते। मुझे खुद ही आना पड़ता है। और उस पर आपका डर रहता है कि.........'

'क्या करूं महाराज!' मैंने अपनी विवशता बतायी–'यह मेरा सबसे छोटा पोता है बबलू। खेल-खेल में अपना बाजू तोड़ बैठा है। डाक्टरों ने इलाज तो किया, लेकिन बताया है कि रोज थोड़ी कसरत करनी होगी। तभी हाथ पूरी तरह ठीक और सीधा होगा। और यह मेरे बिना कसरत करता नहीं। सो करा लेता हूं। कल से जितनी कराना होगा, करायेगा। लेकिन आज जब मैं अभी हूं तो......यह भी क्या सोचेगा?'

'अच्छा-अच्छा!' उन्होंने हंसकर कहा।

जब तक बबलू की कसरत समाप्त हुई तब तक बच्ची ने आकर कहा–'वो नवांगी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये हैं। अपने साथ अपनी बहुत-सी रचनाएं लाये हैं। बैठक में हैं।'

मैंने नवीन से पूछा—'क्यों जी नवीन, इधर बहुत दिनों के बाद आये? इनसे मिलो—ये हैं धर्मराज। मृत्यु और धर्म के देवता। इन्हें अपनी एक-आध रचना सुनाओ। इस लोक में तो नहीं, पर उस लोक में इसका फल पाओगे। ये अपने लोक में तुम्हें कोई अच्छी-सी जगह दे देंगे।'

नवीन आंखें फाड़-फाड़कर उन्हें देखता रहा।

'अब तो ये मुझे अपनी रचनाएं सुनाने से रहे।' धर्मराज ने हंसकर कहा—'आपने इन्हें मेरा परिचय क्यों दे दिया? पहले तो ये मुझे अपनी रचनाएं सुनाने को उत्सुक थे। मैंने ही कहा—पहले आप अपनी रचनाएं ठीक करवा लीजिये, तब......'

मैंने धर्मराज से निवेदन किया—'बड़ा होनहार लड़का है। ज्यादा पढ़-लिख तो नहीं पाया, पर अपने स्वाध्याय से अच्छा ज्ञान प्राप्त किया है। आप देखियेगा, यह एक दिन साहित्य में जरूर नाम करेगा। मुझसे यह कई बार आग्रह कर चुका है कि मैं इसकी रचनाओं को एक नजर देख लूं। इसीलिए........'

'तो देख लीजिये न, परोपकार का काम है। आप तो यों भी साहित्य का उद्धार करते रहे हैं, कुछ इनका भी भला हो जाये।'

'जी, बहुत जरूरी काम है यह भी।' मैंने निवेदन किया—'आपको थोड़ा कष्ट तो होगा, पर......' यह कहकर मैं नवीन को लेकर अपनी स्टडी में चला गया। धर्मराज 'धर्मयुग' देखते रहे। नवीन को विदा

चित्र : डा. विष्णु भटनागर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके बैठक में आया ही था कि बच्ची ने आकर कहा–'दादा, मम्मी कहती है कि इनके साथ अभी मत जाना। चुन्नू के लिए ग्वाले के यहां से शुद्ध दूध लाना जरूरी है। वह ला दो।'

मैंने धर्मराज को विवशता-भरी नजरों से देखा, कहा–'महाराज, चुन्नू मेरा सबसे छोटा दोहता है। बहुत कमजोर है। उसे हाल-हाल तक बहुत दस्त आते रहे हैं। ताकत के लिए उसे गाय का शुद्ध दूध देना जरूरी है। मुझे स्वयं इसके लिए थोड़ा-सा दूध ग्वाले के यहा जाकर लाना होता है।'

'ग्वाला आपको शुद्ध दूध दे देता है ?' धर्मराज ने पूछा।

'आपकी कृपा से दे देता है। अभी भी दुनिया में कुछ लोग हैं, जो......'

'अरे, आप उन्हें जानते-पहचानते हैं ?'

'जी, यह आपकी कृपा है।'

'तो यह काम भी आप कर ही लीजिये। एक कमजोर बच्चे का सवाल है।'

मेरे ध्यान में यह बात बराबर थी कि धर्मराज बैठक में बोर हो रहे हैं। इसीलिए मैं जल्दी ही दूध लेकर आ गया। देखा, बैठक में एक ओर पीरू कसाई सिमटा-दुबका बैठा है।

'क्यों जी!' मैं उसे देखकर खीझा–'तुम्हें भी आज ही आना था! देखते नहीं, ये मेरा कब से इंतजार कर रहे हैं।'

'क्या करूं सरकार! मेरी बुढ़िया बीमार पड़ गयी। इसीलिए मैं जुम्मे को नहीं आ पाया। आज ही उन लोगों से लिखा-पढ़ी को बात तय हुई है। अगर आप साथ [illegible] रहेंगे, तो वे पूरी बेईमानी करेंगे। मेरा [illegible] द्वार सब कुछ ले-लिवा लेंगे। मुझे और कि[illegible] पर भरोसा नहीं है सरकार।'

'यह बेचारा एक गरीब दुखिया है[illegible]' मुझे धर्मराज को उसका परिचय देना पड़ा–'इसके बाप-दादे को दिये कर्ज के एवज़ [illegible] इसके महाजन इसकी कुछ जमीन लिख[illegible] चाहते हैं। इसी काम को लेकर यह आ[illegible] है। वे लोग इसका मकान भी हड़प [illegible] चाहते हैं।'

'और आप बेचारे की कुछ मदद कर[illegible] चाहते हैं।' धर्मराज ने कहा–'अब यहां [illegible] मुसीबत है। मैं ऐसे कामों मे आपको [illegible] नहीं सकता। लेकिन जल्दी कीजियेगा। [illegible] बहुत-सा काम हर्ज हो रहा है।'

पीरू कसाई का काम निबटाकर [illegible] तो पोता अंदर से भागा हुआ आया–'दा[illegible] धोबन आयी है। उसका हिसाब कर दीजि[illegible] तब कहीं जाइयेगा।'

मैंने झुंझलाकर कहा–'जा, अपनी अम्[illegible] से कह। वही हिसाब करेगी। इन छोटी[illegible] छोटी बातों में मुझे क्यों घसीटता है? [illegible] मैं न रहूंगा, तब काम कैसे होगा?' और [illegible] चलने को उद्यत दीखा।

'मम्मी ने तो उसका हिसाब कर दि[illegible] है। लेकिन उसे विश्वास ही नहीं हो र[illegible] है। कहती है, एक बार बाबा जोड़कर ब[illegible] देंगे तो मैं ठीक-ठीक समझ जाऊंगी। [illegible] आज पैसे लेने जरूरी हैं। उसकी बेटी की विदाई है।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैंने धर्मराज को विवशता-भरी नजरों से देखा। बेचारे ऊबे हुए-से दीखे। खीझकर कहा–'जाइये, यह काम भी निबटा आइये।'

धोवन का हिसाब-किताब ठीक कर मैं बैठक में आया ही था कि बच्चों का एक दल बैठक में आ धमका। मुझे किसी के साथ जाने के लिए तैयार देखकर भी उनमें से एक ने कहा–'दादा, इस बार हम लोग पिकनिक करने मंदार जा रहे हैं। कृपा करके आप पिकनिक की चीजों की फेहरिस्त बना दीजिये और वहां के महंत के नाम एक पत्र भी लिख दीजिये, ताकि हमें ठहरने आदि की सुविधा हो।'

'पत्र तो मैं लिख देता हूं। लेकिन मुझे इनके साथ जाने की जरा जल्दी है। फेहरिस्त तुम लोग खुद बना लेना। इसमें मेरे जैसे बूढ़े का क्या काम?'

'आप तो हमेशा जल्दी में रहते हैं!' दूसरे लड़के ने कहा–'फेहरिस्त आपको ही बनानी है। हम लोगों ने कब कोई फेहरिस्त बनायी है? चाहे जन्माष्टमी हो या सरस्वती-पूजा बराबर आप ही तो फेहरिस्त बनाते हैं।'

'आज रविवार है। आपको बाहर जाने की क्या जल्दी है?' तीसरे लड़के ने कहा–'हम लोग सवेरे-सवेरे तो आये हैं। लीजिये, लिखिये पत्र और बनाइये फेहरिस्त।' लड़के बैठक में जहां-तहां जम गये।

'देखिये, यह काम भी कर लेने दीजिये।' मैंने धर्मराज से निवेदन किया–'लड़कों की बात है......'

'कर लीजिये साहब!' धर्मराज कुछ तंग आये-से दीखे–'अब मैं नहीं ठहर सकता। लेकिन खयाल रखिये, किसी को भी बहुत ज्यादा छूट नहीं दी जा सकती।'

मैं उनसे कुछ निवेदन करता कि वे खट्-खट् सीढ़ियां उतर गये और अगले ही क्षण अनुपस्थित थे।

–गोड्डा कालेज, संताल परगना, बिहार

★

हेनरी फोर्ड का कोट बहुत पुराना होकर फटने लगा था। उनके निजी सचिव ने उनसे कहा–'साहब! आपका कोट काफी पुराना हो गया है। इसे छुट्टी देकर नया कोट सिलवा लीजिये।' फोर्ड मुस्कराये, बोले–'नये कोट की क्या जरूरत है? इसी की मरम्मत करवा लेंगे।' सचिव को कहना पड़ा–'साहब, आप बहुत बड़े आदमी हैं। लोग आपको ऐसे कोट में देखकर क्या कहते होंगे!' 'कहेंगे क्या? अमरीका में सभी तो जानते हैं कि मैं हेनरी फोर्ड हूं!' सचिव अन्य अवसर की तलाश में चुप हो रहा।

कुछ दिन बाद फोर्ड को इंग्लैंड जाना था। अवसर पाकर सचिव ने निवेदन किया–'साहब, अमरीका में तो आपको सभी जानते हैं। किंतु अब आप विदेश-यात्रा पर जा रहे हैं, सो आपको यह पुराना कोट अवश्य बदल लेना चाहिये।'

'बदलने की क्या जरूरत है? इंग्लैंड में कौन जानता है कि मैं फोर्ड हूं?' हेनरी फोर्ड ने उत्तर दिया।

–प्रेमचंद्र गोस्वामी

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टूटती व्यवस्था

झांकते फिरें
हम कहां-कहां
हर दिशा-दिशा
मुंह चिढ़ा रहा—अंधा कुआं
अभाव ढालते
यंत्र रात-दिन
मूल्य टोचते
रोज आलपिन
क्रूर चिमनियां—बांटती धुआं
{बस धुआं-धुआं !
पीढ़ी की पीठ
लादकर घुटन
जिये किस तरह
अधमरा मरण
ढोयेंगे भला—कब तलक जुआं ?
हम यहां-वहां।

—मधुप पांडेय
४०, गांधीनगर, नागपुर

यायावर

अभी नहीं यात्रांत
हो न क्लांत
यायावर
कुछ पदक्षेप (अभी) और
अनजाने ठौर-ठाम
आपद् के प्रहर-याम
दुविधा के लाक्षाग्राम
कुछ और
संचर
निर्भीक यायावर
कंटकविद्ध तृणादग्ध
पी यथेच्छ, कमी कहां?
आ-दिगंत मृगजल-
प्रसृत सर।

—इंदुकांत शुक्ल
स्टुटगार्ट, प. जर्मनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजन गांधी

कुदुरेमुख

एक अनोखी परियोजना

बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित करने के लिए तीसरी दुनिया के देश अपनी प्राकृतिक संपदा का निर्यात करें, यह उचित है अथवा नहीं—इस बारे में काफी मतभेद है। परंतु हमारी नितांत महत्त्वाकांक्षापूर्ण 'कुदुरेमुख खनिज लौह निर्यात परियोजना' अपनी विराटता और विलक्षणता के कारण दुनिया का ध्यान खींच रही है। पांच अरब रुपये की यह विशाल परियोजना, जिसमें भारत अगले अट्ठाईस वर्षों तक ईरान को कच्चे लोहे का निर्यात करेगा, एक साथ ही हमारी तकनीकी क्षमता, ईरान के साथ हमारे करीबी संबंधों और विदेशी व्यापार के क्षेत्र में हमारे बढ़ते कदमों का प्रतीक बन गयी है।

कच्चे लोहे के एक समूचे पहाड़ को काटकर और पाइप में बहाकर कुदुरेमुख से मंगलूर बंदरगाह तक ले जाने की यह योजना शुरू में इतनी अवास्तविक प्रतीत हुई थी कि इसे महज 'पाइप ड्रीम' (अफीमची की खामखयाली) समझा गया था। लेकिन यही अब देश के लिए प्रतिवर्ष १५ करोड़ डालर की आय का अनूठा स्रोत बनने जा रही है।

इस सारी योजना का आधार-बिंदु है कुदुरेमुख पहाड़। कर्नाटक में मंगलूर से ६५ किलोमीटर उत्तर-पूर्व में चिक्कमगलूर जिले में स्थित, गहरे नीले रंग की ऊंची चोटी कुदुरेमुख का यह नाम पड़ा है घोड़े के सिर जैसे उसके आकार के कारण। (कन्नड शब्द 'कुदुरे' का अर्थ है—घोड़ा।) पूरा पहाड़ एक अरब टन कच्चे लोहे का विशाल ढेर है। इस बात का पता १९१३ में तत्कालीन मैसूर राज्य के भूगर्भशास्त्री श्री पी. संपत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

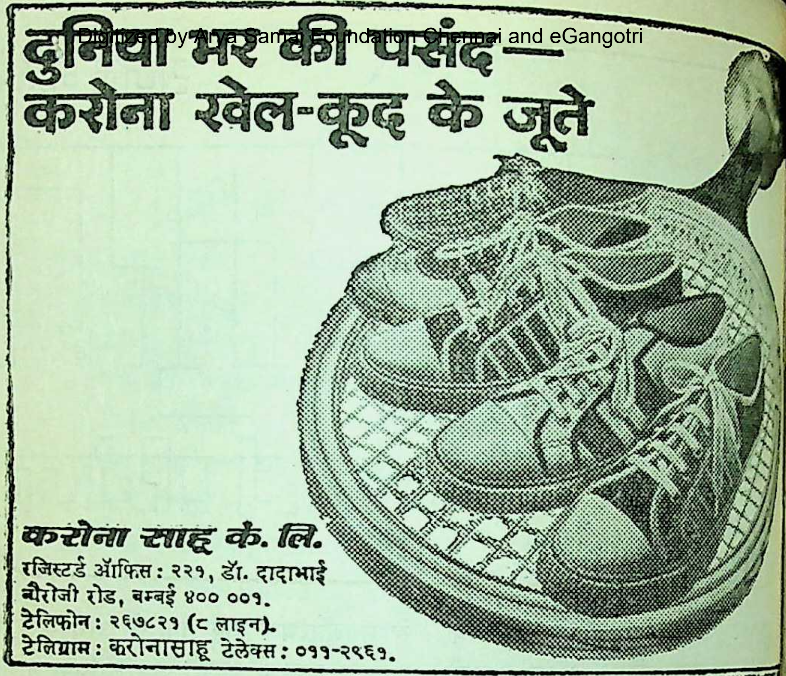

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अय्यंगार ने लगाया था।

कुदुरेमुख पहाड़ से कच्चा लोहा खोदकर ईरान भेजने की योजना पिछले वर्ष के आरंभ में ईरान के शाह रजा पहलवी और भारतीय योजना आयोग के उपाध्यक्ष पी. एन. हक्सर की वार्ता के दौरान सामने आयी। इस परियोजना की नींव का पत्थर रखा गया २६ जून १९७५ को, जब ईरान के राष्ट्रीय इस्पात उद्योग निगम के अध्यक्ष डा. रजा अमीन दिल्ली आये और उन्होंने भारतीय इस्पात अभिकरण के अध्यक्ष एवं भारत सरकार के इस्पात-सचिव एम. ए. वदूद खां से योजना के सभी पहलुओं पर बातचीत के बाद एक अट्ठाईस वर्षीय समझौते पर अपने देश की ओर से हस्ताक्षर किये।

इस समझौते की अवधि में ईरान हमसे २१ करोड़ टन 'सांद्र' खनिज लोहा खरीदेगा, जिसकी पहली खेप सितंबर १९८० तक भेज दी जायेगी। योजना की लागत के लिए ईरान ने हमें ६३ करोड़ डालर (५०४ करोड़ रुपये) का दीर्घकालीन ऋण दिया है, जिसकी भरपाई हम बीसव र्ष तक उसे हर साल ७५ लाख टन खनिज लोहा भेजकर करेंगे।

समझौते की एक धारा के अनुसार, सांद्र लौह की कीमत पहले वर्ष २२ डालर प्रति टन होगी और दूसरे वर्ष २०.५ डालर। दूसरे वर्ष की दरें ढुलाई-व्यय को समायोजित करने के लिए कम रखी गयी हैं। आगे के वर्षों के लिए कीमतें अंतरराष्ट्रीय मूल्य तथा ढुलाई, बीमे वगैरह की सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए दोनों देशों की सहमति से निर्धारित की जायेंगी। हर तीन वर्ष बाद कीमतों पर पुनर्विचार किया जायेगा। बीस वर्ष में कुल १५ करोड़ टन कच्चा लोहा मुहैया किया जायेगा और उसकी कीमत के रूप में हमें ५ अरब डालर प्राप्त होंगे।

कुदुरेमुख भारत की सबसे बड़ी लोहा-खान होगी और विश्व-भर की सबसे बड़ी खानों में से एक। पहले वर्ष इसमें से दो करोड़ टन खनिज लोहा निकालकर उसे ७५ लाख टन सांद्र लौह में परिवर्तित किया जायेगा। इसके लिए पहले खनिज लोहे को पीसकर चुंबकीय विधि से अशुद्धियों से मुक्त किया जायेगा। फिर उसे और बारीक बनाकर पानी के साथ मिला दिया जायेगा। यह तरल लौह पाइप में बहाकर कुदुरेमुख से ५८ किलोमीटर दूर मंगलूर बंदरगाह ले जाया जायेगा। इसके लिए १२० किलोमीटर लंबी पाइप-लाइन तैयार की जा रही है। ४० प्रतिशत खनिज लौह वाले इस गाढ़े द्रव को पंप के जरिये जमीन से ९०० मीटर ऊंचे चढ़ाकर एक टंकी में एकत्र किया जायेगा। वहां से उसे दुबारा पंप करके पाइप में १६ किलोमीटर आगे तक ठेला जायेगा। एक सुरंगनुमा हिस्से से गुजरने के बाद यह द्रव लौह पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण-शक्ति की कृपा से स्वयं सरकता जायेगा।

मंगलूर बंदरगाह में इस तरल लोहे को विशेष छन्नों पर गुजारकर पानी से अलग कर लिया जायेगा। फिर लोहे के इन कणों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बड़ी-बड़ी बट्टियां बनाकर उन्हें लद्दू नौकाओं के जरिये जहाजों तक पहुंचाया जायेगा, जो उन्हें ईरान ले जायेंगे। सांद्र लौह की बट्टियां आयतन में कम होने के कारण जहाजों पर अधिक मात्रा में लादी जा सकेंगी।

कर्नाटक सरकार इस परियोजना के लिए आवश्यक आधारभूत सुविधाएं तैयार करने में व्यस्त है। कुदुरेमुख पहाड़ के पूर्वी भाग में कलसा से मालेश्वर तक और पश्चिमी भाग में पडुबिद्री से मालेश्वर के बीच चौड़ी सड़कें वनायी जा रही हैं। परियोजना-स्थल को हर मौसम में चालू रहने वाली सड़क द्वारा पश्चिम-तटीय राजमार्ग से जोड़ा जा रहा है। यातायात की सुविधा की दृष्टि से भद्रा नदी पर एक 'बेली पुल' का निर्माण जोर-शोर से चल रहा है।

परियोजना के लिए बिजली की जरूरतें शरावती विद्युत-योजना से पूरी की जायेगी। इसके अलावा 'चक्र विपथन' विद्युत परियोजना पर भी काम शुरू हो गया है। इसकी नयी लाइन का सर्वेक्षण-कार्य लगभग पूर्ण हो चुका है।

दक्षिण कन्नड जिले में ३३ करोड़ रुपये की लागत से नये मंगलूर बंदरगाह का निर्माण किया जा रहा है, ताकि खनिज लोहा ले जाने वाले 'भारत-ईरान नौवहन उद्यम' के ६० से ७० हजार डी. डब्ल्यू. टी. क्षमता वाले बड़े जहाज वहां आसानी से खड़े हो सकें। यह कर्नाटक का पहला और देश का नौवां बड़ा बंदरगाह होगा। विकास के द्वितीय चरण के अंतर्गत इसे १२... मीटर गहरा किया जा रहा है। खनिज लौह के लिए ही एक विशेष जेटी वनायी जा रही है तथा विशाल संवाहक (कन्वेयर) यंत्रों की स्थापना की जा रही है। यह सारा काम १९८० तक पूरा हो जाने की आशा हैं। वंदरगाह-क्षेत्र में अतिरिक्त कर्मचारियों के लिए २०० मकानों की बस्ती वनायी जा रही है। इसके अलावा कुदुरेमुख खान-क्षेत्र में २,००० मकानों के टाउनशिप का निर्माण हो रहा है।

इस विशाल परियोजना की देखरेख एवं संचालन के लिए १५० करोड़ रुपये की अधिकृत पूंजी से 'कुदुरेमुख खनिज लौह कंपनी' की स्थापना की गयी है। चालू वित्तीय वर्ष के बजट में कंपनी के लिए १०० करोड़ रुपये की व्यवस्था की गयी है, जिसमें से ८८ करोड़ ५० लाख रुपये पूंजीगत कार्यों पर खर्च किये जायेंगे। बोकारो इस्पात संयंत्र के प्रबंध-निदेशक के. सी. खन्ना को कंपनी का अध्यक्ष तथा प्रबंध-निदेशक नियुक्त किया गया है। कंपनी में पांच निदेशक भी हैं, जो पूरा समय इसी काम को देंगे। परियोजना की प्रगति के निरीक्षण के लिए भारत सरकार ने कर्नाटक के मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में एक समन्वय-समिति भी बनायी है।

भारत सरकार इस बात की प्रतीक्षा में नहीं बैठी है कि परियोजना की सारी औपचारिकताएं ईरान ही पूरी करे; क्योंकि उसमें काफी समय नष्ट हो जाने का खतरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। जहां भी जरूरत हो, रुका काम स्वयं अपनी जिम्मेवारी और खर्च पर पूरा करके भारत सरकार परियोजना को आगे बढ़ाती जा रही है।

हर योजना की तरह कुदुरेमुख के सामने भी अनेक कठिनाइयां आयी हैं। खनिज लोहे और इस्पात के उत्पादन से संबद्ध कतिपय सरकारी विभागों का कहना है कि इतनी बड़ी परियोजना का समय पर पूरा हो पाना संभव ही नहीं है। वे इस बात से नाराज हैं कि ईरान से समझौता करते समय उनसे मशविरा क्यों नहीं किया गया। यह भी कहा जा रहा है कि बरसात के समय कुदुरेमुख क्षेत्र सर्वथा दुर्गम हो जाता है, तब वहां खनिज लौह की खुदाई का काम रोक देना पड़ेगा।

कुछ वैधानिक और प्रशासनिक समस्याएं भी सामने आयी हैं। समझौते पर हस्ताक्षर से पूर्व भारतीय इस्पात अभिकरण से व्यावहारिक रिपोर्ट तैयार करने को कहा गया था। उस समय समझा जाता था कि यह परियोजना उसी को सौंपी जायेगी। परंतु अब नयी कंपनी के बना दिये जाने से इस कार्य में अभिकरण की दिलचस्पी नहीं रह गयी है। परियोजना से संबद्ध कार्यों के लिए विदेशी फर्मों के साथ समझौते पर हस्ताक्षर करते समय भी काफी मुश्किलें सामने आयीं।

आरंभ में कुछ कंपनियों ने ठेके प्राप्त करने के इरादे से भारतीय इस्पात अभिकरण पर दबाव डालने के लिए यह फैलाना शुरू कर दिया था कि परियोजना समय पर पूरी हो ही नहीं सकेगी और उस हालत में भारत को मुआवजा देना पड़ेगा। लेकिन ऐसा मानने का कोई कारण नहीं है कि परियोजना समय पर पूरी न हो सकेगी; क्योंकि केंद्र सरकार तथा राज्य सरकार दोनों ही इस ओर विशेष ध्यान दे रही हैं। और जहां तक मुआवजे का सवाल है, उसकी शर्तें विश्व की सभी द्विपक्षीय योजनाओं की तरह इस योजना में भी दोनों पक्षों पर समान रूप से लागू होंगी। अगर हम खनिज लोहा निश्चित समय पर निर्धारित मात्रा में नहीं भेज पाये, तो हमें सामान्य दर पर ईरान को मुआवजा देना होगा; अगर हमने परियोजना जल्दी ही पूरी कर ली और ईरान ही माल न उठा सका, तो हम उससे हरजाना पाने के हकदार होंगे।

कुदुरेमुख योजना के महत्त्व को स्वीकार करते हुए भी इस एक बात से इन्कार नहीं किया जा सकता। खनिज लोहा राष्ट्र की प्राकृतिक संपत्ति है; प्रकृति ने यह संपत्ति जिस मात्रा में हमें दी है, उसमें इजाफा करना हमारे बस में नहीं है। इसलिए इस नैसर्गिक निधि का दोहन करते समय हमें खुद अपनी भावी आवश्यकताओं को ध्यान में रखना ही होगा। कहीं ऐसा न हो कि विदेशी मुद्रा कमाने के फेर में हम इतना ज्यादा खनिज लोहा विदेशों को भेज दें कि जब हमें खुद उसकी जरूरत पड़े, तो बाहर से आयात करने की नौबत आ जाये।

भारत में खनिज लोहे का कुल भंडार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

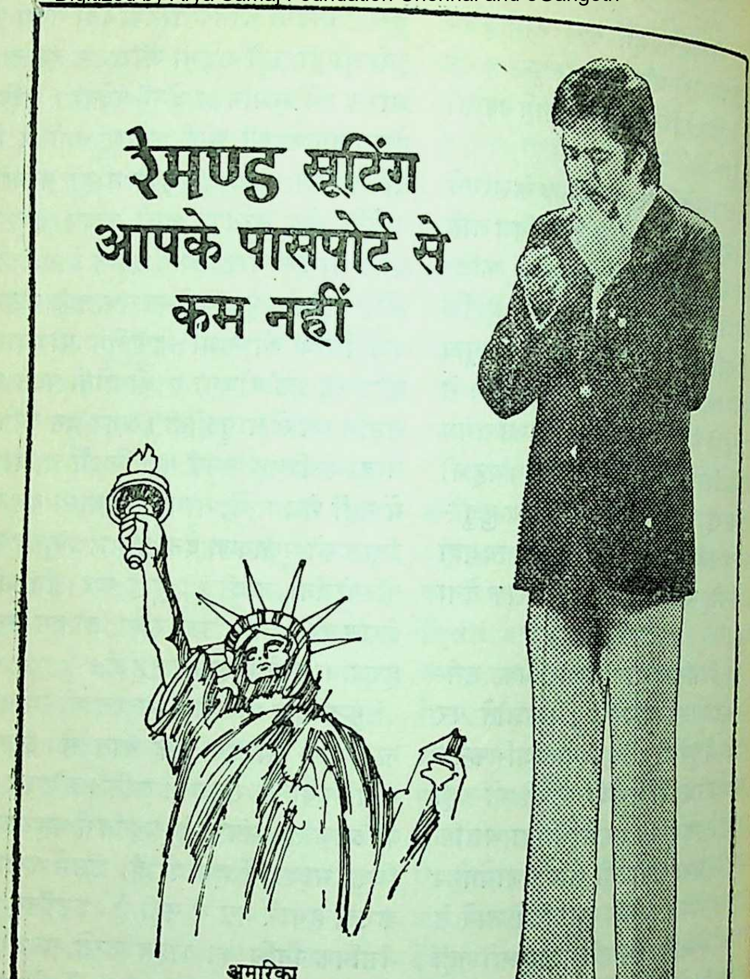

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीब २० अरब टन कूता गया है । इसमें से अब तक सिर्फ ५ अरब ५० करोड़ टन का पता चल सका है । विश्व के खनिज लौह उत्पादकों में हमारे देश का स्थान सातवां है और हमारे यहां इस समय सालाना ३ करोड़ ५० लाख टन कच्चे लोहे का उत्पादन हो रहा है।

अधिकृत आंकड़ों एवं अनुमानों के अनुसार, हमारे यहां से १९७८-७९ तक प्रतिवर्ष ३ करोड़ ५० लाख टन तथा १९८३-८४ तक ४ करोड़ ५५ लाख टन कच्चे लोहे का निर्यात होने लगेगा । छठी पंचवर्षीय योजना के बाद वार्षिक निर्यात की मात्रा ५ करोड़ ५० लाख टन तक पहुंचाकर वहीं स्थिर कर दी जायेगी; क्योंकि भारत के इस्पात-उद्योग-विकास कार्यक्रम के अनुसार उस समय तक कच्चे लोहे की घरेलू आवश्यकता काफी बढ़ चुकी होगी । तब तक हम निर्मित इस्पात का निर्यात करने लगेंगे। इस शताब्दी के अंत तक देश में ७ करोड़ ५० लाख टन इस्पात का उत्पादन होने लगेगा, जबकि उसकी घरेलू खपत ५ करोड़ टन की ही होगी। इस तरह बचे २ करोड़ ५० लाख टन इस्पात का निर्यात कर दिया जायेगा। आगे चलकर विश्व में खनिज लौह के व्यापार में भी तेजी आयेगी। अभी दुनिया-भर में कुल ४० करोड़ टन खनिज लोहे का निर्यात होता है। इसके बढ़ने और १९८० तक ५७ करोड़ टन, १९८५ तक ६७ करोड़ टन तथा १९९० तक ८० करोड़ टन हो जाने की संभावना है।

अभी तक तो इसमें संदेह करने का कोई कारण नहीं है कि कुदुरेमुख योजना निर्धारित समय पर पूरी नहीं होगी। वैसे इस विशाल योजना का प्रभदुव कई क्षेत्रों पर कई रूपों में पड़ेगा। किंतु दक्षिण कन्नड जिले पर इसका एक परिणाम सर्वथा विलक्षण होगा। जब कुदुरेमुख की ऊंची पहाड़ी कट-कटाकर समाप्त हो जायेगी, तब वहां सूर्योदय पिछले लाखों वर्षों से जिस समय पर होता आ रहा है, उससे कुछ क्षण पहले ही होने लगेगा।

शायद ये नयी किरणें ही समृद्धि की नयी सुबह के आगमन का प्रतीक बन जायें।

★

सागर-लक्ष्मी

अमरीका सरकार को दी गयी एक रिपोर्ट में कहा गया है कि अमरीका के तटवर्ती समुद्र में ४,००० मीटर की गहराई तक ६४४ खरब रुपयों का खनिज तेल व प्राकृतिक गैस मौजूद है। सन २००० तक अमरीका शायद समुद्र-तल से सालाना १·५ करोड़ टन मैंगनीज, ९ लाख टन तांबा, ४० करोड़ पौंड से अधिक कोबाल्ट और २० लाख पौंड से ज्यादा निकल उपलब्ध करने लगेगा।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो आदमी उनतालीस बरस तीन सौ चौंसठ दिन तक निरंतर जिंदा रहे, उसके बारे में यह भविष्यवाणी बड़ी आसानी से की जा सकती है कि वह एक न एक दिन चालीस बरस का हो जायेगा। सो हमारे बारे में भी यह भविष्यवाणी सच साबित हुई और एक दिन हम अचानक चालीस बरस के हो गये।

जी हां, जी में बहुत खुश हुए कि जिंदगी के चालीस बरस बीत गये और अब वह जमाना आया है, जब हमें जिंदा रहने का अभ्यास और कौशल प्राप्त हो गया है और यह कि इस अभ्यास के सहारे अगली जिंदगी बड़े आराम से गुजारी जा सकती है; क्योंकि आदमी की जिंदगी में जो कुछ भी होता है, वह चालीस बरस से पहले ही हो जाता है। बाद में तो आदमी अपनी पिछली जिंदगी का पाठ दुहराने में व्यस्त रहता है।

दिन-भर बड़े खुश रहे कि जिंदगी के सारे हंगामे, सारे मार्के खत्म हुए; अब तो बस चैन की बंसी बजानी है। रात को अच्छे-खासे सो गये, लेकिन सुबह जो उठे तो अचानक हमारे सिर में धमाके होने लगे। भागे-भागे डाक्टर के पास गये। डाक्टर ने सूक्ष्म निरीक्षण के बहाने हमें लिफाफे की तरह खूब उलट-पलटकर देखा। फिर हमसे पूछा—'आपकी उम्र क्या है?'

हमने खुशी-खुशी कह दिया—'कल ही चालीस बरस का हुआ हूं।'

हमें बाद में पता चला कि डाक्टरों को चालीस की संख्या से कुछ एलर्जी-सी होती है। हमारी उम्र जानते ही उन्होंने अपने कान खड़े किये और कहा—'क्या कहा! आप चालीस के हो गये! यह तो बहुत बुरी बात है।'

हमने कहा—'डाक्टर साहब, जो आदमी उनतालीस बरस तीन सौ चौंसठ दिन तक जिंदा रहे, उसे चालीस बरस का तो होना ही है। इसमें बुरी बात क्या है?'

बोले—'यही तो वह उम्र होती है जहां से आदमी "आधा इधर" और "आधा उधर" हो जाता है। झुटपुटे का यही वक्त आदमी की जिंदगी में बड़ा खतरनाक होता है। अच्छा लाइये, पहले मेरी फीस के चालीस रुपये निकालिये।'

हमने कहा—'चालीस रुपये! ...यह आप क्या कह रहे हैं? आपकी फीस तो हमेशा से पंद्रह रुपये रही है। ये चालीस रुपये किस खुशी में ले रहे हैं?'

बोले—'आप तो जानते ही हैं कि मोटर-कार का माडल जब पुराना हो जाता है, तो उसकी मरम्मत की फीस ज्यादा ली जाती हैं।' यह कहकर उन्होंने हमारी तोंद की तरफ इशारा किया और कहा—'यह जो आप आपे में समा नहीं रहे हैं, यह इस बात का संकेत है कि आपकी आत्मा इस पंचतत्व के पिंजरे को तोड़कर पेट के रास्ते से बाहर आने के लिए बेचैन है। यह बड़ी खतरनाक मंजिल है। इसलिए आप पेट को काबू में रखिये, वरना—सब ठाट पड़ा रह जायेगा, जब लाद चलेगा बंजारा!'

डाक्टर साहब ने कविता की सहायता से हमें भयभीत करने की बड़ी कामयाब कोशिश

*** उर्दू से अनुवाद : लक्ष्मीचंद्र गुप्त * चित्र : डा. विष्णु भटनागर ***

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहलकदमी और हम

* मुज्तबा हुसैन

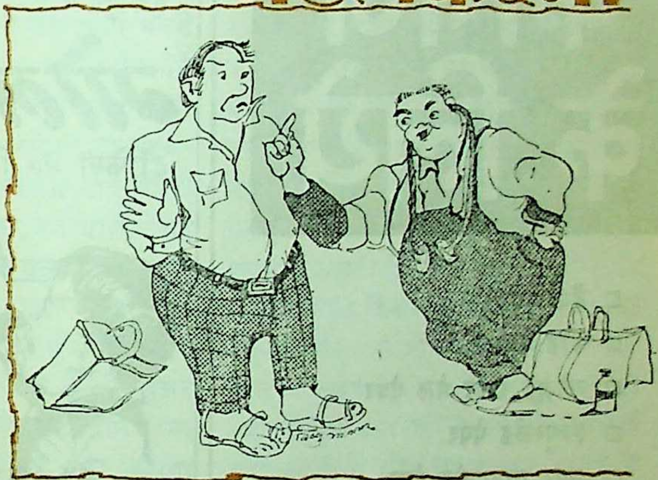

की। हमने डरते-डरते कहा—'मगर डाक्टर साहब, तोंद तो संपन्नता की निशानी है !'

बोले—'इस निशानी की ही वजह से तो चालीस रुपये बतौर फीस ले रहा हूं।'

फिर अपने सीधे हाथ की दो उंगलियां हमारे पेट में धंसाते हुए बोले—'जनाब आदमी की जिंदगी में वह मंजिल भी आती है, जब आदमी गायब हो जाता है और तोंद ही तोंद बाकी रह जाती है। आखिर में तोंद भी मर जाती है और लोग गलती से यह समझते हैं कि आदमी मरा है। साहब, इसीलिए पहले अपनी तोंद को जरा छांटिये, और तोंद को छांटने का एकमात्र तरीका यह है कि हर रोज सुबह खाने से पहले और रात में खाने के बाद चहलकदमी कीजिये।'

हमने दूसरे ही दिन से चहलकदमी करने का दृढ़ निश्चय कर लिया। इसके लिए सबसे पहले हमने डिक्शनरी खोलकर उसमें 'चहलकदमी' के शाब्दिक अर्थ ढूंढ़े, तो पता चला कि 'चहल' एक अरबी शब्द है जिसके मानी होते हैं—चालीस। सो 'चहलकदमी' के मानी हुए 'चालीस कदम चलना'।

असल में यह शब्द मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति की प्रगति का सूचक है। आदि-मानव पैदल चलता था तो चालीस कदम चलकर गणित के चक्कर में नहीं पड़ता था। चहलकदमी की आवश्यकता तो उस समय पड़ी, जब मनुष्य ने अपनी सुविधा के लिए सवारियों और कुर्सियों का आविष्कार कर लिया और पैदल चलने को निंदनीय समझने लगा। चुनांचे सभ्यता और संस्कृति की प्रगति के साथ-साथ मनुष्य के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरपुर- उत्तम कागज के लिये

- बैंक पेपर
- बाँड पेपर
- ग्लेज़्ड एअर मेल पेपर
- एज्युरलेड पेपर
- सुपर वाइटलेड पेपर
- सुपर वाइट मैपलिथो पेपर
- क्रोमो पेपर
- एम. एफ. रैपिंग पेपर
- आर्ट पेपर
- क्रोमो बोर्ड
- आर्ट बोर्ड

दि सिरपुर पेपर मिल्स लि.
सिरपुर - कागजनगर, आन्ध्र प्रदेश

आओ — एक सौदा करें!

मैं तुम्हें अपने सारे
खिलौने देती हूं,
तुम मुझे दे दो—

गोला

टॉफियां और मिठाइयां

दी हिन्दुस्थान शुगर मिल्स लि.
गोलागोकर्णनाथ, जि.खीरी, उ. प्र.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर में चरबी भी उन्नति करती रही और बहुत बाद में डाक्टरों को पता चला कि यह सब कुछ इसलिए हो रहा है कि मनुष्य पैदल नहीं चलता। लिहाजा अब आदमी डाक्टरी सलाह के आधार पर पैदल चलता है और उसने चहलकदमी को एक आर्ट बना लिया है।

हमने जब चहलकदमी के मैदान में कदम रखा, तो देखा कि यहां एक से बड़ा एक चहलकदमी करने वाला मौजूद है, जो चहलकदमी कम करता है और अपने चलने की कला का प्रदर्शन ज्यादा करता है। जैसे एक साहब हैं, जो खुद तो कम चहलकदमी करते हैं, लेकिन उनकी छड़ी ज्यादा चहलकदमी करती है। वे हर कदम के बाद अपनी छड़ी को हवा में लहराकर जमीन पर टेकते हैं, फिर अपना सारा बोझ उस कमजोर और दुबली-पतली छड़ी पर डालकर अपने एक पांव को उठाकर आगे रखते हैं। इसके बाद छड़ी फिर हवा में लहराती है और दूसरे पांव को आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया जाता है। हमें जब भी यह पता लगाना होता है कि उन्होंने किस रास्ते से निकलकर किस रास्ते पर चहलकदमी की है, तो हम उनके कदमों के निशान नहीं, बल्कि उनकी छड़ी के कदमों के निशान तलाश करते हैं।

इस तरह चहलकदमी करने का एक फायदा यह होता है कि चलने वाले के पांवों को तो ज़रा भी सदमा नहीं पहुंचता, अलबत्ता हर दूसरे-तीसरे महीने एक छड़ी जरूर टूट जाती है।

हम जब सुबह ही सुबह चहलकदमी के लिए निकलते हैं, तो हमें एक और साहब अक्सर मिलते हैं, जो अपने कुत्ते के पीछे-पीछे चहलकदमी करते हैं, बल्कि यों कहिये कि कुत्ता उन्हें खींचकर ले जाता है। ऐसे मौकों पर यह पता चलाना मुश्किल हो जाता है कि वे कुत्ते के मालिक हैं या कुत्ता उनका मालिक है। क्योंकि हमने हमेशा ही कुत्ते को उनसे आगे चलते हुए देखा है। उनका काम सिर्फ इतना होता है कि वे कुत्ते के गले में बंधी हुई जंजीर को मजबूती से पकड़ लें और जिधर-जिधर कुत्ता चहलकदमी करे, वे भी उसके पीछे-पीछे चहलकदमी करते चलें। मगर हम इसे चहलकदमी का नाम नहीं दे सकते; क्योंकि कुत्ते के पीछे घिसटते हुए जाने को भला चहलकदमी क्यों कर कहा जा सकता है!

हमने एक दिन उन्हें समझाया—'जनाब, यह जो आप अपने से ज्यादा ताकतवर कुत्ते के साथ चहलकदमी करने निकलते हैं, तो यह मुनासिब बात नहीं है, क्योंकि इस सारी चहलकदमी से तो कुत्ता फायदा उठाता है और आप सिर्फ मुंह देखते और दुम हिलाते रह जाते हैं। अगर कुत्ते के साथ चहलकदमी करना इतना जरूरी है, तो क्या यह संभव नहीं कि आप कोई जेबी कुत्ता पाल लें!'

बोले—'साहब, मैं चहलकदमी ही इस लिए करता हूं कि यह कुत्ता मुझे खींचकर ले चलता है। वरना मैं तो अपने आप चलने की आदत लगभग भूल चुका हूं।'

और इधर कई दिन से हम देख रहे हैं कि उनकी सेहत तो दिन-प्रतिदिन गिरती जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

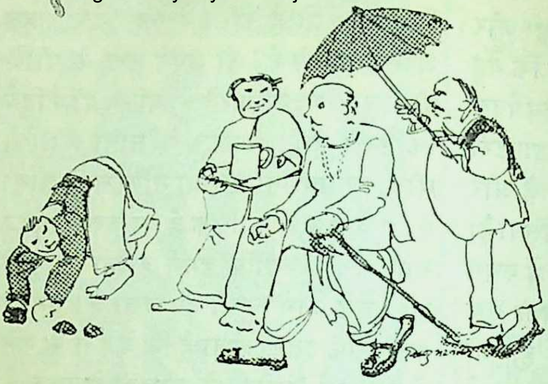

रही है, लेकिन उनका कुत्ता काफी तंदुरुस्त और हट्टा-कट्टा होता जा रहा है।

एक और साहब की चहलकदमी का अंदाज बिलकुल निराला है। वे पार्क में एक निश्चित स्थान पर पहुंचकर बीस फुट की लंबाई में इधर से उधर चहलकदमी करना शुरू कर देते हैं। यों तो पार्क बड़ा लंबा-चौड़ा है, मगर वे बीस फुट की लंबाई से आगे नहीं जाना चाहते। आधे मिनट में वे बीस फुट का फासला तय करके फिर उसी रास्ते से वापस आते हैं और फिर दूसरे सिरे पर पहुंचकर उलटे पांव वापस हो जाते हैं। यों लगता है जैसे वे चहलकदमी न कर, चलने का 'पाठ' दुहरा रहे हों।

इस चहलकदमी से उनकी सेहत पर क्या असर पड़ता है, यह तो हमें नहीं मालूम; मगर हम यह जरूर जानते हैं कि उनकी इस चहलकदमी से पार्क की सेहत पर बुरा असर पड़ रहा है। क्योंकि जिस निश्चित स्थान पर ये चहलकदमी करने के आदी हैं, वहां अब कम से कम एक फुट गहरी पगडंडी प्रकट हो गयी है। अगर एक ही जगह उनकी यह विशेष चहलकदमी कुछ अरसे और जारी रही, तो हमें अंदेशा है कि कहीं इस पगडंडी में से पानी के झरने न निकल पड़ें।

चहलकदमी अमीर और गरीब दोनों करते हैं। गरीब जब चहलकदमी करता है तो इस सिलसिले में अपने पैरों की मदद लेता है। लेकिन अमीर आदमी की चहलकदमी जरा और ढंग की होती है। मसलन हमारे एक लखपति दोस्त जब चहलकदमी के लिए निकलते हैं, तो उनके पीछे-पीछे उनकी इम्पाला मोटरकार भी चहलकदमी करती रहती है, ताकि जब भी मोटर का मालिक चहलकदमी करते-करते थक जाये, तो मोटर में सवार हो जाये। एक और अमीर आदमी हैं। वे चहलकदमी के लिए निकलते हैं, तो एक नौकर छतरी पकड़े रहता है; दूसरा नौकर दूध का प्याला हाथ में लिये-लिये साथ चलता है; तीसरा नौकर उनके आगे-आगे चलता है और रास्ते में पड़े हुए पत्थरों को हटाता जाता है, ताकि मालिक की चहलकदमी ठोकर से जख्मी न होने पाये।

यों भी बड़े लोगों की चहलकदमी की शान ही अलग होती है। हम एक महकमे के डाइरेक्टर से परिचित हैं, जिन्हें डाक्टर ने मशवरा दिया कि वे दफ्तर में काम करने के अलावा सुबह-सुबह चहलकदमी भी किया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करें। डाइरेक्टर ने चहलकदमी शुरू की तो धीरे-धीरे उनके स्टाफ को भी इसकी खबर हो गयी। दूसरे ही दिन से महकमे के डिप्टी डाइरेक्टर भी उसी जगह पर चहलकदमी के लिए आने लगे, जहां डाइरेक्टर की चहलकदमी होती थी। जब असिस्टेंट डाइरेक्टरों को इस चहलकदमी का पता चला, तो वे भी इस चहलकदमी में शामिल हो गये।

नौबत यहां तक आ गयी कि बाद में गरजमंद लोग भी उस जगह चहलकदमी के लिए आने लगे। कोई सिफारिश के बहाने आ रहा है, कोई दफ्तर में नियुक्ति के बहाने आ रहा है, कोई प्रोमोशन चाहता है, कोई डाइरेक्टर से राह-रस्म बढ़ाने के लिए आ रहा है। दफ्तर के बाज कर्मचारी ऐसे भी थे जो डाइरेक्टर के घर से पंद्रह मील की दूरी पर रहते थे, लेकिन चहलकदमी के लिए वे सुबह ही सुबह डाइरेक्टर के घर के सामने पहुंच जाते थे। बाद में इस चहलकदमी में इतनी 'दफ्तरियत' आ गयी कि डाइरेक्टर ने तंग आकर चहलकदमी का इरादा ही छोड़ दिया, क्योंकि वे चहलकदमी के दौरान दफ्तर का काम ज्यादा और चहलकदमी कम करने लगे थे।

हमारे एक और दोस्त हैं, जो हरदम चहलकदमी के शाब्दिक अर्थ को झुठलाने की कोशिश में लगे रहते हैं। वे जिधर को मुंह उठ जाये, उधर ही को चहलकदमी करने के आदी हैं। वे चहलकदमी को किसी 'लक्ष्य' के अधीन करने के कायल नहीं हैं। उनका खयाल है कि आदमी को बस चलते रहना चाहिये। यही वजह है कि जब वे घर से चहलकदमी के लिए निकलते हैं, तो घर के लोग उन्हें यों रो-धोकर विदा करते हैं, जैसे वे किसी लंबे सफर पर जा रहे हों। दो-एक बार तो हमने उनके बाजू पर सुरक्षा के तावीज भी बंधे हुए देखे।

हमने सुना है कि एक बार वे चहलकदमी करने के लिए निकले तो बस चहलकदमी ही करते रहे। दस-पंद्रह मील दूर जाने के बाद उन्हें पता चला कि वे अपने नगर की सीमा से निकलकर किसी दूसरे नगर की सीमा में प्रवेश कर गये हैं। तब उन्हें अचानक अपने 'परदेशी' होने का एहसास हुआ। सोचा कि बस में बैठकर अपने शहर को वापस हों। मगर जेब में हाथ डाला, तो पता चला कि वहां बस का किराया मौजूद न था। यों भी आदमी जब चहलकदमी पर निकलता है, तो अपनी जेब में पैसे नहीं रखता। लाचार होकर पैदल ही अपने शहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

If the ships have a smooth sailing it's not because the sea is'nt rough.

It's because the Great Eastern mans them.

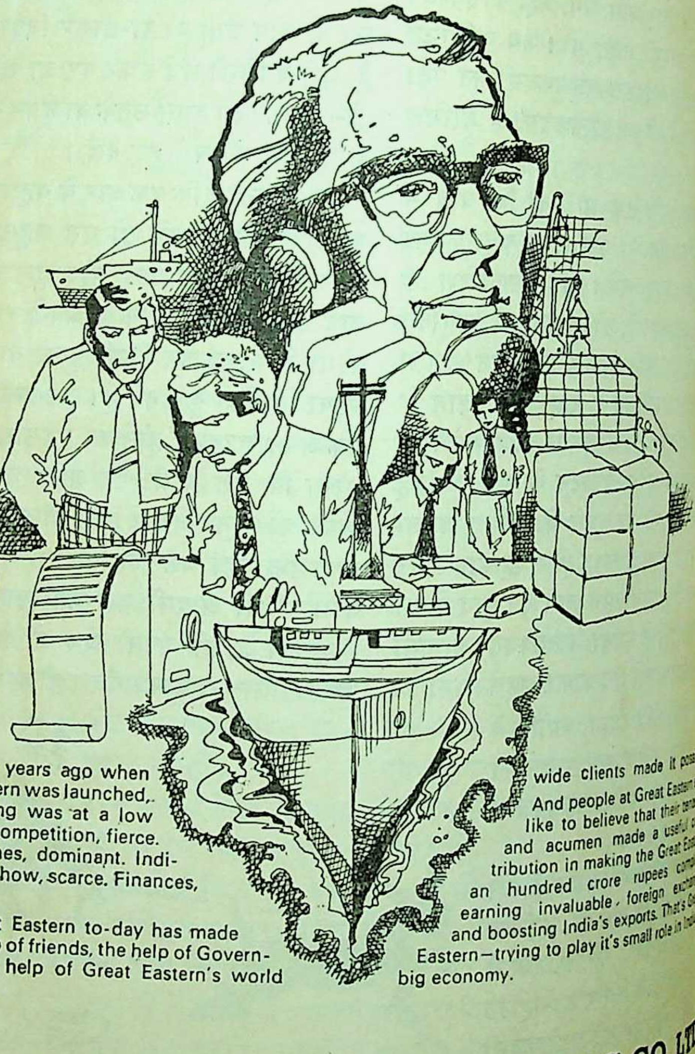

Twenty-Eight years ago when the Great Eastern was launched, Indian shipping was at a low ebb. Foreign competition, fierce. Conference lines, dominant. Indigenous know-how, scarce. Finances, meagre.

And yet Great Eastern to-day has made good. The help of friends, the help of Government and the help of Great Eastern's world wide clients made it possible.

And people at Great Eastern also like to believe that their tenacity and acumen made a useful contribution in making the Great Eastern company an hundred crore rupees company earning invaluable, foreign exchange and boosting India's exports. That's Great Eastern—trying to play it's small role in India's big economy.

AHB

THE GREAT EASTERN SHIPPING CO. LTD.

60 Mahatma Gandhi Road, Bombay-400 001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को वापस हुए और शाम होते-होते अपने घर में कुछ इस अंदाज से पहुंचे कि उनके कदम लड़खड़ा रहे थे।

इसके बाद से उन्होंने यह नियम-सा बना लिया है कि जब भी चहलकदमी के लिए निकलते हैं, अपनी जेब में बस का कम से कम पचास मील का किराया जरूर रखते हैं, ताकि चहलकदमी से वापसी में आसानी हो।

सच तो यह है कि आदमी सामाजिक पशु है। उसे हमेशा किसी न किसी साथी की जरूरत होती है, जिसके साथ वह विश्व-भर की समस्याओं पर विचार-विनिमय कर सके। लिहाजा जब आप चहलकदमी का इरादा करते हैं, तो चंद दिनों तक तो पाबंदी से चहलकदमी करते हैं; लेकिन बाद में आपका परिचय आपसे आप चहल-कदमी करने वाले दूसरे लोगों से भी होता जाता है। फिर यह स्थिति पैदा हो जाती है कि पांच-दस चहलकदमी करने वाले एक जगह जमा होकर 'तत्कालीन परिस्थितियों' पर विचार-विनिमय में व्यस्त हो जाते हैं। यहीं से आपको तेल का वर्तमान मूल्य, विभिन्न सब्जियों के ताजा भाव, दक्षिण-पूर्वी एशिया की तत्कालीन राजनैतिक परिस्थितियों वगैरह के बारे में ताजा से ताजा समाचार प्राप्त होते हैं।

हम इधर एक बरस से बड़ी पाबंदी के साथ चहलकदमी के लिए जाते हैं। हमें यह पता नहीं कि इससे हमारी सेहत पर क्या असर पड़ा है; लेकिन इतना जरूर जानते हैं कि एक साल पहले की तुलना में हमारा सामान्य ज्ञान काफी उन्नत हो गया है और अब तो हमने अखबार खरीदना और पढ़ना भी छोड़ दिया है।

★

चलो और सोचते भी रहो

मुझे लगता है कि मैं तब तक अपनी सेहत और स्फूर्ति कायम नहीं रख सकता, जब तक कि रोज कम से कम चार घंटे पैदल न चल लूं—जंगलों-पहाड़ों-खेतों में, अपने संसारिक काम-काज को बिलकुल बिसराकर।

जब मुझे इसका ध्यान आता है कि कारीगर और दुकानदार अपने कारखानों और दुकानों में सिर्फ दुपहर तक ही नहीं, बल्कि दुपहर के बाद भी पलथी मारे बैठे रहते हैं—जैसे टांगें खड़े होने या चलने के बजाय बैठने के लिए बनायी गयी हों—तो मैं सोचता हूं कि उन्हें इस बात का श्रेय मिलना चाहिये कि उन्होंने इतने लंबे अरसे से अभी तक आत्महत्या नहीं की है।

आदमी को ऊंट की तरह चलना चाहिये, जो कि एकमात्र ऐसा जानवर है जो चलते हुए सोचता है। एक बार किसी ने प्रसिद्ध कवि वर्डस्वर्थ की नौकरानी से कहा कि उनका वह कमरा दिखाओ, जहां वे अध्ययन करते हैं। नौकरानी एक कमरा दिखाते हुए बोली—'यहां उनकी पुस्तकें पड़ी हैं; पर वे अध्ययन घर के बाहर करते हैं।' **—हेनरी डेविड थोरो**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिल्गमेश

विश्व के प्राचीनतम महाकाव्य की कथा

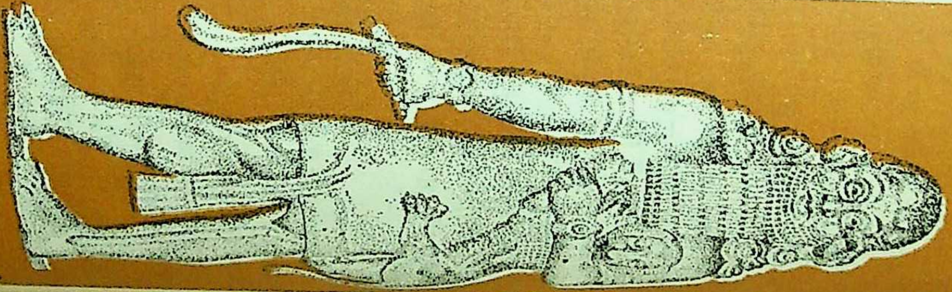

मूल : एन. के. सैंडर्स
अनुवाद : रसिक बिहारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमेर सभ्यता की स्थापना ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दी के प्रारंभ में दजला और फुरात नदियों से सिंचित भूखंड (वर्तमान इराक) में हुई थी। ईसा के जन्म से कई शतक पहले ही वह निश्चिह्न भी हो गयी। लगभग ढाई हजार वर्ष तक इस सभ्यता के उठने गिरने का क्रम निरंतर चलता रहा। सुमेर जाति के लोग दक्षिण साइबेरिया या मध्य-एशिया से यहां आये थे। अक्काद नाम की एक और जाति आयी उत्तर सीरिया से। आदि-बाइबल के प्रसिद्ध महापुरुष हजरत नूह के तीन बेटों में से एक का नाम था—साम। इसी साम के वंशधर माने जाते हैं सामी (सेमेटिक) नृवंश के लोग। अक्काद लोग सामी नृवंश के थे।

सुमेरों ने बसाये थे निप्पुर, लागास, उम्मा, एरिदू, लार्सा, एरख (उरुख) आदि नगर। सामियों ने अगेदे, बरसिप्पा, किश, कूठा, सिप्पार, बाबुल (बैबिलोन) आदि नगरों का निर्माण किया। वस्तुतः सामियों की विभिन्न शाखाओं ने एक के बाद एक आकर पुराने नगरों पर आक्रमण किया, उन्हें बरबाद किया और नये नगर बसाये। उदाहरणार्थ, हम्मूराबी ने बाबुल (बैबिलोन) नगर की स्थापना की, जो बाद में एक प्रबल और समृद्धिशाली साम्राज्य का केंद्र बना।

इसके बाद सामियों की एक और शाखा आयी। इसके उपास्य देव थे अशुर, जिनके नाम पर इनका राज्य भी अशुर (असीरिया) कहलाया। इन्हीं लोगों ने निनेवे नगर बसाया। इनका एक राजा हुआ अशुरबनिपाल। अंग्रेज पुरातत्त्वज्ञों ने उन्नीसवीं सदी में निनेवे के पहाड़ी अंचल की खुदाई करके इस राजा के पुस्तकालय को ढूंढ़ निकाला। उसमें पकी मिट्टी के पूरे-अधूरे बारह फलक प्राप्त हुए, जिन पर कीलकाकृति (क्यूनिफार्म) लिपि में कुछ इबारत खुदी हुई थी। अज्ञात लिपि थी और अज्ञात थी उसकी भाषा।

अंततोगत्वा सन १८७२ के लगभग अंग्रेज पुरातत्त्वज्ञ जार्ज स्मिथ ने ई. पू. सातवीं सदी के इन अभिलेखों का अर्थोद्धार किया और उनमें से प्रकट हुआ एक महाकाव्य, जिसमें वर्णित है एक महानायक गिलगामेश के आश्चर्यजनक अभियानों का आख्यान। इसमें बारह सर्ग हैं और कुल पद्य हैं तीन सौ; और इसी में मिला है उतानेपिशतिम और महाप्लावन का वर्णन, जो आदि-बाइबल की नूह और सैलाब की कहानी का आधार प्रतीत होती है।

राजा अशुरबनिपाल के पाठागार में प्राप्त इस महाकाव्य को ई. पू. सातवीं सदी में लिपिबद्ध किया गया था। परंतु बाबुल (बैबिलोन) की खुदाई में मिले एक और फलक में भी इस महाकाव्य का उल्लेख मिलता है। उस फलक के अनुसार इस महाकाव्य की रचना और भी पहले हुई थी—ईसा पूर्व ढाई हजार साल के आस-पास।

विद्वानों ने इस महाकाव्य को बाबुल के साहित्य की सर्वोपरि रचना माना है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम्मूराबी
[लूव्र संग्रहालय, पेरिस]

परंतु इसका नायक गिलगामेश वस्तुत: एरख (या उरुख) नगर का राजा था, जिसका निर्माण गैरसामी सुमेरों ने किया था। चिरकाल से यही होता आया है। सभी जातियों को अपने देश के प्राचीन गौरव पर अभिमान होता है और वे उसे वर्तमान में लाकर और अधिक महिमा-मंडित करने का प्रयत्न करती हैं। भारत में यही हुआ। ईरान में भी ऐसा हुआ; इस्लाम को अंगीकार कर लेने के बाद भी ईरानी लोग इस्लाम-पूर्व के अपने देश के इतिहास को नहीं भूले। फिरदौसी ने अपने काव्य 'शाहनामा' में प्राचीन गैरमुस्लिम महावीर सोहराब और रुस्तम का गुणगान किया है। इंदोनेसिया के मुसलमान अब भी रामायण और महाभारत को नहीं भूले हैं; क्योंकि ये कृतियां उनकी शानदार राष्ट्रीय संस्कृति के गौरवमय स्रोत हैं।

★

गिलगामेश था एरख (उरुख) का राजकुमार। उसमें दो-तिहाई देवता का अंश था और एक-तिहाई मनुष्य का। ईसा पूर्व ३००० में एरख में दुमुज नामक राजा था। संभवत: उसी का उत्तराधिकारी था गिलगामेश—उच्छृंखल, उद्दंड, दुराग्रही और साथ ही महाबली।

पहले हम देखते हैं कि एरख-निवासी उसके अत्याचारों से अकुला उठे हैं। वह जिद्दी है और अपनी हर जिद को पूरा करके ही मानता है। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी अत्युग्र आवेश से, उद्दाम वासना से आक्रांत यह धृष्ट तरुण जीवन की अंधशक्ति से प्रेरित होकर दौड़ा चला जा रहा है किसी अनिर्दिष्ट मंजिल की ओर। जीवन के कोमलतम क्षेत्र—युवती नारी और सौंदर्य, तथा कठोरतम क्षेत्र—वीर प्रतिपक्षी, दोनों पर वह तीव्र प्रहार करता जा रहा है। कारण, उसकी आत्मा में एक गहन अतृप्ति है। कोई प्रचंड आवेग उसे खींच ले जाता है जीवन के हर क्षेत्र में—सत्य-असत्य में, पाप-पुण्य में।

गिलगामेश की उद्दामता से एरख के नागरिक सर्वदा संत्रस्त रहते हैं। सुंदर तरुणियां और कुलवधुएं बंद दरवाजों के पीछे रहते हुए भी उससे बच नहीं पातीं। मानो वह देखना चाहता है कि सौंदर्य के अतलांत में कौन-सा सत्य निहित है, देह की गहराई में कौन-सा प्रतिदेह छिपा है, जो शाश्वत और अजर है और जिससे प्रति फलित होती है जैविक कामना-वासना। यदि उसमें यह जिज्ञासा न होती, तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही उसे दुराचारी और लंपट कहा जा सकता था। किंतु वैसा व्यक्ति महाकाव्य का नायक नहीं बन सकता।

माता का असीम लाड़-प्यार भी एक और कारण था गिलगामेश की उद्दामता का। उसकी माता निनसुम ने अपने इस एकमात्र और पितृहीन बेटे को बहुत तरह दे रखी थी। यह महत्त्वाकांक्षा भी थी माता के मन में कि उसका पुत्र मर्त्यलोक का एकछत्र स्वामी बने।

एरख-निवासी जानते हैं कि सिंहासन-संरक्षिका निनसुम के पास गिलगामेश के अत्याचारों की शिकायत ले जाने से हित के बजाय अहित ही होगा। इसलिए वे लुक-छिपकर पर्वत-शृंग पर एकत्र होते हैं और अपने उपास्य देव अरूरू से प्रार्थना करते हैं:

'हे अरूरू, तुम्हारी ही तो सृष्टि है
गिलगामेश,
जिसके अत्याचारों से सुंदर एरख नगर
रेत के घरौंदे की तरह
ढहता जा रहा है प्रतिदिन,
तभी, हे अरूरू, हमें राहत पहुंचाने को
गढ़ो एक प्रबल प्रतिस्पर्धी उसका
(जिससे वे)
प्रवृत्त हो जायें युद्ध में परस्पर ......'

नदी के पुलिन में आये अरूरू। नदी की कोमल मिट्टी से उन्होंने एक विचित्र मूर्ति गढ़ी, जिसके सिर पर थे स्त्रियों जैसे बाल, शरीर ढंका था सघन रोमावली से, चेहरे पर थी सरलता और नारी-सुलभ भीरुता। छोड़ आये वे उसे निर्जन वन में, बिलकुल अकेले। इस शिशु का नाम था 'ऐंकिदू'। एक और नाम था 'इयावाना'। पता नहीं, क्या गूढ़ अभिप्राय था अरूरू देव के मन में!

एरख-वासियों को पता नहीं चला कि गिलगामेश का प्रतिद्वंद्वी पैदा हो चुका है और वह वन में पशुओं के बीच रहकर बड़ा हो रहा है दिनो-दिन:

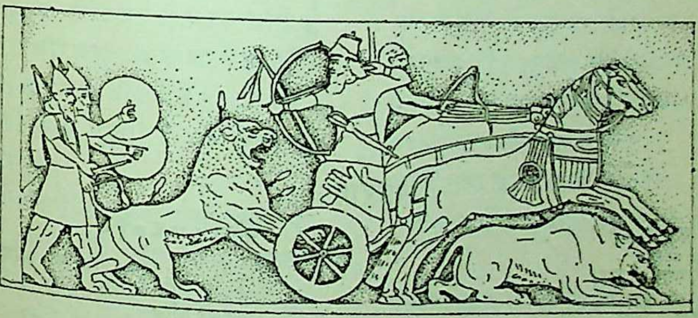

अशुरबनिपाल, जिसके पाठागार में प्राप्त मृत्फलकों पर 'गिलगामेश' महाकाव्य अंकित है। सिंह का आखेट करते अशुरबनिपाल का यह चित्र निमरुद में उसके महल की भित्ति पर उत्कीर्ण है। [अनुकृति : टी. ए. राणा]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभकामनाओं के साथ

श्रीकृष्णा एन्ड कं.

पो. बा. नं. ३६.
११-३९-२२, कस्तूरीवारी स्ट्रीट, विजयवाड़ा-१
फोन : ७५१४२

जेनिथ स्टील पाइप्स एन्ड इन्डस्ट्रीज लि.

बम्बई

(आंध्रप्रदेश में डी. जी. एस. एन्ड डी. की रेट कान्ट्रक्ट सूची पर)

के

अधिकृत वितरक

पानी, गैस, स्टीम व स्ट्रक्चरल आदि कार्यों के लिए उपयोगी

१५ मि.मी. से ४५० मि.मी. तक

शाखाएं

फोन : २४१७२
११, पहला माला
सेम्बूदोस स्ट्रीट
मद्रास-१

फोन : ७६०१४
५/५/८९/३२, सारा आयरन मार्केट
रानी गंज
सिकन्दराबाद-३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'हिरनों के झुंड में मिलकर घास चरता है
हिरनों की तरह गायों के थन से
दूध पीकर प्यास बुझाता है,
घूमता रहता है विजन वन में ऐंकिदू
पशुदल के साथ,
जब पशु नदी में पानी पीते आते हैं,
पहरे पर रहता है वह।'

पशु-मानव है ऐंकिदू। या कहिये, प्रकृति की गोद में पला एक आदिम मानव। उसके चेहरे पर सरलता और शौर्य की छाप के साथ ही एक नारी-सदृश भीरुता भी है। इसी भांति अनंत आकाश के नीचे बढ़ता, बड़ा होता जाता है वह।

इधर एरख नगर से पशुमांस के लोलुप शिकारी आते हैं और पशुओं को पकड़ने के लिए वन में गड्ढे खोदते हैं एवं फंदे लगाते हैं। लेकिन यह क्या! ...सब गड्ढे किसने भर दिये? सब फंदे किसने उखाड़ फेंके? किस दुष्ट ने किया है यह काम? नदी के किनारे चट्टानों की ओट में छिप जाते हैं सब शिकारी और पशु-दल के आते ही तीर और भालों से हमला बोल देते हैं उस पर। तभी उनकी नजर पड़ती है एक अजीबो-गरीब जीव पर।

क्रुद्ध होकर ऐंकिदू उन पशुहंताओं पर आक्रमण कर देता है। कुछ घायल होकर भाग जाते हैं, कुछ मरकर गिर पड़ते हैं। खबर फैल जाती है सारे एरख में :

'वन में है एक पशु-मानव,
महाशक्तिमान है वह,
पशुओं का रक्षक। ......'

गिलगामेश तब तक पूरी तरह मालिक बन चुका था एरख का। काफी परिवर्तन आ गया था उसमें। परंतु उसके हृदय में तो वासना की लौ जल रही थी अनिर्वाण ...... जीवन में कुछ कर गुजरने की तीव्र कामना।

इस खबर से निनसुम चौंक पड़ती है। तब क्या गिलगामेश का कोई प्रतिद्वंद्वी पैदा हो गया इतने दिनों बाद? अत्यंत चिंताक्रांत हो गयी राजमाता। सो न सकी सारी रात। पौ फटते ही पुत्र को बुलवा भेजा। इसके बाद जब सूर्यदेवता शमश उदयगिरि के अंतराल से निकलकर अपने रथ पर चढ़े और उस ज्योतिर्मय अश्ववाहित रथ को सारथी तेजी से मध्य आकाश में ले आया, ठीक तभी गिलगामेश ने एक शिकारी को निर्देश दिया :

'सुनो, साथ ले जाओ
नगर की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी वारांगना को
जो सम्मोहन और छलना में पटु हो,
वन में नदी के तट पर छोड़ आओ उसे;
निश्चय ही पशु-दल के साथ पानी पीने
आयेगा वह सरल युवक। तब......
एक-एक करके वह सुंदरी
अपने सब वस्त्र खोल फेंकेगी,
विवसना होकर खड़ी हो जायेगी
उसके सामने;
यौवन, हाव-भाव, हास्य-लास्य,
नृत्य-संगीत से
मोहित करके उस वनचारी को
संभोग का आमंत्रण देगी,
लज्जा नहीं होती वेश्या में। .....'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुशियों से जगमगाती दीपावलि के लिए मंगल कामनाएँ

एयर-इंडिया

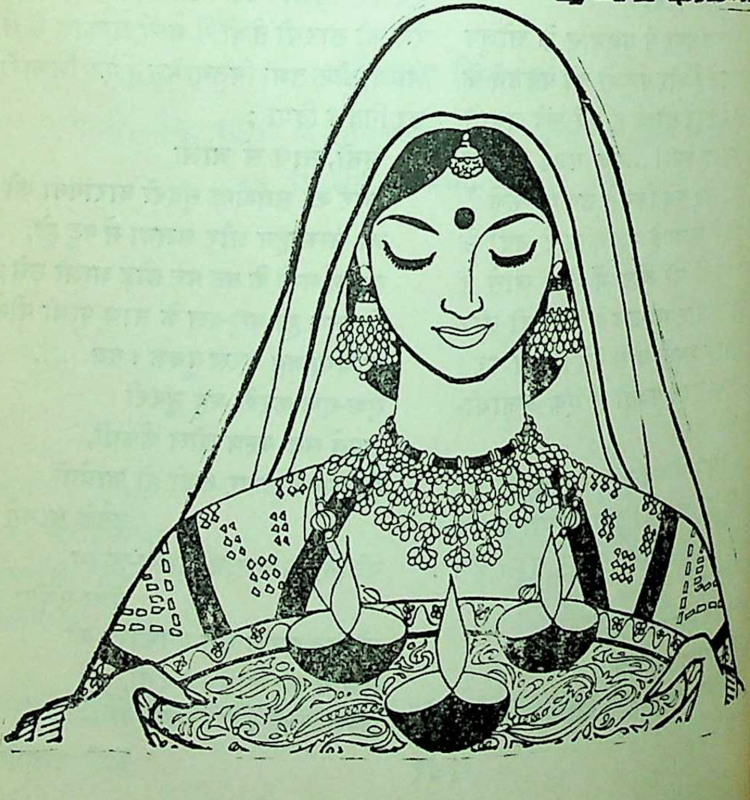

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवस्त्र सुंदरी वन के बीच बहती नदी के तट पर अपने आकर्षक अंगों का उत्तेजक प्रदर्शन कर रही है। ऐंकिदू देख रहा है उसे एकटक। उसके अवचेतन मन में वासना जाग रही है। उसने इतने निकट से ऐसा सम्मोहक देह-सौंदर्य कभी नहीं देखा था। हो सकता है, स्वप्न में देखा हो; या उषा-काल अथवा प्रदोष के समय आकाश-मार्ग से गुजरती हुई किसी देवबाला को देखा हो; या इसी नदी में नग्न नहाती हुई किसी रमणी को देखा हो—और तभी उसके हृदय के गहन में पड़ गया हो काम का बीज !

ऐंकिदू का चेहरा पसीने से तर हो जाता है, हृदय की धड़कन तेज हो जाती है, जांघें दहकने-सी लगती हैं और ठीक तभी वह कामिनी प्रवृत्तिवश और राजादेश से प्रेरित हो, अपने उष्ण-मसृण स्तनों के बीच खींच लेती है उसे। इससे उस आदिम तरुण में एक विचित्र प्रकार का विस्फोट-सा होता है। निपुण नारी के साहचर्य और निर्देश से ऐंकिदू की अनभिज्ञता दूर हो जाती है धीरे-धीरे। निमग्न हो जाता है वह देहामृत के अन्वेषण और अपूर्व आस्वादन में, जो अभी तक उसे वन-प्रांतर और अंबर से नहीं मिला था।

कुछ समय बाद जैसे नींद से जाग पड़ता है वह सरल-हृदय तरुण; और अपने को मुक्त कर लेता है छलनामयी नारी के आलिंगन-पाश से। थकान और ऊब उसे अपने जगत् की ओर खींच ले जाती है। लेकिन थोड़ा आगे बढ़ते ही वह अवाक् रह जाता है।

गिलगामेश से संबद्ध एक मृत्फलक पर जलप्लावन का दृश्य [सौजन्य : दिनमान]

यह क्या ! .....उसे आते देखकर पशु-दल भयभीत हो पीछे क्यों हटता जा रहा है? वह तेजी से लपकता है उनकी ओर। किंतु उसे देखकर सारे पशु स्तंभित-से हो जाते हैं कुछ क्षणों के लिए; फिर एकाएक तेजी से भाग उठते हैं। ऐंकिदू विस्मित होकर अस्फुट स्वर में कहता है :

'मुझे देख डर क्यों रहे हो तुम सब ?
तुम्हीं में से तो एक हूं मैं।......'

परंतु पशु और भी दूर चले जाते हैं। वन-प्रांतर में धूल उड़ने लगती है उनके खुरों के आघात से। ऐंकिदू आर्तनाद कर उठता है :

'क्यों मुझे परित्याग कर रहे हो तुम ?
दुहाई तुम्हारी......साथ ले जाओ,
अकेले न छोड़ जाओ।......'

धूल के बादल के पीछे पशु दल-धीरे-धीरे आंखों से ओझल हो जाता है; उसके खुरों की आवाज आनी बंद हो जाती है। इधर उज्ज्वल शमश देव के रथ के नीचे अकेले खड़े ऐंकिदू की आंखों से आंसुओं की झड़ी लगी हुई है। ..... तो इसी का नाम है निर्वासन! सारा शरीर शिथिल हो गया है उसका और हृदय दुःख व ग्लानि से बोझिल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेनिथ

औद्योगिक जगत में
एक विख्यात नाम है।

स्टील पाइप
स्टील कटर

इसके मुख्य उत्पादन हैं।
देश-विदेश में सर्वत्र
इनका प्रचार है।

जेनिथ स्टील पाइप्स एंड इन्डस्ट्रीज लि.

खोपोली स्थित औद्योगिक निर्माण का स्थान अनुपम है, आदर्श है, उसके उत्पादन के द्वारा उपभोक्ताओं की आवश्यकताओं की पूर्ति होती है, निर्यात के द्वारा देश को विदेशी विनिमय की प्राप्ति होती है, और विविध करों के द्वारा देश के अर्थकोष की वृद्धि होती है।

सबकी सेवा में प्रस्तुत
**जेनिथ स्टील पाइप्स
एंड इन्डस्ट्रीज लि.
खोपोली (कुलाबा) बंबई.**

**दि इंडियन टूल
मैन्यूफैक्चर्स लि.**
१०१, सायन रोड, सायन,
बंबई-४०००२२

सुनिश्चित होकर चुनाव
कीजिये

'डॅगर' ट्विस्ट ड्रिल्स रीमर्स,
कटर्स, टैप्स, टूलबिट्स
और माइक्रोमीटर्स
डॅगेलाय कार्बाइड
टूल्स और टिप्स
डॅगर-साके गियर हॉब्स
और गियर शेपिंग कटर्स

प्रिसिशन का प्रतीक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तभी सभ्यता की वह छलनामयी दूती ओंठों पर मुस्कान झलकाती हुई हौले-हौले उसकी ओर बढ़ती है। पास आकर कहती– 'क्या सोच रहे हो ऐंकिदू ? क्यों रो रहे हो?' ऐंकिदू कोई जवाब नहीं देता। उसकी आंखों में से झांकते अकेलेपन को देखकर समझ जाती है चतुर नारी। कहती है :

'देवताओं की तरह सुंदर हो तुम ऐंकिदू
वन-वन में क्यों घूमते हो–
पशुओं के साथ यों बेमतलब ?
चलो मेरे साथ एरख नगर में,
सुंदर नगर है, सुरम्य दीवारों से घिरा,
उसका प्रबल पराक्रमी स्वामी गिलगामेश
बाट जोह रहा है तुम्हारी
एक अरसे से। ......'

इधर उसी रात को गिलगामेश को एक अजीब सपना पड़ता है। अपनी मां के पास जाकर बताता है वह –'मां-मां, एक अजीब सपना देखा मैंने आज रात। विशाल आकाश में अनगिनत तारे चमक रहे थे। मुझे लगा कि उन्हीं में से कोई टूटकर मुझ पर कूद पड़ा – जैसे, आकाश के देवता आनु का कोई सेनानी हो। मैं उससे जूझा; परंतु वह मुझसे भी अधिक बलवान था। बड़े वेग से मैंने उसका मुकाबला किया। जमीन पर गिराकर मैं उसकी छाती पर चढ़ बैठा, जैसे नारी के शरीर पर पुरुष चढ़ता है। फिर मैंने दोनों अपने हाथों से उठाकर उसे तुम्हारे पैरों के पास पटक दिया। पर आश्चर्य मां, बड़ा अद्भुत था वह दृश्य ! तुमने उसे भी वही स्नेह दिया, जो कि मुझे देती हो।......'

ठीक उसी समय......

नगर-द्वार से एक जुलूस आ रहा है ! ऐंकिदू को साथ लिये आ रही है वह वारांगना। पथ में, छतों पर, अलिंदों पर, गवाक्षों में भीड़ जमा है नागरिकों की। जुलूस राजप्रासाद में प्रवेश करता है। निनसुम कह उठती है–'वह है, वही है बेटा, तुम्हारे सपने का प्रतिद्वंद्वी ......' तत्क्षण क्रुद्ध गिलगामेश ऐंकिदू पर झपट पड़ता है। शुरू हो जाता है अनिवार्य संघर्ष। इसके बाद गिलगामेश ठीक वही कुछ करता है, जो उसने सपने में किया था। यह तो जैसे नियम ही है उसके जीवन का कि मैं जीती हुई समस्त वस्तुएं अपनी माता के चरणों में अर्पित करूंगा। सपने में भी उसने यही किया था; अब जागरण में भी यही करता वह। और जैसे ही ऐंकिदू राजमाता के पैरों पर गिरता है, वह उसे उठाकर छाती से लगा लेती है और बड़े प्रेम से उसके मस्तक को चूमती है। यह देखकर गिलगामेश चिल्ला उठता है–'यह क्या कर रही हो मां ? ...... वह तो मेरा प्रतिद्वंद्वी है, शत्रु है !'

बुद्धिमती निनसुम मुस्कराकर उत्तर देती है–'नहीं, परम मित्र है। मैं चाहती हूं, आज से तुम दोनों का अस्तित्व एक हो जाये, तुम दोनों की आत्माएं अटूट बंधन में बंध जायें !'

मित्रता हो जाती है सभ्य और आदिम मानवों में। दोनों में उम्र का फर्क तो है ही। लेकिन इसके बाद जैसे गिलगामेश के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदर डिजाइन

तथा

आकर्षक रंग के वस्त्रों के लिए

न्यू स्वदेशी तथा मंजुश्री

के वस्त्रों का आग्रह रखिये

न्यू स्वदेशी मिल्स ऑफ
अहमदाबाद लिमिटेड,
नरोडा रोड, अहमदाबाद

मंजुश्री टेक्सटाइल्स
शाहीबाग रोड
अहमदाबाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हृदय में ऐंकिदू के प्रति प्रेम का पारावार ही उमड़ पड़ता है। (पश्चिमी एशिया से लेकर यूनान तक भूमध्य सागरीय अंचल में उस समय समलैंगिक प्रेम का प्रबल प्रभाव वर्तमान था। ऐंकिदू के प्रति गिलगामेश के आकर्षण में भी बहुत कुछ ऐसी ही गंध आती है।) ऐंकिदू और गिलगामेश एक साथ खाते, सोते, घूमते, शिकार और युद्ध पर जाते हैं। यही क्रम चलता रहता है।

इसी समय एक विशेष घटना घटती है। देवदारु पर्वत पर एक सदाबहार देवदारु-वन है, निनलिल नाम के देवता का। (इन्हीं देवता के कारण हुआ था वह महाप्लावन, जिसका वर्णन गिलगामेश महाकाव्य में हुआ और बाइबल में भी।) हुम्बाबा नाम का एक दानव इस वन का प्रहरी है। उसका वध करने के लिए जाते हैं गिलगामेश और ऐंकिदू।

इस देवदारु-वन में कभी-कभी घूमने आ जाया करती है प्रेम की देवी इश्तर। यूनान की रतिदेवी एफ्रोदिते इसी देवी की प्रतिकृति है। सुंदर पुरुष के प्रति सहज आसक्त हो जाया करती है वह। पेड़ों की ओट से गिलगामेश को देखकर उस पर मुग्ध हो जाती है इश्तर देवी; पर इस उद्दंड षंडतुल्य व्यक्ति के सामने आने का साहस नहीं कर पाती है। सघन छायाओं से आवृत उस अरण्य में एक आश्चर्यजनक ज्योतिछटा उत्पन्न करके वह उन दोनों का पथ-प्रदर्शन करती है और प्रेमोन्मत्त होकर उनका अनुसरण करती है चुपके-चुपके।

मनुष्य के सिर वाला वृषपक्षी
[सारगोन द्वितीय के महल में उत्कीर्ण]

हुम्बाबा के निहत होने के बाद इश्तर देवी गिलगामेश के सामने प्रकट होकर यह कहती है :

'गिलगामेश मेरे प्रिय !
नीलम का रथ दूंगी, सोना दूंगी,
देवदारु के सौरभ से भर दूंगी
हृदय तुम्हारा,
...... मेरे पास आओ,
तुम्हारी ही दासी हूं मैं।......'

न जाने और भी कितने प्रलोभन देती है। परंतु गिलगामेश इस सनकी देवी के कारनामों से भली भांति परिचित है। यह जिससे प्रेम करती है, उसकी शामत ही आ जाती है। वह इस अनाकांक्षित प्रणयिनी के प्रेम-निवेदन को ठुकरा देता है और उसकी कठोर भर्त्सना करता है।

इस प्रकार अपमानित होकर क्रुद्ध हो उठती है ईश्तर। मन ही मन इस अपमान का बदला लेने का निश्चय करके वह फौरन पहुंचती है अपने पिता अंबराधिपति आनु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होठलों में [illegible] खाने से मुँह में जलन आना,
चर्मरोग, फुन्सियां, खुजली, माता, खांसी तथा बवासीर,
रक्तपात आदि से पीड़ित हों....
तब चरक का

गुलकंद

(प्रवाल पिष्टी, रूपा, वंशलोचन युक्त) उपयोग करें,
आंतरिक तथा मानसिक स्वस्थता के लिये तमाम
औषधि विक्रेताओं से प्राप्य ।

चरक फार्मास्युटिकल्स् (इंडिया)
प्रा. लि., बम्बई-४०००११

CHARAK PHARMACEUTICALS BOMBAY

एकमात्र विक्रयप्रतिनिधि: फार्गो सेल्स एजेंसीज
२५५/२५६ ए टु जेड, इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फर्ग्यूसन रोड, लावर परेल, बम्बई-११

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव के पास और रोती हुई कहती है—'गिलगामेश ने मेरा घोर अपमान किया है, मुझे लांछित किया है। पिता, शीघ्र एक भयंकर वृष (सांड़) बनाकर दो मुझे, जो पक्षियों की तरह आकाश में उड़ भी सके।'

इश्तर द्वारा प्रेरित वृषपक्षी तीव्र वेग से दौड़ा चला आता है गिलगामेश और ऐंकिदू को मारने के लिए। गिलगामेश तो उससे जूझकर किसी तरह बच जाता है; लेकिन ऐंकिदू बुरी तरह घायल हो जाता है। शोकार्त गिलगामेश उसे कंधे पर लादकर एरख लौट आता है। बारह दिन तक जीवन-मृत्यु की लड़ाई जारी रहती है। पर बेचारे ऐंकिदू को बचाने के समस्त प्रयत्न विफल रहते हैं। तेरहवें दिन सुबह गिलगामेश की गोदी में सिर रखे वह अंतिम सांस लेता है। हाहाकार कर उठता है गिलगामेश :

'प्रियतम !
किस गहरी नींद में सो रहे हो ?
किस अंधकार ने
आवृत कर लिया है
तुम्हें ?
और मेरी बात क्यों नहीं सुन रहे हो ?
ऐंकिदू, मेरे भाई, चुप क्यों हो ?
कौन अब मेरे साथ शिकार पर जायेगा,
वन का बाघ किसके हाथों से मरेगा ?
अब फिर दोनों साथ-साथ
दुर्गम पहाड़ पर नहीं चढ़ेंगे,
सब खेल खत्म हो गया
जिंदगी का...... हाय ! ......'

शोक से विक्षिप्त गिलगामेश एकाएक दौड़ता हुआ निकल जाता है राजमहल से और नगर पार करके न जाने किधर चला जाता है। जो भी उसे देखता है, वही हैरानी से कहता है :

'सिर क्यों झुका हुआ है ?
कहां गयी तुम्हारी वह शक्ति ?
शक्तिमान ! हृदय में कौन-सा दुःख है ?
क्यों शिथिल है देह, शोकाच्छन्न है दृष्टि
और विषण्णता छायी है ? ......'

और गिलगामेश उत्तर देता है;

'क्यों न मेरी यह दशा हो ?
ऐंकिदू नहीं रहा, छह दिन छह रात
उसके सिरहाने बैठकर रोया हूं,
इसके बाद मृत्यु-चेतना पैदा हुई
सहसा मन में
पर अब दिवंगत बंधु के पास ही
सोने को जी चाहता है
और अच्छा हो कि फिर न जागूं
कभी ।......'

यहीं से यह महाकाव्य भौतिक धरातल से उठकर पहुंचता है दर्शन के स्तर पर; और यह दार्शनिक अंतर्धारा ही इसे एक श्रेष्ठ और सुंदर साहित्यिक कृति बनाती है।

मृत्यु-चेतना से आक्रांत गिलगामेश अब अपने आगे-पीछे, दायें-बायें केवल मृत्यु की दीर्घ-प्रसारी धूसर छाया देखता है और सुनता है एक शोक-संगीत। इस व्यापक मृत्युछाया में जीवन की सब चंचलता, हलचल, प्रीति, वासना, महत्त्वाकांक्षा धुंधली और अर्थहीन हो जाती है। अनंत शोक की जिस रागिनी को उसने अभी तक नहीं सुना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

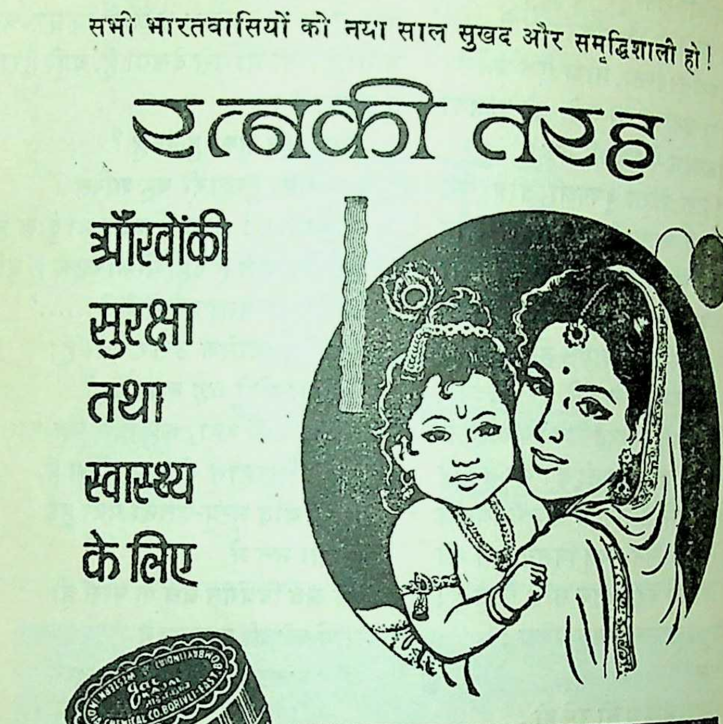

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था, उसे अब सुनकर वह चौंक पड़ता है। मन में शंका उठती है :

'यह मृत्यु जीवन की चरम परिणति
क्यों होगी ?
जब अमरता नामक अमृत वर्तमान है,
कहीं है अवश्य अनंत जीवन।......'

फिर यह प्रश्न जागता है–'जब मृत्यु ही है अंतिम विराम, तब यह वैभव, विलास, युद्ध, विजय, सौंदर्य, संभोग क्यों ? इतना पसीना और खून बहाने की भी क्या जरूरत है, जब एक दिन सब-कुछ आंसू के समंदर में ही खो जायेगा ?'

आस्था और अनास्था के झूले में झूलता हुआ गिलगामेश जीवन के सारभूत सत्य को ढूंढ़ता फिर रहा है, अमरत्व नाम की देवताओं की संपदा का अन्वेषण कर रहा है। अंत में उसे पता चलता है कि एक प्राचीन और प्राज्ञ व्यक्ति है, जिसने अमरता प्राप्त कर ली है। उसका नाम है उतानेपिशतिम, जो शुरुप्पाक शहर का निवासी है और जाति का बढ़ई है। महाप्लावन के समय उसी ने वह नाव बनायी थी, जिसमें समस्त प्राण-बीजों को लादा गया था। इसके बाद उसने नाव को एक पहाड़ की चोटी से बांधकर इंतजार किया था फिर से जमीन के निकलने का।

भटकता-भटकता गिलगामेश चल पड़ता है शुरुप्पाक शहर की ओर–फटेहाल, भूख-प्यास से भी बेखबर, गढ़े में धंसी आंखों में प्रश्नात्मक दृष्टि संजोये, नंगे पैर, लहूलुहान। मंजिल दूर है। ऊंचे पहाड़ों और दुर्भेद्य वनों ने दुर्गम बना दिया है मार्ग को। शुरुप्पाक पहुंचने पर उसे नगर के बड़े-बूढ़ों से पता चलता है कि उतानेपिशतिम मृत्यु-सागर के उस पार सूर्यास्त के देश में रहता है, जिसके द्वार पर पहरा देते हैं सूर्य-देवता शमश के अनुचर, भयंकर वृश्चिक (बिच्छू)-मानव। यह स्थान दुर्गम माशु पर्वत की ओर है।

परीकथा के राजकुमार की तरह गिलगामेश चला जा रहा है जीवन-मूल के संधान में। किंतु परीकथा की तरह यह महाकाव्य निपट कल्पना-भित्तिक नहीं है। अपितु इसमें जीवन की वास्तविकता है, संग्राम है, और है कठोरतम सत्य। इसमें मंत्र, माया या अलौकिक तत्त्व द्वारा कार्यसिद्धि की घटनाएं नहीं हैं। सर्वत्र यथार्थ, श्रम और संग्राम है–उसके अतिरिक्त कुछ नहीं। जीवन में सब कुछ बाहुबल से अर्जित करना पड़ता है, यही संदेश है इस महाकाव्य का।

लंबे सफर के बाद गिलगामेश माशु पर्वत के चिरसंध्या के देश में पहुंचता है। वहां दूर ही से उसे दिखाई देता है कि उज्ज्वल शिरस्त्राण पहने भीमदर्शन वृश्चिक-मानव पहरा दे रहे हैं। घटाटोप अंधेरे में चलते-चलते सूर्यास्त के देश को पार करके अंत में वह प्रकाश के राज्य में पहुंचता है। सामने समुद्र-तट पर एक अत्यंत सुंदर बगीचा दिखाई देता है। बगीचे के वृक्षों पर नीलमणि जैसे फूल लगे हैं, भूमि पर भी बहुमूल्य रत्न बिखरे पड़े हैं। इस बाग की स्वामिनी है मृत्युसागर-तटवासिनी देवी सिदूरी-शिक्तु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आमला आपके बालों के
लिये फ़ायदेमंद है

ज़ुलामला
उस से भी अधिक
फ़ायदेमंद है।

क्योंकि ज़ुलामला में आमला के साथ साथ शिकाकाई, सरसों और दूसरी जड़ी-बूटियां भी शामिल हैं।

ज़ुलामला बालों को धोता ही नहीं बल्कि बालों का पोषण भी करता है। ज़ुलामला बालों की जड़ों में प्राकृतिक चिकनाहट को कायम रखता है जिसे साधारण साबुन और कैमिकल शैम्पू ख़त्म कर देते हैं। यह आप के सिर की ख़ुश्की को दूर करता है, बालों को गिरने से रोकता है और समय से पूर्व बालों को सफ़ेद होने से बचाता है।

हमदर्द ज़ुलामला बालों की हिफ़ाज़त के लिये

"परमात्मा की अमरवाणी : आपका अपना धर्मग्रन्थ"

चारों वेदों का हिन्दी भाष्य

मंत्र - अर्थ - भावार्थ सहित 2200 पृष्ठों में–25 से० मी० × 38 से० मी० (10×15 इंच) साइज–वजन लगभग 9 किलो। चार सुनहरी जिल्दों में।

लागत मूल्य 284) रु. – किन्तु प्रचार के लिये 215) रु०

2 जिल्दों में : रियायती मूल्य 201) रु०

सर्वश्रेष्ठ आर्ट पेपर : 501) रु०

साथ में **51**) रु० का साहित्य मुफ्त। आदेश के साथ 1/4 धन अग्रिम भेजें। रेलवे स्टेशन लिखें।

पंडिता राकेशरानी - अध्यक्ष - दयानन्द संस्थान,
वेद मंदिर–**1597**, हरध्यान सिंह मार्ग –करोल बाग-नयी दिल्ली-5
दूरभाष–**566639**

अजमेर में : प्रो० धर्मवीर **24/69**, चांद बावड़ी रोड, केसर गंज।
जयपुर में : रावत मिष्ठान भण्डार - स्टेशन रोड से भी उपरोक्त भावों में मिल सकते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिलगामेश केवल पशु-चर्म की लंगोटी लगाये हुए है। दूसरा कोई आवरण नहीं है उसके शरीर पर। इस वेश में उसे देखकर प्रकृतिचारिणी निःसंग सिदूरी देवी डर जाती है और अपने घर में घुसकर दरवाजा बंद कर लेती है—गिलगामेश के पुकारने पर भी दरवाजा नहीं खोलती। एक अज्ञात-कुलशील अपरिचित पुरुष इस एकांत स्थान में सहसा चला आया है......न जाने क्या हो जाये! सिदूरी देवी को उसे उत्तर देने में भी भय महसूस होता है। परंतु उद्दंड और जिद्दी गिलगामेश चुप रहने वाला नहीं, यद्यपि अब वह तत्त्वसंधानी सर्वत्यागी संन्यासी बन चुका है। अत्युग्र प्रेरणा के वशीभूत होकर वह दरवाजे को तोड़ डालता है और बलात् घर में घुस पड़ता है।

कांपती हुई आवाज में सिदूरी पूछती है—'कौन हो तुम ? क्या चाहते हो ?' गिलगामेश उत्तर देता है—'जिसकी आशंका से तुम घर में घुस गयीं, उसका मैं चाहक नहीं हूं। क्योंकि मैं जीवन की दुरंत इच्छा की पूर्ति के लिए नारी देह का गुह्य से गुह्य अंश देख चुका हूं। अब तो मैं खोज रहा हूं—अनंत जीवन, जिसका दूसरा नाम है अमरता। मैं गिलगामेश हूं।'

सिदूरी इस पर कहती है :

'ओ गिलगामेश !
बेकार है तुम्हारा यह परिश्रम ।
जिस जीवन की खोज तुम कर रहे हो,
वह कहीं नहीं मिलेगा ।
मानव की सृष्टि के साथ ही उसमें

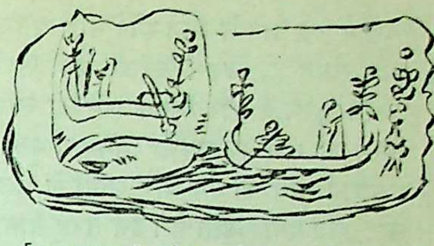

[अमरता की खोज—सौजन्य : दिनमान]

मृत्यु का बीज भी रोप दिया है
देवताओं ने ।
मेरी सलाह मानो—
छोड़ दो यह निरर्थक खोज
खाओ-पियो—करो मौज ।......
गिलगामेश !
आदियुग से अब तक कोई
मृत्यु-सागर को पार नहीं कर पाया
वह दरवाजा बंद है,
कैसे खोलोगे तुम उसे ?......'

परंतु निवृत्त नहीं होता गिलगामेश। किसी की सलाह न मानना, अपनी ही जिद पर अड़े रहना—यही तो उसका स्वभाव है। सिदूरी देवी से वह आग्रह करता है कि मुझे बताओ, उतानेपिशतिम से कैसे भेंट होगी। आखिर हारकर सिदूरी बताती है :

'वह जो सागर देख रहे हो न, उसका नाम है मृत्यु-सागर। उसके तट पर है उतानेपिशतिम का एक माझी, जो नाव को इस पार से उस पार ले जाता है। उसका नाम है उरशनावि। जाकर देखो, अगर वह तुम्हें पहुंचा दे उस पार।'

मृत्यु-सागर के तट पर पहुंचकर गिलगामेश उरशनावि को बाध्य करता है उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाव में उस पार ले जाने को। नीचे खतरनाक समुद्र है, जिसमें निरंतर ऊंची लहरें उठती रहती हैं और जिसके जल को स्पर्श करने का अर्थ है–तत्काल अनिवार्य मृत्यु। इसलिए नाव को एक बार लग्गी से ठेलकर छोड़ देना पड़ता है। इस तरह सागर को पार करने के लिए एक सौ बीस लग्गियों की जरूरत पड़ती है। (यह एक सौ बीस की संख्या किस बात का प्रतीक है, कौन जाने!) अंत में उतानेपिशतिम के पास पहुंच ही जाता है गिलगामेश।

उस महाप्राज्ञ वृद्ध के साथ गिलगामेश का जो संवाद होता है, वह दार्शनिक भावों से भरा हुआ है। उतानेपिशतिम बताता है–'हमेशा के लिए घर बनाते हैं हम क्या, गिलगामेश? नदी का जल क्या बढ़ता ही रहता है सदा? सब क्षणिक है। तभी तो इतना आनंदमय है यह नश्वर जीवन। याद रखो, जन्म के साथ ही मृत्यु की भी सृष्टि हुई थी।'

परवर्ती युग में यूनान के दार्शनिक सुकरात ने भी जन्म और मृत्यु के सह-अस्तित्व को स्वीकार किया है। यूनानी दर्शन में संभवतः यह विचार सुमेरों के दर्शन से ही आया है।

गिलगामेश जब किसी तरह नहीं मानता, तब उतानेपिशतिम हंसकर कहता है:

'देखो, मृत्यु का भावकल्प है एक,
निद्रा है उसका नाम।
छह दिन छह रात
अगर तुम बिना नींद के रह सको,
तो अमरता का पुरस्कार पा लोगे।'.....

उतानेपिशतिम की इस बात पर गिलगामेश मन ही मन हंसता है। ... मृत्यु के बाद उसने न जाने कितने ... बिना नींद के बितायी हैं! अब ... बूढ़ा कह रहा है सिर्फ छह दिन छह ... न सोने के लिए!

उतानेपिशतिम के घर के एक सु... कक्ष में सुंदर आरामदायक शय्या पर ... जाता है गिलगामेश को इस परीक्षा के ... एक लंबे अरसे तक भूख-प्यास-नींद की ... करके घूमता रहा है वह। इतने समय ... लक्ष्य-स्थल पर पहुंचकर उसके ... की सिद्धि हुई है। अतः यह स्वाभाविक ... है कि दीर्घयात्रा की क्लांति के बाद ... आतिथ्य में आराम और सुख पाकर ... गहरी नींद में सो जाये। यही होता ...

उतानेपिशतिम इस परीक्षा के माध्यम ... उसे यही तो समझाना चाहता था कि ... देह को तुम अनंत काल तक जीवित ... चाहते हो, मृत्यु के स्पर्श से बचाना ... हो, वह हमेशा इच्छा के नियंत्रण में ... रहती। यह देह द्रव्यमय है, आत्मा चैतन्य ... है। इसलिए देह प्रकृति के नियम के ... है, जैसा कि घर बनाने या नदी में बाढ़ ... के दृष्टांत में पहले कहा जा चुका है। ... देह नश्वर है, कालाधीन है।

परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हो पाया ... गामेश। इतने दिन बाद उसे पता चला ... कि वह एक विश्वासघाती का बोझ ... रहा है, जो उसकी आज्ञा का वशवर्ती ... है। अंततः सत्य को जानकर, जड़ और ... चेतन के भेद को समझकर विपन्न ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संधानी गिलगामेश लौट पड़ता है। विदा देते समय उतानेपिशतम उससे कहता है—'गिलगामेश, इस लंबी कष्टदायक यात्रा से तुम्हारा शरीर जराजीर्ण हो गया है, तुम्हारी जवानी खत्म हो गयी है। लेकिन अभी दुनिया को तुम्हारी जरूरत है। लिहाजा एक काम करो। समुद्रतल में एक अद्भुत जड़ी है, जिससे वृद्ध भी पुनः युवक हो जाते हैं। उसकी सहायता से तुम्हारा यौवन लौट आयेगा। जाते वक्त उसे लेते जाना।'

गिलगामेश यही करता है। यौवन-जड़ी को हाथ में लेकर जब वह जा रहा है, तब रास्ते में एक झरना देखकर उसकी नहाने की इच्छा होती है। झरने के पास एक पत्थर पर जड़ी रखकर वह स्नान करने जाता है। इधर यौवन-जड़ी की मधुर गंध से आकृष्ट होकर एक सांप वहां आता है और जड़ी को लेकर खिसक जाता है।

स्नान से लौटने के बाद गिलगामेश को इसका पता चलता है। दुःख से भाराक्रांत हो जाता है उसका हृदय। उसे ज्ञानोदय होता है—'मनुष्य का जीवन सीमाबद्ध है। अमरत्व लाभ की आकांक्षा वृथा है। कोई दुर्निवार नियति नियंत्रित करती है जीवन को।' गहरी उसांस लेकर अभियात्री गिलगामेश लौट पड़ता है एरख की ओर।

[इस अद्भुत महाकाव्य का रचयिता कौन है, इसका अभी तक पता नहीं चला है।]

★

पहले अंधकार के बाद

आदम उस समय कितना भयभीत हुआ होगा, जब उसने पहली बार सूरज को डूबते और दिन के प्रकाश को गायब होते हुए देखा होगा। आदम के लिए यह पहला अंधकार था। भला वह कैसे समझ सकता था कि रात क्या होती है, जबकि उसने कभी सुबह देखी नहीं थी!

लेकिन फिर जब उसने सूर्योदय के वैभव को देखा होगा, तो अंधकार उसे कितना ज्यादा अंधेरा लगा होगा, और रात की लंबी भयानकता कितनी बेचैनी-भरी प्रतीत हुई होगी......जब तक कि उसे यह पता नहीं लगा होगा कि दिन फिर आयेगा, कि संसार में दिन-रात का अटूट सिलसिला चलता है।

और तब आदम देख सका होगा कि रात के समय आकाश में कुछ न कुछ प्रकाश बाकी रहता है—तारों का प्रकाश, और सूर्योदय होने की आशा का प्रकाश।

आखिर आदम ने जाना होगा कि रात कभी भी पूर्णतया अंधेरी नहीं होती, और न ही रात अंतहीन होती है......जैसा कि हममें से हर किसी को दुःखों-मुसीबतों से भरे, अंधकारपूर्ण इस जमाने में जानना चाहिये। प्रकाश कभी भी हमसे दूर नहीं होता।

[यहूदियों की धर्म-विज्ञान गोष्ठी का 'द न्यूयार्क टाइम्स' में छपा एक विज्ञापन]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैया, कहाँ गये वे लोग

—शिवानी

अल्हैया-बिलावल की यह पंक्ति कभी बरबस ही गुनगुनाहट बन ओंठों पर चली आती है। अतीत की स्मृतियां भी शायद वय के साथ-साथ सख्त पड़ गयी नसों की भांति रह-रहकर पके फोड़े-सी टीसने लगती हैं। एकांत की यवनिका उठाकर केवल भूले-बिसरे चेहरे ही धृष्टता से आकर कंधे पर हाथ नहीं रखते, विस्मृति से धुंधले पड़ गये व्यंजनों का स्वाद भी कभी-कभी हमें स्मृति-विह्वल कर बैठता है।

कभी लखनऊ में अमीनाबाद का एक विशिष्ट नुक्कड़ अपनी चटपटी चाट के दोनों के लिए प्रसिद्ध था। मुझे याद है कि दोनों में भरी कुचली गरम मटरों को अपने कार्यपटु, सिद्ध करपुट में उछालता वह प्रौढ़-गंभीर चाट वाला कैसे-कैसे संयमी ग्राहकों की भी लार टपकाने में समर्थ था। उस दुकान का अब कोई अस्तित्व नहीं रह गया है, ढूंढ़ने पर भी मुझे वह कहीं नहीं दिखी।

मटर की चाट और करारे बताशों के लिए वह छोटी-सी दुकान तब विशेष रूप से चर्चित थी। चौड़े-से तवे पर कुचली मटरों को गरम करके वह एकमात्र दुकानदार बड़े धैर्य से, बड़े अंदाज से मसालों की चुटकियां छोड़ता और उतने धैर्य से ग्राहक भी बिना तकाजा किये उस दुर्लभ दोने की प्रतीक्षा में खड़े रहते तपस्या रत ऋषि-मुनियों की तरह। मुझे तो सबसे ज्यादा आनंद आता था, जब वह एक तीखी चौड़ी छुरी से तवे पर छनछनाती आलू की टिकिया का मध्य भाग चीरकर उसमें मटर भरता-ठीक जैसे कोई सधा हुआ सर्जन किसी के नाजुक दिल को बीच से चीर रहा हो।

लखनऊ में अभी भी चाट की दुकानों का अभाव नहीं है। एक ने तो अपने को 'चाट-नृपति' घोषित कर अनेक समृद्ध ग्राहकों को स्थायी रूप से बांध लिया है। अन्य एक-दो ख्यातिप्राप्त होटल भी दुकान से संलग्न अपने निजी चाट-भंडार खोल, सुस्वादु सुगंध के आमंत्रण का धुआं फुटपाथ तक बिखेरकर रख देते हैं। वहां चाट दोनों में नहीं, स्वच्छ-धवल प्लेटों में वुर्राक बैरे परो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहते हैं। किंतु जो चाट के खानदानी खवैया हैं, वे जानते हैं कि जो मजा दोने चाटने में है, वह प्लेट पर धरे पानीबताशों को चम्मच से उठाकर मुंह में धरने में नहीं।

फिर एक बात और भी है। समय के साथ-साथ हमारी रुचि केवल वेशभूषा, पठन-पाठन में ही नहीं बदली, हमारी भारतीय जिह्वा ने भी पैंतरा बदल लिया है। जो व्यंजन हमें रुचते थे, वे हमारे बच्चों की परिमार्जित जिह्वा के परिष्कृत स्वाद को नहीं बांध पाते। अब पूड़ी-पराठों और कचौड़ियों का युग नहीं रह गया है। डायटिंग के अनुशासन में स्वेच्छा से बंधी हमारी पुत्रियां स्वयं ही धीरे-धीरे अपर्णा बनती जा रही हैं। मजाल है कि कनक-छरी-सी देह पर छटांक-भर मांस चढ़ जाये!

सुबह के नाश्ते में कभी इसी लखनऊ की कबरवाली दुकान की गरमागरम जलेबियां हमारे लिए नियामत थीं। या कभी-कभी ब्राह्म मुहूर्त के नाश्ते का आयोजन हुआ तो चौक के महाबली कुलफीनमेश वाले को नानी बुलौआ भेजतीं—'अरे, महाबली से कहना कल सुबह तड़के घड़ा भरकर ले आये। बच्चे छुट्टियों में आये हैं—फिर तो पूरे साल-भर बाद आयेंगे।'

आह, क्या अद्भुत स्वाद था उस देव-दुर्लभ कुलफीनमेश का! ठीक जैसे बर्फ की पहली फुहार को अमृत-सिंचित कर किसी ने जिह्वाग्र पर रख दिया हो। अंधेरे में ही दूर से उस परिचित मधुर कंठस्वर का स्पर्श हमें जैसे किसी फूलछड़ी से गुदगुदाकर जगा देता। पीतल की चमचमाती परात पर बड़ा-सा मिट्टी का कूंडा, कूंडे पर हिमशीतल कुलफीनमेश का लुभावना स्तूप, आस-पास वर्तुलाकार पंक्तिबद्ध नन्हे-नन्हे दीये। एक-एक दीये में वह अपनी उस कुलफीनमेश को ऐसे छप्प-से डालता कि 'सॉफ्टी' के अंदाज में कुलफी सज जाती। फिर दूसरे छोटे कूंडे से न जाने कैसा मीठा चूरा बुरकता और एक-एक करके हमें थमाता।

एक दिन मैंने पूछ लिया—'महाबली, कैसे बनाते हो इतनी बढ़िया चीज?'

'लैव, तनी देखो ई बिटिया को! ई का बनाई जात है?'

'तब?

'तब सुनौ। पहिले कंडन की आंच पै दूध औंटावैंई, तब फेंटईं, तब ओस में धरैं, फिन भुनसारे फेंटैं, फेंटत-फेंटत फैना उठैं और धर दाबैं, उठैं और धर दाबैं—समझी बिटिया? ई तुम्हार बाप-दादा नहीं बनाय सकत।' इस उजड्ड उत्तर के पश्चात् फिर भला कौन-सा प्रश्न पूछा जा सकता था!

कुलफीनमेश से छलछलाते मधुर भांड के स्वामी का व्यक्तित्व भी उतना ही मधुर था, और कंठ उससे भी मधुर! 'कुलफीनमेश!' वह हांक लगाता, तो लगता—आम्र कुंज में कोयल कुहुक रही है। नाम के विपरीत दुबली-पतली देह, मारकीन की बंडी, ऊंची धोती, सिर पर विचित्र-सा पग्गड़, कानों में सोने के मुंदरे, कंठ में काली डोर से बंधी तबीजियां। कभी-कभी दीये थमाने के बीच महाबली अपने मधुर कंठ से हमारा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

devices or equipments

HIRECT RECTIFIERS

are made to be faithful

When perfection goes into DC power supplies, the result is a confirmed faithfulness of semiconductor devices—a faithfulness that ensures smooth operation of your unit. Backed with years of Westinghouse expertise, Hirect rectifiers bring you the best in technical competence. Hirect is equipped to chalk out and design the most suitable equipment your power system demands. Like rectifiers, Hirect engineers are faithful to your requirements.

HIND RECTIFIERS LTD.
MARKETING DIVISION
Mahalaxmi Chambers,
Bhulabhai Desai Road,
BOMBAY-26.

haros'-HR47-A

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाजीउद्दीन हैदर का सूपकार प्रतिदिन छह पराठे बनाता था और एक-एक पराठे के लिए पांच सेर के हिसाब से नित्य ३० सेर घी लिया करता था।

आज यह सब स्वप्नवत् लगता है। किंतु भले ही यह उस युग की बात हो, जब गेहूं एक रुपये में दो मन तुलता था, घी रुपये का पंद्रह सेर, फिर भी हमारी विशुद्ध शाही भारतीय रुचि बहुत वर्षों तक पूर्ववत् बनी रही।

अब भी कभी व्रत-उपवास के दिन विभिन्न रियासतों के सोने-चांदी के थालों की स्मृति मुझे अतीत के अटालों में खींचने लगती है।

ओरछा महाराज के निजी भोजन-कक्ष की ओवल मेज पर 'एच. एच. ओरछा' के लुभावने मोनोग्राम से अंकित चांदी के थालों में सजी बीसियों कटोरियां, जिन्हें देखते ही मन भर जाता था। कभी-कभी बासाहब की फरमाइश पर उड़द की खिचड़ी बनती। और कैसी राजसी खिचड़ी! लगता था, चावल और दाल का हर दाना विशुद्ध घृत-सागर में डुबकी लगाकर आया है! महारानी साहिबां गोंडल की राजकन्या थीं, इसी से बाजरे की रोटी और काठियावाड़ी कढ़ी का होना अनिवार्य था। फूली-फूली बाजरे की रोटी मेज पर आती, तो बुंदेले वीरसिंहजू देव राजमहिषी की सौराष्ट्री रुचि की हंस-हंसकर धज्जियां उड़ाते और जब अंत में स्वयं याचक बन उसी रोटी के टुकड़े के लिए हाथ बढ़ाते, तो बासाहिबा तलवार खींच लेतीं।

मुझे रामपुर की उस शाही दावत का स्मरण हो आता है, जब हैदराबाद निजाम के सम्मान में आयोजित शाही भोज में बनी उड़द की दाल के अनुपम स्वाद का रहस्य पूछने की धृष्टता मैंने की थी—वह भी खासबाग के पुराने कर्मचारी चमन खां से।

'इस दाल में क्या-क्या मसाले पड़ते हैं चमन खां?'

'अल्लाह तौबा, बिटिया, ऐसी बातें पूछी नहीं जातीं,' उसने फुसफुसाकर कहा—'खाने वाले बस "वाह!" कहा करते हैं, मसाले नहीं पूछते। यहां पीसने वाले और होते हैं, भूनने वाले और, लगाने वाले और।' उस अद्भुत दाल का रहस्य साथ ही लिये चमन खां कब का कब्र में सो गया होगा। रह गयी स्वाद की स्मृति, वह अब भी जिह्वाग्र पर है।

—६६ गुलिस्तां, लखनऊ

★

जो चीज मैं अपनी पसंद से अंदर भेजूं, उसे पचाने से इन्कार करने की जुर्रत तो करके दिखाये मेरा पेट! **—लार्ड फोली**

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टी.वी. पर

आखिरी ओलिंपिक

राबर्ट योकुम

दोस्तो, मैं जिम मैके १९८० के मास्को ओलिंपिक की अंतिम टेली-कामेन्टरी प्रस्तुत कर रहा हूं। और मेरा खयाल है कि अब लंबे अरसे तक यही अंतिम ओलिंपिक टेली-कामेन्टरी होगी।

आह, बुझ गयी! ओलिंपिक की ज्योति बुझ गयी!

अब जरा उन घटनाओं पर दृष्टिपात करें, जो इस दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति का कारण बनीं! वैसे इस सिंहावलोकन के कुछ दृश्य बच्चों के लिए शायद उपयुक्त न हों।

इन चित्रों में हम ओलिंपिक के झंडों और साथ ही एक ओलिंपिक-अधिकारी को जलाये जाते देख रहे हैं। इस रूप में कतिपय अफ्रीकी राष्ट्रों ने पिछले साल आस्ट्रेलिया में हुई एक शतरंज प्रतिस्पर्धा में दक्षिण अफ्रीकी टोली की उपस्थिति के प्रति अपना रोष प्रकट किया।

ओलिंपिक से हटने वाला अगला राष्ट्र था ताइवान, जिसने खेलों में भाग लेने से इसलिए इन्कार किया कि उसे 'चीन' शब्दयुक्त झंडा लेकर परेड में कूच करने की अनुमति नहीं दी गयी।

अब हम देखते हैं कि एक और ओलिंपिक झंडा जलाया जा रहा है–इस बार इस्रायल में, जहां ओलिंपिक समिति द्वारा फिलिस्तीन मुक्ति संघटन को खेलों में प्रवेश दिये जाने के कारण बड़ा रोष फैला। जैसा कि आप जानते हैं, इस्रायल के हटने के साथ संयुक्त राज्य अमरीका भी हट गया।

चीन और अल्बानिया ओलिंपिक आरंभ होने के पहले ही उससे हट गये थे, जब चेकोस्लोवाकिया में हुए एक टेबल-टेनिस टूर्नामेंट में हाथापाई हो गयी। काफी लोग घायल हुए–एक खिलाड़ी भी, जिसे आप सांस के लिए छटपटाते देख रहे हैं। उसके गले में ठूंस दिये गये पिंग-पांग गेंद को निकालने के लिए उसकी श्वास-नलिका में चीरा लगाना पड़ा।

अधिकांश अरब देशों ने खेलों का बहिष्कार कर दिया। सबसे पहले बहिष्कार किया लेबनान की टीम ने, जिसके ईसाई और मुस्लिम सदस्यों को आप यहां एक-दूसरे का खात्मा करते हुए देख रहे हैं।

फिर सऊदी अरब ने त्यागपत्र दे डाला, जब ओलिंपिक समिति ने शीतकालीन ओलिंपिक के ढर्रे पर रेगिस्तानी ओलिंपिक शुरू करने की उसकी मांग को ठुकरा दिया। सऊदी प्रवक्ता का कहना था–'यह तमा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर अन्याय है कि बर्फीले देशों के लिए तो विशेष शीतकालीन ओलिंपिक किये जायें, मगर रेतीले देशों के लिए कुछ न किया जाये। वहीं पर नाव खेना और ऊंटों की दौड़ भी उतनी ही उत्तेजक हो सकती है, जितना कि पैरों में लकड़ी की खपच्चियां बांधकर बर्फ से ढके पहाड़ पर से फिसलना।'

बाकी सब अरब देश भी हट गये, जब समूची मिस्री टीम का आकाश में अपहरण कर लिया गया। एक उग्रपंथी फिलस्तीनी दल द्वारा लीबिया में किये गये इस अपहरण से अरब देशों में फूट पड़ गयी।

सिलसिला इसी तरह जारी रहा। ब्रिटेन और आइसलैंड कॉड-मछलियां पकड़ने के अधिकारों के बारे आपस में चल रहे झगड़े के कारण हट गये; और दक्षिण अमरीकी देश इसलिए हट गये कि अमरीका ने पनामा की शर्तों पर पनामा-नहर संधिवार्ता में फिर से शरीक होना अस्वीकार कर दिया।

शायद सबसे अफसोसनाक था ओलिंपिक की जन्मभूमि यूनान का इन्कार। यूनान सरकार अभी भी इस मांग पर अड़ी हुई है कि रूस सरकार 'यूनानी पाककला को बदनाम करने' की बाकायदा माफी मांगे। एक रूसी अफसर ने कह दिया था कि १८८६ में ओलिपिक खेलों के दुबारा आरंभ होने के बाद से अगर सिर्फ २१ यूनानी खिलाड़ी स्वर्णपदक जीत पाये हैं, तो उसका कारण यह है कि 'अत्यधिक चिकनाई युक्त भोजन के कारण उनके हाजमे खराब हो गये हैं।'

और अंततः, जैसा कि इस दयनीय उद्-

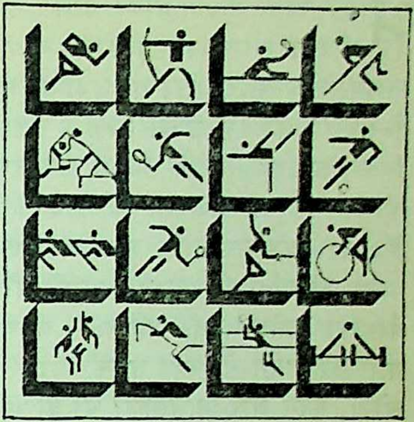

घाटन-परेड से बड़े नाटकीय रूप में सिद्ध होता है, केवल आठ देश २२ वीं ओलिंपिक के लिए मास्को में उपस्थित हुए। उन आठ में से तीन खेल के दौरान उठे झगड़ों के कारण खेल छोड़कर चले गये।

और अब हम देख रहे हैं—समाप्ति की परेड। ये हैं वे पांच टोलियां, जो अंत तक डटी रहीं—सोवियत संघ, नेपाल, टोंगा, हाइती और फीजी टापू (जिसकी टोली में एक ही खिलाड़ी है।)! ....

और अब? ..... यूनानी अब कह रहे हैं कि हम अपने देश में फिर से ओलिंपिक खेल आयोजित किया करेंगे, जैसा कि वे दो हजार साल से भी पहले किया करते थे, और ये प्रतिस्पर्धाएं 'बेइज्जत आदमियों, गुलामों, औरतों और परदेशियों' के लिए बंद रहेंगी, जैसे उस जमाने में भी बंद थीं।

मैं जिम मैके मास्को से बोल रहा हूं। इस बार के लिए विदा......और लंबे अरसे के लिए विदा। [**'संडे टाइम्स' से साभार**]

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस्त्र, शस्त्र, शास्त्र, वीणा, वाणी, नर और नारी (उनका उपयोग करने वाले) मनुष्य के अनुसार योग्य या अयोग्य होते हैं—पंचतंत्र की यह उक्ति आज के वैज्ञानिक-औद्योगिक तंत्र के महान उपकरण कंप्यूटर पर भी अक्षरशः चरितार्थ होती है। जहां कंप्यूटर द्वारा आज अंतरिक्ष-यानों की गतिविधि, बजट, जासूसी और वैज्ञानिक शोध-संबंधी जटिलतम संगणनाएं की जाती हैं, वहीं उसकी मदद से चोरी, गबन और जालसाजी भी हो रही है—विशेषतः अमरीका और यूरोप में। (कंप्यूटरों का अधिक उपयोग भी तो वहीं होता है।)

चोरी के लिए कंप्यूटरों का इस्तेमाल करने की चार आसान रीतियां हैं :

पहली रीति है गबन करने का आदेश कंप्यूटर को देना। कैलिफोर्निया (अ... रीका) के एक हिसाबनवीस ने अपनी कं... के कंप्यूटर को आदेश दिया कि तुम कं... द्वारा खरीदे जाने वाले कच्चे माल का... असली दाम से बढ़ाकर दर्ज करो। इस... बाद उसने झूठमूठ की एक कंपनी ब... और उसका खाता कंप्यूटर में खोल दि... अब उसने कंप्यूटर को आदेश दिया कि... खरीद की बढ़ायी हुई रकम इस खाते... जमा करते जाओ तथा मुझे यह बताते जा... कि उसमें से कब कितनी रकम बिना... जगाये निकाली जा सकती है। इस तर... उसने लगभग दस लाख डालर की रक... गबन कर ली।

यह घोटाला पकड़ा तब गया, जब रक... की राशि ढाई लाख डालर प्रतिवर्ष हो... गयी। बात यह थी कि उस कंप्यूटर के...

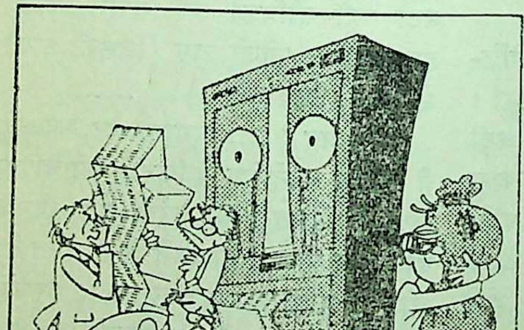

कंप्यूटर के जरिये चोरियां

• कुसुम भार्गव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत पहले यह आदेश दिया गया था कि ढाई लाख डालर या उससे अधिक के प्रत्येक भुगातन को सूचना वह कंपनी के मालिक को गुप्त रीति से फोन पर दिया करे। उसने वैसा ही किया और गबन का भंडाफोड़ हो गया।

दूसरी रीति है कंप्यूटर को झूठी जानकारी देना। १९७२ में अमरीका की एक ईक्विटी फंड कंपनी ने ३३,००० पालिसियां बेचीं। मगर कंपनी के प्रबंधक ने कंप्यूटर को यह झूठी सूचना दी कि हमने ९७,००० पालिसियां वेची हैं। परिणाम यह हुआ कि कंपनी के शेयरों की कीमत अंधाधुंध बढ़ गयी। मगर अंततः कंप्यूटर ने ही लेखा-परीक्षकों को बता दिया कि मुझे झूठी सूचना दी गयी है।

तीसरी रीति है बाहर के व्यक्ति द्वारा चोरी। गत वर्ष जून में अमरीका में ऐसी एक चोरी का सनसनीखेज मामला पकड़ा गया। वहां की संघीय ऊर्जा एजेंसी के एक भूतपूर्व कर्मचारी ने नौकरी छोड़ने से पहले एजेन्सी के उस कंप्यूटर को अपने फोन से संबद्ध कर लिया, जिसका काम गुप्त सूचनाएं रखना और पूछे जाने पर बताना था। नौकरी से हटने के बाद भी वह कर्मचारी टेलिफोन के माध्यम से कंप्यूटर से एजेंसी के गुप्त रहस्य प्राप्त करता और उन्हें दूसरों को बेचता रहा। अंत में जब कंप्यूटर से पूछा गया कि तुम रहस्यों की जानकारी किन-किन को देते हो, तो उसने सूचनाएं पाने वालों की सूची में उस भूतपूर्व कर्मचारी का फोन-नंबर भी छापा, सो भेद खुल गया।

चौथी रीति है चोरी के लिए जानकारी प्राप्त करना। तीन वर्ष पूर्व शिकागो के अपराधियों के एक गिरोह ने बैंक के एक कंप्यूटर को धनी लोगों की सूची बनाने का आदेश दिया और उस सूची के आधार पर उस गिरोह ने धनी लोगों के घरों से दस लाख डालर के नोट चुराये।

स्टैनफर्ड रिसर्च इंस्टिटयूट के डान बी. पार्कर ने अपनी हाल में प्रकाशित पुस्तक 'क्राइम बाइ कंप्यूटर' (कंप्यूटर द्वारा अपराध) में लिखा है कि इस समय कंप्यूटरों के द्वारा अमरीका में लगभग ३० करोड़

[दोनों व्यंग्यचित्र : 'न्यूजवीक' से साभार]

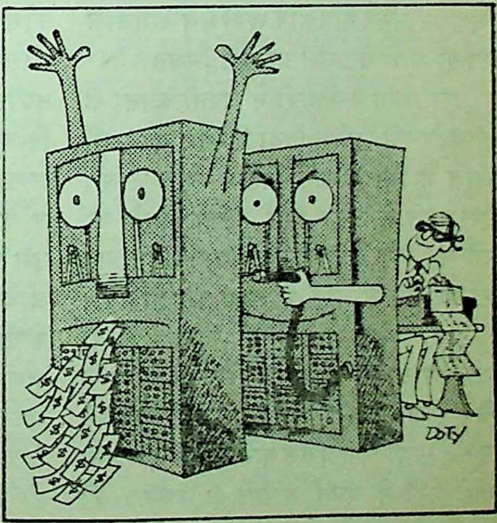

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डालर की वार्षिक चोरी होती है। उन्होंने लिखा है कि अमरीका में आजकल कोई डेढ़ लाख कंप्यूटर हैं और १९८० में उनकी संख्या बढ़कर पांच लाख हो जायेगी। तब चोरी की मात्रा क्या होगी?

कंप्यूटरों के माध्यम से होने वाली चोरी नकाबपोश अनपढ़ चोर नहीं करते; बल्कि उसके पीछे आनर्स की डिग्री पाये हुए पढ़े-लिखे सफेदपोश चोर होते हैं। वे जिसके यहां चोरी करते हैं, उसी से वेतन भी लेते हैं।

अमरीका में एक बैंक-कर्मचारी ने बैंक के कंप्यूटर में इस प्रकार की व्यवस्था की, जिससे वह (कंप्यूटर) आधे सेंट तक की गणना करने लगा। फिर कर्मचारी ने उसे आदेश दिया कि यह आधा सेंट ग्राहकों को चुकाने के बजाय एक अलग खाते में जमा करते जाओ। यह फर्जी खाता उसने अपने लिए खोला था। इस तरह बैंक के खाते में से निकलने, मगर ग्राहकों के खाते में न जाने वाले लाखों आधे सेंट उसे प्रतिवर्ष मिलते रहे।

एक अन्य कर्मचारी ने अपनी कंपनी के कंप्यूटर को आदेश दिया कि तुम मेरे फर्जी खाते में बिलों का भुगतान करते जाओ, इस खाते में उन रकमों के चेक आते थे, जो वह जुए में हार जाता था। अंततः यह राशि सात सप्ताह में ६ लाख पौंड हो गयी।

एक कर्मचारी ने अपनी कंपनी के कंप्यूटर को आदेश दिया कि तुम मेरे वेतन के चेक रोजाना छापते जाओ; इस तरह उसने २०० फर्जी चेक प्राप्त कर लिये। एक अन्य कर्मचारी ने अपनी कंपनी के कंप्यूटर को चुपचाप यह आदेश दे दिया कि मेरे वेतन की राशि को सौ से गुणा करके मेरे खाते में जमा करो। बेचारा कंप्यूटर वैसा ही करता रहा। मगर जब उसके प्रबंधक ने पूछा कि हमारे कर्मचारियों ने अपने व्यक्तिगत खातों के बारे में तुम्हें क्या-क्या आदेश दिये हैं, तो उसने वह आदेश भी उसके सामने रख दिया।

पेन्सिलवानिया रेल कंपनी (अमरीका) के एक कर्मचारी ने चोरों के एक गिरोह से मोटी रिश्वत लेकर कंपनी के कंप्यूटर को कुछ ऐसा आदेश दिया जिससे कंप्यूटर ने एकदम नये वैगनों को पुराना घोषित कर दिया। कंपनी ने ये 'पुराने' वैगन कौड़ियों के मोल पर कबाड़ियों के हाथों बेच दिये और ये कबाड़ी वही चोर थे, जिन्होंने यह षड्यंत्र रचा था। बाद में उन्होंने वे वैगन भारी मुनाफे में दूसरी कंपनी को बेच दिये।

कुछ चोर तो चोरी के तरीके सोचने का काम भी कंप्यूटर के जिम्मे कर देते हैं। लासएंजल्स की एक कंपनी के मुख्य हिसाब-नवीस ने कंपनी के कंप्यूटर को आदेश दिया कि तुम मुझे बताओ कि गबन करने का सबसे अच्छा उपाय क्या है, जिससे कि मैं पकड़ा न जा सकूं। कंप्यूटर ने हिसाब लगाकर उसे तरकीब बतायी। तब उसने कंप्यूटर को आदेश दे दिया कि जिस क्षण मेरा नाम कंपनी की वेतन-सूची से हटाया जाये, उसी क्षण तुम मेरे दिये हुए समस्त आदेशों तथा मेरे खाते में किये गये भुगतानों के समस्त रिकार्ड को मिटा डालना। कंप्यूटर ने वैसा ही किया और इस तरह कंपनी को ...

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करोड़ डालर का घाटा हुआ।

इस प्रकार की घटनाओं से बड़ी कंपनियां सुरक्षा के विषय में चिंतित हो उठी हैं। फलतः सुरक्षा की व्यवस्था के लिए सलाहकार कंपनियां बनने लगी हैं। ऐसी ही एक सुरक्षा-सलाहकार कंपनी के अध्यक्ष गाइ पार्कर का यह अनुभव है कि आम तौर पर कंपनियों के कर्मचारी दस हजार डालर से बड़ी रकमों की चोरी नहीं करते। ऐसी रकमें बड़ी कंपनियों के अरबों डालर के लेन-देन में सर्वथा नगण्य होती हैं, सो कंपनियां उनके बारे में छानबीन करने के झंझट में नहीं पड़तीं। कितनी रकम का घोटाला हुआ है, यह ज्ञात हो जाने पर भी यह पता लगाना कठिन होता है कि घोटाला किसने किया है। पता लग जाने पर भी सामान्यतः बहुत कम लोग नौकरी से हटाये जाते हैं।

कंप्यूटर के माध्यम से की जाने वाली चोरियों की सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि उसका भेद चोर व कंप्यूटर के सिवा किसी और को मालूम नहीं होता और यह भेद संयोग से ही खुल पाता है। पार्कर ने इसका एक दिलचस्प उदाहरण दिया है।

एक कंपनी का वरिष्ठ वित्तीय निदेशक एक दिन कर्मचारियों की वेतन-सूची देख रहा था कि अचानक उसकी निगाह चार हजार पौंड वार्षिक वेतन की एक रकम पर अटक गयी। यह देखकर उसे हैरत हुई कि इतना बड़ा वेतन २३ वर्ष की एक अनुभवहीन महिला को दिया जा रहा है। जांच करने पर विदित हुआ कि वह महिला कंपनी के प्रबंधक की रखैल है। यह पता लगने पर वित्तीय निदेशक ने सारे मामले की जांच का काम पार्कर को सौंप दिया। जांच से प्रकट हुआ कि प्रबंधक महाशय कंप्यूटर की सेवाएं बाहर के लोगों को ६० पौंड प्रति घंटे के हिसाब से बेचा करते हैं। इस प्रकार होने वाली आय का आधा हिस्सा तो वे कंपनी के हिसाब में जमा करते हैं और बाकी आधा अपने खाते में!

पार्कर ने यह भी पता लगाया कि वस्तुतः कंपनी को अपने काम के लिए छोटे कंप्यूटर की आवश्यकता थी; लेकिन प्रबंधक महोदय ने दूसरों का काम करने की नीयत से ही बड़ा कंप्यूटर कंपनी से खरीदवाया। यही नहीं, अपनी रखैल को वे इतना वेतन कंपनी से इसलिए दिलवाते थे कि वह उनके लिए ग्राहक लाने का काम करती थी।

जैसा कि पार्कर बताते हैं, कंपनियों के मालिकों और निदेशकों की कठिनाई यह है कि जब उनके प्रबंधक कंप्यूटर मंगवाने का आग्रह करते हैं, तब उनके सामने दो ही रास्ते होते हैं—१. कंप्यूटर-निर्माताओं से पूछना कि क्या सचमुच कंपनी को उन मशीनों की आवश्यकता है; या २. सलाहकार कंपनियों से सलाह लेना। कंप्यूटर-निर्माताओं को तो अपनी मशीनें बेचनी होती हैं; सो वे यह कहेंगे ही नहीं कि मशीनें अनाश्यक हैं। सलाहकार कंपनियां रिपोर्ट तैयार करने के लिए लंबी मियाद और लंबी फीस मांगती हैं। सो मालिक और निदेशक कंप्यूटर खरीदने की अनुमति दे देते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कभी-कभी तो कंप्यूटर ही अपराध की प्रेरणा देते हैं। एक कंपनी तीन विभागों में बंटी हुई थी, और तीनों के लेन-देन का हिसाब एक ही कंप्यूटर रखता था। एक दिन कंप्यूटर ने यह संकेत दिया कि कंपनी का विभाग-क कंपनी के विभाग-ख को जो माल बेचता है उस पर ४५ प्रतिशत की दर से कमीशन नहीं देता है, जो कि बाहर के खरीदारों को दिया जाता है। यह देखकर मुख्य कंप्यूटर-चालक और विभाग-ख के मुख्य क्रय-अधिकारी ने मिलकर एक झूठ-मूठ की कंपनी बना ली और वे विभाग-क से माल इस फर्जी कंपनी में खरीदने लगे और उसके नाम से विभाग-ख को बिना कमीशन के बेचने लगे। इस तरह उन्होंने लाखों डालर का मुनाफा कमाया।

कंप्यूटरों का उपयोग करने का अर्थ ही है कंप्यूटर-चालकों पर विश्वास। लेकिन व्यापार विश्वास के भरोसे नहीं, सुरक्षा की व्यवस्था के भरोसे चलता है। इसीलिए अब सलाहकार कंपनियों के अलावा कंप्यूटर लेखा-निरीक्षण विशेषज्ञ भी आवश्यक हो गये हैं। इयान वाटसन ऐसे ही एक विशेषज्ञ हैं। वे बताते हैं कि कंप्यूटरों के संचालन की जिम्मेवारी कई लोगों में बांटी जानी चाहिये; कंप्यूटर का कार्यक्रम तैयार करने वालों को उसके प्रत्यक्ष चालन से दूर रखना चाहिये, यहां तक कि उन्हें मशीनों के पास नहीं फटकने देना चाहिये; तथा चालकों को लेखा-परीक्षकों की निगरानी में रखा जाना चाहिये। लेकिन यदि कार्यक्रम करने वाले, चालक तथा लेखा-परीक्षक तीनों... इनमें से कोई दो आपस में मिल जायें... चोरी को रोकने का कोई उपाय नहीं...

पिछले दिनों चोरों के एक गिरोह... जापान के एक फिल्म-स्टार की बेटी... अपहरण किया और धमकी दी कि अगले दिन दुपहर तक अमुक रकम टोक्यो... अमुक बैंक के कंप्यूटर में एक गुप्त खाते... जमा करा दी जाये, वरना लड़की को मार डाला जायेगा। इस चालाकी से पुलिस परेशान हो गयी; क्योंकि उस बैंक का कंप्यूटर पूरे देश में फैले ३,००० भुगतान-केंद्रों में से किसी भी केंद्र से उस राशि का भुगतान कर सकता था। अतः उसने कंप्यूटर की मदद लेने का निर्णय किया। सारी रात बैंक के कर्मचारी कंप्यूटर को आदेश देते रहे कि जैसे ही चोरों के खाते से राशि निकाली जाये, वैसे ही कंप्यूटर पुलिस को संकेत दे। यह संकेत पंद्रह सौ पुलिस-थानों को प्रसारित करने की व्यवस्था की गयी।

अगले दिन निर्धारित राशि खाते में जमा कर दी गयी और जैसे ही चोर एक केंद्र से रकम निकालने लगे, कंप्यूटर ने पुलिस को संकेत कर दिया कि कहां से रकम निकाली जा रही है। रकम टोक्यो रेल्वे-स्टेशन के भीतरी आंगन में स्थापित बैंक की शाखा से निकाली जा रही थी। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई की और चोरों को रकम के साथ पकड़ लिया। कंप्यूटर की मदद के बिना था तो यह अपराध किया जा सकता था ... पकड़ा ही जा सकता था।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ५९ का शेष]

में यह रोग बड़े पैमाने पर फैल गया था। बाद में खोज से पता चला कि दस राज्यों में ४० पोल्ट्री-फार्मों में यह रोग फैल चुका है। संस्थान के वैज्ञानिकों ने इसके निदान की ऐसी विधि निकाली है कि चंद घंटों में ही रोग का पता लग जाता है। अब इसके टीके लगाये जा सकते हैं। पिछले सालों में इस रोग के कारण मुर्गी-उद्योग को प्रति-वर्ष कोई ४ करोड़ रुपये की हानि होती रही है। अब वह रुक जायेगी।'

इज्जतनगर संस्थान में मुर्गी-पालन विभाग की स्थापना ११ मार्च १९३८ को तत्कालीन वाइसराय लार्ड लिनलिथगो ने की थी। (वे इंग्लैंड के बड़े जमींदारों में से एक थे और अपने शासन-काल में उन्होंने भारत के पशु-धन की अभिवृद्धि पर विशेष ध्यान दिया था।) मुर्गियों से अधिक मांस और अधिक अंडे पाने के लिए यहां मुर्गियों की विभिन्न नस्लें विकसित की गयी हैं। इसके लिए जो अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान प्रायोजनाएं चालू की गयी हैं, उनका मुख्यालय भी यहीं है।

रानीखेत में मुर्गियों में एक विषाणु-रोग फैला था, जिसे इंग्लैंड में न्यू कैसल रोग और हमारे यहां रानीखेत रोग कहते हैं। आज से पचीस-छब्बीस साल पहले तक इस रोग से ९८ प्र. श. मुर्गियां मर जाती थीं। इस चुनौती का सामना भी मुक्तेश्वर की विषाणु-विज्ञान प्रयोगशाला ने किया और इस रोग का टीका बनाकर मुर्गी-पालकों को दिया। अब चूजों को यह टीका देकर रानीखेत रोग से बचने में समर्थ बनाया जा सकता है। इस तरह मुर्गी-पालन को एक व्यवसाय के रूप में पनपाने में इस संस्थान का बड़ा हाथ है।

आज सारे देश में पशु-विज्ञान के विविध पक्षों पर अनुसंधान का दायित्व जिन पर है, वे हैं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के एतद्विषयक उप-महानिदेशक डा. बलबीर कृष्ण सोनी। सुनिये, इज्जतनगर के बारे में वे क्या बताते हैं:

'कुछ समय पहले की बात है। जम्मू-कश्मीर के भेड़-पालकों को भेड़ों में फैली एक बीमारी की वजह से बड़ा ही नुक्सान उठाना पड़ा। इस बीमारी की जांच के लिए इज्जतनगर से वैज्ञानिकों की एक टोली भेजी गयी। जांच से पता चला कि भेड़ों के फेफड़ों में एक किस्म का कीड़ा लग गया है। इस कीड़े को "लंगवर्म" कहते हैं। इज्जतनगर के वैज्ञानिकों ने इस कृमि का अध्ययन करके पहले परमाणु-विकिरण के प्रयोग से इसे निर्बल किया और फिर इसका टीका बनाया। यह टीका जिन भेड़ों को लगाया गया, उन्हें फिर लंगवर्म की शिकायत नहीं हुई। अब इस टीके को तैयार करने के लिए जम्मू-कश्मीर में ही प्रयोग-शाला बना दी गयी है। परमाणु-विकिरण के प्रयोग से किसी रोग का टीका बनाने की भारत में यह शायद पहली मिसाल है।'

इज्जतनगर में चल रहे अनुसंधान की नयी दिशाओं का भी परिचय डा. सोनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

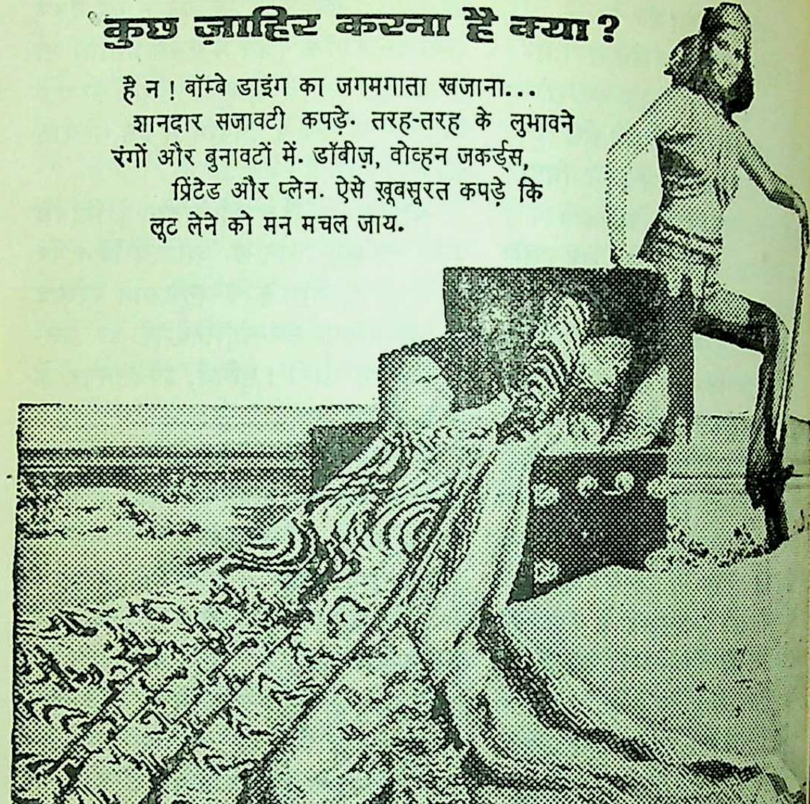

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से पाइये :

'यहां कुछ वैज्ञानिक यह परीक्षण दुहरा रहे हैं कि एक गाय के भ्रूण को दूसरी गाय के गर्भ में पाला जा सके। इससे बेकार गायों का उपयोग अच्छी नस्ल की संतति पैदा करने में हो सकेगा। इसके अलावा, कतिपय खनिज तत्त्वों की कमी से पैदा होने वाले पशु-रोगों की जांच करके यहां के वैज्ञानिक इस महत्त्वपूर्ण नतीजे पर पहुंचे हैं कि ऐसे रोगों का मूल कारण है मिट्टी में इन खनिजों की कमी। इससे उस मिट्टी में उगे चारे में भी इन खनिजों की कमी होती है और उस चारे को खाने वाले पशु इनकी कमी के शिकार हो जाते हैं।'

डा. सोनी का कहना है कि हमारे देश में पशुधन के विकास के लिए आवश्यक ज्ञान की कमी नहीं है; परंतु उपलब्ध ज्ञान को इस्तेमाल में लाने के लिए व्यापक कदम उठाना अभी बाकी है। वैसे अब पशुपालक काफी जागरूक हो गये हैं। पशु-चिकित्सक का दर्जा भी अब समाज में 'घोड़ा-डाक्टर' का नहीं रह गया है। कुछ इलाकों में तो पशु-चिकित्सक धड़ल्ले से प्राइवेट प्रैक्टिस कर रहे हैं। फिर भी अभी हमारे देश में ३५-४० हजार पशुओं के लिए एक पशु-चिकित्सक उपलब्ध है, जो कि काफी नहीं है। हमारा लक्ष्य होना चाहिये १० हजार पशुओं के लिए एक पशु-चिकित्सक उपलब्ध कराना। वैज्ञानिक अनुसंधान के फलस्वरूप अब देश में पशु-प्रोटीन पहले से अधिक मात्रा में पौष्टिक अंडे-मांस और दूध के रूप में उपलब्ध है।

इजतनगर का संस्थान सन १९६६ में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अधीन आया और यहां के विज्ञानियों ने परिषद् की पशु-विज्ञान संबंधी कोई दो दर्जन अखिल भारतीय समन्वित योजनाओं में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।

यों तो किन्हीं आइज़ट साहब के नाम पर आइजट नगर बसाया गया था; परंतु बिगड़ते-बिगड़ते यों कहें कि बनते-बनते इसका नाम इज्जतनगर हो गया। यहां के वैज्ञानिकों ने अपने अनुसंधानों से सचमुच हमारे मुल्क की इज्जत बढ़ाकर इसका नाम सार्थक कर दिखाया है। यह दूसरी बात है की मूक पशुओं की सेवा में लगे इन वैज्ञानिकों को हमने वह मान नहीं दिया, जो भारत-जैसे कृषि-प्रधान देश में उन्हें न्यायतः मिलना चाहिये था। विश्व स्वास्थ्य संघटन की सहायता से चेचक का उन्मूलन करने वाले स्वास्थ्य-विशेषज्ञों का ढिंढोरा तो हमारी पत्र-पत्रिकाओं में खूब पीटा गया; परंतु जिन वैज्ञानिकों ने मवेशियों की रिंडरपेस्ट-जैसी महामारी को बिना किसी विदेशी सहायता के और पूर्णतया देशी साधनों से ही मार भगाया, उनकी चर्चा तक नहीं की गयी!

गनीमत है कि अब पशु-विज्ञान को देश में उसका न्यायोचित दर्जा मिलने के आसार दिखाई दे रहे हैं।

—ए/१९ ई, मुनीरका फ्लैट्स,
नयी दिल्ली-५७

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली अभिनन्दन

श्रीवेंकटेश्वर प्रेस

आफसेट और लेटर प्रेस दोनों विधियों द्वारा कलात्मक उत्कृष्ट
छपाई व प्राचीन सांस्कृतिक साहित्य का प्रकाशन केन्द्र

अध्यक्ष

खेमराज श्रीकृष्णदास

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, बम्बई-४०० ००४

दूरध्वनि : ३५७४५६
(दो लाइनें)

तार : वेंकटेश्वर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हाइज़नबर्ग और अनिश्चिततावाद

डा. मोहन रामचंदाणी

वर्नर हाइज़नबर्ग सन १९०१ में जनमे और १९३२ में 'क्वाटंम यंत्रिकी के निर्माण, जिससे अन्य चीजों के अतिरिक्त हाइड्रोजन के अपर रूपों की खोज हुई' के लिए उन्हें नोबेल-पुरस्कार प्रदान किया गया। इतनी छोटी उम्र में इतना बड़ा पुरस्कार प्राप्त करना निश्चय ही असाधारण बात थी। उनका देहांत इसी वर्ष १ फरवरी को हुआ।

हाइज़नबर्ग के कार्य को समझने के लिए उनके जीवन में झांकना भी आवश्यक है। उन्होंने प्रसिद्ध भौतिक विज्ञानी एर्नाल्ड सॉमरफेल्ड (जिनके तीन शिष्यों को नोबेल पुरस्कार मिले) की देखरेख में १९२३ में डाक्टरेट प्राप्त की। यह वह काल था, जब परमाणु की आंतरिक संरचना को समझने के लिए यूरोप के कई महान विज्ञानी कार्य कर रहे थे। (नील्स बोर को १९२२ में ही परमाणुओं की संरचना-संबंधी खोज पर नोबेल-पुरस्कार मिला था।) डाक्टर की उपाधि पाने के बाद हाइज़नबर्ग ने कुछ काल बोर के साथ कार्य किया। इस प्रकार इन्हें उस समय प्रचलित विचारों का प्रत्यक्ष ज्ञान था। सामरफेल्ड के अधीन डाक्टरेट करने के कारण वे क्वाटंम-सिद्धांत को काफी गहराई से समझते थे। मैक्स बार्न के साथ भी कार्य करने का अवसर उन्हें मिला था। इस पृष्ठभूमि को ध्यान में रखें, तो हाइज़नबर्ग के कार्य को समझना आसान होगा।

बोर के सिद्धांत ने हाइड्रोजन परमाणु को विकिरण-रेखाओं को समझाने में तो सफलता प्राप्त की, पर अन्य परमाणुओं को समझाना अभी भी कठिन था। ऐसा लगता था कि बोर के विचारों में एक मूलभूत परिवर्तन की आवश्यकता है। १९२४ में डी ब्रॉगली (जिन्हें १९२९ में नोबेल-पुरस्कार मिला) ने इलेक्ट्रान-तरंगों की खोज की। इसे आधार बनाकर श्रोडिंजर और डिराक ने तरंग-यांत्रिकी का निर्माण किया। लगभग इसी समय हाइज़नबर्ग इस समस्या का समाधान दूसरी दिशा से खोज रहे थे।

बोर-सिद्धांत में इलेक्ट्रान को प्रोटान के चारों ओर घूमता हुआ वर्णित किया गया है। डी ब्रॉगली ने इलेक्ट्रान के स्थान पर पदार्थ-तरंग की कल्पना रखी। हाइज़नबर्ग का विचार था कि बोर-सिद्धांत का सर्वरूप से ठीक न होने का कारण यह था कि बोर ने अपने सिद्धांत में ऐसी चीजों का समावेश किया है, जिन्हें देखा (प्रेक्षण) नहीं जा सकता। हाइज़नबर्ग का कहना था कि परमाणुओं को समझने के लिए केवल प्रेक्षण-योग्य (देखी जा सकने वाली) चीजों का ही प्रयोग करना चाहिये। प्रयोगों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंजाब नेशनल बैंक

में पधारिए
हमारे पास सबके लिए
आकर्षक
बचत
योजनाएं हैं

ह्वोल लाइफ मन्थलि इन्कम : केवल सात वर्षों तक नियमित मासिक किस्तें जमा कीजिए, फिर मजे से जीवन भर अपनी मासिक किस्त के बराबर स्वयं पेंशन लीजिए और अपने उत्तराधिकारियों के लिए व्यवस्था कीजिए। आपकी असल पूंजी ज्यों की त्यों रहेगी।

मल्टी-बेनिफिट एन्ड ओल्ड एज डिपाजिट : 20 वर्ष की योजना में लगा आपका पैसा 31.6% प्रति वर्ष की दर से बढ़ता है; 5,000 रु० बढ़कर 36,640 रु० हो जाते हैं। 100 रु० या इससे अधिक राशि 13 महीने से लेकर 241 महीनों के लिए जमा कराई जा सकती है।

रिकरिंग डिपाजिट : अपने भविष्य की आवश्यकताओं की योजना आज ही बनाइए। हर महीने 5 रु० या 5 रु० के गुणितों में कोई भी राशि 12 से लेकर 252 महीनों के लिए जमा कराइए।

स्पेशल फिक्सड डिपाजिट : अपनी सावधि जमा पर मासिक ब्याज लीजिए। उदाहरण के लिए 61 महीने के लिए जमा किए गए 30,000 रु० पर 250 रु० मासिक ब्याज मिलेगा। मूल राशि ज्यों की त्यों बनी रहती है।

आटोमेटिक एक्सटेंशन डिपाजिट : अपनी सावधि जमा पर लगातार ब्याज कमाते रहिए। हमारे पास स्थायी हिदायतें छोड़ दीजिए। हम परिपक्व होते ही आपके खाते की अवधि बढ़ा देंगे।

डिपाजिट-लिन्क्ड हाउसिंग लोन : अपना मकान बनाने का सपना पूरा करने के लिए आज ही नियमित मासिक किस्तों में बचत शुरू कीजिए। आपकी जमा के परिपक्व होने पर हम आपको, आपके द्वारा जमा की गई राशि के बराबर, ऋण देंगे—ताकि आप अपनी पसन्द का मकान बनवा या खरीद सकें।

स्टूडेंट डिपाजिट : 14 वर्ष से बड़े छात्र अपने नाम से खाता खोल सकते हैं—और अपना चेक जारी कर सकते हैं।

ब्योरे के लिए हमारी समीपस्थ शाखा से सम्पर्क कीजिए

पंजाब नैशनल बैंक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के द्वारा वर्णक्रम (स्पेक्ट्रल) रेखाओं की आवृत्ति और तीव्रता ही नापी जा सकती है। अतः सिद्धांत में भी केवल इन्हीं चीजों का समावेश होना चाहिये।

इसी विचार-शृंखला को आधार बनाकर हाइज़नबर्ग ने मैट्रिक-यंत्रिकी की खोज की। इसके द्वारा न केवल परमाणु की अपितु अणु की भी वर्णक्रम-रेखाओं को समझना संभव हो सका। हाइज़नबर्ग की यंत्रिकी ने बोर द्वारा प्रतिपादित हाइड्रोजन की सब रेखाओं का सही वर्णन तो प्रस्तुत किया ही, उससे आगे उन समस्याओं का भी समाधान किया, जिनका बोर-सिद्धांत द्वारा उत्तर पाना कठिन था।

सन १९२५ में इलेक्ट्रान के साथ भ्रमि (स्पिन) का होना प्रतिपादित किया गया। हाइज़नबर्ग ने इसे अपनी यंत्रिकी के साथ जोड़कर प्रतिपादित किया कि हाइड्रोजन अणु के दो अपर रूप होने चाहिये—पहला आर्थो-हाइड्रोजन, जिसमें हाइड्रोजन के दो प्रोटान एक ही दिशा में भ्रमि करते हैं; और दूसरा, पैरा-हाइड्रोजन, जिसमें दोनों प्रोटान विपरीत दिशा में भ्रमि करते हैं।

हाइज़नबर्ग की सबसे बड़ी देन है—अनिश्चतता-सिद्धांत। उन्होंने यह प्रतिपादित किया कि (विशेष प्रकार से जुड़ी) दो प्रेक्षण-योग्य चीजों का एक ही समय पूर्ण ज्ञान होना असंभव है। इसका कारण उन यंत्रों की मर्यादा नहीं है, जिनसे इन चीजों को नापा जाता है; बल्कि प्रेक्षण-विधि में निहित कार्य ही इसका कारण है। जब हम किसी वस्तु को देखना चाहते हैं, तब उस पर प्रकाश डालते हैं। वस्तु पर पड़ने वाला प्रकाश उसकी स्थिति को प्रभावित करता है। यही कारण है अनिश्चितता का।

प्रेक्षण की विधि के विश्लेषण में हाइज़नबर्ग के इस चिंतन ने ऐसी बड़ी क्रांति कर दी, जिसको गहराई को समझना कठिन है। उस समय तक प्रचलित निश्चितता के सिद्धांत को इसने पूर्ण रूप से हिला दिया। हाइज़नबर्ग ने बताया है कि किसी प्रयोग के परिणामों की संभावना ही सिद्धांत द्वारा गणित की जा सकती है।

हाइज़नबर्ग ने भौतिकी की अन्य शाखाओं में भी महत्त्वपूर्ण योग दिया है। हाइज़नबर्ग ने प्रोट्रान और न्यूट्रान की मौलिक एकरूपता को जाना। इसी ज्ञान के कारण न्यूक्लीय भौतिकी की नींव पड़ी। इसी सुराग से कण-भौतिकी में आंतरिक समरूपता की आधारशिला पड़ी।

हाइज़नबर्ग ने लगभग अपना संपूर्ण जीवन जर्मनी में ही व्यतीत किया। हिटलर-काल में आरोप लगाया गया कि उन्होंने युद्ध के लिए वैज्ञानिक कार्य किया। यह संदेह भी किया गया कि वे परमाणु-बम बनाने का कार्य भी करते थे। कई वर्षों बाद जब निष्पक्ष विवरण प्राप्त हुए, तब प्रकट हुआ कि हाइज़नबर्ग ने हिटलर की युद्ध-व्यवस्था के लिए कुछ नहीं किया।

हाइज़नबर्ग की मृत्यु से संसार ने एक अत्यंत मेधावी वैज्ञानिक और प्रखर मेधावी को खो दिया है।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिष्ठित आयात व निर्यात संस्था

इंडियन प्रॉडक्ट्स ट्रेडिंग कारपोरेशन

के द्वारा

अपना माल निर्यात कीजिये।

तार . FASHFAB

फोन :– २५४६६३
२५४१२०
२९४३४४

टेलेक्स : 011–4209

४६, बजाज भवन
४ थी मंजिल
नरीमन पाइंट
बंबई–४०० ०२१
(भारत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ७९ का शेष]

कौन-कौन-सी सब्जियां पसंद थीं। 'कथा-सरित्सागर' में मैंने पढ़ा है कि उज्जयिनी की सब्जीमंडी अपनी मूलियों के लिए प्रसिद्ध थी। मैं भी मूली पसंद करता हूं। तब उज्जयिनी की विशेष मूली कैसी होती थी, उसे चखना चाहता हूं। जाने क्यों, मुझे लगता है कि कालिदास को मूली पसंद नहीं रही होगी। मगर मूलियों के अलावा भी मालवा में अनेक प्रकार की सब्जियां पैदा होती हैं और तब भी होती रही होंगी। इस संबंध में कालिदास के चुनाव और रुचि से परिचित होने को उत्सुक हूं।

—इलाचंद्र जोशी

०००

मैं महाभारत को शुद्ध इतिहास मानता हूं, जैसा कि भारत के सभी विचारशील विद्वान मानते आये हैं। यदि मेरे पास तथा-कथित कालयंत्र हो, तो मैं उसकी सूई घुमा-कर आज से ५१२२ वर्ष पूर्व मार्गशीर्ष कृष्णा एकादशी के दिन कुरुक्षेत्र के उस मैदान में पहुंच जाना चाहूंगा, जहां कौरवों और पांडवों की सेना के बीच अपना रथ खड़ा करके श्रीकृष्ण ने खिन्नमना अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था। साथ ही मैं उन भगवान कृष्ण के भी दर्शन कर लेना चाहूंगा, जिनके दर्शन के लिए सारे ब्रज, हस्तिनापुर, मथुरा, इंद्रप्रस्थ और द्वारिका के नर-नारी पागल रहते थे और जिन्होंने अपनी भग-वत्ता से पृथ्वी का भार उतारा था और कौरवों के अत्याचार से पांडवों का भी उद्धार किया था। **—सीताराम चतुर्वेदी**

०००

प्राचीन इतिहास की एक सर्वमान्य घटना ने मुझे बार-बार आकृष्ट किया है। अंतिम हिंदू सम्राट् श्रीहर्ष (वर्धन) प्रति पांच वर्ष बाद प्रयाग जाते थे और यज्ञपूर्वक अपना सर्वस्व दान कर अपनी बहन राज्यश्री से एक वस्त्र मांगकर पहन लेते थे। श्रीहर्ष के इस कृत्य की प्रक्रिया में वैदिक और बौद्ध दोनों धर्मों की चर्याओं और चिंतनों का समन्वय था और आचरण में जैनों का अपरिग्रह भी। मैं इस दृश्य को साक्षात् करना चाहूंगा।

यदि इस घटना की ऐतिहासिकता पर प्रश्नचिह्न लगता हो, तो मैं सन १९२९ के ३१ दिसंबर की समाप्ति और १ जनवरी १९३० के प्रारंभ के संधिकाल में पं. जवा-हरलाल नेहरू की अध्यक्षता में रावी के तट पर लाहौर के समीप अखिल भारतीय कांग्रेस द्वारा पूर्ण स्वतंत्रता की प्राप्ति से संबंधित प्रस्ताव की स्वीकृति और उसके तत्काल पश्चात् आधी रात्रि में नवयुवकों के साथ नेहरूजी के सारे पंडाल की दौड़ लगाने का दृश्य एक बार पुनः देखना चाहूंगा।

—प्रभुदयाल अग्निहोत्री

०००

मैं कलिंग-युद्ध में सम्राट् अशोक के हृदय-परिवर्तन का दृश्य देखना चाहता हूं। कैसे उसने इतनी रक्तरंजित लाशों को देखकर, विजयोन्मत्त होने के बदले, अपनी तलवार तोड़कर नदी में बहा दी। उस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

kores

अच्छी छाप का प्रतीक

कोरेस परमैकलिन सिल्क रिबन : अधिक स्याही के कारण साफ सुथरी छाप

कोरेस इन्टरप्लास्टिक कार्बन : दाग-धब्बों से रहित, स्वच्छ कापियों के लिये वैक्स इंक की कोटिंग और प्लास्टिक की सुरक्षात्मक पर्त

कोरेस ड्राईटाइप स्टेन्सिल : सही, साफ छाप के लिये बिना खामी के लंबे फाइबर टिश्यू से बनी हुयी

जल्दी सूखने वाली सुपरइमल्शन डुप्लीकेटिंग इंक नं. के. ७५० और ७५१

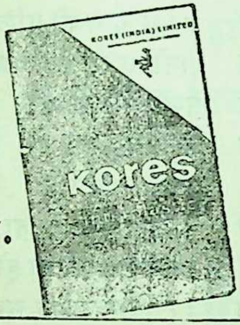

कोरेस (इंडिया) लि.
बम्बई ४०० ०१८
भारतभर में शाखायें

Grant/HK

बवासीर

की पीड़ा और जलन से, बिना ऑपरेशन के, शीघ्र आराम पाने के लिए

हडेन्सा

मरहम

इस्तेमाल कीजिए !

OBM: 2670 HIN

मुफ्त ! मुफ्त !! मुफ्त !!!

सफेद दाग

हमारी आयुर्वेदिक दवा शिवत्रिक के सेवन से ९९ प्रतिशत सफेद दाग के रोगी चंगे हो रहे हैं। इससे तीन दिनों में ही दागों का रंग बदलने लगता है। रोगी विवरण लिखकर शीघ्र एक फायल दवा मुफ्त मंगा लें।

इन्दिरा आयुर्वेद भवन (६१)
कतरीसराय (गया)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपने काल्पनिक कालयंत्र की बात की है और मैं अभी कुछ दिन पहले एक वास्तविक कालयंत्र में बैठकर भूत और भविष्य की सदियों की इतिहास-यात्रा करके लौटा हूं। चौंकिये मत, इस कालयंत्र का नाम है मारिशस! मारिशस पहुंचने के दो घंटे बाद मुझे तो एच. जी. वेल्स की कल्पना के कालयंत्र में बैठे होने की ही अनुभति हुई।

वहां के चप्पा-चप्पा धरातल पर भारतीय मजदूरों के श्रम और उनके शोषण की कहानी लिखी है। मन एकदम डेढ़ सौ साल पहले के दृश्य देखने लगता है। लावा से बनी भूमि में से हमारे भोजपुरी, तमिल और महाराष्ट्रीय मजदूर अपने नाखूनों से शिलाएं निकालकर भूमि को कृषियोग्य बना रहे हैं; बड़े-बड़े कोल्हुओं में बैलों की जगह जुतकर गन्ना पेरकर गोरे बागान-मालिकों के खजाने भर रहे हैं। पास ही बैठा गोरा ओवरसियर उन पर हंटरों की बौछार कर रहा है। ......

अचानक वहां की खुशहाली देखकर मन भारत की इक्कीसवीं सदी में पहुंच जाता है। लगता है, जैसे हम अगली सदी का सुखी और समृद्ध भारत देख रहे हों। छोटे से छोटे मजदूर के पास रहने को अच्छा-सा घर है, तन पर उजले कपड़े हैं, और खाने को भरपेट भोजन है। तब के भारतीयों ने सफाई से रहना सीख लिया है, उन्हें अपने श्रम पर गर्व है।

पोर्ट लुई के इमिग्रेशन स्क्वायर में पहुंचकर मन फिर सन १८३४ में पहुंच जाता है। गिरमिटिया मजदूर जहाज के डेक पर लंबे कठिन समुद्री सफर से पूरी तरह थके हुए हैं। जिस स्वर्ग का छलावा देकर उन्हें यहां ले आया गया है, वह तो दासता का नरक है। एक छोटे-से हौज में भरे कीटाणुनाशक घोल में उन्हें भेड़-बकरियों की तरह डुबोया और फिर दड़बों में बंद कर दिया जाता है। जहाज पर से कुछ शव भी उतारे जा रहे हैं। ये लोग रास्ते में ही मर गये। पर जहाज के कप्तान ने नियम के विपरीत इन्हें जल-समाधि नहीं दी थी; क्योंकि गोरे दलाल को ये शव दिखाकर इन्हें यहां लाने का सबूत पेश करना है और दलाली वसूल करनी है।

दो दिन बाद दड़बों के बाहर दासों के व्यापार-जैसा दृश्य उपस्थित हो रहा है। मजदूर की शारीरिक क्षमता का प्रदर्शन किया जा रहा है। अगले ही दिन से वह सुबह चार बजे से देर शाम तक पांच रुपये महीना पगार पर जमीन से पत्थर निकाल रहा है, खेत में हल से अपने भविष्य का लेख लिख रहा है और शाम को ढोलक-मजीरे पर 'रामा गति देहु' गा रहा है।

मारिशस का कालयंत्र एक ही क्षण में हमें भारत के भूत और भविष्य दोनों की ही सैर करा देता है।

—अरविंद कुमार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

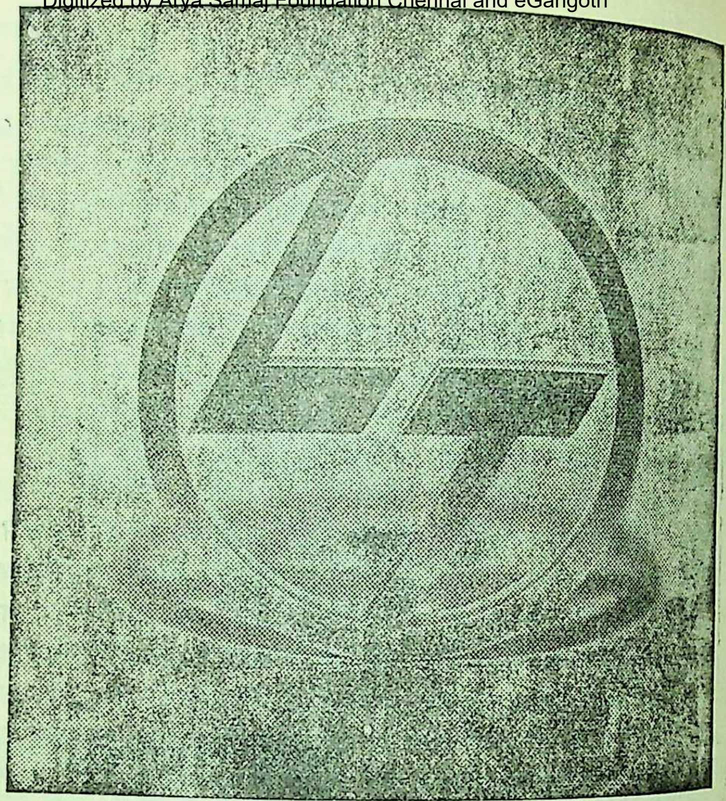

किस चीज का प्रतीक है यह चिह्न ?

इंजीनियरी में नयी कल्पनाएं। वे जन्म लेती हैं L&T में, जहां कि इंजीनियरों की टोली प्रमुख उद्योगों के लिए संयंत्रों और उपकरणों का आकल्पन, रचना तथा प्रतिष्ठापन करती है। ये उद्योग हैं– रसायन एवं औषध, खाद्य एवं डेरी, खनिज एवं तेल, लुगदी एवं कागज, फौलाद एवं सीमेंट, बिजली एवं सिंचाई। L&T चिह्न प्रमुख ग्राहकों और विश्वविख्यात सहायकों के विशेष ज्ञान के आधार पर संपूर्ण संयंत्र के निर्माण का भी प्रतीक है। L&T संयंत्र की नींव डालने से उत्पादन आरंभ करने तक सारी देखभाल करता है। संक्षेप में, L&T चिह्न भारत के प्रत्येक अतिमहत्वपूर्ण उद्योग के विकास का प्रतीक है।

लार्सन एंड टूब्रो लिमिटेड

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नदी का नाम आज भी उड़ीसा में 'दया' है। क्या कारण था कि उसे पश्चात्ताप हुआ ? भगवान बुद्ध की मैत्री, करुणा और अहिंसा के उपदेश ने उस योद्धा को कैसे प्रभावित किया? या क्या उसका कोई और व्यक्तिगत तत्काल कारण भी था! —प्रभाकर माचवे

०००

ई. पू. ३२७, युद्ध का मैदान ! एक ओर, विश्व-विजय का स्वप्न देखने वाले सिकंदर महान की सुसज्जित सेना। अश्वारूढ सिकंदर। दूसरी ओर, नर-पुंगव, पराक्रमी पुरु की सेना। गजारूढ़ पुरु—मन में स्वदेश की सुरक्षा का दृढ़ संकल्प ! एक ओर प्रवल प्रभंजन। दूसरी ओर एक प्रदीप—स्वजनों के स्नेह से वंचित, एकाकी। अस्त्र-शस्त्रों की झनकार—आक्रमण-प्रत्याक्रमण। रक्तपात, चीत्कार—मनुष्यों का, पशुओं का! विपक्षी के अश्वारोहियों से घिरा वीर पुरु-अंग-प्रत्यंग से प्रतिरोध करता हुआ। पर हुआ वही, जो होना था। विजयी सिकंदर के समक्ष प्रस्तुत किया गया पराजित बंदी पुरु ! शरीर बंधनों में, पर मनोबल निर्बंध ! 'तुम्हारे साथ कैसा व्यवहार किया जाये ?' सिकंदर का प्रश्न। 'जैसा कि एक राजा दूसरे राजा से करता है।' पुरु का उत्तर। विजेता की दृष्टि झुकी और पराजित का मस्तक और उठ गया। वीर ने वीर की भावनाओं का सम्मान किया। सिकंदर की दृष्टि में देशद्रोही आंभी (मित्र) से कहीं अधिक आदर स्वदेश की आन पर मिटने वाले पुरु (शत्रु) के लिए।

एक घटना, एक संकेत, एक सूत्र जो आज भी सत्य है। —विनोद रस्तोगी

०००

वेल्स के कल्पना के कालयंत्र में बैठकर मैं महाभारत का युद्ध देखना चाहूंगा। मेरी निश्चित धारणा है कि उस युद्ध के बाद ही भारत में प्रवृत्तिमार्ग समाप्त हुआ और निवृत्ति पर बल दिया जाने लगा। मैं उन लोगों में हूं, जो यह मानते हैं कि महाभारत का युद्ध सचमुच हुआ था, वह केवल अनुश्रुति अथवा पुराण नहीं है।

—अक्षयकुमार जैन

०००

आजकल कालयंत्र तो क्या, स्वास्थ्य की गड़बड़ी के कारण सीधे काल ही नजर आता है। मगर आप एच. जी. वेल्स से मांगकर कालयंत्र उठा ही लायें, तो आपको धन्यवाद देकर उसमें अनतिदूर भूतकाल की वह क्रूर घटना देखना चाहूंगा, जब रूसी क्रांति के उन्नायक ट्राट्स्की की हत्या कुल्हाड़ी के प्रहार से की जा रही थी और मरता हुआ वह चिल्ला रहा था। उसके बाद आपकी अनुमति हो या न हो, भविष्यकाल की भी वह घटना देखना चाहूंगा, जब समस्त संसार के मनुष्य कम्युनिस्ट होकर सुखी, संपन्न, संतुष्ट और शांत विश्व का निर्माण करेंगे और आकाशगंगा के नक्षत्रों में जाकर वहां के मनुष्यों को मार्क्सवाद तथा कम्युनिज्म का उपदेश करते दिखलाई देंगे!

—राधाकृष्ण

०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह कालयंत्र यदि हमारे पास होता, तो हम उस मजेदार नजारे को देखते, जब ६२ वर्षीय ओनासिस ने ३५ वर्षीया श्रीमती केनेडी से अपने ही द्वीप में विवाह किया था। उस विवाह में ३५ करोड़ रुपये खर्च हुए थे। इतनी विशाल धनराशि एक ही शादी में व्यय होना एक ऐतिहासिक घटना थी।

संयोग की बात, उन दिनों हमारी आयु भी ६२ वर्ष की थी। इसलिए मस्तिष्क में जो विचित्र प्रकार की चुलबुलाहट हुई और कल्पना के जो कतबूर उड़े, उनका उल्लेख यहां कर दें, तो थोड़ा-सा विषयांतर ही हो जाये, किंतु नवनीत के बूढ़े पाठकों का अच्छा मनोरंजन हो जायेगा; साथ ही 'साठा सो पाठा' की लोकोक्ति पर भी उनका विश्वास जम जायेगा, जिससे बुजुर्गवार अपने अंदर एक नयी स्फूर्ति महसूस करेंगे।

उन दिनों 'कालयंत्र' तो नहीं था हमारे पास, लेकिन 'कल्पना-यंत्र' द्वारा ...

०००

साइमन कमिशन के बहिष्कार-आंदोलन में लाला लाजपत राय पुलिस की लाठियों से घायल हो गये थे और उसी स्थिति में उनका निधन हो गया था। अनंतर एक शोक-सभा में स्व. चित्तरंजन दास की पत्नी श्रीमती बासंतीदेवी ने देश की जवानी को ललकारा था–'यह चिता ठंडी होने तक क्या देश का कोई युवक इसका बदला न लेगा?' इससे पूर्व ही, जब लाहौर में लालाजी की अरथी निकल रही थी, आजाद, भगतसिंह और उनके सहयोगी क्रांतिकारी हवाई पिस्तौल से निशानेबाजी कर रहे थे।

इधर लालाजी की हत्या का जिम्मेवार अंग्रेज पुलिस अफसर स्काट भयवश लाहौर किले में स्थित ट्रेनिंग स्कूल में छिपा रहता है और बाहर निकलता ही नहीं है। उधर १७ दिसंबर (सन २८) को मोजंग हाउस की बैठक में निर्णय लिया जा चुका है कि लालाजी का प्रतिशोध लेकर रहेंगे। निगरानी करते-करते एक दिन आजाद, भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु आदि सांडर्स को घेर लेते हैं। साथियों की सुरक्षा के प्रति सजग रहते हुए आजाद डी.ए.वी. कालेज के फाटक पर माउजर से लैस खड़े हैं और भगतसिंह व राजगुरु पुलिस स्टेशन के समीप बिलकुल सटकर खड़े हैं। जयगोपाल संकेत करता है और राजगुरु की प्रथम गोली सांडर्स के माथे में घुस जाती है। सांडर्स चीख मारकर मोटर-साइकल के साथ ही सड़क पर ढेर हो जाता है–भगतसिंह उस पर एक पर एक छह गोलियां बरसाकर उसे सड़क से जड़ देते हैं। अत्याचारी का अंत हो जाता है। सुबह लाहौर भर में इश्तहार चिपके मिलते हैं–'सांडर्स मारा गया। हमने लालाजी के अपमान का बदला चुका दिया!'

मुट्ठी-भर नौजवानों की यह कितनी बड़ी चुनौती थी आततायी-अत्याचारी ब्रिटिश सत्ता को! मैं कालयंत्र द्वारा उसे घटित होते देखना चाहूंगा।

–वचनेश त्रिपाठी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

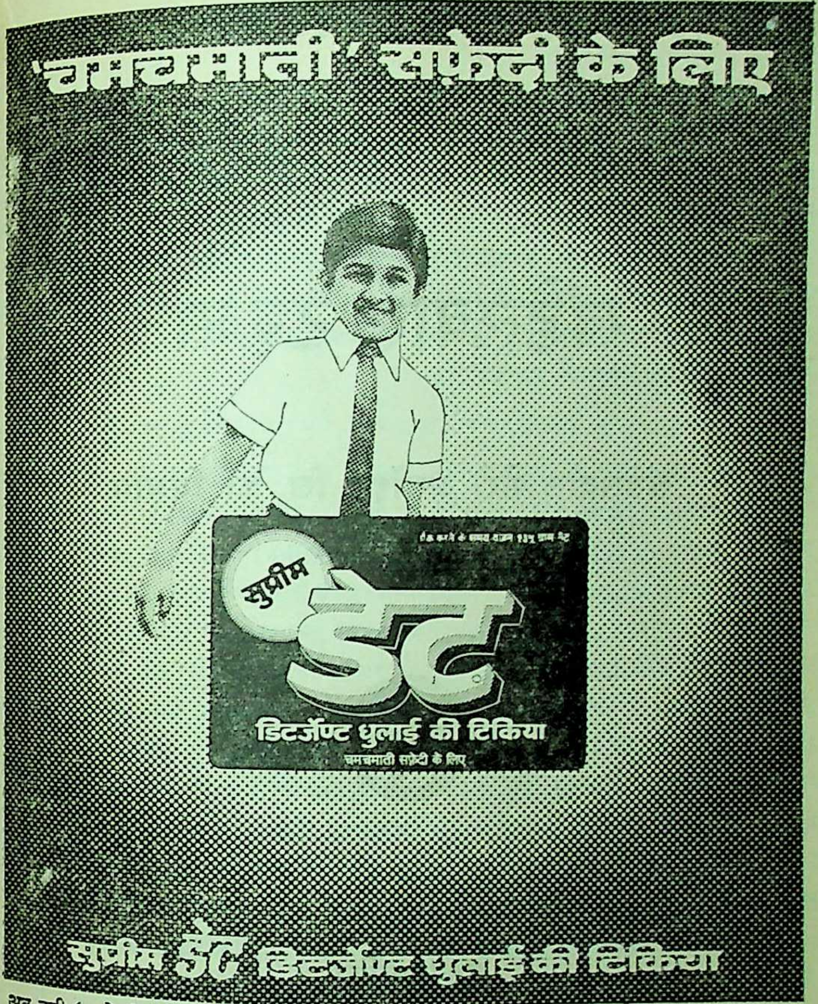

अब नयी 'पहले से भी बढ़िया' डेट टिकिया बाज़ार में मिलने वाली सबसे उत्तम डिटर्जेण्ट टिकिया है. इसकी ज़्यादा सफ़ाई की शक्ति, भरपूर झाग और महक कुछ ऐसी ख़ूबियाँ हैं जो किसी अन्य धुलाई की टिकिया में नहीं पायी जातीं. आज ही इस्तेमाल कीजिए और ख़ुद देखिए! सुप्रीम डेट टिकिया से 'चमचमाती' सफ़ेदी!

शानदार सफ़ेदी,
डेट की सफ़ेदी

Shilpi-DM 7A/76 Hin

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली अभिनन्दन

खंडेलवाल ट्यूब्स

खंडेलवाल फेरो अलॉइज लि. का विभाग

मुख्य आफिस :

खंडेलवाल भवन

१६६, डा. दादाभाई नवरोजी रोड, फोर्ट, बंबई–४०००१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छक्का हमने अपनी प्रियतमा को समर्पित किया था। प्रस्तुत है :

काकी से हमने करी, हाथ जोड़ फरियाद,
यौवन आता है प्रिये, साठ वर्ष के बाद।
साठ वर्ष के बाद, कहें क्या तुमसे रानी,
इस विवाह को देख, भर गया मुंह में पानी।
बासठ के ओनासिस, बासठ के हीं काका
आज्ञा हो तो हम भी कर लें धूम-धड़ाका ?

—काका हाथरसी

०००

आज मानव के सांस्कृतिक विकास-क्षेत्र में उन आदिम गुहाचित्रों का महत्त्व निर्विवाद स्वीकृत है, जो सहस्राब्दियों पूर्व वन्य जीवन में उसने बनाये थे। यूरोप के अल्टामीरा और लास्को के समानांतर भारतीय संदर्भ में सिंगनपुर, पंचमढ़ी-होशंगाबाद, भीमवेटका तथा मिर्जापुर आदि की महत्ता भी प्रकट हो चुकी है। मनुष्य का सौंदर्य-बोध और सृजन-संकल्प उस अवस्था में जागृत हो चुका था, जब वह

००

११ सितंबर सन १८८३ का दिन। सुदूर, अनेक समुद्रों के पार, अमरीका का नगर शिकागो। विश्व-इतिहास में सर्वधर्म परिषद् द्वारा सर्वधर्म-समन्वय का पहला विराट आयोजन। कार्डिनल गिबन्स सभापति के आसन पर सुशोभित। अपार जनसमूह। पहले दिन की बैठक में जब काषाय वस्त्रों में—पाजामा, अंगरखी व साफे में—स्वामी विवेकानंद भाषण देने खड़े हुए तो सब उन्हें ताकने लगे; चूंकि धर्मभूमि भारतवर्ष के इस तपस्वी के मुख-मंडल से तेज की आभा प्रस्फुटित हो रही थी। प्रचलित संबोधन 'महिलाओ एवं सज्जनो' को छोड़, जब उनके मुख से निकला 'अमरीकावासी बहनो व भाइयो', तो संबोधन मात्र से ही गूंज उठा आकाश तालियों की गड़गड़ाहट से, एवं मंत्रमुग्ध हो गयी जनता। कितने सारगर्भित व मार्मिक थे विवेकानंद के ये शब्द—'मुझे उस धर्म का अनुयायी होने का गौरव है, जिसने संसार को समदर्शी बनने तथा सार्वभौम धर्म के ग्रहण की शिक्षा चिरकाल से दी है। हम लोग समस्त जगत् में केवल समदर्शन ही नहीं मानते, किंतु समस्त मतों को सत्य कहकर विश्वास रखते हैं।' कितना आत्मगौरव एवं आत्मविश्वास भरा है उनके शब्दों में ! सांप्रदायिक संकीर्णता व धर्म विषयक उन्मत्ततता की विषैली दीवारों को तोड़कर संप्रदायों में भ्रातृत्व की भावना फूंकी उनकी प्रेरणाप्रद भाषण-शैली एवं विषय-प्रतिपादन की पटुता ने।

रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव॥

—जैसे नदियां भिन्न-भिन्न स्रोतों से निकलकर समुद्र में मिल जाती हैं, उसी भांति हे प्रभो! नाना पंथों के लोग—यद्यपि वे सीधे या टेढ़े रास्तों पर चलते हैं—तेरी ही ओर जाते हैं।......यह है वह ऐतिहासिक घटना जिसे मैं देखना चाहता हूं। **—झाबरमल्ल शर्मा**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्द आराम पाने के लिए तेज़ असर और विश्वसनीय एनासिन लीजिए

तेज़ असर–एनासिन में वह दर्द-निवारक दवा ज़्यादा है, जिस की दुनिया-भर के डॉक्टर सिफ़ारिश करते हैं। इसी लिए एनासिन दर्द से जल्द आराम दिलाती है।
विश्वसनीय–एनासिन आपके डॉक्टर की दवाई की तरह दवाओं का नपा-तुला सम्मिश्रण है। इसी लिए एनासिन पर लाखों लोगों को पूरा भरोसा है।
एनासिन बदन के दर्द, दाँत के दर्द, सर्दी-जुकाम और फ़्लू की पीड़ा से भी जल्द आराम दिलाती है।

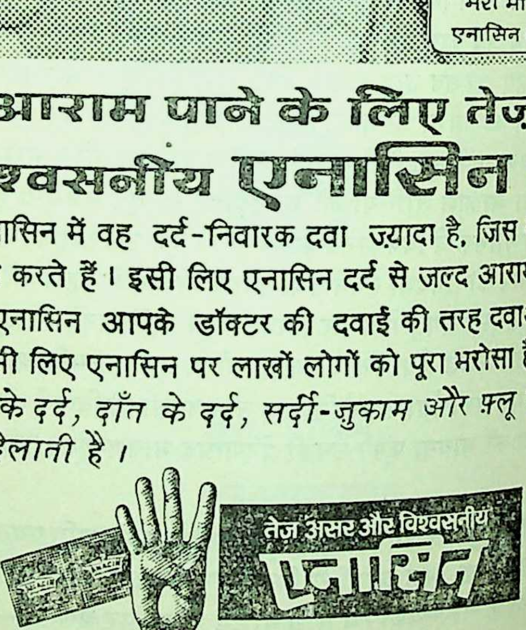

भारत की सब से लोकप्रिय दर्द-निवारक दवा

Regd. User of TM: Geoffrey Manners & Co., Ltd.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वस्त्र पहनना भी नहीं जानता था।

यह सुखद संयोग है कि एच. जी. वेल्स की कालपरक असाधारण कल्पना 'टाइम-मशीन' को मैंने फिल्म के रूप में देखा है और मन पर उसकी अमिट छाप सदा अनुभव करता हूं। यदि वह कालयंत्र मुझे सुलभ हो जाये, तो मैं उसके सहारे अपनी दृष्टि को उस घटना-बिंदु तक ले जाना चाहूंगा, जब आदिम ही नहीं प्रागैतिहासिक मानव अपने सीमित अनगढ़ उपकरणों से गुफाओं की खुरदरी दीवारों और छतों पर एकाकी अथवा सामूहिक चित्रांकन में प्रवृत्त हो रहा हो।

मेरे लिए सृजन-धर्मी मनुष्य के भावी विकास को सही तौर पर समझने के लिए उसका साक्षात्कार अत्यावश्यक है। अगर हिंस्र पशुओं पर विजय की उसकी वह लीला-अनुभूति और अभिव्यक्ति की पूरी प्रक्रिया मैं देख सकूं, तो अपने को कृतार्थ मानूंगा—विशेषतः इसलिए भी कि 'टाइम-मशीन' में मानव के भविष्य रूप को पृथ्वी-गर्भवासी शंकित प्राणियों जैसा ही चित्रित किया गया है। अणुअस्त्रों की विभीषिका से बचने के लिए उसमें वह वन्य मानव के निकट दिखाई देता है।

—डा. जगदीश गुप्त

०००

आपका प्रश्न जितना सरल है, उसका उत्तर देना उतना ही कठिन है। विश्व-इतिहास की असंख्य घटनाएं ऐसी हैं, जिन्होंने मेरे मन को प्रभावित किया है, उनमें से चुनाव करना आसान नहीं है। फिर भी सुविधा मिलती ही हो, तो मैं एन्थेन्स के पंचों की सभा में उपस्थित होकर लोकोत्तर नीतिनिष्ठ वीर-पुरुष सुकरात की अमर-वाणी अपने कानों से सुनना और उस सत्य-वीर को हंसते-हंसते विष का प्याला हाथ में लेकर विषपान करते अपनी आंखों से देखना चाहूंगा। यह घटना मुझे बार-बार याद दिलाती है कि सत्य के राजमार्ग पर चलना खांडे की धार पर चलने के समान है, फिर भी मानव को मानवता की रक्षा के लिए उसी मार्ग पर चलना चाहिये—भले ही उसके लिए कितना ही मूल्य क्यों न चुकाना पड़े।

—यशपाल जैन

०००

पिछले वर्ष पश्चिम जर्मनी घूमते हुए मेरे मस्तिष्क में बार-बार एक दुर्दांत व्यक्ति का चेहरा घूमता रहा है—ऐसा व्यक्ति जो अकेले अपने दम पर सारी दुनिया को अपनी मुट्ठी में समेट लेना चाहता था। विरोधी ताकतों के साथ लड़ना और तब जब वे भीतर और बाहर दोनों तरफ काम कर रही हों, आसान नहीं है।

नेपोलियन की तरह वह भी तानाशाह था, लेकिन अपने साथ वह अनेक लोगों को लेकर चलता रहा। उसने बड़े-बड़े, लंबे-चौड़े 'मेनहाइम' बनवाये और अपने देश के झंडे को दूसरे देशों में जबरन फहराने के प्रयत्न किये। आज वहां की समूची पीढ़ी उसकी विरोधी है। मैं सोचता हूं, अगर वह विश्व-विजयी होता और असफल न होता, तो इतिहास का नक्शा आज क्या होता!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं व्यक्ति को उसके कार्यों पर तौलता हूं—परिणाम की चिंता नहीं होनी चाहिये। जीवन और मृत्यु की तरह, सफल होना या विफल होना नियति के हाथ है। तानाशाहों के दिन लद गये। मैं उनका समर्थक भी नहीं हूं। लेकिन यदि कालयंत्र मेरे हाथ लग जाये, तो मैं उस तानाशाह के सारे कारनामे और समूचा युद्ध अपनी आंखों से देखना चाहूंगा। जो कुछ पुस्तकों में छपा है, या फिल्माया गया है, वह कितना सत्य है, कहना कठिन है। मैं तानाशाह हिटलर के समूचे कारनामे देखने का इच्छुक हूं। —राजेंद्र अवस्थी

ooo

कालयंत्र के माध्यम से मैं उस कालबिंदु पर पहुंचना चाहूंगा, जहां तुलसीदास रामचरितमानस की रचना समाप्त कर रहे होंगे। एक गरीब व्यक्ति जिसे दर-दर की ठोकरें खानी पड़ीं, जिसे इतना अधिक संघर्ष करना पड़ा कि उतना विश्व में शायद ही किसी साहित्यकार को करना पड़ा हो, उसकी उस अनन्य छवि को देखकर यह प्रेरणा सहज ही ग्रहण की जा सकती है कि दैहिक, दैविक, भौतिक ताप से मुक्ति दिलाने की कल्पना करने वाले और दशरथ के पुत्र राम को घर-घर में भगवान के रूप में प्रतिष्ठित कर अनन्य प्रेरणा देने वाले, लोक-मंगल के

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

स्वर्गीय एच. जी. वेल्स ने कालयंत्र की कल्पना की थी, इसकी सूचना तो मुझे नहीं थी; किंतु इसी विचार को लेकर मैंने सन १९५२ में एक एकांकी नाटक की रचना की थी, जिसका नाम मैंने रखा था 'समय-चक्र'। दो विद्यार्थी परीक्षा की समीपता से भयभीत होकर यह चाहते हैं कि यदि समय-चक्र कुछ उलटा घूम जाये, तो परीक्षा का समय इच्छानुसार दूर हो जायेगा और वे परीक्षा की तैयारी अच्छी तरह कर सकेंगे। समय रात्रि का है। एक विद्यार्थी सो जाता है। उसके अंतर्मन में कालचक्र उलटा घूमने लगता है और वह परीक्षा में निर्धारित नाटकों के काल में पहुंच जाता है। वह देखता है कि उसके सामने प्रसाद के स्कंदगुप्त नाटक के पात्र आते हैं, फिर अशोक के समय के पात्र, और समय-चक्र के उलटे घूमने पर सम्राट् चंद्रगुप्त नाटक के पात्र क्रमशः आते जाते हैं। इस प्रकार उस विद्यार्थी को परीक्षा में निर्धारित नाटकों की पूरी अनुभूति होने लगती है। जागने पर उसे परीक्षा में निर्धारित सभी नाटकों के चरित्रों का अभिज्ञान हो जाता है।

यदि वह समय-चक्र मुझ पर लागू हो, तो मैं चाहता हूं, उस काल में पहुंचना, जब सम्राट् चंद्रगुप्त के रणकौशल और चाणक्य की राजनीति से सिकंदर-जैसा महान नेता सतलज के इस पार उतरने का साहस न कर सका। मैं चाहता हूं कि भारत का प्रत्येक नवयुवक चंद्रगुप्त जैसा साहसी और रण-पराक्रमी हो, जिससे भविष्य में कोई आक्रामक हमारे देश में प्रवेश करने का दुःसाहस न कर सके। —डा. रामकुमार वर्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

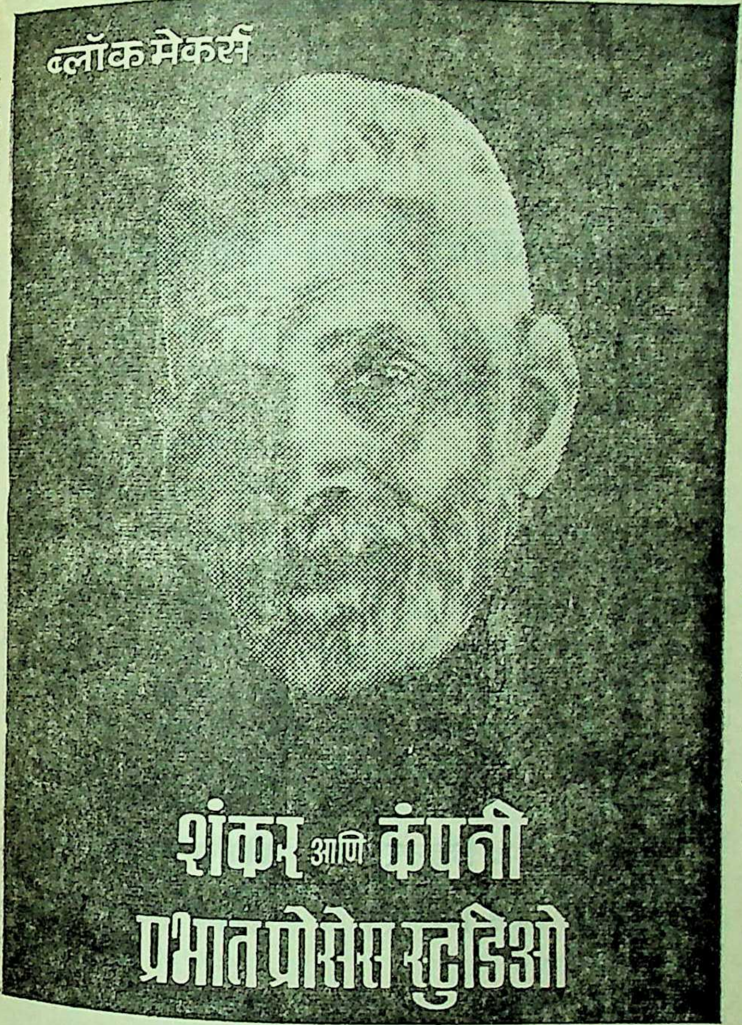

दूरध्वनी ३११६५७ (मुंबई)
५९३५९६ (ठाणा)

धोबीवाडी, डॉ. जयकर मार्ग, (ठाकुरद्वार) मुंबई - २.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभकामनाओं के साथ

मेसर्स बजाज टेम्पो लिमिटेड

बॉम्बे पूना रोड, आकुर्डी,
पूना-४११ ०३५

मैटाडोर	(४ व्हिलर)	डीजल सवारी
हन्सिट	(३ व्हिलर)	पेट्रोल सवारी

के निर्माता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रतिष्ठापक तथा शील, शक्ति और सौंदर्य के उन्नायक व्यक्ति का आर्जव कैसा रहा होगा! और मानव के विकास की कहानी में कलम से जीवंत सनातन क्रांति का सर्जन कैसे हुआ है, इसका भी दर्शन उस झलक से हो सकेगा। **—सुधाकर पांडेय**

०००

यदि मेरे पास स्वर्गीय एच. जी. वेल्स की टाइम-मशीन होती, तो मैं सबसे अधिक उत्सुकता से ब्रह्मांड की उत्पत्ति की घटना को अपनी आंखों से देखना चाहता। इस समय तरह-तरह की बातें इस संदर्भ में कानों में पड़ रही हैं। हमारे पूर्वजों ने और उनसे पहले हमारे वैदिक ग्रंथों ने जिन बातों की ओर संकेत किया है, उन्हें आधुनिक युग के साइंसदान मान्यता देने को तैयार नहीं थे; यद्यपि अब धीरे-धीरे वे यह मान रहे हैं कि जो कुछ उन ग्रंथों में लिखित है, उसे एकदम से गलत या निराधार न कहा जाये। अब जबकि अमरीकी यान मंगल पर उतर चुके हैं और यह पता लगाने का प्रयास कर रहे हैं कि जीव की उत्पत्ति किस प्रकार हुई, मैं समझता हूं कि यदि श्री एच. जी. वेल्स की मशीन उनके पास होती तो उन्हें अपने काम में अत्यंत सुविधा होती। **—के. नरेंद्र**

०००

०००

अमरीकी लोकसभा (हाउस आफ रिप्रेजेंटेटिव्स) में राष्ट्रपति लिंकन ने यह प्रस्ताव रखा है कि हमें गुलामी प्रथा के समर्थक दक्षिणी राज्यों के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर देनी चाहिये। कई सदस्य उनका समर्थन करते हैं। किंतु कई सदस्य उनका जोरदार विरोध करते हुए कहते हैं कि हम अपने ही जातिभाइयों के विरुद्ध युद्ध कैसे छेड़ सकते हैं! यों भी बिना काले गुलामों के वहां की खेती और कारखाने चल नहीं सकते—वहां की परिस्थिति में गुलामी प्रथा को कायम रखना अत्यंत आवश्यक है।

इस पर लिंकन का चेहरा तमतमा उठता है और वे जोश में आकर पूछते हैं—'क्या इसी दिन के लिए हमारे पुरखों ने ४ जुलाई को स्वतंत्रता की घोषणा की थी?' इतना कहकर वे स्वतंत्रता का घोषणापत्र अपनी जेब से निकालकर उसे सबको दिखाते हुए कहते हैं—'यदि आप लोग अन्यायी दक्षिणी राज्यों का विरोध करने का समर्थन नहीं करते, तो यह घोषणापत्र रद्दी कागज के टुकड़े से अधिक मूल्य नहीं रखता और इसे मैं आपकी आंखों के सामने ही फाड़कर फेंक देना चाहता हूं', ये शब्द सुनते ही सारे सभा-भवन में सन्नाटा छा जाता है। फिर लिंकन घोषणापत्र को लपेटकर रख देते हैं और युद्ध की घोषणा का प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वात हो जाता है।

दोनों ओर के सदस्यों के उत्तेजनापूर्ण भाषण कितने सुनने लायक रहे होंगे और पक्ष-विपक्ष के सदस्यों की मुखमुद्रा कितनी रोषपूर्ण रही होगी, इसकी कल्पना करके मेरी इच्छा होती है कि वह दृश्य देखने के लिए मैं कालयंत्र का उपयोग करूं। **—ब्योहार राजेंद्रसिंह**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धांगध्रा केमिकल वर्क्स लिमिटेड

'निर्मल,' तीसरी मंजिल, २४१ बैकबे रिक्लेमेशन,
नरीमन पाइंट, बंबई ४०० ०२१

तार : SODACHEM

फोन : २९२४०७-२९१२१
२९३२३५-२९१११

भारत में हैवी केमिकल्स के क्षेत्र में अग्रणी
अब अंतरराष्ट्रीय बाजार में भी प्रस्तुत :

* अपग्रेडेड इलमनाइट *

(सिंथेटिक रुटाइल ९०-९२ TiO_2

हमारे बनाये हुए रसायन :

* कास्टिक सोडा
* सोडियम बाइकार्बोनेट
* केल्शियम क्लोराइड
* लिक्विड क्लोरीन
* सोडा एश
* अमोनियम बाइकार्बोनेट
* ट्राइक्लोरो एथिलीन
* हाइड्रोक्लोरिक एसिड

* साल्ट *

लिंक चेन

जिसकी एक-एक कड़ी मजबूत, परखी हुई और पूर्णता विश्वसनीय है।

*

सभी उद्योगों व वाहनों में उपयुक्त

*

एलोय स्टील चेन एक विशेषता

इंडियन लिंक चेन मैन्यु. लि., भांडुप, बंबई-७८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अशोक की धर्मविजय-यात्रा, भारतीय संविधान की मूल प्रति पर नंदलाल बसु द्वारा अंकित

मैं तो उस समारोह को देखना चाहूंगा, जो १४ अगस्त १९४७ की रात को दिल्ली में संपन्न हुआ था और जिसमें ब्रिटिश साम्राज्य ने हमारी राज्यसत्ता हमें वापस की थी। —रवींद्रनाथ त्यागी

०००

कालयंत्र यदि मुझे मिल ही जाये, तो मैं देखना चाहूंगा, गौतम-पत्नी यशोधरा का स्वाभिमानी रूप। गौतम बुद्ध ज्ञान प्राप्त करके कपिलवस्तु पहुंचे थे। उन्होंने सड़क पर खड़े होकर राजा शुद्धोदन को उपदेश दिया। राजा ने अनागामी फल प्राप्त किया। भिक्षुओं सहित बुद्ध राजप्रासाद में गये। वहीं भोजन किया। पूरे रनिवास ने आकर भगवान की वंदना की; किंतु यशोधरा टस से मस नहीं हुई। उससे कहा गया—'राहुलमाता, तुम्हारे आर्यपुत्र आये हैं, उठकर उनकी वंदना करो।' यशोधरा का स्वाभिमानी स्वर गूंज उठा—'यदि मुझमें गुण हैं, तो वे स्वयं मेरे पास आयेंगे। वहां मेरे जाने की क्या आवश्यकता!' यह सुनकर भगवान बुद्ध का रोम-रोम स्पंदित हो उठा। वे स्वयं यशोधरा के पास गये। यशोधरा उनके चरणों में नतमस्तक हुई।

नारी के स्वाभिमान का ही नहीं, मानवता, पावनता और प्रेम का वह कितना महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक क्षण रहा होगा! कल्पना मात्र से रोमांच हो उठता है।

—अमर बहादुर सिंह 'अमरेश'

०००

महाभारत की ऐतिहासिकता तो अब प्रमाणित हो चुकी है। मैं उस घटना को घटना-स्थल पर उपस्थित होकर देखना चाहूंगा, जब युधिष्ठिर युद्ध के बाद अपने परिजनों को जलांजलि दे रहे हैं और कुंती कर्ण की कहानी उन्हें सुनाती है।

यदि आप महाभारत को इतिहास नहीं मानते, तो मैं तथागत बुद्ध की मृत्युशय्या के समीप रहना चाहूंगा तथा उनकी मृत्यु के तुरंत पूर्व और पश्चात् के दृश्य देखना चाहूंगा।

कालयंत्र मुझे बहुत परेशान करता रहा है। न जाने कितनी बार मैं 'गार्थ' के साथ भूत-भविष्य में गया हूं। भविष्य मेरे सामने है, पर भूत की सत्यता वर्तमान भविष्य को समझने की शक्ति देती है। —विष्णु प्रभाकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

KMS/49-L/PREM ASSOCIATES/HIN

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कालयंत्र की मदद से मैं भतकाल के किसी कालबिंदु पर जाना पसंद न करूंगा। मैं तो 'चरैवेति' का पालन करते हुए इस यंत्र का लाभ उठाकर भविष्य की ओर जाऊंगा और उस दिन की घटना को देखना चाहूंगा, जिस दिन मानवता के अनन्य प्रेमी गांधीजी के सपनों के भारत का व्यावहारिक चित्र उभरेगा। मेरी दृष्टि में यह दिन विश्व-मांगल्य का भी दिन होगा।

उस दिन ऊंच-नीच का भेद नहीं रहेगा। सभी संप्रदाय मेल-जोल से रहना प्रारंभ करेंगे। धन से अधिक जन को महत्त्व दिया जायेगा। श्रम की पूजा होगी और शोषण का स्थान पोषण लेगा। नर और नारी को

oooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

इतिहास में मैंने एम. ए. किया था और उसमें मेरी रुचि अब भी है। अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाओं के प्रति मैं आकर्षित हूं और उनमें से एक का चुनना मेरे लिए वास्तव में बड़ा कठिन है। किंतु उनमें से मैं अरबेला के युद्ध को वरीयता देता हूं।

अरबेला के युद्ध में सिकंदर महान ने ईरानी सम्राट् की महान सेना को पराजित कर उस समय के सबसे शक्तिशाली साम्राज्य को नष्ट करके उस पर अधिकार कर लिया था। मेरी दृष्टि में वह घटना अनेक दृष्टियों से महत्त्वपूर्ण है। यह यूरोप की एशिया पर पहली निर्णायक विजय थी, जिसके फलस्वरूप एक यूरोपीय शक्ति भारत तक पहुंच गयी और कालांतर में भारत के कुछ भागों में भी ग्रीक वंश के राजाओं का राज्य रहा।

इस विजय के दूरगामी सांस्कृतिक परिणाम हुए। ग्रीस और भारत दोनों ही महान चिंतकों के देश थे, और इस विजय ने ग्रीस को ईरान ही नहीं, भारत की संस्कृति और उसके चिंतन से परिचित कराया। अरबों और ईरानियों ने ग्रीस का दर्शन तथा अन्य विद्याएं सीखीं और उनके द्वारा भी वे कालांतर में भारत में पहुंचीं। भारतीय चिंतन, ज्ञान और शासन-प्रणाली तथा अध्यात्म की ग्रीस को जानकारी हुई। इसी विजय के कारण तत्कालीन भारत की स्थिति का वर्णन लिपिबद्ध करने का ग्रीस के विद्वानों को अवसर मिला, जो तत्कालीन भारत की दशा का सबसे प्रामाणिक अभिलेख है।

यही नहीं, भारत में इसी विजय के कारण कितने ही ग्रीक बस गये। उनमें से कितनों ही ने भारत के भागवत धर्म को स्वीकार कर लिया। ऐसे ही एक ग्रीक राजदूत ने भागवत धर्म स्वीकार करके विदिशा में एक विष्णु-मंदिर बनाया था, जिसका गरुड-स्तंभ आज भी 'हेलिओडोरस स्तंभ' के नाम से विख्यात है।

अरबेला का युद्ध केवल महान सैनिक घटना नहीं थी, वह एक महान साम्राज्य के पतन का ही कारण न थी; प्रत्युत उसके दूरगामी सांस्कृतिक परिणामों ने पूर्व और पश्चिम को निकट संपर्क में ला दिया। इसी से मैं उसे महत्त्वपूर्ण मानता हूं। **—श्रीनारायण चतुर्वेदी**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

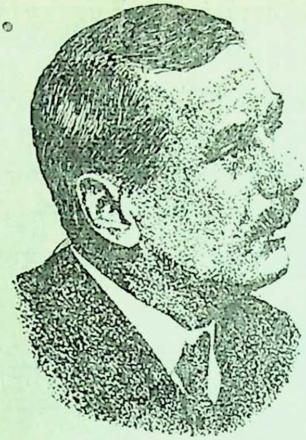

कालयंत्र के कल्पक एच. जी. वेल्स

एक समान अधिकार होगा। प्रत्येक मानव स्वाभिमान के साथ ऊंचा मस्तक कर चल रहा होगा! मानव-संहार के लिए बनाये गये सब अस्त्र-शस्त्र उस दिन समुद्र में डुबो दिये जायेंगे। हिंसा के स्थान पर प्रेम की, विश्व-बंधुत्व की भावना का श्रीगणेश होगा। प्राणिमात्र के प्रति जन-जन के हृदय में प्यार होगा। सारा जीवन उच्च विचार से अनुप्राणित होकर मनुष्य सुख, शांति और आनंद की अनुभूति करेगा।

मैं चाहूंगा कि इस पुण्य-दिवस विलोकनीय छटा को देखने के लिए आप भी मेरे साथ हों। —रामेश्वर दयाल दुबे

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

मैं इस वैज्ञानिक युग में विज्ञान की चरम उपलब्धि मानव की चंद्रलोक-यात्रा को और चंद्रमा के वास्तविक स्वरूप को देखना चाहूंगा। भारतीय साहित्य में चंद्रमा सौंदर्य का अप्रतिम प्रतीक है, शीतलता का पुंज और लावण्य का सागर है। नायिकाभेद-वर्णन और नखशिख-वर्णन में हमारे कवियों ने चंद्रमुखियों के लिए क्या-क्या नहीं कहा है। इसी चंद्रमा के नाम पर अनेक पर्व और त्योहार मनाने का भी विधान हमारे देश में ही नहीं, अनेक मुस्लिम देशों में भी है। हमारे कवियों की बुद्धि पर तो चंद्रमा के सौंदर्य का ऐसा आतंक रहा है कि बिना विवेक के उन्होंने खयालों के कुलाबे मिलाये हैं। विरह की मारी बिहारी की नायिका तो चांद को देखकर कह उठी :

हौं ही बौरी बिरहबस के बौरो सब गाँव। कहा जाने ये कहत हैं ससिहिं सीतकर नाँव॥

आज की नायिका को ऐसा संदेह नहीं होगा। आज अमरीकी वैज्ञानिकों के जूतों की चोट से चंद्रमा का सौंदर्य तिलमिला रहा होगा और उसकी शीतलता ऊष्मा में बदल गयी होगी। इस परिवर्तित स्थिति को देखने की इच्छा मेरे मन में इसलिए पैदा होती है कि कल्पना का मिथ्या मोह भंग होता है। साहित्य का मनोविनोद जब यथार्थ की ठोस धरती पर खड़ा किया जाता है, तभी उसका स्वरूप-बोध सही मानी में संभव है। चंद्रलोक या चंद्रमा की यात्रा करके चंद्रमा की धरती (सरफेस) से जो धूल-कण ये वैज्ञानिक लाये हैं, उनका प्रदर्शन तो दिल्ली में भी हुआ था, लेकिन चंद्रलोक में पहुंचकर वहां की छटा को देख पाना हमें सुलभ कहां है! क्या आप एच. जी. वेल्स के काल-यंत्र से इस अद्भुत और अद्वितीय घटना को हमें अपनी आंखों से देखने का सुअवसर दिला सकेंगे! —डा. विजयेंद्र स्नातक

ooooooooooooooooooooooooooooooooooooooo

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

PODAR textiles

* पोलिएस्टर मिश्रित सूटिंग्ज
* पोलिएस्टर मिश्रित शर्टिंग्ज
* पोलिएस्टर और नायलान साड़ियाँ
* ड्रेस मैटीरियल
* पॉपलिन
* सूती और मिश्रित यार्न् के निर्माता और प्रोसेसर

* दि पोदार मिल्स लिमिटेड।
* पोदार सिल्क्स और सिंथेटिक्स लिमिटेड।
* पोदार स्पिनिंग मिल्स।
* पोदार प्रोसेसर्स।
* पोदार निटिंग्ज लिमिटेड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंगर

अनुपम प्रस्ताव!

अभी केवल

५० रु.

दीजिये

(एक पैसा भी ज़्यादा नहीं)

और आज ही **मेरिट*** सिलाई मशीन घर ले जाइये।

बाकी रकम अगले
४ महीनों में दीजिये—बगैर किसी ब्याज के!

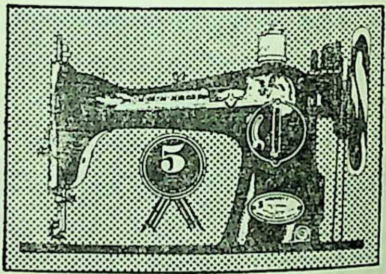

आज ही अपने समीप की सिंगर-दुकान पर या
अधिकृत विक्रेता से मिलिए!
* सिंगर कंपनी का ट्रेडमार्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विश्वास का प्रतीक

एक छोटी-सी,
जर्जर-सी
झोंपड़ी के द्वार पर
एक बूढ़ी मां ने
दिया जलाकर रखा
तो सहज ही मैंने
पूछ लिया–
क्यों मां,
क्या कभी लक्ष्मी
आयी है तुम्हारे घर !
मेरा प्रश्न सुन वह
मुस्करा दी, बोली–
बेटा, लक्ष्मी आये
या न आये,
पर मेरा विश्वास
मुझसे न छूट जाये
इसलिए–
दिया जला लेती हूं,
दीवाली मना लेती हूं।

–नरेंद्र भारद्वाज
५०, दरियागंज, नयी दिल्ली-२

अफसोस

–डा. गोपालचंद्र मिश्र

हे आकाश !
मुझे अपना परस दो,
खो जाऊं तुम्हारी गोद में
बरसाती मौसम के इस बेड़े में
पीते हुए नील इस अजस्र अमृत को
हे आकाश !
मुझे बांध लो
मेघों के आंचल में।
मैं बदहवास हूं
मर्त्य के इस गोला-बारूद से।
हे सागर !
अपनी गभीरता में,
हो सके तो
धो दो सारी यह मेरी विषज्वाला
सदा के लिए।
हे धरती !
अपनी सहज गोद में
हो सके तो
धीरे-धीरे सुला दो,
जीवन की परिचयहीन
जैत्रगाथा गाते-गाते
मुझे सजा दो ऐसे कि
फिर खिलूं नहीं
रक्त का गुलाब बनकर।

उड़िया से अनुवाद:
शंकरलाल मिश्र

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

SURPASSING
STONE AND WOOD AND PARCHMENT
IN EVENNESS OF
SURFACE,
PAPER FORMS
NEW MATERIAL FOR
CREATION.

Paper has value far beyond its price.

West Coast Paper

U-WCP-1-6

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ४१ का शेष]

गया हो, मैं रच डालता हूं। उसे मैं बोलकर लिपिक को लिखवा देता हूं। यह लिखवाना अपराह्न के चार बजे से शाम के किसी समय तक चलता है।

इन गद्य-रचनाओं की तरह कभी-कभी कविता भी दूसरे की मांग पर रचनी पड़ती है। उसे भी मैं बोलकर लिखवा देता हूं। ये

ज्ञानपीठ-पुरस्कृत तेलुगु साहित्यकार (८१ वर्ष)

चीजें मुझे कभी सोचनी नहीं पड़तीं। इनके लिए आवश्यक चिंतन लिखवाने के साथ-साथ चलता है। किसी रचना में मुझे सप्ताह भर लग सकता है, किसी में दो सप्ताह भी। अब तक किसी रचना में मुझे दो सप्ताह से अधिक समय नहीं लगा।

परंतु उच्चतर स्तर की कविता इस कोटि में नहीं आती। उस कविता के लिए उच्चतर और गहन चिंतन आवश्यक होता है। उसके लिए कुछ पांडित्य और मंजी हुई अभिव्यक्ति भी आवश्यक होती है। कभी विशेष शैली या ध्वनि-सामंजस्य की आवश्यकता होती है, जो कि एक विशेष प्रकार का संगीत है। यह कविता मैं बोलकर नहीं लिखवाता हूं। मेरा मन अपनी सुविधा के क्षणों में यह काम करता रहता है। जब कुछ पद तैयार हो जाते हैं, उन्हें मैं अपने हाथों लिख डालता हूं।

कई बार नाटकों के मामले में भी ऐसा होता है। जब नाटक में कोई ऐसी कविता लिखनी आवश्यक हो, तब नाटक की प्रगति में बाधा पड़ती है। उसके पूरा होते ही नाटक आगे बढ़ चलता है।

मेरा सारा गद्य जब दूसरों ने मांगा, तब लिखा गया है। मेरी असली कविता—जहां तक उसकी कल्पना और रचना का सवाल है—स्वेच्छानुसार समय लेती है। वह कब आयेगी और कब पूरी होगी, इसका कोई ठिकाना नहीं। मगर एक चीज मैं निश्चित रूप से जानता हूं—कोई चीज मुझे बहुत देर व्याप्त नहीं रखती।

०००

डा. सालिम अली

१. इस समय मैं कोई पुस्तक नहीं लिख रहा हूं, बल्कि इंतजार कर रहा हूं आक्सफर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से अपने 'फील्ड गाइड टु द बर्ड्स आफ द ईस्टर्न हिमालयाज़' के प्रकाशन का, जिसमें बहुत ज्यादा विलंब हो गया है। भूतान के स्वर्गीय द्रुक ग्यालपो, जिग्मे दोरजी वाङ्चुक इस पुस्तक के संरक्षक थे। इसमें सिक्किम, भूतान और अरुणा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतुल

विराट रासायनिक उद्योग-समूह
बहुविध

डायस्टफ और डाइ-इंटरमीडिएट

प्रस्तुत करता है।

दि अतुल प्रॉडक्ट्स लिमिटेड

पो. ऑ. अतुल, जिला–वलसाड
पिन : ३९६०२० (गुजरात)

टेलिफोन : ६१, ६२, ६३, ६४
ग्राम : 'TULA' Atul. टेलेक्स : 0178-284

Adroit-795

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल प्रदेश में मिलने वाली लगभग ५०० जातियों के अधिकांश पक्षियों के संक्षिप्त वर्णनात्मक परिचय और रंगीन चित्र होंगे। यह आराम से जेब में रखी जा सकने योग्य गुटका होगी।

२. हाल में पूरी हुई दस खंडों वाली 'हैंडबुक ऑफ़ द बर्ड्स ऑफ़ इंडिया एंड पाकिस्तान' (एस. डिल्लन रिप्ले के साथ लिखित) का काम जब चल रहा था, तो मैं अक्सर प्रतिदिन दस से बारह घंटे (कभी-कभी तो चौदह-पंद्रह घंटे भी) काम करता था—बेशक भोजन आदि के लिए थोड़े समय उठ जाता था। पुस्तकालय और म्यूजियमों में आरंभिक शोधकार्य (जो १९५३ में शुरू हुआ) हो जाने के बाद असली लेखन में दस वर्ष लगे। आखिरी खंड १९७४ में छपा और उसी साल नवंबर में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के हाथों उसका ग्रंथ-विमोचन हुआ।

सभी प्रथम मसविदे मैं अपने ही हाथ से लिखता हूं (बोलकर लिखवाता नहीं) और लिखे हुए को तराशने, पराग्राफों को फिर से गढ़ने, शब्दों में हेरफेर करने, वाक्यों को यथासंभव संक्षिप्त बनाने पर बहुत-सा समय लगाता हूं, ताकि सारी बात सारगर्भित और प्रासंगिक हो। मैं मानता हूं कि पाठक को प्रामाणिक वैज्ञानिक जानकारी देने के साथ-साथ यह भी उतना ही जरूरी है कि वर्णन को पढ़ने में उसे आनंद आये। यह प्रयत्न और इस पर व्यय होने वाला समय पूर्णतः सार्थक है, यह बात मेरी

पक्षी-विशेषज्ञ (८० वर्ष)

पुस्तकों की भारत में और विदेशों में छपी समीक्षाओं से प्रकट होती है। उनमें इस विशेषता का प्रशंसापूर्ण जिक्र रहता है, जो मेरे लिए संतोष की बात है।

फिर मैं कटे-छंटे हस्तलिखित मसविदे को दुहरा स्पेस रखकर टाइप करवा लेता हूं और फिर से काटने-तराशने-निखारने लगता हूं। प्रायः मैं एक बार फिर टाइप करवाता हूं और जब मुझे पूरी तसल्ली हो जाती है, तब प्रेस के लिए सफाई से टाइप करवाता हूं। यह लंबी और समय खाने वाली प्रक्रिया है; मगर मेरा अनुभव है कि यह बड़ी फायदेमंद है।

३. अब ८० बरस की उम्र में नयी योजनाएं बनाना तो विवेक की बात नहीं! अनेक मित्र और पक्षी-विशेषज्ञ मुझ पर दबाव डाल रहे हैं कि मैं अपने संस्मरण लिखूं। अगर मन हुआ और समय मिला, तो संभव है, कुछ प्रसंग और मुख्य घटनाएं लिख ही डालूं।

०००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

SCINDIA

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारी विदेश-सेवा

ब्रिटेन, पश्चिम यूरोप, सोवियत रूस, पोलेंड, सं. रा. अमरीका, पूर्वी कनाडा, ग्रेट लेक्स, प्रशांत महासागरीय बंदरगाहें, कैरिबियन की बंदरगाहें, पश्चिम एशिया (फारस-खाड़ी), लाल सागर, स्ट्रेट्स की बंदरगाहें, भूमध्य सागर, पूर्वी तथा पश्चिमी अफ्रीका।

अपना माल सिंधिया जहाजों द्वारा भेजि[ए]

हमारी तटीय सेवा

भारत के समूचे तट पाकिस्तान, बाङ्ग्ला-देश, श्रीलंका और बर्मा तक व्याप्त हैं।

टेलीफोन : २६८१६१ (बारह लाइनें)

टेलेक्स : 2205/3519

केबल : SAMUDRAPAR (ओवरसीज) JALANATH (तटीय)

सिंधिया के जहाजों द्वारा माल-ढुलाई से देश को विदेशी मुद्रा की बचत और कमाई होती।

द सिंधिया स्टीम नेविगेशन कंपनी लिमिटेड

सिंधिया हाऊस,
नरोत्तम मोरारजी मार्ग,
बेलार्ड एस्टेट, बंबई–४०००३८
१५, पार्क स्ट्रीट, कलकत्ता–१६

सिंधिया वर्कशाप लि.
पैटेंट स्लिप, मझगांव
बंबई–४०००१०
पी २, तारातोला रोड
कलकत्ता–७०००२४

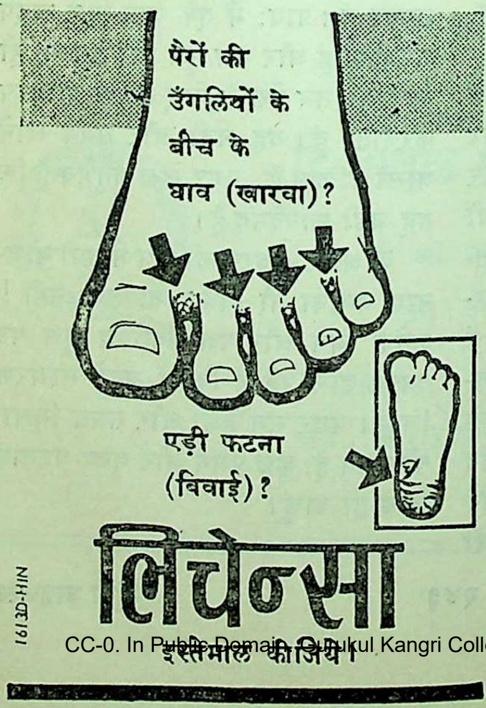

जालिम लोशन

दाद खुजली की पेटेन्ट दवा

- चमड़ी की गहराई में पहुँचकर कीटाणु का नाश करता है
- सड़ी गली खराब चमड़ी को कागज की तरह निकाल फेंकता है
- 'जालिम लोशन' लगाते ही दाद खुजली की परेशानी मिट जाती है
- कपड़ों पर दाग नहीं लगता

हर जगह मिलती है

ORICHEM, RAO (INDORE)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डा. मंगलदेव शास्त्री

१. आजकल मैं 'भारतीय संस्कृति का विकास, तृतीय खंड, पौराणिक धारा' के लेखन में व्यस्त हूं।

२. स्वास्थ्य ठीक रहने पर प्राय: तीन या चार घंटे प्रतिदिन उस कार्य में लगाता हूं। मुख्य लेख अपने हाथ से ही लिखता हूं। सामग्री-संचयन में दूसरे व्यक्ति से भी सहायता लेता हूं।

३. इस प्रश्न का उत्तर देना कठिन

संस्कृतज्ञ, प्राच्यविद्याविज्ञ, शिक्षाशास्त्री (८५ वर्ष)

दिखता है; क्योंकि अगले पांच वर्षों का क्या ठिकाना! यदि इस दृष्टि को सामने न रखा जाये, तब तो वांछनीय इष्ट का सीमा-निर्धारण कठिन है। फिर भी मुख्य और गौण रूप से योजनाएं दो प्रकार की हैं:

क. अवशिष्ट सांस्कृतिक धाराओं (विशेषत: जैन, बौद्ध तथा संत) पर लेखन।

ख. ५०० वैदिक मंत्रों की रचना (वैदिक व्याकरण के बिना वैदिक भाषा, छंद और शैली में); अवशिष्ट ब्राह्मण और आरण्यक ग्रंथों पर 'पर्यालोचन' तैयार करना (तीन-चार पर यह कार्य हो चुका है); वैदिक वाङ्मय का 'सुभाषित भांडागार' (एन्थॉलाजी) तैयार करना; उव्वट भाष्यसहित कात्यायन प्रातिशाख्य का संस्करण; ऋग्वेद प्रातिशाख्य के एक प्राचीनतर भाष्य (या व्याख्या) का संस्करण; सांख्य-योग का दार्शनिक कोश छपवाना (तैयार रखा है, केवल दुहराना शेष है); इत्यादि।

०००

बनारसीदास चतुर्वेदी

१. आजकल मैं कोई पुस्तक नहीं लिख रहा हूं; पर मेरी यह हार्दिक इच्छा अवश्य है कि अपनी आत्मचरितात्मक लेखमाला—'महापुरुषों की खोज में'—को पूरा कर दूं। 'पत्र-व्यवहार मेरा व्यसन' नामक ग्रंथ भी लिखना चाहता था, पर अब उसे लिखना कठिन हो गया है; क्योंकि बहुत-से पत्र मैंने राष्ट्रीय अभिलेखागार, जनपथ, दिल्ली में जमा करा दिये हैं।

२. प्रतिदिन प्रात:काल के तीन घंटे से अधिक लिखने का काम मैं नहीं कर पाता। और उन तीन घंटों का एक अच्छा भाग चिट्ठियों के जवाब देने में बीत जाता है। पत्र-व्यवहार की असाध्य बीमारी पर मैं काबू नहीं कर पाता। मेरे द्वारा लिखित कितने ही लेख पत्रों में पड़े हैं और उनके संग्रह से कई किताबें बन सकती हैं, पर उधर मैं ध्यान नहीं दे पाता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ENJOY THE FESTIVAL
WITH
POLYDOR RECORDS

2392 869
● AARATI GEET MALA
2488 147
● SHREE RAMA GEET-GUNJAN
IRLP 909
● THE BHAGAVAD GITA

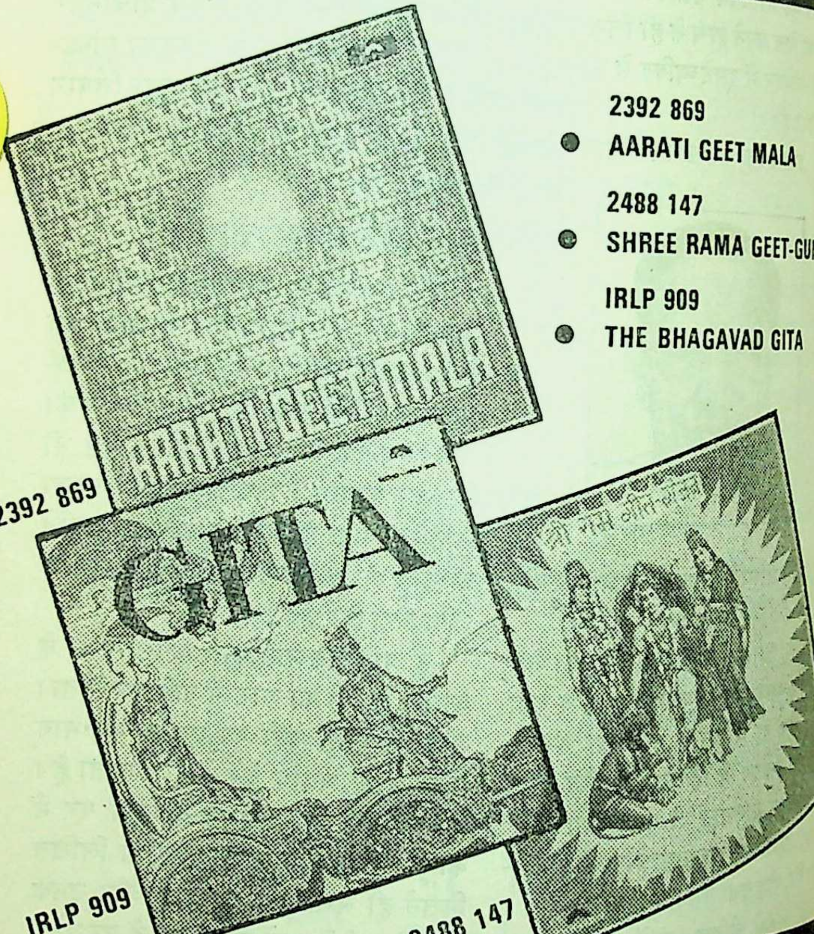

2392 869
IRLP 909
2488 147

polydor

POLYDOR OF INDIA LTD.
STERLING CENTRE
16/2, DR. ANNIE BESANT ROAD,
WORLI, BOMBAY-400 018.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुहरे अर्थ में पत्रकार (८४ वर्ष)

३. अगले पांच वर्षों के लिए मैंने अभी कोई योजना नहीं वनायी। 'कर बैठे ऐन वक्त पर जो कुछ भी वन सका। पहले से कोई बात मन में ठानते नहीं।' यही मेरा 'मोटो' है। मेरा ८५ वां वर्ष तीन महीने बाद शुरू हो जायेगा। स्वर्गीय सातवळेकरजी ने ९० वें वर्ष में अगले २५ वर्ष की योजना बनायी थी और दृढ़तापूर्वक तदनुसार वे काम कर भी रहे थे। पर वे तो महापुरुष थे।

सन १९१२ से मैं निरंतर लिखता रहा हूं। दिमाग पिलपिला हो जाने के पूर्व मुझे रिटायर हो जाना चाहिये। आजकल मेरा संपूर्ण ध्यान उत्तराखंड के साहित्यिक कार्यों के प्रति है। कण्व तथा शकुंतला के इस जनपद के सौंदर्य से मैं अभिभूत हो गया हूं।

०००

सिद्धेश्वर शास्त्री चित्राव

१. इस समय दो ग्रंथों का काम कर रहा हूं–शुक्ल यजुर्वेद का मराठी अनुवाद एवं ऋग्वेद के कई वैशिष्ट्यपूर्ण अग्निसूक्तों का सविवरण संपादन अंग्रेजी में।

वेदत्रयी में से ऋग्वेद एवं अथर्ववेद का मराठी अनुवाद पहले ही कर चुका हूं, जिसका महाराष्ट्र के विद्वान एवं सामान्य वाचकों ने हार्दिक स्वागत किया है। चाहता हूं, शुक्ल यजुर्वेद का मराठी अनुवाद भी पूरा करके वेदों का एवं वैदिक तत्त्वज्ञान का संदेश बीसवीं सदी के दूसरे हिस्से के अत्याधुनिक युवा वाचक तक पहुंचा दूं।

२. वैसे तो पठन एवं चिंतन का कार्य जागृति के सभी घंटों में जारी रहता है। किंतु अब ८५ साल की उम्र होने से प्रत्यक्ष लिखने का काम दिन में ३-४ घंटों से अधिक नहीं हो पाता। स्वयं लिखने की कोशिश करने पर हाथ कांपते हैं, इसलिए ज्यादातर लेखन लेखनिक से करवाता हूं। किंतु कभी ऐसा भी होता है कि आधी रात में कोई विचार-रूपी मेहमान इतने जोर से मस्तिष्क का द्वार खटखटाते हैं कि बिस्तर से उठकर अपने ही हाथ से जब तक कागज पर उन्हें

वेदज्ञ, 'चरित्रकोश' के रचयिता (८५ वर्ष)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिख न डालूं, मन को शांति नहीं मिलती। मेरा अनुभव है कि मेरी विचार-शक्ति एवं कल्पना-शक्ति प्रातःकाल की नीरव शांतता में सबसे अच्छा काम देती है। मेरे अच्छे से अच्छे विचार (चाहे आप उसे प्रतिभा कहें) उसी समय उभरते हैं। शायद इसी कारण वैदिक साहित्य में 'उषस्' (प्रातःकाल) को एक देवता मानकर मानवी कल्पना-शक्ति की अधिष्ठात्री के रूप में उसका स्तवन किया है।

३. वैदिक साहित्य का कल्याणकारी सांस्कृतिक संदेश मराठी वाचकों तक पहुंचाने का अल्प-स्वल्प प्रयत्न पिछले ... साल से मैं करता आया हूं। उसमें वेदमाता की कृपा से सफलता भी प्राप्त कर चुका हूं। अभी चाहता हूं कि यही कार्य भारतवर्ष की सभी भाषाओं के लिए, एवं इंग्लैंड-अमरीका में रहने वाले अपने अंग्रेजी भाषिक बांधवों के लिए करूं। इन लोगों में वैदिक साहित्य का प्रचार करने वाले कई ग्रंथ एवं वैदिक सूक्तों का सविवरण संग्रह प्रकाशित करने की कामना रखता हूं।

★

एक दिन स्वामी दयानंदजी के पास एक आदमी आकर बोला—'महाराज, आपने यह कहते थे कि ध्यान में तुमको प्रकाश दिखाई देगा। मुझे तो उलटा अंधकार दिखाई देता है।' स्वामीजी ने उससे कहा—'श्रद्धा-भक्ति से अभ्यास करते जाइये, अंत में उसी अंधकार में ज्योति दिखने लग जायेगी।'

★

रब्बी हिया और रब्बी अब्बाहू एक दिन एक साथ किसी शहर में गये। रब्बी हिया लोगों को धर्म की गूढ़ बातें बताने लगे और रब्बी अब्बाहू धर्म संबंधी नीतिकथाएं सुनाने लगे। कुछ देर में रब्बी हिया के श्रोता धीरे-धीरे खिसकने लगे और रब्बी अब्बाहू के श्रोताओं में शामिल होने लगे। जब रब्बी हिया का प्रवचन पूरा हुआ। उनके सामने गिनती ही के लोग बैठे हुए थे; जबकि रब्बी अब्बाहू के सामने लोगों की भीड़ लगी हुई थी।

रब्बी हिया को यह बहुत बुरा लगा। बाद में उन्होंने इसकी शिकायत की, तो रब्बी अब्बाहू ने उत्तर दिया—'मैं आपको एक नीतिकथा सुनाता हूं। एक बार दो आदमी एक साथ एक शहर में गये। उनमें से एक हीरे-मोती बेचता था, दूसरा दैनिक जीवन में काम आने वाली घरेलू चीजें। उनमें से किसके गिर्द ज्यादा लोग जमा हुए होंगे?'

'दूसरे आदमी के गिर्द।'

'क्यों भला?'

'इसलिए कि लोक उन चीजों को खरीद सकते थे और उन्हें अपने रोजमर्रा के जीवन मे उनकी जरूरत भी थी।'

'तो यही है आपकी शिकायत का जवाब!' अब्बाहू ने बात समाप्त की।

★

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पृष्ठ ४८ का शेष]

मंडल अतिथि-गृह में प्रवेश कर रहा था, राष्ट्रपति हो ची मिन्ह जो कि विनोदार्थ दरवाजे के पीछे छिपे हुए थे, अचानक उछल-कर सामने आ गये और उन्होंने एक भी शब्द बोले बिना ऊ नू को बांहों में भरकर चूम लिया। अगर ऊ नू ने हो ची मिन्ह के फोटो न देखे होते, तो वे जान भी न पाते कि यह शख्स कौन है जो उन्हें इस तरह चूम रहा है!

उस रोज हो ची मिन्ह खाकी पतलून और खाकी कमीज पहने हुए थे, जिन पर इस्तिरी नहीं की गयी थी। यही नहीं, ऐसा भी लगता था कि पिछले दो-तीन दिनों से शायद वे वही कपड़े पहने हुए हैं। उनकी चाल, उनके हाव-भाव, दूसरों को देखने का उनका ढंग, उनके शब्द-चयन सब पर ऊ नू ने बड़ा गौर किया और देखा कि हो ची मिन्ह दंभ और दिखावे से इस कदर बरी हैं कि मानो उन्हें इस असलियत का एहसास ही न हो कि वे राष्ट्रपति हैं। उनकी प्रत्यक्ष झलकती ईमानदारी, नितांत निरभिमानता और आडंबरहीनता को देखकर ऊ नू का हृदय श्रद्धा से भर उठा।

ऊ नू ठहरे निपट नादान, उन्हें पता ही न था कि हो ची मिन्ह कुंआरे हैं। सो उन्होंने राष्ट्रपति से उनके परिवार का कुशल-प्रश्न किया और पूछ लिया कि आपके कितने बेटे-बेटियां हैं। हो ची मिन्ह मुस्कराते हुए बोले कि बहुत सारे हैं। ऊ नू ने सवाल किया—'मगर कितने?' हंसते हुए राष्ट्रपति को कहना पड़ा कि सभी वियतनाम-वासी मेरे बेटे-बेटियां हैं।

रूस में पहले ही दिन

अक्तूबर १९५५ में ऊ नू रूस की राजकीय यात्रा पर गये। उनके साथ अनेक बर्मी संपादक भी थे। मास्को पहुंचने के दिन ही अविचारी और उतावले बर्मी प्रधान-मंत्री ने अपने को कुछ ऐसा काम करते पाया, जो कि उन्हें करना नहीं चाहिये था।

ऊ नू के साथी-संगियों को तो इसका पता नहीं था, मगर वे (ऊ नू) अपने साथ एक चिट्ठी लाये थे, जो उन्हें इस्रायल के प्रधान-मंत्री मोशे शेरेत से रंगून में मिली थी। पत्र था तो रूसी प्रधान-मंत्री बुल्गानिन के नाम, मगर ऊ नू से प्रार्थना की गयी थी कि वे अपने प्रभाव का सदुपयोग करें, ताकि सोवियत नेता इस्रायल में जाकर बसना चाहने वाले रूसी यहूदियों को रिहा कर दें।

वर्षों पहले जब मोशे शेरेत अपने देश के विदेश-मंत्री थे और एशियाई समाजवादी सम्मेलन में भाग लेने रंगून आये थे, तब ऊ नू उनसे मिले थे। ऊ नू जानते थे कि उन्हें इस पत्र के बारे में अपने विदेश-मंत्रालय से बात कर लेनी चाहिये थी। फिर भी उन्होंने बात नहीं की—इस संदेहवश कि विदेश-विभाग तरह-तरह के एतराज उठायेगा। साथ ही, उन्हें जो कार्य सौंपा गया था, वह परोपकार का था; इसलिए भी वह उन्हें भा गया था। सो उन्होंने यह बात किसी को बतायी नहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

We regularly stock papers ranging from standard varieties to high grades. Whites and coloured ranging from thin grades to the highest substances.

Distributors :

THE BENGAL PAPER MILL CO. LTD.,

Stockists :

THE WEST COAST PAPER MILLS LTD.

THE BOMBAY CALCUTTA PAPER AND GENERAL CO. PRIVATE LTD.

Regd. Office : **Majithia Chambers**
276 Dr. D. N. Road, Bombay-400 001

Telephone No. **262567** (3 Lines) *Telegram* : PAPERHOUSE

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मास्को हवाई-अड्डे पर बुल्गानिन, मालें-कोव, मिकोयान, कगानोविच तथा दूसरों ने ऊ नू का स्वागत किया। व्यवस्था यह थी कि वे क्रेमलिन जाकर इन्हीं नेताओं से औपचारिक रूप से पुन: मिलेंगे। अपने साथ वे राजदूत ऊ ओह्न, लंदन स्थित बर्मी राजदूत ऊ क्यिन और अपने सेक्रेटरी ऊ थांत (बाद में जो राष्ट्रसंघ के महामंत्री बने) को क्रेमलिन लेते गये।

क्रेमलिन में औपचारिक अभिवादन पूरा हुआ ही था कि ऊ नू ने मोशे शेरेत की चिट्ठी निकाली और बुल्गानिन की ओर बढ़ा दी। उतने से ही संतोष न करके ऊ नू यह भी बोल पड़े कि मैंने सुना है, रूस के कुछ यहूदी इस्रायल जाना चाहते हैं मगर जा नहीं पा रहे हैं, पर मुझे उम्मीद है कि सोवियत सरकार उदारतापूर्वक उन्हें इस्रायल जाने की अनुमति दे देगी। रूसी नेता आश्चर्य से अवाक् रह गये और जब उनकी प्रतिक्रिया प्रकट हुई, स्पष्ट ही उसमें नाराजगी थी। ऊ नू के ध्यान में यह बात लायी गयी कि मास्को में इस्रायली दूतावास है और इस्रायल सरकार को रूसी सरकार से जो भी पत्रव्यवहार करना हो, उसका उचित माध्यम वही दूतावास है। मगर ऊ नू इतनी आसानी से अपमानित होने वाले नहीं थे। वे बोले कि (इस्रायली) प्रधान-मंत्री मोशे शेरेत मेरे पुराने मित्र हैं और अपने पुराने मित्र की मदद करना मेरा कर्तव्य है। अगर यह बहुत परेशानी भरा मसला न हो और सोवियत नेता इस्रायली प्रार्थना पर उदारतापूर्वक विचार करें, तो मैं अनुगृहीत हूंगा।

बुल्गानिन इस विषय में और कुछ न बोले और असंतुष्ट मुखमुद्रा बनाकर बैठ गये; ताकि ऊ नू और अधिक आग्रह न करें। हां, कगानोविच ने ऊ नू की बात बीच में काटकर उन्हें आगे बोलने से रोक दिया—'कृपया प्रधान-मंत्री शेरेत से कहिये कि वे अपने दूतावास का उपयोग करें।'

क्रेमलिन से लौटते समय बर्मी राजदूतों ने ऊ नू से शिकायत की कि आपने हमसे सलाह लिये बिना यह सब कर दिया; अगर हमें पहले ही पता होता तो हम आपको मना करते। हां, 'मुझे मालूम था!' ऊ नू ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

अगले दिन रूसी साम्यवादी पार्टी के प्रथम सचिव निकिता ख्रुश्चोव के यहां दुपहर का भोज था, जिसमें मेजबान ने सदा की तरह स्वागत-भाषण दिया। मगर जब ऊ नू उत्तर देने को उठे तो बताने लग गये कि किस प्रकार 'एक विदेशी सरकार' ने बर्मी साम्यवादियों को बगावत करने के लिए बरगलाया और किस प्रकार साम्यवादियों की उस बुरी मिसाल की नकल दूसरे राजनैतिक संघटनों ने की और किस तरह एक वक्त यह नौबत आ पहुंची कि बर्मा के कुल क्षेत्रफल का नौ बटा दस भाग बागियों के हाथ पड़ गया था और सारी दुनिया समझने लगी थी कि बर्मा शायद कभी संभल न सकेगा।

'मगर इस अशुभ शुरूआत के बावजूद हम डटकर लड़े,' ऊ नू बताते रहे—'और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरम पानी में स्नान का आनंद

रेकोल्ड वाटरहीटर

सबकी प्रथम पसंद

* सिर्फ रेकोल्ड गोल चौकोर इन दो आकारों व दो रंगों में मिलता है।
* पश्चिम जर्मन के तकनीकी ज्ञान के सहयोग से निर्मित विशेष ताप तत्त्व से युक्त
* स्वयंचलित ताप नियंत्रण के लिए इंग्लैंड प्रोस्कॉन के तकनीकी सहयोग से निर्मित सर्वोत्तम किस्म का थर्मोस्टैट।
* भीतरी जल पात्र (कंटेनर) तांबे का बना और अंदर-बाहर टिन के मुलम्मे से युक्त
* बनावट में गलती के लिए साल भर की गारंटी।

रेकोल्ड
एप्लाएन्सेज़ प्रा. लि.
नयी दिल्ली, बंबई, पूना

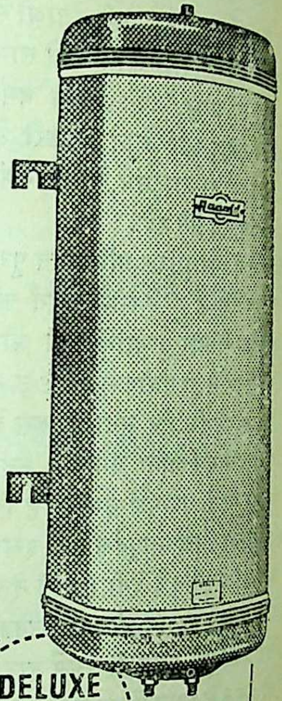

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब मैं आपको बता सकता हूं कि बागियों द्वारा हथियाया गया इलाका वापस छीन लिया गया है; साम्यवादी और दूसरे बागी पीठ दिखाकर भाग रहे हैं और सब जगह उनका सफाया किया जा रहा है।'

अतिथि-गृह लौटने पर ऊ थां ने पूछा—'क्या भोज में आपने अपने भाषण के वक्त ख्रुश्चोव का चेहरा देखा ?'

'क्यों, आप यह सवाल क्यों पूछ रहे हैं ? बेशक सारे भोज में मैं उनके चेहरे को देखता रहा।'

'तब तो आपने देखा होगा कि किस प्रकार उनके चेहरे के भाव बदलते रहे।'

'सो तो शायद मैंने नहीं देखा। वे बहुत शांत दिख रहे थे।'

ब्रिगेडियर आंग ग्यी, जो वहां उपस्थित थे, बीच में बोल उठे कि मैं ऊ थांत से सहमत हूं ख्रुश्चोव प्रसन्न नहीं दिख रहे थे।

ऊ नू ने उत्तर दिया—'पर मैं कर ही क्या सकता था ! इन्हीं रूसियों की वजह से तो हमारा देश भस्मसात् हो गया था। जब मौका हो, तब इतना कहने की छूट तो हमें होनी ही चाहिये। मैं तो समझता हूं, रूसियों को मेरा शुक्रगुजार होना चाहिये कि मैंने सीधे-सीधे यह बात नहीं कह दी कि आप लोगों ने ही बर्मा में साम्यवादी विद्रोह भड़काया था।'

यात्रा की दूसरी शाम को मास्को के महापौर की ओर से नागरिक स्वागत होना था। अतिथि और आतिथेय दोनों के भाषण पहले से ही एक दूसरे को दिखा दिये गये थे। ऊ नू का भाषण वही था, जो उन्होंने ख्रुश्चोव के यहां मध्याह्न-भोज में दिया था; मगर उन्हें इस भाषण में और अधिक ब्योरे जोड़ने का समय मिल गया था।

सवेरे प्रधान-मंत्री के सचिव ऊ थांत से मिलने एक मुलाकाती पधारे। वे थे रंगून में रूस के राजदूत, जो इस यात्रा की तैयारियों के लिए पहले ही रूस आ गये थे। वे ऊ थांत से यह कहने आये थे कि रूस आने के बाद से ऊ नू ने बर्मी-रूसी मैत्री को बड़ी खूबी से आगे बढ़ाया है; मगर जिस भाषण से ख्रुश्चोव व्यग्र हो उठे हों, उसका दुहराया जाना बहुत लाभकारी नहीं होगा।

ऊ थांत ने जब रूसी राजदूत का संदेश ऊ नू को सुनाया, तो वे मुस्कराये और बोले कि ठीक है, मेरे भाषण का जो भी हिस्सा अनावश्यक लगे, उसे आप काट डालिये। ऊ थांत ने दुपहर का भोजन भी छोड़कर उसे पूरा का पूरा फिर से लिखा।

मास्को में ऊ नू वह मकबरा भी देखने गये, जिसमें लेनिन और स्तालिन के शव जनता के दर्शनार्थ रखे हुए थे। स्तालिन से ऊ नू इस बात को लेकर बहुत नाराज थे कि उन्होंने बर्मा के मामले में दखलंदाजी की; मगर स्तालिन के पार्थिव अवशेष देखकर उनके हृदय में परिवर्तन हुआ। वे सोचने लगे कि अपने जीवन में इतने सारे लोगों को कुचलने, सताने और मरवाने वाले स्तालिन मृत्यु के बाद सुख तो नहीं पा सके होंगे; जरूर वे इस समय नरक में भयानक यातना भोग रहे होंगे। ऊ नू के मन में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तालिन के लिए दया उद्भूत हुई और उन्होंने दान तथा धार्मिक एवं लौकिक कार्यों द्वारा अर्जित अपने पुण्य का एक अंश स्तालिन के नाम करते हुए उनकी मुक्ति की प्रार्थना की।

चावल का सवाल

ऊ नू का अमरीका पहुंचना और एशियाई देशों को मुफ्त में अमरीकी चावल निर्यात करने के मामले को लेकर अमरीकी राष्ट्रपति आइजनहोवर के विदेश-मंत्री एवं कृषि-मंत्री के बीच मतभेद का उठना संयोग-वश साथ-साथ ही घटित हुआ। अमरीकी विदेश-मंत्री की राय थी कि जो एशियाई देश मुद्दत से बर्मा और थाइलैंड से चावल खरीदते आये हैं, उन्हें अमरीकी चावल मुफ्त में देने से इन दोनों देशों में अमरीका के प्रभाव को क्षति पहुंचेगी। दूसरी ओर अमरीकी कृषि-मंत्री का विचार था कि जरूरतमंद एशियाई देशों को चावल की मदद देने से अमरीका की इज्जत बढ़ेगी—वैसे भी तो अमरीकी किसानों के पास अति-रिक्त चावल जमा हो गया है!

जब ऊ नू ह्वाइट हाउस के कक्ष में राष्ट्र-पति आइजनहोवर के प्रकट होने का इंत-जार कर रहे थे, अमरीकी उपविदेश-मंत्री राबर्टसन उनके सचिव ऊ थांत से बातचीत करने आये और उन्होंने ऊ थांत के जरिये ऊ नू से प्रार्थना की कि आप मुफ्त में चावल दिये जाने के प्रति विरोध प्रकट करें। ऊ नू कुछ न बोले, केवल सिर हिलाकर बैठे रहे।

फिर राष्ट्रपति प्रकट हुए। ऊ नू ने सर्वप्रथम, फासीवादी जापान के चंगुल से एशिया को छुड़ाने के अमरीकी युद्ध-प्रयत्नों के लिए उन्हें धन्यवाद अदा किया। ऊ नू ने देखा कि आइजनहोवर का व्यवहार किसी जनरल जैसा नहीं, बल्कि किसी कालेज के प्यारे बुजुर्ग प्राध्यापक जैसा है।

लगभग आधे घंटे की बातचीत के बाद राष्ट्रपति ही ऊ नू से पूछ बैठे कि क्या एशिया को मुफ्त चावल भेजे जाने पर बर्मा सरकार को कोई एतराज है? जब ऊ नू ने कहा कि कुछ भी एतराज नहीं है, तो राष्ट्र-पति अविश्वास से मुंह ताकते रह गये।

'आप एतराज क्यों नहीं करते?'

'भूख से मरते एशियाइयों को खाना खिलाना एक प्रशंसनीय कार्य है। अगर मैं इस पुण्यकार्य का विरोध करूंगा, तो नरक का भागी बनूंगा। मैं तो ऐसे पचड़े से बचना ही चाहूंगा।'

राष्ट्रपति ने एक क्षण ऊ नू को ध्यान से देखा, फिर चावल-चर्चा समाप्त कर दी।

जब ऊ नू के वाशिंग्टन से रवाना होने का दिन आया तो विदेश-मंत्री जान फास्टर डलस उनसे अलविदा कहने आये। पंद्रह-एक मिनट की बातचीत के बाद श्री डलस ने स्वयं ही यह जानकारी दी कि जनवादी चीनी गणतंत्र को राजनयिक मान्यता नहीं के लिए रोकी नहीं जा सकती। देर-सबेर अमरीका को उसे मान्यता देनी ही होगी। सच तो यह है कि जनवादी चीनी गणतंत्र को मान्यता देने का अमरीकी सरकार का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरा इरादा था, मगर अमरीकी कान्सल-जनरल के चपतियाये और अपमानित किये जाने की घटना के कारण उसका मन बदल गया।

'हमारे मन में कोई बदले की भावना नहीं है,' श्री डलस ने कहा—'हम चाहते हैं, कि जब आप अपने चीनी मित्रों से मिलें, तो उन्हें यह बात बतायें।'

★

परीक्षक और परीक्षार्थी

प्रोफेसर मजुमदार मनोविज्ञान और प्रो. बनर्जी नीतिशास्त्र पढ़ाते थे। नू मनोविज्ञान में ठीक था, मगर नीतिशास्त्र में उसे बहस के बहुत मुद्दे मिलते रहते थे। प्रो. बनर्जी को तो मानो बहस और चुनौती से प्रेम था। अपने पांच छात्रों में से नू को वे अक्सर नाश्ते के लिए घर पर बुलाया करते थे। ..... वहां बर्मा और भारत की राजनीति पर उनमें लंबी बहस हुआ करती। कई बार नीतिशास्त्र पर बहस करते हुए प्रो. बनर्जी कह उठते—'मैं तो तुम्हारे विचारों की कीमत समझ सकता हूं; लेकिन अगर यही सब तुमने उत्तरपत्र में लिख डाला तो गये काम से।' साथ ही वे यह भी याद दिलाते कि कोई विदेशी प्राध्यापक बाहरी परीक्षक के रूप में आयेगा और तब मैं तुम्हारी कुछ भी मदद न कर पाऊंगा।

बावजूद इन चेतावनियों के, अंतिम परीक्षा में नू ने हमेशा की तरह स्वच्छंद शैली में उत्तर लिख डाले। प्रो. बनर्जी ने उत्तर-पुस्तिका पर एक नजर डाली और बुदबुदाये कि 'इसी का मुझे डर था।' फिर नू को घर पर आकर मिलने को कहा।

घर पर नू का परिचय बाहरी परीक्षक से कराया गया। वे और कोई नहीं, डा. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् थे, जिन्हें आगे चलकर भारत का राष्ट्रपति बनना था। कुछ बातचीत के बाद प्रो. बनर्जी बोले—'यह है मेरा शिष्य नू। पाठ्य पुस्तकों में लिखे विचारों से भिन्न इसके अपने ही विचार हैं। शायद वे विचार आपको दिलचस्प लगें।' इन शब्दों के साथ उन्होंने नू की उत्तर-पुस्तिका उठाकर डा. राधाकृष्णन् के हाथ में रख दी।

डा. राधाकृष्णन् ने उसे पढ़ना शुरू किया, जल्द ही उनकी भौंहें तन गयीं। दस मिनट और गुजरे और उनके चेहरे पर मुस्कान आयी, फिर उन्होंने 'हुं-हुं' की ध्वनि मुंह से की। अंत में पुस्तिका उन्होंने नीचे रख दी और पूछा—'मांग नू, तुमने क्या लिखा है यह सब?' नू ने दांत निपोरे और कहा—'जो कुछ आपने पढ़ा, वही प्रोफेसर साहब!' 'अजीब!' राधाकृष्णन् बोले—'मगर हां, मैं निश्चित रूप से तो नहीं कह सकता कि तुम्हारे विचार गलत हैं!' नू से भी ज्यादा प्रो. बनर्जी को इस बात की खुशी हुई कि नू को पास कर दिया गया है।

★

आवश्यक सूचना

श्रीगोपाल नेवटिया लेख-प्रतियोगिता का परिणाम दिसंबर-१९७६ के **नवनीत में घोषित किया जायेगा।** **—संपादक**

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Get 10 of the smoothest shaves you ever had, from 1 Centwin blade. At just 6 paise a shave!

What's the secret?

It's simple really... we've put the best into it. First of all, the best-grade imported stainless steel is tempered at 1100°c. This hardens the edge and makes it last much longer.

Then the edges are sharpened on a strip grinder that grinds and hones it till it forms a fine and very sharp cutting edge that will give you a clean, close shave.

And then it's coated with a unique plastic coating called ZYPAX.

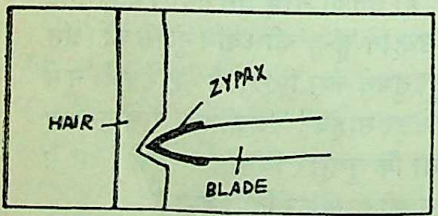

This forms a thin film over the edge that makes the blade glide over your skin without pulling at the hair root. The result? A smooth effortless shave.

And finally, the fool-proof quality control. At every stage the blades are carefully checked. If a single blade is found to be below the standard, the whole batch is rejected.

So you can be sure that every shave you get from a Centwin blade will be perfect.

More value for your money

centron industrial alliance limited
Industrial Assurance Building
Churchgate
Bombay-400 020.

Dattaram-TF-42

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुभकामनाओं के साथ

जिन्दल इन्डस्ट्रीज लिमिटेड

कई साइजों में काले व गेल्वनाइज्ड
ई. आर. डबल्यू. लोहे के पाइप ट्यूब

के निर्माता व निर्यातक

रजिस्टर्ड कार्यालय व कारखाना :
दिल्ली रोड,
मॉडल टाउन,
हिसार (हरियाणा)
फोन : ३६८१ (तीन लाइनें)
तार : JINDAL

शाखा :
१५/१ आसफअली रोड,
नई दिल्ली – ११०००१.
टेलीफोन : २७३१८०
२७४६३०
ग्राम : BENDSOCKET

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टी.टी.

बनियान एवं जांघिये

100% सूती

गंजी
अन्डरवीयर
जरसी
टी शर्ट
पायजामा

T.T. KNITWEAR

T. T. INDUSTRIES, 12 NEW COLONY M... ...HI-5(INDIA).CABLE : TEEIND

Jupiter.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली की शुभकामना

वितरक : कुंदा मराठे B.Sc., F.A.O., C.L.R.G., F.A.C.L.P. (LOND.)

सुखदायक उत्तम दृष्टि के लिए हार्ड तथा साफ्ट लेन्स आर्थो–के ट्रीटमेंट और चश्मों के लिए–हूबहू आंखों एवं कान्टैक्ट लेन्सों के आद्य निर्माता :

पायोनियर कान्टैक्ट लेन्स क्लिनिक

शाखाएं :

खादी भंडार के ऊपर
२७८, डी. एन. रोड,
बंबई–४००००१
फोन : २६३८८७
१० से १ और ३ से ६
सोम से शुक्र तक

१८३ गिरगांव रोड,
गायवाडी के सामने,
बंबई–४००००४
१० से १ व ४ से ७
रविवार बंद
फोन : ३५४७५६

सप्ताह के पहले व
तीसरे शनि-रविवार
स्वस्ति होटल,
१२३४, आपटे रोड,
पुणे ४
फोन : ५५५००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपावली की शुभकामनाएं

मे. अमृतलाल डी. कोठारी

दारूखाना, बम्बई-४०० ०१०

फोन : ३७७३१८–३७०३६४

सी० आर० स्ट्रीप्स, एच० आर० स्ट्रीप्स, प्लेट्स और पाइप्स

के स्टाकिस्ट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

New Projects,
Factories, Banks,
Shops and Offices.

See how Vinar Slotted Angles can double your storage space.

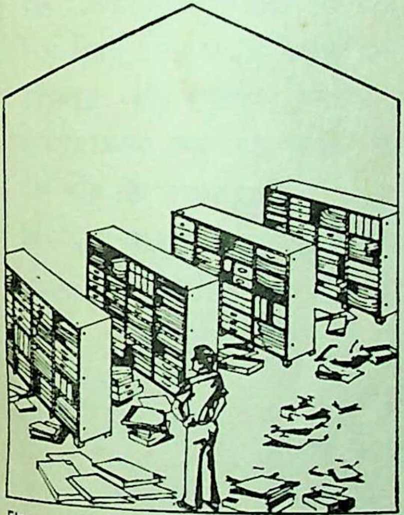

Floor area is very expensive—why waste overhead space ?.

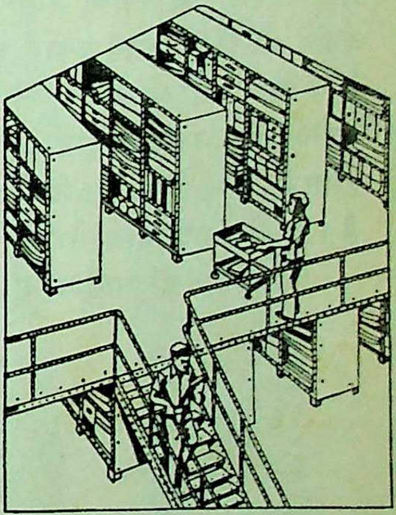

Here, Vinar has doubled the storage space at a surprisingly low cost.

Vinar Slotted Angles, Library Racks & Conveyors.

Vinar strong and sturdy, versatile, reliable and safe.

VINAR SYSTEMS PVT. LTD.

5A Lord Sinha Road, Calcutta 700071
59 Apollo Street, Fort, Bombay 400001
2/20 Ansari Road, Daryaganj, Delhi 110002
310/311 Linghi Chetty Street, Madras 600001
36/B1-IV Lal Bahadur Stadium, Hyderabad 500001
XXXII/2282A E.R.G. Road, Eranakulam,
Cochin 682011
Ankur Bldg. Opp: Dinbai Tower, Laldarwaja.
Ahmedabad 380001

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

१११२८५

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यांत्रिक प्रगति का अनुपम प्रतीक

लोहे में गोल छेद बनाना आसान है, पर उसे विभिन्न प्रकार का बनाने के लिए विशेष प्रकार के टूल 'ब्रोच' की जरूरत होती है। जिन-जिन देशों में मोटर, लारी, स्कूटर, मशीन टूल, इत्यादि इंजीनियरिंग उत्पादन होते हैं, वहां 'ब्रोच' उत्पादन परमावश्यक होता है। डँगर-फोर्स्ट टूल लिमिटेड ने इस आवश्यकता की पूर्ति की है। उनके बनाये 'ब्रोच' से लोहे या अन्य धातु के भीतर व बाहर के भाग को आसानी से विविध स्वरूप दीजिये।

डॅगर-फोर्स्ट टूल्स लि.,
पहिला पोखरण रास्ता,
थाना (बंबई)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्षिक मूल्य रु. २०) (मूल्य रु. ३-००

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नवम्बर (१-११-१९७६) मूल्य रु. ३-०० Regd. No. BYW 3

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५।३।२४
No. 1753

Sampled
1-03-2000

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri